मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

4 तफ़सीर इब्ने कसीर

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 4

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिरान - ناشران

شعبہ نشر و اشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

بِسْــــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيم

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

मुस्तनद-मुदलल्ल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیرِ ابنِ کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुदीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द **4**

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिर-ناشر

شعبہ نشر و اشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित है

इस किताब के ह्वकाशन सबैंधी सर्वाधिकार ह्वकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई यख्रि/सँ-था/ह्वकाशन आदि इस किताब को मुि त/ह्वकाशितनहीं कर सकता। इस चेतावनी का उ लँघनकरने वालों के ख़िलाफ़ कठोर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके सम-त हर्ज द्रख़र्च के वे -वयँ उलरदायी होंगे। सभी विवादों का यायक्षश्जोधपुर (राज-थान) होगा।

नाम किताब: **तफ़सीर इब्ने कसीर**

मुरलिब (अरबी): **एमामुद्दीन इब्ने कसीर (रह.)**

उर्दू तर्जुमा: **मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी (रह.)**

हि दी तर्जुमा **दारूत-तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअत**
जमीअत अहले हदीस, जोधपुर (राज.)

त-हीह व नज़रे सानी: **मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी, 97857-69878**

लेज़र टाइपसेटिंगृ **मोहम्मद अकबर, 85030-26306**

मेनेजिंग डायरेप्टरृ **अली हम्जा, 82338-55857**

ह्विप्टिंग: **अनमोल प्रिण्टस, बासनी इण्डस्टील एरिया,**
9414131426 जोधपुर (राज.)

बाईडिंगृ **मो. शाहिद, कमाल बाइंडिंग हाउस,**
9351668223 जोधपुर (राज.)

तादाद पेज: 640

ह्वकाशन (ह्वथम सँ-करण) जमादिल अ वल 1438 हिजरी (फरवरी 2017 इ-वी)

ता'दाद: 1100 कौपी क़ीमत: 500/द्र ह्वये

प्रकाशक

शहरी जमीअत अहले हदीस, जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस, राजस्थान

अधिकृत विक्रेता

अलकिताब इन्टरनेशनल जामिया नगर, नई दि ली	011-26986973
मकतबा तर्जुमान 4116 उर्दू बाजार, नई दि ली	011-23273407
अल हीरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू मार्केट, मटिया महल,जामा म्जिद, दि ली	09015382970
माबूदी पब्लिकेशन दरियागैंज, नई दि ली	09582340921
मकतबा अस्सुन्नह मुम्बई	08097444448
दारूल इल्म नागपाड़ा, मुम्बई	022-23088989 022-23082231
उमरी बुक डिपो, मुम्बई	09819961879
मकतबा अलफहीम मऊनाथ, भैंजन, यू.पी.	0547-2222013
मौलाना खुर्शीद मुहम्मदी मिर्जापुर, यू.पी.	09919737053
शैख़ सुहैल सलफ़ी, मकतबा सलफ़िया वाराणासी	09451915874
तौहीद किताब सेन्टर, सीकर	08003972503
अल कौसर टेडर्स	09414920119
आई.आई.सी, कच्छ नूरानी होटल के पास, डाम्डा बाजार, भुज, कच्छ (गुजरात)	09429017111
कलीम बुक डिपो सीकर, राज्थान	07014898515

फेहरिस्त-ए-मज़ामीन

तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द:4

तफ़्सीर सूरह अन्फ़ाल	13
माले ग़नीमत के अहकाम और उसको नफ़्ल कहने की वजह	16
ईमान कम और ज़्यादा होता है नीज़ अहले ईमान की सिफ़ात	22
जंगे बद्र का पसे मंज़र और दीगर तफ़्सीलात	25
मैदाने बद्र में नबी (ﷺ) की दुआ पर अल्लाह की मदद का नुज़ूल	29
मैदाने बद्र में रहमते इलाही का नुज़ूल	33
जंग से भागना सख़्त कबीरा (बड़ा) गुनाह है	38
बद्र में कामयाबी अल्लाह की मदद से थी	41
हक़ पर कौन? फ़ैसला हो गया	43
अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत वाजिब है	44
रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात मानने में ही नजात है	45
ख़ास की वजह से आम लोगों को अज़ाब	47
कमज़ोर मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद	49
अल्लाह तआला से डर जाना ही अच्छा है	52
कुफ़्फ़ार का झूठा दावा और अज़ाब का मुतालबा	55
मस्जिदुल हराम के मुतवल्ली मुत्तक़ी (नेक) लोग हैं न कि मुश्रिक	58
हारे हुए कुफ़्फ़ार की नाकाम तदबीरें	60
फ़ित्ना का मतलब और इख़्तितामे फ़ित्ना तक जिहाद जारी रखने का हुक्म	62
माले ग़नीमत की तक़्सीम और मुस्तहिक़ अफ़राद	66
क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान और मअ़रका बद्र की तफ़्सील	72
ग़ज़्व-ए-बद्र में मुसलमानों और काफ़िरों का मुवाज़ना	75
ग़ज़्वा बद्र में इब्लीस लईन की शुमूलियत और फ़रारी	78
कुफ़्फ़ार पर हालते नज़अ और फ़रिश्तों की सख़्ती	82
लोग अपने गुनाहों की वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार होते हैं	83
ख़यानत और वादाख़िलाफ़ी क़ाबिले मज़म्मत है	84
आलाते हर्ब (जंगी हथियार) हर वक़्त तैयार रखने का हुक्म	85
काफ़िरों से बवक़्ते ज़रूरत सुलह का हुक्म	88
जिहाद की तर्ग़ीब और सहाबा (रज़ि.) का शौक़े जिहाद	90
एक मुसलमान कई काफ़िरों पर भारी है	91
बद्र के कैदी और जंगी असीरों का हुक्म	92
नेक निय्यती माल में ज़्यादती की वजह है	95
मुहाजिरीन और अंसार की फ़ज़ीलत का बयान	98
मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों का दोस्त नहीं होता	100
मोमिन बन्दे और क़यामत	102
तफ़्सीर सूरह तौबा	103
मुश्रिकीन से ऐलाने बराअत	106
हज्जे अकबर से क्या मुराद है?	108
मुआहिदे को पूरा करने की ताक़ीद	112
कुफ़्फ़ार मुसाफ़िरों, क़ासिदों, पनाह लेने वालों का एहतिराम	115
मुसलमान मुस्तक़िल तौर पर अहद की पाबन्दी करें	116
मुश्रिक अगर तौबा करके सच्चे मुसलमान बन जाएँ तो तुम्हारे दीनी भाई हैं	117
वादाख़िलाफ़ी और तअ़नाज़नी करने वालों को दो टूक जवाब दो	118
जिहाद और मुसलमानों का इम्तिहान	120
ईमान के बग़ैर नेक आमाल कोई फ़ायदा न देगा	123

तर्के मवालात (दोस्ती) व मवद्दत का हुक्म	124
जंगे हुनैन का तज़्किरा और अल्लाह की मदद का बयान	126
हरम की हुदूद में मुश्रिकों का दाख़िला मना है	132
मुश्रिकोंने नबियों, और नेक लोगों को अल्लाह तआला का शरीक बना दिया	135
फूँकों से हक़ की शमा नहीं बुझ सकती	137
यहूदियों के अहबार और ईसाईयों के रुहबान और उनका किरदार	139
चार महीनों की हुर्मत शुरूआते दुनिया से है	145
मुश्रिकों ने हुर्मत वाले महीनों में भी रद्दोबदल कर रखा था	150
जिहाद से जी चुराने वालों को तम्बीह	152
नबी, सिद्दीक़ और क़िस्स -ए-ग़ार	154
हल्के या भारी हर हाल में अल्लाह की राह में निकलो	155
अय्यार (झूठे) लोगों के धोखे में न आओ	158
सच्चे मुसलमान हीले बहाने नहीं बनाते	158
मुनाफ़िक़ीन की रीशादवानियों और शरारतों का तज़्किरा	159
मुनाफ़िक़ फ़ित्ना बरपा करने के लिए हर वक़्त मौक़ा की तलाश में रहते हैं	160
मुसलमानों की हर ख़ुशी मुनाफ़िक़ीन पर शाक़ गुज़रती है	162
दुनियादारों को हसरत भरी नज़रों से न देखो	163
मुनाफ़िक़ीन की ग़ैर मुस्तक़िल मिज़ाजी और उनकी झूठी क़समें	163
मुनाफ़िक़ मतलबपरस्त और माल व दौलत के हरीस (लालची) हैं	164
मसारिफे ज़कात की तफ़्सील	165
नबी (ﷺ) और मुनाफ़िक़ीन की ईज़ारसानी	170
मुनाफ़िक़ीन की झूठी क़समें	170
मुनाफ़िक़ों को हर वक़्त अपने निफ़ाक़ के ज़ाहिर होने का डर रहता है	171
मुनाफ़िक़ों की मज़ीद अलामात (निशानियों) का तज़्किरा	174
मुसलमान एक दूसरे के दस्त व बाज़ू हैं	176
मोमिनीन और जन्नत के हसीन मनाज़िर	176
मुनाफ़िक़ीन से जिहाद जारी रखने का हुक्म	179
मुनाफ़िक़ीन अल्लाह का फ़ज़्ल हासिल करने के बाद उससे किया हुआ वादा भूल जाता है	184
मुनाफ़िक़ीन की मुसलमानों पर तानाज़नी और उसका बुरा अंजाम	186
मुनाफ़िक़ीन के लिए इस्तिग़फ़ार (गुनाहों की बख़्शिशके लिए दुआ) न करने का हुक्म	188
लालची लोगोंको जिहाद में न ले जाइए	191
बुज़दिल मुनाफ़िक़ीन जिहाद नहीं कर सकते	195
सच्चे मुसलमान ही अपनी जान व माल से जिहाद करते हैं	196
झूठा उज़्र (बहाना) करने वालों को तम्बीह	196
सच्चे मुजाहिद और अहले उज़्र	197
बहाना बनाकर जिहाद से पीछे रहने वालों को तम्बीह	199
आराब (गँवार) लोगों की पहचान	200
आप (ﷺ) का बच्चों से प्यार	201
मुहाजिरीन व अंसार और उनके पैरूकार	202
मुनाफ़िक़ीन की निशानदेही	204
तसाहुल और सुस्ती से बचना चाहिए	207
सदक़ा माल की पाकी की वजह है	208
सीनों के राज़ अल्लाह अलीम व ख़बीर जानता है	211
जंगे तबूक से पीछे रहने वालों का मामला	212
मुनाफ़िक़ीन की मस्जिदे ज़िरार का बयान	213
मस्जिदे तक़्वा की तहसीन और मस्जिदे ज़िरार का अंजाम	219
मुसलमान की जान और माल के बदले जन्नत का सौदा	220
मोमिनों के औसाफे हमीदा (बेहतरीन खूबियां)	221
साइहून से मुराद रोज़ा रखने वाले हैं	222

❀ मुश्रिकीन के लिए दुआए मग़्फ़िरत की मुमानइत	223
❀ अल्लाह तआला हुज्जत को पूरा किये बग़ैर लोगों को अज़ाब नहीं देता	229
❀ जंगे तबूक एक मुश्किल तरीन सफ़र	230
❀ पीछे रहने वाले तीन मुख़्लिस मुसलमानों की तौबा	231
❀ जंगे तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ न देने वालों की मज़म्मत	237
❀ जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का बेहतरीन बदला	238
❀ जिहाद और दीन की तालीम और तब्लीग़	239
❀ क़रीबी कुफ़्फ़ार से जिहाद शुरू करना चाहिए	241
❀ ईमान में कमी और ज़्यादती का बयान	243
❀ मुनाफ़िक़ीन दुनियावी आफ़तों के बावजूद ईमान नहीं लाते	244
❀ रसूलुल्लाह (ﷺ) की सिफ़ाते हस्ना का ज़िक्रे जमील	245
तफ़्सीर सूरह यूनुस	249
❀ तमाम अम्बिया (अलैहि.) इंसान थे	252
❀ अर्शे-अज़ीम और अल्लाह का इल्म और तौहीदे उलूहियत	253
❀ कुफ्र की सज़ा दर्दनाक अज़ाब	255
❀ अल्लाह तआला की निशानियों का बयान	255
❀ आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह देने वालों का बुरा अंजाम	256
❀ जन्नत सलामती का घर है	257
❀ अपने और अपने अहलो अयाल के लिए बद दुआ न करनी चाहिए	259
❀ अक्सर लोग एहसान फ़रामोश हैं	259
❀ दुनियादार ज़ालिम लोग हैं	260
❀ शरीअत साज़ अल्लाह तआला है किसी नबी (अलैहि.) को तर्मीम का इख़्तियार नहीं	261
❀ रसूल (ﷺ) का नूरानी चेहरा भी सदाक़त की एक दलील है	262
❀ मुश्रिकीन बुतों को सिफ़ारिशी समझते थे	266
❀ कुफ़्फ़ार के मुतालबा करने पर भी मोजिज़ा न दिखाने में भी अल्लाह की हिक्मत है	266
❀ मुश्रिकीने मक्का मुसीबत के वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारते थे	268
❀ दुनियावी ज़िन्दगी की एक मिसाल	270
❀ नेकियों का बदला जन्नत है	272
❀ क़यामत के दिन मुश्रिकों और उनके शरीकों की हालत	274
❀ मुश्रिकीन अल्लाह को ख़ालिक़, राज़िक़ और मालिक मानते थे	276
❀ सब कुछ अल्लाह तआला का पैदा किया हुआ है लोगों के शुरका (झूठे माबूद) कुछ पैदा नहीं कर सकते	277
❀ कुरआन हकीम लाजवाब और बेमिसाल किताब है	278
❀ रोज़े क़यामत हर कोई अपने आमाल का जवाबदेह होगा	281
❀ क़यामत के दिन नफ़्सा नफ़्सी का आलम	282
❀ क़यामत के दिन पूरा पूरा इंसाफ़ होगा	283
❀ क़यामत, अज़ाब सब कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है	284
❀ मरने के बाद क्या होगा	285
❀ रूहानी बीमारियों के लिए कुरआन किताबे शिफ़ा है	286
❀ ख़ुद से बनाया हुआ हलाल व हराम की मज़म्मत	287
❀ अल्लाह तआला हर छोटी बड़ी चीज़ को जानने वाला है	289
❀ अल्लाह तआला की कुछ निशानियों का बयान	292
❀ अल्लाह तआला की औलाद नहीं	293
❀ क़ौमे नूह (अलैहि.) की तबाही व बर्बादी	294
❀ नूह (अलैहि.) के बाद सिलसिल-ए-रिसालत जारी रहा	296
❀ मूसा और हारून (अलैहि.) की फ़िरऔन को दावत	298
❀ मूसा (अलैहि.) और जादूगरों का मुक़ाबला	299
❀ फ़िरऔन और उसकी क़ौम की सरकशी	300
❀ अल्लाह पर भरोसा और उसकी इबादत	301
❀ बनी इस्राईल को नमाज़ का हुक्म	302
❀ बनी इस्राईल की नजात और फ़िरऔन की इबरतअंगेज़ तबाही	305
❀ बनी इस्राईल पर इन्आमात और उनकी सरकशी	307

दलीलों के बावजूद अहले किताब की हठधर्मी	309
अज़ाब देखकर ईमान लाना क़बूल नहीं होता मगर क़ौमे यूनुस को अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया	310
हिदायत व गुमराही अल्लाह के इख़्तियार में है	311
आफ़ाक में अल्लाह की कुदरत की निशानियां	312
मअबूदे हक़ीक़ी का तआरुफ़ और दीने हनीफ़	313
नाफ़र्मान अपना ही नुक्सान करता है	314
तफ़्सीर सूरह हूद	315
तौहीद से एराज़ अज़ाब की वजह	318
अल्लाह तआला राज़ की तमाम बातों को जानता है	320
अल्लाह तआला तमाम मख़्लूक़ात का कफ़ील और ज़िम्मेदार	321
अल्लाह तआला की कुछ निशानियों और अर्श का बयान	322
इंसान की पैदाइश का मक़सद ख़ालिक़ की इबादत करना है	323
मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना	323
दुख-दर्द में सब्र करना मग़्फ़िरत का बाइस है	325
कुफ़्फ़ार की तअ्न व तशनीअ और उनको अल्लाह तआला का चैलेंज	326
आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है	327
इंसान की पैदाइश फ़ितरते इस्लाम पर होती है	328
कुरआन का इंकार करने वाले जहन्नमी हैं	329
अल्लाह पर बोहतान बांधने वालों का अंजाम रुस्वाई है	330
अहले ईमान का बदला जन्नत है	332
सबसे पहले तौहीद की दावत नबी नूह (ﷺ) ने ही दी	333
क़ौम को नूह (ﷺ) का जवाब	335
क़ौमे नूह (ﷺ) की उज्लत (जल्दबाज़ी)	336
नूह (ﷺ) का कश्ती तैयार करना और काफ़िरों का मज़ाक़	337
कश्ती में हर जानवर का जोड़ा मौजूद था	339
तूफ़ाने नूह (ﷺ)	340
तूफ़ाने नूह का थम जाना	342
नूह (ﷺ) की अपने बेटे के लिए दुआ और अल्लाह तआला का जवाब	344
नूह (ﷺ) का कश्ती से उतरना	346
हज़रत हूद (ﷺ) की क़ौम को दावत	347
हज़रत हूद (ﷺ) की दावत और क़ौम का जवाब	348
क़ौमे आद की सरकशी	350
समूदियों (क़ौमे समूद) की अंधी तक़्लीद का ज़िक्र	352
हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का फ़रिश्तों की मेहमान नवाज़ी करना	353
क़ौमे लूत (ﷺ) का किरदार	356
क़ौमे लूत का ख़िलाफ़े फ़ितरत काम	358
क़ौमे लूत पर अल्लाह तआला का अज़ाब	360
हज़रत शुऐब (ﷺ) और दावते तौहीद	361
शुऐब (ﷺ) को क़ौम का जवाब	362
शुऐब (ﷺ) की क़ौम की हठधर्मी	364
मूसा (ﷺ) और फ़िरऔन का क़िस्सा	366
मअबूदाने बातिल (झूठे) की हक़ीक़त	370
नमाज़ क़ायम करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है	371
क़ामयाब और नाकाम होने वाले लोग	375
तफ़्सीर सूरह यूसुफ़	378
कुरआन मजीद का सबसे प्यारा किस्सा	381
हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का ख़्वाब	384
याक़ूब (ﷺ) की यूसुफ़ (ﷺ) को अपना ख़्वाब न बयान करने की हिदायत	386
हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) से भाईयों की हसद	387
यूसुफ (ﷺ) को साथ ले जाने के लिए भाईयों का वालिद से इसरार (ज़िद)	389
यूसुफ़ (ﷺ) का कूएँ में डाला जाना	390
भाईयों का बाप के सामने मकर व फ़रेब	391
कूएँ से निकलकर बाज़ारे मिस्र की तरफ़	392

यूसुफ़ (عليه السلام) की मिस्र के बाज़ार में नीलामी	395
अज़ीज़े मिस्र की बीवी का किरदार	396
यूसुफ़ (عليه السلام) का बुराई से इंकार करना	397
यूसुफ़ (عليه السلام) और शहर की औरतों का मकर व फ़रेब	401
यूसुफ़ (عليه السلام) और केदख़ाना	404
दो कैदियों के ख़्वाब	404
केदख़ाने में यूसुफ़ (عليه السلام) की तौहीद की दावत	405
हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) और दावते तौहीद	407
केदियों के ख़्वाब की ताबीर	408
केद की मुद्दत?	408
बादशाह के ख़्वाब की ताबीर	410
यूसुफ़ (عليه السلام) की पाकदामनी की तस्दीक़	412
नफ़्स की शरारतों से वही बचता है जिस पर अल्लाह का रहम हो	414
हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) मिस्र के हाकिम बन गए	415
यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों की आमद	417
यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों की वापसी	419
यूसुफ़ (عليه السلام) का बर्ताव	419
हज़रत याक़ूब (عليه السلام) की बेटों को वसिय्यत	420
हज़रत यूसुफ़(عليه السلام) ने अपने भाई को पहचान लिया	422
भाई को रोकने की हिक्मते अमली	422
यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों के मज़हब में चोर की सज़ा	423
यूसुफ़ (عليه السلام) की तरफ़ चोरी की निस्बत	424
बिनयामीन की कैद और भाईयों का मिन्नत समाजत करना	424
यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों क. मायूसी के बाद मश्वरा	425
याक़ूब (عليه السلام) की उदासी	426
हुक्मे याक़ूब (عليه السلام) कि दोनों भाईयों को तलाश करो	428
हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से तीसरी मुलाक़ात	429
याक़ूब (عليه السلام) की बीनाई (नज़रें) लौट आयी	432
क़ाफ़िल-ए-याक़ूब मिस्र में	433
दुआए यूसुफ़ (عليه السلام) और मौत की दुआ करने की हक़ीक़त	435
अम्बिया (عليه السلام) को वही के ज़रिये वाक़ियात की ख़बर दी जाती है	439
शिर्के ख़फ़ी की हक़ीक़त	440
अल्लाह तआला की वहदानियत (एक होने की) की दावत	444
नबुव्वत व रिसालत मर्दों में ही रही	444
अम्बिया (عليه السلام) की मुख़ालिफ़त का अंजाम	446
माज़ी (भूतकाल) के वाक़ियात बाइसे इब्रत व नसीहत हैं	448
तफ़्सीर सूरह रअ़द	449
अल्लाह तआला की नाज़िलकर्दा तमाम बातें हक़ हैं	452
आसमान और अर्श की तख़्लीक़	453
अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला का बयान	455
इंकारे क़यामत का बयान	456
अज़ाब का वक़्त मुक़र्रर है	457
हिदायत अल्लाह तआला के इख़्तियार में है	458
माँ के पेट में परवरिश पाने वाले बच्चे की हक़ीक़त से सिर्फ़ अल्लाह आगाह है	459
अल्लाह का इल्म तमाम मख़्लूक़ को मुहीत है	461
आसमानी बिजली की गरज चमक	464
मुश्रिकीन को समझाने के लिए एक मिसाल	468
हक़ की पायेदारी बातिल के बेसबाती	470
नेक काम का अच्छा जबकि बुरे काम का बुरा बदला	472
मोमिन बन्दों की नेक सिफ़ात	473
नाफ़र्मान बन्दों की अलामात (पहचान)	475
दुनिया की हक़ीक़त	476
जन्नतियों पर अल्लाह तआला के इन्आमात	477
मुहम्मद (ﷺ) की हौसला अफ़्ज़ाई	481

कुरआने करीम की तारीफ़	482
अल्लाह तआला ही हक़ीक़ी मुहाफ़िज़ है	484
जहन्नम के अज़ाब और जन्नत के नज़ारे	486
कुरआन के नाज़िल होने से ईमान वालों को ख़ुशी मिलती है	488
मोजिज़ात का सुदूर (लाना) रसूलों के इख़्तियार में नहीं	489
नबी (ﷺ) के ज़िम्मे तब्लीग़	492
काफ़िरों की तदबीरें नाकाम, अल्लाह का इरादा कामयाब	493
रिसालत व नबुव्वत के मुंकिर (इंकार करने वाला)	493
तफ़्सीर सूरह इब्राहीम	495
मोमिन रोशनी और काफ़िर अंधेरे में	498
हर नबी उसी क़ौम से होता है	499
बनी इस्राईल की तरफ़ मूसा (عليه السلام) की बइसत	500
बनी इस्राईल को मूसा (عليه السلام) का वअज़	503
क़ौम की ईज़ा रसाइयों पर अम्बिया (عليهم السلام) का अल्लाह पर तवक्कल	504
अहले जहन्नम की ख़ुराक	506
बेकार बेसूद अमलों की मिसाल	508
कायनाते रंग व बू का ख़ालिक़	509
मैदाने महशर में तमाम मख़्लूक़ात जमा होंगी	510
क़यामत के दिन शैतान का ऐतिराफ़े जुर्म और अपने मुतबेईन से इज़्हारे ला ताल्लुक़ी	512
कलिम-ए-तय्यिबा और शजर-ए-तय्यिबा की मिसाल	514
क़ब्र का इम्तिहान और जज़ा व सज़ा	516
नेअ़मत की नाक़द्री की सज़ा	525
अल्लाह तआला नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और सदक़ा करने का हुक्म दे रहा है	527
अल्लाह की नेअ़मतें और उसकी शुक्रगुज़ारी	528
मक्का के लिए अमन की दुआ	529
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की एक और दुआ	531
अल्लाह की अताकर्दा मोहलत से नाजाइज़ फ़ायदा न उठाओ	532
क़यामत के दिन दुनिया में लौटाए जाने की आरज़ू नामंज़ूर	533
क़यामत के दिन ज़मीन व आसमान बदल दिए जाएँगे	535
जहन्नम में जाने वाले गंधक के लिबास में क़ैद	537
कुरआन का लोगों के नाम खुला पैग़ाम	538
तफ़्सीर सूरह हिज्र	539
क़यामत के दिन काफ़िर मुसलमान होने की आरज़ू करेंगे	542
काफ़िरों की सरकशी ज़िद्द और तकब्बुर	544
अम्बिया (عليهم السلام) का मज़ाक़ उड़ाने का नतीजा	545
आसमानी बुर्जों से क्या मुराद है?	546
हर क़िस्म के ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास हैं	548
इंसान की पैदाइश	550
फ़रिश्तों का आदम (عليه السلام) को सज्दा और इब्लीस का इंकार	551
इब्लीस रांदा दरगाह है	552
जन्नत में उख़ुव्वते इस्लामी (इस्लामी भाईचारगी) का एक मंज़र	554
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को इस्हाक़ (عليه السلام) की बशारत	556
क़ौमे लूत (عليه السلام) पर अज़ाबे इलाही का नुज़ूल	557
क़ौमे लूत की ग़ैरअख़्लाक़ी और ग़ैर फ़ितरी हालत	559
क़ौमे लूत (عليه السلام) की तबाही का ज़िक्र	559
क़ौमे शुऐब का अंजाम	560
समूदियों का अलमनाक अज़ाब	561
मुश्रिकीन से चश्मपोशी का हुक्म	561
सब्अ मसानी से क्या मुराद है?	562
क़यामत के दिन इंकार करने वालों से सवाल होगा	564
रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन का इबरतनाक अंजाम	567

तफ़्सीर सूरह नहल	570
क़यामत आने की जल्दी न मचाओ	573
अल्लाह की वही अम्बिया (ﷺ) पर हुई है	574
इंसान की अपनी पैदाइश को भूलना और बातें बनाना	574
चौपाये इंसान के फ़ायदे के लिए	575
मसला घोड़े की हिल्लत व हुर्मत	576
दीनो दुनिया की मिसालें	578
पानी और फल अल्लाह की नेअ़मतें	579
चांद, सूरज और सितारे अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियां हैं	580
समुन्द्र से लोगों के लिए फ़वाइद	581
हर चीज़ का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है	583
मुंकिरीने क़यामत का तज़्किरा	584
नमरूद वग़ैरह का अंजाम	585
मौत के वक़्त ज़ालिमों की कैफ़ियत	587
मुश्रिकीन किस चीज़ का इंतिज़ार कर रहे हैं	588
मुश्रिकीन का मशिय्यते इलाही से ग़लत इस्तिदलाल	589
क़यामत क़ायम करना अल्लाह तआला के लिए इंतिहाई आसान है	591
अल्लाह तआला के रास्ते में हिजरत करने की फ़ज़ीलत	592
मंसबे रिसालत का हक़दार इंसान	593
अल्लाह तआला के ग़ुस्से ग़ज़ब का बयान	595
अ़र्श से फ़र्श तक हर चीज़ अल्लाह तआला को सज्दा करती है	597
मुश्रिकीन का अजीब दावा और क़ाबिले अफ़सोस रवैया	598
अल्लाह तआला का करम कि गुनाह पर फ़ौरन पकड़ नहीं करता	599
हर नबी को ही झुठलाया गया है	601
शहद की मक्खी कुदरत का नमूना नीज़ शहद क़ाबिले शिफ़ा है	602
बख़ीली और शदीद बुढ़ापे से पनाह मांगने का हुक्म	605
तुम अपने हक़ में शरीक बर्दाश्त नहीं करते अल्लाह क्यूँ कर करे	606
अल्लाह तआला का एक और एहसान	606
काफ़िर और मोमिन की मिसाल	608
बुतों के बारे में एक मिसाल का ज़िक्र	608
अल्लाह का कमाले इल्म और कमाले कुदरत	609
राहत व आराम वाली नेअ़मतें	611
मुश्रिक सबसे बडा गुमराह है	613
कुरआन मजीद में हर चीज़ का बयान	615
अ़दल, एहसान, सिलारहमी और फ़हशा व मुंकर का मतलब	616
क़समों और अहदो पैमान की हिफ़ाज़त का हुक्म	618
हिदायत और गुमराही अल्लाह तआला के इख़्तियार में है	621
नेक आमाल का बेहतर बदला ज़रूर मिलेगा	622
तिलावते कुरआन के आग़ाज़ में शैतान के शर से अल्लाह की पनाह मांगना	623
नस्ख़ की हिक्मत मुश्रिक नहीं जानते	624
काफ़िरों का एक बोहतान और उसका रद्द	925
मुहम्मद (ﷺ) की सदाक़त का बयान	626
मजबूरन कुफ़्र का इर्तिकाब नाक़िस ईमान नहीं	627
हिजरत और जिहाद का बदला बख़्शिश है	630
नेअ़मतों की नाशुक्री का नतीजा	631
कुछ हरामकर्दा चीज़ों का तज़्किरा	632
यहूदियों पर कुछ हराम की गयी चीज़ों का ज़िक्र	633
इब्राहीम (ﷺ) रुश्दो हिदायत के इमाम थे	634
हर उम्मत के लिए हफ़्ते के कुछ दिनों की हुर्मत का बयान	636
नसीहत और हिक्मत से मुराद	637
हुसूले किसास और सब्र का बयान	638

सूरह अन्फ़ाल

الانفال

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह अन्फ़ाल - 08

आयातः 75 मदनी सूरह, पैराग्राफ़ः8

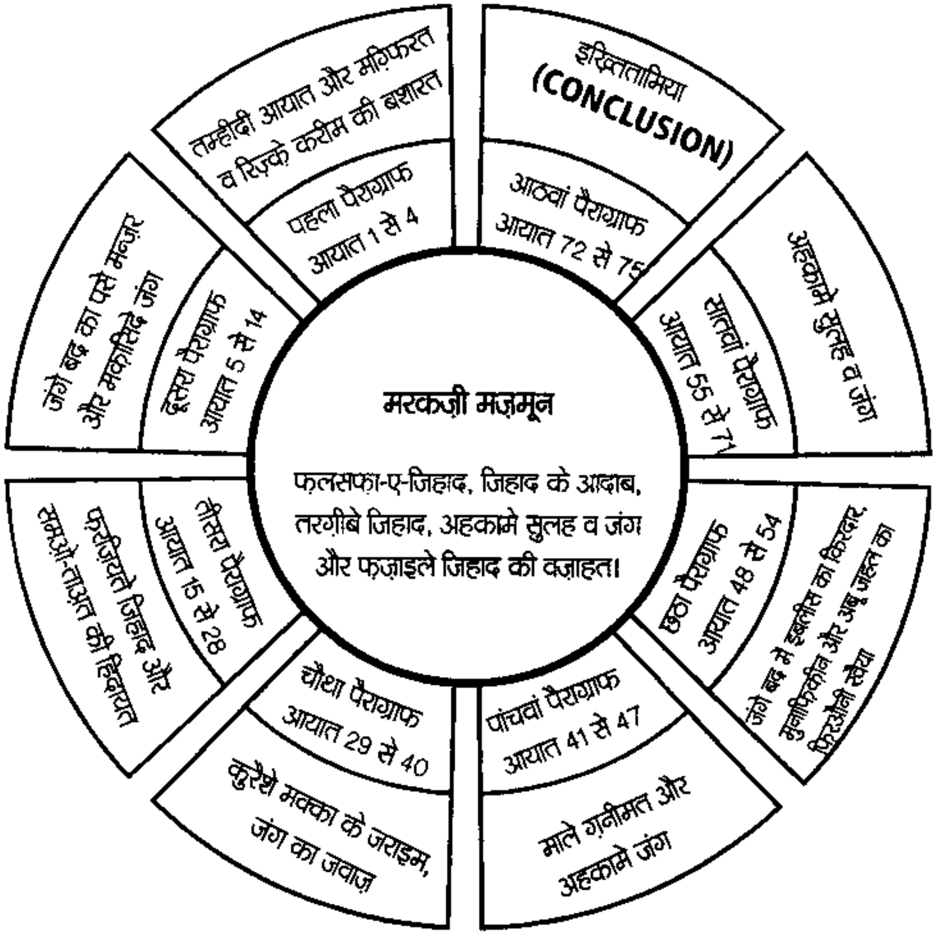

ज़मान-ए-नुज़ूल और पसे मन्ज़रः

जंगे बद्र, रमज़ान 2 हिजरी में वाकेअ हुई। सूरह (अन्फ़ाल), एक मदनी सूरह है, जो जंगे बद्र के बाद ग़ालिबन जुलकअदा दो हिजरी में नाज़िल हुई। जंगे बद्र से पहले सूरह (अत्तलाक़) और सूरह (मुहम्मद) नाज़िल हुई थी।

सूरह अन्फ़ाल

ये सूरत मदनी है। इसमें दस रुकूअ और 75 आयात हैं। इस सूरत का ज़्यादातर हिस्सा ग़ज़्वाए बद्र के दौरान या उसके फ़ौरन बाद नाज़िल हुआ यानी 2 हिजरी के साल में। इस सूरत का नाम इसकी पहली आयत में आने वाले लफ़्ज़ अन्फ़ाल से है। जो नफ़्ल की जमा है। नफ़्ल के मानी ज़ाइद (ज़्यादा) के हैं। लेकिन इस सूरत में इससे मुराद वो माल है जो किसी जंग में दुश्मन से हासिल होता है और इसका इतलाक़ उस सारे माल पर होता है जो तक़सीम से पहले फ़ौज के हाथ लगता है। इसे इस्तिलाह में माले ग़नीमत कहा जाता है। क्योंकि ग़ज़्व-ए-बद्र कुफ़्र और इस्लाम के दरम्यान पहली बाक़ाइदा जंग थी और उस जंग में दुश्मन का काफ़ी माल हाथ लगा जिसकी तक़सीम का मसला दरपेश था। इसलिये अल्लाह तआला ने नबी (ﷺ) को माले ग़नीमत की तक़सीम के उसूल व क़वाइद इस सूरत में बता दिये।

सूरह अन्फ़ाल का मर्कज़ी मज़्मून जंगे बद्र है। ये कुफ़्र व इस्लाम का पहला मअरका था। इस मअरके में 317 मुसलमान (मशहूर 313) क़ुरैशी के एक हज़ार जंगजू से लड़े थे और अल्लाह तआला ने फ़ैसलाकुन फ़तह अता फ़र्माई। यौमे बद्र को इस सूरत की आयत 61 में यौमे फ़ुरक़ान भी कहा गया है। यानी वो दिन जिसमें हक़ व बातिल में फ़र्क़ कर दिया गया। इस जंग में मुसलमानों के हाथ दुश्मन का बेशुमार माल हाथ आया और दुश्मन के सत्तर क़ैदी बनाये गये। इसलिये माले ग़नीमत की तक़सीम और जंगी क़ैदियों के साथ सुलूक के उसूल भी इस सूरह में तय किये गये हैं। माले ग़नीमत जो जाहिलियत के ज़माने में ताक़तवरों, सरदारों, हुक्मरानों और सिपहसालारों की मिल्कियत समझा जाता था उसके बारे में इस सूरत की पहली आयत में ये कह दिया गया कि वो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल का है। किसी दूसरे का न इस पर कोई हक़ है न किसी की मिल्कियत है। आयत 61 में इस माल की तक़सीम का उसूल बयान किया गया है कि इसका पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह और उसके रसूल और रसूल के रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये है। बाक़ी 4 हिस्से जिहाद में हिस्सा लेने वाले मुजाहिदीन के लिये हैं। जिसका ज़िक्र अगरचे इस आयत में नहीं है लेकिन इस उसूल का पता नबी (ﷺ) की हदीसों और आपके अमल से चलता है। जंगी क़ैदियों के उसूल आयत नम्बर 67 से 71 में दिये गये हैं।

तफ़्सीर सूरह अन्फ़ाल

इसमें (75) आयतें हैं (1631) कलिमात हैं और (5294) हुरूफ़ हैं, वल्लाहु आलम!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है''

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ①

तर्जुमा : ''यह लोग आपसे ग़नीमतों के माल के बारे में पूछते हैं। आप कह दीजिए कि यह ग़नीमतें अल्लाह तआला की हैं और रसूलुल्लाह की हैं। तो तुम अल्लाह तआला से डरो और अपने आपसी ताल्लुक़ात की इस्लाह करो। और अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करो अगर तुम ईमान वाले हो।'' (1)

माले ग़नीमत के अहकाम और उसको नफ़्ल कहने की वजह (आयत 1) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं ''अन्फ़ाल'' माले ग़नीमत को कहते हैं और कहा कि सूरह अन्फ़ाल ग़ज़्व-ए-बद्र में नाज़िल हुई है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुल अन्फ़ाल, बाब क़ौलुहू **(यस्अलूनका अनिल अन्फ़ाल. कुलिल् अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि.....)** : 4645; सहीह मुस्लिम : 3031) इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा है कि अन्फ़ाल वह ग़नीमत हैं कि वह किसी का हक़ नहीं सिर्फ़ नबी अकरम (ﷺ) का हक़ है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से जब कोई बात पूछी जाती तो कहते कि न मैं इजाज़त देता हूँ, न मना करता हूँ। फिर इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला ने नबी अकरम (ﷺ) को मना करने वाला, हुक्म देने वाला और हलाल व हराम की तशरीह करने वाला बनाकर भेजा है। क़ासिम (रह.) कहते हैं कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास एक आदमी आया और अन्फ़ाल के बारे में आपसे सवाल किया। आप (रज़ि.) ने कहा कि ''अन्फ़ाल यह है कि एक आदमी जंग में दूसरे को मारकर उसका घोड़ा और हथियार माले ग़नीमत के तौर पर ले ले।'' उस आदमी ने फिर सवाल किया, तो आप(रज़ि.) ने फिर वैसा ही जवाब दिया। फिर उसने सवाल किया तो आप (रज़ि.) को गुस्सा आ गया और आप (रज़ि.) उस पर हमला करने के क़रीब हो गए। फिर इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि उसकी मिसाल तो उस शख़्स की तरह है जिसको हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मारा था, यहाँ तक कि ख़ून उसकी ऐड़ी और पैर पर बहने लगा था, तो उस आदमी ने कहा कि क्या तुम भी वह नहीं हो कि उमर (रज़ि.) का बदला अल्लाह तआला ने तुमसे लिया है। यह इस्नाद सही है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नफ़्ल की तफ़्सीर उस माले-ग़नीमत से की जो जंग

में जीता हुआ माल, इमाम कुछ अश्ख़ास (आदमियों) को असल ग़नीमत के तक़्सीम के बाद कुछ और ज़्यादा दे देता है और अक्सर फ़ुक़्हा (दीन की समझ रखने वाले) ने भी अन्फ़ाल का मतलब यही अख़ज़ किया है।

लोगों ने नबी अकरम (ﷺ) से उस पाँचवें हिस्से के बारे में पूछा जो चार हिस्सा निकाल लेने के बाद रह जाए तो यह आयत उतरी (यस्अलूनक अनिल अन्फ़ाल) इब्ने मसऊद (रज़ि.) और मसरूक़ (रह.) कहते हैं कि 'नफ़्ल' का इत्लाक़ बरोज़े जंग (लड़ाई के दिन) जीते हुए माल पर नहीं बल्कि जंग की सफ़ें क़ायम करने से पहले होता है क्योंकि वह तो एक क़िस्म की ज़्यादती है। इब्ने मुबारक (रह.) कहते हैं कि मतलब यह है कि "ऐ नबी (ﷺ)! तुमसे लोग उस लौण्डी, गुलाम, सवारी और सामान वग़ैरह के बारे में पूछते हैं जो बग़ैर जंग के मुश्रिकीन से मुसलमानों को मिला हो, तो यह नबी अकरम (ﷺ) का हक़ है वह जैसा चाहें उसको ख़र्च करें। इससे यह नतीजा निकलता है कि वह माले फ़ै को अन्फ़ाल समझते हैं। और फ़ै वह माल है जो कुफ़्फ़ार से बग़ैर लड़ाई के हासिल हो। और दूसरे लोगों का ख़्याल है कि सराया (वह जंग जिसमें ख़ुद अल्लाह के रसूल (ﷺ) शरीक न हुए हों, बल्कि सहाबा (रज़ि.) को जंग के लिए भेजा है) से जो माल मिल जाए वह अन्फ़ाल है यानी मुसलमान काफ़िरों से लड़ने के लिए गए हों और काफ़िर लड़े बग़ैर अपना मालो मताअ और सामान वग़ैरह छोड़कर भाग गए हों और यह माल मुसलमानों के हाथ लग गया हो और नबी (ﷺ) उस लश्कर के साथ न हों। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद लश्कर के किसी रिसाले को उसकी कारगुज़ारी के बदले में या उसके हौसला अफ़ज़ाई की ख़ातिर इमामे वक़्त उन्हें आम तक़्सीम से कुछ ज़्यादा दे दे। सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) कहते हैं कि जंगे बद्र में मेरा भाई उमेर (रज़ि.) क़त्ल कर दिये गये थे तो मैंने भी सईद बिन आस को क़त्ल कर दिया और उसकी तलवार ले ली जिसका नाम ज़ुल कुतैफ़ा था। उसको नबी करीम (ﷺ) के पास ले आया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "क़ब्ज़ा किया हुआ माल को ज़ख़ीरे में डाल आओ।" मैं डाल देने के लिए जा रहा था। उस वक़्त मेरे दिल की हालत को अल्लाह ही जानता था, एक तो भाई का क़त्ल दूसरे जो कुछ मैंने छीना था वह भी ले लिया गया। लेकिन मैं थोड़ी दूर ही गया था कि सूरह अन्फ़ाल की यह आयत उतरी। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे बुलाकर कहा कि "जाओ! अपना छीना हुआ माल ले लो।" (अहमद : 1/180; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) के बीच इंक़िताअ है।) सअद बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आज मुझे मुश्रिकीन की हज़ीमत से शिफ़ा बख़्शी है अब यह तलवार मुझे बख़्श दीजिए। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "यह तलवार न तुम्हारी है न मेरी इसको रख दो।" मैंने रख दी और वापिस हुआ और दिल में ख़्याल कर रहा था कि मुझे नहीं मिली तो कोई ऐसा शख़्स पा लेगा जो मुझ जैसा मुस्तहिक़ नहीं और जिसने न ऐसी मुसीबत बर्दाश्त की जैसी मैंने की, कि अचानक किसी ने मुझको पीछे से आवाज़ दी। मैं हुज़ूर (ﷺ) के पास पहुँचा और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या कोई वह्यी नाज़िल हुई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुमने मुझसे तलवार मांगी थी लेकिन वह मेरी थी ही नहीं कि मैं तुम्हें देता, अब अल्लाह तआला ने वह्यी (मैसेज ऑफ अल्लाह) के ज़रिये मुझे दे दी है तो लो! अब मैं तुम्हें देता हूँ।" अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की है कि (यस्अलूनक अनिल अन्फ़ाल...) (अबूदाऊद,

किताबुल जिहाद, बाब फ़िन्नफ़्ल : 2740 सहीह; व रवाहु मुस्लिम : 1748; मिन तरीक़िन आख़र; तिर्मिज़ी : 3079; अहमद : 1/178) सअद (रज़ि.) कहते हैं कि मेरे बारे में चार आयतें उतरी हैं। जंगे बद्र में एक तलवार पर मैंने क़ब्ज़ा कर लिया था। मैं नबी अकरम (ﷺ) के पास आया और कहा, यह तलवार मुझे दे दीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जहाँ से ली है वहीं रख दो।" आप (ﷺ) ने दो बार कहा। मैंने फिर दरख़्वास्त की तो आप (ﷺ) ने फिर यही कहा। चुनाँचे अन्फ़ाल वाली आयत उतरी। और मेरे बारे में दूसरी आयत है (وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ) (29/अन्कबूत : 8) तीसरी आयत (إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ) (5/माइदा : 90) और चौथी आयते वसिय्यत। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा; बाब फ़ी फ़ज़्लि सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) : 1748; मुस्नद तयालिसी : 208)

मालिक बिन रबीआ (रज़ि.) कहते हैं कि बद्र के दिन इब्ने आइज़ की तलवार मेरे क़ब्ज़े में आई जिसका नाम मरज़िबान था। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि "अपना अपना लूटा हुआ माल रख दो" तो मैंने भी यह तलवार रख दी। और रसूलुल्लाह (ﷺ) की आदते शरीफ़ा थी कि कोई कुछ माँगे तो सवाल रद्द नहीं करते थे, अरक़म (रज़ि.) ने यह तलवार देखकर हुज़ूर (ﷺ) से मांग ली और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने दे दी।

आयत के नुज़ूल की दूसरी वजह : अबू उमामा (रज़ि.) कहते हैं कि अन्फ़ाल के बारे में मैंने उबादा (रज़ि.) से सवाल किया तो उन्होंने कहा, हमारे साथ मुजाहिदीने बद्र भी थे, और यह आयत उस वक़्त उतरी है जबकि अन्फ़ाल के लिए हममें इख़्तिलाफ़ पड़ गया और हम आपस में तेज़ व तल्ख़ बातें करने लगे, तो बात अल्लाह तआला ने हमारे हाथ से ले ली और नबी अकरम (ﷺ) को दे दी। अब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने यह माले-ग़नीमत मुसलमानों में बराबर-बराबर बांट दिया। (अहमद : 5/322; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दारमी : 2/229; हाकिम : 2/136; बैहक़ी : 6/292; इब्ने माजा : 2852; वहुव सहीहुन) उबादा बिन सामित (रज़ि.) कहते हैं कि मैं बद्र में हुज़ूर (ﷺ) के साथ शरीक था। अल्लाह तआला ने दुश्मन को हार दे दी अब एक जमाअत ने तो दुश्मनों का पीछा किया और भागतों को क़त्ल किया और एक जमाअत लश्कर पर आ पड़ी कि उनका मुहासिरा कर रही थी और एक नबी-ए-अकरम (ﷺ) को घेरे में लिए हुए आप (ﷺ) की हिफ़ाज़त कर रही थी कि कहीं दुश्मन नुक़्सान न पहुँचाए। जब रात हो गई और माले ग़नीमत तक़्सीम करने लगे, तो जिन लोगों ने माले ग़नीमत को समेटकर महफ़ूज़ किया था, कहने लगे कि इसके सिर्फ़ हम हक़दार हैं, और जो दुश्मन के पीछे गए थे उनका कहना था कि हम दुश्मन की शिकस्त की वजह हैं इसलिए सिर्फ़ हम हक़दार हैं और जिन्होंने हुज़ूर (ﷺ) की हिफ़ाज़त की थी वह कहते थे कि हमको इस बात का सख़्त अंदेशा था कि कहीं हुज़ूर (ﷺ) को नुक़्सान न पहुँचे। इसलिए हम तो एक बहुत ही अहम काम में मसरूफ़ थे। चुनाँचे यह आयत उतरी कि अन्फ़ाल तो अल्लाह तआला और अल्लाह के रसूल (ﷺ) का है पस अल्लाह तआला से डरो और आपस में सुलह क़ायम रखो। अब हुज़ूर (ﷺ) ने मुसलमानों में उसको बांट दिया। और नबी अकरम (ﷺ) की आदते मुबारका थी कि जब दुश्मन पर होते तो उसी दिन वही चौथाई माले ग़नीमत बांट देते और जब वापिस हो चुकते

तो तिहाई हिस्सा बाँटते और अपने लिए उसको नामुनासिब समझते। (तिर्मिज़ी, किताबुस् सियर, बाब फ़िन्नफ़्ल : 1561; इब्ने माजा : 2852; मुख़्तसरन वहुव सहीहुन; अहमद : 5/323; हाकिम : 2/135; इब्ने हिब्बान : 4857; बैहक़ी : 6/292) इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि जंगे-बद्र के दिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो ऐसी-ऐसी कारगुज़ारियाँ बताएगा उसको ऐसा ऐसा इन्आम दिया जाएगा। अब नौजवान तो अपनी कारगुज़ारी बताने की कोशिश में लग गए और बूढ़ों ने मोर्चे और झण्डे संभाल लिए और जब माले ग़नीमत आया तो जिसके लिए वादा किया गया था वह लेने के लिए आए। बूढ़ों ने कहा, तुमको हम पर तर्जीह नहीं हो सकती, हम तुम्हारे पुश्त पनाह बने हुए थे अगर तुम्हें हज़ीमत (हार) होती तो हमारे ही पास तुमको पनाह मिलती। बात बढ़ गई, झगड़ा हुआ तो अन्फ़ाल वाली आयत उतरी। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िन्नफ़्ल : 2737; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 5093; हाकिम : 2/131; इमाम हाकिम (रह.) ने इस रिवायत को सही कहा है और इमाम ज़हबी (रह.) ने इनकी मुवाफ़िक़त की है।) इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि बद्र के दिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिसने किसी को क़त्ल किया उसको माले मक़्तूल में से यह यह इन्आम और जो किसी को क़ैद कर लाएगा उसको यह इन्आम। चुनाँचे अबुल यस्र (रज़ि.) ने दो क़ैदी पकड़े और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने वादा किया था। तो सअद बिन उबादा (रज़ि.) बोल उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आपने इस तरह दे दिया तो आपके दूसरे अस्हाब के लिए कुछ न बचेगा। हम जो मैदाने जंग में रुके रहे तो उसकी वजह कुछ यह नहीं थी कि हमको माल का या मुआवज़ा का लालच न था और न यह कि हम दुश्मन से घबराते थे। हम तो यहाँ सिर्फ़ इसलिए ठहरे रहे कि कहीं आप पर पीछे से हमला न हो जाए। मक़ामी हिफ़ाज़त की भी सख़्त ज़रूरत थी। ग़र्ज़ यह कि कुछ झगड़ा हो गया और यह आयत नाज़िल हुई। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 9483; इसकी सनद में मुहम्मद बिन साइब कल्बी मतरूक रावी है (अत्तक़रीब : 2/163; रक़म : 240) जबकि अबू सालेह का इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। लिहाज़ा यह रिवायत मौज़ूअ (मनगढ़त) है।) इर्शादे बारी तआला है (وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ)(7/आराफ़ : 41) यानी जो माले ग़नीमत तुमको मिला है उसमें पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह तआला का है। इमाम अबू उबेद (रह.) ने अपनी किताब ''अल्अम्वालुश्शरइया'' में लिखा है कि अन्फ़ाल, ग़नीमत के मालों को कहते हैं और हर वह माल जो हर्बियों (लड़ाई करने वाले दुश्मनों) से मुसलमानों को मिले। अन्फ़ाल पर सबसे पहले तो रसूलुल्लाह (ﷺ) का हक़ है जैसाकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़र्मा दिया है। आप (ﷺ) ने बद्र के दिन उसकी तक़्सीम हस्बे हिदायते बारी तआला पाँचवाँ हिस्सा निकाले बग़ैर की थी। जैसाकि हदीसे सअद (रज़ि.) में हम ज़िक्र कर चुके हैं। फिर उसके बाद आयते ख़ुमुस नाज़िल हुई, तो पहली आयत मंसूख़ हो गई। इब्ने ज़ैद (रज़ि.) का बयान है कि मंसूख़ नहीं हुई बल्कि वह भी क़ायम है। अबू उबेद (रह.) कहते हैं कि इस बारे में और भी हदीसें हैं।

अन्फ़ाल तमाम माले ग़नीमत को कहते हैं। लेकिन इसमें से ख़ुमुस नबी अकरम (ﷺ) के अहल के लिए ख़ास है जैसाकि क़ुरआन में है और हदीसों में है। 'अन्फ़ाल' कलामे अरब में हर वह एहसान है जो मुहसिन ने महज़ सलूक के तौर पर किया हो और उस पर एहसान करना वाजिब न हो। यही है वह माले ग़नीमत

जिसको अल्लाह तआला ने मोमिनीन के लिए हलाल कर दिया है और यह वह चीज़ है कि हम मुसलमान ही इससे मख़्सूस हैं और मुसलमानों से पहले दूसरी उम्मतों पर माले ग़नीमत हलाल नहीं था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मुझे ख़ुमुस का हक़दार बनाया गया है, कि मुझसे पहले किसी को ख़ुमुस नहीं दिया गया था।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब : 1, 335; सहीह मुस्लिम : 521) अबू उबेद (रह.) कहते हैं कि इमाम अगर फ़ौज के अफ़राद को कोई इन्आम दे जो उनके मुक़र्ररा हिस्से के अलावा ही हो तो उसको नफ़्ल या अन्फ़ाल कहते हैं और यह उसका कारगुज़ारियों और दुश्मन पर ज़ोरदार हमला करने के लिहाज़ करते हुए होता है। यह नफ़्ल जो इमाम की तरफ़ से ऐतिराफ़े हुस्न कारगुज़ारी के तौर पर मिलता है चार तरीक़ों पर होता है हर तरीक़ा अपनी जगह पर दूसरे तरीक़े से अलग है। एक तो मक़्तूल का लूटा हुआ माल व अस्बाब, उसमें से कोई पाँचवाँ हिस्सा नहीं निकाला जाता। दूसरा वह नफ़्ल जो पाँचवाँ हिस्सा अलग करने के बाद दिया जाता है। जैसेकि इमाम ने कोई छोटा सा लश्कर दुश्मन पर भेज दिया वह ग़नीमत का माल लेकर पलटा तो इमाम उसमें से उस लश्कर को चौथाई या तिहाई हिस्सा अपने हस्बे सवाबदीद तक़्सीम कर दे। तीसरा यह तरीक़ा कि जो ख़ुमुस से निकालकर बाक़ी तक़्सीम किया जाने वाला है, इसमें से अपने हस्बे सवाबदीद (समझ के मुताबिक़) और हस्बे कारगुज़ारी जिसको जितना मुनासिब समझे दे और बाक़ी तक़्सीम कर दे। चौथी सूरत यह कि सारी ग़नीमत में से नफ़्ल दे इससे पहले कि ख़ुमुस निकाले और यह सिक़ाओं, चरवाहों, साईसों और दीगर मज़दूरों का हक़ होता है। ग़र्ज़ यह कि कई सूरतों से इसकी तक़्सीम होती है।

इमाम शाफ़ेई (रह.) कहते हैं कि माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा निकालने से पहले मुजाहिदीन को मक़्तूलीन का जो सामान और मालो-मताअ दिया जाता है, वह अन्फ़ाल में दाख़िल है। दूसरी वजह यह है कि हुज़ूर (ﷺ) का वह हिस्सा जो पाँचवें हिस्से में से पाँचवाँ हिस्सा था उसमें से आप (ﷺ) जिसे चाहें, और जितना चाहें अता करे, यह भी नफ़्ल है। पस इमाम को चाहिए कि दुश्मनों की कसरत (ज्यादा होना) और मुसलमानों की क़िल्लत (कम होना) और इसी क़िस्म के ज़रूरी मौक़ों का लिहाज़ रखते हुए तरीक़े सुन्नत की पैरवी करे। अगर ऐसी मस्लिहत दरपेश न हो तो नफ़्ल निकालना ज़रूरी नहीं। तीसरी वजह यह है कि इमाम एक जमाअत काफ़िरों से लड़ने के लिए भेजता है और उनसे कह देता है कि जो शख़्स जो कुछ हासिल करे उसमें से पाँचवाँ हिस्सा तो अलग कर दे और बाक़ी ले ले और यह बात जंग पर जाने से पहले ही आपसी रज़ामंदी से तै पा चुकी होती है। लेकिन उनके इस बयान में जो कहा गया है कि बद्र की ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा नहीं निकाला गया, उसमें ऐतिराज़ की गुंजाइश है। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि दो ऊँटनियाँ वह हैं जो उन्हें बद्र के दिन पाँचवाँ हिस्से में से मिलीं थीं। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस : 3091; सहीह मुस्लिम : 1979) मैंने इसका पूरा बयान किताबुस्सीरत में कर दिया है। क़ौलुहू तआला (फ़त्तक़ुल्लाह व अस्लिहू ज़ात बयनिकुम) यानी अपने उमूर में अल्लाह तआला से डरो और आपस में सुलह कुल से रहो, न एक दूसरे पर ज़ुल्म करो, न दुश्मन बनो। अल्लाह तआला ने तुम्हें जो हिदायत और इल्म दिया है क्या यह उस माल से बेहतर नहीं जिसके लिए तुम लड़ रहे हो। और अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की इताअत करो। नबी-ए-अकरम (ﷺ) जो तक़्सीम करते हैं वह अल्लाह तआला के हस्बे इरादा ही करते हैं। इनकी तक़्सीम अद्लो इंसाफ़ पर मब्नी होती है। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि (अस्लिहू ज़ात बयनिकुम) के

मअ़नी हैं कि आपस में लड़ो झगड़ो नहीं और गाली गलूच न बको।

अनस (रज़ि.) कहते हैं कि हमने एक बार नबी अकरम (ﷺ) को देखा कि आप (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कौनसी चीज़ हंसी की वजह हुई? तो फ़र्माया कि "मेरे दो उम्मती अल्लाह तआ़ला के सामने घुटने टेककर खड़े हो गए हैं। एक अल्लाह तआ़ला से कहता है कि या रब! इसने मुझ पर ज़ुल्म किया है मैं बदला चाहता हूँ। अल्लाह तआ़ला उससे फ़र्माता है कि अपने ज़ुल्म का बदला अदा करो। ज़ालिम जवाब देता है कि या रब! अब मेरी कोई नेकी बाक़ी नहीं रही कि ज़ुल्म के बदले में इसे दे दूँ। तो वह मज़्लूम कहता है कि ऐ अल्लाह तआ़ला! मेरे गुनाहों का बोझ इस पर डाल दे। यह कहते हुए हुज़ूर (ﷺ) रोने लगे और फ़र्माने लगे कि वह बड़ा ही सख़्त दिन होगा। लोग इस बात के ज़रूरतमंद होंगे कि अपने गुनाहों का बोझ किसी और के सर धर दें। अब अल्लाह तआ़ला तालिबे इंतिक़ाम से कहेगा कि नज़र उठाकर जन्नत की तरफ़ देख! वह सर उठाएगा, जन्नत की तरफ़ देखेगा और अ़र्ज़ करेगा, या रब! इसमें तो चाँदी और सोने के महल हैं, मोतियों के बने हुए हैं। या रब! यह महल किस नबी और किस सिद्दीक़ और शहीद के हैं? अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि जो इसकी क़ीमत अदा करता है उसको दे दिए जाते हैं। वह कहेगा, या रब! कौन इसकी क़ीमत अदा कर सकता है, अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि तू उसकी क़ीमत अदा कर सकता है। अब वह अ़र्ज़ करेगा, या रब! किस तरह? अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ल शानुहू इर्शाद फ़र्माएगा, वह इस तरह कि तू अपने भाई को माफ़ कर दे। वह कहेगा, या रब! मैंने माफ़ कर दिया। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा, अब तुम दोनों एक दूसरे का हाथ थामे जन्नत में दाख़िल हो जाओ।" उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तआ़ला से डरो, आपस में सुलह क़ायम रखो। क्योंकि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला मोमिनीन के बीच आपस में सुलह कराने वाला है।" (हाकिम : 4/576; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अद्दुर्रुल मंसूर : 3/296; इसकी सनद में अब्बाद बिन शैबा हब्ती ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/266; रक़म : 4120) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने भी इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। देखिए (ज़ईफ़ुत्तर्ग़ीब : 2103)

***

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ
زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝٢ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنفِقُونَ ۝٣ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ۝٤

तर्जुमा : "बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह आयतें उनके ईमान को और ज़्यादा कर देती हैं और वह लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2) जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने उनको जो कुछ दिया है वह उसमें से ख़र्च करते हैं। (3) सच्चे ईमान वाले यह लोग हैं उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी।" (4)

ईमान कम और ज़्यादा होता है नीज़ अहले ईमान की सिफ़ात (आयत 2-4) : मुनाफ़िक़ीन जब फ़र्ज़ नमाज़ का फ़रीज़ा अदा करते दिखाई देते हैं तो कुरआन की आयतें पल भर भी उनके दिल पर असर नहीं करतीं न अल्लाह तआला की आयतों पर ईमान लाते हैं, न अल्लाह तआला पर भरोसा करते हैं, न नमाज़ पढ़ते हैं जबकि घर में होते हैं, न अपने माल की ज़कात देते हैं। अल्लाह पाक ख़बर देता है कि मोमिन ऐसे नहीं होते। मोमिनीन की सिफ़ात इस आयत में यूँ फ़र्माता है कि जब वह कुरआन पढ़ते हैं तो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से उनके दिल काँप उठते हैं। जब आयतें उनके सामने तिलावत की जाती हैं तो तस्दीक़ करने की वजह से उनका ईमान और बढ़ जाता है और वह अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे पर भरोसा नहीं करते। मोमिन की हक़ीक़ी पहचान यही है कि किसी मामले में अल्लाह तआला का नाम आ गया तो उनके दिल काँप उठते हैं, वह उसके हुक्म की तामील करते हैं और उसकी मना की हुई बातों से दूर रहते हैं जैसाकि फ़र्माया, "मोमिन लोगों से अगर कोई गुनाह का काम सरज़द हो भी गया या हुदूद से उन्होंने तजावुज़ (पार) किया तो फ़ौरन उन्हें अल्लाह तआला का ख़्याल आ जाता है, वह अपने गुनाहों से तौबा करने लगते हैं और अल्लाह तआला के सिवा गुनाहों से बख़्शने वाला ही कौन है। ग़लती से गुनाह हो गया तो बार-बार उस पर इसरार नहीं करते क्योंकि वह समझदार लोग हैं। और फ़र्माया कि "जिनको अल्लाह तआला का सामना करने का डर दामनगीर हो और ख़्वाहिशे नफ़्सानी नाजाइज़ तौर पर पूरी करने से वह बाज़ रहा तो जन्नत दरहक़ीक़त उसी का हक़ है। चुनाँचे सुद्दी (रह़.) मर्दे मोमिन की तशरीह यूँ करते हैं कि वह एक ऐसा शख़्स होता है जो मअ़सियत (गुनाह) का इरादा करता है और उससे कहा जाता है कि अल्लाह तआला से डरो तो उसका दिल काँप उठता है। उम्मे दर्दा (रज़ि.) कहती हैं कि दिल ख़ौफ़े इलाही ही से धड़कने लगते हैं और तन बदन में एक सोज़िश (हलचल) सी हो जाती है। यही वजह है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं जब यह केफ़ियत तारी हो जाए तो बन्दा को चाहिए कि उस वक़्त अल्लाह तआला से अपने मक़्सद की दुआ माँगने लगे क्योंकि ऐसे वक़्त की दुआ क़बूल होती है। इर्शाद होता है कि कुरआन सुनकर उनका ईमान बढ़ जाता है।" जैसाकि फ़र्माया, जब कोई सूरत नाज़िल होती है तो कोई कहता है कि इस आयत से तुममें से किसका ईमान बढ़ गया। तो बात यह है कि उसका ईमान बढ़ जाता है जो पहले ही से मोमिन है और जन्नत की ख़ुशख़बरी उसी के हक़ में है। इमाम बुख़ारी (रह़.) और दूसरे अइम्मा ने इसी नोइयत (क़िस्म) की आयतों से यह इस्तिदलाल किया है कि ईमान में ज़्यादती और कमी हो सकती है जैसाकि जुम्हूर का मज़हब है बल्कि कहा गया है कि बहुत सारे अइम्मा का इसी पर इज्माअ है। जैसे शाफ़ेई और अह़मद बिन हंबल (रहि.) जैसाकि हमने शरह़ बुख़ारी में बयान किया है।

(व अला रब्बिहिम यतवक्कलून) यानी उसके सिवा किसी से उम्मीद ही नहीं रखते। अपनी पनाह उसी को क़रार देते हैं। कुछ माँगते हैं तो उसी से माँगते हैं और हर बात में उसी की तरफ़ झुकते हैं, जानते हैं कि वह जो चाहेगा वह होगा और जो न चाहेगा, वो न होगा। वह वह्दहू ला शरीक लहू है, मुतसर्रिफ़ फ़िल मुल्क है, उसके हुक्म के बाद किसी का हुक्म नहीं, वह सरीउल हिसाब है। सईद बिन जुबेर (रह.) कहते हैं कि तवक्कल ईमान का शीराज़ा है (अल्लज़ीना युक़ीमूनस्सलात व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून) मोमिनीन के ऐतिक़ाद का ज़िक्र करने के बाद उनके आमाल से आगाही दी जा रही है कि वह नमाज़ पढ़ते हैं और लोगों को देते दिलाते रहते हैं। यह दोनों आमाल ऐसे ज़बरदस्त हैं कि तमाम आमाले ख़ैर पर मुश्तमिल हैं। इक़ामतिस्सलात अल्लाह तआला के हुक़ूक़ में से है, इक़ामते सलात कहते हैं नमाज़ की अपने औक़ात पर पाबन्दी के साथ पढ़ने को, और यह कि वुज़ू में अच्छी तरह चेहरा हाथ पैर धोये गए हों। रुकूअ और सुजूद तअदीले अरकान के साथ अदा किए गए हों। कुरआन की तिलावत उसके आदाब के साथ हो। नबी करीम (ﷺ) पर तशह्हुद और दुरूद हो यह है इक़ामते सलात जो (يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ) (2/बक़रह : 3) का मफ़्हूम है। और (युन्फ़िक़ून) का मतलब यह है कि जो कुछ अल्लाह तआला ने दिया है कि अगर ज़कात के क़ाबिल हो तो ज़कात दें, और जो कुछ भी लोगों को देते दिलाते रहें। बन्दों के वाजिब और मुस्तहब माली हुक़ूक़ अदा करते रहें। और अल्लाह तआला ने दिया है तो सबकी मदद करें क्योंकि सब लोग अल्लाह तआला की अयाल हैं। अल्लाह तआला को वही बन्दा सबसे ज़्यादा मक़्बूल है जो मख़्लूक़ को सबसे ज़्यादा फ़ायदा देने वाला है। तुम्हारे अम्वाल अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारे पास गोया बतौर अमानत हैं और बहुत जल्द तुम्हारा माल तुमसे अलग होने वाला है, इसलिए इससे मुहब्बत नहीं होनी चाहिए (ऊलाइका हुमुल मूमिनूना हक़्क़न) इन सिफ़ात से जो मुत्तसिफ़ हैं वही हक़ीक़ी मोमिन हैं।

हारिस बिन मालिक (रज़ि.) नबी अकरम (ﷺ) के पास आए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "हारिस! सुबह कैसी गुज़री?" हारिस (रज़ि.) ने कहा, एक मोमिने हक़ीक़ी की हैसियत से। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "ख़ूब समझकर कहो, हर चीज़ की एक हक़ीक़त हुआ करती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है बताओ तो सही।" तो हारिस (रज़ि.) ने कहा कि दुनिया की मुहब्बत से मैंने रूगर्दानी कर ली है, रातों को जागकर इबादत करता हूँ, दिन को रोज़े की वजह से प्यासा रहता हूँ और अपने को यूँ पाता हूँ गोया मेरे सामने अर्शे रब खुला हुआ है और गोया मैं अहले जन्नत को बाहम मुलाक़ातें करता देखता हूँ और अहले जहन्नम को मुसीबत में पड़ा देख रहा हूँ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! ऐ हारिस (रज़ि.)! तुम हक़ीक़ते ईमान तक पहुँच चुके हो, इस पर क़ायम रहने की कोशिश करो।" यह आपने तीन बार फ़र्माया। (अल्मुअजमुल कबीर : 3367; शुअबुल ईमान : 10591; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 444; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/57; इसकी सनद में इब्ने लहीआ इख़्तिलात की वजह से ज़ईफ़ रावी है। देखिए (अत्तक़रीब : 1/44; रक़म : 574) कुरआन ज़ुबाने अरब में नाज़िल किया गया है और (हक़्क़न) का लफ़्ज़ अदबी हैसियत रखता है जैसाकि कहा जाता है (फ़ुलानुन सय्यिदुन हक़्क़न) यानी फ़लाँ हक़ीक़ी सरदार है, अगरचे क़ौम में और दूसरे भी सरदार हों और फ़लाँ हक़ीक़ी ताजिर है अगरचे और ताजिर भी बहुत हैं और फ़लाँ हक़ीक़ी शायर है, अगरचे

और बहुत शायर हैं (लहुम दरज़ातुन इन्द रब्बिहिम) यानी जन्नत में उनको बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे। जैसाकि फ़र्माया, अल्लाह तआला के पास उनके बड़े दर्जे हैं और जो कुछ वह अमल कर रहे हैं, अल्लाह तआला उससे वाक़िफ़ है। अल्लाह तआला उनके गुनाहों को माफ़ कर देगा और उनकी नेकियों को क़बूल कर लेगा। अहले जन्नत में से कुछ के दर्जे कुछ से बालातर हैं, ऊपर वाले ऊपर से नीचे के दर्जे वालों को देखेंगे और फ़ख़्र करेंगे। नीचे वाले ऊपर वालों को देखकर हसद नहीं करेंगे। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इल्लिय्यीन वालों को नीचे वाले इस तरह देखेंगे जिस तरह कि तुम खुले आसमान पर सितारों को देखते हो।'' लोगों ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या यह अम्बिया के मनाज़िल हैं और किसी और को क्या न मिलेंगे। आपने फर्माया, ''क्यूँ नहीं, अल्लाह तआला की क़सम! वह लोग जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और रसूलों की तस्दीक़ की, वह भी इसके मुस्तहिक़ हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नत व इन्नहा मख़्लूक़तुन : 3256; सहीह मुस्लिम : 2831; इब्ने हिब्बान : 7393) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि, ''अहले जन्नत ऊपर की जन्नत वालों को ऐसे देखेंगे जैसे खुले आसमान पर सितारे हैं और अबूबक्र और उमर (रज़ि.) उन्हीं में से हैं, उन्हें भी यही इज़्ज़त मिलेगी।'' (अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ वल क़िराआत, बाब : 3987; बि तसर्रुफ़िन यसीर; व सनदुहू ज़ईफ़; तिर्मिज़ी : 3658; इब्ने माजा : 96; अहमद : 3/27; मुस्नद अबी यअ़ला : 1130; इसकी सनद में अतिया औफ़ी मजरूह रावी है (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216)

***

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۞ ٥

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۞ ٦

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۞ ٧ لِيُحِقَّ

الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۞ ٨

तर्जुमा : ''जैसाकि आपके रब ने आपके घर से मस्लिहत के साथ आपको रवाना किया और मुसलमानों की एक जमाअत उसको गिराँ समझती थी। (5) वह इस मस्लिहत में बाद उसके कि उसका ज़ुहूर हो गया था आपसे इस तरह झगड़ रहे थे कि गोया कोई उनको मौत की तरफ़ हाँके लिए जाता है और वह देख रहे हों।(6) और तुम लोग उस वक़्त को याद करो जबकि अल्लाह तआला

तुमसे उन दो जमाअतों में से एक का वादा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी और तुम इस तमन्ना में थे कि ग़ैर मुसल्लह जमाअत तुम्हारे हाथ आ जाए और अल्लाह तआला को यह मंज़ूर था कि अपने अहकाम से हक़ का हक़ होना साबित कर दे और उन काफ़िरों की बुनियाद को ख़त्म कर दे। (7) ताकि हक़ का हक़ होना और झूठ का झूठ होना साबित कर दे भले मुज्रिम लोग नापसंद ही करें।'' (8)

जंगे बद्र का पसे मंज़र और दीगर तफ़्सीलात (आयत 5-8) : मुफ़स्सिरीन ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है कि (कमा अख़रजक) में (कमा) के आने की क्या वजह है। कुछ ने कहा है कि पहले की आयत में तश्बीह दी गई है, मोमिनीन के बाहमी सुलह के साथ उनका अल्लाह से डर और इताअते रसूल के बारे में। चुनाँचे बात का ढंग यूँ होता है कि जैसा तुमने ग़नीमतों के बारे में इख़्तिलाफ़ किया था और लड़ पड़े थे और अल्लाह तआला ने तुम्हारा फ़ैसला कर दिया था और तुम सबसे छीनकर तक़्सीम का हक़ रसूलुल्लाह (ﷺ) को दे दिया था और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अद्ल और मसावात के साथ तक़्सीम कर दी थी और यह बात तुम्हारी मस्लिहते कामिला की ख़ातिर थी। इसी तरह इस मौक़े पर जब दुश्मनों से लड़ने के लिए तुमको मदीने से निकलना पड़ा तो शौकत व जाह वाले बड़े लश्कर से लड़ना तुम्हें नापसंद हुआ। यह बड़ा लश्कर वह था जो अपने हम मज़हब काफ़िरों की मदद और शाम शहर को गए हुए क़ाफ़िला माले तिजारत की हिफ़ाज़त के लिए मक्का से निकल आए थे और इस जिहाद को नापसंद करने का यह नतीजा निकला कि अल्लाह तआला ने उसी जंग से तुम्हें दो चार किया और पहले से बग़ैर किसी क़रारदादे जंग के दुश्मन से तुम्हें भिड़ा दिया और नतीजा में तुम्हें मदद व हिदायत बख़्शी जैसाकि फ़र्माया, क़िताल तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है और यह तुम्हें नापसंद है। लेकिन यह बहुत मुम्किन है कि तुम किसी बात को नागवार समझो और दरअसल तुम्हारी भलाई उसी में हो, और तुम किसी बात को पसंद करो और दरहक़ीक़त नतीजा में वह तुम्हारे लिए नुक़्सानदेह साबित हो। तुम्हारी बेहतरी का इल्म अल्लाह तआला को है तुमको नहीं। कुछ ने इसकी तश्बीह के यह मअनी किए हैं कि जिस तरह तुम्हारे अल्लाह तआला ने हक़ तौर पर तुम को मदीना से बाहर निकलने में कामयाब किया है, हालाँकि कुछ मोमिनीन इस ख़ुरूज से नाराज़ थे लेकिन उन्हें आना पड़ा, इसी तरह वह जंग से दूर रहना चाहते हैं और तुमसे इख़्तिलाफ़े राय रखते हैं, हालाँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की राय की हक़्क़ानियत उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि यह मअनी हैं कि जिस तरह मदीना से मजबूरन तुम लोग निकले, उसी तरह अम्रे हक़ में वह रसूल से झगड़ते हैं।

सुद्दी (रह.) कहते हैं कि यह आयत बद्र की लड़ाई में निकलने के बारे में नाज़िल हुई। (युजादिलूनक फ़िल हक़्क़ि बअद मा तबय्यन) कुछ कहते हैं कि इसका मतलब है कि ऐ नबी (ﷺ)! यह मोमिनीन तुमसे लड़ने की निय्यत से अन्फ़ाल के बारे में सवालात पैदा कर रहे हैं जैसाकि बद्र के दिन भी इन्होंने तुमसे मुजादिला किया था और यह कहा था कि आप तो हमें क़ाफ़िले से निपटने के लिए लेकर निकले थे, हमको गुमान भी न था कि हमें जंग करनी पड़ेगी और न हम जंग के लिए तैयार होकर घर से निकले थे। मैं कहता हूँ कि

नबी-ए-अकरम (ﷺ) मदीना से अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले की राह रोकने के लिए निकले थे क्यों कि आपको मालूम था कि यह क़ाफ़िला मुल्के शाम से कुरैश के लिए बहुत सा माल लेकर रवाना हो चुका है। चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) ने मुसलमानों को आमादा किया और तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा आदमी लेकर निकल खड़े हुए, और चश्म-ए-बद्र की राह पर साहिल की तरफ़ चल दिए। अबू सुफ़ियान को हुज़ूर (ﷺ) के हमला करने की ख़बर हो चुकी थी, जो उस क़ाफ़िला का सरदार था। उसने ज़मज़म बिन अम्र को मक्का भेजकर अहले मक्का को मदीने वालों के इरादे से आगाह किया। मक्का वाले तक़रीबन एक हज़ार आदमी लेकर निकले। अबू सुफ़ियान क़ाफ़िले को सैफ़ुल बहर की तरफ़ से लेकर निकल गया और साफ़ बच गया। अब मक्का का यह एक हज़ार आदमियों का लश्कर बढ़ता रहा हत्ताकि चश्म-ए-बद्र के पास आकर पड़ाव डाला। अब मुसलमान और काफ़िर बग़ैर उसके कि पहले से कोई क़रारदादे जंग हो आपस में गुत्थ गए। क्योंकि अल्लाह तआला मुसलमानों का बोलबाला करना चाहता था और हक़ व बातिल के बीच एक फ़ैसलाकुन जंग अल्लाह तआला के पेशेनज़र थी। जैसाकि यह बयान अन्क़रीब आने वाला है। ग़र्ज़ यह कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को जब यह ख़बर मिली कि मक्का से एक बड़ा लश्कर उनसे लड़ने के लिए आ रहा है, तो अल्लाह तआला ने आपको वह्यी भेजी कि दो में से एक चीज़ तुम्हें मिलेगी, या तो क़ाफ़िले को लूट लो, या इस लश्कर से लड़ भिड़ो, दोनों नहीं मिलेंगे किसी एक को इख़्तियार कर लो और उसमें कामयाब हो जाओ। मुसलमानों में से अक्सर की यह राय थी कि क़ाफ़िले को लूट लो और चल दो, बग़ैर जंग के बहुत सा माल मिल जाएगा। जिसकी हिकायत अल्लाह तआला ने यूँ फ़र्माई है कि "तुम चाहते हो कि दोनों में से वह सूरत पसंद करें जो शौकत वाली न हो, यानी क़ाफ़िले से निपट लें और अल्लाह तआला का तो इरादा यह था कि हक़ ज़ाहिर होकर रहे और मक्का के काफ़िरों का घमण्ड टूट जाए।"

अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) कहते हैं कि हम मदीना में थे और हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "मुझे ख़बर मिली है कि अबू सुफ़ियान क़ाफ़िला लेकर आ रहा है, तुम लोग क्या कहते हो, क्या उस क़ाफ़िला की राह रोकने के लिए हम निकल पड़ें मुम्किन है कि तुम लोगों को बहुत कुछ मालो-दौलत मिल जाए।" हमने अर्ज़ किया, ज़रूर चलना चाहिए। चुनाँचे हम सब निकले और एक या दो दिन चलते रहे। अब आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "अच्छा! उन काफ़िरों से जंग करने के बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्हें इस बात की ख़बर हो गई है कि तुम क़ाफ़िले को लूटने के ख़्याल से निकल चुके हो।" मुसलमानों ने कहा कि अल्लाह की क़सम! हममें दुश्मन के इतने बड़े लश्कर से लड़ने की ताक़त नहीं। हम जो निकले हैं तो सिर्फ़ क़ाफ़िले को लूटने के ख़्याल से चल पड़े हैं। आप (ﷺ) ने दोबारा यही सवाल किया। फिर हम लोगों ने यही जवाब दिया। अब मिक़्दाद बिन अम्र (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम इस मौक़े पर ऐसा न कहेंगे, जैसाकि मूसा (अ.) की उम्मत ने मूसा (अ.) से कहा था कि ऐ मूसा (अ.)! तुम और तुम्हारा रब दोनों जाओ और दुश्मन से लड़ो, हम यहीं बैठे तुम्हारी वापसी का इंतिज़ार करेंगे। हम गिरोहे अंसार ने तमन्ना की और कहा, अगर हम भी वही कहते जो मिक़्दाद (रज़ि.) ने कहा, तो यह बात क़ाफ़िला का माले अज़ीम मिल जाने से भी हमें ज़्यादा पसंद होती।

चुनाँचे यह आयत उतरी कि (कमा अख़रजक रब्बुक मिम बैतिक बिल हक़्क़ि व इन्न फ़रीक़म् मिनल मोमिनीन ल कारिहून) अबू वक़्क़ास लैसी (रह़.) बयान करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) बद्र की तरफ़ सबको लेकर निकले और मक़ामे रौहा में पहुँचकर लोगों के सामने ख़ुत्बा दिया और कहा, तुम लोगों की क्या राय है? तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमें इल्म हो चुका है कि यह कुफ़्फ़ार यहाँ यहाँ तक पहुँच गए हैं। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम लोगों की क्या राय है? इस बार उमर (रज़ि.) ने भी अबूबक्र (रज़ि.) की तरह ही जवाब दिया। आप (ﷺ) ने एक बार फिर यही सवाल किया तो सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपकी मुराद हमसे है अल्लाह तआ़ला की क़सम! मैं न कभी बर्कुल ग़माद गया हूँ, न मुझे उसकी राह का इल्म है लेकिन अगर आप यमन के बर्कुल ग़माद तक भी जाएँ तो भी हम आपके साथ चलेंगे और उम्मते मूसा (अ़.) की तरह न कहेंगे कि तुम और तुम्हारा रब जाकर लड़ लो हम यहीं से तुम्हारा इन्तिजार करेंगे। मुम्किन है कि आप निकलने के वक़्त किसी और ग़र्ज़ से निकले हों, फिर अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए कोई दूसरी सूरत पैदा कर दी हो, तो आप (ﷺ) जो सूरत चाहें इख़्तियार करें, जो आप (ﷺ) का साथ देना चाहता है दे और जो आप (ﷺ) से टूटना चाहता है, टूट जाए, जो चाहे आपका मुख़ालिफ़ बन जाए और जो चाहे आप (ﷺ) से सुलह़ करके रहे। हमारा माल जो कुछ है आप (ﷺ) सब ले सकते हैं। सअ़द (रज़ि.) के इसी क़ौल की बिना पर वह आयत उतरी।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि जब नबी अकरम (ﷺ) ने जंगे बद्र के लिए मश्वरा किया और फिर कुरैश के लश्कर से जंग का हुक्म दिया तो मुसलमानों को यह जंग नापसंद थी। इसीलिए आयत उतरी थी कि (इन्ना फ़रीक़म् मिनल मोमिनीन ल कारिहून) यानी कुछ मोमिनीन को यह मर्ज़ी नहीं है। और हक़ ज़ाहिर हो जाने के बाद भी यह तुमसे बहस करते हैं। वह ऐसा समझ रहे हैं कि जंग करेंगे तो गोया मौत की तरफ़ खींचे जा रहे हैं। मुजाहिद (रह़.) कहते हैं कि फ़िल हक़्क़ से मुराद फ़िल क़िताल है। मुहम्मद बिन इस्ह़ाक़ (रह़.) कहते हैं कि (लकारिहून) से मुश्रिकीन के साथ ही जंग की नापसंदी मुराद है। सुद्दी (रह़.) कहते हैं कि (बअ़द मा तबय्यन) का मतलब है कि यह ज़ाहिर हो जाने के बाद कि तुम हुक्मे रब के सिवा किसी बात का इक़्दाम नहीं करते, फिर भी रसूल (ﷺ) की राय के ख़िलाफ़ करते हैं। इब्ने ज़ैद (रह़.) (युजादिलून-क फ़िल हक़्क़ि बअ़द मा तबय्यन क-अन्नमा युसाक़ून इलल मौति वहुम् यंज़ुरून) के बारे में कहते हैं कि इससे मुराद मुश्रिकीन हैं। यानी यह मुश्रिकीन हक़ बात के बारे में मुजादला करते हैं गोया कि वह मौत की तरफ़ खींचे जा रहे हैं जबकि उन्हें इस्लाम की दावत दी जा रही हो और यह कि ऐसी मज़्मूम सिफ़त से मोमिनीन मुत्तसिफ़ नहीं हो सकते और यह सिफ़त अहले कुफ़्र की हो सकती है। इब्ने जरीर (रह़.) का इस पर यह ऐतिराज़ है कि इब्ने ज़ैद (रह़.) का यह क़ौल कोई वक़अ़त नहीं रखता क्योंकि अल्फ़ाज़ (युजादिलूनक फ़िल हक़्क़ि) से पहले सियाक़े इबारत अहले ईमान के बारे में है और जो अल्फ़ाज़ इसके बाद हैं ज़ाहिर है कि वह उसी की ख़बर होगी। सच तो यह है कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ही का क़ौल सही है कि इससे मुराद मोमिनीन ही हैं। इब्ने जरीर (रह़.) ने इसी क़ौले इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ताईद की है। यही हक़ है और स्याक़े कलाम इसी की ताईद करता है।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब नबी अकरम (ﷺ) कामयाबी के साथ जंगे बद्र से फ़ारिग़ हुए तो आप (ﷺ) से कहा गया कि अब माल भरे क़ाफ़िले से भी निपट लें। अब कोई रुकावट भी बाक़ी नहीं रही। तो अब्बास (रज़ि.) जो क़ैदी की हैसियत से असीराने जंग में थे बोल उठे कि हर्गिज़यह मुनासिब नहीं! क्योंकि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) से वादा किया है दो चीज़ों में से एक का, चुनाँचे एक चीज़ आप (ﷺ) को हासिल हो चुकी, अब दूसरी चीज़ भी हासिल करने का कोई हक़ नहीं है।''(तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति अन्फ़ाल : 3080; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सिमाक की इक्रिमा (रह.) से रिवायत ज़ईफ़ होती है। अहमद : 1/229; मुस्नद अबी यअला : 2373) इसकी इस्नाद जय्यद हैं। इस क़ौल के मअनी (तवद्दून अन्न ग़ैर ज़ातिश् शौकति तकूनु लकुम) यह हैं कि तुम यह चाहते थे कि वह चीज़ हासिल करें जिसमें न कोई मुदाफ़िअत है, न क़िताल है, यानी अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले को लूटना हालाँकि अल्लाह तआला तो यह चाहता था कि तुमको ऐसी जमाअत से भिड़ा दे जो जाह व शौकत वाली हो और उससे जंग वाक़ेअ हो ताकि अल्लाह तआला तुमको उन पर कामयाबी दे और अल्लाह तआला के दीन का ग़ल्बा हो, कलिम-ए-इस्लाम बुलंद हो। अल्लाह तआला के सिवा आक़िबते उमूर से कोई वाक़िफ़ नहीं, हुस्ने तदबीर का मुदब्बिर वही है अगरचे लोग उसके ख़िलाफ़ ही क्यूँ न हों। जैसाकि फ़र्माया कि क़िताल तुम पर फ़र्ज़ है ख़्वाह वह तुम्हें नागवार ही हो। बहुत मुम्किन है कि तुम्हें एक बात नापसंद हो और ख़ैर उसी के अंदर हो और एक बात अच्छी लगे और शर उसी के अंदर हो। हस्बे ज़ेल हदीस भी स्याक़े हदीसे बद्र में है कि जब नबी अकरम (ﷺ) ने शाम से अबू सुफ़ियान के चलने की ख़बर पाई तो मुसलमानों को बुलाया और कहा कि क़ुरैश के उस क़ाफ़िले के साथ मालो मताअ बहुत है, उस पर धावा बोलो। क्या अजब कि कुफ़्फ़ार का माले ग़नीमत अल्लाह तआला तुम्हें दे दे। कुछ के पास अस्लहा था और कुछ के पास नहीं और न उन्हें यह गुमान था कि नबी-ए-अकरम (ﷺ) जंग करेंगे। और अबू सुफ़ियान जब हिजाज़ से क़रीब हुआ तो उसने अपने जासूस छोड़ रखे थे और हर आने जाने वाले से नबी अकरम (ﷺ) की ख़बरें पूछता रहता था। चुनाँचे उसको ख़बर मिल गई कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारे क़ाफ़िले के दर पे हैं तो उसने एहतियाती तदाबीर इख़्तियार कर लीं और ज़मज़म बिन अम्र ग़िफ़ारी को फ़ौरन मक्का भेजा कि क़ुरैश से मिलकर क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम कराए क्योंकि मुहम्मद (ﷺ) हमलावर हो रहे हैं, उधर रसूलुल्लाह (ﷺ) भी अपने साथियों को लेकर निकले और वादी ज़फ़रान तक पहुँचे और वहाँ क़याम किया कि इतने में आपको ख़बर मिली कि क़ुरैश अपने क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त व मुदाफ़िअत की ख़ातिर मक्का से रवाना हो गए हैं तो आप (ﷺ) ने मश्वरा किया। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी ठीक बात कह दी और हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी यही कहा। फिर मिक़्दाद (रज़ि.) कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम आपके साथ हैं अल्लाह तआला की जो मंशा है उसको पूरा कीजिए। अल्लाह तआला की क़सम! हम (हज़रत) मूसा (अ.) की उम्मत की तरह नहीं कहेंगे। अगर आप हमें हब्शा तक भी ले जाना चाहें तो जब तक आप (ﷺ) वहाँ न पहुँचेंगे हम आपका साथ न छोड़ेंगे। तो आप (ﷺ) ने मिक़्दाद (रज़ि.) को दुआए ख़ैर दी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, ''ऐ लोगों! मुझे मश्वरा दो'' आप (ﷺ) की मुराद अंसार से थी। एक तो इस वजह से भी कि अंसार तादाद में

ज़्यादा थे, दूसरे इसलिए भी कि अक़्बा में जब अंसार ने बेअ़त की थी तो इस बात पर की थी कि जब आप इस कुर्बे मक्का से निकलकर मदीना पहुँच जाएँगे तो हर हाल में हम आपका साथ देंगे। यानी दुश्मन आप पर चढ़ाई करके आए तो हम उसके मुक़ाबले पर हो जाएँगे। इसमें चूँकि यह वादा न था कि जारेहाना इक़्दाम पर भी साथ देंगे, इसलिए हुज़ूर (ﷺ) उनका भी इरादा और राय पूछ लेना चाहते थे ताकि उनसे भी वादा लेकर उनकी हमदर्दियाँ भी हासिल कर लें। सअ़द (रज़ि.) ने कहा कि शायद आप हमसे जवाब तलब कर रहे हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! मेरी मुराद तुम्हीं लोगों से है। तो सअ़द (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारा आप (ﷺ) पर ईमान है, आपका हुक्म मानने की बेअ़त आपके हाथ पर कर चुके हैं, हम आपका साथ कभी न छोड़ेंगे, अल्लाह तआ़ला की क़सम! अगर समुंद्र के किनारे पर खड़े होकर भी आप (ﷺ) उसमें घोड़ा डाल दें तो हम भी उसमें कूद पड़ेंगे, हममें से कोई भी ज़रा देरी न करेगा। हम लड़ाईयों में बहादुरी दिखाने वाले, मुसीबतों को झेलने वाले हैं। आप हमसे इंशाअल्लाह! ख़ुश हो जाएँगे। इस जवाब से आप बहुत ख़ुश हुए, उसी वक़्त कूच का हुक्म दे दिया और फ़र्माया कि रब ने दो में से एक का मुझसे वादा किया है और क्या अ़जब वह एक यही जंग हो। मैं गोया मुश्रिकीन का मक़्तल (क़त्लगाह) यहीं से अपनी आँखो से देख रहा हूँ।

***

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ⑨ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

तर्जुमा : "उस वक़्त को याद करो जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो बारी-बारी चले आएँगे। (9) और अल्लाह तआ़ला ने यह इम्दाद महज़ इसके लिए की कि बशारत हो और ताकि तुम्हारे दिलों को क़रार हो जाए। और नुसरत (मदद) सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ से है जो कि ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।" (10)

मैदाने बद्र में नबी (ﷺ) की दुआ़ पर अल्लाह की मदद का नुज़ूल (आयत 9, 10) : हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से मरवी है कि बद्र के दिन नबी करीम (ﷺ) ने अपने साथियों का शुमार किया तो तीन सौ से कुछ ऊपर थे। और मुश्रिकीन कोई एक हज़ार की तादाद में थे। चुनाँचे आप क़िब्ला रुख़ होकर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने लगे। आप सिर्फ़ एक चादर ओढ़े हुए थे और तहबन्द बंधी हुई थी और फ़र्मा रहे थे कि "या रब! तूने मुझसे वादा किया है इस मौक़े पर पूरा कर। अगर मुसलमानों की इस मुट्ठी भर जमाअ़त को तूने

हलाक कर दिया तो ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा और तौहीद का नामोनिशान मिट जाएगा।'' आप (ﷺ) अल्लाह तआला से फ़रियाद कर रहे थे दुआएँ मांग रहे थे यहाँ तक कि चादर आप (ﷺ) के शानों (कँधों) से गिर पड़ी, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आकर उसको आप (ﷺ) के कंधों पर डाल दिया और आपके पीछे खड़े हो गए और कहने लगे, ''या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब अल्लाह तआला से इल्तिजाएँ बस कर दीजिए, वह अपना वादा ज़रूर पूरा करेगा। चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की कि जब तुमने अल्लाह तआला से दुआ मांगी तो उसने तुम्हारी दरख़्वास्त क़बूल कर ली, अब मैं एक हज़ार सफ़-ब-सफ़ फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करता हूँ। चुनाँचे जिस दिन जंग हुई तो अल्लाह तआला ने मुश्रिकीन को शिकस्ते फ़ाश दे दी। मुश्रिकों में से सत्तर अफ़राद हलाक हुए और सत्तर क़ैद हुए। अब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) और अली (रज़ि.) से मश्वरा किया, तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह आपके भाईबन्द और क़बीला व ख़ानदान वाले हैं, मैं तो यह राय रखता हूँ कि इनसे फ़िदया लेकर इन्हें रिहा कर दें। फिर यह ख़ुद हमारी कुव्वत में इज़ाफ़ा करेंगे। इसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने उमर (रज़ि.) से मुख़ातब होकर कहा कि ''उमर (रज़ि.)! तुम क्या कहते हो?'' तो उमर (रज़ि.) ने कहा, मेरी तो वह राय नहीं जो अबूबक्र (रज़ि.) की है। आप मुझे हुक्म दीजिए कि मैं अपने काफ़िर रिश्तेदार क़ैदी को क़त्ल कर दूँ और अली (रज़ि.) को हुक्म दें कि वह अपने भाई अक़ील की गर्दन उड़ा दें और हम्ज़ा (रज़ि.) अपने फ़लाँ भाई की गर्दन मारें ताकि हम अल्लाह तआला के हुज़ूर यह साबित कर सकें कि मुश्रिकीन के लिए हमारे दिलों में कोई रिआयत नहीं। यह मुश्रिकीन क़ैदी तो काफ़िरों के सरदार और क़ाइद हैं। लेकिन नबी अकरम (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की राय को तर्जीह दी और उन क़ैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) कहते हैं कि दूसरा दिन निकला तो मैं हुज़ूर (ﷺ) के घर गया। देखता हूँ कि आप (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) दोनों रो रहे हैं, मैंने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप और अबूबक्र (रज़ि.) क्यूँ रो रहे हैं। ताकि रोना आए तो मैं भी रोऊँ और न आए तो रोने की सूरत ही बना लूँ ताकि आप (ﷺ) का शरीक हो जाऊँ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''यह फ़िदया लेकर छोड़ देने की वजह से रोना है। मैं इस ख़ता की वजह से उस अज़ाब को देख रहा हूँ जो उतना क़रीब है जितना यह मेरे सामने का दरख़्त।'' चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई (مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي ..... فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا) (8/अन्फ़ाल : 69) चुनाँचे ग़नीमत हलाल कर दी गई। फिर जब आइन्दा साल उहुद का दिन आया तो बद्र के दिन की ग़लती का अल्लाह तआला ने यूँ बदला लिया कि फ़िदया के सत्तर छूटे हुए काफ़िरों के बदले उहुद में मुसलमानों के सत्तर सहाबी शहीद हुए। हुज़ूर (ﷺ) के सामने के चार दाँत शहीद हो गए, ख़ूद सरे मुबारक में धंस गया, ख़ून चेहरा मुक़द्दस पर बहने लगा। चुनाँचे यह आयत उतरी कि ''मुसीबत पहुँची तो तुम कहने लगे कि यह कहाँ से आ गई। कह दो कि यह तुम्हारे अपने हाथों नाज़िल हुई है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब अल्इम्दादु बिल मलाइकति फ़ी ग़ज़्वति बद्र .... : 1763; अहमद : 1/30; इब्ने हिब्बान : 4793; दलाइलुन्नबुव्वत : 3/51) यानी फ़िदया लेकर छोड़ देने की वजह से।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि यह आयते करीमा (इज़् तस्तग़ीसून रब्बकुम) से मुराद हुज़ूर

(ﷺ) का दुआ करना है क्योंकि बद्र के दिन नबी अकरम (ﷺ) अल्लाह से बहुत इसरार के साथ दुआ मांग रहे थे कि उमर (रज़ि.) आकर कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब दुआ को मुख़्तसर कीजिए, अल्लाह तआला ज़रूर अपना वादा पूरा करेगा, जो आप (ﷺ) से किया गया है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि यौमे बद्र में नबी (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि ''ऐ अल्लाह तआला! मैं अहद के पूरा करने की तरफ़ तुझे तवज्जा दिलाता हूँ वरना ऐ अल्लाह तआला! तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा।'' तो अबूबक्र (रज़ि.) ने आपका हाथ थाम लिया और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! बस! बस! तो आप उठे और फ़र्मा रहे थे, कि बहुत जल्द काफ़िरों को हार होने वाली है और वह पीठ फेरकर भागने वाले हैं'' (बि अल्फ़िम् मिनल मलाइकति मुर्दिफ़ीन) यानी फ़रिश्तों की सफ़ें एक के पीछे एक लगी हुई थीं। और (मुर्दिफ़ीन) से मुराद मदद भी हो सकती है यानी फ़रिश्ते मदद पर थे। हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि जिब्राईल (अ.) हज़ार फ़रिश्ते लेकर नबी अकरम (ﷺ) की सीधी तरफ़ थे जिधर कि अबूबक्र (रज़ि.) थे और मीकाईल एक हज़ार फ़रिश्ते लेकर बाईं तरफ़ थे जिधर मैं था। इससे यह साबित होता है कि हज़ार की मदद पर दूसरे हज़ार भी थे। इसीलिए कुछ ने (मुर्दिफ़ीन) बफ़तहा दाल क़िराअत की है, वल्लाहु आलम! और यह भी रिवायत है कि पाँच सौ फ़रिश्ते जिब्रील (अ.) के साथ थे और पाँचे सौ मीकाईल (अ.) के साथ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि एक मुसलमान एक मुश्रिक के पीछे लगा हुआ था कि ऊपर से एक कोड़ा मुश्रिक के सर पर पड़ने की आवाज़ सुनी और एक सवार की भी आहट सुनाई दी, अब क्या देखते हैं कि काफ़िर गिरकर ज़मीन पर ढेर हो गया है। कोड़े की ज़र्ब से सर फट गया है हालाँकि किसी इंसान ने उसे न मारा था। अब पीछे वाले अंसारी ने यह ख़बर हुज़ूर (ﷺ) को पहुँचाई, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तुमने सच कहा, यह आसमानी मदद थी।'' यह आप (ﷺ) ने तीन बार फ़र्माया। चुनाँचे सत्तर अफ़राद तो क़त्ल हुए थे और सत्तर क़ैद किये गए। (सहीह मुस्लिम, हवाला साबिक़) राफ़ेअ (रज़ि.) अहले बद्र में से थे, कहते हैं कि जिब्रील (अ.) आए और हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि आप अहले बद्र को कैसा समझते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल'' तो हज़रत जिब्रईल (अ.) कहने लगे कि बद्र में मदद करने वाले मलाइका भी दूसरे मलाइका में ऐसे ही अफ़ज़ल समझे जाते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहूदुल मलाइकति बद्रन : 3992) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी-ए-अकरम (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा जबकि उमर (रज़ि.) ने क़त्ले हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) के बारे में मश्वरा दिया था, यह कि हातिब (रज़ि.) बद्र में शरीक थे और तुम्हें क्या ख़बर कि अल्लाह तआला ने अहले बद्र को बख़्श दिया है। क्योंकि फ़र्माया था कि ''अब तुम जो चाहो करो, मैंने तुम्हें बख़्श दिया है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब फ़ज़्लिम मन शहिदा बद्रन : 3983; सहीह मुस्लिम : 2494)

क़ौलुहू तआला (वमा जअलहुल्लाहु इल्ला बुशरा) यानी फ़रिश्तों का यह भेजना तुम्हें सिर्फ़ ख़ुश करने के लिए था और यह कि तुम्हारे दिल को इत्मिनान की सूरत हो, वरना अल्लाह तआला तो तुम्हारी मदद करने पर हर तरह से क़ादिर है। उसको मदद के लिए फ़रिश्तों की मुहताजी थोड़े ही है। यह मदद तो दरहक़ीक़त अल्लाह की मदद थी फ़रिश्ते तो मदद की ज़ाहिरी सूरत थी। जैसाकि फ़र्माया कि जब कभी तुम काफ़िरों को

पाओ तो उनकी गर्दन उड़ा दो, ग़ालिब आ जाओ तो उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ लो, फिर या तो मुआफ़ कर दो या फ़िदया लेकर छोड़ दो, यहाँ तक जंग ख़त्म हो जाए। यह आयत इसलिए लाई गई कि अगर अल्लाह तआला चाहे तो ख़ुद उनकी मदद कर सकता है। लेकिन दरअसल वह कुछ को कुछ के ज़रिये आज़माता है और जो लोग अल्लाह तआला की राह में शहीद हो गए हैं, अल्लाह तआला उनके आमाल को कभी तल्फ़ (बर्बाद) नहीं करेगा। उन्हें हिदायत करेगा और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा। और इर्शादे बारी तआला है कि

(وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾) (3/आले इमरान : 140-141) हम ज़माना को लोगों में घुमाते रहते हैं और ज़माना को बदल बदलकर लाते हैं ताकि अल्लाह तआला जाँच ले और शहीदों को अलग करे। ज़ालिमों से अल्लाह तआला ख़ुश नहीं रह सकता। इसमें ईमान वालों का इम्तियाज़ हो जाता है और काफ़िरों को अल्लाह तआला मिटा देता है। जिहाद का शरई फ़ल्सफ़ा यही है कि अल्लाह तआला मुश्रिकों को मुवह्हिदों के हाथों सज़ा देता है। इससे पहले वह आम आसमानी अज़ाबों से हलाक कर दिए जाते थे, जैसे क़ौमे नूह पर तूफ़ान आया, आदे ऊला आँधी में तबाह हुए। अहले समूद चीख़ से ग़ारत कर दिए गए, क़ौमे लूत का तब्क़ा उलट गया और पत्थरों की बारिश हुई, शुऐब (अ.) की क़ौम के सर पर पहाड़ मुअल्लक़ कर दिया गया। अल्लाह तआला ने मूसा (अ.) को भेजा और उनके दुश्मन फ़िरऔन को हलाक कर दिया और उसकी क़ौम को दरिया में डुबो दिया, मूसा (अ.) को तौरात देकर कुफ़्फ़ार को क़त्ल कर देना फ़र्ज़ क़रार दिया गया और यही हुक्म दूसरी शरीअतों के अंदर भी क़ायम रहा। जैसाकि फ़र्माया कि हमने मूसा (अ.) को किताब दी और उनसे पहले की उम्मतें भी नाफ़र्मानी की वजह से हलाक कर दी गयी थीं। इसमें लोगों के लिए बसीरत है, मोमिनीन का काफ़िरों को भी बजाए क़ैद के क़त्ल कर देना उन काफ़िरों की ज़बरदस्त एहानत की चीज़ थी। और इससे मोमिनीन के दिल भी ठण्डे होते। जैसाकि इस उम्मत के मोमिनीन को हुक्म दिया गया था कि इन काफ़िरों को क़त्ल ही कर डालो, अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों इन्हें रुस्वा करना और इन्हें अज़ाब देना चाहता है और इसलिए भी कि तुम्हारा दिल ठण्डा हो। क्योंकि यह गर्दन ज़दनी सरदाराने क़ुरैश मुसलमानों को बड़ी हिक़ारत की नज़र से देखते थे और उन्हें मुम्किना आज़ार (तक्लीफ़ें) पहुँचाते थे। अगर यह क़त्ल होकर सरे बाज़ार रुस्वा होते तो मुसलमानों के दिलों को इस इंतिक़ाम से कितनी ठण्डक पहुँचती। चुनाँचे अबू जहल जब ऐन जंग में मारा गया तो उसकी लाश की बड़ी बेइज़्ज़ती हुई कि अगर बिस्तर पर अपनी मौत मरता तो उसकी कभी यह रुस्वाई न होती। या जैसाकि अबू लहब मरा तो ऐसा सड़ गया था कि उसके क़रीब तरीन रिश्तेदार भी उसकी लाश के क़रीब न आते थे। नहलाने के बजाए दूर से लाश पर पानी फेंक दिया गया और दफ़न के तौर पर उसको एक गड्ढे में गिरा दिया गया। इसीलिए फ़र्माया कि इज़्ज़त काफ़िरों के लिए नहीं बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और मोमिनीन के लिए है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और फ़र्माया कि हम अपने रसूलों और मोमिनीन की मदद दुनिया में भी करते हैं और आख़िरत में भी। तुमको यह हुक्म देना कि कुफ़्फ़ार को क़त्ल करो इसमें भी उसकी ख़ास हिक्मत है वरना क्या वह ख़ुद अपनी क़ुदरत से उन्हें हलाक नहीं कर सकता।

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ
وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ⑪ إِذْ
يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ⑫ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑬
ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ⑭

तर्जुमा : ''उस वक़्त को याद करो जबकि अल्लाह तआला तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन देने के लिए और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताकि उस पानी के ज़रिये से तुमको पाक कर दे और तुमसे शैतानी वस्वसे को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे पैर जमा दे। (11) उस वक़्त को याद करो जबकि तेरा रब फ़रिश्तों को हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी हूँ तो तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ। मैं अभी कुफ़्फ़ार के क़ुलूब (दिलों) में रौब डाले देता हूँ तो तुम गर्दनों पर मारो और उनके पोर पोर को मारो।(12) यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त की। और जो अल्लाह तआला की और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देता है। (13) तो यह सज़ा चखो और जान रखो कि काफ़िरों के लिए जहन्नम का अज़ाब मुक़र्रर ही है।'' (14)

मैदाने बद्र में रहमते इलाही का नुज़ूल (आयत 11-14) : अल्लाह तआला उन एहसानात को याद दिलाता है कि वक़्ते जंग तुम पर ग़ुनूदगी तारी करके हमने तुम पर एहसान किया है कि अपनी क़िल्लत और दुश्मन की कसरत का जो तुम्हें एहसास था और उस एहसास के तहत तुम पर एक डर सा जो तारी था उससे तुम्हें मामून कर दिया और इसी तरह अल्लाह तआला ने उहुद के दिन भी किया था। जैसाकि फ़र्माया (ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا) (3/आले इमरान : 154) यानी रंजो ग़म के बाद अल्लाह तआला ने तुम्हें अम्न दिया जो ग़ुनूदगी की सूरत में तुम्हें ढाँके हुए था। अबू तलहा (रज़ि.) कहते हैं कि जंगे उहुद के दिन मुझे भी ग़ुनूदगी आ गई थी कि तलवार मेरे हाथ से गिरी जाती थी और मैं उठाता जाता था। (सहीह बुख़ारी,

किताबुत्तफ़्सीर, बाब सूरह आले इमरान बाब क़ौलुहू (अमनतुन्नुआसा) : 4562; तिर्मिज़ी : 3007) और मैं लोगों को भी देख रहा था कि ढाल सर पर लगाए हुए नींद में लोग झूल रहे थे। हज़रत अली (रज़ि.) कहते हैं कि बद्र के दिन मिक़दाद (रज़ि.) के सिवा किसी के पास सवारी नहीं थी। हम सब नींद के से आलम में थे लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दरख़्त के नीचे सुबह तक नमाज़ें पढ़ते रहे और अल्लाह तआला के आगे रोते रहे। (अहमद : 1/125; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नद अबी यअला : 280; इब्ने हिब्बान : 2257; शैख़ अल्बानी (रह.) ने भी इसे सहीह क़रार दिया है। देखिए (सहीह मवारिदुज़्ज़मआन : 1408) इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि जंग के दिन यह ऊँघ अल्लाह तआला की तरफ़ से गोया एक अम्न की शक्ल में थी और नमाज़ में यही ऊँघ शैतान की तरफ़ से होती है। (तब्री : 13/419) क़तादा (रह.) कहते हैं कि ऊँघ सर में होती है और नींद दिल में होती है। मैं कहता हूँ कि गुनूदगी उहुद के दिन घेरे हुए थी और यह ख़बर तो बहुत आम और मशहूर है और यहाँ आयते शरीफ़ा स्याक़े क़िस्सा बद्र में है और यह इस बात पर दलील है कि बद्र में भी गुनूदगी तारी थी और यह शिद्दते जंग में मोमिनीन पर तारी हो जाया करती थी ताकि उनके क़ुलूब अल्लाह तआला की मदद से मुत्मइन और मामून रहें और यह मोमिनीन पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहमत है जैसाकि फ़र्माया, सख़्ती के साथ आसानी भी है।

मैदाने बद्र में फ़रिश्तों का नुज़ूल : इसीलिए हदीस में है कि बरोज़े बद्र नबी अकरम (ﷺ) अपने लिए बनाए हुए काशाना में सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के साथ थे और दोनों मिलकर अल्लाह तआला से दुआ कर रहे थे। ऐसे में नबी अकरम (ﷺ) को ऊँघ आ गई फिर आप (ﷺ) तबस्सुम (मुस्कुराते) करते हुए ख़ुदी में आ गए और फ़र्माने लगे, "ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! ख़ुश हो जाओ, वह हैं जिब्रईल (अ.) गर्द आलूद कैफ़ियत में। फिर आप (ﷺ) काशाने से बाहर आए और यह आयत तिलावत कर रहे थे कि "दुश्मनों को हज़ीमत हो गई और वह पीठ फेरकर भाग जाएँगे।" (दलाइलुन्नबुव्वत : 3/80, 81; व सनदुहू ज़ईफ़ुन लिइर्सालिही; इस मअनी की रिवायत सहीह बुख़ारी : 3953 में भी मौजूद है लेकिन इसमें जिब्राईल (अ.) का ज़िक्र नहीं है।) फिर इर्शाद होता है कि (युनज़्ज़िलु अलयकुम मिनस्समाइ माअन) यानी अल्लाह तआला ने आसमान से तुम पर पानी बरसाया। एक तो नींद की सी कैफ़ियत को तुम्हारे लिए अम्न की वजह क़रार दी, दूसरा एहसान तुम पर अल्लाह तआला का यह है कि पानी बरस पड़ा जो मुसलमानों के लिए मुफ़ीद और काफ़िरों के लिए मुज़िर (नुक़्सानदेह) साबित हुआ।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि बद्र में जहाँ नबी अकरम (ﷺ) ने क़याम फ़र्माया था वहाँ मुश्रिकों ने मैदाने बद्र के पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया था और मुसलमानों के और पानी के बीच वह हाइल हो गए थे मुसलमान कमज़ोरी की हालत में थे। शैतान ने मुसलमानों के दिलों में वस्वसा डालना शुरू किया कि तुम तो बड़े अल्लाह वाले होने का दावा करते हो और तुममें रसूल (ﷺ) भी मौजूद हैं, और पानी पर क़ब्ज़ा मुश्रिकों का है और पानी से तुम इतने महरूम हो गए हो कि नमाज़ भी पढ़ते हो तो ग़ुस्ल का तयम्मुम करके पढ़ लेते हो। चुनाँचे अल्लाह तआला ने ख़ूब पानी बरसाया। मुसलमानों ने पिया भी और पाकी व सफ़ाई भी हासिल की। अल्लाह तआला ने शैतान के वस्वसे को भी नीचा दिखाया पानी की वजह से मुसलमानों की तरफ़ की रेत जम

गई, लोगों को और जानवरों को चलने में आसानी हो गई और अल्लाह तआला ने नबी करीम (ﷺ) और मोमिनीन की एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद की। जिब्रईल (अ.) एक तरफ़ पाँच सौ फ़रिश्ते लिए हुए थे और मीकाईल (अ.) दूसरी तरफ़ पाँच सौ फ़रिश्ते लिए हुए मौजूद थे। (दलाइलुन्नबुव्वत : 3/78, 79; व सनदुहू ज़ईफुन; तब्री : 13/423) इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि मुश्रिकीने क़ुरैश जब अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले की मदद के लिए निकले और मुसलमानों से लड़ भिड़े तो चश्म-ए-बद्र पर पड़ाव डाला। मुसलमान पानी से महरूम हो गए। प्यास से तड़पने लगे नमाज़ भी जनाबत और हदस होने की हालत में पढ़ने लगे। यहाँ तक कि उनके दिलों में मुख़्तलिफ़ ख़्यालात पैदा होने लगे। अब अल्लाह तआला ने पानी बरसाया और मैदानों में पानी बहने लगा। मुसलमानों ने बर्तन भर लिए, जानवरों को पिलाया, नहाए। अल्लाह तआला ने उन्हें पाकी बख़्शी, अब वह साबित क़दम भी हो गए। मुसलमानों और काफ़िरों के बीच रेत थी। पानी बरस गया तो ज़मीन दब गई और सख़्त हो गई, मुसलमानों के क़दम ज़मीन पर जमने लगे। मशहूर यह है कि नबी अकरम (ﷺ) जब बद्र की तरफ़ चले तो वहाँ पानी के क़रीब उतरे। हुबाब बिन मुंज़िर (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह मक़ाम जहाँ आप खड़े हैं, तो क्या बहुक्मे वही खड़े हैं जिससे हम ज़र्रा भर सरताबी (नाफ़र्मानी) नहीं कर सकते, या यह कि जंगी मस्लिहत के तहत क़याम किया है। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मस्लिहत के तहत क़याम किया है" हुबाब (रज़ि.) ने कहा कि ऐसी सूरत में और आगे चलिए, आख़िर पानी पर क़ब्ज़ा कर लीजिए, वहीं हौज़ बनाकर यहाँ का सब पानी जमा कर लें तो पानी पर हमारा क़ब्ज़ा रहेगा और दुश्मन पानी के बग़ैर रह जाएगा। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) आगे चल खड़े हुए। (इब्ने हिशाम : 1/620; दलाइलुन्नबुव्वत : 3/31, 35; व सनदुहू ज़ईफुन लिइर्सालिही) कहते हैं कि हुबाब (रज़ि.) ने जब यह मश्वरा दिया तो उस वक़्त आसमान से एक फ़रिश्ता उतरा और जिब्रईल (अ.) हुज़ूर (ﷺ) के पास बैठे हुए थे। उस फ़रिश्ते ने कहा, "ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह तआला ने सलाम कहा है नीज़ इर्शाद फ़र्माया है कि हुबाब बिन मुंज़िर (रज़ि.) की राय तुम्हारे लिए सही है।" आप जिब्रईल (अ.) की तरफ़ मुतवज्जा हुए और पूछा, क्या तुम इसको जानते हो? जिब्रईल (अ.) ने उसको देखकर कहा कि मैं तमाम ही फ़रिश्तों को जानता तो नहीं हूँ लेकिन यह ज़रूर है कि यह फ़रिश्ता है कोई शैतान नहीं। इब्ने ज़ुबेर (रज़ि.) कहते हैं कि अल्लाह तआला ने पानी बरसाया, हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ की ज़मीन पानी से दबकर सख़्त हो गई और चलने में आसानी हो गई। लेकिन कुफ़्फ़ार की तरफ़ ज़मीन नशीब में थी वहाँ दलदल हो गया, उन्हें चलना फिरना दुश्वार था। अल्लाह तआला ने गुनूदगी का एहसान करने से पहले पानी बरसाकर एहसान किया, गर्दो गुबार दब गया, ज़मीन सख़्त हो गई, मुसलमान ख़ुश हो गए, साबितक़दमी बढ़ गई। अब ऊँघ आने लगी, मुसलमान ताज़ा दम हो गए। (तब्री : 13/425) सुबह लड़ाई होने वाली है, रात को हल्की सी बारिश हो गई। हमने पेड़ के नीचे होकर बारिश से पनाह ली। हुज़ूर (ﷺ) जागते रहे और लोगों से जंग के बारे में बातें करते रहे। क़ौलुहू (लियुतह्हिरकुम बिही) यानी हदसे अस्ग़र और हदसे अकबर से पाक करने के लिए पानी बरसाया और ताकि शैतान के बहकावे से भी तुमको छुड़ा दें और यह दिल की पाकी थी। जैसाकि अहले जन्नत के हक़ में फ़र्माया है कि उन्हें पहनने के लिए रेशमी लिबास मिलेगा और सोने चाँदी का ज़ेवर होगा और यह ज़ाहिरी ज़ीनत है और अल्लाह तआला उन्हें शराबे तुहूर पिलाएगा और हसद और बुग़्ज़ के कीने से उन्हें पाक कर देगा

और यह बातिन (अन्दर) की ज़ीनत है। पानी बरसाने से यह भी ग़र्ज़ थी कि तुम्हारे दिलों को इत्मिनान देकर साबिर और साबित क़दम बनाया जाए। यह सब्र और इक़्दाम बातिनी शुजाअत (अन्दरूनी बहादुरी) है और यह साबित क़दमी शुजाअते ज़ाहिरी है।

क़ौलुहू (इज़ यूही रब्बुक इलल मलाइकति अन्नी मअकुम फ़सब्बितुल्लज़ीना आमनू) अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों की तरफ़ वही भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मोमिनीन को साबित क़दम रखो। यह नेअमत ख़ुफ़िया है इसको अल्लाह तआला मुसलमानों पर ज़ाहिर फ़र्मा रहा है ताकि उसकी शुक्रगुज़ारी करें। वह तबारक तआला है। अल्लाह तआला ने मलाइका को ताकीद फ़र्माई कि नबी अकरम (ﷺ) की और दीने नबी और जमाअते मोमिनीन की मदद करें ताकि उनके दिल टूट न जाएँ, वह हिम्मत न हार दें। तुम भी उनके साथ काफ़िरों से क़िताल करो। कहा गया है कि फ़रिश्ता किसी मुसलमान के पास आता और कहता कि मुश्रिकों में अजीब बद दिली फैली हुई है। वह तो कह रहे हैं कि अगर मुसलमानों ने हमला कर दिया तो हमारे क़दम नहीं टिक सकते। हम तो भाग खड़े होंगे, अब हर एक दूसरे से कहता दूसरा तीसरे से। इस तरह सहाबा (रज़ि.) के दिल बढ़ जाते और समझ लेते कि मुश्रिकों में ताक़त व कुव्वत नहीं है। फिर फ़र्माता है कि मैं काफ़िरों के दिलों में रौब डाल दूँगा। यानी ऐ फ़रिश्तो! तुम मोमिनों को साबित क़दम रखो और उनके दिलों को क़वी बनाओ। तुम इन काफ़िरों की गर्दनों पर मारो और इनकी एक एक पोरी को ज़ख़्मी करो। इनके हाथ पैर काट दो।

मुफ़स्सिरीन ने (फ़ौक़ल आनाक़) के मअनी में इख़्तिलाफ़ किया है। कुछ ने सर पर मारने के मअनी लिए हैं और कुछ ने गर्दन पर चुनाँचे इस मअनी की शहादत इस आयत से मिलती है (فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ) (47/मुहम्मद : 4) यानी काफ़िरों से जंग हो तो गर्दनों पर मारो और उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ लो। क़ासिम (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "मैं अल्लाह तआला के अज़ाब में मुब्तला करने के लिए नहीं मब्ऊस हुआ हूँ।" यानी अल्लाह तआला की तरफ़ का अज़ाब जैसाकि पहली उम्मतों पर नाज़िल होता रहा बल्कि ख़ुद लड़कर गर्दनें मारकर और क़ैद करके उन्हें इब्रतनाक नतीजा पर पहुँचाऊँगा। इब्ने जरीर (रह.) कहते हैं कि गर्दनें मारना और खोपड़ी तोड़ना मुराद है। मग़ाज़िये उमवी में लिखा है कि जंगे बद्र के दिन नबी अकरम (ﷺ) मक़्तूलीन पर से गुज़रे और आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे (यफ़्लक़ हामन) यानी सर टूटे पड़े हैं, तो अबूबक्र (रज़ि.) साथ ही बोल उठे और जोड़ मिलाकर उसका एक शेअर ही बना दिया यानी "यफ़्लक़ हामन मिन रिजालिन अअज़्ज़तन अलैना, वहुम कानू अअक़ व अज़्लमा" यानी सर टूटे पड़े हैं उन लोगों के जो हम पर ग़ुरूर करते थे क्योंकि वह लोग बड़े ज़ालिम और नाफ़र्मान थे। नबी अकरम (ﷺ) ने गोया एक बैत के दो इब्तिदाई लफ़्ज़ कह दिए और मुंतज़िर थे कि अबूबक्र (रज़ि.) उसको एक शेअर बनाकर पूरा कर दें, क्योंकि आपके लिए बहैसियत शायर के साबित होना मुनासिब नहीं था। जैसाकि ख़ुद अल्लाह पाक ने फ़र्माया है कि (وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ) (36/यासीन : 69) यानी हमने इनको शायर नहीं बनाया और न इन्हें शायर होना सज़ावार था। बद्र के दिन में लोग उन मक़्तूलीन को पहचान लेते थे जो फ़रिश्तों के हाथों मरे हैं क्योंकि ऐसे मक़्तूलीन का ज़ख़्म गर्दन पर या

जोड़बन्दों पर होता था और यह ऐसे निशानात होते थे गोया आग से जले हुए हैं (वज़्रिबू मिन्हुम कुल्ल बनान) ऐ मोमिनों! दुश्मनों को मारो उनके जोड़बन्दों पर ताकि हाथ पैर टूट जाएँ। बनान जमा है बनानतन की हर जोड़ और हर हिस्से को 'बनान' कहते हैं। ओज़ाई (रह.) कहते हैं कि यह मतलब है कि ऐ फ़रिश्तों! इन काफ़िरों के चेहरों और आँखों पर मारो और ऐसे ज़ख़्म डालो गोया आग की चिंगारियों से जला दिए गए हैं। और किसी काफ़िर को क़ैद कर लेने के बाद मारना जाइज़ नहीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बद्र का क़िस्सा बयान करते हैं कि अबू जहल ने कह रखा था कि क़त्ल करने के बजाए मुसलमानों को ज़िन्दा पकड़ो ताकि तुम उन्हें मज़ा चखा सको, हमारे दीन को बुरा कहने, हम पर तअ़न करने और लात उ़ज़्ज़ा से रूगर्दानी का। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों से कह दिया था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम मोमिनीन को साबित क़दम रखो। मैं काफ़िरों के दिलों में मुसलमानों का रौब डाल दूँगा। तुम इनकी गर्दनों और जोड़बन्दों पर मारो। मक़्तूलीने बद्र में अबू जहल का 69वाँ नम्बर था। फिर उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ क़ैद करके क़त्ल कर दिया गया और सत्तर की तादाद पूरी हो गई। (ज़ालिक बि अन्नहुम शाक़्क़ुल्लाह व रसूलहू) इसकी वजह यह थी कि इन्होंने अल्लाह तआ़ला और अल्लाह तआ़ला के रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त की थी और शरअ़ व ईमान को छोड़ने का पहलू इख़्तियार किया। लफ़्ज़ 'शक़्क़' 'शक़्क़े अ़सा' से माख़ूज़ है यानी उसने लकड़ी के दो टुकड़े कर दिये। इर्शाद है कि जिसने अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह (ﷺ) से अलग होना यानी मुख़ालिफ़त इख़्तियार की, क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला अपनी मुख़ालिफ़त करने वाले पर ग़ालिब है। किसी बात में उसको भूल-चूक नहीं, उसके ग़ज़ब का कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता (ज़ालिकुम फ़ज़ूक़ूहु व अन्न लिल् काफ़िरीन अ़ज़ाबन्नारि) यह काफ़िरों से ख़िताब हो रहा है कि दुनिया में अ़ज़ाब व नकाल का मज़ा चखो और आख़िरत में भी अ़ज़ाबे जहन्नम का।

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ
يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

तर्जुमा : ''ऐ ईमानवालों! जब तुम काफ़िरों से आमने-सामने हो जाओ, तो उनसे पीठ न फेरना। (15) और जो शख़्स उनसे इस मौक़े पर पुश्त फेरेगा मगर हाँ! जो लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो या जो अपनी जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने आता हो वह मुस्तस्ना (अलग) है बाक़ी और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह बहुत ही बुरी जगह है।'' (16)

जंग से भागना सख़्त कबीरा (बड़ा) गुनाह है (आयत 15, 16) : जंग के आलम में पीठ फेरने वालों को धमकी दी जा रही है कि ऐ ईमानवालो! जब लड़ाई में तुम दोनों गुत्थ गए हो,तो अपने साथियों को छोड़कर भाग न जाना। हाँ! कोई चालबाज़ी के तौर पर भागे कि गोया ख़ौफ़ज़दा हो गया है ताकि उसका पीछा किया जाए फिर अकेला पाकर पलटकर हमला करके क़त्ल कर दे तो ऐसी मस्लिहत के तहत भागने में कोई हर्ज नहीं, या इस ग़र्ज़ से भागे कि मुसलमानों के दूसरे दस्ते (ग्रुप) से जा मिले ताकि जाकर उनकी मदद करे या वह उसकी मदद करें तो यह भी जाइज़ है क्योंकि वह अपने इमाम की पनाह में जाना चाहता है। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि मैं हुज़ूर (ﷺ) के भेजे हुए एक छोटे से लश्कर का सिपाही था कि लोगों में भगदड़ मच गई, मैं भी भागा। अब हमें एहसास हुआ कि हम जंग से भागे हैं और अल्लाह तआला के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए, अब क्या करें? हमने मश्वरा किया कि मदीना चलेंगे, हुज़ूर (ﷺ) के सामने पेश होंगे अगर हमारी तौबा हुज़ूर (ﷺ) ने क़बूल कर ली तो क्या कहना वरना हम कहीं भी निकल जाएँगे और चेहरा न दिखाएँगे। चुनाँचे हम नमाज़े ज़ुहर से पहले हुज़ूर (ﷺ) के पास आए। आप (ﷺ) ने पूछा, "तुम कौन लोग हो?" हमने कहा, हम पीठ फेरकर भागने वाले लोग हैं। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! बल्कि तुम लोग अपने मर्कज़ की तरफ़ आने वाले हो। मैं तुम्हारा और तुम्हारी जमाअत का बंधन हूँ।" हमने यह सुनकर आगे बढ़कर आप (ﷺ) के हाथों को बोसा दिया। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िततवल्ली यौमुज़्ज़हफ़ : 2647; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; तिर्मिज़ी : 1716; इब्ने माजा : 3704; मुख़्तसरन जिद्दन अल्अदबुल मुफ़रद : 972; अहमद : 2/70; मुस्नद हुमैदी : 687; बैहक़ी : 9/76; इसकी सनद में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद अल्हाशमी मुख़्तलत़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/365; रक़म : 254) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। देखिए (अल्इरवाअ : 1203) अबूदाऊद (रह.) ने और यह मज़ीद कहा है कि आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी (अव मुतहय्यिज़न इला फ़िअतिन) अहले इल्म ने अक्कारून के मअनी अर्राफ़ून बताए हैं यानी दूरअंदेश और नुक्तारस। अबू उबैदह (रज़ि.) सरज़मीने ईरान के एक पुल पर क़त्ल कर दिए गए तो उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा था कि होशियारी बरतकर उन्हें भाग आने का मौक़ा था। मैं उनका अमीर और बंधन था, मेरे पास क्यूँ न आ गए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि "ऐ लोगो! इस आयत से तुम ग़लतफ़हमी में न पड़ना। यह आयत यौमे बद्र के लिए थी और इस वक़्त मैं हर मुसलमान की जमाअत हूँ।" नाफ़ेअ (रह.) ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से कहा कि हम लोग दुश्मन से क़िताल के वक़्त साबित क़दम नहीं रह सकते और हम नहीं जानते कि हमारा मर्कज़ क्या है। इमाम या जंगी मर्कज़, तो कहा मर्कज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) थे। मैं ने कहा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है (इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ीना कफ़रू ज़हफ़न) तो कहा, यह आयत यौमे बद्र के बारे में उतरी है, न उससे पहले के लिए, न उसके बाद के लिए। (मुतहय्यिज़न) के मअनी हैं नबी अकरम (ﷺ) की तरफ़ पनाह लेने वाला। इसी तरह आज भी कोई शख़्स जंग के मैदान से हटकर अपने अमीर या अस्हाबे अमीर की तरफ़ पनाह ले सकता है। लेकिन यह फ़रार अगर इस वजह के सिवा कोई और वजह की बिना पर हो तो यह हराम है और गुनाहे कबीरा है। अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो, अल्लाह के साथ शिर्क, जादू करना, किसी को

नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, माले यतीम खा जाना, जिहाद में पीठ फेरकर भाग जाना, पाकदामन और बेगुनाह औरतों पर इल्ज़ाम लगाना।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल वसाया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (इन्नल्लज़ीना यअकुलूना अम्वालल यतामा....) : 2766; सहीह मुस्लिम : 89; अबूदाऊद : 6874; इब्ने हिब्बान : 5561; बैहक़ी : 8/249) यह बात और कई तरह भी साबित है कि यह आयत बद्र के बारे में नाज़िल हुई है। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि वह भागेगा तो अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस पर होगा। उसका ठिकाना जहन्नम है जो बहुत ही बुरा ठिकाना है। बशीर बिन मअबद (रज़ि.) कहते हैं कि मैं बेअत करने के लिए हुज़ूर (ﷺ) के पास आया तो बेअत के लिए आप (ﷺ) ने यह शर्त की कि (ला इलाहा इल्लल्लाहु) की गवाही दो, मेरी रिसालत को मानो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात देते रहो, हज्ज करो, रमज़ान के रोज़े रखो और यह भी कि अल्लाह तआला की राह में जिहाद करोगे।'' मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसमें से दो बातें मेरे लिए दुश्वार हैं, एक तो जिहाद कि अगर बहालते जंग कोई पीठ फेरकर भाग जाएगा तो अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस पर नाज़िल होगा और मुझे डर है कि मौत से घबराकर कहीं मुझसे यह गुनाह सरज़द न हो जाए। दूसरे सदक़ा तो अल्लाह तआला की क़सम! मुझे ग़नीमत और उसके सिवा कुछ नहीं मिलता है और दस ऊँटनियाँ हैं जिनका दूध दूह लिया, पिया पिलाया, उस पर सवारी कर ली। तो हुज़ूर (ﷺ) ने मेरा हाथ थाम लिया, उसको हिलाया और कहा, ''जिहाद भी न करोगे, सदक़ा भी न दोगे फिर जन्नत का इस्तिहक़ाक़ कैसे हासिल करोगे।'' मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे मंज़ूर है मैं हर शर्त पर बेअत करूँगा। (अहमद : 5/224; व सनदुहू सहीहुन व अख़्रजअ मन जअ्अफ़हू; अल्मुअजमुल कबीर : 1233; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/42) यह हदीस ग़रीब है। सिहाह सित्ता में मौजूद नहीं। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तीन कोताहियों के होते हुए कोई अमले नेक भी कारआमद नहीं हो सकता 1. अल्लाह के साथ शिर्क, 2. वालिदैन की नाफ़िर्मानी उनसे सरकशी, 3. मैदाने जंग से भाग जाना। (अल्मुअजमुल कबीर : 1420; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/104; इसकी सनद में यज़ीद बिन रबीआ मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 4/422; रक़म : 9688) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने भी इस रिवायत को ज़ईफ़ुन जिद्दन का हुक्म लगाया है। देखिए (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ह : 1384) यह हदीस भी ग़रीब है।

ज़ेद (रज़ि.) से रिवायत है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''जिसने (अस्तग़्फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुव व अतूबु इलैहि) कहा तो उसके गुनाह बख़्श दिए जाएँगे अगरचे जंग से फ़रार का गुनाह भी हो।'' (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल इस्तिग़फ़ार : 1517; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 3577; तबरानी : 4670) यह हदीस भी ग़रीब है। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ख़ादिमे नबी (ﷺ) ने इसके सिवा और हदीस बयान नहीं की। कुछ ने यह हुक्म लगाया है कि फ़राइज़े जंग सहाबा पर हराम थे इसलिए कि जिहाद उस वक़्त उन्हीं पर फ़र्ज़ हुआ था। कुछ ने कहा है कि सिर्फ़ अंसार पर फ़र्ज़ था इसलिए कि बेअत उन्होंने की थी और कहा था कि सख़्ती और राहत हर हालत में हम फ़र्माबरदार रहेंगे और यह भी कहा गया है कि यह आयत सिर्फ़ अहले बद्र के लिए मख़्सूस है। दलील यह पेश की है कि उस वक़्त तक मुसलमानों की कोई बाक़ायदा मुस्तक़िल और साहिबे शौकत जमाअत थी ही नहीं जो कुछ थे यही मुट्ठीभर लोग थे इसलिए ऐसे हुक्म की सख़्त ज़रूरत थी।

नबी अकरम (ﷺ) की यह हदीस इसी हालत पर रोशनी डालती है कि ''या अल्लाह! अगर तू इस मुट्ठीभर जमाअत को भी हलाक कर देगा तो दुनिया में तुझे पूजने वाला कोई बाक़ी न रहेगा।'' हसन बसरी (रह.) से रिवायत है कि यौमे बद्र में यह बात ज़रूर थी लेकिन आज अगर कोई अपने इमाम की तरफ़ अपने क़िला की तरफ़ पनाह ले तो कोई हर्ज नहा। चुनाँचे बद्र के दिन भागने वालों के लिए अल्लाह तआला ने दोज़ख़ क़रार दे दी लेकिन इस्तिस्ना (अलग) भी कर दिया कि दुश्मन को धोखा देने के लिए हिक्मते अमली की ख़ातिर या अपनी जमाअत में आकर महफ़ूज़ हो जाने के लिए ऐसा किया तो ख़ैर हर्ज नहीं। फिर उसके बाद जंगे उहुद हुई तो फ़र्माया (إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ) (3/आले इमरान : 155) फिर सात साल बाद जंगे हुनैन हुई तो फ़र्माया (ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ) (9/तौबा : 25) और (ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ) (9/तौबा : 27) और फिर यहाँ फ़र्माया (वमय्युंवल्लिहिम यौमइज़िन दुबुरहू) यह आयत अहले बद्र के बारे में नाज़िल हुई है। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ित्तवल्ला यौमज़्ज़हफ़ : 2648; व सनदुहू सहीहुन) इस सारी तशरीह से साबित होता है कि ग़ैर अहले बद्र भी बवक़्ते जंग अगर फ़रार करें तो भी यह हराम होना चाहिए। अगरचे यह आयत बवक़्ते जंगे बद्र नाज़िल हुई थी लेकिन जब उसको सात हलाक करने वाली चीज़ों में शुमार किया गया तो हराम होना चाहिए, वल्लाहु आलम!

***

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : ''तो तुमने उनको क़त्ल नहीं किया लेकिन अल्लाह तआला ने उनको क़त्ल किया। और आपने ख़ाक की मुट्ठी नहीं फेंकी लेकिन अल्लाह तआला ने वह फेंकी और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से उनकी मेहनत का ख़ूब बदला दे बिला शुब्हा अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (17) एक बात तो यह हुई और दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की तदबीर को कमज़ोर करना था।'' (18)

बद्र में कामयाबी अल्लाह की मदद से थी (आयत 17, 18) : इस बात पर रोशनी डाली जा रही है कि बन्दों के अफ़आल का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है और जो नेक काम बन्दों से ज़ाहिर होते हैं उसको अल्लाह तआला ही ने नेक बनाया है क्योंकि तौफ़ीक़ उसी ने दी थी और काम करने की हिम्मत व ताक़त उसी ने बख़्शी थी। इसीलिए इर्शाद होता है कि उन काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया है बल्कि अल्लाह तआला ने क़त्ल

किया है, तुम्हारी ताक़त में यह कहाँ था कि इतने कम होने के बावजूद दुश्मन की इतनी कसीर तादाद फ़ौज को हरा सको, यह कामयाबी अल्लाह तआला ही ने तुम्हें दी। जैसाकि फ़र्माया (وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ) (3/आले इमरान : 123) यानी बद्र में अल्लाह तआला ने तुम्हें कामयाब बनाया हालाँकि तुम बहुत कमज़ोर थे और फ़र्माया (لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿۲۵﴾) (9/तौबा : 25) यानी अल्लाह तआला ने अक्सर मौक़ों पर तुम्हारी मदद की। हुनैन की जंग में तुम्हारी कसरत (ज़्यादा होने) ने तुमको घमण्डी बना दिया था लेकिन उस कसरत ने तुम्हें कोई फ़ायदा न दिया। ज़मीन इतनी कुशादा होने के बावजूद भी तुम पर तंग हो गई थी और तुम पीठ फेरकर भाग गए। अल्लाह तआला जानता है कि कामयाबी कसरते अदद (गिनती से ज़्यादा) पर नहीं और न तादाद और हथियारों पर है, कामयाबी तो अल्लाह तआला की तरफ़ की बात है। जैसाकि फ़र्माया (كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً) (2/बक़रह : 249) बहुत बार होता है कि छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ जाती है। फिर मुट्ठीभर मिट्टी के बारे में अल्लाह तआला नबी अकरम (ﷺ) से फ़र्माता है जो जंगे बद्र में काफ़िरों के चेहरे पर आपने फेंकी थी कि मैदाने जंग की झोंपड़ी से आप (ﷺ) बाहर आए, अल्लाह तआला से दुआ और तज़र्रुअ की, यह मिट्टी काफ़िरों की तरफ़ फेंकी और फ़र्माया, ''तुम्हारे चेहरे बिगड़ जाएँ।'' फिर अस्हाबे किराम (रज़ि.) को हुक्म दिया कि ''फ़ौरन धावा बोल दो।'' अल्लाह तआला की क़ुदरत कि यह मिट्टी और कंकर मुश्रिकीन की आँखों में जा गिरे। एक भी ऐसा न था जो उससे परेशान न हुआ हो और जिसको जंग से क़ासिर न रहना पड़ा हो। इसीलिए फ़र्माया कि (वमा रमैता इज़ रमैत वलाकिन्नल्लाहा रमा) यानी तुमने मिट्टी नहीं फेंकी थी अल्लाह तआला ने वो मिट्टी फेंकी थी। आँखों में मिट्टी झोंककर तुमने उन्हें सर नगूँ नहीं किया था, अल्लाह तआला ने किया था।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के दिन अपने दोनों हाथ उठाकर अल्लाह तआला से दुआ की कि, ''ऐ अल्लाह! यह मुट्ठीभर लोग मर जाएँगे तो कौन तेरा नाम लेने वाला बाक़ी रहेगा।'' तो जिब्रईल (अ.) ने आकर कहा कि मुट्ठीभर मिट्टी इन काफ़िरों की तरफ़ फेंक मारो। आप (ﷺ) ने ऐसा ही किया। काफ़िरों की नाक, आँख और चेहरे मिट्टी से भर गए और गर्द आलूद आँधी से घबराकर पिछले पैर भागे और शिकस्त हुई। (तब्री : 13/445) मुसलमानों ने उनको क़त्ल करते हुए उनका पीछा किया और क़ैद कर लिया। काफ़िरों को यह हज़ीमत हुज़ूर (ﷺ) के मोजिज़े की वजह से हुई। अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद (रह.) कहते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने तीन कंकर लिए थे, एक सामने फेंका, दो कंकर दुश्मन की फ़ौज के सीधी व बाईं तरफ़ फेंके थे। यह बद्र के दिन का वाक़िया है, हुज़ूर (ﷺ) ने इस तरह यौमे हुनैन में भी किया था। हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से रिवायत है कि बद्र के दिन हमने आसमान से एक आवाज़ सुनी गोया एक थाल में कंकर डालकर हिलाए गए हों। यह हुज़ूर (ﷺ) की मिट्टी फेंकने की आवाज़ थी। चुनाँचे हमें हज़ीमत हो गई थी। यहाँ और दो क़ौल हैं जो बहुत ग़रीब हैं।

एक यह कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक कमान मंगवाई, यह बहुत लम्बी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने दूसरी

लाने का हुक्म दिया। दूसरी लाई गई। हुज़ूर (ﷺ) ने उससे क़िला की तरफ़ एक तीर फेंका, यह तीर घूमता हुआ चला और सरदारे क़बीला इब्ने अबी हुक़ैक़ के आ लगा, जबकि वह अपने क़िला के अंदर अपने बिस्तर पर था। इसी बिना पर अल्लाह तआला ने फ़र्माया (वमा रमैता इज़ रमैत...)। यह हदीस बहुत ग़रीब है मुम्किन है कि रावी को शक हो गया हो या उसकी मुराद यह हो कि यह आयत आम है और इस वाक़िया को भी शामिल है। वरना यह तो ज़ाहिर है कि सूरह अन्फ़ाल की इस आयत में जंगे बद्र का ज़िक्र है तो यह वाक़िया उसी जंगे बद्र का है और यह बात बिलकुल खुली है।

दूसरा यह कि उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर (ﷺ) ने उबय बिन ख़ल्फ़ के एक नेज़ा मारा था। यह शख़्स ज़िरह बक्तर और लोहे में ग़र्क़ था लेकिन यह नेज़ा उसके तालू पर जा लगा और वह घोड़े से लुढ़कने लगा। उसके कई दिन बाद उसी तक्लीफ़ से उसको मौत आई। (हाकिम : 2/327; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ोहरी अन्अन) वह अज़ाबे दुनियावी के अलावा अज़ाबे आख़िरत का भी मुस्तहिक़ हुआ। इन दोनों इमामों से ऐसी रिवायत बहुत ग़रीब है। शायद इन दोनों का यही मक़्सद हो कि आयत आम है ख़ास वाक़िया ही के बारे में नहीं, बल्कि जब कभी ऐसा हो तो हर वाक़िया उसी आयत के बारे में हो सकता है (वलि युब्लियल मोमिनीना मिन्हु बलाअन हसनन) ताकि मोमिनीन अल्लाह तआला की इस नेअमत को मालूम करें कि दुश्मन उनसे बहुत ज़्यादा होने के बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ग़ल्बा दिया ताकि वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें। हदीस में है कि "अल्लाह तआला ने बड़ा अच्छा इम्तिहान हमसे लिया है (इन्नल्लाह समीउन अलीम) अल्लाह तआला दुआओं को सुनने वाला है और जानता है कि कौन मदद का मुस्तहिक़ है और कौन नहीं।" (ज़ालिकम व अन्नल्लाह मूहिनु कैदिल काफ़िरीन) यह मिलने वाली नुसरत (मदद) की दूसरी बशारत है कि अल्लाह तआला मालूम करा रहा है कि वह काफ़िरों की चालों को नाकाम बना देने वाला है और मुस्तक़्बिल में इनको ज़लील करने वाला है और वह तबाह व बर्बाद होने वाले हैं।

***

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ
وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने आ मौजूद हुआ और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए निहायत ख़ूब है। और अगर तुम फिर वही काम करोगे तो हम भी फिर वही काम करेंगे और तुम्हारी ज़मीअत तुम्हारा ज़रा भी काम न आएगी भले गिनती में ज़्यादा हो। और वाक़ेई बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है।" (19)

हक़ पर कौन? फ़ैसला हो गया (आयत 19) : काफ़िरों से ख़िताब है कि अगर तुम फ़तह मांग रहे और अल्लाह तआला से कह रहे थे कि हमारे और दुश्मनों के बीच फ़ैसला कर दे तो जो तुम मांग रहे थे वही हुआ। ऐ अल्लाह! जिसने हमसे रिश्ता तोड़ लिया है और ग़ैर मानूस बातें हमें पेश कर रहा है, कल उसे ज़लील कर, यह तो उन्हीं काफ़िरों की माँग थी। पस यह आयत उतरी कि (इन तस्तफ़्तिहू फ़क़द जाअकुमुल फ़त्हु) तुम फ़तह मांग रहे थे लो फ़तह आ गई। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि मुश्रिकीन जंगे बद्र के लिए जब मक्का से निकले तो ग़िलाफ़े कअबा को पकड़कर अल्लाह तआला से दुआ मांगने लगे और कहने लगे, ''ऐ अल्लाह! दोनों फ़रीक़ों में जो तेरे नज़दीक अफ़ज़ल है और जिसका क़िब्ला बेहतर क़िब्ला है उसकी मदद फ़र्मा।'' चुनाँचे अल्लाह पाक इर्शाद फ़र्माता है कि तुम जैसा कहते हो वैसी ही मैं तुम्हारी मदद करता हूँ और वह मदद मुहम्मद (ﷺ) के साथ होगी। चुनाँचे इर्शाद है कि (वइन तन्तहू फ़हुव ख़ैरुल्लकुम वइन् तऊदू नऊद) यानी अगर तुम कुफ़्र से बाज़ आ जाओगे तो उसके अंदर दीनो दुनिया में तुम्हारी भलाई है और अगर तुमने फिर शिर्क व कुफ़्र किया तो हम भी दोबारा सज़ा देंगे और कुफ़्रो ज़लालत का तुमने फिर एआदा (लौटाना) किया तो हम भी फिर ऐसा ही मज़ा चखाएँगे और दोबारा मुहम्मद (ﷺ) को फ़तह व नुसरत देंगे और तुम्हारी जमाअत ख़्वाह कितनी ही ज़्यादा क्यों न हो, कुछ तुम्हारे काम न आएगी। क्यों कि अल्लाह तआला जिसके साथ हो उस पर कौन ग़ालिब आ सकता है। (इन्नल्लाह मअल मोमिनीन) अल्लाह तआला मोमिनों के साथ है और यही नबी (ﷺ) की जमाअत है।

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا
تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ
الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ
اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ
اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों! अल्लाह तआला का कहना मानो और उसके रसूल (ﷺ) का और उसका कहना मानने से रूगर्दानी मत करो और तुम सुन लेते ही हो। (20) और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया हालाँकि वह सुनते सुनाते कुछ नहीं। (21) बेशक बदतरीन ख़लाइक़ (लोग) अल्लाह तआला के नज़दीक वह लोग हैं जो बहरे हैं, गूँगे हैं जो कि ज़रा नहीं समझते। (22) और अगर अल्लाह तआला उनमें कोई ख़ूबी देखता तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ देता। और अगर उनको अब सुना दें तो ज़रूर रूगर्दानी करेंगे बेरुख़ी करते हुए। (23) ऐ ईमानवलों! तुम अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) के कहने को बजा लाया करो जबकि रसूल (ﷺ) तुमको तुम्हारी ज़िन्दगी बख़्श चीज़ की तरफ़ बुलाते हों और जान रखो कि अल्लाह तआला आड़ बन जाया करता है आदमी के और उसके दिल के बीच में और बिला शुब्हा तुम सबको अल्लाह तआला ही के पास जमा होना है।" (24)

अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत वाजिब है (आयत 20-24) : मोमिनीन को अल्लाह की और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत और तर्के मुख़ालिफ़त का हुक्म होता है और यह कि काफ़िरों से मुशाबिहत न पैदा करो। और इसीलिए फ़र्माया (ला तवल्लौ अन्हू) यानी इताअत और इम्तिसाले अम्र न छोड़ो। (व अन्तुम तस्मऊन) यानी हालाँकि तुम जानते हो कि नबी अकरम (ﷺ) किस बात की तरफ़ बुला रहे हैं और उन लोगों की तरह न हो जाना जो कहते हैं कि हाँ! हमने सुना हालाँकि वह नहीं सुनते। कुछ कहते हैं कि इससे मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिनका तरीक़ा यह था कि ज़ुबान से तो कहते थे कि हम सुनते हैं, क़बूल करते हैं लेकिन ख़ाक़ नहीं सुनते थे। फिर आगाह फ़र्माया जा रहा है कि बनी आदम की यह क़िस्म फ़ित्रतन सारी मख़्लूक़ से बदतर है।

अल्लाह तआला के नज़दीक बुरी मख़्लूक़ : चौपायों और जानदार में बदतरीन वह हैं जो हक़ बात सुनने में बहरे हैं, हक़ बात बोलते नहीं गूँगे हैं। अक़्ल ही नहीं रखते क्योंकि हक़ बात समझते नहीं। यह बदतरीन मख़्लूक़ है और यह काफ़िर इंसान हैं जानवर तो जिस फ़ित्रत पर पैदाशुदा हैं, उसी ढर्रे पर चल रहे हैं गोया अल्लाह तआला के मुतीअ हैं। इंसान तो फ़ित्री तौर पर इबादत के लिए पैदा किए गए हैं लेकिन फिर भी यह कुफ़्र करते हैं यानी ख़िलाफ़े फ़ित्रत करने की वजह से जानवरों से भी बदतर हैं इसीलिए इन्हें जानवरों से तश्बीह दी और फ़र्माया कि काफ़िरों की मिसाल उन जानवरों की सी है जो पुकारने वाले का मतलब तो कुछ नहीं समझता सिर्फ़ आवाज़ को सुनता है। फिर फ़र्माया बल्कि यह काफ़िर जानवरों से भी गए गुज़रे हैं। ऐसे ही लोग इंतिहाई ग़फ़्लत में पड़े हुए हैं। कहा गया है कि इससे मुराद क़ुरैश के बनी अब्दुद्दार के लोग हैं। कुछ का ख़्याल है कि इससे मुनाफ़िक़ मुराद हैं। मगर मुश्रिकीन व मुनाफ़िक़ीन में कोई मनाफ़ात नहीं इसलिए कि यह दोनों फ़रीक़ बेअक़्ल और नासमझ हैं और नेक अमल करने की इनमें सलाहियत ही नहीं। फिर इर्शाद होता है कि अगर अल्लाह तआला जानता होता कि यह समझाने से समझ जाएँगे और इनमें कोई ख़ैर ही हो सकती तो अल्लाह तआला इन्हें सुनाता यानी सुनने की ताक़त देता। तक़्दीरे कलाम यह है कि चूँकि इनमें ख़ैर ही नहीं इसलिए वह

समझते ही नहीं हैं और अगर मान लें अल्लाह तआला इन्हें सुनाए भी तो भी यह कमबख़्त सीधी राह इख़्तियार न करेंगे और फिर ऐराज़ ही करेंगे।

रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात मानने में ही नजात है : ऐ ईमानवालो! तुम्हारी ही इस्लाह और मस्लिहत की ख़ातिर जब नबी अकरम (ﷺ) तुम्हें बुलाएँ तो फ़ौरन क़बूल कर लो और तामीले हुक्म में जल्दी करो। अबू सईद बिन मुअल्ला (रज़ि.) कहते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि नबी अकरम (ﷺ) का गुज़र हुआ। आप (ﷺ) ने मुझे आवाज़ दी लेकिन नमाज़ में होने की वजह से मैं न जा सका। नमाज़ पढ़कर मैं पहुँचा तो फ़र्माया कि ''अब तक क्यूँ नहीं आए, क्या तुमसे अल्लाह तआला ने नहीं कहा है कि अल्लाह तआला का रसूल तुम्हारे ही भले के लिए तुम्हें बुलए तो फ़ौरन हाज़िर हो जाया करो।'' फिर फ़र्माया कि ''मैं यहाँ से चलने से पहले तुम्हें कुरआन की एक अज़ीम सूरत सिखाऊँगा।' फिर हुज़ूर (ﷺ) जाने लगे तो मैंने याद दिलाया। ग़र्ज़ फ़ौरी तामील का हुक्म है और रिवायत है कि यह वाक़िया अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) का है। आपने वह सूरत सूरह फ़ातिहा बताई और फ़र्माया कि 'यही' सब्अे मसानी है यानी सात आयतें हैं जो हर वक़्त नमाज़ में दोहराई जाती रहती हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुल अन्फ़ाल बाब (या अय्युहल् लज़ीना आमनुस्तजीबुल्लाह वलिर्रसूल...) : 4647; अबूदाऊद : 1458; इब्ने माजा : 3785; अहमद : 3/211; इब्ने हिब्बान : 777) इस हदीस का बयान सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि (लिमा युहयिय्कुम) के मअनी हैं हक़ की ख़ातिर। क़तादा (रह.) कहते हैं कि यही कुरआन है जिसमें नजात बक़ा और हयात है। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि इस्लाम लाने में ही इनकी ज़िन्दगी है और कुफ़्र में मौत है या यह कि जब नबी अकरम (ﷺ) तुम्हें जंग के लिए बुलाएँ कि जिसके ज़रिये अल्लाह तआला ने तुम्हें इज़्ज़त बख़्शी हालाँकि इससे पहले तुम ज़लील थे और कमज़ोरी के बाद तुम्हें ताक़त बख़्शी और पहले तुम काफ़िरों से मग़्लूब थे फिर तुम उन पर ग़ालिब आ गए। क़ौलुहू तआला (वअलमू अन्नल्लाह यहूलु बैनल मरइ व क़ल्बिही) जान रखो कि अल्लाह तआला इंसान और इंसान के दिल के बीच हाइल है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि वह हाइल है मोमिन और कुफ़्र के बीच और काफ़िर के और ईमान के बीच कि मोमिन को कुफ़्र करने नहीं देता और काफ़िर को ईमान लाने नहीं देता। (हाकिम : 2/328) मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि वह यूँ हाइल है कि काफ़िर को समझने नहीं देता। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि कोई भी इसकी कुदरत नहीं रखता कि उसकी इजाज़त के बग़ैर ईमान लाए या कुफ़्र करे। क़तादा (रह) कहते हैं कि यह आयत इस आयत जैसी है कि (نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ) (50/क़ाफ़ : 16) और बहुत सारी अहादीस इसके मुनासिबे हाल वारिद हैं। अनस बिन मालिक (रज़ि.) से मरवी है कि अकसर आप (ﷺ) फ़र्माया करते थे (या मुक़ल्लिब क़ुलूब सब्बित क़ल्बी अला दीनिका) ''ऐ दिलों के फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख'' तो हमने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम आप (ﷺ) पर और कुरआन पर ईमान ला चुके हैं। क्या आप (ﷺ) को हम पर कोई अंदेशा है? फ़र्माया, हाँ! क्योंकि क्या अजब तुम बदल जाओ। क्योंकि लोगों के दिल अल्लाह तआला की दो उँगलियों के बीच हैं जब चाहे बदल दे।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ अनिल कुलूबि बैन इस्बइयर्रहमानः 2140; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अअमश रावी मुदल्लस है और तसरीह

बिस्सिमाअ साबित नहीं। अहमद : 3/112; मुस्नद अबी यअ़ला : 3687; ह़ाकिम : 1/526) नुवास बिन सिम्आन (रज़ि.) कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते थे कि हर दिल अल्लाह तआ़ला की दो उँगलियों के बीच है कि अगर अल्लाह तआ़ला उसको सीधा रखना चाहे तो वह सीधा रहता है अगर चाहे बिगाड़ दे तो वह दिल बिगड़ जाता है। और फ़र्माया कि मीज़ान अल्लाह तआ़ला के हाथ में है चाहे हल्का कर दे, चाहे भारी कर दे। (इब्ने माजा, अल मुक़द्दमा बाब फ़ीमा अन्करतिल जहमिया : 199; व सनदुहू स़ह़ीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7738; अह़मद : 4/182; अस्सुन्नतु लि इब्ने अबी आ़सि़म : 219; इब्ने हि़ब्बान : 943; ह़ाकिम : 1/525)

उम्मे सलमा (रज़ि.) कहती हैं कि मैंने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या दिल बदल जाते हैं। फ़र्माया, "हाँ! अल्लाह तआ़ला अगर चाहे तो इंसान के दिल को सीधा कर दे और अगर चाहे तो वह टेढ़ा कर दे इसीलिए हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि (رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾) (3/आले इमरान : 8) यानी "ऐ हमारे रब! हिदायत पर होने के बाद हमारे दिलों को कज (टेढ़ा) न होने दे और अपनी त़रफ़ से हमारे लिए रह़मत भेज, तू बड़ा वह्हाब और बख़्शने वाला है।" मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे ऐसी दुआ़ सिखला दीजिए कि मैं अपने लिए वह मांगती रहूँ, तो फ़र्माया यूँ दुआ़ मांगा करो (अल्लाहुम्मा रब्बन्नबी मुह़म्मदिन इग़्फ़िर ली ज़ंबी वज़्हिब ग़ैज़ क़ल्बी व आजिर नी मिम्मुज़ल्लातिल फ़ितनि मा अह़ययतनी) (अह़मद : 6/302; तिर्मिज़ी, किताबुद्दअ़वात, बाब दुआ़उ (या मुक़ल्लिब क़ुलूब...) : 3522; बिदूनि (अल्लाहुम्मा रब्बिन्नबी (ﷺ)....मा अह़ययतनी) व सनदुहू ह़सन) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "बनी आदम के दिल अल्लाह तआ़ला के पास एक दिल वाह़िद की तरह हैं कि उन्हें जिस त़रह़ चाहे फेरे।" फिर फ़र्माया (अल्लाहुम्मा मुसर्रिफ़ल् क़ुलूबि स़र्रिफ़ क़ुलूबना इला त़ाअ़तिक) यानी "ऐ दिलों के फेरने वाले! हमारे दिलों को अपनी इत़ाअ़त की त़रफ़ फेर दे।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब तस़रीफ़ुल्लाहि तआ़लल् क़ुलूबि कैफ़ शाअ : 2654; अह़मद : 2/168; इब्ने हि़ब्बान : 9002; शरीअ़त लिल आजुरी : 741)

***

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "और तुम ऐसे वबाल से बचो कि जो ख़ास़ उन ही लोगों पर वाक़ेअ न होगा जो तुममें इन गुनाहों के करने वाले हैं। और यह जान लो कि अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाला है।" (25)

ख़ास की वजह से आम लोगों को अज़ाब (आयत 25) : मोमिनीन को आज़माइश से डराया जा रहा है कि अल्लाह तआला की आज़माइश गुनहगार और नेकोकार सबके बारे में होगी, सिर्फ़ गुनहगार उससे मख़सूस नहीं। हज़रत ज़ुबेर (रज़ि.) से कहा गया कि या अबू अब्दुल्लाह! तुम्हें क्या हो गया, अमीरुल मोमिनीन (हज़रत) उस्मान (रज़ि.) क़त्ल कर दिए गए तुमने उस्मान (रज़ि.) को खो दिया। फिर उनके ख़ून के दावेदार बन गए, दावेदार ही बनना था तो उन्हें क़त्ल क्यूँ होने दिया। तो ज़ुबेर (रज़ि.) ने कहा कि यह अल्लाह तआला की आज़माइश थी जिसमें हम लोग मुब्तला हो गए हम नबी (ﷺ), अबूबक्र, उमर और उस्मान (रज़ि.) के ज़माने में क़ुरआन के अंदर पढ़ते थे (वत्तक़ू फ़ित्नतल् ला तुसीबन्नल्लज़ीना ज़लमू मिन्कुम ख़ास्सतन) यानी तुम भी ऐसी आज़माइश में मुब्तला होगे जो सिर्फ़ ज़ालिमों ही से ख़ास नहीं, बल्कि सबका इम्तिहान होगा। लेकिन हमें गुमान भी न था कि हमीं को इससे सामना पड़ेगा यहाँ तक कि वह आज़माइश हम पर आ पड़ी। (अहमद : 1/165; व सनदुह हसन; मुस्नद बज़्ज़ार : 976; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11206) और मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ मरे और क़त्ले उस्मान (रज़ि.) से उस फ़ित्ना की इब्तिदा (शुरुआत) हो गई।

हज़रत हसन बसरी (रह.) से रिवायत है कि यह आयत अली, अम्मार, तलहा और ज़ुबेर (रज़ि.) के बारे में उतरी है। ज़ुबेर (रज़ि.) का बयान है कि हम हमेशा यह आयत पढ़ते रहते थे लेकिन क्या ख़बर थी कि इसका मिस्दाक़ हम ही होंगे। सुद्दी (रह.) का ख़्याल है कि यह ख़ासकर अहले बद्र के हक़ में उतरी है। जंगे जमल में वही इसका मिस्दाक़ बने और आपस में लड़ बैठे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का ख़्याल है कि इससे सिर्फ़ अस्हाबे नबी अकरम (ﷺ) मुराद हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) इसकी तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि मोमिनीन को हुक्म है कि बदी को अपने अंदर पनपने न दो। जहाँ किसी को गलत काम में मुब्तला देखो फ़ौरन रोक दो। वरना अज़ाब सब पर होने लगेगा। यही तफ़्सीर अच्छी तफ़्सीर है।

मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि यह हुक्म तुम्हारे लिए भी है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि तुममें से हर शख़्स इस आज़माइश में मुब्तला होगा। क्योंकि अल्लाह तआला फ़र्माता है (إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ) (64/तग़ाबुन : 15) पस तुममें से हर शख़्स को फ़ित्नों की गुमराहियों से अल्लाह तआला की पनाह मांगना चाहिए क्योंकि यह तहज़ीर सहाबा और ग़ैर सहाबा सब पर शामिल है। अगरचे यह ज़रूर सही है कि ख़िताब सहाबा (रज़ि.) से है। यह हदीस फ़ित्नों और आज़माइशों से डरने पर दलालत करती है। और इस मौज़ूअ के बारे में इंशाअल्लाह एक मुस्तक़िल किताब में सराहत की जाएगी कि यह काम अइम्मा ने भी मुस्तक़िल किताबों की सूरत में अंजाम दिया है। यहाँ जिस चीज़ का ख़ुसूसियत से ज़िक्र है वह यह कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते थे कि "अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ख़्वास के अमल के सबब अवाम पर अज़ाब नहीं भेजता है, लेकिन जबकि ख़ास लोग गलत काम क़ौम में फैला हुआ देखते हैं और उसको रोकने पर क़ादिर होते हैं लेकिन अपने इक़्तिदार को काम में लाकर नहीं रोकते तो फिर उमूमी अज़ाब आ जाता है और उसमें ख़ास व आम सब गिरफ़्तार हो जाते हैं।" (मुस्नद अहमद : 4/192; व सनदुहू ज़ईफ़) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

फ़र्माया, "अल्लाह तआला की क़सम! जब तक तुम अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुंकर करते रहोगे, अज़ाब न आएगा और जहाँ बुरी बातों से तुमने रोकना छोड़ दिया और नेक काम की तर्ग़ीब से रुक गए तो अल्लाह तआला तुम पर सख़्त अज़ाब भेज सकता है, फिर तुम लाख दुआ करोगे दुआ क़बूल नहीं होगी।" (तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मा जाअ फ़िल अम्रि बिल मअरूफ़ि वन्नही अनिल मुंकर : 2169, 2/288, 289; वहुवा हसन) या यह कि अल्लाह तआला तुम पर दूसरी क़ौम को मुसल्लत कर देगा फिर तुम्हारी सारी दुआएँ बेकार हो जाएँगी। अबुज़िनाद (रह.) कहते हैं कि मैंने एक ग़ुलाम को हुज़ेफ़ा (रज़ि.) की तरफ़ भेजा तो वह उस वक़्त यह कह रहे थे कि नबी अकरम (ﷺ) के ज़माने में अगर एक बात भी कोई इस क़िस्म की कह देता तो उसको मुनाफ़िक़ समझने लगते लेकिन आज एक नशिस्त में तुममें से एक आदमी की ज़ुबान से मैं ऐसे चार मुनाफ़िक़ाना कलिमात सुन रहा हूँ, तुमको चाहिए कि नेक कामों का हुक्म दिया करो, बुरी बातों से फ़ौरन रोक दिया करो, लोगों को ख़ैर पर उभारा करो, वरना तुम सबके सब अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाओगे। या अज़ाब इस नोइयत (क़िस्म) का होगा कि तुम्हारे हाकिम बुरे लोग बना दिए जाएँगे फिर अच्छे लोग भी लाख दुआएँ करें, कुछ न होगा।

नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) तक़रीर कर रहे थे और अपनी दोनों उँगलियों से अपने कानों की तरफ़ इशारा कर रहे थे और कह रहे थे कि अल्लाह तआला के हुदूद पर क़ायम रहने वाले और हुदूदुल्लाह (अल्लाह की हदों) को तोड़ने वाले या इसमें सुस्ती व ग़फ़्लत करने वालों की मिसाल यूँ समझो जैसे चंद लोग किसी कश्ती में सवार हों, कश्ती के ऊपर के लोग नीचे के लोगों की तक्लीफ़ का सबब बने और नीचे के लोगों ने ऊपर के लोगों को तक्लीफ़ पहुँचाई, यानी नीचे के लोगों को पानी की ज़रूरत हुई तो ऊपर गए ताकि पानी खींच लाएँ लेकिन ऊपर वालों को तक्लीफ़ होने लगी तो कहने लगे, अगर हम कश्ती के नीचे ही से कोई तख़्ता हटाकर पानी का रास्ता बना लें तो ऊपर वालों को तक्लीफ़ न होगी। ग़र्ज़ यह कि ज़ाहिर है कि उसका क्या नतीजा होगा, कश्ती में पानी आने की वजह से सब डूब जाएँगे, चाहिए कश्ती में सूराख़ करने से उन्हें रोक दिया जाए। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात, बाब अल्क़रअतु फ़िल मुश्किलात : 2686; तिर्मिज़ी : 2173; अहमद : 4/268; इब्ने हिब्बान : 297) इसी तरह अगर उन गुनहगारों को तुम छोड़ दोगे, गुनाह के काम से रोकोगे नहीं तो कश्ती वालों की तरह तुम सबके सब हलाक हो जाओगे अगरचे कश्ती के ऊपर वालों की तरह तुम्हारा अपना क़ुसूर न हो इसलिए कि यह सज़ा है इस बात की कि रोका क्यूँ नहीं।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से रिवायत है कि "मआसी (गलत काम) जब मेरी उम्मत में आम हो जाएँगे तो अल्लाह तआला अज़ाब को आम कर देगा।" तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसमें नेक लोग भी तो होंगे। आपने फ़र्माया "हाँ! वह भी अज़ाब में मुब्तला होंगे। लेकिन मरने पर अल्लाह तआला की मग़्फ़िरत उन्हें हासिल रहेगी।" (अहमद : 6/306, 294, 295, बिसनदैन जईफ़ैन)

***

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ
فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "और उस हालत को याद करो जबकि तुम थोड़ी तादाद में थे, सरज़मीन में कमज़ोर शुमार किए जाते थे, इस अंदेशा (डर) में रहते थे कि तुमको लोग उचक न लें। तो अल्लाह तआला ने तुमको रहने को जगह दी और अपनी मदद से कुव्वत दी और तुमको नफ़ीस नफ़ीस चीज़ें अता कीं ताकि तुम शुक्र करो। (26) ऐ ईमानवालों ! तुम अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) के हुक़ूक़ में ख़लल मत डालो और अपनी क़ाबिले हिफ़ाज़त चीज़ों में ख़लल मत डालो और तुम तो जानते हो। (27) और तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद् एक आज़माइश (इम्तिहान) की चीज़ है और इस बात को भी जान रखो कि अल्लाह तआला के पास बड़ा भारी अज्र है।" (28)

कमज़ोर मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद (आयत 26-28) : अल्लाह पाक उन नेअमतों को बता रहा है जो मोमिनीन पर की गई कि वह तादाद में कम थे हमने उन्हें बढ़ा दिया, वह कमज़ोर थे और डरे हुए थे, हमने ताक़तवर बना दिया और डर की वजह दूर कर दी, ग़रीब और फ़क़ीर थे, उन्हें पाक रिज़्क़ दिया। उन्हें शुक्रगुज़ार बनाया वह इताअत करने लगे और हर बात में फ़र्मांबरदार हो गए। यह था हाल मोमिनीन का जबकि वह मक्का में थे और तादाद में बहुत थोड़े थे, कमज़ोर थे, मुश्रिक, मजूसी, रूमी सबके सब उनकी क़िल्लत और अदमे कुव्वत की वजह से उनके क़त्ल के दर पे हो गए थे हर आन उन्हें डर था कि वह उचक लिए जाएँगे। यही हालत एक अर्सा तक रही फिर अल्लाह तआला ने उन्हें मदीना की तरफ़ हिज्रत करने का हुक्म दिया। वहाँ उन्हें पनाह मिली। मदीना के लोगों ने उनकी मदद की। यौमे बद्र और दूसरी लड़ाईयों में उनका साथ दिया। जान व माल उन पर कुर्बान कर दिया क्यों कि वह अल्लाह तआला और अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की इताअत करना चाहते थे (वज़्कुरू इज़ अन्तुम क़लीलुम् मुस्तज़्अफ़ूना फ़िल अर्ज़ि) क़तादा (रह.) कहते हैं कि अरब में यह लोग बहुत ही बुरी हालत में थे, उनकी ज़िन्दगी बहुत तबाह थी, पेट से भूखे जिस्म से नंगे, राह से बेराह, जो भी था बदनसीब, उन्हें तो खाने को न मिलता था बल्कि उन्हीं को खाया जा रहा था। हमें तो नहीं मालूम कि दुनिया भर में उनसे बढ़कर कोई भी ज़लील हालत में हो, लेकिन इस्लाम लाने के बाद क्या हुआ, यही ज़लील लोग मुल्कों पर क़ाबिज़ हो गए, अमीर और बादशाह बन गए। रिज़्क़ ढेरों मिलने लगा। बादशाहों

पर भी हुक्म चलाने लगे। अल्लाह तआला ने उन्हें वह सब कुछ दिया जो आज तुम देख रहे हो। अब अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र करो, वह मुन्इमे हक़ीक़ी (हक़ीक़ी इन्आम करने वाला) है। शुक्रगुज़ार बन्दों को पसंद करता है और दौलत व नेअमत को और बढ़ा देता है।

अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) की ख़यानत का मफ़्हूम : यह आयत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर (रज़ि.) के हक़ में उतरी है जबकि हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें बनू कुरैज़ा के यहूदियों की तरफ़ भेजा था कि हुक्मे रसूल की शर्त मानते हुए क़िला ख़ाली कर दें। यहूदियों ने अबू लुबाबा (रज़ि.) ही से मश्वरा मांगा। उन्होंने उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ मश्वरा दिया। उसके बाद ही अबू लुबाबा (रज़ि.) को एहसास हुआ और वह ताड़ गए कि यह तो अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) की ख़यानत हुई। चुनाँचे क़सम खा बैठे कि जब तक अल्लाह तआला तौबा क़बूल कर न लेगा, मर जाएँगे लेकिन खाना न खाएँगे। अब मदीना की मस्जिद में आए, खम्बे से अपने को बाँध दिया। नौ दिन इसी हालत में गुज़रे। भूख प्यास से बेहोश होकर गिर गए। यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबानी अल्लाह तआला ने तौबा क़बूल कर ली। लोग बशारत देते हुए आए और चाहा कि सतून से खोल दें। अबू लुबाबा (रज़ि.) ने कहा, मुझे सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) ही खोल सकते हैं। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खोला तो कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने सब अपना माल सदक़ा कर दिया। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! सिर्फ़ तीसरा हिस्सा सदक़ा होगा।" (तब्री : 13/482; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है जबकि मुख़्तसरन मुस्नद अहमद : 3/452 में मौजूद है जिसकी सनद कमज़ोर है। देखिए (अल्मौसूअतुल हदीसिया : 25/27) मुग़ीरा बिन शुअबा (रज़ि.) कहते हैं कि बलिहाज़े मज़्मून यह आयत क़त्ले उस्मान (रज़ि.) की पेशीनगोई के बारे में है क्योंकि अमीर को फ़ित्ना फ़साद पैदा करके क़त्ल कर देना अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़यानत है।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं कि अबू सुफ़ियान किसी जगह पर है उसको गिरफ़्तार करने के लिए निकलो और यह मामला बिलकुल राज़ में रहे।" लेकिन एक मुनाफ़िक़ ने अबू सुफ़ियान को लिख भेजा कि मुहम्मद (ﷺ) तुमको पकड़ने के दर पे हैं, होशियार हो जाओ। तो यह आयत उतरी कि अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की ख़यानत न करो, रसूलुल्लाह (ﷺ) का राज़ ज़ाहिर कर देना यही रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़यानत है। यह हदीस ग़रीब है। आयत के स्याक़ से भी इसका सबूत नहीं मिलता। मुस्लिम व बुख़ारी में हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) का क़िस्सा यूँ लिखा है कि उन्होंने कुफ़्फ़ारे कुरैश को नबी अकरम (ﷺ) के क़सद से आगाह करने के लिए ख़त लिखा। यह फ़तहे मक्का के वक़्त की बात है। अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को आगाह कर दिया, आप (ﷺ) ने पीछे आदमी को दौड़ाया, वह ख़त पकड़ा गया। हातिब (रज़ि.) को बुलाया गया। हातिब (रज़ि.) ने अपने कुसूर का ऐतिराफ़ किया। उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसकी गर्दन उड़ा दीजिए, इसने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से ख़यानत की है। तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "उमर (रज़ि.)! जाने भी दो, यह बद्र के जिहाद में शामिल थे, क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि मुजाहिदीने बद्र के बारे में अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि मैंने तुम्हें बख़्श दिया, तुम्हारे सब गुनाह मुआफ़ हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल्जासूस वत् तजस्सुस वत्तबहहुस : 3007;

सहीह मुस्लिम : 2494; अबूदाऊद : 2650; तिर्मिज़ी : 3302; अहमद : 1/79; मुस्नद अबी यअ्ला : 394) ग़र्ज़ यह कि सही बात यही है कि आयत में उमूमियत है अगरचे यह दुरुस्त है कि आयत का शाने नुज़ूल एक सबबे ख़ास है, और उलमा के नज़दीक उमूम लफ़्ज़ के क़ाइल हो सकते हैं। ख़ुसूस सबब नहीं तो न सही। और ख़यानत की तारीफ़ में छोटे बड़े लाज़िम और मुतअद्दी सब ही गुनाह शामिल हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि) कहते हैं कि गुनाह से बचो। उर्वा बिन ज़ुबेर (रज़ि.) कहते हैं कि मतलब यह है कि ऐसा न करो कि सामने तो किसी की मर्ज़ी की बात बोलो और उसके पीठ पीछे किसी से उसकी ग़ीबत या मुख़ालिफ़त करो, असली ख़यानत यही है, अमानत इसी से ख़त्म होती है। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) की ख़यानत यही है कि आदमी बाहमी ख़यानत करे। लोग नबी अकरम (ﷺ) से बात सुनते थे, दूसरों से कह देते थे उसकी ख़बर मुश्रिकीन तक पहुँच जाती थी। इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "दो आदमियों के बीच की बात बहर सूरत अमानत हुआ करती है।" बात को जहाँ सुना है, वहीं छोड़ देना चाहिए। किसी के सामने किसी की बात दोहराना नहीं चाहिए अगरचे उसने मना न किया हो (वअ्लमू अन्नमा अम्वालुकुम व औलादुकुम फ़ित्नतुन) फ़ित्ना से आज़माइश और इम्तिहान मुराद है कि औलाद देकर आज़माते हैं कि तुम शुक्रगुज़ार हो या नहीं और औलाद की ज़िम्मेदारियाँ बजा लाते हो या नहीं, या यह कि उनकी मुहब्बत में अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल हो जाते हो। अगर इस इम्तिहान में पूरे उतरोगे तो अल्लाह तआला के पास अज्रे अज़ीम है। और फ़र्माया कि शर्र और ख़ैर के ज़रिये हम तुमको आज़माएँगे। और फ़र्माया कि ऐ मोमिनों! तुम्हारी औलाद तुम्हारे माल अल्लाह तआला की याद से तुमको ग़ाफ़िल न बना दें अगर ऐसा होगा तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। और फ़र्माया कि तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारी औलाद दुश्मन हैं इसलिए एहतियात को पेशेनज़र रखो। अल्लाह तआला के पास का सवाब और उसकी जन्नतें इस माल और औलाद से कहीं बेहतर हैं। यह दुश्मन की तरह ज़ररसाँ (तकलीफ़ देह) हैं और अक्सर इनमें से तुम्हारे लिए फ़ायदाबख़्श नहीं बनते। अल्लाह पाक दुनिया और आख़िरत का मालिक है, क़यामत में उसके पास सवाबे अज़ीम है। हदीस में है कि "ऐ इब्ने आदम! तू मुझे तलाश कर, मैं तुझे मिल जाऊँगा। मैं तुझे मिल गया तो समझ ले कि सब कुछ मिल गया और अगर तूने मुझे खो दिया तो सब कुछ खो दिया, चाहिए कि मैं तेरे पास हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ रहूँ।"

हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "तीन चीज़ों में ईमान की ज़बरदस्त मिठास है (1) अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) का हर चीज़ से ज़्यादा महबूब होना (2) जिससे भी मुहब्बत और ख़ुलूस हो तो सिर्फ़ अल्लाह तआला की ख़ातिर और लिल्लाहियत के तौर पर हो, ज़ाती ग़र्ज़ से न हो। (3) आग में झोंक दिया जाना बेहतर समझे बनिस्बत इसके कि इस्लाम के बाद मुर्तद हो जाए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब वमन करिहा अंय् यऊद फ़िल कुफ़्रि कमा यक्रहू.... : 21; सहीह मुस्लिम : 43; इब्ने माजा : 4033; अहमद : 3/172; इब्ने हिब्बान : 237) बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुहब्बत को माल और औलाद पर भी मुक़द्दम समझें। जैसाकि हदीस में है कि "अल्लाह तआला की क़सम! ईमान नसीब ही नहीं अगर अपनी जान व माल व औलाद से ज़्यादा मुझे न चाहो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब हुब्बिर् रसूल (ﷺ) मिनल ईमान; सहीह मुस्लिम : 44)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢٩ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ
اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۗ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝٣٠

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों! अगर तुम अल्लाह तआला से डरते रहोगे तो अल्लाह तआला तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको बख़्श देगा। और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29) और उस वाक़िया का भी ज़िक्र कीजिए जबकि काफ़िर लोग आप (ﷺ) की निस्बत तदबीर सोच रहे थे कि आप को क़ैद कर लिया जाए या आपको क़त्ल कर डालें या आपको देश निकाला दे दें और वह तो अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह तआला अपनी तदबीर कर रहा था और सबसे ज़्यादा मुस्तहकम (मज़बूत) तदबीर वाला अल्लाह तआला है।" (30)

अल्लाह तआला से डर जाना ही अच्छा है (आयत 29, 30) : ऐ मोमिनों! अगर तुम अल्लाह तआला से डरो तो अल्लाह तआला तुमको दीन और दुनिया में नजात दे देगा। 'फ़ुरक़ान' से मुराद नजात या मदद या हक़ व बातिल में फ़ैसला कर देना मुराद है। यह तफ़्सीर इब्ने इस्हाक़ की तफ़्सीर, तफ़्सीर मा सबक़ से ज़्यादा आम है। इसलिए कि जो अल्लाह तआला से डरेगा उसके अहकाम बजा लाएगा, उसकी मनाही से पहरेज़ करेगा, मअरिफ़ते हक़ व बातिल की उसे तौफ़ीक़ होगी। यह उसकी नजात व मदद का सबब होगा, उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगा, अल्लाह तआला ग़फ़्फ़ार व सत्तार बन जाएगा, अल्लाह तआला से अज्रे अज़ीम का हक़दार होगा जैसाकि फ़र्माया, "ऐ मोमिनों! अल्लाह तआला से डरो और रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअत करो, अल्लाह तआला तुम पर दोहरी रहमत नाज़िल करेगा वह तुम्हें एक नूर देगा कि उसकी रहनुमाई में चलोगे, वह तुम्हें बख़्श देगा, वह बड़ा ग़फ़ूरुर रहीम है।" (57/हदीद : 28)

कुफ़्फ़ार की मज्लिसे शूरा (ख़ास मिटिंग) में क़त्ले रसूल (ﷺ) की नापाक साज़िश : अब काफ़िर यह चाल चलना चाहते हैं कि तुमको क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या वतन से निकाल दें। इस्बात के मअनी क़ैद और हबस के हैं। मतलब यह है कि वह तुम्हारे साथ कोई बुरा इरादा रखते हैं। काफ़िरों ने जब यह मश्वरा किया कि नबी अकरम (ﷺ) को क़ैद या क़त्ल कर दें या देश निकाला दें तो अबू तालिब ने भतीजे से पूछा, क्या तुम्हें कुछ ख़बर है कि यह काफ़िर तुम्हारे साथ क्या क़सद रखते हैं। तो आप (ﷺ) ने फ़र्मा दिया कि "क़ैद या क़त्ल या जला वतनी।" तो अबू तालिब ने पूछा, तुम्हें किसने ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरे रब ने ख़बर दी।" अबू तालिब ने कहा, तुम्हारा रब बहुत अच्छा रब है, हमेशा उसके ख़ैरतलब रहो। आप (ﷺ) ने

फ़र्माया, "मैं उसका ख़ैरतलब क्या रहूँगा, बल्कि वह मेरा ख़ैरतलब रहता है।" (यह मुर्सल यानी ज़ईफ़ रिवायत है और इसकी सनद में हज्जाज बिन इरतात और इब्ने जुरेज मुदल्लस रावी हैं। (अल्मीज़ान : 1/458, 460; रक़म : 1726) सच तो यह है कि अबू तालिब का ज़िक्र इसमें बहुत ही अजीब है बल्कि क़ाबिले इंकार। इसलिए कि यह आयत मदनी है और यह वाक़िया और कुरैश का इस तरह मश्वरा करना हिज्रत की रात था और अबू तालिब की मौत तो उससे भी तीन साल पहले वाक़ेअ हो चुकी थी। अबू तालिब की मौत ही के सबब तो काफ़िरों को इतनी जुर्अत व हिम्मत भी हुई थी क्योंकि अबू तालिब तो हमेशा आपकी हिमायत और मदद करते रहते थे और भतीजे की हिफ़ाज़त में कुरैश का मुक़ाबला करते थे।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सरदाराने कुरैश की एक जमाअत ने मज्लिसे शूरा (अहम मिटिंग) की और आपको नुक़्सान देने के दरपे हुए। इस मज्लिस (मिटिंग) में इब्लीस भी एक शैख़े जलील की सूरत में आया। लोगों ने पूछा, तुम कौन हो? उसने जवाब दिया। मैं अहले नजद का शैख़ हूँ, मैंने सुना कि तुम लोग मज्लिसे शूरा कर रहे हो, मैं भी चला आया ताकि मेरी नसीहत और मश्वरे से तुम महरूम न रहो। लोगों ने कहा, आईए, ज़रूर आईए। वह कहने लगा कि तुम लोग उस शख़्स के बारे में ख़ूब फ़िक्र और तदबीर से काम लो वरना बहुत मुम्किन है कि वह तुम पर छा जाए। चुनाँचे एक ने राय दी कि क़ैद कर देना चाहिए यहाँ तक कि वह क़ैद ही में हलाक हो जाए जैसा कि ज़ुहैर और नाबिग़ा शायरों को इससे पहले क़ैद कर दिया था और वह वहीं मरते दम तक सड़ते रहे और यह भी तो एक शायर ही है। इस पर वह शैख़ नजदी चीख़ उठा कि मेरी तो हर्गिज़ यह राय नहीं। अल्लाह तआला की क़सम! उसका रब उसे वहाँ से निकाल ले जाएगा, वह अपने साथियों में पहुँच जाएगा। फिर वह हमला करके तुमसे सब कुछ छीन लेगा और तुम्हारे शहरों से तुमको निकाल बाहर करेगा। लोगों ने कहा, शैख़ ने सच कहा, कोई दूसरी तज्वीज़ पेश करो। दूसरे ने राय दी उसको अपने मुल्क ही से निकाल बाहर करो और चैन पाओ जब वह यहाँ रहेगा ही नहीं तो तुम्हें उससे फिर अंदेशा ही क्या है। उसका ताल्लुक़ तुम्हारे सिवा किसी और से रहेगा। तुम्हें क्या वास्ता। यह सुनकर शैख़ नजदी ने कहा, अल्लाह तआला की क़सम! यह राय भी ठीक नहीं, क्या तुम्हें उसकी शीरीं (मीठी) जुबानी की ख़बर नहीं, वह अपनी बातों से सबका दिल मोह लेता है, अगर तुमने ऐसा किया तो वह बाहर जाकर सारे अरब को मिला लेगा। उसके सारे हिमायती मिलकर हमला कर बैठेंगे और तुम्हें अपने वतन से निकाल देंगे, तुम्हारे शरीफ़ क़त्ल कर दिए जाएँगे। लोगों ने कहा, शैख़ सच कहता है, कोई और राय पेश करो। तो अबू जहल ने कहा, मैं एक मश्वरा देता हूँ, अगर तुम सोचो तो उससे बेहतर कोई दूसरी राय नहीं हो सकती। हर क़बीला से तुम एक नौजवान चुन लो जो बहादुर और शरीफ़ हो, हर एक के पास तलवार हो, सब मिलकर उस पर एक ही बार में हमला कर बैठें जब वह क़त्ल हो जाए तो उसका ख़ून क़बाइल में बट जाएगा। यह तो मुम्किन नहीं कि बनू हाशिम का एक क़बीला कुरैश के सारे क़बीलों से लड़ाई मोल ले, मजबूरन बनू हाशिम को उसकेक़त्ल की दियत क़बूल करनी पड़ेगी। दियत दे देंगे हमको चैन मिल जाएगा। शैख़ नजदी ने कहा, वल्लाह! यह राय ठीक रही, इससे बेहतर कोई राय नहीं। इस पर इत्तिफ़ाक़े राय के बाद मज्लिस ख़त्म की गई। अब जिब्राईल (अ.) आए और हुज़ूर (ﷺ) से कहा कि आज की रात बिस्तर पर न सोना और काफ़िरों की साज़िश की ख़बर दे दी। हुज़ूर (ﷺ) उस रात अपने बिस्तर पर न सोये

और उसी वक़्त हिज्रत का हुक्म दे दिया। मदीना आने के बाद अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) पर सूरह अन्फ़ाल नाज़िल की, अपनी नेअ़मतों का ज़िक्र फ़र्माया और फ़र्माया कि (यम्कुरून व यम्कुरुल्लाहु. वल्लाहु ख़ैरुल माकिरीन) वह चाल चलते हैं, अल्लाह तआला भी चाल चलेगा, अल्लाह बड़ा मुदब्बिर है। इनका क़ौल था ''(तरब्बसू बिही रैबल मनूना हत्ता युहलिक) उसी की तरफ़ इशारा करते हुए इर्शादे बारी है (اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿۳۰﴾) (52/तूर : 30) क्या यह लोग यूँ कहते हैं कि यह शायर है, हम इसके बारे में हादिस-ए-मौत का इंतिज़ार कर रहे हैं। चुनाँचे उस दिन का नाम ही ''यौमुज़्ज़हमत'' पड़ गया। क्योंकि उस दिन हुज़ूर (ﷺ) के क़त्ल की साज़िश की गई थी। उनके उन्हीं इरादों का ज़िक्र आयत (وَ اِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا) (17/इस्रा : 76) में है। नबी अकरम (ﷺ) हुक्मे इलाही ही के इंतिज़ार में थे और जब क़ुरैश ने क़त्ल का इरादा कर लिया तो नबी अकरम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को बुलाया और हुक्म दिया कि मेरे बिस्तर पर लेट जाओ। अली (रज़ि.) सब्ज़ चादर ओढ़कर लेट गए। रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर निकले। लोग दरवाज़े पर दिखाई दिए। आप (ﷺ) ने एक मुट्ठीभर मिट्टी ली, उनकी तरफ़ फेंकी, उनकी आँखें नबी अकरम (ﷺ) की तरफ़ से फिर गईं, आप (يٰسٓ ﴿۱﴾ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ تا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾) (36/यासीन : 1, 9) पढ़ते हुए निकल गए। (दलाइलुन्नबुव्वत : 2/469) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि फ़ातिमा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास रोती हुई आईं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्यूँ रोती हो?'' हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने कहा, कैसे न रोऊँ, यह क़ुरैश के लोग लात व उ़ज़्ज़ा की क़समें खा खाकर वादा किए हुए हैं कि आपको देखकर हमला करके क़त्ल कर देंगे और हर एक उनमें से आपको क़त्ल में हिस्सा लेना चाहता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''बेटी! वुज़ू के लिए पानी लाओ।'' आप (ﷺ) ने वुज़ू किया, कअ़बतुल्लाह की तरफ़ चले। क़ुरैशियों ने कहा कि यह वही है लेकिन साथ ही उनके सर नीचे को झुक गए, गर्दनें टेढ़ी हो गईं। वह अपनी नज़रें उठा न सकी। हुज़ूर (ﷺ) ने एक मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और उनकी तरफ़ फेंकी और कहा, चेहरे बिगड़ जाएँ। जिसको यह कंकरी लगी, यौमे बद्र में वह काफ़िर ज़रूर क़त्ल हुआ। (अहमद : 1/303; व सनदुहू हसन; हाकिम : 1/163; इब्ने हिब्बान : 6502; दलाइलुन्नबुव्वत : 6/240) ग़र्ज़ हुज़ूर (ﷺ) हिज्रत करके ग़ार में जा पहुँचे, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को साथ ले लिया।

मुश्रिकीन हुज़ूर (ﷺ) के घर की चौकीदारी करते रहे। हज़रत अली (रज़ि.) को मुहम्मद (ﷺ) समझते रहे, सुबह के क़रीब धावा बोल दिया। लेकिन घर में अली (रज़ि.) को देखा तो सारा मंसूबा चौपट हो गया। पूछने लगे, मुहम्मद (ﷺ) कहाँ है? अली (रज़ि.) ने कहा, मुझे कोई ख़बर नहीं। नक़्शे क़दम के पते से चले। पहाड़ के क़रीब पहुँचे तो इश्तिबाह हो गया। पहाड़ पर चढ़ गए, ग़ार के सामने से गुज़रे, ग़ार के मुँह पर मकड़ी ने जाला बुन दिया था। कहने लगे, अगर ग़ार के अंदर कोई गया होता तो उसके दहाने पर मकड़ी का इतना बड़ा जाला कैसे क़ायम रहता। आप (ﷺ) ग़ार में तीन दिन ठहरे रहे। (अहमद : 1/348; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; तबरानी : 12155; इसकी सनद में उस्मान जज़री मजरूह रावी है (अल्जरह वत्तअ़दील : 6/174; रक़म : 652) अल्लाह पाक फ़र्माता है कि वह चाल चलते हैं तो हम भी अपनी चाल बताते हैं। देखो कैसे उन काफ़िरों से नजात दे दी।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ
عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

तर्जुमा : ''और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया अगर हम इरादा करें तो उसके बराबर हम भी कह लाएँ। यह तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ बेदलील बातें हैं जो पहलों से नक़्ल की हुई चली आ रही है।(31) और जबकि उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह तआला! अगर यह क़ुरआन आपकी तरफ़ से वाक़ेई है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसाइए या हम पर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब वाक़ेअ कर दीजिए। (32) और अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आप (ﷺ) के होते हुए उनको अ़ज़ाब दें और अल्लाह तआला उनको अ़ज़ाब न देंगे जिस हालत में वह इस्तिग़फ़ार भी करते रहते हैं।'' (33)

कुफ़्फ़ार का झूठा दावा और अ़ज़ाब का मुतालबा (आयत 31-33) : क़ुरैश के कुफ़्र व तमर्रुद की ख़बर दी जा रही है कि क़ुरआन सुनकर वह कैसा झूठा दावा करते हैं। कहते हैं कि हमने जो यह क़ुरआन सुना है चाहें तो हम भी ऐसा कह दें। यह सिर्फ़ इनका झूठा दावा है और क़ौल बिला फ़ेअ़ल है। चुनाँचे इस पर कई बार क़ुरआन में तहद्दी की गई। चैलेंज दिया गया कि ऐसी एक सूरत ही बना लाओ लेकिन वह ऐसा न कर सके। ऐसा कहकर वह ख़ुद अपने नफ़्सों को धोखा दे रहे हैं। और अपने झूठे हम ख़यालों को भी धोखे में रखे हुए हैं। कहते हैं कि यह कहने वाला नज़र बिन हारिस था। यह बेदीन फ़ारस शहर की तरफ़ गया हुआ था। वहाँ के ईरानी बादशाहों और रुस्तम व अस्फ़न्दियार की तारीख़ पढ़ा हुआ था और जब वापिस हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की बिअ़सत वाक़ेअ हो चुकी थी। आप लोगों को क़ुरआन सुनाते रहते थे और जब हुज़ूर (ﷺ) मज्लिस ख़त्म कर देते तो यह कमबख़्त नज़र बैठ जाता और यह ईरानी बादशाहों का इतिहास बयान करके कहता, बताओ किसने अच्छी क़िस्सा ख़्वानी की है, मैंने या मुहम्मद (ﷺ) ने? और जब अल्लाह तआला ने यौमे बद्र में मुसलमानों को कामयाबी बख़्शी और कुछ मुश्रिकीने मक्का गिरफ़्तार हुए तो हुज़ूर (ﷺ) ने उसको भी गर्दनज़दनी क़रार दिया और उसकी भी गर्दन उड़ा दी गई। मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) ने उसको क़ैद किया हुआ था। सईद बिन जुबेर (रज़ि.) कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने बद्र के दिन तीन क़ैदियों के क़त्ल का हुक्म दिया था, उक़्बा बिन अबी मुईत, तुऐमा बिन अदी, नज़र बिन हारिस।

नज़र मिक़्दाद (रज़ि.) का क़ैदा था। हुज़ूर (ﷺ) ने जब उसके क़त्ल का हुक्म दिया तो मिक़्दाद

(रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह तो मेरा क़ैदी है, मुझे मिलना चाहिए। तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "इसने किताबुल्लाह का मुँह चिढ़ाया है" चुनाँचे क़त्ल का हुक्म हो गया। मिक़्दाद (रज़ि.) ने अपने असीर (क़ैदी) की तरफ़ फिर हुज़ूर (ﷺ) की तवज्जह दिलायी तो आप (ﷺ) ने यह दुआ की कि "या अल्लाह! तू अपने फ़ज़्ल से मिक़्दाद को बहुत कुछ दे।" तो मिक़्दाद (रज़ि.) कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसरार के साथ मुतालबा से मेरी यही तो ग़र्ज़ थी कि आपसे दुआ करा लूँ। इसी नज़र के बारे में यह आयत उतरी (वइज़ा तुत्ला अलयहिम आयातिना....) सईद बिन जुबेर (रह.) ने तुऐमा के बजाए मुत्इम बिन अदी का नाम कहा है और यह बात ग़लत है इसलिए कि मुत्इम बिन अदी तो बद्र के दिन ज़िन्दा ही नहीं था। इसीलिए उस दिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "अगर आज मुत्इम बिन अदी ज़िन्दा होता और इन मक़्तूलीन में से किसी का सवाल करता तो मैं उसको यह क़ैदी दे देता।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब मा मिनन् नबी (ﷺ) अलल्आसारी मिन ग़ैरि अंय्यख़मस : 3139; अबूदाऊद : 2689; अहमद : 4/80; मुस्नद अबी यअला : 7416; बैहक़ी : 9/67) आप (ﷺ) ने यह इसलिए फ़र्माया कि उसने हुज़ूर (ﷺ) को उस वक़्त बचाया था जबकि आप ताइफ़ के ज़ालिमों से पीछा छुड़ाकर मक्का वापिस हो रहे थे।

'असातीर' उस्तूरतुन की जमा है यानी वह किताबें और इक़्तिबासात जो सीखकर लोगों को सुनाये जाते हैं और यह महज़ अफ़साने होते हैं जैसा कि दूसरी जगह अल्लाह तआला ने यूँ फ़र्माया है (وَ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۵﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۶﴾) (25/फ़ुरक़ान : 5-6) काफ़िर कहते हैं कि यह क़ुरआन तो मुतक़द्दिमीन (पहले लोगों) के झूठे अफ़साने हैं जिन्हें लिख लिया गया और शब व रोज़ (रात दिन) सुनाया जाता रहता है। जो अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करता है वह उससे दरगुज़र करके उसकी तौबा क़बूल करता है। वह आसमान व ज़मीन के भेदों को जानता है और यह क़ुरआन उसी की तरफ़ से है। काफ़िर कहते हैं कि "ऐ अल्लाह तआला! अगर यह क़ुरआन हक़ है तो आसमान से हम पर पत्थर बरसा या अज़ाबे अलीम हमें दे।" यह दुआ इनके कमाले जहल व नादानी व सरकशी व इनाद की वजह से है, इसी बेवक़ूफ़ी में वह बदनाम हैं। उन्हें तो चाहिए था कि वह दुआ यूँ मांगते कि ऐ अल्लाह! अगर यह क़ुरआन तेरी ही तरफ़ से है तो तू हमें इसके इत्तिबाअ की तौफ़ीक़ इनायत फ़र्मा लेकिन उन्होंने तो अपनी जान पर अज़ाब मोल ले लिया और सज़ा के लिए जल्दी करने लगे। जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि "यह लोग अज़ाब के लिए जल्दी करते हैं। अरे अज़ाब का अगर एक दिन मुक़र्रर न होता तो अज़ाब उन्हें फ़ौरन ही आ पकड़ता कि इन्हें ख़बर तक न होती।" वह कहते हैं कि (وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا) (38/साद : 16) और (سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿۱﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿۲﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿۳﴾) (70/मआरिज : 1-3) गुज़िश्ता उम्मतों के जाहिलों ने भी तो ऐसा ही कहा था "शुऐब (अ.) की क़ौम कहती है कि ऐ शुऐब (अ.)! अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान गिरा दो, या यह कि ऐ अल्लाह तआला! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से संगबारी कर।" अबू जहल बिन हिशाम ने यही कहा था कि अल्लाहुम्मा इन क़ाना हाजा हुवल हक़्क़ मिन इन्दिका फ़अम्तिर अलैना हिजारतम् मिनस्समाइ अविअतिना फ़ीहिम) यानी जब तक तु इनके बीच में हो अल्लाह तआला इन्हें अज़ाब न देगा। या

जब तक कि वह इस्तिग़फ़ार करते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुल अन्फ़ाल बाब (व इज़ क़ालुल्लाहुम्मा इन कान हाज़ा हुवल हक़्क़ु मिन इन्दिक फ़अम्तिर) : 4648) और फ़र्माया (لَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ) (6/अन्आम : 94) यानी तुम हमारे पास अकेले अकेले आओगे। जैसा कि पहली दफ़ा हमने तुम्हें पैदा किया था। अ़ता (रह.) कहते हैं कि इस मज़्मून की दस आयतें क़ुरआन पाक में हैं। बुरैदा कहते हैं कि मैंने अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) को जंगे उहुद में घोड़े पर सवार ठहरा हुआ देखा और वह यह कह रहे थे कि ऐ परवरदिगार! मुहम्मद (ﷺ) जो कहते हैं अगर वह सच है तो मुझे घोड़े समेत ज़मीन में धंसा दे (यह उस वक़्त की बात है कि जब अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ईमान नहीं लाये थे।)

नबी का वजूद कुफ़्फ़ार के लिए बाइसे हिफ़ाज़त : इस उम्मत के जाहिलों का भी ऐसा ही क़ौल था। अल्लाह पाक अपनी आयत को फिर दोहराता है और उन पर अपनी रहमत का ज़िक्र करता है कि जब तक वह इस्तिग़फ़ार करते हैं और तुम्हारी मौजूदगी इनके अंदर है हम उन पर अ़ज़ाबे आसमानी नाज़िल न करेंगे। मुश्रिकीन बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते थे और कहते थे (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक) तो हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते, बस बस यहीं तक बोलो, आगे न बढ़ो, लेकिन कुफ़्फ़ार साथ ही यह भी बोलते (इल्ला शरीकन हुव लक तम्लिकुहू वमा मलक) लेकिन तेरा एक शरीक भी है तू उसका भी मालिक है और उसके मुल्कों का भी मालिक है और फिर साथ ही कहता (ग़ुफ़रानक) चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी कि तुम जब तक इनमें हो वह अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि इनको दो अमानें ह़ासिल थीं एक तो नबी अकरम का वजूद और दूसरा उनका शिर्क के बाद तौबा करना। अब नबी अकरम (ﷺ) के इंतिक़ाल के बाद सिर्फ़ उनका इस्तिग़फ़ार माफ़ी की वजह रह गया। क़ुरैश आपस में कहते थे कि अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को हमारे बीच बुज़ुर्ग (इ़ज़्ज़तदार) बनाया है। दिन में अल्लाह तआ़ला के साथ वह जो गुस्ताख़ी करते, रात को नादिम होकर कहते (ग़ुफ़रानकल्लाहुम्म) चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने (मा कानल्लाहु लि युअ़ज़्ज़िबहुम) वाली आयत उतारी। यानी अम्बिया (अ.) जब तक बस्ती से निकल नहीं जाते क़ौम पर अ़ज़ाब नहीं आया करता। उनमें कुछ वह लोग भी थे जो पहले ही से ईमान ह़ासिल कर चुके थे। वह तौबा करते, नमाज़ें पढ़ते, यह मुसलमान थे और हुज़ूर (ﷺ) के हिज्रत के बाद भी मक्का में रह गए थे। हुज़ूर (ﷺ) के मक्का की बस्ती को छोड़कर चले जाने के बावजूद अहले मक्का पर इसलिए अ़ज़ाब नहीं आया कि यह मुसलमान मक्का में रह गए थे और तौबा करते रहते थे। यह अहले मक्का अ़ज़ाब के वाक़ेअ होने से बच गए क्योंकि यह अच्छे लोग अभी उनमें बाक़ी थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "मेरे दुनिया से चले जाने के बाद भी क़यामत तक तौबा लोगों को अ़ज़ाब से बचाता रहेगा।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अन्फ़ाल : 3082; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुहाजिर ज़ईफ़ (अत्तक़रीब : 1/66; रक़म : 477) और अ़ब्बाद बिन यूसुफ़ कूफ़ी मज्हूल रावी है (अत्तक़रीब : 1/395; रक़म : 120) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "शैतान ने कहा, ऐ अल्लाह! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! जब तक तेरे बन्दों के जिस्मों में रूहें हैं मैं उन्हें बहकाता रहूँगा। तो अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! जब तक वह तौबा करते रहेंगे, मैं भी उन्हें बख़्शता रहूँगा।" (अहमद : 3/29; बि सनदैन ज़ईफ़ैन; मुस्नद अबी यअ़ला : 1273; ह़ाकिम : 4/261)

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا
اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَمَا كَانَ
صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۵﴾

तर्जुमा : ''और उनका क्या हक़ है कि उनको अल्लाह तआला सज़ा न दे हालाँकि वह लोग मस्जिदे हराम से रोकते हैं हालाँकि वह लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली नहीं। इसके मुतवल्ली तो सिवा मुत्तक़ियों के और कोई भी शख़्स नहीं लेकिन इनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। (34) और इनकी नमाज़ कअबा के पास सिर्फ़ यह थी सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना। तो अपने कुफ़्र की वजह से इस अज़ाब का मज़ा चखो।'' (35)

मस्जिदुल हराम के मुतवल्ली मुत्तक़ी (नेक) लोग हैं न कि मुश्रिक (आयत 34, 35) : यह लायक़े अज़ाब तो थे लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) की बरकत से अज़ाब से बच गए। इसीलिए जब आपने मक्का को छोड़ दिया तो अल्लाह तआला ने बद्र के दिन उन पर अज़ाब नाज़िल किया। उनके सरदार क़त्ल कर दिए गए। बड़े-बड़े लोग क़ैदी बन गए। अल्लाह तआला ने उन्हें तौबा की हिदायत फ़र्माई लेकिन यह उसके साथ शिर्क व फ़साद को भी मिला देते थे। क़तादा और सुद्दी (रह.) कहते हैं कि यह मक़्तूलीने क़ुरैश तौबा नहीं करते थे, अगर करते होते तो अल्लाह तआला उन्हें बद्र में ज़िल्लत की मौत न देता और अगर ख़ुद मक्का में यह कमज़ोर मुसलमान इस्तिग़्फ़ार करते न होते तो अहले मक्का पर ऐसी मुसीबत आ पड़ती कि हटाए न हटती। इस्तिग़्फ़ार की बरकत ही ने मक्का में अज़ाब नाज़िल होने से क़ुरैश को बचाया और मुसलमानाने मक्का के सदक़ा में वह एक अर्सा तक अज़ाब से महफ़ूज़ रहे। हुदैबिया के दिन अल्लाह तआला ने फ़र्माया था (هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ) (48/फ़तह : 25) यानी इन लोगों ने कुफ़्र किया। बैतुल्लाह में आने से तुम्हें रोक दिया। क़ुर्बानी के जानवरों को ज़िब्ह की जगह तक न पहुँचने दिया अगर मक्का में यह मोमिन मर्द और औरतें न होतीं जिनको तुम जानते नहीं थे कि अगर तुम उनको माल कर देते तो तुमको उनकी वजह से बेख़बरी में मज़र्रत (तक्लीफ़) पहुँच जाती, यह इसलिए हुआ कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में जिसको चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले। अगर यह लोग यहाँ पनाह लिए न होते तो कब के इन पर अज़ाबे इलाही उतर चुका होता। नबी अकरम (ﷺ) मक्का में थे तो अल्लाह तआला ने फ़र्माया था कि तुम्हारे होते उन पर अज़ाब न करूँगा और जबकि हुज़ूर (ﷺ) मदीना की तरफ़ चले गए तो अल्लाह तआला फ़र्माता है कि तुम्हारे जानशीन अभी मक्का में हैं और तौबा करते हैं इसलिए अभी अज़ाब न दूँगा और जब यह मुसलमान भी मक्का से निकल गए तो फ़र्माता है कि अब क्यूँ न अज़ाब दिया जाए। उन्होंने तुम मुसलमानों को कअबतुल्लाह आने से रोका, वह अल्लाह तआला के दोस्त तो थे नहीं।

चुनाँचे अल्लाह तआला ने फ़तहे मक्का का अज़ाब उन पर नाज़िल किया। और कहा गया है कि यह आयत (मा कानल्लाहु मुअज़्ज़िबहुम) की नासिख़ है। इक्रिमा और हसन बसरी (रहि.) कहते हैं कि "अन्फ़ाल" में (मा कान) वाली आयत को उसके बाद वाली (मा लहुम अल्ला युअज़्ज़िबहुमुल्लाहु) वाली आयत ने मंसूख़ कर दिया है। चुनाँचे (फ़ज़ूकुल अज़ाब) फ़र्माया गया। चुनाँचे अहले मक्का से जंग हुई और वह भूख और मज़र्रत के अज़ाब में मुब्तला हुए। यह अल्लाह तआला ने अहले शिर्क को अज़ाब से अलग भी किया है, फिर यह भी फ़र्माया कि उन्हें क्यूँ अज़ाब न करे कि मस्जिदे हराम से वह मुसलमानों को रोकते हैं, अल्लाह तआला के औलिया वह नहीं बल्कि मुत्तक़ी लोग हैं। लेकिन अक्सर लोग यह बात नहीं जानते। हालाँकि यही रोके जाने वाले लोग कअबतुल्लाह के ज़्यादा अहल हैं कि इसमें नमाज़ पढ़ें, तवाफ़ करें और यह कुफ़्फ़ार मस्जिदे हराम के लायक़ नहीं हैं। जैसाकि फ़र्माया कि मुश्रिकीन को क्या हक़ है कि अल्लाह तआला की मस्जिद को आबाद रखें हालाँकि कुफ्र उनके दिलों में बैठा है। उनके तो सारे आमाल बर्बाद हैं और दोज़ख़ का ईंधन हैं। मसाजिद को तो वह आबाद रखते हैं जो अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, नमाज़ें पढ़ीं, ज़कातें दीं और अल्लाह तआला के सिवा किसी से न डरें। हिदायत याफ़्ता लोग यक़ीनन यही हैं। और फ़र्माया (وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ٭ وَ اِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ) (2/बक़रह : 217) अल्लाह तआला की राह से और मस्जिदे हराम से रोकना और मक्का के मुसलमानों को मक्का से निकाल देना यह अल्लाह तआला के नज़दीक बड़ा गुनाह है। हुज़ूर (स) से पूछा गया, आपके औलिया कौन लोग हैं? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुत्तक़ी लोग।" (अल्मुअजमुस्सग़ीर : 1/115; ह : 305; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; इसकी सनद में नूह बिन अबी मरियम मुंकरुल हदीस रावी है (अल्मीज़ान : 4/279; रक़म : 9143) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को ज़ईफ़ुन जिद्दा क़रार दिया है। देखिए (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ : 1304) फिर आप (ﷺ) ने तिलावत फ़र्माई (इन औलियाउहू इल्लल् मुत्तक़ून) हुज़ूर (ﷺ) ने क़ुरैश को जमा किया और पूछा, क्या कोई ग़ैर क़ुरैश भी तुममें हैं। तो लोगों ने कहा, सिर्फ़ हमारे भांजे हमारे हलीफ़, हमारे गुलाम। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "हलीफ़, भांजे और गुलाम सब एक ही क़बीला के होते हैं, यह सब औलिया हैं लेकिन मेरे औलिया मुत्तक़ी लोग हैं।" (हाकिम : 2/328; व सनदुहू ज़ईफ़; मज्मउज़्ज़वाइद : 10.) मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि इनसे मुजाहिद मुराद हैं जो भी हों और जहाँ भी हों। फिर इस बात का ज़िक्र है कि मस्जिदे हराम में यह लोग क्या करते थे। इर्शाद होता है कि इनकी इबादत बस यही थी कि कअबा में आकर भी यह जानवरों की सी सीटियाँ बजाते और तालियाँ बजाते, नंगे होकर तवाफ़ करते, मुँह में उँगलियाँ रखकर सीटी की आवाज़ निकालते, रुख़सार झुकाते, ताली बजाते, बस इसी को इबादत समझते। बाईं तरफ़ से तवाफ़ करते। मक़्सद यह होता कि मुसलमानों की इबादत में हर्ज पैदा करें, इस तरह यह लोग मोमिनीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं। अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद (रह.) तस्दिया के मअनी कहते हैं, अल्लाह तआला की राह से लोगों को रोकना। फ़र्माता है कि अब अपने कुफ्र का मज़ा चखो यानी यह अज़ाब कि यौमे बद्र में क़त्ल भी हुए, क़ैद भी हुए। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि अहले इक़रार पर अज़ाब सैफ़ के ज़रिये आता है और अहले तक्ज़ीब पर चीख़ और ज़लज़ले के तौर पर आता है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝٣٦ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝٣٧

तर्जुमा : ''बिला शक यह काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह तआला की राह रोकें तो यह लोग अपने मालों को ख़र्च करते ही रहेंगे, फिर वह माल इनके हक़ में बाइसे हसरत हो जाएँगे फिर मग़लूब हो जाएँगे। और काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ जमा किया जाएगा। (36) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग कर दे और नापाकों को एक दूसरे से मिला दे यानी उन सबको इकट्ठा कर दे फिर उन सबको जहन्नम में डाल दे। ऐसे लोग पूरे ख़सारे में हैं।'' (37)

हारे हुए कुफ़्फ़ार की नाकाम तदबीरें (आयत 36, 37) : कुरैश पर जंगे बद्र में जब मुसीबत पहुँची और यह लोग मक्का वापिस हुए और अबू सुफ़ियान भी क़ाफ़िला लेकर लौटे तो अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ और इक्रिमा बिन अबी जहल और सफ़्वान बिन उमय्या और कुरैश के कई आदमी जिनके बाप बेटे भाई जंग में काम आए थे, अबू सुफ़ियान से और उनसे जिनका माले तिजारत उस क़ाफ़िला में था, कहने लगा कि ऐ कुरैश की जमाअत! मुहम्मद (ﷺ) तुम्हें नीचा दिखा चुके हैं, तुम्हारे शुरफ़ा को क़त्ल कर दिया है, उनसे दोबारा लड़ने के लिए इस क़ाफ़िला का माल तुम दे दो ताकि हम इनसे अपना इंतिक़ाम लें। चुनाँचे उन्होंने सब माल दे दिया। इसी बारे में अल्लाह तआला फ़र्माता है कि (इन्नल्लज़ीना कफ़रू युंफ़िक़ून अम्वालहुम) यानी काफ़िर अपना माल ख़र्च कर रहे हैं ताकि अल्लाह तआला का रास्ता रोक दें और वह रुपया ख़र्च करेंगे और यही माल बर्बाद हो जाएगा तो फिर हसरत भी उठाएँगे हम इन्हें दोबारा मग़लूब कर देंगे, और वह जहन्नम की तरफ़ हाँके जाएँगे। ज़ह्हाक (रह.) कहते हैं कि यह आयत अबू सुफ़ियान और नफ़्क़ा अम्वाल के बारे में नहीं, बल्कि यह आयत अहले बद्र (बद्र वाले) के बारे में उतरी है। बहर तक़्दीर यह आयत आम है, चाहे किसी बारे में उतरी हो और अगरचे सबबे नुज़ूल ख़ास हो। अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि इत्तिबाअ तरीक़े हक़ से रोकने के लिए कुफ़्फ़ार रुपया पैसा ख़ूब ख़र्च कर रहे हैं लेकिन उनके यह माल बर्बाद हो जाएँगे, उन्हें हसरत व नदामत (शर्मिंदगी) लाहिक़ होगी। वह अल्लाह तआला के नूर को बुझाना चाहते हैं और अल्लाह तआला अपने नूर को कामिल करना चाहता है ख़्वाह यह काफ़िरों को नागवार ही क्यूँ न हो। अल्लाह तआला अपने दीन का मददगार अपने कलिमे को ग़ालिब करने वाला है। इनके लिए दुनिया में रुस्वाई होगी और आख़िरत में अज़ाबे जहन्नम होगा। जो

ज़िन्दा बचा उसने अपनी आँखों से देख लिया और अपने कानों से सुन लिया कि कैसी रुस्वाई से आख़िरकार उन्हें सामना करना पड़ा और जो मर गया या क़त्ल हो गया वह अबदी (हमेशा वाली) रुस्वाई और सर्मदी (हमेशा वाला) अ़ज़ाब से दो चार हो गया। क़ौलुहू तआला (लि यमीज़ल्लाहुल ख़बीसा मिनत्तय्यिबि) इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि अहले सआदत का इम्तियाज़ अहले शक़ावत से है कि मोमिन काफ़िर से मुमताज़ हो जाए और यह भी मुहतमिल है कि इम्तियाज़ से मुराद आख़िरत का इम्तियाज़ हो। जैसा कि फ़र्माया कि ''हम मुश्रिकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरे रहो हम उनके बीच फ़र्क़ कर देंगे'' और फ़र्माया कि जब क़यामत होगी तो वह अलग अलग हो जाएँगे। और फ़र्माया कि, ऐ मुश्रिकों! और गुनहगारों! आज मोमिनों से अलग थलग हो जाओ। और इस मतलब का भी एहतिमाल है कि इससे दुनिया में ही इम्तियाज़ मक़्सूद हो कि मोमिनीन के आमाल जुदा और काफ़िरों के जुदा। और (लि यमीज़) का लाम सबबिया हो सकता है यानी गुनाह के तौर पर माल ख़र्च करने के सबब ख़बीस को तय्यिब से अल्लाह तआला ने जुदा कर दिया। यानी यह इम्तियाज़ करने के लिए काफ़िरों से लड़ने के लिए कौन इताअत करता है और कौन रूगर्दानी करके मअ़सियत का सबब बनता है। जैसा कि फ़र्माया ''दोनों लश्करों के टकराव के वक़्त जो कुछ तुम्हें पहुँचा, वह अल्लाह तआला के हुक्म से था ताकि मोमिनों और काफ़िरों में तमीज़ हो जाए। उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह तआला की राह में जिहाद करो, जारेहाना या मुदाफ़िआना तो कहते हैं कि अगर उसूले जंग से हम वाक़िफ़ होते तो ज़रूर लड़ते।'' और फ़र्माया कि ''अल्लाह तआला आख़िर मोमिनीन को भी उनकी मौजूदा हालत पर क्यूँ छोड़े वह तो इम्तिहान करके परखना चाहता है कि अच्छा कौन है और बुरा कौन। और अम्रे ग़ैब से वह तुमको आगाह भी क्यूँ करे।'' और फ़र्माया ''क्या तुम समझते हो कि जन्नत में चले जाओगे हालाँकि मुजाहिदीन के सब्र का अल्लाह तआला ने अभी इम्तिहान नहीं लिया।'' इसकी नज़ीर सूरह बराअत में भी है। चुनाँचे मअ़नी यह हुए कि हम कुफ़्फ़ार से भिड़ाकर तुम्हें आज़माएँगे वह तुमसे क़िताल करेंगे तुम्हारे ख़िलाफ़ अम्वाल ख़र्च करेंगे। यह सिर्फ़ इस इम्तियाज़ के लिए कि ख़बीस कौन है और तय्यिब कौन है रकम कहते हैं एक पर एक चीज़ को जमा करते जाना, जैसा कि अब्र के बारे में फ़र्माया कि (सुम्म यज्अलुहू रुकामन) यानी तह-ब-तह बादल (फ़यज्अलहू फ़ी जहन्नम. ऊलाइका हुमुल ख़ासिरून) फिर वह दोज़ख़ में डाल दिए जाएँगे और बड़े ख़सारे में रहेंगे।

***

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ
سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ
انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ
الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "आप इन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर यह लोग बाज़ आ जाएँगे तो इनके सारे गुनाह जो पहले हो चुके हैं सब माफ़ कर दिए जाएँगे और अगर अपनी वही आदत रखेंगे तो कुफ़्फ़ारे साबिक़ीन (गुज़रे हुए काफ़िरों) के हक़ में क़ानून नाफ़िज़ हो चुका है। (38) और तुम इनसे इस हद तक लड़ो कि इनमें फ़सादे अक़ीदा न रहे और दीन अल्लाह तआला ही का हो जाए। फिर अगर यह बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह तआला इनके आमाल को ख़ूब देखता है। (39) और अगर रूगर्दानी करें तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारा रफ़ीक़ है वह बहुत अच्छा रफ़ीक़ है और बहुत अच्छा मददगार है।" (40)

फ़ित्ना का मतलब और इख़्तितामे फ़ित्ना तक जिहाद जारी रखने का हुक्म (आयत 38-40) : अपने रसूल से ख़िताब हो रहा है कि इन काफ़िरों से कह दो कि अगर तुम कुफ़्र व इनाद से बाज़ रहे और इस्लाम में दाख़िल होकर तालिबे मग़्फ़िरत हुए तो ज़माना कुफ़्र में जो कुछ गुनाह किये थे अल्लाह तआला माफ़ कर देगा। जैसा कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "जो इस्लाम में आकर नेकोकार रहा तो उसके जाहिलियत के गुनाहों से भी पूछताछ न होगी और जो इस्लाम में आने के बाद भी बुरा रहा तो उससे दोनों ज़मानों के आमाल के बारे में पूछताछ होगी।" (सहीह बुख़ारी, किताब इस्तिताबतुल मुर्तद्दीन, बाब इस्मुन मन अश्रक बिल्लाहि व उक़ूबत फ़िदुनिया वल आख़िरा.... : 6921; सहीह मुस्लिम : 120; इब्ने माजा : 4242; अहमद : 1/409; इब्ने हिब्बान : 396) नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि "इस्लाम से पहले के गुनाहों के लिए तौबा है।" (अहमद : 4/204; वहुव सहीहुन बिहदिसि मुस्लिम; इसकी असल सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब कौनुल इस्लाम यहदिमु मा क़ब्लह.... : 121 में मौजूद है।) और तौबा भी तो अपने से पहले के गुनाहों को मिटा देती है। लेकिन ऐ नबी (ﷺ)! अगर यह अपनी पहली चाल पर क़ायम रहे, दुश्मनी न छोड़ी तो क्या वह नहीं जानते कि पहले के लोगों का क्या हश्र हुआ था। दुश्मनी और झुठलाने का पहली उम्मतों ने क्या नतीजा देखा था। याद रखो अज़ाब और उक़ूबत ही इसका इलाज होगा। सुन्नतुल अव्वलीन से मुजाहिद और सुद्दी (रहि.) बद्र का दिन मुराद लेते हैं। और फ़र्माया "इनसे ख़ूब क़िताल करो यहाँ तक कि फ़ित्ना दब जाए, शिर्क मिट जाए और दीन ही अल्लाह का हो जाए।"

एक शख़्स हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के पास आया और कहने लगा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि "अगर मोमिनीन की दो जमाअतें बाहम क़िताल करें" तो तुम क़िताल में क्यूँ शरीक नहीं होते, जबकि ऐसी दो जमाअतों का कुरआन में ज़िक्र है? तो इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ऐ भतीजे! शरीके जंग न होने का तअन मुझ पर आसान है बनिस्बत उसके कि मैं किसी मोमिन को जानबूझकर क़त्ल करूँ। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि तुम उनसे क़िताल करो यहाँ तक कि फ़ित्ना ही बाक़ी न रहे। इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं कि अहदे रसूलुल्लाह (ﷺ) में हमारी यही कैफ़ियत थी। इस्लाम में बहुत कम अफ़राद थे। आदमी की दीन के बारे में आज़माइश होती थी, लोग या तो क़त्ल कर दिए जाते थे या क़ैदो बन्द की मुसीबत में मुब्तला हो जाते थे और जब इस्लाम ने तरक़्क़ी पा ली तो अब यह फ़ित्ना बाक़ी न रहा। ग़र्ज़ यह कि उस ऐतिराज़ करने वाले शख़्स ने इब्ने उमर (रज़ि) से अपने मुवाफ़िक़ बात देखी ही नहीं तो बात का रुख़ फेरकर

कहने लगा कि अली (रज़ि.) और इस्मान (रज़ि.) के बारे में आपका क्या ख़्याल है। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा, हज़रत इस्मान (रज़ि.) के लिए तो अल्लाह तआला ने ख़ुद कहा है कि बख़्श दिया और तुम इस्मान (रज़ि.) की मग़्फ़िरत को नापसंद करते हो। और अली (रज़ि.) यह तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अम्मेज़ाद हैं और दामाद भी हैं और वह देखो वहाँ नबी अकरम (ﷺ) की बेटी और अली (रज़ि.) की बीवी रहती हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अन्फ़ाल बाब (वक़ातिलूहुम हत्ता ला तकूना फ़ित्नतंव्वकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि...) 4650)

सईद बिन जुबेर (रह.) कहते हैं कि इब्ने उमर (रज़ि.) हमारे पास आए और कहा क़िताले फ़ित्ना के बारे में तुम्हारी क्या राय है और फ़ित्ना किसको कहते हैं। नबी अकरम (ﷺ) मुश्रिकीन से क़िताल करते थे और उस वक़्त फ़ित्ना दर आया हुआ था। और तुम्हारा क़िताल तो मुल्क और इक़्तिदार हासिल करने के लिए होता है। (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 4651) इब्ने उमर (रज़ि.) से मरवी है कि इब्ने जुबेर (रज़ि.) के फ़ित्ने के बारे में दो आदमी उनके पास आए और कहा तुम जानते हो जो कुछ लोगों का अमल रहा। तुम उमर (रज़ि.) के बेटे हो और रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी हो। इस फ़ित्ना से तुमको किस बात ने रोका तो कहा कि अल्लाह तआला ने मुसलमान का ख़ून मुसलमान पर हराम कर दिया है। तो लोगों ने कहा कि क्या अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) से नहीं फ़र्माया है कि फ़ित्ना दब जाने के लिए क़िताल करो ताकि दीन ख़ालिस अल्लाह तआला का हो जाए। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल बक़रह बाब (वक़ातिलूहुम हत्ता ला तकूना फ़ित्नत) : 4513) तो कहा, हमने तो फ़ित्ना दबाने के लिए बहुत कुछ क़िताल किया है यहाँ तक कि फ़ित्ना न रहा। और तुम मुसलमानों के दो गिरोहों में इसलिए क़िताल कराना चाहते हो कि फ़ित्ना और खड़ा हो जाए और दीन अल्लाह तआला की बजाए ग़ैरुल्लाह का हो जाए। उसामा बिन ज़ेद (रज़ि.) कहते हैं कि मैं तो ऐसे आदमी को कभी क़तल न करूँगा जो (ला इलाहा इल्लल्लाह) कह चुका हो, तो सअद बिन मालिक (रज़ि.) ने भी ऐसा ही कहा। तो उस आदमी ने (क़ातिलूहुम) वाली आयत पढ़ी। तो उन दोनों ने कहा कि फ़ित्ना को दबाने वाला ऐसा क़िताल हमने किया है और फ़ित्ना दब गया है और दीन ख़ालिस अल्लाह तआला का हो गया है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़ित्ना दब जाने से शिर्क का दब जाना मुराद लेते हैं (यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाह) से मुराद ख़ालिस तौहीद है जिसमें शिर्क का लगाव न हो और अल्लाह तआला के इक़्तिदार में किसी को शरीक न बनाया गया हो। ज़ेद बिन असलम (रह.) कहते हैं कि मतलब यह है कि दीने इस्लाम होते हुए कुफ़्र बाक़ी न रहे। इसकी तस्दीक़ उस हदीस से होती है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मैं काफ़िरों से क़िताल करने पर मामूर हुआ हूँ यहाँ तक कि (ला इलाहा इल्लल्लाहु) के क़ाइल न हो जाएँ। अगर वह क़ाइल हो गए तो उनके जान व माल महफ़ूज़ हो गए, हाँ! किसी वजह से क़िसास वग़ैरह में क़त्ल किए जा सकते हैं और उसका हिसाब अल्लाह तआला के पास है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब वुजूबुज़्ज़कात : 1399; सहीह मुस्लिम : 20) नबी अकरम (ﷺ) से ऐसे शख़्स के बारे में सवाल किया गया जिसने इज़्हारे शुजाअत (बहादुर कहलाने के लिए) में क़िताल किया हो या क़ौम व ख़ानदान की हिमायत या शोहरत व नमूद की ख़ातिर, उसमें कौनसा क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह है? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "सिर्फ़ वह क़िताल जो आला-ए-कलिमतुल्लाह (अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी) की ख़ातिर फ़ी

सबीलिल्लाह अमल में आया हो।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मन क़ातल लि तकून कलिमतल्लाहि हियल उलिया : 2810; सह़ीह़ मुस्लिम : 1904)

क़ौलुहू (फ़इनिन्तहव) यानी अगर कुफ़्र के साथ तुम्हारे क़िताल से वह बाज़ रहे तो तुम भी उनसे हाथ रोक लो, इसलिए कि तुम्हें उनके दिल का ह़ाल क्या मालूम? जो कुछ उनके दिल का ह़ाल है अल्लाह तआला उसको जानता है और उनको देखता है। जैसाकि फ़र्माया ''अगर उन्होंने तौबा कर ली और नमाज़ पढ़ते रहे और ज़कात देते रहे तो फिर उनसे पूछताछ मुनासिब नहीं।'' दूसरी जगह है कि (फ़इख़्वानुकुम फ़िद्दीन) वह तुम्हारे दीनी भाई हैं। और फ़र्माया कि फ़ित्ना दबने तक उनसे लड़ते रहो ताकि अल्लाह तआला ही का मज़हब राइज हो जाए। इल्ज़ाम सिर्फ़ ह़द से तजावुज़ करने वालों पर है। कहते हैं कि उसामा (रज़ि.) ने एक शख़्स पर तलवार उठाई उसने कहा (ला इलाहा इल्लल्लाह) लेकिन उसामा (रज़ि.) ने तलवार मार दी और क़त्ल कर दिया। नबी अकरम (ﷺ) को ख़बर पहुँची तो फ़र्माया कि ''(ला इलाहा इल्लल्लाह) के बाद भी तुमने उसको क़त्ल कर दिया, अब तुम क़यामत के दिन (ला इलाहा इल्लल्लाह) के साथ क्या करोगे?'' तो उसामा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसने तो सिर्फ़ अपने बचाव के लिए ऐसा किया। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''तुमने उसके दिल को चीरकर देखा था।'' फिर आप (ﷺ) बार बार यही फ़र्माते रहे कि अब क़यामत के दिन क्या करोगे। उसामा (रज़ि.) कहते हैं कि मैं यह तमन्ना करने लगा कि काश! मैं आज तक मुसलमान न हुआ होता कि इस्लाम के ज़अम में उसको क़त्ल न कर देता। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअसुन्नबी (ﷺ) उसामा बिन ज़ेद : 4269; सह़ीह़ मुस्लिम : 96; अबूदाऊद : 2643; अह़मद : 5/200; इब्ने ह़िब्बान : 4751)

और अगर उन्होंने पीठ फेर ली तो जानते रहो कि अल्लाह तआला तुम्हारा मौला है, वह बड़ा अच्छा मौला है और बड़ा अच्छा मददगार है और अगर उनकी आदत तुम्हारे ख़िलाफ़ और तुम्हारी मुह़ारिबत पर क़ायम रही तो अल्लाह तआला तुम्हारा मौला और तुम्हारा नासिर है। अब्दुल मलिक बिन मरवान ने उर्वा को लिखा और चंद बातें पूछीं, तो उर्वा (रज़ि.) ने यूँ जवाब लिख भेजा, सलाम अलैक! मैं अल्लाह तआला वाह़िद की ह़म्द करता हूँ और फिर मैं तुम्हें लिखता हूँ कि तुमने मुझसे नबी अकरम (ﷺ) के मक्का से मदीना की तरफ़ हिज्रत के वाक़ियात पूछे हैं। तुम्हें बताऊँगा कुव्वत और ताक़त अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं। अल्लाह तआला ने हुज़ूर (ﷺ) को नबुव्वत अता की वह कैसे अच्छे नबी कैसे अच्छे सय्यद थे। अल्लाह तआला उन्हें जज़ाए ख़ैर दे, जन्नत में हमें उनका चेहरा दिखाए, उन्हीं के दीन व मिल्लत पर ज़िन्दा रखे और उन्हीं के दीन पर मारे और उन्हीं के साथ ज़िन्दा उठाए। आपने जब हिदायत और नूर की तरफ़ क़ौम को बुलाया तो लोगों ने आप (ﷺ) की तब्लीग़ को कुछ ऐसी अहमियत नहीं दी। हुज़ूर (ﷺ) की वह़्ी को सुन भी लेते थे और जब आप (ﷺ) ने उनके बुतों का ज़िक्र शुरु किया और मालदार कुरैश के लोग ताइफ़ से मक्का आए तो उनमें से अक्सर को यह तब्लीग़ बहुत नागवार गुज़री। आप (ﷺ) की तब्लीग़ से बेज़ार हुए जो कोई मुसलमान हो भी जाता तो उसको बहकाने लगते। चुनाँचे माइल होने वाले आम्मतुन्नास भी बेरग़बत हो गए। मगर चंद लोग अपने मुस्तक़िल इरादे पर क़ायम रहे। इस्लाम की तरफ़ से उनके ख़्यालात परागंदा नहीं

हुए। अब कुरैश के सरदारों ने बाहम मश्वरा किया कि इस्लाम क़बूल करने वालों पर सख़्ती करें। यह फ़ित्ना एक ज़बरदस्त ज़लज़ला था जो इस फ़ित्ने में फंस गया सो फंस गया और जिसको अल्लाह तआला ने महफ़ूज़ कर लिया तो वा महफ़ूज़ हो गया। जब मुसलमानों पर यह कुरैश बहुत ज़ुल्म तोड़ने लगे तो हुज़ूर (ﷺ) ने मुसलमानों को मश्वरा दिया कि हब्श की तरफ़ हिज्रत कर जाएँ, हब्श का बादशाह एक नेक इंसान था जिसका नाम नज्जाशी था वह ज़ालिम बादशाह नहीं था, चारों तरफ़ उसकी तारीफ़ होती थी। सरज़मीने हब्श कुरैश की तिजारतगाह थी, कुरैश के वहाँ मकानात थे जहाँ वह तिजारत करके बहुत ज़्यादा रिज़्क़ हासिल करते थे, अम्न हासिल करते थे और तिजारत ख़ूब चमकी हुई थी। हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया तो आम मुसलमान जिन पर मक्का वाले ज़्यादा ज़ुल्म तोड़ रहे थे, हब्श की तरफ़ चले गए क्योंकि उनको अपनी जान का डर था। वह वहाँ हमेशा क लिए नहीं ठहरे, सिर्फ़ चंद साल रहे। वहाँ भी मुसलमानों ने इस्लाम फैलाया, वहाँ के शुरफ़ा भी इस्लाम लाए। जब कुफ़्फ़ारे कुरैश ने यह रंग देखा कि मुसलमानों पर ज़ुल्म करने से वह हब्शा चले जाते हैं और वहाँ के लोगों और सरदारों को अपना बना लेते हैं तो अब उन्होंने मस्लिहत यही समझी कि नर्म बर्ताव इख़्तियार करें। चुनाँचे वह नबी (ﷺ) और अस्हाब (रज़ि.) के साथ नर्म बर्ताव करने लगे, चुनाँचे पहली आज़माइश मुसलमानों की थी जिसने मुसलमानों को हब्शा की तरफ़ भेजा, चुनाँचे जब नर्मी पैदा हो गई और फ़ित्ना जिसके ज़लज़लों ने मुसलमान सहाबा को वतन छोड़ने और हब्शा जाने पर मजबूर कर दिया था, वापिस आ गए। इस वक़्त में मदीना के अंसार मुसलमान हो गए और मदीना में भी इस्लाम की इशाअत होने लगी। उन अहले मदीना का मक्का आना जाना शुरु हो गया, इससे मक्का वाले और बिगड़े, मश्वरा किया कि अब तो इन पर और सख़्ती करनी चाहिए। चुनाँचे आम तौर पर मुसलमानों पर मज़ालिम तोड़ने लगे। मुसलमान बड़ी मुसीबतों में मुब्तला हो गए। यह मुसलमानों के लिए दूसरा फ़ित्ना दूसरी आज़माइश थी। एक फ़ित्ना तो यह कि हब्श की तरफ़ मुसल्मानों को भागना पड़ा और दूसरा फ़ित्ना वहाँ से मुसलमानों के वापिस आने के बाद जबकि अहले मक्का ने देखा कि मदीना से लोग आते जा रहे हैं और मुसलमान होते जा रहे हैं। चुनाँचे एक बार मदीना से सत्तर आदमी आए जो मुअतबर और सरदार लोग थे और यह सब मुसलमान हो गए, हज्ज किया और बमुक़ामे उक़्बा हुज़ूर (ﷺ) के हाथ पर बेअत की और अहद किया कि हम आपके हो रहते हैं और आप (ﷺ) हमारे हो रहेंगे। अगर आप (ﷺ) के अस्हाब (रज़ि.) हमारे शहर में आएँ या आप तशरीफ़ लाएँ तो हम आप (ﷺ) की और अस्हाब (रज़ि.) की ऐसी हिमायत करेंगे जैसेकि अपनी और अपने लोगों की करते हैं। कुरैश ने इस मुआहिदा को सुनकर मज़ीद सख़्ती बरतनी शुरु कर दी। अब नबी अकरम (ﷺ) ने अस्हाब (रज़ि.) को हुक्म दे दिया कि मदीना की तरफ़ हिज्रत कर जाओ, यह दूसरा फ़ित्ना था जिसने नबी अकरम (ﷺ) को और अस्हाब (रज़ि.) को मक्का से निकाला। उसी चीज़ को अल्लाह तआला ने कुरआन में ज़ाहिर किया है कि इन काफ़िरों से क़िताल करो यहाँ तक कि यह फ़ित्ने ख़त्म हो जाएँ और अल्लाह तआला के दीन का ही सिक्का चले। उर्वा बिन ज़ुबेर (रज़ि.) से मरवी है कि यह ख़त उर्वा ने अब्दुल मलिक बिन मरवान को लिखा था, वल्लाहु आलम!

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ
الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۴۱

तर्जुमा : ''जान लो कि तुम जिस क़िस्म की जो कुछ ग़नीमत हासिल करो उसमें से पाँचवाँ हिस्सा तो अल्लाह तआला का है और रसूल (ﷺ) का और क़राबतदारों का और यतीमों और मिस्कीनों का और राह चलते मुसाफ़िरों का अगर तुम अल्लाह तआला पर ईमान लाए हो और उस चीज़ पर ईमान लाए हो जो हमने अपने बन्दे पर उस दिन उतारा है जो दिन हक़ और बातिल की जुदाई का था जिस दिन दो फ़ौजें भिड़ गई थीं, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।'' (41)

माले ग़नीमत की तक़्सीम और मुस्तहिक़ अफ़राद (आयत 41) : अल्लाह तआला यहाँ माले ग़नीमत की तफ़्सील बयान करता है जो उसने ख़ास तौर पर इस उम्मत के लिए हलाल किया है। इससे पहले अगली उम्मतों पर यह हराम था, ग़नीमत वह माल है जो कुफ़्फ़ार पर चढ़ाई व हमला करने के बाद हासिल हुआ हो। और फ़ै वह माल है जो बग़ैर लड़े भिड़े हाथ आ जाए। मस्लन उनसे सुलह करके कुछ माल बतौर तावान वसूल किया जाए या वह माल जिसका कोई वारिस न हो या जिज़्या या ख़िराज वग़ैरह का माल हो। इमाम शाफ़ेई (रह.) और दीगर उलमा-ए-सल्फ़ व ख़ल्फ़ (रहि.) की एक जमाअत का यही ख़्याल है। लेकिन कुछ उलमा ग़नीमत का इत्लाक़ 'फ़ै' और फ़ै का ग़नीमत पर करते हैं। इसीलिए क़तादा (रह.) का क़ौल है कि इस आयत से सूरह हश्र की यह आयत (मा अफ़ाअल्लाहु) मंसूख़ हो गई है। और इस तरह माले ग़नीमत के पाँच हिस्सों में से चार हिस्से तो मुजाहिदीन को मिलेंगे और एक हिस्सा उनको मिलेगा जिनका ज़िक्र इस आयत में आया है (यानी रसूल, क़राबतदार, यतीम, मसाकीन और मुसाफ़िर लोग) लेकिन यह क़ौल क़ाबिले क़बूल नहीं। क्योंकि यह आयत जंगे बद्र के बाद नाज़िल हुई है और वह आयत ''बनू नज़ीर'' के बारे में उतरी है और उलमा-ए-सियर व मग़ाज़ी (तारीख़दानों) में से किसी को भी इस बारे में इख़्तिलाफ़ नहीं है कि क़िस्सा बनू नज़ीर जंगे बद्र के बाद का है और न इसमें शक व शुबहा की कोई गुंजाइश है लेकिन जो लोग फ़ै और ग़नीमत में फ़र्क़ करते हैं वह कहते हैं कि वह आयत तो फ़ै के बारे में उतरी है और यह ग़नीमत के बारे में। और कुछ लोग फ़ै और ग़नीमत के मामले को इमाम की राय पर मौक़ूफ़ रखते हैं कि जैसी उसकी मर्ज़ी हो वैसा करे इस तरह इन दोनों आयात (आयते हश्र और आयते तख़्मीस) में तत्बीक़ हो जाती है, वल्लाहु आलम!

आयत में बयान है कि ख़ुमुस यानी पाँचवाँ हिस्सा माले ग़नीमत में से निकाल देना चाहिए। चाहे वह कम हो या ज़्यादा हो भले सूई हो या धागा ही हो। परवरदिगारे आलम फ़र्माता है जो ख़यानत करेगा वह उसे

लेकर क़यामत के दिन पेश होगा और हर एक को उसके अमल का पूरा बदला मिलेगा किसी पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। कहते हैं कि ख़ुमुस में से अल्लाह के लिए हिस्सा कअबे में दाख़िल किया जाएगा। हज़रत अबुल आलिया रुबाही (रह.) कहते हैं कि ग़नीमत के माल का रसूलुल्लाह (ﷺ) पाँच हिस्से करते थे, चार तो मुजाहिदीन में बांट देते थे, पाँचवें में से आप (ﷺ) मुट्ठीभर निकाल लेते उसे कअबे में दाख़िल कर देते फिर जो बचा उसके पाँच हिस्से कर डालते, एक रसूलुल्लाह (ﷺ) का, एक क़राबतदारों का, एक यतीमों का, एक मिस्कीनों का, एक मुसाफ़िरों का, यह भी कहा गया है कि यहाँ अल्लाह तआला के हिस्से का नाम सिर्फ़ बतौर तबर्रुक है। रसूलुल्लाह (ﷺ) के हिस्से के बयान का गोया वह शुरु है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) कोई लश्कर भेजते और ग़नीमत का माल मिलता तो आप (ﷺ) उसके पाँच हिस्से करते और फिर पाँचवें हिस्से के पाँच हिस्से कर डालते। फिर आप (ﷺ) ने यही आयत तिलावत की। पस यह फ़र्मान है कि (अन्ना लिल्लाहि ख़ुमुसहू) यह सिर्फ़ कलाम के शुरू के लिए है। ज़मीनो आसमान में जो कुछ है सब अल्लाह तआला ही का है। पाँचवें हिस्से में से पाँचवाँ हिस्सा रसूलुल्लाह (ﷺ) का है, बहुत से बुज़ुर्गों का यही क़ौल है कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) का एक ही हिस्सा है। (तब्री : 13/548) इसी की ताईद बैहक़ी की इस सही सनद वाली हदीस से भी होती है कि एक सहाबी (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से वादियुल कुरा में आकर सवाल किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ग़नीमत के बारे में आप क्या इर्शाद फ़र्माते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "इसमें से पाँचवाँ हिस्सा तो अल्लाह तआला का है बाक़ी के चार हिस्से लश्कर के।" उसने पूछा तो उसमें किसी को किसी पर ज़्यादा हक़ नहीं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हर्गिज़ नहीं! यहाँ तक कि तू अपने किसी दोस्त के जिस्म से तीर निकाले तो उस तीर का भी तू उससे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं।" (बैहक़ी : 6/324, 6/324; व सनदुहू सहीह, मुस्नद अबी यअला : 7179; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/48) हज़रत हसन (रह.) ने अपने माल के पाँचवें हिस्से की वसिय्यत की और फ़र्माया "क्या मैं अपने लिए उस हिस्से पर रज़ामन्द हो जाऊँ जो अल्लाह तआला ने ख़ुद अपना रखा है।" इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि माले ग़नीमत के पाँच हिस्से बराबर से किए जाते थे चार तो उन लश्करियों को मिलते थे जो उस जंग में शामिल थे, फिर पाँचवें हिस्से चार हिस्से किए जाते थे, एक चौथाई अल्लाह तआला का और उसके रसूल (ﷺ) का फिर यह हिस्सा हुज़ूर (ﷺ) के क़राबतदारों में बांट दिया जाता था। उसमें से जो कुछ हुज़ूर (ﷺ) लेते थे यानी पाँचवें हिस्से का पाँचवाँ हिस्सा वह आपके बाद जो भी आप (ﷺ) का नाइब हो उसका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला का हिस्सा अल्लाह तआला के नबी का है और जो आप (ﷺ) का हिस्सा था वह आपकी बीवियों का है। अता बिन रिबाह (रह.) फ़र्माते हैं, अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) का जो हिस्सा है वह सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) ही का है, इख़्तियार है जिस काम में आप चाहें लगाएँ।

मिक़्दाम बिन मअदी कर्ब, हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अबू दर्दा, हज़रत हारिस बिन मुआविया कुन्दी (रज़ि.) के पास बैठे हुए थे, उनमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीसों का ज़िक्र होने लगा तो अबू

दर्दा (रज़ि.) ने उबादा बिन सामित (रज़ि.) से कहा, फ़लाँ फ़लाँ ग़ज़्वे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुमुस के बारे में क्या इर्शाद फ़र्माया था? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि, "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक जिहाद में ख़ुमुस के एक ऊँट के पीछे सहाबा (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाई, सलाम के बाद खड़े हो गए और चंद बाल अपनी चुटकी में लेकर फ़र्माया कि यह बाल उस ऊँट के जो माले ग़नीमत में से है, यह भी माले ग़नीमत में से ही हैं और मेरे नहीं हैं, मेरा हिस्सा तो तुम्हारे साथ सिर्फ़ पाँचवाँ है और फिर वह भी तुम ही को वापिस दे दिया जाता है। पस सूई धागे तक हर छोटी बड़ी चीज़ पहुँचा दिया करो, ख़यानत न करो, ख़यानत आर है और ख़यानत करने वाले के लिए दोनों जहाँ में आग है, क़रीब वालों से दूर वालों से अल्लाह की राह में जिहाद जारी रखो, शरई कामों में किसी मलामत करने वाले की मलामत का ख़्याल तक न करो। वतन में और सफ़र में अल्लाह तआला की मुक़र्ररकर्दा हदें जारी करते रहो, अल्लाह तआला के बारे में जिहाद करते रहो। जिहाद जन्नत के बहुत बड़े दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है, इसी जिहाद की वजह से अल्लाह तआला ग़मो रंज को दूर कर देता है।" (अहमद : 5/316; व सनदुहू ज़ईफ़; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/338) यह हदीस हसन है और बहुत ही आला है। सिहाह सित्ता में इस सनद से मरवी नहीं लेकिन मुस्नद अहमद ही की दूसरी रिवायत में दूसरी सनद से ख़ुमुस का और ख़यानत का ज़िक्र मरवी है। (अहमद : 2/184; अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी फ़िदाइल असीर बिल मालि : 2694; वहुव हसन; नसाई : 3718; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/195) अबूदाऊद और नसाई में भी मुख़्तसरन यह हदीस मरवी है। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल इमामि यस्तअमिरू बिशैइन मिनल फ़ै लि नफ़्सिही : 2755; व सनदुहू सहीहुन) इस हिस्से में से हज़रत मुहम्मद (ﷺ) कुछ चीज़ें अपनी ज़ात के लिए भी ख़ास कर लिया करते थे, लौण्डी, ग़ुलाम, तलवार, घोड़ा वग़ैरह। जैसे कि मुहम्मद बिन सीरीन और आमिर शअबी और अक्सर उलमा (रहि.) ने फ़र्माया है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि ज़ुलफ़िक़ार नामी तलवार बद्र के दिन के नफ़्ल में से थी जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास थी, उसी के बारे में उहुद वाले दिन ख़्वाब देखा था। (तिर्मिज़ी, किताबुस्सियर, बाब फ़िन्नफ़्ल तहत हदीस : 1561; वहुव सहीह; इब्ने माजा : 2808; अहमद : 1/271) हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि (हज़रत) सफ़िया (रज़ि.) भी इसी तरह आई थीं। (अबूदाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब मा जाअ फ़ी सहमिस्सफ़िय : 2994; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सौरी अन्अन) अबूदाऊद वग़ैरह में है हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं कि हम बाड़े में बैठे हुए थे जो एक साहब तशरीफ़ लाए, उनके हाथ में चमड़े का एक टुकड़ा था, हमने उसे पढ़ा तो उसमें लिखा था कि यह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से बनू ज़ुहैर बिन उक़ैस की तरफ़ है कि "अगर तुम अल्लाह तआला की वहदत की और रसूलुल्लाह (ﷺ) की रिसालत की गवाही दो और नमाज़ें क़ायम रखो और ज़कात दिया करो और ग़नीमत के माल से ख़ुमुस अदा करते रहो और नबी (ﷺ) का हिस्सा और ख़ालिस हिस्सा अदा करते रहो तो तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की अमान में हो।" हमने उनसे पूछा कि तुझे यह किसने लिख दिया है? उसने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने। (अबूदाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब मा जाअ फ़ी सहमिस्सफ़िय : 2999; व सनदुहू सहीहुन; नसाई : 4151) पस इन सहीह हदीसों की दलालत और सबूत इस बात पर है इसीलिए अक्सर बुज़ुर्गों ने इसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ख़ास में शुमार किया है, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि.

और कुछ लोग कहते हैं कि ख़ुमुस में इमामे वक़्त मुसलमानों की मस्लिहत के मुताबिक़ जो चाहे कर सकता है, जैसे कि माले फ़ै में उसे इख़्तियार है। हमारे शैख़ अल्लामा इमाम इब्ने तैमिया (रह. फ़र्माते हैं कि यही क़ौल हज़रत इमाम मालिक (रह.) का है और अक्सर सल्फ़ का है और यही सबसे ज़्यादा सही क़ौल है। जब यह साबित हो गया और मालूम हो गया तो यह भी ख़्याल रहे कि ख़ुमुस जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का हिस्सा था उसे अब आप (ﷺ) के बाद क्या किया जाए, कुछ तो कहते हैं कि अब यह हिस्सा इमामे वक़्त यानी ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन का होगा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.), हज़रत अली (रज़ि.), हज़रत क़तादा (रह.) और एक जमाअत का यही क़ौल है और इस बारे में एक मरफ़ूअ हदीस भी आई है और लोग कहते हैं यह मुसलमानों की मस्लिहत में ख़र्च होगा। और क़ौल है कि यह भी बाक़ी की और क़िस्मों पर ख़र्च होगा यानी क़राबतदार, यतीम, मिस्कीन और मुसाफ़िर। इमाम इब्ने जरीर (रह.) का मुख़्तार यही है और बुज़ुर्गों का फ़र्मान है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और आप (ﷺ) के क़राबतदारों का हिस्सा यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को दे दिया जाए। इराक़ वालों की एक जामअत का यही क़ौल है। और कहा गया है कि ख़ुमुस का यह पाँचवाँ हिस्सा सबका सब क़राबतदारों का है। चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अली और अली बिन हुसैन का क़ौल है कि यह हमारा हक़ है। पूछा गया कि आयत में यतीमों और मिस्कीनों का भी ज़िक्र है तो इमाम अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, इससे मुराद भी हमारे यतीम और हमारे मिस्कीन हैं। इमाम हसन बिन मुहम्मद बिन हनफ़िया (रह.) से इस आयत के बारे में सवाल होता है तो फ़र्माते हैं कि कलाम का शुरू इस तरह हुआ है वरना दुनिया, आख़िरत का सबकुछ अ ल्लाह तआला ही का है। फिर इन दोनों हिस्सों के बारे में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के बाद क्या हुआ, इसमें इख़्तिलाफ़ है। कुछ कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) का हिस्सा आप (ﷺ) के ख़लीफ़ा को मिलेगा। कुछ कहते हैं आप (ﷺ) के क़राबतदारों को। कुछ कहते हैं ख़लीफ़ा के क़रीबी रिश्तेदारों को, उनकी राय में उन दोनों हिस्सों को घोड़ों और हथियारों के काम में लगाया जाए, इसी तरह ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी (रज़ि.) व फ़ारूक़ी (रज़ि.) में होता भी रहा है। इब्राहीम (रह.) कहते हैं कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) और हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के इस हिस्से को जिहाद के काम में ख़र्च करते थे। पूछा गया कि हज़रत अली (रज़ि.) इस बारे में क्या करते थे? फ़र्माया वह इस बारे में उन सबसे सख़्त थे।

अक्सर उलमा (रह.) का यही क़ौल है। हाँ! ज़ुल क़ुर्बा का जो हिस्सा है, वह बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब का है। इसलिए कि औलादे अब्दुल मुत्तलिब ने औलादे हाशिम की जाहिलियत में और अव्वल इस्लाम में मुवाफ़िक़त की और उन्हीं के साथ उन्होंने घाटी में क़ैद होना भी मंज़ूर कर लिया क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) को सताए जाने की वजह से यह लोग बिगड़ बैठे थे और आप (ﷺ) की हिमायत में थे उनमें से मुसलमान तो अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत के लिए और उनमें से काफ़िर ख़ानदारी तरफ़दारी और रिश्तों नातों की हिमायत के लिए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचा अबू तालिब की फ़र्मांबरदारी करके। हाँ! बनू अब्दे शम्स और बनू नौफ़िल, यह भी भले आप (ﷺ) के चचाज़ाद भाई थे

लेकिन वह उनकी मुवाफ़िक़त में न थे बल्कि उनके ख़िलाफ़ थे, उन्हें अलग कर चुके थे और उनसे लड़ रहे थे और कह रहे थे कि क़ुरैश के और तमाम क़बीले उनके मुख़ालिफ़ हैं इसीलिए अबू तालिब ने अपने क़सीदा लामिया में इनकी बहुत ही मज़म्मत की है क्योंकि यह क़रीबी क़राबतदार थे। कहा है कि उन्हें बहुत जल्द अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी इस शरारत का पूरा बदला मिले, इन बेवक़ूफ़ों ने अपने होकर एक ख़ानदान और एक ख़ून के होकर हमसे आँखें फेर ली हैं वग़ैरह। एक मौक़ा पर हज़रत जुबेर बिन मुत्इम बिन अदी बिन नौफ़िल और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान बिन अबुल आस इब्ने उमय्या बिन अब्दे शम्स, रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गए और शिकायत की कि आप (ﷺ) ने ख़ैबर के ख़ुमुस में से बनू अब्दुल मुत्तलिब को तो दिया लेकिन हमें छोड़ दिया हालाँकि आप (ﷺ) की क़राबतदारी के लिहाज़ से वह और हम बिलकुल एक जैसे और बराबर हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब तो बिलकुल एक ही चीज़ हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब वमिनद् दलीलि अला अन्नल ख़ुमुस लिल इमाम : 3140; अबूदाऊद : 2978; सुननुल कुब्रा बैहक़ी : 6/365; अहमद : 4/81; मुस्नद अबी यअ़ला : 7399) कुछ रिवायत में यह भी है कि उन्होंने तो मुझसे न कभी जाहिलियत में जुदाई बरती न इस्लाम में। (अबूदाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब फ़ी बयानि मवाज़िअ क़िस्मुल ख़ुमुस : 2980; वहुव सहीह; नसाई : 4142) यह क़ौल तो जुम्हूर उलमा का है कि यह बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब हैं। कुछ कहते हैं कि यह सिर्फ़ बनू हाशिम हैं। मुजाहिद (रह.) का क़ौल है कि अल्लाह तआला को इल्म था कि बनू हाशिम में फ़ुक़रा हैं, पस सदक़े की जगह उनका हिस्सा माले ग़नीमत में मुक़र्रर कर दिया। यही रसूलुल्लाह (ﷺ) के वह क़राबतदार हैं जिन पर सदक़ा हराम है। अली बिन हुसैन (रह.) से भी इसी तरह मरवी है। कुछ कहते हैं यह सब क़ुरैश हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस्तिफ़्ता किया गया कि ज़विल क़ुर्बा कौन हैं? आप (रज़ि.) ने जवाब लिखा कि हम तो कहते थे, हम हैं लेकिन हमारी क़ौम नहीं मानती, वह सब कहते हैं कि सारे ही क़ुरैश हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब अन्निसाउल ग़ाज़ियात युर्ज़ख़ु लहुन्न वला युस्हम...) : 1812) इसमें (क़ुरैश) का लफ़्ज़ नहीं) कुछ रिवायतों में सिर्फ़ पहला जुम्ला ही है। दूसरे जुम्ले के रावी अबू मअशर नुजीह बिन अब्दुर्रहमान मदनी (रह.) की रिवायत में ही यह जुम्ला है कि सब कहते हैं कि सारे क़ुरैश हैं। इसमें ज़ुअफ़ भी है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम्हारे लिए लोगों के मेल कुचैल से तो मैंने मुँह फेर लिया, ख़ुमुस का पाँचवाँ हिस्सा काफ़ी है।" (अल्मुअजमुल कबीर : 11543; बि तसर्रुफ़िन यसीर व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन) यह हदीस हसन है इसके रावी इब्राहीम बिन महदी को इमाम अबू हातिम सिक़ा बतलाते हैं लेकिन यह्या बिन मुईन (रह.) कहते हैं कि यह मुंकर रिवायतें बतलाते हैं, वल्लाहु आलम!

आयत में यतीमों का ज़िक्र है यानी मुसलमानों के बे बाप के बच्चे। फिर कुछ तो कहते हैं कि यतीमी के साथ फ़क़ीरी भी हो तो वह मुस्तहिक़ हैं और कुछ कहते हैं हर अमीर फ़क़ीर यतीम को यह अल्फ़ाज़ शामिल हैं। मसाकीन से मुराद वह मुहताज हैं जिनके पास इतना नहीं कि उनकी फ़क़ीरी और उनकी हाजत पूरी हो जाए और उन्हें काफ़ी हो जाए। इब्ने सबील वह मुसाफिर है जो इतनी हद तक वतन से निकल चुका हो या जा रहा हो कि जहाँ पहुँचकर उसे नमाज़ को क़सर पढ़ना जाइज़ हो और सफ़रे ख़र्च उसके काफ़ी न रहा हो।

इसकी तफ़्सीर सूरह बरात की आयत (इन्नमस्सदक़ात) की तफ़्सीर में आएगी, इंशाअल्लाह तआला। हमारा अल्लाह तआला पर भरोसा है और उसी से हम मदद तलब करते हैं।

फिर फ़र्माता है कि अगर तुममें अल्लाह तआला पर और उसकी उतारी हुई वही पर ईमान है तो जो वह कर रहा है बजा लाओ, यानी माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा अलग कर दिया करो। बुख़ारी मुस्लिम में है कि वफ़्दे अब्दे क़ैस को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं तुम्हें चार बातों का हुक्म करता हूँ और चार बातों से मना करता हूँ, मैं तुम्हें अल्लाह तआला पर ईमान लाने का हुक्म देता हूँ, जानते भी हो कि अल्लाह तआला पर ईमान लाना कैसा है? गवाही देना कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह तआला के रसूल हैं और नमाज़ को पाबन्दी के साथ अदा करना, ज़कात देना और ग़नीमत में से ख़ुमुस अदा करना। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अदाअल ख़ुमुस मिनल ईमान : 53; सहीह मुस्लिम : 71; अबूदाऊद : 3692; तिर्मिज़ी : 2611; अहमद : 1/228) पस ख़ुमुस का देना भी ईमान में दाख़िल है।'' हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में बाब बाँधा है कि ख़ुमुस का अदा करना ईमान में है फिर इस हदीस को वारिद फ़र्माया है और हमने शरह सहीह बुख़ारी में इसका पूरा मतलब वाज़ेह भी कर दिया है, वलिल्लाहिल हम्द वल मिनह' फिर अल्लाह तआला अपना एक एहसान व इन्आम बयान करता है कि उसने हक़ व बातिल में फ़र्क़ कर दिया। अपने दीन को ग़ालिब किया, अपने नबी अकरम (ﷺ) की और आप (ﷺ) के लश्करियों की मदद फ़र्माई और जंगे बद्र में उन्हें ग़लबा दिया। कलिमा ईमान कलिमा कुफ़्र पर छा गया। पस यौमुल फ़ुरक़ान से मुराद बद्र का दिन है जिसमें हक़ व बातिल की पहचान हो गई। (हाकिम : 3/23; अन इब्ने अब्बास (रज़ि.) व सनदुहू ज़ईफ़ुन) बहुत से बुज़ुर्गों से इसकी यही तफ़्सीर मरवी है। (तब्री : 13/561) यही सबसे पहला ग़ज़्वा था। मुश्रिक लोग उत्बा बिन रबीआ की मातहती में थे। जुम्आ के दिन उन्नीस (19) या सत्तरह (17) रमज़ान को यह लड़ाई हुई थी, अस्हाबे रसूल तीन सौ दस से कुछ ऊपर थे और मुश्रिकों की तादाद नौ सौ से एक हज़ार की थी, बावजूद इसके अल्लाह तबारक व तआला ने काफ़िरों को शिकस्त दी, सत्तर से कुछ ऊपर तो यह मारे गए और इतने ही क़ैद कर लिए गए। मुस्तदरक हाकिम में है इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि लैलतुल क़द्र को (तहक़ीक़) ग्यारहवीं रात में ही यक़ीन के साथ तलाश करो, इसलिए कि इसकी सुबह को बद्र की लड़ाई का दिन था। (हाकिम : 3/20; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) हसन बिन अली (रज़ि) फ़र्माते हैं लैलतुल फ़ुरक़ान जिस दिन दोनों जमाअतों में घमसान की लड़ाई हुई, रमज़ानुल मुबारक की सत्रहवीं रात थी, यह रात भी जुम्अे की रात थी। ग़ज़्वे और सीरत की किताब वालों के नज़दीक सहीह यही है। हाँ! यज़ीद बिन अबू जअद (रह.) जो अपने ज़माने के मिस्री इलाक़े के इमाम थे, फ़र्माते हैं कि बद्र का दिन पीर का दिन था। लेकिन किसी और ने इनकी मुताबिअत नहीं की और जुम्हूर का क़ौल यक़ीनन इनके क़ौल पर मुक़द्दम है, वल्लाहु आलम!

***

إِذْ أَنتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۚ وَلَوْ
تَوَاعَدتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ ۙ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَنْ
هَلَكَ عَن بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَن بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : "जबकि तुम पास वाले किनारे पर थे और वह दूर वाले किनारे पर थे और क़ाफ़िला तुमसे बहुत नीचे था, अगर तुम आप आपस में वादे करते तो यक़ीनन तुममें उस वादे के बारे में बहुत से इख़्तिलाफ़ पड़ते लेकिन अल्लाह तआला को तो एक काम कर ही डालना था, ताकि वह ज़ाहिरी तौर पर भी बर्बाद हो जो दलील की रू से हलाक हो चुका है और वह जी जाए जो दलील से जीता है, बेशक अल्लाह तआला बहुत सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है।" (42)

क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान और मअरका बद्र की तफ़्सील (आयत 42) : फ़र्माता है कि उस दिन तुम वादियुद् दुनिया में थे, जो मदीना शरीफ़ से क़रीब है और मुश्रिक लोग मक्का की तरफ़ मदीना की दूर की वादी में थे और अबू सुफ़ियान और उसका क़ाफ़िला तिजारती सामान समेत नीचे की रुख़ दरिया की तरफ़ था। अगर तुम और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश पहले से जंग का इरादा करते तो यक़ीनन तुममें इख़्तिलाफ़ पड़ता कि लड़ाई कहाँ हो। यह भी मतलब कहा गया कि अगर तुम लोग आपस में तै करके जंग के लिए तैयार हुए होते और फिर तुम्हें उनकी ज़्यादा तादाद और ज़्यादा सामान मालूम होते तो बहुत मुम्किन था कि इरादे पस्त हो जाते, इसलिए क़ुदरत ने बग़ैर पहले तै किए दोनों जमाअतों को अचानक मिला दिया कि अल्लाह तआला का यह इरादा पूरा हो जाए कि इस्लाम और मुसलमानों को बुलंदी हो और शिर्क और मुश्रिकों को पस्ती हो पस जिसको करना था अल्लाह पाक कर गुज़रा। चुनाँचे कअब बिन मालिक (रज़ि.) की हदीस में है कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) और मुसलमान तो सिर्फ़ क़ाफ़िले के इरादे से ही निकले थे, अल्लाह तआला ने दुश्मन से मुठभेड़ करवा दी बग़ैर किसी तक़र्रुर के और बग़ैर किसी जंगी तैयारी के। (तब्री : 13/566) अबू सुफ़ियान मुल्के शाम से क़ाफ़िले को लेकर चला। अबू जहल उसे मुसलमानों से बचाने के लिए मक्का से निकला, क़ाफ़िला और रास्ते से निकल गया और मुसलमानों और काफ़िरों की जंग हो गई। इससे पहले दोनों एक दूसरे से बेख़बर थे, एक दूसरे को ख़ुसूसन पानी लाने वालों को देखकर इन्हें उनका और उन्हें इनका इल्म हुआ। सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बराबर अपने इरादे से जा रहे थे, सफ़रा के क़रीब पहुँचकर बसबस बिन अम्र और अदी बिन अबुज़्ज़ग़बाअ जोहनी को अबू सुफ़ियान का पता लगाने के लिए भेजा, उन दोनों ने बद्र के मैदान में पहुँचकर बतहा के एक टीले पर अपनी सवारियाँ बिठाईं और पानी के लिए निकले, रास्ते में दो लड़कियों को आपस में झगड़ते हुए देखा, एक दूसरे से कहती है तू मेरा क़र्ज़ा क्यूँ अदा नहीं करती? उसने कहा, जल्दी न कर, कल या परसों यहाँ क़ाफ़िला आने वाला है, मैं तुझे तेरा हक़ दे दूँगी। मजदा बिन अम्र बीच में बोल उठा और कहा, यह सच कहती है, इसे उन सहाबियों ने सुन लिया, अपने ऊँट कसे और फ़ौरन ख़िदमते

नबवी (ﷺ) में जाकर आप (ﷺ) को ख़बर दी। इधर अबू सुफ़ियान अपने क़ाफ़िले से पहले यहाँ अकेला पहुँचा और मजदा बिन अ़म्र से कहा कि इस कुएँ पर तुमने किसी को देखा? उसने कहा, नहीं! अल्बत्ता दो सवार आए थे, ऊँट उस टीले पर बिठाए, अपनी मश्क में पानी भरा और चल दिए। यह सुनकर यह उस जगह पहुँचा मींगनियाँ लीं और उन्हें तोड़ा और खजूरों की गुठलियाँ उनमें पाकर कहने लगा, वल्लाह! यह मदनी लोग हैं, वहीं से वापिस अपने क़ाफ़िले में पहुँचा और रास्ता बदलकर समुन्द्र के किनारे चल दिया। जब उसे उस तरफ़ से इत्मिनान हो गया तो उसने अपना क़ासिद कुरेशियों के पास भेजा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे क़ाफ़िले को और माल को और आदमियों को बचा लिया तुम लौट जाओ। यह सुनकर अबू जहल ने कहा, नहीं! जब यहाँ तक हम आ चुके हैं तो बद्र तक ज़रूर जाएँगे, यहाँ एक बाज़ार लगा करता था, वहाँ हम तीन दिन ठहरेंगे वहाँ ऊँट ज़िब्ह करेंगे, शराबें पियेंगे, कबाब खाएँगे ताकि अ़रब में हमारी धूम मच जाए और हर एक को हमारी बहादुरी, बेजिगरी मालूम हो और वह हमेशा हमसे डर कर रहें लेकिन अख़नस बिन शुरैक़ ने कहा कि बनू ज़ोहरा के लोगों! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे माल महफ़ूज़ कर दिए, तुमको चाहिए कि अब वापिस चले जाओ। उसके क़बीले ने उसकी मान ली, यह लोग तो लौट गए और बनू अ़दी भी, बद्र के क़रीब पहुँचकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, और हज़रत ज़ुबेर बिन अ़वाम (रज़ि.) को ख़बर लाने के लिए भेजा, चंद और सहाबा (रज़ि.) को भी उनके साथ रवाना कर दिया। उन्हें बनू सईद बिन आ़स का और बनू हज्जाज का ग़ुलाम कुएँ पर मिल गया, दोनों को गिरफ़्तार कर लिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया। उस वक़्त आप (ﷺ) नमाज़ में थे। सहाबा (रज़ि.) ने उनसे सवाल करना शुरू किया कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि, कुरैश के सक़्क़े (पानी पिलाने वाले) हैं, उन्होंने हमें पानी लाने के लिए भेजा था। सहाबा (रज़ि.) का ख़्याल था कि अबू सुफ़ियान के आदमी हैं इसलिए उन्होंने उन पर सख़्ती शुरू की, आख़िर घबराकर उन्होंने कह दिया कि हम अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले के हैं तब उन्हें छोड़ा। हुज़ूर (ﷺ) ने एक रकअ़त पढ़कर सलाम फेर दिया और फ़र्माया कि "जब तक यह सच बोलते रहे तुम इन्हें मारते पीटते रहे और जब इन्होंने झूठ कहा, तुमने छोड़ दिया, वल्लाह! यह सच्चे हैं, यह कुरैश के ग़ुलाम हैं। हाँ जी बतलाओ कुरैश का लश्कर कहाँ है?" उन्होंने कहा, वादी क़ुस्वा के उस तरफ़ टीले के पीछे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "वह तादाद में कितने हैं?" उन्होंने कहा, बहुत हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "आख़िर कितने हैं?" उन्होंने कहा, तादाद तो हमें मालूम नहीं। आपने फ़र्माया, "अच्छा यह बतला सकते हो कि हर रोज़ कितने ऊँट कटते हैं?" उन्होंने कहा, एक दिन नौ एक दिन दस। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "फिर तो वह नौ सौ से एक हज़ार तक हैं।" फिर आपने पूछा कि "उनमें सरदाराने कुरैश में से कौन कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया कि उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, अबुल बख़्तरी बिन हिशाम, हकीम बिन हिज़ाम, नौफ़िल बिन ख़ुवेलिद, हारिस बिन आ़मिर बिन नौफ़िल, तुऐमा बिन अ़दी, नज़र बिन हारिस, ज़म्आ़ बिन अस्वद, अबू जहल, उमय्या बिन ख़ल्फ़, नबिया बिन हज्जाज, मुनब्बा बिन हज्जाज, सहल बिन अ़म्र, अ़म्र बिन अ़ब्दूद। यह सुनकर आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया "लो मक्का ने अपने जिगर के टुकड़े तुम्हारी तरफ़ डाल दिए हैं।" (दलाइलुन्नबुव्वत लिल बैहक़ी : 3/42, 43; इसकी अस़ल सहीह मुस्लिम : 1779; अबूदाऊद : 2681 में भी मौजूद है।)

बद्र के दिन जब दोनों जमाअतों का मुक़ाबला शुरु होने लगा तो ह़ज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि अगर आप इजाज़त दें तो हम आपके लिए एक झोंपड़ी बना दें, आप वहाँ रहें, हम अपने जानवरों को यहीं बिठाकर मैदान में जा कूदें, अगर फ़तह़ हुई तो अल्ह़म्दु लिल्लाह! यही मत़लूब है वरना आप (ﷺ) हमारे जानवरों पर सावर होकर उन्हें अपने साथ लेकर हमारी क़ौम के उन ह़ज़रात के पास चले जाएँ जो मदीना शरीफ़ में हैं वह हमसे ज़्यादा आप (ﷺ) से मुह़ब्बत रखते हैं, उन्हें मालूम न था कि कोई जंग होने वाली है वरना वह हर्गिज़ आपका साथ न छोड़ते, आपकी मदद के लिए आपके हमरकाब (साथ) निकल खड़े होते। हुज़ूर (ﷺ) ने उनके इस मश्वरे की क़द्र की, उन्हें दुआ़ दी और उस डेरे में आप ठहर गए। आप (ﷺ) के साथ सिर्फ़ ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ही थे और कोई न था। सुबह़ होते ही क़ुरैशियों के लश्कर टीले के पीछे से आते हुए दिखाई दिए, उन्हें देखकर आप (ﷺ) ने जनाबे बारी तआ़ला में दुआ़ की कि बारी तआ़ला! यह फ़ख़्र व गुरूर के साथ तुझसे लड़ने और तेरे रसूल को झुठलाने के लिए आ रहे हैं , बारी तआ़ला! तू इन्हें पस्त व ज़लील कर। इस आयत के आख़िरी जुम्ले की तफ़्सीर सीरत इब्ने इस्ह़ाक़ में यह है कि यह इसलिए कि कुफ़्र करने वाले दलीले इलाही देख लें भले कुफ़्र ही पर रहें और ईमान वाले भी दलील के साथ ईमान लाएँ। (त़ब्री : 13/568) यानी बग़ैर आमादगी और बग़ैर शर्त व क़रारदाद के अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों और मुश्रिकों की यहाँ अचानक मुठभेड़ करा दी कि ह़क़्क़ानियत को बात़िल पर ग़ल्बा देकर ह़क़ को बिलकुल ज़ाहिर कर दे, इस त़रह़ कि किसी को शक शुब्हा बाक़ी न रहे। अब जो कुफ़्र पर रहे वह भी कुफ़्र को कुफ़्र समझकर रहे और जो ईमान वाला हो जाए वह दलील देखकर ईमान वाला है, ईमान ही दिलों की ज़िन्दगी है और कुफ़्र ही अ़सली हलाकत है जैसे फ़र्माने क़ुरआन है (اَوَ مَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ) (6/अन्आ़म : 122) वह जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िन्दा कर दिया और उसके लिए नूर बना दिया कि उस रोशनी में वह लोगों में चल फिर रहा है। तोहमत के क़िस्से में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के अल्फ़ाज़ हैं कि फिर जिसे हलाक होना था वह हलाक हो गया, यानी बोहतान में हिस्सा लिया। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे तज़र्रुअ़ वज़ारी और तुम्हारी दुआ़, इस्तिग़्फ़ार और फ़रियाद व मुनाजात के सुनने वाला है, वह ख़ूब जानता है कि तुम अहले ह़क़ हो तुम मुस्तह़िक़्के इम्दाद हो, तुम इस क़ाबिल हो कि तुम्हें काफ़िरों और मुश्रिकों पर ग़ल्बा दिया जाए।

***

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْۤ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّ يُقَلِّلُكُمْ فِيْۤ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : ''जब अल्लाह तआला ने तुझे तेरे ख़्वाब में उनकी तादाद कम दिखाई, अगर उनकी ज़्यादती दिखाता तो तुम बुज़दिल हो जाते और इस काम के बारे में आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगते लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हें बचा लिया, वह दिलों के भेदों से ख़ूब आगाह है (43) जबकि उसने बवक़्ते मुलाक़ात उन्हें तुम्हारी नज़रों में बहुत कम दिखाए और तुम्हें उनकी निगाहों में कम दिखाए ताकि अल्लाह तआला इस काम को अंजाम तक पहुँचा दे जो करना ही था, सब काम अल्लाह तआला ही की तरफ़ फेरे जाते हैं।(44) ऐ ईमानवालों! जब तुम किसी मुख़ालिफ़ फ़ौज से भिड़ जाओ तो साबित क़दम रहो और बकस्रत अल्लाह तआला को याद करो ताकि तुम्हें कामयाबी मिले। (45) और अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी करते रहो आपस में इख़्तिलाफ़ न करो, वरना बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र व सिहार रखो, यक़ीनन अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।'' (46)

ग़ज़्व-ए-बद्र में मुसलमानों और काफ़िरों का मुवाज़ना (आयत 43-46) : अल्लाह तआला ने अपने नबी को ख़्वाब में मुश्रिकों की तादाद बहुत कम दिखाई, आप (ﷺ) ने अपने अस्हाब (रज़ि.) से ज़िक्र किया, यह चीज़ उनकी साबित क़दमी का बाइस बन गई। कुछ बुज़ुर्ग कहते हैं कि आपको आप (ﷺ) की आँखों से उनकी तादाद कम दिखाई जिन आँखों से आप (ﷺ) सोते थे। लेकिन यह क़ौल ग़रीब है जब क़ुरआन में (मनामि) के लफ़्ज़ हैं तो इसकी तावील बिला दलील करने की ज़रूरत ही क्या है। मुम्किन था कि उनकी तादाद की ज़्यादती दिलों में डर बिठा दे और आपस में इख़्तिलाफ़ शुरु हो जाए कि आया उनसे लड़ें या न लड़ें। अल्लाह तआला ने इस बात से ही बचा लिया और उनकी तादाद कम करके दिखाई। अल्लाह पाक दिलों के भेद से सीने के राज़ से वाक़िफ़ है, आँखों की ख़यानत और दिल के भेद जानता है। (40/ग़ाफ़िर : 19) ख़्वाब में तादाद कम दिखाकर फिर यह भी मेहरबानी की कि बवक़्ते जंग भी मुसलमानों की नज़रों और जाँच में वह बहुत ही कम आए ताकि मुसलमान दिलेर हो जाएँ और उन्हें कोई चीज़ न समझें। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैंने तो अंदाज़ा करके अपने साथी से कहा कि यह लोग तो कोई सत्तर क़रीब होंगे। उसने पूरा अंदाज़ा करके कहा, नहीं! नहीं! कोई एक सौ हैं। फिर उनमें से एक शख़्स हमारे हाथ में क़ैद हो गया। उससे हमने पूछा कि तुम कितने हो? उसने कहा, एक हज़ार का यह लश्कर है। (तब्री : 13/572) फिर इसी तरह काफ़िरों की नज़रों में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों की तादाद कम दिखाई। अब तो यह उन पर और यह उन पर कूद पड़े। ताकि रब का काम जिसका करना वह अपने इल्म में मुक़र्रर कर चुका था, पूरा हो

जाए, काफ़िरों पर अपनी पकड़ और मोमिनों पर अपनी रह़मत नाज़िल कर दे। पस जब तक लड़ाई शुरु नहीं हुई थी यही कैफ़ियत दोनों जानिब रही। लड़ाई शुरु होते ही अल्लाह तआला ने एक हज़ार फ़रिश्तों से अपने मोमिन बन्दों की मदद की, मुसलमानों का जत्था बढ़ गया और काफ़िरों का ज़ोर टूट गया। चुनाँचे अब तो काफ़िरों को मुसलमान अपने से दुगुने नज़र आने लगे और अल्लाह तआला ने मुवह़्ह़िदों की मदद की और आँखों वालों के लिए इब्रत का ख़ज़ाना खोल दिया। जैसे कि आयत (قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ) (3/आले इमरान : 13) में बयान हुआ है। पस दोनों आयतें एक सी हैं। कम नज़र आते थे जब तक लड़ाई शुरु नहीं हुई। शुरु होते ही मुसलमान दुगुने दिखाई देने लगे।

ग़ज़्व-ए-बद्र और आदाबे क़िताल : अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को लड़ाई की कामयाबी की तदबीर और दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त की शुजाअत सिखा रहा है। एक ग़ज़्वे में रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने सूरज ढलने के बाद खड़े होकर फ़र्माया, ''लोगों ! दुश्मन से भिड़ जाने की तमन्ना न करो, अल्लाह तआला से आफ़ियत मांगते रहो लेकिन जब दुश्मनों से मुक़ाबला हो जाए तो इस्तिक़्लाल (धेर्य) रखो और यक़ीन मानो कि जन्नत तलवारों के साये में है।'' फिर आप (ﷺ) ने खड़े होकर अल्लाह तआला से दुआ की कि, ''ऐ सच्ची किताब के नाज़िल करने वाले! ऐ बादलों के चलाने वाले और लश्करों को हज़ीमत देने वाले अल्लाह तआला! इन काफ़िरों को शिकस्त दे और इस पर हमारी मदद फ़र्मा।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब कानन्नबी इज़ा लम युक़ातिल अव्वलन्नहार अख़्ख़रल क़िताल ह़त्ता तज़ूलुश्शम्स... : 2966; सह़ीह़ मुस्लिम : 1742) अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (रह़.) की रिवायत में है कि ''दुश्मन के मुक़ाबले की तमन्ना न करो और मुक़ाबले के वक़्त साबितक़दमी और ऊलुल अ़ज़्मी दिखाओ, भले वह चीख़ें चिल्लाएँ, लेकिन तुम ख़ामोश रहा करो।'' (मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 9518; बैहक़ी : 9/153; व सनदुहू ज़ईफ़) त़बरानी में है तीन वक़्तों में अल्लाह तआला को ख़ामोशी पसंद है, तिलावते क़ुरआन के वक़्त, जिहाद के वक़्त और जनाज़े के वक़्त। (त़बरानी 5130 व सनदुहू ज़ईफ़) और ह़दीस में है मेरा कामिल बन्दा वह है जो दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त भी ''मेरा ज़िक्र करता रहे यानी इस ह़ाल में भी मेरे ज़िक्र को, मुझसे दुआ करने को और मुझसे फ़रियाद करने को तर्क न करे।'' (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब 3580 व सनदुहू ज़ईफ़ुन उफ़ेर रावी ज़ईफ़ है।) ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं पूरी मशग़ूली के वक़्त यानी जब तलवार चलती हो तब भी अल्लाह तआला ने अपने ज़िक्र को फ़र्ज़ रखा है। ह़ज़रत अ़ता (रह़.) का क़ौल है कि चुप रहना और ज़िक्रुल्लाह करना लड़ाई के वक़्त भी वाजिब है, फिर आप (ﷺ) ने यही आयत तिलावत की, तो जुरैज (रज़ि.) ने आप (ﷺ) से पूछा कि अल्लाह तआला की याद बुलंद आवाज़ से करें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ!'' कअ़ब अह़बार (रह़.) फ़र्माते हैं क़ुरआने करीम की तिलावत और ज़िक्रुल्लाह से ज़्यादा मह़बूब अल्लाह तआला के नज़दीक और कोई चीज़ नहीं। इसमें भी सबसे अच्छा वह है जिसका हुक्म लोगों को नमाज़ में किया गया है। और जिहाद में क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तबारक व तआला ने बवक़्ते जिहाद भी अपने ज़िक्र का हुक्म फ़र्माया है, फिर आप (ﷺ) ने यही आयत पढ़ी। शायर कहता है कि ऐन जंगो जिदाल के वक़्त भी मेरे दिल में तेरी याद होती है। अ़नतरा कहता है नेज़ों और तलवारों के शपाशप चलते हुए भी मैं तुझे याद करता रहता हूँ। पस आयत में जनाब बारी

तआला ने दुश्मनों के मुक़ाबले के वक़्त मैदाने जंग में साबित क़दम रहने और सब्र व सिहार करने का हुक्म दिया कि नामर्दी बुज़ दिली और भागड़ और डरपोकी न बरतो। अल्लाह तआला को याद करो, उसे न भूलो, उससे फ़रियाद करो, उससे दुआएँ करो, उसी पर भरोसा रखो, उससे मदद तलब करो, यही कामयाबी के गुर हैं, उस वक़्त भी अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअत को हाथ से न जाने दो, वह जो फ़र्माएँ बजा लाओ जिनसे रोकें रुक जाओ, आपस में झगड़े और इख़्तिलाफ़ न फैलाओ, वरना ज़लील हो जाओगे, बुज़दिली जम जाएगी, हवा उखड़ जाएगी। कुव्वत और तेज़ी जाती रहेगी, इक़बाल व तरक़्क़ी रुक जाएगी। देखो! सब्र का दामन न छोड़ो और यक़ीन रखो कि साबिरों के साथ ख़ुद अल्लाह तआला होता है। सहाबा किराम (रज़ि.) इन अहकाम में ऐसे पूरे उतरे कि उनकी मिसाल अगलों में भी नहीं पीछे वालों का तो ज़िक्र ही किया है। यही शुजाअत यही इताअते रसूल (ﷺ) यही सब्र व इस्तिक़्लाल था, जिसके बाइस मददे इलाही शामिले हाल रही और बहुत ही कम मुद्दत में बावजूद तादाद और अस्बाब की कमी के मश्रिक़ व मग़्रिब को फ़तह कर लिया, न सिर्फ़ लोगों के मुल्कों ही के मालिक बने बल्कि उनके दिलों को भी जीत करके अल्लाह तआला की तरफ़ लगा दिया। रूमियों और फ़ारसियों को तुर्कों और सक़ालिया को बरबरियों और हब्शियों को, सूडानियों और क़िब्तियों को ग़र्ज़ दुनिया के कुल गोरों कालों को दबा लिया, अल्लाह तआला के कलिमा को बुलंद किया, दीने हक़ को फैला दिया और इस्लामी हुकूमत को दुनिया के कोने कोने में जमा दिया।

अल्लाह तआला उनसे ख़ुश रहे और उन्हें भी ख़ुश रखे, ख़्याल तो करो कि तैइस साल में दुनिया का नक़्शा बदल दिया, तारीख़ का वरक़ पलट दिया। अल्लाह तआला हमारा भी उन ही की जमाअत में हश्र करे वह करीम व वह्हाब है।

***

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٤٧ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ
لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ
عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤٨ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ
دِيْنُهُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٤٩

तर्जुमा : "उन लोगों जैसे न बनो जो हक़ को धक्का देने और लोगों में ख़ुदनुमाई करने के लिए अपने शहरों से चले और अल्लाह तआला की राह से रोकने लगे, जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह तआला उसे घेर लेने वाला है। (47) जबकि उनके आमाल शैतान उन्हें ज़ीनतदार दिखा रहा था और कह रहा था कि लोगों में से कोई भी आज तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता, मैं ख़ुद भी तुम्हारा हिमायती हूँ लेकिन जब दोनों जमाअतें नमूदार हुईं तो अपनी ऐड़ियों के बल पीछे हट गया और कहने लगा कि मैं तो तुमसे बरी हूँ, मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे, मैं अल्लाह तआला से डरता हूँ, अल्लाह तआला सख़्त अज़ाब वाला है। (48) जबकि मुनाफ़िक़ कह रहे थे और वह भी जिनके दिलों में बीमारी थी कि उन्हें तो इनके दीन ने मस्त बना दिया है जो भी अल्लाह तआला पर भरोसा करे अल्लाह तआला बिला शक व शुब्हा ग़ल्बे वाला और हिक्मत वाला है।" (49)

ग़ज़्वा बद्र में इब्लीस लईन की शुमूलियत और फ़रारी (आयत 47-49) : जिहाद में साबित क़दमी नेक निय्यती ज़िक्रुल्लाह की कसरत की नसीहत फ़र्माकर मुश्रिकीन की मुशाबिहत से रोक रहा है कि जैसे वह हक़ को मिटाने और लोगों में अपनी बहादुरी दिखाने के लिए फ़ख़्रो गुरूर के साथ अपने शहरों से चले तुम ऐसा न करना। चुनाँचे अबू जहल से जब कहा गया कि क़ाफ़िला तो बच गया, अब लौटकर वापिस चलना चाहिए तो उस मल्ऊन ने जवाब दिया कि वाह किसका लौटना बद्र के पानी पर जाकर पड़ाव करेंगे, वहाँ शराबें उड़ायेंगे, कबाब खायेंगे, गाना सुनेंगे, ताकि लोगों में शोहरत हो जाए। अल्लाह तआला की शान के क़ुर्बान जाइए उनके अरमान क़ुदरत ने पलट दिए यहीं उनकी लाशें गिरीं और यहीं के गढ़ों में ज़िल्लत के साथ ठूस दिए गए। अल्लाह तआला उनके आमाल घेर लेने वाला है और उनके इरादे उस पर खुले हैं, इसीलिए उन्हें बुरे वक़्त से पाला पड़ा। पस यह मुश्रिकीन का ज़िक्र है जो अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) से बद्र में लड़ने चले थे उनकी गाने वालियाँ भी थीं, बाजे गाजे भी थे, शैतान लईन उनका पुश्त पनाह बना हुआ था, उन्हें फुसला रहा था, उनके काम को ख़ूबसूरत भला दिखला रहा था, उनके कानों में फूँक रहा था कि भला तुम्हें कौन हरा सकता है। उनके दिल से बनूबक्र का मक्का पर चढ़ाई करने का डर निकाल रहा था और सुराक़ा बिन मालिक बिन जअशम की सूरत में उनके सामने खड़े होकर कह रहा था कि मैंतो इस इलाक़े का सरदार हूँ, बनू मुदलिज सब मेरे ताबेअ हैं। मैं तुम्हारा हिमायती हूँ, बेफ़िक्र रहो। शैतान का काम भी यही है कि झूठे वादे दे, न होती उम्मीदें दिलाए और धोखे के जाल में फँसाए। बद्र वाले दिन यह अपने झण्डे और अपने लश्कर को लेकर मुश्रिकों के साथ हुआ। उनके दिलों में डालता रहा कि बस तुम बाज़ी ले गए, मैं तुम्हारा मददगार हूँ। लेकिन जब मुसलमानों से मुक़ाबला शुरू हुआ और इस ख़बीस की नज़रें फ़रिश्तों पर पड़ीं तो पिछले पैरों भागा और कहने लगा, मैं वह देखता हूँ जिससे तुम्हारी आँखें अँधी हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं, बद्र वाले दिन इब्लीस अपना झण्डा बुलंद किए हुए मुदलिजी शख़्स की सूरत में अपने लश्कर समेत पहुँचा और वह सुराक़ा बिन मालिक बिन जअशम की सूरत में था और मुश्रिकीन के दल बढ़ाए, हिम्मत दिलाई। जब मैदाने जंग में सफ़बंदी हो गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिट्टी की मुट्ठी भरकर मुश्रिकों के मुँह पर मारी, उससे उनके तो क़दम उखड़

गए। और उनमें भगदड़ मच गई, हज़रत जिब्रईल (अ.) शैतान की तरफ़ चले, उस वक़्त यह एक मुश्रिक के हाथ में हाथ दिए हुए था, आपको देखते ही उसके हाथ से अपना हाथ छुड़ाकर अपने लश्करों समेत भाग खड़ा हुआ। उस शख़्स ने कहा, सुराक़ा, तुम तो कह रहे थे कि तुम हमारे हिमायती हो, फिर यह क्या कर रहे हो। यह मल्ऊन चूँकि फ़रिश्तों को देख रहा था, कहने लगा, मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं तो अल्लाह तआला से डरने वाला आदमी हूँ, अल्लाह तआला का अज़ाब बड़ा भारी है। (इसकी सनद में अली बिन अबी तलहा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) के बीच इंक़िताअ है।) और रिवायत में है कि उसे पीठ फेरता देखकर हारिस बिन हिशाम ने पकड़ लिया, उसने उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा जिससे यह बेहोश होकर गिर पड़ा तो औरों ने कहा कि सुराक़ा तो इस हाल में हमें ज़लील करता है और ऐसे वक़्त हमें धोखा देता है। वह कहने लगा, हाँ! हाँ! मैं तुमसे बरीउज़्ज़िमा और बेताल्लुक़ हूँ, मैं उन्हें देख रहा हूँ जिन्हें तुम नहीं देख सकते। (इसकी सनद में मुहम्मद बिन साइब कल्बी मतरूक रावी है। (अत्तक़रीब : 2/163; रक़म 240) लिहाज़ा यह रिवायत मौज़ूअ है।) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर थोड़ी सी देर के लिए एक तरह की बेख़ुदी सी तारी हो गई, फिर होशियार होकर फ़र्माने लगे, सहाबियो! ख़ुश हो जाओ, यह हैं तुम्हारी दाएँ जानिब हज़रत जिब्रईल (अ.) और यह हैं तुम्हारी बाईं तरफ़ (हज़रत) मीकाईल (अ.) और यह हैं (हज़रत) इस्राफ़ील (अ.) तीनों अपनी फौजों के साथ आ मौजूद हुए हैं। इब्लीस सुराक़ा बिन मालिक बिन जअशम मुदलिजी की सूरत में मुश्रिकों में था, उनके दिल बढ़ा रहा था, और उनमें पेशीनगोईयाँ कर रहा था कि बेफ़िक्र हो जाओ, आज तुम्हें कोई भी हरा नहीं सकता। लेकिन फ़रिश्तों के लश्कर देखते ही उसने तो चेहरा फेरा और यह कहता हुआ भागा कि मैं तुमसे बरी हूँ, मैं उन्हें देख रहा हूँ जो तुम्हारी नज़रों में नहीं आते। हारिस बिन हिशाम चूँकि उसे सुराक़ा ही समझे हुए था, इसलिए उसने उसका हाथ पकड़ लिया, उसने उसके सीने पर इस ज़ोर से घूँसा मारा कि यह तो चेहरे के बल गिर पड़ा और शैतान भाग गया, समन्द्र में कूद पड़ा और अपना कपड़ा ऊँचा करके कहने लगा, अल्लाह मैं तुझे तेरा वादा याद दिलाता हूँ जो तूने मुझसे किया है। तब्रानी में हज़रत रफ़ाआ बिन राफ़ेअ (रज़ि.) से भी इसी के क़रीब क़रीब मरवी है। हज़रत उर्वा बिन ज़ुबेर (रह.) कहते हैं कि जब क़ुरेशियों ने मक्का से निकलने का इरादा किया तो उन्हें बनीबक्र की जंग याद आ गई और ख़याल किया कि ऐसा न हो, हमारी अदमे मौजूदगी में यहाँ चढ़ दौड़ें। क़रीब था कि वह अपने इरादे से दस्तबरदार हो जाएँ, उसी वक़्त इब्लीस लईन सुराक़ा की सूरत में उनके पास आया, यह बनू किनाना के सरदारों में से था, कहने लगा, अपनी क़ौम का मैं ज़िम्मेदार हूँ, तुम उनसे बेखटके रहो और मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए पूरे तैयार होकर सब जाओ। ख़ुद भी उनके साथ चला, हर मंज़िल में यह उसे देखते रहे। सबको यक़ीन था कि सुराक़ा ख़ुद हमारे साथ हैं यहाँ तक कि लड़ाई शुरू हो गई। उस वक़्त यह मरदूद दुम दबाकर भागा। हारिस बिन हिशाम या उमेर बिन वहब ने उसे जाते देख लिया। उसने शोर मचा दिया कि सुराक़ा कहाँ भागा जा रहा है। शैतान उन्हें मौत और दोज़ख़ के मुँह में धकेलकर ख़ुद फ़रार हो गया। क्योंकि उसने रब्बानी लश्कर मुसलमानों की इम्दाद के लिए आते हुए देख लिया था, साफ़ कह दिया कि मैं तुमसे बरी हूँ, मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देखते। इस बात में था भी वह सच्चा।

फिर कहता है, मैं अल्लाह तआला के डर से डरता हूँ, अल्लाह तआला का अज़ाब सख़्त और भारी है। उसने जिब्रईल (अ.) को फ़रिश्तों के साथ उतरते हुए देख लिया था, समझ गया था कि उनके मुक़ाबले की मुझमें या मुश्रिकों में ताक़त नहीं। वह अपने इस क़ौल में तो झूठा था कि मैं ख़ौफ़े रब करता हूँ, यह तो सिर्फ़ उसकी ज़ुबानी बात थी, दरअसल वह अपने में ताक़त ही नहीं पाता था। यही उस दुश्मने रब की आदत है कि भड़काता और बहकाता है, हक़ के मुक़ाबले में ला खड़ा कर देता है फिर रूपोश (छिप) हो जाता है। कुरआन फ़र्माता है शैतान इंसान को कुफ़्र का हुक्म देता है फिर जब वह कुफ़्र कर चुकता है तो यह कहने लगता है कि मैं तुझसे बेज़ार हूँ, मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। और आयत में है कि जब काम निथर जाता है तो यह कहता है अल्लाह तआला के वादे सच्चे हैं मैं ख़ुद ही झूठा हूँ मेरे वादे भी सरासर झूठे, मेरा तुम पर कोई ज़ोर दावा तो था ही नहीं। तुमने तो आप मेरी आरज़ू पर गर्दन झुका दी, अब मुझे सरज़निश न करो ख़ुद अपने तईं मलामत करो, न मैं तुम्हें बचा सकूँ, न तुम मेरे काम आ सको, इससे पहले जो तुम मुझे शरीके रब बनाते थे मैं तो आज उसका भी इंकारी हूँ। यक़ीन मानो कि ज़ालिमों के लिए दुख की मार है। हज़रत अबू उसेद मालिक बिन रबीआ (रज़ि.) फ़र्माते हैं अगर मेरी आँखें आज भी होतीं तो मैं तुम्हें बद्र के मैदान में वह घाटी दिखाता जहाँ से फ़रिश्ते आते थे, बेशको-शुब्हा मुझे वह मालूम है उन्हें इब्लीस ने देख लिया और अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया कि मोमिनों को साबित क़दम रखो। यह लोगों के पास उनके जान पहचान के आदमियों की शक्ल में आते और कहते, ख़ुश हो जाओ, यह काफ़िर भी कोई चीज़ हैं, अल्लाह तआला की मदद तुम्हारे साथ है, बेख़ौफ़ी के साथ शेर का सा हमला कर दो। इब्लीस यह देखकर भाग खड़ा हुआ। अब तक वह सुराक़ा की शक्ल में कुफ़्फ़ार में मौजूद था। अबू जहल ने यह हाल देखकर अपने लश्करों में गश्त शुरू की, कह रहा था कि घबराओ नहीं उसके भाग खड़े होने से तंगदिल न हो जाओ। यह तो मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ से सीखा पढ़ा आया था कि तुम्हें एन मौक़े पर बुज़दिल कर दे, कोई घबराने की बात नहीं, लात व उज़्ज़ा की क़सम! आज इन मुसलमानों को उनके नबी (ﷺ) समेत गिरफ़्तार कर लेंगे, नामर्दी न करो, दिल बढ़ाओ और सख़्त हमला करो, देखो! ख़बरदार इन्हें क़त्ल न करना, ज़िन्दा पकड़ना ताकि उन्हें दिल खोलकर सज़ा दें। यह भी अपने ज़माने का फ़िरऔन ही था, उसने भी जादूगरों के ईमान लाने पर कहा था कि यह तो सिर्फ़ तुम्हारा एक मकर है कि यहाँ से तुम हमें निकाल दो। उसने यह भी कहा था कि जादूगरों यह मूसा तुम्हारा उस्ताद है हालाँकि सिर्फ़ यह उसका फ़रेब था। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "अरफ़ा के दिन जिस क़द्र इब्लीस हक़ीर व ज़लील रुस्वा और दरमांदा होता है उतना किसी और दिन नहीं देखा गया, क्योंकि वह देखता है कि अल्लाह तआला की आम मुआफ़ी और आम रहमत उतरती है, हर एक के गुनाह उमूमन माफ़ हो जाते हैं, हाँ! बद्र के दिन की उसकी ज़िल्लत और रुस्वाई की कुछ न पूछो जबकि उसने देखा कि फ़रिश्तों की फ़ौजें जिब्रईल (अ.) की मातहती में आ रही हैं। (मौता इमाम मालिक, किताबुल हज्ज, बाब जामिउल हज्ज : 245 व सनदुहू ज़ईफ़ुन) जब दोनों फ़ौजें सफ़बन्दी करके आमने सामने हो गईं तो अल्लाह तआला की क़ुदरत व हिक्मत से मुसलमान काफ़िरों को बहुत कम नज़र आने लगे और काफ़िर मुसलमानों की निगाहों में कम जचने लगे, इस पर काफ़िरों ने क़हक़हा लगाया कि देखो! मुसलमान कैसे मज़हबी दीवाने हैं, मुट्ठी भर आदमी हम एक हज़ार के लश्कर से टकरा रहे हैं, अभी एक ही दम में उनका चूरा हो जाएगा, पहले ही हमले में वह चोट खाएँगे कि सर सहलाते रह

जाएँ।" अल्लाह रब्बुल आलमीन फ़र्माता है कि उन्हें नहीं मालूम कि यह मुतवक्किलीन (अल्लाह पर भरोसा करने वालों) का गिरोह है, इनका भरोसा उस पर है जो ग़ल्बा का मालिक है जो हिक्मत का मालिक है। (अद्दुर्रुल मंसूर : 4/78) अल्लाह के दीन की सख़्ती मुसलमानों में महसूस करके उनकी ज़ुबान से यह कलिमा निकला कि उन्हें मज़हबी दीवानगी है। दुश्मने रब अबू जहल मलऊन टीले पर से झाँककर अल्लाह वालों की कमी और बेसरो सामानी देखकर गधे की तरह फूल गया और कहने लगा, लो पाला मार लिया है बस आज से अल्लाह तआला की इबादत करने वालों से ज़मीन ख़ाली नज़र आएगी, अभी हम इनमें से एक एक के दो दो करके रख देंगे। इब्ने जुरैज (रह.) कहते हैं कि मुसलमानों के दीन में तअना देने वाले मक्का के मुनाफ़िक़ थे। आमिर कहते हैं यह चंद लोग थे जो ज़बानी मुसलमान हुए थे लेकिन आज बद्र के मैदान में मुश्रिकों के साथ थे, उन्हें मुसलमानों की कमी और कमज़ोरी देखकर ताज्जुब मालूम हुआ और कहा कि यह लोग तो मज़हबी फ़रेब में पड़े हैं। (तब्री : 14/13) मुजाहिद (रह.) कहते हैं यह क़ुरैश की एक जमाअत थी क़ैस बिन वलीद बिन मुग़ीरह और अबू क़ैस बिन फ़ाका बिन मुग़ीरह और हारिस बिन ज़म्आ बिन अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब और अली बिन उमय्या बिन ख़ल्फ़ और आस बिन मुनब्बा बिन हज्जाज। यह क़ुरैश के साथ थे लेकिन थे यह शक में और इसी में रुके हुए थे, यहाँ मुसलमानों की हालत देखकर कहने लगे, यह लोग तो सिर्फ़ मज़हबी मज्नून हैं वरना मुट्ठी भर बेरसद और बेहथियार आदमी इतनी टिड्डीदल शौकत व शान वाली फ़ौजों के सामने क्यूँ खड़े हो जाते? हसन (रह.) फ़र्माते हैं कि यह लोग बद्र की लड़ाई में नहीं आए थे उनका जत्था देखकर उन्होंने यह कहा, जनाब बारी जल्ल शानुहू इर्शाद फ़र्माता है कि जो उस मालिकुल मुल्क पर भरोसा करे उसे इज़्ज़त वाला बना देता है। क्योंकि इज़्ज़त उसकी खादिमा है और ग़ल्बा उसका ग़ुलाम है, वह बुलंद जनाब है वह बड़ा ज़ी शान है, वह सच्चा सुल्तान है, वह हकीम है, उसके सब काम हिक्मत से होते हैं वह हर चीज़ को उसकी ठीक जगह रखता है। मुस्तहेक़ीने इम्दाद की वह मदद करता है और मुस्तहेक़ीने ज़िल्लत को वह ज़लील करता है वह सबको ख़ूब जानता है।

***

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ الْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَٰرَهُمْ وَذُوقُوا

عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

तर्जुमा : "काश! कि तू देखता जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की रूह क़ब्ज़ करते हैं, उनके चेहरे पर और कमरों पर मार मारते हैं, तुम जलने का अज़ाब चखो। (50) बसबब उन कामों के जो तुम्हारे हाथों ने पहले ही भेज रखा है, बेशक अल्लाह तआला अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता" (51)

कुफ़्फ़ार पर हालते नज़अ और फ़रिश्तों की सख़्ती (आयत 50, 51) : काश कि तू ऐ पैग़म्बर! देखता कि फ़रिश्ते किस बुरी तरह काफ़िरों की रूह क़ब्ज़ करते हैं वह उस वक़्त उनके चेहरों पर और कमरों पर मार मारते हैं और कहते हैं आग का अज़ाब अपनी बदआमालियों के बदले चखो। यह भी मतलब बयान किया गया है कि यह वाक़िया भी बद्र के दिन का है कि सामने से उन काफ़िरों के चेहरों पर तलवारें पड़ती थीं और जब भागते थे तो पीठ पर वार पड़ते थे। फ़रिश्ते उनका ख़ूब घुड़मता बना रहे थे। एक सहाबी (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से कहा, मैंने अबू जहल की पीठ पर कांटों के से निशान देखे हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! यह फ़रिश्तों की मार के निशान हैं।'' (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) हक़ यह है कि यह आयत बद्र के साथ ख़ास तो नहीं, अल्फ़ाज़ आम हैं, हर काफ़िर का यही हाल होता है। सूरह क़िताल में भी इस बात का बयान हुआ है और सूरह अन्आम की आयत (وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ) (6/अन्आम : 93) में भी इसका बयान तफ़्सीर में गुज़र चुका है। चूँकि यह नाफ़र्मान लोग थे, इनकी मौत के वक़्त फ़रिश्तों के हाथ उनकी जानिब बढ़े हुए होते हैं, वह उन्हें ख़ूब मार मारते हैं, उनकी रूहें अपनी स्याहकारियों की वजह से बदन मे छुपती फिरती हैं, जिन्हें फ़रिश्ते जबरन निकालते हैं और कह देते हैं कि तेरे लिए ग़ज़बे रब है और अज़ाबे इलाही है जैसे कि हज़रत बराअ (रज़ि.) की हदीस में है कि ''इस बुरी हालत में सकराते मौत के वक़्त जबकि काफ़िर के पास मलकुल मौत (अ.) आते हैं तो फ़र्माते हैं, ऐ ख़बीस रूह! चल गर्म हवाओं और गर्म पानी और गर्म साये की तरफ़। पस वह रूह बदन में छुपती फिरती है, आख़िर उसे जबरन घसीटा जाता है जिस तरह किसी ज़िन्दा शख़्स की खाल को उतारा जाए, उसी के साथ रगें और पुट्ठे भी आ जाते हैं। (अहमद : 4/287, 288; वहुव हदीसुन हसन) फ़रिश्ते उससे कहते हैं अब जलने का मज़ा चखो। यह तुम्हारी दुनियावी बदआमाली की सज़ा है। अल्लाह तआला ज़ालिम नहीं वह तो आदिल हाकिम है, बरकत व बुलंदी, ग़िना व पाकीज़गी वाला, बुज़ुर्ग और तारीफ़ों वाला है।'' चुनाँचे सहीह मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदुसी में है कि ''मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म हराम कर लिया है और तुम पर भी हराम कर दिया है पस आपस में कोई किसी पर ज़ुल्मो-सितम न करे। मेरे बन्दो! मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे किए हुए आमाल ही को घेरे हुए हूँ, भलाई पाकर मेरी तारीफ़ें करो और उसके सिवा कुछ और देखो तो अपनी ज़ात को ही मलामत करो।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577; तिर्मिज़ी : 2495; इब्ने माजा : 4257; अहमद : 5/160; अल्अदबुल मुफ़रद : 490; इब्ने हिब्बान : 619)

***

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ
بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾ كَدَأْبِ اٰلِ

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ
اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝

तर्जुमा : ''मिस्ल फ़िरऔनियों के हाल के और इनसे अगलों के कि उन्होंने अल्लाह तआला की आयतों से कुफ़्र किया, पस अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया, अल्लाह तआला यक़ीनन कुव्वत वाला और सख़्त अज़ाब देने वाला है। (52) यह इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि किसी क़ौम पर कोई नेअमत इन्आम फ़र्माकर फिर बदल दे जब तक कि वह ख़ुद अपनी उस हालत को न बदलें जो कि उनकी अपनी थी और यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है। (53) मिस्ल हालत फ़िरऔनियों के और उनके पहले के लोगों के कि उन्होंने अपने रब की बातें झुठलाईं पस उनके गुनाहों की वजह से हमने उन्हें बर्बाद किया और फ़िरऔनियों को डुबो दिया यह सारे सितमगार (ज़ालिम) थे।'' (54)

लोग अपने गुनाहों की वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार होते हैं (आयत 52-54) : इन काफ़िरों ने भी तेरे साथ वही किया जो इनसे पहले के काफ़िरों ने अपने नबियों के साथ किया था पस हमने भी उनके साथ वही किया जो हमने इनसे अगलों के साथ किया था जो इन ही जैसे थे। मस्लन फ़िरऔनी और उनसे पहले के लोग जिन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को न माना, जिसकी वजह से अल्लाह की पकड़ उन पर आ गई। तमाम कुव्वतें अल्लाह तआला ही की हैं और उसके अज़ाब भी बड़े सख़्त हैं, कोई नहीं जो उस पर ग़ालिब आ सके, कोई नहीं जो उससे भाग सके।

गुनाहों की वजह से नेअमतें भी छिन जाती हैं : अल्लाह तआला के अदलो इंसाफ़ का बयान हो रहा है कि वह अपनी दी हुई नेअमतें गुनाहों से पहले नहीं छीनता। जैसे एक और आयत में है अल्लाह तआला किसी क़ौम की हालत तब तक नहीं बदलता जब तक कि वह अपनी उन बातों को न बदल दें जो उनके दिलों में हैं। जब वह किसी क़ौम की बुराईयों की वजह से उन्हें बुराई पहुँचाना चाहता है फिर उसके इरादे को कोई लौटा नहीं सकता, न उसके पास कोई हिमायती खड़ा हो सकता है। (13/रअद : 11) तुम देख लो कि फ़िरऔनियों के और उन जैसे उनसे आगे वालों के साथ भी यही हुआ, उन्हें अल्लाह तआला ने अपनी नेअमतें दीं, वह स्याहकारियों में मुब्तला हो गए तो अल्लाह तआला ने अपने दिए हुए बाग़ात, चश्मे, खेतियाँ, ख़ज़ाने, महल्लात और नेअमतें जिनमें वह मदमस्त हो रहे थे सब छीन लीं। इस बारे में उन्होंने अपना बुरा ख़ुद किया, अल्लाह तआला ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था।

***

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾ الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ
ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾ فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ
فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ
إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

तर्जुमा : "तमाम जानदारों से बदतर अल्लाह तआला के नज़दीक वह हैं जो कुफ़्र करें फिर वह ईमान न लाएँ। (55) जिनसे तूने अहदो पैमान कर लिया फिर भी वह अपने अहदो पैमान को हर हर मर्तबा तोड़ देते हैं और बिलकुल परहेज़ नहीं करते। (56) पस जब कभी तू लड़ाई में उन पर ग़ालिब आ जाए तो उन्हें ऐसी मार मार कि उनके पिछले भी भाग खड़े हों, हो सकता है कि वह इब्रत हासिल कर लें। (57) अगर तुझे किसी क़ौम की ख़यानत का डर हो तो बराबरी की हालत में उनका अहदनामा तोड़ दे, अल्लाह तआला ख़यानत करने वालों को पसंद नहीं करता" (58)

ख़यानत और वादाख़िलाफ़ी क़ाबिले मज़म्मत है (आयत 55-58) : इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! अगर किसी से तुम्हारा अहदो पैमान हुआ हो और तुम्हें डर हो कि यह बदअहदी और वादाख़िलाफ़ी करेंगे तो तुम्हें इख़्तियार दिया जाता है कि बराबर की हालत में अहदनामा (समझोता) तोड़ दो और उन्हें ख़बर कर दो ताकि वह भी सुलह के ख़्याल में न रहें। कुछ दिन पहले ही से उन्हें ख़बर कर दो। अल्लाह तआला ख़यानत को नापसंद करता है, काफ़िरों से भी ख़यानत तुम न करो। मुस्नद अहमद में है कि अमीर मुआविया (रज़ि.) ने लश्करों को सरहदे रूम की तरफ़ बढ़ाना शुरु किया कि मुद्दते सुलह ख़त्म होते ही उन पर अचानक हमला कर दें तो एक शैख़ अपनी सवारी पर सवार यह कहते हुए आए कि अल्लाह तआला बहुत बड़ा है, अल्लाह तआला बहुत बड़ा है, वादा वफ़ाई करो, धोखा दुरुस्त नहीं, रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "जब किसी क़ौम से अहदो पैमान हो जाएँ तो न कोई गिरह खोलो, न बाँधो जब तक कि मुद्दते सुलह ख़त्म न हो जाए या उन्हें ख़बर देकर। अहदनामा चाक न हो जाए।" जब यह बात हज़रत मुआविया (रज़ि.) को पहुँची, आपने उसी वक़्त फ़ौज को वापसी का हुक्म दे दिया। यह शैख़ हज़रत अम्र बिन अब्सा (रज़ि.) थे। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल इमामि यकूनु बैनहू व बैनल अदुव्वि अहद फ़युसीरु नह्वा.... : 2759; व सनदुहू सहीह; तिर्मिज़ी : 158; अहमद : 4/111; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 8732; बैहक़ी : 9/231) हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने एक शहर के क़िले के पास पहुँचकर अपने साथियों से फ़र्माया, तुम मुझे बुलाओ, मैं तुम्हें बुलाऊँगा जैसे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उन्हें बुलाते हुए देखा है। फिर फ़र्माया

मैं भी उन्हीं में से एक शख़्स था पस मुझे अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ला ने इस्लाम की हिदायत की अगर तुम भी मुसलमान हो जाओ तो जो हमारा हक़ है वही तुम्हारा हक़ होगा और जो हम पर है तुम पर भी वही होगा और अगर तुम उसे नहीं मानते तो ज़िल्लत के साथ तुम्हें जिज़्या देना होगा, उसे भी क़बूल न करो तो हम तुम्हें अभी से ख़बर करते हैं जबकि हम तुम बराबर की हालत में हैं, अल्लाह तआला ख़यानत करने वालों को पसंद नहीं रखता। तीन दिन तक उन्हें इसी तरह दावत दी, आख़िर चौथे दिन सुबह ही सुबह हमला कर दिया। अल्लाह तआला ने फ़तह दी और मदद फ़र्माई। (अहमद : 5/440; तिर्मिज़ी, किताबुस्सियर, बाब मा जाअ फ़िद्दअवति क़ब्लल क़िताल : 1548; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबुल बख़्तरी सईद बिन फ़ीरोज़ का सलमान (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।)

***

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۚ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : "काफ़िर यह ख़याल न करें कि वह भाग निकले, यक़ीनन वह आजिज़ नहीं कर सकते। (59) तुम उनके मुक़ाबले के लिए अपनी ताक़त भर कुव्वत की तैयारी करो और घोड़ों के तैयार रखने की कि उससे तुम अल्लाह तआला के दुश्मनों को ख़ौफ़ज़दा रख सको और उनके सिवा औरों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह तआला उन्हें ख़ूब जानता है, जो कुछ भी अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा" (60)

आलाते हर्ब (जंगी हथियार) हर वक़्त तैयार रखने का हुक्म (आयत 59, 60) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि काफ़िर लोग यह न समझें कि वह हमसे भाग निकले, हम अब उनकी पकड़ पर क़ादिर नहीं। बल्कि वह हर वक़्त हमारे क़ब्ज़े क़ुदरत में हैं वह हमें हरा नहीं सकते। और आयत में है बुराईयाँ करने वाले हमसे आगे बढ़ नहीं सकते। (29/अन्कबूतः 4) फ़र्माता है काफ़िर हमें यहाँ हरा नहीं सकते, वहाँ उनका ठिकाना आग है जो बदतरीन जगह है। (24/नूरः 57) और फ़र्मान है काफ़िरों का शहरों में आना-जाना, चलना-फिरना कहीं तुझे धोखे में न डाल दे यह तो यूँ ही सी पूँजी है, इनका ठिकाना जहन्नम है जो बुरी जगह है। (3/आले इमरान :

196, 197) फिर मुसलमानों को हुक्म देता है कि अपनी ताक़त व इम्कान के मुताबिक़ इन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिए हर वक़्त मुस्तइद रहो जो कुव्वत ताक़त जो घोड़े लश्कर रख सकते हो, मौजूद रखो। मुस्नद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने कुव्वत की तफ़्सीर तीरअंदाज़ी से की और दो मर्तबा यही फ़र्माया (सहीह बुख़ारी, किताबुल इमारत, बाब फ़ज़्लुर्रमी वल हस्सु अलैहि व ज़म्मुम मन अलिमहू सुम्मा नसियहू : 1917; अबूदाऊद : 2514; इब्ने माजा : 2813; अहमद : 4/156, 157; मुस्नद अबी यअला : 1743) फ़र्माते हैं "तीरअंदाज़ी किया करो, सवारी किया करो और तीरअंदाज़ी, घुड़सवारी से बेहतर है।" (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िर्रमी : 2513; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1637; नसाई : 3608; इब्ने माजा : 2811; अहमद : 4/148; हाकिम : 2/95; इसे हाकिम ने सही कहा है और इमाम ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है।) फ़र्माते हैं "घोड़ों के पालने वाले तीन क़िस्म के हैं, एक तो अज्रो सवाब पाने वाले, एक न तो सवाब न अज़ाब, एक अज़ाब भुगतने वाले। जो जिहाद के इरादे से घोड़े पाले उसका घोड़ा तो चरे चुगे चले फिरे जो करे उस पर सवाब मिलता है यहाँ तक कि अगर वह अपनी रस्सी तोड़कर कहीं भाग जाए तो भी उसके निशानाते क़दम और उसकी लीद पर भी उसे नेकियाँ मिलती हैं किसी नहर पर गुज़रते हुए वह पानी पी ले भले मुजाहिद ने पिलाने का इरादा न भी किया हो ताहम उसे नेकियाँ मिलती हैं। पस यह घोड़ा तो उसके पालने वाले के लिए बड़े अज्रो सवाब का जरिया है और जिस शख़्स ने घोड़ा पाला कि वह दूसरों से बेपरवाह हो जाए फिर अल्लाह तआला का हक़ भी उसकी गर्दन और उसकी सवारी में न भूला, यह उसके लिए पर्दा है यानी न उसे अज्र न उसे गुनाह, तीसरा वह शख़्स जिसने फ़ख़्र व रिया के तौर पर पाला और मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए वह उसके ज़िम्मे वबाल है और उसकी गर्दन पर बोझ है।" आप (ﷺ) से पूछा गया कि अच्छा! गधों के बारे में क्या हुक्म है? फ़र्माया, उसके बारे में कोई आयत तो उतरी नहीं हाँ! यह जामेअ आम आयत मौजूद है कि जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर नेकी करेगा वह उसे देख लेगा और जो एक ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा वह उसे देख लेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबुल ख़ैल सलासा : 2860; सहीह मुस्लिम : 987; इब्ने हिब्बान : 4572; बैहक़ी : 4/119)

और हदीस में यह अल्फ़ाज़ भी हैं "घोड़े तीन तरह के हैं। रहमान के, शैतान के और इंसान के। उसमें है कि शैतानी घोड़े दो हैं जो घुड़दौड़ की शर्तें लगाने और जूएबाज़ी करने के लिए हों।" (अहमद : 1/395; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; व फ़िल बाबि अहादीसु उख़्रा मुग्नियतुन अन्हू; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 1877; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/260) अक्सर उलमा का क़ौल है कि तीरअंदाज़ी घुड़सवारी से अफ़ज़ल है, इमाम मालिक (रह.) इसके ख़िलाफ़ हैं लेकिन जुम्हूर का क़ौल क़वी है क्योंकि हदीस में भी आ चुका है। हज़रत मुआविया बिन ख़दीज, हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के पास गए, उस वक़्त वह अपने घोड़े की ख़िदमत कर रहे थे पूछा तुम्हें यह घोड़ा क्या काम आता है? फ़र्माया मेरा ख़्याल है कि इस जानवर की दुआ मेरे हक़ में क़बूल हो गई है। कहा जानवर और दुआ? फ़र्माया, हाँ! अल्लाह तआला की क़सम! घोड़ा हर सुबह दुआ करता है कि ऐ अल्लाह तआला! तूने मुझे अपने बन्दों में से एक के हवाले किया है तो तू मुझे उसकी तमाम अहल से और माल से और औलाद से ज़्यादा बनाकर उसके पास रख। (अहमद : 5/162) एक मरफ़ूअ हदीस में है कि "हर अरबी घोड़े को हर सुबह दो दुआएँ करने की इजाज़त मिलती है।" (नसाई, किताबुल ख़ैल, बाब दअवतुल ख़ैल : 3609; व सनदुहू सहीहुन;

अहमद : 5/170) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं, "घोड़े की पेशानियों में भलाई बंधी हुई है, घोड़ों वाले अल्लाह की मदद में हैं, उसे नेक निय्यती से जिहाद के इरादे से पालने वाला ऐसा है जैसे कोई शख़्स हर वक़्त हाथ बढ़ाकर ख़ैरात करता रहे।" (तब्रानी : 5623; व सनदुहू हसन) और भी हदीसें इस बारे में बहुत सी हैं। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में भलाई की तफ़्सील है कि अज्र और ग़नीमत। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल् जिहादु माज़ मअ़ल बिर्रि वल फ़ाजिर : 2852; सहीह मुस्लिम : 1873; तिर्मिज़ी : 1694; इब्ने माजा : 2305; अहमद : 4/375)

फ़र्माता है कि इससे तुम्हारे दुश्मन ख़ौफ़ज़दा और हैबतनाक रहेंगे, इन ज़ाहिरी मुक़ाबले के दुश्मनों के अ़लावा और दुश्मन भी हैं यानी बनू कुरैज़ा, फ़ारस, और महलों के शयातीन एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी है कि इससे मुराद जिन्नात हैं। (इसकी सनद में सईद बिन सिनान अबुल महदी हिम्सी है, इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसे मुंकरुल हदीस और नसाई ने मतरूक कहा है। (अल्मीज़ान : 2/143; रक़म : 3308) लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।) एक मुंकर हदीस में है "जिस घर में कोई आज़ाद घोड़ा हो वह घर कभी बदनसीब नहीं होगा।" (इसकी सनद में भी सईद बिन सिनान है। (अल्मीज़ान : 2/143; रक़म : 3208) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) लेकिन इस रिवायत की न तो सनद ठीक है, न यह सही है। और इससे मुराद मुनाफ़िक़त भी ली गई है और यही क़ौल ज़्यादा मुनासिब भी है। जैसे फ़र्माने रब है (وَ مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ) (9/तौबा : 101) तुम्हारे चारों तरफ़ देहाती और शहरी मुनाफ़िक़ हैं जिन्हें तुम नहीं जानते लेकिन हम उनसे ख़ूब वाक़िफ़ हैं। फिर इर्शाद है कि जिहाद में जो कुछ तुम ख़र्च करोगे उसका पूरा बदला पाओगे। अबूदाऊद में है कि "एक दिरहम का सवाब सात सौ गुना करके मिलेगा।" (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी तज़्ईफ़िज़्ज़िक्र फ़ी सबीलिल्लाहि अ़ज़्ज़ व जल्ल : 2498; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़िबान बिन फ़ाइद रावी ज़ईफ़ है।) जैसे कि आयत (مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ) (2/बक़रह : 261) में है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, पहले तो रसूलुल्लाह (ﷺ) सिर्फ़ मुसलमानों को ही ख़ैरात सदक़ात देने का हुक्म दिया करते थे। जब यह आयत (वमा तुन्फ़िक़ू मिन शैइय्युंवफ़्फ़ा इलैकुम) उतरी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "किसी भी दीन का हो जो भी सवाल करे उसके साथ सलूक करो।" (व सनदुहू हसन) यह रिवायत ग़रीब है और यह इब्ने अबी हातिम में है।

***

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۱﴾ وَاِنْ
يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ
﴿۶۲﴾ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۳﴾

तर्जुमा : "अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो तू भी सुलह की तरफ़ झुक जा और अल्लाह तआला पर भरोसा रख, यक़ीनन वह बहुत सुनने जानने वाला है। (61) अगर वह तुझसे दग़ाबाज़ी करना चाहेंगे तो अल्लाह तआला तुझे काफ़ी है उसी ने अपनी मदद से और मोमिनों से तेरी ताईद की है। (62) उनके दिलों में बाहमी उल्फ़त भी उसी ने डाली है। ज़मीन में जो कुछ है तू अगर सारा का सारा भी ख़र्च कर डालता तो भी उनके दिल आपस में न मिला सकता, यह तो अल्लाह तआला ही ने उनमें उल्फ़त डाल दी है वह इ़ज़्ज़तों, हिक्मतों वाला है।" (63)

काफ़िरों से बवक़्ते ज़रूरत सुलह का हुक्म (आयत 61-63) : फ़र्मान है कि जब किसी क़ौम की ख़यानत का डर हो तो बराबरी से आगाह करके अहदनामा (एग्रीमेन्ट) चाक कर डालो, लड़ाई की ख़बर कर दो और उसके बाद अगर वह लड़ाई पर आमदगी ज़ाहिर करें तो अल्लाह तआला पर भरोसा करके जिहाद शुरू कर दो और अगर वह फिर सुलह पर आमादा हो जाएँ तो तुम फिर सुलह व सफ़ाई कर लो। इसी आयत की तामील में हुदेबिया वाले दिन रसूले करीम (ﷺ) ने मुश्रिकीने मक्का से नौ साल की मुद्दत के लिए सुलह कर ली जो कई शर्तों पर तै हुई। हज़रत अ़ली (रज़ि.) से मंक़ूल है कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, "अन्क़रीब इख़्तिलाफ़ होगा या और अम्र पस अगर तुझसे हो सके तो सुलह ही कर लेना।" (अहमद : 1/90; व सनदुहू ज़ईफ़; इसकी सनद में अयास बिन अ़म्र अल्‌असलमी मज्हूल है।) मुजाहिद (रह.) कहते हैं यह बनू कुरैज़ा के बारे में उतरी है लेकिन इसमें ताम्मुल है सारा क़िस्सा बद्र की जंग का है। बहुत से बुज़ुर्गों का ख़याल है कि सूरह बरा'त (सूरह तौबा) की आयते सैफ़ (قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ) (9/तौबा : 29) से मंसूख़ है लेकिन इसमें भी नज़र है क्योंकि इस आयत में जिहाद का हुक्म ताक़त व इस्तिक़ामत पर है लेकिन दुश्मनों की ज़्यादती के वक़्त उनसे सुलह कर लेनी बिला शक व शुब्हा जाइज़ है। जैसे कि इस आयत में है और जैसे कि हुदेबिया की सुलह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की। पस कोई ख़िलाफ़ या कोई ख़ुसूसियत या मंसूख़ियत नहीं, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है अल्लाह तआला पर भरोसा रख, वही तुझे काफ़ी है, वही तेरा मददगार है। अगर यह धोखेबाज़ी करके कोई फ़रेब देना चाहते हैं और इस बीच में अपनी शानो शोकत और आलाते जंग बढ़ाना चाहते हैं तो तू बेफ़िक्र रह, अल्लाह तआला तेरा तरफ़दार है, वह तुझे काफ़ी है, उसके मुक़ाबले का कोई नहीं। फिर अपनी एक आला नेअ़मत का ज़िक्र करता है कि मुहाजिरीन व अंसार से सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल से तेरी ताईद की। उन्हें तुझ पर ईमान लाने तेरी इताअ़त करने की तौफ़ीक़ दी, तेरी मदद और तेरी नुसरत पर उन्हें आमादा किया, तू भले रूए ज़मीन के ख़ज़ाने ख़र्च कर डालता लेकिन उनमें वह उल्फ़त व मुहब्बत पैदा न कर सकता जो अल्लाह तआला ने आप कर दी। उनकी सदियों की पुरानी दुश्मनियाँ दूर कर दीं। औस, ख़ज़रज, अंसार के क़बीलों में जाहिलियत में आपस में ख़ूब तलवार चला करती थी। नूरे ईमान ने इस अदावत को मुहब्बत से बदल दिया। जैसे कुरआन का बयान है कि अल्लाह तआला के उस एहसान को याद करो कि तुम आपस में एक दूसरे के जानी दुश्मन थे, उसने तुम्हारे दिल मिला दिए और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें भाई भाई बना दिया, तुम जहन्नम के किनारे तक पहुँच गए थे लेकिन उसने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह तआला तुम्हारी हिदायत के लिए

इसी तरह अपनी बातें बयान करता है। (3/आले इमरान : 103) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुनैन की ग़नीमत की तक़सीम के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार से फ़र्माया कि ''ऐ अंसारियों! क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में पाकर अल्लाह तआला की इनायत से तुम्हें राहे रास्त नहीं दिखाई? क्या तुम फ़क़ीर न थे? अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरी वजह से अमीर कर दिया, तुम जुदा जुदा थे, अल्लाह तआला ने मेरी वजह से तुम्हारे दिल मिला दिए।'' आप (ﷺ) की हर हर बात पर अंसार कहते जाते थे कि बेशक अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) का इससे भी ज़्यादा एहसान हम पर है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़ फ़ी शव्वालि सनति सिमान : 4330; सहीह मुस्लिम : 1061) अल्ग़र्ज़ अपने इस इन्आम व इकराम को बयान करके अपनी इज़्ज़त व हिक्मत का इज़्हार किया कि वह बुलंद जनाब है उससे उम्मीद रखने वाला नाउम्मीद नहीं रहता, उस पर भरोसा करने वाला सरसब्ज़ रहता है वह अपने कामों में अपने हुक्मों में हकीम है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं क़राबतदारी के रिश्ते टूट जाते हैं और नेअमत की नाशुक्री की जाती है दिलों के मेल जैसी और कोई चीज़ देखी नहीं गई।

जनाब बारी सुब्हानहू व तआला का इर्शाद है कि अगर तू रूए ज़मीन के ख़ज़ाने भी ख़त्म कर देता तो तेरे बस में न था कि इनके दिल मिला दे। शायर कहता है तुझसे धोखा करने वाला तुझसे बेपरवाही बरतने वाला, तेरा रिश्तेदार नहीं, बल्कि तेरा हक़ीक़ी रिश्तेदार तो वह है जो तेरी आवाज़ पर लब्बैक कहे और तेरे दुश्मनों की सरकूबी में तेरा साथ दे। और शायर कहता है मैंने तो ख़ूब मिल जुलकर आज़माकर देख लिया कि क़राबतदारी से भी बढ़कर दिलों का मेल-जोल है। इमाम बैहक़ी (रह.) फ़र्माते हैं मैं नहीं जान सका कि यह सब क़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि) का ही है या उनसे नीचे के रावियों में से किसी का है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं उनकी यह मुहब्बत अल्लाह तआला की राह में थी तौहीद व सुन्नत की बिना पर थी। (हाकिम : 2/329; बिलफ़्ज़ि आख़र व सनदुहू सहीहुन) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, रिश्तेदारियाँ भी टूट जाती हैं, एहसान की भी नाशुक्री कर दी जाती है लेकिन जब अल्लाह तआला की जानिब से दिल मिला दिए जाते हैं, उन्हें कोई जुदा नहीं कर सकता, फिर आप (ﷺ) ने इसी जुम्ले की तिलावत फ़र्माई। (हाकिम : 2/329; बिलफ़्ज़ि आख़र व सनदुहू सहीहुन) अब्दह बिन अबी लुबाबा फ़र्माते हैं कि मेरी हज़रत मुजाहिद (रह.) से मुलाक़ात हुई, आपने मुझसे मुसाफ़ा करके फ़र्माया कि, जब दो शख़्स अल्लाह तआला की राह में मुहब्बत रखने वाले आपस में मिलते हैं, एक दूसरे से बख़न्दा पेशानी हाथ मिलाता है तो दोनों के गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते। मैंने कहा, यह काम तो बहुत आसान है। फ़र्माया, यह न कहो, यही मुहब्बत वह है जिसकी निस्बत जनाब बारी तआला फ़र्माता है कि अगर तू रूए ज़मीन के ख़ज़ाने ख़र्च कर दे तो भी यह तेरे बस की बात नहीं कि दिलों में मुहब्बत व उल्फ़त पैदा कर दे। उनके इस फ़र्मान से मुझे यक़ीन हो गया कि यह मुझसे बहुत ज़्यादा समझदार हैं। वलीद बिन अबी मुग़ीस (रह.) कहते हैं मैंने हज़रत मुजाहिद (रह.) से सुना कि जब दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ा करते हैं तो उनके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। मैंने पूछा सिर्फ़ मुसाफ़ा से ही? तो आप (रह.) ने फ़र्माया ''क्या तुमने अल्लाह तआला का यह फ़र्मान नहीं सुना?'' फिर आपने इसी जुम्ले की तिलावत की। तो हज़रत वलीद (रह.) ने फ़र्माया कि तुम मुझसे बहुत बड़े आलिम हो। उमेर बिन इस्हाक़

(रह.) कहते हैं सबसे पहली चीज़ जो लोगों में से उठ जाएगी वह उल्फ़त व मुहब्बत होगी। तबरानी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई से मिलकर उससे मुसाफ़ा करता है तो दोनों के गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त के ख़ुश्क पत्ते तेज़ हवा से। उनके सब गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं भले वह समुन्द्र की झाग जितने हों।" (तब्रानी : 6150; व सनदुहू हसन व अख़्रजल अल्बानी फ़ज़अ्अफहू जिद्दन उंज़ुरुज़् ज़ईफ़ : 2663; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/37)

***

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ
الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ
يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾
اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ
الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : "ऐ नबी (ﷺ)! तुझे अल्लाह तआला काफ़ी है और वह मोमिन जो तेरी पैरवी कर रहे हैं। (64) ऐ नबी (ﷺ)! ईमान वालों को जिहाद का शौक़ दिलाओ अगर तुममें से बीस भी स़ब्र करने वाले होंगे तो वह दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुममें से एक सौ होंगे तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे, इस वास्ते कि वह बेसमझ लोग हैं। (65) अच्छा अब अल्लाह तआला तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह ख़ूब जानता है कि तुममें नातवानी है पस अगर तुममें से एक सौ स़ब्र करने वाले होंगे तो वह दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुममें से एक हज़ार होंगे तो वह अल्लाह तआला के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, अल्लाह तआला स़ब्र करने वालों के साथ है।" (66)

जिहाद की तर्ग़ीब और स़हाबा (रज़ि.) का शौक़े जिहाद (आयत 64-66) : अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर (ﷺ) को और मुसलमानों को जिहाद की रग़बत दिला रहा है और उन्हें इत्मिनान दिला रहा है कि वह

उन्हें दुश्मनों पर ग़ालिब करेगा, भले वह साज़ो-सामान वाले और टिड्डीदल हों और भले मुसलमान बेसरो सामान और मुट्ठीभर हों। अल्लाह तआला काफ़ी है और जितने मुसलमान तेरे साथ होंगे, वही बस हैं। फिर अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि मोमिनों को जिहाद की रग़बत दिलाते रहो। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सफ़बन्दी के वक़्त मुक़ाबले के वक़्त बराबर फ़ौजों का दिल बढ़ाते रहते, बद्र के दिन फ़र्माया, "उठो! उस जन्नत को हासिल करो जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन की है।" हज़रत उमैर बिन हम्माम (रज़ि.) कहते हैं इतनी चौड़ाई? फ़र्माया हाँ! हाँ! इतनी ही उसने कहा, वाह! वाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह किस इरादे से कहा?" कहा इस उम्मीद पर कि अल्लाह तआला मुझे भी जन्नती कर दे।" आप (ﷺ) ने फ़र्माया "मेरी पेशीनगोई है कि तू जन्नती है।" वह उठते हैं, दुश्मन की तरफ़ बढ़ते हैं, अपनी तलवार का म्यान तोड़ देते हैं कुछ खजूरें जो पास हैं, खानी शुरू करते हैं, फिर फ़र्माते हैं इन्हें खाऊँ इतनी देर तक भी अब यहाँ ठहरना मुझ पर मुश्किल है। उन्हें हाथ से फेंक देते हैं और हमला करके शेर की तरह दुश्मन के बीच में घुस जाते हैं और जौहरे तलवार दिखाते हुए काफ़िरों की गर्दनें मारते हुए राहे अल्लाह में शहीद हो जाते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब सुबूतुल जन्नत लिश्शहीद : 1901) इब्नुल मुसय्यिब बिन सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं यह आयत हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम के वक़्त उतरी जबकि मुसलमानों की तादाद पूरी चालीस की हुई। लेकिन इसमें ज़रा नज़र है इसलिए कि यह आयत मदनी है और हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम का वाक़िया मक्का का है हब्शा की हिज्रत के बाद का और मदीना की हिज्रत से पहले का, वल्लाहु आलम!

एक मुसलमान कई काफ़िरों पर भारी है : फिर अल्लाह तबारक व तआला मोमिनों को बशारत देता है और हुक्म फ़र्माता है कि तुममें से बीस उन काफ़िरों में से दो सौ पर ग़ालिब आएँगे, एक सौ एक हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, ग़र्ज़ एक मुसलमान दस काफ़िरों के मुक़ाबले का है। फिर हुक्म तो मंसूख़ हो गया लेकिन बशारत बाक़ी है। जब यह हुक्म मुसलमानों पर गिराँ गुज़रा, एक दस के मुक़ाबले से ज़रा झिझका तो अल्लाह तआला ने तख़्फ़ीफ़ कर दी और फ़र्माया कि अब अल्लाह ने बोझ हल्का कर दिया, आख़िर तक। लेकिन जितनी तादाद कम हुई उतना ही सब्र नाक़िस हो गया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुल अन्फ़ाल बाब (अल्आना ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अन्कुम व अलिमा अन्ना फ़ीकुम ज़ुअफ़.....) : 4653) पहले हुक्म था कि बीस मुसलमान दो सौ काफ़िरों से पीछे न हटें, अब यह हुआ कि अपने से दुगुनी तादाद यानी सौ दो सौ से न भागें। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अन्फ़ाल बाब (या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल मोमिनीना अलल क़िताल) : 4652) पस गिरानी गुज़रने पर ज़ईफ़ी और नातवानी को क़बूल करके अल्लाह तआला ने छूट दे दी पस दुगुनी तादाद के काफ़िरों से तो लड़ाई में पीछे हटना लायक़ नहीं, ... उससे ज़्यादती के वक़्त टाल जाना जुर्म नहीं। ... ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह आयत हम सहाबियों के बारे में उतरी है, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने यह आयत पढ़कर फ़र्माया, पहला हुक्म उठ गया। (इब्ने मर्दवे व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 2/239; मुख़्तसरन व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

***

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖؗ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : "नबी के हाथ में क़ैदी नहीं चाहिएँ जब तक कि मुल्क में अच्छी तरह ख़ूँरेज़ी की जंग न हो जाए, तुम तो दुनिया के माल चाहते हो और अल्लाह तआला का इरादा आख़िरत का है, अल्लाह तआला है ज़ोरावर बाहिक्मत। (67) अगर पहले ही से अल्लाह तआला की तरफ़ से बात लिखी हुई न होती तो जो कुछ तुमने लिया है उस बारे में तुम्हें कोई बड़ी सज़ा होती। (68) पस जो कुछ हलाल और पाकीज़ा ग़नीमत तुमने हासिल की है ख़ूब खाओ पियो, अल्लाह तआला से डरते दबते रहो, यक़ीनन अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर्रहीम है।" (69)

बद्र के क़ैदी और जंगी असीरों का हुक्म (आयत 67-69) : मुस्नद अहमद में है कि बद्र के क़ैदियों के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) से मश्वरा लिया कि, "अल्लाह तआला ने इन्हें तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया है, बतलाओ, क्या इरादा है?" हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने खड़े होकर अर्ज़ किया कि इनकी गर्दनें उड़ा दी जाएँ। आप (ﷺ) ने उनसे चेहरा फेर लिया, फिर फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे क़ब्ज़े में इन्हें कर दिया है, यह कल तक तुम्हारे भाईबन्द ही थे।" फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने खड़े होकर अपना जवाब दोहराया। आप (ﷺ) ने फिर चेहरा फेर लिया और फिर वही फ़र्माया। इस बार हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारी राय में तो आप (ﷺ) इनकी ख़ता से दरगुज़र फ़र्मा लीजिए और इनसे फ़िदया लेकर इन्हें आज़ाद कीजिए। अब आप (ﷺ) के चेहरे से ग़म के आसार जाते रहे, आम मुआफ़ी दे दी और फ़िदया लेकर सबको आज़ाद कर दिया। इस पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला ने यह आयत उतारी। (अहमद : 3/243; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 6/87) इसी सूरत के शुरू में इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत गुज़र चुकी है। सहीह मुस्लिम में भी इसी जैसी हदीस है कि बद्र के दिन आप (ﷺ) ने पूछा कि "इन क़ैदियों के बारे में तुम क्या कहते हो?" हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह आपकी क़ौम के हैं, आप वाले हैं, इन्हें ज़िन्दा छोड़ दिया जाए, इनसे तौबा करा ली जाए, क्या अजब कि कल अल्लाह तआला की इन पर मेहरबानी हो जाए। लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह आपके झुठलाने वाले हैं, आपको निकालने वाले। हुक्म दीजिए

कि इनकी गर्दनें मारी जाएँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस मैदान में दरख़्त बहुत ज़्यादा हैं, आग लगवा दीजिए और इन्हें जला दीजिए। आप (ﷺ) ख़ामोश रहे, किसी को कोई जवाब नहीं दिया और उठकर तशरीफ़ ले गए। लोगों में भी उन तीनों बुज़ुर्गों की राय का साथ देने वाले हो गए। इतने में आप (ﷺ) फिर तशरीफ़ लाए और फ़र्माने लगे, कुछ दिल नर्म होते होते दूध से भी ज़्यादा नर्म हो जाते हैं और कुछ दिल सख़्त होते होते पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो जाते हैं। ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! तुम्हारी मिसाल तो (हज़रत) इब्राहीम (अ.) जैसी है कि अल्लाह तआला से अर्ज़ करते हैं कि मेरे ताबेदार तो मेरे ही हैं लेकिन मेरे मुख़ालिफ़ भी तेरी माफ़ी और बख़्शिश के मातहत हैं। (14/इब्राहीम : 36) और तुम्हारी मिसाल (हज़रत) ईसा (अ.) जैसी है जो कहेंगे कि अल्लाह! अगर तू इन्हें अज़ाब करे तो वह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो तू अज़ीज़ व हकीम है। (5/माइदा : 118) और ऐ उमर (रज़ि.)! तुम्हारी मिसाल (हज़रत) नूह (अ.) की सी है जिन्होंने अपनी क़ौम के लिए बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! ज़मीन पर किसी भी काफ़िर को बसता हुआ बाक़ी न रख। (71/नूह : 26) सुनो! तुम्हें इस वक़्त एहतियाज है उन क़ैदियों में से कोई भी बग़ैर फ़िदये के रिहा न हो, वरना इनकी गर्दनें मारी जाएँ। इस पर इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! सुहैल बिन बैज़ा को इससे मख़्सूस कर लिया जाए इसलिए कि वह इस्लाम का ज़िक्र किया करता था, इस पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ख़ामोश हो गए। वल्लाह! मैं सारा वक़्त ख़ौफ़ज़दा रहा कि कहीं मुझ पर आसमान से पत्थर न बरसाए जाएँ, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मगर सुहैल बिन बैज़ाअ'' इसी का ज़िक्र इस आयत में है, यह हदीस तिर्मिज़ी, मुस्नद वग़ैरह में है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल अन्फ़ाल : 3084; वहुव ज़ईफ़ुन; अहमद : 1/383; हाकिम : 3/21; मुस्नद अबी यअ़ला : 2/251) इन क़ैदियों में अब्बास (रज़ि.) भी थे, उन्हें एक अंसारी ने गिरफ़्तार किया था, अंसार का ख़्याल था कि इसे क़त्ल कर दें, आप (ﷺ) को भी यह हाल मालूम था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''रात को मुझे इस ख़्याल से नींद नहीं आई।'' इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अगर आप इजाज़त दें तो मैं अंसार के पास जाऊँ। आपने इजाज़त दे दी। हज़रत उमर (रज़ि.) अंसार के पास आए और कहा कि, अब्बास को छोड़ दो, उन्होंने जवाब दिया, वल्लाह! हम इसे न छोड़ेंगे। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया भले रसूलुल्लाह (ﷺ) की रज़ामन्दी इसी में हो? उन्होंने कहा, अगर यह बात है तो आप (रज़ि.) इन्हें ले जाईए, हमने बख़ुशी छोड़ा। अब हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि अब्बास मुसलमान हो जाओ, वल्लाह! तुम्हारे इस्लाम लाने की मुझे अपने बाप के इस्लाम लाने से ज़्यादा ख़ुशी होगी, इसलिए कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे इस्लाम लाने से ख़ुश हो जाएँगे। उन क़ैदियों के बारे में हुज़ूर (ﷺ) ने अबूबक्र (रज़ि.) से मश्वरा लिया तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह सब हमारे ही कुंबे क़बीले के लोग हैं, इन्हें छोड़ दीजिए। हज़रत उमर (रज़ि.) से जब मश्वरा लिया तो आप (रज़ि.) ने जवाब दिया कि इन सबको क़त्ल कर दीजिए। आख़िर आप (ﷺ) ने फ़िदया लेकर उन्हें आज़ाद कर दिया। (हाकिम : 2/329; मुख़्तसरन इमाम हाकिम और ज़हबी ने इसे सहीह कहा है। व सनदुहू हसन) हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं हज़रत जिब्रईल (अ.) आए और फ़र्माया कि अपने सहाबा (रज़ि.) को इख़्तियार दीजिए कि वह इन दो बातों में से एक पसंद कर लें, अगर चाहें तो

फ़िदया ले लें और अगर चाहें तो इन क़ैदियों को क़त्ल कर दें लेकिन यह याद रहे कि फ़िदया लेने की सूरत में अगले साल इनमें से इतने ही शहीद होंगे। सहाबा (रज़ि.) ने कहा, हमें यह मंज़ूर है और हम फ़िदया लेकर छोड़ेंगे। (तिर्मिज़ी, किताबुस्सियर, बाब मा जाअ फ़ी क़त्लिल उसारा वल् फ़िदाइ : 1567; व सनदुहू ज़ईफ़; दारे क़ुत्नी : 4/22; मुस्नद बज़्ज़ार : 2/176; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6862; इसकी सनद में हिशाम बिन हस्सान के सिमाअ़ की सराहत मौजूद नहीं।) लेकिन यह हदीस बहुत ही ग़रीब है। उन बद्री क़ैदियों के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "ऐ सहाबियों! अगर चाहो तो इन्हें क़त्ल करो और अगर चाहो उनसे ज़रे फ़िदया वसूल करके उन्हें रिहा कर दो लेकिन इस सूरत में इतने ही आदमी तुम्हारे शहीद किए जाएँगे।" पस उन सत्तर शहीदों में सबसे आख़िर हज़रत साबित बिन क़ैस (रज़ि.) थे। जो जंगे यमामा में शहीद हुए। यह रिवायत हज़रत उबैदह (रह.) से मुर्सलन भी मरवी है, वल्लाहु आलम!

अगर पहले ही से अल्लाह तआला की किताब में तुम्हारे लिए माले ग़नीमत हलाल न लिखा हुआ होता और जब तक हम बयान न कर दें तब तक अज़ाब नहीं किया करते, ऐसा दस्तूर हमारा न होता तो जो माल फ़िदया में तुमने लिया उस पर तुम्हें बड़ा भारी अज़ाब होता, इसी तरह पहले से अल्लाह तआला तै कर चुका है कि किसी बद्री सहाबी को वह अज़ाब नहीं करेगा, उनके लिए मग़्फ़िरत की तहरीर हो चुकी है। उम्मुल किताब में तुम्हारे लिए माले ग़नीमत की हिल्लत (हलाल होना) लिखी जा चुकी है। पस माले ग़नीमत तुम्हारे लिए हलाल तय्यब है, शौक़ से खाओ पियो और अपने काम में लाओ। पहले लिखा जा चुका था कि इस उम्मत के लिए यह हलाल है। यही क़ौल इमाम इब्ने जरीर (रह.) का पसंदीदा है और इसी की शहादत बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से मिलती है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, "मुझे पाँच चीज़ें दी गईं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं, महीने भर की दूरी तक मेरी मदद रौब से की गई, मेरे लिए सारी ज़मीन पाक और नमाज़ की जगह बना दी गई, मुझ पर ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझसे पहले किसी पर हलाल न थीं, मुझे सिफ़ारिश अता की गई, हर नबी ख़ास्सतन (सिर्फ़) अपनी क़ौम की तरफ़ ही भेजा जाता था लेकिन मैं आम लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब 1; पेज : 335; सहीह मुस्लिम : 521; अहमद : 3/304; इब्ने हिब्बान : 6398) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "किसी स्याह सर वाले इंसान के लिए मेरे सिवा ग़नीमत हलाल नहीं की गई।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल अन्फ़ाल : 3085; वहुव सहीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11209; इब्ने हिब्बान : 4809) पस सहाबा (रज़ि.) ने उन बद्री क़ैदियों से फ़िदया लिया। अबूदाऊद में है कि हर एक से चार सौ की रक़म बतौर तावाने जंग के वसूल की गई। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी फ़िदाइल असीर बिल मालि : 2591; व सनदुहू हसन; हाकिम : 3/140; बैहक़ी : 9/68) पस जुम्हूर उलमा-ए-किराम का मज़हब यह है कि इमामे वक़्त को इख़्तियार है कि अगर चाहे क़ैदी कुफ़्फ़ार को क़त्ल कर दे, जैसे कि बनू कुरैज़ा के क़ैदियों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने किया, अगर चाहे बदले का माल लेकर उन्हें छोड़ दे जैसे कि बद्री क़ैदियों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने किया या मुसलमान क़ैदियों के बदले छोड़ दे जैसे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने क़बीला सलमा बिन अक्वा की एक औरत और उसकी लड़की को मुश्रिकों के पास जो मुसलमान क़ैदी थे उनके बदले

में दिया। (इस क़िस्म का ज़िक्र सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब अत्तन्फ़ीलु व फ़िदाइल मुस्लिमीन बिल उसारा : 1755 में भी है।) और अगर चाहे उन्हें ग़ुलाम बनाकर रखे। यही मज़हब इमाम शाफ़ेई (रह.) का और उलमा-ए-किराम की एक जमाअत का है भले औरों ने उसमें इख़्तिलाफ़ भी किया है यहाँ उसके बस्त (विस्तार) की जगह नहीं।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧٠ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٧١

तर्जुमा : "ऐ नबी (ﷺ)! अपने हाथ तले के क़ैदियों से कह दो कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में नेक निय्यती देखेगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर तुम्हें देगा और फिर गुनाह भी माफ़ करेगा, अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। (70) और अगर वह तुझसे ख़यानत का ख़्याल करेंगे तो यह तो उससे पहले ख़ुद अल्लाह तआला की ख़यानत भी कर चुके हैं आख़िर उसने इन्हें गिरफ़्तार करा दिया, अल्लाह तआला इल्म व हिक्मत वाला है।" (71)

नेक निय्यती माल में ज़्यादती की वजह है (आयत 70, 71) : बद्र वाले दिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "मुझे यक़ीनन मालूम है कि कुछ बनू हाशिम वग़ैरह ज़बरदस्ती इस लड़ाई में निकाले गए हैं उन्हें हमसे लड़ाई करने की ख़्वाहिश न थी। पस बनू हाशिम को क़त्ल न करना। अबुल बख़्तरी बिन हिशाम को भी क़त्ल न किया जाए। अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब को भी क़त्ल न किया जाए, उसे भी बा दिले नाख़्वास्ता उन लोगों ने अपने साथ खींचा है।" इस पर अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा (रज़ि.) ने कहा कि हम अपने बाप दादों को अपने बच्चों को अपने भाईयों को और अपने कुंबे क़बीले वालों को क़त्ल करें और अब्बास को छोड़ दें? वल्लाह! अगर वह मुझे मिल गया तो मैं तो उसकी गर्दन मारूँगा। जब यह बात रसूलुल्लाह (ﷺ) को पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ अबू हफ़्स! क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचा के मुँह पर तलवार मारी जाएगी।" हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह पहला दिन था जिसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी कुन्नियत से मुझे याद फ़र्माया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं अबू हुज़ैफ़ा की गर्दन उड़ा दूँ, वल्लाह! वह तो मुनाफ़िक़ हो गया। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं, वल्लाह! मुझे अपने उस दिन के क़ौल का खटका आज तक है मैं उससे अब तक डर ही रहा हूँ, मैं तो उस दिन चैन पाऊँगा जिस दिन इसका कफ़्फ़ारा हो जाए और वह यह है कि अल्लाह की राह में शहीद हो जाऊँ। चुनाँचे जंगे यमामा में आप (रज़ि.) शहीद हो गए। (तब्क़ात इब्ने सअद : 4/10; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/140, 141 व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इब्ने

अब्बास (रज़ि.) कहते हैं जिस दिन बद्री क़ैदी गिरफ़्तार होकर आए, रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस रात नींद न आई। सहाबा किराम (रज़ि.) ने सबब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "मेरे चचा अब्बास की आह व बुका (गिरया व ज़ारी) की आवाज़ मेरे कानों में उन क़ैदियों में से आ रही है।" (तब्क़ात इब्ने सअद : 4/13; दलाइलुन् नबुव्वा : 3/141; इसका हुक्म भी पहली रिवायत का सा यानी ज़ईफ़ है।) सहाबा (रज़ि.) ने उस वक़्त उसकी क़ैद खोल दी तब आप (ﷺ) को नींद आई। उन्हें एक अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने गिरफ़्तार किया था, यह बहुत मालदार थे, उन्होंने सौ ओक़िया सोना अपने फ़िदये में दिया। कुछ अंसारियों ने नबी (ﷺ) से गुज़ारिश भी की कि हम चाहते हैं अपने चचा अब्बास को बग़ैर कोई ज़रे फ़िदया लिए आज़ाद कर दें लेकिन मसावत के अलमबरदार (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक चवन्नी भी कम न लेना, पूरा फ़िदया लो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब : 12 हदीस : 4018; इब्ने हिब्बान : 4794; बैहक़ी : 6/205) क़ुरैश ने फ़िदये की रक़म देकर अपने आदमियों को भेजा था, हर एक ने अपने अपने क़ैदी की मनमानी रक़म वसूल की। अब्बास (रज़ि.) ने कहा भी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो मुसलमान ही था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुझे तुम्हारे इस्लाम का इल्म है अगर यह तुम्हारा क़ौल सहीह है तो अल्लाह तआला तुम्हें इसका बदला देगा लेकिन चूँकि अहकाम ज़ाहिर पर हैं इसलिए आप अपना फ़िदया अदा कीजिए बल्कि अपने दोनों भतीजों का भी।"

नौफ़िल बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का और अक़ील बिन अबी तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब का और अपने हलीफ़ उत्बा बिन अम्र का जो बनू हारिस बिन फ़हर के क़बीले से है। उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे पास तो उतना माल नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "वह माल कहाँ गया जो तुमने और उम्मुल फ़ज़ल ने ज़मीन में दफ़नाया है और तुमने कहा है कि अगर मैं अपने इस सफ़र में काम आ गया तो यह माल बनू फ़ज़ल और अब्दुल्लाह और क़ुसुम का है।" अब तो हज़रत अब्बास (रज़ि.) की ज़ुबान से बेसाख़्ता निकल गया कि वल्लाह! मेरा ईमान है कि आप (ﷺ) अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं, उस दफ़ीने के वाक़िये को सिवाय मेरे और उम्मुल फ़ज़ल के कोई नहीं जानता। अच्छा, यूँ कीजिए मेरे पास से बीस औक़िया सोना आप (ﷺ) के लश्करियों को मिला है उसी को मेरा ज़रे फ़िदया समझ लिया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हर्गिज़ नहीं! वह माल तो हमें अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से दिलवा ही दिया।" चुनाँचे आप (रज़ि.) ने अपना और अपने दोनों भतीजों का और अपने हलीफ़ का फ़िदया अपने पास से अदा किया। इस बारे में अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत उतारी कि अगर तुममें भलाई है तो अल्लाह तआला उससे बेहतर बदला तुम्हें देगा। (तफ़्सीर क़ुर्तुबी : 8/52; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/142; हाकिम : 3/324; वहुव हसन; इमाम ज़हबी (रह.) ने इसे शर्ते मुस्लिम पर सही कहा है और इमाम ज़हबी (रह.) ने इसकी मुवाफ़िक़त की है।)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि अल्लाह तआला का यह फ़र्मान पूरा उतरा और उन बीस ओक़िया के बदले मुझे इस्लाम में अल्लाह तआला ने बीस गुलाम दिलवाए जो सबके सब मालदार थे। साथ ही मुझे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की मग़्फ़िरत की भी उम्मीद है। आप (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मेरे बारे में यह आयत नाज़िल हुई है, मैंने अपने इस्लाम की ख़बर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को दी और कहा कि मेरे बीस ओक़िया का बदला मुझे दिलवाइए जो मुझसे लिए गए हैं। आप (ﷺ) ने इंकार कर दिया। अल्हम्दु लिल्लाह! कि अल्लाह तबारक व तआला ने उसके बदले मुझे बीस गुलाम अता किए जो सब ताजिर हैं। आपने और

आपके साथियों ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से कहा था कि हम तो आपकी वह्नी पर ईमान ला चुके हैं, आप (ﷺ) की रिसालत के गवाह हैं, हम अपनी क़ौम में आप (ﷺ) की ख़ैरख़्वाही करते रहे, इस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह दिलों के ह्राल जानने वाला है जिसके दिल में नेकी होगी उससे जो लिया गया है उससे बहुत ज़्यादा दे दिया जाएगा और फिर अगला शिर्क भी माफ़ कर दिया जाएगा। फ़र्माते हैं कि सारी दुनिया मिल जाने से भी ज़्यादा ख़ुशी मुझे इस आयत के नाज़िल होने से हुई है। मुझसे जो लिया गया है वल्लाह! उससे सौ ह्रिस्से ज़्यादा मुझे मिला है। और मुझे उम्मीद है कि मेरे गुनाह भी धुल गए। मज़्कूर है कि जब बह्ररैन का ख़ज़ाना रसूले अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह्राज़िर किया गया वह अस्सी हज़ार का था, आप नमाज़े ज़ुहर के लिए वुज़ू कर चुके थे, पस आप (ﷺ) ने हर एक शिकायत करने वाले की और हर एक सवाल करने वाले की दादरसी की और नमाज़ से पहले ही सारा ख़ज़ाना अल्लाह की राह में लुटा दिया। ह्ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को हुक्म दिया कि लो इसमें से ले लो और गठरी बाँधकर ले जाओ। पस यह उनके लिए बहुत बेहतर था और अल्लाह तआ़ला गुनाह भी मुआ़फ़ करेगा। यह ख़ज़ाना अ़ला बिन ह्ज़रमी (रज़ि.) ने भेजा था, उतना माल हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास उससे पहले या उसके बाद कभी नहीं आया। सबका सब बोरियों पर फैला दिया गया और नमाज़ की अज़ान हुई। आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए और माल के पास खड़े हो गए, मस्जिद के नमाज़ी भी आ गए, फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हर एक को देना शुरु किया, न तो उस दिन नाप-तौल थी, न गिनती और शुमार था, पस जो आया ले गया और दिल खोलकर ले गया। ह्ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने तो अपनी चादर में गठरी बाँध ली लेकिन उठा न सके, तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़रा ऊँचा कर दीजिए। आप (ﷺ) को बेसाख़्ता हंसी आ गई, उतनी कि दाँत चमकने लगे। फ़र्माया कि "कुछ कम कर दो जितना उठे उतना ही लो।" चुनाँचे कुछ कम किया और उठाकर यह कहते हुए चले कि अल्ह्रम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने एक बात तो पूरी कर दी और दूसरा वादा भी इंशाअल्लाह पूरा होकर ही रहेगा। यह उससे बेहतर है जो हमसे लिया गया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बराबर उस माल को बांटते रहे यहाँ तक कि उसमें से एक पैसा भी न बचा, आप (ﷺ) ने अपने अहल को उसमें से एक फूटी कोड़ी भी नहीं दी। फिर नमाज के लिए आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाई। दूसरी ह्रदीस, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास बह्ररैन से उतना माल आया कि उससे पहले या उसके बाद उतना माल कभी नहीं आया। हुक्म दिया कि "मस्जिद में फैला दो" फिर नमाज़ के लिए आए किसी तरफ़ इल्तिफ़ात न किया, नमाज़ पढ़ाकर बैठ गए, फिर तो जिसे देखते देते, इतने में ह्ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) आ गए और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे भी दिलवाइए, मैंने अपना और अ़क़ील का फ़िदया दिया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अपने हाथ से ले लो।" उन्होंने चादर में गठरी बाँधी लेकिन वज़नी होने की वजह से उठा न सके तो कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! किसी को हुक्म दीजिए कि मेरे काँधे पर चढ़ा दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मैं तो किसी से नहीं कहता" कहा अच्छा आप (ﷺ) ही ज़रा उठवा दीजिए। आप (ﷺ) ने उसका भी इंकार कर दिया, अब तो बादिले नाख़्वास्ता उसमें से कुछ कम करना पड़ा फिर उठाकर कँधे पर रखकर चल दिए। उनके इस लालच की वजह से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की निगाहें जब तक यह आप (ﷺ) की निगाह से ओझल न हो गए उन्हीं पर रहीं। पस जब कुल माल बाँट चुके, एक कोड़ी भी बाक़ी न बची तब आप (ﷺ) वहाँ से उठे। इमाम बुख़ारी (रह्.) ने भी यह रिवायत कई जगह अपनी किताब स़ह्रीह्र बुख़ारी में तालीक़न जज़्म के स़ेग़े के साथ वारिद की है। (स़ह्रीह्र बुख़ारी,

किताबुस्सलात, बाब अल् क़िस्मतु व तअ्लीकुल क़िन्वे फ़िल मस्जिद : 421, 3049, 3165; बैहक़ी : 6/356) अगर यह लोग ख़यानत करनी चाहेंगे तो यह कोई नई बात नहीं, इससे पहले वह ख़ुद अल्लाह तआ़ला की ख़यानत भी कर चुके हैं। तो उनसे यह भी मुम्किन है कि अब जो ज़ाहिर करें उसके ख़िलाफ़ अपने दिल में रखें। इससे तू न घबरा, जैसे अल्लाह तआ़ला ने इस वक़्त इन्हें तेरे क़ाबू में कर दिया है ऐसे ही वह हमेशा क़ादिर है। अल्लाह तआ़ला का कोई काम इल्म व ह़िक्मत से ख़ाली नहीं। उनके और तमाम मख़्लूक़ के साथ जो कुछ वह करता है अपने अज़ली अब्दी पूरे इल्म और कामिल ह़िक्मत के साथ करता है। ह़ज़रत क़तादा (रह़.) कहते हैं, यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन सअ़द बिन अबी सर्ह़ कातिब के बारे में उतरी है जो मुर्तद होकर मुश्रिकों में जा मिला था।

अ़ता ख़ुरासानी का क़ौल है कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) और उनके साथियों के बारे में उतरी है जबकि उन्होंने कहा था कि हम आप (ﷺ) की ख़ैरख़्वाही करते रहेंगे। सुद्दी (रह़.) ने इसे आ़म और सबको शामिल कही है, यही ठीक भी है, वल्लाहु आ़लम!

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ
آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا
لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

तर्जुमा : "जो लोग ईमान लाए और हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने उनको जगह दी और मदद की यह सब आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, और जो ईमान लाए तो हैं लेकिन हिज्रत नहीं की, तुम्हारे लिए उनकी कुछ भी रफ़ाक़त नहीं जब तक कि वह हिज्रत न करें, हाँ! अगर वह तुमसे दीन के बारे में मदद त़लब करें तो तुम पर मदद करना ज़रूरी है सिवाए उन लोगों के कि तुममें और उनमें अ़हदो-पैमान (समझोता) है, तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह तआ़ला ख़ूब देख रहा है।" (72)

मुहाजिरीन और अंसार की फ़ज़ीलत का बयान (आयत 72) : मुसलमानों की क़िस्में बयान हो रही हैं, एक तो मुहाजिर जिन्होंने अल्लाह के नाम पर देश छोड़ दिया, अपने घर बार माल तिजारत कुंबा क़बीला दोस्त अह़बाब छोड़ दिए, अल्लाह के दीन पर क़ायम रहने के लिए न जान को जान समझा, न माल को माल। दूसरे

अंसार मदनी जिन्होंने इन मुहाजिरों को अपने यहाँ ठहराया अपने मालों में उनका हिस्सा लगा दिया, उनके साथ मिलकर उनके दुश्मनों से लड़ाई की। यह सब आपस में एक ही हैं। इसीलिए रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनमें भाईचारा करा दिया, एक अंसारी एक मुहाजिर को भाई भाई बना दिया। यह भाईबंदी, क़राबतदारी से भी मुक़द्दम थी, एक दूसरे का वारिस बनता था, आख़िर में यह मंसूख़ हो गई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़राइज़, बाब ज़विल अरहाम : 4747) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''मुहाजिरीन और अंसार सब आपस में एक दूसरे के वली वारिस हैं और फ़तहे मक्का के आज़ादकर्दा मुसलमान लोग कुरैशी और आज़ादशुदा सक़ीफ़ आपस में एक दूसरे के वाली हैं क़यामत तक।'' (अहमद : 4/363; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/15) और रिवायत में है ''दुनिया और आख़िरत में।'' ((मुस्नद अबी यअ़ला : 5033; व सनदुहू ज़ईफ़; इसकी सनद में इक्रिमा बिन इब्राहीम अज़दी है जिसे नसाई ने ज़ईफ़ और अबूदाऊद ने लैस बि शैइन जबकि अ़क़ीली ने मुज़्तरबुल हिफ़्ज़ कहा है। (अल्मीज़ान : 6/89; रक़्म : 5707) मुहाजिर और अंसार की तारीफ़ में और भी बहुत सी आयतें हैं। फ़र्मान है (وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ) (9/तौबा : 100) पहले पहल सब्क़त करने वाले मुहाजिरीन और अंसार और उनके एहसान के ताबेदार वह हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला ख़ुश है और वह उससे ख़ुश हैं, उसने उनके लिए जन्नतें तैयार कर रखी हैं जिनके दरख़्तों के नीचे चश्मे बह रहे हैं। और आयत में है (لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ) (9/तौबा : 117) नबी अकरम (ﷺ) पर और उन मुहाजिरीन व अंसार पर अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत की तवज्जह फ़र्माई जिन्होंने सख़्ती के वक़्त भी आप (ﷺ) की इत्तिबाअ़ न छोड़ी।

और आयत में है (لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ) (59/हश्र : 8) उन मुहाजिर मुहताजों के लिए है जो अपने मालों से और अपने शहरों से निकाल दिए गए जो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी की जुस्तजू में हैं जो अल्लाह तआ़ला की और रसूलुल्लाह (ﷺ) की मदद में लगे हुए हैं यही सच्चे लोग हैं। और जिन्होंने उनको जगह दी, उनसे मुहब्बत रखी, उन्हें खुले दिल से दिया बल्कि अपनी ज़रूरत पर उनकी हाजत को मुक़द्दम रखा। यानी जो हिज्रत की फ़ज़ीलत अल्लाह तआ़ला ने मुहाजिरीन को दी है उस पर वह उनका हसद नहीं करते। इन आयतों से मालूम होता है कि मुहाजिर अंसार पर मुक़द्दम हैं। उ़लमा का इसमें इत्तिफ़ाक़ है। मुस्नद बज़्ज़ार में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को हिज्रत और नुसरत में इख़्तियार दिया तो आप (रज़ि.) ने हिज्रत को पसंद फ़र्माया। (मुस्नद बज़्ज़ार : 2718; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 2/481; तब्रानी : 3010)

फिर फ़र्माता है कि जो ईमान लाए लेकिन उन्होंने अपने वतन को नहीं छोड़ा, उन्हें उनकी रफ़ाक़त हासिल नहीं। यह मोमिनों की तीसरी क़िस्म है जो अपनी जगह ठहरे हुए थे, उनका माले ग़नीमत में कोई हिस्सा न था, न ख़ुमुस (पांचवा हिस्सा) में, हाँ किसी लड़ाई में शिर्कत करें तो और बात है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जब किसी को किसी फ़ौजी दस्ते का सिपह सालार बनाकर भेजते तो उसे नसीहत करते कि ''देखो अपने दिल में अल्लाह तआ़ला का डर रखना, मुसलमानों के साथ हमेशा ख़ैरख़्वाहाना बर्ताव करना। जाओ अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करो, अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करने वालों से लड़ो, अपने दुश्मन मुश्रिकों के सामने तीन बातें पेश करो, उनमें से जो भी वह मंज़ूर कर लें उन्हें इख़्तियार है। उनसे कहो कि इस्लाम क़बूल करें अगर मान लें तो फिर उनसे रुक जाओ और उनका

इस्लाम क़बूल कर लो और उन्हें कहो कि कुफ़्रिस्तान को छोड़ दें, मुहाजिरीन के शहरों को चले जाएँ, तो जो हक़ मुहाजिरीन के हैं उनके भी क़ायम हो जाएँगे और जो मुहाजिरों पर है उन पर भी होगा। वरना यह देहात के और मुसलमानों की तरह होंगे, ईमान के अहकाम उन पर जारी रहेंगे फ़ै और ग़नीमत के माल में इनका कोई हिस्सा न होगा, हाँ! यह और बात है कि वह किसी फ़ौज में शिर्कत करें और कोई मअरका सर करें। यह न मानें तो इन्हें कहो कि जिज़्या दें। अगर यह क़बूल कर लें तो तुम लड़ाई से रुक जाओ और उनसे जिज़्या ले लिया करो। अगर इन दोनों बातों का इंकार करें तो अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर अल्लाह तआला से मदद तलब करके इनसे जिहाद करो। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब तामीरुल इमाम अल्उम्रा अलल बऊस? वसिय्यतहू इय्याहुम : 1731; अबूदाऊद : 2612; बैहक़ी : 9/49; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 8764; इब्ने माजा : 2858; अहमद : 5/352; इब्ने हिब्बान : 4739; अबू अवाना : 6495; इब्ने अबी शैबा : 6/475) जो देहाती मुसलमान वहीं मुक़ीम हैं हिज्रत नहीं की यह अगर किसी वक़्त तुमसे मदद की ख़्वाहिश करें, दुश्मनाने दीन के मुक़ाबले पर तुम्हें बुलाएँ तो उनकी मदद तुम पर वाजिब है लेकिन अगर मुक़ाबले पर कोई ऐसा क़बीला हो कि तुममें और उनमें सुलह का मुआहिदा है तो ख़बरदार! तुम अहदशिकनी (वादाख़िलाफ़ी न करना। क़समें न तोड़ना।''

***

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾

तर्जुमा : ''काफ़िर आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, अगर तुमने ऐसा न किया तो मुल्क में फ़ित्ना होगा और ज़बरदस्त फ़साद हो जाएगा।'' (73)

मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों का दोस्त नहीं होता (आयत 73) : ऊपर मुसलमानों की कारसाज़ी और रफ़ाक़त व विलायत का ज़िक्र हुआ। अब यहाँ काफ़िरों की निस्बत भी बयान करके काफ़िरों और मोमिनों में से दोस्ताना काट दिया। मुस्तदरक हाकिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''वह मुख़्तलिफ़ मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते, न मुसलमान काफ़िर का वारिस और न काफ़िर मुसलमान का वारिस।'' फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। (हाकिम : 2/240; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) बुख़ारी मुस्लिम में भी है ''मुसलमान काफ़िर का और काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं बन सकता।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़राइज़, बाब ला यरिसुल मुस्लिमल् काफ़िर वलल काफ़िरल मुस्लिम...) : 6764; सहीह मुस्लिम : 1614; अबूदाऊद : 2909; तिर्मिज़ी : 2107; सुननुल कुब्रा : 6372; अहमद : 5/200; इब्ने हिब्बान : 6033; बैहक़ी : 6/317) सुनन वग़ैरह में है ''दो मुख़्तलिफ़ मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं।'' (अबूदाऊद, किताबुल फ़राइज़, बाब हल यरिसुल मुस्लिमुल काफ़िर : 2911; व सनदुहू हसन;

इब्ने माजा : 2731; अहमद : 2/178; तिर्मिज़ी : 2108; अन जाबिर (रज़ि.), इब्नल जारूद : 967; इब्ने हिब्बान : 5996; हाकिम : 2/262; मज्मउज़्ज़वाइद : 6/293; सुननुल कुब्रा : 6381; दारे क़ुत्नी : 457) इसे इमाम तिर्मिज़ी (रह.) हसन कहते हैं। इब्ने जरीर में है कि एक नए मुसलमान से आप (ﷺ) ने अहद लिया कि "नमाज़ क़ायम रखना, ज़कात देना, बैतुल्लाह का हज्ज करना, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना और जब और जहाँ शिर्क की आग भड़क जाए तो अपने आपको उनका मुक़ाबिल और उनसे बरसरे जंग समझना।" यह रिवायत मुर्सल है। और मुफ़स्सल रिवायत में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैं हर उस मुसलमान से बरिउज़्ज़मा हूँ जो मुश्रिकीन में ठहरा रहे। क्या वह दोनों जानिब लगी हुई आग नहीं देखता।" (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब अन्नही अन क़त्ले मनिअ् तसमा बिस्सुजूद :2645; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू मुआविया ज़रीर मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं। तिर्मिज़ी : 1604; नसाई : 4784) अबूदाऊद में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो मुश्रिकों से ख़ुला मिला रखे और उनमें ठहरा रहे वह उन्हीं जैसा है।" (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी इक़ामति बि अर्ज़िश्शिर्क : 2787; व सनदुहू ज़ईफ़; इसकी सनद में जाफ़र बिन सअद ज़ईफ़ और ख़ुबैब बिन सुलेमान मज्हूल रावी है। (अत्तक़रीब : 1/130, 222) इब्ने मर्दवे में है, अल्लाह के रसूल (ﷺ) फ़र्माते हैं "जब तुम्हारे पास वह आए जिसके दीन और अख़्लाक़ से तुम रज़ामंद हो तो उसके निकाह में दे दो अगर तुमने ऐसा न किया तो मुल्क में ज़बरदस्त फ़ित्ना फ़साद बरपा होगा।" लोगों ने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! भले उसमें कुछ हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "जब तुम्हारे पास किसी ऐसे शख़्स का मांगा आए जिसके दीन और अख़्लाक़ से तुम ख़ुश हो तो उसका निकाह कर दो।" तीन बार यही फ़र्माया। (तिर्मिज़ी, किताबुन्निकाह, बाब मा जाअ फ़ीमन तरज़ौना दीनहू फ़ज़व्वजूहु : 1084; मुख़्तसरन; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अज्लान मुदल्लस के सिमाअ की सराहत नहीं नीज़ अब्दुल हमीद बिन सुलेमान ज़ईफ़ रावी है।) आयत के इन अल्फ़ाज़ का मतलब यह है कि अगर तुमने मुश्रिकों से यकसूई न की और ईमान वालों से ही दोस्तियाँ न रखीं तो एक फ़ित्ना बरपा हो जाएगा, यह इख़्तिलात बुरे नतीजे दिखाएगा, लोगों में ज़बरदस्त फ़साद बरपा हो जाएगा।

***

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَالَّذِيۡنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوۡۤا اُولٰۤـئِكَ
هُمُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ حَقًّا ‌ؕ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ كَرِيۡمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡۢ بَعۡدُ
وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا مَعَكُمۡ فَاُولٰۤـئِكَ مِنۡكُمۡ‌ ؕ وَاُولُوا الۡاَرۡحَامِ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلٰى
بِبَعۡضٍ فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۷۵﴾

तर्जुमा: "जो लोग ईमान लाए और हिज्रत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन्होंने जगह दी और मदद पहुँचाई, यही लोग सच्चे मोमिन हैं, इनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।(74) और जो लोग इसके बाद ईमान लाए और हिज्रत की और तुम्हारे साथ होकर जिहाद किया पस यह लोग भी तुममें से ही हैं और रिश्ते नाते वाले उनमें से कुछ कुछ से ज़्यादा नज़दीक हैं अल्लाह तआला के हुक्म में, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है।"(75)

मोमिन बन्दे और क़यामत (आयत 74, 75) : मोमिनों का दुनियावी हुक्म ज़िक्र करके अब आख़िरत का हाल बयान कर रहा है, उनके ईमान की सच्चाई ज़ाहिर कर रहा है जैसे कि इस सूरत के शुरू में बयान हुआ है। उन्हें बख़्शिश मिलेगी, उनके गुनाह माफ़ हो जाएँगे, उन्हें इज़्ज़त की पाक रोज़ी मिलेगी जो बरकत वाली हमेशगी वाली तय्यब व ताहिर होगी, क़िस्म-क़िस्म की लज़ीज़ उम्दा और न ख़त्म होने वाली होगी। उनकी इत्तिबाअ करने वाले ईमान व अमले सालेह में उनका साथ देने वाले, आख़िरत में भी दर्जों में उनके साथ ही होंगे जैसाकि (وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ) (9/तौबा : 100) और (وَ الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ) (59/हश्र : 10) में फ़र्माता है। मुत्तफ़क़ अलैहि बल्कि लगातार हदीस में है कि "इंसान उसके साथ होगा जिससे दुनिया में मुहब्बत रखता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अलामतुल हुब्बि फ़िल्लाहि....: 6168; सहीह मुस्लिम : 2640) दूसरी हदीस में है "जो किसी क़ौम से मुहब्बत रखे वह उनमें से ही है।" एक रिवायत में है कि "उसका हश्र भी उन्हीं के साथ होगा।" (अल्मुअजमुस्सग़ीर : 874) मुस्नद अहमद की हदीस गुज़र चुकी है कि "मुहाजिर व अंसार आपस में एक दूसरे के वली हैं, फ़तहे मक्का के बाद के मुसलमान क़ुरैशी और सक़ीफ़ के आज़ादशुदा आपस में एक हैं, क़यामत तक यह सब आपस में वली हैं।" (इसका हुक्म सूरतुल अन्फ़ाल आयत नम्बर 72 के तहत गुज़र चुका है।) फिर ऊलुल अरहाम का बयान हुआ यहाँ इनसे मुराद वही क़राबतदार नहीं जो उलमा फ़राइज़ के नज़दीक इस नाम से याद किए जाते हैं यानी जिनका कोई हिस्सा मुक़र्रर न हो और जो अस्बा भी न हों, जैसे ख़ाला मामू, फूफी, नवासे, नवासियाँ, भांजे, भांजियाँ वग़ैरह। कुछ का यही ख़याल है, वह आयत से हुज्जत पकड़ते हैं और इसे इस बारे में सराहत वाली बतलाते हैं। यह नहीं बल्कि हक़ यह है कि यह आयत आम है तमाम क़राबतदारों को शामिल है। जैसे कि इब्ने अब्बास (रज़ि.), मुजाहिद, इक्रिमा, हसन, क़तादा (रह.) वग़ैरह कहते हैं कि यह नासिख़ है हलीफ़ों के बाहम वारिस बनने की और भाईचारे पर वारिस बनने की जो पहले दस्तूर था पस यह उलमा-ए-फ़राइज़ के ज़विल अरहाम को शामिल होगी ख़ास नाम के साथ। और जो उन्हें वारिस नहीं बनाते उनके पास कई दलीलें हैं। सबसे क़वी यह हदीस है कि "अल्लाह तआला ने हर हक़दार को उसका हक़ दिलवा दिया पस किसी वारिस के लिए कोई वसिय्यत नहीं।" (अबूदाऊद, किताबुल वसाया, बाब मा जाअ फ़िल वसिय्यति लिल वारिसि : 2870; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 2120; इब्ने माजा : 2813; मुस्नद तयालिसी : 1127; अहमद : 5/267; बैहक़ी : 6/264) वह कहते हैं कि अगर यह भी हक़दार होते तो इनके भी हिस्से मुक़र्रर हो जाते जब यह नहीं तो वह भी नहीं, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरतुल अन्फ़ाल की तफ़्सीर मुकम्मल हुई

अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन है, वही हमारे लिए काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है।

सूरह तौबा

سورہ توبہ

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह तौबा - 09

आयात : 129, मदनी, पैराग्राफ : 5

ज़मान - ए - नुज़ूल : सूरह तौबा का दूसरा हिस्सा ग़ज़्व-ए-तबूक की तैयारी के सिलसिले में रजब 9 हिजरी से पहले नाजिल हुवा। सूरह तौबा का तीसरा हिस्सा ग़ज़्व-ए-तबूक से वापसी पर मुतफ़र्रिक अवक़ात में नाज़िल हुवा। और सूरह तौबा का पहला हिस्सा सब से आख़री में ज़ुलक़अ़दा 9 हिजरी में, हज से पहले नाज़िल हुवा।

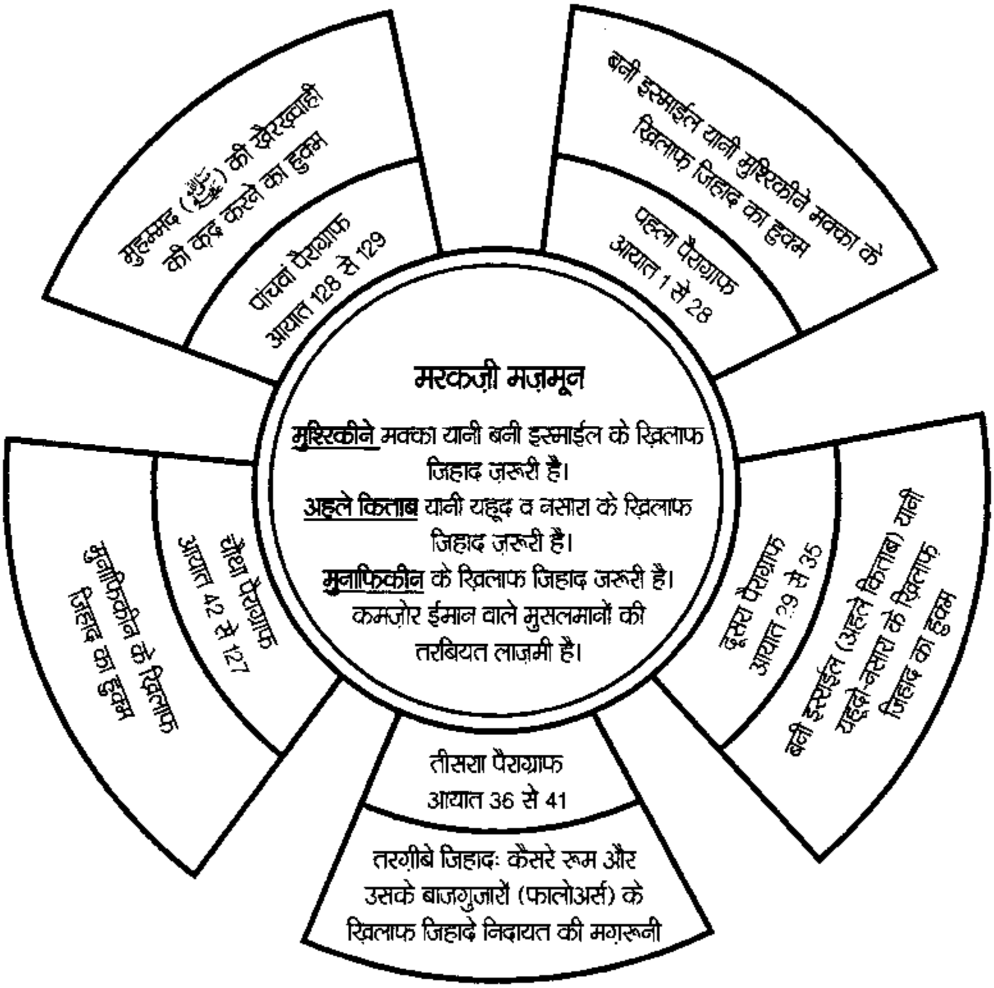

सूरह तौबा

ये सूरत मदनी है। इसमें 129 आयतें हैं और 16 रुकूअ हैं। तर्तीब के हिसाब से ये क़ुरआन की नवीं सूरत है। मगर नुज़ूल के ऐतबार से ये कुरआन की चंद आख़िरी सूरतों में से है। कुछ मुफ़स्सिरीन के नज़दीक सबसे आख़िरी सूरत है। ये सारी सूरत या इसका ज़्यादातर हिस्सा 9 हिजरी में नाज़िल हुआ। ये कुरआन हकीम की वाहिद सूरत है जिसकी शुरूआत में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखी जाती। इसकी वजूहात मुफ़स्सिरीन ने बयान की हैं लेकिन इमाम राज़ी (रह.) की राय सबसे बेहतर है कि नबी (ﷺ) ने इसकी शुरू में चूंकि बिस्मिल्लाह नहीं लिखवाई इसलिये सहाबा किराम ने भी इसे लिखना पसंद नहीं किया।

इस सूरत की पहली 28 आयतों में अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से मुश्रिकीन से बराअत का ऐलान किया है। यानी मुआहिदों से बरीउज़्ज़िम्मा होने का ऐलान। 9 हिजरी में ग़ज़्वए-तबूक के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू बकर (रज़ि.) को मुसलमान आजेमीने हज की जमाअत का अमीरे हज मुक़र्रर करके मक्का की तरफ़ रवाना किया। बाद में जब ये आयतें नाज़िल हुईं तो आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) बज़ाते ख़ुद हज के मौक़े पर मज्मअे के सामने पढ़कर सुनाई। लिहाज़ा हज़रत अली (रज़ि.) ने हज के इज्तिमाअ में ये आयतें पढ़कर सुनाईं। मज्मअे मुसलमान और मुश्रिकीन दोनों शरीक थे क्योंकि मुश्रिकीन को हज करने से अभी मना नहीं किया गया था। इन आयतों में मुश्रिकीन के उनके मुसलसल दिलदहकुन क़ैदों की वजह से पुराने मुआहिदा को तोड़ने का ऐलान है। मुश्रिकों को ख़बरदार किया गया कि अब हमारे और तुम्हारे दरम्यान कोई मुआहिदा नहीं। तुम्हें चार महीनों की मुहलत दी जाती है कि या तो मुसलमान होकर इस्लामी बिरादरी में शामिल हो जाओ या हरम से निकल जाओ। वरना तुम पर हमला करके नेस्त नाबूद कर दिया जायेगा। इस साल के बाद तुम्हें हज और उमरह के लिये मस्जिदे हराम में आने की इजाज़त नहीं होगी और न तुम इसके क़रीब किसी और मौक़े पर आ सकोगे। फिर भी मुआहिदों को जिन मुश्रिकों ने पाबन्दी की थी और उसकी किसी शक़ की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की थी उनकी मुद्दत ख़त्म होने तक क़ायम रखने के लिये मोमिनों को ताकीद की गई। आयत 29 से 35 का ताल्लुक़ अहले किताब से है। उनकी इस्लाम के बारे में दुश्मनी वाला तरीक़ा और रविश पर तन्क़ीद की गई है और उनकी बदकिरदारी और बदअहदी का ज़िक्र है। उनसे लड़ने और जिज़्या नाफ़िज़ करने की तल्क़ीन है। आयत 25 से 27 में ग़ज़्जए हुनैन का ज़िक्र है और आयत नम्बर 38 से आख़िर तक की आयतों का ताल्लुक़ ग़ज़्वए तबूक से है। इन आयतों में मुसलमानों की तैयारियों का ज़िक्र है उन्हें अपने माल और जान से जिहाद करने की तल्क़ीन की गई है। मुनाफ़िक़ीने मदीना और मदीना के अतराफ़ में रहने वाले बद्दुओं को तन्क़ीद का निशाना बनाया गया है। ये मुनाफ़िक़ ख़ुद भी रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ देने से गुरेज़ करते थे बल्कि आप (ﷺ) का साथ देने वालों की हौसला शिक्नी भी कराते थे। इसलिये उन्हें जहन्नम में मुश्रिकीन से भी ज़्यादा अज़ाब देने की ख़बर दी गई है। रसूलुल्लाह (ﷺ) को इन मुनाफ़िक़ों से ख़बरदार रहने और उनकी मौत के मौक़े पर उनके लिये दुआए मग़्फ़िरत न करने और उनकी क़ब्र पर न जाने की ताकीद की गई है। आम मुसलमानों को इन मुनाफ़िक़ों से अलग रहने और इनके हथकण्डों से होशियार रहने की हिदायत की गई है। आयत 107 और 108 में ख़ास तौर पर उस मस्जिद का ज़िक्र है जो मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने के लिये सलाह व मशवरा करने, इकट्ठा होने और साज़िशें करने के लिये बनाई थी। इसका नाम मस्जिदे ज़िरार पड़ गया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसमें जाने से मना किया गया और ग़ज़्वए तबूक की वापसी पर आपके हुक्म से इस मस्जिद को गिरा दिया गया।

आयत नम्बर 60 में उन मद्दात या मसारिफ़ का ज़िक्र किया गया है जिन पर इस्लामी रियासत ज़कात व सदक़ात के फण्ड का इस्तेमाल कर सकती है। आयत नम्बर 118 में उन तीनों सहाबियों की माफ़ी का ज़िक्र है जो ग़ज़्वए तबूक में बग़ैर उज़्रे शरई सुस्ती और काहिली से शिरकत न कर सके थे। नबी (ﷺ) के हुक्म पर तमाम मुसलमानों ने उनके साथ 50 दिन तक मुआशरती बायकाट किया था। ये तीन सहाबी हज़रत कअ़ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारा बिन रबीअ (रज़ि.) थे।

तफ़्सीर सूरह तौबा

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ① فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ②

तर्जुमा : "अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की बेज़ारी का ऐलान है उन मुश्रिकों के बारे में जिनसे तुमने अहदो पैमान किया था। (1) पस (ऐ मुश्रिकों!) तुम मुल्क में चार महीने तो चल फिर लो कि तुम अल्लाह तआला को आजिज़ (मजबूर) करने वाले नहीं हो, और यह भी याद रहे कि अल्लाह तआला काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है।" (2)

मुश्रिकीन से ऐलाने बराअत (आयत 1-2) : यह सूरत सबसे आख़िर में रसूलुल्लाह (ﷺ) पर उतरी है। बुख़ारी शरीफ़ में है सबसे आख़िरी आयत (يَسْتَفْتُوْنَكَ) (4/निसाअ : 176) उतरी और सबसे आख़िर सूरह बराअत उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल बराअत बाब क़ौलुहू (बराअतुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ीना...) : 4654; सहीह मुस्लिम : 1618) इसके शुरु में बिस्मिल्लाह न होने की वजह यह है कि सहाबा (रज़ि.) ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान (रज़ि.) की इक़्तिदा करके इसे कुरआन में नहीं लिखा था। तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत उस्मान (रज़ि.) से पूछा कि आख़िर क्या वजह है जो आपने सूरह अन्फ़ाल को जो मसानी में से है और सूरह बरा'त को जो मुईन में से है मिला दिया और इनके बीच **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** नहीं लिखी और पहले की सात लम्बी सूरतों में इन्हें रखा? आपने जवाब दिया कि बसाऔक़ात हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर एक साथ कई सूरतें नाज़िल होती थीं। जब आयत उतरती आप वही के लिखने वालों में से किसी को बुलाकर फ़र्मा देते कि इस आयत को फ़लाँ सूरत में लिख दो जिसमें यह ज़िक्र है। सूरह अन्फ़ाल मदीना मुनव्वरा में सबसे पहले नाज़िल हुई थी और सूरह बरा'त सबसे आख़िर में उतरी थी, बयानात दोनों के मिलते जुलते थे, मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं यह भी उसी में से न हो। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इंतिक़ाल हो गया और आप (ﷺ) ने हमसे नहीं फ़र्माया कि यह उसमें से है इसलिए मैंने दोनों सूरतों को मुत्तसिल लिखा और उनके दरम्यान बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखी और सात पहली लम्बी सूरतों में उन्हें रखा। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मन जहरा बिहा : 786; व सनदुहू हसन; हसन तिर्मिज़ी : 3086; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 8007; अहमद : 1/57) इस सूरत का इब्तिदाई हिस्सा उस वक़्त उतरा जब आप (ﷺ) गज़्वा तबूक से वापिस आ रहे थे। हज्ज का ज़माना था, मुश्रिकीन अपनी आदत के मुताबिक़ हज्ज में आकर बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे हो कर किया करते थे, आप (ﷺ) उनमें ख़ुला मिला होना नापसंद करके हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को हज्ज का इमाम बनाकर उस साल मक्का मुकर्रमा रवाना किया कि "मुसलमानों को अहकामे हज्ज सिखाएँ और मुश्रिकों में ऐलान कर दें वह आइन्दा साल हज्ज को न आएँ और सूरह बरा'त का भी आम लोगों में ऐलान कर दें" आपके पीछे फिर हज़रत अली

(रज़ि.) को भेजा कि आपका पैग़ाम बहैसियत आपकी नज़दीकी क़राबतदारी के आप भी पहुँचा दें, जैसे कि इसका तफ़सीली बयान आ रहा है, इंशाअल्लाह! पस फ़र्मान है कि यह बेताल्लुक़ी है अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से। कुछ तो कहते हैं यह ऐलान उस अहदो पैमान के बारे में है जिनसे कोई वक़्ते मुअय्यन न था या जिनसे अहद चार माह से कम का था लेकिन जिनका लम्बा अहद था वह बदस्तूर बाक़ी रहा। जैसे फ़र्मान है कि (فَأَتِمُّوٓا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ) (9/तौबा : 4) इनकी पूरी मुद्दत होने तक तुम उनसे उनका अहद निभाओ। हदीस में भी है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया "हमसे जिनका अहदो पैमान है हम उस पर मुक़र्ररा वक़्त तक पाबन्दी से क़ायम हैं।" भले इस बारे में और क़ौल भी हैं लेकिन सबसे अच्छा और सबसे क़वी (मज़बूत) क़ौल यही है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जिन लोगों से अहद हो चुका था उनके लिए चार माह की हदबन्दी अल्लाह तआला ने मुक़र्रर की और जिनसे अहद न था उनके लिए हुर्मत वाले महीनों के गुज़र जाने की हदबन्दी मुक़र्रर कर दी यानी दस ज़िल हिज्ज से मुहर्रम ख़त्म होने तक पचास दिन। इस मुद्दत के बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उनसे जंग करने की इजाज़त दे दी गई है जब तक वह इस्लाम क़बूल न कर लें। और जिनसे अहद है वह दस ज़िल हिज्ज के ऐलान के दिन से लेकर बीस रबीउ़ल आख़िर तक अपनी तैयारी कर लें फिर अगर चाहे मुक़ाबले पर आ जाएँ। यह वाक़िया 9 हिज्री का है, आप (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अमीरे हज्ज मुक़र्रर करके भेजा था और हज़रत अली (रज़ि.) को तीस या चालीस आयतें क़ुरआन की इस सूरत की देकर भेजा कि आप चार माह की मुद्दत का ऐलान कर दें। आपने उनके डेरों में घरों में मंज़िलों में जा जाकर यह आयतें उन्हें सुना दीं और साथ ही नबी करीम (ﷺ) का यह हुक्म भी सुना दिया कि इस साल के बाद हज्ज के लिए कोई मुश्रिक न आए और बैतुल्लाह का तवाफ़ कोई नंगा शख़्स न करे। (तब्री : 4/100 यह रिवायत मुर्सल है।) क़बीला ख़ुज़ाआ क़बीला मुदलज और दूसरे सब क़बीलों के लिए भी यही ऐलान था। तबूक से आकर आप (ﷺ) ने हज्ज का इरादा किया था, लेकिन मुश्रिकों का वहाँ आना और उनका नंगे होकर तवाफ़ करना आप (ﷺ) को नापसंद था इसलिए हज्ज न किया और उस साल हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को और हज़रत अली (रज़ि.) को भेजा उन्होंने ज़िल मिजाज़ के बाज़ारों में और हर गली कूचे और हर-हर पड़ाव और मैदान में ऐलान किया कि चार महीने तक की तो शिर्क को और मुश्रिक को मोहलत है। (तब्री : 4/100 यह रिवायत मुर्सल है।) इसके बाद हमारी इस्लामी तलवार अपना जोहर दिखाएगी, बीस दिन ज़िल हिज्ज के, मुहर्रम पूरा, सफ़र पूरा, और रबीउ़ल अव्वल पूरा और दस दिन रबीउ़ल आख़िर के। ज़ोहरी (रह.) कहते हैं, शव्वाल से मुहर्रम तक की ढील थी लेकिन यह क़ौल ग़रीब है और समझ से भी बालातर है कि हुक्म पहुँचने से पहले ही मुद्दत की गिनती कैसे हो सकती है।

***

وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِۦٓ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِىٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ

وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۭ
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ ۳

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से लोगों को बड़े हज्ज के दिन की साफ़ ख़बर है कि अल्लाह तआला मुश्रिकों से बेज़ार है और उसका रसूल (ﷺ) भी, अगर अब भी तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर तुम रूगर्दानी करो तो जान लो कि तुम अल्लाह तआला को हरा नहीं सकते, काफ़िरों को दुख की मार की ख़बर पहुँचा दो।'' (3)

हज्जे अकबर से क्या मुराद है? (आयत 3) : अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से आम ऐलान है और है भी बड़े हज्ज के दिन यानी ईदे क़ुर्बान को जो हज्ज के तमाम दिनों से बड़ा और अफ़ज़ल दिन है कि अल्लाह तआला और उसका रसूल मुश्रिकों से बरिड़ज़्ज़िमा बेज़ार और अलग हैं अगर अब भी तुम गुमराही और शिर्क व बुराई छोड़ दो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, तौबा कर लो, नेक बन जाओ, इस्लाम क़बूल कर लो, शिर्क व कुफ़्र छोड़ दो और अगर तुमने न माना, अपनी गुमराही पर क़ायम रहे तो तुम न अब अल्लाह तआला के क़ब्ज़े से बाहर हो, न आइन्दा किसी वक़्त अल्लाह तआला को दबा सकते हो, वह तुम पर क़ादिर है, तुम्हारी चोटियाँ उसके हाथ में हैं, वह काफ़िरों को दुनिया में भी सज़ा करेगा और आख़िरत में भी अ़ज़ाब करेगा। सहीह बुख़ारी में है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मुझे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने क़ुर्बानी वाले दिन उन लोगों में जो ऐलान के लिए भेजे गए थे भेजा, हमने मुनादी कर दी कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज्ज को न आए और बैतुल्लाह का तवाफ़ कोई शख़्स नंगा होकर न करे। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को भेजा कि सूरह बरा'त का ऐलान कर दें पस आपने भी मिना में हमारे साथ ईद के दिन इन्हीं अहकाम की मुनादी की। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुत्तौबा, बाब (व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही...) : 4656) हज्जे अकबर का दिन बक़र ईद का दिन है क्योंकि लोग हज्जे अस्ग़र बोला करते थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के इस ऐलान के बाद हज्जतुल वदाअ़ में एक भी मुश्रिक हज्ज को नहीं आया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब कैफ़ युम्बज़ु इला अहलिल अ़हद : 3177) हुनैन के ज़माने में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिअ़राना से उ़मरा का एहराम बाँधा था फिर उस साल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को अमीरे हज्ज बनाकर भेजा, और आपने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) को मुनादी के लिए रवाना किया। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को भेजा कि बरा'त का ऐलान कर दें। अमीरे हज्ज हज़रत अ़ली (रज़ि.) के आने के बाद भी हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ही रहे। लेकिन इस रिवायत में ग़ुर्बत है। उ़मरए-ए-जिअ़राना वाले साल अमीरे हज्ज हज़रत उ़ताब बिन उसैद (रज़ि.) थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तो 9 हिज्री में अमीरे हज्ज थे। मुस्नद की रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं उस साल हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ मैं था। हमने पुकार पुकारकर मुनादी कर दी कि जन्नत में सिर्फ़ ईमान वाले ही जाएँगे, बैतुल्लाह का तवाफ़ आइन्दा से कोई शख़्स नंगेपन की हालत में नहीं कर सकेगा। जिनके साथ हमारा अ़हदो पैमान हैं उनकी

मुद्दत आज से चार माह की है, इस मुद्दत के गुज़र जाने के बाद अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) मुश्रिकों से बरिउज़्ज़िमा हैं, इस साल के बाद किसी काफ़िर को बैतुल्लाह की हज्ज की इजाज़त नहीं। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह मुनादी करते करते मेरा गला बैठ गया। (अहमद : 2/299; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दारमी : 1/332; इब्ने हिब्बान : 3809; हाकिम : 2/331) हज़रत अली (रज़ि.) की आवाज़ बैठ जाने के बाद मैं ने मुनादी शुरु कर दी थी। एक रिवायत में है जिससे अहद है उसकी मुद्दत वही है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं मुझे तो डर है कि यह जुम्ला किसी रावी के वहम की वजह से न हो। क्योंकि मुद्दत के बारे में इसके ख़िलाफ़ बहुत सी रिवायतें हैं। मुस्नद अहमद में है कि बरा'त का ऐलान करने को आपने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को भेजा, वह ज़ुल हुलैफ़ा पहुँचे होंगे जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''यह ऐलान तो या तो मैं ख़ुद करूँगा या मेरे अहले बैत में से कोई शख़्स करेगा।'' फिर आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को भेजा। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3090; व सनदुहू हसन; अहमद : 3/212) हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि सूरह बरा'त की दस आयतें जब उतरीं आप (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को बुलाकर फ़र्माया, इन्हें ले जाओ, अहले मक्का को सुनाओ। फिर मुझे बुलवाया और इर्शाद हुआ कि ''तुम जाओ! अबूबक्र (रज़ि .) से मिलो जहाँ भी वह मिलें, उनसे किताब ले लेना और मक्का वालों के पास जाकर उन्हें पढ़कर सुनाना।'' मैं चला, जुहफ़ा में जाकर मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे किताब ले ली। आप वापिस लौटे और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से पूछा कि क्या मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल हुई है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! जिब्राईल (عليه السلام) मेरे पास आए और फ़र्माया कि या तो यह पैग़ाम ख़ुद आप (ﷺ) पहुँचाइए या और कोई शख़्स जो आपके अहल में से हो।'' (अहमद : 1/151; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल (रह.) व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुहम्मद बिन जाबिर ज़ईफ़ मशहूर, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/32) इस सनद में ज़ुअफ़ है और इससे यह मुराद भी नहीं कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उस वक़्त लौट आए नहीं! बल्कि आप (रज़ि.) ने अपनी सरदारी में वह हज्ज कराया, हज्ज से फ़ारिग़ होकर फिर वापिस आए जैसे कि और रिवायतों में सराहतन मरवी है। और हदीस में है कि हज़रत अली (रज़ि.) से जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इस पैग़ाम रसानी का ज़िक्र किया तो हज़रत अली (रज़ि.) ने उज़्र पेश किया कि मैं उम्र के लिहाज़ से और तक़रीर के लिहाज़ से अपने में कमी पाता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''लेकिन ज़रूरत इसकी है कि इसे या तो मैं ख़ुद पहुँचाऊँ या तुम पहुँचाओ।'' हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, अगर यही है तो लीजिए मैं जाता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जाओ! अल्लाह तआला तेरी ज़ुबान को साबित रखे और तेरे दिल को हिदायत दे। फिर अपना हाथ उनके चेहरे पर रखा।'' (अहमद : 1/150; व सनदुहू ज़ईफ़) लोगों ने हज़रत अली (रज़ि.) से पूछा कि हज्ज के मौक़े पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के साथ आप (रज़ि .) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क्या बात पहुँचाने भेजा था? आप (रज़ि.) ने ऊपर वाली चारों बातें बयान फ़र्माईं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3092; वहुव सहीहुन; अहमद : 1/79; हाकिम : 3/52; मुस्नद अबी यअ़ला : 452) मुस्नद अहमद वग़ैरह में यह रिवायत कई तरीक़ से आई है इसमें लफ़्ज़ यह हैं कि जिनसे मुआहिदा है वह जिस मुद्दत तक है उसी तक रहेगा। और हदीस में है कि आप (ﷺ) से लोगों ने कहा कि आप हज्ज में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) को भेज चुके हैं, काश! कि यह पैग़ाम भी उन्हें पहुँचा देते। आप (ﷺ)

ने फ़र्माया, "इसे तो कोई मेरे अहल वाला ही पहुँचाएगा।" इसमें है कि हज़रत अली (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की अज़्बा नामी ऊँटनी पर सवार होकर तशरीफ़ ले गए थे, उन्हें रास्ते में देखकर हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने पूछा कि सरदार हो या मातहत? फ़र्माया नहीं! मैं तो मातहत हूँ। वहाँ जाकर आप (रज़ि.) ने हज्ज का इंतिज़ाम किया और ईद वाले दिन हज़रत अली (रज़ि.) ने लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) के यह अहकाम पहुँचाए। फिर यह दोनों आप (ﷺ) के पास आए। पस मुश्रिकीन में से जिनसे आम अहद था उनके लिए तो चार माह की मुद्दत हो गई, बाक़ी जिससे जितना अहद था वह बदस्तूर रहा। (तब्री : 14/107) और रिवायत में है कि अबूबक्र (रज़ि.) को तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अमीरे हज्ज बनाकर भेजा था और मुझे उनके पास चालीस आयतें सूरह बरा'त की देकर भेजा था। आप (रज़ि.) ने अरफ़ात के मैदान में अरफ़ा के दिन लोगों को ख़ुत्बा दिया। फिर हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया, उठिए और हुज़ूर (ﷺ) का पैग़ाम लोगों को सुना दीजिए। पस हज़रत अली (रज़ि.) ने खड़े होकर उन चालीस आयतों की तिलावत फ़र्माई। फिर लौटकर मिना में आकर जम्रा पर कंकरियाँ फेंकीं, ऊँट नहर किया, सर मुँडवाया। फिर मुझे मालूम हुआ कि सब हाजी इस ख़ुत्बे के वक़्त मौजूद न थे। इसलिए मैंने डेरों में और ख़ेमों में और पड़ाव में जा जाकर मुनादी शुरू कर दी, मेरा ख़्याल है शायद इस वजह से लोगों को यह गुमान हो गया, यह दसवीं तारीख़ का ज़िक्र है हालाँकि असल पैग़ाम 9वीं तारीख़ को अरफ़ा के दिन पहुँचा दिया गया था।

अबू इस्हाक़ (रह.) कहते हैं मैंने अबू जुहैफ़ा (रह.) से पूछा कि हज्जे अकबर कौनसा दिन है? आप (रह.) ने फ़र्माया, अर्फ़े का दिन। मैंने कहा, यह आप अपनी तरफ़ से फ़र्मा रहे हैं या सहाबा (रज़ि.) से सुना हुआ है। फ़र्माया सब कुछ यही है। अता (रह.) भी यही फ़र्माते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) भी यही फ़र्माते हैं पस उस दिन कोई रोज़ा न रखे। रावी कहता है मैंने अपने बाप के बाद हज्ज किया, मदीने पहुँचा और पूछा कि यहाँ आजकल सबसे अफ़ज़ल कौन हैं? लोगों ने कहा, हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) हैं। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मैंने मदीने वालों से पूछा कि यहाँ आजकल सबसे अफ़ज़ल कौन हैं? तो उन्होंने आपका नाम लिया तो मैं आपके पास आया हूँ। यह फ़र्माइए कि अरफ़ा के दिन के रोज़े के बारे में आप क्या कहते हैं? आपने फ़र्माया, लो! मैं तुम्हें अपने से एक सौ दर्जे बेहतर शख़्स को बताऊँ वह उमर (रज़ि.) या इब्ने उमर (रज़ि.) हैं, वह इस रोज़े से मना करते थे और इसी दिन को हज्जे अकबर फ़र्माते थे। (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह) और भी बहुत से बुज़ुर्गों ने यही फ़र्माया है कि हज्जे अकबर से मुराद अरफ़े का दिन है। एक मुर्सल हदीस में भी है कि "आप अपने अरफ़े के ख़ुत्बे में फ़र्माया यही हज्जे अकबर का दिन है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब अल्ख़ुत्बतु अय्यामे मिना तहत, रक़म : 1742; अबूदाऊद : 1945; इब्ने माजा : 3058) दूसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद बक़र ईद का दिन है। हज़रत अली (रज़ि.) यही फ़र्माते हैं। एक मर्तबा हज़रत अली (रज़ि.) बक़रईद वाले दिन अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार जा रहे थे जो एक शख़्स ने आकर लगाम थाम ली और यही पूछा, आपने फ़र्माया "हज्जे अकबर का दिन आज ही का दिन है लगाम छोड़ दे।" अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) का क़ौल भी यही है। हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने अपने ईद के ख़ुत्बे में फ़र्माया, आज ही का दिन यौमुल अज़्हा है। आज ही का दिन यौमुन्नहर है, आज ही का दिन हज्जे अकबर का दिन है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी यही मरवी है और भी बहुत से लोग इसी तरफ़ गए हैं कि

हज्जे अकबर बक़रईद का दिन है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) का पसंदीदा क़ौल भी यही है। सह़ीह़ बुख़ारी के ह़वाले से पहले ह़दीस गुज़र चुकी है कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुनादी करने वालों को मिना में ईद के दिन भेजा था। इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ह़ज्जतुल वदाअ़ में जम्रों के पास दसवीं तारीख ज़िल्ह़िज्ज को ठहरे और फ़र्माया, ''यही दिन ह़ज्जे अकबर का दिन है।'' और रिवायत में है कि आप (ﷺ) की ऊँटनी लाल रंग की थी। आप (ﷺ) ने लोगों से पूछा कि ''जानते भी हो, आज कौनसा दिन है?'' लोगों ने कहा, कुर्बानी का दिन है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सच है यही दिन ह़ज्जे अकबर का है।'' (त़ब्री : 14/125) और रिवायत में है कि आप (ﷺ) ऊँटनी पर सवार थे लोग उसकी नकेल थामे हुए थे। आप (ﷺ) ने स़ह़ाबा (रज़ि.) से पूछा कि ''यह कौनसा दिन है जानते हो'' हम इस ख़्याल से ख़ामोश रहे कि शायद आप (ﷺ) इसका कोई और ही नाम बतलाएँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''क्या ह़ज्जे अकबर का दिन नहीं?'' और रिवायत में है कि लोगों ने आप (ﷺ) के सवाल पर जवाब दिया कि यह ह़ज्जे अकबर का दिन है। (तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मा जाअ फ़ी तह़रीमिद् दिमाइ वल अम्वाल : 2159; व सनदुहू ह़सन; इब्ने माजा : 3055)

सईद बिन मुसय्यिब (रह़.) फ़र्माते हैं कि ईद के बाद का दिन है। मुजाहिद (रह़.) कहते हैं ह़ज्ज के सब दिनों का यही नाम है। सुफ़ियान (रह़.) भी यही कहते हैं कि जैसे यौमे जमल, यौमे सिफ़्फ़ीन उन लड़ाइयों के तमाम दिनों का नाम है, ऐसे ही यह भी है। ह़सन बस़री (रह़.) से जब यह सवाल हुआ तो आप (रह़.) ने फ़र्माया, तुम्हें इससे क्या ह़ासिल, यह तो उस साल था जिस साल ह़ज्ज के अमीर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे। इब्ने सीरीन (रह़.) इसी सवाल के जवाब में फ़र्माते हैं, यह वह दिन था जिसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) का और आ़म लोगों का ह़ज्ज हुआ।

***

إِلَّا الَّذِينَ عَٰهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْـًٔا وَلَمْ يُظَٰهِرُوا۟ عَلَيْكُمْ
أَحَدًا فَأَتِمُّوٓا۟ إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٤﴾ فَإِذَا انسَلَخَ
الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا۟ الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ
وَاقْعُدُوا۟ لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ الصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ الزَّكَوٰةَ فَخَلُّوا۟
سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

तर्जुमा : ''सिवाए उन मुश्रिकों के जिनसे तुम्हारा मुआ़हिदा हो चुका है और उन्होंने तुम्हें ज़रा सा भी नुक़्सान नहीं पहुँचाया, न किसी की तुम्हारे ख़िलाफ़ मदद की है तो तुम भी उनके मुआ़हिदे की

मुद्दत उनके साथ पूरी करो, अल्लाह तआला परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4) पस हुर्मत वाले महीनों के गुज़रते ही मुश्रिकों को जहाँ पाओ, क़त्ल करो उन्हें गिरफ़्तार करो, उनको घेर लो और उनकी ताक में हर घाटी में जा बैठो, हाँ! अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ के पाबन्द हो जाएँ और ज़कात अदा करने लगें तो तुम उनकी राहें छोड़ दो, यक़ीनन अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है।" (5)

मुआहिदे को पूरा करने की ताक़ीद (आयत 4, 5) : पहले जो अहादीस बयान हो चुकी हैं उनका और इस आयत का मज़्मून एक ही है। इससे साफ़ हो गया कि जिनसे मुत्लक़न अहदो पैमान हुए थे उन्हें तो चार माह की मोहलत दी गई कि उसमें वह अपना जो चाहें कर लें और जिनसे किसी मुद्दत तक अहदो पैमान हो चुके हैं वह सब अहद साबित हैं बशर्तेकि वह लोग मुआहिदे के शर्तों पर क़ायम रहें, न मुसलमानों को ख़ुद कोई नुक़्सान पहुँचाएँ, न उनके दुश्मनों की कुमुक और इम्दाद करें। अल्लाह तआला वादों के पूरा करने वाले लोगों से मुहब्बत रखता है।

जिहाद और हुर्मत वाले महीने : हुर्मत वाले महीनों से मुराद यहाँ वह चार महीने हैं जिनका ज़िक्र आयत (مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ) (9/तौबा : 36) में है पस उनके हक़ में आख़िरी हुर्मत वाला महीना मुहर्रमुल हराम का है, इब्ने अब्बास (रज़ि.) और ज़ह्हाक (रह.) से भी यही मरवी है लेकिन इसमें ज़रा ताम्मुल (संदेह) है बल्कि मुराद इससे यहाँ वह चार महीने हैं जिनमें मुश्रिकीन को पनाह मिली थी कि उनके बाद तुमसे लड़ाई है। चुनाँचे ख़ुद इस सूरत में इसका बयान और आयत में आ रहा है। फ़र्माते हैं इन चार माह के बाद मुश्रिकों से जंग करो, उन्हें क़त्ल करो, जहाँ भी पा लो, उन्हें गिरफ़्तार करो। पस यह आम है लेकिन मशहूर यह है कि यह ख़ास है हरम में लड़ाई नहीं हो सकती। जैसे फ़र्मान है (وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ) (2/बक़रह : 191) मस्जिदे हराम के पास उनसे न लड़ो जब तक कि वह अपनी तरफ़ से लड़ाई शुरु न करें। अगर यह वहाँ तुमसे लड़ें तो फिर तुम्हें भी उनसे लड़ाई करने की इजाज़त है, चाहो तो क़त्ल करो, चाहो क़ैद कर लो, उनके क़िलों का मुहासिरा (घेराव) करो, उनके लिए हर घाटी में बैठकर ताक लगाओ, उन्हें ज़द पर लाकर मारो। यानी यही नहीं कि मिल जाएँ तो झड़प हो जाए ख़ुद चढ़कर जाओ। उनकी राहें बंद कर दो और उन्हें मजबूर कर दो कि या तो इस्लाम लाएँ या लड़ें। इसीलिए फ़र्माया कि अगर वह तौबा कर लें, पाबंदे नमाज़ हो जाएँ, ज़कात देने लगें तो बेशक उनकी राहें खोल दो, उन पर से तंगियाँ उठा लो। ज़कात न देने वालों से जिहाद करने की इसी जैसी आयतों से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने दलील ली थी कि लड़ाई इस शर्त पर हराम है कि इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ और इस्लाम के वाजिबात बजा लाएँ। इस आयत में अरकाने इस्लाम को तर्तीबवार बयान किया है, आला फिर अदना पस शहादत के बाद सबसे बड़ा रुक्ने इस्लाम नमाज़ है जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला का हक़ है। नमाज़ के बाद ज़कात जिसका नफ़ा फ़क़ीरों, मिस्कीनों, मुहताजों को पहुँचता है और मख़्लूक़ का ज़बरदस्त हक़ जो इंसान के ज़िम्मे है अदा हो जाता है। यही वजह है जो अक्सर नमाज़ के साथ ही ज़कात का ज़िक्र अल्लाह तआला बयान करता है। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुझे हुक्म किया गया कि लोगों से जिहाद जारी रखूँ। जब तक कि वह यह गवाही न दें कि कोई मअबूद नहीं सिवाए अल्लाह के,

और यह कि मुहम्मद (ﷺ) अल्ल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ों को क़ायम करें और ज़कात दें, आख़िर तक। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब (फ़इन ताबू व अक़ामुस्सलात व आतवुज़्ज़काता फ़ख़ल्लू सबीलहुम. इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम) : 25; सहीह मुस्लिम : 22; इब्ने हिब्बान : 175; बैहक़ी : 3/367)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि तुम्हें नमाज़ों के क़ायम करने और ज़कात देने का हुक्म किया गया है जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ भी नहीं। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला हर्गिज़ किसी की नमाज़ क़बूल नहीं करता जब तक वह ज़कात अदा न करे। अल्लाह तआला हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पर रहम करे आपकी फ़िक्ह सबसे बढ़ी हुई थी जो आपने ज़कात के मुंकिरों से जिहाद किया। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मुझे लोगों से जिहाद का हुक्म दिया गया है जब तक कि वह यह गवाही न दें कि सिवाए अल्लाह तआला बरहक़ के और कोई भी लायक़े इबादत नहीं और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह तआला के रसूल हैं। जब वह इन दोनों बातों का इक़रार कर लें हमारे क़िब्ले की तरफ़ चेहरा कर लें, हमारा ज़बीहा खाने लगें, हम जैसी नमाज़ें पढ़ने लगें तो हम पर उनके ख़ून, उनके माल हराम हैं मगर अहकामे इस्लाम हक़ के मातहत उन्हें हर वह हक़ हासिल है जो और मुसलमानों का है और उनके ज़िम्मे हर वह चीज़ है जो और मुसलमानों के ज़िम्मे है। (सहीह बुख़ारी, किताबुस् सलात, बाब फ़ज़्लु इस्तिक़्बालिल क़िब्ला : 392; अबूदाऊद : 2641; तिर्मिज़ी : 2608; अहमद : 3/199; इब्ने हिब्बान : 5895) यह रिवायत सही बुखारी में और सुनन में भी है सिवाए इब्ने माजा के। इब्ने जरीर में है रसूले मक़्बूल (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो दुनिया से इस हाल में जाए कि अल्लाह तआला अकेले की ख़ालिस इबादत करता हो, उसके साथ किसी को शरीक न करता हो तो वह इस हाल में जाएगा कि अल्लाह तआला उससे ख़ुश होगा।'' हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यही अल्लाह तआला का दीन है इसी को तमाम पैग़म्बर (عليهم السلام) लाए थे और अपने रब की तरफ़ से अपनी अपनी उम्मतों को पहुँचाया था इससे पहले कि बातें फैल जाएँ और ख़्वाहिश इधर-उधर लग जाएँ। इसकी सच्चाई की शहादत अल्लाह तआला की आख़िरी वही में मौजूद है। अल्लाह तआला फ़र्माता है (फ़इन ताबू व अक़ामुस्सलात व आतवुज़्ज़काता फ़ख़ल्लू सबीलहुम. इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम) पस तौबा यही है कि अल्लाह तआला वाहिद बरहक़ के सिवा औरों की इबादत से दस्तबरदार हो जाएँ, नमाज़ों और ज़कात के पाबंद हो जाएँ। और आयत में है कि इन तीनों कामों के बाद वह तुम्हारे दीनी भाई हैं। (9/तौबा : 11) (व सनदुहू ज़ईफ़ुन) ज़हहाक (रह.) फ़र्माते हैं यह तलवार की आयत है, इसने उन तमाम अहदो पैमान को चाक कर दिया जो मुश्रिकों से थे। इब्ने अब्बास(रज़ि.) का क़ौल है कि बरा'त के नाज़िल होने पर चार महीने गुज़र जाने के बाद कोई अहद ज़िम्मा बाक़ी न रहा। (तब्री : 14/133) पहली शर्तें बराबरी के साथ तोड़ दी गईं अब इस्लाम और जिहाद बाक़ी रह गया। हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने नबी अकरम (ﷺ) को चार तलवारों के साथ भेजा, एक तो मुश्रिकीने अरब के बारे में, फ़र्माता है (فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْ) मुश्रिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो। यह रिवायत इसी तरह मुख़्तसरन है। मेरा ख़्याल है कि दूसरी तलवार अहले किताब में, फ़र्माता है (قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا

(يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ) (9/तौबा : 29) अल्लाह तबारक व तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान न लाने वालों और अल्लाह तआला व रसूल (ﷺ) के हरामकर्दा को हराम न मानने वालों और अल्लाह तआला के सच्चे दीन को क़बूल न करने वालों से जो अहले किताब हैं, जिहाद करो यहाँ तक कि वह ज़िल्लत के साथ जिज़्या (टेक्स) देना क़बूल न कर ले। तीसरी तलवार मुनाफ़िक़ों के बारे में, फ़र्मान है (يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ) (9/तौबा : 73) ऐ नबी (ﷺ)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो। चौथी तलवार बाग़ियों के बारे में, इर्शाद है (وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا) (49/हुजुरात : 9) अगर मुसलमानों की दो जमाअतों में लड़ाई हो जाए तो उनमें सुलह करा दो, फिर भी अगर कोई जमाअत दूसरी को दबाती चली जाए तो उन बाग़ियों से तुम लड़ो, जब तक कि वह पलटकर अल्लाह तआला के हुक्म को मान न लें। ज़हहाक (रह.) का क़ौल है कि यह आयते तलवार आयत (فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً) (47/मुहम्मद : 4) से मंसूख़ है यानी बतौर एहसान के या फ़िदया लेकर काफ़िर क़ैदियों को छोड़ दो। क़तादा (रह.) इसके बरअक्स कहते हैं कि पिछली आयत पहली आयत से मंसूख़ हो गई।

***

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾

तर्जुमा : ''अगर मुश्रिकों में से कोई तुझसे पनाह तलब करे तो तू उसे पनाह दे दिया कर, यहाँ तक कि कलामुल्लाह सुन ले फिर उसे अपनी अम्न की जगह तक पहुँचा दे। यह इसलिए कि यह लोग इल्म नहीं रखते।'' (6)

कुफ़्फ़ार मुसाफ़िरों, क़ासिदों, पनाह लेने वालों का एहतिराम (आयत 6) : अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म करता है कि जिन काफ़िरों से आपको जिहाद का हुक्म दिया गया है उनमें से अगर कोई आपसे अम्न तलब करे तो आप उसकी ख़्वाहिश पूरी कर दें, उसे अम्न दें यहाँ तक कि वह क़ुरआने करीम सुन ले, आप (ﷺ) की बातें सुन ले, दीन की तालीम मालूम करे, हुज्जते इलाही पूरी हो जाए फिर अपनी अम्न में ही उसे उसके वतन पहुँचा दो, बेख़ौफ़ी के साथ यह अपने अम्न की जगह पहुँच जाए, मुम्किन है कि सोच-समझ कर हक़ को क़बूल कर ले। यह इसलिए कि यह इल्म नहीं रखते हैं, इन्हें दीनी मालूमात बहम पहुँचाओ, अल्लाह तआला की दावत उसके बन्दों के कानों तक पहुँचा दो। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि जो तेरे पास दीनी बातें सुनने के लिए आए, ख़्वाह वह कोई ही क्यूँ न हो, वह अमन में है यहाँ तक कि कलामुल्लाह सुने फिर जहाँ से आया है वहाँ अमन के साथ पहुँच जाए। (तब्री 14/139) इसीलिए हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसे जो दीन समझने के लिए आए और उसे जो पैग़ाम लेकर आए, अमन दे दिया करते थे, हुदेबिया वाले साल यही हुआ, क़ुरैश के जितने क़ासिद आए, यहाँ उन्हें कोई ख़तरा न था। उर्वा बिन मसऊद,

मकरज़ बिन हफ़्स, सुहैल बिन अम्र वग़ैरह एक के बाद एक आते रहे। यहाँ आकर उन्हें वह शान नज़र आई जो क़ैसर व किसरा के दरबार में भी न थी, यही उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, पस यह चीज़ भी बहुत से लोगों की हिदायत का ज़रिया बन गई। मुसैलिमा कज़्ज़ाब मुद्दई नबुव्वत का क़ासिद जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बारगाह में पहुँचा, आप (ﷺ) ने उससे पूछा कि ''क्या तुम मुसैलिमा की रिसालत के क़ाइल हो?'' उसने कहा, हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अगर क़ासिदों का क़त्ल मेरे नज़दीक नाजाइज़ न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता।'' आख़िर यह शख़्स हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की कूफ़ा में इमारत के ज़माने में क़त्ल कर दिया गया। इसे इब्नुन्नवाहा कहा जाता था। जब आपको मालूम हुआ कि यह मुसैलिमा का मानने वाला है तो आप (रज़ि.) ने उसे बुलवाया और फ़र्माया, अब क़ासिद नहीं है अब तेरी गर्दन मारने से कोई अम्र मानेअ़ नहीं, उसे क़त्ल कर दिया गया। अल्लाह तआ़ला की लानत उस पर हो। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िर्रुसुल : 2761; व सनदुहू हसन: 2762; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ़ साबित नहीं सुननुल कुब्रा : 8675; अहमद : 1/383; इब्ने हिब्बान : 4879; मुश्किलुल आसार : 2862)

अल्ग़र्ज़ दारुल हर्ब से जो क़ासिद आए या ताजिर आए या सुलह का तालिब आए या आपस में इस्लाह के इरादे से आये या जिज़्या लेकर हाज़िर हुआ या नाइबे इमाम ने उसे अम्नो अमान दे दिया हो तो जब तक दारुल इस्लाम में रहे जब तक अपने वतन में न पहुँच जाए उसे क़त्ल करना हराम है। उलमा कहते हैं ऐसे शख़्स को दारुल इस्लाम में साल भर तक न रहने दिया जाए, ज़्यादा से ज़्यादा वह चार माह तक यहाँ ठहर सकता है। फिर चार माह से ज़्यादा और सालभर के अंदर के दो क़ौल इमाम शाफ़ेई वग़ैरह उलमा के हैं (रहि.)

***

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝
كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ
وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝

तर्जुमा : ''मुश्रिकों का अहद अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (ﷺ) के नज़दीक कैसे रह सकता है, मगर जिनसे तुमने अहदो पैमान मस्जिदे हराम के पास किया है, जब तक वह लोग तुमसे मुआहिदा निभाएँ तुम भी उनसे वफ़ादारी करो, अल्लाह तआ़ला एहतियात रखने वालों से मुहब्बत रखता है। (7) उनके वादों का क्या ऐतिबार, उनका तुम पर ग़ल्बा हो जाए तो न तो यह क़राबतदारी का ख़्याल करें, न अहदो-पैमान का, अपनी ज़ुबानों से तो तुम्हें पुर्चा (राज़ी कर) रहे हैं

लेकिन दिल नहीं मानते, इनमें से अक्सर तो फ़ासिक़ (झूठे) हैं।" (8)

मुसलमान मशरूत तौर पर अहद की पाबन्दी करें (आयत 7, 8) : ऊपर वाले हुक्म की हिक्मत बयान हो रही है कि चार माह की मोहलत देने पर लड़ाई की इजाज़त देने की वजह यह है कि वह अपने शिर्क व कुफ़्र को छोड़ने वाले और अपने अहदो पैमान पर क़ायम रहने वाले ही नहीं, हाँ! सुलह हुदेबिया जब तक उनकी तरफ़ से न टूटे तुम भी न तोड़ना। यह सुलह दस साल के लिए हुई थी, माह ज़िल् क़अदा 6 हिज्री से हुज़ूर (ﷺ) ने इस मुआहिदे को निभाया यहाँ तक कि कुरैशियों की तरफ़ से मुआहिदा तोड़ा गया, उनके हलीफ़ बनूबक्र ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के हलीफ़ ख़ुज़ाआ पर चढ़ाई की बल्कि हरम में भी उन्हें क़त्ल किया, इस बिना पर रमज़ानुल मुबारक 8 हिज्री में हुज़ूर (ﷺ) ने उन पर चढ़ाई की, रब्बुल आलमीन ने मक्का फ़तह कराया और उन्हें आप (ﷺ) के काबू में कर दिया। (वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नतु) लेकिन आप (ﷺ) ने बावजूद ग़ल्बा और कुदरत के उनमें से जिन्होंने इस्लाम क़बूल न किया, सबको आज़ाद कर दिया। उन ही लोगों को तुलक़ा कहते हैं, यह तक़रीबन दो हज़ार थे जो कुफ़्र पर भी बाक़ी रहे और इधर-उधर हो गए। रहमतुल लिल आलमीन ने सबको आम पनाह दे दी और उन्हें मक्का में आने और यहाँ अपने मकानों में रहने की इजाज़त दे दी कि चार माह तक वह जहाँ चाहें जा आ सकते हैं। उन ही में सफ़्वान बिन उमय्या और इक्रिमा बिन अबी जहल वग़ैरह थे। फिर अल्लाह ने उनकी रहबरी की और उन्हें इस्लाम नसीब फ़र्माया। अल्लाह तआला अपने हर अंदाज़े के करने में और हर काम के करने में तारीफ़ों वाला ही है।

काफ़िर वादों के पाबन्द नहीं बल्कि वसाइल (मौक़े) के इंतिज़ार में हैं : अल्लाह तआला काफ़िरों के मकर व फ़रेब और उनकी दिली दुश्मनी से मुसलमानों को आगाह कर रहा है ताकि वह उनकी दोस्ती अपने दिल में न रखें, न उनके क़ौल व क़रार पर मुत्मइन रहें उनका कुफ़्र व शिर्क उन्हें वादों की पाबन्दी पर रहने नहीं देता। यह तो वक़्त के इंतिज़ार में हैं इनका बस चले तो यह तो तुम्हें कच्चे चबा डालें, न क़राबतदारी को देखें, न वादों की पासदारी करें, इनसे जो हो सके वह तक्लीफ़ तुम पर तोड़ें और ख़ुश हों। (इल्लन) के मअनी क़बरातदारी के इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी मरवी हैं। (तब्री : 14/146) और हज़रत हस्सान (रज़ि.) के शेअर में भी हैं। और मअनी किए गए हैं कि वह अपने ग़ल्बा के वक़्त अल्लाह तआला का भी लिहाज़ न करेंगे, न किसी और का यही लफ़्ज़ अलईल बनकर जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील में आया यानी इसका मअनी अल्लाह तआला है लेकिन पहला क़ौल ही ज़ाहिर और मशहूर है और अक्सर मुफ़स्सिरीन का भी यही क़ौल है। मुजाहिद (रह.) कहते हैं मुराद अहद है। क़तादा (रह.) का क़ौल है कि मुराद क़सम है।

***

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ⑩ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ⑪

तर्जुमा : "उन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को बहुत कम क़ीमत पर बेच दिया और उसकी राह से अटक गए, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं। (9) यह तो किसी मुसलमान के हक़ में किसी रिश्तेदारी का या अहद का मुत्लक़ लिहाज़ नहीं करते, यह हैं ही हद से गुज़रने वाले। (10) अब भी अगर यह तौबा कर लें और नमाज़ के पाबन्द हो जाएँ और ज़कात देते रहें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं हम तो जानने वालों के लिए अपनी आयतें खोल खोलकर बयान कर रहे हैं।" (11)

मुश्रिक अगर तौबा करके सच्चे मुसलमान बन जाएँ तो तुम्हारे दीनी भाई हैं (आयत 9-11) : मुश्रिकों की मज़म्मत के साथ ही मुसलमानों को तर्ग़ीबे जिहाद दी जा रही है कि इन काफ़िरों ने दुनिय-ए-हक़ीर को आख़िरते नफ़ीस के बदले पसंद किया है, ख़ुद राहे इलाही से रुककर मोमिनों को भी ईमान से रोक रहे हैं, इनके आमाल बहुत ही बुरे हैं, यह तो मोमिनों को नुक़्सान पहुँचाने के ही दर पे हैं, न इन्हें रिश्तेदारी का ख़्याल न मुआहिदे का पास। यह तो हद से तजावुज़ कर गए हैं। हाँ! अब भी सच्ची तौबा और नमाज़ व ज़कात की पाबन्दी इन्हें तुम्हारा बना सकती है। चुनाँचे बज़्ज़ार की हदीस में है कि "जो दुनिया को इस हाल में छोड़े कि अल्लाह तआला की इबादतें ख़ुलूस के साथ कर रहा हो, उसके साथ किसी को शरीक न बनाता हो, नमाज़ व ज़कात का पाबन्द हो तो अल्लाह तआला उससे ख़ुश होकर मिलेगा।" यही अल्लाह तआला का वह दीन है जिसे अम्बिया (عليهم السلام) लाते रहे और उसी की तब्लीग़ अल्लाह तआला की तरफ़ से वह करते रहे, इससे पहले कि बातें फैल जाएँ और ख़्वाहिशें बढ़ जाएँ इसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह में मौजूद है कि अगर वह तौबा कर लें, यानी बुतों को और बुतपरस्ती को छोड़ दें और नमाज़ी और ज़कात देने वाले बन जाएँ तो तुम इनके रास्ते छोड़ दो। (9/तौबा : 5) और आयत में है कि फिर यह तो तुम्हारे दीनी भाई हैं। (हाकिम : 2/331, 332) इमाम बज़्ज़ार (रह.) फ़र्माते हैं कि मेरे ख़्याल से तो मरफ़ूअ हदीस वहीं पर ख़त्म है कि अल्लाह तआला उससे रज़ामन्द होकर मिलेगा, उसके बाद का कलाम रावियें हदीस रबीअ बिन अनस (रह.) का है, वल्लाहु आलम!

***

وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ

لَآ اَيۡمَانَ لَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَنۡتَهُوۡنَ ⑫ اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ وَهَمُّوۡا بِاِخۡرَاجِ
الرَّسُوۡلِ وَهُمۡ بَدَءُوۡكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخۡشَوۡنَهُمۡ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡهُ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ
⑬ قَاتِلُوۡهُمۡ يُعَذِّبۡهُمُ اللّٰهُ بِاَيۡدِيۡكُمۡ وَيُخۡزِهِمۡ وَيَنۡصُرۡكُمۡ عَلَيۡهِمۡ وَيَشۡفِ صُدُوۡرَ قَوۡمٍ
مُّؤۡمِنِيۡنَ ⑭ وَيُذۡهِبۡ غَيۡظَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ وَيَتُوۡبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ⑮

तर्जुमा : ''अगर यह लोग अहदो-पैमान के बाद भी अपनी क़समों को तोड़ दें, और तुम्हारे दीन में तानाज़नी करें तो तुम भी उन सरदाराने कुफ़्र से भिड़ जाओ, उनकी क़समें कोई चीज़ नहीं मुम्किन है कि इस तरह वह भी बाज़ आ जाएँ। (12) तुम उन लोगों की सरकूबी के लिए क्यूँ तैयार नहीं होते जो अपनी क़समों को तोड़ देने हैं और पैग़म्बर (ﷺ) को जलावतन करने की फ़िक्र में रहें और ख़ुद ही पहली बार तुमसे छेड़छाड़ करें, क्या तुम उनसे डरते हो, अल्लाह तआला ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उसका डर रखो बशर्तेकि तुम ईमान वाले हो। (13) उनसे तुम जंग करो, अल्लाह तआला उन्हें तुम्हारे हाथों अज़ाब करेगा, उन्हें ज़लील व रुस्वा करेगा, तुम्हें उन पर मदद देगा और मुसलमानों के कलेजे ठण्डे करेगा और उनके दिल का ग़म व गुस्सा दूर करेगा। (14) और जिसकी तरफ़ चाहेगा रहमत से तवज्जह करेगा, अल्लाह तआला जानने वाला, हिक्मत वाला है।'' (15)

वादाख़िलाफ़ा और तअनाज़नी करने वालों को दो टूक जवाब दो (आयत 12-15) : अगर यह मुश्रिक अपनी क़समों को तोड़कर वादाख़िलाफ़ी और धोखेबाज़ी से काम ले और तुम्हारे दीन पर एतिराज़ करने लगें तो तुम इनके कुफ़्र के सरों को तोड़ मरोड़ दो। इसीलिए उलमा ने कहा है कि जो हुज़ूर (ﷺ) को गालियाँ दें, दीन में ऐबजोई करे उसका ज़िक्र इहानत के साथ करे, उसे क़त्ल कर दिया जाए। उनकी क़समें महज़ बे भरोसे हैं। यही तरीक़ा इनके कुफ़्र व इनाद से रोकने का है। अबू जहल, शैबा, उमय्या वग़ैरह यह सब सरदाराने कुफ़्र थे। एक ख़ारजी ने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) को कहा कि यह कुफ़्र के पेशवाओं में से एक है। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, तू झूठा है मैं तो उनमें से हूँ जिन्होंने कुफ़्र के पेशवाओं को क़त्ल किया था। हज़रत हुज़ेफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस आयत वाले इसके बाद क़त्ल नहीं किये गए। (हाकिम : 2/331, 332) हज़रत अली (रज़ि.) से भी इसी तरह मरवी है। सही यह है कि आयत आम है भले नुज़ूल की वजह के ऐतिबार से इससे मुराद मुश्रिकीने कुरैश हैं लेकिन हुक्मन यह उन्हें और सबको शामिल है, वल्लाहु आलम!

हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने शाम की तरफ़ लश्कर भेजा तो उनसे फ़र्माया कि तुम्हें उनमें कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जिनकी चुँधियाँ मुण्डी हुई होगी तो तुम उसी शैतानी बैठक पर तलवार मारकर उन्हीं पर ले पार करना। वल्लाह! उनमें से हर एक का क़त्ल और सत्तर लोगों के क़त्ल से मुझे ज़्यादा पसंद है इसलिए कि फ़र्माने रब है

कुफ़्र के इमामों को क़त्ल करो। (इब्ने अबी हातिम : 7/193)

वादाख़िलाफ़ी करने वाले कुफ़्फ़ार से डरने के बजाए उन पर सख़्ती का हुक्म : मुसलमानों को पूरी तरह जिहाद पर आमादा करने के लिए फ़र्मा रहा है कि यह अहदशिकन क़समें तोड़ने वाले कुफ़्फ़ार वही हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को जला वतन करने की पूरी तरह ठान ली थी, चाहते थे कि क़ैद कर लें या क़त्ल कर डालें या देस निकाला दे दें, इनकी चाल से अल्लाह तआला की चाल कहीं बेहतर थी। (8/अन्फ़ाल : 30) सिर्फ़ ईमान की बिना पर दुश्मनी करके पैग़म्बर (ﷺ) को और मोमिनों को वतन से निकालते थे, भड़भड़ाकर उठ खड़े हो जाते थे कि तुझे मक्का मुकर्रमा से निकाल दें। बुराई की शुरुआत भी इन ही की तरफ़ से है। बद्र के दिन लश्कर लेकर निकले, मालूम हो चुका कि क़ाफ़िला बचकर चला गया है। लेकिन ताहम गुरूर व घमण्ड से रब्बानी लश्कर को हराने के इरादे से मुसलमानों से भिड़ गए। जैसा कि पूरा वाक़िया इससे पहले बयान हो चुका है। उन्होंने वादाख़िलाफ़ी की और अपने हलीफ़ों के साथ मिलकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हलीफ़ों से जंग की, बनूबक्र की ख़ुज़ाआ के ख़िलाफ़ मदद की, इस वादाख़िलाफ़ी की वजह से हुज़ूर (ﷺ) ने उन पर लश्करकशी की, उनकी ख़ूब सरकूबी की और मक्का फ़तह किया, अल्हम्दु लिल्लाह!

फ़र्माता है कि तुम इन नजिस (नापाक) लोगों से डर खाते हो। अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारे दिल में सिवाए अल्लाह तआला के किसी का डर नहीं होना चाहिए, वही इस लायक़ है कि उससे ईमान वाले डरते रहें। और आयत में है उनसे न डरो, सिर्फ़ मुझसे डरते रहो, मेरा ग़ल्बा मेरी सल्तनत मेरी सज़ा मेरी क़ुदरत मेरी मिल्कियत बेशक इस क़ाबिल है कि हर वक़्त हर दिल मेरी हैबत से लरज़ता रहे तमाम काम मेरे हाथ में हैं जो चाहूँ कर सकता हूँ और कर गुज़रता हूँ। मेरी मंशा के बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता। मुसलमानों पर जिहाद की फ़र्ज़ियत का राज़ बयान हो रहा है कि अल्लाह तआला क़ादिर था जो अजाब चाहता उन पर भेज देता लेकिन उसकी मंशा यह है कि तुम्हारे हाथों उन्हें सज़ा दे उनकी बर्बादी तुम आप करो, तुम्हारे दिल की ख़ूब भड़ास निकल जाए और तुम्हें राहत व आराम शादमानी व कामरानी हासिल हो। यह बात कुछ उन ही के साथ मख़सूस न थी बल्कि तमाम मोमिनों के लिए भी है। ख़ुसूसन ख़ुज़ाआ का क़बीला जिन पर क़ुरैश ने वादाख़िलाफ़ी करते हुए अपने हलीफ़ों में मिलकर चढ़ दौड़े उनके दिल उसी वक़्त ठण्डे होंगे, उनके ग़ुबार उसी वक़्त धुलेंगे जब मुसलमानों के हाथों काफ़िर हार जाएँ। इब्ने असाकिर में है कि जब हज़रत आइशा (रज़ि.) ग़ज़बनाक हो जातीं तो आप (ﷺ) उनकी नाक पकड़ लेते और फ़र्माते, ऐ उवेश! यह दुआ करो (अल्लाहुम्मा रब्बन्नबी मुहम्मदिन इग़्फ़िर व अज़्हिब ग़ैज़ा क़ल्बी व अजिर-नी मिम्मुज़िल्लातिल फ़ितनि) ऐ अल्लाह! मुहम्मद (ﷺ) के परवरदिगार! मेरे गुनाह बख़्श और मेरे दिल का गुस्सा दूर कर और मुझे गुमराहकुन फ़ित्नों से बचा ले। अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिस की चाहे तौबा क़बूल कर ले, वह अपने बन्दों की तमामतर मस्लिहतों से ख़ूब आगाह है, अपने तमाम कामों में अपनी शरई अहकाम में अपने तमाम हुक्मों में हिक्मत वाला है जो चाहता है करता है जो इरादा करता है हुक्म देता है वह आदिल व हाकिम है, ज़ुल्म से पाक है, एक ज़र्रा बराबर भलाई बुराइ ज़ाया नहीं करता बल्कि उसका बदला दुनिया और आख़िरत में देता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ
لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : "क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालाँकि अब तक अल्लाह तआला ने तुममें से उन्हें मुम्ताज़ (अलग) नहीं किया जो मुजाहिद हैं और जो अल्लाह तआला के और उसके रसूल (ﷺ) के और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाते, अल्लाह तआला ख़ूब ख़बरदार है हर उस काम से जो तुम कर रहे हो। (16) नामुम्किन है कि मुश्रिक अल्लाह तआला की मस्जिदों को आबाद करें वह ख़ुद अपने कुफ़्र के आप ही गवाह हैं, उनके आमाल ग़ारत व इकारत हैं, और वह दाइमी (हमेशगी) तौर पर जहन्नमी हैं। (17) अल्लाह की मस्जिदों की रौनक़ व आबादी तो उनके हिस्से में है जो अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों, नमाज़ों के पाबन्द हों, ज़कात देते हों, अल्लाह तआला के सिवा किसी से न डरते हों, यही लोग यक़ीनन सीधी राह पर हैं।" (18)

जिहाद और मुसलमानों का इम्तिहान (आयत 16-18) : यह नामुम्किन है कि इम्तिहान बग़ैर मुसलमान भी छोड़ दिए जाएँ, सच्चे झूठे को ज़ाहिर कर देना ज़रूरी है। वलीजा के मअ़नी भेदी और दख़ल देने वाले के हैं। पस सच्चे वह हैं जो जिहाद में आगे बढ़कर हिस्सा लें और ज़ाहिर बातिन में अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़ैरख़्वाही और हिमायत करें। एक क़िस्म का बयान दूसरी क़िस्म को ज़ाहिर कर देता था, इसलिए दूसरी क़िस्म के लोगों का बयान छोड़ दिया, ऐसी इबारतें शायरों के शेअ़रों में भी हैं। और जगह क़ुरआने करीम में है कि क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि वह सिर्फ़ यह कहने से छोड़ दिये जाएँगे कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश होगी ही नहीं, हालाँकि अगले मोमिनों की भी हमने आज़माइश की, याद रखो कि अल्लाह तआला सच्चों और झूठों को ज़रूर अलग-अलग कर देगा। (29/अन्कबूत : 2, 3) और आयत में इसी मज़्मून को (اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ) (3/आले इमरान : 142) के लफ़्ज़ों से बयान

फ़र्माया है और आयत में है (مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى) (3/आले इमरान : 179) अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि तुम मोमिनों को तुम्हारी हालत पर ही छोड़ दे और इम्तिहान करके यह न मालूम कर ले कि ख़बीस कौन है और पाक कौन है? पस जिहाद के मशरूअ करने में एक हिक्मत यह भी है कि खरे खोटे की तमीज़ हो जाती है। भले अल्लाह तआला हर चीज़ से वाक़िफ़ है जो होगा वह भी उसे मालूम है और जो नहीं हुआ वह जब होगा तब किस तरह होगा यह भी वह जानता है चीज़ के होने से पहले ही उसे उसका इल्म हासिल है और हर चीज़ की हालत से वह वाक़िफ़ है लेकिन वह चाहता है कि दुनिया पर भी खरा खोटा, सच्चा झूठा ज़ाहिर कर दे। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं , न उसके सिवा कोई परवरदिगार है न उसकी क़ज़ा व क़द्र व इरादे को कोई बदल सकता है।

मसाजिद अहले ईमान ही आबाद करते हैं : यानी अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वालों को अल्लाह तआला की मस्जिदों की आबादी करने वाले बनना लायक़ ही नहीं, यह मुश्रिक हैं, अल्लाह तआला के घर से उन्हें क्या ताल्लुक़ (मसाजिद) को (मस्जिद) भी पढ़ा है पस मुराद मस्जिदे हराम है जो रूए ज़मीन की मस्जिदों से अशरफ़ है जो पहले दिन से सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत के लिए बनाई गई है जिसकी बुनियादें ख़लीलुल्लाह ने रखी थीं। और यह लोग मुश्रिक हैं हाल व क़ाल दोनों ऐतिबार से। तुम नसरानी से पूछो, वह साफ़ कहेगा मैं नसरानी हूँ। यहूद से पूछो, वह अपनी यहूदियत का इक़रार करेंगे, साबी से पूछो वह भी अपना साबी होना अपनी ज़ुबान से कहेगा, मुश्रिक भी अपने मुश्रिक होने के इक़रारी हैं उनके इस शिर्क की वजह से उनके आमाल इकारत हो चुके हैं और वह हमेशा के लिए जहन्नमी हैं। यह तो मस्जिदे हराम से औरों को रोकते ही हैं यह भले कहें लेकिन दरअसल अल्लाह तआला के ओलिया नहीं ओलिया अल्लाह तो वह हैं जो मुत्तक़ी हों लेकिन अक्सर लोग इल्म से कोरे और ख़ाली होते हैं। (8/अन्फ़ाल : 34)

हाँ! मस्जिदों की आबादी मोमिनों के हाथों होती है। पस जिसके हाथ से मस्जिदों की आबादी हो उसके ईमान का क़ुरआन गवाह है। मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, "जब तुम किसी को मस्जिद में आने जाने की आदत वाला देखो तो उसके ईमान की शहादत दो" फिर आप (ﷺ) ने यही आयत तिलावत फ़र्माई। (तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी हुर्मतिस्सलाति : 2617; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। इब्ने माजा : 802; अहमद : 3/68; इब्ने हिब्बान : 1721; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1502; हाकिम : 1/212) और हदीस में है "मस्जिदों के आबाद करने वाले अल्लाह वाले हैं।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और हदीस में है कि "अल्लाह तआला उन मस्जिदों वालों पर नज़रें डालकर अपने अज़ाब पूरी क़ौम पर से हटा लेता है।" (इसकी सनद में उस्मान बिन दीनार है जिसे इमाम ज़हबी (रह.) ने ला यौआ वल ख़बरू किज़्बुम् बय्यिनुन कहा है। (अल्मीज़ान : 3/33; रक़म : 5502) और हदीस में है "अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की अपने जलाल की क़सम! कि मैं ज़मीन वालों को अज़ाब करना चाहता हूँ लेकिन अपने घरों के आबाद करने वालों और अपनी राह में आपस में मुहब्बत रखने वालों और सुबह सेहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार (तौबा) करने वालों पर नज़रें डालकर अपने अज़ाब हटा लेता हूँ।" (शुअबुल ईमान 9051 इसकी सनद में भी सालेह अल्मुर्री ज़ईफ़ रावी है। लिहाज़ा यह रिवायत

ज़ईफ़ है।) इब्ने असाकिर में है कि "शैतान इंसान का भेड़िया है जैसे बकरियों का भेड़िया होता है कि वह अलग थलग पड़ी हुई इधर-उधर की बकरी को पकड़कर ले जाता है पस तुम फूट और इख़्तिलाफ़ से बचो, जमाअत को और इमाम को और मस्जिदों को लाज़िम पकड़े रहो।" (अहमद : 5/232, 233; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हिल्यतुल औलिया : 2/257) अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) का बयान है कि मस्जिदें इस ज़मीन पर अल्लाह तआला का घर हैं जो यहाँ आए अल्लाह तआला पर हक़ है कि उसकी इज़्ज़त करे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं जो नमाज़ की अज़ान सुनकर फिर भी मस्जिद में आकर बाजमाअत नमाज़ न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होती वह अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) का नाफ़र्मान है। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि मस्जिदों की आबादी करने वाले अल्लाह तआला के और क़यामत के मानने वाले ही होते हैं।

फिर फ़र्माया यह नमाज़ी होते हैं बदनी इबादत नमाज़ के पाबंद होते हैं और माली इबादत ज़कात के भी अदा करने वाले होते हैं उनकी भलाई अपने लिए भी होती है और फिर आम मख़्लूक़ के लिए भी होती है, उनके दिल अल्लाह तआला के सिवा और किसी से डरते नहीं यही सीधी राह पाने वाले हैं। मुवह्हिद, ईमान वाले, क़ुरआनो हदीस के मातहत पाँचों नमाज़ों के पाबन्द, सिर्फ़ अल्लाह तआला का डर रखने वाले, उसके सिवा दूसरे की बंदगी न करने वाले ही सीधी राह पर और कामयाब और मक़्सद पाने वाले हैं। यह याद रहे कि बक़ौले हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) क़ुरआने करीम में जहाँ भी लफ़्ज़ (असा) है वहाँ यक़ीन के मअनी में है, उम्मीद के मअनी में नहीं, मस्लन फ़र्मान है (عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا) (17/इस्रा : 79) तो मक़ामे महमूद में पहुँचाना यानी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का शाफ़ेअे महशर बनना यक़ीनी चीज़ है जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं (असा) कलामुल्लाह में हक़ व यक़ीन के लिए आता है।

***

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ ١٩ اَلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ
اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۞ ٢٠ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ
فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۞ ٢١ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞ ٢٢

तर्जुमा : "क्या तुमने हाजियों को पानी देना और मस्जिदे हराम की ख़िदमत करना उसके बराबर कर दिया है जो अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और अल्लाह की राह में जिहाद करे, यह अल्लाह तआला के नज़दीक बराबरी के नहीं हैं, अल्लाह तआला बेइंसाफ़ों को राह नहीं दिखाता है (19) जो लोग ईमान लाए, हिज्रत की अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, वह अल्लाह तआला के यहाँ बहुत बड़े मर्तबे वाले हैं, और यही लोग मुराद पाने वाले हैं। (20) इन्हें इनका रब ख़ुशख़बरी देता है अपनी रहमत की और रज़ामंदी की और जन्नतों की, इनके लिए वहाँ हमेशा की नेअमत है। (21) वहाँ यह हमेशा रहने वाले हैं, अल्लाह तआला के पास यक़ीनन बहुत बड़ा सवाब हैं।"(22)

ईमान के बग़ैर नेक आमाल कोई फ़ायदा न देगा (आयत 19-22) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि काफ़िरों का क़ौल था कि बैतुल्लाह शरीफ़ की ख़िदमत और हाजियों के पानी पिलाने की सआदत बेहतर है, ईमान व जिहाद से। हम चूँकि यह दोनों ख़िदमतें अंजाम दे रहे हैं इसलिए हमसे बेहतर कोई नहीं। अल्लाह तआला ने उनका फ़ख़्र व गुरूर और हक़ से तकब्बुर और मुँह फेरना बयान किया कि मेरी आयतों की तुम्हारे सामने तिलावत होते हुए तुम इससे बेपरवाही से मुँह मोड़कर अपनी कथा में मशग़ूल हो। (23/मोमिनून : 67) पस तुम्हारा गुमान बेजा तुम्हारा गुरूर ग़लत तुम्हारा फ़ख़्र नामुनासिब है। यूँ भी अल्लाह तआला के साथ का ईमान और उसकी राह का जिहाद बड़ी चीज़ है लेकिन तुम्हारे मुक़ाबले में तो वह और भी बड़ी चीज़ है क्योंकि तुम्हारी तो कोई नेकी भी हो उसे शिर्क का घुन खा जाता है। पस फ़र्माता है कि यह दोनों गिरोह बराबर के भी नहीं यह तो अपने तईं आबादी करने वाला कहते थे अल्लाह तआला ने इनका नाम ज़ालिम रखा, अल्लाह तआला के घर की इनकी ख़िदमत बेकार कर दी। (तब्री : 14/170) कहते हैं कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने अपनी क़ैद के ज़माने में कहा था कि तुम अगर इस्लाम व जिहाद में थे तो हम भी अल्लाह तआला के घर की ख़िदमत और हाजियों को आराम पहुँचाने में थे। इस पर यह आयत उतरी कि शिर्क के वक़्त की नेकी बेकार है। (तब्री : 14/170) सहाबा किराम (रज़ि.) ने उन पर जब ले दे शुरू की तो हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा था कि हम मस्जिदे हराम के मुतवल्ली थे, हम गुलामों को आज़ाद करते थे, हम बैतुल्लाह शरीफ़ को ग़िलाफ़ चढ़ाते थे, हम हाजियों को पानी पिलाते थे, इस पर यह आयत उतरी। (तब्री : 14/172) मरवी है कि यह बातचीत हज़रत अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) में हुई थी। मरवी है कि तलहा बिन शैबा, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) बैठे-बैठे अपनी बुज़ुर्गियाँ बयान करने लगे, तलहा ने कहा, मैं बैतुल्लाह का कुंजीबरदार हूँ, मैं अगर चाहूँ वहाँ रात गुज़ार सकता हूँ। अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मैं ज़मज़म का पानी पिलाने वाला हूँ और उसका निगहबान हूँ अगर चाहूँ मस्जिद में सारी रात रह सकता हूँ। अली (रज़ि.) ने कहा, मैं नहीं जानता कि तुम दोनों साहब क्या कह रहे हो? मैंने लोगों से छः माह पहले क़िब्ला की तरफ़ नमाज़ पढ़ी है, मैं मुजाहिद हूँ। इस पर यह आयत उतरी। अब्बास (रज़ि.) ने अपना डर ज़ाहिर किया कि कहीं मैं चाहे ज़मज़म के पानी के ओहदे से न हटा दिया जाऊँ, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! आप अपने मंसब पर क़ायम रहिए आपके लिए इसमें भलाई है।" (तफ़्सीरुल क़ुरआन लि अब्दिर्रज़्ज़ाक़

: 1/243; तब्री : 14/171) इस आयत की तफ़्सीर में एक मरफ़ूअ ह़दीस वारिद हुई है जिसका ज़िक्र भी यहाँ ज़रूरी है। ह़ज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) कहते हैं कि एक शख़्स ने कहा, इस्लाम के बाद अगर मैं कोई अ़मल न करूँ तो मुझे परवाह नहीं सिवाए इसके कि मैं ह़ाजियों को पानी पिलाऊँ। दूसरे ने इसी त़रह़ मस्जिदे ह़राम की आबादी को कहा। तीसरे ने इसी त़रह़ अल्लाह की राह के जिहाद को कहा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें डांट दिया और फ़र्माया, मिम्बरे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आवाज़ें बुलंद न करो। यह वाक़िया जुम्अ़े के दिन का है, जुम्आ के बाद हम सब हुज़ूर (ﷺ) के पास ह़ाज़िर हुए और आप (ﷺ) से पूछा तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई। (तब्री : 14/169; अह़मद : 4/269) और रिवायत में है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने वादा किया था कि नमाज़े जुम्आ के बाद मैं आप जाकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से यह बात पूछ लेंगे। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब फ़ज़्लुश्शहादति फ़ी सबीलिल्लाहि तआ़ला : 1879; अह़मद : 4/269)

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "ऐ मुसलमानों! दोस्त न बनाओ अपने बापों को और अपने भाईयों को अगर वह कुफ़्र को इस्लाम से अ़ज़ीज़ (प्यारा) रखें तुममें से जो भी उनसे मुह़ब्बत रखे, वह पूरा गुनहगार ज़ालिम है। (23) कह दे कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुंबे क़बीले और तुम्हारे कमाए हुए माल और वह तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो और वह हवेलियाँ जिन्हें तुम पसंद करते हो अगर यह तुम्हें अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (ﷺ) से और उसकी राह के जिहाद से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं तो तुम अल्लाह तआ़ला के हुक्म से अ़ज़ाब के आने का इंतिज़ार करो, अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ों को हिदायत नहीं करता।" (24)

तर्के मवालात (दोस्ती) व मवद्दत का हुक्म (आयत 23, 24) : अल्लाह तआ़ला काफ़िरों से तर्के मवालात (दोस्ती) का हुक्म देता है, उनकी दोस्तियों से रोकता है, भले वह माँ बाप हों, भाई बहन हों,

बशर्तेकि वह कुफ़्र को इस्लाम पर पसंद करें। और आयत में है (لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ) (58/मुजादिला : 22) अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाने वालों को तू हर्गिज़ अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) के दुश्मनों से दोस्तियाँ करने वाला नहीं पाएगा भले वह उनके बाप हों, या बेटे हों, या भाई हों या रिश्तेदार हों, यही लोग हैं जिनके दिलों में ईमान लिख दिया है और अपनी ख़ास रूह से उनकी ताईद फ़र्माई है, उन्हें नहरों वाली जन्नत में पहुँचाएगा। बैहक़ी में है कि हज़रत उबेदह बिन जर्राह (रज़ि.) के बाप ने बद्र वाले दिन उनके सामने अपने बुतों की तारीफ़ें शुरू कीं, आप (रज़ि.) ने उसे हर चंद रोकना चाहा लेकिन वह बढ़ता ही चला गया, बाप बेटों में जंग शुरु हो गई। आप (रज़ि.) ने अपने बाप को क़त्ल कर दिया इस पर आयत (ला तजिद...) नाज़िल हुई। (बैहक़ी : 9/27; वक़ाल हाज़ा मुन्क़तअ फ़स्सनदु ज़ईफ़) फिर ऐसा करने वालों को डराता है और फ़र्माता है कि अगर यह रिश्ते और अपने हासिल किए हुए माल और मंदे हो जाने की दहशत की तिजारतें और पसंदीदा मकानात अगर तुम्हें अल्लाह तआला व रसूल (ﷺ) से और जिहाद से भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं तो तुम्हें अल्लाह तआला के अज़ाबों को सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे बदकारों को अल्लाह तआला भी रास्ता नहीं दिखाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) के साथ जा रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) का हाथ आप (ﷺ) के हाथ में था। हज़रत उमर (रज़ि.) कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) मुझे हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ हैं सिवाए मेरी अपनी जान के। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुममें से कोई मोमिन न होगा जब तक कि वह मुझे अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ न रखे।'' हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ''अल्लाह की क़सम! अब आप (ﷺ) की मुहब्बत मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अब ऐ उमर (रज़ि.)! तुम मोमिन हो गये।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर, बा कैफ़ कानत यमीनुन्नबी (ﷺ) : 6632; अहमद : 4/233) सही हदीस में आप (ﷺ) का फ़र्मान साबित है कि ''उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुममें से कोई ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उसके माँ बाप से, औलाद से और दुनिया के तमाम लोगों से ज़्यादा अज़ीज़ न हो जाऊँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बा हुब्बुर्रसूल (ﷺ) मिनल ईमान : 15; सहीह मुस्लिम : 44; मुस्नद अबी अवाना : 1/41; अहमद : 3/177; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11744; इब्ने माजा : 67; दारमी : 2/397; इब्ने हिब्बान : 179) मुस्नद इमाम अहमद और अबूदाऊद में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब तुम ऐन (माल) की ख़रीदो फ़रोख़्त करने लगोगे और गाय बैल की दुमें थाम लोगे और जिहाद छोड़ दोगे, तब अल्लाह तआला तुम पर ज़िल्लत डाल देगा वह दूर न होगी जब तक कि तुम अपने दीन की तरफ़ लौट न आओ।'' (अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब फ़िन्नही अनिल ईनत : 3462; व सनदुहू ज़ईफ़; इस्हाक़ बिन उसैद क़ौले राजेह में ज़ईफ़ रावी है।)

***

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ
عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝٢٥ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٦ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٧

तर्जुमा : "यक़ीनन अल्लाह तआला ने बहुत से मैदानों में तुम्हें फ़तह दी है और हुनैन की लड़ाई वाले दिन भी जबकि तुम्हें अपनी ज़्यादा तादाद पर नाज़ होने लगा था लेकिन उस तादाद ने तुम्हें कोई फ़ायदा न दिया बल्कि ज़मीन बावजूद अपने फैलाव के तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (25) फिर अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ की तस्कीन अपने नबी पर और मोमिनों पर उतारी, और अपने आसमानी लश्कर भेजे, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे और काफ़िरों को पूरी सज़ा दी, उन कुफ़्फ़ार का यही बदला था। (26) फिर उसके बाद भी जिस पर चाहे अल्लाह तआला रहमत की तवज्जह फ़र्माएगा, अल्लाह तआला है ही बख़्शने वाला और रहम करने वाला।" (27)

जंगे हुनैन का तज़्किरा और अल्लाह की मदद का बयान (आयत 25-27) : मुजाहिद (रह.) कहते हैं बरा'त की यह पहली आयत है जिसमें अल्लाह तआला अपना बहुत बड़ा एहसान मोमिनों पर ज़िक्र कर रहा है कि उसने अपने नबी (ﷺ) के साथियों की ख़ुद मदद फ़र्माई, उन्हें दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया और एक जगह नहीं हर जगह उसकी मदद शामिले हाल रही, इसी वजह से फ़तह व ज़फ़र ने कभी हमरकाबी न छोड़ी। यह सिर्फ़ ताईदे इलाही थी, न कि माल अस्बाब और हथियार की फ़रावानी और न तादाद की ज़्यादती। याद कर लो, हुनैन वाले दिन ज़रा तुम्हें अपनी तादाद की ज़्यादती पर नाज़ हो गया था तो क्या हाल हुआ, पीठ दिखाकर भाग निकले। गिने चुने चंद लोग ही अल्लाह के पैग़म्बर (ﷺ) के साथ रह गये, उसी वक़्त अल्लाह तआला की मदद नाज़िल हुई, उसने दिलों में सुकून डाल दिया, यह इसलिए कि तुम्हें मालूम हो जाए कि मदद उसी रब की तरफ़ से है उसकी मदद से छोटी-छोटी जमाअतों ने बड़े बड़े गिरोह के मुँह फेर दिए हैं, अल्लाह तआला की मदद सब्र करने वालों के साथ होती है। यह वाक़िया हम अन्क़रीब तफ़्सीलवार बयान करेंगे. इंशाअल्लाह तआला!

मुस्नद की हदीस में है कि "बेहतरीन साथी चार हैं और बेहतरीन छोटा लश्कर चार सौ का है और

बेहतरीन बड़ा लश्कर चार हज़ार का है और बारह हज़ार की तादाद तो अपनी कमी के बाइस कभी मग़लूब नहीं हो सकती।" (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी मा यस्तहिब मिनल जुयूशि वर्रुफ़क़ाअ वस्सराया : 2611; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने शिहाब ज़ोहरी मुदल्लस रावी हैं और सिमाअ की सराहत नहीं। तिर्मिज़ी 1555; अहमद : 1/294; इब्ने ख़ुज़ैमा : 2538; इब्ने हिब्बान : 1663; हाकिम : 1/443) यह हदीस अबूदाऊद और तिर्मिज़ी में भी है, इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं। यह रिवायत सिवाए एक रावी के बाक़ी सब रावियों ने मुर्सलन बयान की है, इब्ने माजा और बैहक़ी में भी यह रिवायत इसी तरह मरवी है, वल्लाहु आलम! 8 हिज्री में फ़तहे मक्का के बाद माहे शव्वाल में जंगे हुनैन हुई थी। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़तहे मक्का से फ़ारिग़ हुए और इब्तिदाई उमूर सब अंजाम दे चुके और उमूमन मक्की हज़रात मुसलमान हो चुके और उन्हें आप आज़ाद भी कर चुके तो आपको ख़बर मिली कि क़बीला हवाज़िन जमा हुआ है और आप (ﷺ) से जंग करने पर आमादा है, उनका सरदार मालिक बिन औफ़ नसरी है। सक़ीफ़ का सारा क़बीला उनके साथ है इसी तरह बनू जशम, बनू सअद बिन बक्र भी हैं और बनू हिलाल के भी कुछ लोग हैं और कुछ लोग बनू अम्र बिन आमिर के और औन बिन आमिर के भी हैं, यह सब लोग अपनी औरतों और बच्चों और घरेलू माल के साथ मैदान में निकल खड़े हुए हैं, यहाँ तक कि अपनी बकरियों और ऊँटों को भी उन्होंने साथ रखा है तो आप (ﷺ) अपने इस लश्कर को लेकर जो आप (ﷺ) के साथ मुहाजिरीन और अंसार वग़ैरह का था उनके मुक़ाबले के लिए चले। तक़रीबन दो हज़ार नौ मुस्लिम मक्की भी आप (ﷺ) के साथ हो लिए। मक्का और ताइफ़ के बीच की वादी में दोनों लश्कर मिल गए, उस जगह का नाम हुनैन था। सुबह सवेरे मुँह अंधेरे क़बीला हवाज़िन जो कमीनगाह (घात की जगह) में छुपे हुए थे उन्होंने बेख़बरी में मुसलमानों पर अचानक हमला कर दिया, बेपनाह तीरअंदाज़ी करते हुए आगे बढ़े और तलवारें चलानी शुरू कर दीं। यहाँ तक कि मुसलमानों में दफ़अतन (अचानक) अब्तरी फैल गई और मुँह फेरकर भाग खड़े हुए। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) उनकी तरफ़ बढ़े। आप (ﷺ) उस वक़्त सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे, हज़रत अब्बास (रज़ि.) आप (ﷺ) के जानवर की दाईं जानिब से नकेल थामे हुए थे और हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) बाईं तरफ़ से नकेल पकड़े हुए थे, जानवर की तेज़ी को यह लोग रोक रहे थे, आप (ﷺ) बाआवाज़े बुलंद अपने तईं पहुँचवा रहे थे, मुसलमानों को वापसी का हुक्म कर रहे थे और आवाज़ देते जा रहे थे कि "अल्लाह के बन्दो! कहाँ चले, मेरी तरफ़ आओ, मैं अल्लाह तआला का सच्चा रसूल हूँ, मैं नबी हूँ, झूठा नहीं हूँ, मैं औलादे अब्दुल मुत्तलिब में से हूँ।" आप (ﷺ) के साथ उस वक़्त सिर्फ़ अस्सी या सौ के क़रीब सहाबा रह गये थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.), हज़रत उमर (रज़ि.), हज़रत अब्बास (रज़ि.), हज़रत अली (रज़ि.), हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.), हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस (रज़ि.), हज़रत ऐमन बिन उम्मे ऐमन (रज़ि.) हज़रत उसामा बिन ज़ेद (रज़ि.) वग़ैरह आपके साथ ही थे। फिर आप (ﷺ) ने अपने चचा हज़रत अब्बास (रज़ि.) को जो बहुत बुलंद आवाज़ वाले थे, हुक्म दिया कि "दरख़्त के नीचे बेअत करने वाले मेरे सहाबियों को आवाज़ दो कि वह न भागें।" पस आप (ﷺ) ने यह कहकर कि ऐ बबूल के दरख़्त तले बेअत करने वालो! ऐ सूरह बक़रह के हामिलो! पस यह आवाज़ उनके कानों में पहुँची थी कि उन्होंने हर तरफ़ से (लब्बैक लब्बैक) कहना शुरु किया और आवाज़ की जानिब लपक पड़े

और उसी वक़्त लौटकर आप (ﷺ) के आस-पास आकर खड़े हो गए, यहाँ तक कि अगर किसी का ऊँट अड़ गया तो उसने अपनी ज़िरह पहन ली, ऊँट पर से कूद गया और पैदल आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। जब कुछ जमाअत आप (ﷺ) के आस-पास जमा हो गई। आप (ﷺ) ने अल्लाह तआला से दुआ करना शुरु की कि "बारी तआला जो वादा तेरा मेरे साथ है, उसे पूरा फ़र्मा।" फिर आप (ﷺ) ने ज़मीन से मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली और उसे काफ़िरों की तरफ़ फेंका जिससे उनकी आँखें और उनका चेहरा भर गया, वह लड़ाई के क़ाबिल न रहे, इधर मुसलमानों ने उन पर हमला बोल दिया, उनके क़दम उखड़ गए भाग निकले, मुसलमानों ने उनका पीछा किया। और मुसलमानों की बाक़ी फ़ौज हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास पहुँची, इतनी देर में तो उन्होंने उन कुफ़्फ़ार को क़ैद करके हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने ढेर कर दिया।

मुस्नद अहमद में है हज़रत अबू अब्दुर्रहमान फ़हरी (रज़ि.) जिनका नाम यज़ीद बिन उसैद है या यज़ीद बिन उनैस है और कुर्ज़ भी कहा गया है, फ़र्माते हैं कि मैं उस मअरके में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था, दिन सख़्त गर्मी का था, दोपहर को हम दरख़्तों के साये में ठहर गए। सूरज ढलने के बाद मैंने अपने हथियार लगा लिए और अपने घोड़े पर सवार होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ेमे में पहुँचा। सलाम के बाद मैंने कहा, हुज़ूरे अकरम (ﷺ)! हवाएँ ठण्डी हो गई हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! ठीक है, बिलाल: उस वक़्त बिलाल (रज़ि.) एक दरख़्त के साये में थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आवाज़ सुनते ही परिन्दे की तरह गोया उड़कर (लब्बैक व सअदैक व अना फ़िदाउक) कहते हुए हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरी सवारी कसो।" उसी वक़्त उन्होंने ज़ीन निकाली जिसके दोनों पल्ले खजूर की रस्सी के थे जिसमें कोई फ़ख़्र व ग़ुरूर की चीज़ न थी। जब कस चुके तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सवार हुए, हमने सफ़बन्दी कर ली, शाम और रात इसी तरह गुज़री फिर दोनों लश्करों की मुठभेड़ हो गई तो मुसलमान भाग खड़े हुए जैसे कुरआन ने ज़िक्र किया है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने आवाज़ दी कि ऐ अल्लाह के बन्दो! मैं अल्लाह तआला का बन्दा और रसूल हूँ, ऐ मुहाजिरीन! मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ" फिर अपने घोड़े से उतर पड़े, मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली और यह फ़र्माकर कि "इनके चेहरे बिगड़ जाएँ" काफ़िरों की तरफ़ फेंक दी। उसी से अल्लाह तआला ने उन्हें शिकस्त दे दी। उन मुश्रिकों का बयान है कि हममें से एक भी ऐसा न था कि जिसकी आँखों और मुँह में यह मिट्टी न आई हो, उस वक़्त हमें ऐसा मालूम होने लगा कि गोया ज़मीन व आसमान के बीच लोहा किसी लोहे की तश्त पर बज रहा है। (अहमद : 5/286; मुस्नद तयालिसी : 1371; दारमी : 2/219; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब अर्रजुल युनादिर्रजुल फ़यक़ूलु लब्बैक : 5233; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) एक रिवायत में है कि भागे हुए मुसलमान जब एक सौ आप (ﷺ) के पास वापिस पहुँच गये, आप (ﷺ) ने उसी वक़्त हमले का हुक्म दे दिया। पहले तो मुनादी अंसार की थी फिर ख़ज़रज ही पर रह गई, यह क़बीला लड़ाई के वक़्त बड़ा ही साबिर था। आप (ﷺ) ने अपनी सवारी पर से मैदाने जंग का नज़ारा देखा और फ़र्माया, "अब लड़ाई गर्मागर्मी से हो रही है।" उसमें है कि अल्लाह तआला ने जिस काफ़िर को चाहा क़त्ल करा दिया जिसे चाहा क़ैद करा दिया और उनके माल और औलादें अपने नबी अकरम (ﷺ) को फ़ै में दिला दीं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़्वतु हुनैन : 1775; अहमद : 1/207; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 9741; हाकिम : 3/327) हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से किसी ने कहा कि ऐ अबू अम्मारा! क्या तुम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के

पास से हुनैन वाले दिन भाग निकले थे? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) का क़दम पीछे न हटा था, बात यह है कि क़बीला हवाज़िन के लोग तीरअंदाज़ी के फ़न के उस्ताद थे, अल्लाह के फ़ज़्ल से हमने उन्हें पहले ही हमले में शिकस्त दे दी लेकिन जब लोग माले ग़नीमत पर झुक पड़े उन्होंने मौक़ा देखकर फिर जो ताक़त और होशियारी के साथ तीरों की बारिश बरसाई तो यहाँ भगदड़ मच गई, सुब्हानल्लाह! रसूलुल्लाह (ﷺ) की कामिल शुजाअत और पूरी बहादुरी का यह मौक़ा था, लश्कर भाग निकला है, उस वक़्त आप (ﷺ) किसी तेज़ सवारी पर नहीं जो भागने दौड़ने में काम आए बल्कि ख़च्चर पर सवार थे और मुश्रिकों की तरफ़ बढ़ रहे थे और अपने तईं छुपाते नहीं बल्कि अपना नाम अपनी ज़ुबान से पुकार पुकारकर बतला रहे हैं कि न पहचानने वाले भी पहचान लें। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मन क़ाद दाब्बतन ग़ैरुहू फ़िल हर्ब : 2864; सहीह मुस्लिम : 1776; तिर्मिज़ी : 1688) ख़्याल कीजिए कि किस क़द्र ज़ाते वाहिद पर आप (ﷺ) का भरोसा है और कितना कामिल यक़ीन आप (ﷺ) को अल्लाह तआला की मदद पर है, जानते हैं कि अल्लाह तआला अम्रे रिसालत को पूरा करके ही रहेगा और आप (ﷺ) के दीन को दुनिया के और दीनों पर ग़ालिब करके ही रहेगा, फ़सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि अबदन अबदा। अब अल्लाह तआला अपने नबी अकरम (ﷺ) पर और मुसलमानों के ऊपर सकीनत नाज़िल करता है और अपने फ़रिश्तों का लश्कर भेजता है जिन्हें कोई न देख सकता था। एक मुश्रिक का बयान है कि हुनैन वाले दिन जब हम मुसलमानों से लड़ने लगे, एक बकरी का दूध निकाला जाए उतनी देर भी हमने उन्हें अपने सामने जमने नहीं दिया, फ़ौरन भाग खड़े हुए और हमने उनका पीछा करना शुरु किया यहाँ तक कि हमें एक साहब सफ़ेद ख़च्चर पर सवार नज़र आए, हमने देखा कि ख़ूबसूरत नूरानी सफ़ेद चेहरे वाले कुछ लोग उनके आसपास हैं उनकी ज़ुबान से निकला कि तुम्हारे चेहरे बिगड़ जाएँ, वापिस लौट जाओ, बस यह कहना था कि हमें शिकस्त हो गई यहाँ तक कि मुसलमान हमारे कँधों पर सवार हो गए। (तब्री : 14/176) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं भी उस लश्कर में था, आप (ﷺ) के साथ सिर्फ़ अस्सी (80) मुहाजिर व अंसार रह गए थे, हमने पीठ नहीं दिखाई थी, हम पर अल्लाह तआला ने इत्मिनान व सुकून नाज़िल कर दिया था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार दुश्मनों की तरफ़ बढ़ रहे थे, जानवर ने ठोकर खाई, आप (ﷺ) ज़ीन पर से नीचे की तरफ़ झुक गए, मैंने आवाज़ दी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ऊँचे हो जाईए, अल्लाह तआला आप (ﷺ) को ऊँचा ही रखे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया. "एक मुट्ठी मिट्टी की तो भर दो।" मैंने भर दी। आप (ﷺ) ने काफ़िरों की तरफ़ फेंकी जिससे उनकी आँखें भर गईं, फिर फ़र्माया, "मुहाजिर व अंसार कहाँ हैं?" मैंने कहा, यहीं हैं। फ़र्माया, "उन्हें आवाज़ दो।" मेरा आवाज़ देना था कि वह तलवारें तोले हुए लपक लपककर आ गए। अब तो मुश्रिकीन की कुछ न चली और वह भाग खड़े हुए। (अहमद : 1/454; व सनदुहू हसन; कश्फ़ुल अस्तार : 1829; हाकिम : 2/117; दलाइलुन्नबुव्वत लिल बैहक़ी : 5/142; मज्मउज़्ज़वाइद : 6/180)

बैहक़ी की एक रिवायत में है शैबा बिन उस्मान कहते हैं कि हुनैन के दिन जबकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस हालत में देखा कि लश्कर शिकस्त खाकर भाग निकला है और आप अकेले रह गए हैं तो मुझे बद्र वाले दिन अपने बाप और चचा का मारा जाना याद आ गया कि वह अली और हम्ज़ा (रज़ि.) के हाथों मारे गए थे। मैंने अपने जी में कहा कि उनके बदला लेने का इससे अच्छा मौक़ा और कौनसा मिलेगा? आओ

पैग़म्बर को क़त्ल कर दूँ। इस इरादे से मैं आप (ﷺ) की दाईं जानिब बढ़ा लेकिन वहाँ मैंने अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) को पाया। सफ़ेद चाँदी जैसी ज़िरह पहने मुस्तइद खड़े थे। मैंने सोचा कि चचा हैं अपने भतीजे की पूरी हिमायत करेंगे, चलो! बाईं जानिब से जाकर अपना काम करूँ, उधर से आया तो देखा कि अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब खड़े हैं, मैंने कहा, इनके भी चचाज़ाद भाई हैं, अपने भाई की ज़रूर हिमायत करेंगे फिर मैं कावा काटकर पीछे की तरफ़ आया, आप (ﷺ) के क़रीब पहुँच गया, अब यही बाक़ी रह गया था कि तलवार सौंतकर वार कर दूँ कि मैंने देखा कि एक आग का कोड़ा बिजली की तरह चमककर मुझ पर पड़ना चाहता है, मैंने आँखें बंद कर लीं और पिछले पैर पीछे की तरफ़ हटा। उसी वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मेरी जानिब इल्तिफ़ात किया और फ़र्माया, ''शैबा! मेरे पास आ। अल्लाह इसके शैतान को दूर कर दे।'' अब मैंने आँख खोलकर जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ देखा तो वल्लाह! आप (ﷺ) मुझे मेरे कानों और आँखों से भी ज़्यादा महबूब थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''शैबा! जा काफ़िरों से लड़।'' (दलाइलुन्नबुव्वा लिल बैहक़ी : 5/145; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबूबक्र अल्हज़्ली है जिस पर इमाम अहमद इब्ने मुईन, नसाई और बुख़ारी वग़ैरह की जरह है देखिए (अल्मीज़ान : 4/497; रक़म : 10005) शैबा का बयान है कि उस जंग में हुज़ूर (ﷺ) के साथियों में मैं भी था लेकिन मैं इस्लाम की वजह से या इस्लाम की मअरिफ़त की बिना पर नहीं निकला था बल्कि मैंने कहा वाह! यह कैसे हो सकता है कि हवाज़िन क़ुरैश पर ग़ालिब आ जाएँ? मैं आप (ﷺ) के पास ही खड़ा हुआ था जो मैंने अब्लक़ रंग के घोड़े को देखकर कहा, कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो अब्लक़ रंग के घोड़े देख रहा हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''शैबा! वह तो सिवाए काफ़िरों के किसी को नज़र नहीं आते।'' फिर आप (ﷺ) ने मेरे सीने पर हाथ रखकर दुआ की, अल्लाह! शैबा को हिदायत कर, फिर दो बार, तीन बार यही किया और यही कहा, वल्लाह! आपका हाथ हटने से पहले ही सारी दुनिया से ज़्यादा मुहब्बत आप (ﷺ) की मैं अपने दिल में पाने लगा। (दलालुन्नबुव्वा : 5/145, 146; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अय्यूब बिन जाबिर ज़ईफ़ (अत्तक़रीब : 1/89; रक़म : 69) और सदक़ा बिन सईद कमज़ोर रावी है। (अल्मीज़ान : 2/310; रक़म : 387)

हज़रत जुबेर बिन मुत्इम (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं इस ग़ज़्वे में आप (ﷺ) के साथ था, मैंने देखा कि कोई चीज़ आसमान से उतर रही है चींटियों की तरह उसने मैदान घेर लिया और उसी वक़्त मुश्रिकों के क़दम उखड़ गए, वल्लाह! हमें कोई शक नहीं कि वह आसमानी मदद थी। (दलाइलुन्नबुव्वा : 5/146) यज़ीद बिन आ़मिर सुवाई अपने कुफ़्र के ज़माने में जंगे हुनैन में काफ़िरों के साथ थे बाद में यह मुसलमान हो गए थे। उनसे जब पूछा जाता कि उस मौक़े पर तुम्हारे दिलों का रौब व ख़ौफ़ से क्या हाल था? तो वह तश्त में कंकरियाँ रखकर बजाकर कहते बस यही आवाज़ हमें हमारे दिल से आ रही थी। (तबरानी फ़िल कबीर : 22/237, 238; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अस्साइब बिन यसार मज्हूलुल हाल, मज्मउज़्ज़वाइद : 6/183) बुरी तरह कलेजा उछल रहा था और दिल दहल रहा था। सही मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मुझे रौब से मदद दी गई है, मुझे जामेअ कलिमात दिए गए हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (नुसिरतु बिर्रुअब मसीरता शह्र) : 2977; सहीह मुस्लिम : 523; मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 20033) अल्ग़र्ज़ कुफ़्फ़ार को अल्लाह तआ़ला ने यह सज़ा दी और यह उनके कुफ़्र का बदला था। बाक़ी हवाज़िन पर

अल्लाह तआला ने मेहरबानी की उन्हें तौबा नसीब हुई, मुसलमान होकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए, उस वक़्त आप (ﷺ) फ़तहमंदी के साथ लौटते हुए मक्का मुकर्रमा के क़रीब जिअराना के पास पहुँच चुके थे। जंग को बीस दिन के क़रीब गुज़र चुके थे इसीलिए आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अब तुम दो चीज़ों में से एक पसंद कर लो या क़ैदी या माल?" उन्होंने क़ैदियों का वापिस लेना पसंद किया, उन क़ैदियों की छोटों बड़ों की मर्द औरत की, बालिग़ नाबालिग़ की तादाद छः हज़ार की थी। आप (ﷺ) ने यह सब उन्हें लौटा दिये, उनका माल बतौरे ग़नीमत के मुसलमानों में बांटा गया, और नये मुस्लिम जो मक्का के आज़ादकर्दा थे, उन्हें भी आप (ﷺ) ने उस माल में से दिया कि उनके दिल इस्लाम की तरफ़ पूरे माइल हो जाएँ, उनमें से एक एक को सौ सौ ऊँट अता किए। मालिक बिन औफ़ नसरी को भी आप (ﷺ) ने सौ ऊँट दिए और उसको उसकी क़ौम का सरदार बना दिया जैसे कि वह था। उसी की तारीफ़ में उसने अपने मशहूर क़सीदे में कहा है कि मैंने तो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) जैसा न किसी और को देखा, न सुना, देने में और बख़्शिश व अता करने में और क़सूरों को मुआफ़ करने में दुनिया में आप (ﷺ) का सानी (दूसरा) नहीं, आप कल क़यामत के दिन होने वाले तमाम उमूर से बाख़बर फ़र्माते रहते हैं, यही नहीं शुजाअत और बहादुरी में भी आप बेमिस्ल हैं, मैदाने जंग में गरजते हुए शेर की तरह आप (ﷺ) दुश्मनों की तरफ़ बढ़ते हैं।

***

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ
هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
٢٨ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ
يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ٢٩

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों! मुश्रिक बिलकुल ही नापाक हैं वह इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास भी न फटकने पाएँ, अगर तुम्हें मुफ़्लिसी का डर है, तो अल्लाह तआला तुम्हें दौलतमंद कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे, अल्लाह तआला इल्म व हिक्मत वाला है। (28) लड़ो उन लोगों से जो अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान नहीं लाते जो हराम नहीं जानते उसे, जिसे अल्लाह तआला ने और उसके रसूल (ﷺ) ने हराम किया है, न दीने हक़ को क़बूल करते हैं जिन्हें किताब दी गई है यहाँ तक कि वह ज़लीलो ख़ार होकर अपने हाथ से जिज़्या अदा करें।" (29)

हरम की हुदूद में मुश्रिकों का दाख़िला मना है (आयत 28, 29) : अल्लाह तआला अह्कमुल ह़ाकिमीन अपने पाक दीन वाले पाकीज़गी और त़हारत वाले मुसलमान बन्दों को हुक्म करता है कि वह दीन की रू से नजिस मुश्रिकों को बैतुल्लाह के पास न आने दें। यह आयत सन 9 हिज्री में नाज़िल हुई, उसी साल हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के साथ भेजा और हुक्म दिया कि मज्मअ़े ह़ज्ज में ऐलान कर दो कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक ह़ज्ज को न आए और कोई नंगा शख़्स बैतुल्लाह का त़वाफ़ न करे। (तिर्मिज़ी, किताबुल ह़ज्ज, बाब मा जाअ फ़ी कराहियतित्तवाफ़ उ़रयानन : 871; वहुव स़ह़ीहुन : 3092; दारमी : 1919; मुस्नद अबी यअ़ला : 452; बैहक़ी : 9/207; मुस्नद हुमैदी : 48) इस शरई हुक्म को अल्लाह तआ़ला क़ादिर व क़य्यूम ने यूँ ही पूरा किया कि न वहाँ मुश्रिकों को दाख़िला नसीब हुआ, न किसी ने उसके बाद नंगेपन की ह़ालत में अल्लाह तआला के घर का त़वाफ़ किया। ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ग़ुलाम और ज़िम्मी शख़्स को अलग बताते हैं। (तफ़्सीरुल क़ुरआन लि अ़ब्दिर्रज़्ज़ाक़ : 2/46; व सनदुहू स़ह़ीहुन)

मुस्नद की ह़दीस में फ़र्माने रसूले अकरम (ﷺ) है कि ''हमारी इस मस्जिद में इस साल के बाद सिवाए मुआहिदा वाले और तुम्हारे ग़ुलामों के और कोई काफ़िर न आए।'' (अह़मद : 3/392; व सनदुहू ज़ईफ़; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 4/10; इसकी सनद में अश्अ़स बिन सुवार ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 1/79; रक़म : 600) और ह़सन बस़री (रह़.) का ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।) लेकिन इस मरफ़ूअ़ से ज़्यादा सही सनद वाली मौक़ूफ़ रिवायत है। ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह़.) ने फ़र्मान जारी कर दिया था कि यहूद व नस़रानी को मुसलमानों की मस्जिदों में न आने दो। इस मना करने में आप इस आयत की मातह़ती में थे। ह़ज़रत अ़त़ा (रह़.) फ़र्माते हैं कि ह़रम सारा इस हुक्म में मिस्ल मस्जिदे ह़राम के है। यह आयत मुश्रिकों की नजासत पर भी दलील है। सही ह़दीस में है ''मोमिन नजिस नहीं होता।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ग़ुस्ल, बाब अ़र्क़ुल जुंबि व अन्नल मुस्लिम ला यंजिस : 283; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 271; अबूदाऊद : 231; इब्ने अबी शैबा : 1/173; अह़मद : 2/235; अबू अ़वाना : 1/275; इब्ने ह़िब्बान : 1259) बाक़ी रही यह बात कि मुश्रिकों का बदन और ज़ात भी नजिस है या नहीं। पस जुम्हूर का क़ौल तो यह है कि नजिस नहीं इसलिए कि अल्लाह तआला ने अहले किताब का ज़बीह़ा ह़लाल किया है। कुछ ज़ाहिरिया कहते हैं कि मुश्रिकों के बदन भी नापाक हैं। ह़सन (रह़.) फ़र्माते हैं जो उनसे मुस़ाफ़ा करे वह हाथ धो ले। इस हुक्म पर कुछ लोगों ने कहा कि फिर तो हमारी तिजारत का मंदा हो जाएगा, हमारे बाज़ार बेरौनक़ हो जाएँगे और बहुत से फ़ायदे जाते रहेंगे, इसके जवाब में अल्लाह तआला ग़नी व ह़मीद फ़र्माता है कि तुम इस बात से न डरो, अल्लाह तआला तुम्हें और बहुत सी सूरतों से दिला देगा, तुम्हें अहले किताब से जिज़्या दिलाएगा और तुम्हें ग़नी कर देगा। तुम्हारी मस्लिह़तों को तुमसे ज़्यादा तुम्हारा रब जानता है उसका हुक्म उसकी मुमानिअ़त किसी न किसी ह़िक्मत से ही होती है, यह तिजारत इतने फ़ायदे की नहीं जितना फ़ायदा वह तुम्हें जिज़्ये से देगा, इन अहले किताब से जो अल्लाह तआला के और उसके रसूल (ﷺ) के और क़यामत के इंकारी हैं जो किसी नबी के सही मअ़ना में पूरे मुत्तबेअ़ (पैरवी करने वाले) नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशों के और अपने बड़ों की तक़्लीद के पीछे पड़े हुए हैं, अगर उन्हें अपने नबी अकरम (ﷺ) पर अपनी

शरीअत पर पूरा ईमान होता तो वह हमारे इस नबी (ﷺ) पर भी ज़रूर ईमान लाते। इनकी बशारत तो हर नबी देता रहा, इनकी इत्तिबाअ का हुक्म हर नबी ने दिया लेकिन बावजूद इसके व ह इस अशरफ़ुर्रूसुल (ﷺ) के इंकारी हैं, पस अगले नबियों की शरअ से भी दरअसल इन्हें कोई सरोकार भी नहीं, इसी वजह से इन नबियों का ज़ुबानी इक़रार इनके लिए बेसूद है क्योंकि यह सय्यदुल अम्बिया, अफ़ज़लुर्रुसुल, ख़ातिमुन् नबिय्यीन, अक्मलुल मुर्सलीन (ﷺ) से कुफ़्र करते हैं इसलिए इनसे भी जिहाद करो। इनसे जिहाद के हुक्म की यह पहली आयत है उस वक़्त तक आसपास के मुश्रिकीन से जंग हो चुकी थी, उनमें के अक्सर तौहीद के झण्डे के तले आ चुके थे, जज़ीरतुल अरब में इस्लाम ने जगह कर ली थी अब यहूदो नसारा की ख़बर लेने और उन्हें राहे हक़ दिखाने का हुक्म हुआ, सन 9 हिज्री में यह हुक्म उतरा और आप (ﷺ) ने रूमियों से जिहाद की तैयारी की, लोगों को अपने इरादे से ख़बरदार किया, मदीना के आसपास के अरबों को आमादा किया, और तक़रीबन तीस हज़ार का लश्कर लेकर रूम का रुख़ किया, सिवाए मुनाफ़िक़ीन के यहाँ कोई न रुका, सिवाए कुछ के। मौसम सख़्त गर्म था, फलों का वक़्त था, रूम से जिहाद के लिए शाम के मुल्क का दूरदराज़ का कठिन सफ़र था, तबूक तक तशरीफ़ ले गए, वहाँ तक़रीबन बीस (20) दिन क़याम किया, फिर अल्लाह तआला से इस्तिख़ारा करके वापिस लौटे, हालत की तंगी और लोगों की कमज़ोरी की वजह से। जैसे कि अन्क़रीब इसका वाक़िया इंशाअल्लाह तआला बयान होगा। इसी आयत से इस्तिदलाल करके कुछ ने फ़र्माया है कि जिज़्या सिर्फ़ अहले किताब से और उन जैसों से ही लिया जाए, जैसे मजूस हैं। चुनाँचे हिज्र के मजूसियों से हुज़ूर (ﷺ) ने जिज़्या लिया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब अल्जिज़्यतु वल मुवादिअतु मअ अहलज़िम्मति वल हर्ब : 3157; अबूदाऊद : 3043; मुस्नद अबी यअला : 861) इमाम शाफ़ेई (रह.) का यही मज़हब है और मशहूर मज़हब इमाम अहमद (रह.) का भी यही है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं सब अज्मियों से लिया जाए ख़्वाह वह अहले किताब हों ख़्वाह मुश्रिक हों। हाँ! अरब में से सिर्फ़ अहले किताब से ही लिया जाए। इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं कि जिज़्ये का लेना तमाम कुफ़्र से जाइज़ है ख़्वाह वह किताबी हों या मजूसी हों या बुतपरस्त वग़ैरह हों। इन मज़ाहिब के दलाइल वग़ैरह के बस्त (विस्तार) की यह जगह नहीं, वल्लाहु आलम!

पस फ़र्माता है कि जब तक वह ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ अपने हाथों जिज़्या न दें, उन्हें न छोड़ो। पस अहले ज़िम्मा को मुसलमानों पर इज़्ज़त व तौक़ीर देनी और उन्हें बदला व तरक़्क़ी देनी जाइज़ नहीं। सही मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "यहूद व नसारा से सलाम की पहल न करो और जब उनमें से कोई रास्ते में मिल जाए तो उसे तंगी की तरफ़ मजबूर करो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब अन्नही मिन इब्तिदाइ अहलिल किताब बिस्सलामि व कैफ़ा युरद्दु अलैहिम : 2167; अबूदाऊद : 5205; तिर्मिज़ी : 1602) यही वजह थी जो हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उनसे ऐसी ही शर्तें की थी। अब्दुर्रहमान बिन ग़नम अशअरी (रज़ि.) कहते हैं मैंने अपने हाथ से अहदनामा लिखकर हज़रत उमर (रज़ि.) को दिया था कि अहले शाम के फ़लाँ फ़लाँ शहरी लोगों की तरफ़ से यह मुआहिदा है, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) से कि जब आपके लश्कर हम पर आए, हमने आपसे अपनी जान व माल और अहलो अयाल के लिए अमन तलब किया है, हम इन शर्तों पर वह अमन हासिल करते हैं कि हम अपने शहरों में और इनके आस-पास कोई दैर

(मन्दिर)और कोई गिरजाघर और कोई ख़ानक़ाह नया नहीं बनाएँगे। और न ऐसे किसी ख़राबी वाले मकान की इस्लाह करेंगे और जो मिट चुके हैं, उन्हें दुरुस्त नहीं करेंगे, उनमें अगर कोई मुसलमान मुसाफ़िर उतरना चाहे तो रोकेंगे नहीं, ख़्वाह दिन हो ख़्वाह रात हो, हम उनके दरवाज़े राहगुज़र और मुसाफ़िरों के लिए खोल देंगे और जो मुसलमान आए हम उसकी तीन दिन तक मेहमान-नवाज़ी करेंगे, हम अपने उन माकनों या रिहाइशी मकानों वग़ैरह में कहीं किसी जासूस को न छुपाएँगे, मुसलमानों से कोई धोखा फ़रेब न करेंगे,अपनी औलाद को क़ुरआन न सिखाएँगे, शिर्क का इज़्हार न करेंगे, न किसी को शिर्क की तरफ़ बुलाएँगे, हममें से कोई अगर इस्लाम क़बूल करना चाहे हम उसे हर्गिज़ न रोकेंगे, मुसलमानों की तौक़ीर व इज़्ज़त करेंगे, हमारी जगह अगर वह बैठना चाहें तो हम उठकर उन्हें जगह दे देंगे, हम मुसलमानों से किसी चीज़ में बराबरी न करेंगे, न लिबास में न जूती में, न मांग निकालने में, हम उनकी ज़ुबान नहीं बोलेंगे, उनकी कुन्नियतें नहीं रखेंगे, ज़ीन वाले घोड़े पर सवारियाँ न करेंगे, तलवारें न लटकाएँगे, न अपने साथ रखेंगे, अंगूठियों पर अरबी नक़्श नहीं करायेंगे, शराबनोशी नहीं करेंगे, अपने सरों के अगले बालों को तरशवा देंगे और जहाँ कहीं होंगे ज़ुन्नार ज़रूरतन डाले रहेंगे, सलीब का निशान अपने गिरजों पर ज़ाहिर नहीं करेंगे, अपनी मज़हबी किताबें मुसलमानों की गुज़रगाहों और बाज़ारों में ज़ाहिर न करेंगे, गिरजों में नाक़ूस बुलंद आवाज़ से नहीं बजाएँगे, न मुसलमानों की मौजूदगी में बाआवाज़े बलंद अपनी मज़हबी किताबें पढ़ेंगे, न अपने मज़हबी शेआर को रास्तों पर करेंगे, न अपने मुर्दों (जनाज़ों) पर ऊँची आवाज़ से हाय वाय करेंगे, न उनके साथ मुसलमानों के रास्तों पर आग लेकर जाएँगे, मुसलमानों के हिस्से में आए हुए ग़ुलाम हम न लेंगे, मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही ज़रूर करते रहेंगे, उनके घरों में झाँकेंगे नहीं। जब यह अहदनामा फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) की ख़िदमत में पेश हुआ तो आपने एक शर्त और भी उसमें बढ़ा दी कि हम किसी मुसलमान को हर्गिज़ न मारेंगे। यह तमाम शर्तें क़बूल व मंज़ूर हैं और हमारे सब हम मज़हब लोगों को भी इन्हीं शराइत पर हमें अमान मिली है अगर इनमें से किसी एक शर्त की भी हम ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे तो हमसे आपका ज़िम्मा अलग हो जाएगा और जो कुछ आप अपने दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों के साथ करते हैं उन तमाम के मुस्तहिक़ हम भी हो जाएँगे।

***

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝۳۰
اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا
اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۳۱

तर्जुमा : "यहूद कहते हैं उज़ेर (عليه السلام) अल्लाह के बेटे हैं(नऊज़ुबिल्लाह) नसरानी कहते हैं मसीह अल्लाह के बेटे हैं, यह क़ौल सिर्फ़ इनके मुँह की बात है, अगले मुंकिरों की बात की यह भी रेस (बराबरी) करने लगे, उन्हें अल्लाह तआला ग़ारत करे, कैसे पलटाये जाते हैं (30) इन लोगों ने अल्लाह तआला को छोड़कर अपने आलिमों और दरवेशों (पादरियों) को रब बनाया है और मरयम (عليه السلام) के बेटे मसीह को, हालाँकि इन्हें सिर्फ़ एक अकेले अल्लाह तआला ही की इबादत का हुक्म किया गया था जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं , वह पाक है इनके शरीक ठहराने से।" (31)

मुश्रिकों ने नबियों, और नेक लोगों को अल्लाह तआला का शरीक बना दिया (आयत 30, 31) : इन आयतों में भी जनाब बारी तआला मोमिनों को मुश्रिकों, काफ़िरों, यहूदियों, नसरानियों से जिहाद करने की रग़बत दिलाता है। फ़र्माता है देखो वह अल्लाह की शान में कैसी गुस्ताख़ियाँ करते हैं, यहूद उज़ेर (عليه السلام) को अल्लाह तआला का बेटा बतलाते हैं अल्लाह तआला उससे पाक और बरतर व बुलंद है कि उसकी औलाद हो। इन लोगों को हज़रत उज़ेर (عليه السلام) की निस्बत जो यह वहम हुआ उसका क़िस्सा यह है कि जब अमालिक़ा बनी इस्राईल पर ग़ालिब आ गए उनके उलमा को क़त्ल कर दिया, उनके रईसों को क़ैद कर लिया। उज़ेर (عليه السلام) इल्म के उठ जाने से और उलमा के क़त्ल हो जाने से और बनी इस्राईल की तबाही से सख़्त ग़मज़दा हुए और अब जो रोना शुरु किया तो आँखो से आँसू ही न थमते थे, रोते-रोते पलकें भी झड़ गईं। एक दिन इसी तरह रोते हुए एक मैदान से गुज़र हुआ तो देखा कि एक औरत एक क़ब्र के पास बैठी रो रही है और कह रही है हाय! अब मेरे खाने का क्या होगा, मेरे कपड़ों का क्या होगा? आप (عليه السلام) उसके पास ठहर गए और उससे फ़र्माया, इस शख़्स से पहले तुझे कौन खिलाता था और कौन पहनाता था। उसने कहा, अल्लाह तआला। आप (عليه السلام) ने फ़र्माया, फिर अल्लाह तआला तो अब भी ज़िन्दा बाक़ी है उस पर तो कभी मौत आएगी ही नहीं। यह सुनकर उस औरत ने कहा, ऐ उज़ेर (عليه السلام)! फिर तुम यह बतलाओ कि बनी इस्राईल से पहले उलमा को कौन इल्म सिखाता था? आप (अ.) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला! उसने कहा, आप (عليه السلام) यह रोना धोना लेकर क्यूँ बैठे हैं। आप (अ.) की समझ में आ गया कि यह जनाब बारी सुब्हानहू व तआला की तरफ़ से आपको तम्बीह है फिर आप (عليه السلام) से फ़र्माया गया कि फ़लाँ नहर पर जाकर ग़ुस्ल करो वहीं दो रकअत नमाज़ अदा करो, वहाँ तुम्हें एक शख़्स मिलेंगे वह जो कुछ खिलाएँ वह खा लो। चुनाँचे आप (عليه السلام) वहाँ तशरीफ़ ले गए नहाकर नमाज़ अदा की, देखा कि एक शख़्स हैं, कह रहे हैं मुँह खोलो, आप (अ.) ने मुँह खोल दिया तो उन्होंने तीन मर्तबा कोई चीज़ आप (عليه السلام) के मुँह में कोई बड़ी सारी चीज़ डाली, उसी वक़्त अल्लाह तबारक व तआला ने आप (عليه السلام) का सीना खोल दिया, आप (عليه السلام) तौरात के सबसे बड़े आलिम बन गए, बनी इस्राईल में गए, उनसे फ़र्माया कि मैं तुम्हारे पास तौरात लाया हूँ। उन्होंने कहा, आप (عليه السلام) हम सबके नज़दीक सच्चे हैं।

आप (عليه السلام) ने अपनी उँगली के साथ क़लम को पलट लिया और उसी उँगली से एक ही बार में पूरी तौरात लिख डाली। इधर लोग लड़ाई से लौटे, उनमें उनके उलमा भी वापिस आए तो उन्हें उज़ेर (عليه السلام) की

इस बात का इल्म हुआ, यह गए और पहाड़ों और ग़ारों में तौरात शरीफ़ के जो नुस्ख़े छुपा आए थे वह निकाल लाए और उन नुस्ख़ों से हज़रत उज़ेर (ﷺ) के लिखे हुए नुस्ख़े का मिलान किया तो बिलकुल सहीह पाया। इस पर कुछ जाहिलों के दिल में शैतान ने यह वस्वसा डाल दिया कि आप (ﷺ) अल्लाह तआला के बेटे हैं। हज़रत मसीह (ﷺ) को नसरानी अल्लाह तआला का बेटा कहते थे, उनका वाक़िया तो ज़ाहिर है। पस इन दोनों गिरोह की ग़लत बयानी क़ुरआन बयान कर रहा है और फ़र्माता है कि यह उनकी सिर्फ़ ज़ुबानी बातें हैं जो महज़ बेदलील हैं जिस तरह इनसे पहले के लोग कुफ़्र व ज़लालत में थे। यह भी उन्हीं के मुरीद व मुक़ल्लिद हैं। अल्लाह तआला इन्हें लअनत करे, हक़ से कैसे भटक गए।

मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने जरीर में है कि जब अदी बिन हातिम (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) का दीन पहुँचा तो शाम की तरफ़ भाग निकले, जाहिलियत में ही यह नसरानी बन गये थे, यहाँ इनकी बहन और इनकी जमाअत क़ैद हो गई, फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बतौरे एहसान इनकी बहन को आज़ाद कर दिया और रक़म भी दी। यह सीधी अपने भाई के पास गईं और उन्हें इस्लाम की रग़बत दिलाई और समझाया कि तुम रसूले करीम (ﷺ) के पास चले जाओ। चुनाँचे यह मदीना मुनव्वरा आ गए थे, अपनी क़ौम तै के सरदार थे, उनके बाप की सख़ावत दुनियाभर में मशहूर थी। लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर पहुँचाई। आप ख़ुद इनके पास आए। उस वक़्त अदी बिन हातिम (रज़ि.) की गर्दन में चाँदी की सलीब लटक रही थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से इसी आयत (इत्तख़ज़ू) की तिलावत हो रही थी। तो उन्होंने कहा कि यहूद व नसारा ने अपने उलमा और दरवेशों की इबादत नहीं की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! सुनो उनके किए हुए हराम को हराम समझने लगे और जिसे उनके उलमा और दरवेश हलाल कह दें, उसे हलाल समझने लगे, यही उनकी इबादत थी।" फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अदी (रज़ि.)! क्या तुम इससे मुंकिर हो कि अल्लाह तआला सबसे बड़ा है, क्या तुम्हारे ख़्याल में अल्लाह तआला से बड़ा और कोई है, क्या तुम इससे इंकारी हो कि मअबूदे बरहक़ अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं? क्या तुम्हारे नज़दीक उसके सिवा और भी इबादत के लायक़ है?" फिर आप (ﷺ) ने उन्हें इस्लाम की दअवत दी, उन्होंने मान ली और अल्लाह तआला की तौहीद और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की रिसालत की गवाही अदा की। आप (ﷺ) का चेहरा ख़ुशी से चमकने लगा और फ़र्माया, "यहूद पर अल्लाह का ग़ज़ब उतरा है और ईसाई गुमराह हो गए हैं।" (यह रिवायत मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ इन किताबों में मौजूद है। अहमद : 4/378; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3095; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ग़तीफ़ रावी ज़ईफ़ है। 2953; व सनदुहू हसन : 2954; व सनदुहू हसन) हज़रत हुज़ेफ़ा बिन यमान और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से भी इस आयत की तफ़्सीर इसी तरह मरवी है कि इससे मुराद हलाल व हराम के मसाइल में उलमा और अइम्मा की महज़ बातों की तक़्लीद है। (तब्री : 14/212) सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं उन्होंने बुज़ुर्गों की माननी शुरू कर दी और अल्लाह तआला की किताब एक तरफ़ हटा दी, इसीलिए अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है कि उन्हें हुक्म तो सिर्फ़ यह था कि अल्लाह तआला के सिवा और किसी की इबादत न करें, वही जिसे हराम कर दे, हराम है और जिसे हलाल कह दे हलाल है, उसी के फ़र्मान शरीअत हैं, उसी के अहकाम अमल करने

के लायक़ हैं, उसी की ज़ात इबादत की हक़दार है, वह शरीक से और शिर्क से पाक है, उस जैसा उसका शरीक, उसका नज़ीर, उसका मददगार, उसकी ज़िद का नहीं, वह औलाद से पाक है, न उसके सिवा कोई मअबूद, न परवरदिगार।

***

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٣٢ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٣٣

तर्जुमा : ''इनकी चाहत है कि अल्लाह का नूर अपने मुँह की फूँकों से बुझा दें और अल्लाह तआला इंकारी है मगर इसी बात का कि अपना नूर पूरा करेगा भले काफ़िर नाख़ुश रहें। (32) उसी ने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा है कि उसे और तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, अगरचे मुश्रिकों को कितना ही बुरा लगे।'' (33)

फूँकों से हक़ की शमा नहीं बुझ सकती (आयत 32, 33) : फ़र्माता है कि हर क़िस्म के कुफ़्फ़ार का इरादा और चाहत यही है कि अल्लाह तआला का नूर बुझा दें, हिदायते रब्बानी और दीने हक़ को मिटा दें तो ख़्याल कर लो कि अगर कोई शख़्स अपने मुँह की फूँक से आफ़ताब (सूरज) या महताब (चाँद) की रोशनी बुझानी चाहे तो क्या यह हो सकता है? इसी तरह यह लोग भी अल्लाह के नूर के बुझाने की चाहत में अपनी इम्कानी (सम्भावित) कोशिश कर लें आख़िर आजिज़ (लाचार) होकर रह जाएँगे। ज़रूरी बात है और अल्लाह तआला का फ़ैसला है कि दीने हक़ तालीमे रसूलुल्लाह (ﷺ) का बोलबाला होगा। तुम मिटाना चाहते तो अल्लाह तआला बुलंद करना चाहता है, ज़ाहिर बात है अल्लाह तआला की चाहत तुम्हारी चाहत पर ग़ालिब रहेगी, तुम भले नाख़ुश रहो लेकिन आफ़ताबे हिदायत बीच आसमान में पहुँचकर ही रहेगा।

अरबी लुग़त में काफ़िर कहते हैं किसी चीज़ के छुपा लेने वाले को इसी ऐतिबार से रात को भी काफ़िर कहते हैं, इसलिए कि वह भी तमाम चीज़ों को छुपा लेती है, किसान को काफ़िर कहते हैं क्योंकि वह दाने ज़मीन में छुपा देता है। जैसे फ़र्मान है (اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ) (57/हदीद : 20) उसी अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को हिदायत और दीने ह[illegible] के साथ अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा है पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की सच्ची ख़बरें और सही ईमान और नफ़ा वाला इल्म यह हिदायत है और उम्दा आमाल जो दुनिया व आख़िरत में नफ़ा दें, यह दीने हक़ है। यह तमाम मज़ाहिबे आलम पर छाकर रहेगा। रसूले अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेरे लिए ज़मीन की मश्रिक़ व मग़रिब लपेट दिए गए हैं, मेरी उम्मत का मुल्क उन तमाम जगहों तक

पहुँचेगा।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब हलाकु हाज़िहिल उम्मति बअ़ज़ुहुम बिबअ़ज़िन : 2889; अबूदाऊद : 4252; अहमद : 5/278; इब्ने हिब्बान : 7238) फ़र्माते हैं ''तुम्हारे हाथों पर मश्रिक़ व मग़रिब फ़तह होगा। तुम्हारे सरदार जहन्नमी हैं, सिवाए उनके जो मुत्तक़ी, परहेज़गार और अमानतदार हों।'' (अहमद : 5/366, 367; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/233; इसकी सनद में शक़ीक़ बिन ह़य्यान मज्हूल रावी है। (अल्मीज़ान : 2/279; रक़म : 3736) ''यह दीन उन तमाम जगहों पर पहुँचेगा जहाँ पर दिन रात पहुँचती हैं, कोई कच्चा पक्का घर ऐसा बाक़ी न रहेगा जहाँ अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ला इस्लाम को न पहुँचाए। अ़ज़ीज़ों को अ़ज़ीज़ करेगा और ज़लीलों को ज़लील करेगा। इस्लाम को इ़ज़्ज़त देने वालों को इ़ज़्ज़त मिलेगी और कुफ़्र को ज़िल्लत नसीब होगी।'' ह़ज़रत तमीमदारी (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने तो यह बात ख़ुद अपने घर में भी देख ली जो मुसलमान हुआ, उसे ख़ैरो बरकत, इ़ज़्ज़त व शराफ़त मिली और जो काफ़िर रहा, उसे ज़िल्लत व नक्बत नफ़रत व लअ़नत नसीब हुई, पस्ती और ह़क़ारत देखी और मजबूर होकर जिज़्या देना पड़ा। (अह़मद : 4/103; व सनदुहू सह़ीहुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/14; इब्ने हिब्बान : 1631)

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''रूए ज़मीन पर कोई कच्चा पक्का घर ऐसा बाक़ी न रहेगा जिसमें अल्लाह तबारक व तआ़ला कलिम-ए-इस्लाम दाख़िल न कर दे, वह इ़ज़्ज़त वालों को इ़ज़्ज़त देगा और ज़लीलों को ज़लील करेगा जिन्हें इ़ज़्ज़त देनी चाहेगी उन्हें इस्लाम नसीब करेगा और जिन्हें ज़लील करना होगा वह इसे न मानेंगे, लेकिन उसकी मातहती में उन्हें आना पड़ेगा।'' (अह़मद : 6/4; व सनदुहू सह़ीहुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/14) ह़ज़रत अ़दी (रज़ि.) फ़र्माते हैं मेरे पास रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए, मुझसे फ़र्माया, ''इस्लाम क़बूल कर लो ताकि तुम्हें सलामती मिले।'' मैंने कहा, मैं तो एक दीन को मानता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तेरे दीन का तुझसे ज़्यादा मुझे इ़ल्म है।'' मैंने कहा, सच! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''बिलकुल सच! क्या तू रकूसिया में से नहीं है? क्या तू अपनी क़ौम से टेक्स वसूल नहीं करता?'' मैंने कहा, हाँ! यह तो सच है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तेरे दीन में यह तेरे लिए ह़लाल नहीं।' पस यह सुनते ही मैं तो झुक गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुझे इस्लाम से कौनसी चीज़ रोकती है। सुन! सिर्फ़ इसी एक बात की तुझे रोक है कि मुसलमान बिलकुल कमज़ोर और ज़ईफ़ और नातवाँ हैं, तमाम अ़रब उन्हें घेरे हुए हैं, यह पनप नहीं सकते। लेकिन सुन! ह़ीरा (जगह का नाम) का तुझे इ़ल्म है?'' मैंने कहा, देखा तो नहीं! लेकिन सुना तो ज़रूर है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि अल्लाह तआ़ला इस अम्रे दीन को पूरा करेगा यहाँ तक एक साँडनी सवार ह़ीरा से चलकर बग़ैर किसी की अमान के मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँचेगा और बैतुल्लाह का त़वाफ़ करेगा।'' वल्लाह! तुम किसरा के ख़ज़ाने फ़तह़ करोगे। मैंने कहा, किसरा बिन हुर्मुज़ के। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! हाँ! किसरा बिन हुर्मुज़ के, तुममें माल की इस क़द्र ज़्यादती हो जाएगी कि कोई लेने वाला न मिलेगा।'' इस ह़दीस को बयान करते हुए ह़ज़रत अ़दी (रज़ि.) ने फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान पूरा हुआ, यह देखो, आज ह़ीरा से सवारियाँ चलती हैं, बेख़ौफ़ व ख़त़र बग़ैर किसी की पनाह के बैतुल्लाह पहुँचकर त़वाफ़ करती हैं। सादिक़ व मस्दूक़ (ﷺ) की दूसरी पेशीनगोई भी पूरी हुई। किसरा के ख़ज़ाने फ़तह़ हुए, मैं ख़ुद उस फ़ौज में था जिसने ईरान की ईंट से ईंट

बजा दी और किसरा के मख़्फ़ी (छुपाये हुए) ख़ज़ाने अपने क़ब्ज़े में किए। वल्लाह! मुझे यक़ीन है कि सादिक़ मस्दूक़ (ﷺ) की तीसरी पेशीनगोई भी क़त्अन पूरी होकर ही रहेगी। (अहमद : 4/257; व सनदुहू ज़ईफ़; : 378; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/342; इसके कुछ हिस्से सहीह बुख़ारी 3595 में मौजूद हैं।) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "दिन रात का दौर ख़त्म न होगा। जब तक कि फिर लात व उ़ज़्ज़ा की इबादत न होने लगे।" हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, "या रसूलल्लाह (ﷺ)! आयत (हुवल्लज़ी अर्सल) के नाज़िल होने के बाद से मेरा ख़्याल तो आज तक यही रहा कि यह पूरी बात है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! पूरी हो गई और मुकम्मल ही रहेगी जब तक अल्लाह तआ़ला को मंज़ूर हो फिर अल्लाह रब्बुल आ़लमीन एक पाक हवा भेजेगा जो हर उस शख़्स को भी फ़ौत कर लेगी जिसके दिल में राई बराबर भी ईमान होगा। फिर वही लोग बाक़ी रह जाएँगे कि जिनमें कोई ख़ैरख़्वाही न होगी। पस वह अपने बाप दादों के दीन की त़रफ़ फिर से लौट जाएँगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब ला तक़ूमुस्साअ़तु हत्ता तुअ़बदु दौस ज़ुल ख़ल्सा : 2907; मुस्नद अबी यअ़ला : 4565)

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालों! अक्सर उ़लमा और आ़बिद लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं और अल्लाह तआ़ला की राह से रोक देते हैं और जो लोग सोने चाँदी का ख़ज़ाना रखते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाबों की ख़बर पहुँचा दें। (34) जिस दिन उस ख़ज़ाने को आतिशे दोज़ख़ में तपाया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियाँ और पहलू और कमरें दाग़ दी जाएँगी, यह है जिसे तुम अपने लिए ख़ज़ाना बना रहे थे पस अपने ख़ज़ानों का मज़ा चखो।" (35)

यहूदियों के अह़बार और ईसाईयों के रुहबान और उनका किरदार (आयत 34, 35) : यहूदियों के उ़लमा को अह़बार और ईसाईयों के आ़बिदों को रुहबान कहते हैं। आयत (لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ) (5/माइदा : 63) में यहूद के उ़लमा को अह़बार कहा गया है। ईसाईयों के आ़बिदों को रुहबान और उनके

उलमा को क़िस्सीस इस आयत में कहा गया है (ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا) (5/माइदा : 82) मक़्सूद आयत का लोगों को बुरे उलमा गुमराह सूफ़ियों और आबिदों से होशियार करना और डराना है। हज़रत सुफ़ियान बिन उयेयना (रह़.) फ़र्माते हैं हमारे उलमा में से वही बिगड़ते हैं जिनमें कुछ न कुछ शाइबा यहूदियत का होता है और सूफ़ियों और आबिदों में से हम मुसलमानों में वही बिगड़ते हैं जिनमें ईसाईयों का शाइबा होता है। सही हदीस में है कि ''तुम यक़ीनन अपने से पहलों की रविश पर चल पड़ोगे ऐसी पूरी मुशाबिहत से कि ज़रा भी फ़र्क़ न रहे।'' लोगों ने पूछा, क्या यहूदी व नसारा की रविश पर? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''हाँ! उन ही की।'' (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल इअतिसाम बिल किताबि वस्सुन्नति, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) लतत्तबिउन्ना सुननम मन काना क़ब्लकुम : 7320; सहीह़ मुस्लिम : 2669; अहमद : 3/84; इब्ने हिब्बान : 6703) और रिवायत में है कि लोगों ने पूछा, क्या फ़ारसियों और रूमियों की रविश पर? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''और कौन लोग हैं।'' (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल इअतिसाम बिल किताबि वस्सुन्नति, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) लतत्तबिउन्ना सुननम मन काना क़ब्लकुम : 7319) पस इनके क़ौल फ़ेल की मुशाबिहत से बहुत ही बचना जाहिलियत में बड़ा ही रुसूख़ हासिल था, इनके तोहफ़े हदिये इख़्राज चरागी मुक़र्रर थी, जो बेमाँगे इन्हें पहुँच जाती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) की नबुव्वत के बाद इसी तमअ ने इन्हें क़बूले इस्लाम से रोका। लेकिन हक़ के मुक़ाबले की वजह से इस तरफ़ से भी कोरे रहे और आख़िरत से भी गये गुज़रे, ज़िल्लत व हिक़ारत इन पर बरस पड़ी और रब के ग़ज़ब में मुब्तला होकर तबाह व बर्बाद हो गए। यह हरामखानी जमाअत ख़ुद हक़ से रुककर औरों के भी दर पे रहती थी, हक़ को बातिल से ख़लत मलत करके लोगों को भी राहे हक़ से रोक देते थे। जाहिलों में बैठकर गप हाँकते कि हम लोगों को राहे हक़ की तरफ़ बुलाते हैं हालाँकि यह सरीह धोखा है वह तो जहन्नम की तरफ़ बुलाने वाले हैं, क़यामत के दिन यह बे यार व मददगार छोड़ दिए जाएँगे। आलिमों का सूफ़ियों का यानी वाइज़ों और आबिदों का ज़िक्र करके अब अमीरों दौलतमंदों और रईसों का हाल बयान हो रहा है कि जैसे यह दोनों तब्क़े अपने अंदर बदतरीन लोगों को भी रखते हैं ऐसे ही इस तीसरे तब्क़े में भी शरीरुन्नफ़्स लोग होते हैं। उमूमन इन्हें तीन तब्क़े के लोगों का अवाम पर असर होता है, झुण्ड के झुण्ड आमियों के इनके साथ बल्कि इनके पीछे होते हैं पस इनका बिगड़ना गोया मज़हबी दुनिया का नास होना है जैसे कि हज़रत इब्नुल मुबारक (रह़.) कहते हैं (वहल अफ़्सदद्दीना इल्लल मुलूकु व अह़बारु सूइंव्वरुहबानुहा) यानी ''दीन वाइज़ों आलिमों सूफ़ियों और दरवेशों के पलीद तब्क़े से ही बिगड़ता है।''

हराम माल व ज़र और जहन्नम की आग : कंज़ इस्तिलाहे शरअ में उस माल को कहते हैं जिसकी ज़कात अदा न की जाती हो। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से यही मरवी है। (मौता इमाम मालिक, किताबुज़्ज़कात, बाब मा जाअ फ़िल कंज़ : 21 व सनदुहू सहीहुन) बल्कि आप फ़र्माते हैं जिस माल की ज़कात दे दी जाती हो वह अगर सातवीं ज़मीन के नीचे भी हो तो वह कंज़ नहीं और जिसकी ज़कात न दी जाती हो वह भले ज़मीन पर ज़ाहिर फैला पड़ा हो, कंज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से भी मौक़ूफ़न और मरफ़ूअन यही मरवी है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी यही फ़र्माते हैं और फ़र्माते हैं कि बेज़कात के माल से उस मालदार को दाग़ा जाएगा। आप (ﷺ) के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है

कि यह हुक्म ज़कात के उतरने से पहले था, ज़कात का हुक्म नाज़िल करके अल्लाह तआला ने उसे माल की पाकीज़गी बना दी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बरा'त बाब (यौम युह़मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्नम फ़तुक्वा बिहा....) : 4661) ख़लीफ़तुल मोमिनीन हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) और अ़र्राक बिन मालिक (रह.) ने भी यही फ़र्माया है कि इसे क़ौले इलाही (ख़ुज़ मिन अम्वालिहिम) ने मंसूख़ कर दिया है। हज़रत अबू उमामा (रह.) फ़र्माते हैं कि तलवारों का ज़ेवर भी कंज़ यानी ख़ज़ाना है। याद रखो मैं तुम्हें वही सुनाता हूँ जो मैंने जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि चार हज़ार और उससे कम तो नफ़्क़ा है और उससे ज़्यादा कंज़ है लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। माल की कसरत की मज़म्मत और कमी की तारीफ़ में बहुत हदीसें वारिद हुई हैं बतौरे नमूने के हम भी यहाँ इनमें से चंद नक़्ल करते हैं। मुस्नद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "सोने चाँदी वालों के लिए हलाकत है" तीन बार आप (ﷺ) का यही फ़र्मान सुनकर सहाबा किराम (रज़ि.) पर शाक़ गुज़रा और उन्होंने सवाल किया कि फिर हम किस क़िस्म का माल रखें। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से यह हालत बयान करके यही सवाल किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "ज़िक्र करने वाली ज़ुबान, शुक्र करने वाला दिल और दीन के कामों में मदद देने वाली बीवी।" (तब्री : 14/220; तफ़्सीरुल क़ुरआन लि अ़ब्दिर्रज़्ज़ाक़ : 3/53) मुस्नद अहमद में है कि सोने चाँदी की मज़म्मत की यह आयत जब उतरी और सहाबा (रज़ि.) ने आपस में चर्चा किया तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, लो! मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से पूछकर आता हूँ, अपनी सवारी तेज़ करके रसूलुल्लाह (ﷺ) से जा मिले। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3094; वहुव हसन; अहमद : 5/282; इब्ने माजा : 1856) और रिवायात में है कि सहाबा किराम (रज़ि.) ने कहा फिर हम अपनी औलादों के लिए क्या छोड़ जाएँ। इसमें है कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) के पीछे ही पीछे हज़रत सौबान (रज़ि.) भी थे, आप (ﷺ) ने हज़रत उ़मर (रज़ि.) के सवाल पर फ़र्माया कि, "अल्लाह तआला ने ज़कात इसीलिए मुक़र्रर की है कि बाद का माल पाक हो जाए।" मीरास का मुक़र्रर करना बतला रहा है कि जमा करने में कोई हर्ज नहीं हज़रत उ़मर (रज़ि.) यह सुनकर मारे ख़ुशी के तक्बीरें कहने लगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "लो! और सुनो मैं तुम्हें बेहतरीन ख़ज़ाना और बतलाऊँ, नेक औ़रत कि जब उसका शौहर उसकी त़रफ़ नज़र डाले तो वह उसे ख़ुश कर दे और जब हुक्म दे तो फ़ौरन मान ले और जब मौजूद न हो हिफ़ाज़त करे।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी हुक़ूक़िल माल : 1664; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 2/333; अबू यअ़ला : 2499; बैहक़ी : 4/83; इसकी सनद में उ़स्मान बिन उ़मैर ज़ईफ़ (अत्तक़रीब : 2/13; रक़म 101) और जाफ़र बिन अयास मुजाहिद से रिवायत करने में मत्ऱून रावी है। (अत्तक़रीब : 1/129; रक़म : 70) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ : 1319) हस्सान बिन अ़तिया (रह.) कहते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि.) एक सफ़र में थे, एक मंज़िल में उतरे और अपने ग़ुलाम से फ़र्माया कि छुरी लाओ, खेलें। मुझे बुरा मालूम हुआ, आपने अफ़सोस ज़ाहिर किया और फ़र्माया, मैंने तो इस्लाम के बाद से अब तक ऐसी बे एहतियाती की बात कभी नहीं कही थी, अब तुम उसे भूल जाओ और एक हदीस बयान करता हूँ, उसे याद रख लो, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जब लोग सोना चाँदी जमा करने लगें तुम इन कलिमात को बकसरत कहा करो

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ، وَالْعَزِیْمَۃَ عَلَی الرُّشْدِ، وَاَسْاَلُکَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِکَ، وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِکَ،) وَاَسْاَلُکَ شُکْرَ نِعْمَتِکَ، وَحُسْنَ عِبَادَتِکَ، وَاَسْاَلُکَ قَلْبًا سَلِیْمًا، وَلِسَانًا صَادِقًا، وَاَسْاَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَا تَعْلَمُ، وَ (اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ۔

यानी ''या अल्लाह! मैं तुझसे काम की साबितक़दमी और भलाईयों की पुख़्तगी और तेरी नेअ़मतों का शुक्रिया और तेरी इबादतों की अच्छाई और सलामती वाला दिल और सच्ची ज़ुबान और तेरे इल्म में जो भलाई है वह और तेरे इल्म में जो बुराई है उससे पनाह और जिन बुराईयों को तू जानता है उनसे तौबा माँगता हूँ कि तू तमाम छुपी हुई बातों का जानने वाला है।'' (अह़मद : 4/123; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) आयत में बयान है कि अल्लाह तआ़ला की राह में अपने माल को न ख़र्च करने वाले और उसे छुपा- छुपाकर रखने वाले दर्दनाक अ़ज़ाबों से ख़बरदार हो जाएँ। क़यामत के दिन उसी माल को ख़ूब तपाकर गर्म आग जैसा करके उससे उनकी पेशानियाँ और पहलू और कमर दाग़ी जाएगी और बतौर डाँट-डपट के उनसे फ़र्माया जाएगा कि लो! अपनी जमा जत्था का मज़ा चखो। जैसे और आयत में है कि फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि जहन्नमियों पर गर्म पानी का तरीड़ा उनके सरों पर बहाओ और उनसे कहो कि अ़ज़ाब का मज़ा चखो, तुम तो बड़े ज़ी इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्ग समझे जाते रहे। (44/दुख़ान : 48) यह है बदला उसका। साबित हुआ कि जो शख़्स जिस चीज़ को महबूब बनाकर अल्लाह तआ़ला की इताअ़त से उसे मुक़द्दम करेगा, उसी के साथ उसे अ़ज़ाब होगा। उन मालदारों ने माल की मुहब्बत में अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान को भुला दिया था, आज उसी माल से उन्हें सज़ा दी जा रही है। जैसे कि अबू लहब खुल्लम खुल्ला हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की दुश्मनी करता था और उसकी बीवी उसकी मदद करती थी, क़यामत के दिन आग के और भड़काने के लिए वह अपने गले में रस्सी डालकर लकड़ियाँ ला लाकर उसे सुलगाएगी और उसमें वह जलता रहेगा। यह माल जो यहाँ सबसे ज़्यादा पसंदीदा हैं, यही माल क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह साबित होगा, उसी को गर्म करके उससे दाग़ दिए जाएँगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं ऐसे मालदारों के जिस्म इतने लम्बे चौड़े कर दिए जाएँगे कि एक-एक दीनार व दिरहम उस पर आ जाए फिर कुल माल आग जैसा बनाकर अलग अलग करके सारे जिस्म पर फैला दिया जाएगा, यह नहीं कि एक के बाद एक दाग़ लगे, बल्कि एक साथ सबके सब। मरफ़ूअ़न भी रिवायत आई तो है लेकिन उसकी सनद सही नहीं, वल्लाहु आ़लम! हज़रत ताउस (रह.) फ़र्माते हैं कि उसका माल एक अज़्दहा बनकर उसके पीछे लगेगा जो हिस्सा बदन का सामने आ जाएगा उसी को चबा जाएगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''जो अपने बाद ख़ज़ाना छोड़ जाए, उसका वह ख़ज़ाना क़यामत के दिन ज़हरीला अज़्दहा बनकर जिसकी आँखों पर नुक़्ते होंगे, उसके पीछे लगेगा, यह भागता हुआ पूछेगा कि तू कौन है? वह कहेगा तेरा जमा किया हुआ और मरने के बाद छोड़ा हुआ ख़ज़ाना हूँ, आख़िरकार वह उसे पकड़ लेगा और उसका हाथ चबा जाएगा फिर बाक़ी जिस्म भी।'' (हाकिम : 1/388, 389; इब्ने हिब्बान : 3257; व सनदुहू ज़ईफ़; क़तादा अ़न्अ़न) सही मुस्लिम वग़ैरह में है कि ''जो शख़्स अपने माल की ज़कात न देगा, उसका माल क़यामत के दिन आग की तख़्तियों जैसा बना दिया जाएगा और उससे उसकी पेशानी पहलू और कमर दाग़ी जाएगी। पचास हज़ार साल तक लोगों के फ़ैसले हो जाने तक तो उसका यही हाल रहेगा फिर उसे उसकी मंज़िल

की राह दिखा दी जाएगी, जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़....।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब इस्मु मानिइज़्ज़कात : 987; अबूदाऊद : 1658; अहमद : 2/262; इब्ने हिब्बान : 3253)

इमाम बुख़ारी (रह.) इसी आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि ज़ेद बिन वहब (रह.) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रब्ज़ा में मिले और पूछा कि तुम यहाँ कैसे आ गए हो? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, हम शाम (सीरीया) में थे वहाँ मैंने आयत (वल्लज़ीना यक्निज़ूना...) की तिलावत की तो मुआविया (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह आयत हम मुसलमानों के बारे में नहीं, यह तो अहले किताब के बारे में है। मैंने कहा, हमारे और इन सबके हक़ में है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुल बरा'त बाब व क़ौलुहू (وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا) : 4660) इसमें मेरा उनका इख़्तिलाफ़ हो गया, उन्होंने मेरी शिकायत का ख़त दरबारे उस्मानी (रज़ि.) में लिखा, ख़िलाफ़त का फ़र्मान मेरे नाम आया कि तुम यहाँ चले आओ। मैं जब मदीना तय्यिबा पहुँचा तो देखा कि चारों तरफ़ से मुझे लोगों ने घेर लिया, इस तरह भीड़ लग गई कि गोया उन्होंने उससे पहले मुझे देखा ही न था। ग़र्ज़ मैं मदीना मुनव्वरा में ठहरा लेकिन लोगों का आने जाने से तंग आ गया। आख़िर मैंने हज़रत उस्मान (रज़ि.) से शिकायत की तो आपने मुझे फ़र्माया कि तुम मदीना मुनव्वरा के क़रीब ही किसी सहरा में चले जाओ। मैंने उस हुक्म की भी तामील की लेकिन यह कह दिया कि वल्लाह! जो मैं कहता था उसे हर्गिज़ नहीं छोड़ सकता। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा उद्दिया ज़कातहू फ़लैसा बि कंज़ि : 1406) आपका यह ख़्याल था कि बाल बच्चों के खिलाने के बाद जो बचे, उसे जमा कर रखना मुत्लक़न हराम है। उसी का आप फ़त्वा देते थे और इसी बात को लोगों में फैलाते थे और लोगों को भी उस पर आमादा करते थे, उसी का हुक्म देते थे और उसके मुख़ालिफ़ लोगों पर बड़ा ही तशद्दुद करते थे। हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने आपको रोकना चाहा कि कहीं लोगों में आम ज़रर न फैल जाए, यह न माने तो आपने ख़लीफ़ा से शिकायत की। अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) ने उन्हें बुलाकर रब्ज़ा में तंहा रहने का हुक्म दिया। आप वहीं हज़रत उस्मान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ही रहलत फ़र्मा गए। हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने बतौरे इम्तिहान एक बार उनके पास एक हज़ार अशरफ़ियाँ भिजवाईं, आपने शाम से पहले ही पहले सब इधर-उधर अल्लाह की राह में ख़र्च कर डालीं। शाम को वही साहब जो उन्हें सुबह को एक हज़ार अशरफ़ियाँ दे गए थे, वह आए, कहा मुझसे ग़लती हो गई, अमीर मुआविया (रज़ि.) ने वह अशरफ़ियाँ और साहब के लिए भिजवाई थीं। मैंने ग़लती से आपको दे दीं, वह वापिस कीजिए। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, तुम पर अफ़सोस है मेरे पास तो अब उनमें से एक पैसा भी नहीं, अच्छा! जब मेरा माल आ जाएगा तो मैं आपको आपकी अशरफ़ियाँ वापिस कर दूँगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) भी इस आयत के हुक्म को आम बतलाते हैं। सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं यह आयत अहले क़िब्ला के बारे में है। अहनफ़ बिन क़ैस (रह.) फ़र्माते हैं मैं मदीना मुनव्वरा में आया, देखा कि एक जमाअत क़ुरेशियों की महफ़िल लगाए बैठी है, मैं भी उस मज्लिस में बैठ गया कि एक साहब तशरीफ़ लाए, मेले कुचेले मोटे झोटे कपड़े पहने हुए बहुत ख़स्ता हालत में और आकर खड़े होकर कहने लगे, रुपया पैसा जमा करने वाले इससे ख़बरदार रहें कि क़यामत के दिन जहन्नम के अंगारे उनकी छाती की बटनी पर रखे जाएँगे, जो कँधे की हड्डी के पार हो जाएँगे फिर पीछे की तरफ़ से आगे को सूराख़ करते और जलाते हुए निकल

जाएँगे। लोग सब सर नीचा किए बैठे रहे, कोई भी कुछ न बोला वह भी मुड़कर चल दिए और एक खम्बे से लगकर बैठ गए, मैं उनके पास पहुँचा और उनसे कहा कि, मेरे ख़्याल में तो इन लोगों को आपकी बात बुरी लगी। आपने फ़र्माया, यह कुछ नहीं जानते। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा उद्दिया ज़कातुहू फ़लैसा बि कंज़िन : 1407; सहीह मुस्लिम : 992) एक सही हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से फ़र्माया कि "मेरे पास अगर उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना हो तो मुझे यह बात अच्छी नहीं मालूम होती कि तीन दिन गुज़रने के बाद मेरे पास उसमें से कुछ भी बचा हुआ रहे, हाँ! अगर क़र्ज़ की अदायगी के लिए मैं कुछ रख लूँ तो और बात है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (मा यस्सर्नी अन्ना इन्दी मिस्लु उहुदे हाज़ा ज़हबा) : 6444)

ग़ालिबन इसी हदीस ने हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) का यह मज़हब कर दिया था जो आपने ऊपर पढ़ा, वल्लाहु आलम! एक बार हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) को उनका हिस्सा मिला, आपकी लौण्डी ने उसी वक़्त ज़रूरियात को फ़राहम करना शुरू किया। सामान की ख़रीद के बाद सात बच रहे, हुक्म दिया कि इसके फ़ुलूस ले लो तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित (रज़ि.) ने फ़र्माया, इसे आप अपने पास रहने दीजिए ताकि बवक़्ते ज़रूरत काम आ जाए या कोई मेहमान आ जाए तो कोई काम न अटके। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, नहीं! मुझसे मेरे ख़लील (ﷺ) ने वादा लिया है कि "जो सोना चाँदी सर बंद करके रखी जाए, वह रखने वाले के लिए आग का अंगारा है जब तक कि उसे अल्लाह की राह में न दे दे।" (अहमद : 5/156; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन; मुस्नद बज़्ज़ार : 3926; तबरानी : 1634; हिल्यतुल औलिया : 1/162) इब्ने असाकिर में है हज़रत अबू सईद (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया "अल्लाह तआला से फ़क़ीर बनकर मिल, ग़नी (अमीर) बनकर न मिल। उन्होंने पूछा, यह किस तरह?" फ़र्माया, साइल को रद्द न कर जो मिले उसे छुपा न रख।" उन्होंने कहा, यह कैसे हो सकेगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यही है वरना आग है।" (इसकी सनद में तलहा बिन ज़ेद मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 2/338; रक़म : 4000) हाकिम : 4/352 में इस मअना की रिवायत मौजूद है और उस रिवायत को तख़रीजे एहयाउल उलूम में ज़ईफ़ कहा गया है। देखिए रक़म : 2893) इसकी सनद ज़ईफ़ है। अहले सुफ़्फ़ा में से एक साहब का इंतिक़ाल हो गया, दो दीनार या दो दिरहम उनके बचे हुए निकले। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "आग के दो दाग़ हैं तुम लोग अपने साथी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो।" (अहमद : 1/101; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद बज़्ज़ार : 365; अत्तारीख़ुल कबीर : 2/140) और रिवायत में है कि एक अहले सुफ़्फ़ा के इंतिक़ाल के बाद उनके तहमद की आँटी में से एक दीनार निकला। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "एक दाग़ आग का।" फिर दूसरे का इंतिक़ाल हुआ उनके पास से दो दीनार बरामद हुए आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "दो दाग़ आग के।" (अहमद : 5/253; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन; तबरानी : 7573) फर्माते हैं, "जो लोग सुर्ख़ सफ़ेद यानी सोना चाँदी छोड़कर मरे, एक एक क़ीरात के बदले एक एक तख़्ती आग की बनाई जाएगी और उसके क़दम से लेकर ठोडी तक उसके जिस्म में उस आग से दाग़ लगाए जाएँगे।" (इसकी सनद में इस्हाक़ बिन इब्राहीम फ़रादसी है जिसकी सौबान (रज़ि.) से की हुई रिवायत ग़ैर महफ़ूज़ होती है। देखिए (अल्मीज़ान : 1/179; रक़म 723) आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि

''जिसने दीनार से दीनार और दिरहम से दिरहम मिलाकर जमा करके रख छोड़ा उसकी खाल कुशादा करके पेशानी और करवट और कमर पर उसके दाग़ किए जाएँगे और कहा जाएगा, यह है जिसे तुम अपनी जानों के लिए ख़ज़ाना बनाते रहे, अब इसका बदला चखो।'' (इसकी सनद में सैफ़ बिन मुहम्मद शूरी मुत्तहम बिल किज़्ब है जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया, इमाम अहमद और इब्ने मुईन ने इसे कज़्ज़ाब कहा है। देखिए (अल्मीज़ान : 2/656; रक़म : 3636) इसका रावी सैफ़ कज़्ज़ाब व मतरूक है।

***

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ ۚ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''महीनों की गिनती अल्लाह तआला के नज़दीक किताबुल्लाह में बारह है उसी दिन से कि आसमान व ज़मीन को पैदा किया है, उनमें से चार महीने हुर्मत व अदब वाले हैं। यही सही दीन है, तुम उन महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो और तुम तमाम मुश्रिकों से जिहाद करो जैसे कि वह तुम सबसे लड़ते हैं, जान रखो कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों के साथ है।'' (36)

चार महीनों की हुर्मत शुरूआते दुनिया से है (आयत 36) : मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हज्ज के ख़ुत्बे में इर्शाद फ़र्माया कि ''ज़माना घूम घामकर अपनी असलियत पर आ गया है, साल के बारह महीने हुआ करते हैं, जिनमें से चार महीने हुर्मत व अदब वाले हैं। तीन तो लगातार एक के बाद एक ज़ुल क़अदा, ज़ुल हिज्ज और मुहर्रम और चौथा महीना रजब जो मुज़र के यहाँ है जो जमादिल आख़िर और शअबान के बीच में है।'' फिर पूछा ''यह कौनसा दिन है?'' हमने कहा, अल्लाह तआला को और उसके रसूल (ﷺ) को ही पूरा इल्म है। आप (ﷺ) ने सकूत (ख़ामोशी) फ़र्माया। हम समझे कि शायद आप (ﷺ) उस दिन का कोई और ही नाम रखेंगे, फिर पूछा, ''क्या यह यौमुन्नहर यानी क़ुर्बानी का दिन नहीं।'' हमने कहा, हाँ! फिर पूछा ''यह कौनसा महीना है?'' हमने कहा, अल्लाह तआला जाने और उसके रसूल (ﷺ)। आप (ﷺ) ने फिर सकूत फ़र्माया, यहाँ तक कि हमने ख़्याल किया कि शायद आप (ﷺ) इस महीने का नाम और ही रखेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्या यह ज़ुलहिज्जा का दिन नहीं है?'' हमने कहा, हाँ! फिर आप (ﷺ) ने पूछा, ''यह कौनसा शहर है?'' हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ख़ूब जानने वाले हैं। आप (ﷺ) फिर ख़ामोश हो गये और हमें फिर ख़्याल आने लगा कि शायद आप (ﷺ) इसका कोई और ही नाम रखेंगे। फिर फ़र्माया ''क्या यह बलदा (मक्का) नहीं है'' हमने कहा, बेशक! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''याद रखो तुम्हारे ख़ून तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुममें आपस में ऐसी ही हुर्मत वाली हैं जैसी हुर्मत व

इ़ज़्ज़त तुम्हारे इस दिन की तुम्हारे इस महीने में, तुम्हारे इस शहर में, तुम अभी-अभी अपने रब से मुलाक़ात करोगे और वह तुमसे तुम्हारे आमाल का ह़िसाब लेगा, सुनो! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो, बतलाओ क्या मैंने तब्लीग़ कर दी? सुनो! तुममें से जो मौजूद हैं, उन्हें चाहिए कि जो मौजूद नहीं उन तक पहुँचा दें। बहुत मुम्किन है कि जिसे वह पहुँचाए वह उन कुछ से भी ज़्यादा याद रखने वाला हो।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़्ह़ा, बाब वमन क़ालल अज़्ह़ा यौमुन्नह़र : 5550; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1679; अबूदाऊद : 1948; इब्ने माजा : 233; अह़मद : 5/37; इब्ने ह़िब्बान : 3848) और रिवायत में है कि वस्ते अय्यामे तशरीक़ में मिना में ह़ज्जतुल वदाअ़ के ख़ुत्बे के मौक़े का यह ज़िक्र है। अबू ह़म्ज़ा रक़्क़ाशी (रह़.) के चचा जो स़ह़ाबी हैं, कहते हैं कि उस ख़ुत्बे के वक़्त मैं हुज़ूर (ﷺ) की नाक़ा की नकेल थामे हुए था और लोगों की भीड़ को रोके हुए था। आप (ﷺ) के पहले जुम्ले का यह मत़लब है कि जो कमी-बेशी तक़्दीम ताख़ीर महीनों की जाहिलियत के ज़माने में मुश्रिक किया करते थे, वह उलट पलट कर इस वक़्त ठीक ठीक हो गई है, जो महीना आज है वही दरह़क़ीक़त भी है। जैसे कि फ़तह़े मक्का के मौक़े पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''यह मख़्लूक़ की पैदाइश के पहले से हुर्मत वाला और इ़ज़्ज़त वाला है, वह आज भी हुर्मत वाला है और क़यामत तक हुर्मत वाला ही रहेगा।'' पस अ़रबों में जो यह रिवाज पड़ गया था कि उनके अक्सर ह़ज्ज ज़िल् ह़िज्ज के महीने में नहीं होते थे अब की बार रसूलुल्लाह (ﷺ) के ह़ज्ज के मवाक़ेअ़ पर यह बात न थी बल्कि ह़ज्ज अपने ठीक महीने पर था। कुछ लोग उसके साथ यह भी कहते हैं कि सि़द्दीक़े अकबर (रज़ि.) का ह़ज्ज ज़ुल क़अ़द में हुआ लेकिन यह ग़ौरत़लब क़ौल है। जैसे कि हम सबूत के साथ बयान करेंगे। आयत (इन्नमन्नसीउ) की तफ़्सीर में। इस क़ौल से भी ज़्यादा ग़राबत वाला एक क़ौल कुछ सलफ़ का यह भी है कि इस साल यहूदी व नस़ारा मुसलमान सबके ह़ज्ज का दिन इत्तिफ़ाक़ से एक ही था यानी ईदुल अज़्ह़ा का दिन।

''फ़स्ल फ़'' शैख़ इ़ल्मुद्दीन सख़ावी ने अपनी किताब ''अल्मशहूर फ़ी अस्माइल अय्यामि वश्शुहूर'' में लिखा है कि मुह़र्रम के महीने को मुह़र्रम उसकी ताज़ीम की वजह से कहते हैं लेकिन मेरे नज़दीक तो इस नाम की वजह से इसकी हुर्मत ताकीद है इसलिए कि अ़रब जाहिलियत में इसे बदल डालते थे कभी ह़लाल कर डालते, कभी ह़राम कर डालते, इसकी जमा मुह़र्रिमात, महारिम, महारीम है। स़फ़र की वजहे तस्मिया यह है कि इस महीने में उ़मूमन उनके घर ख़ाली रहते थे क्योंकि यह लड़ाई झगड़े और सफ़र में चल देते थे, जब मकान ख़ाली हो जाए तो अ़रब कहते हैं (स़फ़रल मकान) इसकी जमा अस़्फ़ार है जैसे जमल की जमा अज्माल है। रबीउ़ल अव्वल के नाम रखने का सबब यह है कि इस महीने में उनकी इक़ामत हो जाती है। इर्तिबाअ़ कहते हैं इकामत को उसकी जमा इर्बिआअ है जैसे नसीब की जमा इंसिबाइ। और इसकी जमा अरबआ़ है जैसे रग़ीफ़ की जमा अरग़फ़ा है। रबीउ़ल आख़िर के महीने का नाम रखना भी इसी वजह से है। गोया यह इक़ामत का दूसरा महीना है। जमादिल ऊला की वजह तस्मिया यह है कि इस महीने में पानी जम जाता था उनके ह़िसाब में महीने गर्दिश नहीं करते थे यानी ठीक हर मौसम पर ही हर महीना आता था लेकिन यह बात कुछ जचती नहीं, इसलिए कि जब इन महीनों का ह़िसाब चाँद पर है तो ज़ाहिर है कि मौसमी ह़ालत हर माह पर हर साल एक जैसी नहीं रहेगी, हाँ! यह मुम्किन है कि उस महीने का नाम जिस साल रखा गया हो उस

साल यह महीना कड़कड़ाते हुए जाड़े में आया हो और पानी जम गया हो। चुनाँचे एक शायर ने यही कहा है कि जमादा की सख़्त अंधेरी रातें जिनमें कुत्ता भी बमुश्किल एक आध मर्तबा ही भौंक लेता है। इसकी जमा जमादियात जैसे हुबारा और हुबारियात। यह मुज़क्कर मुअन्नस दोनों तरह मुस्तअ़मिल है, जमादिल ऊला और जमादिल उख़्रा कहा जाता है। जमादिल उख़्रा की वजहे तस्मिया भी यही है गोया यह पानी के जम जाने का दूसरा महीना है। रजब यह माख़ूज़ है तर्जीब से। तर्जीब कहते हैं ताज़ीम को चूँकि यह महीना अ़ज़्मत व इ़ज़्ज़त वाला है इसलिए इसे रजब कहते हैं। इसकी जमा अर्जाब रिजाब और रजबात है। शअ़बान का नाम शअ़बान इसलिए है कि इसमें अ़रब लोग लूटमार के लिए इधर उधर फैल जाते थे। तशअ़ब के मअ़नी हैं जुदा-जुदा होना पस इस महीने का भी यही नाम रख दिया गया। इसकी जमा शआ़बीन, शअ़बानात आती है। रमज़ान को रमज़ान इसलिए कहते हैं कि इसमें ऊँटनियों के पैर गर्मी की तेज़ी की वजह से जलने लगते हैं। (रमतृतिल फ़िसाल) उस वक़्त कहते हैं जब ऊँटनियों के बच्चे सख़्त प्यासे हों। इसकी जमा रमज़ानात और रमाज़ीन और रामिज़ा आती है। कुछ लोग कहते हैं कि यह अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है यह महज़ ग़लत और नाक़ाबिले इल्तिफ़ात क़ौल है। मैं कहता हूँ इस बारे में एक हदीस भी वारिद हुई है, लेकिन है वह ज़ईफ़। मैंने किताबुस्सियाम के शुरू में इसका बयान कर दिया। शव्वाल माख़ूज़ है (शालतिल इबिलु) से यह महीना ऊँटों की मस्तियों का महीना था, यह दुमें उठा दिया करते थे, इसलिए इस महीने का यही नाम हो गया। इसकी जमा शवावील, शवालात आती है। जुल क़अ़दा या ज़विल कअ़दा का नाम होने की वजह यह है कि इस माह में अ़रब लोग बैठ जाया करते थे, न लड़ाई के लिए निकलते और न सफ़र के लिए, इसकी जमा ज़वातुल क़अ़दा है। ज़ुल हिज्जा को ज़विल हिज्जा भी कह सकते हैं, चूँकि इसी माह में हज्ज होता था, इसलिए इसका यह नाम मुक़र्रर हो गया, इसकी जमा ज़वातुल हिज्जा आती है। यह तो थी वजह इन महीनों के नामों की।

अब हफ़्ते के सात दिनों के नाम और उन नामों की जमा सुनिए। इतवार के दिन को यौमुल अहद कहते हैं, इसकी जमा अहाद वहाद और वुहूद आती है। पीर के दिन को इस्नैन कहते हैं, इसकी जमा असानीन आती है। मंगल को सुलासा कहते हैं, यह भी मुज़क्कर भी बोला जाता है और मुअन्नस भी। इसकी जमा सुलासावात और असालीस आती है। बुध के दिन को अरबिआ़ कहते हैं, जमा अरबआ़वात और अराबीअ़ आती है। जुमेरात को ख़मीस कहते हैं, जमा इसकी अख़्मसा, अख़ामिस आती है। जुम्अ़े को जुम्अ़हू और जुमअ़ह कहते हैं, इसकी जमा जुमुअ़न और जमाआ़तु आती है। सनीचर यानी हफ़्ते के दिन को सब्त कहते हैं, सब्त के मअ़ना हैं क़तअ़ के चूँकि गिनती हफ़्ते के दिनों की यहीं ख़त्म हो जाती है इसलिए इसे सब्त कहते हैं। क़दीम अ़रबों में हफ़्ते के दिनों के नाम यह थे। अव्वल, अहवन, जब्बार, दब्बार, मौनिस, अ़रूबा, शियार। क़दीम ख़ालिस अ़रबों के अश्आ़र में भी दिनों के नाम पाये जाते हैं। कुरआने करीम फ़र्माता है कि इन बारह माह में चार हुर्मत वाले महीने हैं। जाहिलियत के अ़रब भी इन्हें हुर्मत वाले मानते थे लेकिन लस्बल नामी एक गिरोह अपने तशद्दुद की बिना पर आठ महीनों को हुर्मत वाला ख़्याल करते थे, दरअसल वही रजब का महीना इन्दल्लाह भी था जो जमादिल आख़िर और शअ़बान के बीच में है। क़बीला रबीआ़ के नज़दीक रजब, शअ़बान और शव्वाल के बीच के महीने का यानी रमज़ान का नाम था पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने खोल दिया कि हुर्मत वाला रजब

मुज़र का है, न कि रबीआ का। इन चार ज़ी हुर्मत महीनों में से तीन लगातार इस मस्लिहत से हैं कि हाजी ज़ुल क़अदा के महीने में निकले तो उस वक़्त तक लड़ाईयाँ मारपीट जंगो जिदाल क़त्लो क़िताल बंद हो लोग अपने घरों में बैठे हुए हों, फिर ज़िल हिज्ज में अहकामे हज्ज की अदायगी, अम्नो अमान, उम्दगी और शान से हो जाए। फिर माहे मुहर्रम की हुर्मत में वापिस घर पहुँच जाए। दरम्याने साल में रजब को हुर्मत वाला बनाने की ग़र्ज़ यह है कि ज़ाइरीन अपने तवाफ़े बैतुल्लाह के शौक़ को उमरे की सूरत में अदा कर लें, भले दूर दराज़ वाले हों, वह भी महीना भर में आना जाना कर लें। यही अल्लाह तआला का सीधा और सच्चा दीन है। पस अल्लाह तआला के फ़र्मान के मुताबिक़ तुम इन पाक महीनों की हुर्मत करो, इनमें ख़ुसूसियत के साथ गुनाहों से बचो, इसलिए कि इसमें गुनाहों की बुराई और बढ़ जाती है, जैसे कि हरम शरीफ़ का गुनाह और जगह के गुनाह से बढ़ जाता है। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि जो हरम में इल्हाद का इरादा ज़ुल्म से करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब देंगे। (22/हज्ज : 25) इसी तरह इन मुहतरम महीनों का गुनाह और दिनों के गुनाह से बढ़ जाता है, इसीलिए हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) और उलमा की एक बड़ी जमाअत के नज़दीक इन महीनों के क़त्ल की दियत भी सख़्त है। इसी तरह हरम के अंदर के क़त्ल की और ज़ी महरम रिश्तेदार के क़त्ल की भी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं (फ़ीहिन्न) से मुराद सालभर के कुल महीने हैं। पस इन कुल महीनों में गुनाहों से बचो, ख़ुसूसन चार महीनों में कि यह हुर्मत वाले हैं। इनकी बड़ी इज़्ज़त है इनमें गुनाह सज़ा के एतिबार से और नेकियाँ अज्रो-सवाब के एतिबार से बढ़ जाती हैं।

हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है कि इन हुर्मत वाले महीनों में गुनाह की सज़ा और बोझ बढ़ जाता है, भले ज़ुल्म हर हाल में बुरी चीज़ है लेकिन अल्लाह तआला अपने जिस अम्र को चाहे बढ़ा दे। देखिए अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ में से भी पसंद किया इंसानों में, अपने रसूल (ﷺ) चुन लिए, इसी तरह कलाम में से अपने ज़िक्र को पसंद किया और ज़मीन में से मस्जिदों को पसंद किया और महीनों में से रमज़ानुल मुबारक को और इन चारों महीनों को पसंद कर लिया और दिनों में से जुम्आ के दिन को और रातों में से लैलतुल क़द्र को पस तुम्हें उन चीज़ों की अज़्मत का लिहाज़ रखना चाहिए, जिन्हें अल्लाह तआला ने अज़्मत दी है। उमूर की ताज़ीम इतनी करनी अक़्लमंद और फ़हीम (समझदार) लोगों के नज़दीक ज़रूरी है, जितनी ताज़ीम उनकी अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने बतलाई हो। इनकी हुर्मत का अदब न करना हराम है, इनमें जो काम हराम हैं, उन्हें हलाल न कर लो, जो हलाल हैं उन्हें हराम न बना लो। जैसे कि अहले शिर्क करते थे, यह उनके कुफ़्र में ज़्यादती की बात थी। फिर फ़र्माया कि तुम सबके सब काफ़िरों से जिहाद करते रहो जैसे कि वह सबके सब तुमसे बरसरे जंग हैं, हुर्मत वाले इन चार महीनों में जंग की शुरुआत करना मंसूख़ या मुहकम होने के बारे में उलमा के दो क़ौल हैं पहला तो यह कि यह मंसूख़ है यही क़ौल ज़्यादा मशहूर है। इस आयत के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिए कि पहले तो फ़र्मान हुआ कि इन महीनों में ज़ुल्म न करो, फिर मुश्रिकों से जंग करने को फ़र्माया। ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से तो मालूम होता है कि यह हुक्म आम है, हुर्मत के महीने भी इसमें आ गए अगर यह महीने इससे अलग होते तो उनसे गुज़र जाने की क़ैद साथ ही बयान होती। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ताइफ़ का घेराव ज़ुल क़अद में किया था जो हुर्मत वाले महीनों में से एक है जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप (ﷺ)

हवाज़िन क़बीले की तरफ़ माहे शव्वाल में चले जब उनको हज़ीमत हुई और उनमें के बचे हुए भागकर ताइफ़ में पनाहगुज़ीन हुए तो आप (ﷺ) वहाँ गए और चालीस दिन तक मुहासिरा रखा, फिर बग़ैर फ़तह किए हुए वहाँ से वापिस लौट आए। पस साबित है कि आप (ﷺ) ने हुर्मत वाले महीने में मुहासिरा किया। दूसरा कौल यह है कि हुर्मत वाले महीनों में जंग की शुरुआत करना हराम है और इन महीनों की हुर्मत का हुक्म मंसूख़ नहीं। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि शआइरे रब्बानी को और हुर्मत वाले महीनों को हलाल न कर लिया करो। (5/माइदा : 2) और फ़र्मान है कि हुर्मत वाले महीने हुर्मत वाले महीनों के बदले हैं और हुर्मतें क़िसास हैं पस जो तुम पर ज़्यादती करे तो तुम भी उनसे वैसी ही ज़्यादती का बदला ले लो। (5/माइदा : 194) और फ़र्मान है (فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ) (9/तौबा : 5) हुर्मत वाले महीनों के गुज़र जाने के बाद मुश्रिकों से जिहाद करो। यह पहले बयान गुज़र चुका है कि यह चार महीने हैं हर साल में, न कि तस्यीर के महीने जो कि दो क़ौलों में से एक क़ौल है।

फिर फ़र्माया कि तुम सब मुसलमान उनसे इसी तरह लड़ो जैसे कि वह तुमसे सबके सब लड़ते हैं। हो सकता है कि यह अपने पहले से जुदागाना न हों और हो सकता है कि यह हुक्म बिलकुल नया और अलग हो, मुसलमानों को रग़बत दिलाने और उन्हें जिहाद पर आमादा करने के लिए। तो फ़र्माता है कि जैसे तुमसे जंग करने के लिए वह भिड़ भिड़ाकर जमा होकर चारों तरफ़ से उबल पड़ते हैं, तुम भी अपने सब कलिमा पढ़ने वालों को लेकर उनसे मुक़ाबला करो। यह भी मुम्किन है कि इस हमले में मुसलमानों को हुर्मत वाले महीनों में जंग करने की रुख़्सत दी हो। जबकि हमला उनकी तरफ़ से हो, जैसे आयत (اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ) में है और जैसे आयत (وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ) (2/बकरः 191) में बयान है कि इनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो जब तक कि वह वहाँ लड़ाई न करें, हाँ! अगर वह तुमसे लड़ें तो तुम भी उनसे लड़ो। यही जवाब हुर्मत वाले महीने में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ताइफ़ के मुहासिरे का है कि दरअसल यह लड़ाई ततिम्मा थी, हवाज़िन की और उनके सक़फ़ी हलीफ़ों की लड़ाई का। उन्होंने ही लड़ाई की शुरुआत की थी। इधर उधर से आप (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन को जमा करके लड़ाई की दावत दी थी पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनकी तरफ़ बढ़े, यह बढ़ना भी हुर्मत वाले महीने में न था। यहाँ से हारकर यह लोग ताइफ़ की तरफ़ चले गए और वहाँ क़िलाबंद हो गए। आप उस मर्कज़ को ख़ाली कराने के लिए और आगे बढ़े, उन्होंने मुसलमानों को नुक़्सान पहुँचाया, मुसलमानों की एक जमाअत को क़त्ल कर डाला। इधर मुहासिरा जारी रहा, मिन्जनिक़ वग़ैरह से चालीस दिन तक उनको घेरे रहे। आख़िरकार उस जंग की शुरुआत हुर्मत वाले महीने में नहीं हुई थी लेकिन जंग ने तूल पकड़ा, हुर्मत वाला महीना भी आ गया। जब चंद दिन गुज़र गए, आपने मुहासिरा हटा लिया। पस जंग का जारी रखना और चीज़ है और जंग की शुरुआत और चीज़ है उसकी बहुत सी नज़ीरें (मिसालें) हैं, वल्लाहु आलम! अब उसमें जो हदीसें हैं हम उन्हें सीरत में भी बयान कर चुके हैं, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَّيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "महीनों का आगे पीछे कर देना भी कुफ़्र की ज़्यादती है, इससे वह लोग गुमराही में डाले जाते हैं जो काफ़िर हैं एक साल तो उसे हलाल कर लेते हैं और एक साल उसी को हुर्मत वाला कर लेते हैं कि अल्लाह तआला ने जो हुर्मत रखी है उसकी गिनती में तो मुवाफ़िक़त कर लीं फिर उसे हलाल बना लेते हैं, जिसे अल्लाह तआला ने हराम किया है। उन्हें उनके बुरे काम भले दिखा दिए गए हैं, क़ौमे कुफ़्फ़ार की अल्लाह रहनुमाई नहीं फ़र्माता।" (37)

मुश्रिकों ने हुर्मत वाले महीनों में भी रद्दोबदल कर रखा था (आयत 37) : मुश्रिकों के कुफ़्र की ज़्यादती बयान हो रही है कि वह किस तरह अपनी फ़ासिद राय को और अपनी नापाक ख़्वाहिश को शरीअते इलाही में दाख़िल करके अल्लाह के दीन के अह्काम उलट पलट कर देते थे। हराम को हलाल और हलाल को हराम बना लेते थे। तीन महीने की हुर्मत को तो ठीक रखा फिर चौथे महीने की हुर्मत को इस तरह बदल दिया कि मुहर्रम को सफ़र के महीने में कर दिया और मुहर्रम की हुर्मत न की। ताकि बज़ाहिर साल के चार महीने की हुर्मत भी पूरी हो जाए और असली हुर्मत के मुहर्रम महीने में लूटमार, क़त्लो-ग़ारत भी हो जाए और उस पर अपने क़सीदों में शैख़ी बघाड़ते थे और फ़ख़्रिया अपना यह काम उछालते थे। उनका एक सरदार था, जुनादा बिन औफ़ बिन उमय्या किनानी, यह हर साल हज्ज को आता, इसकी कुन्नियत अबू सुमामा थी, यह मुनादी कर देता कि न तो अबू सुमामा के मुक़ाबले में कोई आवाज़ उठा सकता है, न उसकी बात में कोई एबजोई कर सकता है, सुनो! पहले साल का सफ़र महीना हलाल है और दूसरे साल का हराम। पस एक साल के मुहर्रम की हुर्मत न रखते, दूसरे साल के मुहर्रम की हुर्मत मना लेते। उनकी इसी ज़्यादती कुफ़्र का बयान इस आयत में है। (तब्री : 14/245) यह शख़्स अपने गधे पर सवार आता और जिस साल यह मुहर्रम को हुर्मत वाला बना देता, लोग उसकी हुर्मत करते और जिस साल वह कह देता कि मुहर्रम को हमने हटाकर सफ़र में और सफ़र को आगे बढ़ाकर मुहर्रम में कर दिया है, उस साल अरब में उस माहे मुहर्रम की हुर्मत कोई न करता। (तब्री : 14/246) एक क़ौल यह भी है कि बनी किनाना के उस शख़्स को क़ल्मिश कहा जाता था, यह मुनादी कर देता कि इस साल मुहर्रम की हुमत न मनाई जाए, अगले साल मुहर्रम और सफ़र दोनों की हुर्मत रहेगी, पस उसके क़ौल पर जाहिलियत के ज़माने में अमल कर लिया जाता, और अब हुर्मत के असली महीने में जिसमें एक इंसान अपने बाप के क़ातिल को पाकर भी उसकी तरफ़ नज़र भरकर नहीं देखता था, अब आज़ादी से आपस में ख़ानाजंगियाँ, लूटमार होती। लेकिन यह क़ौल कुछ ठीक नहीं मालूम होता, क्योंकि क़ुरआन करीम ने फ़र्माया है कि गिनती में वह मुवाफ़िक़त करते थे और उसमें गिनती की मुवाफ़िक़त भी नहीं होती बल्कि एक

साल में तीन महीने रह जाते हैं और दूसरे साल में पाँच महीने हो जाते हैं। एक क़ौल यह भी है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से तो हज्ज फ़र्ज़ था, ज़िल हिज्ज के महीने में लेकिन मुश्रिक ज़िल हिज्ज का नाम मुहर्रम रख लेते फिर बराबर गिनते जाते और उस हिसाब से जो ज़िल हिज्ज आता, उसमें हज्ज अदा करते, फिर मुहर्रम के नाम से ख़ामोशी बरत लेते, उसका ज़िक्र ही न करते। फिर लौटकर सफ़र नाम रख देते, फिर रजब को जमादिल आख़िर, फिर शअबान को रमज़ान और रमज़ान को शव्वाल, फिर ज़ुल क़अद को शव्वाल ज़िल हिज्ज को ज़िल क़अद और मुहर्रम को ज़िल हिज्ज कहते और उसमें हज्ज करते, फिर इसका एआदा करते और दो साल तक हर एक महीने में बराबर हज्ज करते। जिस साल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज्ज किया, उस साल मुश्रिकों की उस गिनती के मुताबिक़ दूसरे बरस का ज़ुल क़अद का महीना था। हुज़ूर (ﷺ) के हज्ज के मौक़े पर ठीक ज़िल हिज्ज का महीना था और उसी की तरफ़ आप (ﷺ) ने अपने ख़ुत्बे में इशारा किया और इर्शाद हुआ कि ज़माना उलट पलट कर उसी हैयत (शक्ल) पर आ गया है, जिस हैयत पर उस वक़्त था जब ज़मीन और आसमान अल्लाह तआला ने रचाए। लेकिन यह क़ौल भी दुरुस्त नहीं मालूम होता। इस वजह से कि अगर ज़ी क़अद में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का हज्ज हुआ तो यह हज्ज कैसे सही हो सकता है।

हालाँकि अल्लाह तआला का फ़र्मान है (وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ) (9/तौबा : 3) यानी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से आज के हज्जे अकबर के दिन मुश्रिकों से अलग होना और बेज़ारी का ऐलान है। इसी की मुनादी हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के हज्ज में भी की गई पस अगर यह हज्ज ज़ुल हिज्ज के महीने में न होता तो अल्लाह तआला उस दिन को हज्ज का दिन न कहता। और सिर्फ़ महीनों की तक़्दीम ताख़ीर को जिसका बयान इस आयत में है, साबित करने के इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत भी नहीं क्योंकि वह इसके बग़ैर भी मुम्किन है। क्योंकि मुश्रिकीन एक साल तो मुहर्रमुल हराम के महीने को हलाल कर लेते और उसके बदले माहे सफ़र को हुर्मत वाला कर लेते, साल के बाक़ी महीने अपनी जगह पर रहते। फिर दूसरे साल मुहर्रम को हराम समझते और उसकी हुर्मत व इज़्ज़त बाक़ी रखते ताकि साल के चार हुर्मत वाले महीने जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्रर थे उनके गिनती में मुवाफ़िक़त कर लें पस कभी तो हुर्मत वाले तीनों महीने जो पे दर पे हैं उनमें से आख़िरी माह मुहर्रम की हुर्मत रखते, कभी उसे सफ़र की तरफ़ मुअख़्ख़र कर देते। रहा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्माने मुबारक कि ''ज़माना घूमघामकर अपनी असली हालत पर आ गया है'' यानी इस वक़्त जो महीना उनके नज़दीक है वही महीना सही गिनती में भी है, इसका पूरा बयान हम इससे पहले कर चुके हैं, वल्लाहु आलम!

इब्ने अबी हातिम में है कि उक़्बा में रसूलुल्लाह (ﷺ) ठहरे, मुसलमान आपके पास जमा हो गए, आप (ﷺ) ने अल्लाह तआला की पूरी हम्दो सना बयान करके फ़र्माया कि ''महीनों की ताख़ीर शैतान की तरफ़ से कुफ़्र की ज़्यादती थी कि काफ़िर बहकें, वह एक साल मुहर्रम को हुर्मत वाला करते और सफ़र को हिल्लत वाला फिर मुहर्रम को हिल्लत वाला कर लेते।'' (इसकी सनद में मूसा बिन उबेदा रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/213; रक़म : 8895) यही उनकी वह तक़्दीम ताख़ीर है जो इस आयत में बयान हुई है। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने अपनी किताब अस्सीरत में इस पर बहुत अच्छा कलाम किया है जो बेहद मुफ़ीद और उम्दा है।

आप लिखते हैं कि इस काम को सबसे पहले करने वाला क़ल्मिस था (हुज़ैफ़ा बिन अ़ब्द बिन फ़क़ीम बिन अ़दी बिन आ़मिर बिन सअ़ल्बा बिन ह़ारिस बिन मालिक बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान) फिर उसका बेटा इबाद फिर उसका लड़का क़लअ़ फिर उसका बेटा उमय्या फिर उसका बेटा औ़फ़ फिर उसका लड़का अबू सुमामा जुनादा, उसी के ज़माने में इशाअ़ते इस्लाम हुई। अ़रब लोग ह़ज्ज से फ़ारिग़ होकर उसके पास जमा होते, यह खड़ा होकर उन्हें लेक्चर देता और रजब, ज़ुल क़अ़द और ज़ुल ह़िज्ज की ह़ुर्मत बयान करता और एक साल तो मुह़र्रम को ह़लाल कर देता और मुह़र्रम स़फ़र को बना देता और एक साल मुह़र्रम को ही ह़ुर्मत वाला कह देता कि अल्लाह की ह़ुर्मत के महीनों की गिनती के मुवाफ़िक़ हो जाए और अल्लाह तआ़ला का ह़राम ह़लाल भी हो जाए।

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝۳۸ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۳۹

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि चलो! अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम ज़मीन पकड़ लेते हो, क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर ही रीझ गए हो, सुनो! दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ यूँ ही सी है। (38) अगर तुमने कूच न किया तो तुम्हें अल्लाह तआ़ला दर्दनाक अ़ज़ाब से सज़ा देगा, और तुम्हारे सिवा और लोगों को बदल लाएगा, तुम अल्लाह तआ़ला को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते, अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ादिर है।" (39)

जिहाद से जी चुराने वालों को तम्बीह (आयत 38, 39) : एक त़रफ़ तो गर्मी सख़्त पड़ रही थी, दूसरी त़रफ़ फल पक गए थे और दरख़्तों के साये बढ़ गए थे। ऐसे वक़्त में रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दूर दराज़ के सफ़र के लिए तैयार हो गए, ग़ज़्व-ए-तबूक में अपने साथ चलने को सबसे फ़र्मा दिया। कुछ लोग जो रह गए थे, उन्हें जो तम्बीह की गई, इन आयतों का शुरू इस आयत से है कि जब तुम्हें अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद के लिए बुलाया जाता है तो तुम क्यूँ ज़मीन में धंसने लगते हो, क्या दुनिया की इन ख़त्म होने वाली नेअ़मतों पर रीझकर आख़िरत की हमेशा बाक़ी रहने वाली नेअ़मतों को भुला बैठे हो। सुनो! दुनिया की तो आख़िरत के मुक़ाबले में कोई हैसियत ही नहीं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी शहादत की उँगली की त़रफ़ इशारा करके

फ़र्माया, "इस उँगली को कोई समुन्द्र में डुबोकर निकाले, उस पर जितना पानी समुन्द्र के मुक़ाबले में है उतना ही मुक़ाबला दुनिया का आख़िरत से है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़नाउद्दुनिया व बयानुल हश्रि यौमुल क़यामा : 2858; तिर्मिज़ी : 2323; इब्ने माजा : 4108; अहमद : 4/228)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से किसी ने पूछा कि मैंने सुना है आप हदीस बयान करते हैं, अल्लाह तआला एक नेकी के बदले एक लाख का सवाब देता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, बल्कि मैंने दो लाख का फ़र्मान भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। फिर आप (ﷺ) ने इस आयत के इसी जुम्ले की तिलावत करके फ़र्माया कि दुनिया जो गुज़र गई और जो बाक़ी है, वह सब आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है। (इसकी सनद में ज़ियाद बिन अबी ज़ियाद अल्जस्सास है। जिसे दारे क़ुत्नी और नसाई ने मतरूक कहा है। (अल्मीज़ान : 2/89; रक़म : 2938) मरवी है कि अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान (रह.) ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त अपना कफ़न मंगवाया, उसे देखकर फ़र्माया पस मेरा तो दुनिया से यही हिस्सा था, मैं इतनी दुनिया लेकर जा रहा हूँ फिर पीठ फेरकर रोने लगे और कहने लगे, हाय दुनिया! तेरा बहुत भी कम है और तेरा कम तो बहुत ही छोटा है, अफ़सोस! हम धोखे में ही रहे। फिर जिहाद छोड़ने पर अल्लाह तआला डांटता है कि सख़्त दर्दनाक अज़ाब होंगे।

एक क़बीले को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जिहाद के लिए बुलवाया, वह न उठे तो अल्लाह तआला ने उनसे बारिश रोक ली। फिर फ़र्माता है कि अपने दिल में फूलना नहीं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के मददगार हैं, अगर तुम दुरुस्त न रहे तो अल्लाह तआला तुम्हें बर्बाद करके अपने रसूल के साथी औरों को कर देगा जो तुम जैसे न होंगे, तुम अल्लाह तआला का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यह नहीं कि तुम न जाओ तो मुजाहिदीन जिहाद कर ही न सकें, अल्लाह तआला में सब क़ुदरतें हैं, वह तुम्हारे बग़ैर भी अपने दुश्मनों पर अपने गुलामों को ग़ालिब कर सकता है। कहा गया है कि यह आयत (اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا) (9/तौबा : 41) और आयत (مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ) (9/तौबा : 120) यह सब आयतें आयत (وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً) (9/तौबा : 122) से मंसूख़ हैं। लेकिन इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसकी तर्दीद करते हैं और फ़र्माते हैं कि यह मंसूख़ नहीं बल्कि इन आयतों का मतलब यह है कि जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) जिहाद के लिए निकलने को फ़र्माएँ, वह फ़र्मान सुनते ही उठ खड़े हो जाए। फ़िल वाक़ेअ यह तौजीह बहुत उम्दा है, वल्लाहु आलम!

***

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ
يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ
تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۗ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "अगर तुम उसकी मदद न करो तो अल्लाह तआला ही ने उसकी मदद उस वक़्त की थी जबकि उसे काफ़िरों ने देश से निकाल दिया था, दो में से दूसरा जबकि वह दोनों ग़ार में थे, जब यह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर, अल्लाह तआला हमारे साथ है, पस जनाब बारी ने अपनी तरफ़ से उस पर तस्कीन नाज़िल फ़र्माकर उन लश्करों से उसकी मदद की जिन्हें तुमने देखा भी नहीं, उसने काफ़िरों की बात पस्त कर दी, बुलंद व अज़ीज़ तो अल्लाह तआला का कलिमा ही है, अल्लाह तआला ग़ालिब है, हिक्मत वाला।" (40)

नबी, सिद्दीक़ और क़िस्स-ए-ग़ार (आयत 40) : तुम अगर मेरे रसूल (ﷺ) की मदद और ताईद छोड़ दोगे तो मैं किसी का मोहताज नहीं हूँ, मैं ख़ुद उसका मददगार, मुईद काफ़ी और हाफ़िज़ हूँ। याद कर लो हिज्रत वाले साल जबकि काफ़िरों ने आप (ﷺ) को क़त्ल या क़ैद या देश निकाले की साज़िश की थी और आप (ﷺ) अपने सच्चे साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के साथ अकेले मक्का मुकर्रमा से निकल गए थे, कौन उनका मददगार था, तीन दिन मारे ख़ौफ़ के इस डर से ग़ार में छुपे रहे कि ढूँढ़ने वाले मायूस होकर वापिस चले जाएँ तो यहाँ से निकलकर मदीना मुनव्वरा की ओर निकल चलें। सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) लम्हा ब लम्हा घबरा रहे थे कि किसी को पता न चल जाए, ऐसा न हो कि वह रसूले करीम (ﷺ) को कोई नुक़सान पहुँचाए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनकी तस्कीन फ़र्माते और इर्शाद फ़र्माते कि "अबूबक्र (रज़ि.)! उन दो की निस्बत तेरा क्या ख़्याल है जिनका तीसरा ख़ुद अल्लाह तआला है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरते बरा'त बाब क़ौलुहू (सानियस् नैनि इज़ हुमा फ़िल ग़ारि इज़ यक़ूलु लि साहिबिही...) : 4663; सहीह मुस्लिम : 2381; तिर्मिज़ी : 3096; अहमद : 1/4) मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबूबक्र बिन अबू क़हाफ़ा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से ग़ार में कहा कि अगर इन काफ़िरों में से किसी ने अपने क़दमों की तरफ़ देख लिया तो वह हमें देख लेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तू उन दो के बारे में क्या कहता है जिनका तीसरा ख़ुद रब्बुल आलमीन हो। अल्ग़र्ज़ उस मौक़े पर भी जनाब बारी तआला ने आप (ﷺ) की मदद फ़र्माई। कुछ बुज़ुर्गों ने फ़र्माया है कि मुराद इससे यह है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पर अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़र्माई। इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह की तफ़्सीर यही है और उनकी दलील यह है कि हुज़ूर (ﷺ) तो मुत्मइन और सकून व तस्कीन वाले थे ही। लेकिन उस ख़ास हाल में तस्कीन का अज़्सरे नौ भेजना कुछ इसके ख़िलाफ़ नहीं। इसीलिए उसी के साथ फ़र्माया कि अपने ग़ायबाना लश्कर उतारकर उसकी मदद की यानी बज़रिये फ़रिश्तों के। अल्लाह तआला ने कलिमा कुफ़्र दबा दिया और अपने कलिमे का बोलबाला किया, शिर्क को पस्त किया और तौहीद को ऊँचा किया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सवाल होता है कि एक शख़्स अपनी बहादुरी के लिए दूसरा हमिय्यते क़ौमी के लिए तीसरा लोगों को ख़ुश करने के लिए लड़ रहा है तो उनमें से अल्लाह की राह का मुजाहिदीन कौन है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने की निय्यत से लड़े वो अल्लाह की राह में मुजाहिद है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब व मन क़ातला लि तकूना कलिमतुल्लाहि हियल उलिया : 2810; सहीह मुस्लिम : 1904; अबूदाऊद : 2517; तिर्मिज़ी : 1646; नसाई : 2316; इब्ने माजा : 2783; अहमद : 4/392) अल्लाह तआला इंतिक़ाम लेने पर गालिब है। जिसकी मदद करना चाहे करता है, न कोई उसका सामना कर सके, न उसके इरादे को कोई बदल सके, कौन है

जो उसके सामने होंठ हिला सके या आँख मिला सके। इसके सब क़ौल व फ़े'ल, हिक्मत व मस्लिहत भलाई और ख़ूबी से पुर हैं। तआला शानुहू व जहा मज्दुहू

***

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾

तर्जुमा : ''निकल खड़े हो जाओ, हल्के फुल्के हो तो भी और भारी भरकम हो तो भी राहे इलाही में अपने माल व जान से जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में इल्म हो।'' (41)

हल्के या भारी हर हाल में अल्लाह की राह में निकलो (आयत 41) : कहते हैं कि सूरह बरा'त में यही आयत पहले उतरी है। (तब्री : 14/270) इसमें है कि ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए तमाम मुसलमानों को साथ लेकर हादि-ए-उमम को निकल खड़े होना चाहिए, अहले किताब के काफ़िर रूमियों से जिहाद के लिए तमाम मोमिनों को चलना चाहिए, ख़्वाह जी माने या न माने, ख़्वाह आसानी नज़र आए या भारी पड़े, ज़िक्र हो रहा था कि कोई बुढ़ापे का कोई बीमारी का बहाना कर देगा तो यह आयत उतरी। बूढ़े जो उन सबको पैग़म्बर (ﷺ) का साथ देने का आम हुक्म हुआ, किसी का कोई बहाना न चल सका। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने इस आयत की यही तफ़्सीर की और इस हुक्म की तामील में सरज़मीने शाम में चले गए। और नसरानियों से जिहाद करते ही रहे, यहाँ तक कि आप (रज़ि.) शहीद हो गए। और रिवायत में है कि एक मर्तबा आप क़ुरआने करीम की तिलावत करते हुए इस आयत पर आए तो फ़र्माने लगे, हमारे रब ने तो मेरे ख़्याल से बूढ़े जवान सबको जिहाद के लिए चलने की दावत दी है, मेरे प्यारे बच्चों! मेरा सामान तैयार करो। मैं मुल्के शाम के जिहाद में शिर्कत के लिए ज़रूर जाऊँगा। बच्चों ने कहा, अब्बाजान! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की हयात तक आपने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मातहती में जिहाद किया, ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में आप मुजाहिदीन के साथ रहे, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के आप मुजाहिद मशहूर हैं, अब आपकी उम्र जिहाद की नहीं रही, आप घर पर आराम कीजिए, हम लोग आपकी तरफ़ से मैदाने जिहाद में निकलते हैं और अपनी तलवारों के जौहर दिखाते हैं। लेकिन आप न माने और उसी वक़्त घर से रवाना हो गए, समुन्द्र पार जाने के लिए कश्ती ली और चले, हुनूज़ (अभी भी) मंज़िले मक़्सूद से कई दिन की राह पर थे जो बीच समुन्द्र में ही आप इंतिक़ाल कर गये, नौ दिन तक कश्ती चलती रही लेकिन कोई जज़ीरा या टापू नज़र न आया कि वहाँ आपको दफ़ना दिया जाता। नौ दिन के बाद ख़ुश्की पर उतरे और आपको सुपुर्दे ख़ाक किया, अब तक नअश मुबारक ज्यों की त्यों थी। (हाकिम : 3/353) और भी बहुत से बुज़ुर्गों से ख़िफ़ाफ़न व सिक़ालन की तफ़्सीर जवान और बूढ़े मरवी है। अल्ग़र्ज़ जवान हों, बूढ़े हों, अमीर हों, फ़ारिग़ हों, मशग़ूल हों, ख़ुशहाल हों, या तंगदिल हों, भारी हों, या हल्के हों, हाजतमंद हों, कारीगर हों, आसानी वाले हों, सख़्ती वाले हों, पेशावर हों, या तिजारती हों, क़वी हों या कमज़ोर, जिस हालत में भी हों, बग़ैर बहाने खड़े हो जाएँ और अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकल पड़ें

इस मसले की तफ़्सील के तौर पर इमाम अबू अम्र ओज़ाई (रह़.) का क़ौल है कि जब अंदरूने रूम पर ह़मला हो तो मुसलमान हल्के-फुल्के और सवार चलें और जब इन बन्दों के किनारों पर ह़मला हो तो हल्के बोझल, सवार पैदल हर त़रह़ निकल खड़े हो जाए।

कुछ ह़ज़रात का क़ौल है कि आयत (فَلَوْلَا نَفَرَ) (9/तौबा : 122) से यह हुक्म मंसूख़ है। इस पर हम पूरी रोशनी डालेंगे, इंशाअल्लाह! मरवी है कि एक भारी बदन के बड़े शख़्स ने आपसे अपना ह़ाल ज़ाहिर करके इजाज़त चाही लेकिन आपने इंकार कर दिया और यह आयत उतरी, लेकिन यह हुक्म स़ह़ाबा (रज़ि.) पर सख़्त गुज़रा। फिर जनाब बारी तआला ने इसे आयत (لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ) (9/तौबा : 91) से मंसूख़ कर दिया। यानी ज़ईफ़ों, बीमारों तंगदस्त फ़क़ीरों पर जबकि उनके पास ख़र्च तक न हो अगर वह दीने रब्बानी और शरीअ़ते मुस्त़फ़ा के ह़ामी और त़रफ़दार और ख़ैरख़्वाह हों तो मैदाने जंग में न जाने पर कोई ह़र्ज नहीं। ह़ज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) पहले ग़ज़्वे से लेकर पूरी उम्र तक सिवाए एक साल के हर ग़ज़्वे में मौजूद है और फ़र्माते रहे कि ख़फ़ीफ़ व सक़ील दोनों को निकलने का हुक्म है और इंसान की ह़ालत इन दो ह़ालतों के अ़लावा कुछ नहीं होती। (ह़ाकिम : 3/458; मुह़म्मद बिन सीरीन के सय्यदना अबू अय्यूब अंस़ारी (रज़ि.) से सुनने में नज़र है।) ह़ज़रत अबू राशिद ह़र्रानी (रह़.) का बयान है कि मैंने ह़ज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.), हुज़ूर (ﷺ) के सवार ह़िम्स़ में देखा कि हड्डी उतर गई है, फिर भी होदज में सवार होकर जिहाद को जा रहे हैं, तो मैंने कहा कि अब तो शरीअ़त आपको माज़ूर समझती है, फिर आप यह तक्लीफ़ क्यूँ उठा रहे हैं। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, सुनो! सूरतुल बुऊ़स यानी सूरह बरा'त हमारे सामने उतरी है जिसमें हुक्म है कि हल्के भारी सब जिहाद को जाओ। (इब्ने जरीर व सनदुहू ज़ईफ़ुन) ह़ज़रत ह़य्यान बिन ज़ेद शरइ़ (रह़.) कहते हैं कि हम स़फ़्वान बिन अम्र वाली ह़िम्स़ के साथ जुराजिमा की जानिब जिहाद के लिए चले, मैं ने दमिश्क़ के एक बुज़ुर्ग उ़म्ररसीदा को देखा कि ह़मला करने वालों के साथ अपने ऊँट पर सवार वह भी आ रहे हैं, उनकी भवें उनकी आँखों पर पड़ रही हैं, शैख़े फ़ानी हो चुके हैं। मैंने पास जाकर कहा, चचा साह़ब! आप तो अब अल्लाह तआला के नज़दीक भी माज़ूर हैं। यह सुनकर आपने अपनी आँखों पर से भवें हटा लीं और फ़र्माया, भतीजे सुनो! अल्लाह तआला ने हल्के और भारी होने की दोनों सूरतों में हमसे जिहाद में निकलने की त़लब की है, सुनो! जिससे अल्लाह तआला की मुह़ब्बत होती है उसकी आज़माइश भी होती है, फिर उस पर साबित क़दमी के बाद अल्लाह तआला की रह़मत बरसती है, सुनो! अल्लाह की आज़माइश शुक्रो स़ब्र व ज़िक्रुल्लाह और तौह़ीदे ख़ालिस़ से होती है। (त़ब्री : 14/264) जिहाद के हुक्म के बाद मालिके ज़मीनो ज़माँ अपनी राह में अपने रसूल (ﷺ) की मर्ज़ी में मालो जान के ख़र्च का हुक्म देता है और फ़र्माता है कि दुनिया व आख़िरत की भलाई इसी में है। दुनियावी नफ़ा तो यह है कि यूँ ही सा ख़र्च होगा और बहुत सी ग़नीमत मिलेगी और आख़िरत का नफ़ा यह है कि उससे बढ़कर कोई नेकी नहीं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला के ज़िम्मे दो बातों में से एक ज़रूरी है वह मुजाहिद को या तो शहीद करके जन्नत का मालिक बना देता है या उसे सलामती और ग़नीमत के साथ वापिस लौटाता है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (उह़िल्लत लकुमुल ग़नाइम) : 3123; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1876; मौत़ा इमाम मालिक (रह़.) : 444; अह़मद : 2/399) ख़ुद अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया है, बावजूद यह

कि तुम इससे जी चुरा रहे हो, लेकिन बहुत मुम्किन है कि तुम्हारी न चाही हुई चीज़ ही दरअसल तुम्हारे लिए बेहतर हो सकती है कि तुम्हारी चाहत की चीज़ फ़िल वाक़ेअ तुम्हारे ह़क़ में बेहद नुक़्सानदायक हो, सुनो! तुम तो बिलकुल नादान हो और अल्लाह तआला पूरा पूरा दाना बीना है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने एक शख़्स से फ़र्माया, ''मुसलमान हो जा।'' उसने कहा, जी तो चाहता नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''भले न चाहे।'' (मुस्नद अह़मद : 3/109; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ह़मीद तवील मुदल्लस व अ़न्अ़न; मुस्नद अबी यअ़ला : 3765; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/305)

***

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ

وَسَيَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُونَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ

لَكٰذِبُونَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : ''अगरचे जल्द वसूल होने वाला माल व अस्बाब होता और हल्का सा सफ़र होता तो यह ज़रूर तेरे पीछे हो लेते लेकिन इन पर तो दूर-दराज़ की मुश्किल पड़ गई, अब तो यह अल्लाह तआला की क़समें खाने लगे कि अगर हममें कुव्वत व ताक़त होती तो हम यक़ीनन आपके साथ निकल खड़े होते, यह अपनी जानों को ख़ुद ही हलाकत में डाल रहे हैं, इनके झूठे होने का सही इल्म अल्लाह तआला को है। (42) अल्लाह तआला तुझे मुआफ़ कर दे, तूने उन्हें क्यूँ इजाज़त दे दी? बग़ैर इसके कि तेरे सामने सच्चे लोग खुल जाएँ और तू झूठे लागों को भी जान ले। (43) अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान व यक़ीन रखने वाले तो माली और जानी जिहाद से रुक रहने की कभी भी तुझसे इजाज़त नहीं मांगेगे, अल्लाह तआला परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। (44) यह इजाज़त तो तुझसे वही तलब करते हैं जिन्हें न अल्लाह तआला पर ईमान है, न आख़िरत के दिन पर यक़ीन है, जिनके दिल शक में पड़े हुए हैं और वह अपने शक में ही सरगर्दां (भटक रहे) हैं।'' (45)

अय्यार (झूठे) लोगों के धोखे में न आओ (आयत 42-45) : जो लोग ग़ज़्व-ए-तबूक में जाने से रह गए थे और उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आ आकर अपने झूठे झूठे बनावटी बहाने पेश करने लगे थे, उन्हें इस आयत में डांटा जा रहा है कि दरअसल इन्हें कोई माज़ूरी न थी, अगर कोई आसान ग़नीमत ओर क़रीब का सफ़र होता तो यह लालची साथ हो लेते, लेकिन शाम (सीरीया) तक के लम्बे सफ़र ने इनके घुटने तोड़ दिए, इस मशक़्क़त के ख़्याल ने इनके ईमान को खोखला कर दिया, अब यह आ आकर झूठी क़समें खा खाकर अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) को धोखे दे रहे हैं कि अगर कोई बहाना न होता तो भला हम शर्फ़े हमरकाबी छोड़ने वाले थे, हम तो दिलो जान से आप (ﷺ) के सामने हाज़िर हो जाते। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इनके झूठ का मुझे इल्म है, इन्होंने तो अपने आपको बर्बाद कर लिया।

सच्चे मुसलमान ह़ीले बहाने नहीं बनाते : सुब्हानल्लाह! अल्लाह तआला की अपने महबूब से कैसी प्यार भरी बातें हो रही हैं, सख़्त बात के सुनाने से पहले ही मुआफ़ी का ऐलान सुनाया जा रहा है, उसके बाद रुख़्सत देने का अ़हद भी सूरह नूर में सौंप दिया जाता है। और इर्शाद होता है (فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ) (24/नूर : 62) यानी इनमें से कोई अगर आपसे अपने किसी काम और शुग़ल की वजह से इजाज़त चाहे तो आप जिसे चाहें इजाज़त दे सकते हैं। यह आयत उनके बारे में उतरी है जिन लोगों ने आपस में तै कर लिया था कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से इजाज़त त़लबी तो करें अगर इजाज़त हो जाए तो और अच्छा और अगर इजाज़त न भी दें तब भी हम इस ग़ज़्वे में जाएँगे ही नहीं। (त़ब्री : 14/273) इसीलिए अल्लाह तआला फ़र्माता है कि अगर इन्हें इजाज़त न मिलती तो इतना फ़ायदा ज़रूर होता कि सच्चे बहाने वाले और झूठे बहाने वाले खुल जाते, नेक व बद में ज़ाहिरी तमीज़ हो जाती, इत़ाअतगुज़ार तो ह़ाज़िर हो जाते, नाफ़र्मान बावजूद इजाज़त न मिलने के भी न निकलते, क्योंकि उन्होंने तो तै कर लिया था कि हु ज़ूरे अकरम (ﷺ) हाँ कहें या ना कहें, हम तो जिहाद में जाएँगे ही नहीं। इसीलिए जनाब बारी तआला ने इसके बाद की आयत में फ़र्माया कि यह मुम्किन ही नहीं कि सच्चे ईमान वाले लोग अल्लाह की राह के जिहाद से रुकने की तुझसे इजाज़त मांगे, वह तो जिहाद को अल्लाह की कुर्बत मानकर अपनी जानो माल के फ़िदा करने के आरज़ूमंद रहते हैं, अल्लाह तआला भी इस मुत्तकी जमाअत से बख़ूबी आगाह है। यह बग़ैर शरई बहाने बनाकर जिहाद से रुक जाने की इजाज़त त़लब करने वाले तो बेईमान लोग हैं, जिन्हें दारे आख़िरत की जज़ा की कोई उम्मीद ही नहीं, इनके दिल आज तक तेरी शरीअ़त से शको शुब्हा में ही हैं, यह ह़ैरान व परेशान हैं, एक क़दम इनका आगे बढ़ता है तो दूसरा पीछे हटता है, इन्हें साबित-क़दमी और इस्तिक़्लाल नहीं, यह हलाक होने वाले हैं, यह न इधर है, न उधर। यह अल्लाह तआला के गुमराह किए हुए हैं, तू इनके सुधरने का कोई रास्ता नहीं पायेगा।

***

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ

اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا

خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧

तर्जुमा : ''अगर इनका इरादा जिहाद के लिए निकलने का होता तो वह इस सफ़र के लिए सामान की तैयारी कर रखते लेकिन इनका उठना इन्हें पसंद ही न था, पस इन्हें हरकत से ही रोक दिया गया कि तुम तो बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो। (46) अगर यह तुममें मिलकर निकलते भी तो तुम्हारे लिए सिवाए फ़साद के और कोई चीज़ न बढ़ाते बल्कि तुम्हारे बीच ख़ूब घोड़े दौड़ा देते और तुममें फ़ित्ने डालने की कोशिश में रहते, इनके मानने वाले ख़ुद तुममें मौजूद हैं, अल्लाह तआला इन ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।'' (47)

मुनाफ़िक़ीन की रीशादवानियों और शरारतों का तज़्किरा (आयत 46, 47) : यह बहाने करते हैं। इनके ग़लत होने की एक ज़ाहिरी वजह यह भी है कि अगर इनका इरादा होता तो कम अज़्कम सामाने सफ़र तो तैयार कर लेते लेकिन यह तो ऐलान और हुक्म के बाद भी दिन गुज़रने पर भी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे, एक तिनका भी इधर से उधर न किया। बात यह है कि अल्लाह तआला को इनका तुम्हारे साथ निकलना पसंद ही न था इसलिए इन्हें पीछे हटा दिया और कुदरती तौर पर इनसे कह दिया गया कि तुम तो बैठने वालों का ही साथ दो। सुनो! इनके साथ को नापसंद रखने की वजह यह थी कि यह पूरे नामर्द आला दर्जे के बुज़दिल, बड़े ही डरपोक हैं। अगर यह तुम्हारे साथ होते तो, ''पत्ता खड़ का और बन्दा सर का'' की मसल (मुहावरे) को असल कर दिखाते और इनके साथ ही तुममें भी फ़साद बरपा हो जाता। यह इधर की उधर, उधर की इधर लगा बुझाकर बात का बतंगड़ बनाकर आपस में फूट और अदावत डलवा देते और कोई नया फ़ित्ना खड़ा करके तुम्हें आपस में ही उलझा देते, इनके मानने वाले इनके हमख़्याल इनकी पॉलीसी को अच्छी नज़र से देखने वाले ख़ुद तुममें भी मौजूद हैं, वह अपने भोलेपन से इनके शरअंगेज़ियों से बेख़बर रहते हैं जिसका नतीजा मोमिनों के ह क़ में निहायत बुरा निकलता है, आपस में शर व फ़साद फैल जाता है। मुजाहिद (रह.) वग़ैरह का क़ौल है कि मतलब यह है कि इनके गवीन्दे इनकी सी आई डी और जासूस भी तुममें लगे हुए हैं जो तुम्हारी रत्ती-रत्ती की ख़बरें इन्हें पहुँचाते हैं। लेकिन यह मअ़नी करने से वह लताफ़त बाक़ी नहीं रहती जो शुरू आयत से है यानी इन लोगों का तुम्हारे साथ न निकलना अल्लह तआला को इसलिए भी नापसंद रहा कि तुममें कुछ वह भी हैं जो इनकी मान लिया करते हैं। यह तो बहुत सही है लेकिन जासूसी की कोई ख़ुसूसियत इनके न निकलने की वजह के लिए नहीं हो सकती, इसीलिए क़तादा (रह.) वग़ैरह मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं कि इजाज़त तलब करने वालों में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल और जद बिन क़ैस भी था और यही बड़े बड़े रईस और असर रखने वाले मुनाफ़िक़ थे, अल्लाह तआला ने इन्हें दूर डाल

दिया, अगर यह साथ होते तो इनकी मुँह देखी मानने वाले वक़्त पर इनके साथ होकर मुसलमानों के नुक़्सान की वजह बन जाते, मुहम्मदी लश्कर में अब्तरी फैल जाती। (तब्री : 14/277) क्योंकि यह लोग वजाहत वाले थे और कुछ मुसलमान इनके हाल से नावाक़िफ़ होने की वजह से इनके ज़ाहिरी इस्लाम और चर्ब कलामी पर मफ़्तून थे और अब तक इनके दिलों में इनकी मुहब्बत थी, यह इनकी ला इल्मी की वजह से थी। सच है पूरा इल्म अल्लाह ही को है, ग़ायब हाज़िर हो चुका हो और होने वाला सब उस पर रोशन है, उसी अपने इल्मे ग़ैब की बिना पर वह फ़र्माता है कि तुम मुसलमान इनका न निकलना ग़नीमत समझो, यह होते तो और फ़साद और फ़ित्ने बरपा करते, न करते न करने देते। इसी वजह से फ़र्मान है कि अगर कुफ़्फ़ार दोबारा भी दुनिया में लौटाए जाएँ तो नये सिरे से फिर वही करें जिससे मना किए जाते हैं और यह झूठे के झूठे ही रहेंगे। (6/अन्आम : 28) और आयत में है कि अगर अल्लाह के इल्म में उनके दिलों में कोई भी ख़ैर होती तो अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ला उन्हें ज़रूर सुना देता लेकिन अब तो यह हाल है कि सुनें भी तो मुँह फेरकर लौट जाएँ। (8/अन्फ़ाल : 23) और जगह है कि अगर हम इन पर लिख देते कि तुम आपस में ही मौत का खेल खेलो या जला वतन हो जाओ तो सिवाए बहुत कम लोगों के यह हर्गिज़ उसे न करते, हालाँकि इनके हक़ में बेहतर और अच्छा यही था कि जो नसीहत इन्हें की जाए, यह उसे बजा लाएँ ताकि इस सूरत में हम इन्हें अपने पास से अज्रे अज़ीम दें और सीधे रास्ते दिखाएँ। (4/निसाअ : 66) और भी ऐसी आयतें बहुत सारी हैं।

***

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ
كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ
لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : "यह तो इससे पहले भी फ़ित्ने की तलाश करते रहे हैं और तेरे लिए कामों को उलट-पलट करते रहे हैं। यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और अल्लाह तआला का हुक्म ग़ालिब आ गया बावजूद यह कि वह नाख़ुशी में ही रहे। (48) इनमें से कोई कहता है कि मुझे इजाज़त दीजिए, मुझे फ़ित्ने में न डालिए, आगाह रहो वह तो फ़ित्ने में पड़ चुके हैं, यक़ीनन दोज़ख़ काफ़िरों को घेर लेने वाली है।" (49)

मुनाफ़िक़ फ़ित्ना बरपा करने के लिए हर वक़्त मौक़ा की तलाश में रहते हैं (आयत 48, 49) :
अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ीन से नफ़रत दिलाने के लिए फ़र्मा रहा है कि क्या भूल गए, मुद्दतों यह तो फ़ित्ना व फ़साद की आग सुलगाते रहे हैं और तेरे काम के उलट देने की बीसयों तदबीरें कर चुके हैं, मदीने में आप (ﷺ) का क़दम आते ही तमाम अरब ने एक होकर मुसीबतों की बारिश आप (ﷺ) पर बरसा दी, बाहर से वह चढ़ दौड़े, अंदर से यहूदे मदीना और मुनाफ़िक़े मदीना ने बग़ावत कर दी लेकिन अल्लाह तआला ने एक ही दिन में सबकी कमानें उतार दीं, उनके जोड़ ढीले कर दिए, उनके जोश ठण्डे कर दिए, बद्र की जंग में उनके होश हवास

भुला दिए और उनके अरमान ज़िब्ह कर दिए। मुनाफ़िक़ीन का रईस अब्दुल्लाह बिन उबय ने साफ़ कह दिया कि बस अब यह लोग हमारे बस के नहीं रहे, अब तो सिवा इसके कोई चारा नहीं कि ज़ाहिर में इस्लाम की मुवाफ़िक़त की जाए, दिल में जो है सो है, वक़्त आने दो, वक़्त पर देखी जाएगी और दिखा दी जाएगी। फिर ज़्यों ज़्यों हक़ की बुलंदी और तौहीद की ऊँचाई होती गई, यह जलते भुलसते गए। आख़िर हक़ ने क़दम जमाए और कलिमा रब्बानी ग़ालिब आ गया और यह यूँ ही पेट पीटते और डण्डे बजाते रहे।

निफ़ाक़ फ़ित्ना ही फ़ित्ना है : जद बिन क़ैस से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "इस साल नस्रानियों के जला वतन करने में तू हमारा साथ देगा।" तो उसने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे तो माफ़ रखिए, मेरी सारी क़ौम जानती है कि मैं औरतों का बेतरह शैदा हूँ, ईसाई औरतों को देखकर मुझसे तो अपना नफ़्स रोका न जाएगा। आप (ﷺ) ने उससे मुँह फेर लिया। इसी का बयान इस आयत में है कि उस मुनाफ़िक़ ने यह बहाना बनाया हालाँकि वह फ़ित्ने में तो पड़ा हुआ है, रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ छोड़ना जिहाद से मुँह फेरना, यह क्या कम फ़ित्ना है। (तबरी : 14/287) यह मुनाफ़िक़ बनू सलमा क़बीले का रईसे आज़म था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जब इस क़बीले के लोगों से पूछा कि "तुम्हारा सरदार कौन है?" तो उन्होंने कहा, जद बिन क़ैस जो बड़ा ही शूम और बख़ील है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "बुख़्ल से बढ़कर और क्या बुरी बीमारी है, सुनो! अब से तुम्हारा सरदार नौजवान सफ़ेद और ख़ूबसूरत बिश्र बिन बराअ बिन मअरूर है।" (हाकिम : 3/219; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/315) जहन्नम काफ़िरों को घेर लेने वाली है, न उससे वह बच सकें, न भाग सकें, न नजात पा सकें।

***

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ
وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰنَا ۚ وَعَلَى
اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَآ إِلَّآ إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ
نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُّصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوٓا إِنَّا مَعَكُمْ
مُّتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا
فٰسِقِينَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ إِلَّآ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهٖ
وَلَا يَأْتُونَ الصَّلٰوةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كٰرِهُونَ ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : "तुझे अगर कोई भलाई मिल जाए तो इन्हें बुरा लगता है और तुझे कोई बुराई पहुँच जाए तो यह कहते हैं हमने तो अपना मामला पहले ही दुरुस्त कर लिया था फिर तो बड़े ही ख़ुश होकर लौटते हैं। (50) तू कह दे कि हमें सिवाए अल्लाह तआला के हमारे हक़ में लिखे हुए कोई चीज़ पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा कारसाज़ और मौला है, मोमिनों को तो अल्लाह तआला की ज़ात पाक पर ही भरोसा करना चाहिए। (51) कह दे कि तुम हमारे बारे में जिस चीज़ का इंतिज़ार कर रहे हो, वह दो भलाईयों में से ही एक है और हम तुम्हारे हक़ में उसका इंतिज़ार करते हैं कि या तो अल्लाह तआला अपने पास से कोई सज़ा तुम्हें दे या हमारे हाथों से, पस एक तरफ़ तुम मुंतज़िर रहो, दूसरी जानिब तुम्हारे साथ हम भी मुंतज़िर रहते हैं (52) कह दे कि तुम ख़ुशी या नाख़ुशी किसी तरह भी ख़र्च करो, क़बूल तो हर्गिज़ नहीं किया जाएगा, यक़ीनन तुम बेहुक्म लोग हो। (53) कोई वजह इनके ख़र्च की क़बूलियत के न होने का इसके सिवा नहीं कि यह अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) के इंकार करने वाले हैं और बड़ी काहिली से नमाज़ को आते हैं और बुरे दिल से ही ख़र्च करते हैं।" (54)

मुसलमानों की हर ख़ुशी मुनाफ़िक़ीन पर शाक़ गुज़रती है (आयत 50-54) : इन बद बातिन लोगों की अंदरूनी ख़बासत का बयान हो रहा है कि मुसलमानों की फ़तह व नुस्रत से इनकी भलाई और तरक़्क़ी से इनके तन बदन में आग लग जाती है और अगर अचानक यहाँ इसके ख़िलाफ़ हुआ तो अलाप अलाप कर अपनी चालाकी के अफ़साने गाये जाते हैं कि मियाँ इसी वजह से हम तो इनसे बचते रहे, मारे ख़ुशी के बग़लें बजाने लगते हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इनको जवाब दे कि रंज राहत और हम ख़ुद अल्लाह तआला की तक़्दीर और उसकी मंशा के मातहत हैं, वह हमारा मौला है और हमारा आक़ा है, वह हमारी पनाह है, हम मोमिन हैं और मोमिनों का भरोसा उसी पर होता है, वह हमें काफ़ी है बस है वह हमारा कारसाज़ है और बेहतरीन कारसाज़ है।

मुसलमान हर हाल में कामयाब और मुनाफ़िक़ नाकाम है : मुसलमानों के जिहाद में दो ही अंजाम होते हैं और दोनों हर तरह अच्छे हैं। अगर शहादत मिली तो जन्नत अपनी है और अगर फ़तह मिली तो ग़नीमत व अज्र है। पस ऐ मुनाफ़िक़ों! तुम जो हमारी बाबत इंतिज़ार कर रहे हो, वह उन ही दो अच्छाइयों में से एक है, और हम जिस बात का इंतिज़ार तुम्हारे बारे में कर रहे हैं वह दो बुराईयों में से एक का है यानी या तो यह कि अज़ाबे इलाही बराहे रास्त तुम पर आ जाए या हमारे हाथों तुम पर रब की मार पड़े कि क़त्लो क़ैद हो जाओ। अच्छा! अब तुम अपनी जगह और हम अपनी जगह मुंतज़िर रहें, देखें पर्द-ए-ग़ैब से क्या ज़ाहिर होता है, तुम्हारा ख़र्च करना अल्लाह के नज़दीक कुछ मायने नहीं रखता, तुम ख़ुशी से दो तब भी और नाराज़गी से दो तब भी वह क़बूल करने वाला नहीं, इसलिए कि तुम झूठे लोग हो, तुम्हारे ख़र्च की अदमे क़ुबूलियत का बाइस तुम्हारा कुफ़्र है और आमाल की क़बूलियत की शर्त कुफ़्र का न होना बल्कि ईमान का होना है, साथ ही किसी अमल में तुम्हारा नेक क़स्द और सच्ची हिम्मत नहीं, नमाज़ को आते हो तो भी हारे दिल से गिरते पड़ते मरते बिछड़ते सुस्त और काहिल होकर। देखा देखी मज्मआ में दो चार सज्दे दे भी देते हो तो मरे जी से दिल की तंगी

से। सादिक़ व मस्दूक़ हज़रत मुहम्मद (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला नहीं थकता जब तक तुम थक जाओ।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अहब्बुद् दीनि इलल्लाहि अदवमुहू : 43; सहीह मुस्लिम : 782) ''अल्लाह पाक है वह पाक चीज़ ही क़बूल करता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब अस्सदक़तु मिनल कसबित्तय्यिब : 1410; सहीह मुस्लिम : 1015) मुत्तक़ियों के आमाल क़बूल होते हैं तुम फ़ासिक़ हो, तुम्हारे आमाल क़बूलियत से गिरे हुए हैं।''

***

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٥٥ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧

तर्जुमा : ''तू इनके माल व औलाद से ताज्जुब में न पड़, अल्लाह तआला की चाहत यही है कि इससे इन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ही सज़ा दे और इनके कुफ़्र ही की हालत में इनकी जानें निकल जाएँ। (55) यह अल्लाह तआला की क़सम खा खाकर कहते हैं कि यह तुम्हारी जमाअत के लोग हैं, हालाँकि वह दरअसल तुम्हारे नहीं, बात सिर्फ़ इतनी है कि यह डरपोक लोग हैं। (56) अगर यह कोई बचाव की जगह या कोई ग़ार या कोई भी सर घुसाने की जगह पा लें तो अभी उस तरफ़ लगाम तोड़कर उलटे भाग छूटें।'' (57)

दुनियादारों को हसरत भरी नज़रों से न देखो (आयत 55-57) : इनके माल व औलाद को ललचाई हुई नज़रों से न देख, इनकी दुनिया की इस हेरा-फेरी की कोई हक़ीक़त न गिन, यह इनके हक़ में कोई भली चीज़ नहीं, यह तो इनके लिए दुनियावी सज़ा भी है कि न उसमें से ज़कात निकले, न अल्लाह के नाम ख़ैरात हो। क़तादा (रह.) कहते हैं यहाँ मतलब मुक़द्दम मुअख़्ख़र है यानी तुझे इनके मालो-औलाद अच्छे न लगने चाहिएँ, अल्लाह का इरादा इससे इन्हें इस दुनिया की ज़िन्दगी में ही सज़ा देने का है। पहला क़ौल हज़रत हसन बसरी (रह.) का है वही अच्छा और क़वी है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं। इसमें यह ऐसे फंसे रहेंगे कि मरते दम तक राहे हिदायत नसीब नहीं होगी, यूँ ही बतदरीज पकड़ लिए जाएँगे और इन्हें पता भी न चलेगा। यही हशमत व वजाहत माल व दौलत जहन्नम की आग बन जाएगा।

मुनाफ़िक़ीन की ग़ैर मुस्तक़िल मिज़ाजी और उनकी झूठी क़समें : इनकी थुड़दिली, इनकी ग़ैर मुस्तक़िल मिज़ाजी, इनकी सरासीमगी और परेशानी घबराहट और बेइत्मिनानी का यह हाल है कि तुम्हारे पास

आकर तुम्हारे दिल में घर करने के लिए और तुम्हारे हाथों से बचने के लिए बड़ी लम्बी चौड़ी ज़बरदस्त क़समें खाते हैं कि वल्लाह! हम तुम्हारे हैं, हम मुसलमान हैं, हालाँकि हक़ीक़त इसके बरख़िलाफ़ है। यह सिर्फ़ ख़ौफ़ व डर है जो इनके पेट में दर्द पैदा कर रहा है। अगर आज इन्हें अपने बचाव के लिए कोई क़िला मिल जाए अगर आज यह कोई महफ़ूज़ ग़ार देख लें या किसी अच्छी सुरंग का पता इन्हें चल जाए तो यह सारे के सारे दम भर में उस तरफ़ उड़न छू हो जाएँ, तेरे पास इनमें से एक भी नज़र न आए क्योंकि इन्हें तुझसे कोई मुहब्बत या लगाव तो नहीं है, यह तो ज़रूरत मजबूरी और ख़ौफ़ की बिना पर तुम्हारी चापलूसी कर लेते हैं। यही वजह हे कि ज्यों ज्यों इस्लाम तरक़्क़ी कर रहा है यह बुझते चले जा रहे हैं, मोमिनों की हर ख़ुशी से यह जलते तड़पते हैं, इनकी तरक़्क़ी उन्हें एक आँख नहीं भाती, मौक़ा मिल जाए तो आज भाग जाएँ।

***

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

तर्जमा : ''इनमें वह भी हैं जो ख़ैराती माल की तक़्सीम के बारे में तुझ पर ऐब रखते हैं अगर इन्हें उसमें से मिल जाए तो ख़ुश हैं और अगर उसमें से न मिला तो फ़ौरन ही बिगड़ खड़े हुए। (58) अगर यह लोग अल्लाह और रसूल (ﷺ) के दिए हुए पर ख़ुश रहते, और कह देते कि अल्लाह तआला हमें काफ़ी है, अल्लाह तआला हमें अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल (ﷺ) भी हम तो अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद रखने वाले हैं।'' (59)

मुनाफ़िक़ मतलबपरस्त और माल व दौलत के हरीस़ (लालची) हैं (आयत 58, 59) : कुछ मुनाफ़िक़ हुज़ूर (ﷺ) पर तोहमत लगाते हैं कि आप (ﷺ) माले ज़कात सही तक़्सीम नहीं करते वग़ैरह-वग़ैरह और इससे उनका इरादा सिवाए अपने नफ़ा के हुसूल के और कुछ न था। उन्हें कुछ मिल जाए तो राज़ी हैं और यह रह जाएँ तो बस उनके नथुने फूले हुए हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने माले ज़कात जब इधर उधर तक़्सीम कर दिया तो अंसार में से किसी ने हाँक लगाई कि यह अदल नहीं, इस पर यह आयत उतरी। (यह रिवायत मुर्सल है।) और रिवायत में है एक नये मुस्लिम सहराई हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को सोना चाँदी बाँटते हुए देखकर कहने लगा कि, अगर अल्लाह तआला ने तुझे अदल का हुक्म दिया है तो तू अदल नहीं करता। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तू तबाह हो, अगर मैं भी आदिल नहीं तो ज़मीन पर कौन आदिल होगा?'' फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इससे और इस जैसों से बचो, मेरी उम्मत में इस जैसे लोग होंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, वह जब निकलें, उन्हें क़त्ल कर देना, फिर निकलें फिर मार देना, फिर जब ज़ाहिर हो, फिर गर्दनें उड़ा देना।'' आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह की क़सम! न मैं तुम्हें दूँ, न तुमसे रोकूँ, मैं तो एक ख़ाज़िन

हूँ।'' (त़ब्री : 14/302) जंगे हुनैन के माले ग़नीमत की तक़्सीम के वक़्त जुल ख़्वैसिरा हरक़ूस नामी एक शख़्स ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर ऐतिराज़ किया था और कहा था तू इन्साफ़ नहीं करता, इंसाफ़ से काम ले। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अगर मैं भी अदल न करूँ तो फिर तेरी बर्बादी कहीं नहीं जा सकती।'' जब उसने पीठ फेरी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इसकी नस्ल से एक क़ौम निकलेगी जिनकी नमाज़ों के मुकाबले में तुम्हारी नमाज़ें तुम्हें हक़ीर मालूम होंगी और उनकेरोज़ों के मुक़ाबले में तुममें से हर एक को अपने रोज़े हक़ीर मालूम होंगे लेकिन वह दीन से ऐसे निकल जाएँगे जैसे तीर कमान से। तुम्हें जहाँ भी वह मिल जाएँ, उनके क़त्ल में कमी न करो, आसमान तले उन मक़्तूलों से बदतर मक़्तूल और कोई नहीं।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अलामातुन्नबुव्वा फ़िल इस्लामि : 3610; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1064; अह़मद : 3/56; मुख़्तसरन) फिर इर्शाद है कि उन्हें रसूल के हाथों जो कुछ भी अल्लाह तआला ने दिलवा दिया था अगर यह उस पर क़नाअत करते, सब्रो शुक्र करते और कहते कि अल्लाह तआला हमें काफ़ी है वह अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल (ﷺ) के हाथों हमें और भी दिलवाएगा, हमारी उम्मीदें ज़ाते इलाही से वाबस्ता हैं, तो यह उनके ह़क़ में बेहतर था। पस उसमें अल्लाह तआला की तालीम है कि अल्लाह तआला जो दे उस पर इंसान को स़ब्रो शुक्र करना चाहिए, तवक्कल ज़ाते वाह़िद पर रखे, उसी को काफ़ी समझे, रग़बत और तवज्जा और लालच और उम्मीद और तवक़्क़ा उसकी ज़ात पाक से रखे, रसूले करीम (ﷺ) की इत़ाअत में कोताही न करे और अल्लाह तआला से तौफ़ीक़ त़लब करे कि जो अह़काम हों, उन्हें बजा लाए और जो काम ह़राम हों, उन्हें छोड़ देने और जो ख़बरें हों उन्हें मान लेने और सह़ीह़ इत़ाअत करने की वह रहबरी करे।

***

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۖ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠

तर्जुमा : ''स़दक़े स़िर्फ़ फ़क़ीरों के लिए हैं और मिस्कीनों के लिए और उनके वस़ूल करने वालों के लिए और उनके लिए जिनके दिल माइल किये जाते हों और गर्दन छुड़ाने में और क़र्ज़दारों के लिए और अल्लाह की राह में और राह मुसाफ़िरों के लिए फ़र्ज़ है, अल्लाह तआला की त़रफ़ से, अल्लाह तआला इल्मो-ह़िक्मत वाला है।'' (60)

मस़ारिफ़े ज़कात की तफ़्सील (आयत 60) : ऊपर की आयत में उन जाहिल मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र था जो ज़ाते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर तक़्सीमे सदक़ात में ऐतिराज़ कर बैठते थे। अब यहाँ इस आयत में बयान कर दिया कि तक़्सीमे ज़कात पैग़म्बर (ﷺ) की मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि हमारे बतलाए हुए मस़ारिफ़ में ही लगती है, हमने आप उसकी तक़्सीम कर दी है किसी और के सुपुर्द नहीं की। अबूदाऊद में है ज़ियाद बिन ह़ारिस सुदाई (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मैंने हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आप (ﷺ) के हाथ पर बेअ़त की, एक शख़्स ने आकर आप (ﷺ) से सवाल किया कि मुझे सदक़े में से कुछ दिलवा दीजिए। आप (ﷺ) ने

फ़र्माया "अल्लाह तआ़ला नबी ग़ैर नबी किसी के हुक्म पर तक़्सीमे ज़कात के बारे में राज़ी नहीं हुआ, यहाँ तक कि ख़ुद उसने तक़्सीम कर दी है, आठ मस्रफ़ मुक़र्रर कर दिए हैं अगर तू उनमें से किसी में है तो मैं तुझे दे सकता हूँ।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब मंय्युअ़ता मिनस्सदक़ति व हद्दुल ग़िना : 1630; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अन्अम अफ़्रीक़ी ज़ईफ़ुल हिफ़्ज़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/480; रक़म : 938) इमाम शाफ़ेई (रह.) वग़ैरह तो फ़र्माते हैं कि ज़कात के माल की तक़्सीम उन आठों क़िस्म के तमाम लोगों पर करनी वाजिब है और इमाम मालिक (रह.) वग़ैरह का क़ौल है कि वाजिब नहीं बल्कि उनमें से किसी एक को ही दे देना काफ़ी है भले और क़िस्म के लोग भी हों। आ़म अहले इल्म का क़ौल भी यही है, आयत में बयान मस्रफ़ है न कि इन सबको देने के वजूब का ज़िक्र। इन बातों की दलीलों और मुनाज़िरों की जगह यह किताब नहीं, वल्लाहु आ़लम!

फ़क़ीरों को सबसे पहले इसलिए बयान किया कि उनकी हाजत बहुत सख़्त है, भले इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक मिस्कीन फ़क़ीर से भी बुरे हाल वाला है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जिसके हाथ तले माल न हो, उसी को फ़क़ीर नहीं कहते बल्कि फ़क़ीर वह भी है जो मुहताज हो, गिरा पड़ा हो, भले कुछ खाता पीता कमाता भी हो। इब्ने अ़लिया (रह.) कहते हैं इस रिवायत में अख़्लक़ का लफ़्ज़ है, अख़्लक़ कहते हैं हमारे नज़दीक तिजारत को, लेकिन जुम्हूर इसके बरख़िलाफ़ हैं। और बहुत से हज़रात फ़र्माते हैं फ़क़ीर वह है जो सवाल से बचने वाला हो, और मिस्कीन वह है जो साइल हो, लोगों के पीछे लगने वाला और घरों और गलियों में घूमने वाला। (त़बरी : 14/305) क़तादा (रह.) कहते हैं, फ़क़ीर वह है जो बीमारी वाला हो और मिस्कीन वह है जो सही सालिम जिस्म वाला हो। (त़बरी : 14/306) इब्राहीम (रह.) कहते हैं मुराद इससे मुहाजिर फ़ुक़रा हैं। सुफ़ियान सौरी (रह.) कहते हैं यानी देहातियों को उसमें से कुछ भी न मिले। इक्रिमा (रह.) कहते हैं मुसलमान फ़ुक़रा को मसाकीन न कहो, मिस्कीन तो सिर्फ़ अहले किताब के लोग हैं।

अब वह हदीसें सुनिए जो उन आठ क़िस्मों के बारे में हैं। **फ़ुक़रा** हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "सदक़ा मालदार पर और तन्दुरुस्त तवाना पर हलाल नहीं।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब मंय्युअ़ता मिनस्सदक़ति व हद्दुल ग़िना : 1634; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 652; अहमद : 2/164; दारमी : 1/386; हाकिम : 1/407) दो शख़्सों ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सदक़ा का माल मांगा, आप (ﷺ) ने बग़ौर नीचे से ऊपर तक उन्हें हट्टा कट्टा क़वी तंदुरुस्त देखकर फ़र्माया, "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें दे दूँ लेकिन अमीर शख़्स का और क़वी त़ाक़तवर, कमाई की त़ाक़त रखने वाले शख़्स का इसमें कोई हिस्सा नहीं।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब मंय्युअ़ता मिनस्सदक़ति व हद्दुल ग़िना : 1633; व सनदुहू सहीहुन; नसाई : 2599) **मसाकीन**, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "मिस्कीन यही घूम घूमकर एक लुक़्मा दो लुक़्मे एक खजूर दो खजूर लेकर टल जाने वाले नहीं हैं।" लोगों ने पूछा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर मसाकीन कौन लोग हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो बेपरवाही के बराबर न पाए, न अपनी ऐसी हालत रखे कि कोई देखकर पहचान ले और कुछ दे दे, न किसी से ख़ुद कोई सवाल करे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि अ़ज़्ज़ा व जल्ला (ला यस्अलूनन्नासा इल्हाफ़ा) : 1479; सहीह मुस्लिम : 1039) **सदक़ा**

वसूल करने वाले : यह तहसीलदार हैं, इन्हें उजरत उसी माल से मिलेगी। हुज़ूर (ﷺ) के क़राबतदार जिन पर सदक़ा हराम है इस ओहदे में नहीं आ सकते। अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ बिन हारिस और फ़ज़्ल बिन अब्बास (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से यह दरख़्वास्त लेकर गए कि हमें सदक़ा जमा करने का आमिल बना दीजिए। आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि "मुहम्मद और आले मुहम्मद पर सदक़ा हराम है, यह तो लोगों की मेल-कुचेल है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब तर्कु इस्तेअमालि आलिन्नबी अलस्सदक़ति : 1072; अबूदाऊद : 2985; बैहक़ी : 7/31; अहमद : 4/166) **जिनके दिल लुभाये जाते हैं** : उनकी कई क़िस्में हैं, कुछ को तो इसलिए दिया जाता है कि वह इस्लाम क़बूल कर लें, जैसे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सफ़्वान बिन उमय्या (रज़ि.) को ग़नीमते हुनैन का माल दिया था हालाँकि वह उस वक़्त कुफ़्र की हालत में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ निकले थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब फ़ी सख़ाइही (ﷺ) : 2313; तिर्मिज़ी : 666; अहमद : 3/401) उनका अपना बयान है कि आप (ﷺ) की उस दादो दहिश ने मेरे दिल में आप (ﷺ) की सबसे ज़्यादा मुहब्बत पैदा कर दी हालाँकि पहले सबसे बड़ा दुश्मन आप (ﷺ) का मैं ही था। कुछ को इसलिए दिया जाता है कि उनका इस्लाम मज़बूत हो जाए और उनका दिल इस्लाम पर लग जाए। जैसे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हुनैन वाले दिन मक्का के आज़ादकर्दा लोगों के सरदारों को सौ (100) सौ (100) ऊँट दिए। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा कानन्नबी (ﷺ) युअतिल मुअल्लफ़ता कुलूबुहुम व ग़ैरुहुम.... : 3147; सहीह मुस्लिम : 1059) और इर्शाद फ़र्माया कि "मैं एक को देता हूँ और दूसरे को जो उससे ज़्यादा महबूब है, नहीं देता, इसलिए कि ऐसा न हो कि यह औंधे मुँह जहन्नम में गिर पड़े।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (ला यस्अलूनन्नासा इल्हाफ़ा) : 1478; सहीह मुस्लिम : 150; अबूदाऊद : 4683) एक मर्तबा हज़रत अली (रज़ि.) ने यमन से कच्चा सोना मिट्टी समेत आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा तो आप (ﷺ) ने सिर्फ़ चार शख़्सों में ही तक़्सीम किया, अक़रअ बिन हाबिस, उयेयना बिन बद्र, अल्क़मा बिन उलासा और ज़ेद ख़ैर, और फ़र्माया "मैं इनकी दिलजोई के लिए इन्हें दे रहा हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अलामातुन्नुबुव्वा फ़िल इस्लामि : 3610; सहीह मुस्लिम : 1064; अबूदाऊद : 4764; मुस्नद अबी यअला : 1163) कुछ को इसलिए भी दिया जाता है कि उस जैसे और लोग भी इस्लाम क़बूल कर लें। कुछ को इसलिए दिया जाता है कि वह अपने आसपास वालों से सदक़ा पहुँचाए या आसपास के दुश्मनों की निगहदाश्त रखे और उन्हें मुसलमानों पर हमला करने का मौक़ा न दे। इन सबकी तफ़्सील की जगह अहकाम व फ़ुरूअ की किताबें हैं, न कि यह तफ़्सीर, वल्लाहु आलम!

हज़रत उमर (रज़ि.) और आमिर शअबी (रह.) और एक जमाअत का क़ौल है कि हुज़ूर (ﷺ) के विसाल के बाद अब यह मसरफ़ बाक़ी नहीं रहा, क्योंकि अल्लाह तआला ने इस्लाम को इज़्ज़त दे दी है, मुसलमान मुल्कों के मालिक बन गए हैं और बहुत से बंदगाने रब उनके मातहत हैं। लेकिन और बुज़ुर्गों का यह क़ौल है कि अब भी मुअल्लफ़तुल कुलूब को ज़कात देनी जाइज़ है, फ़तहे मक्का और फ़तहे हवाज़िन के बाद भी हुज़ूर (ﷺ) ने उन लोगों को माल दिया। दूसरे यह कि अब भी ऐसी ज़रूरतें पेश आ जाया करती हैं।

आज़ादगी गर्दन के बारे में बहुत से बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि मुराद इससे वह गुलाम हैं जिन्होंने रक़म मुक़र्रर करके अपने मालिकों से अपनी आज़ादगी की शर्त कर ली है, उन्हें माले ज़कात से रक़म दी जाए ताकि वह अदा करके आज़ाद हो जाएँ। (तब्री : 14/317) और बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि वह गुलाम जिसने यह शर्त न लिखवाई हो उसे भी माले ज़कात से ख़रीदकर आज़ाद करने में कोई डर ख़ौफ़ नहीं। ग़र्ज़ मुकातब गुलाम और महज़ गुलाम दोनों की आज़ादी ज़कात का एक मसरफ़ है। अहादीस में भी इसकी बहुत कुछ फ़ज़ीलत वारिद हुई है यहाँ तक फ़र्माया है कि आज़ादकर्दा गुलाम के हर हर हिस्से के बदले नेकी मिलती है। कुरआन फ़र्माता है कि तुम्हें वही जज़ा दी जाएगी जो तुमने किया होगा। हदीस में है तीन क़िस्म के लोगों की मदद अल्लाह तआला के ज़िम्मे हक़ है, वह ग़ाज़ी जो अल्लाह की राह में जिहाद करता हो, वह मुकातब गुलाम और क़र्ज़दार जो अदायगी की निय्यत रखता हो, वह निकाह करने वाला जिसका इरादा बदकारी से महफ़ूज़ रहने का हो। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल जिहाद, बाब मा जाअ फ़िल मुजाहिद वन्नाकिह.... : 1655; व सनदुहू हसन; नसाई : 3220; इब्ने माजा : 2518; अहमद : 2/251; इब्ने हिब्बान : 4030; हाकिम : 2/160) किसी ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से कहा कि मुझे कोई ऐसा अमल बतलाइये जो मुझे जन्नत से क़रीब और दोज़ख़ से दूर कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नस्मा आज़ाद कर और गर्दन ख़ुलासी कर।" उसने कहा, क्या यह दोनों एक ही चीज़ नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! नस्मा की आज़ादी तो यह है कि तू अकेला ही किसी गुलाम को आज़ाद कर दे और गर्दन ख़ुलासी यह है कि तू भी उसमें जो तुझसे हो सके मदद करे।" (अहमद : 4/299; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नद तयालिसी : 739; बैहक़ी : 10/272; इब्ने हिब्बान : 374; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/240) **क़र्ज़दार** : इनकी भी कई क़िस्में हैं, एक शख़्स दूसरे का बोझ अपने ऊपर ले ले, किसी के क़र्ज़ का आप ज़ामिन बन जाएँ फिर उसका माल उठ जाए या वह ख़ुद क़र्ज़दार बन जाए, या किसी ने बुराई पर क़र्ज़ उठाया हो और अब वह तौबा कर ले, पस उन्हें माले ज़कात दिया जाएगा कि यह क़र्ज़ अदा कर दें। इस मसले की असल क़बीसा बिन मुख़ारिक़ हिलाली (रज़ि.) की रिवायत में है कि मैंने दूसरे का हवाला अपनी तरफ़ लिया था फिर मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम ठहरो! हमारे पास माले सदक़ा आएगा तो हम उसमें से तुम्हें देंगे।" फिर फ़र्माया, "क़बीसा! सुन तीन क़िस्म के लोगों को ही सवाल हलाल है एक तो वह जो ज़ामिन पड़े पस इस रक़म के पूरा होने तक उसे सवाल जाइज़ है, फिर सवाल न करे। दूसरा वह जिसका माल किसी आफ़ते नागहानी से बर्बाद हो जाए, उसे भी सवाल करना दुरुस्त है यहाँ तक कि पेट भराई हो जाए, तीसरा वह शख़्स जिस पर फ़ाक़ा गुज़रने लगे और उसकी क़ौम के तीन ज़ी होश लोग उसकी शहादत के लिए खड़े हो जाएँ कि हाँ! बेशक फ़लाँ शख़्स पर फ़ाक़े गुज़रने लगे हैं, उसे भी मांग लेना जाइज़ है यहाँ तक कि उसका सहारा हो जाए और सामाने ज़िन्दगी मुहय्या हो जाए, उनके सिवा औरों को सवाल करना हराम है, अगर वह मांगकर कुछ लेकर खायेंगे तो हराम खायेंगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब वमन ला तहिल्ल लहुल मस्अला : 1044; अबूदाऊद : 1640; इब्ने अबी शैबा : 3/210; दारमी : 1/396; मुस्नद तयालिसी : 1327) एक शख़्स ने ज़मान-ए-नबवी में एक बाग़ ख़रीदा, कुदरते रब से आसमानी आफ़त से बाग़ का फल मारा गया, उससे वह बहुत क़र्ज़दार हो गया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसके क़र्ज़ख़्वाहों से फ़र्माया कि "तुम्हें जो मिले ले लो। उसके सिवा तुम्हारे लिए और कुछ नहीं।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाक़ात, बाब इस्तिहबाबुल वज़अ मिनद्दीन : 1556; अबूदाऊद : 3469; तिर्मिज़ी : 455; इब्ने माजा : 2356; अहमद : 3/36) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "एक क़र्ज़दार को अल्लाह तआला क़यामत के दिन बुलाकर अपने सामने खड़ा करके पूछेगा कि तूने क़र्ज़ क्यूँ लिया और क्यूँ रक़म बर्बाद कर दी? जिससे लोगों के हुक़ूक़ बर्बाद हुए। वह जवाब देगा कि ऐ अल्लाह! तुझे ख़ूब मालूम है, मैंने यह रक़म खाई न पी न उड़ाई बल्कि मेरे यहाँ से मस्लन चोरी हो गई या आग लग गई या कोई और आफ़त आ गई। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, मेरा बन्दा सच्चा है, आज तेरे क़र्ज़ के अदा करने का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ मैं ही हूँ। फिर अल्लाह तआला कोई चीज़ मंगवाकर उसकी नेकियों के पलड़े में रख देगा जिससे नेकियाँ बुराइयों से बढ़ जाएगी और अल्लाह तबारक व तआला उसे अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में ले जाएगा। (मुस्नद अहमद : 1/197, 198; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद बज़्ज़ार : 1333; इसकी सनद में सदका बिन मूसा दक़ीक़ी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/313; रक़म : 3879) अल्लाह की राह में वह मुजाहिदीन ग़ाज़ी दाख़िल हैं जिनका दफ़्तर में कोई हक़ नहीं होता। हज्ज भी अल्लाह की राह में दाख़िल है। **मुसाफ़िर** : जो सफ़र में बेसरो सामान रह गया हो, उसे भी माले ज़कात से इतनी रक़म दी जाए जिससे वह अपने शहर पहुँच सके, भले वह अपने यहाँ मालदार ही हो। यही हुक्म उनका भी है जो अपने शहर से सफ़र को जाने का क़सद रखते हों लेकिन माल न हो तो उसे भी सफ़रे ख़र्च माले ज़कात से देना जाइज़ है जो उसे आने जाने के लिए काफ़ी हो। आयत के इस लफ़्ज़ की दलील के अलावा अबू दाऊद वग़ैरह की यह हदीस भी इसकी दलील है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "मालदार पर ज़कात हराम है सिवाय पाँच क़िस्म के मालदारों के एक तो वह जो ज़कात वसूल करने पर मुक़र्रर हो, दूसरा वह जो माले ज़कात की किसी चीज़ को अपने माल से ख़रीद ले, तीसरा क़र्ज़दार, चौथा राहे इलाही का ग़ाज़ी मुजाहिद। पाँचवाँ वह जिसे कोई मिस्कीन बतौर तोहफ़े के अपनी कोई चीज़ जो ज़कात में उसे मिली हो, दे।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब वमंय्यजूज़ु लहू अख़्ज़स्सदक़त वहुव ग़नी : 1635; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 1841) और रिवायत में है "ज़कात मालदार के लिए हलाल नहीं मगर फ़ी सबीलिल्लाह जो हो और जो मुसाफ़िरत में हो और जिसे उसका कोई मिस्कीन पड़ौसी बतौर तोहफ़े हदिये के दे या अपने यहाँ बुला ले।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब वमंय्यजूज़ु लहू अख़्ज़स्सदक़ति वहुव ग़नी : 1637; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अबी शैबा : 3/210; बैहक़ी : 7/23; अहमद : 3/31; इसकी सनद में अतिया औफ़ी मजरूह रावी है (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 416) ज़कात के इन आठों मसारिफ़ को बयान करके फिर इर्शाद होता है कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़र्ज़ है यानी मुक़द्दर है अल्लाह तआला की तक़्दीर, इसकी तक़्सीम और इसके फ़र्ज़ करने से। अल्लाह तआला खुली और छुपी बातों का आलिम है, अपने बन्दों की मस्लिहतों से वाक़िफ़ है, वह अपने क़ौल फ़ेअल शरीअत और हुक्म में हिक्मत वाला है। सिवाय उसके कोई भी लायक़े इबादत नहीं , न उसके सिवा कोई किसी का पालने वाला है।

***

وَمِنۡهُمُ الَّذِيۡنَ يُؤۡذُوۡنَ النَّبِىَّ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلۡ اُذُنُ خَيۡرٍ لَّكُمۡ يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤۡمِنُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَرَحۡمَةٌ لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ يُؤۡذُوۡنَ رَسُوۡلَ اللّٰهِ لَهُمۡ
عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۶۱﴾ يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ لَكُمۡ لِيُرۡضُوۡكُمۡ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗۤ اَحَقُّ اَنۡ يُّرۡضُوۡهُ اِنۡ
كَانُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۶۲﴾ اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّهٗ مَنۡ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيۡهَا ؕ ذٰلِكَ الۡخِزۡىُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۶۳﴾

तर्जुमा : ''इनमें से वह भी हैं जो पैग़म्बर (ﷺ) को ईज़ा देते हैं और कहते हैं हल्के कान का है, तू कह दे कि वह कान तुम्हारे भले के लिए है वह अल्लाह तआला पर ईमान रखता है और मुसलमानों की बात का यक़ीन करता है और तुममें से जो अहले ईमान हैं, यह उनके लिए रहमत है, रसूलुल्लाह (ﷺ) को जो लोग ईज़ा देते हैं उनके लिए दुख की मार है। (61) सिर्फ़ तुम्हें ख़ुश करने के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह तआला की क़समें खा जाते हैं, हालाँकि अगर यह ईमान वाले होते तो अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) को ख़ुश करने के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे। (62) क्या यह नहीं जानते कि जो भी अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त करे उसके लिए यक़ीनन दोज़ख़ की आग है जिसमें वह हमेशा रहने वाला है, यह है ज़बरदस्त रुस्वाई।'' (63)

नबी (ﷺ) और मुनाफ़िक़ीन की ईज़ारसानी (आयत 61) : मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत बड़ी मूज़ी (तक्लीफ़देह) है अपनी बातों से पैग़म्बरे इलाही (ﷺ) को दुख पहुँचाती है और कहती है कि यह नबी तो कानों का बड़ा ही कच्चा है जिससे जो सुना मान लिया। जब हम उसके पास जाएंगे और क़समें खायेंगे, वह हमारी बात भी मान लेगा। अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है कि वह बेहतर कानों वाला अच्छी सुनने वाला है, वह सादिक़ व काज़िब को ख़ूब जानता है। वह अल्लाह तआला की बातें मानता है और ईमान वाले लोगों की सच्चाई भी जानता है, वह मोमिनों के लिए रहमत है और बेईमानों के लिए अल्लाह तआला की हुज्जत है, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सताने वाले के लिए दुख की मार है।

मुनाफ़िक़ीन की झूठी क़समें (आयत 62, 63) : वाक़िया यह हुआ था कि मुनाफ़िक़ों में से एक शख़्स कह रहा था कि हमारे सरदार और रईस बड़े ही अक़्लमंद दाना और तजुर्बेकार हैं, अगर मुहम्मद (ﷺ) की बातें हक़ होतीं तो यह क्या ऐसे बेवक़ूफ़ थे कि उन्हें न मानते। यह बात एक सच्चे मुसलमान सहाबी (रज़ि.) ने सुन ली और उसने कहा, वल्लाह! (अल्लाह की क़सम) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की सब बातें बिलकुल सच हैं

और न मानने वालों की बेवक़ूफ़ी और नादानी में कोई शक नहीं। जब यह सहाबी (रज़ि.) दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हुए तो यह वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने उस शख़्स को बुलवा भेजा लेकिन वह सख़्त क़समें खा खाकर कहने लगा कि मैंने तो यह बात कही ही नहीं, यह तो मुझ पर तोहमत बाँधता है। उस सहाबी (रज़ि.) ने दुआ की कि परवरदिगार! तू सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा कर दिखा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (तब्री : 14/329 यह रिवायत मुर्सल है।) क्या इनको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुख़ालिफ़ हमेशा के जहन्नमी हैं, ज़िल्लत व रुस्वाई, अज़ाबे दोज़ख़ भुगतने वाले हैं, इससे बढ़कर ज़िल्लत, इससे ज़्यादा रुस्वाई, उससे बढ़कर शक़ावत और क्या होगी।

***

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ
اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ
اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۶۶﴾

तर्जुमा : "मुनाफ़िक़ों को हर वक़्त इस बात का खटका लगा रहता है कि कहीं मुसलमानों पर कोई सूरत न उतरे जो उनके दिलों की बातें उन्हें बतला दे, कह दे कि तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, यक़ीनन अल्लाह तआला उसे ज़ाहिर करने वाला है जिससे तुम डर दुबक रहे हो। (64) अगर तू इनसे पूछे तो साफ़ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हंस बोल रहे थे, तू कह दे कि अल्लाह, उसकी आयतें और उसका रसूल (ﷺ) ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं। (65) तुम बहाने न बनाओ, यक़ीनन तुम अपने ईमान के बाद बेईमान हो गए, अगर हम तुममें से कुछ लोगों से दरगुज़र भी कर लें तो कुछ लोगों को उनके जुर्म की संगीन सज़ा भी देंगे।"(66)

मुनाफ़िक़ों को हर वक़्त अपने निफ़ाक़ के ज़ाहिर होने का डर रहता है (आयत 64-66) : आपस में बैठकर बातें तो गाँठ लेते लेकिन फिर ख़ौफ़ज़दा रहते कि कहीं अल्लाह तआला की तरफ़ से मुसलमानों को बज़रिया वही (क़ुर्आनी फर्मान) इलाही ख़बर न हो जाए। और आयत में है तेरे सामने आकर वह वो दुआएँ देते हैं जो अल्लाह तआला ने नहीं दीं फिर अपने जी में अकड़ते हैं कि हमारे इस क़ौल पर अल्लाह तआला हमें कोई सज़ा क्यूँ नहीं करता, इनके लिए जहन्नम की सज़ा काफ़ी है जो बदतरीन जगह है। (58/मुजादिला : 8) यहाँ फ़र्माता है दीनी बातों, मुसलमानों की हालतों पर दिल खोलकर मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तआला भी वह खोल देगा जो तुम्हारे दिलों में है, याद रखो कि एक दिन रुस्वा और बेइज़्ज़त होकर रहोगे। चुनाँचे फ़र्मान है कि

यह बीमार दिल लोग यह न समझें कि इनके दिलों की बुराईयाँ ज़ाहिर न होंगी, हम तो इन्हें इस क़द्र बेइज़्ज़त करेंगे, और ऐसी निशानियाँ तेरे सामने रख देंगे कि तू इनके लब व लहजे से ही इन्हें पहचान लेगा। (47/मुहम्मद : 29) इस सूरत का नाम ही सूरतुल फ़ाज़िह्रा है इसलिए कि उसने मुनाफ़िक़ों की क़लई खोल दी। (तब्री : 14/332)

मुनाफ़िक़ीन का अल्लाह, नबी (ﷺ) और कुरआन से मज़ाक़ : एक मुनाफ़िक़ कह रहा था कि हमारे यह कुरआन को मानने वाले लोग बड़े पेटू बड़े लुबाड़ और बड़े बुज़दिल हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास जब इसका ज़िक्र हुआ तो यह बहाने पेश करता हुआ आया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम तो यूँ ही वक़्त गुज़ारी के लिए हंस बोल रहे थे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! तुम्हारी हँसी के लिए अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) और कुरआन ही रह गया है।" (तब्री : 14/333; यह रिवायत मुर्सल है।) याद रखो अगर किसी को हम माफ़ कर देंगे तो किसी को सख़्त सज़ा भी करेंगे, उस वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर सवार कहीं जा रहे थे, यह मुनाफ़िक़ आप (ﷺ) की तलवार पर हाथ रखे पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ यह कहता हुआ साथ साथ चला जा रहा था, आप (ﷺ) उसकी तरफ़ देखते भी न थे, जिस मुसलमान ने उसका यह क़ौल सुना था उसने उसी वक़्त उसे जवाब भी दिया था कि तू बकता है, झूठा है, तू मुनाफ़िक़ है। यह वाक़िया जंगे तबूक के मौक़े का है, मस्जिद में उसने यह ज़िक्र किया था। (फ़) सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि तबूक जाते हुए हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ मुनाफ़िक़ों का एक गिरोह भी था जिनमें वदीआ बिन साबित और मख़्शी बिन हुमैर वग़ैरह थे। यह आपस में कह रहे थे कि नस्रानियों की लड़ाई को अरबों की आपस की लड़ाई जैसी समझना सख़्त ख़तरनाक ग़लती है, अच्छा है उन्हें वहाँ पिटने दो, हम भी यहाँ उनकी दुर्गत बनाएँगे। इस पर उनके दूसरे सरदार मख़्शी ने कहा, भाई! इन बातों को छोड़ दो, वरना यह ज़िक्र फिर कुरआन में आएगा, कोड़े खा लेना हमारे नज़दीक तो उस रुस्वाई से बेहतर है। आगे आगे यह लोग यह तज़्किरे करते जा ही रहे थे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत अम्मार (रज़ि.) से फ़र्माया "जाकर ज़रा देखना यह लोग जल गए हैं, इनसे पूछ तो कि यह क्या ज़िक्र कर रहे थे, अगर यह इंकार करें तो कहना कि तुम यह यह बातें कर रहे थे।" हज़रत अम्मार (रज़ि.) ने जाकर उनसे यह कहा, यह हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आए और बहानेबाज़ी करने लगे कि हुज़ूर (ﷺ)! हंसी हंसी में हमारे मुँह से ऐसी बात निकल गई। वदीआ ने तो यह कहा लेकिन मख़्शी बिन हुमैर ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप मेरा और मेरे बाप का नाम बताइए, पस इस वजह से यह लग़्व (बेकार) हरकत और हिमाक़त मुझसे सरज़द हुई, माफ़ फ़र्माया जाऊँ। पस उससे जनाब बारी तआला ने दरगुज़र फ़र्मा लिया और इस आयत में उसी से दरगुज़र फ़र्माने का ज़िक्र भी हुआ है, उसके बाद उसने अपना नाम बदल लिया, अब्दुर्रहमान नाम रखा, सच्चा मुसलमान बन गया और अल्लाह तआला से दुआ की कि अल्लाह! मुझे अपनी राह में शहीद कर ताकि यह धब्बा धुल जाए। चुनाँचे यमामा के दिन यह बुज़ुर्ग शहीद हो गए और इनकी नअश भी न मिली, उन मुनाफ़िक़ों ने बतौर तअनाज़नी के कहा था कि लीजिए! क्या आँखें फट गई हैं, अब यह चले हैं कि रूमियों के क़िले और उनके महल्लात फ़तह करें, भला इस अक़्लमंदी और दूरबीनी को तो देखिए। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को अल्लाह तआला ने उनकी इन बातों की ख़बर कर दी तो यह साफ़ इंकारी हो गए और क़समें खा खाकर कहा कि हमने यह बात नहीं कही, हम तो आपस में हंसी खेल

कर रहे थे। हाँ! उनमें से एक शख़्स था जिसे इंशाअल्लाह! अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया होगा, यह कहा करता था कि अल्लाह! मैं तेरे पाक कलाम की एक आयत सुनता हूँ जिसमें मेरे गुनाह का ज़िक्र है, जब भी सुनता हूँ मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और मेरा दिल कपकपाने लगता है, परवरदिगार! तू मेरी तौबा क़बूल कर और मुझे अपनी राह में शहीद कर और इस तरह कि न कोई मुझे ग़ुस्ल दे, न कफ़न दे, न दफ़न करे। यही हुआ, जंगे यमामा में यह शुहदा के साथ शहीद हुए, तमाम शुहदा की लाशें मिल गईं लेकिन इनकी नअश का पता ही न चला। (इब्ने हिशाम : 4/121, 122) जनाब बारी तआला की तरफ़ से और मुनाफ़िक़ों को जवाब मिला कि अब बहाने न बनाओ, तुम भले ज़ुबानी ईमानदार बने थे लेकिन अब इसी ज़ुबान से तुम काफ़िर हो गए हो। यह क़ौल कुफ़्र का कलिमा है कि तुमने अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह (ﷺ) और क़ुरआन की हंसी उड़ाई, हम अगर किसी से दरगुज़र भी कर जाएँ, लेकिन तुम सबसे यह मामला नहीं होगा, तुम्हारे इस जुर्म और इस बदतरीन ख़ता और इस कुफ़्रिया बातों की सख़्ततरीन सज़ा तुम्हें भुगतनी पड़ेगी।

***

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ
وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا
وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : "तमाम मुनाफ़िक़ मर्द व औरत आपस में एक ही हैं, यह बुरी बातों का हुक्म देते हैं और भली बातों से रोकते हैं और अपनी मुट्ठी बंद रखते हैं, यह अल्लाह तआला को भूल गए, अल्लाह तआला ने भी इन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ ही फ़ासिक़ व बदकिरदार हैं। (67) अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वादा कर चुका है, जहाँ यह हमेशा रहने वाले हैं, वही उन्हें काफ़ी है उन पर अल्लाह तआला की फटकार है, और उन

ही के लिए हमेशा का अ़ज़ाब है। (68) मिस्ल उन लोगों के जो तुमसे पहले थे, तुमसे वह ज़्यादा ताक़त वाले थे और ज़्यादा माल व औलाद वाले थे, पस वह अपना दीनी हिस़्सा बरत गए फिर तुमने भी अपना हिस़्सा बरत लिया, जैसे तुमसे पहले के लोग अपने हिस़्से से फ़ायदामंद हुए थे और तुमने भी इसी त़रह मज़ाक़ाना बह़स की जैसे कि उन्होंने की थी, उनके अ़ामाल दुनिया और आख़िरत में ग़ारत हुए, यही लोग नुक़्स़ान पाने वाले हैं।" (69)

मुनाफ़िक़ों की मज़ीद अ़लामात (निशानियों) का तज़्किरा (आयत 67-69) : मुनाफ़िक़ों की ख़स्लतें मोमिनों के बिलकुल ख़िलाफ़ होती हैं। मोमिन भलाइयों का हुक्म करते हैं और बुराइयों से रोकते हैं, मुनाफ़िक़ बुराइयों का हुक्म देते हैं और भलाइयों से मना करते हैं, मोमिन सख़ी होते हैं, मुनाफ़िक़ बख़ील होते हैं, मोमिन ज़िक्रुल्लाह में मशग़ूल रहते हैं, मुनाफ़िक़ यादे इलाही भुलाए रहते हैं। इसी के बदले अल्लाह तआ़ला भी उनके साथ वह मामला करता है जैसे किसी को कोई भूल गया हो। क़यामत के दिन यही उनसे कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें ठीक उसी त़रह़ भुला देंगे जैसे तुम इस दिन की मुलाक़ात को भुलाए हुए थे। (45/जासिया : 34) मुनाफ़िक़ राहे ह़क़ से दूर हो गए हैं, गुमराही की चक्करदार भूल भुलय्यों में फंस गए हैं, इन मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों की इन बदआमालियों की सज़ा इनके लिए अल्लाह तआ़ला जहन्नम को मुक़र्रर कर चुका है जहाँ वह हमेशा हमेशा रहेंगे, वहाँ का अ़ज़ाब इन्हें काफ़ी होगा, इन्हें रब्बे रह़ीम अपनी रह़मत से दूर कर चुका है और इनके लिए उसने हमेशा और देरपा अ़ज़ाब रखे हैं।

ज़ालिमों के अंजाम से इब्रत ह़ासिल करो : इन लोगों को भी अगले लोगों की त़रह़ के अ़ज़ाब पहुँचे, ख़लाक़ से मुराद यहाँ दीन है, जैसे अगले लोग झूठ और बात़िल में कूदते फाँदते रहे, ऐसे ही इन लोगों ने भी किया। इनके यह फ़ासिद अ़ामाल एकारत गए, न दुनिया में सूदमंद हुए, न आख़िरत में सवाब दिलाने वाले हुए, यही स़रीह़ नुक़्स़ान है कि अमल किया और सवाब न मिला। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं जैसे आज की रात कल की रात से मुशाबेह होती है उसी त़रह़ इस उम्मत में भी यहूदियों की मुशाबिहत आ गई। मेरा तो ख़्याल है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है "उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम उनकी पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर उनमें से कोई गोह (एक जानवर का नाम) के सूराख़ (बिल) में दाख़िल हुआ है तो तुम भी उसमें घुसोगे।" हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इर्शाद है कि "उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम अपने से पहले के लोगों के त़रीक़ों की ताबेदारी करोगे, बिलकुल बालिश्त बा बालिश्त और ज़िराअ़ ब ज़िराअ़ और हाथ ब हाथ, यहाँ तक कि वह अगर किसी गोह के बिल में घुसे हैं तो यक़ीनन तुम भी घुसोगे।" लोगों ने पूछा, इससे मुराद आप (ﷺ) की कौन लोग हैं? क्या अहले किताब। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, और कौन। इस ह़दीस को बयान करके ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया, अगर तुम चाहो तो क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों को पढ़ लो (कल्लज़ीना मिन क़ब्लिकुम) (त़ब्री : 14/342) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ख़लाक़ से मुराद दीन है। और तुमने भी इसी त़रह़ का ख़ौज़ किया जिस त़रह़ का उन्होंने। लोगों ने पूछा क्या फ़ारसियों और रूमियों की त़रह़? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, और लोग हैं ही कौन।" इस ह़दीस के शवाहिद सही अह़ादीस में भी हैं। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल इतिस़ाम, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) लतत्तबिउन्ना सुनन मन काना क़ब्लकुम : 7319, 7320; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2669)

اَلَمۡ يَاۡتِهِمۡ نَبَاُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوۡدَ ۙ وَقَوۡمِ اِبۡرٰهِيۡمَ وَاَصۡحٰبِ
مَدۡيَنَ وَالۡمُؤۡتَفِكٰتِ ؕ اَتَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا
اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ۝ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ۘ يَاۡمُرُوۡنَ
بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيۡعُوۡنَ اللّٰهَ
وَرَسُوۡلَهٗ ؕ اُولٰۤئِكَ سَيَرۡحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝

तर्जुमा : "क्या इन्हें अपने पहले के लोगों की ख़बरें नहीं पहुँचीं, क़ौमे नूह (عليه السلام) और आद और समूद और क़ौमे इब्राहीम और अहले मदयन और अहले मुअतफ़िक़ात, उनके पास उनके पैग़म्बर दलीलें लेकर पहुँचे, अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करे, बल्कि उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया। (70) मोमिन मर्द व औरत आपस में एक दूसरे के मुमिद्दो मुआविन (मदद करने वाले) और दोस्त हैं, भलाईयाँ सिखाते हैं और बुराइयों से रोकते हैं, नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की इत्ताअत करते रहते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला बहुत जल्द रहम करेगा, बेशक अल्लाह तआला इज़्ज़त व ग़ल्बे वाला, हिक्मत व दुरुस्त कारी वाला है।" (71)

दुश्मनाने दीन के अंजाम से इब्रत पकड़ो (आयत 70, 71) : इन बदकिरदारों मुनाफ़िक़ों को वअ़ज़ सुनाया जा रहा है कि अपने से पहले के अपने जैसों के हालात पर इब्रत की नज़र डालो, देखो कि नबियों की तक्ज़ीब क्या फल लाई? क़ौमे नूह का ग़र्क़ होना सिवाए मुसलमानों के किसी का न बचना, याद करो, आदियों का हूद (عليه السلام) के न मानने की वजह से हवा के झोंकों से तबाह होना याद करो, समूदियों का हज़रत सालेह (عليه السلام) को झुठलाने की वजह से और अल्लाह की निशानी ऊँटनी के काट डालने से एक जिगरदोज़ कड़ाके की आवाज़ से तबाह व बर्बाद होना याद करो, हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का दुश्मनों के हाथों से बच जाना और उनके दुश्मनों का ग़ारत होना, नमरूद बिन किन्आन बिन कूश जैसे बादशाह का अपने लाव लश्कर के साथ तबाह होना न भूलो, वह सब लअ़नत के मारे बेनिशान कर दिए गए, क़ौमे शुऐब इन ही बदकिरदारियों और कुफ़्र के बदले ज़लज़ले से और सायबान वाले दिन के अ़ज़ाब से तहो-बाला कर दी गई, जो मदयन की रहने वाली थी, क़ौमे लूत जिनकी बस्तियाँ उल्टी पड़ी हैं, मदयन और सदूम वग़ैरह अल्लाह तआला ने उन्हें भी अपने नबी लूत (عليه السلام) के न मानने और अपनी बदफ़ेअ़ली न छोड़ने की वजह से एक एक को पेवन्दे ज़मीन कर दिया, उनके पास हमारे रसूल हमारी किताब और खुले मोजिज़े और साफ़ दलीलें लेकर पहुँचे लेकिन उन्होंने एक न मानी, बिल आख़िर अपने ज़ुल्म से आप बर्बाद हुए। अल्लाह तआला ने हक़ वाज़ेह कर दिया किताब उतार दी, रसूल भेज दिए, हुज्जत ख़त्म कर दी लेकिन

यह रसूलों के मुक़ाबले पर आमादा हुए, किताबे इलाही की तामील से भागे, हक़ की मुख़ालिफ़त की, पस लानते इलाही उतरी और उन्हें ख़ाके स्याह कर गई।

मुसलमान एक दूसरे के दस्त व बाज़ू हैं: मुनाफ़िक़ों की बद ख़स्लतें बयान करके मुसलमानों की नेक सिफ़तें बयान कर रहा है कि यह एक दूसरे की मदद करते हैं, एक दूसरे का दस्त व बाज़ू बने रहते हैं। सही ह़दीस में है कि "मोमिन, मोमिन के लिए मिस्ल दीवार के है जिसका एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को तक़्वियत पहुँचाता और मज़बूत करता है।" आप (ﷺ) ने यह फ़र्माते हुए अपने हाथों की उँगलियाँ एक दूसरी में डालकर दिखा भी दिया। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब नस़रुल मज़्लूम : 2446; सह़ीह़ मुस्लिम : 2585; तिर्मिज़ी : 1928; अह़मद : 4/404) और सह़ीह़ ह़दीस में है कि "मोमिन अपनी दोस्तियों और सलूकों में मिस्ल एक जिस्म के हैं कि एक ह़िस्से को भी अगर तक्लीफ़ हो तो तमाम जिस्म बीमारी और बेदारी में मुब्तला हो जाता है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रह़मतुन्नासि वल बहाइम : 6011; सह़ीह़ मुस्लिम : 2586; अह़मद : 4/270; मुस्नद हुमैदी : 919; मुस्नद तयालिसी : 790) यह पाक नफ़्स लोग औरों की तर्बियत से भी ग़ाफ़िल नहीं रहते, सबको भलाईयाँ सिखाते हैं, अच्छी बातें बतलाते हैं, बुरे कामों से बुरी बातों से इम्कान भर रोकते हैं।" हुक्मे इलाही भी यही है, फ़र्माता है तुममें एक जमाअ़त ज़रूर ऐसी होनी चाहिए जो भलाईयों का हुक्म करे, बुराइयों से मना करे। (3/आले इमरान : 104) यह नमाज़ी होते हैं, साथ ही ज़कात भी देते हैं ताकि एक तरफ़ अल्लाह तआला की इबादत हो, दूसरी जानिब मख़्लूक़ की दिलजोई हो, अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअ़त ही उनका दिलचस्प मशग़ला है जो हुक्म मिला बजा लाए, जिससे रोका रुक गए, यही लोग हैं जो रह़मे रब्बानी के मुस्तह़िक़ हैं, यही सिफ़तें हैं जिनसे अल्लाह तआला की रह़मत उनकी तरफ़ लपकती है। अल्लाह तआला अ़ज़ीज़ है वह अपने फ़र्मांबरदारों की ख़ुद भी इज़्ज़त करता है और उन्हें इज़्ज़तदार बना देता है। दरअस़ल इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है और उसने अपने रसूलों और अपने ईमानदार ग़ुलामों को भी इज़्ज़त दे रखी है। उसकी ह़िक्मत है कि उनमें यह सिफ़तें रखीं और मुनाफ़िक़ों में वह ख़स्लतें रखीं। उसकी ह़िक्मत की तह को कौन पहुँच सकता है जो चाहे करे। वह बरकतों वाला और बुलंदियों वाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾

तर्जुमा : "इन ईमान वाले मर्दों औरतों से अल्लाह तआला ने उन जन्नतों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें लहरें ले रही हैं जहाँ वह हमेशा हमेश रहने वाले हैं और उन साफ़ सुथरे पाकीज़ा मह़ल्लात का जो उन हमेशगी वाली जन्नतों में हैं और अल्लाह तआला की रज़ामंदी सबसे बड़ी चीज़ है, यही ज़बरदस्त कामयाबी है।"(72)

मोमिनीन और जन्नत के ह़सीन मनाज़िर (आयत 72) : मोमिनों की इन नेकियों पर जो अज्रो सवाब उन्हें मिलेगा उसका बयान हो रहा है कि अब्दी नेअ़मतें हमेशगी की राह़तें बाक़ी रहने वाली जन्नतें जहाँ क़दम क़दम पर ख़ुशगवार पानी के चश्मे उबल रहे हैं, जहाँ बुलंद व बाला ख़ूबसूरत मुज़य्यन और जो कुछ भी वहाँ है

सब सोने ही सोने का है और दो जन्नतें चाँदी की हैं, बर्तन भी और कुल चीज़ें भी उनमें और दीदारे इलाही में कोई हिजाब सिवाय उस किब्रियाई की चादर के नहीं, जो अल्लाह जल्ल व अ़ला के चेहरे पर है, यह जन्नते अ़द्न में होंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (वुजूहुंय्यौमइज़िन्नाज़िरा इला रब्बिहा नाज़िरा....) : 7444; सहीह मुस्लिम : 180; तिर्मिज़ी : 5828; इब्ने माजा : 186; अहमद : 4/411) और हदीस में है कि "मोमिन के लिए जन्नत में एक ख़ेमा होगा, एक ही मोती का बना हुआ उसकी लम्बाई साठ मील होगी। मोमिन की बीवियाँ वहीं होंगी, जिनके पास यह आता जाता रहेगा लेकिन एक दूसरे को दिखाई न देंगी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सुरतुर्रहमान, बाब (हूरुम् मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियाम) : 4879; सहीह मुस्लिम : 2838) आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि "जो अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम किए, रमज़ान के रोज़े रखे, अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उसे जन्नत में ले जाए, उसने हिज्रत की हो या अपने वतन में ही रहा हो।" लोगों ने कहा, फिर हम औरों से भी यह हदीस बयान कर दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "जन्नत में एक सौ दर्जे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपनी राह के मुजाहिदों के लिए बनाया है हर दो दर्जों में उतना ही फ़ासला है जितना ज़मीन व आसमान में। पस जब भी तुम अल्लाह तआ़ला से जन्नत का सवाल करो तो जन्नतुल फ़िरदौस तलब करो, वह सबसे ऊँची और सबसे बेहतर जन्नत है जन्नतों की सब नहरें वहीं से निकलती हैं, उसकी छत रहमान का अ़र्श है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब दरजातुल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह : 2790; अहमद : 2/235) फ़र्माते हैं "अहले जन्नत जन्नती बालाख़ानों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम आसमान के चमकते दमकते सितारों को देखते हो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6555; सहीह मुस्लिम : 2830; अहमद : 5/340)

यह भी मालूम रहे कि तमाम जन्नतों में ख़ास एक आ़ला मक़ाम है जिसका नाम वसीला है क्योंकि वह अ़र्श से बिलकुल ही क़रीब है। यह जगह है हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की। आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "जब तुम मुझ पर दरूद पढ़ो तो अल्लाह तआ़ला से मेरे लिए वसीला तलब किया करो।" पूछा गया, वसीला क्या है? फ़र्माया "जन्नत का वह आ़ला दर्जा जो एक ही शख़्स को मिलेगा और मुझे अल्लाह तआ़ला की ज़ात से पूरी उम्मीद है कि वह शख़्स मैं ही हूँ।" (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब सलुल्लाहा इलल् वसीला ... : 3612; वहुव सहीहुन; अहमद : 2/265) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुअज़्ज़िन की अज़ान का जवाब दो जैसे कलिमात वह कहता है तुम भी कहो, फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो जो शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है अल्लाह तआ़ला उस पर अपनी दस रहमतें नाज़िल फ़र्माता है, फिर मेरे लिए वसीला मांगो, वह जन्नत की एक मंज़िल है जो अल्लाह की तमाम मख़्लूक़ में से एक ही शख़्स को मिलेगी, मुझे उम्मीद है कि वह मुझे ही इनायत होगी, जो शख़्स मेरे लिए उस वसीले को तलब करेगा, उसके लिए मेरी सिफ़ारिश क़यामत के दिन हलाल हो गई।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिहबाबुल क़ौलि मिस्ल क़ौलुल मुअज़्ज़िन लिमन समिअ़हू.... : 384; अबूदाऊद : 523; मुस्नद अबी अ़वाना : 1/336) फ़र्माते हैं "मेरे लिए अल्लाह तआ़ला से वसीला तलब करो, दुनिया में जो भी मेरे लिए वसीले की दुआ करेगा, मैं क़यामत के दिन उसका

गवाह और सिफ़ारिशी बनूँगा।'' (तबरानी फ़िल औसत : 637; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/333) सहाबा (रज़ि.) ने एक दिन आप (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमें जन्नत की बातें सुनाइए, उसकी बनावट किस चीज़ की है? फ़र्माया, सोने चाँदी की ईंटों की, उसका गारा ख़ालिस मुश्क है, उसके कंकर हीरे मोती और याक़ूत है, उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है, उसमें जो जाएगा, वह नेअमतों में होगा जो कभी खाली न हों, वह हमेशा की ज़िन्दगी पाएगा जिसके बाद मौत का खटका भी नहीं, न उसके कपड़े ख़राब हों, न उसकी जवानी ढले। (अहमद : 2/304, 305; तिर्मिज़ी : 2526; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ियाद ताई का सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।) फ़र्माते हैं, ''जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनका अंदर का हिस्सा बाहर से नज़र आता है और बाहर का अंदर से।'' एक आराबी ने पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! यह बालाख़ाने किनके लिए हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''जो अच्छा कलाम करे, खाना खिलाए, रोज़े रखे और रातों को लोगों के सोने के वक़्त तहज्जुद की नमाज़ अदा करे।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति गुरूफ़िल जन्ना : 2527; वहुव हसन; इब्ने अबी शैबा : 8/625) फ़र्माते हैं ''कोई है जो जन्नत का शाइक़ और उसके लिए मेहनत करने वाला हो, वल्लाह! जन्नत की कोई चार दीवारी महदूद करने वाली नहीं वह तो एक चमकता हुआ बक़िया नूर है और महकता हुआ गुलिस्ताँ है और बुलंद व बाला पाकीज़ा महल्लात हैं और जारी व सारी लहरें मारने वाली नहरें हैं और गदराये हुए और पके हुए मेवों के गुच्छे हैं और ख़ुश जमाल ख़ूबसूरत पाकदामन सीरत हूरें हैं और बेश क़ीमती रंगीन रेशमी लिबास हैं, मक़ाम है हमेशगी का, घर है सलामती का, मेवे हैं लदे फंदे, सब्ज़ा फैला हुआ, कुशादगी और राहत है, अम्नो-चैन है, नेअमत और रहमत है, आलीशान ख़ुशमंज़र कौशक और हवेलियाँ हैं।'' यह सुनकर लोग बोल उठे कि हुज़ूर (ﷺ)! हम सब उस जन्नत के मुश्ताक़ और उसके हासिल करने के कोशाँ हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इंशाअल्लाह कहो।'' पस लोगों ने इंशाअल्लाह कहा। (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब सिफ़तुल जन्ना : 4332; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़हहाक मुआफ़िरी रावी मज्हूलुल हाल है। इब्ने हिब्बान : 7381)

फिर फ़र्माता है कि इन तमाम नेअमतों से आला और बाला नेअमत अल्लाह तआला की रज़ामंदी है। फ़र्माते हैं अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ला जन्नतियों को पुकारेगा कि ऐ अहले जन्नत! वह कहेंगे, लब्बैक रब्बना व सअदैक वल ख़ैरू फ़ी यदैक! पूछेगा, कहो! तुम ख़ुश हो गए। वह जवाब देंगे कि ख़ुश क्यूँ न होते, तूने ऐ परवरदिगार! हमें वह दिया जो मख़्लूक़ में से किसी को न मिला होगा। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, लो! मैं तुम्हें इससे बहुत ही अफ़ज़ल व आला चीज़ अता करता हूँ। वह कहेंगे, ऐ अल्लाह! इससे बेहतर चीज़ और क्या हो सकती है। अल्लाह तआला कहेगा, सुनो! मैंने अपनी रज़ामंदी तुम्हें अता फ़र्माई, आज के बाद मैं कभी भी तुमसे नाख़ुश न होऊँगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब कलामुर्रब मअ अहलिल जन्ना : 7518; सहीह मुस्लिम : 2829; तिर्मिज़ी : 2555; अहमद : 3/88) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''जब जन्नती जन्नत में पहुँच जाएँगे, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला फ़र्माएगा, कुछ और चाहिए तो दूँ। वह कहेंगे, ऐ अल्लाह! जो कुछ तूने हमें अता कर रखा है उससे बेहतर तो कोई और चीज़ हो ही नहीं सकती। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, वह मेरी रज़ामंदी है जो सबसे बेहतर है।'' (इब्ने हिब्बान, अल्एहसान : 7396; हाकिम : 1/82; इमाम

हाकिम और इमाम ज़हबी (रह.) ने इसे सहीह कहा है। (लेकिन) इस रिवायत की सनद सुफ़ियान सौरी की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।) इमाम हाफ़िज़ ज़ियाअ मक़्दिसी ने सिफ़ते जन्नत में एक मुस्तक़िल किताब लिखी है, उसमें इस हदीस को शर्ते सहीह पर बतलाया है, वल्लाहु आलम!

***

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ

الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ

وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ

يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : ''ऐ नबी (ﷺ)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद जारी रख और उन पर सख़्ती करता रह, उनकी असल जगह जहन्नम बदतरीन जगह है। (73) यह क़समें खाकर कहते हैं कि इन्होंने नहीं कहा, हालाँकि यक़ीनन कुफ़्र का कलिमा इनकी ज़ुबान से निकल चुका है, और यह अपने इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो चुके हैं, और इन्होंने उस काम का क़सद भी कर लिया है जो पूरा न कर सके, यह सिर्फ़ उसी बात का इंतिक़ाम ले रहे हैं कि इन्हें अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से और उसके रसूल (ﷺ) ने दौलतमंद कर दिया, अगर यह अब भी तौबा कर लें तो यह इनके हक़ में बेहतर है और अगर चेहरा फेर लें तो अल्लाह तआला इन्हें दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब करेगा, और ज़मीन भर में इनका कोई हिमायती और मददगार न खड़ा होगा।'' (74)

मुनाफ़िक़ीन से जिहाद जारी रखने का हुक्म (आयत 73, 74) : काफ़िरों मुनाफ़िक़ों से जिहाद का और उन पर सख़्ती का हुक्म हुआ, मोमिनों से झुककर मिलने का हुक्म हुआ, काफ़िरों की असली जगह जहन्नम मुक़र्रर कर दी। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को अल्लाह तआला ने चार तलवारों के साथ मब्ऊस किया, एक तलवार तो मुश्रिकों में, फ़र्माता है (فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ) (9/तौबा : 5) हुर्मत वाले महीनों के गुज़रते ही मुश्रिकों की ख़ूब ख़बर लो, दूसरी तलवार अहले किताब के कुफ़्फ़ार में, फ़र्माता है (قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ) (9/तौबा : 29) यानी जो अल्लाह तआला पर क़यामत के दिन पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) के हराम किए हुए को हराम नहीं मानते, दीने हक़ को क़बूल नहीं करते, उन अहले किताब से जिहाद करो, जब तक कि वह ज़िल्लत के साथ झुककर

अपने हाथ से जिज़्या देना मंज़ूर न कर लें , तीसरी तलवार मुनाफ़िक़ीन में, इर्शाद होता है (जाहिदिल कुफ़्फ़ारा वल मुनाफ़िक़ीन) काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो। चौथी तलवार बाग़ियों में, फ़र्मान है (فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ) (49/हुजुरात : 9) बाग़ियों से लड़ो, जब तक कि पलटकर वह अल्लाह तआला के अहकाम की हुक्म बरदारी की तरफ़ न आ जाएँ। इससे साबित होता है कि मुनाफ़िक़ जब अपना निफ़ाक़ ज़ाहिर करने लगें तो उनसे तलवार से जिहाद करना चाहिए। इमाम इब्ने जरीर (रह.) का पसंदीदा क़ौल भी यही है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं हाथ से न हो सके तो उनके चेहरे पर डांट डपट से। (तब्री : 14/358) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला ने काफ़िरों से तो तलवार के साथ जिहाद करने का हुक्म दिया है और मुनाफ़िक़ों के साथ ज़ुबानी जिहाद को फ़र्माया है और यह कि उन पर नर्मी न की जाए। (तब्री : 14/259) मुजाहिद (रह.) का भी तक़रीबन यही क़ौल है। उन पर हद्दे शरई का जारी करना भी उनसे जिहाद करना है। मक़्सूद यह है कि कभी तलवार भी उनके ख़िलाफ़ उठानी पड़ेगी, वरना जब तक काम चले ज़ुबान बस है, जैसा मौक़ा हो, कर ले। क़समें खा खाकर कहते हैं कि उन्होंने ऐसी कोई बात ज़ुबान से नहीं निकाली, हालाँकि दरहक़ीक़त कुफ़्र का बोल बोल चुके हैं और अपने ज़ाहिरी इस्लाम के बाद खुला कुफ़्र कर चुके हैं। यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबय के बारे में उतरी है। एक जुहनी और एक अंसारी में लड़ाई हो गई, जुहनी शख़्स अंसारी पर छा गया तो इस मुनाफ़िक़ ने अंसार को उसकी मदद पर उभारा और कहने लगा, वल्लाह! हमारी और इस मुहम्मद (ﷺ) की तो वही मिसाल है कि ''अपने कुत्ते को मोटा ताज़ा कर कि वह तुझे ही काटे'' वल्लाह! (अल्लाह की क़सम) अगर हम अब की बार मदीने वापिस गए तो हम इज़्ज़तदार लोग इन तमाम कमीने लोगों को वहाँ से निकाल बाहर करेंगे। एक मुसलमान ने जाकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यह वाक़िया बताया। आप (ﷺ) ने उसे बुलवाकर उससे सवाल किया तो यह क़सम खा खाकर इंकार कर गया। पस अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई। हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं, कि मेरी क़ौम के जो लोग हर्रा की जंग में काम आए, उन पर मुझे बड़ा ही रंज व सदमा हो रहा था। उसकी ख़बर हज़रत ज़ेद बिन अरक़म (रज़ि.) को पहुँची तो आप (ﷺ) ने मुझे ख़त में लिखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने सुना है, आप (ﷺ) दुआ करते थे कि ''ऐ अल्लाह! अंसार को और अंसार के लड़कों को बख़्श दे।'' नीचे के रावी इब्नुल फ़ज़ल को इसमें शक है कि आप (ﷺ) ने अपनी इस दुआ में उनके पोतों का नाम भी लिया या नहीं? पस हज़रत अनस (रज़ि.) ने मौजूदा लोगों में से किसी से हज़रत ज़ेद (रज़ि.) की निस्बत सवाल किया तो उसने कहा, यही ज़ेद (रज़ि.) वह हैं जिनके कानों की सुनी हुई बात की सच्चाई की गवाही ख़ुद रब्बे अलीम ने दी। वाक़िया यह है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तो ख़ुत्बा पढ़ रहे थे, कि एक मुनाफ़िक़ ने कहा, अगर यह सच्चा है तो हम तो गधों से भी ज़्यादा अहमक़ हैं। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ने कहा, वल्लाह! हुज़ूर (ﷺ) बिलकुल सच्चे और बेशक तू अपनी हिमाक़त में गधे से भी बढ़ा हुआ है। फिर आपने यह बात हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बताई, लेकिन वह मुनाफ़िक़ पलट गया और साफ़ इंकार कर गया और कहा कि ज़ेद (रज़ि.) ने झूठ कहा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और हज़रत ज़ेद (रज़ि.) की सच्चाई बयान फ़र्माई। लेकिन मशहूर बात यह है कि यह वाक़िया ग़ज़्वा बनी मुस्तलिक़ का है मुम्किन है कि रावी को इस आयत के ज़िक्र में वहम हो गया हो और दूसरी आयत के बदले इसे बयान कर दिया हो। यही हदीस बुख़ारी में है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर,

सूरतुल मुनाफ़िक़ून, बाब क़ौलुहू (व लिल्लाहि ख़ज़ाइनुस -समावाति वल अर्ज़ि...) : 4906) लेकिन इस जुम्ले तक कि ज़ेद (रज़ि.) वह हैं जिनके कानों की सुनी हुई बात के सच होने की गवाही ख़ुद रब्बे अ़लीम ने दी, मुम्किन है कि बाद का हिस्सा मूसा बिन उ़क़्बा रावी का अपना क़ौल हो। उसी की एक रिवायत में यह पिछला हिस्सा इब्ने शिहाब के क़ौल से मरवी है, वल्लाहु आलम!

मग़ाज़िये उमवी में हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) के तबूक के वाक़िये के बाद है कि जो मुनाफ़िक़ मुअख़्ख़र छोड़ दिए गए थे और जिनके बारे में क़ुरआन नाज़िल हुआ, उनमें से कुछ हुज़ूर (ﷺ) के साथ भी थे, उनमें जुलास बिन सुवैद बिन सामित भी था, उनके घर में उ़मेर बिन सअ़द की वालिदा थीं, जो अपने साथ हज़रत उ़मेर (रज़ि.) को भी ले गई थीं, जब उन मुनाफ़िक़ों के बारे में क़ुरआनी आयतें नाज़िल हुईं तो जुलास कहने लगा कि, वल्लाह! अगर यह शख़्स अपने क़ौल में सच्चा है तो हम तो गधों से भी बदतर हैं। हज़रत उ़मेर बिन सअ़द (रज़ि.) यह सुनकर कहने लगे कि यूँ तो आप मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं और आपकी तक्लीफ़ मुझ पर मेरी तक्लीफ़ से भी ज़्यादा शाक़ है लेकिन आपने इस वक़्त तो ऐसी बात मुँह से निकाली है कि अगर मैं इसे पहुँचाऊँ तो रुस्वाई है और न पहुँचाऊँ तो हलाकत है, रुसवाई यक़ीनन हलाकत से हल्की चीज़ है। यह कहकर यह बुज़ुर्ग हाज़िरे ख़िदमत हुए और सारी बात आप (ﷺ) को कह सुनाई। जलास को जब यह पता चला तो उसने सरकारे नबुव्वत (ﷺ) में हाज़िर होकर क़समें खा खाकर कहा कि उ़मेर (रज़ि.) झूठे हैं, मैंने यह बात हर्गिज़ नहीं कही। इस पर यह आयत उतरी। मरवी है कि उसके बाद जलास ने तौबा कर ली और सही हो गए। यह तौबा की बात बहुत मुम्किन है कि इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) की अपनी कही हुई हो, हज़रत कअ़ब (रज़ि.) की यह बात नहीं, वल्लाहु आलम! और रिवायत में है कि जलास बिन सुवैद बिन सामित अपने सौतेले बेटे हज़रत मुस्अ़ब (रज़ि.) के साथ क़ुबा से आ रहे थे, दोनों गधों पर सवार थे, उस वक़्त जुलास ने यह कहा था उस पर उनके साहबज़ादे ने फ़र्माया कि, ऐ दुश्मने इलाही! मैं तेरी इस बात की रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर करूँगा, फ़र्माते हैं कि मुझे तो डर लग रहा था कि कहीं मेरे बारे में क़ुरआने करीम न नाज़िल हो, या मुझ पर कोई अ़ज़ाबे इलाही न आ जाए, या इस गुनाह में मैं भी अपने बाप का शरीक न कर दिया जाऊँ। चुनाँचे मैं सीधा हाज़िर हुआ, और तमाम बात हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मअ़ अपने डर के सुना दी। इब्ने जरीर में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि हुज़ूर (ﷺ) एक सायादार दरख़्त तले बैठे हुए फ़र्माने लगे कि "अभी तुम्हारे पास एक शख़्स आएगा और तुम्हें शैतान देखेगा, ख़बरदार! तुम उससे बात न करना।" उसी वक़्त एक इंसान कायरी आँखों वाला आया। आप (ﷺ) ने उससे फ़र्माया, "तू और तेरे साथी मुझे गालियाँ क्यूँ देते हैं?" वह उसी वक़्त गया और अपने साथियों को लेकर आया, सबने क़समें खा खाकर कहा, कि हमने कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं कहा, यहाँ तक कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनसे दरगुज़र फ़र्मा लिया। फिर यह आयत उतरी।

इसमें जो यह फ़र्माया गया है कि उन्होंने वह क़सद किया जो पूरा न हुआ, मुराद इससे जुलास का यह इरादा है कि अपने सौतेले लड़के को जिसने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर बात कह दी थी, क़त्ल कर दे। एक क़ौल है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के क़त्ल का इरादा किया था। (तब्री : 14/263) यह क़ौल भी है कि कुछ लोगों ने इरादा कर लिया था कि उसे सरदार बना दें, भले

रसूलुल्लाह (ﷺ) राज़ी न हों, यह भी मरवी है कि दस से ऊपर ऊपर आदमियों ने ग़ज़्व-ए-तबूक में रास्ते में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को धोखा देकर क़त्ल करना चाहा था, चुनाँचे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मैं और अम्मार हुज़ूर (ﷺ) की ऊँटनी के आगे पीछे थे, एक चलाता था, दूसरा नकेल थामता था। हम उक़्बा में थे कि बारह शख़्स मुँह पर नक़ाब डाले आए और ऊँटनी को घेर लिया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उन्हें ललकारा और वह दुम दबाकर भाग खड़े हुए। आप (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया, "तुमने उन्हें पहचाना?" हमने कहा, नहीं! लेकिन उनकी सवारियाँ हमारी नज़रों में हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह मुनाफ़िक़ थे और क़यामत तक इनके दिल में निफ़ाक़ रहेगा, जानते हो यह किस इरादे से आए थे?" हमने कहा, नहीं! फ़र्माया, अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) को उक़्बा में परेशान करने और तक्लीफ़ पहुँचाने के लिए।" हमने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! इनकी क़ौम के लोगों से कहलवा दीजिए कि हर क़ौम वाले अपनी क़ौम के जिस आदमी की शिर्कत इसमें पाएँ उसकी गर्दन उड़ा दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! वरना लोगों में कानाफूसी होने लगेंगी कि मुहम्मद (ﷺ) पहले तो इन ही लोगों को लेकर अपने दुश्मनों से लड़े, उन पर फ़तह हासिल करके फिर अपने इन साथियों को भी क़त्ल करा डाला।" आप (ﷺ) ने उनके लिए बद् दुआ की कि, "ऐ अल्लाह! इनके दिलों पर आतिशें फोड़े पैदा कर दे।" ((दलाइलुन्नबुव्वा : 5/260; इसकी सनद में अबुल बख़्तरी सईद बिन फ़ीरोज़ है जिसका हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)

और रिवायत में है कि ग़ज़्व-ए-तबूक से वापसी में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ऐलान करा दिया कि "मैं उक़्बा के रास्ते से जाऊँगा, उस राह कोई न आए।" हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) आप (ﷺ) की ऊँटनी की नकेल थामे हुए थे और हज़रत अम्मार (रज़ि.) पीछे से चला रहे थे कि एक जमाअत अपनी ऊँटनियों पर सवार आ गई। हज़रत अम्मार (रज़ि.) ने उनकी सवारियों को मारना शुरु किया और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के फ़र्मान से आपकी सवारी नीचे की तरफ़ चलानी शुरु कर दी। जब नीचे का मैदान आ गया, आप (ﷺ) सवारी से उतर आए, इतने में अम्मार (रज़ि.) भी वापिस पहुँच गए। आप (ﷺ) ने पूछा कि "यह लोग कौन थे, पहचाना भी।" हज़रत अम्मार (रज़ि.) ने कहा, चेहरे तो छुपे हुए थे लेकिन सवारियाँ मालूम हैं। पूछा इनका इरादा क्या था, जानते हो?" जवाब दिया कि नहीं! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह चाहते थे कि शोर करके हमारी ऊँटनी को भिड़का दें और हमें गिरा दें।" एक से हज़रत अम्मार (रज़ि.) ने उनकी तादाद पूछी, तो उसने कहा, चौदह। आपने फ़र्माया "अगर तू भी उनमें था तो पन्द्रह।" हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनमें से तीन शख़्सों के नाम गिनवाए। उन्होंने कहा, वल्लाह! हमने न तो मुनादी की निदा सुनी और न हमें अपने साथियों के किसी बुरे इरादे का इल्म था। हज़रत अम्मार (रज़ि.) फ़र्माते हैं, कि बाक़ी के बारह लोग अल्लाह व रसूल (ﷺ) से लड़ाई करने वाले हैं, दुनिया में और आख़िरत में भी।" (अहमद : 5/453; व सनदुहू हसन; हैसमी ने इसकी सनद के रिजाल को सिक़ा कहा है। देखिए (मज्मउज़्ज़वाइद : 6/195) इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने इनमें से बहुत से लोगों के नाम भी गिनवाए हैं, वल्लाहु आलम! सहीह मुस्लिम में है कि अहले उक़्बा में से एक शख़्स के साथ हज़रत अम्मार (रज़ि.) का कुछ रिश्ता था, तो उससे आपने क़सम देकर अस्हाबे उक़्बा की गिनती पूछी। लोगों ने भी उससे कहा कि हाँ! बतला दो। उसने कहा, कि हमें मालूम हुआ है कि वह चौदह थे, अगर मुझे भी शामिल कर लो तो पन्द्रह हुए। उनमें से बारह तो दुश्मने इलाही

और रसूल ही थे और तीन शख़्सों की उस क़सम पर कि न हमने मुनादी की निदा सुनी, न हमें जाने वालों के इरादे का इल्म इसलिए माज़ूर रखा गया। गर्मी का मौसम था, पानी बहुत कम था, आपने फ़र्मा दिया था कि ''मुझसे पहले वहाँ कोई न पहुँचे, लेकिन इस पर भी कुछ लोग पहुँच गए थे। आपने उन पर लानत की। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़न, बाब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन व अह़कामहुम : 2779; अह़मद : 5/390) आपका फ़र्मान है कि ''मेरे साथियों में बारह मुनाफ़िक़ हैं जो न जन्नत में जाएँगे, न उसकी ख़ुश्बू पाएँगे, आठ के मूँढों पर आतिशी फोड़ा होगा जो सीने तक पहुँचेगा और उन्हें हलाक कर देगा।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़न, बाब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन व अह़कामहुम : 2779; अह़मद : 4/262; अबूदाऊद : 4666) इसी वजह से ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) का राज़दार कहा जाता था। आप (ﷺ) ने सिर्फ़ उन्हीं को उन मुनाफ़िक़ों के नाम बतलाए थे, वल्लाहु आलम!

तबरानी में उनके नाम यह हैं। मुअतब बिन क़ुशेर, वदीआ बिन साबित, ज़द बिन क़ैस, अब्दुल्लाह बिन नब्तल बिन ह़ारिस जो अम्र बिन औफ़ के क़बीले का था और ह़ारिस बिन यज़ीद ताई और औस बिन क़ैज़ी और ह़ारिस बिन सुवैद और सअद बिन ज़ुरारा और क़ैस बिन फ़हद और सुवेद और दाइस क़बीला बनू हुब्ला के और क़ैस बिन अम्र बिन सहल और ज़ेद बिन सुलैत और सिलसिला बिन बरहाम यह दोनों क़बीला क़ेनुक़ाअ के हैं, यह सब बज़ाहिर मुसलमान बने हुए थे। इस आयत में इसके बाद फ़र्माया गया है कि इन्होंने इसी बात का बदला लिया है कि इन्हें अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल (ﷺ) के हाथों मालदार बनाया, अगर इन पर अल्लाह तआला का पूरा फ़ज़्ल हो जाता तो इन्हें हिदायत भी नसीब हो जाती। जैसे कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अंसार से फ़र्माया, क्या मैंने तुम्हें गुमराही की ह़ालत में नहीं पाया था कि फिर अल्लाह तआला ने मेरी वजह से तुम्हारी रहबरी की, तुम अलग थलग थे, अल्लाह तआला ने मेरी वजह से तुममें उल्फ़त डाल दी, तुम फ़क़ीर, बे नवा थे, अल्लाह तआला ने मेरी वजह से तुम्हें ग़नी और मालदार कर दिया।'' हर हर सवाल के जवाब में अंसार फ़र्माते जाते थे कि बेशक अल्लाह तआला का और उसके रसूल (ﷺ) का इससे ज़्यादा एह़सान है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़ फ़ी शव्वालि सनता समानीन : 4330; सह़ीह़ मुस्लिम : 1061) अल्ग़र्ज़ बयान यह है कि बेवजह बेक़सूर यह लोग दुश्मनी और बेईमानी पर उतर आए। जैसे सूरह बुरूज में है कि इन मुसलमानों से इन काफ़िरों का इंतिक़ाम सिर्फ़ इनके ईमान की वजह से था। (85/बुरूज : 8) ह़दीस में है कि ''इब्ने जमील सिर्फ़ इस बात का इंतिक़ाम लेता है कि वह फ़क़ीर था, अल्लाह तआला ने उसे ग़नी कर दिया।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वफ़िर्रिक़ाबि वल ग़ारिमीना व फ़ी सबीलिल्लाहि) : 1468; सह़ीह़ मुस्लिम : 938) फिर फ़र्माता है कि अगर यह अब भी तौबा कर लें तो इनके ह़क़ में बेहतर है और अगर वह अपने इसी तरीक़े पर कारबंद रहे तो इन्हें दुनिया में भी सख़्त सज़ा होगी, क़त्ल से भी और सदमा व ग़म से भी और दोज़ख़ के ज़लील व पस्त करने वाले नाक़ाबिले बर्दाश्त अज़ाबों से भी। दुनिया में कोई न होगा जो इनकी तरफ़दारी करे, इनकी मदद करे, इन्हें काम आए, इनसे बुराई हटाए, या नफ़ा पहुँचाए, बेयारो-मददगार रह जाएँगे।

***

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ
قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ
يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

तर्जुमा : ''इनमें वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह तआ़ला से अ़हद किया था कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से माल देगा तो हम सदका ख़ैरात करेंगे और नेकोकारों में हो जाएँगे। (75) लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया तो यह उसमें बख़ीली (कंजूसी) करने लगे और टालमटोल करके चेहरा फेर लिया। (76) उसकी सज़ा में अल्लाह तआ़ला ने इनके दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, अल्लाह तआ़ला से मिलने के दिनों तक क्योंकि इन्होंने अल्लाह तआ़ला से किए हुए वादे का ख़िलाफ़ किया और झूठ बोलते रहे।(77) क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला को उनके दिल का भेद और उनकी सरगोशी सब मालूम है और अल्लाह तआ़ला ग़ैब की तमाम ख़बरें जानने वाला है।'' (78)

मुनाफ़िक़ीन अल्लाह का फ़ज़्ल हासिल करने के बाद उससे किया हुआ वादा भूल जाता है (आयत 75-78) : बयान हो रहा है कि इन मुनाफ़िक़ों में वह भी हैं जिसने वादा किया कि अगर मुझे अल्लाह तआ़ला मालदार कर दे तो मैं बड़ी सख़ावत करूँ और नेक बन जाऊँ। लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने उसे अमीर और ख़ुशहाल बना दिया उसने वादाशिकनी की और बख़ील बन बैठा, जिसकी सज़ा में कुदरत ने उसके दिल में हमेशा के लिए निफ़ाक़ डाल दिया। यह आयत सअ़ल्बा बिन हातिब अंसारी के बारे में नाज़िल हुई है। उसने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से दरख़्वास्त की कि मेरे लिए मालदारी की दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''थोड़ा जिसका शुक्र अदा हो उस बहुत से अच्छा है जो अपनी ताक़त से ज़्यादा हो।'' उसने फिर दोबारा दरख़्वास्त की तो आप (ﷺ) ने फिर समझाया कि, ''तू अपना हाल अल्लाह तआ़ला के नबी जैसा रखना पसंद नहीं करता? वल्लाह! अगर मैं चाहता तो यह पहाड़ सोने चाँदी के बनकर मेरे साथ चलते।'' उसने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! वल्लाह मेरा इरादा है कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे मालदार कर दे तो मैं ख़ूब सख़ावत की दाद दूँ हर एक को उसका हक़ अदा करूँ। आप (ﷺ) ने उसके लिए माल में बरकत की दुआ की। उसकी बकरियों में इस तरह ज़्यादती शुरू हुई जैसे कि कीड़े बढ़ रहे हों। यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा उसके जानवरों के लिए तंग हो गया, यह एक मैदान में निकल गया, ज़ुहर व अ़सर तो जमाअ़त के साथ अदा करता था, बाक़ी नमाज़ें जमाअ़त से नहीं मिलती थीं। जानवरों में और बरकत हुई, उसे और दूर जाना पड़ा। अब सिवाए जुम्आ

के और सब जमाअतें उससे छूट गईं, माल और बढ़ता गया, धीरे धीरे जुम्अे का आना भी उसने छोड़ दिया। आने जाने वाले क़ाफ़िलों से पूछ लिया करता था कि जुम्आ के दिन क्या बयान हुआ।

एक बार हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसका हाल पूछा। लोगों ने सब कुछ बयान कर दिया। आप (ﷺ) ने इज़्हारे अफ़सोस किया। इधर आयत उतरी कि इनके माल से सदक़ा ले और सदक़े के अहकाम भी बयान हुए। आपने दो शख़्सों को जिनमें से एक क़बीला जुहैना का था और दूसरा क़बीला सुलैम का, उन्हें तहसीलदार बनाकर सदक़ा लेने के अहकाम लिखकर उन्हें परवाना देकर भेजा और फ़र्माया कि "सअल्बा से और फ़ुलाने बनी सुलैम से सदक़ा ले आओ।" यह दोनों सअल्बा के पास पहुँचे, फ़र्माने पैग़म्बर (ﷺ) दिखाया, सदक़ा तलब किया तो वह कहने लगा, वाह! वाह! यह तो जिज़्ये की बहन है, यह तो बिलकुल ऐसा ही है जैसे काफ़िरों से जिज़्या लिया जाता है। यह क्या बात है, अच्छा! अब तो जाओ लौटते हुए आना। दूसरा शख़्स सुलमी जो था उसे जब मालूम हुआ तो उसने अपने बेहतरीन जानवर निकाले और उन्हें लेकर ख़ुद ही आगे बढ़ा। उन्होंने उन जानवरों को देखकर कहा, न तो यह हमारे लेने के लायक़, न तुझ पर इनका देना वाजिब। उसने कहा, मैं तो अपनी ख़ुशी से ही बेहतरीन जानवर देना चाहता हूँ। आप इन्हें क़बूल कीजिए। बिलआख़िर उन्होंने ले लिए, औरों से भी वसूल किया और लौटते हुए फिर सअल्बा के पास आए। उसने कहा, ज़रा मुझे वह परवाना तो पढ़ाओ जो तुम्हें दिया गया है। पढ़कर कहने लगा, भई! यह तो साफ़ साफ़ जिज़्या है, काफ़िरों पर जो टेक्स मुक़र्रर किया जाता है, यह तो बिलकुल वैसा ही है अच्छा! तुम जाओ, मैं सोच समझ लूँ। यह वापिस चले गए। उन्हें देखते ही हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सअल्बा पर इज़्हारे अफ़सोस किया और सुलमी शख़्स के लिए बरकत की दुआ की। अब उन्होंने भी सअल्बा का और सुलमी का दोनों का वाक़िया कह सुनाया। पस अल्लाह तआला जल्ल व अला ने यह आयत नाज़िल की। सअल्बा के एक क़रीबी रिश्तेदार ने जब यह सब कुछ सुना तो सअल्बा से जाकर कहा, आयत भी पढ़कर सुनाई। यह हुज़ूर (ﷺ) के पास आया और तलब किया क्या इसका सदक़ा क़बूल किया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला ने मुझे तेरा सदक़ा क़बूल करने से मना कर दिया है।" यह अपने सर पर ख़ाक डालने लगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह तो सब तेरा ही किया धरा है। मैंने तो तुझे कहा था लेकिन तू न माना।" यह वापिस अपनी जगह चला आया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इंतिकाल तक इसकी कोई चीज़ क़बूल न की। फिर यह ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ में आया और कहने लगा, मेरी जो इज़्ज़त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास थी, वह और मेरा जो मर्तबा अंसार में है वह आप ख़ूब जानते हैं, आप मेरा सदक़ा क़बूल कीजिए। आपने जवाब दिया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बूल न किया तो मैं कौन होता हूँ? ग़र्ज़ आप (रज़ि.) ने भी इंकार कर दिया। जब आपका भी इंतिक़ाल हो गया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) मुसलमानों के ख़लीफ़ा हुए तो फिर यह आया और कहा कि अमीरुल मोमिनीन! आप मेरा सदक़ा क़बूल कीजिए। आपने जवाब दिया कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने क़बूल नहीं किया, ख़लीफ़ा अव्वल ने क़बूल नहीं किया तो अब मैं कैसे क़बूल कर सकता हूँ।

चुनाँचे आपने भी अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में उसका सदक़ा क़बूल नहीं किया। फिर ख़िलाफ़त हज़रत उस्मान (रज़ि.) के सुपुर्द हुई तो यह अज़्ली मुनाफ़िक़ फिर आया और लगा मन्नत समाजत करने

लेकिन आपने भी यही जवाब दिया कि ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और आपके दोनों ख़लीफ़ा ने तेरा सदक़ा क़बूल नहीं किया तो मैं कैसे क़बूल कर लूँ। चुनाँचे क़बूल नहीं किया, उसी वक़्त यह शख़्स हलाक हो गया। (इब्ने जरीर व इब्ने अबी ह़ातिम; यह रिवायत अपनी तमाम सनदों के साथ ज़ईफ़ व मरदूद है।) अल्ग़र्ज़ पहले तो वादे किए थे, सख़ावत के और वह भी क़समें खा खाकर, फिर फिर गया और सख़ावत के बदले बख़ीली कर गया और वादाख़िलाफ़ी कर ली। इस झूठ और अ़हद (वादे) को तोड़ने के बदले में उसके दिल में निफ़ाक़ पेवस्त हो गया, जो उस वक़्त से उसकी पूरी ज़िन्दगी तक उसके साथ ही रहा। ह़दीस में भी है कि मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें हैं जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे, ख़िलाफ़ करे, अमानत सौंपी जाए ख़यानत करे। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अ़लामातुल मुनाफ़िक़ीन : 33; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 59; तिर्मिज़ी : 2633) क्या यह नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला छुपे खुले दिल के इरादों को और सीने के भेदों का जानने वाला है, वह पहले से ही जानता था, यह ख़ाली ज़ुबानी बकवास है कि मालदार हो जाएँ तो यूँ ख़ैरातें करें, यूँ शुक्रगुज़ारी करें, यूँ नेकियाँ करें, लेकिन दिलों पर नज़रें रखने वाला रब ख़ूब जानता है कि यह माल में मस्त हो जाएँगे और दौलत पाकर ख़ुर्मस्तियाँ नाशुक्री और बुख़्ल करने लगेंगे। वह हर ह़ाज़िर ग़ायब का जानने वाला है वह हर छुपे खुले का आ़लिम है, ज़ाहिर बातिन सब उस पर रोशन है।

***

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۹﴾

तर्जुमा : "जो लोग इन मुसलमानों पर तअ़ना ज़नी करते हैं, जो दिल खोलकर ख़ैरातें करते हैं और उन लोगों पर जिन्हें सिवाए अपनी मेह़नत मज़दूरी के और कुछ मयस्सर ही नहीं, यह उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह तआ़ला भी उनसे मज़ाक़ करता है उन्हीं के लिए दुख की मार है।" (79)

मुनाफ़िक़ीन की मुसलमानों पर ताानाज़नी और उसका बुरा अंजाम (आयत 79) : यह भी मुनाफ़िक़ों की एक बदख़स्लत है कि उनकी ज़ुबान से कोई भी बच नहीं सकता, सख़ी न बख़ील, यह ऐब निकालने वाले बुरे लोग हैं। अगर कोई शख़्स बड़ी रक़म अल्लाह की राह में दे तो यह उसे रियाकार कहने लगते हैं और अगर कोई मिस्कीन अपनी माली कमज़ोरी की बिना पर थोड़ा बहुत दे तो यह नाक भौं चढ़ाकर कहते हैं, लो! इनकी इस ह़क़ीर चीज़ का भी अल्लाह भूखा था। चुनाँचे जब स़दक़ात देने की आयत उतरी तो स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) अपने अपने स़दक़ात लिए हुए ह़ाज़िर होते हैं, एक स़ाह़ब ने दिल खोलकर बहुत बड़ी रक़म दी, उसे तो उन मुनाफ़िक़ों ने रियाकार का ख़िताब दिया और एक स़ाह़ब बेचारे मिस्कीन आदमी थे, सिर्फ़ एक स़ाअ अनाज लाए थे, उन्हें कहा कि इसके इस स़दक़े की अल्लाह को ज़रूरत पड़ी थी? इसका बयान इस आयत में है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब इत्तक़ुन्नार वलौ बि शिक़्क़े तम्रतिन वल क़लीलु मिनस़्स़दक़ति .... :

1415) एक बार आप (ﷺ) ने बक़ीअ में फ़र्माया कि "जो सदक़ा देगा मैं उसकी बाबत क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने गवाही दूँगा।" उस वक़्त एक सहाबी ने अपने अमामे में से कुछ देना चाहा लेकिन फिर लपेट लिया, इतने में एक साहब जो स्याह रंग और छोटे क़द के थे, एक ऊँटनी लेकर आगे बढ़े, जिससे ज़्यादा अच्छी ऊँटनी बक़ीअ भर में न थी। कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह अल्लाह तआला के नाम पर ख़ैरात है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "बहुत अच्छा!" उसने कहा लीजिए। इस पर किसी ने कहा कि इससे तो ऊँटनी ही अच्छी है। आप (ﷺ) ने सुन लिया और फ़र्माया, "तू झूठा है, यह तुझसे और उससे तीन गुना अच्छा है, अफ़सोस! सैंकड़ों ऊँट रखने वाले तुझ जैसों पर अफ़सोस, तीन ने सुन लिया और फ़र्माया, "तू झूठा है यह तुझसे और उससे तीन गुना अच्छा है, अफ़सोस! ऊँट रखने वाले तुझ जैसों पर अफ़सोस, तीन मर्तबा यही फ़र्माया, मगर वह जो अपने माल को इस तरह इस तरह करे, और लपें भर भरकर आप (ﷺ) ने अपने हाथों से दायें बायें इशारा किया, यानी अल्लाह की राह में हर नेक काम में ख़र्च करे। फिर फ़र्माया, "उन्होंने फ़लाह पा ली जो कम माल वाले हों और ज़्यादा इबादत वाले हों।" (अहमद : 5/34; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हैसमी कहते हैं कि इसकी सनद में मज्हूल रावी है, मज्मउज़्ज़वाइद : 3/124) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) चालीस ओक़िया चाँदी लाए और एक ग़रीब अंसारी एक साअ अनाज लाए। मुनाफ़िक़ों ने एक को रियाकार बतलाया, दूसरे के सदक़े को हक़ीर बतलाया। (इसकी सनद में अली बिन अबी तलहा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) के बीच मुन्क़तअ यानी ज़ईफ़ है।) एक बार आप (ﷺ) के हुक्म से लोगों ने माल ख़ैरात देना और जमा करना शुरु किया। एक साहब एक साअ खजूरें ले आए और कहने लगे, हुज़ूर (ﷺ)! मेरे पास खजूरों के दो साअ थे, एक मैंने अपने और अपने बाल बच्चों के लिए रोक लिया और एक ले आया। आप (ﷺ) ने उसे भी जमाशुदा माल में डाल देने को फ़र्माया, उस पर मुनाफ़िक़ बकवास करने लगे कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) इससे बेनियाज़ हैं।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने कहा, मेरे पास एक सौ ओक़िया सोना है, सबको सदक़ा करता हूँ। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, "होश में भी है? आप (रज़ि.) ने जवाब दिया, हाँ! होश में हूँ। फ़र्माया, फिर क्या कर रहा है। आपने फ़र्माया, सुनो! मेरे पास आठ हज़ार हैं जिनमें से चार हज़ार तो मैं अल्लाह तआला को क़र्ज़ दे रहा हूँ और चार हज़ार अपने लिए रख लेता हूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला तुझे बरकत दे, जो तूने रख लिया है और जो तूने ख़र्च कर दिया है।" मुनाफ़िक़ उन पर बातें बनाने लगे कि फूल गए अपनी सख़ावत दिखाने के लिए लोगो में इतनी बड़ी रक़म दे दी। पस अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर बड़ी रक़म और छोटी रक़म वालों की सच्चाई और उन मुनाफ़िक़ों के तक्लीफ़देह बकवासों को ज़ाहिर कर दिया। (तब्री : 14/383; इसकी सनद में अतिया औफ़ी मजरूह रावी है। (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216)

बनू अज्लान के आसिम बिन अदी (रज़ि.) ने भी उस वक़्त बड़ी रक़म ख़ैरात की थी, एक सौ (100) वसक़ खजूरें दी थीं। मुनाफ़िक़ों ने उसे रियाकारी पर महमूल किया था। अपनी मेहनत मज़दूरी की थोड़ी सी ख़ैरात देने वाले अबू अक़ील (रज़ि.) थे, यह क़बीला बनू अनीफ़ के शख़्स थे, उनके एक साअ ख़ैरात पर

मुनाफ़िक़ों ने हंसी और हिज़्व की थी। और रिवायत में है कि यह कुछ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुजाहिदीन की एक जमाअत को जिहाद पर रवाना करने के लिए किया था। उसमें है कि अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने दो हज़ार दिए थे और दो हज़ार रखे थे, दूसरे बुज़ुर्ग ने रातभर की मेहनत में दो साअ खजूरें हासिल करके एक साअ रख लीं और एक साअ दे दीं, यह हज़रत अबू अक़ील (रज़ि.) थे, रातभर अपनी पीठ पर बोझ ढोते रहे थे। उनका नाम हब्बाब था और क़ौल है कि अब्दुर्रहमान बिन सअल्बा था। पस मुनाफ़िक़ों के इस मज़ाक़ की सज़ा में अल्लाह तआला ने भी उनसे यही बदला लिया, उन मुनाफ़िक़ों के लिए उख़वी अलमनाक अज़ाब हैं, और उनके आमाल का उन अमलों जैसा ही बुरा बदला है।

***

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۸۰﴾ فَرِحَ
الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾
فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾

तर्जुमा ''इनके लिए तो इस्तिग़फ़ार कर या न कर, अगर तू सत्तर मर्तबा भी इनके लिए इस्तिग़फ़ार करेगा तो भी अल्लाह तआला इन्हें हर्गिज़ न बख़्शेगा, यह इसलिए कि इन्होंने अल्लाह तआला से और उसके रसूल (ﷺ) से कुफ़्र किया है, ऐसे फ़ासिक़ लोगों को अल्लाह करीम हिदायत नहीं देता। (80) पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ अपने बैठे रहने पर ख़ुश हैं, यह अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद करना नापसंद रखते हैं, इन्होंने कह दिया कि इस गर्मी में मत निकलो, तू कह दे कि दोज़ख़ की आग बहुत ही सख़्त गर्म है, काश कि वह समझते होते। (81) पस इन्हें बहुत कम हंसना चाहिए और बहुत ज़्यादा रोना चाहिए, बदले में उसके जो यह किया करते थे।'' (82)

मुनाफ़िक़ीन के लिए इस्तिग़फ़ार (गुनाहों की बख़्शिश के लिए दुआ) न करने का हुक्म (आयत 80-82) : फ़र्माता है कि यह मुनाफ़िक़ इस क़ाबिल नहीं कि तू ऐ नबी (ﷺ)! इनके लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश मांग। एक बार नहीं अगर तू सत्तर मर्तबा भी बख़्शिश मांगेगा, तो भी अल्लाह तआला इन्हें न बख़्शेगा। जो सत्तर का ज़िक्र है उससे मुराद सिर्फ़ ज़्यादती है, वह सत्तर से कम हो या बहुत ज़्यादा हो। कुछ ने

कहा कि मुराद उससे सत्तर का ही अदद है। चुनाँचे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मैं तो इनके लिए सत्तर बार से भी ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा कि अल्लाह तआला इन्हें बख़्श दे।" पस अल्लाह तआला ने और आयत में फ़र्मा दिया कि इनके लिए तेरा इस्तिग़फ़ार करना न करने के बराबर है। अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ का बेटा हाज़िरे ख़िदमत होकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से अर्ज़ करता है कि मेरा बाप नज़अ की हालत में है, मेरी चाहत है कि आप (ﷺ) उसके पास तशरीफ़ ले चलें , उसके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाएँ। आप (ﷺ) ने पूछा, तेरा नाम क्या है। उसने कहा, हुबाब! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तेरा नाम अब्दुल्लाह है हुबाब तो शैतान का नाम है।" अब आप (ﷺ) उनके साथ हो लिए उनके बाप को अपना कुर्ता अपने पसीने वाला पहनाया, उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। आप (ﷺ) से कहा भी गया कि आप (ﷺ) इसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ रहे हैं! आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला ने सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार से भी न बख़्शने को फ़र्माया है तो मैं सत्तर बार फिर सत्तर बार फिर सत्तार बार इस्तिग़फ़ार करूँगा।" (तब्री : 14/396; व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुंक़तअ)

सूरज की गर्मी से डरकर जिहाद से पीछे रहने वाले जहन्नम की आग को याद करे : जो लोग ग़ज़्व-ए-तबूक में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ नहीं गए थे और घरों में ही बैठने पर अकड़ रहे थे, जिन्हें अल्लाह की राह में माल व जान से जिहाद करना मुश्किल मालूम होता था, जिन्होंने एक दूसरे के कान भरे थे कि इस गर्मी में कहाँ निकलोगे? एक तरफ़ फल पके हुए हैं , साये बढ़े हुए हैं, दूसरी तरफ़ लूके लूके चल रहे हैं , पस अल्लाह तआला उनसे फ़र्माता है कि जहन्नम की आग जिसकी तरफ़ तुम अपनी इस बदकिरदारी से जा रहे हो, वह इस गर्मी से ज़्यादा बढ़ी हुई हरारत अपने अंदर रखती है यह आग तो उस आग का सत्तरवाँ हिस्सा है, जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुन्नार व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3265; सहीह मुस्लिम : 2843; मौता इमाम मालिक : 2/994; इब्ने हिब्बान : 7462) और रिवायत में है कि "तुम्हारी यह आग आतिशे दोज़ख़ के सत्तर हिस्से में से एक हिस्सा है फिर भी यह समुन्द्र के पानी में दो दफ़ा बुझाई हुई है, वरना तुम इससे कोई फ़ायदा हासिल न कर सकते।" (अहमद : 2/244; मुस्नद हुमैदी : 1129, (1136 बि तहक़ीक़ी व सनदुहू सहीहुन) इब्ने हिब्बान : 7463) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं, "एक हज़ार साल तक आतिशे दोज़ख़ धोंकी गई तो सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाई गई तो सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल तक धोंकी गई तो स्याह हो गई, पस वह अंधेरी रात जैसी सख़्त स्याह है।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मिन्हू फ़ी सिफ़तिन्नारि व अन्नहा सौदाउ मुज़्लिमा : 2591; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; शुरैक क़ाज़ी मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं, इब्ने माजा : 4320) एक बार आप (ﷺ) ने आयत (وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ) (66/तहरीम : 6) की तिलावत की और फ़र्माया, "एक हज़ार साल तक जलाए जाने से वह सफ़ेद पड़ गई फिर एक हज़ार साल तक भड़काने से लाल हो गई, फिर एक हज़ार साल तक धोंके जाने से काली हो गई पस वह स्याह रात जैसी है, उसके शोले में भी चमक नहीं।" एक हदीस में है कि "अगर दोज़ख़ की आग की एक चिंगारी मश्रिक़ (पूरब) में हो तो उसका असर मग़्रिब (पश्चिम) तक पहुँच जाए।" (तबरानी व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अबू यअला की एक ग़रीब

रिवायत में है कि "अगर इस मस्जिद में एक लाख बल्कि इससे भी ज़्यादा आदमी हों और कोई जहन्नमी यहाँ आकर सांस ले तो उसकी गर्मी से मस्जिद और मस्जिद वाले सब जल जाएँ।" (मुस्नद अबी यअ़ला : 6670; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/391) और ह़दीस में है कि "सबसे हल्के अ़ज़ाब वाला दोज़ख़ में वह होगा जिसके दोनों पैर में दो जूतियाँ आग की तस्मे समेत होंगी जिससे उसकी खोपड़ी खुदबुदा रही होगी और वह समझ रहा होगा कि सबसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब उसी को हो रहा है ह़ालाँकि दरअस़ल सबसे हल्का अ़ज़ाब उसी का है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6562; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 213; अह़मद : 4/271) क़ुरआन फ़र्माता है कि वह आग ऐसी शोलाज़न है जो खाल उतार देती है। (70/मअ़आरिज : 15) और आयतों में है कि उनके सरों पर खोलता हुआ गर्म पानी बहाया जाएगा जिससे उनके पेट की तमाम चीज़ें और उनकी खालें झुलस जाएँगे फिर लोहे के हथोड़ों से उनके सर कुचले जाएँगे, वह जब वहाँ से निकलना चाहेंगे, उसी में लौटा दिए जाएँगे और कहा जाएगा कि जलने का अ़ज़ाब चखो। (22/ह़ज्ज : 19-22) और आयत में है कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इंकार किया, उन्हें हम भड़कती हुई आग में डाल देंगे, उनकी खालें झुलसती जाएँगी और हम एक के बाद एक बदलते जाएँगे कि वह ख़ूब अ़ज़ाब चखें। (4/निसाअ : 56) इस आयत में भी फर्माया है कि अगर उन्हें समझ होती तो यह जान लेते कि जहन्नम की आग की गर्मी और तेज़ी बहुत ज़्यादा है तो यक़ीनन यह बावजूद मौसमी गर्मी के रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जिहाद में ख़ुशी ख़ुशी निकलते और अपने जान व माल को अल्लाह की राह में फ़िदा करने पर तुल जाते। अ़रब का शायर कहता है कि तूने अपनी उम्र सर्दी गर्मी से बचने की कोशिश में गुज़ार दी ह़ालाँकि तुझे लायक़ था कि अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानियों से बचता कि जहन्नम की आग से बच जाए।

अब अल्लाह तबारक व तआ़ला इन बदत्राति़न मुनाफ़िक़ों को डरा रहा है कि थोड़ी सी ज़िन्दगी में यहाँ तू जितना चाहें हंस लें, लेकिन उस आने वाली बड़ी ज़िन्दगी में उनके लिए रोना ही रोना है, जो कभी ख़त्म न होगा।

हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है कि "लोगों! रोओ और रोना न आए तो ज़बरदस्ती रोने की शक्ल बनाओ, जहन्नमी रोएँगे यहाँ तक कि उनके गालों पर नहरों जैसे गढ़े बन जाएँगे आख़िर आँसू ख़त्म हो जाएँगे, अब आँखों से ख़ून निकलने लगेगा, उनकी आँखों से इस क़द्र आँसू और ख़ून बहा होगा कि अगर कोई उसमें कश्तियाँ चलाना चाहे तो चला सकता है।" (मुस्नद अबी यअ़ला : 7/161; इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब सिफ़तुन्नार : 4324; व सनदुहू ज़ईफ़ुन, मुख़्तस़रन इसकी सनद में मुह़म्मद बिन ह़मीद राज़ी और यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ है (अत्तक़रीब : 2/156; रक़म : 2/361; रक़म : 220) और इमरान बिन ज़ेद कमज़ोर रावी है (अत्तक़रीब : 2/83; रक़म : 727) और ह़दीस में है कि जहन्नमी जहन्नम में रोएँगे और ख़ूब रोते रहेंगे, आँसू ख़त्म होने के बाद पीप निकलना शुरू होगी। उस वक़्त दोज़ख़ के दारोग़े उनसे कहेंगे कि एक बदबख़्त! रह़म की जगह तो तुम कभी भी न रोए, अब यहाँ का रोना धोना ला ह़ासिल है। अब यह ऊँची आवाज़ों से चिल्ला चिल्लाकर जन्नतियों से फ़रियाद करेंगे कि तुम लोग हमारे हो, रिश्ते कुंबे के हो, सुनो! हम क़ब्रों से

प्यासे उठे थे, फिर मैदाने महशर में भी प्यासे ही रहे और आज तक यहाँ भी प्यासे ही हैं, हम पर रहम करो कुछ पानी हमारे हलक़ में छुआ दो, या जो रोज़ी अल्लाह तआला ने तुम्हें दी है उसमें से ही थोड़ा बहुत हमें दे दो। चालीस साल तक कुत्तों की तरह चीख़ते रहेंगे, चालीस साल के बाद उन्हें जवाब मिलेगा कि तुम यूँ ही धुत्कारे हुए भूखे प्यासे ही उन सड़ियल और अटल सख़्त अज़ाबों में पड़े रहो। अब यह तमाम भलाइयों से मायूस हो जाएँगे। (इब्ने अबिद्दुनिया, व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; इसका रावी हम्ज़ा जज़्री मतरूक है।)

***

فَإِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ إِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ أَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ إِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ أَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ إِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

तर्जुमा : ''पस अगर अल्लाह तआला तुझे उनकी किसी जमाअत की तरफ़ लौटाकर वापिस ले आए फिर यह तुझसे मैदाने जंग में निकलने की इजाज़त तलब करें तो कह देना कि तुम मेरे साथ हर्गिज़ चल नहीं सकते और न मेरे साथ तुम दुश्मनों से लड़ाई कर सकते हो, तुमने पहली बार ही बैठ रहने को पसंद किया था पस तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो। (83) उनमें से कोई मर जाएँ तो तू उसके जनाज़े की हर्गिज़ नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़ा होना, यह अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) के इंकारी हो गए और मरते दम तक बदकार बेइताअत रहे।'' (84)

लालची लोगों को जिहाद में न ले जाइए (आयत 83, 84) : फ़र्मान है कि जब अल्लाह तआला तुझे सलामती के साथ इस ग़ज़्वे से वापिस मदीने पहुँचा दे ओर उनमें से कोई जमाअत तुझसे किसी और ग़ज़्वे में तेरे साथ चलने की दरख़्वास्त करे तो बतौर उनको सज़ा देने के तू साफ़ कह देना कि न तो तुम मेरे साथ वालों में मेरे साथ चल सकते हो, न तुम मेरी हमराही में दुश्मनों से जंग कर सकते हो, तुम जब मौक़ा पर दग़ा दे गए और पहली बार ही बैठ रहे तो अब तैयारी का क्या मतलब? पस यह आयत मिस्ल आयत (وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ أَوَّلَ مَرَّةٍ و) (6/अन्आम : 110) के है। बदी का बुरा बदला बदी के बाद मिलता है जैसे कि नेकी की जज़ा भी नेकी के बाद मिलती है। उमरए हुदेबिया के बाद क़ुरआन ने फ़र्माया था (سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلٰى مَغَانِمَ) (48/फ़तह : 15) यानी यह पीछे रह जाने वाले लोग तुमसे जब तुम ग़नीमतें लेने चलोगे, कहेंगे कि हमें इजाज़त दो, हम भी तुम्हारे साथ हो लें, यहाँ फ़र्माया कि इनसे कह देना कि बैठ रहने वलों में ही बैठे रहो, जो औरतों की तरह घरों में घुसे रहते हैं।

मुनाफ़िक़ का जनाज़ा पढ़ाने की मुमानिअत (मनाही) : हुक्म होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम मुनाफ़िक़ों से बिलकुल रिश्ता तोड़ लो, उनमें से कोई मर जाए तो तुम न उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ो, न उसकी क़ब्र पर जाकर उसके लिए दुआए इस्तिग़फ़ार करो, इसलिए कि यह कुफ़्र व फ़िस्क़ पर जिन्दा रहे, और उसी पर मरे। यह हुक्म तो आम है भले उसका शाने नुज़ूल ख़ास अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के बारे में है। जो मुनाफ़िक़ों का रईस और सरदार था। सहीह बुख़ारी में है कि इसके मरने पर उसके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दरख़्वास्त की कि मेरे बाप के कफ़न के लिए आप ख़ास अपना पहना हुआ कुर्ता इनायत फ़र्माईए। आप (ﷺ) ने दे दिया। फिर कहा कि आप (ﷺ) ख़ुद उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाइए, आप (ﷺ) ने यह दरख़्वास्त भी मंज़ूर कर ली और नमाज़ पढ़ाने के इरादे से उठे लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने आपका दामन थाम लिया और अर्ज़ किया कि, हुज़ूरे अकरम (ﷺ)! आप इसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएँगे? हालाँकि अल्लाह तआला ने इससे मना कर दिया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुनो! अल्लाह तआला ने मुझे इख़्तियार दिया है, फ़र्माया है कि तू इनके इस्तिग़फ़ार कर या न कर, अगर तू इनके लिए सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेगा, तो भी अल्लाह तआला उन्हें न बख़्शेगा, तो मैं सत्तर बार से भी ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा।'' हज़रत उमर (रज़ि.) कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह मुनाफ़िक़ था। ताहम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई, इस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, सूरह बराअत बाब (इस्तग़्फ़िर लहुम औला तस्तग़्फ़िर लहुम...) : 4670; सहीह मुस्लिम : 2774; तबरानी : 17051; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/287) और रिवायत में है कि इस नमाज़ में सहाबा (रज़ि.) भी आप (ﷺ) की इक़्तिदा में थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बरा'त बाब क़ौलुहू (वला तुसल्लि अला अहदिम् मिन्हुम मात अबदन वला तक़ुम अला क़ब्रिही) : 4672; सहीह मुस्लिम : 6774)

और रिवायत में है हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब आप (ﷺ) उसकी नमाज़ के लिए खड़े हो गए तो मैं सफ़ में से निकलकर आप (ﷺ) के सामने खड़ा हो गया और कहा कि क्या आप (ﷺ) उस अल्लाह के दुश्मन अब्दुल्लाह बिन उबय के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएँगे हालाँकि फ़लाँ दिन उसने यूँ कहा और फ़लाँ दिन यूँ कहा। उसकी वह तमाम बातें दोहराईं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मुस्कुराते हुए सब सुनते रहे, आख़िर में फ़र्माया, ''उमर (रज़ि.)! मुझे छोड़ दे, अल्लाह तआला ने इस्तिग़फ़ार का मुझे इख़्तियार दिया है कि अगर मुझे मालूम हो जाए कि सत्तर मर्तबा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार उनके गुनाह माफ़ करा सकता है तो मैं यक़ीनन सत्तर बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा।'' चुनाँचे आप (ﷺ) ने नमाज़ भी पढ़ाई, जनाज़े के साथ भी चले, दफ़न में भी मौजूद रहे, उसके बाद मुझे अपनी उस गुस्ताख़ी पर बहुत ही अफ़सोस होने लगा कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ूब इल्म वाले हैं मैंने ऐसी और इस क़द्र जुर्अत (हिम्मत) क्यूँ की, कुछ ही देर हुई होगी जो यह दोनों आयतें नाज़िल हुईं, उसके बाद आख़िर दम तक न तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी, न उसकी क़ब्र पर आकर दुआ की। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा यक्रहू मिनस्सलाति अलल मुनाफ़िक़ीन वल इस्तिग़्फ़ार लिल मुश्रिकीन : 1366; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/687) और रिवायत में है कि उसके साहबज़ादे (रज़ि.) ने आप (ﷺ) से यह भी कहा था कि अगर आप

(ﷺ) तशरीफ़ न लाए तो हमेशा के लिए यह बात हम पर रह जाएगी। जब आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो उसे क़ब्र में उतार दिया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "इससे पहले मुझे क्यूँ न लाए।" चुनाँचे वह क़ब्र से निकाला गया, आप (ﷺ) ने उसके सारे जिस्म पर थुथकार कर दम किया और उसे अपना कुर्ता पहनाया। (अहमद : 3/371; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबुज़्ज़ुबेर के सुनने की सराहत नहीं लेकिन असल रिवायत सहीह सनद के साथ बुख़ारी : 1270; व मुस्लिम : 2773 में मौजूद है।) और रिवायत में है कि वह ख़ुद वसिय्यत करके मरा था कि उसके जनाज़े की नमाज़ ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) पढ़ाएँ। उसके लड़के ने आकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उसकी आरज़ू और उस आख़िरी वसिय्यत की भी ख़बर की थी और यह भी कहा था कि उसकी वसिय्यत यह भी है कि उसे आप (ﷺ) के कपड़े में कफ़नाया जाए। आप (ﷺ) उसके जनाज़े की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए ही थे जो हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) यह आयतें लेकर उतरे। (इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब फ़िस्सलाति अला अहलिल क़िब्ला : 1524; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; वल हदीसु सहीहुन बिश्शवाहिद) और रिवायत में है कि जिब्राईल (عليه السلام) ने आप (ﷺ) का दामन तानकर नमाज़ के इरादे के वक़्त यह आयत सुनाई। (मुस्नद अबी यअला : 4112; इब्ने जरीर : 1706; इसकी सनद में यज़ीद बिन अबान रक़्क़ाशी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/418; रक़म : 9669) लेकिन यह रिवायत ज़ईफ़ है।

और रिवायत में है उसने अपनी बीमारी के ज़माने में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बुलाया, आप (ﷺ) तशरीफ़ ले गए और जाकर फ़र्माया कि "यहूदियों की मुहब्बत ने तुझे तबाह कर दिया।" उसने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह वक़्त डांट-डपट का नहीं बल्कि मेरी ख़्वाहिश है कि आप मेरे लिए दुआए इस्तिग़फ़ार करें, मैं मर जाऊँ तो मुझे अपने पैरहन में कफ़नाएँ। कुछ सलफ़ से मरवी है कि कुर्ता देने की वजह यह थी कि जब हज़रत अब्बास (रज़ि.) आए तो उनके जिस्म पर किसी का कपड़ा ठीक नहीं आया, आख़िर उसका कुर्ता लिया वह ठीक आ गया, यह भी लम्बा पूरा चौड़ी चकली हड्डी का आदमी था, पस उसके बदले में आप (ﷺ) ने उसे उसके कफ़न के लिए अपना कुर्ता अता फ़र्माया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अस्सलातु लिल उसारा : 3008) इस आयत के उतरने के बाद न तो किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ आप (ﷺ) ने पढ़ी, न किसी के लिए इस्तिग़फ़ार किया। मुस्नद अहमद में है कि जब आप (ﷺ) को किसी जनाज़े की तरफ़ बुलाया जाता तो आप (ﷺ) पूछ लेते अगर लोगों से उसकी भलाईयाँ मालूम होतीं तो आप (ﷺ) जाकर उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाते और अगर कोई ऐसी वैसी बात कान में पड़ती तो साफ़ इंकार कर देते। (अहमद : 5/299, 300; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 3057; हाकिम : 1/364; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/4) हज़रत उमर (रज़ि.) का तरीक़ा आप (ﷺ) के बाद यह रहा कि जिसके जनाज़े की नमाज़ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) पढ़ते उसके जनाज़े की नमाज़ आप भी पढ़ते जिसकी हज़रत हुज़ैफ़ा न पढ़ते आप भी न पढ़ते इसलिए कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुनाफ़िक़ों के नाम गिनवा दिए थे और सिर्फ़ उन्हीं को यह नाम मालूम थे, इसी बिना पर उन्हें राज़दारे रसूलुल्लाह (ﷺ) कहा जाता था। बल्कि एक बार ऐसा भी हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) एक शख़्स के जनाज़े की नमाज़ के लिए खड़े होने लगे तो हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने चुटकी लेकर उन्हें रोक दिया। जनाज़े की नमाज़ और इस्तिग़फ़ार उन दोनों चीज़ों से मुनाफ़िक़ों के बारे

में मुसलमानों को रोक देना यह दलील है उस अम्र की कि मुसलमानों के बारे में उन दोनों चीज़ों की पूरी ताकीद है उनमें मुर्दों के लिए भी पूरा नफ़ा है और ज़िन्दों के लिए भी कामिल अज्रो सवाब है। चुनाँचे ह़दीस शरीफ़ में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं जो जनाज़े में जाए और नमाज़ पढ़ी जाने तक साथ रहे उसे एक क़ीरात़ सवाब मिलता है और जो दफ़न तक साथ रहे उसे दो क़ीरात़ मिलते हैं। पूछा गया कि क़ीरात़ क्या है? फ़र्माया "सबसे छोटा क़ीरात़ पहाड़ के बराबर होता है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मनिन्तज़रा ह़त्ता तुदफ़िना : 1325; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 945; अबूदाऊद : 3168; तिर्मिज़ी : 1040; इब्ने माजा : 1539; अह़मद : 2/401) इसी त़रह़ यह भी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आ़दते मुबारक थी कि मय्यित के दफ़न से फ़ारिग़ होकर वहीं उसकी क़ब्र के पास ठहरकर हुक्म फ़र्माते कि "अपने साथी के लिए इस्तिग़फ़ार करो, उसके लिए साबित क़दमी की दुआ़ करो उससे इस वक़्त सवाल व जवाब हो रहा है।" (अबूदाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब अल्इस्तिग़फ़ारु इन्दल क़ब्रि लिल मय्यित फ़ी वक़्तिल इंसिराफ़ : 3221; व सनदुहू ह़सन; ह़ाकिम : 1/370; बैहक़ी : 4/56)

***

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ

اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ

اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ رَضُوْا بِاَنْ

يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾

तर्जुमा : "उनके माल व औलाद से कुछ भी ताज्जुब न कर, अल्लाह तआ़ला की चाहत यही है कि उन्हें उन चीज़ों से दुनियावी सज़ा दे और यह अपनी जानें निकलने तक काफ़िर ही रहें। (85) जब कोई सूरत उतारी जाती है कि अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाओ और उसके रसूल (ﷺ) के साथ मिलकर जिहाद करो तो उनमें से दौलतमंदों का एक त़ब्क़ा तेरे पस आकर यह कहकर रुख़्सत ले लेता है कि हमें तो बैठे रहने वालों में ही छोड़ दीजिए। (86) यह तो ख़ानानशीन औ़रतों का साथ देने पर रीझ गए और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, अब वह कुछ समझ अ़क़्ल नहीं रखते।" (87)

(आयत 85-87) : इसी मज़्मून की आयते करीमा गुज़र चुकी है और वहीं इसकी पूरी तफ़्सीर भी बिह़म्दिल्लाह लिख दी गई है जिसके दोहराने की ज़रूरत नहीं।

बुज़दिल मुनाफ़िक़ीन जिहाद नहीं कर सकते : उन लोगों की बुराई बयान हो रही है जो वुस्अत, ताक़त, कुव्वत होते हुए जिहाद के लिए नहीं निकलते, जी चुरा जाते हैं और हुक्मे इलाही सुनकर फिर भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आ आकर अपने रुके रहने की इजाज़त चाहते हैं। उनकी बेहमिय्यती तो देखो कि यह औरतों जैसे हो गए। लश्कर चले गए, यह ना मर्द औरतों की तरह पीछे रह गए। बवक़्ते जंग बुज़दिल डरपोक और घरों में घुसे रहने वाले और बवक़्ते अमन बढ़ बढ़कर बातें बनाने वाले, यह भौंकने वाले कुत्तों और गरजने वाले बादलों की तरह ढोल के पोल हैं। चुनाँचे और जगह ख़ुद क़ुरआने करीम ने बयान किया है कि ख़ौफ़ के वक़्त ऐसी आँखें फेरने लगते हैं जैसे कोई मर रहा हो, और जहाँ वह मौक़ा गुज़र गया कि अब लगे चर्ब ज़बानी करने और लम्बे चौड़े दावे करने और बातें बनाने। (33/अहज़ाब : 19) अमन के वक़्त तो मुसलमानों में फ़साद फैलाने लगते हैं और वह बुलंद बांग बहादुरी के ढोल पीटते हैं कि कुछ ठीक नहीं लेकिन लड़ाई के वक़्त औरतों की तरह चूड़ियाँ पहनकर पर्दानशीन बन जाते हैं, बिल और सूराख़ ढूँढ़ ढूँढकर अपने आपको छुपाते फिरते हैं। ईमान वाले तो सूरत उतरने और अल्लाह तआला के हुक्म होने का इंतिज़ार करते हैं लेकिन बीमार दिलों वाले जहाँ सूरत उतरी और जिहाद का हुक्म सुना कि आँखें बंद कर लें, दीदे फेर लिए। उन पर अफ़सोस है और उनके लिए तबाहीख़ेज़ मुसीबत है। अगर यह इताअत गुज़ार होते अगर उनकी ज़ुबान से अच्छी बात निकलती, उनके इरादे अच्छे होते, यह अल्लाह तआला की बातों की तस्दीक़ करते तो यही चीज़ उनके हक़ में बेहतर थी। (47/मुहम्मद : 20, 21) लेकिन उनके दिलों पर तो उनके बुरे अमलों की वजह से मुहर लग चुकी है, अब तो उनमें इस बात की सलाहियत भी नहीं रही कि अपने नफ़ा नुक़्सान को ही समझ लें।

***

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ
الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸۸﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۸۹﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ
وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۰﴾
لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ
اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۱﴾ وَّلَا

عَلَى الَّذِيْنَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّأَعْيُنُهُمْ
تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝٩٢ إِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ
يَسْتَأْذِنُوْنَكَ وَهُمْ أَغْنِيَآءُ رَضُوْا بِأَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٩٣

तर्जुमा : ''लेकिन ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) और उसके साथ के ईमान वाले लोग अपने मालों और जानों से जिहाद करते रहते हैं, यही लोग ख़ूबियों वाले हैं और यही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं। (88) उन्हीं के लिए अल्लाह तआला ने वह जन्नतें तैयार की हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें यह हमेशा रहने वाले हैं। यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (89) बादिया नशीनों में से बहाने वाले लोग हाज़िर हुए कि उन्हें रुख़सत दे दी जाए और वह बैठ रहे जिन्होंने अल्लाह तआला से उसके रसूल (ﷺ) से झूठी बातें बनाई थीं, अब तो इनमें जितने कुफ़्फ़ार हैं उन्हें दुख देने वाली मार पहुँचकर रहेगी। (90) नातवाँ ज़ईफ़ों पर और बीमारों पर और उन पर जिनके पास ख़र्च करने को कुछ भी नहीं कोई हर्ज नहीं बशर्तेकि वह अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की ख़ैरख़्वाही करते रहें, ऐसे नेककारों पर इल्ज़ाम की कोई राह नहीं, अल्लाह तआला बड़ी मग़फ़िरत व रहमत वाला है।(91) हाँ! उन पर भी कोई हर्ज नहीं जो तेरे पास आते हैं कि तू उन्हें सवारी मुहय्या कर दे तो तू जवाब देता है कि मैं तो तुम्हारी सवारी के लिए कुछ भी नहीं पाता तो वह रंज व ग़म से अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए लौट जाते हैं कि उन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ भी मयस्सर नहीं। (92) बेशक उन लोगों पर तो राहे इल्ज़ाम है जो बावजूद दौलतमंद होने के तुझसे इजाज़त तलब करते हैं जो ख़ानानशीन औरतों का साथ देने पर ख़ुश हैं जिनके दिलों पर मुहरे इलाही लग चुकी है जिससे वह महज़ बेइल्म हो गए हैं।'' (93)

सच्चे मुसलमान ही अपनी जान व माल से जिहाद करते हैं (आयत 88-93) : मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत उनकी आख़िरी दुर्गत बयान करके अब मोमिनों की तारीफ़ और उनकी आख़िरी राहत बयान हो रही है। यह जिहाद के लिए कमर बाँधे रहते हैं, यह जान व माल अल्लाह की राह में फ़िदा करते रहते हैं, उन ही के हिस्से में भलाईयाँ और ख़ूबियाँ हैं यही फ़लाह पाने वाले लोग हैं। उन ही के लिए जन्नतुल फ़िरदौस है और उन्हीं के लिए बुलंद दर्जे हैं यही मक़्सद हासिल करने वाले कामयाबी को पहुँच जाने वाले लोग हैं।

झूठा उज़्र (बहाना) करने वालों को तम्बीह : यह बयान उन लोगों का है जो हक़ीक़तन किसी शरई उज़्र की वजह से जिहाद में शामिल न हो सकते थे, मदीना के इर्द गिर्द के यह लोग आ आकर अपनी कमज़ोरी

ज़ईफ़ी बेताक़ती बयान करके अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) से इजाज़त लेते हैं कि अगर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उन्हें वाक़ेई माज़ूर समझें तो इजाज़त दे दें। यह बनू ग़िफ़ार के क़बीले के लोग थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िरअत में (व जाअल मुअज़िरून) है यानी उज़्र बनाने वाले लोग। यही मअनी मतलब ज़्यादा ज़ाहिर है क्योंकि इसी जुम्ले के बाद उन लोगों का बयान है, झूठे थे, यह न आए, न अपना रुक जाने का सबब पेश किया, न हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से रुके रहने की इजाज़त चाही। कुछ बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि उज़्र पेश करने वाले भी दरअसल उज़्र वाले न थे, इसीलिए उनके उज़्र मक़्बूल न हुए। लेकिन पहला क़ौल दुरुस्त है वही ज़्यादा ज़ाहिर है, वल्लाहु आलम! इसकी एक वजह तो वही है जो हमने ऊपर बयान की है। दूसरी वजह यह है कि अज़ाब का वादा भी उनसे हुआ जो बैठे ही रहे।

सच्चे मुजाहिद और अहले उज़्र : इस आयत में उन शरई उज़्रों का बयान हो रहा है जिनके होते हुए अगर कोई शख़्स जिहाद में न जाए तो उस पर शरई हर्ज नहीं, पस उन सभों में से एक क़िस्म तो वह है जो लाज़िम होती है किसी हालत में इंसान से अलग नहीं होती। जैसे पैदाइशी कमज़ोरी या अंधापन या लंगड़ापन, कोई लूला लंगड़ा अपाहिज बीमार या बिलकुल ही नाताक़त हो, दूसरी क़िस्म के वह उज़्र होते हैं जो कभी हैं और कभी नहीं। इत्तिफ़ाक़िया अस्बाब हैं मस्लन कोई बीमार हो गया है या बिलकुल फ़क़ीर हो गया है, सामाने सफ़र, सामाने जिहाद मुहय्या नहीं कर सकता वग़ैरह पस यह लोग शिर्कते जिहाद न कर सकें तो इन पर शरअ़ न कोई मुवाख़िज़ा गुनाह या आर नहीं, लेकिन इन्हें अपने दिल में सलाहियत और ख़ुलूस रखना चाहिए। मुसलमानों के दीने इलाही के ख़ैरख़्वाह बने रहें औरों को जिहाद पर आमादा करें, बैठे बैठे जो ख़िदमत मुजाहिदीन की अंजाम दे सकते हों, देते रहें, ऐसे नेक लोगों पर कोई वजहे इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। हवारियों ने अल्लाह के नबी हज़रत ईसा (عليه السلام) से पूछा कि हमें बतलाइए, अल्लाह का ख़ैरख़्वाह कौन है? आप (عليه السلام) ने फ़र्माया, ''जो अल्लाह तआला के हक़ को लोगों के हक़ पर मुक़द्दम करे और जब एक काम दीन का और एक दुनिया का आ जाए तो दीनी काम की अहमियत का पूरा लिहाज़ रखे, फिर फ़ारिग़ होकर दुनियावी काम को अंजाम दे।'' एक मर्तबा क़हतसाली के मौक़े पर लोग नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिए मैदान में निकले, उनमें हज़रत बिलाल बिन सअद (रह.) भी थे, आपने खड़े होकर अल्लाह तआला की हम्दो सना की, फिर फ़र्माया, ऐ हाज़िरीन! क्या तुम यह मानते हो कि तुम सब अल्लाह के गुनहगार बन्दे हो। सबने पूरा इक़रार किया। अब आपने दुआ शुरू की कि परवरदिगार! हमने तेरे कलाम में सुना है कि नेककारों पर कोई राह नहीं, हम अपनी बुराइयों के इक़रारी हैं पस तू हमें माफ़ कर, हम पर रहम कर, हम पर अपनी रहमत से बारिशें बरसा। अब आपने हाथ उठाए और आप (रह.) के साथ ही और सबने। रहमते रब्बानी जोश में आई और उसी वक़्त झूम झूमकर रहमत के बादल बरसने लगीं। (इब्ने अबी हातिम : 6/186) हज़रत ज़ेद बिन साबित (रज़ि.) का बयान है कि मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का कातिब था, सूरह बरा'त जब उतर रही थी मैं उसे भी लिख रहा था, मेरे कान में क़लम अटका हुआ था, जिहाद की आयतें उतर रही थीं, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इंतिज़ार में थे कि देखें! अब क्या हुक्म नाज़िल होता है जो एक नाबीना सहाबी आए और कहने लगे, हुज़ूर (ﷺ)! मैं जिहाद के अहकाम इस अंधेपन की वजह से कैसे अमल में लाऊँ। उसी वक़्त यह आयत

उतरी। फिर उनका बयान होता है जो जिहाद की शिर्कत के लिए तड़पते हैं मगर क़ुदरती अस्बाब से मजबूर होकर बादिले नाख़्वास्ता रुक जाते हैं। जिहाद का हुक्म हुआ, रसूलुल्लाह (ﷺ) का ऐलान हुआ, मुजाहिदीन का लश्कर जमा होना शुरु हुआ तो एक जमाअत आई जिनमें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल बिन मुक़्रिन मुज़्नी (रज़ि.) वग़ैरह थे। उन्होंने कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ)! हमारे पास सवारियाँ नहीं, आप हमारी सवारियों का इंतिज़ाम कर दें ताकि हम भी अल्लाह की राह में जिहाद करने का और आप (ﷺ) की हमरकाबी का शर्फ़ ह़ासिल करें। आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि "वल्लाह! मेरे पास तो एक भी सवारी नहीं।" यह नाउम्मीद, गमज़दा और रंजीदा होकर लौटे, इन पर इससे ज़्यादा भारी बोझ कोई न था कि यह उस वक़्त हमरकाबी की और जिहाद की सआ़दत से मह़रूम रह गए और औरतों की त़रह़ उन्हें यह मुद्दत घरों में गुज़ारनी पड़ेगी, न उनके पास ख़ुद ही कुछ है, न कहीं से कुछ मिलता है। पस जनाब बारी तआ़ला ने यह आयत नाज़िल करके उनको तसल्ली दे दी। (त़बरी : 14/420; इसकी सनद में अ़तिया औ़फ़ी ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216)

यह आयत क़बीला मुज़ैना की शाख़ बनी मुक्रिन के बारे में उतरी है। मुह़म्मद बिन कअ़ब (रह़.) का बयान है कि यह सात आदमी थे, बनी अ़म्र के सालिम बिन औ़फ़, बनी वाक़िफ़ के हुर्मी बिन अ़म्र, बनी माज़िन के अ़ब्दुर्रह़मान बिन कअ़ब, बनू मुअ़ल्ला के फ़ज़्लुल्लाह, बनी सुलमी के अ़म्र बिन उ़त्बा, और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र मुज़्नी, और बनू ह़ारिसा के अ़लिया बिन ज़ेद। कुछ रिवायतों में कुछ नामों में हेर फेर भी है। उन्हीं नेक निय्यत बुज़ुर्गों के बारे में अल्लाह तआ़ला के रसूल (ﷺ) का फ़र्मान है कि "ऐ मेरे मुजाहिद साथियों! तुमने मदीने में जो लोग अपने पीछे छोड़े हैं उनमें वह भी हैं कि तुम जो ख़र्च करते हो जिस मैदान में चलते हो जो जिहाद करते हो, सबमें वह भी सवाब के शरीक हैं।" फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। (यह रिवायत मुर्सल है इसकी अस़ल ज़िक्र यहूदी है।) और रिवायत में है कि यह सुनकर स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने कहा, वह बावजूद अपने घरों में रहने के सवाब में हमारे शरीक हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! इसलिए कि वह माज़ूर हैं उ़ज़्र के बाइ़स रुके हैं।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब 82; ह़दीस : 4423; अबूदाऊद : 2508; इब्ने माजा : 2724; अह़मद : 3/103; इब्ने अबी शैबा : 18856) और रिवायत में है कि "उन्हें बीमारियों ने रोक लिया है।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब सवाबु मन ह़बसहू अनिल ग़ज़्वति मर्ज़ुन औ उ़ज़्रून आख़र : 1911; इब्ने माजा : 2765; अह़मद : 3/300; दलाइलुन नबुव्वा : 5/267) फिर उन लोगों का बयान फ़र्माया जिन्हें फ़िल वाक़ेअ़ कोई उ़ज़्र नहीं, मालदार हट्टे कट्टे हैं लेकिन फिर भी ह़ुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में आकर बहाने बना बनाकर जिहाद में साथ नहीं देते, औरतों की त़रह़ घर में बैठ जाते हैं, ज़मीन पकड़ लेते हैं। फ़र्माया उनके बुरे आ़मालों की वजह से उनके दिलों पर मुहरे इलाही लग चुकी है, अब वह अपने भले बुरे के इ़ल्म से भी कोरे हो गए हैं।

अल्ह़म्दु लिल्लाह तफ़्सीर इब्ने कसीर का दसवाँ पारा मुकम्मल हुआ

***

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ
مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا
عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾
يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

तर्जुमा : ''यह लोग तुम्हारे सामने उ़ज़्र पेश करेंगे, जब तुम इनके पास वापिस जाओगे। आप कह दीजिए कि यह उ़ज़्र पेश मत करो हम कभी तुमको सच्चा न समझेंगे, अल्लाह तआ़ला हमको तुम्हारी ख़बर दे चुका है और आइन्दा भी अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) तुम्हारी कारगुज़ारी देख लेंगे, फिर ऐसे के पास लौटाये जाओगे जो पोशीदा और ज़ाहिर सबका जानने वाला है, फिर वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम करते थे। (94) हाँ वह अब तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खा जाएँगे जब तुम उनके पास वापिस जाओगे ताकि तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो, तो तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो। वह लोग बिलकुल गंदे हैं ओर उनका ठिकाना दोज़ख़ है। उन कामों के बदले जो कुछ वह किया करते थे। (95) यह इसलिए क़समें खाएँगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, तो अगर तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अल्लाह तआ़ला तो ऐसे शरीर (बदमाश) लोगों से राज़ी नहीं होता।''(96)

बहाना बनाकर जिहाद से पीछे रहने वालों को तम्बीह (आयत 94-96) : अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन के बारे में यह मालूम करा दिया है कि जब तुम मदीना वापिस होगे तो तुम्हारे सामने अपने बहाने पेश करेंगे। लेकिन तुम इनसे कह दो कि झूठे बहाने पेश करने की कोई ज़रूरत नहीं, हम तुम्हारी बात को कभी सच न मानेंगे, अल्लाह पाक ने हमें तुम्हारी मक्कारियाँ मालूम करा दिए हैं। अन्क़रीब अल्लाह पाक तुम्हारे आमाल दुनिया में लोगों के सामने ज़ाहिर कर देगा और तुम्हें तुम्हारे अच्छे बुरे सारे आमाल की ख़बर दे देगा और फिर अपने आमाल का नतीजा भी देखना पड़ेगा। फिर उनके बारे में मज़ीद ख़बर दी गई कि वह क़समें खा खाकर बयान करेंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र कर जाओ और चश्मपोशी कर लो। यह उस वक़्त होगा जब तुम मदीना वापिस हो जाओगे लेकिन तुम हर्गिज़ उनकी तस्दीक़ न करना और उनसे इज़्हारे हिक़ारत के लिए ऐराज़ कर जाओ। उनमें नफ़्स की गंदगी है, उनके बातिन और उनके ऐतिक़ादात नापाक हैं। आख़िरत में उनका ठिकाना दोज़ख है और यह उनके आमाल का यानी ख़ताकारियों का सही बदला है। और यह भी बतला दिया

गया कि अगर तुम इनसे इनकी क़समें खाने की वजह से राज़ी भी हो जाओ तो अल्लाह तआला तो इन लोगों से राज़ी न होगा, जो अल्लाह की इताअत और रसूलों की फ़र्मांबरदारी से बाहर हो गए हैं। वह लोग फ़ासिक़ हैं और फ़िस्क़ के लग्वी मअनी बाहर निकलने के हैं। कहते हैं कि (अल्फ़ारतु फुवैसिक़तु) यानी चूहा ख़राबियाँ और फ़साद पैदा करने के लिए ही अपने बिल से निकलता है। और यह भी कहा जाता है कि (फ़सक़तिर्रत्बत) यानी डालियों से खजूर के ख़ोशे निकल आए।

***

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا
قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

तर्जुमा : "देहाती लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त हैं और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको उन अह्काम का इल्म न हो जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) पर नाज़िल किए हैं और अल्लाह तआला बड़ा इल्म वाला बड़ी हिक्मत वाला है। (97) और इन देहातियों में से कुछ कुछ ऐसा है कि जो कुछ ख़र्च करता है उसको जुर्माना समझता है और तुम मुसलमानों के वास्ते गर्दिश (बुरे हालात) का मुंतज़िर रहता है, बुरा वक़्त उन ही पर पड़ने वाला है। और अल्लाह तआला सुनता है, जानता है। (98) और कुछ अहले देहात में ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के क़रीब होने का ज़रिया और रसूल (ﷺ) की दुआ का ज़रिया बनाते हैं, याद रखो कि उनका यह ख़र्च करना बेशक उनके लिए मौजिबे कुर्बत है ज़रूर उनको अल्लाह तआला अपनी रहमत में दाख़िल कर लेगा। अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है।" (99)

आराब (गँवार) लोगों की पहचान (आयत 97-99) : अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि आराब में कुफ़्फ़ार भी होते हैं और मोमिनीन भी। और उनका कुफ़्र और उनका निफ़ाक़ दूसरों की बनिस्बत बहुत अज़ीम और शदीद होता है और वह इसी बात के सज़ावार हैं कि अल्लाह पाक ने अपने रसूल पर जो हुदूद व अह्काम नाज़िल किए हैं, उनसे बेख़बर रहें, जैसे कि आमश ने इब्राहीम (रह.) से रिवायत की है कि एक आराबी बदवी

ज़ेद बिन सूहान के पास बैठा हुआ था और वह अपने साथियों से बातें कर रहे थे और जंगे नहावन्द में उनका हाथ कट गया था। आराबी उनसे कहने लगा कि, तुम्हारी बातें तो बड़ी प्यारी हैं और तुम बड़े अच्छे आदमी मालूम होते हो लेकिन यह तुम्हारा कटा हुआ हाथ मुझे तुम्हारे बारे में शक पैदा करता है तो ज़ेद ने कहा कि मेरे कटे हुए हाथ से तुम्हें शक क्यूँ होता है, यह तो बायाँ हाथ है तो आराबी ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि चोरी में बायाँ हाथ काटते हैं कि दाहिना हाथ। तो ज़ेद बिन सूहान बोल उठे कि अल्लाह तआला ने सच फ़र्माया था कि (अल्आराबु अशद्दु कुफ़्रंव्वनिफ़ाक़ंव्व अह़दरु अल्ला यालमू हुदूद मा अन्ज़लल्लाहु अला रसूलिही) यानी यह कुफ़्फ़ार आराब इसी के सज़ावार हैं कि हुदूदुल्लाह से नावाक़िफ़ रहें।

इमाम अह़मद (रह़.) ने बिलइस्नाद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "जो सह़रा नशीन हुआ वह गोया जला वत़न है और जो शिकार के पीछे दौड़ा दौड़ा फिरता है, बड़ा ही बेसमझ है और जिसने किसी बादशाह की हमनशीनी इख़्तियार की, वह फ़ित्ना से दो चार हो गया।" (अबूदाऊद, किताबुस्सैद, बाब इत्तिबाउस्सैदि : 2859; व सनदुहू ह़सन; तिर्मिज़ी 2256; नसाई : 3414; अह़मद : 1/357) तिर्मिज़ी (रह़.) ने इसे ह़सन ग़रीब बताया है। सौरी (रह़.) से रिवायत के सिवा और किसी से रिवायत का हमें इल्म नहीं। बदवियों में चूँकि बदमिज़ाजी उजड़पन और बदतमीज़ी होती है इसलिए अल्लाह ने उनमें से अपना रसूल नहीं पैदा किया। बिअसते नबुव्वत हमेशा शहरी और मुहज़्ज़ब लोगों में हुआ करती है। जैसाकि अल्लाह पाक ने फ़र्माया है कि (وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْٓ اِلَیْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰی) (12/यूसुफ़ : 109) यानी हमने तुमसे पहले भी जितने रसूलों को इंसानों की तरफ़ भेजा वह सब शहरी और मुतमद्दिन (गुड कल्चर वाले) थे।

एक मर्तबा एक आराबी ने अपना हदिया रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ भेजा तो उस वक़्त तक उसका दिल ख़ुश न हुआ जब तक कि उससे कई गुना ज़्यादा आप (ﷺ) ने उसके पास न भेज दिया। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अब मैंने इरादा कर लिया है कि कुरैशी, सक़फ़ी, अंसारी और दौसी के सिवा और किसी का हदिया क़बूल न करूँगा। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी सक़ीफ़ व बनी ह़नीफ़ा : 3945; व सनदुहू ह़सन : 1346; मुत्तफ़क़ अलैहि; अबूदाऊद : 3537; वहुव सह़ीहुन; नसाई : 3790; मुख़्तसरन; इब्ने ह़िब्बान : 6384; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/148) क्यों कि यह लोग मुतमद्दिन शहरी हैं मक्का ताइफ़, मदीना और यमन में रहते हैं। अख़्लाक़ में यह बदवियों से बहुत अच्छे होते हैं। क्योंकि आराबी उज्जड़ बहुत होते हैं।"

आप (ﷺ) का बच्चों से प्यार : ह़दीसे मुस्लिम बिल इस्नाद ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी हे कि चंद बदवी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ह़ाज़िर हुए और कहने लगे कि क्या तुम अपने बच्चों को चूमते हो? तो सह़ाबा (रज़ि.) ने कहा, हाँ! तो उन्होंने कहा, लेकिन अल्लाह की क़सम! हम नहीं चूमते। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से मुह़ब्बत और रह़मत को निकाल दिया है तो क्या मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रह़मतुल वलद व तक़्बीलिही व मुआनिक़तिहू : 5998; सह़ीह़ मुस्लिम : 2317; अह़मद : 6/56) और अल्लाह ख़ूब जानता है उन लोगों को जो इस बात

के मुस्तहिक़ हैं कि उन्हें इल्म और ईमान की तौफ़ीक़ दी जाए और अपने बन्दों में इल्म, जहल, ईमान, कुफ़्र और निफ़ाक़ की तक़्सीम बड़ी अक़्लमंदी से की है। वह अपनी हिक्मत और इल्म की बिना पर जो कुछ करता है कौन उस पर नुक्ताचीनी कर सकता है। अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि उन्हीं में से ऐसे रज़ील और कम ज़र्फ़ भी हैं कि अल्लाह की राह में अगर वह कुछ ख़र्च करते हैं तो उसको तावान और घाटा समझ बैठते हैं और तुम पर हवादिस व आफ़ात का इंतिज़ार करते रहते हैं।

लेकिन यह हवादिस उन्हीं पर मुन्अकिस होंगे और घूम फिरकर उन्हीं पर नाज़िल होंगे। अल्लाह अपने बन्दों की पुकार को सुनने वाला है और उस बात को जानता है कि शर्मसारी व नामुरादी का हक़दार कौन है और मदद व कामयाबी का पाने वाला कौन है।

और देहातियों की एक और क़िस्मे मम्दूह (तारीफ़ के लायक) है यह वह लोग हैं जो अल्लाह की राह में अगर कुछ ख़र्च करते हैं तो उसको अल्लाह के पास कुर्बत व पसंदीदगी का एक ज़रिया समझते हैं और चाहते हैं कि उसके सबब अपने लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) की दुआए ख़ैर हासिल हो। हाँ! यक़ीनन यह ख़र्च करना इनके लिए कुर्बते इलाही का सबब होगा और अल्लाह पाक उनको अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है।

***

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

तर्जुमा : "और जो मुहाजिरीन और अंसार साबिक़ और मुक़द्दम (पहल करने वाले) हैं और जितने लोग इख़लास के साथ उनके पैरू हैं अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ और वह सब उससे राज़ी हुए और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ मुहय्या कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जिनमें हमेशा हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामयाबी है।" (100)

मुहाजिरीन व अंसार और उनके पैरूकार (आयत 100) : अल्लाह तआला ख़बर दे रहा है कि मैं इन मुहाजिरीन और अंसार और ताबेईन से राज़ी हूँ जिन्होंने मेरी रज़ामंदी और ख़ुशनुदी हासिल करने में सब्क़त की है और मेरी ख़ुशनुदी इस तरह साबित है कि मैंने इनके लिए जन्नाते नईम तैयार कर रखे हैं। शअबी (रह.) कहते हैं कि मुहाजिरीन व अंसार में से साबिक़ीन और अव्वलीन वह हैं जिन्होंने जंगे हुदेबिया में बेअते रिज़वान का शर्फ़ हासिल किया है और हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) और सईद बिन मुसय्यिब और मुहम्मद बिन

सीरीन और ह़सन और क़तादा (रहि.) ने कहा, यह वह लोग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ क़िब्लतैन की त़रफ़ नमाज़ पढ़ी।

मुह़म्मद बिन कअ़ब क़ुरज़ी (रह़.) कहते हैं कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) एक आदमी के पास से गुज़रे और वह यह आयत पढ़ रहे थे (वस्साबिक़ूनल अव्वलूना मिनल मुहाजिरीना वल अंसार) तो उ़मर (रज़ि.) ने उसका हाथ थाम लिया और पूछा कि किसने तुम्हें यह पढ़ाया है? तो कहने लगा कि उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने! तो कहने लगे, अच्छा! चलो मैं तुम्हें उबय (रज़ि.) के पास ले चलता हूँ ताकि पूछ लूँ। और जब ह़ज़रत उबय (रज़ि.) के पास पहुँचे तो पूछा, क्या तुमने इस आयत को इस त़रह़ पढ़ना बताया है? तो उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कहा, हाँ! तो पूछा, क्या तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसी त़रह़ सुना है? कहा, हाँ! तो उ़मर (रज़ि.) कहने लगे कि मैं देख रहा हूँ कि हमने वह आ़ला व अरफ़अ़ दर्जा पा लिया है कि हमारे बाद कोई दूसरा यह मंज़िलत ह़ासिल नहीं कर सकता। तो उबय (रज़ि .) कहने लगे, इस आयत की तस्दीक़ सूरह जुम्अ़ा के अव्वल में भी है यानी (وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ) (62/जुम्अ़ा : 3) और सूरह ह़श्र में भी है (وَالَّذِيْنَ جَاءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ) (59/ह़श्र : 10) आख़िर तक और सूरह अन्फ़ाल में भी है (وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا مَعَكُمْ) (8/अन्फ़ाल : 75) इब्ने जरीर (रह़.) ने इसकी रिवायत की है और कहा कि ह़सन बस़री (रह़.) (वल अंस़ार) के लफ़्ज़ को पेश से पढ़ते थे और (वस्साबिक़ूनल अव्वलून) पर अ़त़्फ़ क़रार देते थे। गोया इ़बारत यूँ हुई कि मुहाजिरीन में से साबिक़ीने अव्वलीन और अंस़ार और उनके ताबेईन से अल्लाह राज़ी है, अफ़सोस! क्या कमबख़्ती है उन लोगों की जो उन स़ह़ाबा (रज़ि.) से बुग़्ज़ रखते हैं, उन्हें गालियाँ देते हैं या कुछ स़ह़ाबा को सब्बो शतम (गाली गलूच) करते हैं, ख़ुसूसन वह स़ह़ाबी जो तमाम स़ह़ाबा के सरदार हैं, पैग़म्बर (ﷺ) का जानशीन है, रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद उसी का दर्जा है जिसको अफ़ज़ल स़ह़ाबा का दर्जा ह़ासिल है, यानी ह़ज़रत सि़द्दीक़े अकबर और ख़लीफ़एआज़म अबूबक्र बिन अबी क़ह़ाफ़ा (रज़ि.)। यह राफ़ज़ियों का नामुराद फ़िर्क़ा अफ़ज़ल स़ह़ाबा से दुश्मनी रखता है, उन्हें गाली गलूच करता है। ऐसी ह़रकत से अल्लाह की पनाह। यह चीज़ इस बात पर दलालत करती है कि इनकी अ़क़्लें औंधी हो गई हैं, इनके दिल उलट गए हैं। अगर वह कमबख़्त उन लोगों को गालियाँ दें जिनसे कि अल्लाह राज़ी हो चुका है और क़ुरआन में अपनी रज़ामंदी की उन्हें सनद दे दी तो फिर किस मुँह से वह क़ुरआन पर ईमान लाने का दावा करते हैं, अब क़ुरआन पर ईमान ही कहाँ रहा। अहले सुन्नत उन लोगों की क़द्र करते हैं और उनसे राज़ी हैं जिनसे कि अल्लाह राज़ी हो चुका है और यह अहले सुन्नत बुरा भला कहते हैं तो उनको जिन्हें ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने और रसूल (ﷺ) ने बुरा कहा है और उन लोगों को दोस्त रखते हैं जिनको अल्लाह तआ़ला दोस्त रखता है और उनके मुख़ालिफ़ हैं कि अल्लाह ख़ुद जिनका मुख़ालिफ़ है, यह इत्तिबाअ़े हिदायत करते हैं, बिदअ़ती नहीं हैं। नबी (ﷺ) की इक़्तिदा करते हैं और मज़हब व ऐतिक़ादात में नए नए शाख़साने नहीं निकालते। फ़लाह़ पाने वाले और मोमिन बन्दों की जमाअ़त यही है।

***

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۟ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝

तर्जुमा : "और कुछ तुम्हारे गर्दो पेश वालों में और कुछ मदीने वालों में ऐसे मुनाफ़िक़ हैं कि निफ़ाक़ की हद्दे कमाल को पहुँचे हुए हैं, आप उनको नहीं जानते। उनको हम जानते हैं हम उनको दोहरी सज़ा देंगे फिर वह बड़े भारी अज़ाब की तरफ़ भेजे जाएँगे।" (101)

मुनाफ़िक़ीन की निशानदेही (आयत 101) : अल्लाह पाक अपने रसूल (ﷺ) को ख़बर दे रहा है कि अरब के क़बीलों में जो मदीना के अत्राफ़ (आज़ू-बाज़ू) में रहते हैं कुछ मुनाफ़िक़ हैं और ख़ुद मदीना के रहने वाले कुछ मुसलमान भी दरहक़ीक़त मुनाफ़िक़ हैं कि अपने निफ़ाक़ को लिए चल रहे हैं और मुनाफ़िक़त से बाज़ नहीं आते। चुनाँचे कहा जाता है शैतान मुरीद या मारिद। और तमर्रुद फ़ुलानु अलल्लाहि यानी फ़लाँ ने अल्लाह की नाफ़र्मानी और सरकशी की। अल्लाह का क़ौल (ला तअलमुहुम नह्नु नअलमुहुम) अल्लाह के इस क़ौल (وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۗ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ) (47/मुहम्मद : 30) के मनाफ़ी और मुतज़ाद (अपोजिट) नहीं है यानी तुम उन्हें नहीं पहचानते, हम उन्हें ख़ूब जानते हैं और यह क़ौल कि अगर हम चाहें तो हम तुम्हें बतला देंगे कि वह कैसे हैं तो फिर तुम उन्हें जान जाओगे उनकी सूरत देखते ही और उन्हें पहचान लोगे उनकी दिल फ़रेब बातों ही से। यह दोनों आयतें आपस में ज़िद (अपोजिट) नहीं, इसलिए कि यह उस क़िस्म की चीज़ है कि उसके ज़रिये उनकी सिफ़ात की निशानदेही की गई है ताकि वह पहचान लिए जा सकें, यह बात नहीं कि तुम तमाम ही मुनाफ़िक़ीन को अलल यक़ीन जानते हो। आप अहले मदीना में से सिर्फ़ उन कुछ अहले निफ़ाक़ को जानते थे जो रात दिन मिलते जुलते रहते थे और जिन्हें आप सुबह व शाम देखते थे, सही तौर पर इसकी तस्दीक़ इस रिवायत से भी होती है जो इमाम अहमद (रह.) ने बिल इस्नाद जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) से रिवायत की है कि जुबैर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह लोग गुमान करते हैं कि मक्का में हमें कोई अज्र नहीं मिला। तो आपने फ़र्माया कि "ऐ जुबेर (रज़ि.)! तुम लोगों का अज्र तुमको ज़रूर दिया जाएगा, ख़्वाह तुम मक्का नहीं लोमड़ी के भट (खोह) ही में क्यूँ न हो।" फिर आपने मेरी तरफ़ सर झुकाकर राज़दाराना तौर पर फ़र्माया कि "मेरे अस्हाब में कुछ मुनाफ़िक़ भी हैं।" (अहमद 4/83; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद अबी यअला : 7405; हैसमी (रह.) कहते हैं कि इसमें एक रावी है जिसका नाम नहीं लिया गया है। (मज्मउज़्ज़वाइद : 5/255) मतलब यह है कि कुछ मुनाफ़िक़ीन ऐसी कजमज बातें करते रहते हैं जिनमें कोई सच्चाई नहीं होती, चुनाँचे यह भी एक उसी क़िस्म का कलाम था जिसको जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने सुना था। (وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا) (9/तौबा : 74) की तफ़्सीर में यह बात बयान की जा चुकी है कि नबी (ﷺ) ने हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को यह बात मालूम करा दी थी कि चौदह या पन्द्रह शख़्स ऐसे हैं जो दरहक़ीक़त मुनाफ़िक़ हैं और यह तख़्सीस इस बात की मुतक़ाज़ी नहीं कि

आप उन तमाम के नाम जानते थे और उनके तशख़्ख़ुस (पहचान) व ऐनियत से वाक़िफ़ थे, वल्लाहु आलम!

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) ने तर्जुमा अबू उमर बैरूती में बिल इस्नाद रिवायत करते हुए कहा है कि एक आदमी जिसका नाम हर्मला था, नबी (ﷺ) के पास आया और कहा कि ईमान तो यहाँ है और इशारा किया अपनी ज़ुबान की तरफ़ और निफ़ाक़ यहाँ होता है और इशारा किया अपने दिल की तरफ़ और अल्लाह का नाम भी लिया तो कुछ यूँ ही सा। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "ऐ अल्लाह! तू इसकी ज़ुबान को ज़ाकिर बना दे और दिल शाकिर बना दे और इसको मेरी मुहब्बत अता कर और मुझसे मुहब्बत करने वालों की मुहब्बत अता फ़र्मा और इसके सारे उमूर ख़ैर की तरफ़ फेर दे।" अब उसकी सारी मुनाफ़िक़त दूर हो गई और कहने लगा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे अक्सर साथी मुनाफ़िक़ीन हैं और मैं उन सबका सरदार था, क्या उन सबको मैं आपके पास पकड़कर न लाऊँ? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "जो आप ही मेरे पास आ जाएगा तो हम उसके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहेंगे और जो निफ़ाक़ पर इसरार किए रहेगा, अल्लाह उसको देख लेगा। तुम किसी का राज़ फ़ाश न करो।" (इसकी सनद में अबू उमर मज्हूल रावी है।) ऐसी ही रिवायत अबू अहमद अल हाकिम ने भी की है। इस आयत के बारे में क़तादा (रह.) ने कहा है कि उन लोगों को क्या हो गया जो बेतकल्लुफ़ लोगों के बारे में अपना यह इल्म व यक़ीन ज़ाहिर करते रहते हैं कि फ़लाँ जन्नती है, फ़लाँ दोज़ख़ी है और अगर ख़ुद उनसे पूछा जाए कि तुम बताओ कौन हो, जन्नती कि दोज़ख़ी? तो कहते हैं कि मैं नहीं जानता। हालाँकि आदमी अपनी निस्बत तो ज़्यादा बेहतर तरीक़े से जान सकता है जो दूसरों के बारे में जानता है कि दोज़ख़ी है या जन्नती। वह तो ऐसी बात का दावा कर बैठते हैं जिसका दावा तो अम्बिया ने भी नहीं किया।

अल्लाह के नबी नूह (عليه السلام) ने कहा था कि (وَ مَا عِلْمِیْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ) (26/शुअरा : 112) यानी मैं नहीं जानता कि वह क्या करते हैं। और अल्लाह के नबी शुऐब (عليه السلام) ने फ़र्माया था (بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَ مَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ) (11/हूद : 86) अल्लाह तआला के पास तुम्हारे लिए ख़ैर है अगर तुम मोमिनीन हो, और मैं तुम पर कोई निगरानकार ज़िम्मेदार तो नहीं। और अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिए फ़र्माया (لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ) यानी तुम उनको नहीं जानते, जिन्हें हम जानते हैं।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत के बारे में मरवी है कि नबी (ﷺ) एक दिन जुम्आ का ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए और फ़र्माया कि, "ऐ फ़लाँ-फ़लाँ लोगों! तुम मस्जिद से निकल जाओ कि तुम मुनाफ़िक़ हो।" चुनाँचे बड़ी रुस्वाई के साथ वह मस्जिद से निकाले गए। वह मस्जिद से निकल रहे थे और उमर (रज़ि.) मस्जिद की तरफ़ आ रहे थे। तो उमर (रज़ि.) यह समझकर कि लोग पलट रहे तो शायद नमाज़े जुम्आ हो चुकी है, शरमा गए और शर्म के मारे उन लोगों से अपने को छुपाने लगे और यह लोग भी अपने को उमर (रज़ि.) से छुपाने लगे, यह समझकर कि उमर (रज़ि.) को भी हमारे इस निफ़ाक़ का इल्म हो गया होगा, ग़र्ज़ जब उमर (रज़ि.) मस्जिद में आए तो मालूम हुआ कि अभी नमाज़ नहीं हुई और एक मुसलमान ने उन्हें ख़बर दी और कहा कि ऐ उमर (रज़ि.)! ख़ुश हो जाओ कि आज मुनाफ़िक़ीन को अल्लाह ने रुस्वा कर दिया है। इब्ने

अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि यह मस्जिद से निकाला जाना पहला अज़ाब है और अज़ाबे सानी अज़ाबे क़ब्र होगा। (अल्मुअजमुल औसत : 796; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में हुसैन बिन अम्र सख़्त मजरूह रावी है, देखिए (अल जरह वत्तअदील : 3/61; रक़म : 278)

सौरी (रह.) ने भी बिल इस्नाद यही कहा है, मुजाहिद (रह.) ने क़ौलुहू तआला (सनुअज़्ज़िबुहुम मर्रतैन) के बारे में कहा है कि इससे मुराद क़तल और क़ैद है और एक दूसरी रिवायत में भूख और अज़ाबे क़ब्र से तअबीर की गई है। फिर वह अज़ाबे अज़ीम की तरफ़ रोके जाएँगे। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि अज़ाबे दुनिया और अज़ाबे क़ब्र मुराद है फिर वह अज़ाबे अज़ीम यानी अज़ाबे जहन्नम में मुब्तला किए जाएँगे। हसन बसरी (रह.) ने कहा है, दुनिया का और क़ब्र का अज़ाब मुराद है। अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद (रह.) कहते हैं कि दुनिया का अज़ाब अम्वाल और औलाद के फ़ित्ने का अज़ाब है फिर अल्लाह तआला का यह क़ौल पढ़कर सुनाया (فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا) (9/तौबा : 55) यानी इन काफ़िरों के माल और औलाद तुमको हसद में मुब्तला न कर दें, अल्लाह की मर्ज़ी तो यह है कि इन चीज़ों के ज़रिये दुनिया की ज़िन्दगी ही में अल्लाह इन्हें अज़ाब में मुब्तला कर दे क्योंकि यह मसाइब उनके लिए अज़ाब हैं लेकिन मोमिनीन के लिए बाइसे अज्र हैं और आख़िरत के अज़ाब से मुराद दोज़ख़ का अज़ाब है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने कहा कि पहले अज़ाब से तो मुराद वह अज़ाब है जो इस्लाम के फैल जाने से उन्हें पहुँचा है और बेइंतिहा रंजो अफ़सोस जो उन पर तारी हुआ है। दूसरा अज़ाब क़ब्र का अज़ाब है और अज़ाबे अज़ीम वो है जो आख़िरत में उन्हें मिलेगा और हमेशा हमेशा का मिलेगा।

सईद बिन क़तादा (रह.) से रिवायत करते हुए कहते हैं कि नबी (ﷺ) ने हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के कान में कहा कि "बारह मुनाफ़िक़ीन हैं उनमें से छः को दबीला काफ़ी है, यह नारे जहन्नम का एक शोला है जो उनके काँधे पर लगेगा तो सीने तक जा पहुँचेगा यानी पेट के दर्द अंदरूनी बीमारियों और दुम्बलों से मरेंगे और बाक़ी छः अपनी मौत से मर जाएँगे।" (यह रिवायत मुर्सल है लेकिन यही रिवायत मुत्तसलन सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़ातुल मुनाफ़ीन व अहकामुहुम : 2779 में मौजूद है लिहाज़ा सहीह है।)

सईद (रह.) ने हमसे बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) जब कोई मरता और वह उनकी नज़र में मुश्तबा होता तो हुज़ेफ़ा (रज़ि.) की तरफ़ देखते। अगर वह उस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते तो ख़ुद भी पढ़ते यह यक़ीन करके कि यह मय्यित उन बारह मुनाफ़िक़ीन में से नहीं है और हुज़ैफ़ा (रज़ि.) अगर न पढ़ते तो फिर ख़ुद भी न पढ़ते। मालूम हुआ कि उमर (रज़ि.) ने हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से यह भी पूछा था कि अल्लाह की क़सम! बता दो कि मैं उन बारह में से तो नहीं हूँ तो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि, तुम नहीं हो, लेकिन तुम्हारे सिवा मैं किसी और की ज़िम्मेदारी नहीं लेता।

***

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰۲﴾

तर्जुमा : "और कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता के इक़रार करने वाले हो गए जिन्होंने मिले जुले अमल किए थे कुछ अच्छे और कुछ बुरे अल्लाह से उम्मीद है कि उन पर तवज्जा फ़र्माएँ बिला शुबा अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रह़मत करने वाला है।" (102)

तसाहुल और सुस्ती से बचना चाहिए (आयत 102) : जब अल्लाह तआला उन मुनाफ़िक़ीन का ह़ाल बयान कर चुका जो मुसलमानों के साथ जिहाद में शरीक होने से रुक गए थे और शिर्कते जंग से बेरग़बती, तक्ज़ीब और शक का मुज़ाहिरा करते थे तो फिर उन गुनहगारों का ज़िक्र शुरू करता है जो जिहाद में शरीक होने से बाज़ रहे थे, सिर्फ़ सुस्ती और आरामतलबी के सबब ह़ालाँकि उन्हें तस्दीक़े ह़क़ और ईमान ह़ासिल था। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उन मुनाफ़िक़ीन के सिवा और दूसरे लोग जो जिहाद से रुक रहे, उन्होंने अपने क़ुसूर का ऐतिराफ़ व इक़रार कर लिया। लेकिन यह ऐसे लोग हैं कि उनके दूसरे आमाले सालेह़ा भी हैं, और उन आमाले सालेह़ा के साथ अपनी कुछ तक़्सीरात (कमियाँ) जैसे जिहाद से बाज़ रहना भी उन्होंने शामिल कर दिया है लेकिन इनकी इस तक़्सीर (कमी) को अल्लाह पाक ने माफ़ कर दिया है। और उन मुनाफ़िक़ीन की तक़्सीर को वह माफ़ नहीं करेगा, और उनके कोई आमाले सालेह़ा हैं भी नहीं। यह आयत अगरचे चंद ख़ास अश्ख़ास के बारे में नाजिल हुई है लेकिन सारे मुख़्लिस ख़ताकारों और गुनहगारों पर भी आम है। और मुजाहिद (रह़.) का क़ौल है कि यह अबू लुबाबा (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है जबकि उन्होंने बनू क़ुरैज़ा से कहा था कि यह ज़िब्ह़ की जगह है और हाथ से अपने ह़लक़ की त़रफ़ इशारा किया था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि (आख़रून) से मुराद अबू लुबाबा (रज़ि.) और उनके अस्ह़ाब की जमाअत है जो ग़ज़्वा तबूक में शिर्कते जिहाद से पहलू तही किए हुए थे। कुछ ने कहा कि अबू लुबाबा (रज़ि.) के साथ पाँच आदमी और थे, या सात थे, या नौ थे, और जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्वा तबूक से वापिस हुए तो उन लोगों ने अपने को मस्जिद के सतूनों से बाँध लिया और क़सम खा ली थी कि जब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुद हमको न खोलेंगे, तब तक हम यहीं बंधे रहेंगे। और जब आयत (व आख़रूनअ तरफ़ू बि ज़ुनूबिहिम) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें खोल दिया और उनका जंग से कोताही का क़ुसूर माफ़ कर दिया। बुख़ारी (रह़.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "आज की रात दो आदमी मेरे पास आए और मुझे एक ऐसे शहर तक ले आए जो चाँदी और सोने की ईंटों से बना हुआ था, वहाँ हमें कुछ ऐसे आदमी दिखाई दिए कि उनके जिस्म का आधा ह़िस्सा तो निहायत ही ख़ुश मंज़र था और दूसरा आधा ह़िस्सा निहायत ही बदसूरत कि देखने को जी न चाहे। मेरे उन साथियों ने उनसे कहा कि तुम इस नहर में ग़ौता लगाओ वह ग़ौता लगाकर जब बाहर निकले तो उनका यह ऐब जाता रहा और उनके जिस्म सबके सब ह़सीन दिखाई देते थे। मेरे साथियों ने मुझसे कहा कि यह जन्नते अद्न है और यही तुम्हारी मंज़िल है और कहा कि वह लोग जिनका

आधा जिस्म ख़ूबसूरत था और आधा जिस्म निहायत बदसूरत सा, तो उसकी वजह यह है कि उन्होंने आमाले नेक के साथ आमाले बद भी मिला रखे थे और अल्लाह की हदों से तजावुज़ कर गए थे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बरा'त, बाब क़ौलुहू (व आख़रूनअ तरफ़ू बि जुनूबिहिम) : 4674) इस आयत की तफ़्सीर में बुख़ारी (रह.) ने मुख़्तसरन इसी तरह रिवायत की है।

***

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾

तर्जुमा : ''आप उनके मालों में से सदक़ा ले लीजिए जिसके ज़रिये से आप उनको पाक साफ़ कर देंगे और उनके लिए दुआ कीजिए बिला शुब्हा आपकी दुआ उनके लिए मौजिबे इत्मिनान है और अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब जानते हैं। (103) क्या उनको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और वही सदक़ात को क़बूल करता है और यह कि अल्लाह ही तौबा क़बूल करने में और रहमत करने में कामिल है।'' (104)

सदक़ा माल की पाकी की वजह है (आयत 103, 104) : अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को हुक्म दिया है कि उनके माल से ज़कात वसूल कर लिया करो, यह माले ज़कात उनको पाक और मुज़क्का बनाएगा। अगरचे कुछ लोगों ने (अम्वालिहिम) की ज़मीर उन लोगों की तरफ़ फेरी है जिन्होंने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया था और अच्छे और बुरे दोनों क़िस्म के आमाल किए थे। लेकिन दरहक़ीक़त यह हुक्म ख़ास नहीं बल्कि आम है इसीलिए अरब के क़बीलों में से कुछ मानेईने ज़कात ने यह एतिक़ाद कर लिया था कि इमाम को ज़कात लेने का हक़ नहीं। और यह बात रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए ख़ास थी और इसीलिए क़ौलुहू तआला (ख़ुज़ मिन अम्वालिहिम सदक़तन) से उन्होंने दलील ली है। और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) और तमाम सहाबा (रज़ि) ने इनकी तावील और फ़हमे फ़ासिद की तर्दीद कर दी और उनसे जंग की तब कहीं, उन्होंने ख़लीफ़-ए-वक़्त को ज़कात अदा की जैसाकि वह नबी (ﷺ) को अदा किया करते थे। यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि ''अगर वह ऊँटनी का एक बच्चा या रस्सी का एक टुकड़ा भी माले ज़कात का रोक लेंगे जो नबी (ﷺ) को अदा करते थे तो ज़कात के रोकने पर मैं उनसे क़िताल करूँगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब वुजूबुज़्ज़कात : 1400; सहीह मुस्लिम : 20)

क़ौलुहू तआला (व सल्लि अलैहिम) यानी उनके लिए दुआ करो और तलबे मग़्फ़िरत करो, जैसाकि सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से मरवी है कि जब किसी के पास से ज़कात का माल

आता था तो नबी (ﷺ) हस्बे हुक्मे इलाही उसके लिए दुआ करते थे चुनाँचे जब मेरे बाप ने माले ज़कात पेश किया तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ अल्लाह! आले अबी औफ़ा पर रहम फ़र्मा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब सलातुल इमाम व दुआउहू लि साहिबिस्सदक़ति : 1497; सहीह मुस्लिम : 178; अबूदाऊद : 1590; अहमद : 4/353; मुस्नद तयालिसी : 819) एक दूसरी हदीस में है कि एक औरत ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे और मेरे ज़ौज (शौहर) के लिए दुआ कीजिए तो कहा कि "अल्लाह तेरे और तेरे ज़ौज पर रहमो करम करे।" (अबूदाऊद, किताबुस्सलात (अल्वित्र) बाब अस्सलातु अला ग़ैरिन्नबी (ﷺ) : 1533; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 3/198; दारमी : 1/34; इब्ने हिब्बान : 916; बैहक़ी : 2/153)

क़ौलुहू तआला (इन्ना सलातका सकनुल्लहुम) तुम्हारी दुआ उनके लिए दिल के सुकून की वजह है, कुछ ने सलात को जमा क़रार देकर सलवात पढ़ा है और दूसरों ने वाहिद क़रार देकर (इन्ना सलातक) पढ़ा है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा है कि सुकून के मअनी रहमत के हैं और क़तादा (रह.) ने कहा कि इसके मअनी हैं वक़ार (वल्लाहु समीउन) यानी ऐ नबी (ﷺ)! अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुनने वाला है और अलीम है कि कौन तुम्हारी दुआ का हक़दार है।

इमाम अहमद (रह.) कहते हैं कि वकीअ ने बिल इस्नाद रिवायत की है कि नबी (ﷺ) जब किसी के लिए दुआ करते थे तो वह उसके और उसके बेटों और पोतों के हक़ में क़बूल हो जाती थी। (अहमद : 5/385, 386; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/268) फिर अबू नुऐम से बिल इस्नाद मरवी है कि नबी (ﷺ) की दुआ किसी आदमी और उसके बेटों और पोतों के हक़ में ज़रूर क़बूल हो जाती थी और अल्लाह का क़ौल (अलम यअलमू अन्नल्लाह हुव यक़्बलुत्तौबत अन इबादिही व यअख़ुज़ुस्सदक़ाति) यानी क्या इन्हें उसका इल्म नहीं कि अल्लाह तआला बन्दों की नेकियों को लेता और तौबा को क़बूल करता है। इससे मक़्सद तौबा और सदक़ा पर लोगों को उभारना है क्योंकि यही दोनों चीज़ें गुनाहों को इंसान से छुड़ा देती हैं और मआसी को मलियामेट कर देती हैं और अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि जो उसके पास तौबा पेश करे वह बन्दे की तौबा क़बूल कर लेता है और जो हलाल कमाई का एक टुकड़ा भी सदक़ा करता है तो अल्लाह तआला उसको अपने सीधे हाथ से ले लेता है फिर वह सदक़ा देने वाले के लिए उस सदक़ा की परवरिश करता जाता है और उसको छोटे से बड़ा बनाता है यहाँ तक कि सदक़ा की वह एक खजूर उहुद पहाड़ के मानिन्द हो जाती है। जैसाकि इसी हदीस में रसूलुल्लाह (ﷺ) से मरवी है और जैसाकि वक़ीअ ने भी बिल इस्नाद अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला सदक़े को क़बूल करता है और उसको अपने सीधे हाथ में लेता है और उसकी नशोनुमा करता है जैसाकि तुम अपने घोड़े के बच्चे को पालकर बड़ा करता है यहाँ तक कि सदक़ा का एक लुक़्मा भी उहुद का पहाड़ बन जाता है उसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह अज़्ज़ व जल्ला से भी होती है कि "क्या इन्हें नहीं मालूम कि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा को क़बूल करता है और ज़कात व सदक़ात को ले लेता है।" और क़ौलुहू तआला (يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَ يُرْبِي الصَّدَقٰتِ) (2/बक़रह : 276) (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिस्सदक़ति :

662; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अबी शैबा : 3/112; अहमद : 2/401) यानी अल्लाह तआला सूद के मुनाफ़े को बर्बाद कर देता है और सदक़ात को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाता रहता है।

सौरी (रह.) ने बिल इस्नाद इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत की है कि सदक़ा का माल साइल के हाथ में पड़ने से पहले अल्लाह के हाथ में पड़ता है। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने यह आयत पढ़ी (अलम यअलमू अन्नल्लाहा हुव यक़्बलुत्तौबत अन इबादिही व यअख़ुज़ुस्सदक़ाति) इब्ने असाकिर (रह.) ने अपनी तारीख़ में ब ज़िम्न तारीख़ अब्दुल्लाह बिन शाइर (जो दमिश्क़ी थे लेकिन असल वतन हिम्स था और फ़ुक़्हा में से थे) बयान किया है कि मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में लोगों ने जिहाद किया जिनके सरदार अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) थे। तो एक मुसलमान ने माले ग़नीमत में से सौ दीनार रूमी ग़बन कर लिए और जब लश्कर वापिस हो गया और लोग घरों को चले गए तो उसको नदामत ने आ घेरा। उसने यह दीनार अब अमीरे लश्कर के पास पहुँचाए, उसने उनके लेने से इंकार कर दिया कि वह सब लोग तो अपने अपने घरों को चले गए जिनमें यह तक़्सीम किया जा सकता था। अब मैं तो उसको ले नहीं सकता, अब तुम क़यामत के दिन इसको अल्लाह के सामने पेश कर देना। अब यह आदमी सहाबा में से हर एक से पूछता रहा लेकिन सब यही कहते रहे। फिर वह दमिश्क़ आया और मुआविया (रज़ि.) को क़बूल करने के लिए कहा लेकिन वह भी इंकार कर गए। वह वहाँ से अपनी हालत पर रोता हुआ निकला और अब्दुल्लाह बिन शाइर सकसकी के पास से गुज़रा। उसने पूछा, क्यूँ रोता है? उसने सारा वाक़िया कह सुनाया कि कोई अमीर भी इनको नहीं लेता, तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, क्या तुम मेरी बात सुनोगे? उसने कहा, ज़रूर। तो कहा, तुम मुआविया (रज़ि.) के पास जाओ और कहो कि पाँचवाँ हिस्सा जो बैतुलमाल का हक़ है ले लो। चुनाँचे बीस दीनार उनके हवाले कर दो और बाक़ी अस्सी दीनार लश्करियों की तरफ़ से ख़ैरात कर दो जो उनके हक़दार हो सकते थे। क्योंकि अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और अल्लाह तआला उनके नामों और मक़ामात वग़ैरह से भी वाक़िफ़ है वह उन्हें उसका सवाब पहुँचा देगा। तो उस आदमी ने ऐसा ही किया। तो मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि अगर मैंने उसको ऐसा फ़त्वा दिया होता तो मुझे यह बात अपनी तमाम मम्लिकत से ज़्यादा महबूब थी। उसने बहुत अच्छी तदबीर बताई है।

***

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

तर्जुमा : "कह दे कि तुम अमल किए जाओ, तुम्हारे अमल अल्लाह आप देख लेगा और उसका रसूल (ﷺ) और ईमान वाले और ज़रूर तुमको ऐसे के पास जाना है जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों का जानने वाला है तो वह तुमको तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा।" (105)

सीनों के राज़ अल्लाह अ़लीम व ख़बीर जानता है (आयत 105) : मुजाहिद (रह़.) का क़ौल है कि यह मुख़ालिफ़ीने अम्रुल्लाह (अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालिफ़त करने वालों) के लिए अल्लाह की त़रफ़ से वईद है कि उनके आ़माल अल्लाह तबारक व तआ़ला के सामने पेश किए जाएँगे। और रसूलुल्लाह (ﷺ) और मोमिनीन में भी उनके आ़माल ज़ाहिर किए जाएँगे और क़यामत के दिन यह होना ज़रूर है। जैसाकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है कि (يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ) (69/ह़ाक़्क़ा : 18) यानी क़यामत के दिन तुम्हारे आ़माल पेश होंगे और कोई ढकी छुपी बात भी पोशीदा न रह सकेगी। और फ़र्माया अल्लाह पाक ने (يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ) (86 त़ारिक़ : 9) यानी दिलों के छुपे हुए भेद ज़ाहिर हो जाएँगे। और फ़र्माया (وَ حُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ) (100/आदियात : 10) यानी दिलों में जो कुछ है वह ज़ाहिर हो जाएगा और दुनिया के लोग इससे वाक़िफ़ हो जाएँगे जैसाकि इमाम अह़मद (रह़.) ने कहा है कि ह़सन बिन मूसा ने ब इस्नाद मरफ़ूअ़न रसूलुल्लाह (ﷺ) से रिवायत की है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''अगर तुममें से कोई सख़्त पत्थर के अंदर भी समा जाए जिसमें न कोई सूराख़ बाक़ी रहे, न दरवाज़ा और उसके अंदर भी छुपकर कोई अ़मल करे तो अल्लाह तआ़ला उसको भी लोगों पर ऐसा ज़ाहिर कर देगा गोया यह उनके सामने हुआ है।'' (अह़मद : 3/28; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद अबी यअ़ला : 1378; इब्ने ह़िब्बान : 5678; ह़ाकिम : 4/314) और ह़दीस में वारिद है कि ''जिन्दों के आ़माल उन अम्वात (मुर्दों) पर पेश किए जाते हैं जो उनके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब हैं या उनके क़बीले हैं और जो इस वक़्त आलमे बरज़ख़ में हैं।'' जैसे कि अबूदाऊद त़यालिसी ने कहा है।

सुल्त बिन दीनार ने ह़दीस बयान की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''तुम्हारे आ़माल तुम्हारे मुर्दा अक़्रबा और अ़शाइर पर उनकी क़ब्रों में पेश किए जाते हैं, अगर आ़माल ख़ैर होते हैं तो वह ख़ुश हो जाते हैं और अगर बुरे हों तो दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! तू अपनी त़ाअ़त की उन्हें तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़र्मा।'' (मुस्नद त़यालिसी : 1794; इसकी सनद में सुल्त बिन दीनार है जिसे इमाम अह़मद (रह़.) ने मतरूक कहा है (अल्मीज़ान : 2/318; रक़म : 3906) लिहाज़ा यह सनद सख़्त ज़ईफ़ है।) इमाम अह़मद (रह़.) कहते हैं कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (रह़.) ने हमें ख़बर दी कि सुफ़ियान ने एक शख़्स को कहते हुए सुना कि नबी अकरम (ﷺ) फ़र्माते थे कि ''तुम्हारे आ़माल तुम्हारे मुर्दा अक़ारिब व अ़शाइर पर पेश किए जाते हैं अगर वह अच्छे अ़मल हों तो वह मुर्दे ख़ुश हो जाते हैं और अच्छे न हों तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तू इन्हें मौत न दे जब तक तू इन्हें भी ऐसी हिदायत न दे जैसी तूने हमें दी थी।'' (अह़मद : 3/165; यह रिवायत मुन्क़त़अ़ यानी ज़ईफ़ है। सुफ़ियान और अनस (रज़ि.) के बीच सनद में इंक़ित़ाअ़ है।)

बुख़ारी (रह़.) से मरवी है कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब किसी मुसलमान का अ़मले नेक तुम्हें पसंद आ जाए तो कहो, किए जाओ अल्लाह तुम्हारे अ़मल को देख रहा है और उसका रसूल और मोमिनीन भी इससे वाक़िफ़ हो रहे हैं।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (या अय्युर्रसूल बल्लिग़ मा उंज़िला इलैक...) : क़ब्ल ह़दीस : 7530) इसी क़िस्म की एक और ह़दीस में वारिद

है कि इमाम अहमद (रह.) ने कहा कि बिल इस्नाद अनस (रज़ि.) मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "किसी के अच्छे अमल को देखकर ख़ुश न हो जाओ, इंतिज़ार करो कि उसका ख़ात्मा भी उस अमले नेक पर होता है या नहीं। इसलिए कि आमिल एक लम्बे ज़माने तक नेक अमल करता रहता है और वह उस नेक अमल पर मर जाए तो जन्नत में दाख़िल हो जाए लेकिन अचानक उसके हालात बदल जाते हैं और वह बुरे अमल करने लगता है और एक बन्दा आमाल करता रहता है कि अगर उसी पर मर जाए तो दोज़ख़ में चला जाए लेकिन अचानक कायापलट हो जाती है और वह नेक अमल करने लगता है। अल्लाह जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर का इरादा करता है तो मौत से पहले उसको नेकी की तौफ़ीक़ दे देता है और वह नेकी पर मरता है।" लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह कैसे होता है? तो फ़र्माया कि "क़ब्ज़े रूह के वक़्त वह अमले सालेह के साथ होता है।" (अहमद : 3/20; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हमीद तवील मुदल्लस व अन्अन)

***

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا یُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا یَتُوْبُ عَلَیْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰۶﴾

तर्जुमा : "और कुछ और लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक मुल्तवी है कि उनको सज़ा देगा या उनकी तौबा क़बूल कर लेगा, और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है।" (106)

जंगे तबूक से पीछे रहने वालों का मामला (आयत 106) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) और मुजाहिद, इक्रिमा, ज़हहाक (रहि.) वग़ैरह ने कहा कि यह तीन शख़्स थे कि जिनकी तौबा की क़बूलियत पीछे पड़ गई थी और वह मुरारा बिन रबीअ और कअब बिन मालिक और हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) थे और ग़ज़्वा तबूक में यह भी उन लोगों के साथ बैठे रहे थे जिन्होंने जंग में शिर्कत नहीं की थी, सुस्ती और आराम तलबी की वजह से और इस वजह से कि उनके बाग़ात में फल पकने का मौसम था, खेती तैयार खड़ी थी। साया और बहार की लुत्फ़अंगेज़ी का ज़माना था। यह कोताही मुनाफ़िक़त की बिना पर नहीं थी चुनाँचे उनमें चंद लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने को सुतूनों (खम्बों) से बाँध रखा था जैसे कि अबू लुबाबा (रज़ि.) और उनके साथी। दूसरे चंद लोगों ने ऐसा न किया और यह मज़्कूरा बाला तीन शख़्स थे। अबू लुबाबा (रज़ि.) और उनके साथियों की तौबा तो उन लोगों से पहले ही क़बूल हो चुकी थी। और नीचे ज़िक्र किये गए लोगों की तौबा की क़बूलियत तअवीक़ (वैटिंग) में पड़ गई थी यहाँ तक कि यह आयत नाज़िल हुई। (तब्री : 14/465) और वह है (لَقَدْ وَّ عَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِیْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا) (9/तौबा : 117) और (تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِیِّ وَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَ الْاَنْصَارِ ضَاقَتْ عَلَیْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ) (9/तौबा : 118) यानी अल्लाह ने नबी और मुहाजिरीन और अंसार की तौबा क़बूल कर ली। (आख़िर आयत तक) और उन तीनों शख़्सों की तौबा भी क़बूल कर ली जो जंग से पीछे रह गए थे यहाँ तक कि इतनी वसीअ दुनिया भी उन पर तंगतर हो गई थी और कहीं उन्हें पनाह न मिल सकती थी जैसा कि हदीसे कअब बिन मालिक में इसका बयान आने वाला है और क़ौलुहू तआला (इम्मा

युअज़्ज़िबुहुम व इम्मा यतूबु अ़लैहिम) यानी वह तह़ते अ़फ़ू रब्बानी हैं अगर वह चाहे तो उनसे ऐसा बर्ताव करे और अगर चाहे तो वैसा। लेकिन अल्लाह की रह़मत तो उसके ग़ज़ब पर सब्क़त रखती है और अल्लाह तो मुस्तह़िक़े उ़क़ूबत को जानता है कि कौन अ़फ़ू का मुस्तह़िक़ है और वह अपने अफ़आ़ल व अक़्वाल में ह़कीम है उसके सिवा कोई अल्लाह और कोई रब नहीं।

***

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ
حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنٰى ۚ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكٰذِبُونَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ
تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُّحِبُّونَ أَنْ يَّتَطَهَّرُوا ۚ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ﴿١٠٨﴾

तर्जुमा : "और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने उन अग़राज़ के लिए मस्जिद बनाई है कि नुक़्सान पहुँचाएँ और कुफ़्र की बातें करें और ईमान वालों में तफ़्रीक़ डालें और उस शख़्स के क़याम का सामान करें जो उससे पहले ही अल्लाह और रसूल (ﷺ) का मुख़ालिफ़ है और क़समें खा जाएँगे कि सिवाए भलाई के और हमारी कुछ निय्यत नहीं और अल्लाह गवाह है कि वह बिलकुल झूठे हैं। (107) आप उसमें कभी खड़े न हों, अल्बत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है वह इस लायक़ है कि आप उसमें खड़े हों। उसमें ऐसे आदमी हैं कि वह ख़ूब पाक होने को पसंद करते हैं। और अल्लाह तआ़ला ख़ूब पाक होने वालों को पसंद करता है।" (108)

मुनाफ़िक़ीन की मस्जिदे ज़िरार का बयान (आयत 107, 108) : इन आयाते करीमा का सबबे नुज़ूल यह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना तशरीफ़ लाने से पहले मदीना में क़बील-ए-ख़ज़रज का एक आदमी था जिसका नाम था अबू आ़मिर राहिब। यह अय्यामे जाहिलियत में नस़रानी हो गया था और अहले किताब का इल्म ह़ासिल कर चुका था। यह अय्यामे जाहिलियत में एक इबादतगुज़ार शख़्स था अपने क़बीले में उसको बड़ी इ़ज़्ज़त ह़ासिल थी। जब नबी (ﷺ) हिज्रत करके मदीना तशरीफ़ लाए और मुसलमानों का आपके पास इज्तिमाअ़ होने लगा और इस्लाम का बोलबाला हो गया और बद्र की लड़ाई में भी अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को ग़ालिब रखा तो अबू आ़मिर पर यह बात बहुत शाक़ गुज़री और खुल्लम खुल्ला अ़दावत (दुश्मनी) ज़ाहिर करने लगा और मदीना से भागकर कुफ़्फ़ारे मक्का और मुश्रिकीने क़ुरैश से जा मिला और उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) से जंग करने पर उभारा करता था, अब अ़रब के सारे क़बीले इकट्ठे हो गए और जंगे उहुद के लिए पेशक़दमी की, नतीजे में मुसलमानों को जो ज़रर पहुँचा, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने उस जंग में

मुसलमानों का इम्तिहान लिया, दुनिया न सही लेकिन आक़िबत तो मुत्तक़ीन ही के लिए है। उस फ़ासिक़ ने दोनों तरफ़ की सफ़ों के बीच कई कई गढ़े खोद रखे थे, उनमें से एक में रसूलुल्लाह (ﷺ) गिर पड़े, आप (ﷺ) को चोटें लगीं। आपका चेहरा ज़ख़्मी हो गया, नीचे की तरफ़ से सामने के चार दाँत आपके शहीद हो गए। सर भी नबी (ﷺ) का ज़ख़्मी हो गया। अबू आमिर ने शुरू जंग में अपनी क़ौम अंसार की तरफ़ बढ़कर उन्हें मुख़ातब किया और उन्हें अपनी मदद और अपनी मुवाफ़िक़त की दावत दी। जब अंसार ने अबू आमिर की यह हरकत देखी तो कहने लगे कि ऐ फ़ासिक़! ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह तुझे बर्बाद करे और उसको गालियाँ दीं, उसकी इज़्ज़त रेज़ी की। अब वह यह कहता हुआ वापिस हो गया कि मेरे बाद मेरी क़ौम तो बिगड़ गयी।

नबी (ﷺ) ने उसके फ़रार होने से पहले उसको दावते इस्लाम दी थी और क़ुरआन की वह्यी उसे सुनाई थी, लेकिन इस्लाम लाने से उसने इंकार किया और सरकशी इख़्तियार की। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे बद दुआ दी कि "कमबख़्त जला वतनी और परदेसी की मौत मरे।" चुनाँचे यह बद दुआ उस पर कारगर हुई और यह बात इस तरह वक़ूअ पज़ीर हुई कि लोग जब जंगे उहुद से फ़ारिग़ हुए और उसने देखा कि नबी (ﷺ) का तो और बोलबाला हो रहा है। इस्लाम बढ़ता चला जा रहा है तो वह मुल्के रूम हिरक़्ल के पास गया, इससे नबी (ﷺ) के बरख़िलाफ़ मदद मांगी। उसने वादा किया उसने अपनी उम्मीदें कामयाब होती देखीं तो हिरक़्ल के पास ठहर गया और अपनी क़ौम अंसार में से उन लोगों को मक्का भेजा जो अहले निफ़ाक़ थे कि लश्कर लेकर आ रहा हूँ, रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ूब जंग होगी, उन पर ग़ालिब आ जाऊँगा और उन्हें अपनी इस्लाम से पहले की साबिक़ा हालत पर आना पड़ेगा और उन अहले निफ़ाक़ को हुक्म भेजा कि उसके लिए पनाह की जगह बनाए रखो और मेरे अहकाम और मुरासिले जो लेकर आया करें उनके लिए क़यामगाह और अमन की जगह बनाए रखो ताकि उसके बाद जब वह ख़ुद आए तो उसके लिए कमीनगाह का काम दे। चुनाँचे उन मुनाफ़िक़ीन ने मस्जिदे क़ुबा के क़रीब ही एक और मस्जिद बना डाली, उसकी तामीर कर दी उसको पुख़्ता कर दिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) के तबूक से निकलने से पहले इस काम से फ़ारिग़ भी हो गए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास यह दरख़्वास्त लेकर आए कि आप हमारे पास आइए हमारी मस्जिद में नमाज़ पढ़िए ताकि इस बात की सनद हो सके कि यह मस्जिद अपनी जगह क़ाबिले इस्तिक़रार और क़ाबिले इस्बात है। और आपके सामने यह बयान किया कि ज़ईफ़ों और कमज़ोरों की ख़ातिर यह मस्जिद बनाई गई है और सर्दी की रातों म जो बीमार लोग दूर की मस्जिद में नहीं जा सकते उनके लिए आसानी की ग़र्ज़ है। लेकिन अल्लाह तआला तो अपने नबी (ﷺ) को उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बचाना चाहता था। चुनाँचे आपने फ़र्माया कि "हमें तो इस वक़्त सफ़र दरपेश है जब हम वापिस होंगे और अल्लाह ने चाहा तो देखा जाएगा" और जब नबी (ﷺ) जंगे तबूक से फ़ारिग़ होकर मदीना की तरफ़ वापिस हुए और मदीना तक मसाफ़त जब एक दिन या उससे कुछ कम रह गई तो जिब्राईल (عليه السلام) मस्जिदे ज़िरार की ख़बर लिए हुए आ पहुँचे और मुनाफ़िक़ीन के उस राज़ को ज़ाहिर कर दिया कि मस्जिदे क़ुबा के क़रीब एक और मस्जिद बनाने से मुसलमानों की जमाअत में तफ़रीक़ पैदा करने का मक़सद उन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ने पेशेनज़र रखा है। वह मस्जिदे क़ुबा है जिसकी

बुनियाद अव्वले रोज़ से तक़्वा पर उठाई गई है। इस इल्म के बाद नबी (ﷺ) ने अपने मदीना पहुँचने से पहले ही चंद लोगों को उस मस्जिदे ज़िरार की तरफ़ भेज दिया कि उसको मुंहदिम कर दिया जाए।

जैसाकि अली बिन अबी तलहा ने इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हुए कहा है कि वह अंसार के लोग थे जिन्होंने एक मस्जिद बनाई थी और अबू आमिर ने उनसे कहा कि तुम एक मस्जिद बनाओ और जिस क़द्र भी तुमसे मुम्किन हो उसमें हथियार और सामाने जंग छुपाये रखो और उसको अपनी पनाह और कमींगाह (पनाह की जगह) बनाए रहो क्योंकि मैं क़ैसर मुल्के रूम की तरफ़ जा रहा हूँ, रूम से लश्कर लेकर आऊँगा और मुहम्मद और उनके अस्हाब को मदीना से निकाल दूँगा। चुनाँचे यह मुनाफ़िक़ीन जब मस्जिदे ज़िरार बनाकर फ़ारिग़ हो गए तो नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दरख़्वास्त किया कि हम यह दिली ख़्वाहिश रखते हैं कि एक बार आप इस मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ लें और उसमें हमारे लिए बरकत की दुआ करें तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह वह्यी नाज़िल कर दी (तब्री : 14/470) यानी हर्गिज़ उसमें नमाज़ न पढ़ना यक़ीनन वह मस्जिद जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है ज़्यादा हक़दार है इस बात की कि तुम उसी में नमाज़ पढ़ो, उसमें ऐसे पाकीज़ा लोग हैं जो यह चाहते हैं कि पाक दिल रहें और अल्लाह तआला ऐसे ही पाकीज़ा दिलों को पसंद करता है। सईद बिन जुबेर (रह.) ने भी बिल इस्नाद यही रिवायत की है और मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने भी बिल इस्नाद यह रिवायत की है कि नबी (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक से वापिस हुए और मक़ामे ज़ी अदान में फ़रोकश हुए। मदीना यहाँ से चंद घंटों की मसाफ़त (दूरी) पर है। अब मस्जिदे ज़िरार वाले आपके पास आए और आप तबूक की तरफ़ जाने की तैयारी में मसरूफ़ थे। और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने बीमारों, हाजतमंदों और बारिश और सर्दी की रातों में आने वाली जमाअते मुस्लिमीन की ख़ातिर एक मस्जिद बनाई है हम चाहते हैं कि आप उसमें तशरीफ़ लाएँ और हमें उसमें नमाज़ पढ़ाएँ। आपने फ़र्माया कि "इस वक़्त तो सफ़र दरपेश है और मैं बहुत मसरूफ़ हूँ" या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया कि "अगर हम वापिस आए तो इंशाअल्लाह तआला! हम तुम्हारे पास आएँगे और तुम्हें नमाज़ पढ़ाएँगे।" चुनाँचे जब आप ज़ी अदान में उतरे तो उस मस्जिदे ज़िरार की ख़बर अल्लाह की तरफ़ से आपको मिल गई। आपने बनी सालिम के भाई मालिक बिन दख़्शम को बुलाया और मअ़न बिन अदी या उसके भाई आमिर बिन अदी। ग़र्ज़ उन दोनों को बुलाया और फ़र्माया कि तुम दोनों इन ज़ालिमों की मस्जिद की तरफ़ जाओ और उसको गिराकर जला डालो। यह दोनों फ़ौरन गए और बनी सालिम बिन औफ़ के पास आए। यह मालिक बिन अद्दख़्शम के क़बीले के लोग थे। अब मालिक ने मअ़न से कहा, ठहरो! मैं अपने लोगों में से किसी के पास से आग ले आता हूँ। अब मालिक अपने लोगों में आए। दरख़्त की एक बड़ी सी लकड़ी ली, उसको सुलगाया और फ़ौरन निकल खड़े हुए। यह दोनों मस्जिद पहुँचे। मस्जिद में यह कुफ़्फ़ार मौजूद थे, उन दोनों ने मस्जिद को जला दिया और उसको गिरा दिया। लोग वहाँ से भाग खड़े हुए और क़ुरआन की यह आयत उन मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई (वल्लज़ीनत्तख़ज़ू मस्जिदन ज़िरारंव्व कुफ़्रा)

यह लोग जिन्होंने यह मस्जिद बनाई बारह अफ़राद थे, ख़ुद्दाम इब्ने ख़ालिद, उसी के घर से मस्जिदे शिक़ाक़ की राह निकलती है, और सअ़ल्बा बिन हातिब बनी उमय्या के ख़ादिम, और मअ़तब बिन क़ुशेर और

अबू हबीबा बिन अज़्अर, और इबाद बिन हनीफ़, और हारिसा बिन आमिर, और उसके दोनों बेटे मज्मअ और ज़ेद और नब्तल अल्हारिस, और मुख़िरज और बज्जाद बिन इमरान, और वदीआ बिन साबित, और अबू लुबाबा के क़बीले के ख़ादिम, वह लोग जिन्होंने उसको बनाया, वह क़समें खाकर कह रहे थे कि हमने तो नेक इरादे से इसकी नींव डाली है। हमारे पेशेनज़र तो सिर्फ़ लोगों की ख़ैरख़्वाही थी। लेकिन अल्लाह तआला फ़र्माता है (वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम लकाज़िबून) अल्लाह गवाही देता है कि यह लोग झूठ बोलते हैं यानी जो उन्होंने क़सद किया और निय्यत कर रखी है, उसमें झूठे हैं। महज़ इस मक़्सद से मस्जिद बनाई है कि मस्जिदे कुबा को ज़रर पहुँचाएँ और कुफ़्र की इशाअत करें, मुसलमानों में तफ़रीक़ डाल दें, अल्लाह से और अल्लाह के रसूल (ﷺ) से लड़ने की ख़ातिर कमीनगाह बनाए रखें, जहाँ उनके मश्वरे और कौंसिल हुआ करे, वह शख़्स है अबू आमिर फ़ासिक़ जिसको राहिब समझा जाता है, अल्लाह उस पर लानत करे। व क़ौलुहू (ला तक़ुम फ़ीहि अबदन) नबी (ﷺ) को उसमें नमाज़ पढ़ने से मना कर दिया गया। नमाज़ न पढ़ने में उनकी ताबेअ उनकी उम्मत भी है चुनाँचे मुसलमानों को भी ताकीद है कि कभी उसमें नमाज़ न पढ़ें। फिर मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ने पर उभारा, मस्जिदे कुबा की बुनियाद शुरु ही से तक़्वा पर डाली गई है। तक़्वा ताअते अल्लाह और ताअते रसूल (ﷺ) को कहते हैं यहाँ मुसलमान मिल बैठते हैं, दीनी मश्वरे करते हैं और यह इस्लाम और अहले इस्लाम की पनाह की जगह है और इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया है (ल मस्जिदुन उस्सिसा अलत्तक़्वा मिन अव्वलि यौमिन अहक़्क़ु तक़ूमा फ़ीहि) और सियाक़े इबारत मस्जिदे कुबा के बारे में है। इसलिए हदीसे सही में है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ना एक उमरा के सवाब के बराबर है।" (तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़िस्सलाति फ़ी मस्जिदि कुबा : 324; वहुव हसन; इब्ने माजा : 1411; हाकिम : 1/487; अल्मुअजमुल कबीर : 570) सहीह हदीस में है कि नबी (ﷺ) मस्जिदे कुबा की तरफ़ सवार होकर भी आते थे और पैदल भी। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्लुस्सलाति फ़ी मस्जिदि मक्का वल मदीना; बाब मस्जिदे कुबा : 1191; सहीह मुस्लिम : 1399) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब उसे बनाया तो आपकी सबसे पहले तशरीफ़ आवरी बनी अम्र बिन औफ़ के पास थी और जिहते क़िब्ला जिब्राईल (ﷺ) ने मुअय्यन की थी, वल्लाहु आलम!

अबूदाऊद (रह.) ने बिल इस्नाद अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत की है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि "यह आयत अहले कुबा के बारे में नाज़िल हुई है (फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बूना अंय्यततहहरू) आपने फ़र्माया कि "वह पानी से तहारत करते थे। चुनाँचे उनकी तारीफ़ में यह आयत उतरी है।" (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाब फ़िल इस्तिंजाइ बिल माअ : 44; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 3100; इब्ने माजा : 357) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब ऊपर वाली आयत उतरी तो आप उवैम बिन साएदा (रज़ि.) के पास पहुँचे और पूछा कि "तुम्हारी वह कौनसी तहारत है कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जिसकी तारीफ़ की है" तो अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें से जब कोई मर्द या औरत हाजत से फ़ारिग़ होते हैं तो पानी से अपनी शर्मगाह को अच्छी तरह धो लेते हैं तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "हाँ! यही बात है।" (अल्मुअजमुल कबीर : 11065; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/212) इमाम अहमद (रह.) ने बयान किया है कि नबी

(ﷺ) मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाए और कहा कि "नमाज़ के लिए तुम्हारी तहारत की अल्लाह पाक ने बड़े अच्छे अल्फ़ाज़ में तारीफ़ की है, तो वह तुम्हारी कौनसी तहारत है" तो कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमको तो उसके सिवा कोई इल्म नहीं कि यहूद हमारे पड़ौसी हैं और वह हाजत से फ़ारिग़ होने के बाद पानी से धोते हैं चुनाँचे हमने भी यही तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है। (अहमद : 3/422; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्मुअजमुल कबीर : 348)

इब्ने ख़ुज़ैमा ने अपनी हदीस की किताब में लिखा है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उवैम बिन साएदा (रज़ि.) से पूछा कि "तुम्हारी किस तहारत की तारीफ़ अल्लाह पाक ने की है?" तो कहा कि हम तहारत करने में पानी इस्तेमाल करते हैं। इब्ने जरीर (रह.) ने कहा कि आयत (फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बूना अंय्यततहहरू वल्लाहु युहिब्बुल मुत्तह्हिरीन) जो उतरी है वह हाजत के बाद पानी से धोने वालों की शान में है।

इमाम अहमद बिन हंबल (रह .) (बिल इस्नाद) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ)! मस्जिदे क़ुबा में आए और कहा कि "अल्लाह तआला ने तुम्हारी तहारत की बहुत अच्छी तारीफ़ की है, वह क्या है?" तो कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने तो आयत में पानी से तहारत के अहकाम पाये हैं। (अहमद : 6/6; व सनदुहू हसन; शहर बिन हुवेशिब हसनुल हदीस) (इसमें एक रावी अब्दुल्लाह बिन सलाम थे जो अहले तौरात थे)। हदीसे सहीह में वारिद है कि "मदीना के अंदर जो मस्जिदे नबवी है यही वह मस्जिद है जिसके लिए कहा गया है कि तक़्वा पर उसकी बुनियाद उठी हुई है।" और यह सही बात है इस आयत और इस आयत में कोई मुनाफ़ात (डिस्पुट) नहीं क्योंकि जब क़ुबा की तासीस अव्वले दिन से उसकी नींव तक़्वा पर है तो बदर्जा औला मस्जिदे नबवी को यह ख़ुसूसियत हासिल होनी चाहिए इसीलिए इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने अपनी मुस्नद में बयान किया है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि "जो मस्जिदे तक़्वा का असास रखती है वह मेरी यह मस्जिद है।" (अहमद : 5/116; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; वल हदीसु अल आता युग़्नी अन्हू उंज़ुर सुनन तिर्मिज़ी : 3099; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/10)

इमाम अहमद (रह.) ने फिर (बिल इस्नाद) रिवायत की है कि नबी (ﷺ) के ज़माना में दो आदमियों ने इस बारे में इख़्तिलाफ़ किया कि इस ख़ुसूसियत वाली मस्जिद कौनसी है? तो एक ने कहा कि वह मस्जिदे नबवी है और दूसरे ने कहा कि वह मस्जिदे क़ुबा है यह दोनों नबी (ﷺ) के पास आए और आपसे तहक़ीक़ की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "उससे यही मेरी मस्जिद मुराद है।" (अहमद : 5/331; व सनदुहू हसन; हैसमी ने इसके रिजाल को सिक़ा कहा है, देखिए (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/73)

इमाम अहमद (रह.) ने फिर (बिल इस्नाद) रिवायत की कि दो आदमी इस ख़ुसूसियत वाली मस्जिद के बारे में मुख़्तलिफ़ राय थे एक मस्जिदे क़ुबा को और दूसरा मस्जिदे नबवी को बता रहा था तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मस्जिदे तक़्वा यह मेरी मस्जिद है।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3099; व सनदुहू सहीहुन; सहीह मुस्लिम : 1398; अहमद : 3/89)

फिर उसके बाद कई हदीसें इसी मज़्मून की वारिद हैं, चुनाँचे हमीद ख़रात मदनी ने अबू सलमा से पूछा

कि तुमने अपने बाप से मस्जिदे तक़्वा के बारे में क्या सुना है? तो कहा कि मैं नबी अकरम (ﷺ) के पास आया और पूछा, ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! मस्जिदे तक़्वा कौनसी है? तो आप (ﷺ) ने मुट्ठीभर कंकरियाँ ज़मीन से उठाईं और उन्हें ज़मीन पर मारकर कहा कि "वह यही मस्जिद है।" उस वक़्त आप मस्जिद के सेहन में अपनी बीवी के एक कमरे में तशरीफ़ फ़र्मा थे। (अहमद : 3/24; व सनदुहू सहीहुन) फिर वह कहते हैं कि उसको मुस्लिम (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब बयानुल मस्जिदिल्लज़ी उस्सिसा अलत्तक़्वा ... : 1398) ने बिल इस्नाद हुमीद ख़रात से रिवायत किया है कि ख़ल्फ़ और सलफ़ की एक जमाअत इसी बात की क़ाइल है कि वह मस्जिदे नबवी है और उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से भी यही रिवायत है और (ल मस्जिदुन उस्सिसा) वाली आयत इस बात की दलील है कि मसाजिदे क़दीमा में जिनकी पहली बुनियाद अल्लाह की इबादत पर उठाई गई है, नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। और इस इस्तिहबाब की भी दलील है कि जमाअते सालेहीन और इबादे आमिलीन के साथ नमाज़ पढ़ी जाए और वुज़ू बाक़ायदा तौर पर मुकम्मल किया जाए और नमाज़ में मैले या गंदे कपड़ों से बिलकुल पाक रहें।

इमाम अहमद (रह.) ने (बिल इस्नाद) रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ाई और उसमें सूरह रूम पढ़ी, पढ़ने में आपको कुछ शक सा हो गया। आप जब वापिस हुए तो फ़र्माया, "कुरआन पढ़ने में कुछ गड़बड़ हो जाती है देखो! तुममें कुछ लोग ऐसे हैं जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन वुज़ू अच्छी तरह नहीं करते पस जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ना चाहे उसको चाहिए कि वुज़ू पूरा किया करे, वुज़ू में कोई ख़राबी न होने पाये।" (नसाई, किताबुल इफ़्तिताह; बाब अल् क़िराअतु फ़िस्सुब्हि बिर्रूम : 948; वहुव सहीहुन; अहमद : 3/472)

ज़ुल कलाअ से मरवी है कि उन्होंने नबी (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी तो आपने यह हिदायत की थी, यह चीज़ इस बात पर दलालत करती है कि हुस्ने तहारत क़याम फ़िल इबादत में आसानी पैदा करता है और इबादत की तत्मीम और तक्मील में मददगार साबित होता है। अबुल आलिया (रह.) ने क़ौले पाक (वल्लाहु युहिब्बुल मुत्तहहिरीन) के बारे में कहा कि पानी से तहारत करना तो बेशक बहुत अच्छी बात है लेकिन जिनकी तहारत की अल्लाह तआला तारीफ़ फ़र्मा रहा है वह गुनाहों से अपने को पाक रखने वाले लोग हैं। आमश (रह.) कहते हैं कि इस तहारत से मुराद गुनाहों से तौबा और शिर्क से पाकीज़गी है। हदीस में वारिद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अहले कुबा से कहा कि "अल्लाह ने जो तुम्हारी तहारत की तारीफ़ की है वह कैसी तहारत है तो कहा कि हम पानी से इस्तिंजा करते हैं।" हाफ़िज़ अबूबक्र बज़्ज़ार (रह.) ने बिल इस्नाद इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत की है कि यह आयत अहले कुबा के बारे में उतरी है। और जब आपने उनसे सवाल किया था तो कहा था कि हम पहले ढेले लेते हैं, फिर पानी से धोते हैं। इसको बज़्ज़ार (रह.) ने रिवायत किया है। इसको सिर्फ़ मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने और इनसे इनके बेटे ने रिवायत की है। मैंने यहाँ यह तसरीह इसलिए कर दी कि यह चीज़ अगम्ने फुक़्हा में मशहूर है लेकिन अक्सर मुहद्दिसीन मुताख़्ख़िरीन इसको मारूफ़ तस्लीम नहीं करते, वल्लाहु आलम!

***

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا
جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ
الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ
فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

तर्जुमा : ''फिर क्या ऐसा शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह से डरने पर और अल्लाह की ख़ुशनुदी पर रखी हो या वो शख़्स कि जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी के किनारे पर जो कि गिरने ही को हो रखी हो फिर वह उसको लेकर आतिशे दोज़ख़ में गिर पड़े और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को समझ ही नहीं देता। (109) उनकी यह इमारत जो उन्होंने बनाई है हमेशा उनके दिलों में खटकती रहेगी हाँ! मगर उनके दिल ही अगर फ़ना हो जाएँ तो ख़ैर, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाला और हिक्मत वाला है। (110) बिला शुब्हा अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानों को और उनके मालों को इस बात के बदले में ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी, वह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं जिसमें क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं, उस पर सच्चा वादा किया गया है तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है तो तुम लोग अपनी इस तिजारत पर जिसका तुमने मामला ठहराया है, ख़ुशी मनाओ। और यह बड़ी कामयाबी है।'' (111)

मस्जिदे तक़्वा की तहसीन और मस्जिदे ज़िरार का अंजाम (आयत 109, 111) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि वह लोग जिन्होंने मस्जिद की बुनियाद तक़्वा और रज़ाए-इलाही पर रखी है और वह लोग जिन्होंने मस्जिदे ज़िरार और मस्जिदे कुफ़्र बनाई और मोमिनीन में तफ़्रीक़ डाल दी और अल्लाह से और अल्लाह के रसूल (ﷺ) से लड़ने के लिए उसको जाए पनाह क़रार दिया, क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं। उन लोगों ने तो इस मस्जिदे ज़िरार की बुनियाद गोया एक गढ़े के ढलते हुए किनारे पर रखी जो उसे जहन्नम की आग में ले गिरी और हुदूद से तजावुज़ करने वालों को अल्लाह तआला हिदायत नहीं फ़र्माता है। यानी मुफ़्सिदीन (फ़साद फैलाने वालों) के अमल को इस्लाह पज़ीर नहीं बनाता। जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.)

कहते हैं कि मस्जिदे ज़िरार को मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के हस्बे फ़र्मान जब उसमें आग लगा दी गई तो उसमें धुआँ निकल रहा था। (तबरी : 14/493) इब्ने जुरैज (रह.) कहते हैं कि हमें मालूम हुआ कि कुछ लोगों ने एक जगह गढ़ा खोदा तो उसमें से धुआँ निकलता हुआ पाया। क़तादा (रह.) ने भी इसी तरह कहा है।

ख़ल्फ़ बिन यासीन कूफ़ी कहते हैं कि मैंने मुनाफ़िक़ीन की इस मस्जिद को देखा कि जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़र्माया है, यह देखा कि उसमें एक सूराख़ है जिसमें से धुआँ निकल रहा है और आज की तारीख़ में वह जगह गंदगी फेंकने की जगह बनी हुई है। इब्ने जरीर (रह.) ने इसको रिवायत किया। और क़ौलुहू तआला (ला यज़ालु बुनयानुहुमल्लज़ी बनौ रीबतन फ़ी क़ुलूबिहिम) यानी उनकी बनाई हुई यह इमारत तो हमेशा उनके दिलों में तो शक व शुब्हा की बाइस ही रहेगी और उस अमले शनीअ का इक़्दाम करने की वजह से उनके दिलों में निफ़ाक़ का बीज बोती रहेगी, जैसाकि गाय की पूजा करने वालों के दिल में गाय की मुहब्बत पड़ी हुई थी (इल्ला अन तक़त्तआ क़ुलूबुहुम) अल्बत्ता इस सूरत में उन मुनाफ़िक़ीन की बेख़कनी (जड़ से उखाड़ना) हो सकती है जबकि उस मस्जिद को ही ख़त्म करके उनके दिलों के टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएँ। अल्लाह अपने बन्दों के आमाल को ख़ूब जानता है और ख़ैरो शर का बदला देने में बड़ा हकीम है।

मुसलमान की जान और माल के बदले जन्नत का सौदा : इस आयत के ज़रिये अल्लाह तआला ख़बर दे रहा है कि उसने अपने मोमिन बन्दों की जानों और मालों के बदले में जिनको उन्होंने अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया है, जन्नत का मुआवज़ा दे रहा है और यह मुआवज़ा मुआवज़ा नहीं बल्कि उसका फ़ज़्लो करम व एहसान है क्योंकि बन्दों की क़ुदरत में जो कुछ था वह उन्होंने किया, अब अपने मुतीअ बन्दों के लिए अल्लाह पाक भी कोई मुआवज़ा क़रार दे तो जन्नत ही का क़रार देगा। इसीलिए हसन बसरी और क़तादा (रह.) ने कहा है कि जब अल्लाह ने उनसे बेअ व शरा (सौदा) किया तो उनकी ख़िदमत की बड़ी ही ज़बरदस्त क़ीमत दी है। और शमर बिन अतिया ने कहा है कि कोई ऐसा मुसलमान नहीं जिसकी गर्दन में अल्लाह का अहदो पैमान न हो, जिस पर कि उसकी मौत आई हुई हो और उसका पाबन्द होते हुए उसने जान दी हो, फिर मज़्कूरा बाला आयत तिलावत की। और इसीलिए कहा जाता है कि जो अल्लाह की राह में जिहाद की ख़ातिर निकल खड़ा हुआ गोया उसने अल्लाह से सौदा कर लिया और अल्लाह ने उसके साथ यह अक़्द क़बूल कर लिया और उसको पूरा कर दिया।

मुहम्मद बिन कअब क़ुर्ज़ी (रह.) वग़ैरह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने लैलतुल उक़्बा में बेअत के वक़्त कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अल्लाह के लिए और ख़ुद अपने लिए भी जो शर्त चाहें हमसे मनवा सकते हैं तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह के बारे में तो मैं तुम पर यह शर्त क़रार देता हूँ कि उसके सच्चे बन्दे बने रहो, उसकी इबादत किया करो और किसी को उसका शरीक न ठहराओ और अपने बारे में तुम पर यह शर्त क़रार देता हूँ कि जिन बातों से तुम अपनी जानों और अपने मालों को बचाते हो, मेरे भी उसी तरह ख़ैरख़्वाह बने रहो।" तो पूछा फिर हमें क्या मिलेगा? तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "इसका बदला है जन्नत" तो पूछने वालों ने कहा कि यह बड़े फ़ायदे का सौदा है, न हम वादाख़िलाफ़ी करेंगे, न हमसे वादाख़िलाफ़ी होगी" तो आयत उतरी (इन्नल्लाहश्तरा मिनल मुअमिनीना अन्फ़ुसहुम)। और क़ौलुहू तआला (युक़ातिलूना फ़ी सबीलिल्लाहि फ़यक़्तुलूना व युक़्तुलून) (तबरी :

14/499) यानी वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं, पस क़त्ल भी करते हैं ओर क़त्ल भी होते हैं। दोनों बातें बराबर के सवाब वाली हैं चाहे वह क़त्ल करके ग़ाज़ी बनें या शहीद हों, हर सूरत में जन्नत उनके लिए वाजिब है। इसीलिए बुख़ारी व मुस्लिम में आया है कि जो अल्लाह की राह में निकला और उस निकलने से उसकी ग़र्ज़ सिवाए इसके और कुछ न हो कि मेरी राह में जिहाद करे या मेरे रसूलों की तस्दीक़ करे, यहाँ तक कि उसे मौत आ जाए, तो अल्लाह इस बात का ज़िम्मेदार है कि उसको जन्नत में दाख़िल करे, और अगर न मरे तो अल्लाह के ज़िम्मे है कि जहाँ से वह चला है, उसे वहाँ पहुँचाए और अज्र माले ग़नीमत के साथ बा मुराद पहुँचाए। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (उहिल्लत लकुमुल ग़नाइम) : 3123; सहीह मुस्लिम : 1876) व क़ौलुहू तआला (वअदन अलैहि हक़्क़न फ़ित्तौराति वल इंजीलि वल क़ुरआन) अपने वादा की ताकीद के तौर पर है और यह बतलाया जा रहा है कि उसने अपनी ज़ात पाक पर उस चीज़ को फ़र्ज़ कर लिया है और अपने रसूलों पर इस वादा की वह्यी भी भेज दी है जो मूसा (عليه السلام) पर उतरी हुई तौरात में दर्ज है और ईसा (عليه السلام) की इंजील में भी है और नबी (ﷺ) पर उतरे हुए क़ुरआन पाक में भी लिखा हुआ है (सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम अज्मईन। वक़ौलुहू (वमन औफ़ा बि अहदिही मिनल्लाहि) और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादा को पूरा करने वाला और कौन हो सकता है क्योंकि वह ख़िलाफ़े अहद कभी नहीं करता। जैसाकि एक दूसरी जगह फ़र्माता है कि (...وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا) (4/निसाअ : 87) और (...وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا) (4/निसाअ : 122) और इसीलिए इर्शाद होता है कि अल्लाह से तुमने जो सौदा किया है उस पर ख़ुश हो जाओ और यह कामयाबी बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है। बशर्तेकि तुमने भी अपना वादा पूरा कर लिया हो।

***

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

तर्जुमा : "वह ऐसे हैं जो तोबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ और सज्दा करने वाले, नेक बातों की तालीम करने वाले और बुरी बातों से दूर रहने वाले और अल्लाह की हदों का ख़याल रखने वाले, और ऐसे मोमिनीन को आप ख़ुशख़बरी दे दीजिए" (112)

मोमिनों के औसाफ़े हमीदा (बेहतरीन खूबियाँ) (आयत 112) : यह आयत उन मोमिनीन की तारीफ़ में है कि अल्लाह ने जिनकी जानें और जिनके माल उनके उन सिफ़ाते जमीला के बदले में ख़रीद लिए हैं। वह तमाम गुनाहों और सारे फ़वाहिश (अश्लीलताओं) से बाज़ रहते हैं और अपने रब की इबादत पर क़ायम हैं। अपने क़ौल व फ़े'ल पर बड़ी कड़ी नज़र रखते हैं। क़ौल में ख़ास तरीन चीज़ तो अल्लाह की हम्द है। इसीलिए

फ़र्माया (अल्हामिदूना) और अफ़आल और आमाल के रू से अफ़ज़ल आमाल सियाम हैं। सियाम कहते हैं खाने पीने और जिमाअ से बाज़ रहने को, और सियाहत से यही रोज़ा मुराद है। इसीलिए फ़र्माया (अस्साइहून) जैसे कि अल्लाह तआला के क़ौल (साइहाति) में अज़्वाजुन्नबी की तारीफ़ की गई। और इस "साइहात" से मुराद "साइमात" है। इसी तरह रुकूअ व सुजूद से नमाज़ मुराद है, चुनाँचे कहा गया (अर्राकिऊनस्साजिदूना) वह इबादतें करके न अपना ही फ़ायदा देखते हैं बल्कि अल्लाह के दूसरे बन्दों को भी उनको रुश्दो हिदायत करके और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुंकर पर अमल पैरा करके न अपना ही फ़ायदा पहुँचाते हैं और बताते हैं कि कौनसा काम करना सज़ावार है और कौनसे कामों से तर्क वाजिब है। और इल्मन और अमलन दोनों तरह हलालो हराम के बारे में अल्लाह की हुदूद की हिफ़ाज़त पेशेनज़र रहती है। चुनाँचे वह बज़ाते ख़ुद इबादते हक़ और ख़ैरख़्वाही ख़ल्क़ दोनों तरह की इबादत के अलमबरदार होते हैं। इसीलिए फ़र्माया परवरदिगार ने कि, मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दो क्योंकि ईमान उन दोनों बातों के इज्तिमाअ का नाम है और पूरी तरह की सआदत तो उसी को हासिल है जो इन दोनों बातों से मुत्तसिफ़ हो।

साइहून से मुराद रोज़ा रखने वाले हैं : सुफ़ियान सौरी (रह.) बयान करते हैं कि (साइहून) के मअनी (साइमून) हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि .) कहते हैं कि अल्लाह पाक ने कुरआन में जहाँ कहीं सियाहत का लफ़्ज इस्तेमाल किया है वहाँ सियाम ही मुराद है। ज़ह्हाक (रह.) भी यही कहते हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि इस उम्मत की सियाहत है रमज़ान के रोज़े रखना। मुजाहिद, सईद, अता, अब्दुर्रहमान, ज़ह्हाक, और सुफ़ियान बिन उयेयना (रहि.) सब यही ख़्याल रखते हैं कि (साइहून) से मुराद रोज़ेदार हैं। हसन बसरी (रह.) कहते हैं कि साइहून से रमज़ान के रोज़ेदार मुराद हैं। अबू अम्र अब्दी भी यही कहते हैं कि एक मरफ़ूअ हदीस में भी यही वारिद है। अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि (साइहून) "रोज़ेदार लोगों को कहते हैं।" (इसकी सनद में हकीम बिन ख़ुज़ाम अबू नुमैर है अबू हातिम ने इसे मतरूक और बुख़ारी ने मुंकरुल हदीस कहा है। देखिए (अल्मीज़ान : 585; रक़म : 2218) लिहाज़ा यह रिवायत मरदूद है।) यह हदीस से मौक़ूफ़ ज़्यादा सहीह है। उबेद बिन उमेर कहते हैं कि सवाल करने पर नबी (ﷺ) ने फ़माया कि "साइमीन" को कहते हैं, यह हदीस मुर्सल है और जय्यद है और असह्हुल अक़्वाल (सबसे सही क़ौल)है। और यूँ भी कहा गया है कि सियाहत से जिहाद मुराद है। अबूदाऊद (रह.) ने अपनी किताबो सुन्नत में अबू उमामा (रज़ि.) की हदीस बयान की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे सियाहत की इजाज़त दीजिए। तो आपने फ़र्माया कि "मेरी उम्मत की सियाहत जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है।" अम्मारा बिन ग़ज़िया (रह .) से मरवी है कि नबी (ﷺ) के पास सियाहत का ज़िक्र आया तो आपने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला ने हमारे लिए जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह को और (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िन्नही अनिस्सियाहति : 2486; व सनदुहू हसन) बुलंदियों पर तक्बीर बोलते हुए चलने को सियाहत बनाया है।" (यह रिवायत मुअज़ल यानी ज़ईफ़ है।) इक्रिमा (रह.) का ख़्याल है कि उससे इल्म के तालिबीन मुराद हैं और अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद ने कहा है कि मुहाजिरीन मुराद हैं, यह दोनों बातें इब्ने अबी हातिम से मरवी हैं। यह ज़हननशीन रहे कि यहाँ सियाहत से मुराद वह मफ़्हूम नहीं है जो कुछ आबिद राहिब क़िस्म के लोग समझे हुए हैं कि उससे दुनिया की मुख़्तलिफ़

जगहों में सफ़र करना मुराद है और वह लोग मुराद हैं जो पहाड़ों और ग़ारों और जंगलो में फिरते रहते हैं और बस्ती से भागते रहते हैं इसलिए कि ऐसा करना मशरूअ नहीं है। हाँ! जब फ़ित्ना का ज़माना हो और दीन में तज़लज़ुल वाक़ेअ हो जाए तो यह ह़दीसे सह़ीह़ बुख़ारी में अबू सईद ख़ुदरी (रह़.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अन्क़रीब वह ज़माना आने वाला है जबकि किसी का बेहतरीन माल उसकी बकरियाँ होंगी, जिनको वह पहाड़ों में और बारिश की जगहों में हाँके लिए फिरता होगा और फ़ित्नों से बचने के लिए अपने दीन को लिए भागता होगा।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब मिनद्दीनिल फ़रारि मिनल फ़ितन : 19) (अल्ह़ाफ़िज़ूना लि ह़ुदूदिल्लाह) से अल्लाह की इत़ाअत पर क़ायम रहने वाले लोग मुराद हैं। और ह़सन बस़री (रह़.) से रिवायत है कि फ़राइज़े इलाही को अंजाम देने वाले और अह़कामे इलाही पर क़ायम रहने वाले लोग मुराद हैं।

***

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ
مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۭ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾

तर्जुमा : "पैग़म्बर (ﷺ) को और दूसरे मुसलमानों को जाइज़ नहीं कि मुश्रिकीन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ मांगें अगरचे वह रिश्तेदार ही हों, इस अम्र के ज़ाहिर हो जाने के बाद कि यह लोग दोज़ख़ी हैं। (113) और इब्राहीम (अ.) का अपने बाप के लिए दुआए मग़्फ़िरत करना वह सिर्फ़ वादे के सबब से था जो उन्होंने अपने वालिद से कर लिया था। फिर जब उन पर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बिलकुल बेताल्लुक़ हो गए, वाक़ई इब्राहीम (عليه السلام) बड़े रह़ीमुल मिज़ाज ह़लीमुत्तबअ (दानिशवर) थे।" (114)

मुश्रिकीन के लिए दुआए मग़्फ़िरत की मुमानिअत (आयत 113, 114) : मुस्नद इमाम अह़मद में इब्नुल मुसय्यिब (रह़.) से रिवायत है कि अबू त़ालिब जब बिस्तरे मर्ग पर थे तो नबी (ﷺ) तशरीफ़ लाए, उनके पास अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बैठे हुए थे। आप (ﷺ) ने अबू त़ालिब से फ़र्माया कि "ऐ चचा! आप (ला इलाहा इल्लल्लाह) कह दीजिए मैं इसी एक जुम्ले की आड़ लेकर अल्लाह के पास आपकी बख़्शिश के लिए ह़ुज्जत पेश करूँगा।" तो अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा कि ऐ अबू त़ालिब! क्या तुम मिल्लते अ़ब्दुल मुत्तलिब से रूगर्दानी करोगे? तो अबू त़ालिब ने कहा कि मैं वाक़ई मिल्लते अ़ब्दुल मुत्तलिब पर जान दूँगा। तो नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मैं उस वक़्त तक आपकी मग़्फ़िरत की

दुआ करता रहूँगा जब तक कि अल्लाह मुझे मना न कर दे।'' चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुई (मा काना लिन्नबिय्यि .....) यानी नबी और ईमान वालों को यह लायक़ नहीं कि मुश्रिकों के लिए इस्तिग़्फ़ार करें, आख़िर तक। और यह आयत भी इसी के बारे में नाज़िल हुई (28/क़सस : 56) (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बरा'त बाब क़ौलुहू (मा कान लिन्नबिय्यि वल्लज़ीना आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल मुश्रिकीन...) : 4675; सहीह मुस्लिम : 24; अहमद : 5/433; अल्मुअजमुल कबीर : 820; सुननुल कुब्रा : 2162; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/342) यानी तुम जिसको दोस्त रखते हो उसको हिदायत नहीं कर सकते, अल्लाह जिसको चाहे हिदायत करे।

अली (रज़ि.) से मरवी है कि मैंने एक आदमी को देखा कि वह अपने मुश्रिक माँ बाप के लिए मग़्फ़िरत की दुआएँ कर रहा है तो मैंने उससे कहा कि मुश्रिकों के लिए तुम इस्तिग़्फ़ार कर रहे हो। तो उसने कहा कि क्या इब्राहीम (ﷺ) ने अपने मुश्रिक वालिद के लिए इस्तिग़्फ़ार नहीं किया था? मैंने यह वाक़िया नबी (ﷺ) से ज़िक्र किया। चुनाँचे मुंदर्जा बाला आयत नाज़िल हुई। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित्तौबा : 3101; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और सिमाअ की सराहत नहीं है। नसाई : 2038; अहमद : 1/99; हाकिम : 2/335)

(लि अबीहि) के बाद (लम्मा मात) (यानी जब इब्राहीम ﷺ के वालिद इंतिक़ाल कर गए) के अल्फ़ाज़ भी कहे, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि यह अल्फ़ाज़ सुफ़ियान ने ख़ुद कहे या इस्राईल ने या ख़ुद हदीस में यह अल्फ़ाज़ शामिल थे। मैं कहता हूँ कि साबित है कि यह अल्फ़ाज़ मुजाहिद ने कहे।

मुस्नद इमाम अहमद में है कि बुरैदा (रज़ि.) ने रिवायत की कि हम नबी (ﷺ) के साथ थे और सफ़र में थे कि एक जगह उतरे और हम तक़रीबन एक हज़ार सवार थे। आपने यहाँ दो रकअतें पढ़ीं, फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जा हुए तो हमने देखा कि आपकी आँखों से आंसू बह रहे हैं। उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आपके पास आए और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान, आप क्यूँ रो रहे हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, ''मैंने अल्लाह से दरख़्वास्त की थी कि मेरी माँ के लिए इस्तिग़्फ़ार की मुझे इजाज़त दे लेकिन अल्लाह तआला ने इजाज़त नहीं दी, तो आग के डर से माँ पर मेरा दिल बड़ा दुखा और मेरी आँखें अश्क (आँसू) आलूद हो गईं, मैंने इससे पहले तुमको तीन बातों से मना किया था, ज़ियारते क़ुबूर से, लेकिन अब क़ुबूर की ज़ियारत कर सकते हो, सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से कि क़ब्रिस्तान जाने से तुमको अपनी मौत याद आ जाए और तुम नेकियों की तरफ़ माइल होने लगो, मैंने क़ुर्बानी का गोश्त तीन दिन से ज़्यादा उठा रखने पर मना किया था, अब चाहे जितना खाओ और जितना ज़ख़ीरा कर रखो। और बर्तनों से पीने के बारे में मेरी मुमानिअत थी, अब चाहे जिस बर्तन से पियो लेकिन कोई नशा वाली चीज़ न पीना।'' (अहमद : 5/355; सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, बाब इस्तिअज़ानुन्नबी (ﷺ) रब्बहू फ़ी ज़ियारति क़ब्रे उम्मिही : 977; इब्ने हिब्बान : 5390) बुरैदा (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब मक्का की तरफ़ आने लगे तो राह में एक क़ब्र के पास बैठ गए और क़ब्र को ख़िताब करने लगे, फिर रोते हुए उठ खड़े हुए तो हमने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने आपकी मसरूफ़ियत देखी है, तो आप फ़र्माने लगे कि ''मैं ने अपनी माँ की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त

अल्लाह से तलब की थी तो मुझे इजाज़त मिल गई। फिर मैंने इस्तिग़फ़ारे वालिदा की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त नहीं मिली। आप उस दिन इतना रोए कि कभी उतना नहीं रोये थे।'' (तब्री : 6/479)

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि एक दिन नबी (ﷺ) क़ब्रिस्तान की तरफ़ निकल खड़े हुए, हम भी आपके पीछे हो लिए। आप एक क़ब्र के पास बैठ गए। फिर बहुत देर तक मुनाजात में रहे फिर आप रोने लगे। आपको देखकर हम भी रोने लगे। अब उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आपकी तरफ़ गए। आप(ﷺ) ने उ़मर (रज़ि.) को और हमें बुलाया और पूछा, ''तुम क्यूँ रोये?'' हमने कहा कि, आप (ﷺ) का रोना देखकर हमें भी रोना आ गया। कहने लगे कि, ''क़ब्र जहाँ मैं बैठा था, यह आमिना की क़ब्र है।'' मैंने इस क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त अल्लाह से चाही थी तो मुझे इजाज़त मिल गयी।'' (हाकिम : 2/336; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) इस हदीस को एक दूसरी तरह भी बयान किया गया है। फिर हदीसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) भी तक़रीबन यूँ ही है लेकिन उसमें और यह भी है कि मैंने आमिना के लिए दुआ की इजाज़त अल्लाह से मांगी थी लेकिन इजाज़त नहीं मिली और मुंदर्जा बाला आयत नाज़िल हुई यानी (मा काना लिन्नबिय्यि वल्लज़ीना आमनू) चुनाँचे अपने बाप के लिए एक औलाद का दिल जैसे दुख सकता है मेरा भी दिल दुखा। मैंने तुमको ज़ियारते कुबूर से मना किया था अब ज़ियारत किया करो, यह चीज़ आख़िरत की याद दिलाएगी।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) जब ग़ज़्व-ए-तबूक से वापिस हुए और उ़मरा की निय्यत बाँधी और जब अ़स्फ़ान की घाटी से उतरे तो अपने अस्हाब (रज़ि.) को हुक्म दिया कि ''तुम लोग उ़क़्बा में आराम से बैठो मैं अभी वापिस आता हूँ।'' आप गए और अपनी माँ की क़ब्र के पास ठहरे और रब से बड़ी देर तक मुनाजात की, फिर आप रोने लगे और बहुत रोये। आपको देखकर और लोग भी रोने लगे और कहा, यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) को किस चीज़ ने रुलाया, क्या ऐसी कोई नई बात तो उम्मत में नहीं पैदा हो गई जिसको आप सिहार (बर्दाश्त) नहीं सकते थे। आप यह देखकर उनकी तरफ़ आये और कहा, ''तुम क्यूँ रोते हो?'' कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको रोता देखकर हम भी रो पड़े हैं। हमने ख़याल किया कि उम्मत में कोई नया हादिसा तो नहीं हो गया जिसको आप बर्दाश्त नहीं कर सके। फ़र्माया ''नहीं! एक मामूली सी बात थी, वाक़िया यह है कि मैं माँ की क़ब्र के पास ठहरा था और क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला से उनकी सिफ़ारिश के लिए इजाज़त चाही थी। तो अल्लाह ने इजाज़त देने से इंकार कर दिया। मुझ पर बहुत रिक़्क़त तारी हुई क्यों कि वह मेरी माँ थीं फिर जिब्राईल (अ.) नाज़िल हुए और कहा कि ''इब्राहीम (عليه السلام) का अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार करना सिर्फ़ इस बिना पर था कि बाप से उन्होंने वादा कर रखा था कि दुआ करूँगा लेकिन जब हुक्मे इलाही के ज़रिये मालूम हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो फिर दस्तबरदारी इख़्तियार की। पस ऐ नबी (ﷺ)! आप भी अपनी माँ से इब्राहीम (अ) की तरह दस्तबरदार हो जाओ'' वह मेरी माँ थीं, मेरा दिल कैसे न कुढ़ता। मैंने अल्लाह से दुआ की थी कि मेरी उम्मत से चार चीज़ों का बोझ उठा ले, तो अल्लाह तआ़ला ने दो अ़ज़ाब उठा लिए और दो अ़ज़ाब बाक़ी रखे। मैंने दुआ की थी कि आसमान से संगबारी मेरी उम्मत पर न हो जैसे दूसरी उम्मतों पर हुई है और अ़ज़ाब के तौर पर ज़मीन में वह न धंसा दिए जाएँ और उनका तब्क़ा उलट न जाए और यह कि उनमें फूट और गिरोह बंदी और फ़िर्क़ाबन्दी न हो और उनमें आपस में जंग न हो। तो अल्लाह पाक ने आसमान से संगबारी और ग़र्क़ुन फ़िल अर्ज़ि के बारे में दुआ तो क़बूल कर ली और

क़िताल और फूट के बारे में दुआ क़बूल नहीं की।'' आप रास्ता काटकर अपनी माँ की क़ब्र की तरफ़ गए थे, क्योंकि आमिना एक टीले तले मदफ़ून थीं। यह हदीस ग़रीब है और इसका सियाक़ अजीब है।

और इससे भी ज़्यादा अजीब और क़ाबिले इंकार तो वह रिवायत है कि जो ख़तीब बग़दादी ने किताबुस्साबिक़ वल लाहिक़ में बसनदे मज्हूल बयान की है और हज़रत आइशा (रज़ि.) से इस्नाद जोड़ी है यह कहानी यूँ बयान की है कि अल्लाह ने नबी अकरम (ﷺ) की माँ आमिना को ज़िन्दा किया था, ज़िन्दा होकर वह ईमान ले आईं, फिर मर गईं। (अल्मौज़ूआत : 1/283; इमाम ज़हबी (रह.) कहते हैं कि यह रिवातय किज़्ब (झूठ) है।(लिसानुल मीज़ान : 4/91) सुहैली ने भी अरोज़ में मज्हूलीन की एक जमाअत से सनद लेते हुए कहा कि अल्लाह तआला ने नबी अकरम (ﷺ) की माँ और बाप को ज़िन्दा कर दिया था और वह ईमान ले आए थे। हाफ़िज़ इब्ने दह़िया कहते हैं कि हदीस झूठी है। कुरआन और इज्माअ दोनों इसको रद्द करते हैं, अल्लाह ने ख़ुद कुरआन में फर्माया है (وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ) (4/निसाअ : 18) न वह लोग बख़्शे जाएँगे जो कुफ्र की हालत में मर गए। अबू अब्दुल्लाह कुर्तुबी (रह.) कहते हैं कि इस हदीस के मुक़्तज़ा पर ग़ौर करो, और अबू अब्दुल्लाह ने बड़ा तीर मारकर यह इस्तिदलाल पेश किया है कि यह हयाते जदीद बिलकुल इसी तरह हो सकती है जैसे अस्र का वक़्त गुज़र जाने पर नबी अकरम (ﷺ) के मोजिज़ा से सूरज फिर डूबने के बाद निकल आया और आप (ﷺ) ने नमाज़े अस्र पढ़ ली थी। इस इस्तिदलाल के ज़रिये इब्ने दह़िया की तर्दीद की है। तहावी (रह.) कहते हैं कि शम्स वाली हदीस साबित है। कुर्तुबी (रह.) कहते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) के वालदेन का ज़िन्दा हो जाना न अक़्लन मुम्तनेअ है और न शरअन और मैंने तो सुना है कि अल्लाह तआला ने आपके चचा अबू तालिब को भी ज़िन्दा किया था और वह ईमान ले आये थे। मैं कहता हूँ कि यह सब सेहते हदीस पर मौक़ूफ़ है अगर हदीस सह़ीह़ है तो कोई मानेअ नहीं और हदीस ही सह़ीह़ न हो तो कोई झगड़ा ही नहीं, वल्लाहु आलम!

औफ़ी (रह.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत की है कि नबी (ﷺ) ने अपनी माँ के लिए इस्तिग़फ़ार का इरादा किया था तो अल्लाह तआला ने रोक दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार किया था तो (वमा कानस्तिग़फ़ारु) वाली आयत उतरी।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत के बारे में मरवी है कि लोग अपने मुर्दों के लिए इस्तिग़फ़ार करते थे, तो इस्तिग़फ़ारे इब्राहीम वाली आयत नाज़िल हुई थी। चुनाँचे लोग इस नाजाइज़ इस्तिग़फ़ार से बाज़ आ गए लेकिन मुसलमान अपने ज़िन्दा मुश्रिकीन के लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करने से नहीं रोके गए हैं।

क़तादा (रह.) ने इस आयत के बारे में कहा है कि नबी (ﷺ) के कुछ अस्हाब (रज़ि.) ने कहा, या नबी (ﷺ)! हमारे आबा व अज्दाद (पुर्वज) बड़े नेक लोग थे। पड़ौसी के साथ बड़ा अच्छा बर्ताव करते थे, सिलारहमी के आदी थे, क़ेदियों को छुड़ा देने और लोगों को तावान अदा करने के लिए रक़में देते, क्या हम उन मुर्दों के लिए इस्तिग़फ़ार न करें? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्यूँ नहीं! अल्लाह की क़सम! मैं भी इब्राहीम (عليه السلام) की तरह अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा।'' चुनाँचे फ़ौरन यह आयत उतरी कि नबी और मुसलमानों को अम्वाते (मुर्दे) मुश्रिकीन के लिए दुआ करना जाइज़ नहीं। फिर अल्लाह तआला इब्राहीम

(अलैहि.) की तरफ़ से सफ़ाई पेश करता है कि इब्राहीम (अलैहि.) का इस्तिग़फ़ार तो महज़ वादा की वजह से था। फिर आपने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला ने चंद कलिमात मुझ पर इल्क़ा फ़र्माए हैं जो मेरे कानों में गूँज रहे हैं और मेरे दिल में क़रार पज़ीर हैं। मुझे हुक्म हुआ है कि बहालते शिर्क मरने वाले के लिए मग़्फ़िरत तलब न करूँ और जिसने अपनी ज़रूरत से फ़ालतू माल सदक़ा कर दिया वह उसके लिए बड़ी ख़ैर का सबब है और जिसने रोक रखा वह उसके लिए शर का सबब होगा और हस्बे ज़रूरत खाने और ख़र्च करने पर अल्लाह का कोई ऐतिराज़ नहीं। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि एक यहूदी मर गया, उसका बेटा मुसलमान था, उसके कफ़न दफ़न के लिए आया तक नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) को इल्म हुआ तो कहा कि बेटे को ज़रूरी था कि वालिद का जाकर कफ़न दफ़न करता और ज़िन्दा रहने तक उसकी ख़ैर व फ़लाह के लिए दुआ करता और मर जाने पर उसको उसके हवाले कर देता और उसके लिए दुआ न करता। उसकी सेहत की शहादत इस रिवायत से मिलती है जो हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि जब अबू तालिब मर गए तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके गुमराह चचा मर गए हैं तो आपने फ़र्माया, जाओ इन्हें दफ़ना दो और कुछ न करना मेरे पास आ जाना। (अबूदाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब अर्रजुल यमूतु लहू क़राबतुन मुश्रिक : 3214; वहुव हसन; नसाई : 2008) फिर पूरी हदीस बयान की और रिवायत की न [illegible] (ﷺ) के सामने से जब अबू तालिब का जनाज़ा गुज़रा, तो आप (ﷺ) ने फ़माया कि "चचा! मैंने तो सिलह रहमी का हक़ अदा कर दिया।" (तब्क़ात : 1/99; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा मौज़ूअ इसकी सनद में वाक़ेदी मतरूक रावी है। (अत्तक़रीब : 2/194; रक़म : 567) और अता बिन अबी रिबाह (रह.) कहते हैं कि मैं किसी अहले क़िब्ला की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से न रुकूँगा। ख़्वाह वह नाजाइज़ हमल वाली कोई हब्शन ही क्यूँ न हो। इसलिए कि सलाते जनाज़ा दुआ है और मुश्रिकीन के सिवा किसी के लिए दुआ करने से अल्लाह ने नहीं रोका है।

इब्ने जरीर (रह.) से रिवायत है कि अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते थे कि अल्लाह उस आदमी पर रहम करे जो अबू हुरैरा (रज़ि.) और उसकी माँ के लिए दुआए मग़्फ़िरत करे। मैंने कहा, और वालिद के लिए तो अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया, नहीं! मेरा बाप मुश्रिक मर गया था, और क़ौलुहू तआला (फ़लम्मा तबय्यना) के बारे में इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि इब्राहीम (अ) बाप के मरने तक इस्तिग़फ़ार की दुआ करते रहे और मर जाने के बाद जब मालूम हुआ कि वह अल्लाह के दुश्मन थे तो दस्तबरदारी इख़्तियार कर ली।

सईद बिन जुबेर (रह.) से मरवी है कि क़यामत के दिन इब्राहीम (अलैहि.) जब बाप से मिलेंगे तो उनसे दस्तबरदार रहेंगे। बाप बदहवास और परेशान होगा और कहेगा कि ऐ इब्राहीम (अ.)! मैंने तेरी नहीं सुनी लेकिन आज तेरा ख़िलाफ़ न करूँगा। तो इब्राहीम (अलैहि.) कहेंगे, ऐ रब! क्या तूने मुझसे वादा नहीं किया था कि क़यामत के दिन मुझे रुस्वा न करेगा पस आज के दिन इस रुस्वाई से बढ़कर और कौनसी रुस्वाई हो सकती है। तो कहा जाएगा कि तुम पीछे पलटकर तो देखो, देखते हैं कि वह एक नीम जान जानवर लुथड़ा पड़ा है और एक बिज्जू की शक्ल में मस्ख़ शुदा है जिसकी टांगे खींचकर जहन्नम की तरफ़ ले जाया जा रहा है। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीमा ख़लीला) : 3350; मरफ़ूअन)

क़ौलुहू तआला (इन्ना इब्राहीमा लअव्वाहुन हलीम) इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि (अव्वाहुन) के मअनी हैं बहुत दुआ वज़ारी करने वाला। इब्नुल हाद से मरवी है कि नबी (ﷺ) बैठे हुए थे कि एक आदमी ने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अव्वाह के क्या मअनी हैं? फ़र्माया "बहुत तज़र्रुअ करने वाला।" इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने इसके मअनी रहीम बताए। क़तादा (रह.) वग़ैरह ने रहीम बि इबादिल्लाह कहा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) इसके मअनी मोमिन बताते हैं। अली बिन अबू तलहा मोमिने तव्वाब (तौबा करने वाले मोमिन) कहते हैं।

उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) से मरवी है कि जुन्नजादैन नामी एक शख़्स के बारे में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "यह अव्वाह है।" जहाँ कहीं क़ुरआन में अल्लाह का नाम आ जाता तो यह शख़्स दुआ का एक नारा बुलंद करता। (अहमद : 4/159; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अबुद्दर्दा (रज़ि.) से मरवी है कि सुबह के वक़्त तस्बीह की जो पाबन्दी करता है उसको अव्वाह कहते हैं। अबू अय्यूब (रह.) कहते हैं कि अव्वाह वह है जो अपने गुनाहों को याद करके इस्तिग़फ़ार करता है। मुस्लिम बिन बयान (रह.) कहते हैं कि एक आदमी कसरत से ज़िक्र व तस्बीह करता था तो नबी (ﷺ) ने उसको अव्वाह कहा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) ने एक शख़्स को दफ़न करने के बाद कहा "अल्लाह तुझ पर रहम करे, तू एक मर्दे अव्वाह था।" हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की मुराद कि क़ुरआन की बहुत तिलावत करने वाला था। एक शख़्स कअबतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए बवक़्ते दुआ आह-आह करता था। हुज़ूर (ﷺ) के सामने ज़िक्र हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, वह अव्वाह है। अबू ज़र्र (रज़ि.) कहते हैं कि एक रात मैं बाहर निकला तो देखा कि नबी (ﷺ) उसी शख़्स को चराग़ साथ लिए दफ़न कर रहे हैं। यह हदीस ग़रीब है इसको इब्ने जरीर (रह.) ने रिवायत किया है। सबसे अच्छा क़ौल तो यह है कि इसके मअनी दुआ के हैं और यह सियाक़ के मुनासिब भी हैं। यानी अल्लाह तआला ने जब ज़िक्र किया कि इब्राहीम (عليه السلام) का इस्तिग़फ़ार वादा करने की वजह से था और इब्राहीम (عليه السلام) कसीरुद्दुआ थे, नारवा बर्ताव करने वाले के साथ हलीम थे और इसीलिए तो बाप की अज़िय्यत (तकलीफ़) पहुँचाने के बावजूद उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते थे जैसाकि फ़र्माया अल्लाह तआला ने (أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾) (19/मरियम : 46, 47) यानी ऐ इब्राहीम (عليه السلام)! क्या तू मेरे अल्लाह से ऐराज़ करता है। देख अगर तू बाज़ न आएगा तो मैं पत्थर से तुझे मार दूँगा, मुझसे दूर रह। तो इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा, सलाम अलैक, जाता हूँ लेकिन आपके लिए अपने अल्लाह से ज़रूर दुआ करता रहूँगा, वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है। ग़र्ज़ यह है कि बाप की ईज़ारसानी पर भी इब्राहीम (عليه السلام) ने हिल्म इख़्तियार किया, बाप के लिए दुआ और इस्तिग़फ़ार की, चुनाँचे अल्लाह तआला ने हलीम का ख़िताब दिया।

***

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾

तर्जुमा : "और अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत के पीछे गुमराह कर दे जब तक कि उन चीज़ों को साफ़-साफ़ न बतला दे जिनसे वह बचते रहें, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (115) बिला शुब्हा अल्लाह ही की सल्तनत है आसमानों और ज़मीन में वही जिलाता और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई वली है, न मददगार है।" (116)

अल्लाह तआला हुज्जत को पूरा किये बग़ैर लोगों को अज़ाब नहीं देता (आयत 115, 116) : अल्लाह तआला अपने नफ़्से करीमा और हिक्मते आदिला के बारे में इर्शाद करता है कि जब तक अल्लाह किसी क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर भेजकर हुज्जत ख़त्म नहीं कर लेता है उसको गुमराही के लिए छोड़ नहीं देता जैसा कि दूसरी जगह फ़र्माया है कि अहले समूद को हमने हिदायत दी। मुजाहिद (रह.) ने क़ौलुहू तआला (वमा कानल्लाहु लि युज़िल्ला क़ौमम बअदा इज़ हदाहुम) के बारे में कहा कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला का बयान मोमिनीन से मुश्रिकीन के लिए तर्के इस्तिग़फ़ार के बारे में ख़ास है और वैसे मोमिनीन के लिए अल्लाह की इताअत और मअसियत का काम आम है यानी तुम अपनी मर्ज़ी के मुख़्तार हो, अपनी मर्ज़ी से ताअत इख़्तियार करो या मअसियत इख़्तियार करो छोड़ना चाहते हो तो छोड़ दो लेकिन तर्के इस्तिग़फ़ार का बयान उमूमी नहीं बल्कि ख़ुसूसी है। इब्ने जरीर (रह.) कहते हैं कि अल्लाह तआला कहता है कि अगर तुम अपने मुश्रिक मुर्दों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हो तो क्या ज़रूर है कि अल्लाह तुम्हें गुमराह क़रार दे दे जबकि उसने तुमको ज़ाती हद तक हिदायत की तौफ़ीक़ दे दी और अल्लाह और रसूल (ﷺ) पर ईमान लाने की इज़्ज़त बख़्शी, यहाँ तक कि तुमको मनहियात (हराम कामों) से रोक दिया और तुम इससे बाज़ रहे लेकिन क़ब्ल इसके कि वह इन मनहियात की कराहत और मुमानिअत बयान फ़र्माए और इन मनहियात की तरफ़ झुक पड़ो, वह क्यूँ तुम पर ज़लालत व गुमराही का हुक्म लगाए इसलिए कि ताअत व मअसियत तो अम्र व नही से ताल्लुक़ रखते हैं, लेकिन जो ईमान ही न लाया हो और न वह बाज़ रहा हो तो उसको हुक्म की अंजामदेही के बारे में मुतीअ और मम्नूअ मोमिन बन्दों के लिए मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार से क़िताल की तहरीज़ है और यह कि उन्हें अल्लाह की मदद का भरोसा रखना चाहिए और अल्लाह के दुश्मनों से डरना नहीं चाहिए क्योंकि उन्होंने अल्लाह को छोड़ दिया तो फिर उनका न कोई वली है, न मददगार।

हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) से मरवी है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि आपने

फ़र्माया, ''क्या तुम वह सुनते हो जो मैं सुनता हूँ'' तो लोगों ने कहा कि हम तो कुछ नहीं सुन रहे हैं, तो नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''मैं आसमान का चरचराना सुन रहा हूँ और वह बोझों क्यूँ न दबे और क्यूँ न चरचराए, आसमान में बालिश्त भर जगह भी तो ऐसी नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता सज्दा या क़याम में मौजूद न हो।'' (इब्ने अबी ह़ातिम, व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सईद व क़तादा अन्अन) कअ़ब अह़बार (रह़.) कहते हैं कि सूई की नोक बराबर भी कोई जगह ज़मीन में ऐसी नहीं जहाँ कोई फ़रिश्ता अल्लाह की तस्बीह़ में मस़रूफ़ न हो और आसमान के फ़रिश्ते ज़मीन के ज़र्रात से ज़्यादा तादाद में हैं और अ़र्श के ह़ामिल फ़रिश्तों के टख़्ने से साक़ तक की मसाफ़त एक सौ बरस की मसाफ़त है।

***

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ
﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ
عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बर (ﷺ) के ह़ाल पर तवज्जा फ़र्माई और मुहाजिरीन और अंस़ार के ह़ाल पर भी जिन्होंने ऐसी तंगी के वक़्त पैग़म्बर (ﷺ) का साथ दिया बाद उसके कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ तज़लज़ुल हो चला था, फिर अल्लाह ने उनके ह़ाल पर तवज्जा फ़र्माई, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला इन सब पर बहुत ही शफ़ीक़ मेहरबान है। (117) और तीन शख़्सों के ह़ाल पर भी जिनका मामला मुल्तवी छोड़ दिया गया था यहाँ तक कि जब ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के उन पर तंग होने लगी थी और वह ख़ुद अपनी जान से तंग आ चुके थे और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं पनाह नहीं मिल सकती, सिवाए उसके कि उसी की त़रफ़ रुजूअ किया जाए फिर उनके ह़ाल पर तवज्जा फ़र्माई ताकि वह आइन्दा भी रुजूअ किया करें बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत तवज्जा फ़र्माने वाले बड़े रह़म वाला है। (118) ऐ ईमानवालो! अल्लाह तआ़ला से डरो! और सच्चों के साथ रहो।'' (119)

जंगे तबूक एक मुश्किल तरीन सफ़र (आयत 117-119) : मुजाहिद (रह़.) वग़ैरह ने बयान किया है कि यह आयत ग़ज़्व-ए-तबूक के बारे में है। यानी लोग जब ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए निकले तो बड़ी सख़्त

गर्मी थी, साले क़हतज़दा था पानी और राह का सामान की सख़्त तंगी थी। (तब्री : 14/540) क़तादा (रह.) कहते हैं कि जंगे तबूक के लिए जब चल खड़े हुए तो बड़ी सख़्त गर्मी थी, अल्लाह ही जानता है कि कैसी सख़्त मुसीबतें मुजाहिदीन को पहुँचीं, यहाँ तक कि कहा जाता है कि एक खजूर के दो टुकड़े करके दो आदमियों में बांट दिया जाता था। खजूर दस्त-ब-दस्त बढ़ाई जाती, एक उसको थोड़ा चूसता फिर पानी पी लेता फिर दूसरा चूसता और पानी पीकर तसल्ली हासिल कर लेता। फिर अल्लाह तआला ने उनकी सुन ली, ग़ज़्वा से वापिस हुए। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से तंगदस्ती की कैफ़ियत पूछी गई तो कहा कि हम जंगे तबूक के लिए नबी करीम (ﷺ) के साथ निकले। सख़्त गर्मी का ज़माना था। हमने एक जगह क़याम किया, वहाँ ऐसी ज़बरदस्त तश्नगी प्यास से हमें सामना करना पड़ा कि हमने गुमान कर लिया कि हमारा दम ही निकल जाएगा। अगर कोई आदमी पानी की तलाश में जाता तो वह यक़ीन कर लेता कि वापिस होने से पहले उसको मौत आ जाएगी। लोग ऊँटों को ज़िब्ह करते उनके मादों में एक मक़ाम पर पिये हुए पानी का ज़ख़ीरा जमा रहता है, उसको निकाल लेते और पी लेते और बचा हुआ कुछ हिस्सा अपने जिगर पर लगा लेते। तो अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को कुबूलियत का शर्फ़ बख़्शा है हमारे लिए दुआ कीजिए! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, "क्या तुम ऐसा चाहते हो?" सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, हाँ! तो आप (ﷺ) ने अपने दोनों हाथ दुआ के लिए उठाए, अभी दुआ ख़त्म नहीं हुई थी कि बादल छा गए और मूसलाधार बारिश होने लगी। फिर थोड़ी देर बाद पानी थम गया। लोगों ने अपने बर्तन भर लिए। अब हम लश्कर के पड़ाव से बाहर निकले तो देखा कि छावनी से आगे कहीं पानी नहीं बरसा है।

इब्ने जरीर क़ौलुहू तआला (लक़त्ताबल्लाहु) के बारे में कहते हैं कि इस आयत में उसरत से मुराद नफ़्क़ा ज़ादे राह और पानी की तंगी मुराद है। (मिम् बअदि मा काद) यानी उसके बाद कि उनके दिल बदगुमान और शक से टेढ़े होने लगे थे, हक़ से हटने लगे थे। जो मशक़्क़त और शिद्दत व मुसीबत कि इस सफ़र में पड़ी उससे लोगों के दिल दीने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शक में पड़ गए थे, अब अल्लाह तआला ने उन पर रहम किया और अपनी तरफ़ रुजूअ होने की तौफ़ीक़ बख़्शी और इस्बात अलद्दीन (दीन पर मजबूती) की इज़्ज़त अता फ़र्माई। वह तो बड़ा मेहरबान और रहीम है। (तब्री : 14/539)

पीछे रहने वाले तीन मुख़्लिस मुसलमानों की तौबा : इब्ने कअब (रह.) से मरवी है कि ग़ज़्व-ए-तबूक में अपने शरीक न होने की दास्तान और नबी अकरम (ﷺ) का साथ न देने का वाक़िया कअब बिन मालिक (रज़ि.) यूँ बयान करते हैं कि मैं ग़ज़्व-ए-तबूक के सिवा और किसी जंग में नबी अकरम (ﷺ) के साथ से महरूम न रहा। अल्बत्ता जंगे बद्र में भी मैं न जा सका था। लेकिन उन शिर्कत न करने वालों पर कोई एताब नहीं हुआ था। बात यह थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त कुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़ातिर मदीना से बाहर निकले थे। वहाँ हस्बे मंश-ए-इलाही अल्लाह के दुश्मनों से तसादुम हो गया कोई क़रारदाद भी नहीं थी। मैं लैलतुल उक़्बा में नबी (ﷺ) के साथ था, जबकि इस्लाम पर हमने अहदो-पैमान बाँधा था और मेरे लिए तो लैलतुल उक़्बा में हुज़ूरी ग़ज़्व-ए-बद्र की हुज़ूरी से भी कहीं ज़्यादा पसंद थी, अगरचे बद्र की शोहरत और

आवाज़ा (धूम) लोगों में बहुत ज़्यादा है। अब ग़ज़्व-ए-तबूक में नबी अकरम (ﷺ) के साथ शिर्कत से महरूम रहने का मेरा वाक़िया यह है कि जिस ज़माना में मैं शिर्कते तबूक से पीछे रह गया उस वक़्त मैं इंतिहाई ख़ुशहाली और मालदारी में था।

इससे पहले दो सवारियाँ मेरे पास कभी नहीं हुई थीं और उस जंग में तो दो सवारियाँ भी रख सकता था। रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी जंग का इरादा करते तो आम तौर पर उस ख़बर को फैलने न देते। जब यह जंग हुई है तो बड़ी सख़्त गर्मी का ज़माना था, दूर दराज़ और जंगलों का सफ़र दरपेश था और दुश्मनों की बहुत बड़ी फ़ौज से सामना था। नबी (ﷺ) ने अपने उमूर में मुसलमानों को आज़ाद रखा था कि जिस तरह चाहें दुश्मन के मुक़ाबले की तैयारी कर लें और अपना इरादा मुसलमानों पर ज़ाहिर कर दिया था और मुसलमान नबी अकरम (ﷺ) के साथ इस कसीर तादाद में थे कि दर्जे रजिस्टर न हो सकते थे। कअ़ब (रज़ि.) कहते हैं कि बहुत कम ऐसे लोग होंगे कि जिनकी ग़ैरहाज़िरी का नबी अकरम (ﷺ) को इल्म हो सकेगा बल्कि गुमान था कि कसरते लश्कर की वजह से ग़ायब रहने वाले का नबी अकरम (ﷺ) को इल्म भी न हो सकेगा जब तक कि अल्लाह ही की तरफ़ से बज़रिया वह्यी इल्म न हो जाए। यह लड़ाई जिस वक़्त पेश आई थी वह ज़माना फलों के पकने का था, साया गस्तरी, बारआवरी और ख़नकी का मौसम था। ऐसे ज़माने में मेरी तबीयत आराम तलबी और राहतगीरी की तरफ़ बहुत माइल हो गई। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने और मुसलमानों ने तैयारियाँ शुरु कर दीं। मैं सुबह उठकर जिहाद की तैयारी के लिए बाहर निकलता लेकिन ख़ाली वापिस होता और तैयारी और अस्बाबे सफ़र की ख़रीददारी वग़ैरह कुछ न करता, दिल बहला लेता कि जब मैं चाहूँगा दम भर में तैयारी कर लूँगा। दिन गुज़रते चले गए, लोगों ने तैयारियाँ मुकम्मल कर लीं यहाँ तक कि नबी (ﷺ) और उनके साथ दीगर मुसलमान चल खड़े हुए, जिहाद के लिए रवाना हो गए। मैंने दिल में कहा कि एक दो दिन बाद तैयारी करके मैं भी मिल जाऊँगा, इस अ़र्सा में मुसलमानों का लश्कर बहुत दूर जा चुका था। मैं तैयारी के लिए बाहर निकला लेकिन फिर बग़ैर तैयारी के वापिस आ गया, यहाँ तक कि हर दिन यही होता रहा, दिन निकल गए। लश्कर जंग करने लगा। अब मैंने कूच का इरादा कर लिया कि जल्दी से पहुँचकर शामिल हो जाऊँ, काश! अब भी कूच कर लेता लेकिन आख़िरकार यह भी न हो सका। अब नबी अकरम (ﷺ) के तशरीफ़ ले जाने के बाद जब कभी मैं बाज़ार में निकलता तो मुझे यह देखकर बड़ा दुख होता है कि जो मुसलमान नज़र आता है उस पर या तो निफ़ाक़ की फटकार नज़र आती है या ऐसे मुसलमान दिखाई देते हैं जो वाक़ेई अल्लाह की तरफ़ से माज़ूर और लंगड़े लूले थे। जब नबी अकरम (ﷺ) तबूक पहुँच चुके थे तो मुझे याद फ़र्माया और पूछा, कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) क्या कर रहे हैं? तो बनी सलमा के एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसको ख़ुशऐशी और आरामतलबी ने मदीना ही में रोक लिया है। तो मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) ने कहा, तुमने ग़लत ख़याल क़ायम किया। या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसे तो भलाई और नेकी के सिवा कुछ नहीं आता। रसूलुल्लाह (ﷺ) यह सुनकर ख़ामोश हो गए और जब रसूल (ﷺ) तबूक से वापिस तशरीफ़ लाने लगे तो मैं सख़्त परेशान था कि अब क्या करूँ। मैं ग़लत हीले सोचने लगा ताकि आपके एताब से महफ़ूज़ रह सकूँ। चुनाँचे हर एक से राय लेने लगा और जब मालूम हुआ कि नबी अकरम (ﷺ) तशरीफ़ ला चुके हैं तो

अब सच कहने का इरादा कर लिया। नबी (ﷺ) जब सफ़र से वापिस आए तो सबसे पहले मस्जिद गए। दो रकअत नमाज़ पढ़ी फिर लोगों के साथ मज्लिस की। अब जंग में शरीक न रहने वाले आ आकर उ़ज़्र माज़िरत करने लगे और क़समें खाने लगे, ऐसे लोगों की तादाद अस्सी (80) से कुछ ऊपर थी। नबी (ﷺ) बहुक्मे ज़ाहिर उनकी बात क़बूल किए जा रहे थे और उनकी कोताहियों के लिए तलबे मग़्फ़िरत कर रहे थे लेकिन उनके दिलों के भेदों को अल्लाह के हवाले कर रहे थे। मेरी बारी आई मैंने आकर सलाम अ़र्ज़ किया। आप (ﷺ) गुस्से में मुस्कुराये, फिर मुझसे कहा, ''यहाँ आओ!'' मैं सामने जा बैठा। मुझसे फ़र्माया, ''तुम क्यूँ रुक गए, क्या तुमने तैयारी जिहाद में ख़रीददारी नहीं कर ली थी।'' मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर मैं इस वक़्त आपके सिवा किसी और से बोलता तो ऐसे माक़ूल उ़ज़्रात पेश कर सकता कि उनको ज़रूर क़बूल कर लेता क्योंकि मुझे बह्सो तकरार व माज़िरत करना ख़ूब आता है, लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं जानता हूँ कि इस वक़्त तो झूठी बात बनाकर मैं आपको राज़ी कर लूँगा। लेकिन जल्द ही अल्लाह आपको मुझसे नाराज़ कर देगा, और अगर मैंने सच-सच कह दिया तो हुस्ने आक़िबत की मुझे अल्लाह की तरफ़ से उम्मीद हो सकती है।

ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! मैं कोई माक़ूल उ़ज़्र नहीं रखता था, मेरे पास अ़दमे शिर्कते जंग का दरहक़ीक़त कोई बहाना नहीं। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! यह तो सच कहता है। अच्छा तो अब चले जाओ और इंतिज़ार करो कि अल्लाह तुम्हारे बारे में क्या हुक्म करता है। चुनाँचे मैं चला गया। बनी सलमा के लोग भी मेरे साथ उठे और साथ हो लिए और कहने लगे, अल्लाह की क़सम! हमने तुम्हें पहले कभी कोई ख़ता करते नहीं देखा है। दूसरे लोगों ने जैसे उ़ज़्रात पेश कर दिए तुमने हुज़ूर (ﷺ) के सामने कुछ भी बहाने कर लेता, वरना नबी (ﷺ) ने दूसरों के लिए जैसे इस्तिग़फ़ार किया था तुम्हारे लिए भी हुज़ूर (ﷺ) का यह इस्तिग़फ़ार काफ़ी होता। ग़र्ज़ यह कि लोगों ने इस बात पर इस क़द्र ज़ोर दिया कि मैंने एक बार यह इरादा कर लिया था कि फिर वापिस जाऊँ और कोई बहाना बना लूँ लेकिन मैंने उन लोगों से पूछा कि मेरी तरह क्या किसी और की भी सूरते हाल है? कहा, हाँ! तुम्हारी तरह और दो आदमी हैं कि सच सच कह दिया है। मैंने पूछा, वह कौन हैं। कहा गया कि मुरारा बिन रबीअ अल आमिरी और हिलाल बिन उमय्या वाफ़क़ी। कहा गया कि यह दोनों मर्दे सालेह हैं, बद्र में शरीक थे अब मेरे सामने उनका नक़्शे क़दम था इसलिए मैं दोबारा नबी अकरम (ﷺ) के पास न गया। अब मालूम हुआ कि नबी अकरम (ﷺ) ने हम तीनों से सलाम कलाम करने से लोगों को मुमानिअ़त कर दी है और लोगों ने हमारा बायकाट कर दिया है और हमसे ऐसे बदल गए हैं कि ज़मीन पर रहना मुझे बोझ मालूम होने लगा। हम पर इस तर्के ताल्लुक़ात के पचास दिन गुज़र गए। उन दोनों ने तो चेहरा छुपाकर ख़ाना नशीनी ही इख़्तियार कर ली, रोते बैठे रहे, मैं ज़रा सख़्त मिज़ाज था, कुव्वते बर्दाश्त थी। जाकर जमाअ़त के साथ बराबर नमाज़ पढ़ता था, बाज़ारों में घूमता था लेकिन मुझसे कोई बोलता न था। नबी अकरम (ﷺ) के पास आता, नबी अकरम (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा रहते, मैं सलाम करता और देखता कि जवाबे सलाम के लिए नबी अकरम (ﷺ) के होंठ हिलते हैं कि नहीं। फिर आपके क़रीब ही नमाज़ पढ़ लेता। कंखियों से आपको देखता, मैं नमाज़ पढ़ने लगता तो आप (ﷺ) मुझे देखते, मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जा हो जाता तो नज़र फेर लेते। जब इस बायकाट की मुद्दत लम्बी ही होती गई तो मैं अबू क़तादा (रज़ि.) के घर की

दीवार फांदकर उनके यहाँ गया, वह मेरे चचाज़ाद भाई थे, मैं उन्हें बहुत चाहता था। सलाम किया तो वल्लाह! उन्होंने जवाब न दिया। मैंने कहा, ऐ अबू क़तादा (रज़ि.)! तुम्हें अल्लाह की क़सम! क्या तुम नहीं जानते कि मैं अल्लाह को और रसूलुल्लाह (ﷺ) को दोस्त रखता हूँ। वह सुनकर ख़ामोश हो गए। मैंने अल्लाह की क़सम देकर बात की, फिर भी कुछ न बोले। मैंने फिर क़सम दी, कुछ भी न कहा लेकिन अंजानेपन से बोले, अल्लाह को और रसूलुल्लाह (ﷺ) को इल्म है। मैं फूट-फूटकर रोने लगा, फिर दीवार फांदकर वापिस हो गया।

एक दिन मैं बाज़ारे मदीना में घूम रहा था कि शाम का एक क़िब्ती तो मदीना के बाज़ार में खाने की कुछ चीज़ें बेच रहा था, लोगों से कहने लगा कि कअ़ब बिन मालिक का कोई पता दे दो। लोगों ने मेरी तरफ़ इशारा किया, वह मेरे पास आया और शाहे ग़स्सान का एक ख़त मेरे हवाले कर दिया। मैं चूँकि पढ़ा लिखा था, पढ़ा तो लिखा था कि,

''हमें ख़बर मिली है कि तुम्हारे आक़ा ने तुम पर सख़्ती की है। अल्लाह ने तुमको कोई मामूली आदमी तो नहीं बनाया है, तुम कोई गिरे पड़े नहीं हो. तुम हमारे पास आ जाओ हम तुमको नवाज़ेंगे।''

मैंने यह पढ़कर कहा, मुसीबत पड़ गई और यह कैसी मेरे अल्लाह नई मुसीबत। यह तो नई मुसीबत आ पड़ी। मैंने उस ख़त को आग में फेंक दिया और जब पचास में से चालीस दिन गुज़र गए तो नबी अकरम (ﷺ) का एक क़ासिद मेरे पास आया और कहा, नबी अकरम (ﷺ) ने हुक्म दिया है कि अपनी औरत से बिछड़े रहो। मैंने पूछा, क्या हुक्म है कि तलाक़ दे दूँ? कहा, नहीं सिर्फ़ अलग रहो, कुर्बत न करना, और कहा कि दूसरे दोनों के बारे में भी यही हुक्म हुआ है। चुनाँचे मैंने अपनी औरत से कह दिया कि वह अपने घर चली जाए, यहाँ तक कि अल्लाह का कोई और हुक्म पहुँचे। हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) की औरत नबी (ﷺ) के पास आई और अ़र्ज़ करने लगी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हिलाल (रज़ि.) कमज़ोर शैख़ है, उनकी ख़िदमत के लिए कोई आदमी नहीं अगर मैं उनकी ख़िदमत में लगी रहूँ तो आप (ﷺ) नामंज़ूर तो न करेंगे। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा लेकिन वह तुमसे कुर्बत न करे। कहने लगी, उस ग़रीब को तो हिलना जुलना मुश्किल हो गया है। आपकी नाराज़गी के दिन से आज तक लगातार रोता रहता है। मेरे घर वालों में से एक ने कहा कि तुम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपनी औरत से ख़िदमत लेने की इजाज़त हासिल कर लो, जैसे कि हिलाल (रज़ि.) को इजाज़त मिल गयी। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं इस बात की नबी अकरम (ﷺ) से दरख़्वास्त नहीं करूँगा, न मालूम नबी अकरम (ﷺ) क्या फ़र्माएँ मैं तो जवान आदमी हूँ मुझे किसी से ख़िदमत लेने की ज़रूरत नहीं अब हमने और दस दिन गुज़ारे और लोगों के इस क़तअ़ ताल्लुक़ को पचास दिन गुज़र गए, पचासवें दिन की सुबह अपने घर की छत पर सुबह की नमाज़ पढ़कर मैं इस हाल में बैठा हुआ था जैसाकि अल्लाह तआ़ला ने अपने कलामे मजीद में फ़र्माया है यानी मेरी जान मुझ पर भारी मालूम हो रही थी, यह वसीअ़ दुनिया मुझे तंग महसूस हो रही थी कि सल्अ पहाड़ी पर से एक पुकारने वाले की आवाज़ मेरे कान में पड़ी कि वह बुलंद आवाज़ में चीख़ रहा था कि ''ऐ कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.)! ख़ुश हो जाओ।'' मैं यह सुनते ही सज्दे में गिर पड़ा और समझ गया कि अल्लाह ने अब मेरी तौबा क़बूल कर ली, मुसीबत का ज़माना

गुज़र गया। सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़बर दी कि अल्लाह ने उन तीनों की तौबा क़बूल कर ली है। लोग हमें ख़ुशख़बरी देने के लिए दौड़े, उन दोनों के पास भी गए और मेरे पास भी एक सवार तेज़ घोड़ा दौड़ा हुआ आया लेकिन पहाड़ी पर चढ़कर आवाज़ देने वाला ज़्यादा कामयाब रहा कि जल्दतर मुझे ख़बर मिल गयी, क्योंकि घोड़े की रफ़्तार से आवाज़ की रफ़्तार तेज़ होती है। चुनाँचे जब वह शख़्स मुझसे मिला जिसकी आवाज़ मैंने सुनी थी तो उस ख़ुशख़बरी देने के सिले में अपने कपड़े उतारकर मैंने उसे पहना दिए। वल्लाह! मेरे पास उस वक़्त दूसरा जोड़ा नहीं था। मैंने अपने लिए मुस्तआर कपड़े लेकर पहन लिए। मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास जाने के इरादे से निकला। लोग मुझसे राह में जोक़ दर जोक़ मिलते और मुझे मुबारकबाद देते जाते। मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो नबी (ﷺ) लोगों के बीच बैठे हुए थे। मुझे देखते ही तलहा बिन उबेदुल्लाह (रज़ि.) रो पड़े, मुझसे मुसाफ़ा करके मुबारकबाद दी। मुहाजिरीन में से किसी ने उनके सिवा यह इक़्दाम नहीं किया था। कअब (रज़ि.) ने तलहा (रज़ि.) के उस ख़ुलूस को कभी फ़रामोश नहीं किया। मैंने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को सलाम किया। आपका चेहरा ख़ुशी से चमक उठा। कहने लगे, ख़ुश हो जाओ जबसे तुम पैदा हुए ऐसी ख़ुशी का दिन तुम पर न आया होगा। मैंने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह बशारत आपकी तरफ़ से है या अल्लाह की तरफ़ से? फ़र्माने लगे, अल्लाह की तरफ़ से नबी (ﷺ) जब ख़ुश हो जाते तो आपका चेहरा चमक उठता था गोया चाँद का टुकड़ा है और आपकी ख़ुशी आपके चेहरा ही से ज़ाहिर हो जाती। मैं ने नबी अकरम (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी क़बूलियते तौबा की यह बरकत होनी चाहिए कि मैं अपना सारा मालो मताअ अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की राह में लुटा दूँ। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ऐसा नहीं कुछ रखो और कुछ सदक़ा कर दो, यही बेहतर सूरत है।'' मैंने कहा कि ख़ैबर से जो हिस्सा मुझे मिला था वह मैं अपने लिए रख लेता हूँ, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सच्चाई की बरकतों की वजह से अल्लाह ने मुझे नजात बख़्शी, अल्लाह की क़सम! मैंने जब से नबी अकरम (ﷺ) से रास्तगोई का ज़िक्र किया फिर कभी झूठ नहीं बोला. अल्लाह से दुआ है कि वह आइन्दा भी कभी मुझसे झूठ न बुलवाए।

क़ौलुहू तआला (لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ) (9/तौबा : 117) के बारे में कअब (रज़ि.) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! जब से मैंने इस्लाम क़बूल किया है अल्लाह की उससे बड़ी नेअमत मुझ पर और क्या हो सकती है कि उसने मुझे हुज़ूर (ﷺ) के सामने सच सच कह देने की तौफ़ीक़ बख़्शी वरना मैं भी ऐसा ही हलाक हो जाता जैसा कि हुज़ूर (ﷺ) के सामने दूसरे झूठ मूट बोलने वाले आख़िरत की ज़िन्दगी के लिहाज़ से तबाह हो गए। ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है (سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ) (9/तौबा : 95)यानी जब तुम उनकी तरफ़ वापिस हुए तो क़समें खा खाकर यह लोग तुमसे बोलते हैं ताकि तुम उनसे ऐराज़ कर जाओ। हाँ ऐराज़ कर जाओ, उनके दिल नापाक हैं उनका ठिकाना जहन्नम है क्योंकि उन्होंने किया ही ऐसा। क़समें खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें। अगर तुम उनसे धोखा खाकर राज़ी भी हो गए तो क्या हुआ अल्लाह तो इन बदकारों से राज़ी न होगा।

यह आयत पढ़ने के बाद कअब (रज़ि.) कहते हैं कि हम तीन लोगों का फ़ैसला उन लोगों से पीछे

डाल दिया गया था जिन लोगों ने कि झूठी क़समें खा ली थीं और नबी अकरम (ﷺ) को बज़ाहिर मानकर उनकी बेअत क़बूल कर लेनी पड़ी थी और उनके लिए इस्तिग़फ़ार भी किया था लेकिन हमारा फ़ैसला हज़रत (ﷺ) ने रोक दिया था यहाँ तक कि अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई (व अलस्सलासतिल्लज़ीना ख़ुल्लिफ़ू)। यह हमें पीछे डाल देना इससे मुराद हमारा फ़ैसला पीछे डाल देना है, न यह कि हम शिर्कते जंग से पीछे डाल दिए गए थे। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ह़दीसे कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) : 4418; सह़ीह़ मुस्लिम : 2769; तिर्मिज़ी : 3102; इब्ने ह़िब्बान : 3370) यही ह़दीस सह़ी और साबित है और मुत्तफ़क़ अ़लैह है। बुख़ारी व मुस्लिम ने भी ह़दीसे ज़ोहरी से इसी त़रह़ रिवायत की है। यह ह़दीस बा ह़सन वुजूह इस आयत करीमा की तफ़्सीर कर रही है। सलफ़ में से तक़रीबन सबने इसी त़रह़ तफ़्सीर की है चुनाँचे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) का भी इस आयत में यही क़ौल है कि यह कअ़ब बिन मालिक, और हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअ़ (रज़ि.) के बारे में हैं। यह सब अंसारी सह़ाबी थे। और यही कहा है मुजाहिद, ज़ह्ह़ाक और क़तादा और सुद्दी (रह़ि.) वग़ैरह ने। सबने मुरारा बिन रबीअ (रज़ि.) कहा है और मुस्लिम में इब्ने रबीआ लिखा है। लेकिन कुछ नुस्ख़ों में मुरारा बिन रबीअ। बुख़ारी व मुस्लिम में मुरारा बिन रबीअ़ (रज़ि.) लिखा है और रिवायत में भी यही है और वह जो कहा गया है कि दूसरे दोनों बद्र में शरीक थे यह ज़ोहरी (रह़.) की ग़लती समझी गई है इसलिए कि उन तीनों में से कोई भी जंगे बद्र में शरीक न थे, वल्लाहु आलम!

जब अल्लाह तआला ने इन तीनों की कुशाइश (आजमाइश) का ज़िक्र फ़र्माया, जिसमें उन्होंने मुसलमानों के बायकाट के पचास दिन गुज़ारे थे और उनकी जानें और उनकी दुनिया उन पर तंग हो गई थी, बाहर आना जाना तक उनका रुक गया था। उनकी समझ में कुछ नहीं आता था कि क्या करें, सिवा इसके कि सब्र करें और अपनी ज़िल्लत व इस्तिकानत पर राज़ी रहें। लेकिन नबी अकरम (ﷺ) के सामने सच बोलने के सबब और कोई उ़ज़्र पेश न करने के सबब अल्लाह ने उन पर कुशाइश फ़र्माई और कुछ अ़र्से तक उन्हें मुब्तला-ए-अ़ज़ाब रखने के बाद उनकी तौबा क़बूल की। इसलिए फ़र्माया (या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह वकूनू मअ़स्सादिक़ीन) यानी ऐ ईमान वालों! सच को लाज़िम क़रार दे लो तो महालिक मसाइब से बच जाओगे। इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "फ़क़त सच बोला करो क्योंकि सच नेकी है और नेकी जन्नत तक पहुँचाती है। जो आदमी सच बोलता रहता है वह अल्लाह के दफ़्तर में सच्चा लिख दिया जाता है। झूठ से बिलकुल दूर रहो। झूठ फ़िस्क़ो फ़िजूर की त़रफ़ ले जाता है और फ़िजूर जहन्नम में पहुँचाता है। आदमी जब झूठ ही झूठ बोलता रहता है तो अल्लाह के दफ़्तर में झूठा लिख दिया जाता है।" यह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में दर्ज है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब क़ौलुल्लाह ((या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह वकूनू मअ़स्सादिक़ीन): 6094; सह़ीह़ मुस्लिम : 2607) इब्ने मसऊद(रज़ि.) से मरवी है कि झूठ न संजीदगी के त़ौर पर बोल सकते हैं न दिल्लगी के त़ौर पर। चाहते हो तो पढ़ो ((या अय्युहल्लज़ीना आमनुत्तक़ुल्लाह वकूनू मअ़स्सादिक़ीन)। फिर कहा क्या तुम समझ सकते हो कि कोई भी इस हुक्म से अलग हो सकता है। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) कहते हैं कि

मअस्सादिक़ीन से मुराद मुहम्मद (ﷺ) और आपके अस्हाब (रज़ि.) हैं। ज़हहाक (रह.) कहते हैं कि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) मुराद हैं। हसन बसरी (रह.) कहते हैं कि तुम सादिक़ीन के साथ होना चाहते हो तो दुनिया से जुहद इख़्तियार कर लो और लोगों से मेल जोल कम करो

***

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

तर्जुमा : ''मदीना के रहने वालों को और जो देहाती उनके गर्दो-पेश में हैं उनको यह ज़ेबा न था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ न दें और न यह कि अपनी जान को उनकी जान से अ़ज़ीज़ समझें, यह इस वजह से है कि उनको अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो मांदगी पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले जो कुफ़्फ़ार के लिए मौजिबे ग़ेज़ हुआ हो और दुश्मनों की जो ख़बर ली उन सब पर उनके नाम एक एक नेक काम लिखा गया, यक़ीनन अल्लाह तआला मुख़्लिसीन का अज्र बर्बाद नहीं करता।'' (120)

जंगे तबूक में रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ न देने वालों की मज़म्मत (आयत 120) : ग़ज़्व-ए-तबूक में अहले मदीना के जो अ़रब क़बाइल शिर्कते जिहाद से बाज़ रहे थे और जो मशक़्क़ते जंग नबी (ﷺ) को पहुँची थी उसमें हमदर्दी और इश्तिराके अ़मल के बजाए आराम तलबी इख़्तियार की थी उन पर अल्लाह एताब फ़र्माता है कि उन्होंने अपने को महरूम कर दिया। उन्होंने न प्यास की तक्लीफ़ उठाई न रंज व तकाने तअ़ब पहुँचा न भूख से सामना पड़ा और न उस मौक़िफ़ में आए कि काफ़िरों को ख़ौफ़ज़दा कर दें और न काफ़िरों पर ग़ल्बा और ज़फ़र का शर्फ़ हासिल किया। लेकिन जिन्होंने यह सख़्तियाँ झेलीं वह अपने इरादे और अ़मले ज़ाती की बिना पर थीं, फ़ित्री और जबरी नहीं थीं इसलिए अल्लाह ऐसे नेकोकारो के अज्र को कभी ज़ाया न होने देगा। जैसाकि फ़र्माया (اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا) (18/कहफ़ : 30)

***

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾

तर्जुमा : "और जो वह कुछ छोटा बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उनको तै करने पड़े यह सब भी उनके नाम लिखा गया ताकि अल्लाह तआला उनके कामों का अच्छे से अच्छा बदला दे।" (121)

जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का बेहतरीन बदला (आयत 121) : इर्शाद होता है कि यह ग़ाज़ी लोग अल्लाह की राह में छोटा बड़ा ख़र्च भी करते हैं और कुफ़्फ़ार से जंग के लिए जंगल का थोड़ा सा रास्ता भी तै करते हैं तो इसका अज्र उन्हें ज़रूर मिलता है। यहाँ (इल्ला कुतिबा लहुम) फ़र्माया गया और गुज़िश्ता आयत में (कुतिब लहुम बिही) इस बिही का मतलब यह है कि यह नफ़्क़ा या यह दुश्मनों की तरफ़ चलना उनका अपना ज़ाती फ़ेअल है इसीलिए आयते शरीफ़ा में (मा कानू यअमलून) फ़र्माया गया और आयते साबिक़ा में अल्लाह की राह के अंदर भूख प्यास वग़ैरह की तक्लीफ़ यह मिन जानिब अल्लाह थी। इसलिए न बिही लाया गया, न अमल को उनकी तरफ़ मंसूब किया गया था। हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) ने इस आयते करीमा से हज़्ज़े वाफ़िर और नसीबे अज़ीम हासिल किया क्योंकि उस ग़ज़्व-ए-तबूक में उन्होंने लश्कर को अपने नफ़्क़ाते जलीला और अम्वाले जज़ीला इनायत किए हैं। इब्ने ख़ब्बाब सुलमी (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया और उस जेशे उसरत की मदद करने के लिए क़ौम को उभारा, तो हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने कहा कि मेरे ज़िम्मे सौ ऊँट पालान और कजावे और पाये बन्दों के साथ हैं। नबी अकरम (ﷺ) ने दोबारा क़ोम से चंदा मांगा, तो उस्मान (रज़ि.) ने कहा और सौ ऊँट पालान और कजावे वग़ैरह के साथ हैं। नबी (ﷺ) ने मिम्बर पर से एक सीढ़ी उतरकर फिर फ़र्माया, "ऐ लोगों! और मदद की ज़रूरत है" तो उस्मान (रज़ि.) ने कहा और सौ ऊँट साज़ो-सामान के साथ। तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप ख़ुशी से अपने हाथ को यूँ हिला रहे हैं (अब्दुस्समद आख़िरी रावी ने यह कहते हुए अपने हाथ हिलाए) और नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अब उस्मान (रज़ि.) पर कोई आँच नहीं चाहे जो अमल करे।" (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी अद्दे उस्मान तस्मियतु शहीदन तज्हीज़हू जैशुल उसरति : 3700; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ुर्क़द रावी मज्हूल है। अहमद : 4/75; मुस्नद तयालिसी : 1189; तारीख़ुल कबीर : 5/246; हिल्यतुल औलिया : 1/58; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/214) फिर उस्मान (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के पास एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली ले आए कि जेशे उसरत की उससे तैयारी कीजिए और नबी (ﷺ) की गोद में यह रक़म डाल दी। नबी (ﷺ) उन अशरफ़ियों को हरकत दे रहे थे और कह रहे थे कि "आज से उस्मान (रज़ि.) को उनका कोई अमल नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा यही एक अमल उनकी नजात के लिए काफ़ी है।" और आप (ﷺ) ख़ुशी से बार-बार उस रक़म को हिला रहे थे। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी अद्दे उस्मान तस्मियतु शहीदन तज्हीज़हू जैशुल उसरति : 3701; व सनदुहू हसन; अहमद : 5/63; हाकिम : 3/102) क़तादा (रह.) ने क़ौलुहू तआला (वला यक़्तऊना) के बारे में कहा है कि

अल्लाह की राह में सफ़र करते हुए लोग जितना दूर होते जाते हैं उतने ही अल्लाह की कुर्बत में बढ़ते जाते हैं। (तब्री : 14/565)

***

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ۭ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ١٢٢

तर्जुमा : "और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सबके सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यूँ न किया जाए कि उनकी हर-हर बड़ी जमाअ़त में से एक छोटी जमाअ़त जाया करे ताकि बाक़ी बचे लोग दीन की समझ बूझ हा़सिल करते रहें और ताकि अपनी क़ौम को जबकि वह उनके पास आएँ डराएँ ताकि वह एह़तियात रखें" (122)

जिहाद और दीन की तालीम और तब्लीग़ (आयत 122) : इस आयत में इस बात का ज़िक्र है कि गज़्व-ए-तबूक में नबी (ﷺ) के साथ कूच करने का जब लोगों ने इरादा किया, तो सलफ़ की एक जमाअ़त का यह ख़्याल है कि रसूल (ﷺ) जब जंग के लिए निकलें तो हर मुसलमान पर कूच करना वाजिब है और यही वजह है कि अल्लाह तआला ने कहा है (اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا) (9/तौबा : 41) यानी हल्के और लदे हुए निकल पड़ो। और यह भी अल्लाह ने फ़र्माया कि अहले मदीना को कोई ह़क़ नहीं कि जिहाद में रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे रह जाएँ (आख़िरतक) (9/तौबा : 120) और नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "इस आयत के ज़रिये ऊपर वाली आयत मंसूख़ हो गई।" और कहा जाता हे कि तमाम क़बीलों के सफ़र करने या किसी क़बीला में से कुछ के सफ़र करने से जबकि सब न निकलें, मुरादे इलाही यह है सफ़र पर न जाकर नबी (ﷺ) के साथ रहने वाले हर उतरने वाली वह़ी को लिख लें और याद रख लें और जंग करके वापिस आने वाले लोगों को अह़कामे इलाही बताए और सफ़र से वापिस आने वाले यह बताएँ कि दुश्मन के साथ जंग कैसी रही और कुफ़्फ़ार के क्या ह़ालात हैं। अब इस मुअय्यना सफ़र में दो बातें जमा हो गईं। एक सफ़रे मुअय्यना उन लोगों का जो जिहाद पर जा रहे हैं दूसरे उन लोगों का क़याम जो नफ़्क़ा की ग़र्ज़ से नबी अकरम (ﷺ) के पास ठहर गए हैं। इसलिए कि यह फ़र्ज़े किफ़ाया हैं चंद लोग न करें तो चंद लोगों के लिए ज़रूरी और फ़र्ज़ है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बताया कि (मा कानल मुअमिनूना लि यंफ़िरू काफ़्फ़तन) की आयत में अल्लाह पाक फ़र्माता है कि मोमिनीन को नहीं चाहिए कि सबके सब नबी (ﷺ) के पास से चले जाएँ और नबी (ﷺ) को अकेला छोड़ दें और ऐसा क्यूँ न हो कि हर जमाअ़त में से कुछ लोग जाएँ ताकि बाक़ी नबी अकरम (ﷺ) के पास दीन की समझ बूझ ह़ासिल कर सकें और जब वापिस आएँ तो अपनी क़ौम के पास जाकर उन्हें आगाह करें और अल्लाह से डराएँ और जब तक नबी अकरम (ﷺ) इजाज़ते सफ़र न दें, न जाएँ। और उन जमाअ़तों के न होने के वक़्त में जो कुरआन नाज़िल हुआ है उनको नबी अकरम (ﷺ) के

पास रह जाने वाले लोग वाक़िफ़ करा दें और कहें कि अल्लाह तआला ने नबी (ﷺ) पर यह क़ुरआन नाज़िल किया था। हमने सीख लिया, अब तुम सफ़र से वापिस आए हो तुम भी सीख लो और फिर अबके दूसरी जमाअतें भेजी जाएँ (लअल्लहुम यह्ज़रून) ताकि वह अपना बचाव कर सकें। (तब्री : 14/567)

मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि यह आयत अस्हाबे नबी में से उन लोगों के बारे में उतरी है जो सीखकर अपने देहात में चले गए वहाँ लोगों से मफ़ादात हासिल हुए, राहत व आराम मिला। माल भी कमाया और लोगों में तब्लीग़े दीन भी की। लेकिन लोग उनसे कहने लगे कि तुमने नबी (ﷺ) और अस्हाब (रज़ि.) का साथ छोड़ दिया, हमारे पास आ गए, नबी (ﷺ) की सोहबत से हट गए तो वह अपने दिलों में शर्म महसूस करने लगे, वह सब देहात से नबी (ﷺ) के पास आए, उसी चीज़ की सफ़ाई में अल्लाह तआला फ़र्माता है कि क्या हर्ज है अगर एक जमाअत चल खड़ी हो समझ भी हासिल करे, नबी (ﷺ) के साथ रहकर क़ुरआनो हदीस सुनें और देहात में जाकर लोगों को अल्लाह से डराये भी, क्या अजब कि उनकी हिदायत हो जाए। क़तादा (रह.) कहते हैं कि यह आयत उस मौक़े पर उतरी है जबकि नबी अकरम (ﷺ) ने लश्करकशी के लिए फ़ौज भेजी थी, अल्लाह ने उन्हें इस बात के लिए मामूर रखा कि नबी (ﷺ) के साथ लड़ें लेकिन दूसरी जमाअत रसूल (ﷺ) के साथ रहे ताकि दीन में समझ हासिल करे और एक दूसरी जमाअत अपने क़बीला ख़ानदान में देहात की तरफ़ चली जाए और अल्लाह के अज़ाब से उन्हें डराए। जो अज़ाब कि उनसे पहले की क़ौमों पर नाज़िल हुआ था। ज़ह्हाक (रह.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बज़ाते ख़ुद जंग के लिए निकलें तो अहले उज़्र के सिवा किसी को इजाज़त नहीं कि पीछे रह जाएँ और अगर आप बज़ाते ख़ुद न जाएँ बल्कि लश्कर भेज दें तो अब आप (ﷺ) की इजाज़त के बग़ैर कोई लश्कर में शरीक नहीं हो सकता। जब कोई नबी अकरम (ﷺ) के भेजे हुए लश्कर के साथ चला जाए और उसके ग़ैरहाज़िरी में जो वह्यी उतरी हो और नबी (ﷺ) ने अपने पास के बचे हुए लोगों को सुना दिया हो तो जब यह सरिय्या से लश्कर वापिस आ जाए तो यह ठहरे हुए लोग उन्हें सुना दें कि तुम्हारे जाने के बाद यह वह्यी उतरी है और उन्हें भी दीन में समझ पैदा करा दें सबके सब न चले जाने का हुक्म इस सूरत में है जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लश्कर भेज दिया हो और ख़ुद क़याम फ़र्मा हों।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि (लि यंफ़िरू काफ़्फ़तन) वाली आयत जिहाद के बारे में नहीं है बल्कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला मुज़र पर क़हत की बद् दुआ की और सब क़हत ज़दा हो गए तो सब मदीना आकर रहने लगे और झूठ मूट अपने को मुसलमान बताने लगे। अस्हाबे रसूल (ﷺ) पर उनकी मेहमान नवाज़ी होने लगी तो अल्लाह तआला ने वह्यी के ज़रिया रसूल (ﷺ) को आगाह कर दिया कि यह दरहक़ीक़त मुसलमान नहीं हैं तो नबी अकरम (ﷺ) ने उन्हें अपने अपने क़बीलों में वापिस कर दिया और दोबारा ऐसा करने के बारे में तहज़ीर फ़र्मा दी। चुनाँचे फ़र्माया (वलि युंज़िरू क़ौमहुम इज़ा रजऊ इलैहिम) इस आयत के बारे में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अरब के हर क़बीले से लोग जोक़ दर जोक़ नबी अकरम (ﷺ) के पास आने लगे, यह लोग आप (ﷺ) से उमूरे दीन पूछते, समझ हासिल करना चाहते। यह हुज़ूरे

अकरम (ﷺ) से पूछते कि हमें क्या ख़िदमत अंजाम देने का हुक्म होता है और कहते कि हम अपने क़बीलों में जाएँ तो क्या करें, तो हुज़ूर (ﷺ) उन्हें अल्लाह की इताअत और रसूल की फ़र्मांबरदारी की तल्क़ीन करते और कहते कि अपने लोगों में जाकर सलात और ज़कात को फैलाओ, वह अपनी क़ौम में आकर साफ़ कह देते कि अगर इस्लाम लाते हो तो हम तुम्हारे साथ हैं, वरना नहीं और उन्हें अल्लाह से डराते यहाँ तक कि ऐसा हिदायत याफ़्ता शख़्स अपने काफ़िर माँ बाप से भी रिश्ता ख़त्म कर लेता। और नबी (ﷺ) उनको आगाह करते अल्लाह से डराते और वह लोग जब अपने लोगो में वापिस जाते तो उन्हें दीने इस्लाम की तरफ़ बुलाते, दोज़ख़ की आग से डराते और जन्नत की बशारतें देते, इक्रिमा (रह.) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो मुनाफ़िक़ीन कहने लगे कि अब तो वह देहाती मुसलमान हलाक हो गए जो नबी अकरम (ﷺ) के साथ जिहाद के लिए नहीं निकले थे और पीछे रह गए थे हालाँकि वह लोग तो अस्हाबे नबी (ﷺ) में से वह लोग थे जो अपनी क़ौम को दीन सिखाने के लिए गए हुए थे और अदमे शिर्कते जंग का सबब यह मक़्सद बना हुआ था। चुनाँचे अल्लाह तआला ने बयान फ़र्मा दिया कि यही लोग जंग के लिए क्यूँ जाएँ। कुछ लोग दूसरों को दीन सिखाने के लिए रह क्यूँ न जाएँ और यह आयत नाज़िल हुई (وَالَّذِيْنَ يُحَاجُّوْنَ فِي اللهِ) (42/शूरा : 16) हसन बसरी (रह.) कहते हैं कि इस आयत का मक़्सद यह था कि वह लोग जो जंग के लिए गए हैं जब अपने लोगों में वापिस आएँ तो जंग के नतीज़ा में उन्होंने कुफ़्फ़ार पर जो अपना ग़ल्बा देखा और इस्लाम की शानदार फ़तह देखी है उससे लोगों को आगाह करें।

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों! उन कुफ़्फ़ार से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं और उनको तुम्हारे अंदर सख़्ती पाना चाहिए। और यह यक़ीन रखो कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी लोगों के साथ है।" (123)

क़रीबी कुफ़्फ़ार से जिहाद शुरु करना चाहिए (आयत 123) : अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म दिया है कि काफ़िरों से लड़ो तो पहले उन लोगों से लड़ो जो मर्कज़े इस्लाम से क़रीब हैं। इसीलिए नबी अकरम (ﷺ) ने मुश्रिकीन से जंग शुरू की तो जज़ीर-ए-अरब से शुरुआत की, मक्का मदीना, ताइफ़, यमन, यमामा, हजर, ख़ैबर, हज़रमौत, ग़र्ज़ यह कि जज़ीर-ए-अरब के और दूसरे अक़ालीम को पहले फ़तह कर लिया और मुसलमान बना लिया और अरब के क़बीले दीने इस्लाम में जोक़ दर जोक़ शामिल होने लगे तो अब अहले किताब से जंगें शुरू होने लगीं और रूम से जंग का इरादा हो गया। यह लोग जज़ीर-ए-अरब से क़रीब रहने वाले हैं और इस बात की ज़रूरत है कि दावते इस्लाम की सबसे पहले उन ही से शुरुआत हो और इसलिए

भी कि वह अहले किताब हैं। लेकिन तबूक तक पहुँचकर आग न बढ़े वापिस हो गए, क्योंकि लोगों में तंगहाली, क़हत ना साज़गारी हालात थी। यह 9 हिज्री का वाक़िया है। सन् 10 हिज्री में नबी (ﷺ) हज्जतुल वदाअ के मसरूफ़ियत रखते थे और हज्जतुल वदाअ से इक्यासी (81) दिन बाद नबी (ﷺ) का विसाल हुआ। आपके बाद आपके क़ायम बिल अम्र आपके वज़ीर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) हुए। इस इंक़िलाबे नागुज़ेर के वक़्त दीन में एक तज़लज़ुल सा आ गया था। लेकिन अल्लाह तआला ने सिद्दीक़ (रज़ि.) के ज़रिये दीन को फिर इस्तिक़ामत अता की। आप (रज़ि.) ने दीन को मज़बूत कर दिया, उसके दआवी साबित हो गए और मुर्तद लोगों को फिर दीन की तरफ़ वापिस ले आए। जिन्होंने ज़कात देने से इंकार किया था उनको ज़कात अदा करना पड़ा। जो मसाइले दीन से नावाक़िफ़ हो गए थे उनको वाक़िफ़ कर दिया गया और रसूल (ﷺ) के बारे में जो फ़राइज़ थे उनकी तक्मील की। फिर इस्लामी लश्कर को रूम की तरफ़ भेजा जो सलीब परस्त थे और अहले फ़ारस की तरफ़ भी जो आतिश परस्त थे। अल्लाह तआला ने आप (रज़ि.) की बरकत से उन मुमालिक पर फ़तह बख़्शी और किसरा क़ैसर और उनके मज़हबों को ज़िल्लत नसीब हुई। और उन दोनों मुल्कों ने जो ख़ज़ाने जमा कर रखे थे उनको अल्लाह की राह में ख़र्च किया जैसाकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उससे पहले ख़बर दे दी थी। चुनाँचे इस पेशीनगोई की तक्मील आप (ﷺ) के वसी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के हाथों हुई। फिर सिद्दीक़ (रज़ि.) के जानशीन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने तक्मील की। उमर (रज़ि.) के ज़रिये उन कुफ़्फ़ार मुल्हिदीन को बड़ी ज़िल्लत पहुँची।

हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुनाफ़िक़ीन और सरकशों का क़लअ क़मअ किया और उनकी सारी सल्तनतों पर शरक़न ग़रबन (पूरे तौर पर) ग़ालिब आ गए और क़रीब व दूर तमाम मुल्कों के ख़ज़ाने और अम्वाल मर्कज़े इस्लाम में खिंच आए और यह सारी दौलत हस्बे अहकामे शरअ मुस्तहिक़ लोगों में और वाजिबी उमूर में सर्फ़ की गई। हज़रत उमर (रज़ि) ज़िन्दा रहे तो नेक नाम रहे और मर गए तो शहीद मरे। अब मुहाजिरीन और अंसार ने बिल इत्तिफ़ाक अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को ख़लीफ़ा बनाया। उस्मान (रज़ि.) के ज़माना में इस्लाम को बड़ी ज़ीनत व नेक नामी हासिल रही और तमाम दुनिया में इंसानों पर हुज्जते इस्लाम ग़ालिब आ गई। उन्हीं के ज़माने में पूरब और पश्चिम सब जगह इस्लाम का बोलबाला हो गया। कलिमतुल्लाह का रौब हर जगह के इंसानों पर छा गया और मिल्लते हनीफ़िया ने अल्लाह के दुश्मनों पर ग़ल्ब-ए-कामिल हासिल कर लिया। कभी किसी क़ौम पर मुसल्लत हुए और कभी किसी और पर या ऐसी क़ौम पर जो उन काफ़िरों और सरकशों से जोड़ तोड़ रखती है। यह अल्लाह तआला के इस फ़र्मान के तहत था कि (या अय्युहल्लज़ीना आमनू क़ातिलुल्लज़ीना यलूनकुम मिनल कुफ़्फ़ारि) और (वल यजिदू फ़ीकुम ग़िल्ज़तन) यानी काफ़िरों से क़िताल में निहायत सख़्ती का बर्ताव करो इसलिए कि मोमिने कामिल वह है जो अपनों पर शफ़ीक़ और काफ़िरों पर सख़्त होते हैं। जैसा कि अल्लाह ने फ़र्माया (فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ) (وَيُحِبُّوْنَهٗ) (5/माइदा : 54) और क़ौलुहू तआला (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ) (بَيْنَهُمْ) (48/फ़तह : 29) और क़ौलुहू तआला (يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ)

(9/तौबा : 73) और हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मैं ख़ंदा पेशानी वाला भी हूँ और क़िताल करने वाला भी हूँ" यानी दोस्तों के लिए ख़ुशमिजाज़ और दुश्मनों के साथ जंगजू। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि काफ़िरों से क़िताल करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और यक़ीन रखो कि अगर तुम अल्लाह से डरते हो और उसकी इताअत करो तो अल्लाह हर वक़्त तुम्हारे साथ है। यह चीज़ क़ुरूने सलासा में जो इस उम्मत का बेहतरीन ज़माना गुज़रा है ग़ायत इस्तिक़ामत में थी और यह ज़माना क़यामे इताअते इलाही का ज़माना था। मुसलमान हमेशा काफ़िरों पर ग़ालिब रहे हमेशा फ़ुतूहात होती रहीं, दुश्मन हमेशा ख़सारा व ज़िल्लत में रहे। और जब बादशाहों के बीच फ़ित्ने और इख़्तिलाफ़ात बढ़ गए तो दुश्मनों ने अतराफ़ व बिलाद पर नज़रें डालना शुरु कर दिया, इस्लामी मुमालिक की तरफ़ बढ़ने लगे और दुश्मन बादशाह एक दूसरे के साथ गठजोड़ करने लगे। फिर एक दूसरे की मदद से इस्लामी ममालिक के हुदूद पर चढ़ दौड़े और मुसलमानों के बहुत से मुल्कों पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन जिस किसी इस्लामी बादशाह ने अहकामे इलाही की इताअत की, अल्लाह पर भरोसा किया तो अल्लाह तआला ने उसे ज़रूर फ़ुतूहात इनायत फ़र्माईं और खोये हुए मुमालिक दोबारा हासिल किए जा सके। अल्लाह से उम्मीद है कि फिर वह मुसलमानों को ग़ल्बा देगा और सारी दुनिया में तौहीद का कलिमा बुलंद होगा। अल्लाह तो फ़य्याज़ और करीम है।

***

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

तर्जुमा : "और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो कुछ मुनाफ़िक़ीन कहते हैं कि इस सूरत ने तुममें से किसके ईमान में तरक़्क़ी दी। तो जो लोग ईमानवाले हैं इस सूरत ने उनके ईमान में तरक़्क़ी दी है और वह ख़ुश हो रहे हैं। (124) और जिनके दिलों में आज़ार (बीमारी) है इस सूरत ने उनमें उनकी गंदगी के साथ और गंदगी बढ़ा दी और वह हालते कुफ़्र ही में मर गए।" (125)

ईमान में कमी और ज़्यादती का बयान (आयत 124, 125) : यह आयतें उतरी तो मुनाफ़िक़ीन चे मीं गोइयाँ (कानाफूसी) करने लगे कि इस सूरत ने भला उन मुसलमानों के अंदर कौनसा मज़ीद ईमान और मज़ीद ख़ूबी पैदा कर दी। तो अल्लाह पाक फ़र्माता है कि हाँ! यह मज़ीद ईमान मुसलमानों के अंदर यक़ीनन पैदा हुआ है और वह उससे ख़ुश भी हैं। यह आयत उन बुज़ुर्गतरीन (ठोस) दलाइल में से है कि ईमान कम भी होता है और ज़्यादा भी होता है। जैसाकि अक्सर उलमा-ए-ख़लफ़ व सलफ़ का मज़हब है। बल्कि अक्सर का यह क़ौल है कि इस एतिक़ाद पर इज्माअे उम्मत है और अव्वले शरह बुख़ारी में इस मसला पर मब्सूत (सविस्तार)

और तवील बहस हो चुकी है। लेकिन जिनके दिलों में मर्ज़ है उनमें तो इस आयत से और शक ही के अंदर इज़ाफ़ा होता जाएगा। जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है (وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا ہُوَ شِفَآءٌ) (17/बनी इस्राईल : 82) यानी कुरआन तो मोमिनों के दिलों को शिफ़ा बख़्शता है। और क़ौलुहू तआला (قُلْ ہُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ہُدًی وَّ شِفَآءٌ ؕ وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِہِمْ وَقْرٌ وَّ ہُوَ عَلَیْہِمْ عَمًی ؕ اُولٰٓئِکَ یُنَادَوْنَ مِنْ مَّکَانٍۭ بَعِیْدٍ) (41/फ़ुस्सिलत : 44) यानी ईमानवालों के लिए कुरआन हिदायत और शिफ़ा है। काफ़िरों के कान तो कुरआन की तरफ़ से बहरे हैं, उनकी आँखें अंधी हैं गोया कि वह बहुत ही दूर से पुकारे जा रहे हैं कि सुन ही नहीं सकते। यह कितनी बड़ी बदबख़्ती की बात है कि जो चीज़ दिलों की हिदायत करने की सलाहियत रखती है वह उनकी ज़लालत व हलाकत का सबब बन जाए। जैसे कि बीमार को अच्छी ग़िज़ा भी दी जाए तो नुक़्सान ही पहुँचता है।

***

اَوَلَا یَرَوْنَ اَنَّہُمْ یُفْتَنُوْنَ فِیْ کُلِّ عَامٍ مَّرَّۃً اَوْ مَرَّتَیْنِ ثُمَّ لَا یَتُوْبُوْنَ وَلَا ہُمْ یَذَّکَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَۃٌ نَّظَرَ بَعْضُہُمْ اِلٰی بَعْضٍ ؕ ہَلْ یَرٰىکُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰہُ قُلُوْبَہُمْ بِاَنَّہُمْ قَوْمٌ لَّا یَفْقَہُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

तर्जुमा :"और क्या उनको नहीं दिखलाई देता कि यह लोग हर साल में एक बार दो बार किसी न किसी आफ़त में फंसते रहते हैं फिर भी बाज़ नहीं आते और न वह कुछ समझते हैं। (126) और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो एक दूसरे को देखने लगते हैं कि तुमको कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह तआला ने उनका दिल फेर दिया है इस वजह से कि वह महज़ बेसमझ लोग हैं।" (127)

मुनाफ़िक़ीन दुनियावी आफ़तों के बावजूद ईमान नहीं लाते (आयत 126, 127) : यह मुनाफ़िक़ीन क्या इतना भी नहीं समझते कि वह सालभर में एक बार या दो बार फ़ित्नों में मुब्तला किए जा रहे हैं फिर भी अपने पिछले गुनाहों से बाज़ नहीं आते और इस सिलसिला में आइन्दा जो उन पर गुज़रने वाला है उसे अंदेशा नहीं करते। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि मुनाफ़िक़ीन भूख और क़हत के फ़ित्नों में मुब्तला किए जाते थे। क़तादा (रह.) कहते हैं कि जंग की आफ़त उनके सर पर पड़ती थी। सहाबा (रज़ि.) कहते हैं कि हम हर साल कोई न कोई झूठी अफ़वाहें सुनते ही रहते जिससे अकसर लोग भटक जाते थे। अनस (रज़ि.) से मरवी है कि सख़्ती का ज़माना बढ़ता जा रहा है तंगदिली और कोताह हौसलगी ज़्यादा हो रही है। (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब शिद्दतुज़्ज़मान : 4039; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद में कई इल्लतें हैं मस्लन हसन बसरी मुदल्लस के

सिमाअ की सराहत नहीं है।) हर साल गुज़िश्ता साल से बदतर आता जा रहा है। (बुख़ारी : 7068; तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मिन्हू ला यअती ज़मानुन इल्लल्लज़ी बअदुहू शर्रुम मिन्हू : 2206; इब्ने माजा : 4039; वल्लफ़्ज़ु लहू) मुंदर्जा बाला आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में है कि जब कोई सूरत नबी (ﷺ) पर नाज़िल होती तो वह एक दूसरे को देखकर कहने लगते हैं कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं था। फिर वह हक़ से पीठ फेर लेते हैं दुनिया में उन मुनाफ़िक़ीन का यह हाल है कि न हक़ बात के सामने आते हैं, न उसको समझते हैं। जैसाकि फ़र्माने इलाही है (فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾) (74/मुद्दस्सिर : 49) वक़ौलुहू तआला (...فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾) (70/मआरिज : 36) यानी उन लोगों को क्या हुआ है कि हक़ बात से ऐराज़ करते हैं गोया कि वह वहशी जानवर हैं कि शेरों से भागते हैं, सीधे और बाएँ खिसक जाते हैं, हक़ से बातिल की तरफ़ झुक जाते हैं। अल्लाह ने इनके दिलों को फेर दिया है कि न अल्लाह के ख़िताब को समझते हैं और न समझने की कोशिश करते हैं।

***

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

तर्जुमा :"तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारी जिंस से हैं जिनको तुम्हारी नुक़्सान की बात निहायत गिराँ गुज़रती है जो तुम्हारी मन्फ़अत के बड़े ख़्वाहिशमंद रहते हैं, ईमानवालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ और मेहरबान हैं। (128) फिर अगर रूगर्दानी करें तो आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह तआला काफ़ी है उसके सिवा कोई मअबूद होने के लायक़ नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वह बड़े भारी अर्श का मालिक है।" (129)

रसूलुल्लाह (ﷺ) की सिफ़ाते हस्ना का ज़िक्रे जमील (आयत 128, 129) : इस आयत में अल्लाह तआला मोमिनीन पर अपना एहसान ज़ाहिर करता है कि हमने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही जिंस से एक रसूल भेजा है। जैसाकि इब्राहीम (عليه السلام) ने दुआ मांगी थी कि (رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ) (2/बक़रह : 129) और (لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ...) (3/आले इमरान : 164) और (लक़द जाअकुम रसूलुम् मिन अंफ़ुसिकुम) जाफ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने नज्जाशी से और मुग़ीरा (रज़ि.) ने सफ़ीरे किसरा से कहा था कि अल्लाह ने हममें हमारी ही क़ौम का एक रसूल भेजा है, जिसके नसब से हम वाक़िफ़ हैं। जिसकी सिफ़ात जानते हैं, जिसके उठने, बैठने, आने जाने, सिदक़ व अमानत सब ही बातों से आशना (परिचित) हैं। (अहमद

: 1/201, 203; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ोहरी मुदल्लस व अन्अन) ज़माना जाहिलियत से भी जिसके ख़ानदान पर कोई धब्बा नहीं , नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मेरा सारा नसब बर बिनाए निकाह़ रहा, कहीं किसी सफाहे ज़माना जाहिलियत की बुराई का शाइबा नहीं। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) आदम (ﷺ) के ज़माने से अब तक मेरे बाप दादा में कोई बग़ैर निकाह़ नहीं पैदा हुआ।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/214; अद्दुर्रुल मंसूर : 3/525) क़ौलुहू तआला (अज़ीज़ुन अलैहि अनित्तुम) यानी उम्मत पर कोई तक्लीफ़ उसके लिए बहुत ही शाक़ है। ह़दीस में है (बुइस्तु बिल ह़नीफ़ियतिस्सम्ह़ा) यानी आसान दीन लेकर आया हुआ हूँ। (अह़मद : 6/116; व सनदुहू ह़सन; मुस्नद हुमैदी : 254; मुख़्तसरन) ह़दीसे स़ह़ीह़ में है कि "यह शरीअत निहायत आसान और सहल है, अल्लाह तआला ने बहुत आसान करके भेजा है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान बाब अद्दीनु युस्रून : 39) इन्हें बड़ी तमन्ना रहती है कि तुम हिदायत पा जाओ और दुनिया और आख़िरत का फ़ायदा पा सको। स़ह़ाबा (रज़ि.) कहते थे कि नबी अकरम (ﷺ) ने हमें इस क़द्र मालूमाते आम्मा दी हैं कि फ़र्ज़ करो कोई परिन्दा भी जो आसमान पर उड़ता है उसके बारे में भी मालूमात बख़्शी। (अह़मद : 5/153; व सनदुहू ज़इफ़ुन; मुस्नद तयालिसी : 479; इब्ने ह़िब्बान : 65; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने उयेयना अन्अन; तबरानी : 1647; वज़ियादतु इन्दहू) नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि "जन्नत से क़रीब करने वाली और दोज़ख़ से दूर करने वाली कोई ज़रा सी बात भी ऐसी बाक़ी न रही जो मैंने तुमको न बता दी हो।" नबी अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है कि "अल्लाह तआला ने हर ह़राम और नाजाइज़ चीज़ के बारे में मुकम्मल तौर पर तुम्हें समझा दिया है, अगर तुम उसके बयानकर्दा मुह़र्रमात से दूर न रहोगे तो मैं तुमको बतला देता हूँ कि दोज़ख़ के शोलों में ऐसे गिरोगे जैसे परवाना शमा पर गिरता है।" (अह़मद : 1/390; वहुव ह़सन; मुस्नद अबी यअला : 5288; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/210; इसकी सनद में अल्मसऊदी मुख़्तलत़ रावी है।)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) के पास दो फ़रिश्ते आए जबकि आप (ﷺ) सो रहे थे एक पैरों की तरफ़ बैठ गया और एक सिराहने। पैर की तरफ़ वाले फ़रिश्ते ने सिराहने वाले से कहा कि इनकी और इनकी उम्मत की कोई मुताबिक़े ह़ाल मिसाल बयान करो। तो वह कहता है कि आप (ﷺ) की मिसाल उम्मत के साथ ऐसी है जैसे लोग सफ़र करते हुए एक लक़ व दक़ (घना) जंगल में पहुँच गए हों, ज़ादे राह तौशा वग़ैरह कुछ बाक़ी न रहा हो, न आगे सफ़र जारी रख सकते हैं, न ही वापिस होने की कोई सूरत है। ऐसे में एक मर्द ख़ुशपोश उनके पास आता है और कहता है कि क्या मैं तुम्हें यहाँ से निकालकर ऐसे बाग़ों में ले चलूँ जो सरसब्ज़ व शादाब हों, नहरें और ह़ौज़ हों, क्या मेरे साथ चलोगे? वह बड़ी ख़ुशी से राज़ी हो जाते हैं। वह उन्हें ले चलता है वह उन्हें सरसब्ज़ व शादाब बाग़ में ले आता है, वह ख़ूब मेवे खाते हैं, पानी से सैराब होते हैं और ख़ूब फलते फूलते हैं फिर उनसे कहता है कि क्या मैंने तुम्हारे साथ ख़ैरख़्वाही का ह़क़ अदा नहीं किया और क्या तुम्हें ऐसे सरसब्ज़ व शादाब जगह पर नहीं पहुँचाया? अब सुनो! आगे और बाग़ात ऐसे हैं जो इससे भी ज़्यादा पुरबहार हैं उससे भी कहीं ज़्यादा शादाब ह़ौज़ हैं। आओ तुम्हें अब वहाँ ले चलूँ। तो कुछ ने कहा तुमने पहले भी सच कहा था और अब भी सच कह रहे हो, हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं और कुछ ने कहा,

हम तो यहीं अच्छे हैं, हमें यही बस है आगे के तमत्तोआत की ज़रूरत नहीं। यानी यह वह लोग हैं जो दुनिया के पीछे ही दीवाने हो गए हैं आक़िबत की ख़बर नहीं लेते हालाँकि यहाँ से कहीं ज़्यादा वहाँ ख़ुश ऐशियाँ हैं।'' (अह्मद : 1/267; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अली बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/306; रक़म : 264)

अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक आराबी (देहाती) नबी (ﷺ) के पास आया और आपसे माली मदद मांगी। इक्रिमा (रह.) कहते हैं कि मैं समझता हूँ कि ख़ून बहा अदा करने के लिए मदद चाही थी, आप (ﷺ) ने उसको कुछ दिया और फ़र्माया, ''लो! मैंने तुम्हारा काम निकाल दिया और तुम्हारे साथ सुलूक किया।'' उसने कहा, नहीं! कोई एहसान नहीं किया। यह सुनकर कुछ सहाबा (रज़ि.) ग़ज़बनाक हो गए और उस पर दस्तदराज़ी का इरादा किया। तो नबी अकरम (ﷺ) ने इशारा से मना कर दिया। नबी अकरम (ﷺ)उठकर अपने ठिकाने पर गए और आराबी को बुला भेजा, और कहा, ''तुमने मांगा, मैंने दिया और ख़ैर तुमने जो कहा सो कहा। अच्छा! यह और भी लो।'' और फिर पूछा, अब भी मेरा सलूक तुम्हारे साथ अचछा रहा या नहीं। आराबी ने कहा, हाँ! अल्लाह तआला आप (ﷺ) को जज़ा-ए-ख़ैर दे। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मेरे अस्हाब तुम्हारी तरफ़ से बरगश्ता बने हुए हैं अब तुम उनके सामने जाओ तो इस वक़्त तुमने जो मुझसे कहा था, उनके सामने भी तस्दीक़ कर दो ताकि उनके दिल की गिरफ़्त निकल जाए।'' कहा अच्छा! पस जब आराबी आया तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''इसने आकर सवाल किया था, मैंने दिया लेकिन उसने जो कहा था तुम जानते हो, मैंने इसे बुलाकर और दिया है अब वह राज़ी हैं, क्यूँ ऐ आराबी! यह बात सही है।'' आराबी ने कहा, हाँ! अल्लाह आप (ﷺ) को जज़ा दे।

नबी अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''मेरी और बद्दू की मिसाल ऐसी है जैसे किसी की ऊँटनी हो वह भिड़क गयी, लोग उसके पीछे दौड़े, ऊँटनी और भी वह्शी हो गई। तो ऊँटनी वाले ने कहा, तुम इसको मुतीअ (सधाने) करने का मामला मुझ पर छोड़ दो, मैं इसके अंदाज़ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ, मैं इसको नर्म कर दूँगा। फिर उसने घास ली और उसे बुलाया, वह आ गई। उसको घास खिलाकर पकड़ लिया और उस पर पालान डाल दिया। अगर उसके बदतमीज़ी की बात करने पर मैं भी तुम्हारी तरह नाराज़ हो जाता तो वह दोज़ख़ी बन जाता।'' (अल्बज़्ज़ार : 2476; व सनदुह ज़ईफ़ुन जिद्दा; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/12; इसकी सनद में इब्राहीम बिन हकम बिन अबान मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 1/27; रक़म : 72) लेकिन यह हदीस ज़ईफ़ है, वल्लाहु आलम!

क़ौलुहू तआला (बिल मुअमिनीना रऊफ़ुर्रहीम) चुनाँचे इस आयते करीमा में भी यही हुक्म होता है कि जो शरीअते अज़ीमा कि तुम लाए हो, अगर यह लोग उससे पीठ फेरें, तू कह दे कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, मैं तुम पर नहीं उस पर भरोसा रखता हूँ। अल्लाह हर चीज़ का मालिक और ख़ालिक़ है, वह रब्बे अर्शे अज़ीम है। उसका अर्शे अज़ीम सक़फ़े (छत) मख़्लूक़ात है। ज़मीन व आसमान की सारी मख़्लूक़ उसके अर्श तले है, सारी मख़्लूक़ उसके क़ब्ज़ा कुदरत में है, उसका इल्म हर चीज़ पर मुहीत है। उबय बिन कअब (रज़ि.) कहते हैं कि कुरआन की आख़िरी आयत (लक़द जाअकुम रसूलुम् मिन अन्फ़ुसिकुम) वाली आयत है। (अह्मद : 5/117; ज़वाइद अब्दुल्लाह; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/37; इसकी सनद में अली बिन ज़ेद

बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/306; रक़म : 264) और यह कि कुरआन की तमाम आयतें और सूरतें ख़िलाफ़ते अबूबक्र (रज़ि.) में कुरआने मुरत्तब की सूरत में जमा की गईं। लोग लिखते जाते थे और उबय बिन कअब (रज़ि.) लिखवाते जाते थे। जब सूरह बरा'त की इस आयत पर पहुँचे (ثُمَّ انْصَرَفُوا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ) (9/तौबा : 127) तो यह गुमान किया गया कि यह कुरआन की आख़िरी आयत है तो उबय बिन कअब (रज़ि .) ने उनसे कहा कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उसके बाद मुझे यह दो आयतें भी सुनाई थीं (लक़द जाअकुम) आख़िर सूरत तक, और कहा कि यह कुरआन की आख़िरी आयत है और उसी पर ख़त्म है जिससे शुरु हुइ थी। यानी उस अल्लाह के नाम पर जिसके सिवा और कोई अल्लाह नहीं। इसी के बारे में अल्लाह तआला का क़ौल है (وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ) (21/अम्बिया : 25) (अहमद : 5/134; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल (रह.) व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अब्दुल्लाह बिन जुबेर (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत उमर (रज़ि.) के पास हारिस बिन ख़ुज़ेमा (रज़ि.) ने यह दो आयतें पेश की थीं जो आख़िर सूरह बरा'त की हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इस वह्यी की शहादत और कौन देंगे? हारिस (रज़ि.) ने कहा, यह तो मुझे इल्म नहीं कि और कौन इसको जानता है लेकिन अल्लाह की क़सम! मैंने ख़ुद इसको नबी (ﷺ) से सुना है और उसको ख़ूब याद रखा है। तो उमर (रज़ि.) ने कहा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने इसे रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। फिर फ़र्माया कि ''अगर यह कम अज़्कम तीन आयतें होतीं तो मैं इसको एक अलग सूरत क़रार दे देता। तुम इसे कुरआन में कहीं रख दो।'' चुनाँचे इसको सूरह बरा'त के आख़िर में रख दिया गया। (अहमद : 1/199; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में मुहम्मद बिन इस्हाक़ मुदल्लस रावी है। (अत्तक़रीब : 2/144) यह बात आगे गुज़र चुकी है कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ही ने हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) को मश्वरा दिया था कि कुरआन की सारी आयतों को तलाश करके एक जगह जमा कर लेना निहायत ही क़रीने मस्लिहत है। चुनाँचे हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) को कुरआन के जमा करने का हुक्म दिया। वह कुरआन को जमा और तर्तीब करते जाते थे और उमर (रज़ि.) भी वहाँ मौजूद होते। सहीह हदीस में है कि ज़ैद (रज़ि.) ने कहा कि सूरह बरा'त का आख़िरी हिस्सा मैंने ख़ुज़ैमा बिन साबित (रज़ि.) या अबू ख़ुज़ैमा (रज़ि.) के पास देखा। (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरह बरा'त बाब क़ौलुहू (लक़द जाअकुम रसूलुम् मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि मा अनित्तुम..) : 4679) और यह भी हमने बयान कर दिया कि सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअत ने इसका ज़िक्र नबी (ﷺ) के सामने किया जैसाकि ख़ुज़ैमा बिन साबित (रज़ि.) ने कहा था, वल्लाहु आलम! अबुद्दर्दा (रज़ि.) बयान करते हैं कि सुबह शाम सात बार पढ़ लिया करे। (हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु वहुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम) तो अल्लाह तआला उसके सारे काम बना देगा और जो इरादा कर रहा हो, उसको पूरा करेगा। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इज़ा अस्बह : 5081; व सनदुहू हसन) एक रिवायत में है कि सच्चे दिल से पढ़ा हो या नहीं। लेकिन इस जुम्ले की ज़्यादती ग़रीब है। एक मरफ़ूअ हदीस में भी इस तरह मज़्कूर है लेकिन यह भी नाक़ाबिले तस्लीम है, वल्लाहु आलम!

सूरह बरा'त की तफ़्सीर मुकम्मल हुई, वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नतु)

सूरह यूनुस

سورہ یونس

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह यूनुस - 10

आयात : 109, मक्की, पैराग्राफ : 8

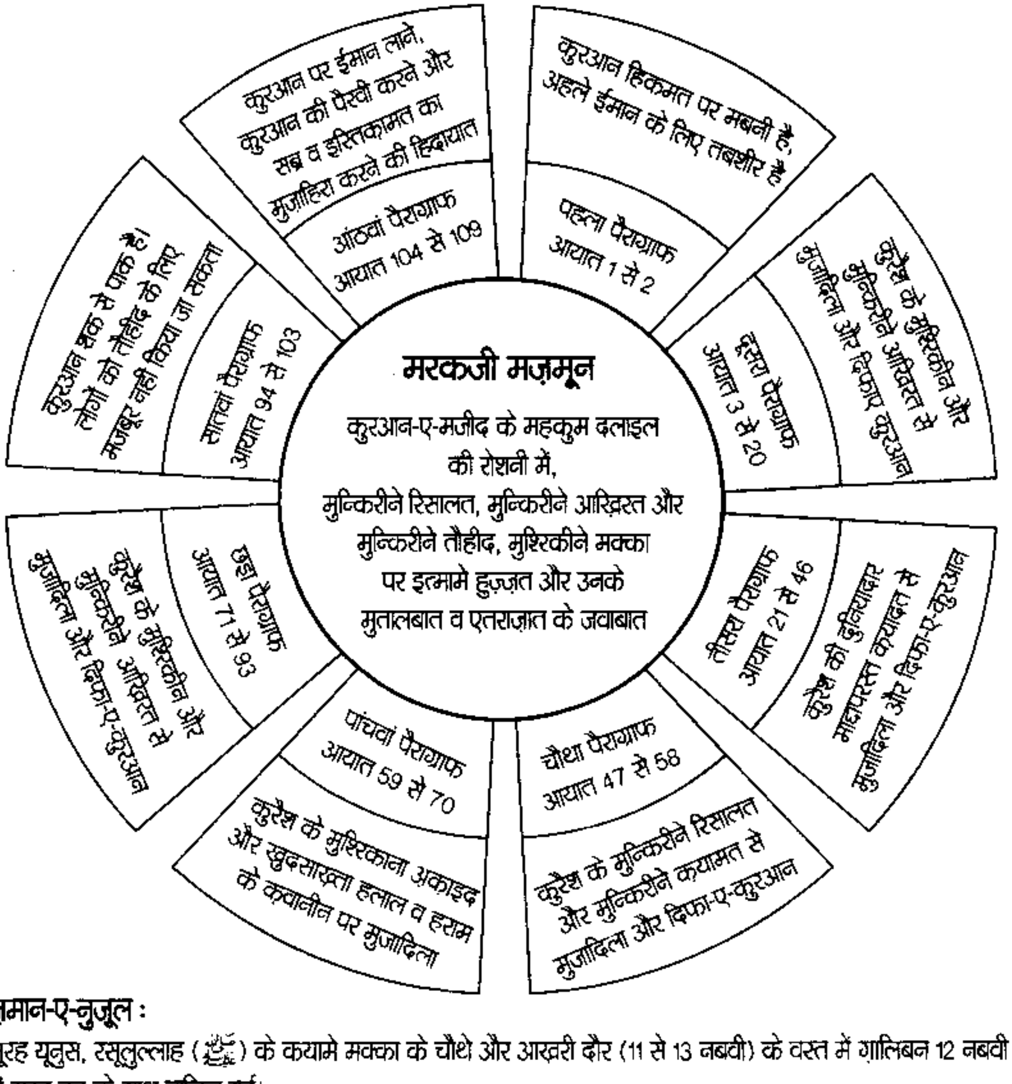

ज़मान-ए-नुज़ूल :

सूरह यूनुस, रसूलुल्लाह (ﷺ) के कयामे मक्का के चौथे और आख़री दौर (11 से 13 नबवी) के वस्त में ग़ालिबन 12 नबवी में सूरह हूद के साथ नाज़िल हुई।

सूरह यूनुस की आयात 37,94 और 104 में और अगली सूरह (हूद) की आयात 62 और 110 दोनों में कुरआन की दावत पर मुश्रिकीन की तरफ़ से शको-रैब के इज़्हार के अलावा, रसूलुल्लाह (ﷺ) पर साहरी और इफ्तरा के इल्ज़ामात मिलते हैं।

सूरह यूनुस

ये सूरत मक्की है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मक्की दौर के आख़िरी दो तीन सालों में नाज़िल हुई। इस सूरत में ग्यारह रुकूअ और 109 आयतें हैं। इसमें अल्लाह के नबी हज़रत यूनुस (अलै.) और उनकी क़ौम का मुख़्तसर ज़िक्र है। इस क़ौम की ख़ुसूसियत ये है कि इसके लोग अजाब के आसार देखकर डर गये। सब अल्लाह पर ईमान ले आये और सबने रो-रोकर अल्लाह से माफ़ी माँगी और अज़ाब के टल जाने की दुआ की। अल्लाह ने उनकी दुआ क़ुबूल की और अज़ाब टल गया।

इस सूरत में ख़िताब मुश्रिकीन से है और तौहीद व वह्य व नुबुव्वत और आख़िरत के बुनियादी अक़ाइद का बयान है। इस सूरत की तालीमात का ख़ुलासा इस तरह है :

कोई ताज्जुब की बात नहीं कि अल्लाह ने उन्हें क़ुरैश की क़ौम में से एक आदमी (मुहम्मद ﷺ) पर वह्य भेजी और उसे हुक्म दिया गया कि लोगों को ख़बरदार कर दे और जो ईमान ले आयें उन्हें ख़ुशख़बरी दे दे। ये कोई जादूगरी नहीं।

अल्लाह वो है जिसने ज़मीन व आसमान बनाये। वही कायनात का निज़ाम चला रहा है। उसी ने मख़्लूक़ को पैदा किया। फिर उसे दोबारा ज़िन्दा भी करेगा। उसी ने सूरज, चाँद बनाये। उसी ने दिन-रात बनाये। अल्लाह और उसकी निशानियों पर ईमान लाने वालों को ईनाम दिया जायेगा और झुठलाने वालों को सज़ा दी जायेगी।

✽ क़ुरआन किताबे हिक्मत है। ऐसा नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई और इसको बनाये जो लोग ये कहते हैं कि मुहम्मद (ﷺ) ने इसको ख़ुद बना लिया है उनके लिये चैलेंज है कि वो इस जैसी एक सूरत ही बना लाये।

✽ हज़रत नूह (अलै.) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा गया। उन्होंने क़ौम को हक़ की दावत दी। मगर क़ौम ने मानने से इंकार कर दिया। इसलिये उन्हें सज़ा दी गई और उन्हें तूफ़ान में डुबो दिया गया। ये मुश्रिकीन और मुन्करीन के लिये एक बड़ा सबक़ है।

✽ आयत 75 से 93 में हज़रत मूसा और फ़िरऔन का क़िस्सा तफ़्सील से बयान किया गया है।

✽ आयत नम्बर 94 से 109 में रसूलुल्लाह को हिदायत दी गई है आपको सब्र की तल्क़ीन की गई और कहा गया कि आप परेशान न हों मुश्रिकीन को क़ौमे यूनुस की मिसाल देकर ये बावर कराया गया है कि वो इत्मामे हुज्जत से पहले ईमान ले आये।

तफ़्सीर सूरह यूनुस

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है''

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ① اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ②

तर्जुमा : ''अलिफ़ लाम रॉ. यह आयतें हिक्मत से भरी किताब की हैं। (1) क्या इन लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने इनमें से एक शख़्स के पास वही भेज दी कि तमाम इंसानों को डराये और जो ईमान ले आए उनको यह ख़ुशख़बरी सुनाईए कि उनके रब के पास उनको पूरा मर्तबा मिलेगा। काफ़िर कहने लगे कि यह शख़्स तो बिला शुब्हा सरीह जादूगर है।'' (2)

तमाम अम्बिया (عليهم السلام) इंसान थे (आयत 1, 2) : हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरुआत में हुआ करते हैं, उन पर कलाम पहले गुज़र चुका है और सूरह बक़रह के शुरु में इस पर ज़रुरत के मुताबिक़ तब्सिरा हो चुका है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि (अलिफ़ लाम रा) से अनल्लाहु अरा मुराद है यानी मैं अल्लाह हूँ, और सब कुछ देख रहा हूँ। ज़हहाक (रह.) वग़ैरह ने भी ऐसा ही कहा है। यह क़ुरआन मुह़कम व मुबीन की आयतें हैं। मुजाहिद (रह.) का भी यही क़ौल है। हसन (रह.) कहते हैं कि किताब से मुराद तौरात व ज़बूर हैं। क़तादा (रह.) का ख़्याल है कि किताब से मुराद वह तमाम इल्हामी किताबें हैं जो क़ुरआन से पहले थीं। लेकिन यह ख़्याल लायानी (बेमतलब) सा है। क़ौलुहू तआला (अकाना लिन्नासि अजबन) कुफ़्फ़ार जो ताज्जुब करते हैं उस पर अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है कि पैग़म्बर जिंसे इंसान से हों, जैसाकि अल्लाह पाक ने गुज़रे ज़माने के कुफ़्फ़ार का क़ौल नक़्ल किया है कि (اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا) (64/तग़ाबुन : 6) यानी क्या कोई इंसान हमें हिदायत करेगा? यहाँ काफ़िरों की मुराद हूद व सालेह (عليهما السلام) से थी। हूद व सालेह (عليهما السلام) कहते हैं, इसमें ताज्जुब की क्या बात है कि अगर तुम्हीं में से किसी पर वही भेजी गई और उसे पैग़म्बर बनाया गया। चुनाँचे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में अल्लाह तआला फ़र्माता है कि काफ़िर कहते हैं कि मुहम्मद (ﷺ) ने तो सारे ख़ुदाओं का एक अल्लाह बना दिया। और यह बड़ी ही अजीब बात है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को रसूल बनाकर भेजा तो अरबों ने इंकार कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की शान तो इससे बड़ी है कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) जैसे शख़्स को रसूल बनाकर भेजे। तो अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं

(अन्ना लहुम क़दम सिद्क़िन) के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि क़दमे सिद्क़ से मुराद यह है कि पहले ही बयान पर तस्दीक़ करना और सआदत हासिल कर लेना है और अपने आमाल का अच्छा अज्र पाना है, यह बिलकुल अल्लाह के उस क़ौल के मुशाबेह है। (لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيْدًا) (18/कहफ़ : 2, 3) यानी ताकि उन्हें जंग और सख़्त अज़ाब से डराए (क़दम सिदक़िन) के बारे में मुजाहिद (रह़.) कहते हैं कि आमाले सालेहा मुराद हैं। जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, तस्बीह़ और सिफ़ारिशे पैग़म्बर (ﷺ)। क़तादा (रह़.) सलफ़े सिदक़ मुराद लेते हैं। इब्ने जरीर (रह़.) ने मुजाहिद (रह़.) की हमख़्याली करते हुए आमाले सालेहा मुराद ली है। जैसाकि कहा जाता है कि (लहू क़दमु सिदक़िन फ़िल इस्लामि)

ह़स्सान (रज़ि.) का शेअ़र है,

लनल क़दमुल उलिया इलैका व ख़ल्फ़ुना   ला वलना फ़ी ताअतिल्लाहि ताबेअ

"हमारे आमाल और हमारे तौर तरीक़े तुम्हारे साथ सच्चे हैं और ताअ़ते रब्बानी के बारे में हमारे अख़्लाफ़ अपने अस्लाफ़ के ताबेअ़ हैं।"

अल्लाह फ़र्माता है कि इसके बावजूद कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स को बशीर (ख़ुशख़बरी देने वाला) और नज़ीर (डराने वाला) बनाकर भेजा फिर भी यह काफ़िर कहते हैं कि तू खुला जादूगर है। यह काफ़िर बिलकुल झूठे हैं।

***

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣

तर्जुमा : "बिलाशुब्हा तुम्हारा अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा कर दिया फिर अर्श पर क़ायम हुआ वह हर काम की तदबीर करता है। बग़ैर उसकी इजाज़त कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं, ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नहीं समझते।" (3)

अर्शे-अज़ीम और अल्लाह का इल्म और तौहीदे उलूहियत (आयत 3) : इर्शादे बारी तआला है कि अल्लाह तआला तमाम आलम का परवरदिगार है, उसने ज़मीनों और आसमानों को छः दिन में पैदा किया। कहा गया है कि यह दिन हमारे दिनों के जैसे थे और यह भी कहा गया है कि हज़ार साल का एक दिन था, जिसका बयान आगे आएगा। फिर वह अर्शे अज़ीम पर मुस्तवी हो गया, और अर्श सब मख़्लूक़ात में सबसे

बड़ी मख़्लूक़ है। वह लाल याक़ूत का बना हुआ है। या यह कि वह भी अल्लाह का एक नूर है। अल्लाह सारे ख़लाइक़ का मुदब्बिर सरपरस्त और कफ़ील है। उसकी निगहदाश्त से ज़मीन या आसमानों का एक ज़र्रा भी बचा या छूटा नहीं। एक तवज्जा उसको दूसरी तरफ़ की तवज्जा से नहीं रोक सकती, उसके लिए कोई बात भी ग़लत तौर पर बाक़ी नहीं रह सकती। पहाड़ों, समुन्द्रों, आबादियों और जंगलों कहीं भी कोई बड़ी तदबीर छोटी तरफ़ ध्यान से उसको नहीं रोक सकती। कोई जानदार भी दुनिया में ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे न हो। एक चीज़ भी हरकत करती है एक पत्ता भी गिरता है तो वह उसका इल्म रखता है, ज़मीन की तारीकियों में कोई ज़र्रा ऐसा नहीं और न कोई तर व ख़ुश्क ऐसा है जो उसकी लोहे महफ़ूज़ यानी किताबे इल्म में न हो। जिस वक़्त यह आयत उतरी (इन्ना रब्बकुमु ल् लज़ी ख़लक़स्समावाति वल अर्ज़ि) मुसलमानों को एक बड़ा क़ाफ़िला आता दिखाई दिया, मालूम हो रहा था कि देहाती लोग हैं। लोगों ने पूछा तुम कौन लोग हो? तो कहा हम जिन्न हैं, इस आयत के सबब हम शहर से निकल पड़े हैं। और क़ौलुहू तआला (मा मिन शफ़ीइन इल्ला मिम् बअ़दि इज़्निही) यानी कोई उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की सिफ़ारिश न कर सकेगा। यह क़ौल अल्लाह तआला के इस क़ौल के मुताबिक़ है (مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ) (2/बक़रह : 255) और (ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम फ़अबुदूहु) यानी इन लोगों ने इबादत के लिए अल्लाह ही की ज़ात को ख़ास कर लिया है। और ऐ मुश्रिकों! तुम इबादत में अल्लाह तआला के साथ दूसरे ख़ुदाओं को भी शरीक कर लेते हो हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि पैदा करने वाला अल्लाह एक ही है, उसके सिवा किसी की इबादत नहीं हो सकती। ख़ुद अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि अगर तुम इनसे पूछो कि तुम्हें किसने पैदा किया, तो ऐतिराफ़ करेंगे कि अल्लाह तआला ने। और अगर पूछो कि यह अर्शे अज़ीम और सातों आसमानों का खालिक़ क़ौन है? तो फ़ौरन बोल उठेंगे कि अल्लाह तआला है। तो इनसे पूछो कि फिर उस अल्लाह से डरते क्यूँ नहीं हो और शिर्क क्यूँ करते हो?

***

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ
اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ
مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦

तर्जुमा : "तुम सबको अल्लाह तआला ही के पास जाना है। अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है। बेशक वही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, इंसाफ़ के साथ जज़ा दे, और जिन लोगों ने इंकार किया, उनके वास्ते खोलता हुआ पानी पीने को मिलेगा, और दर्दनाक अज़ाब होगा, उनके कुफ़्र की वजह से। (4) वह अल्लाह तआला ऐसा है जिसने आफ़ताब को चमकता हुआ बनाया और चाँद को नूरानी बनाया और उसके लिए मंज़िलें मुक़र्रर कीं ताकि तुम सालों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह तआला ने यह चीज़ें बेफ़ायदा नहीं पैदा कीं। वह यह दलाइल उन लोगों को साफ़-साफ़ बतला रहा है जो अक़्लमंद हैं। (5) बिला शुब्हा रात और दिन के एक के बाद एक आने में और अल्लाह तआला ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सब में उन लोगों के वास्ते दलाइल हैं जो (अल्लाह तआला) का डर रखते हैं।" (6)

कुफ़्र की सज़ा दर्दनाक अज़ाब (आयत 4-6) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि क़यामत के दिन मख़्लूक़ का रुजूअ (वापिस लौटना) उसी की तरफ़ होगा हर मुतनफ़्फ़िस जिसको उसी ने पैदा किया है ज़रूर वह फिर उसकी तरफ़ लौटाया जाएगा। क्योंकि जैसे पहले पैदा किया था दोबारा भी उसी को पैदा कर सकता है और नेक आमाल की जज़ा इंसाफ़ के साथ देगा, कम न करेगा, और काफ़िरों को उनके कुफ़्र की वजह से क़यामत में मुख़्तलिफ़ अज़ाब दिए जाएँगे जैसे बादे समूम (ज़हरीली हवा) और आबे हमीम (खौलता हुआ पानी) के और इसी नोइयत (क़िस्म) के और भी। यह जहन्नम जिसे काफ़िर झुठलाते हैं उसी में रात दिन उनका बसेरा होगा और गर्म पिघले हुए तांबे की तरह पानी पीने को मिलेगा।

अल्लाह तआला की निशानियों का बयान : अल्लाह तआला इस बात की ख़बर दे रहा है कि अल्लाह तआला ने अपने कमाले क़ुदरत पर और अज़्मते सल्तनत पर दलालत करने वाली कैसी कैसी निशानियाँ पैदा कीं। जर्मे शम्स (सूरज) से निकलने वाली शुआओं (किरणों) को उसने तुम्हारे लिए ज़िया (रोशनी) बनाया और क़मर की रोशनी को तुम्हारे लिए नूर बनाया। सूरज की रोशनी अलग क़िस्म की है और चाँद की रोशनी अलग क़िस्म की है, रोशनी एक ही है फिर भी दोनों में बड़ा फ़र्क़ है , एक रोशनी दूसरी से मेल नहीं खाती। दिन में सूरज की बादशाहत है तो रात में चाँद की। अज्रामे समावी दोनों, लेकिन सूरज के मनाज़िल नहीं मुक़र्रर किए और चाँद के मनाज़िल मुक़र्रर किए। पहली तारीख़ चाँद निकलता है तो बहुत ही छोटा होता है फिर उसकी रोशनी भी बढ़ती जाती और जर्म भी बढ़ता है, यहाँ तक कि कामिल हो जाता है। गोल दायरा बन जाता है, उसके बाद फिर घटना शुरु हो जाता है और पूरे एक महीने बाद फिर अपनी पहली हालत में आ जाता है। जैसाकि फ़र्माया, अल्लाह तआला ने (وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ) (36/यासीन : 39, 40) चाँद के लिए हमने घटने और बढ़ने के मनाज़िल क़रार दिए हैं कि वह घट-घट कर सूखी टहनी की तरह हो जाता है। न तो सूरज चाँद को जा पकड़ता है और न रात ही दिन से आगे बढ़ जाती है। हर एक अपने-अपने वक़्त और क़ानून की रू से अपने-अपने मदार पर घूम रहे हैं। और क़ौलुहू तआला (وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا) (6/अन्आम : 96) सूरज और चाँद का अपना-अपना हिसाब है। इस आयते करीमा में बताया

गया है कि सूरज के ज़रिये दिन पहचाने जाते हैं और चाँद की गर्दिश से महीनों और सालों का हिसाब लगाया जाता है। अल्लाह तआला ने उनको बेकार नहीं पैदा किया है बल्कि ख़ल्क़े आलम में एक हिक्मते अज़ीमा पोशीदा है और उसकी क़ुदरत पर हुज्जते बालिग़ा है जैसाकि फ़र्माया (وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا) (38/ साद : 27) यानी हमने आसमान व ज़मीन व इनके बीच को बातिल तौर पर नहीं पैदा किया है। यह काफ़िरों का गुमान है। काफ़िरों पर दोज़ख़ की हलाकत है। और क़ौलुहू तआला (اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ) (23/मुअमिनून : 115) क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा कर दिया, बेकार पैदा होकर तुम बेकार मर गये और फिर हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे। अल्लाह तआला की ज़ात बुलंद व बाला है वह अल्लाह वाहिद रब्बे अर्शे करीम है।

आयात का मतलब यह है कि हम हुज्जत व दलाइल खोल-खोलकर बयान करते हैं ताकि समझने वाले समझ जाएँ। इख़्तिलाफ़े लैलो नहार का मतलब यह है कि दिन जाता है तो रात आती है और रात जाती है तो दिन आता है। एक दूसरे पर ग़ालिब आकर क़रार पज़ीर नहीं हो जाता। जैसाकि क़ौले बारी तआला है (النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا) (7/आराफ़ : 54) रात-दिन पर छा जाती है और दिन रात पर छा जाता है मगर क्या मजाल कि सूरज चाँद से जा टक्कर खाए, सुबह्र को पौ फटती है और रात सुकून से गुज़रती है। अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन में जो कुछ पैदा किया है वह इस बात की निशानियाँ हैं कि उसकी क़ुदरत कितनी अज़ीम है जैसाकि क़ौले इलाही है (فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا) (6/अन्आम : 96) ज़मीन व आसमान में अल्लाह तआला की कितनी ही निशानियाँ भरी पड़ी हैं (وَ كَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ) (12/यूसुफ़ : 105) ग़ौर करो कि आसमान व ज़मीन में क्या कुछ निशानियाँ नहीं हैं ओर काफ़िरों को आगाह करने के लिए क्या क्या दलाइल नहीं। नीज़ अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या वह आसमान व ज़मीन में इधर-उधर अपने आगे और पीछे नज़र नहीं डालते, यह निशानियाँ अक़्ल वालों के लिए हैं और अल्लाह का एक़ाब व अज़ाब से बचने वालों के लिए हैं।

***

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

तर्जुमा : ''जिन लोगों को हमारे पास आने का अंदेशा नहीं है और वह दुनियावी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए हैं और उसमें जी लगा बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से बिलकुल ग़ाफ़िल हैं (7) ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से जहन्नम है।'' (8)

आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह देने वालों का बुरा अंजाम (आयत 7, 8) : जो अश्क़िया (बदबख़्त) कि क़यामत के दिन, अल्लाह तआला से मिलने का इंकार करते हैं और मुलाक़ाते इलाही का ज़रा भी यक़ीन

नहीं सिर्फ़ हयाते दुनियावी के तालिब हैं और इसी दुनिया से उनके नुफ़ूस ख़ुश हैं, इस आयत में उन्हीं के बारे में ख़बर दी गई है। हसन (रह.) कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! इन काफ़िरों ने हयाते दुनियावी को न तो ज़ीनत दी, न उसको मुर्तफ़अ किया और फिर इस ज़िन्दगी से राज़ी भी हो गए, वह अल्लाह की आयाते कोनिया से बड़े ही ग़ाफ़िल हैं। ज़रा भी अपनी ज़ीस्त पर ग़ौर व तदब्बुर नहीं करते, क़यामत के दिन इनका ठिकाना जहन्नम है और यह ठीक बदला है उनके आमाले दुनियावी का क्योंकि अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) और यौमे आख़िरत से उन्होंने जो इंकार किया और जो गुनाह और जराइम इन्होंने किए उनका इक़्तिज़ा यही था।

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ⑨ دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑩

तर्जुमा :"यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनका रब उनको मोमिन होने की वजह से उनके मक़्सद तक पहुँचा देगा, उनके नीचे नहरें जारी होंगी, चैन के बाग़ों में। (9) उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका बाहमी सलाम यह होगा अस्सलामु अलयकुम! और उनकी अख़ीर बात यह होगी तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जो सारे जहान का पालनहार है।" (10)

जन्नत सलामती का घर है (आयत 9, 10) : यहाँ उन सआदतमंदों की ख़बर दी जा रही है जो ईमान लाए और पैग़म्बरों की तस्दीक़ की, फ़र्मांबरदारियाँ कीं, नेक अमल किए और यह वादा किया गया कि उनके नेक आमाल की बिना पर उन्हें हिदायत बख़्शी जाए। यहाँ (बि ईमानिहिम) का (ब) सबबिया हो सकता है यानी दुनिया में उनके ईमान लाने की वजह क़यामत के दिन सिराते मुस्तक़ीम पर अल्लाह तआला उन्हें सीधा क़ायम रखेगा यहाँ तक कि वह उसको तै कर लेंगे और जन्नत तक जा पहुँचेंगे। और यह भी एहतिमाल है कि यह (ब) इस्तिआनत का हो जैसे कि मुजाहिद (रह.) ने कहा है कि उनके साथ एक नूर होगा जिसकी मदद से वह रास्ते में चलेंगे। और इब्ने जरीर (रह.) का क़ौल है कि उनके आमाल एक अच्छे मुजस्समे और हवाएँ ख़ुश्बूदार की शक्ल में होंगे और जब क़ब्र से उठेंगे तो यह मुजस्समाते हस्ना उनके आगे आगे चलेंगे और उन्हें हर तरह के ख़ैर की ख़ुशख़बरी देते रहेंगे और जब वह नेकोकार पूछेगा कि तुम कौन हो? तो वह कहेंगे कि हम तुम्हारे आमाले सालेह हैं, अब वह उसके सामने नूर बनकर चलते रहेंगे और जन्नत तक उसे ला छोड़ेंगे। इसीलिए अल्लाह तआला ने कहा है कि (यहदीहिम रब्बुहुम बि ईमानिहिम) और काफ़िर के आमाल निहायत बदसूरत मूर्ती की शक्ल में होंगे और निहायत बदबूदार हवा का जिस्म इख़्तियार करेंगे। वह अपने साथी के

साथ चिमटे रहेंगे और दोज़ख़ में ला गिराएँगे। क़तादा (रह़.) का भी यही क़ौल है, वल्लाहु आलम!

अहले जन्नत का यह ह़ाल होगा कि उनका ख़िताब (सुब्ह़ानकल्लाहुम्मा) होगा। इब्ने जुरैज (रह़.) कहते हैं कि जब उनके पास से कोई परिन्द उड़ता गुज़रेगा जिसकी ख़्वाहिश उन्हें पैदा होगी तो मज़्कूरा बाला कलिमा ज़ुबान पर लाएँगे यही उनका बुलावा होगा तो एक फ़रिश्ता उनके मरग़ूबात लेकर ह़ाज़िर हो जाएगा, सलाम करेगा। वह सलाम का जवाब देंगे। चुनाँचे फ़र्माया (तह़िय्यतुहुम फ़ीहा सलामुन) वह जब खा चुकेंगे तो अल्लाह का शुक्र और ह़म्द किया करेंगे। इसीलिए कहा कि (आख़िरु दअ़वाहुम अनिल ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन) मुक़ातिल बिन ह़य्यान (रह़.) कहते हैं कि जब अहले जन्नत कोई खाने की चीज़ मंगवाना चाहेंगे तो (सुब्ह़ानकल्लाहुम्म) कहेंगे, तो उसके पास दस हज़ार ख़ादिम सोने के तश्त लिए ह़ाज़िर हो जाएँगे कि हर बर्तन में एक ताज़ा ताज़ा खाना होगा। हर एक में से कुछ न कुछ खाएँगे। सुफ़ियान सौरी (रह़.) कहते हैं कि जब कोई शख़्स कोई चीज़ मांगेगा तो (सुब्ह़ानक) कहेगा। और यह आयत (تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ) (33/अह़ज़ाब : 44) वाली आयत के मुशाबेह है। और क़ौलुहू (لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿۲۶﴾) (56/वाक़िया : 25, 26) वग़ैरह यह सब इस बात पर दलालत करते हैं कि, रब पाक हमेशा हमेशा मह़मूद है और हमेशा का मअ़बूद है, इसीलिए इब्तिदाए ख़ल्क़ में भी उसने अपनी ज़ात की तारीफ़ फ़र्माई और इस्तिम्रारे ह़ाल में भी इब्तिदा-ए-कुरआन में भी और इब्तिदाए तंज़ील में भी जैसाकि फ़र्माया (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ) (18/कहफ़ : 1) जिसकी शरहे अह़वाल बहुत लम्बा व बसीत़ है। वह अव्वल व आख़िर मह़मूद है ख़्वाह दुनिया हो कि दीन हो, इसीलिए ह़दीस में है कि अहले जन्नत को तस्बीह़ सिखाई गई है जैसाकि नफ़्स की ख़्वाहिशात भी उन्हें दी गई हैं। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नति व अहलिहा.... : 2835) और जैसे जैसे अल्लाह तआला की नेअ़मतें उन पर बढ़ती जाएँगी, यह तह़मीद व तस्बीह़ भी मुस्तज़ाद होती जाएगी, न इसको इख़्तिताम होगा, न इन्क़िज़ाअ। अल्लाह के सिवा कोई और अल्लाह और पालनहार नहीं है।

***

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ
لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ
قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲﴾

तर्जुमा :"और अगर अल्लाह तआला लोगों पर जल्दी से नुक़्सान वाक़ेअ कर दिया करता जिस तरह वह फ़ायदा के लिए जल्दी मचाते हैं तो उनका वादा कभी का पूरा हो चुका होता। तो हम उन लोगों को जिनको हमारे पास आने का अंदेशा नहीं है उनके हाल पर छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (11) और जब इंसान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी बैठे भी खड़े भी, फिर जब हम उसकी तक्लीफ़ उससे हटा देते हैं तो फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है कि गोया जो तक्लीफ़ उसको पहुँची उसके हटाने के लिए कभी भी हमको पुकारा ही न था, इन हद से निकलने वालों के आमाल इनको इसी तरह अच्छे मालूम होते हैं।" (12)

अपने और अपने अहलो अयाल के लिए बद् दुआ न करनी चाहिए (आयत 11, 12) : अल्लाह तआला अपने बन्दों पर अपने लुत्फ़ो हिल्म की ख़बर दे रहा है कि इंसान अगर अपनी तंगदिली और गुस्सा की वजह से अपनी जान और माल और औलाद को कोसता है तो अल्लाह तआला उसकी बद् दुआ क़बूल नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि यह बद् दुआ कुछ दिली इरादे से नहीं की गई है। यह अल्लाह की ऐन रहमत और करम का इक़्तिज़ा था। लेकिन वह दुआ क़बूल कर लेता है अगर वह अपने नफ़्सों और माल और औलाद के लिए करें और इसीलिए फ़र्माया कि अल्लाह तआला उन्हें मुसीबत पहुँचाने में भी ऐसी ही जल्दी करे जैसे कि इंसान अपनी ख़ैर के लिए जल्दी करता है तो उसके लिए तो न आती मौत आ जाए। लेकिन इंसान के लिए यह हर्गिज़ ज़ेबा नहीं कि बार बार ऐसा कहने लगे और बद् दुआएँ देने की आदत ही डाल ले। जैसे कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने को कोस न लिया करो और न अपनी औलाद और माल को बद् दुआएँ दो। क्योंकि कोई कोई लम्हा दुआ की क़ुबूलियत का होता है अगर उस वक़्त बद् दुआ ज़ुबान से निकल गई तो कारगर ही होकर रहेगी। (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब अन्नही अंय्यदउल इंसानु अला अहलिही व मालिही : 1532; सहीह मुस्लिम : 3009; में इस मअनी की रिवायत मौजूद है।) मुजाहिद (रह.) ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा है कि यह बद् दुआ इंसान का क़ौल है जो बवक़्ते ग़ज़ब अपने या अपने माल व औलाद के लिए करता है, ऐसी सूरत में चाहिए कि आदमी फ़ौरन यह कह ले (अल्लाहुम्मा ला तबारका फ़ीहि) यानी ए अल्लाह! इस बात में बरकत न दे। वरना उसकी बात क़बूल हो जाएगी तो उसका तो नास ही जाएगा।

अक्सर लोग एहसान फ़रामोश हैं : इस आयत के ज़रिये अल्लाह तआला ख़बर देता है कि जब इंसान को किसी मुसीबत का सामना होना है। जैसाकि फ़र्माया (وَ اِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَى الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ) (41/फ़ुस्सिलत : 51) यानी मुसीबत आती है तो बड़ी लम्बी चौड़ी दुआएँ मांगने लगता है। पिछली आयत और यह आयत दोनों हम मअना हैं क्योंकि जब उसको सख़्ती पहुँचती है तो बेताब और बेसब्रा हो जाता है। उठते बैठते, सोते जागते, मुसीबतों के बादल हट जाने की दुआएँ मांगने लगता है। और जब अल्लाह तआला उसको परेशानियों और मुसीबतों से नजात देता है तो वह अब ऐराज़ करने लगता है, पहलू तही करता हे जैसे कभी उस पर मुसीबत आई ही न थी। अल्लाह तआला इस शेवा की मज़म्मत करते हुए कहता है कि यह बात तो गुनहगारों और बदकारों ही को ज़ेब देती है और अल्लाह तआला ने जिन्हें हिदायत व तौफ़ीक़ अता की है वह इससे अलग हैं। जैसाकि हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि मोमिन का मामला भी बड़ा अजीब है जो कुछ अल्लाह की

तरफ़ से उस पर सरज़द होता है उसके लिए ख़ैर ही बन जाता है। नुक़्सान पहुँचे और उसने सब्र किया तो अज्र मिला और राहत व मसर्रत पहुँची और शुक्र किया तो अज्र मिला। यह नवाज़िश तो सिर्फ़ मोमिन ही के साथ ख़ास है। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़् ज़ुहद, बाब अल्मोमिन अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999)

***

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

तर्जुमा : "और हमने तुमसे पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया हालाँकि उनके पास उनके पैग़म्बर भी दलाइल लेकर आए और वह ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुज्रिम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (13) फिर उनके बाद हमने दुनिया में बजाए उनके तुमको आबाद कर दिया ताकि हम देख लें कि तुम किस तरह काम करते हो।" (14)

दुनियादार ज़ालिम लोग हैं (आयत 13, 14) : अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि पिछले रुसुल जब उन काफ़िरों के पास खुली दलाइल और वाज़ेह बराहीन लेकर आए थे और उन्होंने झुठलाया तो कैसे हलाक कर दिए गए थे, फिर अल्लाह पाक ने उनके बाद इस क़ौम को पैदा किया है और इनके पास अपना एक रसूल भेजा है और देखना चाहता है कि यह भी अपने रसूल (ﷺ) की बात सुनते हैं या नहीं। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि "दुनिया बड़ी शीरीं और बड़ी सरसब्ज़ है। अब अल्लाह तआला ने दुनिया में तुमको पिछली क़ौमों का जानशीन बनाया है ताकि देखे कि तुम कैसा अमल करते हो। चाहिए कि दुनिया की नाजाइज़ ख़्वाहिशात से अलग थलग ही रहो और बड़ी बात यह है कि औरतों से बहुत मुहतात रहो। क्योंकि पहला फ़ित्ना जो बनी इस्राईल पर आया वह औरतों का फ़ित्ना था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अक्सरु अहलिल जन्नतिल फ़ुक़रा.... : 2742)

एक बार औफ़ बिन मालिक (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से अपना ख़्वाब बयान किया कि गोया एक रस्सी आसमान से लटकी हुई है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसको खींच लिया फिर वह आसमान से मुअल्लक़ हो गयी तो अब अबूबक्र (रज़ि.) ने खींच लिया। फिर लोग मिम्बर के अतराफ़ उसको नापने लगे और उमर (रज़ि.) के नाप में वह मिम्बर से तीन हाथ लम्बी निकल आई। वहाँ उमर (रज़ि.) भी थे। उमर (रज़ि.) ने सुनकर कहा, "अरे! तुम्हारा ख़्वाब छोड़ो भी, कहाँ का ख़्वाब और हमें उससे क्या वास्ता" लेकिन जब उमर (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए तो औफ़ (रज़ि.) से कहने लगे, औफ़ (रज़ि.)! तुम अपना ख़्वाब तो सुनाओ, औफ़ (रज़ि.) ने कहा, अब ख़्वाब की क्या पड़ी है तुमने तो मुझे उसके सुनाने पर झिड़क दिया था। उमर

(रज़ि.) ने कहा, अल्लाह तुम्हारा भला करे मैं हरगिज़ यह नहीं चाहता था कि तुम नफ़्से सिद्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़तुर्रसूल की ख़बरे मर्ग सुनाओ। फिर औफ़ (रज़ि.) ने ख़्वाब बयान किया जब यहाँ तक पहुँचे कि लोग मिम्बर तक तीन तीन हाथ उसे नापने लगे। तो उमर (रज़ि.) ने कहा कि एक तो उन तीन में से ख़लीफ़ा था यानी अबूबक्र (रज़ि.) और दूसरा वह जो अल्लाह के मामले में किसी की मलामत व नाराज़ी की परवाह नहीं करता और तीसरे हाथ पर इख़्तिताम का मतलब यह है कि वह शहीद होगा। उमर (रज़ि.) ने कहा, क़ौलुहू तआला (सुम्मा जअल्नाकुम ख़लाइफ़ा फ़िल अर्ज़ि मिम् बअदिहिम लि नन्ज़ुरा कैफ़ा तअमलून) अब हम तुमको ख़लीफ़ा बनाते हैं और देखते हैं कि तुम कैसा अमल करते हो। चुनाँचे ऐ उमर (रज़ि.)! अब आप ख़लीफ़ा बने हैं और करते वक़्त सोचो कि क्या कर रहे हो, लौमत लाइम से न डरने का ज़िक्र जो उमर (रज़ि.) ने किया, वह अहकामे इलाही के बारे में था, और लफ़्ज़े शहीद से हज़रत उमर (रज़ि.) की मुराद यह थी कि मेरे लिए शहादत मुक़द्दर है और उस वक़्त है कि सारे लोग मेरे फ़र्मांबरदार होंगे। (तब्री : 15/39)

***

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ
اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ
اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ
وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾

तर्जुमा : "और जब इनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिलकुल साफ़ साफ़ हैं तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का अंदेशा नहीं है यूँ कहते हैं कि उसके सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाइए या इसमें कुछ तर्मीम (घटाना-बढ़ाना) कर दीजिए। आप (ﷺ) यूँ कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें तर्मीम कर दूँ बस मैं तो उसी की इत्तिबाअ करूँगा जो मेरे पास वही के ज़रिये से पहुँचा है अगर मैं अपने रब की नाफ़र्मानी करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अज़ाब के अंदेशा रखता हूँ। (15) आप (ﷺ) यूँ कह दीजिए कि अगर अल्लाह को मंज़ूर होता तो न तो मैं तुमको वो पढ़कर सुनाता और न अल्लाह तआला तुमको उसकी ख़बर देता क्योंकि उससे पहले भी तो एक बड़े हिस्सा उम्र तक तुममें रह चुका हूँ, फिर क्या तुम इतनी अक़्ल नहीं रखते।" (16)

शरीअत साज़ अल्लाह तआला है किसी नबी (عليه السلام) को तर्मीम का इख़्तियार नहीं (आयत 15, 16) : मुश्रिकीने क़ुरैश में से जो सरकश काफ़िर थे और जो हर बात से इंकार व ऐराज़ करते थे उनके बारे में इर्शाद होता है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अल्लाह की किताब उन्हें सुनाते हैं और खुले दलाइल पेश करते हैं

तो कहते हैं कि इस क़ुरआन के सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ जो दूसरे ढंग से लिखा हुआ हो। अब अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) से इर्शाद फ़र्माता है कि इनसे कह दो कि भला मुझे क्या हक़ है कि मैं अपनी तरफ़ से क़ुरआन को बदल दूँ। मैं तो सिर्फ़ एक बन्दा मामूर हूँ और अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने वाला एक क़ासिद हूँ, यह जो कुछ मैंने तुमको पेश किया है यह अल्लाह ही की मशिय्यत और इरादे से हुआ है। मैं तो वही कहता हूँ जो मुझ पर वही उतरती है अगर मैं अल्लाह की नाफ़र्मानी करूँ तो मुझे अज़ाबे क़यामत का बहुत डर है। और इस बात की दलील कि यह मेरी तरफ़ से बनाई हुई बातें नहीं हैं, यह है कि अगर मैं बना सकता तो तुम भी बना सकते हालाँकि तुम भी उसके बनाने से आजिज़ (बेबस) हो, तो फिर मैं कैसे आजिज़ न होता। ज़ाहिर है कि यह क़ुरआन अल्लाह के सिवा और किसी का कलाम नहीं हो सकता और फिर यह कि तुम मेरी सदाक़त और अमानतदारी को उस वक़्त से जानते हो जबसे कि मैं तुम्हारी क़ौम में पैदा हुआ हूँ और अब भी मेरी सदाक़त को जानते हो जबकि मैं तुम्हारी तरफ़ मब्ऊस होकर आया हूँ, तुम मेरी सदाक़त ईमानदारी पर कोई नुक्ताचीनी नहीं कर सकते हो। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि कह दो कि मैंने तो एक लम्बी ज़िन्दगी तुम्हारे साथ गुज़ारी है, अरे क्या तुमको इतनी भी समझ नहीं कि हक़ और बातिल को अलग-अलग कर सको। इसीलिए जब हिरक़्ल शाहे रूम ने अबू सुफ़ियान और उनके साथियों से नये नबी के हालात पूछे और अबू सुफ़ियान से पूछा कि क्या कभी उसका झूठ तुम पर साबित हो चुका है? तो अबू सुफ़ियान ने कहा, नहीं! अबू सुफ़ियान (रज़ि.) तो उस ज़माने में काफ़िरों के सरदार और मुश्रिकीन के क़ाइद (लीडर) थे, लेकिन बावजूद इसके हक़ बात का उन्हें ऐतिराफ़ करना पड़ा। जादू वह जो सर चढ़कर बोले। तो हिरक़्ल ने उनसे कहा कि जिस शख़्स ने कभी इंसानों से मामला में झूठ न कहा हो, वह अल्लाह तआला के मामले में कैसे झूठ कहेगा? (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वही, बाब कैफ़ काना बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 7; सहीह मुस्लिम : 1773) और जाफ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने नजाशी मुल्के हब्शा से कहा था कि अल्लाह तआला ने हमारे पास एक रसूल भेजा है जिसकी ज़ाती सच्चाई और नसब की ख़ूबी और अमानत से हम ख़ूब वाक़िफ़ हैं और नबुव्वत से पहले आपका क़याम हमारे साथ चालीस बरस तक रहा है। सईद बिन मुसय्यिब (रह.) 43 बरस तक कहते हैं, और सहीह क़ौल पहला ही है।

***

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ⑰

तर्जुमा : "तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठ बतलाए, यक़ीनन ऐसे मुज्रिमों को हर्गिज़ कामयाबी न मिलेगी।" (17)

रसूल (ﷺ) का नूरानी चेहरा भी सदाक़त की एक दलील है (आयत 17) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उससे बढ़कर ज़ालिम और सरकश कौन हो सकता है कि जो अल्लाह तआला पर बोहतान बाँधता है, अल्लाह के बारे में झूठी बातें बनाता है और झूठ मूट यह दावा कर बैठता है कि वह अल्लाह का भेजा हुआ है। उससे बढ़कर मुज्रिम और गुनहगार कोई हो ही नहीं सकता। यह बात तो किसी गबी और बुद्धू आदमी से भी

छुपी ढकी नहीं तो अक़्लमंद अम्बिया से कैसे छुपी रह सकती है। जो नबुव्वत का दावा करे ख़्वाह वह झूठा हो या सच्चा हो, अल्लाह तआला उसकी नेकोकारी और बदकारी पर दलाइल क़ायम कर देता है जो अज़्हर मिनश्शम्स होते हैं।

चुनाँचे हज़रत मुहम्मद (ﷺ) और मुसैलिमा कज़्ज़ाब दोनों को जिसने देखा है वह दोनों का फ़र्क़ बिलकुल इसी तरह पहचान सकता है, जैसे कोई दिन चढ़े की रोशनी और आधी रात के अंधेरे में फ़र्क़ कर लेता है। अब दोनों की ख़स्लतों, अफ़आल और कलाम का मुवाज़िना करो तो साफ़ तौर पर बसीरत (ओपेन) हो जाएगी कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के क़ौल व फ़ेअल में किस क़द्र सच्चाई है। और मुसैलिमा कज़्ज़ाब और सजाह और अस्वद अंसी में किस क़द्र किज़्ब व बेईमानी है। मुसैलिमा, सजाह, अस्वद अन्सी ये नबुव्वत के झूठे दावे करने वालों के नाम हैं।

अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो लोग आप (ﷺ) के आने पर बड़े ख़ुश थे। ख़ुश होने वालों में मैं भी था। मैंने पहली बार आप (ﷺ) को देखा तो दिल ने गवाही दी कि हाशा व कल्ला नूरानी चेहरा तो किसी झूठे शख़्स का हो ही नहीं सकता। मैंने आप (ﷺ) की ज़ुबान से सबसे पहले जो बात सुनी वह यह कि, ''ऐ लोगों! आपस में एक दूसरे को सलाम करो, उसकी फ़लाह की अल्लाह से दुआ करो, ग़रीबों और भूखों का पेट भरो, रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी करो, रातों में नमाज़ पढ़ो जबकि सब लोग सोये हुए हों, तुम बिला खटके जन्नत में जा पहुँचोगे।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़यामा, बाब हदीसु अफ़्शुस्सलाम... : 2485; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने माजा : 3251)

ज़िमाम बिन सअल्बा (रज़ि.) अपनी क़ौम बनी सअद बिन बक्र की तरफ़ से जब नबी (ﷺ) के पास आये तो आप (ﷺ) से कहा कि अच्छा, बताइए कि यह आसमान किसने इस क़द्र बुलंद किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने'' फिर कहा, यह पहाड़ किसने ज़मीन के अंदर नसब कर दिए? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने।'' फिर पूछा, यह ज़मीन किसने बिछा दी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने।'' फिर कहा, कि क़सम है तुम्हें उसी रब की, जिसने ऊँचा आसमान बनाया, यह बड़े-बड़े पहाड़ ज़मीन में गाड़े, और इतनी बड़ी और वसीअ ज़मीन को फैला रखा है, क्या उसने तुमको सब इंसानों की तरफ़ रसूल क़रार देकर भेजा है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! उसी अल्लाह की क़सम! कि उसी ने मुझे भेजा है।'' फिर आप (ﷺ) से सलात, ज़कात, हज्ज और रोज़ों हर एक के बारें में क़समें दे देकर पूछा और आप (ﷺ) उसी अल्लाह की क़सम खा खाकर जवाब दे रहे थे। तो उसने कहा, फिर तो तुम सच्चे हो और जिस ज़ाते इलाही ने तुम्हें सच्चा बनाकर भेजा है कि मैं इन चारों अरकान पर न ज़्यादा करूँगा, न कम। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब अल् क़िराअतु वल उर्ज़ अलल मुहद्दिस : 63; सहीह मुस्लिम : 12; इब्ने हिब्बान : 154) सहीह तौर पर अमल करूँगा। चुनाँचे इस क़द्र तामील उसके लिए काफ़ी होगी और वह नबी (ﷺ) की सदाक़त पर ईमान ले आया। क्योंकि उसने शवाहिद और दलाइल पा लिए थे। हस्सान बिन साबित (रज़ि.) कहते हैं,

लौ लम तकुन फ़ीहि आयातुम् मुबय्यिनतुन कानत बदीहतुहू तातीका बिल ख़ैरि

''यानी दलाइल अगर आप (ﷺ) के पास न भी हो तो आप (ﷺ) के चेहरा की पाकीज़गी, सादगी और मासूमियत ख़ुद आप (ﷺ) की सदाक़त व हक़्क़ानियत की दलील थी।''

लेकिन मुसैलिमा कज़्ज़ाब को साहिबाने बसीरत में से जिस किसी ने देखा वह उसके रकीक अक़्वाल, रज़ीलाना बातचीत, ग़ैर फ़सीह कलाम और अफ़आले क़बीहा और उसके झूठे और बातिल दावों को देखकर जो उसको जहन्नम में ले जाकर छोड़ेगा, यह नतीजा निकाल लेगा कि वह कैसा झूठा मुद्दई नबुव्वत था। और अल्लाह तआला के इस क़ौल (اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ) (2/बक़रह : 255) और मुसैलिमा के क़ौल (या ज़फ़्दइ बिन्तु ज़फ़दिन ऐन. नक़ी कम तन्क़ीन. ला अल्माउ तक्दिरीना वला अश्शारिबु तम्नईन) ऐ मेंढकों की औलाद मेंढक! टर्रा कितना टर्राती है, तेरे टर्राने से न पानी गदला होगा, न पीने वाले बाज़ रहेंगे। और एक इस ज़ालिम की (ख़ुदसाख़्ता) वह्यी यह है कि,

(लक़द अन्अमल्लाहु अलल हुब्ला इज़ा ख़रज मिन्हा नस्मतुन तस्आ, मिम् बैनि सिफ़ाकिंव्वहशी)

अल्लाह तआला ने बड़ा ही एहसान किया, हामिला औरत पर कि एक ज़िन्दा रूह को उसकी झिल्ली और आँतों के अंदर से निकाल बाहर किया और (अल्फ़ील वमल फ़ील वमा अदराका मल फ़ील लहू ज़नबुन क़सीर व ख़ुर्तूम तवील) हाथी, हाथी यानी क्या, क्या तुम समझे कि हाथी क्या होता है उसकी दुम छोटी होती है और सूण्ड लम्बी होती है। और (वल आजिनातु अज्ना वल ख़ाबिज़ातु ख़ब्ज़ा, वल् लाक़िमतु लुक़्मा अहालतु व सम्ना इन्ना कुरैशन क़ौमिंय्युअतदून) क़सम है आटा गूँधने वालियों की, रोटी पकाने वालियों की, सालन और घी में लुक़्मे चूर चूरकर खाने वालियों की कि कुरैश बड़ी ही ज़ालिम क़ौम है। अब हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की वह्यी पाक और झूठे की ख़ुराफ़ात,व बेतुकी बातें दोनों पर ग़ौर करो कि बच्चे भी उसके कलाम का मज़ाक़ उड़ाएँगे। इसीलिए अल्लाह तआला ने उसको ज़लील कर दिया और हदीक़ा के दिन उसको हलाक कर दिया। उसकी जमाअत परागंदा हो गई, उसके साथियों पर लानत बरसी। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास उसके लोग तौबा करते हुए आए और दीने इलाही में दाख़िल होने लगे तो ख़लीफ़ा रसूल सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुसैलिमा का कोई क़ुरआन तो सुनाओ। उन्होंने माफ़ी मांगी। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) इसरार करने लगे और कहा ज़रूर सुनाना होगा ताकि और लोग भी सुनें और उन्हें हिदायत व इल्म वाली जो वह्यी पहुँची है, उसकी अफ़ज़लियत व अहमियत को बाद अज़्मुवाज़िना (आफ़्टर कम्प्रीज़न) पहचान सकें। चुनाँचे हमने जो कुछ नक़्ल किया है, वह सुनाया। सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनसे कहा, कमबख़्तों! तुम्हारी अक़्लें किधर गई थीं, अल्लाह की क़सम! यह तो किसी बेवक़ूफ़ की ज़ुबान से भी न निकलेगा।

कहते हैं कि अम्र बिन आस (रज़ि.) मुसैलिमा कज़्ज़ाब के पास आए, ज़माना जाहिलियत में वह उसके दोस्त थे। अब तक अम्र बिन आस (रज़ि.) इस्लाम लाए हुए नहीं थे। तो उनसे मुसैलिमा ने कहा कि ऐ अम्र (रज़ि.)! तुम्हारे आदमी पर (नबी स.) आजकल क्या वह्यी उतरी है तो इब्नुल आस (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उनके अस्हाब को एक बड़ी ही ज़बरदस्त सूरत लेकिन निहायत मुख़्तसर पढ़ते सुना है। पूछा, वह क्या? अम्र (रज़ि.) ने कहा (وَالْعَصْرِ ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ﴿۲﴾) (103/अस्र : 1, 2) मुसैलिमा ने थोड़ी

देर सोचा और कहने लगा, मुझ पर भी एक ऐसी ही वह़ी उतरी है। अ़म्र (रज़ि.) ने पूछा, वह क्या है तो कहा (या वबरु या वबरु इन्नमा अन्ता उज़्नानि व स़दरुन व साइरुका ह़क़र व नक़र) ऐ वबर ऐ वबर! (जानवर) तेरे तो कान और उभरा हुआ सीना ही नुमायाँ दिखाई देते हैं बाक़ी तमाम जिस्म तो हेच पोच है। फिर कहने लगा, क्यूँ अ़म्र! वह़ी कैसी रही? तो अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम आप जानते हो कि मुझे तुम्हारी वह़ी के किज़्ब का यक़ीन है। जब एक मुश्रिक का यह ह़ाल हो कि नबी अकरम (ﷺ) की स़दाक़त और मुसैलिमा का झूठ उस पर भी मख़्फ़ी नहीं, तो स़ाहिबाने बस़ीरत पर यह बात कब पोशीदा रह सकती है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि (وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ) (6/अन्आ़म : 93) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह तआ़ला पर झूठ बाँधता है और कहता है कि मुझ पर वह़ी उतरती है, ह़ालाँकि उस पर वह़ी नहीं उतरती है या यह कहता है कि पैग़म्बर की त़रह मैं भी पैग़म्बर हूँ। और ऐसा ही वह शख़्स़ भी बड़ा झूठा है जो पैग़म्बरों की पेश की हुई वह़ी को झुठला दे जिस पर कि अल्लाह की दलीलें क़ायम हो चुकी हैं, जैसाकि ह़दीस में है कि वह बड़ा ही कमबख़्त और ज़ालिम है जिसने नबी को क़त्ल किया या किसी नबी ने उसको क़त्ल कर दिया हो। (अह़मद : 1/407; व सनदुहू ह़सन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/236; अल्मुअजमुल कबीर : 10497; इसमें (क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा अ़ज़ाब वाला होगा जिस...) के अल्फ़ाज़ हैं।)

***

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا
عِنْدَ اللّٰهِ ۭ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "और यह लोग अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़्स़ान पहुँचा सकें और न उनको नफ़ा पहुँचा सकें। और कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं, आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह तआ़ला को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो अल्लाह तआ़ला को मालूम नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह पाक और बरतर है इन लोगों के शिर्क से। (18) और तमाम आदमी एक ही त़रीक़ा के थे फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ पैदा कर लिया। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की त़रफ़ से पहले ठहर चुकी है तो जिस चीज़ में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका क़तई फ़ैसला हो चुका होता।" (19)

मुश्रिकीन बुतों को सिफ़ारिशी समझते थे (आयत 18, 19) : अल्लाह तआला सरजनिश करता है उन मुश्रिकों को जो अल्लाह को छोड़कर उन झूठे मअबूदों की पूजा करता है जो न अल्लाह के पास सिफ़ारिश कर सकते हैं (जैसाकि उन मुश्रिकीन का ख़्याल है) न नुक़्सान पहुँचा सकते हैं, न नफ़ा दे सकते हैं, न किसी चीज़ के मालिक हैं और न वह जो चाहते हैं कर सकते हैं और इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि (कुल अतुनब्बिऊनल्लाह बिमा ला यअलमु फ़िस्समावाति वला फ़िल अर्ज़ि) यानी क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो चीज़ न आसमानों में है, न ज़मीन में है। फिर शिर्क और कुफ़्र से अपनी ज़ाते करीमा को मुनज़्ज़ा फ़र्माते हुए इर्शाद होता है (सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून) अल्लाह तआला ख़बर देता है कि शिर्क लोगों में पैदा हो गया। इसका वजूद नहीं था फिर हो गया। सब लोग दीने वाहिद पर थे और वह इब्तिदा ही से इस्लाम था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि आदम और नूह (عليه السلام) के बीच दस क़र्न गुज़रे, यह सब लोग आदम (عليه السلام) के सच्चे दीन पर थे। फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो गया। (हाकिम : 2/546; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और अस्नाम और औसान की लोग इबादत करने लगे तो अल्लाह ने अपने रसूल दलाइल व बराहीन (सबूत व प्रूफ़)के साथ भेजे। जिसने अल्लाह की दलील को छोड़ दिया वह हलाक हो गया और जिसने दलील को ले लिया, वह सलामत बच गया व क़ौलुहू (वलौ ला कलिमतुन सबक़त मिर्रब्बिक) अल्लाह तआला किसी को अज़ाब नहीं देता जब तक पैग़म्बरों को भेजकर उस पर दलील व हुज्जत न क़ायम कर दे। अल्लाह तआला तो मख़्लूक़ को एक वक़्ते मुक़र्ररा तक ज़िन्दा रखता, फिर मार देता है और जिस बारे में वह आपस में इख़्तिलाफ़ात रखते थे, क़यामत के दिन उसका फ़ैसला कर देगा, मोमिनीन कामयाब रहेंगे और काफ़िर ज़लील रहेंगे।

***

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : ''और यह लोग यूँ कहते हैं कि उन पर कोई मोजिज़ा क्यूँ नहीं नाज़िल हुआ तो आप कह दीजिए कि ग़ैब की ख़बर सिर्फ़ अल्लाह को है तो तुम भी इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूँ।'' (20)

कुफ़्फ़ार के मुतालबा करने पर भी मोजिज़ा न दिखाने में भी अल्लाह की हिक्मत है (आयत 20) : यह झूठे काफ़िर कहते हैं कि मुहम्मद (ﷺ) को भी दलीले नबुव्वत ऐसी क्यूँ न मिली, जैसे समूद को नाक़ा (ऊँटनी) मिली या यह कि कोहे सफ़ा को सोना क्यूँ नहीं बना दिया गया, या मक्का के पहाड़ मक्का से हटकर उसकी जगह बाग़ और नहरें क्यूँ नहीं बन गईं। जब अल्लाह क़ादिर है तो ऐसा होना चाहिए था। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि अल्लाह अपने काम में बड़ा ही क़ादिर और हकीम है जैसाकि फ़र्माया (تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ) (25/फ़ुरक़ान : 10) बारी तआला की ज़ाते मुबारक अगर चाहे तो तुम्हारे लिए उससे भी अच्छे बाग़ात पैदा कर दे जिसके नीचे नहरें बह रही हों और उसके

अंदर महल हों। लेकिन उन्होंने तो क़यामत का इंकार कर दिया है और क़यामत का इंकार करने वाले के लिए तो हमने दोज़ख़ की आग भड़का रखी है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मख़्लूक़ के बारे में मेरा उसूल यह है कि वह जो मोजिज़ा मांगते हैं, मैं देता हूँ, अब वह मौजिज़ा देखकर ईमान ले आए तो बेहतर वरना जल्दी ही उन पर अज़ाब नाज़िल कर देता हूँ फिर क़यामत तक की मोहलत नहीं देता। इसीलिए जब अल्लाह पाक ने नबी (ﷺ) को इख़्तियार दिया कि इन दो बातों में से एक इख़्तियार कर लो कि मैं उनके ख़्वाहिश के मुताबिक़ मोजिज़ा दूँ, वह ईमान लाए तो ठीक है वरना फ़ौरन इन पर अज़ाब नाज़िल कर दिया जाएगा और दूसरी बात यह कि मैं इन्हें मरते दम तक मोहलत दूँ कि इस्लाह पज़ीर हो जाएँ। तो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने उम्मत के बारे में दूसरी बात को इख़्तियार फ़र्माया जैसाकि बीसयों बार नबी (ﷺ) का हिल्म इन काफ़िरों के साथ साबित हो चुका है। अल्लाह पाक नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि यह कह दो कि हर चीज़ अल्लाह के इख़्तियार में है, उमूर के अवाक़िब और नताइज को वही जानता है। अगर तुम अपनी आँखों से देखे बग़ैर ईमान नहीं लाना चाहते हो तो मेरे और अपने बारे में अल्लाह तआला के हुक्म का इंतिज़ार करो। हालाँकि उन्होंने नबी (ﷺ) के कुछ ऐसे मोजिज़ात भी देखे जो उनके मतलूबा मोजिज़ात से कहीं बढ़े चढ़े थे, यानी नबी अकरम (ﷺ) ने उनकी आँखों के सामने चौदहवीं के चांद को उँगली के इशारे से दो टुकड़े कर दिए, एक पहाड़ के उस तरफ़ और एक इस तरफ़ हो गया। यह तो ज़मीन पर सरज़द होने वाले मोजिज़ात से भी बड़ा मोजिज़ा था। और मस्ऊल और ग़ैर मस्ऊल हर निशानी से अफ़ज़ल था। अब भी अगर अल्लाह के इल्म में होता कि यह कोई भी मोजिज़ा तलबे रुश्दो हिदायत के जज़्बा के तहत तलब कर रहे हैं, तो अल्लाह ज़रूर क़बूल कर लेता लेकिन वह इनाद व दुश्मनी के तौर पर तलब कर रहे थे, इसलिए उनकी दरख़्वास्त रद्द कर दी गई थी। अल्लाह तआला को इल्म था कि अब भी वह ईमान न लाएँगे जैसाकि फ़र्माता है (اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ) (10/यूनुस : 96) इन पर अल्लाह की दलील मुहक़्क़क़ हो चुकी है ख़्वाह कैसी ही निशानी क्यूँ न पेश की जाए, वह ईमान न लाएँगे। क़ौलुहू तआला (وَ لَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَ كَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى) (6/अन्आम : 111) अगर हम उनके पास फ़रिश्ते भी ला खड़े कर देंऔर मुर्दे भी उनसे बात करने लगें और हर चीज़ इनके पास जमा कर दी जाए, हर मोजिज़ा बता दिया जाए तो भी यह कभी ईमान न लाएँगे क्योकि इनका मक़्सद सिर्फ़ मुकाबिरा करना और ज़िद्द करना है, जैसे कि फ़र्माया (وَ لَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ) (15/हिज्र : 14) और (وَ اِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ) (52/तूर : 44) और (وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ) (6/अन्आम : 7) अगर हम इन पर आसमानों का दरवाज़ा भी खोल दें और वह आसमान का एक टुकड़ा गिरता हुआ भी देख लें और इन पर कोई ऐसी आसमानी किताब भी नाज़िल की जाए जो काग़ज़ों का दफ़्तर हो जिसको वह अपने हाथों से भी छू सकते हों फिर भी यह काफ़िर यही कहेंगे कि अरे यह तो खुला जादू है। फिर इनके मुतालिबात क़बूल करने से हासिल ही क्या। इसलिए कि इनके मुतालबात तो बर बिनाय इनाद व दुश्मनी हैं। इसीलिए फ़र्माया कि मैं इंतिज़ार करता हूँ तुम भी इंतिज़ार करो।

***

وَإِذَآ أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيٓ اٰيَاتِنَا ۚ قُلِ اللّٰهُ
أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ
حَتّٰىٓ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ
وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ أُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ أَنْجٰىهُمْ إِذَا هُمْ
يَبْغُوْنَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : ''और जब हम लोगों को बाद इसके कि उन पर कोई मुसीबत पड़ चुकी हो किसी नेअ़मत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह इस शरारत की सज़ा बहुत जल्द देगा। बिल यक़ीन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं। (21) वह ऐसा है कि तुमको ख़ुश्की और दरिया में लिए लिए फिरता है यहाँ तक कि जब तुम कश्ती में होते हो और वह कश्तियाँ लोगों को मुवाफ़िक़े हवा के ज़रिये से लेकर चलती हैं और वह लोग उनसे ख़ुश होते हैं उन पर एक झोंका हवा का आता है और हर तरफ़ से उन पर मौजें उठती चली आती हैं और वह समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे सब ख़ालिस़ एतिक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं अगर तू हमको इससे बचा लें तो हम ज़रूर हक़ को मानने वाले बन जाएँ। (22) फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको बचा लेता है तो फ़ौरन ही वह ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगों! यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाल होने वाली है, दुनियावी ज़िन्दगी में मज़े उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुमको आना है फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुमको जतला देंगे।'' (23)

मुश्रिकीने मक्का मुसीबत के वक़्त स़िर्फ़ अल्लाह तआ़ला को पुकारते थे (आयत 21-23) : बारी तआ़ला फ़र्माता है कि मुसीबतों का मज़ा चखने के बाद जब इंसान को हमारी रहमतों से सामना होता है जैसे मुफ़्लिसी के बाद ख़ुशहाली, क़हत़ के बाद काश्त में बेहतरीन पैदावार और बारिश वग़ैरह। तो वह मज़ाक़ और झुठलाने के दर पे हो जाते हैं और जब इंसान को मुसीबतें आ घेरती हैं तो वह उठते बैठते, सोते जागते दुआओं की भरमार शुरू कर देता है।

नबी अकरम (ﷺ) ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ाई वह बरसात की रात थी, फिर आप (ﷺ) फ़र्माने लगे, ''क्या तुम जानते हो कि आज की रात अल्लाह तआला ने क्या फ़र्माया है?'' सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, ''अल्लाह और अल्लाह के रसूल (ﷺ) बेहतर जानते हैं।'' तो फ़र्माया कि, ''अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है कि आज मेरे मोमिन बन्दे भी सुबह उठे और काफ़िर बन्दे भी, लेकिन जिसने यह कहा कि यह बारिश अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत के सबब है तो वह मुझ पर ईमान लाया हुआ है और सितारों के अस्रात का मुंकिर है और जो यह अक़ीदा रखता है कि यह बारिश नछत्तरों की वजह से होती है तो वह मुझसे कुफ़्र कर रहा है और नछत्तरों पर ईमान ला रहा है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल आज़ान, बाब यस्तक़्बिलुल इमामुन्नास इज़ा सल्लम : 846; सहीह मुस्लिम : 71) कह दो, ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! मेरी हिक्मते अमली बड़ी कारगर होती है ऐसे मुज्रिम गुमान करते हैं कि कोई अज़ाबे कुफ़्र की बिना पर नहीं दिया गया लेकिन दरहक़ीक़त उनके साथ ढील रवा रखी गयी है। और जब वह अपनी इंतिहाई ग़फ़्लत में हो जाएँगे तो एक दम से धर लिए जाएँगे। हमारे फ़रिश्ते उनके आमाल लिख रहे हैं फिर वह आलिमुल ग़ैब के पास पेश कर दिए जाते हैं फिर वह हर बड़े और छोटे गुनाह की सज़ा पाते हैं।

फिर इर्शाद होता है कि बर्री और बहरी सफ़र के लिए उसने तुम्हारे लिए आसानियाँ पैदा कर दीं और पानी के अंदर भी उसने तुमको अपनी पनाह और हिफ़ाज़त में ले लिया और जब तुम कश्तियों में होते हो, हवाएँ उन कश्तियों को चलाने लगती हैं तो उनकी नर्म रफ़्तारी या सुरअते सैर पर ख़ुश होते हो, ऐन ख़ुशी के आलम में उन कश्तियों को तेज़ तुंद आँधी आ घेरती है और हर तरफ़ से मौजें लिपट पड़ती हैं तो तुम्हें यक़ीन हो जाता है कि अब तो हलाक हो गए, अब ज़ार ज़ार अल्लाह से दुआएँ मांगने लगते हो, उस वक़्त तुमको न कोई बुत याद आता है न कोई और देवता, लात और हुबल, बल्कि हमीं को पुकारते हो। पस समुन्द्र के अंदर जब अल्लाह तुमको सहीह सलामत किनारे पर पहुँचा देता है तो फिर हमसे रूगर्दां हो जाते हो। इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। यहाँ कहा गया है कि (दअ़वुल्लाह मुख़्लिसीना लहुद्दीना लइन अन्जैतना) यानी बड़े मुख़्लिस होकर पुकारने लगते हैं कि अगर तू हमको इस मुसीबत से नजात दे दे तो हम बड़े शुक्रगुज़ार बन जाएँगे। और जब वह उनको नजात दे देता है तो मुल्क में वह नाहक़ शरारत करने लगते हैं, गोया कभी उन पर मुसीबत आई ही न थी। फिर इर्शाद होता है (या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम अला अन्फ़ुसिकुम) ऐ लोगो! तुम्हारी बग़ावत का वबाल तुम्हीं पर पड़ेगा ख़ूब याद रखो कि किसी और को इसका नुक़्सान नहीं। जैसा कि हदीस में है कि अल्लाह से बग़ावत और रिश्तों को तोड़ना यह दो ऐसे गुनाह हैं कि आख़िरत में तो अज़ाब होगा ही, लेकिन दुनिया में भी जल्दतर उसकी सज़ा मिल जाती है। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िन्नही अनिल बग़्यि : 4902; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2511; इब्ने माजा : 4211; अल्अदबुल मुफ़रद : 67; हाकिम : 2/356; अहमद : 5/36; इब्ने हिब्बान : 455) इस दुनिया-ए-नापायेदार की ज़िन्दगी में तुम्हारे लिए चंद दिन मताअ़ है फिर तुम्हारी बाज़गश्त (लौटना) हमारी तरफ़ है और जब हमारी तरफ़ लौट आओगे तो हम तुम्हारे सब आमाल तुमको समझा देंगे, और उसकी पूरी पूरी जज़ा देंगे। जिसको अच्छी जज़ा मिली हो वह तो अल्लाह का शुक्र अदा करे और जिसको सज़ा मिली हो वह अपने नफ़्स पर मलामत करे।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا
يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۗ حَتّٰىٓ إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ
أَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ أَتٰىهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْأَمْسِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا إِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۗ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''बस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे ज़मीन की नबातात जिनको आदमी और चौपाये खाते हैं, ख़ूब गुंजान होकर निकले। यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक़ का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश हो गई और उसके मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इस पर बिलकुल क़ाबिज़ हो चुके तो दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ़ से कोई हादिसा आ पड़ा तो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि गोया कल वह मौजूद ही न थी। हम इसी तरह आयात को साफ़ साफ़ बयान करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो सोचते हैं। (24) और अल्लाह तआला दारुल बक़ा की तरफ़ तुमको बुलाता है और जिसको चाहता है राहे रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ देता है।'' (25)

दुनियावी ज़िन्दगी की एक मिसाल (आयत 24, 25) : दुनिया की ज़ाहिरी ज़ीनत सरसब्ज़ी व शादाबी, फिर इसके जल्दी ही ज़वाल पज़ीर हो जाने की मिसाल अल्लाह तआला रूइदगियों से दे रहा है जिनको आसमान से पानी बरसाकर अल्लाह ने ज़मीन से निकाला जिनको इंसान खाते हैं, जैसे अनाज ग़ल्ला मुख़्तलिफ़ अन्वाअ व अस्नाफ़ (तरह-तरह) के फल फुलवारी जो न सिर्फ़ इंसान की ग़िज़ा बल्कि मवेशी भी उनके डंठल और ठुण्ड खाते हैं और जब ज़मीन की यह ज़ीनते फ़ानिया बहार पर होती है और मुख़्तलिफ़ शक्लो सूरत वालों की सब्ज़ियाँ कमाल सरसब्ज़ी पर आती हैं तो ज़मींदार किसान गुमान करते हैं कि अब खेत काट लेंगे, मेवा उतार लेंगे कि अचानक बिजली या आँधी ऐसी पड़ती है कि दरख़्तों के सारे पत्ते सूख जाते हैं जल जाते हैं फल फूल तल्फ़ (बर्बाद) हो जाते हैं और इस सरसब्ज़ी व शादाबी के बाद वह एक सूखा सा ढेर बन जाते हैं गोया कि कभी यह सरसब्ज़ थे ही नहीं और कभी यह नेअमत ज़मींदार को दी ही नहीं गई थी। इसीलिए हदीस में है कि ''अहले दुनिया को नेअमतें दी जाती हैं फिर उससे आग में झोंका जाता है और पूछा जाता है कि कभी तुमको राहत मिली भी तो वह कहता है कि हर्गिज़ नहीं। एक और शख़्स होता है जो दुनिया में बड़ी-बड़ी तक्लीफ़ें उठाया हुआ होता है फिर वह जन्नत में भेजा जाता है और पूछा जाता है कि क्या कभी तुम्हें किसी क़िस्म की तक्लीफ़ पहुँची थी? तो कहता है कि कभी नहीं।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सबग़िन अन्अम अहलद् दुनिया फ़िन्नारि सबग़ अशुद्दहुम बउसन फ़िल जन्ना : 2807)

अल्लाह पाक उन हलाक होने वालों के बारे में कहता है कि वह अपने घरों में ऐसे वीरान हो गए गोया कभी बसे ही नहीं थे। फिर इर्शाद होता है (कज़ालिका नुफ़स्सिलुल आयाति) यानी हम इसी तरह बात को खोल-खोलकर दलाइल व हुज्जत के साथ पेश करते हैं ताकि लोग इस बात की इब्रत हासिल करें कि दुनिया बड़ी तेज़ी से ज़वाल पज़ीर है, दुनिया पर क़ादिर होने के बावजूद वह उनके साथ दग़ा करती है जो उसकी तरफ़ बढ़ता है, उससे भागती है और जो उससे भागता है उसके पैरों पर आ गिरती है। अल्लाह तआला ने दुनिया की मिसाल ज़मीन के नबातात से सूरह कहफ़ की दूसरी आयतों में भी की है। इर्शाद होता है (وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ) (18/कहफ़ : 45) हयाते दुनियावी की मिसाल बाराने (बारिश) नाज़िलशुदा की तरह है जो नबातात से पहले तो आ मिला सर सब्ज़ हो चुकने के बाद फिर एक वक़्त ऐसा आया कि वह नबातात सूखा सा घास बनकर रह गए जिसको हवाएँ इधर उधर ले उड़ती हैं। अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है। सूरह ज़ुमर और हदीद में ऐसा ही बयान किया गया है। ख़लीफ़ा मरवान बिन हकम (रज़ि.) मिम्बर पर यह पढ़ते हुए देखे गए कि ज़मीन जब शादाब हो गई और काश्तकार समझे कि अब फ़सल काट लेंगे, लेकिन सारी खेती बर्बाद हो जाती है और यह सारी हलाकत उनके गुनाहों और बग़ावत की वजह से होती है।

और क़ौलुहू तआला (वल्लाहु यदऊ इला दारिस्सलामि) जब अल्लाह तआला दुनिया की सुरअते ज़वाल (जल्दी खत्म होने) और जन्नत की तर्ग़ीब का ज़िक्र कर चुका तो अब जन्नत की तरफ़ बुलाता है और जन्नत को दारुस्सलाम कहता है यानी वह हर आफ़त व नुक़्सान व नक्बत से पनाह की जगह है। हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "मुझसे कहा गया कि तुम्हारी आँखें तो बज़ाहिर सोती रहीं लेकिन दिल तुम्हारा जागता रहे और कान तुम्हारे सुनते रहें। चुनाँचे मेरी आँखें तो सचमुच सो ही गई हैं लेकिन दिल होशियार था। कान खुले थे, फिर मुझसे कहा गया कि एक दौलतमंद ने एक घर बनाया, लोगों की दावत की, बुलावे भेजे तो जिसने दावत क़बूल की वह तो आया जी भरके खाया, बुलाने वाला भी ख़ुश हुआ। और जिसने दावत क़बूल न की, न वह आया न कुछ खा सका और न दावत देने वाला ख़ुश हुआ, अल्लाह ही वह दाई है और वह घर इस्लाम है, और दस्तरख़्वाने जन्नत है और पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) हैं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि "मैं ने सोते में देखा कि जिब्रईल (عليه السلام) मेरे सर के पास हैं और मीकाईल (عليه السلام) मेरे पैरों के पास, और एक अपने दूसरे साथी से कह रहा है कि इस सोने वाले पर कोई मिसाल मुंतबिक़ (फिट) करो तो दूसरे ने कहा, ऐ सोने वाले! तेरे कान सुनते हैं, तेरा दिल जागता है। तेरी और तेरी उम्मत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी बादशाह ने कोई घर बनाया हो और उसमें बड़ा सा कमरा और उसमें ख़्वान चुन दिया गया फिर क़ासिद को भेजकर लोगों को खाने के लिए बुलाया गया। कोई आया और कोई नहीं आया। चुनाँचे वह बादशाह तो अल्लाह है और घर इस्लाम है और कमरा जन्नत है और तुम ऐ मुहम्मद वह क़ासिद हो जो आया था वह दाख़िले इस्लाम हुआ था और जो दाख़िले इस्लाम हुआ वह दाख़िले जन्नत हुआ और दाख़िले जन्नत शख़्स दावत से फ़ेज़याब रहा।" (तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़ी मसलिल्लाहि व अज़्ज़ व जल्ला लि इबादिही : 2860; वहुव सहीहुन; इस रिवायत में सईद और जाबिर (रज़ि.) के बीच इंक़िताअ है जबकि

मुत्तसलन सहीह बुख़ारी, किताबुल एतिसाम, बाब अल् इक्तिदा बि सुननि रसूलुल्लाहि (ﷺ) : 7281 में मौजूद है।) हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने फ़र्माया है कि "जब सूरज निकलता है तो उसकी दोनों तरफ़ फ़रिश्ते होते हैं और आवाज़ देते हैं जिन्न व इंस के सिवा सब उसको सुनते हैं, वह कहते हैं कि ऐ लोगों! अल्लाह की तरफ़ आओ। कम मिले और काफ़ी हो जाए तो वह अच्छा है उस ज़्यादा से जो अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे।" (अहमद : 5/197; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन, मुस्नद तयालिसी : 979)

***

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ
وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ
الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾

तर्जुमा : "जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी है और मज़ीद बराँ भी और उनके चेहरों पर न कदूरत छायेगी और न ज़िल्लत। यह लोग जन्नत में रहने वाले हैं वह उसमें हमेशा रहेंगे। (26) और जिन लोगों ने बुरे काम किए उनकी बुराई की सज़ा उसके बराबर मिलेगी और उनको ज़िल्लत छा लेगी। उनको अल्लाह तआला से कोई न बचा सकेगा। गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिए गए हैं। यह लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं, वह इसमें हमेशा रहेंगे।" (27)

नेकियों का बदला जन्नत है (आयत 26, 27) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जिसने नेक अमल किए उसको आख़िरत में अच्छी जज़ा मिलेगी क्योंकि नेकी का बदला नेकी ही है बल्कि कुछ और ज़्यादा भी है यानी कम से कम दस गुना यहाँ तक कि सौ गुना ज़्यादा बल्कि उससे भी कुछ और बढ़कर जो अल्लाह के दीगर अतियात पर मुश्तमिल है जैसे जन्नत में हूर व क़ुसूर और अल्लाह की ख़ुशनुदी और ऐसा ऐसा सुरूरे क़ल्ब जो उससे अब तक मख़्फ़ी ही है। लेकिन उन सबसे बढ़कर यह अल्लाह तआला के रूए पाक का दीदार यह सारे लुत्फ़ो-करम से बढ़कर करम होगा कि वह अपने अमल के सबब इसके मुस्तहिक़ नहीं होंगे बल्कि सिर्फ़ उसके फ़ज़्लो रहम की बिना पर। सुहैब (रज़ि.) से मरवी है कि नबी अकरम (ﷺ) ने यह आयत ज़्यादा वाली तिलावत की कि, "जब जन्नती और जहन्नमी अपने अपने ठिकाने में चले जाएँगे तो एक मुनादी पुकारेगा कि ऐ अहले जन्नत! तुमसे अल्लाह का वादा है वह पूरा करना चाहता है तो वह कहेंगे अब और कौनसा वादा? तराज़ू में हमारे वज़न सक़ील बने, हमारे चेहरे रोशन कर दिए गए, हमें दोज़ख़ से नजात बख़्शी गई, तो अचानक उन पर से पर्दा उठा दिया जाएगा और उनकी नज़र अल्लाह पर पड़ जाएगी। अल्लाह की

क़सम! उससे बड़ी और कोई अ़ता जन्नतियों के लिए न होगी। यह आँखों की ठण्डक और दिल की तस्कीन के लिए सबसे बड़ी चीज़ होगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातु रूयतिल'मोमिनीन फ़िल आख़िरति रब्बहिम सुब्हानहू व तआ़ला : 181; अहमद : 4/333; तिर्मिज़ी : 2552; इब्ने हिब्बान : 7441) ग़र्ज़ मुख़्तलिफ़ अहादीस में है कि (ज़ियादतुन) से मुराद रूयते बारी तआ़ला है।

अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि (वला यरहक़ु वुजूहहुम क़तरुन) यानी अ़र्स-ए-हश्र में उनके चेहरे बेरौनक़ न रहेंगे, न फटकार होगी, न स्याही जैसा कि काफ़िरों के चेहरे स्याह ग़ुबार आलूद होंगे, फटकार बरसती होगी और जन्नतियों को ज़ाहिर और बातिन किसी क़िस्म की ज़िल्लत नसीब न होगी। बल्कि अल्लाह तआ़ला ने उनके हक़ में फ़र्माया है (فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ) (76/दहर : 11) यानी अल्लह तआ़ला उनको उस दिन के शर्र से बचा लेगा और उनके चेहरे सुर्ख़ रू और उनके दिल मसरूर (ख़ुश) होंगे। अल्लाह तआ़ला ने उन नेकबख़्तों के बारे में ख़बर दे दी कि उनकी नेकियों की जज़ा दुगुनी चोगनी होती चली जाएगी। तो अब बदबख़्त गुनहगारों और मुश्रिकों का हाल बयान करता है कि उनके साथ इंसाफ़ किया जाएगा कि उनके गुनाहों की सज़ा दुगुनी चौगुनी नहीं होगी बल्कि बराबर होगी। उन पर उनके गुनाहों की ज़िल्लत छायी हुई रहेगी। फ़र्माता है कि जब वह पेश होंगे तो तुम उनको शर्मिन्दा और ज़लील देखोगे और यह न समझना कि अल्लाह तआ़ला उन ज़ालिमों के आमाल से ग़ाफ़िल है। क़यामत के दिन तक के लिए उनके अ़ज़ाब में ताख़ीर कर दी गई है। उनको अल्लाह तआ़ला से बचाने और सिफ़ारिश करने वाला कोई नहीं। उस दिन इंसान कहेगा कि भाग ही कहाँ सकते हैं। वह हर्गिज़ नहीं छोड़े जाएँगे, अल्लाह तआ़ला के सामने उन्हें आना ही पड़ेगा उनके चेहरे इस क़द्र काले रहेंगे गोया अंधेरी रात की चादर उनके चेहरों पर चढ़ा दी गई है। उस दिन कुछ चेहरे तो रोशन होंगे और कुछ स्याह और जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा, अरे क्या ईमान ला चुकने के बाद भी तुमने कुफ़्र किया था। लो अब अपने कुफ़्र का मज़ा चखो। और जिनके चेहरे रोशन रहेंगे वह अल्लाह तआ़ला की रहमत में रहेंगे और हमेशा हमेशा रहेंगे। कुछ के चेहरे रोशन और हँसते हुए ख़ुश-ख़ुश होंगे और कुछ के चेहरों पर उदासी और तारीकी रहेगी।

***

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا
بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ
وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : " और वह दिन भी क़ाबिले ज़िक्र है कि जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर मुश्रिकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरो फिर हम उनके आपस में फूट डालेंगे और उनके वह शुरका कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। (28) तो हमारे तुम्हारे बीच अल्लाह तआला का गवाह होना काफ़ी है कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।(29) इस मक़ाम पर हर शख़्स अपने अगले किए हुए कामों पर ग़ौर कर लेगा और यह लोग अल्लाह की तरफ़ जो उनका मालिके हक़ीक़ी है लौटाए जाएँगे और जो कुछ मअबूद गढ़ लिये थे सब उनसे ग़ायब हो जाएँगे।" (30)

क़यामत के दिन मुश्रिकों और उनके शरीकों की हालत (आयत 28-30) : क़ौले बारी तआला है कि जिन्न व इंस, नेक व बद सब ही को हम क़यामत के दिन ला हाज़िर करेंगे कोई भी नहीं छोड़ा जाएगा और मुश्रिकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी अपनी जगह ठहरे रहो और मोमिनीन से अलग-थलग रहो, जिस दिन क़यामत का दिन होगा, यह दोनों क़िस्म के लोग अलग अलग रहेंगे। यह उस वक़्त होगा जबकि अल्लाह तबारक व तआला फ़स्ले मुक़द्दमात का इरादा करेगा और इसीलिए कहा गया कि मोमिनीन अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करेंगे कि जल्द फ़स्ले मुक़द्दमात (दुनयवी कामों का फ़ैसला) करे और हमें इस इंतिज़ार की घड़ी से नजात बख़्शे। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "क़यामत के दिन हम लोग दूसरे सब लोगों से ऊँची जगह पर होंगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा) : 7516; सहीह मुस्लिम : 193) अल्लाह फ़र्माएगा कि ऐ मुश्रिकों! तुम और तुम्हारे शरीक जिनकी तुम इबादत किया करते थे सब अपनी अपनी जगह अलग अलग रहो।" उन मुतक़द्दिमीन शरीकों ने इस बात से इंकार कर दिया कि वह उनसे अपनी इबादत करने को कहते थे। अल्लाह फ़र्माता है कि जिन बुज़ुर्गों की यह पैरवी करते थे और इसी बिना पर उन्हें शरीके इलाही समझकर शुरका बना लिया था अब यही शुरका उनसे बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे। अल्लाह तआला का है कि उससे बढ़कर और गुमराह कौन होगा जो ऐसे शुरका को पुकारता है जो क़यामत तक उसकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते और उसकी दुआ को सुन ही नहीं सकते। और जब लोग क़यामत के दिन उठाये जाएँगे तो वह ख़ुद अपनी पूजा करने वालों के दुश्मन होंगे और कहेंगे कि हमें तो उनकी पूजा का कोई इल्म नहीं, तुम हमारी इबादत करते होंगे लेकिन हम जानते तक नहीं और इसका गवाह अल्लाह है, हमने तो तुम्हें कभी कहा ही नहीं था कि हमारी पूजा करो। इस तरह मुश्रिकीन का मुँह बन्द कर दिया जाएगा कि जो न सुनते हैं, न देखते हैं, न किसी काम आ सकते हैं। उन्हें तुमने क्यूँ पूजा था। उनकी न तो यह मर्ज़ी थी, न इरादा था। तुमने ज़िन्दा और क़ायम, देखने वाला और सुनने वाले की इबादत छोड़ दी और जो हर बात का आलिम और क़ादिर है जिसने अपने रसूल और अपनी किताबें सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से भेजी हैं कि महज़ उसकी इबादत की जाए। जैसे कि फ़र्माया कि हर क़ौम के अंदर हमारा रसूल हमारी इबादत की तर्ग़ीब देने और बातिल की पूजा छुड़ाने आया। अब जिसने हिदायत पा ली और जो गुमराह हो गया तो गुमराह हो गया तुमसे पहले भी हमने जितने रसूल भेजे सबकी तरफ़ यही वह्य थी कि अल्लाह सिर्फ़ मैं हूँ, सिर्फ़ मेरी इबादत कराई जाए, चुनाँचे हम अपने रसूलों से पूछेंगे कि क्या तुमने हमारे सिवा किसी और की इबादत करने का हुक्म दिया था। मुश्रिकों की बहुत से क़िस्में हैं, अल्लाह तआला ने अपनी किताब में उनका ज़िक्र किया है और

उनके क़ौल व अह़वाल बयान करके उनकी तर्दीद की है। हुक्म होता है कि क़यामत के दिन हिसाब के मुआमले में हर शख़्स की आज़माइश होगी और अच्छा बुरा जो भी अ़मल किया है सामने लाया जाएगा, उस दिन सारे भेद ज़ाहिर हो जाएँगे और इंसान को अपने अगले पिछले सारे गुनाह ज़ाहिर कर देने पड़ेंगे। क़यामत के दिन उनके आ़मालनामा सामने लाया जाएगा और कहा जाएगा कि पढ़ लो अपना आ़मालनामा, इस वक़्त तुम अपने आप एह़तिसाब करने के लिए काफ़ी हो।

''आज़माइश होगी'' तर्जुमा था (हुनालिका तब्लू कुल्लू नफ़्सिम् मा अस्लफ़त) में (तब्लू) का। लेकिन कुछ लोगों ने इसको (तत्लू) पढ़ा है जिसके मअ़नी पढ़ना के हैं। फिर इसका तर्जुमा यह होगा कि ''अच्छा या बुरा जो काम वह करेंगे उसी का नतीजा भुगतेंगे'' जैसे कि ह़दीस में है कि हर उम्मत अपने अपने मअ़बूदों के पीछे रहेगी। सूरज की पूजा करने वाले सूरज के पीछे और चाँद की पूजा करने वाले चाँद के पीछे, और बुतपरस्त बुत के पीछे।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बा क़ौलुहू तआ़ला (वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़िरा.) : 7437; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 182) क़ौलुहू तआ़ला (व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल ह़क़्क़) वह अपने मौला ह़क़ीक़ी अल्लाह की त़रफ़ फेर दिए जाएँगे। वह क्या सब ही उमूर अल्लाह की त़रफ़ फेरे जाएँगे, चुनाँचे फ़ैसला करके जन्नतियों को जन्नत में और जहन्नमियों को जहन्नम की त़रफ़ भेजेगा। अब उन गुमराहों ने अपनी त़रफ़ से जो झूट मूट मअ़बूद बना रखे थे सब हवा की त़रह़ उड़ जाएँगे।

***

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ
﴿۳۲﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۳﴾

तर्जुमा : ''आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुँचाता है या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है और वह कौन है जो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है तो ज़रूर वह यही कहेंगे कि अल्लाह तो उनसे कहिए कि फिर क्यूँ नहीं परहेज़ करते। (31) तो यह है अल्लाह तआ़ला जो तुम्हारा रब्बे ह़क़ीक़ी है फिर ह़क़ के बाद और क्या रह गया, सिवाय गुमराही के, फिर कहाँ फिरे जाते हो। (32) इसी त़रह़ आपके रब की यह बात कि यह ईमान न लाएँगे तमाम मुतमर्रिद (हठधर्मी) लोगों के ह़क़ में साबित हो चुकी है।'' (33)

मुश्रिकीन अल्लाह को ख़ालिक़, राज़िक़ और मालिक मानते थे (आयत 31-33) : मुश्रिकीन पर अल्लाह तआला हुज्जत पेश करता है कि अल्लाह की वह्दानियत और रुबूबियत का एतिराफ़ करना पड़ेगा। यानी ऐ नबी (ﷺ)! पूछो कि वह कौन है जो आसमान से बारिश बरसाता है और अपनी क़ुदरत से ज़मीन को शिगाफ़ देता है जिसके अंदर से दाने वाले अंगूर, गन्ना, ज़ेतून, ख़ुरमा, घने घने बाग़ और ख़ोशेदार मेवे पैदा करता है। क्या उसके साथ कोई और अल्लाह हो सकता है तो उन्हें मानना पड़ेगा कि यह अल्लाह ही के काम हैं। अगर वह अपना रिज़्क़ रोक ले तो कौन है कि खोल दे और जिसने कि यह क़ुव्वते सामिआ (सुनने की ताक़त) और क़ुव्वते बासिरा (देखने की क़ुव्वत) दी है कि अगर चाहे तो सल्ब कर ले। तुम ख़ुद कह दो कि यह समाअत और बसारत और सारी इंसानी क़ुव्वतें अल्लाह ही ने पैदा की हैं। क्या तुम उसको नाराज़ करके पसंद करोगे कि वह तुम्हारी बसारत व समाअत छीन ले। जो अपनी क़ुदरते अज़ीमा से मुर्दे से ज़िन्दा को पैदा करता है और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है। इस आयत के बारे में इख़्तिलाफ़े राय पहले गुज़र चुका है और इस आयत का मफ़्हूम सब पर आम और हावी है और कौन सारी कायनात का इंतिज़ाम अपने हाथ में लिए हुए है कि जो कुछ होता है उसकी सवाबदीद और मर्ज़ी से। सबको यह पनाह देता है इसके बरख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। वह सब पर मुतसर्रिफ़ और हाकिम है उसके हुक्म के बाद किसी का हुक्म कोई चीज़ नहीं। वह जिसको चाहे पुछे लेकिन उसको कौन पूछ सकता है। आसमान व ज़मीन की सारी मख़्लूक़ात उसी की दस्ते निगराँ हैं। हर वक़्त उसकी निराली शान है। आसमान व ज़मीन की सारी बादशाहत उसी की है। कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन उन सारी बातों को जानते हैं और मुअतरिफ़ भी हैं। फिर तुम उनसे पूछो कि अच्छा फिर उससे डरते क्यँ नहीं हो, अपनी ख़ुद सिरी और जिहालत से उसको छोड़कर किसी और की इबादत क्यूँ करते हो। सच्चा अल्लाह तो यही अल्लाह है जिसका तुम ख़ुद ऐतिराफ़ करते हो। फिर तो अफ़राद बिल इबाद का मुस्तहिक़ वही हुआ। हक़ बात को समझ लेने के बाद फिर यह गुमराही कैसी। हर मअबूद उसके सिवा बातिल है। तुम इबादते हक़ छोड़कर इबादते मासिवा की तरफ़ किधर भटके जा रहे हो। इन सारे दलाइल के बाद अल्लाह की बात साबित व मुहक़्क़क़ हो चुकी। यानी जिस तरह इन मुश्रिकीन ने कुफ़्र किया और कुफ़्रपर क़ायम रहे। इसी तरह इन्होंने इस बात का ऐतिराफ़ भी कर लिया है कि वही पाक परवरदिगार ख़ालिक़ व राज़िक़ है, सारी कायनात में अकेला मुतसर्रिफ़ है उसी ने अपने पैग़म्बरों को तौहीद देकर भेजा। यह मुसल्लम है कि यह अश्क़िया (गुनहगार) दोज़ख़ी हैं।

***

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣٤ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ

اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ

تَحْكُمُوْنَ ۝٣٥ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ۗ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٣٦

तर्जुमा : "आप यूँ कहिए कि क्या तुम्हारे शुरका में कोई ऐसा है कि जो पहली बार भी पैदा करे फिर दोबारा भी पैदा करे। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा तो फिर तुम कहाँ भटके जा रहे हो। (34) आप कहिए कि तुम्हारे शुरका में कोई ऐसा है कि अम्रे हक़ का रास्ता बतलाता हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही अम्रे हक़ का रास्ता बतलाता है। तो फिर क्या जो शख़्स अम्रे हक़ का रास्ता बतलाता हो वह ज़्यादा इत्तिबाअ के लायक़ है या वह शख़्स जिसको बेबतलाए ख़ुद ही रास्ता न सूझे। तो तुमको क्या हो गया, तुम कैसी तज्वीज़ करते हो। (35) और इनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेअसल ख़यालात पर चल रहे हैं। यक़ीनन बेअसल ख़यालात अम्रे हक़ में ज़रा भी मुफ़ीद नहीं। यह जो कुछ कर रहे हैं यक़ीनन अल्लाह को सब ख़बर है।" (36)

सब कुछ अल्लाह तआला का पैदा किया हुआ है लोगों के शुरका (झूठे माबूद) कुछ पैदा नहीं कर सकते (आयत 34-36) : मुश्रिकीन ने अल्लाह के साथ ग़ैरुल्लाह को मिला दिया और अस्नाम और औसान को पूजने लगे, उनके इस दावे का इब्ताल किया जा रहा है कि ऐ नबी (ﷺ)! उनसे पूछो कि क्या तुम्हारे क़रारदादा शुरका में कोई है जिसने इन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हो, फिर उसमें जो मख़्लूक़ात हैं उन्हे वजूद में लाया हो या अज्रामे समावी को अपनी जगह से हटाए या उन्हें बदल दे या उन्हें फ़ना करके फिर अज़्सरे नौ (दौबारा) दूसरी मख़्लूक़ पैदा कर सके, कह दो कि तुम किसी को नहीं पेश कर सकोगे यह तो अल्लाह ही के काम हैं फिर तुम तरीक़े रास्त (सीधी राह) को छोड़कर बातिल की तरफ़ क्यूँ झुके पड़ते हो। क्या कोई है कि हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके, ऐसी रहनुमाई तो अल्लाह ही कर सकता है इस बात को तुम ख़ुद जानते हो कि तुम्हारे शरीक एक भी गुमराह को रास्ती पर नहीं ला सकते। अल्लाह पाक ही ऐसे हैरान व गुमराह की हिदायत करता है और गुमराही से रुश्द की तरफ़ इंसानों के दिल फेर सकता है। कोई बन्दा जो हक़ की तरफ़ फिरने वाले की इत्तिबाअ करे और बसीरते ताम्मा रखे। यह अच्छा या वो अच्छा जो कुछ भी हिदायत नहीं कर सकता बल्कि अपने अंधेपन की वजह से इस बात का मोहताज है कि उसी का हाथ पकड़कर कोई ले चले। इब्राहीम (अ.) ने कहा था कि ऐ मेरे वालिद! तुम अंधे बहरे मअबूद की पूजा क्यूँ करते हो हालाँकि तुमको और तुम्हारे मअबूदों को सबको अल्लाह ही ने पैदा किया है। तुम्हारी राय कैसी ग़लत है, तुम्हारी अक़्लें जाती रहीं, तुमने अल्लाह को और अल्लाह की मख़्लूक़ दोनों को बराबर कैसे बना दिया। उसको भी मानते हो, इसको भी मानते हो। फिर अल्लाह से हटकर शुरका की तरफ़ झुक पड़ते हो। रब्बे जलील ही को इबादत के लिए तुमने ख़ास क्यूँ न कर लिया कि उसकी इबादत करके गुमराहियों से निकल आते। और दुआएँ ख़ास कर अल्लाह ही से क्यूँ नहीं माँगते। यह लोग किसी दलील को काम में नहीं लाते बल्कि इस

अस्नाम परस्ती की बुनियाद किसी यक़ीन के बजाए गुमान और वहम पर उठी हुई है मगर इससे कुछ भी हासिल न होगा। अल्लाह पाक इनके हर काम को ख़ूब जानता है। यह उन काफ़िरों के लिए तहदीद और वईदे शदीद (सख़्त धमकी) है क्योंकि अल्लाह तआला ख़बर देता है कि अन्क़रीब उनकी इन हिमाक़तों की इन्हें सज़ा मिल जाएगी।

***

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا
بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "और यह क़ुरआन गढ़ा हुआ नहीं है कि ग़ैरुल्लाह से सादिर हो बल्कि यह तो उन किताबों की तस्दीक़ करने वाला है जो इसके पहले नाज़िल हो चुकी हैं और अहकामे ज़रूरिया की तफ़्सील बयान करने वाला है, इसमें कोई बात शक की नहीं, रब्बुल आलमीन की तरफ़ से है। (37) क्या यह लोग यूँ कहते हैं कि आपने इसको गढ़ लिया है। आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इसके मिस्ल एक ही सूरत लाओ और जिन जिन ग़ैरुल्लाह को बुला सको, उनको बुला लो अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि ऐसी चीज़ की तकज़ीब करने लगे जिसको अपने अहात-ए-इल्मी में नहीं लाए और हनूज़ (अब तक) इनको इसका अख़ीर नतीजा नहीं मिला। जो लोग इनसे पहले हुए हैं इस तरह उन्होंने भी झुठलाया था, सो देख लीजिए उन ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ। (39) और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो उस पर ईमान ले आएँगे और कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे। और आपका रब तआला मुफ़्सिदों को ख़ूब जानता है।" (40)

क़ुरआन हकीम लाजवाब और बेमिसाल किताब है (आयत 37-40) : इसमें एजाज़े क़ुरआन पर रोशनी डाली गयी है कि कोई इंसान भी इसकी सलाहियत नहीं रखता कि इस जैसा क़ुरआन पेश कर सके, नहीं बल्कि इस पर भी क़ादिर नहीं कि इसकी एक सूरत जैसी ही कोई सूरत बना लाए, यह उसके दावा फ़साहत और

बलाग़त की बिना पर है। क़ुरआन का इख़्तिसार उसकी शीरीनी और दुनिया और आख़िरत के लिए नफ़ा देने वाली मअ़नी कसीरा पर मुश्तमिल होना, उन चीज़ों को कोई दूसरी किताब पेश नहीं कर सकती क्योंकि यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आई हुई किताब है। वह अल्लाह तआ़ला जो अपनी ज़ात व सिफ़ात और अपने अफ़आ़ल व अक़्वाल में वाहिद व यक्ता है मख़्लूक़ का कलाम उसके कलाम के साथ मुशाबिहत क्यूँ कर पैदा कर सकता है। अल्लाह पाक फ़र्माता है कि इस जैसी तहरीर अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और की हो ही नहीं सकती। इंसान का कलाम ज़रा भी इससे मेल नहीं खा सकता और फिर यह कि क़ुरआन वही कहता है जो पिछली आसमानी किताबें कहती हैं। अल्बत्ता पिछली इल्हामी किताबों में जो तहरीफ़ व तब्दीली हुई है उसको उजागर कर दिया गया है और अह़कामे ह़लाल व ह़राम को सही तौर पर बयान किया गया है। अल्लाह रब्बुल आ़लमीन की तरफ़ से उसके होने में ज़रा शक नहीं किया जा सकता है, इसमें गुज़िश्ता ज़माने की ख़बरें भी हैं और आइन्दा ज़माने की पेशीनगोइयाँ भी हैं।

गुज़रे हुए वक़्त और आने वाले वक़्त की सब बातों पर रोशनी डाली गई है और लोगों को उस रास्ते पर चलाया गया है जो बिलकुल सही और अल्लाह को पसंद हो सकता है और अगर तुमको इसका अल्लाह की तरफ़ से होने में ज़रा भी शक हो और यह ग़लत ख़्याल तुम्हारे दिल में हो कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने इसे ख़ुद बना लिया है तो ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) भी तो तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं, अगर वह ऐसा क़ुरआन बना सकते हैं तो तुममें से क़ाबिलतरीन कोई आदमी क्यूँ नहीं बना सकता चुनाँचे अपने दावे को साबित करने के लिए इस जैसी बस एक ही सूरत पेश करो जो क़ुरआन जैसी बलाग़त और इख़्तिसारे मअ़नवियत रखती हो। ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) तो अकेले थे, अब तुम दुनिया भर के इंसान व जिन्नात सभी मिलकर कोशिश करके देखो। इस तरह़ अल्लाह तआ़ला गोया उन्हें चेलेंज करता है अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो कि यह ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) का अपना तस्नीफ़कर्दा है तो आओ! इस चैलेंज को क़बूल करो। तंहा नहीं बल्कि सैंकड़ों हज़ारों मिलकर। इसके बाद एक दूसरा इससे भी ज़बरदस्त दावा है कि यह सुन लो कि तुम कभी इस पर क़ादिर न हो सकोगे। यह बात भी हम अभी से कहे देते हैं कि तमाम जिन्न व इंस भी अगर जमा हो जाएँ कि ऐसा ही क़ुरआन बना सकें तो हर्गिज़ नहीं बना सकते, ख़्वाह अपने लिए कितने ही मददगार क्यूँ न बना लें। फिर इस दावा को दस सूरतों तक भी मह़दूद करके कहा गया जिसका ज़िक्र अव्वल सूरह हूद में है कि क्या वह कहते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने इसको बना लिया है। अच्छा तो फिर इस जैसी दस ही सूरतें तुम बनाकर ले आओ। पूरा क़ुरआन न सही इतना ही सही। अल्लाह तआ़ला को तुमने छोड़ दिया तो दूसरे सबकी तुम मदद ले सकते हो। सच्चे हो तो सामने क्यूँ नहीं आते। फिर इससे भी नीचे उतरकर इर्शाद होता है कि अगर इसको ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने बना लिया है तो ज़्यादा नहीं एक ही सूरत पेश करो।

सूरह बक़रह (जो मदीना तय्यिबा में नाज़िल हुई थी) इसमें भी यही एक सूरत ही का चैलेंज है और यह बतला दिया गया है कि तुमको ऐसा करने पर कुदरत नहीं है तो सुनो! अगर तुमने ऐसी आयतें पेश न कीं और पेश कर भी कहाँ सकते हो तो फिर अ़ज़ाबे जहन्नम से बचो। ह़ालाँकि फ़साह़त तो अ़रब की घट्टी में पड़ी हुई थी और उनका ख़ास़ कमाल समझा जाता था। उनके अश्आ़र और वह क़साइद जो कअ़बे के दरवाज़े पर चिपका कर दिए गए थे उनके कमाले बलाग़त का सबूत हैं। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने जो क़ुरआन पेश कर

दिया उसकी फ़साहत व बलाग़त को छू भी न सका। चुनाँचे उसकी बलाग़त और हलावत व इख़्तिसार और इफ़ादा व कमाल को देखकर जो ईमान ले आया, वह ले आया। क्यों कि उन्हें फ़ुस्हा व बुलग़ा में ऐसे नुक्तारस और साहिबे फ़हम भी थे जिन्होंने क़ुरआन की बलाग़त का लोहा मान लिया और सर झुका दिया। मुअतरिफ़ हो गए कि यह हो सकता है तो अल्लाह तआला ही का कलाम हो सकता है। जैसाकि हज़रत मूसा (عليه السلام) के ज़माने में जादूगर जो अपनी जादूगरी में उस ज़माने में मशहूर थे, बोल उठे कि मूसा (عليه السلام) का यह मुज़ाहिरा असा जादू से कोई ताल्लुक़ नहीं रखता, यह ताईदे रब्बानी ही के ज़रिये मुम्किन है। इसलिए यक़ीनन मूसा (عليه السلام) अल्लाह तआला के पैग़म्बर हैं क्योंकि कोई साहिबे फ़न ही किसी फ़न के कमाल को समझ सकता है। और इसी तरह ईसा (عليه السلام) जो ऐसे ज़माने में पैदा हुए थे कि जबकि तिब्ब (चिकित्सा) ने कमाल दर्जे की तरक़्क़ी हासिल कर ली थी और मरीज़ों के इलाज में माहिरीने तिब्ब (एक्सपर्अ डाक्टर) अपना कमाल दिखा रहे थे। ऐसे वक़्त में पैदाइशी अंधों और कोढ़ियों को हज़रत ईसा (عليه السلام) का सेहतयाब कर देना, बल्कि अल्लाह तआला का नाम लेकर मुर्दों को भी ज़िन्दा कर देना ऐसी चीज़ें हैं जिनके आगे किसी इलाज व दवा की कुछ नहीं चल सकती। चुनाँचे समझने वाले समझ गए कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल (ﷺ) हैं। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "हर नबी को ऐसे मोजिज़े दिये गये हैं जिनको देखकर इंसान ईमान ले आ सकें।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब कैफ़ नुज़ुलुल वही व अव्वला मा नुज़िला : 4981; सहीह मुस्लिम : 152) अल्बत्ता उनमें से कुछ ने जो क़ुरआन को समझ ही नहीं सकते थे, झुठलाने लगे। लेकिन उसकी कोई दलील वो ला नहीं सके और यह उनकी जिहालत और हिमाक़त की वजह से था। इसी क़िस्म की तक्ज़ीब अपने पैग़म्बरों की पिछली क़ौमों ने भी की थी तो अब ज़रा तुम नज़र दौड़ाओ कि उन झुठलाने वालों का कैसा बुरा हश्र हुआ जो सिर्फ़ दुश्मनी और ज़िद्द की बिना पर झुठला रहे थे। तो अब ऐ क़ुरैश के इंकार करने वालों! इनका हश्र देखकर इब्रत पकड़ो। चुनाँचे उस ज़माना में भी कुछ लोग तो ईमान ले आए और क़ुरआन से मुस्तफ़ीज़ हुए और कुछ जो ईमान नहीं लाए वह कुफ़्र की मौत मर गए। उन लोगों को अल्लाह तआला ख़ूब जानता है जो मुस्तहिक़्क़े हिदायत हैं, उन ही को हिदायत भी करता है और जो मुस्तहिक़्क़े ज़लालत हैं उनको भटकने देता है। इस अमल में वह आदिल है, ज़ालिम नहीं।

***

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـــُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ
﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـــًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : "और अगर आपको झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझको मिलेगा और तुम्हारा किया हुआ तुमको मिलेगा तुम मेरे किए हुए के जवाबदार नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का जवाबदेह नहीं हूँ। (41) और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो आपकी तरफ़ कान लगा लगा बैठते हैं क्या आप बेहरों को सुनाते हैं भले उनको समझ भी न हो। (42) और उनमें कुछ ऐसे हैं कि आपको देख रहे हैं फिर क्या आप अंधों को रास्ता दिखलाना चाहते हैं भले उनको बसीरत भी न हो। (43) यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आपको तबाह करते हैं।" (44)

रोज़े क़यामत हर कोई अपने आमाल का जवाबदेह होगा (आयत 41-44) : नबी अकरम (ﷺ) से ख़िताब हो रहा है कि अगर यह मुश्रिक तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं तो तुम भी उनसे और उनके आमाल से अपनी बेज़ारी ज़ाहिर करो और साफ़ कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। मैं तो तुम्हारे मअबूदों को न मानूँगा। इब्राहीम (عليه السلام) ने भी अपनी क़ौम से यही कहा थ कि मैं तुमसे और तुम्हारे इन झूठे मअबूदों से बरी हूँ। क़ुरैश ही में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो तुम्हारे कलामे हुस्न और क़ुरआने अज़ीम को सुनते हैं और जो मुतास्सिर (प्रभावित) हो सकते हैं और यही बहुत काफ़ी था लेकिन फिर भी वह राहे रास्त पर न आए। इसमें तुम्हारा कोई क़सूर नहीं क्योंकि तुम बहरों को सुनाने पर क़ादिर नहीं हो, और न तुमको आप यह क़ुदरत है कि तुम उनकी हिदायत करो, जब तक कि अल्लाह की मर्ज़ी भी शामिल न हो। और उन ही में ऐसे भी हैं कि जो तुम्हारी तरफ़ गहरी नज़र से देखते हैं। तुम्हारे पाकीज़ा अख़्लाक़ और हुस्ने सूरत और तुम्हारे दलाइले नबुव्वत (जिससे अहले बसीरत ही फ़ायदा उठा सकते हैं) अपनी खुली आँखों से देखते हैं लेकिन फिर भी क़ुरआन की हिदायत से कुछ फ़ेज़याब नहीं होते। जैसे कि अहले इल्म और अहले बसीरत मुस्तफ़ीद हो जाते हैं और ऐसे मोमिन लोग तुमको देखते हैं तो दीदा वक़ार (इज़्ज़त की नज़र) से देखते हैं और कुफ़्फ़ार नज़र डालते हैं तो चश्मे एहतिकार (हिक़ारत की नज़र) से डालते हैं। वह तुम्हें देखते हैं तो हंसी उड़ाते हैं। अल्लाह तआला किसी पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता। एक सुनता है और हिदायत पाता है और दूसरा भी सुनता है और देखता है लेकिन अंधा और बहरा बना रहता है, आँखें खुली हैं फिर भी अंधे हैं। कान रखते हुए बहरे हैं। दिल है मगर मुर्दा। एक ने फ़ायदा उठाया दूसरे ने नुक़्सान। बारी तआला की ज़ात पाक मुख़्तार व मुतसर्रिफ़ है। वह सबसे बाज़पुर्स करे लेकिन उससे बाज़ पुर्स कौन कर सकता है। वह तो ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लेते हैं। हदीसे क़ुदसी में है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने ज़ुल्म करने को अपने पर हराम क़रार दिया है तुम पर भी हराम क़रार देता हूँ चुनाँचे एक दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो, तुम्हारे आमाल मेरी नज़र में हैं। मैं हर क़िस्म के अमल की पूरी पूरी जज़ा देता हूँ। जिसको अच्छी जज़ा मिली वह अल्लाह का शुक्र करे और जिसको सज़ा मिली उसको चाहिए कि अपनी ही ज़ात को मलामत करे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577; तिर्मिज़ी : 2495; इब्ने माजा : 4257; अहमद : 5/160; इब्ने हिब्बान : 619)

***

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَّمْ يَلْبَثُوٓا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : ''और उनको वह दिन याद दिलाइए जिसमें अल्लाह उनको इस तरह से जमा करेगा कि गोया वह सारे दिन की एक आध घड़ी रहे होंगे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे। वाक़ेई ख़सारे में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया और वह हिदायत पाने वाले न थे।'' (45)

क़यामत के दिन नफ़्सा नफ़्सी का आलम (आयत 45) : याद दिलाया जा रहा है कि क़यामत क़ायम होगी और लोग अपनी अपनी क़ब्रों से उठकर हश्र के दिन जमा हो जाएँगे और जब वह दिन आ पहुँचेगा तो वह समझेंगे कि दुनिया में दिन का कुछ हिस्सा ही गुज़ार आए हैं यानी शाम नहीं तो सुबह रहे थे और सुबह नहीं तो शाम गुज़ारी थी जिस रोज़ सूर फूँका जाएगा तो मुज्रिमीन गिरोह-गिरोह परेशान हाल निकल आएँगे, चुपके चुपके बातें कर रहे होंगे कि बस दस दिन हमारा क़याम रहा होगा। उनमें से मुमताज़ और तेज़ हाफ़िज़ा लोग कहेंगे, अरे कहाँ के दस दिन एक ही दिन तो दुनिया में गुज़ारा। गुनहगार तब्क़ा तो क़समें खा खाकर कहेगा कि घण्टे भर से ज़्यादा कब रहे। यह सब दलील है इस बात की कि दारुल आख़िरत में दुनिया की ज़िन्दगी कैसी हक़ीर और क़सीर है। पूछा जाएगा कि बताओ, दुनिया में कितने साल गुज़ारे? तो कहेंगे एक दिन या उससे भी कम चुनाँचे याददाश्त रखने वालों से पूछ लिया जाएगा। कहा जाएगा कि काश! तुम्हें इल्म होता कि दुनिया की ज़िन्दगी कितनी थोड़ी होती है वह आपस में एक दूसरे को पहचान लेंगे। माँ बाप बच्चों को और बच्चे माँ बाप को अहले क़राबत अपने रिश्तेदारों को लेकिन हर एक अपनी अपनी मुसीबत या अपनी अपनी राहत में मसरूफ़ व मशग़ूल रहेगा जब सूर फूँका जाएगा तो फिर हसब नसब कुछ नहीं कोई अज़ीज़ अपने अज़ीज़ को नहीं पूछेगा जिन लोगों ने अल्लाह से मुलाक़ात की तक्ज़ीब की थी, वह बड़े घाटे में रहेंगे, अफ़सोस है इन झुठलाने वालों पर कि क़यामत के दिन इन्होंने अपनी ज़ात और अपने मुतअल्लिक़ीन को हलाकत में डाल दिया, इससे बड़ा घाटा और क्या हो सकता है कि अपने साथियों के सामने हस्रत व नदामत उठानी पड़े और अलग रहना पड़े।

***

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَإِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا

وَّلَا نَفۡعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ‌ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ‌ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ فَلَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا

يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝٤٩ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوۡ نَهَارًا مَّاذَا يَسۡتَعۡجِلُ مِنۡهُ

الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۝٥٠ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ‌ؕ آٰلۡئٰنَ وَقَدۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝٥١ ثُمَّ قِيۡلَ

لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡخُلۡدِ‌ۚ هَلۡ تُجۡزَوۡنَ اِلَّا بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ۝٥٢

तर्जुमा : "और जिसका इनसे हम वादा कर रहे हैं उसमें से कुछ थोड़ा सा अगर हम आपको दिखला दें या हम आपको वफ़ात दे दें तो हमारे पास तो उनको आना ही है फिर अल्लाह तआला उनके सब काम की ख़बर रखता है। (46) और हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुँचाने वाला है तो जब उनका वह रसूल आ चुकता है उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ किया जाता है और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (47) और यह लोग कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। (48) आप कह दीजिए कि मैं अपनी ज़ाते ख़ास के लिए तो किसी नफ़ा का और किसी नुक़्सान का इख़्तियार नहीं रखता, अल्बत्ता जितना अल्लाह को मंज़ूर हो। हर उम्मत के लिए एक तयशुदा वक़्त है जब उनका वह तयशुदा वक़्त आ पहुँचता है तो एक लम्हा न पीछे हट सकते हैं और न आगे सिरक सकते हैं। (49) आप (ﷺ) कह दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अगर तुम पर अल्लाह तआला का अज़ाब रात को आ पड़े या दिन को तो अज़ाब में कौनसी चीज़ ऐसी है कि मुज्रिम लोग उसको जल्दी मांग रहे हैं। (50) क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा उसकी तस्दीक़ करोगे। हाँ! अब माना हालाँकि तुम उसकी जल्दी मचाया करते थे। (51) फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा कि हमेशा का अज़ाब चखो। तुमको तो तुम्हारे किए का बदला मिला है" (52)

क़यामत के दिन पूरा पूरा इंसाफ़ होगा (आयत 46-52) : अपने नबी (ﷺ) से ख़िताब होता है कि अगर हम तुम्हारी ज़िन्दगी में उनसे इंतिक़ाम लें ताकि तुम्हारे दिल को तस्कीन मिले या तुम्हारी ही ज़िन्दगी ख़त्म हो जाए, बहरसूरत उनकी बाज़गश्त (लौटना) हमारी ही तरफ़ है अगर तुम न भी रहो तो तुम्हारे बाद उनके काम का अल्लाह गवाह बन जाएगा।

नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "गुज़िश्ता रात मेरी अगली और पिछली सारी उम्मत मेरे सामने पेश की गई तो एक शख़्स ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगली उम्मत तो ख़ैर लेकिन पिछली उम्मत जो आने वाली है और अभी पैदा ही नहीं हुई है वह कैसे पेश की गई? तो फ़र्माया कि उनकी एक ख़ाकी सूरत सामने लाई गई और मैं उनमें से हर एक को उससे भी बेहतर तौर पर पहचान रहा था जैसे कि तुम अपने किसी साथी को पहचान लेते हो।" (तब्रानी : 3054; व सनदुहू मौज़ूअ; ज़ियाद बिन मुंज़िर कज़्ज़ाब) हर उम्मत के लिए एक एक रसूल होता है, जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच एक मुंसिफ़ाना फ़ैसला हो

जाता है जैसे कि अल्लाह पाक ने फ़र्माया है कि ज़मीन अल्लाह के नूर से चमक उठती है। चुनाँचे हर उम्मत अपने पैग़म्बर की मौजूदगी में अल्लाह के सामने पेश होती है। उनका अच्छा या बुरा आमाल नामा साथ होता है। जो बहेसियत उनके गवाह के होता है। नीज़ फ़रिश्ते भी गवाह होते हैं जिन्हें उन पर निगरानकार मुक़र्रर कर दिया है। एक के बाद एक हर उम्मत पेश होती रहेगी और यह उम्मत अगरचे आख़िरी उम्मत है लेकिन क़यामत के दिन यह अव्वलीन उम्मत बन जाएगी जिसका फ़ैसला अल्लाह पाक सबसे पहले करेगा। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "हम अगरचे सबके बाद हैं लेकिन क़यामत में सबसे पहले होंगे और सारी मख़्लूक़ से पहले हमारा ह़िसाब व किताब हो जाएगा।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब फ़ज़्ल जुम्अति : 876; सह़ीह़ मुस्लिम : 855,856) इस उम्मत ने यह शर्फ़ अपने रसूल (ﷺ) की बरकत से ह़ासिल किया है आप (ﷺ) पर क़यामत तक दुरूदो सलाम हो, आमीन।

क़यामत, अज़ाब सब कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है :इर्शाद होता है कि यह मुश्रिकीन अज़ाब में जल्दी करते हैं, और वक़्ते अज़ाब आने से पहले अज़ाब मांगते हैं। उसमें इनकी कोई भलाई नहीं है। काफ़िर तो जल्दी करते हैं लेकिन मोमिन उससे डरते हैं और यक़ीन रखते हैं कि वाक़िअतन (वास्तव में) अज़ाब ज़रूर आएगा अगरचे उसका तयशुदा वक़्त मालूम न हो। इसीलिए अल्लाह पाक नबी अकरम (ﷺ) को जवाब सिखा रहा है कि कह दो कि मैं अपने नफ़्स के लिए न नुक़्सान का मालिक हूँ, न नफ़ा का, मैं सिर्फ़ उतना कहता हूँ जो मुझे बता दिया गया है और अगर मैं कुछ ह़ासिल करना चाहता हूँ तो उस पर क़ादिर नहीं जब तक कि अल्लाह तआला ख़ुद मुझे आगाह न कर दे। मैं तो उसका बन्दा और तुम्हारे लिए उसका क़ासिद हूँ, मैंने तुम्हें ख़बर दे दी है कि क़यामत ज़रूर क़ायम होगी, लेकिन उसका वक़्त मुझे भी नहीं बतलाया गया। हर क़ौम के लिए एक मुक़र्रर मुद्दत होती है और जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाएगी तो एक लम्हा की भी न उसमें जल्दी होगी, न देरी। जैसाकि फ़र्माया (وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا) (63/मुनाफ़िक़ून : 11) जब किसी का वक़्त आ जाता है तो ज़र्रा भर की भी देरी नहीं हो सकती। काफ़िरों पर अल्लाह तआला का अज़ाब अचानक आ जाएगा। अगर दिन और रात में किसी भी वक़्त अचानक आ जाए तो बताओ क्या करोगे? इसलिए जल्दी क्यूँ करते हो? जबकि आ ही जाएगा तो क्या उस वक़्त ईमान लाओगे, वह ईमान का वक़्त कब रहेगा। उस वक़्त कहा जाएगा कि लो जिस अज़ाब की जल्दी करते थे। उस वक़्त काफ़िर कहेंगे, ऐ अल्लाह! हमने देख लिया, हमने सुन लिया, अज़ाब से सामना होने पर बोल उठेंगे कि हम अब अकेले अल्लाह तआला को मानते हैं और दीगर तमाम मअबूदों से ऐराज़ करते हैं, लेकिन उस वक़्त का ईमान कोई ईमान नहीं। अल्लाह तआला की आदत तो अपने बन्दों में यूँ ही चली होती है। इन ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अज़ाब चखो। इस तरह उन्हें ख़ूब डांट दी जाएगी जिस अज़ाबे जहन्नम का वह इंकार कर रहे थे उस अज़ाब में उन्हें धक्के मार मारकर झोंका जाएगा। तुम जादू कहते थे, तो क्या यह जादू है। नहीं! बल्कि तुम ख़ुद अंधे हो, अब ख़्वाह सब्र करो या न करो, अपने बुरे अमलों का बदला ज़रूर पाओगे।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ

نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝٥٤ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَآ
إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٥٥ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٥٦
يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۙ وَهُدًى
وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ ۝٥٨

तर्जुमा : ''और वह आप (ﷺ) से पूछते हैं कि क्या अ़ज़ाब वाक़ेई अम्र है। आप (ﷺ) कह दीजिए कि हाँ! क़सम है मेरे रब की कि वह वाक़ेई अम्र है और तुम किसी त़रह अल्लाह को आ़जिज़ (बेबस) नहीं कर सकते। (53) और अगर हर हर मुश्रिक शख़्स के पास इतना हो कि सारी ज़मीन में भर जाए तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे। और जब अ़ज़ाब को देखेंगे तो पशेमानी को पोशीदा रखेंगे। और उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ होगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। (54) याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों में और ज़मीन में हैं सब अल्लाह तआ़ला ही की मिल्क (अंडर) हैं। याद रखो कि अल्लाह तआ़ला का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से लोग यक़ीन ही नहीं रखते। (55) वही जान डालता है वही जान निकालता है और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे। (56) ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से ऐसी चीज़ आई है जो नस़ीहत है और दिलों में जो बीमारी हैं उनके लिए शिफ़ा है। और रहनुमाई करने वाली है और रह़मत है ईमान वालों के लिए। (57) आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह तआ़ला के इस इन्आ़म और रह़मत पर ख़ुश होना चाहिए। वह उससे बहुत बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं।'' (58)

मरने के बाद क्या होगा (आयत 53-58) : तुमसे यह लोग पूछ रहे हैं कि मिट्टी हो जाने के बाद यह क़ब्रों से उठना क्या सच है। तो कह दो कि हाँ! अल्लाह तआ़ला की क़सम! सच है, तुम्हारा मिट्टी हो जाना और फिर हमारा तुमको दोबारा पहली ह़ालत में ले आना हमारे लिए आसान है हम उसमें आ़जिज़ नहीं। अल्लाह तआ़ला तो जब किसी चीज़ को वुजूद में लाना चाहता है तो सिर्फ़ यह कह देता है कि ''हो जा'' पस वह चीज़ वुजूद में आ जाती है। ऐसी क़स्मिया आयत क़ुरआन मजीद में स़िर्फ़ दो ही जगह और बयान होती है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) को हुक्म दिया है कि जो मआ़द का इंकार करते हैं उनसे क़सम खाकर

बयान करो। सूरह सबा में है कि काफ़िर कहते हैं कि क़यामत न होगी कह दो कि अल्लाह तआला की क़सम! होगी। और सूरह तग़ाबुन में है कि काफ़िर समझते हैं कि फिर ज़िन्दा नहीं होंगे, कह दो कि अल्लाह की क़सम! ज़िन्दा होंगे और तुम्हारे आमाल तुमको बताए जाएँगे, और यह बात अल्लाह तआला पर कुछ दुश्वार थोड़ी है। जब क़यामत क़ायम होगी तो यह काफ़िर चाहेंगे कि ज़मीन भर सोना देकर अज़ाब से छुटकारा पाएँ, लेकिन न हो सकेगा और जब अज़ाब को देख लेंगे तो एक ख़ामोश नदामत से दो चार होंगे। लेकिन जो कुछ भी उनसे बर्ताव होगा, इंसाफ़ के साथ होगा, ज़रा भी ज़्यादती न होगी।

वह आसमानों और ज़मीनों का मालिक है, उसका वादा पूरा होकर रहेगा। वह ज़िन्दा करता है, वह मारता है, बाज़गश्त (पलटना) उसी की तरफ़ है। वह इस बात पर क़ादिर है कि समुन्द्रों, मैदानों, अत्राफ़े आलम से उनके ज़र्राते ख़ाक को फिर जमा करे और फिर ज़िन्दा जिस्म बना दे।

रूहानी बीमारियों के लिए क़ुरआन किताबे शिफ़ा है : क़ुरआने अज़ीम जो दिया गया है उसका एहसान जताया जा रहा है कि ऐ लोगों ! यह पन्द व नसीहत का एक दफ़्तर है जो तुम्हारे अल्लाह तआला की तरफ़ से है और तुम्हारे दिलों के लिए शिफ़ा है यानी शक व शुब्हा को और दिलों की गंदगी और नापाकी को दूर करने वाला है इससे अल्लाह तआला की हिदायत व रहमत हासिल होगी मगर सिर्फ़ उन्हीं को जो अल्लाह तआला पर यक़ीन और ईमान रखते हैं। क़ुरआन को हमने मोमिनीन के लिए शिफ़ा और रहमत बनाकर उतारा है लेकिन गुनहगारों के लिए यह नुक़सान और ख़सारा के सिवा और कुछ नहीं। कह दो यह क़ुरआन अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहमत है इसको लेकर ख़ुश हो जाओ। और दुनियाए फ़ानी के तमत्तोआत जो तुम हासिल करते हो, उन सब में बेहतरीन चीज़ यह क़ुरआन है।

जब इराक़ का ख़िराज हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आया तो हज़रत उमर (रज़ि.) उसे देखने के लिए निकल आए, उनका ख़ादिम भी उनके साथ था। हज़रत उमर(रज़ि.) ख़िराज में आए हुए ऊँटों को गिनने लगे लेकिन कहाँ तक, गिनते गिनते थक गए, तो कहने लगे, अल्लाह तआला का शुक्र है। उनका ख़ादिम कहने लगा कि अल्लाह की क़सम! यह भी अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहमत है। तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, ऐसा नहीं! अल्लाह तआला ने (बि फ़ज़्लिल्लाहि व बि रहमतिही) कहकर क़ुरआन और उससे इस्तिफ़ादा मुराद लिया है इसलिए उसको फ़ज़्लो रहमत नहीं बल्कि (मिम्मा यज्मऊन) समझना चाहिए क्योंकि यह हमारा जमा किया हुआ है। फ़ज़्लो रहमत की तो बहुत बड़ी शान है।

***

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۗ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ

اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ

اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَھُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : "आप (ﷺ) कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए जो कुछ रिज़्क़ भेजा था फिर तुमने उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हलाल क़रार दे दिया। आप पूछिए कि क्या तुमको अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है या अल्लाह तआला पर इफ़्तिरा (झूठ घड़ना) ही करते हो। (59) और जो लोग अल्लाह तआला पर झूठ इफ़्तिरा बाँधते हैं उनका क़यामत की निस्बत क्या गुमान है? वाक़ेई लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग नाशुक्रे हैं।" (60)

ख़ुद से बनाया हुआ हलाल व हराम की मज़म्मत (आयत 59, 60) : मुश्रिकों ने कुछ जानवरों को बहाइर, सवाइब, वसाइल नाम देकर किसी को अपने ऊपर हलाल और किसी को हराम क़रार दे लिया था उसकी तर्दीद फ़र्माई जा रही है। जैसाकि इर्शादे बारी तआला है कि खेतियों में से जो निकलता है और मवेशी जो पैदा होते हैं वह उसमें से अल्लाह तआला के एक ख़ास हिस्सा क़रार देते हैं। (तब्री : 5/112) अबुल अहवस (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के पास हाज़िर हुआ और सूरत और लिबास की हैसियत से मैं बदहाल सा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "तुम्हारे पास कुछ माल व दौलत है कि नहीं?" मैंने कहा कि अल्लाह तआला का दिया सब कुछ मौजूद है। ऊँट, घोड़ों, बकरों के रेवड़ हैं, लौण्डी गुलाम हैं। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "फिर तुम पर अल्लाह तआला के आसारे नेअमत ज़ाहिर क्यूँ नहीं हैं।" फिर फ़र्माया "तुम्हारे ऊँटों के बच्चे होते हैं वह हर हिस्से से तन्दुरुस्त होते हैं लेकिन तुम उस्तरा लेकर उठते हो, उनके कान काट देते हो, कहते हो कि यह बहाइर हैं, इनकी खाल चीर देते हो, कहते हो कि अब यह सुर्म हैं। अपने पर भी हराम कर लेते हो और अपने अहल पर भी। क्या ऐसा नहीं है?" मैंने कहा, हाँ! अब आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "सुनो! जो कुछ अल्लाह तआला ने तुम्हें दिया है वह हमेशा के लिए हलाल है हराम हो नहीं सकता, अल्लाह तआला का हाथ तुम्हारे हाथ से क़वी है और अल्लाह तआला का चाक़ू तुम्हारे चाक़ू से ज़्यादा तेज़ है।" (अबूदाऊद, किताबुल लिबास, बाब फ़िल ख़ल्क़ानि व फ़ी ग़स्लिस्सौब : 4063; व सनदुहू सहीहुन; नसाई : 5226; अहमद : 3/473; वल्लफ़्ज़ु लहू) अल्लाह पाक उन लोगों से अपनी सख़्त नाराज़ी का इज़्हार करता है जो उसके हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेते हैं या हराम को अपने लिए हलाल कर लेते हैं और यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती राय और मर्ज़ी की बिना पर जिसकी कोई दलील नहीं।" फिर इनको क़यामत के दिन के अज़ाब से डराता है। फ़र्माता है कि जो लोग अल्लाह तआला पर झूठ बाँधते हैं आख़िर वह समझते क्या हैं कि क़यामत के दिन हम उनसे क्या बर्ताव करेंगे।

व क़ौलुहू तआला (इन्नल्लाह लज़ू फ़ज़्लिन अलन्नासि) लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। इब्ने जरीर (रह.) कहते हैं कि इससे काफ़िरों को दुनिया में जल्द सज़ा न देना मुराद है। मैं कहता हूँ कि इस

बात का भी एहतिमाल है कि इससे यह मुराद हो कि अल्लाह तआला बड़ा साहिबे फ़ज़्ल है, लोगों पर कि दुनिया में बहुत सी ऐसी चीज़ें इंसानों के लिए पैदा कर दीं जिनसे फ़ायदा और उनकी मन्फ़अत है और ऐसी चीज़ें इंसान के लिए हराम कर दीं जिनमें सरासर नुक़्सान था, या तो बहैसियत दीन या बहैसियत दुनिया। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यानी अल्लह तआला के इन्आमात को अपने ऊपर हराम कर लेते हैं और अपने नफ़्सों पर तंगी कर लेते हैं यानी अपनी तरफ़ से किसी को हलाल और किसी को हराम क़रार दे लेते हैं। मुश्रिकीन ने इस चीज़ को अपने अंदर बहुत शाया कर रखा है और अपना मस्लक ही ऐसा बना लिया है। अहले किताब में अगरचे यह बात नहीं थी लेकिन उन्होंने भी यह बिदअत पैदा कर ली है।

मूसा बिन सबाह (रह.) से क़ौलुहू (इन्नल्लाहा लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि) के बारे में मरवी है कि क़यामत के दिन तीन क़िस्म के अल्लाह परस्त पेश किए जाएँगे। अल्लाह तआला उनमें से एक क़िस्म से पूछेगा कि तुमने किस ख़्याल से आमाले नेक इख़्तियार किए थे? तो वह कहेगा कि या रब तआला! तूने जन्नत पैदा की, जन्नत में बाग़ , फल, अश्जार, अन्हार, हूरो क़सूर और अहले ताअत के लिए हर क़िस्म की नेअमतें मुहय्या कीं, इसी को हासिल करने के लिए मैंने रात रात भर जागकर इबादत की, दिन दिन भर रोज़े रखे तो अल्लाह तआला कहेगा कि तूने जन्नत की ख़ातिर जब यह अमल किए तो जा जन्नत ही तेरा ठिकाना है। लेकिन यह तेरे अमल का बदला नहीं। मैं तुझे दोज़ख़ से नजात देता हूँ। यह मेरा फ़ज़्ल है और मैं तुझे जन्नत में दाख़िल करता हूँ और यह मेरा फ़ज़्ल है। चुनाँचे ऐसे लोग जन्नत में जा दाख़िल होंगे। फिर दूसरी तरह के लोगों को बुलाया जाएगा। अल्लाह तआला उनसे भी यही पूछेगा तो वह कहेंगे, या अल्लाह! तूने दोज़ख़ पैदा की, दोज़ख़ में तौक़ व ज़ंजीर रखे, बादे समूम और आबे महमूम उसमें पैदा किए। अहले मअसियत के लिए सारे ही अज़ाब उसमें मुहय्या किए। चुनाँचे मैं रात रात भर जागकर इबादत करता रहा, दोज़ख़ के ख़ौफ़ से दिन दिन भर भूखा प्यासा रहकर रोज़े रखे। तो अल्लाह तआला कहेगा कि तूने दोज़ख़ से डरकर नेक आमाल किए हैं तो ले मैंने तुझे दोज़ख़ से नजात बख़्शी और फिर मेरा यह मज़ीद फ़ज़्ल है कि दोज़ख़ से नजात देने के बाद तुझे जन्नत भी दे देता हूँ, चुनाँचे वह जन्नत में जा दाख़िल होगा। अब तीसरी तरह का लोग हाज़िर किये जाएँगे और जब अल्लाह तआला पूछेगा तो वह बताएँगे कि या रब! हमने तो तेरे शौक़ और तेरी मुहब्बत के लिए तेरी इबादत की। रात भर भी इबादत की और दिन भर भी रोज़े रखे, सिर्फ़ तेरे इश्तियाक़े मुलाक़ात और तेरी रज़ामंदी के लिए। अल्लाह तआला कहेगा कि जब मेरे शौक़े लिक़ा में तुमने ऐसा किया है तो अल्लाह तआला उनके सामने जलवा अफ़रोज़ होगा और कहेगा कि लो! मुझे देख लो, मुझ पर नज़र डालो कि तुमको सबसे बड़ी दौलत मिली है। फिर कहेगा कि मैं अपने फ़ज़्ल से तुमको दोज़ख़ से भी नजात देता हूँ और जन्नत से भी तुम्हें सरफ़राज़ करता हूँ। मेरे मलाइका तेरे पास हाज़िर रहेंगे और मैं बज़ाते ख़ुद तुझ पर अपनी सलामती नाज़िल करता रहूँगा। चुनाँचे ऐसे लोग जन्नत में भी जा दाख़िल होंगे।

***

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا

عَلَيْكُمْ شُهُودًا اِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۗ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي
الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَآ اِنَّ
اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ
الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۗ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

तर्जुमा : "और आप (ﷺ) किसी हाल में हों और मिन्जुम्ला उन अह्वाल के आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों और तुम जो काम भी करते हो हमको सबकी ख़बर रहती है जब तुम उस काम को करना शुरु करते हो। और आपके रब तआला से कोई चीज़ ज़र्रा बराबर भी ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ उससे छोटी और न कोई चीज़ बड़ी, मगर यह सब खुली किताब में है। (61) याद रखो! अल्लाह तआला के दोस्तों पर न कोई अंदेशा है और न वह मग़मूम (उदास) होते हैं। (62) वो वह हैं जो ईमान लाए और परहेज़ रखते हैं। (63) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी ख़ुशख़बरी है। अल्लाह तआला की बातों में कुछ फ़र्क़ हुआ नहीं करता। यह बड़ी कामयाबी है।" (64)

अल्लाह तआला हर छोटी बड़ी चीज़ को जानने वाला है (आयत 61-64) : नबी (ﷺ) को ख़बर दी जा रही है कि अल्लाह तआला तुम्हारी उम्मत और तमाम मख़्लूक़ात के सारे अह्वाल से हर लहज़ा और हर साअत वाक़िफ़ है। ज़र्रा भर चीज़ भी ज़मीन और आसमान के अंदर ख़्वाह कितनी ही हक़ीर व छोटी क्यूँ न हो, किताबे मुबीन में यानी इल्मे इलाही में मौजूद है, उसकी निगहदाश्त से बाहर नहीं हो सकती। ग़ैब की मालूमात उसी के पास हैं। बर्र हो कि बह्र, ग़ैब की बात उसके सिवा कोई नहीं जानता। एक पत्ता भी टूटकर गिरता है या रात की तारीकियों में कहीं कोई ज़र्रा भी पड़ा रहता है और कोई चीज़ तर हो कि ख़ुश्क, अच्छी हो कि बुरी सबका उसको इल्म है। अश्जार (पेड़) व जमादात व हैवानात की हर हरकत को जानता है। ज़मीन पर जितने जानदार हैं, हवा में जितने परिन्दे उड़ते हैं यह भी सब तुम्हारी तरह गिरोह गिरोह हैं, हर जानदार की ग़िज़ा का ज़ामिन अल्लाह तआला है। जब उन चीज़ों की हरकात का भी उसको इल्म है तो इंसान मुकल्लफ़ और मामूर बिल इबादत के हरकात व आमाल का इल्म उसको कैसे न होगा। जैसाकि फ़र्माता है कि तुम उस अज़ीज़ रहीम पर भरोसा रखो जो तुम अगर नमाज़ में खड़े भी हो तो देख रहा है, सज्दा भी कर रहे तो देख रहा है, और इसीलिए फ़र्माया कि ख़्वाह तुम किसी मशग़ले में हो, क़ुरआन पढ़ रहे हो या और कोई अमल कर रहे हो, हम

देख रहे हैं और सुन रहे हैं। चुनाँचे जब जिब्राईल (अ.) ने एहसान के मअ़नी ह़ज़रत मुहम्मद (ﷺ) से पूछे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "इसका यह मत़लब है कि तुम अल्लाह तआला की इस त़रह़ से इबादत करो गोया अल्लाह तआला को देखकर इबादत कर रहे हो, और अगर यह नहीं तो कम से कम इस त़रह़ कि तुम उसके सामने हो और वह तुम्हें देख रहा है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सुआलु जिब्रईलन्नबी (ﷺ) अ़निल ईमानि वल इस्लामि वल इह़सानि....) : 50; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 9, 10)

अल्लाह के वलियों की फ़ज़ीलत और कुछ निशानियाँ : इर्शादे बारी तआला होता है कि अल्लाह के वली वह लोग हैं जो ईमान लाने के बाद परहेज़गारी भी इख़्तियार करते हैं, चुनाँचे जो परहेज़गार है अल्लाह का वली है अह़वाले आख़िरत से अगर उन्हें सामना पड़ेगा तो उनको कोई डर नहीं होगा और न दुनिया में उन्हें कोई हुज़्न व ग़म घेरेगा। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि अल्लाह के वली वह लोग हैं जो हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह व फ़िक्रे इलाही में देखे जाते हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि एक आदमी ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह के वली कौन हैं? तो फ़र्माया कि "वह लोग कि जब देखो यादे इलाही में मस़रूफ़।" (त़बरानी : 12325; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तआला के बन्दों में ऐसे भी बन्दें हैं कि अम्बिया व शुहदा भी उन पर रश्क करते हैं।" पूछा गया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह कौन लोग हैं हम भी उनसे मुह़ब्बत रखेंगे। फ़र्माया, "अम्बिया के लिए भी क़ाबिले रश्क लोग वह हैं कि न माल का कोई ताल्लुक़, न नसब का लगाव, मगर सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए एक दूसरे को चाहते हैं उनके चेहरे नूरानी हैं, वह नूर के मिम्बरों पर हैं। लोग जहाँ ख़ौफ़ से थर्रा जाएँ, वहाँ उन पर ज़रा भी आसारे ख़ौफ़ नहीं। लोगों पर रंजो ग़म त़ारी है और उनको रंजो ग़म से कोई वास्त़ा नहीं।" (इब्ने ह़िब्बान : 573; व सनदुहू स़ह़ीहुन; व लहू शाहिद; स़ह़ीह़ इन्दि अबी दाऊद : 3527; अ़न उ़मर (रज़ि.), सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11236; मुस्नद अबी यअ़ला : 6110) अबू मालिक अशअ़री (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मुख़्तलिफ़ कबीलों से और चारों त़रफ़ से जमा होंगे और उनमें कोई रिश्तेदारी न होगी लेकिन वह मह़ज़ अल्लाह तआला की ख़ात़िर आपस में एक दूसरे को दोस्त रखेंगे और ख़ुलूस़ व मुह़ब्बत होगी। क़यामत के दिन अल्लाह तआला उनके लिए नूर के मिम्बर क़ायम करेगा जिस पर वह बैठे होंगे। लोग क़यामत में परेशान फिर रहे होंगे, लेकिन वह मुत़्मइन। अल्लाह तआला के औलिया यही लोग हैं।" (अह़मद : 5/343; व सनदुहू ह़सन; शुअ़बुल ईमान : 9001; अल्मुअजमुल कबीर : 3433; शरह़ुस्सुन्ना : 3464) अबुद्दर्दा (रज़ि.) से किसी ने हुज़ूर (ﷺ) की वज़ाह़त (लहुमुल बुश्रा फ़िल ह़यातिदुनिया व फ़िल आख़िरा) के बारे में पूछी, तो कहा कि बशारत से अच्छे ख़्वाब मुराद हैं जिनको कोई मुस्लिम देखता है, या दूसरों को उसके बारे में ख़्वाब दिखाया जाता है। अबुद् दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि तुमने मुझसे यह सवाल किया और इससे पहले सिर्फ़ एक वक़्त एक शख़्स़ ने नबी (ﷺ) से यह सवाल किया था और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "यह सच्चे ख़्वाब जो कोई देखता या उसके ह़क़ में कोई दूसरा देखे तो यह दुनिया की ज़िन्दगी में भी उसके लिए ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में जन्नत की बशारत है।" (तिर्मिज़ी, किताबुर्रुअया, बाब लहुमुल बुश्रा फ़िल ह़यातिद् दुनिया) : 2273; वहुव ह़सन) उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) से भी हुज़ूर (ﷺ) ने यही फ़र्माया था कि तुमसे पहले मुझसे किसी ने यह सवाल नहीं

किया था। बुशरा से रूया-ए-सालेहा (अच्छे ख़्वाब) मुराद हैं।'' इब्ने सामित (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा था कि इस आयत में आख़िरत की बशारत तो जन्नत है लेकिन दुनिया की बशारत से क्या मुराद है? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सच्चे ख़्वाब जिसको कोई देखे या उसके हक़ में किसी को दिखाए जाएँ और यह सच्चे ख़्वाब भी नबुव्वत के सत्तर या चवालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।'' (तब्री : 15/122; इसमें (सब्ईन) की जगह (सित्तीन) का लफ़्ज़ है। इसकी सनद में मूसा बिन उबेदा रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/213; रक़म : 8895) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''कोई इंसान अच्छे अमल करता है और लोग उसकी सताइश करते हैं तो गोया यह मोमिन के लिए दुनिया ही में जन्नत की बशारत है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब इज़ा अस्ना अलस्सालेहि फ़हिया बुशरा वला तजुर्रुहू : 2642; इब्ने माजा : 4226; अहमद : 5/156; इब्ने हिब्बान : 366) और यह उन्चास हिस्सा नुबुव्वत में से एक हिस्सा है पस जो अच्छे ख़्वाब देखे तो वह लोगों के सामने बयान कर दिया करे और जो बुरे ख़्वाब देखे तो शैतान की तरफ़ से होते हैं। वह उन्हें ख़ौफ़ज़दा करने के लिए ऐसा करता है तो चाहिए कि तीन दफ़ा अपनी बाईं तरफ़ थूक दे और अल्लाह तआला की तक्बीर पढ़ ले, और किसी से बयान न करे।'' (अहमद : 2/219, 220; शुअबुल ईमान : 4726; व सनदुहू हसन) एक दूसरी जगह छियालीस हिस्स-ए-नबुव्वत में से एक हिस्सा क़रार दिया है। (अहमद : 2/219, 220; शुअबुल ईमान : 4726; व सनदुहू हसन) अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि अच्छे ख़्वाब अल्लाह की बशारत हैं। कहा गया है कि इससे मुराद यह है कि मोमिन के मरने के वक़्त फ़रिश्ते उसको जन्नत और मग़्फ़िरत की ख़ुशख़बरी देते हैं। क़ौलुहू तआला (اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا) (41/फ़ुस्सिलत : 30) जो लोग इस बात के क़ाइल हैं कि अल्लाह तआला ही हमारा रब है फिर मरते दम तक उस पर क़ायम भी रहे तो उन पर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे और कहेंगे कि न ख़ौफ़ करो, न ग़मगीन रहो, तुमको उस जन्नत की ख़ुशख़बरी है जिसका तुमसे वादा किया गया है, दुनिया और आख़िरत में हम तुम्हारे वली हैं। तुम जो चाहते हो तुमको मिल गया, यह अल्लाह रहीम की तरफ़ से तुम्हें तोहफ़ा है। हदीसे बरा (रज़ि.) में है कि ''जब मोमिन की मौत का वक़्त होता है तो रोशन चेहरे वाले और सफ़ेद लिबास वाले फ़रिश्ते उसके पास आते हैं और कहते हैं कि ऐ पाक रूह! राहत व रेहान की तरफ़ चल! अल्लाह तआला तुझसे नाराज़ नहीं तो यह रूह उसके मुँह से इस तरह निकल पड़ेगी जैसे मश्क के मुँह से पानी निकल पड़ता है।'' जैसाकि अल्लाह पाक ने फ़र्माया कि क़यामत की दहशत उनको घबराने न देगी, फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि यह वही दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था। (इस मअनी की रिवायत अहमद : 4/287; व हुवा हदीसुन सहीहुन मशहूर, अल्आमश सरह बिस्सिमाइ इन्द अबी दाऊद; हाकिम : 1/37 में मौजूद है।) उस दिन मोमिनीन के सामने नूर चल रहा होगा, सामने भी और सीधी तरफ़ भी। आज तुम्हें बशारत है जन्नत की जिसके नीचे हमेशा बहने वाली नहरें चल रही हैं। यह बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है।

***

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۭ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝65 اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي

السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ
يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا
فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

तर्जुमा : "और आपको इनकी बातें ग़म में न डालें तमामतर ग़ल्बा अल्लाह ही के लिए है, वह सुनता जानता है। (65) याद रखो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं, यह सब अल्लाह तआला ही के हैं। और जो लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं किस चीज़ का इत्तिबाअ कर रहे हैं, सिर्फ़ बे सनद ख़्याल का इत्तिबाअ कर रहे हैं और सिर्फ़ क़यासी बातें कर रहे हैं। (66) वह ऐसा है कि जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन भी इस तौर पर बनाया कि देखने भालने का ज़रिया है इसमें दलाइल हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।"(67)

अल्लाह तआला की कुछ निशानियों का बयान (आयत 65-67) : अल्लाह तआला रसूलुल्लाह (ﷺ) से इर्शाद फ़र्माता है कि मुश्रिकीन का यह क़ौल तुमको रंजीदा न करे तुम उन पर ग़ालिब आने के लिए अल्लाह से मदद मांगो, उसी पर भरोसा करो, हर तरह की इज़्ज़त और ग़ल्बा अल्लाह और अल्लाह के रसूल और मोमिनीन के लिए है। वह अपने बन्दों की बातों को सुनता है, उनके अहवाल को जानता है। आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी के लिए है। मुश्रिकीन जो अस्नाम (मूर्तियों) की इबादत करते हैं, वह अस्नाम न नुक़्सान पर क़ादिर हैं, न नफ़ा पर, न इन मुश्रिकीन के पास कोई माक़ूल दलील है। वह तो झूट और अटकल और क़यास आराइयों की पैरवी कर रहे हैं। फिर इर्शाद होता है कि अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए रात बनाई ताकि दिन भर की थकान से सुकून व राहत हासिल करें और दिन को रिज़्क़ हासिल करने के ख़ातिर रोशन बनाया। वह दिन में सफ़र करते हैं और रोशनी के अंदर उनके दीगर मसालेह हैं इन दलाइल को सुनकर इब्रत हासिल करने वालों के लिए इन आयतो में निशानियाँ हैं और वह अज़्मते ख़ालिक़ पर दलील लाते हैं।

***

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ

عِندَكُم مِّن سُلْطَٰنٍۭ بِهَٰذَآ ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ قُلْ إِنَّ ٱلَّذِينَ
يَفْتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَٰعٌ فِى ٱلدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ ٱلْعَذَابَ ٱلشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : "वह कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है, सुब्हानल्लाह! वह तो किसी का मोहताज नहीं, उसी की मिल्क है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, तुम्हारे पास उस पर कोई दलील नहीं। क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (68) आप (ﷺ) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधा करते हैं वह कामयाब न होंगे। (69) यह दुनिया में थोड़े से ऐश है फिर हमारे पास इनको आना है फिर हम इनको इनके कुफ़्र के बदले सज़ाए सख़्त चखा देंगे।" (70)

अल्लाह तआला की औलाद नहीं (आयत 68-70) : इसमें तर्दीद है उन लोगों की जो इसके क़ाइल हैं कि नऊज़ुबिल्लाह! अल्लाह के भी कोई लड़का है। वह तो पाक है, वह औलाद तो क्या हर चीज़ से बेनियाज़ है और हर मौजूद चीज़ उसके करम की मोहताज है। जमीन और आसमान और इनके बीच में सब उसी का है। फिर वह अपने मम्लूक और अपने अ़ब्द ही को अपना बेटा भला कैसे बना लेगा। ऐ मोमिनो! तुम्हारे पास तो यह दलील है लेकिन इनके पास अपने झूठ व बोहतान की कोई दलील नहीं। अरे तुम जानते कुछ भी नहीं और दावे कर बैठते हो। यह मुश्रिकीन को ज़बरदस्त तम्बीह है। यह काफ़िर कहते हैं कि अल्लाह तआला का भी एक बेटा पैदा हुआ है, यह ऐसी ज़बरदस्त गुस्ताख़ी है कि इसको सुनकर आसमान फट पड़े, ज़मीन शक़्क़ हो जाए, पहाड़ गिर जाएँ तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। अल्लाह को भला यह कहाँ सज़ावार है कि उसके भी कोई बेटा हो। ज़मीन व आसमान की हर चीज़ तो अल्लाह की मम्नून और उसी के अ़ब्द है। सब उसके शुमार में हैं वह उनकी गिनती जानता है हर एक क़यामत के दिन इंफ़िरादी तौर पर उसके पास हाज़िर होगा। फिर इन बोहतान लगाने वाले काफ़िरों को अल्लाह तआला धमकी देता है कि यह दीन और दुनिया में कहीं भी कामयाबी न पाएँगे। लेकिन दुनिया में इन्हें जो कुछ मिल रहा है वह इनके लिए अ़ज़ाब का पेश ख़ेमा है और इनके लिए ढील है ताकि कुछ और वह दुनिया की थोड़े माल से फ़ायदा उठा लें फिर तो इन्हें ज़बरदस्त अ़ज़ाब से सामना करना ही पड़ेगा। यह दुनिया तो इनके लिए चंद ही दिन ज़िन्दगी की राहत है। फिर हमारी तरफ़ लौटना ही होगा। वहाँ हम इन्हें अ़ज़ाबे शदीद का मज़ा चखाएँगे। यह इनके झूठ बाँधने और कुफ़्र की वजह से होगा।

***

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ ۘ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُم مَّقَامِى
وَتَذْكِيرِى بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَعَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوٓا۟ أَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ ٱقْضُوٓا۟ إِلَىَّ وَلَا تُنظِرُونِ ﴿٧١﴾ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ ۖ
إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَٰهُ وَمَن
مَّعَهُۥ فِى ٱلْفُلْكِ وَجَعَلْنَٰهُمْ خَلَٰٓئِفَ وَأَغْرَقْنَا ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَٰقِبَةُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

तर्जुमा :''और आप (ﷺ) इनको नूह (عليه السلام) का क़िस्सा पढ़कर सुनाइए जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि, ''ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको मेरा रहना और अह्काम इलाही की नसीहत करना भारी मालूम होता है तो मेरा तो अल्लाह ही पर भरोसा है, तुम अपनी तदबीर अपने शरीकों के साथ पुख़्ता कर लो, फिर तुम्हारी तदबीर तुम्हारी घुटन का बाइस न होना चाहिए, फिर मेरे साथ कर गुज़रो और मुझको मोहलत न दो। (71) फिर भी अगर तुम ऐराज़ ही किए जाओ तो मैंने तुमसे कोई मुआवज़ा तो नहीं मांगा, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के ज़िम्मे है। और मुझको हुक्म किया गया है कि मैं इताअत करने वालों में से रहूँ। (72) तो वह लोग उनको झूठलाते रहे पस हमने उनको और जो उनके साथ कश्ती में थे उनको नजात दे दी और उनको आबाद किया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया। तो देखना चाहिए कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।'' (73)

क़ौमे नूह (عليه السلام) की तबाही व बर्बादी (आयत 71-73) : ऐ नबी (ﷺ)! कुफ़्फ़ारे मक्का को जिन्होंने तुम्हें झुठलाया है, और तुम्हारी मुख़ालिफ़त की है, नूह (عليه السلام) के और नूह (عليه السلام) की क़ौम के वाक़ियात सुनाओ। जिसने अपने पैग़म्बर (عليه السلام) की तक्ज़ीब की तो अल्लाह तआला ने किस तरह उनको हलाक कर दिया और उनको किस तरह पानी में डुबो दिया। ताकि मुतक़द्दिमीन के अफ़सोसनाक नतीजा को देखकर यह होशियार हो जाएँ कि कहीं इन्हें भी हलाकत का सामना न हो। वह वाक़ियात यह हैं कि नूह (अ.) ने जब अपनी क़ौम से कहा कि अगर ऐसा ही तुमको मेरा तुम्हारे बीच भिड़ना और तुमको राहे रास्त पर लाने के लिए नसीहतें करना गिराँ गुज़रता है तो ख़ैर मुझे भी परवाह नहीं, मेरा भरोसा तो अल्लाह तआला पर है। तुमको गिराँ गुज़रे या न गुज़रे, मैं तो तब्लीग़ से बाज़ नहीं आ सकता, अच्छा! तुम और तुम्हारे शरीक, यानी अस्नाम

(मूर्तियाँ) व औसान जिनकी तुम अल्लाह की बजाए पूजा करते हो, सब एक दिल हो जाओ, और अपनी कोशिशों में कोई कसर उठा न रखो और हर तरह से अपने को मज़बूत कर लो। अगर तुमको यही गुमान है कि तुम हक़ पर हो तो मेरे बारे में अपना फ़ैसला नाफ़िज़ कर दो और मुझे एक लम्हा भर की मोहलत न दो। जिस क़द्र कर सकते हो कर गुज़रो, मुझे न तो तुम्हारी परवाह है, न तुमसे डर है क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे क़यास की बुनियाद तो कुछ है ही नहीं।

हूद (अलैहिस्सलाम) ने भी अपनी क़ौम से ऐसा ही कहा था कि मैं भी अल्लाह तआला को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम अल्लाह तआला को छोड़कर बुतों को शरीके इलाही बना लेते हो। मैं इस ज़हनियत से बिलकुल बरी हूँ, अब चाहो तो तुम सब मेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर लो और मुझे पल भर की भी मोहलत न दो। मेरा भरोसा तो अल्लाह तआला पर है जो तुम्हारा भी रब है और मेरा भी। अब अगर तुमने झुठलाया और पीठ फेर ली तो क्या मुझे तुमसे कुछ मिलना था कि जिसके बर्बाद होने का अफ़सोस हो। मैं जो तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूँ उस पर कुछ तुमसे उज्रत तो नहीं मांग रहा। मुझे तो अज्र देने वाला अल्लाह तआला है। मुझे ताकीद है कि सबसे पहले मैं ईमान लाऊँ और मुझ पर फ़र्ज़ है कि इस्लाम के अहकाम की तामील करूँ क्योंकि तमाम अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) का दीन इस्लाम ही था, चाहे वह शुरुआती हों या आख़िरी, तरीक़ेकार और मशरब जुदा हो जाए तो हो जाए कुछ मुज़ायक़ा नहीं तौहीद की तालीम तो एक रहेगी। क़ौले बारी तआला है कि हमने हर एक के लिए एक एक शरीअत अलग अलग क़ानून और जुदा जुदा रास्ता बनाया है। यह नूह (अलैहिस्सलाम) हैं जो कह रहे हैं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ईमान लाऊँ।

इब्राहीम ख़लील (अलैहिस्सलाम) के बारे में अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब इनके रब तआला ने इनसे कहा कि ईमान लाओ तो फ़ौरन बोल उठे कि मैं ईमान लाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटों, पोतों इस्माईल (अ.) और याक़ूब (अ.) को भी नसीहत कर रखी थी कि ऐ मेरे बेटों! अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को चुन लिया है, इसलिए इस्लाम को इख़्तियार करो, इससे पहले कि तुम्हें मौत आ जाए।

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने भी कहा था कि ऐ अल्लाह! तूने मुझे बादशाहत अता की और बात की तौजीह व तावील की तालीम दी, ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाला तू ही है। दुनिया और आख़िरत में मेरा वाली है। मैं मरूँ तो इस्लाम पर क़ायम रहकर मरूँ और मुझे सालेहीन के गिरोह में शामिल रख।

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा था कि ऐ लोगों! अगर तुम मुसलमान हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो और उसी पर ईमान लाओ। मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने के जादूगरों ने कहा था कि या रब! हमको साबित क़दम रख और इस्लाम की मौत दे। बिल्क़ीस ने कहा था कि या अल्लाह! मैं हुदूद से आगे बढ़ गयी थी। मैं इस्लाम लाती हूँ और इस्लाम का दीन इख़्तियार करती हूँ।

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि हमने जो तौरात नाज़िल की है वह सरासर हिदायत व नूर है। मुसलमानों पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इसी के ज़रिये हुक्म क़ायम करते हैं और इर्शादे बारी तआला है कि हवारिय्यीने (राजदाराने) ईसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ हमने इल्क़ा किया था कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ.) पर ईमान लाओ।

तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और ऐ अल्लाह! तू ही गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

ख़ातिमुर्रुसुल सय्यदुल बशर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिए है, जिसका कोई शरीक नहीं। मैं उसी के हुक्म का मामूर हूँ और पहले मैं ही इस्लाम लाता हूँ। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुन्नबी (ﷺ) व दआइही बिल्लैलि : 771) चुनाँचे हज़रत मुहम्मद(ﷺ) ने फ़र्माया कि, "हम अम्बिया (عليه السلام) के गिरोह गोया अल्लाती भाई हैं कि बाप सबका एक है और माएँ अलग अलग। यानी दीन हम सबका एक है और वह रब्बे वाहिद की इबादत है। चाहे सबकी शरीअतें अलग अलग हों।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया (عليه السلام), बाब क़ौलुहू तआला (वज़्कुर फ़िल किताबि मरयम इज़न् तबज़त मिन अहलिहा...) : 3443; सहीह मुस्लिम : 2365) फिर फ़र्माता है कि हमने नूह (عليه السلام) को और उनके दीन पर चलने वालों को कश्ती में बिठाकर नजात दे दी और उनको ज़मीन पर बहैसियत ख़लीफ़ा क़रार दिया। और जिन्होंने हमारी बातों को झुठला दिया था उनको डुबो दिया। देखो उन बदनसीबों का कैसा बुरा हश्र हुआ। (ऐ मुहम्मद स.)! देखो, हमने मोमिनीन को कैसे नजात दी और न मानने वालों को कैसे हलाक कर दिया।

***

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۷۴﴾

तर्जुमा : "फिर नूह (अ .) के बाद हमने और रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा, तो वह उनके पास मोजिज़ात लेकर आए, पस जिस चीज़ को उन्होंने शुरु में झूठा कह दिया यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।" (74)

नूह (عليه السلام) के बाद सिलसिल-ए-रिसालत जारी रहा (आयत 74) : इर्शादे बारी तआला है कि हमने नूह (عليه السلام) के बाद दूसरे रसूलों को भी उनकी अपनी क़ौमों की तरफ़ बय्यिनात व दलाइल और मोजिज़े देकर भेजा लेकिन वह जिस तरह तक्ज़ीब कर चुके थे, उसी पर क़ायम रहे और पिछले रसूलों की तक्ज़ीब के गुनहगार तो थे ही अब उन रसूलों पर भी ईमान न लाए। जैसाकि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हम इनके दिलों और निगाहों से समझने और देखने की सलाहियत ही निकाल देते हैं और उन सरकशों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। यानी जैसाकि साबिक़ा उम्मतों ने पैग़म्बरों की तक्ज़ीब की थी तो हमने उनके दिलों पर मुहर लगा दी थी। इसी तरह उन गुमराहों की पैरवी करने वालों के दिलों पर भी मुहर कर दी चुनाँचे जब तक वह दर्दनाक अज़ाब से दो चार न होंगे यक़ीन न करेंगे। मतलब यह है कि रसूलों को झुठलाने वाली उम्मतों को अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया और जो रसूलों पर ईमान लाए, उन्हें नजात दी। यह नूह (عليه السلام) के बाद के लोगों का ज़िक्र है वरना आदम (عليه السلام) के ज़माने के बाद के लोग तो इस्लाम पर क़ायम थे लेकिन बाद में

उनके अंदर इबादते अस्नाम (मूर्तियों की पूजा) का चलन जड़ पकड़ गया। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ नूह़ (ﷺ)को भेजा। इसीलिए तो क़यामत के दिन मोमिनीन नूह़ (ﷺ) को कहेंगे कि आप पहले पैग़म्बर (ﷺ) हैं जो दुनिया में भेजे गए हैं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला अ़ज़्ज़ व जल्ला (व लक़द अर्सल्ना नूह़न इला क़ौमिही) : 3340; सह़ीह़ मुस्लिम : 194) इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) से रिवायत है कि आदम और नूह़ (ﷺ) के बीच दस स़दियाँ गुज़री थीं, यह सब मज़हबे इस्लाम पर क़ायम थे। (ह़ाकिम : 2/262; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि नूह़ (ﷺ) के बाद कितने ही ज़माने हमने ख़त्म कर दिए आयते मुतज़क्किरा बाला के ज़रिये मुश्रिकीने अ़रब को डराया गया है जो ख़ातिमुर्रुसुल (ﷺ) को झुठला रहे थे। जबकि पिछले पैग़म्बरों को झुठलाने पर अ़ज़ाब व सज़ा का अल्लाह तआ़ला ने इस क़द्र ज़िक्र किया है तो क़ुरैश को रसूल (ﷺ) के झुठलाने पर ग़ौर करना चाहिए कि वह तो उनसे भी बड़े गुनाह के मुर्तकिब हो रहे हैं कि यह तो ख़ातिमुन्नबिय्यीन (ﷺ) हैं अब फिर कोई नबी आएगा, न इन्हें हिदायत का कोई दूसरा मौक़ा मिलेगा।

***

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ
مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا
لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

तर्जुमा : "फिर इन पैग़म्बरों के बाद हमने मूसा और हारून (ﷺ) को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपने मोजिज़ात (चमत्कारों को) देकर भेजा, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह लोग जराइम के ख़ोगर थे। (75) फिर जब उनको हमारे पास से सही दलील पहुँची तो वह लोग कहने लगे कि यक़ीनन यह स़रीह़ जादू है। (76) मूसा (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम इस सही दलील की निस्बत जबकि वह तुम्हारे पास पहुँची ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है ह़ालाँकि जादूगर कामयाब नहीं हुआ करते। (77) वह लोग कहने लगे कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको उस त़रीक़े से हटा दो जिस पर हमने अपने बुज़ुर्गों को देखा है और तुम दोनों को दुनिया में रियासत मिल जाए और हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे।" (78)

मूसा और हारून (ﷺ) की फ़िरऔन को दावत (आयत 75-78) : फिर उन रसूलों के बाद हमने फ़िरऔन और उसकी जमाअत की तरफ़ मूसा (ﷺ) और हारून (ﷺ) को भेजा और अपनी निशानियाँ और दलाइल व बराहीन दिए लेकिन इत्तिबाअे हक़ और इंक़ियादे ताअत से उस मुज्रिम क़ौम ने इंकार कर दिया। और जब उनके पास हमारी तरफ़ से अम्रे हक़ आ पहुँचा तो बिला ताम्मुल कहने लगे कि यह खुला जादू है। गोया कि उन्होंने अपनी सरकशी पर क़सम ही खा रखी थी। हालाँकि उन्हें यक़ीन था कि जो कुछ वह कह रहे हैं फ़िल वाक़ेअ झूठ और बोहतान है जैसा कि ख़ुद अल्लाह तआला फ़र्माता है कि वह इंकार तो कर रहे हैं लेकिन उनके दिल ख़ुद यक़ीन रखते हैं कि यह हमारा ज़ुल्म और सरकशी है। ग़र्ज़ हज़रत मूसा (अ) ने तर्दीदन (रद्द करते हुए) कहा कि हक़ बात तुम्हारे सामने आती है तो कह उठते हो कि यह जादू है हालाँकि जादूगर तो कभी ख़ैर व फ़लाह का मुँह नहीं देख सकते। वह मुंकिरीन (डिस्बिलिवर्स) कहते हैं कि ऐ मूसा (ﷺ)! क्या तुम इसीलिए हमारे पास आए हो कि हमारे बाप दादा के दीन से हमें फेर दो और फिर सारी अज़्मत व रियासत ग़ल्बा व सत्वत सब तुम्हारे और तुम्हारे भाई हारून के लिए हो जाए हम तो कभी तुमको मानने वाले नहीं।

अल्लाह तआला ने अपनी किताबे अज़ीज़ में मूसा (ﷺ) और मूसा के क़िस्से को कई जगहों पर ज़िक्र किया है। क्योंकि वह अजीब क़िस्सा है फ़िरऔन पहले ही से मूसा(ﷺ) से पुरहज़र (डरा) रहता था। लेकिन क़ुदरत के खेल देखो कि जिससे फ़िरऔन इतना डरता था। अल्लाह तआला ने उसी को फ़िरऔन के पास पाला पोसा और शहज़ादों की तरह आप (ﷺ) उसके घर में परवरिश पाते रहे फिर एक इंक़िलाब आया और एक ऐसा सबब पैदा हो गया कि आप (ﷺ) फ़िरऔन के पास से निकल खड़े हुए और अल्लाह तआला ने नबुव्वत और रिसालत और कलामे बिल मुशाफ़ा से आपको सरफ़राज़ किया। फिर उसी फ़िरऔन की तरफ़ भेजा कि जाओ उसे दावते इस्लाम दो कि वह हमारी तरफ़ रुजूअ करे और बेदीनी के बजाय हमारे दीन पर चले हालाँकि जो अज़्मत व सत्वत कि फ़िरऔन को हासिल थी सो थी। चुनाँचे आप (ﷺ) अल्लाह तआला का पैग़ाम लेकर आते हैं और आपके भाई हारून (ﷺ) के सिवा और कोई आपका मददगार नहीं। लेकिन फ़िरऔन ने सरकशी की, गुरूर किया। उसमें हमिय्यते बेजा पैदा हो गई, उसका नफ़्से ख़बीसा जाग उठा, वह मूसा (ﷺ) से रूगर्दां हो गया और वह दावा कर बैठा जिसका उसको कोई हक़ न था। बग़ावत व सरकशी की बनी इस्राईल के मोमिनीन की एहानत की। ऐसे नाज़ुक मौक़िफ़ पर भी फ़िरऔन के दस्त बर्द से मूसा और हारून (ﷺ) महफ़ूज़ रहते हैं, अल्लाह तआला उनको अपनी हिफ़ाज़त में ले लेता है और एक के बाद एक मूसा (ﷺ) के साथ मुजादिला और नोक झोंक होती रहत। है और मूसा (ﷺ) ऐसी ऐसी निशानियाँ और मोजिज़ात पेश करते हैं कि अक़्लें हैरान रह जाती हैं और मानना पड़ता है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से ताईद याफ़्ता के सिवा और कोई ऐसे दलाइल नहीं पेश कर सकता। एक निशानी से बढ़कर दूसरी निशानी पेश की जाती। लेकिन फ़िरऔन और उसकी जमाअत भी क़सम खा बैठी थी कि न मानेंगे, यहाँ तक कि जब अज़ाब आया तो ऐसा आया कि कोई उसको रद्द ही न कर सकता था, चुनाँचे एक दिन वह सब डुबो दिए गए और ज़ालिम क़ौम का सतियानाश हो गया।

***

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا
أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ
اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : ''और फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को हाज़िर करो। (79) तो जब वह आये मूसा (عليه السلام) ने उनसे कहा कि डालो जो कुछ तुमको डालना है। (80) तो जब उन्होंने डाला तो मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया कि यह जो कुछ तुम लाए हो जादू है। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला उसको अभी दरहम बरहम कर देता है, अल्लाह तआला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता। (81) और अल्लाह तआला दलीले सही को अपने वादों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है भले मुज्रिम लोग कैसा ही नागवार समझें।'' (82)

मूसा (عليه السلام) और जादूगरों का मुक़ाबला (आयत 79-82) : अल्लाह तआला ने जादूगरों और हज़रत मूसा (عليه السلام) के क़िस्से का ज़िक्र सूरह आराफ़ में फ़र्माया है और वहाँ इस क़िस्सा पर रोशनी डाली जा चुकी है और इस सूरह और सूरह ताहा और सूरह शोअरा में भी ज़िक्र है कि फ़िरऔन ने इरादा किया कि हज़रत मूसा (عليه السلام) के हक़्क़े मुबीन का मुआरिज़ा अपने जादूगरों के ख़ुराफ़ात और शोअबदों से करे। लेकिन इसकी आंतें उसी के गले पड़ीं। वह मक़्सद में नाकाम रह गया और महफ़िले आम में बराहीने इलाहिया ग़ालिब आ गए और सब जादूगर सज्दों में गिर पड़े और कहने लगे, हम तो रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आए जो मूसा (عليه السلام) और हारून (عليه السلام) का रब है। फ़िरऔन का तो गुमान था कि वह जादूगरों से मदद लेकर अल्लाह तआला के रसूल पर ग़ालिब आ जाएगा। लेकिन नाकामी का मुँह देखना पड़ा और दोज़ख़ उसके लिए वाजिब हो गयी। फ़िरऔन ने हुक्म दिया था कि हर गोश-ए-मुल्क से जादूगर जमा किए जाएँ। उन जादूगरों से मूसा (عليه السلام) ने कहा, अपना अ़मल करो जो करना चाहते हो और यह इसलिए कहा कि फ़िरऔन ने उनसे वादा कर रखा था कि ग़ालिब आ जाओगे तो तुम लोग मेरे क़रीबी बन जाओगे और तुम्हें बड़ा इन्आम व इकराम दिया जाएगा। जादूगरों ने कहा कि मूसा (عليه السلام) तुम पहले अपना करतब दिखाओगे कि हम पहले दिखाएँ। मूसा (عليه السلام) ने कहा, तुम ही पहल करो। इस ग़र्ज़ से कहा ताकि लोग देख सकें कि जादूगर क्या चीज़ पेश करते हैं फिर उसके बाद हक़ सामने आए और बातिल की सरकूबी करे। जब जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ डाल दीं और लोगों की आँखों पर जादू चला दिया, रस्सियाँ साँप बन गईं लोग ख़ौफ़ज़दा हो गए। बड़ा ज़बरदस्त जादू पेश किया, मूसा (عليه السلام) भी ख़ौफ़ज़दा हो गए तो हमने कहा, मूसा (عليه السلام)! डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे अपने हाथ की लकड़ी भी मैदान में फेंक दो, वह भी अज़्दहा बनकर उनके साँपों को निगल जाएगा। जादूगरों का यह करतब जादू का खेल है और जादूगर तो किसी सूरत में कामयाब नहीं हो सकते, ऐसे में मूसा (अ.) ने उनसे कहा कि,

यह तुम्हारा खेल था जादू का खेल है अल्लाह तआला इसे बातिल करके रहेगा। मुफ़्सिदीन (फ़सादियों) के अमल कामयाब नहीं हो सकते, अल्लाह तआला हक़ को साबित करके रहेगा। ख़्वाह गुनहगारों को नागवार ही क्यूँ न हो। इब्ने अबी सुलेम (रह.) से रिवायत है कि यह आयतें बहुक्मे इलाही जादू से शिफ़ा का काम देंगी, इस आयत को पढ़कर पानी पर फूँको फिर मस्हूर के सर पर उँडेल दो। यह सूरह यूनुस की आयत है, वह यह है (फ़लम्मा अल्क़ौ क़ाला मूसा) से आख़िर तक (करिहल मुज्रिमून) दूसरी आयत है (فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ) (7/आराफ़ : 118) और (اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى) (20/ताहा : 69)

***

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

तर्जुमा : "पस मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उनकी क़ौम में से सिर्फ़ बहुत थोड़े लोग ईमान लाए वह भी फ़िरऔन से और अपने हुक्काम से डरते डरते कि कहीं उनको तक्लीफ़ पहुँचा दे और वाक़ेअ में फ़िरऔन उस मुल्क में ज़ोर रखता था और यह भी बात थी कि वह हद से बाहर हो जाता था।" (83)

फ़िरऔन और उसकी क़ौम की सरकशी (आयत 83) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने आयातिम् बय्यिनात (खुली निशानियाँ) जो पेश कीं तो फ़िरऔन की क़ौम और उसकी ज़ुर्रियात में से बहुत ही थोड़े लोग ईमान लाए। ईमान लाने वाले नौजवानों और उसके अफ़राद क़ौम को यह डर था कि जबरन वह फिर हालते कुफ्र पर लौटा दिए जाएँगे क्यों कि फ़िरऔन बड़ा अय्यार (सरकश) था, उसकी शौकत व दबदबा बहुत बढ़ा हुआ था, उसकी क़ौम उससे बहुत डरती थी, ग़ैर बनी इस्राईल में से सिर्फ़ फ़िरऔन की औरत और आले फ़िरऔन से एक और शख़्स फिर फ़िरऔन का ख़ाज़िन और उसकी बीवी बस यही थोड़ी जमाअत थी जो ईमान ले आयी थी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि (इल्ला ज़ुर्रियतुम् मिन क़ौमिही) से मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम बनी इस्राईल मुराद है। मुजाहिद (रह.) कहते हैं ज़ुर्रियतुन से उन लोगों की औलाद मुराद है जिनकी तरफ़ मूसा (अलैहिस्सलाम) भेजे गए थे और जो बहुत अर्सा पहले उस औलाद को छोड़कर मर गए थे। इब्ने जरीर (रह.) (ज़ुर्रियतुन) के बारे में मुजाहिद (रह.) का क़ौल पसंद करते हैं कि वह क़ौमे फ़िरऔन से नहीं बल्कि बनी इस्राईल से थे क्योंकि ज़मीर जब कभी राजेअ (लौटना) होती है तो क़रीब की तरफ़ राजेअ होती है और यहाँ क़रीब मूसा (अलैहिस्सलाम) का लफ़्ज़ है न कि फ़िरऔन का। और यह ग़ौरतलब बात है इसलिए कि (ज़ुर्रियतुन) से मुराद नौजवान लोग हैं और वह बनी इस्राईल में से थे और मशहूर है कि बनी इस्राईल तो सब मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान ला चुके थे और उन्हें बशारत दी जा चुकी थी और वह मूसा (अलैहिस्सलाम) के सिफ़ात से ख़ूब वाक़िफ़ हो

चुके थे और उन्हें बशारत कुतुबे मुक़द्दसा से मिल चुकी थी कि अल्लाह तआला उन्हें फ़िरऔन की क़ैद से नजात देगा और फ़िरऔन पर ग़ालिब करेगा। और इसीलिए जब फ़िरऔन को यह बात मालूम हुई तो बहुत मोहतात रहने लगा और जब मूसा (عليه السلام) मुबल्लिग़ होकर फ़िरऔन के पास आए तो फ़िरऔन बनी इस्राईल को बहुत तक्लीफ़ें पहुँचाने लगा। अब वह कहने लगे, मूसा (अ.)! तुम्हारे आने से पहले भी हम सताये जा रहे थे और तुम्हारे आने के बाद भी सताए जा रहे हैं। मूसा (عليه السلام) ने कहा, ज़रा सब्र कीजिए, अल्लाह तआला बहुत जल्द तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर देगा और उसका जानशीन तुम्हें बना देगा और देखेगा कि अब तुम ख़ुद कैसा अमल करते हो। और जब यह बात है तो (ज़ुर्रियतुन) से क़ौमे मूसा (عليه السلام) यानी बनी इस्राईल के सिवा और क्या मुराद हो सकती है, बनी इस्राईल को फ़िरऔन और फिर अपनी जमाअत से डर था कि वह फिर उन्हें काफ़िर बना लेंगे और बनी इस्राईल में क़ारून के सिवा कोई ऐसा न था जिससे वह डरते, क्योंकि क़ारून मूसा (عليه السلام) की क़ौम में से था लेकिन बाग़ी था फ़िरऔन से मिला हुआ था। यहाँ (मलइहिम) की ज़मीर बनी इस्राईल की तरफ़ गई है। लेकिन जो यह कहते हैं कि यह ज़मीर फ़िरऔन और अमाइदे फ़िरऔन की तरफ़ जाती है क्योंकि उसके अमाइद (ख़ास लोग)भी उसके मुत्तबेईन में से थे या यह कि फ़िरऔन से पहले आल का लफ़्ज़ महज़ूफ़ समझा जाए इसलिए कि जमा की ज़मीर है और मुज़ाफ़ की जगह मुज़ाफ़ इलैहि रख दिया गया है यानी आल की जगह फ़िरऔन रख दिया गया है तो यह बईद अज़्क़यास बात है। अगरचे इब्ने जरीर (रह.) ने यह दोनों बातें लिखी हैं यह सब बयान उस पर दलालत करता है कि बनी इस्राईल में सब मोमिन थे।

***

وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰقَوْمِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِٱللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا۟

عَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ ٱلْقَوْمِ

ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٨٦﴾

तर्जुमा : "और मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो तुम इताअत करने वाले हो। (84) उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने अल्लाह तआला ही पर भरोसा किया, ऐ हमारे परवरदिगार! हमको उन ज़ालिमों का तख़्त-ए-मश्क़ न बना। (85) और हमको अपनी रहमत से इन काफ़िर लोगों से नजात दे।" (86)

अल्लाह पर भरोसा और उसकी इबादत (आयत 84-86) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मूसा (عليه السلام) ने बनी इस्राईल से कहा कि अगर तुम अल्लाह तआला पर ही ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अल्लाह तआला भरोसा करने वालों का कफ़ील हो जाता है। और अक्सर बार इबादत और भरोसे को मिलाकर कहा गया है (فَاعْبُدْهُ وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ) (11/हूद : 123) और (قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا) (67/मुल्क : 29) वग़ैरह।

और अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म दिया है कि हर नमाज़ में कई बार कहो कि (اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ) (1/फ़ातिहा : 5) चुनाँचे बनी इस्राईल हुक्म बजा लाए और कहा कि (अलल्लाहि तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अल्ना फ़ित्नतल् लिक़ौमिज़्ज़ॉलिमीन) हम तो अल्लाह तआला पर भरोसा करते हैं, ऐ परवरदिगार! हमको इन ज़ालिमों का ज़ेरे मश्क़े सितम न बना। हम पर इन्हें कामयाब न कर। वरना वह यह गुमान करेंगे कि हम ही हक़ पर हैं और यह बनी इस्राईल बातिल पर हैं, चुनाँचे और ज़्यादा हम पर सितम तोड़ेंगे, आले फ़िरऔन के हाथों हमें अज़ाब न दे और न अपने अज़ाब में मुब्तला कर, वरना फ़िरऔन की क़ौम कहेगी कि अगर यह लोग हक़ पर होते तो मुब्तलाए अज़ाब न होते और हम इन पर ग़ालिब न आते और हमें अपनी रहमत और एहसान से ऐ अल्लाह! इस काफ़िर क़ौम से नजात बख़्श। यह काफ़िर हैं और हम मोमिन हैं और तुझी पर भरोसा रखते हैं।

***

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً
وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ
زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى
اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ
اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

तर्जुमा : "और हमने मूसा (عليه السلام) और उनके भाई के पास वही भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए मिस्र में घर बरक़रार रखो और तुम सब अपने उन ही घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो और नमाज़ के पाबन्द रहो। और आप मुसलमानों को बशारत दे दें। (87) और मूसा (عليه السلام) ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! आपने फ़िरऔन को और उसके सरदारों को सामाने तजम्मुल (ऐशो आराम के सामान) और तरह तरह के माल दुनियावी ज़िन्दगी में दिए, ऐ हमारे रब! इसी वास्ते दिए हैं कि वह आपकी राह से गुमराह करें। ऐ हमारे रब! इनके मालों को नेस्तो नाबूद कर दीजिए और इनके दिलों को सख़्त कर दीजिए, तो यह ईमान न लाने पाएँ, यहाँ तक कि अज़ाबे अलीम को देख लें। (88) हक़ तआला ने फ़र्माया कि तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई तो तुम क़ायम रहो और उन लोगों की राह न चलना जिनको इल्म नहीं।" (89)

बनी इस्राईल को नमाज़ का हुक्म (आयत 87-89) : अल्लाह तआला बनी इस्राईल को फ़िरऔन से

नजात देने की वजह को बयान करता है कि मूसा और हारून (عليهما السلام) को हमने हुक्म दिया कि तुम अपनी क़ौम को लेकर मिस्र में जा बसो (वज्अलू बुयूतकुम) में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि इससे मुराद यह है कि तुम अपने घरों ही को मस्जिदें बना लो। और इब्राहीम (रह़.) कहते हैं कि बनी इस्राईल ख़ौफ़ज़दा थे इसलिए हुक्म दिया गया घरों ही में नमाज़ पढ़ा करो और इस हुक्म की हैसियत बिलकुल ऐसी है कि जब फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन की तरफ़ से गिरफ़्त बहुत बढ़ गयी तो ज़्यादा नमाज़ें पढ़ने का हुक्म दिया गया। जैसाकि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है (يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ) (2/बक़रह : 153) ह़दीस में है कि नबी (ﷺ) भी जब किसी वक़्त बहुत घबरा उठते तो नमाज़ से मदद ह़ासिल करते। (अबूदाऊद, किताबुत्तत़व्वुअ़, बाब वक़्ते क़ियामिन्नबी (ﷺ) मिनल्लैलि : 1319; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह दौली रावी मज्हूलुल ह़ाल है।) इसीलिए इस आयत में है कि घरों ही को मस्जिदें समझकर नमाज़ें पढ़ने लगो और मोमिनीन को सवाब और नुसरते (मददे) क़रीब की बशारत दो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि बनी इस्राईल ने मूसा (عليه السلام) से कहा था कि हम फ़िरऔनियों के सामने खुले बन्दों नमाज़ नहीं पढ़ सकते हैं तो अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि अच्छा! घरों में ही पढ़ लो। मुजाहिद (रह़.) कहते हैं कि बनी इस्राईल को फ़िरऔन से डर था कि मस्जिद में नमाज़ पढ़ेंगे तो क़त्ल कर दिए जाएँगे इसलिए कहा गया कि अच्छा! छुपकर घरों में नमाज़ें पढ़ लो और घरों को आमने सामने बनाए रखो।

मूसा और हारून (عليهما السلام) की फ़िरऔन के लिए बद् दुआ : अल्लाह तआ़ला ख़बर दे रहा है कि जब फ़िरऔन और उसकी जमाअ़त ने क़बूले ह़क़ से इंकार किया और अपनी गुमराही व कुफ़्र पर क़ायम रहे, ज़ुल्म व सरकशी इख़्तियार की तो मूसा (عليه السلام) ने अल्लाह तआ़ला से कहा कि या रब! तूने फ़िरऔन और उसके लोगों को ज़ीनते दुनिया और ज़्यादा माल इस दुनिया में दे रखा है इससे तो वह और भटक जाएँगे या दूसरों को भटकाने लगेंगे (लि यज़िल्लू) फ़तह़े या के साथ यह मअनी हुए कि तूने इन्हें यह नेअ़मतें दीं ह़ालाँकि तू जानता है कि वह ईमान न लायेंगे यह तो इन पर सरफ़राज़ी हुई। दूसरा कौल है (लि युज़िल्लू) ज़म्मे या के साथ यानी तेरे अ़तियात के सबब लोग यह ख़याल करें गे कि तेरी इन पर जो सरफ़राज़ियाँ हैं वह गोया इसका सबूत हैं कि तूने इन्हें दोस्त रखा है जब ही तो इन्हें ख़ुशह़ाल रखा यह गोया सबील (राह) हुई इस बात की कि इनकी वजह से लोग भटके इसलिए ऐ अल्लाह तआ़ला! इनके माल को हलाक कर दे। ज़ह़्ह़ाक (रह़.) और अबुल आ़लिया (रह़.) वग़ैरह कहते हैं कि चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने इनके माल को पत्थर बना दिया। वह पत्थर वैसे ही मन्क़ूश बने हुए क़ल्ब माहियत पाये गये जिस कैफ़ियत में कि वह माल अपनी असली ह़ालत में थे। क़तादा (रह़.) कहते हैं कि हमारे इल्म में आया है कि इनके अनाज ने भी पत्थर की शक्ल इख़्तियार कर ली थी और शक्कर वग़ैरह भी पत्थर के ज़र्रात की शक्ल में आ गई थी। मुह़म्मद बिन कअ़ब (रह़.) ने उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह़.) के सामने सूरह यूनुस पढ़ी और जब इस आयत पर पहुँचे (रब्बनत़्मिस अ़ला अम्वालिहिम) तो उ़मर ने कहा, ऐ अबू ह़म्ज़ा! त़म्स का क्या मतलब है तो अबू ह़म्ज़ा ने कहा कि इनके माल व मताअ़ पत्थर बन गए थे। तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह़.) ने अपने ग़ुलाम से कहा कि वह थैली लाओ। जब वह थैली ले आया तो उसमें चने और अण्डे रखे हुए थे जो पत्थर बने हुए थे। (इसकी सनद में मुह़म्मद बिन क़ैस मुतकल्लम फ़ीहि (अल्मीज़ान : 4/16; रक़म 8090) और अबू मिअ़शर है जिसे बुख़ारी ने मुंकरुल ह़दीस

कहा है। (अल्मीज़ान : 4/246; रक़म 9017) व क़ौलुहू तआला (वश्दुद अला क़ुलूबिहिम) यानी ऐ अल्लाह तआला! इनके दिलों पर मुहर लगा दे कि अज़ाबे अलीम देखने तक ईमान ही न लाएँ। यह दुआ मूसा (عليه السلام) ने ग़ज़ब में आकर फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन के हक़ में की थी जिनके बारे में हज़रत मूसा (عليه السلام) को यक़ीन हो चुका था कि अब इनमें इस्लाह की सलाहियत ही नहीं है और अब किसी ख़ैर की इनसे उम्मीद ही बाक़ी नहीं जैसा कि हज़रत नूह (عليه السلام) ने कहा था कि (رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا) (71/नूह : 26) ऐ अल्लाह! काफ़िरों में से किसी बाशिन्दे को न छोड़ना, अगर तू इनको ज़िन्दा छोड़ देगा तो यह तेरे दूसरे बन्दों को भी गुमराह करेंगे और उनकी जितनी भी औलाद होगी सब काफ़िर ही काफ़िर पैदा होगी। इसीलिए अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (عليه السلام) की दुआ क़बूल कर ली और उनके भाई हज़रत हारून (عليه السلام) ने उस पर आमीन कही। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़र्माता है कि तुम दोनों की दुआ क़बूल की जाती है और आले फ़िरऔन हलाक किए जाते हैं। इसी आयत से इस बात पर दलील लाई जाती है कि अगर मुक़्तदी इमाम की क़िरअते फ़ातिहा पर आमीन कहे तो यह मुक़्तदी के भी ख़ुद क़ुरआन पढ़ने के बमंज़िला है इसीलिए मूसा (عليه السلام) ने दुआ की थी और हारून (عليه السلام) ने आमीन कही थी (फ़स्तक़ीमा) जैसे कि तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली गई है अब तुम भी इसी तरह मेरे हुक्म पर मुस्तक़ीम रहो और मेरे अहकाम नाफ़िज़ करो। इस्तिक़ामत इसी को कहते हैं, कहा जाता है कि इस दुआ के चालीस (40) साल बाद फ़िरऔन हलाक हो गया और कुछ कहते हैं कि चालीस (40) दिन बाद।

***

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ
اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ
الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩٠ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٩١ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ
بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝٩٢

तर्जुमा : "और हमने बनी इस्राईल को दरिया पार करा दिया फिर उनके पीछे पीछे फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से चला। यहाँ तक कि जब डूबने लगा तो कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि सिवाए इसके कि जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए हैं कोई मअबूद नहीं और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता हूँ। (90) जवाब दिया गया कि अब ईमान लाता है और पहले सरकशी करता रहा और फ़सादियों में दाख़िल रहा। (91) तो आज हम तेरी लाश को नजात देंगे ताकि तू उनके लिए इब्रते वाजिब हो जो तेरे बाद आने वाले हैं और हक़ीक़त यह है कि बहुत से लोग हमारी इब्रतों से ग़ाफ़िल हैं।" (92)

बनी इस्राईल की नजात और फ़िरऔन की इब्रतअंगेज़ तबाही (आयत 90-92) : अल्लाह तआ़ला फ़िरऔन और लश्करे फ़िरऔन के डुबोने की कैफ़ियत बयान करता है कि बनी इस्राईल जब मूसा (ﷺ) के साथ मिस्र से निकले और वह छः लाख सिपाही थे फ़िरऔन की ईमान लाई हुई ज़ुर्रियत को छोड़कर। बनी इस्राईल ने फ़िरऔन की क़ौम वाले क़िब्तियों से ज़्यादा तादाद में ज़ेवर क़र्ज़ मांग लिए थे और लेकर निकल गए चुनाँचे फ़िरऔन का गुस्सा और भी तेज़ हो गया। चुनाँचे उसने अपने कारिन्दों को अपने हर मुल्क से लश्कर जमा करने को भेजा और एक लश्करे अज़ीम लेकर बनी इस्राईल के पीछे चल पड़ा और अल्लाह तआ़ला का मंशा ही यही था, चुनाँचे उस मुल्क के जितने भी साहिबाने सर्वतो दौलत थे कोई शिर्कत से बाज़ न रहा सब ही फ़िरऔन के साथ हो गए। सुबह्‌-सुबह्‌ के वक़्त उन लोगों ने बनी इस्राईल को पा लिया फ़रीक़ेन ने जब एक दूसरे को देख लिया तो अस्हाबे मूसा पुकार उठे कि ऐ मूसा (ﷺ)! अब तो हम धर लिये गये और यह उस वक़्त की बात थी जबकि बनी इस्राईल दरिया के किनारे आ पहुँचे थे और फ़िरऔनी अभी पीछे थे। सूरत उसके सिवा कोई बाक़ी नहीं रही थी कि फ़रीक़ेन में तसादुम हो जाए। मूसा (ﷺ) से लोग बार बार पूछने लगे कि अब क्या होगा, फ़िरऔनियों से कैसे बचेंगे, आगे दरिया पीछे दुश्मन। मूसा (ﷺ) कहते थे कि मुझे तो यही हुक्म है कि दरिया में रास्ता पैदा करूँ, हम कभी नहीं पकड़े जाएँगे, मेरा रब तआ़ला मेरा क़ाइद है। जब इंतिहाई मायूसी हो गयी तो अल्लाह तआ़ला ने उदासी को उम्मीद में बदल दिया और हुक्म फ़र्माया कि दरिया पर अपना अ़सा (लकड़ी) मारो। मूसा (ﷺ) ने अ़सा मारा, दरिया फट पड़ा। पानी का हर टुकड़ा एक बुलंद पहाड़ था। दरिया में बारह रास्ते बन गए और हर गिरोह के लिए एक एक रास्ता बन गया। दरिया के अंदर की गीली ज़मीन को ख़ुश्क हवाओं ने फ़ौरन सुखा दिया और रास्ता गुज़रगाह के क़ाबिल हो गया। दरियाई रास्ते सूख गए। अब न गिरफ़्तार होने का डर था और न किसी बात का डर कि डूब जाएँगे। पानी की दीवारों के अंदर दरीचे से बन गए थे ताकि हर रास्ते वाले अपने साथियों को उन दरीचों के ज़रिये देख सकें और मुत्मइन हो सकें कि दूसरे हलाक नहीं हो गए हैं। अब बनी इस्राईल ने दरिया को तै कर लिया जब आख़िरी इस्राईली भी दरिया पार हो गया तो फ़िरऔन का लश्कर दरिया के इस पार किनारे पहुँच चुका था। उस लश्कर में एकलाख सवार तो सिर्फ़ स्याह घोड़ोंवाले थे। दूसरे रंग के घोड़े उसके सिवा थे उससे लश्करे फ़िरऔन की कसरत का अंदाज़ा हो सकता है। फ़िरऔन ने जब यह हैबतनाक मंज़र देखा तो डर गया और वापिस होने का इरादा कर लिया लेकिन अफ़सोस कि अब नजात का मौक़ा जा चुका था तक़्दीर नाफ़िज़ आ चुकी थी, मूसा (ﷺ) की दुआ ने क़बूलियत हासिल कर ली थी। जिब्राईल (ﷺ) एक घोड़ी पर सवार थे। फ़िरऔन के घोड़े के पास से गुज़रे। घोड़ी को देखकर घोड़ा हिनहिना उठा, जिब्राईल (ﷺ) ने अपनी घोड़ी दरिया में डाल दी, घोड़ा भी दरिया में कूद पड़ा, फ़िरऔन उसको न थाम सका। मजबूरन दरिया में दाख़िल हो गया लेकिन अपनी बहादुरी साबित करने के लिए अपने साथी उमरा को पुकारा कि बनी इस्राईल हमसे ज़्यादा दरिया के अंदर दाख़िल होने के हक़दार नहीं। सब दरिया में कूद पड़ो, रास्ता बना हुआ है। चुनाँचे उसका लश्कर दरिया के अंदर समा गया। मीकाईल (ﷺ) सबसे पीछे थे और उसके लश्कर को हाँककर आगे बढ़ा रहे थे चुनाँचे एक भी पीछे न रहा। जब सब दाख़िले दरिया हो गये और बनी इस्राईल सब दरिया पार हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने दरिया को

आपस में जोड़ दिया। अब कोई फ़िरओनी भी न बच सका। मौज़ें बुलंद हो रही थी और पस्त हो रही थी। मद्दो जज़र पैदा हो गया था। फ़िरओन पर सक्राते मौत तारी थी। अब वह कह उठा कि हाँ बनी इस्राईल के अल्लाह के सिवा कोई दूसरा इलाह नहीं। मैं ईमान लाता हूँ लेकिन अफ़सोस कि वो उस वक़्त ईमान लाया जबकि उसका ईमान लाना कुछ भी मुफ़ीद न था। क़ौले बारी तआला है कि जब उन्होंने मेरा अज़ाब देख लिया तो बोल उठे, कि हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ आए। लेकिन हमारा अज़ाब देख चुकने के बाद ईमान लाना फ़ायदेमंद नहीं। अल्लाह तआला की यही सुन्नत है। काफ़िर लोग ख़सारे में रहेंगे। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़िरओन के जवाब में कहा कि अब ईमान लाता है और अब तक नाफ़र्मान और काफ़िर बना हुआ था और फ़ित्ने मचा रहा था और लोगों को गुमराह कर रहा था। वह लोग दोज़ख़ में ले जाने के लिए दूसरों के इमाम बने हुए थे। अब उनकी हर्गिज़ मदद न की जाएगी।

अल्लाह तआला ने फ़िरओन की यह बात कि (आमन्तु अन्नहू ला इलाहा इल्लल्लज़ी आमनत बिही बनू इस्राईल) नबी अकरम (ﷺ) से बयान फ़र्माई। यह उन ग़ैब की बातों में से थी जिसकी ख़बर सिर्फ़ नबी अकरम (ﷺ) ही को हो सकी। इसीलिए रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''जब फ़िरओन ने ईमान का कलिमा ज़ुबान से निकाला तो जिब्रील (عليه السلام) मुझसे बयान करते हैं कि ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! मैंने दरिया का कीचड़ लेकर फ़िरओन के मुँह में ठूंस दिया इस बिना पर कि दरियाए रहमत को जोश न आ जाए।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति यूनुस : 3107; वहुव हसन; अहमद : 1/2451; मुस्नद तयालिसी : 2693)

क़ौलुहू तआला (फ़ल्यौम नुनज्जीका बि बदनिका लि तकूना लिमन ख़ल्फ़क आयतन.) अब हम तेरी रूह को नहीं तेरे जिस्म को महफ़ूज़ करते हैं ताकि बाद वालों के लिए वह इब्रत बन जाए।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि कुछ बनी इस्राईल ने फ़िरओन की मौत के बारे में शक किया था तो अल्लाह तआला ने दरिया को हुक्म दिया कि फ़िरओन के जसदे (जिस्मे) बेरूह को जिस पर लिबास भी मौजूद है ज़मीन के एक टीले पर फेंक दिया ताकि लोगों को फ़िरओन की मौत का हक़ीक़ी सबूत मिल जाए। (तब्री : 15/192) बदन यानी जिस्म बग़ैर रूह (इन्ना कसीरम् मिनन्नासि अन आयातिना लग़ाफ़िलून) यानी अक्सर लोग हमारी निशानियों से इब्रत व नसीहत हासिल नहीं करते हैं।

कहते हैं कि यह हलाकत यौमे आशूरा में हुई थी। नबी अकरम (ﷺ) जब मदीना तय्यिबा आए तो उन दिनों यहूद आशूरा के दिन का रोज़ा रखा करते थे। पूछा कि ''इस दिन क्यूँ रोज़ा रखते हो'' तो यहूद ने कहा, इस दिन मूसा (عليه السلام) फ़िरओन पर ग़ालिब आए थे। तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''ऐ मेरे अस्हाब! तुम इस दिन रोज़ा रखने के यहूद से ज़्यादा हक़दार हो इसलिए आशूरा का रोज़ा रखा करो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूनुस (वजावज़्ना बि बनी इस्राईलल बहर फ़अत्बअहुम फ़िरओन...) : 4680; सहीह मुस्लिम : 1130; इब्ने हिब्बान : 3625; अहमद : 1/291)

***

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ فَمَا ٱخْتَلَفُوا۟ حَتَّىٰ جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

तर्जुमा : ''और हमने बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया और हमने उनको नफ़ीस चीज़ें खाने को दीं तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म पहुँच गया। यक़ीनी बात है कि आपका रब तआला उनके बीच क़यामत के दिन इन उमूर में फ़ैसला करेगा जिनमें वह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।'' (93)

बनी इस्राईल पर इन्आमात और उनकी सरकशी (आयत 93) : अल्लाह तआला बनी इस्राईल पर अपनी दीनी और दुनियावी नेअमतों का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़र्माता है कि हमने उनको रहने के लिए अच्छी जगह दी, यानी मिस्र और शाम (सीरीया) के शहर जो बैतुल मक़्दिस के क़रीब हैं। अल्लाह तआला ने जब फ़िरऔन को हलाक कर दिया तो हुकूमते मूसवी शहरे मिस्र पर क़ाबिज़ व मुतसर्रिफ़ हो गई। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हमने उस क़ौम को वारिस बना दिया जो मश्रिक़ व मग़्रिब हर जगह कमज़ोर थी, हमने उन्हें बरकत दी और बनी इस्राईल से तुम्हारे रब तआला का वादा पूरा हुआ क्योंकि उन्होंने सब्र किया था और फ़िरऔन की क़ौम ने जो कुछ महल्लात व इमारात तैयार की थीं सब तहस नहस कर दी गईं। हमने उन्हें बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया। ख़ज़ाने उनसे छीन लिए और उन सबका वारिस बनी इस्राईल को बना दिया। उन्होंने बेशुमार बाग़ात व चश्मे छोड़े थे लेकिन बनी इस्राईल मूसा (عليه السلام) से हमेशा ही बैतुल मक़्दिस का मुतालबा करते रहते थे जो हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) का वतन है। उन दिनों यरूशलम पर क़ौमे अमालिक़ा का क़ब्ज़ा था। बनी इस्राईल को उनसे लड़ने के लिए कहा गया तो वह इंकार कर बैठे तो अल्लाह तआला ने उन्हें दश्ते तीह में गुम कर दिया। चालीस साल वहाँ गुज़रे उस अर्सा में हारून (عليه السلام) और फिर मूसा (عليه السلام) वफ़ात पा गए। अब बनी इस्राईल तीह से यूशअ बिन नून के साथ बाहर निकले और अल्लाह तआला ने बैतुल मक़्दिस उनके हाथों फ़तह करा दिया। यह अर्सा (एक मुद्दत) तक उनके क़ब्ज़े में रहा। फिर बुख़्ते नस्सर ने क़ब्ज़ा कर लिया। फिर दोबारा बनी इस्राईल का क़ब्ज़ा हुआ फिर मुल्के यूनान उस पर मुतसर्रिफ़ हुए, उनके अह्काम तवील मुद्दत तक चलते रहे। उस वक़्त में अल्लाह तआला ने ईसा बिन मरियम (عليه السلام) को भेजा। यहूद ने हज़रत ईसा (عليه السلام) की दुश्मनी में मुल्के यूनान से साज़ बाज़ की। हज़रत ईसा (عليه السلام) की चुग़लियाँ खायीं और कहा कि ईसा (عليه السلام) रिआया में फ़साद व फ़ित्ना पैदा कर रहा है। मुल्के यूनान (यूनान के हुक्मराँ) ने उनको पकड़कर सूली देना चाहा लेकिन मशिय्यते इलाही से एक हवारी पर ईसा (عليه السلام) का गुमान हो गया, उसको पकड़कर सूली चढ़ा दिया गया और गुमान किया कि ईसा (عليه السلام) यही थे। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ईसा (عليه السلام) को उन्होंने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया है। अल्लाह तआला अज़ीज़ व हकीम है फिर मसीह (عليه السلام) के तक़रीबन तीन सौ बरस बाद एक यूनानी बादशाह कुस्तुन्तीन ईसाई हो गया। लेकिन यह फ़ीलसूफ़ था। कहते हैं कि दीने नसारा में तक़िया और हीला के तौर पर शामिल हो गया था ताकि दीने ईसा में फ़ित्ना बरपा करे। नसरानी पादरियों ने

उसके हुक्म से शरीअत के नये नये क़ानून नाफ़िज़ किए। बिदअतें फैलाईं, छोटे बड़े कनीसे और इबादतगाहें बनाईं। हियाकल और मआबिद क़ायम किए। उस ज़माना में दीने ईसाइयत बहुत फैल गया और तग़य्युर व तहरीफ़ उसमें होने लगी। रोहबानियत पैदा हो गई, सच्चे दीने मसीह की मुख़ालिफ़त होने लगी। हक़ीक़ी दीन सिर्फ़ चंद इबादतगुज़ारों के अंदर ही बाक़ी रह गया। अब यह भी राहिबों की शक्ल में जंगलों और मैदानों में सूमऐ बनाकर रहने लगे। नसारा का क़ब्ज़ा सीरीया जज़ीरा और रूम शहर पर हो गया। उसी बादशाह ने शहरे कुस्तुन्तुनिया और क़िमामा बसाया। बैतुल मक़्दिस में बैते लहम और कनाइस बनाए। हूरान के शहर बसाये जैसे बसरा वग़ैरह। बड़ी-बड़ी मजबूत इमारतें बनाईं। यहीं से सलीब परस्ती की इब्तिदा (शुरुआत) पड़ी, पूर्व में दूर तक जा पहुँचे और वहाँ भी कनीसे बनाए। ख़िंज़ीर का गोश्त हलाल कर लिया। दीन के फ़ुरूअ और उसूल में अजीब अजीब बिदअतें पैदा कीं। अमानते हक़ीरा का उसूल वज़अ करके अमानते कबीरा का नाम रख दिया, बादशाह के हुक्म से नए नए क़वानीने शरीअत बना लिए। उसकी शरह बहुत लम्बी हैं ग़र्ज़ यह कि उन शहरों पर उनका क़ब्ज़ा सहाबा (रज़ि.) के ज़माने तक रहा यहाँ तक कि बैतुल मक़्दिस हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के हाथों फ़तह हुआ। अल्हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक।

हमने उन्हें पाक पाक चीज़ें दीं थीं ताकि तय्यब चीज़ें खाएँ। लेकिन मालूमाते मज़हबी के बावजूद वह इख़्तिलाफ़ करने लगे हालाँकि इख़्तिलाफ़ फ़िल मज़हब की कोई वजह ही नहीं थी। अल्लाह तआला ने तो सब बातें बग़ैर इल्तिबास साफ़-साफ़ बयान कर दी थीं। हदीस में है कि "यहूद ने इकहत्तर (71) फ़िर्क़ेबना लिये थे और ईसाईयों ने बहत्तर (72) बनाए और मेरी उम्मत तेहत्तर (73) फ़िर्क़े बनाएगी जिनमें से सिर्फ़ एक नजात पायेगा और बाक़ी सब जहन्नमी।" नबी अकरम (ﷺ) से पूछा गया, वह एक कौन है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया "जिस पर मैं और मेरे अस्हाब (रज़ि.) चल रहे हैं।" (तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी इफ़्तिराक़े हाज़िहिल उम्मति : 2641; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 1/128; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद अफ़्रीक़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/480; रक़म : 938) इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि मैं क़यामत के दिन उनके इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला कर दूँगा।

***

فَاِنۡ كُنۡتَ فِىۡ شَكٍّ مِّمَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ فَسۡـَٔلِ الَّذِيۡنَ يَقۡرَءُوۡنَ الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكَ‌ ۚ لَقَدۡ
جَآءَكَ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُمۡتَرِيۡنَ ۝٩٤ وَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوۡنَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٩٥ اِنَّ الَّذِيۡنَ حَقَّتۡ عَلَيۡهِمۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ
۝٩٦ وَلَوۡ جَآءَتۡهُمۡ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِيۡمَ ۝٩٧

तर्जुमा :''फिर अगर आप इसकी तरफ़ से शक में हों जिसको हमने आपके पास भेजा है तो आप उन लोगों से पूछकर देख लो जो आपसे पहली किताबों को पढ़ते हैं। बेशक आपके पास आपके रब तआला की तरफ़ से सच्ची किताब आई है। आप हर्गिज़ शक करने वालों में से न हों। (94) और न उन लोगों में से हों जिन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया , कहीं आप (ﷺ) तबाह न हो जाएँ। (95) यक़ीनन जिन लोगों के हक़ में आपके रब तआला की बात साबित हो चुकी है वह ईमान न लायेंगे। (96) भले उनके पास तमाम दलाइल पहुँच जाएँ जब तक कि अज़ाबे दर्दनाक को न देख लें।'' (97)

दलीलों के बावजूद अहले किताब की हठधर्मी (आयत 94-97) : क़तादा बिन दआमा (रह.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''न मैं शक करता हूँ, न मुझे पूछने की ज़रूरत है।'' (तब्री : 15/202; व सनदुहू ज़ईफ़ुन लिइर्सालिही; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 10212; वत्तफ़्सीरु लहू : 1/261 अन क़तादा मुर्सलन) इस आयत में उम्मत को साबित क़दम रहने की तर्ग़ीब दी गई है और बताया गया है कि नबी की सिफ़त कुतुबे मुतक़द्दिमा (पहले नबियों की किताबें) तौरात व इंजील में मौजूद थी जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया, जो लोग नबी उम्मी की पैरवी करते हैं वह इस बिना पर कि आप (ﷺ) की सिफ़ात तौरात व इंजील में लिखी पाते हैं लेकिन उसके बावजूद कि वह नबी की सदाक़त को इस उम्दगी के साथ जानते हैं जिस तरह अपने बच्चों को फिर भी इस सदाक़त को छुपाते हैं तहरीफ़ व तब्दील इंजील में कर देते हैं। क़यामे हुज्जत के बावजूद ईमान नहीं लाते। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि उन पर हक़ की हुज्जत क़ायम हो चुकी है लेकिन कैसा ही सबूत इनको क्यूँ न मिले, यह उस वक़्त तक ईमान न लायेंगे जब तक कि अज़ाब को अपनी आँखों से न देख लेंगे। लेकिन उस वक़्त उनका ईमान लाना कुछ नफ़ा न देगा। क़ौम के इसी दर्जा पर पहुँच जाने के बाद ही मूसा (عليه السلام) ने उन पर बद् दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! इनके अम्वाल फ़ना कर दे और इनके दिलों पर मुहर लगा दे, अज़ाब के बग़ैर यह न मानेंगे। इसी तरह फ़र्माने बारी तआला है कि अगर हम इन पर फ़रिश्ते भी नाज़िल कर दें और मुर्दे भी इनसे बातें करने लगें और हर चीज़ इनके लिए जमा कर दें फिर भी यह ईमान न लायेंगे और इनमें से अक्सर तो जानते ही नहीं हैं।

***

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

तर्जुमा : ''चुनाँचे कोई बस्ती ईमान न लाई कि ईमान लाना उसको नाफ़ेअ होता, हाँ! मगर यूनुस (عليه السلام) की क़ौम। जब वह ईमान ले आए तो हमने रुस्वाई के अज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में उन पर से टाल दिया और उनको एक वक़्ते ख़ास तक आराम दिया।'' (98)

अ़ज़ाब देखकर ईमान लाना क़बूल नहीं होता मगर क़ौमे यूनुस को अल्लाह तआ़ला ने माफ़ कर दिया (आयत 98) : पिछली उम्मतों में से कोई भी उम्मत सारी की सारी ईमान नहीं लाई जिसकी त़रफ़ कि हमने अपने पैग़म्बर भेजे थे बल्कि तुमसे पहले भी ऐ मुह़म्मद (ﷺ)! जो रसूल आये, ज़रूर उसको झुठलाया गया। जैसाकि क़ौले बारी तआ़ला है कि अफ़सोस बन्दों पर कि रसूल उनके पास आता है तो उसका मज़ाक़ उड़ाये बग़ैर नहीं रहते। यही कहते हैं कि यह तो जादूगर है या यह कि मज्नून है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब यदख़ुलुल जन्नता सब्ऊना अल्फ़ा बिग़ैरि ह़िसाब : 6541; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 220) जिस क़रिया (गाँव) में भी हमारा कोई नबी पहुँचा तो वहाँ के ख़ुशह़ालों ने यही कहा कि हम तो अपने बाप-दादों के नक़्शे क़दम पर चलेंगे।

ह़दीसे स़ह़ीह़ में है कि अम्बिया मेरे सामने पेश किए गए। किसी नबी के साथ बड़ी-बड़ी जमाअ़तें उम्मतियों की थीं और किसी नबी के साथ एक ही आदमी था और किसी नबी के साथ दो आदमी और किसी के साथ तो एक भी नहीं। फिर मूसा (अ.) की उम्मत की कसरत का ज़िक्र किया। फिर अपनी उम्मत की ज़्यादती का ज़िक्र जिसने कि पूरब और पश्चिम को ढाँप लिया था। ग़र्ज़ यह कि क़ौमे यूनुस (ﷺ) के सिवा किसी मुल्क की क़ौम सबकी सब ईमान नहीं लाई, यूनुस (ﷺ) की क़ौम अहले नैनवा थे उनका ईमान अ़ज़ाब दिखाई देने के बाद डर की बिना पर था। अ़ज़ाब से डराकर अल्लाह तआ़ला के नबी क़ौम के अंदर से बाहर निकल गये थे। अब उन लोगों को सख़्त अफ़सोस हुआ, अल्लाह तआ़ला की पनाह चाही, अल्लाह तआ़ला से फ़रियादें करने लगे, अपने बच्चों और मवेशियों सबको लेकर अल्लाह तआ़ला के सामने आ खड़े हुए कि अल्लाह से दरख़्वास्त की कि जिस अ़ज़ाब की नबी (ﷺ) ने ख़बर दी है और फिर हमसे जुदा हो गया है उसको दूर कर दे उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने उन पर रह़म किया, अ़ज़ाब जो सामने आ चुका था हट गया। जैसाकि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि क़ौमे यूनुस जब ईमान ले आई तो ह़याते दुनियावी में उन पर आया हुआ अ़ज़ाब हमने हटा लिया और जीते रहने तक उस अ़ज़ाब से हमने उन्हें बचा लिया। मुफ़स्सिरीन का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि आया सिर्फ़ दुनियावी अ़ज़ाब हटा या अ़ज़ाबे आख़िरत भी हट गया। कुछ कहते हैं कि सिर्फ़ दुनियावी अ़ज़ाब। क्यों कि आयत से सिर्फ़ इसी पर रोशनी पड़ती है। और कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि हमने नबी (ﷺ) को एक लाख से ज़्यादा लोगों की त़रफ़ भेजा था, वह ईमान लाए, चुनाँचे वक़्ते मुक़र्ररा तक हमने उन्हें फ़ायदा पहुँचाया। यहाँ ईमान का लफ़्ज़ मुत्लक़ है बग़ैर क़ैद है और मुत्लक़ ईमान तो अ़ज़ाबे आख़िरत से नजात देने वाला होता है, वल्लाहु आ़लम!

क़तादा (रह़.) ने इस आयत की तफ़्सीर में लिखा है कि अ़ज़ाब आ चुकने के बाद कोई क़ौम ईमान लाए तो नहीं छोड़ा जाता है लेकिन जब यूनुस (ﷺ) ने अपनी क़ौम को छोड़ दिया और लोग समझ गये कि अब अ़ज़ाब से नजात नहीं तो उनके दिलों में तौबा के जज़्बात पैदा हुए। उन्होंने ख़राब कपड़े पहनकर अपने को बदह़ाल बना लिया। मवेशियों का गिरोह और उनके बच्चों का गिरोह अलग अलग किया। अपने साथ बच्चों जानवरों तक को ले गए चालीस दिन तक फ़रियाद करते रहे। अल्लाह ने उनके ख़ुलूसे निय्यत और तौबा की स़दाक़त को देखकर आ खड़ा हुआ, अ़ज़ाब उन पर से हटा दिया। क़ौमे यूनुस मूसल की ज़मीन में नैनवा की

रहने वाली थी। (तब्री : 15/207) इब्ने मसऊद (रज़ि.) (लौला कानत) को (हल्ला कानत) पढ़ते हैं। ग़र्ज़ यह कि अज़ाब उनके सरों पर इस तरह मँडरा रहा था जैसे तारीक रात में बादल के टुकड़े। यह लोग अपने एक आलिम के पास गए कि हमें एक दुआ लिख दीजिए कि जिसकी बरकत से अज़ाब टल जाए। उसने यह दुआ लिख दी थी (या हय्यु हीना ला हय्या या हय्यु मुहयिल मौता या हय्यु ला इलाहा इल्ला अन्त) चुनाँचे अज़ाब टल गया, यह पूरा क़िस्सा सूरह साफ़्फ़ात में इंशाअल्लाह बयान होगा।

***

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى
يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ
وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

तर्जुमा : "और अगर आपका रब चाहता तो तमाम रूए ज़मीन के लोग सबके सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं जिसमें वह ईमान ही ले आएँ। (99) हालाँकि किसी शख़्स का ईमान लाना अल्लाह के हुक्म के बग़ैर मुम्किन (संभव) ही नहीं। और अल्लाह तआला बेअक़्ल लोगों पर गंदगी वाक़ेअ कर देता है। (100) आप कह दीजिए कि तुम ग़ौर करो कि क्या क्या चीज़े हैं आसमानों में और ज़मीन में और जो लोग ईमान नहीं लाते उनको दलाइल और धमकियाँ कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचातीं। (101) तो वह लोग सिर्फ़ उन लोगों के से वाक़ियात का इंतिज़ार कर रहे हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। आप कह दीजिए कि अच्छा तो तुम इंतिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों में हूँ। (102) फिर हम अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे, हम इसी तरह सब ईमान वालों को नजात दिया करते हैं यह हमारे ज़िम्मे है।" (103)

हिदायत व गुमराही अल्लाह के इख़्तियार में है (आयत 99-103) : अल्लाह पाक फ़र्माता है कि ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! अगर अल्लाह चाहता तो सबके सब ईमान ले आते। लेकिन अल्लाह जो कुछ करता है उसमें

हिक्मत होती है। अल्लाह की मर्ज़ी होती तो सब एक ही ख़्याल के होते लेकिन लोग मुख़्तलिफ़ ख़्यालात के हैं। सही राय पर वह हैं जिन पर अल्लाह का रहम है और उनकी फ़ित्रत भी ऐसी ही बनाई है। अल्लाह की यह बात पूरी होकर रहेगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इंसानों से भर दूँगा। अगर सबके सब हिदायत याफ़्ता हो जाएँगे तो ईमान क्या बेमअ़नी सी बात होकर न रह जाता। अल्लाह फ़र्माता है कि क्या तुम मजबूर करके उन्हें मोमिन बनाना चाहते हो, न यह तुम पर वाजिब है, न तुम्हारे लिए सज़ावार है और अल्लाह जिसको चाहे गुमराह करे और जिसको चाहे हिदायत दे। तुम इन पर अफ़सोस करके अपना दिल छोटा मत करो। इस ख़्याल के तहत कि वह ईमान नहीं ला रहे हैं क्या तुम अपनी जान हलाक कर दोगे। तुम अपनी ताक़त से किसी को रास्ती पर नहीं ला सकते, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ तब्लीग़ कर देना है फिर उनसे निपटना हमारा काम है। तुम फ़क़त नासेह हो नसीहत कर दो, समझा दो। इसके बाद तुम ज़िम्मेदार नहीं। यह आयतें इस बात पर दलालत करती हैं कि अल्लाह अपने इरादे का आप फ़ाइ़ल (पूरा करने वाला) है, अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई ईमान नहीं ला सकता। अ़क़्ल से काम न लेने वाले गुमराह कर दिए जाते हैं। अल्लाह पाक हिदायत करने और न करने के बारे में इंसाफ़ पर है।

आफ़ाक़ में अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ : अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की रहनुमाई कर रहा है कि सारी कायनात में हमारी जो निशानियाँ जैसे आसमान, सितारे, सय्यारे, सूरज व चाँद, रात और दिन फैले हुए हैं, उन पर नज़रे बसीरत डालो कि रात में दिन और दिन में रात कैसे दाख़िल हो जाती है। कभी दिन बड़ा और कभी रात बड़ी। आसमान की बुलंदी और फैलाव, सितारों से उसकी ज़ेबो-ज़ीनत आसमान से पानी बरसना, ज़मीन का सूख जाने के बाद फिर ज़िन्दा व सरसब्ज़ हो जाना। दरख़्तों में फल-फूल कलियाँ पैदा होना, मुख़्तलिफ़ नबातात का उगना। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवर, उनकी शक्लें अलग अलग उनके रंग उनके फायदे सब अलग अलग। पहाड़ चटयल मैदान। जंगल, बाग़, आबादियाँ, और वीराने, समुन्द्रों की तह के अ़जायबात, मौजें, उनके मद्दो-जज़र उसके बावजूद सफ़र करने वालों के लिए समुन्द्र का मुसख़्ख़र हो जाना, जहाज़ों का चलना यह सब अल्लाह क़ादिर की निशानियाँ हैं जिसके सिवा कोई दूसरा अल्लाह है ही नहीं। लेकिन अफ़सोस कि यह सारी निशानियाँ काफ़िरों के ग़ौरो फ़िक्र का कुछ भी सबब नहीं बनतीं। अल्लाह की दलील साबित हो चुकी है, ईमान नहीं लाते हैं, न लाएँगे, यह लोग तो उन ही अ़ज़ाब के दिनों का इंतिज़ार कर रहे हैं जिससे सामना पहले की क़ौमों को पड़ा था। ऐ नबी (ﷺ)! कह दो कि वक़्त का इंतिज़ार करो, मैं भी इंतिज़ार करता हूँ और जब इंतिज़ार ख़त्म हो जाने पर अ़ज़ाब आ जाएगा तो फिर हम अपने रसूलों को बचा लेंगे और उनकी उम्मत को भी और पैग़म्बरों का इंकार करने वालों को हलाक कर देंगे। अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे ले लिया है कि मोमिनीन को बचा ले जैसे कि नेकोकारों पर रहमत अपने ज़िम्मे ले ली है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह की किताब लोहे महफ़ूज़ जो अ़र्श पर है उसमें लिखा है कि "मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सा) : 7404; सहीह मुस्लिम : 2751)

***

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۚۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَاَنْ اَقِمْ
وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ
فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۷﴾

तर्जुमा : ''आप कह दीजिए कि ऐ लोगों! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक में हो तो मैं उन मअ़बूदों की इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो लेकिन हाँ! उस मअ़बूद की इबादत करता हूँ जो तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है और मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से रहूँ। (104) और यह कि अपने आपको उस दीन की तरफ़ इस तरह मुतवज्जा रखना कि और सब तरीक़ों से अलग हो जाए और कभी मुश्रिक मत बनना। (105) और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न कोई नफ़ा दे सके और न नुक़्सान पहुँचा सके। फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में हक़ ज़ाया करने वालों में से हो जाओगे। (106) और अगर तुमको अल्लाह तआ़ला कोई तक्लीफ़ पहुँचाए तो सिवाए उसके और कोई उसको दूर करने वाला नहीं है। और अगर वह तुमको कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहें, मब्ज़ूल फ़र्मा दे। और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है।'' (107)

मअ़बूदे हक़ीक़ी का तआरुफ़ और दीने हनीफ़ (आयत 104-107) : अल्लाह तआ़ला नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! सुना दो कि मैं दीने हनीफ़ जो लाया हूँ, जिसकी वह्यी मुझ पर उतरी है अगर उसकी सेहत में बहरहाल तुम्हें शक हो तो मैं तो तुम्हारे मअ़बूदों की कभी पूजा न करूँगा। मैं अल्लाह वाहिद ला शरीक का बन्दा हूँ जो तुम्हें मौत देता है और जिसने ज़िन्दगी दी थी। यक़ीनन तुम सबको उसी की तरफ़ जाना है। फ़र्ज़ करो कि दरहक़ीक़त तुम्हारे मअ़बूद हक़ हैं तो उनसे कहो कि मुझे नुक़्सान पहुँचाएँ। याद रखो कि इनमें नुक़्सान व नफ़ा पहुँचाने की ताक़त ही नहीं है, नफ़ा व ज़रर तो अल्लाह ला शरीक के हाथ में है। ऐ नबी (ﷺ)! कुफ़्फ़ार से एराज़ करके पूरे इख़्लास के साथ अल्लाह की इबादत में लग जाओ, शिर्क की तरफ़ ज़रा

भी न झुकना। अगर मज़र्रत व नुक़्सान के अंदर अल्लाह तुम्हें घेर ले, तो कौन उस घेरे से तुमको बाहर निकाल सकता है। नफ़ा व ज़रर, ख़ैर व शर्र तो अल्लाह की तरफ़ से है।

अनस बिन मालिक (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उम्र भर ख़ैर के तालिब रहो और अल्लाह के इन्आमात को दरपेश रखो, अल्लाह की रहमतों की हवाएँ जिस ख़ुशनसीब को पहुँच गयीं तो पहुँच गयीं। वह जिसको चाहे रहमत से सरफ़राज़ करे और अल्लाह तआला से दरख़्वास्त करो कि तुम्हारी ऐबपोशी करता रहे। (शुअबुल ईमान : 1121; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्मुअजमुल कबीर : 720; इसकी सनद में ईसा बिन मूसा बिन अयास ज़ईफ़ रावी है। (अल्जरह वत् तअ्दील : 6/285) और तुम्हें आफ़ाते ज़माना और आफ़ाते नफ़्स से अम्न में रखे। वह ग़फ़ूरुर् रहीम है कैसा ही गुनाह क्यूँ न हो, तौबा कर लो यहाँ तक शिर्क करके भी तौबा कर लो तो वो भी क़बूल कर ले।''

***

قُلْ يَاأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

तर्जुमा : ''आप कह दीजिए कि ऐ लोगों! तुम्हारे पास हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से पहुँच चुका है तो जो शख़्स राहे रास्त पर आ जाएगा तो वह अपने वास्ते राहे रास्त पर आएगा और जो शख़्स बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और मैं तुम पर मुसल्लत नहीं किया गया। (108) और उसकी इत्तिबाअ करते रहिए जो कुछ आपके पास वह्यी भेजी जाती है और सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना फ़ैसला कर दे। और वह सब फ़ैसला करने वालों में अच्छा फ़ैसला करने वाला है।'' (109)

नाफ़र्मान अपना ही नुक़्सान करता है (आयत 108,109) : अल्लाह पाक नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि लोगों से कह दो कि अल्लाह के पास से जो कुछ वह्यी आई है वह हक़ है उसमें ज़र्रा भर भी शक नहीं, जिसने हिदायत पायी और इत्तिबाअ की उसका फ़ायदा आप उसको पहुँचेगा और जो हिदायत हासिल न कर सका उसका वबाल उसकी अपनी जान पर है। मैं कोई अल्लाह का फ़ौजदार नहीं कि ज़बरदस्ती तुमको मोमिन बनाऊँ। मैं तो अल्लाह तआला के अज़ाब से सिर्फ़ डराने वाला हूँ, हिदायत देना अल्लाह का काम है। ऐ नबी (ﷺ)! तुम आप वह्यी की पैरवी करो, अल्लाह की वह्यी को मज़बूती से पकड़े रहो जो तुम्हारी मुख़ालिफ़त कर रहे हैं उस पर सब्र करो। यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ जाए, वह ख़ैरुल हाकिमीन है।

(अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह यूनुस की तफ़्सीर मुकम्मल हुई)

सूरह हूद

سوره هود

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह हूद - 11

आयातः 123 , मक्की पैराग्राफ : 8

जमानए नुजूल और पसे मन्जर

सूरह (हुद) रसूलुल्लाह (ﷺ) के कयाम के चौथे और आख़री दौर (11 से 13) के वस्त में यानी गालिबन 12 नबवी में सूरह (यूसुफ) वगैरह के साथ नाज़िल हुई। ये वही दौर था, जब आप (ﷺ) पर (इफ़्तरा) के इल्ज़ामात आइद किए जा रहे थे, आप की दावत को (शको-रैब) की निगाह से देखा जा रहा था और उसे (सिहरुम्मुबीन) कहा जा रहा था।

सूरह हूद

इस सूरत में 10 रुकूअ और 123 आयतें हैं। ये सूरत मक्का में नाज़िल हुई। इसका ज़मानाए नुज़ूल रसूलुल्लाह (ﷺ) की मक्की ज़िन्दगी के आख़िरी दो साल का है। ये ज़माना आप की ज़िन्दगी का मुश्किल तरीन दौर था। आपकी ज़ौजा मुहतरमा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) वफ़ात पा चुकी थी और आपके चाचा अबू तालिब का भी इन्तिक़ाल हो चुका था। अल्लाह के हुक्म से इन दोनों की वजह से आपको मुसीबतों और मुश्किलात में बड़ा सहारा था। अल्लाह तआला ने इस सूरत में अम्बिया किराम के हालात बयान करके आप (ﷺ) को और आप पर ईमान लाने वालों को हौसला और तसल्ली दी। सूरह हूद में हज़रत नूह (अलै.), हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत लूत, हज़रत शुऐब, हज़रत मूसा (अलै.) और उनकी क़ौमों के वाक़ियात कुछ तफ़्सील से बयान किये गये हैं और उन रसूलों को न मानने वालों पर अज़ाब और क़यामत के अहवाल का एक निहायत हौलनाक नक़्शा खींचा गया है। इस सूरत के नुज़ूल के बाद सहाबा किराम ने नबी पर बुढ़ापे के आसार नोट किये। पूछे जाने पर आपने फ़रमाया कि मुझे सूरह हूद और इस जैसी सूरतों ने बूढ़ा कर दिया। आपको फ़िक्र सताने लगी कि कहीं आपकी क़ौम पर भी हौलनाक अज़ाब न आ जाये।

इस सूरत का मर्कज़ी मज़्मून इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद यानी तौहीद वह्य रिसालत और आख़िरत के इर्द-गिर्द घूमता है। इन अक़ाइद को इस सूरत में बड़े दिलनशीं अन्दाज़ में बयान किया गया है और पैग़म्बरे इस्लाम की दावत की सच्चाई पर ज़ोर दिया गया है और इस दावत का इन्कार करने वालों को बुरे अन्जाम से डराने के लिये पहले अम्बिया और उनकी क़ौमों के हालात बयान किये गये।

सूरत का आग़ाज़ ऐलान से होता है कि क़ुरआन एक किताबे हिक्मत है जिसकी आयतों को क़ादिरे मुत्लक़ और हकीम व ख़बीर, कायनात के ख़ालिक़ ने मुस्तहकम किया। ये किताबुल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गई है। ऐसी किताब इंसान नहीं लिख सकते। जो लोग कहते हैं कि मुहम्मद (ﷺ) ने इसे ख़ुद घड़ लिया है उनके लिये खुला चैलेंज है कि वो ऐसी दस सूरतें ही बना लायें। फिर अम्बिया और उनके वाक़ियात बयान किये गये हैं और क़यामत का हाल मुख़्तसर तौर पर बयान किया गया है। आपको आपके सहाबा और मानने वालों को सब्र और राहेरास्त पर साबित क़दम रहने की तल्क़ीन की गई है। आख़िरी आयत 123 में इस सूरत का ख़ातमा इस ऐलान पर किया गया है कि ज़मीन व आसमान के ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है अल्लाह की इबादत करो और उसी पर भरोसा करो।

तफ़्सीर सूरह हूद यह सूरत मक्की है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से सवाल किया कि आपको किस चीज़ ने बूढ़ा बना दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''सूरह हूद, वाक़िया, मुर्सलात, अ़म्म यतसाअलून और इज़श्शम्सु कुव्विरत ने।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल वाक़िया : 3297; वहुव सहीहुन; मुस्नद बज़्ज़ार : 1/170; हाकिम : 2/344) दूसरी रिवायत में है कि ''हूद और उसकी साथ वाली सूरतें और हाक़्क़ा ने।''(मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/37; तबरानी : 5804; इसकी सनद में सईद बिन सलाम अ़त्तार सख़्त ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/141; रक़म : 3195) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

तफ़्सीर सूरह हूद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

''शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحۡكِمَتۡ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَكِيۡمٍ خَبِيۡرٍ ۙ ① اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
اِنَّنِىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ وَّبَشِيۡرٌ ۙ ② وَّاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُمَتِّعۡكُمۡ مَّتَاعًا
حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤۡتِ كُلَّ ذِىۡ فَضۡلٍ فَضۡلَهٗ ؕ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ
عَذَابَ يَوۡمٍ كَبِيۡرٍ ③ اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ④

तर्जुमा : ''अलिफ़ लाम रा. यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें मुहकम की गई हैं, फिर साफ़-साफ़ बयान की गईं हैं एक हकीम बाख़बर की तरफ़ से। (1) यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो। मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से डराने वाला हूँ और बशारत देने वाला हूँ। (2) और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जा रहो वह तुमको वक़्ते मुक़र्ररा तक ख़ुश ऐशी देगा और हर ज़्यादा अ़मल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा। और अगर तुम लोग एराज़ करते रहो तो मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अंदेशा है। (3) तुमको अल्लाह ही के पास जाना है। और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।'' (4)

तौहीद से एराज़ अ़ज़ाब की वजह (आयत 1-4) : सूरह बक़रह में हुरूफ़े हिज्जा पर बह्स गुज़र चुकी है। इसके एआदा (लौटाने) की यहाँ ज़रूरत नहीं। इसलिए अलिफ़ लाम रा पर रोशनी नहीं डाली जा रही। अल्लाह

की आयतें मुह्कम हैं (फ़ुस्सिलत) के मअनी हैं कि सूरत के एतिबार से और मानी के एतिबार से यह आयतें कामिल हैं। यह अल्लाह ह्कीम व ख़बीर की तरफ़ से नाज़िलशुदा है, वह क़ौल में ह्कीम है और नताइजे उमूर में ख़बीर है। हुक्म दिया जाता है कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। इससे पहले भी जिस किसी रसूल की तरफ़ हमने वह्ी भेजी तो यही कहा कि मैं अकेला हूँ, परसतिश मेरी ही करो। हमने हर क़ौम में पैग़म्बर भेजा है कि इबादत सिर्फ़ अल्लाह की करो और बुतों की इबादत से बचो। मैं तुम्हें दोज़ख़ से डराता भी हूँ और जन्नत की बशारत भी देता हूँ।

ह्दीसे स़ह़ीह़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़फ़ा पहाड़ी पर चढ़कर कुरैश के क़बीलों को आवाज़ दी, थोड़ी देर में एक के बाद एक सब जमा हो गए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''ऐ क़बील-ए-कुरैश! अगर मैं तुम्हें ख़बर दूँ कि सुबह होते होते दुश्मन तुम पर ह्मला करने के लिए आ पहुँचने वाला है तो मेरी बात तुम सच मानोगे कि नहीं?'' सबने एक ज़ुबान होकर कहा, हमें तो कभी तजुर्बा नहीं हुआ कि तुमने कोई बात झूठ कह दी हो। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! मैं अल्लाह के अज़ाबे शदीद से तुम्हें आगाह करता हूँ। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुश्शुअरा, बाब (व अंज़िर अशीरतकल अक़्रबीन...): 4770; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 207) कि वह तुम्हें आ लेने वाला ही है अब भी अल्लाह से माफ़ी मांग लो तौबा कर लो वह अल्लाह तआला तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करेगा और हर स़ाह़िबे फ़ज़्ल को अपने फ़ज़्ल से बहरावर करेगा, वह दुनिया में तुम्हारे साथ अच्छा सलूक करेगा और दारे आख़िरत में भी वह जो मर्द व औरत बशर्तेकि ईमान ले आए उसे मरने के बाद ह्याते तय्यिबा के साथ उठाएगा।''

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सअद (रज़ि.) से कहा कि ''अगर तुम किसी पर कुछ ख़र्च करो और तुम्हारी निय्यत ख़ालिस़ अल्लाह के लिए है तो यक़ीनन उसका अज्र पाओगे यहाँ तक कि जो अपनी औरत को खिलाते हो उसका भी अज्र तुम्हें मिलेगा। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल वस़ाया, बाब अंय्युत्रकु वरिसतहू अग़्नियाअ ख़ैरूम् मिन अंय्यतकफ़्फ़ुन् नास...) : 2742; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1628) जिसने बुरा अमल किया उस पर एक गुनाह लिख दिया गया और जिसने एक नेकी की उस पर दस अज्र लिख दिये गए। अगर दुनिया में एक अमले बद की उसको सज़ा दी गई हो तो उसके दस ह्स्नात उसके ह्क़ में बाक़ी रहते हैं और अगर दुनिया में उस सज़ा न दी गई हो तो उसके दस ह्स्नात में से एक नेकी सोख़्त हो जाती है और उसके नौ ह्स्नात उसी के ह्क़ में बाक़ी रहते हैं।'' फिर फ़र्माया कि वह शख़्स़ बड़े घाटे में रहा कि उसकी इकाईयाँ उसके हर अशरा पर ग़ालिब आ जाती हैं। अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो मुझे तुम पर अज़ाबे क़यामत का डर है। यह उस शख़्स़ के लिए है जो अल्लाह के हुक्मों से मुँह फेरता है, रसूलों की तक्ज़ीब करता है। तो यक़ीनन क़यामत के दिन अज़ाब से दो चार होगा। तुम्हारी बाज़गश्त (लौटना) अल्लाह की तरफ़ है वह अपने ओलिया पर एह्सान करने और दुश्मनों को सज़ा देने पर क़ादिर है और एआदा-ए-ख़ल्क़ पर क़ादिर है। यह ज़बरदस्त तम्बीह है जैसाकि इससे पहले तर्ग़ीब दी गई थी।

***

اَلَآ اِنَّهُمۡ يَثۡنُوۡنَ صُدُوۡرَهُمۡ لِيَسۡتَخۡفُوۡا مِنۡهُ ؕ اَلَا حِيۡنَ يَسۡتَغۡشُوۡنَ ثِيَابَهُمۡ ۙ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ۝٥

तर्जुमा : "याद रखो वह लोग दोहरा किए देते हैं अपने सीनों को ताकि अपनी बातें अल्लाह से छुपा सकें याद रखो कि वह लोग जिस वक़्त अपने कपड़े लपेटते हैं वह उस वक़्त भी सब जानता है जो कुछ चुपके-चुपके बातें करते हैं और जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं। बिल यक़ीन वह दिलों के अंदर की बातें जानता है।" (5)

अल्लाह तआला राज़ की तमाम बातों को जानता है (आयत 5) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि लोग खुले आसमान के सामने पेशाब-पाख़ाना करने और सोहबत करने से बचते थे। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (यस्नून) को (तस्नूनी) पढ़ा है तो इब्ने जाफ़र (रज़ि.) ने कहा कि (तस्नूनी सुदूरहुम) का क्या मतलब है? तो आपने कहा कि वह आदमी जो कि सोहबत करते हुए शर्म इख़्तियार करता है या ख़ल्वत करने में भी उसको शर्म आती है। चुनाँचे यह आयत उतरी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि लोग खुले आसमान के नीचे ख़ल्वत करने और सोहबत करने से शर्म करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हूद बाब (अला इन्नहुम यस्नूना सुदूरहुम लि यस्तख़्फ़ू मिन्ह...) : 4681, 4682) और अपने रुख़ फेर लेते, ख़ुसूसन उस वक़्त जबकि रात को बिस्तर ओढ़कर लेट जाते, और अपने सर ढाँक लेते। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हूद बाब (अला इन्नहुम यस्नूना सुदूरहुम लि यस्तख़्फ़ू मिन्ह...) : 4683) उनका ख़्याल यह था कि अगर हम मकान में रहकर या कपड़ा ओढ़कर किसी बुरे काम का इर्तिकाब करें तो अल्लाह से अपने गुनाह को छुपा सकते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआला ख़बर देता है कि वह रात की अंधेरी में सोते वक़्त कपड़ा ओढ़ लेते हैं। लेकिन कोई छुपाए कि ज़ाहिर करे, अल्लाह तआला वाक़िफ़ रहता है यहाँ तक कि इंसान के दिल की निय्यत और ज़मीर के इरादों और भेदों को भी जानता है। सब्अे मुअल्लक़ात का मशहूर शायर ज़ुहैर कहता है :

फ़ला तक्तुमुन्नल्लाह मा फ़ी कुलूबिकुम लि युख़्फ़ी व महमा यक्तुमिल्लाहु यअलम
युअख़्ख़र फ़ यूज़उ फ़ी किताबि फ़युद्दख़र लि यौमिल हिसाबि अव युअज्जल फ़युन्क़िम

"तुम अपने दिलों की छुपी बात को अल्लाह से छुपाने की कोशिश न करो, अल्लाह ज़रूर जान लेता है। वह अमल जमा रहेगा और नामाएआमाल में यौमे क़यामत के लिए महफ़ूज़ रहेगा वरना जल्दी सज़ा दी गई तो दुनिया ही में सज़ा दे दी जाएगी।"

उस ज़माना जाहिलियत के शायर ने भी वुजूदे सानेअ (बनाने वाले के वजूद) का एतिराफ़ किया है और यह भी कि वह जुज़्इयात से वाक़िफ़ है, मआद है, जज़ा है, नामा-ए-आमाल हैं, यौमे क़यामत है। कहते हैं कि किसी मुश्रिक ने नबी (ﷺ) के सामने से जाते वक़्त अपना चेहरा मोड़ लिया और सर ढाँक लिया तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। लेकिन इस बात को अल्लाह तआला की तरफ़ मंसूब करना ज़्यादा बेहतर है। यानी

इससे मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला से छुपना चाहते हैं। क्योंकि उसके बाद ही आता है (अला ह़ीना यस्तग़शूना सियाबहुम) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अला इन्नहुम तस्नूनी सुदूरहुम पढ़ा है। इसके मअ़नी भी क़रीब क़रीब वही हैं।

अल्ह़म्दु लिल्लाह! अल्लाह के फ़ज़्लो-करम से ग्यारहवाँ पारा मुकम्मल हुआ

***

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ
فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۞ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ
عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ
الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ
اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ۚ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۞

तर्जुमा : ''ज़मीन पर चलने फिरने वाले जितने जानदार हैं सबकी रोज़ियाँ अल्लाह तआ़ला पर हैं वही उनके रहने-सहने की जगह को जानता है और उसके सौंपे जाने की जगह को भी सब कुछ वाज़ेह़ किताब में मौजूद है। (6) अल्लाह वही है जिसने छः दिन में आसमान व ज़मीन को पैदा किया और उसका अ़र्श पानी पर था ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुममें से अच्छे अ़मल वाला कौन है, अगर तू इनसे कहे कि तुम लोग मरने के बाद उठा खड़े किए जाओगे तो काफ़िर लोग पलटकर जवाब देंगे कि यह तो निरा स़ाफ़ जादू ही है।(7) और अगर हम उनसे अ़ज़ाब को गिनी-चुनी मुद्दत तक के लिए पीछे डाल दें तो यह ज़रूर पुकार उठेंगे कि अ़ज़ाब को कौनसी चीज़ रोके हुए है सुनो! जिस दिन वह उनके पास आएगा फिर उनसे टलने वाला नहीं फिर तो जिसकी हँसी उड़ा रहे थे वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।'' (8)

अल्लाह तआ़ला तमाम मख़लूक़ात का कफ़ील और ज़िम्मेदार (आयत 6-8) : अल्लाह तआ़ला सारी मख़लूक़ात जो छोटी बड़ी या ख़ुश्की तरी में हैं उन सबके रिज़्क़ का ज़िम्मेदार है। वही उनके चलने फिरने, आने जाने और ठहरने रहने सहने और जाये मौत और रह़म में रहने की जगह को जानता है। इब्ने अबी ह़ातिम

(रह़.) ने इस जगह मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल ज़िक्र किए हैं, वल्लाहु आलम! यह तमाम अज्र उस किताब में जो अल्लाह तआला के पास है, लिखा हुआ है। और वही किताब इसकी तफ़्सील बयान करती है जैसे अल्लाह तआला ने फ़र्माया है (وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَٰئِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّآ أُمَمٌ أَمْثَالُكُم مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَٰبِ مِن شَيْءٍ) (6/अन्आम : 38) यानी रूए ज़मीन पर चलने वाले जानवर और परिन्दे जो अपने परों से उड़ते हैं, सबके सब तुम्हारी जैसी ही उम्मतें हैं हमने किताब में कोई चीज़ लिखने से नहीं छोड़ी यह सबके सब अपने रब की तरफ़ जमा होंगे। और अल्लाह तआला ने फ़र्माया (وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ) (6/अन्आम : 59) यानी ग़ैब की कुँजियाँ (चाबियाँ) भी उसी के पास हैं और उन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। जो कुछ दरिया और जंगल में है उसे भी वही जानता है और जो पत्ता झड़ता है उसके इल्म में है और ज़मीन की अंधेरियों में कोई दाना और तर व ख़ुश्क में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो उसके इल्म में न हो।

अल्लाह तआला की कुछ निशानियों और अर्श का बयान : अल्लाह तआला बयान करता है कि उसे हर चीज़ पर क़ुदरत है, आसमान व ज़मीन को उसने सिर्फ़ छः दिन में पैदा किया है उससे पहले उसका अर्शे करीम पानी पर था। मुस्नद अह़मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ बनू तमीम! तुम ख़ुशख़बरी क़बूल करो" उन्होंने कहा ख़ुशख़बरियाँ तो आप (ﷺ) ने सुना दीं, अब कुछ दिलवाइए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ अहले यमन! तुम क़बूल करो।" उन्होंने कहा, हाँ! हमें क़बूल है, मख़्लूक़ की शुरुआत तो हमें सुनाइए कि किस त़रह़ हुई? आप (ﷺ) ने फ़र्माया "सबसे पहले अल्लाह तआला था और उसका अर्श पानी के ऊपर था। उसने लोहे मह़फ़ूज़ में हर चीज़ का ज़िक्र लिखा।" राविये ह़दीस ह़ज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं हुज़ूर (ﷺ) ने इतना ही फ़र्माया था जो किसी ने आकर मुझे ख़बर दी कि तेरी ऊँटनी ज़ानू खुलवाकर भाग गयी। मैं उसे ढूँढ़ने चला गया। फिर मुझे मालूम नहीं कि क्या बात हुई? यह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। एक रिवायत में है, "अल्लाह था और उससे पहले कुछ न था।" एक रिवायत में है "उसके साथ कुछ न था उसका अर्श पानी पर था उसने हर चीज़ का ज़िक्र लिखा फिर आसमान व ज़मीन को पैदा किया।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला (वहुवल्लज़ी यब्दउल ख़ल्क़ सुम्मा युईदुहू वहुव अहवनु अलैहि...) : 3191, 1418; अह़मद : 4/431; इब्ने ह़िब्बान : 6142) मुस्लिम की ह़दीस में है कि "ज़मीन व आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ात की तक़्दीर लिखी उसका अर्श पानी पर था।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब एहतिजाजे आदम व मूसा स़ल्लल्लाहु अलैहिमा : 2653; अह़मद : 2/169; इब्ने ह़िब्बान : 6138) स़ह़ीह़ बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर एक ह़दीसे क़ुदसी लाए हैं कि "ऐ इंसान! तू मेरी राह में ख़र्च कर मैं तुझे दूँगा और फ़र्माया अल्लाह का हाथ पुर है। दिन-रात का ख़र्च उसमें कोई कमी नहीं लाता, ख़्याल तो करो कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश से अब तक कितना ख़र्च किया होगा लेकिन ताहम उसके दाहिने हाथ में जो था वह कम नहीं होता। उसका अर्श पानी पर था उसके हाथ में मीज़ान है झुकाता है और ऊँचा करता है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरह हूद बाब क़ौलुहू (वकाना अर्शुहू अलल माइ) : 4648; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 993; मुस्नद हुमैदी : 1068) मुस्नद में है, अबू रुज़ैन लक़ीत़ बिनआमिर बिन मुंफ़िक़ अक़ीली (रह़.) ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल

किया कि मख़्लूक़ की पैदाइश करने से पहले हमारा परवरदिगार कहाँ था? आप (ﷺ) ने फ़र्माया "अमा में नीचे भी हवा ऊपर भी हवा फिर अर्श को उसके बाद पैदा किया।" यह रिवायत तिर्मिज़ी किताबुत् तफ़्सीर में भी है सुनन इब्ने माजा में भी है। (अहमद : 4/12; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति हूद : 3109; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 182; इब्ने हिब्बान : 6141) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन कहते हैं। मुजाहिद (रह.) का क़ौल है कि किसी चीज़ को पैदा करे उससे पहले अर्शे अल्लाह पानी पर था। वहब, ज़मरा, क़तादा, इब्ने जरीर (रहि.) वग़ैरह भी यही कहते हैं। क़तादा (रह.) कहते हैं अल्लाह तआला बतलाता है कि आसमान व जमीन की पैदाइश से पहले मख़्लूक़ की शुरुआत किस तरह हुई। रबीअ बिन अनस (रज़ि.) कहते हैं उसका अर्श पानी पर था जब आसमान व ज़मीन को पैदा किया तो उस पानी के दो हिस्से कर दिए, आधा अर्श के नीचे यही बहरे मस्जूर है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं बवजह बुलंदी के अर्श को अर्श कहा जाता है। सअद ताइ (रह.) फ़र्माते हैं कि अर्श लाल याक़ूत का है, मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला उसी तरह था जिस तरह उसने अपने नफ़्से करीम का वस्फ़ किया इसलिए कि कुछ न था, पानी था उस पर अर्श था अर्श पर ज़ुल जलालि वल इकराम (ज़ुल इज़्ज़त वस्सुल्तानु ज़ुल मलिक वल कुदरति ज़ुल इल्म वर्रहमति वन्नअमति) था जो चाहे कर गुज़रने वाला है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत के बारे में सवाल किया कि पानी किस चीज़ पर था। आपने फ़र्माया कि हवा की पीठ पर। (हाकिम : 2/341; व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

इंसान की पैदाइश का मक़्सद ख़ालिक़ की इबादत करना है : फिर फ़र्माता है कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश तुम्हारे नफ़ा के लिए हुई है और तुम इसलिए पैदा हुए हो कि उसी एक ख़ालिक़ की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो। याद रखो कि तुम बेकार पैदा नहीं किए गए। आसमान व ज़मीन और इनके बीच की चीज़ें बेकार और फालतू पैदा नहीं की गयी। यह गुमान तो काफ़िरों का है और काफ़िरों के लिए आग की वैल (बर्बादी) है। (38/स़ाद : 27) और आयत में है (أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا) (23/मोमिनून : 115) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटाये न जाओगे? अल्लाह जो सच्चा मालिक है वही हक़ है उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, वह अर्शे करीम का रब है। और आयत में है इंसानों और जिन्नों को मैंने सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए ही पैदा किया है। (52/ज़ारियात : 56) वह तुम्हें आज़मा रहा है कि तुममें से अच्छे अमल वाले कौन हैं, यह नहीं फ़र्माया कि ज़्यादा अमल वाले कौन हैं? इसलिए कि अमले हसन वह होता है जिसमें ख़ुलूस हो और शरीअते मुहम्मदिया की ताबेदारी हो। इन दोनों बातों मेंसे अगर एक भी न हो तो वह अमल बेकार और ग़ारत है।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना : फिर फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! अगर आप इन्हें कहें कि तुम मरने के बाद भी जीने वाले हो जिस ख़ालिक़ ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह दोबारा भी पैदा करेगा तो साफ़ कह देंगे कि हम इसे नहीं मानते। हालाँकि क़ाइल भी हैं कि ज़मीन आसमान का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है। (31/लुक़्मान : 25) ज़ाहिर है कि शुरू जिस पर गिराँ न गुज़रा उस पर दोबारा की पैदाइश कैसे गिराँ गुज़रेगी? यह तो बनिस्बत पहली बार के बहुत ही आसान है। अल्लाह का फ़र्मान है (وَهُوَ الَّذِي يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ) (30/रूम : 27) उसी ने पहली बार पैदा किया और दोबारा वही पैदा करेगा और

यह तो उस पर निहायत ही आसान है ओर आयत में है कि तुम सबका बनाना और मारकर ज़िन्दा करना मुझ पर ऐसा ही है जैसा एक का (31/लुक़्मान : 28) लेकिन यह लोग उसे नहीं मानते थे और उसे खुले जादू से ताबीर करते थे। कुफ़्र व इनाद से इस क़ौल को जादू का असर ख़्याल करने लग जाते थे।

फिर फ़र्माता है कि अगर हम अज़ाब व पकड़ को इनसे कुछ मुद्दत तक के लिए देर कर दें तो यह उसे न आने वाला जानकर जल्दी मचाने लगते हैं कि अज़ाब हमसे मुअख़्ख़र क्यूँ हो गए? इनके दिल में कुफ़्र व शिर्क इस तरह बैठ गया है कि इससे छुटकारा नहीं मिलता। उम्मत का लफ़्ज़ क़ुरआन व हदीस में कई एक मअनी में इस्तेमाल किया गया है इससे मुराद मुद्दत भी है इस आयत में और आयत (وَ ادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ) (12/यूसुफ़ : 45) जो सूरह यूसुफ़ में है, यही मअनी हैं। इमाम व मुक़्तदा के मअनी में भी यह लफ़्ज़ आया है जैसे हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के बारे में (اُمَّةً قَانِتًا) (16/नहल : 120) आया है मिल्लत और दीन के बारे में भी यह लफ़्ज़ आता है जैसे मुश्रिकों का क़ौल (إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ اُمَّةٍ) (43/ ज़ुख़रुफ़ : 22) है और जमाअत के मअनी में भी आता है (وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً) (28/कसस: 23) वाली आयत में और आयत (وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ اُمَّةٍ) (16/नहल : 36) में और आयत (وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَسُولٌ) (10/यूनुस : 47) में इन आयतों में उम्मत से मुराद काफ़िर मोमिन सब उम्मती हैं जैसे मुस्लिम की हदीस में है "उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस उम्मत का जो यहूदी व नस्रानी मेरा नाम सुने और मुझ पर ईमान न लाए वह जहन्नमी है (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब वुजूबुल ईमान बि रिसालति नबिय्यिना मुहम्मद (ﷺ) इला जमीइन्नास : 153) हाँ! ताबेदार उम्मत वह है जो रसूलों को माने जैसे (كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ) (3/आले इमरान :110) वाली आयत में।" सहीह हदीस में है "मैं कहूँगा उम्मती उम्मती।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब कलामुर्रब्बि तआला यौमल क़ियामति मअल अम्बिया व ग़ैरुहुम : 7510; सहीह मुस्लिम : 193) इसी तरह उम्मत का लफ़्ज़ फ़िर्क़े और गिरोह के लिए भी इस्तेमाल हुआ है जैसे आयत (وَمِن قَوْمِ مُوسَىٰ اُمَّةٌ) (7/आराफ़ : 159) में और जैसे आयत (مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ اُمَّةٌ قَائِمَةٌ) (3/आले इमरान : 113) में।

***

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ⑨ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ
نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ⑩ اِلَّا الَّذِيْنَ
صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑪ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ
مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ

مَلَكٌ ۭ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ⑫ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا
بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
⑬ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ
اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ⑭

तर्जुमा : ''अगर हम इंसान को अपनी किसी नेअ़मत का ज़ायक़ा चखाकर फिर उसे उससे ले लें तो वह बहुत ही नाउम्मीद और बड़ा ही नाशुक्रा बन जाता है। (9) और अगर हम उसे कोई रहमत पहुँचाएँ उस सख़्ती के बाद जो उसे पहुँच चुकी थी तो कहने लगता है कि बस बुराईयाँ मुझसे जाती रहीं , यक़ीनन वह बड़ा ही ख़ुश होकर घमण्ड करने लगता है। (10) सिवाए उनके जो सब्र करते हैं और नेक कामों में लगे रहते हैं उन ही लोगों के लिए बख़्शिश भी है और बहुत बड़ा नेक बदला भी। (11) पस शायद कि तू इस वही के किसी हिस्से को छोड़ देने वाला है जो तेरी तरफ़ नाज़िल की जाती है और उससे तेरा दिल तंग होने वाला है, सिर्फ़ उनकी इस बात पर कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यूँ नहीं उतरता? या उसके साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन तू तो सिर्फ़ डराने वाला ही है। हर चीज़ का ज़िम्मेदार अल्लाह तआ़ला ही है। (12) क्या यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ लिया है तू जवाब दे कि फिर तुम भी इसी के जैसी दस सूरतें गढ़ी हुई ले आओ, और अल्लाह के सिवा जिसे चाहो अपने साथ मिला लो अगर तुम सच्चे हो। (13) फिर अगर वह तुम्हारी इस बात को क़बूल न करें तो तुम यक़ीन से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के इल्म के साथ उतारा गया है और दरअसल अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, पस क्या तुम मुसलमान होते हो।'' (14)

दुख-दर्द में सब्र करना मग़्फ़िरत का बाइस है (आयत 9-14) : सिवाए पूरे ईमान वालों के उ़मूमन लोगों में जो बुराईयाँ हैं उनका बयान हो रहा है कि राहत के बाद की सख़्ती पर मायूस और महज़ नाउम्मीद हो जाते हैं। अल्लाह से बदगुमानी करके आइन्दा के लिए भलाइ को भूल बैठते हैं गोया कि न कभी इससे पहले कोई आराम उठाया था न इसके बाद किसी राहत की तवक़्क़ा (उम्मीद) है। यही हाल इसके बरख़िलाफ़ भी है कि अगर सख़्ती के बाद आसानी हो गयी तो कहने लगते हैं कि बस अब बुरा वक़्त टल गया, अपनी हालत पर और अपने पास की चीज़ों पर मस्त व बेफ़िक्र हो जाते हैं दूसरों को हक़ीर समझने लगते हैं, अकड़ में पड़ जाते हैं और आगे की सख़्ती से बिलकुल बेफ़िक्र हो जाते हैं। हाँ ईमान वाले इस बुरी ख़स्लत से महफ़ूज़ रहते हैं वह दुख दर्द में सिहार व सब्र करते हैं और राहत व आराम में अल्लाह तआ़ला की फ़र्मांबरदारी करते हैं, यह सब्र पर मग़्फ़िरत और नेकी पर सवाब पाते हैं। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है ''उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है

कि मोमिन को कोई सख़्ती कोई मुसीबत कोई दुख कोई ग़म ऐसा नहीं पहुँचता जिसकी वजह से अल्लाह तआला उसकी ख़ताएँ माफ़ न करता हो यहाँ तक कि कांटा लगने पर भी।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब मा जाअ फी कफ़्फ़ारतिल मर्ज़ : 5641, 5642; सहीह मुस्लिम : 2573; अहमद : 2/335; तिर्मिज़ी : 966; इब्ने हिब्बान : 2905; बैहक़ी : 3/373) बुख़ारी व मुस्लिम की और हदीस में है ''मोमिन के लिए अल्लाह तआला का हर फ़ैसला सरासर बेहतर ही बेहतर होता है। यह राहत पाकर शुक्र करता हे और भलाई समेटता है और तक्लीफ़ उठाकर सब्र करता है नेकी पाता है। यह हाल मोमिन के सिवा और किसी का नहीं होता।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मोमिन अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैरून : 2999; अहमद : 4/332; इब्ने हिब्बान : 2896) इसी का बयान सूरह अस्र में है यानी अस्र के वक़्त की क़सम! तमाम इंसान नुक़्सान में हैं सिवाए उनके जो ईमान लाएँ और साथ ही नेकियाँ भी करें और एक दूसरे को हक़ की और सब्र की हिदायत करते रहें, यही बयान आयत (إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا) (70/मआरिज : 19) में है।

कुफ़्फ़ार की तअन व तशनीअ और उनको अल्लाह तआला का चैलेंज : काफ़िर लोग जो उनकी ज़ुबान पर चढ़ते वही तअन रसूलुल्लाह (ﷺ) पर तोड़ते तो अल्लाह तआला अपने सच्चे पैग़म्बर (ﷺ) को दिलासा और तसल्ली देता है कि आप न इस काम में सुस्ती करें, न दिल तंग हों यह तो इनका शेवा है कभी वह कहते अगर यह रसूल है तो खाने पीने का मोहताज क्यूँ है? बाज़ारों में क्यूँ आता जाता है? इसकी हमनवाई में कोई फ़रिश्ता क्यूँ नहीं उतरा? इसे कोई ख़ज़ाना क्यूँ नहीं दिया गया इसके खाने को कोई ख़ास बाग़ क्यूँ नहीं बनाया गया, मुसलमानों को तअना देते कि तुम तो उसके पीछे हो लिए जिस पर जादू कर दिया गया है। (25/फ़ुरक़ान : 7) पस अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! आप मलाल न करें, दिल छोटा न करें, अपने काम से न रुकें, इन्हें हक़ की पुकार सुनाने में कोताही न कीजिए, दिन रात अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहिए हमें मालूम है कि इनकी दुख देने वाली बातें आपको बुरी लगती हैं आप तवज्जा भी न कीजिए ऐसा न हो आप कोई बात छोड़ दें या तंगदिल होकर बैठ जाएँ कि यह आवाज़ें कसते हैं। फब्तियाँ उड़ाते हैं, अपने से पहले के रसूलों को देखिए सब झुठलाये गए, सताये गए और साबिर व साबित क़दम रहे। यहाँ तक कि अल्लाह की मदद आ पहुँची।

फिर क़ुरआन का मोजिज़ा बयान करते हुए कहता है कि इस जैसा क़ुरआन लाना तो कहाँ? इस जैसी दस सूरतें बल्कि एक सूरत भी सारी दुनिया मिलकर बनाकर नहीं ला सकती इसलिए कि यह अल्लाह का कलाम है जैसी उसकी ज़ात मिसाल से पाक वैसे ही उसकी सिफ़तें भी बेमिसाल नामुम्किन है कि उसके कलाम जैसा मख़्लूक़ का कलाम हो जाए, अल्लाह की ज़ात उससे बुलंद व बाला, पाक और मुनज़्ज़ा है। मअबूद और रब सिर्फ़ वही है। जब तुमसे यह नहीं हो सकता और अब तक नहीं हो सका तो यक़ीन कर लो कि तुम उसके बनाने से आजिज़ हो। और दरअसल यह अल्लाह का कलाम है और उसी की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। इसका इल्म उसी के हुक्म उसके रोक टोक इसमें हैं और साथ ही मान लो कि मअबूदे बरहक़ वही है पस आओ इस्लाम क़बूल कर लो।

***

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا
يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا
وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾

तर्जुमा : "जो शख़्स दुनिया की आरज़ू-ए-ज़िन्दगी और इसी की ज़ीनत पर रीझा हुआ हो हम भी ऐसों को उनके कुल आमाल यहीं भरपूर पहुँचा देते हैं और यहाँ इन्हें कोई कमी नहीं की जाती। (15) हाँ यही वह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में सिवाए आग के और कुछ भी नहीं और जो कुछ इन्होंने किया था वहाँ सब बातिल है और जो कुछ इनके आमाल थे सब बर्बाद हो गए।" (16)

आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है (आयत 15, 16) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं रियाकारों की नेकियों का बदला सब कुछ इसी दुनिया में मिल जाता है ज़रा सी भी कमी नहीं होती। पस जो शख़्स दुनिया को दिखावे के लिए नमाज़ पढ़े या रोज़े रखे या तहज्जुद गुज़ारी करे उसका अज्र उसे दुनिया में ही मिल जाता है। आख़िरत में वह ख़ाली हाथ और सिर्फ़ बेअमल उठता है। (तब्री : 15/263) हज़रत अनस (रज़ि.) वग़ैरह का बयान है कि यह आयत यहूद व नसारा के हक़ में उतरी है। (तब्री : 15/265) और मुजाहिद (रह.) कहते हैं रियाकारों के बारे में उतरी है। (तब्री : 15/266) अल्ग़र्ज़ जिसका जो क़सद हो उसी के मुताबिक़ उससे मामला होता है, दुनिया की चाहत में जो आमाल हो वह आख़िरत में कारआमद नहीं हो सकते, मोमिन की निय्यत और मक़सद चूँकि आख़िरत की चाहत ही होती है अल्लाह तआला उसे आख़िरत में उसके आमाल का बेहतरीन बदला अता करता है और दुनिया में भी उसे उसकी नेकियाँ काम आती हैं। एक मरफ़ूअ हदीस में भी यही मज़्मून आया है। क़ुरआने करीम की आयत (مَّن كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ) (17/इस्रा : 18) में भी उसी का तफ़्सीली बयान है कि दुनिया की चाहत रखने वाले लोगों में से जिसे हम जिस क़द्र चाहें दे देते हैं फिर उसका ठिकाना जहन्नम होता है जहाँ वह ज़लीलोख़ार होकर दाख़िल होता है, हाँ! जिसकी चाहत आख़िरत की हो और बिलकुल उसी के मुताबिक़ उसका अमल भी हो और हो भी वह ईमान वाला तो ऐसे लोगों की कोशिश की क़द्रदानी की जाती है। इन्हें और उन्हें हर एक को हम तेरे रब की अता से बढ़ाते रहते हैं, तेरे परवरदिगार का इन्आम किसी से रुका हुआ नहीं। तो आप देख लें कि किस तरह हमने एक को एक पर फ़ज़ीलत बख़्श रखी है, आख़िरत क्या दर्जात के हिसाब से और क्या बाऐतिबार फ़ज़ीलत के बहुत ही बड़ी और ज़बरदस्त चीज़ है और आयत में इर्शाद है (مَن كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ) (42/शूरा : 20) जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम आप उसमें उसके लिए बरकत अता करते हैं। और जिसका इरादा दुनिया की खेती का हो हम भले उसे उसमें से कुछ दे दें, लेकिन आख़िरत में वह बेनसीब रह जाता है।

***

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۷﴾

तर्जुमा : ''क्या वह शख़्स जो अपने रब के पास की दलील पर हो और उसके मुत्तसिल ही अल्लाह की तरफ़ का गवाह हो और उससे पहले किताब हो मूसा (عليه السلام) की पेशवा और रहमत यही लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं तमाम फ़िर्क़ों में से जो भी इसका इंकारी हो उसके आख़िरी वादे की जगह जहन्नम है पस तू उसमें किसी क़िस्म के शक में न रह, यक़ीनन यह तेरे रब की तरफ़ से सरासर बरहक़ है यह तो बात ही और है कि अक्सर लोग ईमान वाले नहीं होते।'' (17)

इंसान की पैदाइश फ़ित्रते इस्लाम पर होती है (आयत 17) : उन मोमिनों का वस्फ़ बयान हो रहा है जो फ़ित्रत पर क़ायम हैं जो अल्लाह की वहदानियत को दिल से मानते हैं। जैसे हुक्मे इलाही है कि (فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا) (30/रूम : 30) अपना चेहरा दीने हनीफ़ पर क़ायम कर दे अल्लाह की फ़ित्रत जिस पर उसने इंसानी फ़ित्रत रचायी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है, फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी या नसरानी बना लेते हैं। जैसे कि जानवरों के बच्चे सही सालिम पैदा होते हैं फिर लोग उनके कान काट डालते हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा क़ील फ़ी औलादिल मुश्रिकीन : 1385; सहीह मुस्लिम : 2658; अबूदाऊद : 4714; तिर्मिज़ी : 2138; अहमद : 2/375; मौता इमाम मालिक : 1/24; मुस्नद तयालिसी : 2359; इब्ने हिब्बान : 129) मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है ''मैंने अपने तमाम बन्दों को तौहीद वाला बनाकर पैदा किया है लेकिन फिर शैतान आकर उन्हें उनके दीन से बहका देता है और मेरी हलाल की हुई चीज़ें उन पर हराम कर देता है और उन्हें कहता है कि मेरे साथ उन्हें शरीक करें जिनकी कोई दलील मैंने नहीं उतारी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नत, बाब अस्सिफ़ातुल्लती युअरफ़ु बिहा फ़िदुनिया अहलुल जन्नत व अहलुन्नार : 2865; अहमद : 4/162) मुस्नद और सुनन में है कि ''हर बच्चा इसी मिल्लत पर पैदा होता है यहाँ तक कि उसकी ज़ुबान खुले...।'' (अहमद : 3/436; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दारमी : 2/223; बैहक़ी : 7719; अल्मुअजमुल कबीर : 826; इब्ने हिब्बान : 132; हाकिम : 2/123) पस मोमिन फ़ित्रते अल्लाह पर ही बाक़ी रहता है पस एक तो फ़ित्रत उसकी सही सालिम होती है फिर उसके पास रब्बानी शाहिद आता है यानी अल्लाह की मारिफ़त पैग़म्बर (ﷺ) को पहुँचती है। जो शरीअत हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की शरीअत के साथ ख़त्म हुई। पस शाहिद से मुराद हज़रत जिब्रील (عليه السلام) हैं, हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। अल्लाह की रिसालत अव्वलन (फस्ट टाइम) हज़रत जिब्रील (عليه السلام) लाए और आपके वास्ते से हज़रत मुहम्मद (ﷺ)। एक क़ौल में कहा गया है कि वह अली (रज़ि.) हैं लेकिन वह क़ौल ज़ईफ़ है उसका कोई क़ाइल साबित नहीं। हक़ बात पहली ही है। पस मोमिन की फ़ित्रत

अल्लाह की वह़ी से मिल जाती है। इज्माली तौर पर उसे पहले से ही यक़ीन होता है फिर शरीअत की तफ़्सीलात को मान लेता है। उसकी फ़ित्रत एक एक मसले की तस्दीक़ करती जाती है पस फ़ित्रते सलीम उसके साथ कुरआन की तालीम जिसे ह़ज़रत जिब्रील (عليه السلام) ने अल्लाह के नबी को पहुँचाया और आप (ﷺ) ने अपनी उम्मत को फिर उससे पहले की एक और ताईद भी मौजूद किताबे मूसा यानी तौरात जिसे अल्लाह तआला ने उस ज़माने की उम्मत के लिए पेशवाई के क़ाबिल बनाकर भेजा था और जो अल्लाह की त़रफ़ से रह़मत थी उस पर जिनका पूरा ईमान है वह ला मह़ाला इस नबी (ﷺ) और इस किताब पर भी ईमान लाते हैं क्योंकि उस किताब ने इस किताब पर भी ईमान लाने की रहनुमाई की है। पस यह लोग इस किताब पर भी ईमान लाते हैं।

कुरआन का इंकार करने वाले जहन्नमी हैं : फिर पूरे कुरआन को या उसके किसी ह़िस्से का इंकार करने वाले की सज़ा बयान फ़र्माता है कि दुनिया वालों में से जो गिरोह जो फ़िर्क़ा इसे न माने ख़्वाह यहूदी हो, ख़्वाह नस़रानी; कहीं का हो, कोई हो, किसी रंगत और शक्लो सूरत का हो, कुरआन पहुँचा और न माना वह जहन्नमी है जैसे रब्बुल आलमीन ने अपने नबी की ज़ुबानी इसी कुरआने करीम में फ़र्माया है (لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ) (6/अन्आम : 19) कि मैं इससे तुम्हें भी आगाह कर रहा हूँ और उन्हें भी जिन्हें यह पहुँच जाए और आयत में है (قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا) (7/आराफ़ : 158) "लोगों में ऐलान कर दो कि ऐ इंसानों! मैं तुम सबकी त़रफ़ अल्लाह का पैग़म्बर हूँ। स़ह़ीह़ मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस उम्मत में से जो भी मुझे सुन ले और फिर मुझ पर ईमान न लाए वह जहन्नमी है।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब वुजूबुल ईमान बि रिसालति नबिय्यिना मुह़म्मद (ﷺ) इला जमीइन्नास : 153) ह़ज़रत सईद बिन जुबेर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं जो सही ह़दीस सुनता हूँ उसकी तस्दीक़ किताबुल्लाह में ज़रूर पाता हूँ मुंदर्जा बाला ह़दीस सुनकर मैं इस तलाश में लगा कि इसकी तस्दीक़ कुरआन की किस आयत से होती है तो मुझे यह आयत मिली पस तमाम दीन वाले इससे मुराद हैं। फिर जनाब बारी इर्शाद फ़र्माता है कि इस कुरआन के अल्लाह की त़रफ़ से सरासर ह़क़ होने में तुझे कोई शक व शुब्हा न करना चाहिए। जैसे इर्शाद है कि इस किताब के रब्बुल आलमीन की त़रफ़ से नाज़िलशुदा होने में कोई शक व शुब्हा नहीं। (32/सज्दा : 1, 2) और जगह है (ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ) (2/बक़रह : 2) इस किताब में कोई शक नहीं। फिर इर्शाद है कि अक्सर लोग ईमान से कोरे होते हैं जैसे फ़र्मान है (وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ) (12/यूसुफ़ : 103) यानी भले तेरी चाहत हो लेकिन यक़ीन कर ले कि अक्सर लोग मोमिन नहीं होंगे और आयत में है (وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ) (6/अन्आम : 116) अगर तू दुनिया वालों की अक्सरियत की पैरवी करेगा तो वह तो तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे। और आयत में है (وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ) (34/सबा : 20) यानी इन पर इब्लीस ने अपना गुमान सच कर दिखाया और सिवाए मोमिनों की एक मुख़्तस़र सी जमाअत के बाक़ी सब उसी के पीछे लग गए।

***

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٨ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٩ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا
مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ
مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢

तर्जुमा :''उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे, यह लोग अपने परवरदिगार के सामने पेश किए जाएँगे और सारे गवाह कहेंगे कि यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूठ बाँधा था, ख़बरदार! रहो कि अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। (18) जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें कजी (कमी) तलाश कर लेते हैं, यही हैं आख़िरत के मुंकिर। (19) न यह लोग दुनिया में अल्लाह को हरा सकते हैं न उनका कोई हिमायती अल्लाह के सिवा हुआ, उनके लिए अज़ाब दुगुना किया जाएगा, न यह सुनने की ताक़त रखते थे और न यह देखते ही थे (20) यही हैं जिन्होंने ख़ुद अपना नुक़्सान कर लिया और जिनसे अपना बाँधा हुआ इफ़्तिरा कम हो गया। (21) बेशक यही लोग आख़िरत में ख़सारे में होंगे।'' (22)

अल्लाह पर बोहतान बाँधने वालों का अंजाम रुस्वाई है (आयत 18-22) : जो लोग अल्लाह के ज़िम्मे बोहतान बाँध लें, उनका अंजाम और क़यामत के दिन की सारी मख़्लूक़ के सामने उनकी रुस्वाई का बयान हो रहा है। मुस्नद अहमद में है सफ़्वान बिन मुहरिज़ कहते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का हाथ थामे हुए था कि एक शख़्स आपके पास आया और पूछने लगा कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़यामत के दिन की सरगोशी के बारे में क्या सुना है? आपने फ़र्माया, मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है कि ''अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल मोमिन को अपने क़रीब करेगा यहाँ तक कि अपना बाज़ू उस पर रख देगा और उसे लोगों की नज़रों से छुपा लेगा और उससे उसके गुनाहों का इक़रार कराएगा कि क्या तुझे अपना फ़लाँ फ़लाँ गुनाह याद है? और फ़लाँ भी? और फ़लाँ भी? यह इक़रार करता जाएगा यहाँ तक कि समझ लेगा कि बस अब हलाक हुआ। उस वक़्त अरहमुर्राहिमीन कहेगा कि मेरे बन्दे! मैं दुनिया में इन पर पर्दा डालता रहा सुन! आज भी मैं इन्हें बख़्शता हूँ, फिर उसकी नेकियों का अमाल उसे दे दिया जाएगा और कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन पर तो गवाह पेश होंगे जो कहेंगे कि यही वह हैं जो अल्लाह पर झूठ बाँधते थे। याद रहे कि इन ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (अला लअ़नतुल्लाहि

अलज़्ज़ालिमीन) : 2441; सहीह मुस्लिम : 2868; अहमद : 2/74; इब्ने माजा : 183; इब्ने हिब्बान : 7355) यह लोग इत्तिबाअे हक़ से और हिदायत के रास्ते से जन्नत से औरों को रोकते रहे और अपना तरीक़ा टेढ़ा तिरछा ही तलाश करते रहे साथ ही क़यामत के और आख़िरत के दिन के भी मुंकिर ही रहे उसे मानकर ही न दिया। याद रहे कि यह अल्लाह के मातहत हैं वह उनसे हर वक़्त इंतिक़ाम लेने पर क़ादिर है अगर चाहे तो आख़िरत से पहले दुनिया में ही पकड़ ले लेकिन उसकी तरफ़ से थोड़ी सी ढील इन्हें मिल गयी है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है "अल्लाह तआला ज़ालिमों को मोहलत देता है बिल आख़िर जब पकड़ता है तो फिर छोड़ता ही नहीं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतु हूद बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़्ज रब्बुका इज़ा अख़ज़ल क़ुरा वहिय ज़ालिमति...) : 4686; सहीह मुस्लिम : 2583; तिर्मिज़ी : 3110; इब्ने माजा : 4018; बैहक़ी : 6/94; इब्ने हिब्बान : 5175; शरहुस्सुन्ना : 4162) इनकी सज़ाएँ बढ़ती ही चली जाएँगी इसलिए कि अल्लाह की दी हुई क़ुव्वतों से उन्होंने काम न लिया हक़ के सुनने से कानों को बहरा रखा हक़ की ताबेदारी से आँखों को अंधा रखा, जहन्नम में जाते वक़्त ख़ुद ही कहेंगे कि (لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ) (67/मुल्क : 10) यानी अगर सुनते होते अक़्ल रखते होते तो आज दोज़ख़ी न बनते। यही फ़र्मान आयत (الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ) (16/नहल : 88) में है कि काफ़िरों को और अल्लाह की राह से रोकने वालों को अज़ाब पर अज़ाब बढ़ते चले जाएँगे। हर हर हुक्म अदूली पर हर हर बुराई के काम पर सज़ा भुगतेंगे पस सही क़ौल यही है कि आख़िरत की निस्बते ऐतिबार से कुफ़्फ़ार भी फ़ुरूअे शरअ के मुकल्लफ़ हैं।" यही हैं वह जिन्होंने अपने आपको नुक़्सान पहुँचाया और ख़ुद अपने तईं जहन्नमी बनाया। जहाँ का अज़ाब ज़रा सी देर भी हल्का नहीं होगा आग के शोले कम होने तो कहाँ और तेज़ तेज़ होते जाएँगे जिन्हें इन्होंने गढ़ लिया था यानी बुत और शरीके रब वग़ैरह वह आज उन्हें कुछ काम न आएँगे बल्कि नज़र भी न पड़ेंगे बल्कि नुक़्सान पहुँचाएँगे। वह तो उनके दुश्मन हो जाएँगे और उनके शिर्क से साफ़ मुकर जाएँगे। भले यह उन्हें बाइसे इज़्ज़त समझते हैं लेकिन दरहक़ीक़त वह उनके लिए बाइसे ज़िल्लत हैं। खुले तौर पर इस बात का क़यामत के दिन इंकार कर देंगे कि इन मुश्रिकों ने इन्हें पूजा हो। (46/अहक़ाफ़ : 6) यही इर्शाद ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) का अपनी क़ौम से था कि इन बुतों से तुम्हारे दुनियावी ताल्लुक़ात को तुम वाबस्ता रखो लेकिन क़यामत के दिन एक दूसरे का इंकार कर जाएगा और एक दूसरे पर लानत करने लगेगा और तुम सबका ठिकाना जहन्नम होगा और कोई किसी को कोई मदद न करेगा।" (29/अन्कबूत : 25) यही मज़्मून आयत (إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا) (2/बक़रह : 166) में है यानी उस वक़्त पेशवा लोग अपने मुरीदों से हाथ झाड़ लेंगे, अज़ाबे इलाही आँखों से देख लेंगे और बाहमी ताल्लुक़ात सब टूट जाएँगे।

इसी क़िस्म की और भी बहुत सी आयतें हैं वह भी उनकी हलाकत और नुक़्सान की ख़बर देती हैं। यक़ीनन यही लोग क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा नुक़्सान उठाएँगे, जहन्नम के गढ़े जन्नत के दर्जों के बदले उन्होंने लिए। अल्लाह की नेअमतों के बदले जहन्नम की आग क़बूल की। मीठे ठण्डे ख़ुशगवार जन्नती पानी के बदले जहन्नम का खोलता हुआ गर्म आग जैसा पानी इन्हें मिला। हूरे ऐन (बड़ी आँखों वाली) के बदले लहू, पीप और बुलंद व बाला महल्लात के बदले दोज़ख़ के तंग मक़ामात इन्होंने लिए। अल्लाह रहमान की नज़दीकी और दीदार के बदले उसका ग़ज़ब और सज़ा इन्हें मिली। बेशक यहाँ यह सख़्त नुक़्सान में रहे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ
مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ
لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ
أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने काम भी नेक किए और अपने पालने वाले की तरफ़ झुकते रहे वही जन्नत में जाने वाले हैं, जहाँ वह हमेशा ही रहने वाले हैं। (23) उन दोनों फ़िर्क़ों की मिसाल अंधे, बहरे और देखते सुनते जैसी है, क्या यह दोनों मिसाल बराबर हैं? क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते। (24) यक़ीनन हमने नूह (عليه السلام) को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा कि मैं तुम्हें साफ़-साफ़ होशियार कर देने वाला हूँ। (25) कि तुम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करो, मुझे तो तुम पर दर्दनाक दिन के अज़ाब का डर है।(26) उसकी क़ौम के काफ़िरों के सरदारों ने जवाब दिया कि हम तो तुझे अपने जैसा इंसान ही देखते हैं और तेरे ताबेदारों को भी हम देखते हैं कि सिवाए कमीन मोटी समझ वालों के और कोई नहीं हम तो तेरी किसी क़िस्म की बरतरी अपने ऊपर नहीं देख रहे बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझ रहे हैं।'' (27)

अहले ईमान का बदला जन्नत है (आयत 23-27) : काफ़िरों के ज़िक्र के बाद अब ईमान वालों का बयान हो रहा है। जिनके दिल ईमान वाले और जिनके बदन फ़र्मांबरदारी करने वाले थे, क़ौल व फ़ेअ़ल से फ़र्माने इलाही बजा लाने वाले और रहमान की नाफ़र्मानी से बचने वाले थे। यह लोग जन्नत के वारिस होंगे। बुलंद बालाख़ाने बिछे बिछाए सजे-सजाए तख़्त झुके हुए ख़ोशों और मेवों के दरख़्त, उभरे उभरे फ़र्श, ख़ूबसूरत बीवियाँ, क़िस्म-क़िस्म के ख़ुश ज़ायक़ा फल चाहत के खाने लज़ीज़ पीने और सबसे बढ़कर अल्लाह का दीदार यह नेअ़मतें होंगी जो उनके लिए हमेशगी लिए हुए होंगी। न उन्हें मौत आए, न बुढ़ापा, न बीमारी न ग़फ़्लत, न पाख़ाना, न पेशाब, न थूक, न नाक, मुश्क बू पसीना आया और ग़िज़ा हज़म। पहले बयान कर्दा काफ़िर शक़ी लोग और यह मोमिन मुत्तक़ी लोग बिलकुल वही निस्बत रखते हैं जो अंधे बहरे और बीना और सुनते है। काफ़िर दुनिया में हक़ को देखने से अंधे थे और आख़िरत के दिन भी ख़ैर की तरफ़ राह नहीं

पाएँगे, न उसे देखेंगे वह हक़्क़ानियत की दलीलों के सुनने से बहरे थे, नफ़ा देने वाली बात सुनते ही न थे अगर उनमें कोई भलाई होती तो अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़रूर सुनाता। (8/अन्फ़ाल : 23) इनके बरख़िलाफ़ मोमिन समझदार ज़की आ़क़िल आ़लिम देखता भालता सोचता समझता हक़ व बातिल में तमीज़ करता भलाई ले लेता बुराई छोड़ देता दलील और शुब्हा में फ़र्क़ कर लेता पस बातिल से बचता हक़ को मानता। बतलाइए यह दोनों कैसे बराबर हो सकते हैं? ताज्जुब है कि फिर भी तुम ऐसे दो मुख़्तलिफ़ शख़्सों में फ़र्क़ नहीं जानते! इर्शाद है (لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ) (59/हश्र : 20) दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं होते जन्नती तो बिलकुल कामयाब हैं। और आयत में है अंधा और देखता बराबर नहीं, अंधेरियाँ और उजाला बराबर नहीं। साया और धूप बराबर नहीं, ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं। अल्लाह तो जिसे चाहे सुना सकता है तू क़ब्र वालों को सुना नहीं सकता, तू तो सिर्फ़ आगाह करने वाला है। हमने तुझे हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है हर हर उम्मत में डराने वाला हो चुका है। (35/फ़ातिर : 19, 34)

सबसे पहले तौहीद की दावत नबी नूह (عليه السلام) ने ही दी : सबसे पहले काफ़िरों की तरफ़ रसूल बनाकर बुतपरस्ती से रोकने के लिए ज़मीन पर हज़रत नूह (عليه السلام) ही भेजे गए थे। आपने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि मैं तुम्हें अज़ाबे इलाही से डराने आया हूँ अगर तुम ग़ैरुल्लाह की इबादत न छोड़ोगे तो अजाबों में फंसोगे देखो तुम सिर्फ़ एक अल्लाह तआ़ला ही की इबादत करते रहो। अगर तुमने ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो कयामत के दिन दर्दनाक सख़्त अ़ज़ाबों का मुझे तुम पर ख़ौफ़ है। इस पर क़ौमी काफ़िरों के रईसों और अमीरों का जवाब था कि आप कोई फ़रिश्ता तो हैं नहीं, हम जैसे ही इंसान हैं फिर कैसे मुम्किन है कि हम सबको छोड़कर एक ही के पास वह्यी आती है। और हम अपनी आँखों देख रहे हैं कि ऐसे ग़रीब लोग आपके हल्क़े में शामिल हो गए हैं, कोई शरीफ़ और रईस आपका फ़र्मांबरदार नहीं हुआ ओर यह लोग बेसोचे-समझे बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये आपकी मज्लिस में आन बैठे हैं और हाँ! हमें यहाँ मिलाए जाते हैं। फिर हम देखते हैं कि इस नए दीन ने तुम्हें कोई फ़ायदा भी नहीं पहुँचाया कि तुम ख़ुशहाल हो गए हो, तुम्हारी रोज़ियाँ बढ़ गई हों या ख़ल्क़ व ख़ुल्क़ में तुम्हें कोई बरतरी हम पर हासिल हो गई हो। बल्कि हमारे ख़्याल से तो तुम सब झूठे हो नेकी और सलाहियत और इबादत पर जो वादे तुम हमें दारे आख़िरत के दे रहे हो हमारे नज़दीक तो यह सब भी झूठी बातें हैं। इन कुफ़्फ़ार की बेढंगी को देखिए अगर हक़ को क़बूल करने वाले नीचे दर्जे के लोग हुए तो क्या उससे शाने हक़ घट गयी, हक़ हक़ ही है ख़्वाह उसके मानने वाले बड़े लोग हों या छोटे लोग हों बल्कि हक़ बात यह है कि हक़ की पैरवी करने वाले ही शरीफ़ लोग हैं, भले वह मिस्कीन मुफ़्लिस हों और हक़ से रूगदानी करने वाले ही ज़लील और रज़ील हैं भले वह ग़नी मालदार और अमीर उमरा हों। हाँ! यह वाक़िया है कि सच्चाई की आवाज़ को पहले पहल ग़रीब मिस्कीन लोग ही क़बूल करते हैं और अमीर कबीर लोग नाक भौं चढ़ाने लगते हैं।

फ़र्माने कुरआन है कि तुझसे पहले जिस जिस बस्ती में हमारे अम्बिया आए वहाँ के बड़े लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप दादों को जिस दीन पर पाया है हम तो उन ही की ख़ोशाचीनी (पैरवी) करते रहेंगे। (43/ज़ुख़रुफ़ : 23) शाहे रूम हिरक़्ल ने जब अबू सुफ़ियान (रज़ि.) से पूछा था कि शरीफ़ लोगों ने उसकी ताबेदारी की है या कमज़ोर लोगों ने? तो उसने यही जवाब दिया था कि कमज़ोरों ने। जिस पर हिरक़्ल ने कहा

था कि रसूलों के ताबेदार यही लोग होते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वह्री, बाब कैफ़ काना बदउल वह्री इला रसूलिल्लाहि (ﷺ): 7; सहीह मुस्लिम : 1773) हक़ की फ़ौरी क़बूलियत भी कोई ऐब की बात नहीं। हक़ की वज़ाहत के बाद राय फ़िक्र की ज़रूरत ही क्या? बल्कि हर अक़्लमंद का काम यही है कि हक़ के मानने में सब्क़त और जल्दी करे। इसमें ताम्मुल (झिझक) करना जिहालत और ग़बादत (बेवक़ूफ़ी) है। अल्लाह के तमाम पैग़म्बर बहुत खुली और साफ़ और वाज़ेह दलीलें लेकर आते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि ''मैंने जिसे भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसमें कुछ न कुछ झिझक ज़रूर पायी सिवाए अबूबक्र (रज़ि.) के कि उन्होंने कोई शको-शुब्हा न किया, वाज़ेह चीज़ को देखते ही फ़ौरन बेझिझक क़बूल कर लिया।'' उनका तीसरा ऐतिराज़ कि हम कोई बरतरी तुममें नहीं देखते, यह भी उनके अंधेपन की वजह से है उनकी अगर आँखें और कान न हों और मौजूद चीज़ का इंकार करें तो फ़िल वाक़ेअ उसका न होना साबित नहीं हो सकता। यह तो न हक़ को देखें, न हक़ को सुनें बल्कि अपने शक में ग़ोते लगाते रहते हैं। अपनी जिहालत मे टामक टूइयाँ मारते रहते हैं। झूठे मुफ़्तरी ख़ाली हाथ रज़ील और नुक़्सानों वाले हैं।

***

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَيٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّيْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾

तर्जुमा : ''नूह (عليه السلام) ने कहा, मेरी क़ौम वालों! मुझे बतलाओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से किसी दलील पर हुआ और मुझे उसने अपने पास की कोई नेअमत अ़ता की हो फिर वह तुम्हारी निगाहों में न आई, तो क्या ज़बरदस्ती मैं उसे तुम्हारे गले से मंढ (थोप) दूँ, हालाँकि तुम उससे बेज़ार हो। (28) मेरी क़ौम वालों! मैं तुमसे इस पर कोई माल नहीं माँगता, मेरा सवाब तो सिर्फ़

अल्लाह के यहाँ है, न मैं ईमानदारों को अपने पास से निकाल सकता हूँ, उन्हें अपने रब से मिलना है लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जिहालत (नादानी) कर रहे हो। (29) मेरी क़ौम के लोगों! अगर मैं इन मोमिनों को अपने पास से निकाल दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी मदद कौन कर सकता है? क्या तुम कुछ भी ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते।(30) मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, सुनो! मैं ग़ैब का इल्म भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ, न मेरा यह क़ौल है कि जिन पर तुम्हारी नज़रें ज़िल्लत से पड़ रही हैं उन्हें अल्लाह तआला कोई नेअमत देगा ही नहीं, उनके दिल में जो है उसे अल्लाह ही ख़ूब जानता है, अगर मैं ऐसी बात कहूँ तो यक़ीनन मेरा शुमार ज़ालिमों में से हो जाए।''(31)

क़ौम को नूह (عليه السلام) का जवाब (आयत 28-31) : हज़रत नूह (عليه السلام) ने अपनी क़ौम को जवाब दिया कि सच्ची नबुव्वत यक़ीन और वाज़ेह चीज़ मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से आ चुकी, बहुत बड़ी रहमत व नेअमत अल्लाह तआला ने मुझे अता की और वह तुमसे पोशीदा रही तुम उसे न देख सके। न तुम ने उसकी क़द्रदानी की, न उसे पहचाना बल्कि बेसोचे समझे तुमने उसे धक्के दे दिए और उसे झुठलाने लग गए। अब बतलाओ कि तुम्हारी इस नापसंदीदगी की हालत में मैं कैसे यह कर सकता हूँ कि तुम्हें इसका मातहत बना दूँ।

आप अपनी क़ौम से फ़र्माते हैं कि मैं जो कुछ नसीहत तुम्हें कर रहा हूँ जितनी ख़ैरख़्वाही तुम्हारी करता हूँ उसकी कोई उज्रत तो तुमसे नहीं माँगता? मेरी उज्रत तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है तुम जो मुझसे कहते हो कि इन ग़रीब मिस्कीन ईमान वालों को मैं धक्के दे दूँ, मुझसे तो यह कभी नहीं होगा। यही तलब हुज़ूर (ﷺ) से भी की गई थी। जिसके जवाब में यह आयत उतरी (وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ) (6/अन्आम : 52) यानी सुबह शाम अपने रब के पुकारने वालों को अपनी मज्लिस से न निकाल। और आयत में है (وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ) (6/अन्आम : 53) इसी तरह हमने एक को दूसरे से आज़मा लिया और वह कहने लगे कि क्या यही वह लोग हैं जिन पर हम सबको छोड़कर अल्लाह का फ़ज़्ल नाज़िल हुआ, क्या अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों को नहीं जानता?

आप(ﷺ) फ़र्माते हैं कि मैं सिर्फ़ अल्लाह का रसूल हूँ। अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की इबादत और तौहीद की तरफ़ उसके फ़र्मान के मुताबिक़ तुम सबको बुलाता हूँ। इससे मेरी मुराद तुमसे माल समेटना नहीं। हर बड़े छोटे के लिए मेरी दावत आम है जो क़बूल करेगा नजात पाएगा। अल्लह के ख़ज़ानों के हेर फेर की मुझ में कुदरत नहीं। मैं ग़ैब नहीं जानता, हाँ! जो बात अल्लाह तआला मुझे मालूम करा दे मालूम हो जाती है। मैं फ़रिश्ता होने का दावेदार नहीं हूँ। बल्कि एक इंसान हूँ जिसकी ताईद अल्लाह की तरफ़ से मोजिज़ों से हो रही है। जिन्हें तुम रज़ील और ज़लील समझ रहे हो मैं तो इसका क़ाइल नहीं कि उन्हें अल्लाह के यहाँ उनकी नेकियों का बदला नहीं मिलेगा। उनके बातिन का हाल भी मुझे मालूम नहीं, अल्लाह ही को उसका इल्म है। अगर ज़ाहिर की तरह बातिन में भी ईमान वाले हैं तो इन्हें अल्लाह तआला के यहाँ ज़रूर नेकियाँ मिलेंगी जो इनके अंजाम की बुराई को कहे उसने ज़ुल्म किया और जिहालत की बात कही।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَأْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ
نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : "कहने लगे कि ऐ नूह (عليه السلام)! तू हमसे झगड़ा और ख़ूब ही झगड़ा कर चुका, अब तो तू जिस चीज़ से हमें धमका रहा है वही हमारे पास ले आ अगर तू सच्चों में से है (32) जवाब दिया कि उसे भी अल्लाह तआला ही लाएगा अगर वह चाहे, हाँ तुम उसे हराने वाले नहीं हो। (33) तुम्हें मेरी ख़ैरख़्वाही कुछ भी नफ़ा न दे सकती भले मैं कितनी ही तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर लूँ, बशर्तेकि अल्लाह का इरादा तुम्हें गुमराह करने का हो, वही तुम सबका परवरदिगार है और उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (34) क्या यह कहते हैं कि इसे ख़ुद इसी ने गढ़ लिया है? तू जवाब दे कि अगर मैंने इसे गढ़ लिया हो तो मेरा गुनाह मुझ पर है और मैं उन गुनाहों से तो बरी हूँ जो तुम कर रहे हो।" (35)

क़ौमे नूह (عليه السلام) की उज्लत (जल्दबाज़ी) (आयत 32-35) : क़ौमे नूह (عليه السلام) की उज्लत बयान हो रही है कि अज़ाब मांग बैठे कहने लगे, बस हुज्जतें तो हमने बहुत सी सुन लीं, आख़िरी फ़ैसला हमारा यह है कि हम तो तेरी ताबेदारी नहीं करने के अब अगर तू सच्चा है तो दुआ करके हम पर अज़ाब ला दे। आपने जवाब दिया कि यह भी मेरे बस की बात नहीं, अल्लाह के हाथ मे है उसे कोई आजिज़ नहीं करने वाला, अगर अल्लाह का इरादा ही तुम्हारी गुमराही और बर्बादी का है तो फिर वाक़ेई मेरी नसीहत बेकार है सबका मालिक अल्लाह ही है तमाम कामों की तक्मील उसी के हाथ है। मुतसर्रिफ़ हाकिम आदिल ग़ैर ज़ालिम हुक्म का अम्र का मालिक इब्तिदाअन पैदा करने वाला फिर लौटाने वाला दुनिया व आख़िरत का तंहा मालिक वही है सारी मख़्लूक़ को उसी की तरफ़ लौटना है।

यह दरम्यानी कलाम इस क़िस्से के बीच में उसकी ताईद और तक़रीर के लिए है। अल्लाह तआला अपने आख़िरी रसूल (ﷺ) से फ़र्माता है कि यह कुफ़्फ़ार तुझ पर इस कुरआन के अज़्ख़ुद गढ़ लेने का इल्ज़ाम लगा रहे हैं, तू जवाब दे कि अगर ऐसा है तो मेरा गुनाह मुझ पर है, मैं जानता हूँ कि अल्लाह के अज़ाब कैसे कुछ हैं? फिर कैसे मुम्किन है कि मैं अल्लाह पर झूठ इफ़्तिरा गढ़ लूँ, हाँ! तुम अपने गुनाहों के ज़िम्मेदारा ख़ुद हो।

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۗ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۗ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾

तर्जुमा : "नूह (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी गयी कि तेरी क़ौम में से जो ईमान ला चुके उनके सिवा और कोई अब ईमान लाएगा ही नहीं , पस तू इनके कामों पर ग़मगीन न हो (36) और एक कश्ती हमारी आँखों के सामने और हमारी वही (आडर) से तैयार कर और ज़ालिमों के बारे में हमसे कोई बातचीत न कर, वह पानी में डुबो दिए जाने वाले हैं। (37) (नूह عليه السلام की) कश्ती की तैयारी की हालत में उनकी क़ौम की जो जमाअ़त उनके पास से गुज़रती, वह उसका मज़ाक़ उड़ाती, उसने कहा कि अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे, जैसे तुम मस्ख़रापन कर रहे हो। (38) तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आता है जो उसे रुस्वा करे और उस पर हमेशगी की सज़ा उतर आये।" (39)

नूह (عليه السلام) का कश्ती तैयार करना और काफ़िरों का मज़ाक़ (आयत 36-39) : क़ौमे नूह (عليه السلام) ने जब अ़ज़ाबों की जल्दी मचायी तो आपने अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह! ज़मीन पर किसी काफ़िर को रहता बसता न छोड़। (71/नूह : 26) परवरदिगार! मैं आजिज़ आ गया हूँ तू मेरी मदद कर। (54/क़मर : 10) उसी वक़्त वही आई कि जो ईमान ला चुके हैं उनके सिवा और कोई अब ईमान न लाएगा तू इन पर अफ़सोस न कर, न इनका कोई ऐसा ख़ास ख़्याल कर। हमारे देखते हमारी तालीम के मुताबिक़ एक कश्ती तैयार कर और अब ज़ालिमों के बारे में हमसे कोई बातचीत न कर, हम इनका डुबो देना मुक़र्रर कर चुके हैं। कुछ सल्फ़ कहते हैं हुक्म हुआ कि लकड़ियाँ काटकर सुखाकर तख़्ते बना लो उसमें एक सौ साल गुज़र गये फिर मुकम्मल तैयारी में सौ साल और निकल गए। एक क़ौल है चालीस साल लगे, वल्लाहु आलम! इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) तौरात से नक़्ल करते हैं कि साग की लकड़ी की यह कश्ती तैयार हुई। इसका तूल 80 हाथ था और अ़र्ज़ 50 हाथ का था। अंदर बाहर से रोग़न किया गया था। पानी काटने के पर पुर्ज़े भी थे। क़तादा (रह.) का क़ौल है कि लम्बाई तीन सौ (300) हाथ की थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है कि तूल 1200 हाथ का था और चौड़ाई 600 हाथ की थी। कहा गया है कि तूल 20000 हाथ और चौड़ाई एक

100 हाथ की थी, वल्लाहु आलम! इसकी अंदरूनी ऊँचाई 30 हाथ की थी उसमें तीन दर्जे थे हर दर्जा 10 हाथ ऊँचा था। सबसे नीचे के हिस्से में चौपाये और जंगली जानवर थे। बीच के हिस्से में इंसान थे। ऊपर के हिस्से में परिन्दे थे। दरवाज़ा चौड़ाई में था, ऊपर से बिलकुल बंद थी।

इब्ने जरीर (रह.) ने एक ग़रीब असर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से ज़िक्र किया है कि हवारियों ने हज़रत ईसा बिन मरियम (عليه السلام) से दरख़्वास्त की कि अगर आप बहुक्मे इलाही किसी ऐसे मुर्दे को जिलाते (ज़िन्दा करते) जिसने कश्ती नूह (عليه السلام) देखी हो तो हमें उससे मालूमात हासिल होतीं। आप उन्हें लेकर चले एक टीले पर पहुँचकर वहाँ की मिट्टी उठायी और फ़र्माया कि जानते हो यह कौन है? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल (عليه السلام) को ही इल्म है। आपने फ़र्माया, यह पिण्डली है हाम बिन नूह की। फिर आपने अपनी लकड़ी उस टीले पर मारकर फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उठ खड़ा हो। उसी वक़्त एक बूढ़ा सा आदमी अपने सर से मिट्टी झाड़ता हुआ खड़ा हुआ आपने उससे पूछा कि क्या तू बुढ़ापे में मरा था? उसने कहा, नहीं मरा तो जवानी में था लेकिन अब दिल पर यह दहशत बैठी कि क़यामत क़ायम हो गयी, उस दहशत ने मुझे बूढ़ा कर दिया। आपने फ़र्माया कि अच्छा हज़रत नूह (عليه السلام) की कश्ती की बाबत अपनी मालूमात बयान करो। उसने कहा, वह 1200 हाथ लम्बी और 600 हाथ चौड़ी थी। तीन दर्जों की थी एक में जानवर और चौपाये थे। दूसरे में इंसान, और तीसरे में परिन्द, जब जानवरों का गोबर फैल गया तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी कि हाथ की दुम हिलाओ। आपके हिलाते ही उससे ख़िंज़ीर मादा निकल आए और मेला खाने लगे। चूहों ने जब उसके तख़्ते कुतरने शुरू किए तो हुक्म हुआ कि शेर की पेशानी पर उँगली लगा। उससे बिल्ली का जोड़ा निकला और चूहों की तरफ़ लपका। हज़रत ईसा (عليه السلام) ने सवाल किया कि हज़रत नूह (عليه السلام) को शहरों के ग़र्क़ आब होने का इल्म कैसे हो गया? आपने फ़र्माया कि उन्होंने कौअे को ख़बर लाने के लिए भेजा लेकिन वह एक लाश पर बैठ गया, देर तक न आया। आपने उसके लिए हमेशा डरते रहने की बद् दुआ की। इसीलिए वह घरों से मानूस नहीं होता। फिर आपने कबूतर को भेजा वह अपनी चोंच में ज़ेतून के दरख़्त का पत्ता लेकर आया और अपने पंजों में ख़ुश्क मिट्टी लाया, उससे मालूम हो गया कि शहर डूब चुके हैं। आपने उसकी गर्दन में ख़सरा का तौक़ डाल दिया और उसके लिए अमन व उंस की दुआ की पस वह घरों में रहता सहता है।

हवारियों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (عليه السلام)! आप उन्हें हमारे यहाँ ले चलिए कि हममें बैठकर और भी बातें हमें सुनाएँ। आपने फ़र्माया यह तुम्हारे साथ कैसे आ सकता है जबकि इसकी रोज़ी नहीं। फिर फ़र्माया कि अल्लाह के हुक्म से जैसा था वैसा ही हो जा। वह उसी वक़्त मिट्टी हो गया। नूह (عليه السلام) तो कश्ती बनाने में लगे और काफ़िरों को एक मज़ाक़ हाथ लग गया। वह चलते फिरते उन्हें छेड़ते और बातें बनाते और तअ़न करते क्योंकि उन्हें झूठा जानते थे, और अ़ज़ाब के वादे पर उन्हें यक़ीन न था। उसके जवाब में हज़रत नूह (عليه السلام) फ़र्माते, अच्छा! दिल ख़ुश कर लो वक़्त आ रहा है कि उसका पूरा बदला लिया जाएगा। अभी जान लोगे कि कौन अ़ज़ाबे अल्लाह से दुनिया में रुस्वा होता है और किस पर आख़िरत का अ़ज़ाब आ चिमटता है जो कभी टाले न टले।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ

اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ۭ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝

तर्जुमा : "यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुँचा और तन्नूर उबलने लगा, हमने फ़र्मा दिया कि इस कश्ती में हर क़िस्म के जोड़े दोहरे सवार करा ले और अपने घर के लोगों को भी सिवाए उनके जिन पर पहले से बात पड़ चुकी है और सब ईमान वालों को भी, उनके साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे" (40)

कश्ती में हर जानवर का जोड़ा मौजूद था (आयत 40) : हस्बे फ़र्माने इलाही आसमान से मूसलाधार बारिश बरसने लगी और ज़मीन से भी पानी उबलने लगा और सारी ज़मीन पानी से भर गयी। और जहाँ तक अल्लाह को मंज़ूर था, पानी भर गया और हज़रत नूह (ﷺ) को रब्बुल आलमीन ने अपनी निगाहों के सामने चलने वाली कश्ती पर सवार कर दिया। और काफ़िरों को उनके किये का बदला दे दिया। (54/क़मर : 11-14) तन्नूर के उबलने से बक़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) यह मतलब है कि रूए ज़मीन से चश्मे फूट पड़े। (तब्री : 15/318) यहाँ तक कि आग की जगह तन्नूर में से भी पानी उबल पड़ा। यही क़ौल जुम्हूर सल्फ़ व खल्फ़ का है। हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि तन्नूर सुबह का निकलना और फ़ज्र का रोशन होना है यानी सुबह की रोशनी और फ़ज्र की चमक लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर पहला क़ौल है। मुजाहिद और शअबी (रह.) कहते हैं यह तन्नूर कूफ़े में था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है हिन्द में एक नहर है। क़तादा (रह.) कहते हैं जज़ीरा में एक नहर है जिसे ऐनुल वर्दा कहते हैं। लेकिन यह सब क़ौल ग़रीब है। अल्ग़र्ज़ इन अलामतों के ज़ाहिर होते ही नूह (ﷺ) को अल्लाह का हुक्म हुआ कि अपने साथ कश्ती में जानदार मख़्लूक़ की हर क़िस्म का एक एक जोड़ा नर मादा सवार करा लो। कहा गया है कि ग़ैर जानदार के लिए भी यही हुक्म था जैसे नबातात। कहा गया है कि परिन्दों में सबसे पहले दुर्रा यानी तोता कश्ती में आया और सबसे आख़िर में गधा सवार होने लगा। इब्लीस उसकी दुम में लटक गया। जब उसके दो अगले पैर कश्ती में आ गए और उसने अपना पिछला धड़ उठाना चाहा तो न उठ सका क्योंकि दुम पर उस मल्ऊन का बोझ था। हज़रत नूह (ﷺ) जल्दी कर रहे थे यह बहुत चाह रहा था मगर पिछले पैर चढ़ नहीं सकता था। आख़िर आपने फ़र्माया, आ जा भले तेरे साथ इब्लीस भी हो तब वह चढ़ गया और इब्लीस भी उसके साथ ही आया।

कुछ सलफ़ कहते हैं कि शेर को अपने साथ ले जाना मुश्किल हो पड़ा, आख़िर उसे बुख़ार चढ़ आया तब उसे सवार कर लिया। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हज़रत नूह (ﷺ) ने जब तमाम मवेशी अपनी कश्ती में सवार कर लिये तो लोगों ने कहा कि शेर की मौजूदगी में यह मवेशी कैसे आराम से रह सकेंगे। पस अल्लाह तआला ने उस पर बुख़ार डाल दिया। उससे पहले ज़मीन पर यह बीमारी न थी। फिर लोगों ने चूहे की शिकायत की कि यह हमारा खाना और दीगर सब चीज़ें ख़राब कर रहे

हैं तो अल्लाह के हुक्म से शेर की छींक में से एक बिल्ली निकली जिससे चूहे दुबककर कोने खुदरे में बैठ रहे।'' (यह रिवायत मुर्सल ज़ईफ़ है।) हज़रत नूह (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपने घर वालों को भी अपने साथ कश्ती में बिठा लो मगर उनमें से जो ईमान नहीं लाए उन्हें साथ न लेना। आपका लड़का याम भी उन ही काफ़िरों में था और वह अलग हो गया या आपकी बीवी कि वह भी अल्लाह के रसूल (अ.) की मुंकिर थी। और अपनी क़ौम के तमाम मुसलमानों को भी अपने साथ बिठा ले। लेकिन उन मुसलमानों की तादाद बहुत ही कम थी। (तब्री : 15/326) साढ़े नौ सौ साल के क़याम की लम्बी मुद्दत में आप पर बहुत ही कम लोग ईमान लाये थे। इब्ने अब्बास(रज़ि.) फ़र्माते हैं कुल 80 आदमी थे जिनमें औरतें भी थीं। कअब (रह.) फ़र्माते हैं 72 शख़्स थे। एक क़ौल है सिर्फ़ 10 शख़्स थे। एक क़ौल है हज़रत नूह (ﷺ) थे और उनके तीन लड़के थे, साम, हाम, और याफ़िस और चार औरतें थीं तीन तो उन तीनों की बीवियाँ और चौथी याम की बीवी। और कहा गया है कि हज़रत नूह (ﷺ) की बीवी। लेकिन इसमें नज़र है, ज़ाहिर है कि ख़ुद हज़रत नूह (ﷺ) की बीवी हलाक होने वालों में हलाक हुई। इसलिए कि वह अपनी क़ौम के दीन पर थी तो जिस तरह लूत (ﷺ) की बीवी क़ौम के साथ हलाक हो गई, उसी तरह यह भी, वल्लाहु आलम!

***

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝41 وَهِيَ تَجْرِيْ
بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۣ وَنَادٰي نُوْحُۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا
تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝42 قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰي جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَاۗءِ ۭ قَالَ لَا عَاصِمَ
الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝43

तर्जुमा :''नूह (ﷺ) ने कहा इस कश्ती में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना और ठहरना है, यक़ीनन मेरा पालने वाला बड़ी बख़्शिश और बड़े रहम वाला है। (41) वह कश्ती उन्हें लेकर मौजों में पहाड़ की तरह जा रही थी, नूह (ﷺ) ने अपने लड़के को जो एक किनारे था पुकारकर कहा कि प्यारे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न हो। (42) उसने जवाब दिया कि मैं तो किसी बड़े पहाड़ की तरफ़ पनाह में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह (ﷺ) ने कहा आज अल्लाह के अम्र से बचाने वाला कोई नहीं सिर्फ़ वही बचेंगे, जिन पर अल्लाह का रहम हुआ, उसी वक़्त उन दोनों के बीच लहर आ गयी, और वह डूबने वालों में से हो गया।'' (43)

तूफ़ाने नूह (ﷺ) (आयत 41-43) : हज़रत नूह (ﷺ) जिन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे उनसे

फ़र्माया कि आओ इसमें सवार हो जाओ, उसका पानी पर चलना अल्लाह के नाम की बरकत से है और इसी तरह इसका आख़िरी ठहराव भी उसी पाक नाम से है। एक क़िरअत में (मज्राहा व मुर्सीहा) भी है यही अल्लाह का आपको हुक्म था कि जब तुम और तुम्हारे साथी ठीक तरह बैठ जाओ तो कहना (الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ) (23/मोमिनून : 28) और यह भी दुआ करना कि (رَبِّ أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ) (23/मोमिनून : 29) इसीलिए मुस्तहब है कि तमाम कामों के शुरू में बिस्मिल्लाह कह ली जाए ख़्वाह कश्ती पर सवार होना हो ख़्वाह जानवर पर सवार होना हो जैसे फ़र्माने बारी तआला है कि उसी अल्लाह ने तुम्हारे लिए तमाम जोड़े पैदा किए हैं और कश्तियाँ और चौपाये तुम्हारी सवारी के लिए पैदा किए हैं कि तुम उनकी पीठ पर सवारी लेकर... (43/ज़ुख़रुफ़ : 12) हदीस में भी इसकी ताकीद और रग़बत आती है। सूरह ज़ुख़रुफ़ में इसका पूरा बयान होगा इंशाअल्लाह तआला! तबरानी में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मेरी उम्मत के लिए डूबने से बचाव उनके इस क़ौल में है कि सवार होते हुए कह लें (बिस्मिल्लाहिल मलिकि वमा क़दरुल्लाहा हक़्क़ा क़दरिही) और (बिस्मिल्लाहि मज्रीहा व मुर्साहा इन्ना रब्बी लग़फ़ूर्रहीम) (अल्मुअजमुल कबीर : 12661; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मौज़ूअ इसकी सनद में नहसिल बिन सईद बसरी मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 4/75; रक़म : 9127) नीज़ इब्ने इस्हाक़ का इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को मौज़ूअ क़रार दिया है। देखिए (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ : 2932) इस दुआ के आख़िरी में अल्लाह का वस्फ़ ग़फ़ूर्रहीम इसलिए लाए कि काफ़िरों की सज़ा के मुक़ाबले में मोमिनों पर रहमत और शफ़्क़त का इज़्हार हो। जैसे फ़र्मान है तेरा रब जल्द सज़ा करने वाला और साथ ही ग़फ़ूर्रहीम भी है। (7/आराफ़ : 167) और आयत में है (إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ) (13/रअद : 6) यानी तेरा परवरदिगार लोगों के गुनाहों को बख़्शने वाला भी है और वह सख़्त सज़ा देने वाला भी है। और भी बहुत सी आयतें हैं जिनमें रहमत व इंतिक़ाम का मिला जुला बयान है।

पानी रूए ज़मीन पर फैल गया है किसी ऊँचे से ऊँचे पहाड़ की बुलंद से बुलंद चोटी भी दिखाई नहीं देती कि पहाड़ों से भी पन्द्रह हाथ और बक़ौले (एक कौल के मुताबिक) अस्सी मील ऊपर को हो गया है। बावजूद उसके कश्ती नूह बहुक्मे इलाही बराबर सही तौर पर जा रही है। ख़ुद अल्लाह उसका मुहाफ़िज़ है और वह ख़ास उसकी इनायत व मेहरबानी है। जैसे फ़र्मान है (إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ) (69/हाक़्क़ा : 11) यानी पानी की तुग़ियानी के वक़्त हमने आप तुम्हें कश्ती में चढ़ा लिया कि हम उसे तुम्हारे लिए नसीहत बनाएँ और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। और आयत में है कि हमने तुम्हें इस तख़्तों वाली कश्ती पर सवार कराकर अपनी हिफ़ाज़त से पार उतारा और काफ़िरों को उनके कुफ़्र का अंजाम दिखा दिया और उसे एक निशानी बना दिया। क्या अब भी कोई है जो इब्रत हासिल करे? (54/क़मर : 13-15) उस वक़्त हज़रत नूह (عليه السلام) ने अपने साहबज़ादे को बुलाया, यह आपके चौथे लड़के थे उसका नाम याम था यह काफ़िर था उसे आपने कश्ती में सवार होने के वक़्त ईमान की और अपने साथ बैठ जाने की हिदायत की ताकि डूबने से और काफ़िरों पर आने वाले अज़ाब से बच जाए। मगर उस बदनसीब ने जवाब दिया कि नहीं! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं, पहाड़ पर चढ़कर तूफ़ानी बारिश से बच जाऊँगा। एक इस्राईली रिवायत है कि उसने शीशे की कश्ती

बनायी थी, वल्लाहु आलम! क़ुरआन में तो यह है कि उसने यह समझा कि यह तूफ़ान पहाड़ों की चोटियों तक नहीं पहुँचेगा मैं जब वहाँ जा पहुँचूँगा तो यह पानी मेरा क्या बिगाड़ लेगा? इस पर हज़रत नूह (عليه السلام) ने जवाब दिया कि आज अज़ाबे इलाही से कहीं पनाह नहीं वही बचेगा जिस पर अल्लाह का रहम हो। यहाँ आसिम बमअनी मासूम है जैसे ताइम के मअनी में और कासी मक्सू के मअनी में आया है। यह बातें हो ही रही हैं जो एक लहर आयी और नूह (عليه السلام) के बेटे को ले डुबी।

***

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾

तर्जुमा : ''फ़र्मा दिया गया कि ऐ ज़मीन! अपने पानी को निगल जा और ऐ आसमान! बस कर थम जा, उसी वक़्त पानी सुखा दिया गया और काम पूरा कर दिया गया और कश्ती जूदी नामी पहाड़ पर जा लगी और फ़र्मा दिया कि नाइंसाफ़ी करने वाले लोगों पर लानत नाज़िल हो।'' (44)

तूफ़ाने नूह का थम जाना (आयत 44) : रूए ज़मीन के सब लोग उस तूफ़ान में जो दरहक़ीक़त ग़ज़बे इलाही और मज़्लूम पैग़म्बर की बद् दुआ का अज़ाब था, डूब गये, उस वक़्त अल्लाह तआला अज़्ज़ा व जल्ला ने ज़मीन को उस पानी के निगल लेने का हुक्म दिया जो उसका उगला हुआ और आसमान का बरसाया हुआ था, साथ ही आसमान को भी पानी बरसाने से रोक दिया गया, पानी घटने लगा और काम पूरा हो गया यानी तमाम काफ़िर नेस्तो नाबूद हो गए, सिर्फ़ कश्ती वाले मोमिन ही बचे। कश्ती बहुक्मे इलाही जूदी पर रुकी। मुजाहिद (रह.) कहते हैं, यह जज़ीरा में एक पहाड़ है। सब पहाड़ डुबो दिए गए थे और यह पहाड़ बवजह अपनी आजिज़ी और तवाज़ोअ के डूबने से बच रहा था यहीं कश्ती नूह लंगर अंदाज़ हुई। (तब्री : 15/338) हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, महीनेभर तक यहीं लगी रही और सब उतर गए और कश्ती लोगों की इब्रत के लिए यहीं साबित व सालिम रखी रही, यहाँ तक कि उस उम्मत के अव्वल लोगों ने भी उसे देख लिया। (तब्री : 15/338) हालाँकि उसके बाद की बेहतरीन और मज़बूत सैंकड़ों कश्तियाँ बनीं बिगड़ीं बल्कि राख और ख़ाक हो गईं। ज़हहाक (रह.) फ़र्माते हैं जूदी नाम का पहाड़ मूसल में है। कुछ कहते हैं तूर पहाड़ को ही जूदी भी कहते हैं। ज़र बिन हुबैश को अब्वाबे कंदा से दाख़िल होकर दाएँ तरफ़ के ज़वाया में नमाज़ बकसरत पढ़ते हुए देखकर नौबा बिन सालिम ने पूछा कि आप जो जुम्आ के दिन बराबर यहाँ अक्सर नमाज़ पढ़ा करते हैं इसकी क्या वजह है? तो आपने जवाब दिया कि कश्ती नूह (عليه السلام) यहीं लगी थी।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि हज़रत नूह (عليه السلام) के साथ कश्ती में बाल बच्चों समेत कुल (80) अस्सी आदमी थे। 150 दिन तक वह सब कश्ती में ही रहे। अल्लाह तआला ने जूदी की तरफ़ रवाना किया वहाँ वो ठहर गयी। हज़रत नूह (عليه السلام) ने कौओ को भेजा कि वह ख़ुश्की की ख़बर लाए, वह एक मुरदार

के खाने में लग गया और देर लगा दी। आपने एक कबूतर को भेजा वह अपनी चोंच में ज़ेतून के दरख़्त का पत्ता और पंजों में मिट्टी लेकर वापिस आया, उससे हज़रत नूह (अलैहि.) ने समझ लिया कि पानी सूख गया है, और ज़मीन ज़ाहिर हो गयी है। पस आप जूदी से नीचे उतरे और वहीं एक बस्ती की बिना डाल दी जिसे समानीन कहते हैं। एक दिन सुबह को जब लोग जागे तो हर एक की ज़ुबान बदली हुई थी। अस्सी (80) ज़ुबानें बोलने लगे जिनमें सबसे आला और बेहतर अरबी ज़ुबान थी। एक को दूसरे का कलाम समझना मुश्किल हो रहा था। नूह (अलैहि.) को अल्लाह तआला ने सब ज़ुबानें मालूम करा दीं। आप उन सबके बीच मुतर्जिम थे, एक का मतलब दूसरे को समझा देते थे।

हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि कश्ती नूह पूरब से पश्चिम के बीच चल फिर रही थी। फिर जूदी पर ठहर गयी। हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं रजब की दसवीं तारीख़ को मुसलमान उसमें सवार हुए थे पाँच माह तक उसी में रहे। उन्हें लेकर कश्ती जूदी पर महीने भर तक ठहरी रही। आख़िर मुहर्रम के आशूरा के दिन वह सब उसमें से उतरे। इसी क़िस्म की एक मरफ़ूअ हदीस भी इब्ने जरीर में है, उन्होंने उस दिन रोज़ा भी रखा, वल्लाहु आलम! (इसकी सनद में उस्मान बिन मुतर मुंकरुल हदीस है। (अल्मीज़ान : 3/53; रक़म : 5563) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) मुस्नद अहमद में है कि नबी (ﷺ) ने चंद यहूदियों को आशूरा के दिन रोज़ा रखे हुए देखकर उनसे उसका सबब पूछा तो उन्होंने कहा कि इसी दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलैहि.) और बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा था और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को डुबो दिया था। और इसी दिन नूह (अलैहि.) की कश्ती जूदी पर लगी थी। पस उन दोनों पैग़म्बरों ने शुक्रे इलाही का रोज़ा उस दिन रखा था। आपने यह सुनकर फ़र्माया, ''मूसा (अलैहि.) का सबसे ज़्यादा हक़दार मैं हूँ और इस दिन के रोज़े का मैं ज़्यादा मुस्तहिक़ हूँ'' पस आप (ﷺ) ने इस दिन का रोज़ा रखा और अपने अस्हाब (रज़ि.) से फ़र्माया कि ''तुममें से जो आज रोज़े से हो वह तो अपना रोज़ा पूरा करे और जो नाश्ता कर चुका हो वह भी बाक़ी दिन कुछ न खाये।'' (अहमद : 2/359, 360; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अब्दुस्समद बिन हबीबी लीनुल हदीस है (अल्मीज़ान : 2/619; रक़म : 5069) और इसका बाप मज्हूल है (अल्मीज़ान : 1/455; रक़म : 1708) शैख़ अल्बानी (रह.) ने भी इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। देखिए (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ा, तहत रक़म : 1499) जबकि हज़रत मूसा (अलैहि.) और उनकी क़ौम की नजात के दिन का रोज़ा रखने की रिवायत बुख़ारी 3397 में मौजूद है।) यह रिवायत इस सनद से तो ग़रीब है लेकिन इसके कुछ हिस्से के शाहिद सहीह हदीस में भी मौजूद हैं।

फिर इर्शाद होता है कि ज़ालिमों को ख़सारा और हलाकत अल्लाह की रहमत से दूरी हुई। वह सब हलाक हुए। उनमें से एक भी बाक़ी न बचा। तफ़्सीर इब्ने जरीर और तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अगर अल्लाह तआला क़ौमे नूह (अलैहि.) में से किसी पर भी रहम करने वाला होता तो उस बच्चे की माँ पर रहम करता। हज़रत नूह (अलैहि.) अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तक ठहरे। आपने एक दरख़्त बोया था जो सौ साल तक बूढ़ा और बड़ा होता रहा फिर उसे काटकर तख़्ते बनाकर कश्ती बनानी शुरु की। काफ़िर लोग मज़ाक़ उड़ाते कि यह उस ख़ुश्की में कश्ती कैसे चलाएँगे। आप जवाब देते थे कि बहुत जल्द

अपनी आँखों से देख लोगे। जब आप बना चुके और पानी ज़मीन से उबलने और आसमान से बरसने लगा और गलियाँ और रास्ते पानी से डूबने लगे तो उस बच्चे की माँ जिसे अपने उस बच्चे से ग़ायत दर्जे की मुहब्बत थी वह उसे लेकर पहाड़ की तरफ़ चली गयी और जल्दी-जल्दी उस पर चढ़ना शुरु किया, तिहाई हिस्से पर चढ़ गयी लेकिन जब उसने देखा कि पानी वहाँ भी पहुँच चुका तो और ऊपर को चढ़ी, दो तिहाई तक पहुँची जब वहाँ भी पानी पहुँचा तो उसने चोटी पर जाकर दम लिया लेकिन पानी वहाँ भी पहुँच गया जब गर्दन गर्दन पानी चढ़ गया तो उसने अपने बच्चे को अपने दोनों हाथों में लेकर ऊँचा उठा लिया लेकिन पानी वहाँ भी पहुँचा और माँ बच्चे दोनों डूब गये। पस अगर उस दिन कोई काफ़िर भी बचने वाला होता तो अल्लाह तआला उस बच्चे की माँ पर रहम करता।'' (हाकिम : 2/342; व सनदुहू हसन) यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। कअब अहबार और मुजाहिद बिन जुबेर (रह.) से भी उस बच्चे और उसकी माँ का यही क़िस्सा मरवी है।

***

وَنَادٰى نُوۡحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِىۡ مِنۡ اَهۡلِىۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَـقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ ۝٤٥ قَالَ يٰـنُوۡحُ اِنَّهٗ لَـيۡسَ مِنۡ اَهۡلِكَ‌ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ‌ ‌ۖ فَلَا تَسۡـئَلۡنِ مَا لَـيۡسَ لَـكَ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ اِنِّىۡۤ اَعِظُكَ اَنۡ تَكُوۡنَ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ۝٤٦ قَالَ رَبِّ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ اَنۡ اَسۡـئَلَكَ مَا لَـيۡسَ لِىۡ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ وَاِلَّا تَغۡفِرۡ لِىۡ وَتَرۡحَمۡنِىۡۤ اَكُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٤٧

तर्जुमा : ''नूह (ﷺ) ने अपने परवरदिगार को पुकारा और कहने लगे कि मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे घरवालों में से है यक़ीनन तेरा वादा बिलकुल सच्चा है और तू तमाम हाकिमों से बेहतर हाकिम है। (45) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, ऐ नूह (ﷺ)! यक़ीनन वो तेरे घराने के लोगों में नहीं है, उसके काम बिलकुल ही नाशाइस्ता हैं तुझे हर्गिज़ उस चीज़ को न मांगना चाहिए जिसका तुझे मुत्लक़न इल्म न हो, मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू जाहिलों में से अपना शुमार कराने से बाज़ रहे। (46) कहने लगा, मेरे पालनहार! मैं तो तेरी ही पनाह चाहता हूँ कि तुझसे वह माँगूँ जिसका मुझे इल्म ही न हो, अगर तू मुझे न बख़्शेगा और तू मुझ पर रहम न करेगा तो मैं ख़राबी वालों में हो जाऊँगा।''(47)

नूह (ﷺ) की अपने बेटे के लिए दुआ और अल्लाह तआला का जवाब (आयत 45-47) : याद रहे कि यह दुआ हज़रत नूह (ﷺ) की सिर्फ़ इस ग़र्ज़ से थी कि आपको सहीह तौर पर अपने डूबे हुए लड़के का हाल मालूम हो जाए कहते हैं कि परवरदिगार! यह भी ज़ाहिर है कि मेरा लड़का मेरे अहल में से था और मेरे अहल को बचाने का तेरा वादा था और यह भी नामुम्किन है कि तेरा वादा ग़लत हो। फिर यह मेरा बच्चा

कुफ़्फ़ार के साथ कैसे डूबो दिया गया? जवाब मिला कि तेरी जिस अहल को नजात देने का मेरा वादा था उनमें तेरा यह बच्चा दाख़िल न था मेरा यह वादा ईमान वालों की नजात का था, मैं कह चुका था कि (وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ) (11/हूद : 40) यानी अपने अहले को भी तू कश्ती में चढ़ा ले मगर जिस पर मेरी बात बढ़ चुकी है। यह बवजह अपने कुफ़्र के उन ही में था जो मेरे साबिक़ इल्म में कुफ़्र वाले और डूबने वाले मुक़र्रर हो चुके थे।

फ़ायदा : यह भी याद रहे कि जिन लोगों ने कहा है कि यह दरअसल हज़रत नूह (عليه السلام) का लड़का था ही नहीं क्योंकि आपके नुत्फ़े से न था बल्कि बदकारी से था। और कुछ ने कहा है कि यह आपकी बीवी का अगले घर का लड़का था, यह दोनों क़ौल ग़लत हैं। बहुत से बुज़ुर्गों ने साफ़ लफ़्ज़ों में इसे ग़लत कहा है बल्कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) और बहुत से सल्फ़ से मंक़ूल है कि किसी नबी की बीवी ने कभी ज़िनाकरी नहीं की। पस यहाँ इस फ़र्मान से कि वह तेरे अहल में से नहीं यही मतलब है कि तेरे जिस अहल की नजात का मेरा वादा है यह उनमें से नहीं यही बात सच है और यही क़ौल असली है उसके सिवा और तरफ़ जाना सिर्फ़ ग़लती है और ज़ाहिर ख़ता है। अल्लाह तआला की ग़ैरत इस बात को क़बूल ही नहीं कर सकती कि अपने किसी नबी के घर में ज़ानिया औरत दे। ख़्याल रहे कि हज़रत आइशा (रज़ि.) की निस्बत जिन्होंने बोहतान बाज़ी की थी उन पर अल्लाह तआला किस क़द्र ग़ज़बनाक हुआ? उस लड़के के अहल में से निकल जाने की वजह ख़ुद क़ुरआन ने बयान कर दी है कि उसके अमल नेक न थे।

इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं एक क़िरअत (तब्री : 15/343) मुस्नद की हदीस में हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को (इन्नहू अमलुन ग़ैरु सालिहिन) पढ़ते सुना है और (يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ) (39/ज़ुमर : 53) पढ़ते सुना है। (अहमद : 6/454; अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ वल क़िराआत, रक़म : 3983; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 2932; बिदूनि (या इबादि...)) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सवाल हुआ कि (فَخَانَتَاهُمَا) (66/तहरीम : 10) का मतलब क्या है? आपने फ़र्माया इससे मराद ज़िना नहीं बल्कि हज़रत नूह (عليه السلام) की बीवी की ख़यानत तो यह थी कि लोगों से कहती थी यह मज्नून है। और हज़रत लूत (عليه السلام) की बीवी की ख़यानत यह थी कि जो मेहमान आपके यहाँ आते अपनी क़ौम को ख़बर कर देती, फिर आपने आयत (إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ) (हाकिम : 2/496; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) से जब हज़रत नूह (عليه السلام) के लड़के के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह सच्चा है उसने उसे हज़रत नूह (عليه السلام) का लड़का फ़र्मा दिया है। पस वह यक़ीनन नूह (عليه السلام) का साबितुन्नसब लड़का ही था देखो अल्लाह फ़र्माता है (وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ) (11/हूद : 42) और यह भी याद रहे कि कुछ उलमा का क़ौल है कि किसी नबी की बीवी ने कभी ज़िनाकारी नहीं की। ऐसा ही हज़रत मुजाहिद (रह.) से मरवी है। और यही इब्ने जरीर (रह.) का पसंदीदा कौल है और फ़िल वाक़ेअ ठीक और सही बात भी यही है।

***

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ
ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ
تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾

तर्जुमा : ''फ़र्मा दिया गया कि ऐ नूह (عليه السلام)! हमारी तरफ़ की सलामती और बरकतों के साथ उतर जो तुझ पर हैं और तेरे साथ बहुत सी जमाअतों पर और बहुत सी वह उम्मतें होंगी जिन्हें हम फ़ायदा तो ज़रूर पहुँचाएँगे लेकिन फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा। (48) यह ख़बरें ग़ैब की ख़बरों में से हैं जिनकी वही हम तेरी तरफ़ करते हैं इन्हें इससे पहले न तो तू जानता था, न तेरी क़ौम पस तू सब्र करता रह, यक़ीन मान कि अंजामकार परहेज़गारों के लिए ही है।'' (49)

नूह (عليه السلام) का कश्ती से उतरना (आयत 48, 49) : कश्ती ठहरी और अल्लाह का सलाम आप पर और आपके तमाम मोमिन साथियों पर और उनकी औलादों में से क़यामत तक जो ईमान वाले आने वाले हैं सब पर नाज़िल हुआ। साथ ही काफ़िरों के दुनियावी फ़ायदे से मुस्तफ़ीद होने और फिर अज़ाबों में गिरफ़्तार होने का भी ऐलान हुआ। पस यह आयत क़यामत तक के मोमिनों की सलामती और बरकत पर और काफ़िरों की सज़ा पर है। इमाम इब्ने इस्हाक़ (रह.) का बयान है कि जब जनाब बारी जल्ल शानुहू ने तूफ़ान बंद करने का इरादा कर लिया तो रूए ज़मीन पर एक हवा भेज दी जिसने पानी को सुखा दिया और उसका उबलना बंद हो गया, साथ ही आसमान के दरवाज़े भी जो अब तक पानी बरसा रहे थे बंद कर दिये गए।

ज़मीन को पानी के सोख लेने का हुक्म हो गया, उसी वक़्त पानी कम होना शुरु हो गया और बक़ौले अहले तौरात के सातवें महीने की सतरहवीं तारीख़ नूह (عليه السلام) की कश्ती जूदी पर लगी। दसवें महीने की पहली तारीख को पहाड़ों की चोटियाँ खुल गयीं। इसके चालीस दिन के बाद कश्ती के रोज़न पानी के ऊपर दिखायी देने लगे, फिर आपने कोअे को पानी की तलाश के लिए भेजा लेकिन वह पलटकर न आया। आपने कबूतर भेजा जो वापिस आया अपने पैर रखने को उसे जगह न मिली आपने अपने हाथ पर लेकर उसे अंदर ले लिया फिर सात दिन के बाद उसे दोबारा भेजा, शाम को वह वापिस आया, अपनी चोंच में ज़ेतून का पत्ता लिये हुए था, उससे अल्लाह के नबी (عليه السلام) ने मालूम कर लिया कि पानी ज़मीन से कुछ ही ऊँचा रह गया है। फिर सात दिन के बाद भेजा अबकी मर्तबा वह न लौटा तो आपने समझ लिया कि ज़मीन बिलकुल सूख चुकी है। अल्ग़र्ज़ पूरे एक साल के बाद हज़रत नूह (عليه السلام) ने कश्ती का सरपोश उठाया और आवाज़ आयी कि ऐ नूह (عليه السلام)! हमारी नाज़िल की हुई सलामती के साथ अब उतर आओ।

क़िस्सा नूह (عليه السلام) और उसी क़िस्म के गुज़िश्ता वाक़ियात वह हैं जो तेरे सामने नहीं हुए लेकिन बज़रिया वही (मैसेज आफ अल्लाह) के हम तुझे उनकी ख़बर कर रहे हैं और तू लोगों के सामने उनकी

हक़ीक़त इस तरह खोल रहा है जैसे उनके होने के वक़्त तू वहीं मौजूद था। इससे पहले न तो तुझे ही उनकी कोई ख़बर थी, न तेरी क़ौम में से कोई और उनका इल्म रखता था कि किसी को भी गुमान हो कि शायद तूने उससे सीख लिए हों। पस साफ़ बात है कि यह पैग़ामे इलाही से तुझे मालूम हुए और ठीक उसी तरह जिस तरह अगली किताबों में मौजूद हैं। पस अब तुझे उनके सताने झुठलाने पर सब्र व सिहार करनी चाहिए हम तेरी मदद पर हैं, तुझे और तेरे ताबेदारों को उन पर ग़ल्बा देंगे अंजाम के लिहाज़ से तुम ही ग़ालिब रहोगे। यही तरीक़ा और पैग़म्बरों का भी रहा।

***

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى الَّذِیْ فَطَرَنِیْ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا
وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : "आदियों (क़ौमे आद) की तरफ़ उनके भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को हमने भेजा, उसने कहा, मेरी क़ौम वालों! अल्लाह ही की इबादत किया करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं, तुम तो सिर्फ़ बोहतानबाज़ी कर रहे हो। (50) मेरे क़ौमी भाईयों! मैं तुमसे इसकी कोई उजरत नहीं चाहता, मेरा अज्र उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते। (51) ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अपने पालने वाले से अपनी कमियों की माफ़ी तलब करो और उसकी जनाब में तौबा करो ताकि वह बरसने वाले बादल तुम पर भेज दे और तुम्हारी ताक़त पर और ताक़त कुव्वत बढ़ा दे, तुम बावजूद गुनहगार होने के रूगर्दानी न करो।" (52)

हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) की क़ौम को दावत (आयत 50-52) : अल्लाह तआला ने हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा, उन्होंने क़ौम को अल्लाह की तौहीद की दावत दी और उसके सिवा औरों की पूजापाट से रोका और बतलाया कि जिनको तुम पूजते हो उनकी पूजा ख़ुद तुमने गढ़ ली है। बल्कि उनके नाम और वजूद तुम्हारे ख़्याली ढकोसले हैं।

उनसे कहा कि मैं अपनी इस नसीहत का कोई बदला और मुआवज़ा तुमसे नहीं लेता। मेरा सवाब मेरा रब मुझे देगा, जिसने मुझे पैदा किया है क्या तुम यह मोटी सी बात भी अक़्ल में नहीं लाते कि दुनिया आख़िरत की भलाई की तुम्हें राह दिखाने वाला तुमसे कोई उजरत नहीं लेता। तुम तौबा करने में लग जाओ, गुज़िश्ता

गुनाहों की माफ़ी अल्लाह तआला से तलब करो और तौबा करो आइन्दा के लिए गुनाहों से रुक जाओ। यह दोनों बातें जिसमें हों अल्लाह तआला उसकी रोज़ी उस पर आसान करता है। उसका काम उस पर आसान करता है। उसकी शान की हिफ़ाज़त करता है। सुनो ऐसा करने से तुम पर बारिशें बराबर उम्दा और ज़्यादा बरसेंगी और तुम्हारी कुव्वत ताक़त में दिन दुनी रात चोगुनी बरकतें होंगे। हदीस शरीफ़ में है "जो शख़्स इस्तिग़्फ़ार को लाज़िम पकड़ ले, अल्लाह तआला उसे हर मुश्किल से नजात देता है हर तंगी से कुशादगी अता करता है और रोज़ी तो ऐसी जगह से पहुँचाता है जो ख़ुद उसके भी ख़्वाबो ख़्याल में भी न हो।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल इस्तिग़्फ़ार : 1518; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने माजा : 3819; अमलुल यौम वल्लैला : 456; अल्मुअजमुल कबीर : 10665; हाकिम : 7/262; इसकी सनद में हकम बिन मुस्अब मज्हूल रावी है (अत्तक़्रीब : 1/190; रक़म : 502)

***

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَي اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "वह कहने लगे ऐ हूद (عليه السلام)! तू हमारे पास कोई दलील तो लाया नहीं और हम सिर्फ़ तेरे कहने से अपने मअबूदों को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।(53) बल्कि हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी मअबूद के बुरे झपट्टे में आ गया है, उसने जवाब दिया कि मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तो अल्लाह के सिवा इन सबसे बेज़ार हूँ जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक बना रहे हो। (54) अच्छा! तुम सब मिलकर मेरे हक़ में बदी कर लो और मुझे बिलकुल ही मोहलत भी न दो। (55) मेरा भरोसा सिर्फ़ अल्लाह तआला पर ही है जो मेरा और तुम सबका परवरदिगार है जितने भी पैर धरने वाले हैं सबकी चोटियाँ वही थामे हुए है, यक़ीनन मेरा रब सही राह पर है।" (56)

हज़रत हूद (عليه السلام) की दावत और क़ौम का जवाब (आयत 53-56) : क़ौमे हूद ने अपने नबी की नसीहत सुनकर जवाब दिया कि आप जिस चीज़ की तरफ़ हमें बुला रहे हैं उसकी कोई दलील व हुज्जत तो

हमारे पास आप लाए नहीं। और यह हम करने से मुबर्रा हैं कि आप कहें कि अपने मअ़बूदों को छोड़ दो और हम छोड़ ही दें। न हम आपको सच्चा मानने वाले हैं, न आप पर ईमान लाने वाले। बल्कि हमारा ख़्याल तो यह है कि चूँकि तू हमें हमारे इन मअ़बूदों की इबादत से रोक रहा है और इन्हें ऐब लगाता है इसलिए झुंझलाकर उनमें से किसी की मार तुझ पर पड़ी है। तेरी अ़क़्ल हट गई है यह सुनकर अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर यही है तो सुनो मैं न सिर्फ़ तुम्हें ही बल्कि अल्लाह को भी गवाह बनाकर ऐलान करता हूँ कि अल्लाह के सिवा जिस जिसकी इबादत हो रही है सबसे बरी और बेज़ार हूँ। अब तुम ही नहीं बल्कि अपने साथ औरों को भी बुला लो और अपने उन सब झूठे मअ़बूदों को भी मिला लो। और तुमसे जो हो सके मुझे नुक़्सान पहुँचा दो। मुझे कोई मोहलत न लेने दो न मुझ पर कोई तरस खाओ। जो नुक़्सान तुम्हारे बस में हो, मुझे पहुँचाने में कमी न करो। मेरा भरोसा तो अल्लाह की ज़ात पर है वह मेरा तुम्हारा और हम सबका मालिक है नामुम्किन है कि उसकी मर्ज़ी के बग़ैर मेरा कोई कुछ भी बिगाड़ सके।

दुनियाभर के जानदार उसके क़ब्ज़े में और उसकी मिल्कियत में हैं। कोई नहीं जो उसके हुक्म से बाहर उसकी बादशाही से अलग हो। वह ज़ालिम नहीं जो तुम्हारे मंसूबे पूरे होने दे, वह सही रास्ते पर है। बन्दों की चोटियाँ उसके हाथ में हैं। मोमिन पर वह इससे भी ज़्यादा मेहरबान है जो मेहरबानी माँ बाप की औलाद पर होती है। वह करीम है उसके करम की कोई हृद नहीं इसी वजह से कुछ लोग बहक जाते हैं और ग़ाफ़िल हो जाते हैं।

हज़रत हूद (ﷺ) के इस फ़र्मान पर दोबारा ग़ौर कीजिए कि आपने आ़दियों (क़ौमे आद) के लिए अपने इस क़ौल में अल्लाह की तौहीद की बहुत सी दलीलें बयान कर दीं। बतला दिया कि जब अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नफ़ा नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता, जब उसके सिवा किसी चीज़ पर किसी का क़ब्ज़ा नहीं तो फिर वही एक मुस्तहि़क़े इबादत ठहरा और जिनकी इबादत तुम उसके सिवा कर रहे हो वह सब बातिल ठहरे। अल्लाह तआ़ला उनसे पाक है। मुल्क तसर्रुफ़ क़ब्ज़ा इख़्तियार उसी का है। सब उसी के मातह़ती (अंडर) मे हैं। उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं।

***

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا
تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً

وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۗ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ
اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ
الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۗ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝

तर्जुमा : ''पस अगर तुम रूगर्दानी कर लो तो मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा चुका जो देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था, मेरा रब तुम्हारे क़ायम मक़ाम और लोगों को कर देगा, और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, यक़ीनन मेरा परवरदिगार हर चीज़ पर निगहबान है। (57) जब हमारा हुक्म आ पहुँचा हमने हूद (عليه السلام) को और उसके मुसलमान साथियों को अपनी ख़ास रहमत से नजात अता की और हमने उन सबको सख़्त अज़ाब से बाल बाल बचा लिया। (58) यह थे आदी (क़ौमे आद) जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार कर दिया और उसके रसूलों की नाफ़र्मानी की और हर एक सरकश मुख़ालिफ़ के हुक्म की ताबेदारी की। (59) दुनिया में भी उनके पीछे लानत लगा दी गई और क़यामत के दिन भी देख लो क़ौमे आद ने अपने रब से कुफ़्र किया, हूद (عليه السلام) की क़ौम के आदियों पर लानत हो। (60) समूदियों की तरफ़ उनके भाई सालेह (عليه السلام) को भेजा, उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं, उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया है और उसी ने इस ज़मीन में तुम्हें बसाया है पस तुम उससे माफ़ी तलब करो और उसकी तरफ़ रुजूअ करो बेशक मेरा रब सबके पास ही है और है भी दुआओं का क़बूल करने वाला।'' (61)

क़ौमे आद की सरकशी (आयत 57-61) : हज़रत हूद (عليه السلام) फ़र्माते हैं कि अपना काम तो मैं पूरा कर चुका, अल्लाह की रिसालत तुम्हें पहुँचा चुका। अब अगर तुम मुँह मोड़ लो और न मानो तो तुम्हारा वबाल तुम पर ही है न कि मुझ पर, अल्लाह में कुदरत है कि वह तुम्हारी जगह उन्हें ला देगा जो उसकी तौहीद को मानें और सिर्फ़ उसी की इबादत करें। उसे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं, तुम्हारा कुफ़्र उसे कोई नुक़्सान नहीं देगा। बल्कि उसका वबाल तुम पर ही है मेरा रब बंदों पर गवाह है उनके क़ौल व फ़ेअल उसकी नज़रों में हैं। आख़िर उन पर अल्लाह तआला का अज़ाब आ गया। ख़ैरो बरकत से ख़ाली अज़ाब व सज़ा भरी हुई आँधियाँ उन पर चलने लगीं। उस वक़्त हज़रत हूद (عليه السلام) और आपकी जमाअते मुस्लिमीन अल्लाह के फ़ज़्लो करम से और उसके लुत्फ़ो रहम से नजात पा गये, सज़ाओं से बच गए। सख़्त अज़ाब उन पर से हटा लिये गए। यह थे क़ौमे आद जिन्होंने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, अल्लाह के पैग़म्बरों की बातों को न माना।

यह याद रहे कि एक नबी का नाफ़र्मान सारे नबियों का नाफ़र्मान है। यह उन ही की मानते रहे जो उनमें ज़िद्दी और सरकश थे, अल्लाह की और उसके मोमिन बन्दों की लानत उन पर बरस पड़ी, इस दुनिया में भी उनका

ज़िक्र लानत से होने लगा, और क़यामत के दिन भी मैदाने महशर में सबके सामने उन पर अल्लाह की लानत होगी और पुकार कर कहा जाएगा कि क़ौमे आद अल्लाह के मुंकिर हैं। हज़रत सुद्दी (रह.) का क़ौल है कि इनके बाद जितने नबी आए सब उन पर लानत करते आए। उनकी ज़ुबानी अल्लाह की लानतें भी उन पर होती रहीं।

हज़रत सालेह (عليه السلام) की दावते तौहीद : हज़रत सालेह (عليه السلام) क़ौमे समूद की तरफ़ अल्लाह के रसूल बनाकर भेजे गए थे। क़ौम को आपने अल्लाह की इबादत करने की और उसके सिवा दूसरों की इबादत से रुकने की नसीहत की। बतलाया कि इंसान की शुरुआती पैदाइश अल्लाह तआला ने मिट्टी से शुरु की है तुम सबके बाप आदम (अ.) इसी मिट्टी से पैदा हुए थे। उसी ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हें ज़मीन पर बसाया है कि उसमें गुज़र बसर कर रहे हो। तुम्हें अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करना चाहिए। उसकी तरफ़ झुके रहना चाहिए। वह बहुत क़रीब है और क़बूल करने वाला है।

***

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا
وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ
تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ
اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا
الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾

तर्जुमा : "वह कहने लगे, ऐ स़ालेह़ (عليه السلام)! इससे पहले तो हम तुझसे बहुत कुछ उम्मीदें लगाए हुए थे क्या तू हमें उनकी इबादतों से रोक रहा है जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते चले आए, हमें तो उस दीन में शक है जिसकी त़रफ़ तू हमें बुला रहा है, हम मुतहय्यर हैं। (62) उसने जवाब दिया कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! ज़रा बतलाओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से किसी मज़बूत़ दलील पर हुआ और उसने मुझे अपने पास की रह़मत अ़त़ा की फिर अगर मैंने उसकी नाफ़र्मानी कर ली तो कौन है जो उसके मुक़ाबले में मेरी मदद करे, तुम तो मेरा नुक़्सान ही बढ़ा रहे हो। (63) मेरी कौम वालों! यह है अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी जो तुम्हारे लिए एक मोजिज़ा (चमत्कार) है, अब तुम इसे अल्लाह की ज़मीन में खाती हुई छोड़ दो और इसे किसी त़रह़ की ईज़ा (तक्लीफ़) न पहुँचाओ वरना फ़ौरन अ़ज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा। (64) फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काटकर उसे मार डाला, इस पर स़ालेह़ (عليه السلام) ने कहा कि अच्छा! अब तुम अपने घरों में तीन दिन तक तो रह सह लो, यह वादा झूठा नहीं। (65) फिर जब हमारा फ़र्मान आ पहुँचा हमने स़ालेह़ (عليه السلام) और उन पर ईमान लाने वालों को अपने फ़ज़्ल से उससे भी बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से भी यक़ीनन तेरा परवरदिगार ही निहायत तवाना और ग़ालिब है। (66) ज़ालिमों को बड़े ज़ोर की कड़क ने आ दबोचा तो वह अपने घरों में ज़ानू के बल मुर्दा पड़े रह गए। (67) ऐसे कि गोया वह वहाँ कभी आबाद ही न थे, आगाह रहो कि क़ौमे समूद ने अपने रब से इंकार किया, सुन लो समूदियों पर फटकार है।" (68)

समूदियों (क़ौमे समूद) की अंधी तक़्लीद का ज़िक्र (आयत 62-68) : ह़ज़रत स़ालेह़ (عليه السلام) और आपकी क़ौम के बीच जो बातचीत हुई उसका बयान हो रहा है। वह कहते हैं कि तू यह बात ज़ुबान से न निकाल इससे पहले तो हमारी बहुत कुछ उम्मीदें तुझसे वाबस्ता थीं लेकिन तूने उन सब पर पानी फेर दिया और लगा हमें पुरानी रविश और बाप दादों की चाल से और पूजा पाट से हटाने। हमें तो तेरी इस नई रहबरी में बड़ा भारी शक व शुब्हा है। आपने फ़र्माया, सुनो! मैं भारी दलील पर हूँ, मेरे पास रब की निशानी है। मुझे अपनी सच्चाई पर दिली इत़्मिनान है। मेरे पास अल्लाह की रिसालत की रह़मत है। अब अगर मैं तुम्हें इसकी दावत न दूँ और अल्लाह की नाफ़र्मानी करूँ और उसकी इबादत की त़रफ़ तुम्हें न बुलाऊँ तो कौन है जो मेरी मदद कर सके और अल्लाह के अ़ज़ाबों से मुझे बचा सके? मेरा ईमान है कि मख़्लूक़ मुझे काम नहीं आ सकती। तुम मेरे लिए स़िर्फ़ बेफ़ायदा हो। सिवाए मेरे नुक़्सान के तुम और कुछ बढ़ा नहीं सकते।

इन तमाम आयतों की पूरी तफ़्सीर और समूदियों की हलाकत के और ऊँटनी के मुफ़स्सल वाक़ियात सूरह आराफ़ में बयान हो चुके हैं यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं।

***

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ
بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ
قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۰﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ
شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عَجِيْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ
عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾

तर्जुमा : "हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम (ﷺ) के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुँचे और सलाम कहा, उन्होंने भी सलाम का जवाब दिया और बग़ैर किसी देर के गाय के बच्चे का भुना हुआ गोश्त ले आया। (69) अब जो देखा कि उनके तो हाथ भी उसे नहीं लग रहे तो उन्हें अंजान पाकर दिल ही दिल में उनसे डरने लगा, उन्होंने कहा, डर नहीं! हम तो क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गए हैं। (70) उसकी बीवी जो खड़ी हुई थी वह हंस दी तो हमने उसे इस्हाक़ (ﷺ) की और इस्हाक़ (ﷺ) के पीछे याक़ूब (ﷺ) की ख़ुशख़बरी दी। (71) वह कहने लगी, आह! मेरे यहाँ कैसे औलाद हो सकती है, मैं आप पूरी बुढ़िया और यह हैं मेरे शौहर भी बहुत बड़ी उम्र के यह तो यक़ीनन बहुत बड़े ताज्जुब की बात है।(72) फ़रिश्तों ने कहा, क्या तू अल्लाह की क़ुदरत से ताज्जुब कर रही है तुम पर ऐ इस घर के लोगों! अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें नाज़िल हों, बेशक अल्लाह सज़ावारे (लायक़े) हम्दो सना और बड़ी बुज़ुर्गियों वाला है।" (73)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का फ़रिश्तों की मेहमाननवाज़ी करना (आयत 69-73) : हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के पास वह फ़रिश्ते बतौर मेहमान इंसानी सूरत में आते हैं जो क़ौमे लूत की हलाकत की ख़ुशख़बरी और हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के यहाँ फ़रज़न्द होने की बशारत लेकर अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुए हैं, वह आकर सलाम करते हैं, आप (ﷺ) उनके सलाम का जवाब देते हैं। इस लफ़्ज़ को पेश से कहने में इल्मे बयान के मुताबिक़ सबूत व दवाम पाया जाता है, सलाम के बाद ही हज़रत इब्राहीम (ﷺ) उनके सामने मेहमान-नवाज़ी पेश करते हैं। बछड़े का गोश्त जिसे गर्म पत्थरों पर सेंक लिया गया था, लाते हैं। जब देखा कि नये आये मेहमानों के हाथ तो बढ़ते ही नहीं उस वक़्त उनसे कुछ बदगुमान से हो गए और कुछ दिल में ख़ौफ़ खाने लगे। हज़रत सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि हलाकते क़ौमे लूत (ﷺ) के लिए जो फ़रिश्ते भेजे गए वह बसूरते नौजवान इंसान ज़मीन पर आए। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के घर पर उतरे आपने उन्हें देखकर बड़ी तकरीम की,

जल्दी जल्दी अपना बछड़ा लेकर उसे गर्म पत्थरों पर सेंककर ला हाज़िर किया और ख़ुद भी उनके साथ दस्तरख़्वान पर बैठ गए। आपकी बीवी साहिबा हज़रत सारा (عليها السلام) खिलाने पिलाने के काम काज में लग गईं। ज़ाहिर है कि फ़रिश्ते खाना नहीं खाते। वह खाने से रुके और कहने लगे, इब्राहीम (عليه السلام)! हम जब तक किसी खाने की क़ीमत न दे दें, खाया नहीं करते। आपने फ़र्माया, हाँ! क़ीमत दे दीजिए, उन्होंने पूछा, क्या क़ीमत है? आपने फ़र्माया, बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरु करना और खाना खाकर अल्हम्दु लिल्लाह कहना इसकी क़ीमत है। हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने हज़रत मीकाईल (عليه السلام) की तरफ़ देखा और आपस में कहा कि फ़िल वाक़ेअ यह इस क़ाबिल हैं कि अल्लाह तआला इन्हें अपना ख़लील (दोस्त) बनाए।

अब भी जो उन्होंने खाना शुरु न किया तो आपके दिल में तरह तरह के ख़्यालात आने लगे। हज़रत सारा (عليها السلام) ने देखा कि ख़ुद हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) उनके इकराम में यानी उनके खिलाने की ख़िदमत में हैं ताहम वह खाना नहीं खाते तो उन मेहमानों की उस अजीब हालत पर उन्हें बेसाख़्ता हंसी आ गयी। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को ख़ौफ़ज़दा देखकर फ़रिश्तों ने कहा, आप डरिये नहीं। अब दहशत दूर करने के लिए असली वाक़िया खोल दिया कि हम कोई इंसान नहीं, फ़रिश्ते हैं, क़ौमे लूत (عليه السلام) की तरफ़ भेजे गए हैं कि उन्हें हलाक करें। हज़रत सारा (عليها السلام) को क़ौमे लूत की हलाकत की ख़बर ने ख़ुश कर दिया। उसी वक़्त उन्हें एक दूसरी ख़ुशख़बरी भी मिली कि इस नाउम्मीदी की उम्र में तुम्हारे यहाँ बच्चा पैदा होगा। उन्हें यह भी ताज्जुब था कि जिस क़ौम पर अल्लाह का अज़ाब उतर रहा है वह पूरी ग़फ़्लत में है। अल्ग़र्ज़ फ़रिश्तों ने आपको इस्हाक़ (عليه السلام) के पैदा होने की बशारत दी। और फिर इस्हाक़ (عليه السلام) के यहाँ याक़ूब (عليه السلام) के होने की भी साथ ही ख़ुशख़बरी सुना दी।

इस आयत से इस बात पर इस्तिदलाल किया गया है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल (عليه السلام) थे क्योंकि हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) की तो बशारत दी गई थी और साथ ही उनके यहाँ भी औलाद होने की बशारत दी गई थी। यह सुनकर हज़रत सारा (عليها السلام) ने औरतों की आम आदत के मुताबिक़ उस पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि मियाँ बीवी दोनों इस बढ़े हुए बुढ़ापे में औलाद कैसी? यह तो सख़्त हैरत की बात है। फ़रिश्तों ने कहा कि अल्लाह के हुक्म में क्या हैरत? तुम दोनों को इस उम्र में ही अल्लाह तआला बेटा देगा, भले तुमसे (सारा عليها السلام से) आज तक कोई औलाद नहीं हुई, और तुम्हारे मियाँ की उम्र भी ढल चुकी है लेकिन अल्लाह की क़ुदरत में कमी नहीं। वह जो चाहे, होकर रहता है। ऐ नबी के घर वालों! तुम पर अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हैं, तुम्हें उसकी क़ुदरत में ताज्जुब न करना चाहिए। अल्लाह तआला तारीफ़ों वाला और बुज़ुर्ग है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि सहाबा किराम (रज़ि.) ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमने आप पर सलाम भेजना तो सीख लिया जबकि आप पर दुरूद कैसे भेजा जाए तो आपने फ़र्माया, कहो "अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम् मजीद, व बारिक अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद" (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब अस्सलातु अलन्नबी (ﷺ) : 6357; सहीह मुस्लिम : 406; अबूदाऊद : 976; तिर्मिज़ी : 483; इब्ने माजा : 904; दारमी : 1316; अहमद : 4/241; मुस्नद तयालिसी : 1061)

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝٧٤ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ
لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝٧٥ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ
عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝٧٦

तर्जुमा : "फिर जब इब्राहीम (عليه السلام) का डर जाता रहा, और उनको लड़के की बशारत (ख़ुशख़बरी) मिल गई तो हमसे लूत (عليه السلام) की क़ौम के बारे में बहस करने लगे। (74) बेशक इब्राहीम (عليه السلام) बहुत बर्दाश्त करने वाले बड़े नर्मदिल और अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले थे। (75) हमने कहा, ऐ इब्राहीम (عليه السلام)! इस बात को जाने दो, यक़ीनन यह तुम्हारे रब का हुक्म है जो आ चुका है और अब उन पर एक ऐसा अ़ज़ाब आ पड़ेगा जिसे कोई हटा नहीं सकता।" (76)

(आयत 74-76) : मेहमानों के खाना न खाने की वजह से हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के दिल में जो दहशत समायी थी, उनका हाल खुल जाने पर वह दूर हो गयी, फिर आपने अपने यहाँ लड़का होने की ख़ुशख़बरी भी सुन ली। और यह भी मालूम हो गया कि यह फ़रिश्ते क़ौमे लूत की हलाकत के लिए भेजे गए हैं, तो आप फ़र्माने लगे कि अगर किसी बस्ती में तीन सौ मोमिन हों क्या फिर भी वह बस्ती हलाक की जाएगी? हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) और उनके साथियों ने जवाब दिया कि नहीं! फिर पूछा कि अगर चालीस हों? जवाब मिला, फिर भी नहीं। पूछा कि अगर तीस हों? कहा गया फिर भी नहीं। यहाँ तक कि तादाद घटाते घटाते पाँच की बाबत पूछा। फ़रिश्तों ने यही जवाब दिया फिर एक ही की निस्बत सवाल किया और यही जवाब मिला तो आपने फ़र्माया उस बस्ती को हज़रत लूत (عليه السلام) की मौजूदगी में तुम कैसे हलाक करोगे? फ़रिश्तों ने कहा, हमें वहाँ हज़रत लूत (عليه السلام) की मौजूदगी का इल्म है उन्हें और उनकी अहल को सिवाए उनकी बीवी के हम बचा लेंगे। (29/अ़न्कबूत : 32) अब आपको इत्मिनान हुआ और ख़ामोश हो गए। (तब्री : 15/403) हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) बुर्दबार, नर्मदिल और रुजूअ़ रहने वाले थे। इस आयत की तफ़्सीर पहले गुज़र चुकी है। अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर (عليه السلام) की बेहतरीन सिफ़तें बयान की हैं। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की इस बातचीत और सिफ़ारिश के जवाब में फ़र्माने बारी तआ़ला हुआ कि अब आप इससे चश्मपोशी इख़्तियार कीजिए, अल्लाह की क़ज़ा (फैसला) नाफ़िज़ व जारी होगी, अब अ़ज़ाब आएगा और लौटाया न जाएगा।

***

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾
وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۗ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۗ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ
بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۗ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ
﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾

तर्जुमा : "जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत (عليه السلام) के पास पहुँचे तो वह उनकी वजह से बहुत ग़मगीन हो गया और दिल ही दिल में कुढने लगे और कहने लगे कि आज का दिन बड़ी मुसीबत का दिन है।(77) उसकी क़ौम दौड़ती हुई उसके पास आ पहुँची वह तो पहले ही से बदकारियों में मुब्तला थी, लूत (عليه السلام) ने कहा, ऐ क़ौम के लोगों! यह हैं मेरी बेटियाँ जो तुम्हारे लिए बहुत ही पाकीज़ा हैं, अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुममें एक भी भला आदमी नहीं।(78) उन्होंने जवाब दिया कि तू बख़ूबी जानता है कि हमें तो लड़कियों की कोई ज़रूरत नहीं, तू हमारी अस़ल चाहत से बख़ूबी वाक़िफ़ है।" (79)

क़ौमे लूत (عليه السلام) का किरदार (आयत 77-79) : हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को यह फ़रिश्ते अपना भेद बताकर वहाँ से चल दिए और हज़रत लूत (عليه السلام) के पास उनकी ज़मीन में या उनके मकान में पहुँचे। अम्रद ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में थे ताकि क़ौमे लूत का पूरा इम्तिहान हो जाए। हज़रत लूत (عليه السلام) उन मेहमानों को देखकर क़ौम की हालत सामने रखकर सटपटा गए, दिल ही दिल में पेचताब (बेचैन होने) खाने लगे कि अगर उन्हें मेहमान बताता हूँ तो मुम्किन है ख़बर पाकर लोग चढ़ दौड़ें और अगर मेहमान नहीं रखता तो यह उन ही के हाथ पड़ जाएँगे। ज़ुबान से भी निकल गया कि आज का दिन बड़ा हेबतनाक दिन है। क़ौम वाले अपनी शरारत से बाज़ नहीं आएँगे। मुझमें उनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं, क्या होगा? क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, हज़रत लूत (عليه السلام) अपनी ज़मीन में थे कि यह फ़रिश्ते बसूरते इंसान आए और उनके मेहमान बने। शर्माशर्मी इंकार तो न कर सके और उन्हें लेकर घर चले। रास्ते में सिर्फ़ इस निय्यत से कि यह अब भी वापिस चले जाएँ उनसे कहा कि वल्लाह! यहाँ के लोगों से ज़्यादा बुरे और ख़बीस लोग और कहीं के नहीं हैं, कुछ दूर जाकर फिर यही कहा, ग़र्ज़ घर पहुँचने तक चार बार यही कहा।

फ़रिश्तों को अल्लाह का हुक्म भी यही था कि जब तक उनका नबी उनकी बुराई न बयान करे उन्हें हलाक न करना। (तब्री : 15/408) सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के पास से चलकर दोपहर को यह फ़रिश्ते नहरे सदूम पहुँचे वहाँ हज़रत लूत (عليه السلام) की साहबज़ादी जो पानी लेने गई थीं मिल गईं। उनसे उन्होंने पूछा कि यहाँ हम कहीं ठहर सकते हैं। उसने कहा कि आप यहीं रुकिए मैं वापिस आकर जवाब

दूँगी। उन्हें डर लगा कि अगर क़ौम वालों के हाथ लग गए तो इनकी बड़ी बेइ़ज़्ज़ती होगी। यहाँ आकर वालिद साह़ब से ज़िक्र किया कि शहर के दरवाज़े पर चंद परदेसी नौ उ़म्र लोग हैं, उनके जैसे आज तक मैंने नहीं देखे। जाओ और उन्हें ठहराओ वरना क़ौम वाले उन्हें सताएँगे। इस बस्ती के लोगों ने ह़ज़रत लूत़ (عليه السلام) से कह रखा था कि देखो किसी बाहर वाले को तुम अपने यहाँ ठहराया न करो, हम आप सबकुछ कर लिया करेंगे। आपने जब यह ह़ालत सुनी तो जाकर चुपके से उन्हें अपने घर ले आए। किसी को कानों कान ख़बर न होने दी। मगर आपकी बीवी जो क़ौम से मिली हुई थी, उसी के ज़रिये बात बाहर निकल गयी। अब क्या था, दौड़े भागे आ गए, जिसे देखो ख़ुशियाँ मनाता जल्दी जल्दी लपकता चला आ रहा था, उनकी तो यह ख़ू ख़स्लत हो गई थी, इस स्याहकारी की तो गोया उन्होंने आ़दत बना ली थी। उस वक़्त अल्लाह के नबी (عليه السلام) उन्हें नसीह़त करने लगे कि तुम इस बुरी ख़स्लत को छोड़ो। अपनी ख़्वाहिशें औ़रतों से पूरी करो (बनाती) यानी मेरी लड़कियाँ, इसलिए फ़र्माया कि हर नबी अपनी उम्मत का गोया बाप होता है। (त़ब्री : 15/414) क़ुरआने करीम की और आयत में है कि उस वक़्त उन्होंने कहा था कि हम तो पहले ही आपको मना कर चुके थे। (15/ह़िज्र : 70) कि किसी को अपने यहाँ न ठहराया करो।

ह़ज़रत लूत़ (عليه السلام) ने उन्हें समझाया और दुनिया व आख़िरत की भलाई उन्हें समझाई और कहा कि औ़रतें ही इस बात के लिए मौज़ूँ (मुनासिब) हैं, इनसे निकाह़ करके अपनी ख़्वाहिश पूरी करना ही पाक काम है। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं, यह न समझा जाए कि आपने अपनी लड़कियों की निस्बत यह फ़र्माया था नहीं! बल्कि नबी अपनी पूरी उम्मत का गोया बाप होता है। क़तादा (रह़.) वग़ैरह से भी यही मरवी है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) फ़र्माते हैं, यह भी न समझना चाहिए कि ह़ज़रत लूत़ (عليه السلام) ने औ़रतों से बेनिकाह़ मिलाप करने को फ़र्माया हो। नहीं! मत़लब आपका उनसे निकाह़ कर लेने के हुक्म में था। फ़र्माते हैं अल्लाह तआ़ला से डरो, मेरा कहा मानो, औ़रतों की त़रफ़ रग़बत करो। उनसे निकाह़ करके ह़ाजत पूरी करो। मर्दों की त़रफ़ इस रग़बत से न आओ। और ख़ुसूसन यह तो मेरे मेहमान हैं। मेरी इ़ज़्ज़त का ख़्याल करो क्या तुममें एक भी समझदार, नेक राह वाला, भला आदमी नहीं? उसके जवाब में उन सरकशों ने कहा कि हमें औ़रतों से कोई सरोकार नहीं। यहाँ भी (बनातिक) यानी तेरी लड़कियाँ के लफ़्ज़ से मुराद क़ौम की औ़रतें हैं। और तुझे मालूम है कि हमारा इरादा क्या है? यानी हमारा इरादा इन लड़कों से मिलने का है। फिर झगड़ा और नसीह़त बेकार है।

***

قَالَ لَوْ اَنَّ لِیْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِیْۤ اِلٰی رُكْنٍ شَدِیْدٍ ﴿۸۰﴾ قَالُوْا یٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
یَّصِلُوْۤا اِلَیْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّیْلِ وَ لَا یَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ
اِنَّهٗ مُصِیْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَیْسَ الصُّبْحُ بِقَرِیْبٍ ﴿۸۱﴾

तर्जुमा : "लूत (ﷺ) ने कहा, काश! कि मुझमें तुमसे मुक़ाबला करने की ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत आसरे की पनाह में होता। (80) अब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ लूत (ﷺ)! हम तेरे परवरदिगार के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, नामुम्किन कि यह तुझ तक पहुँच जाएँ पस तू अपने घरवालों को ले के कुछ रात रहे निकल जा, तुममें से किसी को मुड़कर भी न देखना चाहिए सिवाए तेरी बीवी के कि उसे भी वही पहुँचने वाला है जो इन सबको पहुँचेगा, यक़ीनन इनके वादे का वक़्त सुबह का है, क्या सुबह बिलकुल नज़दीक ही नहीं।"(81)

क़ौमे लूत का ख़िलाफ़े फ़ित्रत काम (आयत 80, 81) : हज़रत लूत (ﷺ) ने जब देखा कि मेरी नसीहत उन पर असर नहीं करती तो उन्हें धमकाया कि अगर मुझमें ताक़त कुव्वत होती या मेरा कुंबा क़बीला मज़बूत होता तो मैं तुम्हें तुम्हारी इस शरारत का मज़ा चखा देता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक हदीस में फ़र्माया है "अल्लाह तआला की रहमत हो हज़रत लूत (ﷺ) पर कि वह ज़ोरावर क़ौम की पनाह लेना चाहते थे। मुराद इससे ज़ाते बारी तआला अज़्ज़ व जल्ल है। आपके बाद फिर जो पैग़म्बर भेजा गया वह अपनी क़ौमी सर्वत में ही भेजा गया।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब (व लूतन इज़ क़ाला लि क़ौमिही अतअतूनल फ़ाहिशत) : 3375; सहीह मुस्लिम : 151; मुख़्तसरन ; तिर्मिज़ी : 3116; अहमद : 2/322; मुश्किलुल आसार : 330; इब्ने हिब्बान : 2606) इनकी अफ़सुर्दगी और कामिल मलाल और तंगदिली के वक़्त फ़रिश्तों ने अपने तौर पर ज़ाहिर कर दिया कि हम अल्लाह के भेजे हुए हैं। यह लोग हम तक या आप तक पहुँच ही नहीं सकते। आप रात के आख़िरी हिस्से में अपने अहलो अयाल को लेकर यहाँ से निकल जाइए। ख़ुद उन सबके पीछे रहिए। और सीधे अपनी राह चले जाइए। क़ौम वालों की आह व बुका पर उनके चीख़ने चिल्लाने पर तुम्हें मुड़कर भी न देखना चाहिए फिर इस इस्बात से हज़रत लूत (ﷺ) की बीवी को अलग कर लिया कि वह इस हुक्म की पाबंदी न कर सकेगी। वह अज़ाब के वक़्त क़ौम की हाय वाय सुनकर मुड़कर देखेगी इसलिए कि अल्लाह की क़ज़ा में उसका भी उनके साथ हलाक होना तै हो चुका है।

एक क़िरअत में (इल्लम्रअतुक) त की पेश से भी है जिन लोगों के नज़दीक पेश और ज़बर दोनों जाइज़ हैं उनका बयान है कि आपकी बीवी भी यहाँ से निकलने में आपके साथ थी लेकिन अज़ाब के नाज़िल होने पर क़ौम का शोर सुनकर सब्र न कर सकी। मुड़कर उनकी तरफ़ देखा और ज़ुबान से निकल गया कि हाय मेरी क़ौम! उसी वक़्त आसमान से एक पत्थर उस पर भी आया और उसका ढेर हो गया।

हज़रत लूत (ﷺ) की मज़ीद तशफ़्फ़ी के लिए फ़रिश्तों ने उस ख़बीस क़ौम की हलाकत के वक़्त की नज़दीकी भी बयान कर दी कि सुबह होते ही यह तबाह हो जाएगी और सुबह अब बिलकुल क़रीब है, यह कोरे बातिन आपका घर घेरे हुए थे और हर तरफ़ से लपकते हुए आ पहुँचे थे। हज़रत लूत (ﷺ) दरवाज़े पर खड़े हुए उन लूतियों को रोक रहे थे जब किसी तरह वह न माने और हज़रत लूत (ﷺ) आज़रदा ख़ातिर से होकर तंग आ गए, उस वक़्त जिब्राईल (ﷺ) घर में से निकले और उनके मुँह पर अपना पर मारा जिससे उनकी आँखें अंधी हो गईं। (54/क़मर : 37) हज़रत हुज़ेफ़ा (रज़ि.) का बयान है कि ख़ुद हज़रत इब्राहीम (ﷺ)

भी उन लोगों के पास आते, उन्हें समझाते कि देखो! अल्लाह का अ़ज़ाब न ख़रीदो, मगर उन्होंने ख़लीलुल्लाह की भी न मानी। यहाँ तक कि अ़ज़ाबों के आने का कुदरती वक़्त आ पहुँचा। फ़रिश्ते हज़रत लूत (عليه السلام) के पास आए आप उस वक़्त अपने खेत में काम कर रहे थे, उन्होंने कहा कि आज की रात हम आपके मेहमान हैं, हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) को फ़र्माने इलाही हो चुका था कि जब तक हज़रत लूत (عليه السلام) तीन मर्तबा उनकी बदचलनी की गवाही न दे लें, उन पर अ़ज़ाब न किया जाए। आप जब उन्हें लेकर चले तो चलते ही ख़बर दी कि यहाँ के लोग बड़े बुरे हैं। यह यह बुराई उनमें घुसी हुई है, कुछ दूर और जाने के बाद दोबारा कहा कि क्या तुम्हें इस बस्ती के लोगों की बुराई की ख़बर नहीं? मेरे इल्म में तो इस रूए ज़मीन पर इनसे ज़्यादा बुरे लोग नहीं। आह! मैं तुम्हें कहाँ ले जाऊँ? मेरी क़ौम तो तमाम मख़्लूक़ से बदतर है, उस वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़रिश्तों से कहा, देखो! दो मर्तबा यह कह चुके। जब उन्हें लेकर आप अपने घर के दरवाज़े पर पहुँचे तो रंज व अफ़सोस से रो दिए और कहने लगे, मेरी क़ौम तमाम मख़्लूक़ से बदतर है। तुम्हें क्या मालूम नहीं कि यह किस बुराई में मुब्तला हैं, रूए ज़मीन पर कोई बस्ती इस बस्ती से बुरी नहीं। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने फिर फ़रिश्तों से फ़र्माया, देखो! तीन मर्तबा यह अपनी क़ौम की बदचलनी की शहादत दे चुके, याद रखना अब अ़ज़ाब साबित हो चुका।

घर में गए और यहाँ से आपकी बुढ़िया बीवी ऊँची जगह पर चढ़कर कपड़ा हिलाने लगी, जिसे देखते ही बस्ती के बदकार दौड़ पड़े। पूछा, क्या बात है, उसने कहा लूत (عليه السلام) के यहाँ मेहमान आए हैं, मैंने तो उनसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और उनसे ज़्यादा ख़ुश्बू वाले लोग कभी नहीं देखे।

अब क्या था, यह ख़ुशी ख़ुशी मुट्ठियाँ बंद किए दौड़ते भागते हज़रत लूत (عليه السلام) के घर गए। चारों तरफ़ से आपके घर को घेर लिया। आपने उन्हें क़सम दीं, नसीहतें कीं, फ़र्माया कि औरतें बहुत हैं लेकिन वह अपनी शरारत और अपने बुरे इरादे से बाज़ न आए, उस वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने अल्लाह तआ़ला से उनके अ़ज़ाब की इजाज़त चाही, अल्लाह की जानिब से इजाज़त मिल गयी। आपने असली सूरत का पर खोल दिया। आपके दो पर हैं जिन पर मोतियों का जड़ाव है। आपके दाँत साफ़ चमकते हुए हैं आपकी पेशानी ऊँची और बड़ी है। मरजान की तरह दाने हैं जो लूअ लूअ हैं और आपके पैर सब्ज़ी की तरह हैं।

हज़रत लूत (عليه السلام) से आपने फ़र्मा दिया कि हम तो तेरे परवरदिगार के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, यह लोग तुझ तक पहुँच नहीं सकते, आप इस दरवाज़े से निकल जाएँ, यह कहकर उनके मुँह पर अपना पर मारा जिससे वह अंधे हो गए, रास्तों तक को नहीं पहचान सकते थे। हज़रत लूत (عليه السلام) अपने अहल को लेकर रातों रात चल दिए, यही अल्लाह का हुक्म भी था, मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.), क़तादा (रह.), सुद्दी (रह.) वग़ैरह का यही बयान है।

***

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ

﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾

तर्जुमा : ''फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने उस बस्ती को नीचे ऊपर कर दिया, ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया और उस पर कंकरीले पत्थर बरसाये जो तह-ब-तह थे। (82) निशानदार थे तेरे रब की तरफ़ से और वह उन ज़ालिमों से कुछ भी दूर न थे'' (83)

क़ौमे लूत पर अल्लाह तआला का अज़ाब (आयत 82, 83) : सूरज के निकलने के वक़्त अल्लाह का अज़ाब उन पर आ गया। उनकी बस्ती सदूम नामी तहो-बाला हो गयी। अज़ाब ने ऊपर तले से ढाँक लिया। आसमान से पत्थर पक्की मिट्टी के उन पर बरसने लगे, जो सख़्त और वज़नी और बहुत बड़े-बड़े थे। सहीह बुख़ारी में सिज्जीन सिज्जील दोनों एक ही हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतु हूद, बाब क़ौलुहू (वकाना अर्शुहू अलल माइ) : 4684) मन्ज़ूद से मुराद पे दर पे, तह ब तह एक के बाद एक के हैं। उन पत्थरों पर क़ुदरती तौर पर उन लोगों के नाम लिखे हुए थे जिसके नाम का पत्थर था उसी पर गिरता था, वह मिस्ल तौक़ के थे जो सुर्ख़ी में डूबे हुए थे। यह उन शहरियों पर भी बरसे और यहाँ के जो लोग और गाँव गोठ में थे, उन पर भी वहीं गिरे। उनमें से जो जहाँ था वहीं पत्थर से हलाक किया गया। कोई खड़ा हुआ किसी जगह से बातें कर रहा है, वहीं पत्थर आसमान से आया और उसे हलाक कर गया। ग़र्ज़ उनमें से एक भी न बचा। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने उन सबको जमा करके उनके मकानात और मवेशियों समेत ऊँचा उठा लिया यहाँ तक कि उनके कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें आसमान के फ़रिश्तों ने सुन लीं आप अपने दाहिने पर के किनारे पर उनकी बस्ती को उठाये हुए थे। फिर उन्हें ज़मीन पर उलट दिया, एक को दूसरे से टकरा दिया और सब एक साथ ग़ारत हो गए। इक्के दुक्के जो रह गए थे उनके भेजे आसमानी पत्थरों ने फोड़ दिए और सिर्फ़ बेनामो-निशान कर दिए गए। मज़्कूर है कि उनकी चार बस्तियाँ थीं हर बस्ती में एक लाख आदमियों की आबादी थी। एक रिवायत में है तीन बस्तिया थीं। बड़ी बस्ती का नाम सदूम था। यहाँ कभी कभी ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम (ﷺ) भी आकर वअ़ज़ व नसीहत फ़र्माया करते थे, फिर फ़र्माता है यह चीज़ें कुछ उनसे दूर न थीं। सुनन की हदीस में है ''किसी को अगर तुम लवातत करता हुआ पाओ तो ऊपर वाले नीचे वाले दोनों को क़त्ल कर दो।'' (अबूदाऊद, किताबुल हुदूद, बाब फ़ीमन अमिला अमला क़ौमि लूत : 4462; तिर्मिज़ी : 1456; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 2561; हाकिम : 4/255; अहमद : 1/300; हिल्यतुल औलिया : 3/343)

***

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَا قَوْمِ
أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

तर्जुमा : "हमने मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (अ.) को भेजा, उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, तुम नाप-तोल में भी कमी न करो, मैं तो तुम्हें आसूदा हाल देख रहा हूँ और मुझे तुम पर घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर भी है। (84) ऐ मेरी क़ौम वालों! नाप तौल इंसाफ़ के साथ पूरी पूरी करो, लोगों को उनकी चीज़ें कम न दो और ज़मीन में फ़साद और ख़राबी न मचाओ। (85) अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ नफ़ा तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम ईमानदार हो, मैं तुम पर निगहबान दारोग़ा नहीं हूँ।" (86)

हज़रत शुऐब (عليه السلام) और दावते तौहीद (आयत 84-86) :अरब का एक क़बीला जो हिजाज़ व शाम के बीच मआन के क़रीब रहता था उनके शहरों का नाम और उनका नाम मदयन था। उनकी तरफ़ अल्लाह तआला के नबी हज़रत शुऐब (عليه السلام) भेजे गए। आप उनमें शरीफ़ुन्नसब और आला ख़ानदान के थे और उन ही में से थे, इसीलिए (अख़ाहुम) के लफ़्ज़ से बयान किया यानी उनके भाई। आपने भी अम्बिया की आदत और सुन्नत और अल्लाह के पहले और ताकीदी हुक्म के मुताबिक़ अपनी क़ौम को अल्लाह तआला वहदहू ला शरीका लहू की इबादत करने का हुक्म दिया। साथ ही नाप तोल की कमी से रोका कि किसी का हक़ न मारो और अल्लाह का यह एहसान याद दिलाया कि उसने तुम्हें फ़ारिगुल बाल और आसूदा हाल कर रखा है। और अपना डर ज़ाहिर किया कि अपनी मुश्रिकाना रविश और ज़ालिमाना हरकत से अगर बाज़ न आओगे तो तुम्हारी यह अच्छी हालत बदहाली में बदल जाएगी।

पहले तो अपनी क़ौम को नाप तोल की कमी से रोका। अब लेन देन के वक़्त अदलो इंसाफ़ के साथ पूरे पूरे नाप तोल का हुक्म देते हैं और ज़मीन में फ़साद और तबाहकारी करने को मना करते हैं उनमें रहज़नी और डाके के मारने की बुरी ख़स्लत (आदत) भी थी। लोगों के हक़ मारकर आप नफ़ा उठाने से अल्लाह का दिया हुआ नफ़ा बहुत बेहतर है। अल्लाह की यह वसिय्यत तुम्हारे लिए ख़ैरियत लिए हुए है। अज़ाब से जैसे हलाकत होती है उसके मुक़ाबले में रहमत से बक़िय्यत होती है। ठीक तोल कर पूरा नापकर हलाल से जो नफ़ा मिले उसी में बरकत होती है। ख़बीस व तय्यिब में क्या मसावात? (5/माइदा : 100) देखो मैं तुम्हें हर वक़्त देख नहीं रहा। तुम्हें बुराईयों का तर्क और नेकियों का काम अल्लाह ही के लिए करना चाहिए न कि दुनियावी दिखावे के लिए।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَأْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۗ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۗ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۗ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : ''उन्होंने जवाब दिया कि ऐ शुऐब (عليه السلام)! क्या तेरी तिलावत तुझे यही हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादों के मअ़बूदों को छोड़ दें और हम अपने मालों में जो कुछ चाहें उसका करना भी छोड़ दें, तू तो बड़ा ही बावक़ार और नेक चलन आदमी है। (87) कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से ज़ाहिर दलील लिए हुए हूँ और उसने मुझे अपने पास से बेहतरीन रोज़ी दे रखी हो, मेरा यह इरादा बिलकुल नहीं कि तुम्हारा ख़िलाफ़ करके ख़ुद उस चीज़ की तरफ़ झुक जाऊँ जिससे तुम्हें रोक रहा हूँ। मेरा इरादा तो अपनी ताक़त भर इस्लाह करने का ही है मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की मदद से है उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ।'' (88)

शुऐब (عليه السلام) को क़ौम का जवाब (आयत 87,88) : हज़रत आमश (रह.) फ़र्माते हैं (सलात) से मुराद यहाँ क़िरअत है वह लोग तन्ज़िया तौर पर कहते हैं कि वाह आप अच्छे रहे कि आपको आपकी क़िरअत ने हुक्म दिया कि हम बाप दादों की रविश को छोड़कर अपने पुराने मअ़बूदों की इबादत से दस्तबरदार हो जाएँ। यह और भी लुत्फ़ है कि हम अपने माल के भी मालिक न रहे कि जिस तरह जो चाहें उसमें करें धरें, किसी को नाप तोल में कम न दें। हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं, वल्लाह! वाक़िया यही है कि हज़रत शुऐब (عليه السلام) की नमाज का हुक्म यही था कि आप उन्हें ग़ैरुल्लाह की इबादत और मख़लूक़ के हुक़ूक़ के ग़सब से रोकें। (तब्री : 15/451) सूरी (रह.) फ़र्माते हैं उनके इस क़ौल का मतलब यह है कि जो हम चाहें अपने मालों में करें, यह है कि ज़कात क्यूँ दें? अल्लाह के नबी (ﷺ) को उनका हलीम व रशीद कहना अज़्राहे मज़ाक़ व हिक़ारत था। (तब्री : 15/453)

हज़रत शुऐब (عليه السلام) का जवाब : आप अपनी क़ौम से फ़र्माते हैं कि देखो! मैं अपने रब की तरफ़ से किसी दलील व हुज्जत और बसीरत पर क़ायम हूँ और उसी की तरफ़ तुम्हें बुला रहा हूँ। उसने अपनी मेहरबानी से मुझे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है यानी नबुव्वत या रिज़्क़े हलाल या दोनों मेरी रविश तुम यह न पाओगे कि तुम्हें तो भली बात का हुक्म देता हूँ और ख़ुद तुमसे छुपकर उसके ख़िलाफ़ करूँ। मेरी मुराद तो अपनी ताक़त के मुताबिक़ इस्लाह करनी है। हाँ! मेरे इरादे की कामयाबी अल्लाह के हाथ है। उसी पर मेरा भरोसा और तवक्कल है और उसी की जानिब रुजूअ तवज्जा और झुकना है। मुस्नद इमाम अहमद में है कि हकीम बिन मुआविया (रह.) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उसके भाई मालिक ने कहा कि ऐ मुआविया! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

मेरे पड़ोसियों को गिरफ़्तार कर रखा है तुम आप (ﷺ) के पास जाओ। आपसे तुम्हारी बातचीत भी हो चुकी है और तुम्हें आप (ﷺ) पहचानते भी हैं। पस मैं उसके साथ चला, उसने कहा कि मेरे पड़ोसियों को आप रिहा कर दीजिए वह मुसलमान हो चुके थे, आपने उससे चेहरा फेर लिया। वह ग़ज़बनाक होकर उठा खड़े हुए और कहने लगे वल्लाह! अगर आप (ﷺ) ने यह कहा तो लोग तो कहते हैं कि तू हमें किसी अम्र का हुक्म देता है और तू आप उसका ख़िलाफ़ करता है। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्या लोगों ने ऐसी बात ज़ुबान से निकाली है? अगर मैं ऐसा करूँ तो उसका वबाल मुझ पर ही है। उन पर तो कोई चीज़ नहीं जाओ उसके पड़ोसियों को छोड़ दो।''(अह्मद : 4/447; अबूदाऊद, किताबुल क़ज़ाअ, बाब फ़िद्दीनि हल युह्बसु बिही : 3631; व सनदुहू ह्सन; ह्राकिम : 3/642; इसकी सनद ह्कीम बिन मुआविया की वजह से ह्सन दर्जा की है। देखिए (अल्मौसूअतुल ह्दीसिया : 33/218) और रिवायत में है कि उसकी क़ौम के चंद लोग किसी शुब्हा में गिरफ़्तार थे। उस पर क़ौम का एक आदमी ह्राज़िर हुआ, उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे। उसने कहा कि लोग कहते हैं कि आप (ﷺ) किसी चीज़ से रोकते हैं और ख़ुद उसे करते हैं। आप (ﷺ) ने समझा नहीं इसलिए पूछा कि ''लोग क्या कहते हैं?'' ह्ज़रत बहज़ बिन ह्कीम (रह्.) के दादा कहते हैं, मैंने बीच में बोलना शुरू कर दिया कि अच्छा है,•आप (ﷺ) के कान में यह अल्फ़ाज़ न पड़ें, कहीं ऐसा न हो कि आप (ﷺ) के मुँह से मेरी क़ौम के लिए कोई बद्दुआ निकल जाए कि फिर उन्हें फ़लाह्र न मिले लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) बराबर उसी कोशिश में रहे यहाँ तक कि आप (ﷺ) ने उसकी बात समझ ली और फ़र्माने लगे, ''क्या उन्होंने ऐसी बात ज़ुबान से निकाल दी! या उनमें से कोई इसका क़ाइल है? वल्लाह! अगर मैं ऐसा करूँ तो उसका बोझ मेरे ज़िम्मे है, उन पर कुछ नहीं, उसके पड़ोसियों को छोड़ दो।'' (अह्मद : 5/2; अबूदाऊद, किताबुल क़ज़ाअ, बाब फ़िद्दीनि हल युह्बसु : 3630; व सनदुहू ह्सन; तिर्मिज़ी : 1417) इसी क़बील (तरह) से वह ह्दीस भी है जिसे मुस्नद अह्मद में लाए हैं कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जब तुम मेरी जानिब से कोई ऐसी ह्दीस सुनो कि तुम्हारे दिल उसका इंकार करें और तुम्हारे बदन और बाल उससे अलग रहें और तुम समझ लोगे कि वह तुमसे बहुत दूर है तो मैं उससे इससे भी ज़्यादा दूर हूँ।''(अह्मद : 5/425; वसनदुहू स़ह्रीह्; मुस्नद बज़्ज़ार : 187; इब्ने ह्रिब्बान : 63) इसकी इस्नाद सही है।

ह्ज़रत मसरूक़ (रह्.) कहते हैं कि एक औरत ह्ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास आयी और कहने लगी, क्या आप बालों में बाल मिलाने को मना करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! उसने कहा, आपके घर की कुछ औरतें तो ऐसा करती हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर ऐसा हो तो मैंने अल्लाह के नेक बंदे की वसिय्यत की ह्रिफ़ाज़त नहीं की। मेरा इरादा वह नहीं कि जिस चीज़ से तुम्हें रोकूँ उसके ख़िलाफ़ ख़ुद आप करूँ। (अह्मद : 1/415; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; व ह्दीसे बुख़ारी व मुस्लिम युग़्नी अ़न्हू) ह्ज़रत अबू सुलेमान स़बी (रह्.) कहते हैं कि हमारे पास अमीरुल मोमिनीन ह्ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह्.) के रिसाले आते थे जिनमें हुक्म अह्काम और मुमानिअ़त लिखे होते थे और आख़िर में यह हुआ करता था कि मैं भी इसमें वही हूँ जो अल्लाह के नेक बन्दे ने फ़र्माया कि मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही के फ़ज़्ल से है उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की त़रफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ
اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ
رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا
ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ
عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

तर्जुमा : "मेरी क़ौम के लोगों ! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरी मुख़ालिफ़त में आकर उन अ़ज़ाबों के लिए आमादा हो जाओ जो क़ौमे नूह (عليه السلام) और क़ौमे हूद (عليه السلام) और क़ौमे स़ालेह़ (عليه السلام) को पहुँचे हैं, और क़ौमे लूत़ (عليه السلام) तो तुमसे कुछ दूर नहीं। (89) तुम अपने रब से इस्तिग़फ़ार करो और उसकी त़रफ़ झुक जाओ यक़ीन मानो कि मेरा रब बड़ी मेहरबानी वाला और बहुत मुहब्बत करने वाला है। (90) उन्होंने कहा, शुऐ़ब (عليه السلام)! तेरी अक्सर बातें तो हमारी समझ में ही नहीं आतीं और हम तो तुझे अपने अंदर बहुत कमज़ोरी की ह़ालत में पाते हैं अगर तेरे क़बीले का ख़याल न होता तो हम तो तुझे संगसार कर देते, हम तो तुझे कोई हैसियत वाली हस्ती नहीं गिनते।(91) उसने जवाब दिया कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! क्या तुम्हारे नज़दीक मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी ज़्यादा इ़ज़्ज़त रखने वाले हैं कि तुमने उसे पीठ पीछे डाल रखा है यक़ीनन मेरा परवरदिगार जो कुछ तुम कर रहे हो सबको घेरे हुए है।"(92)

(आयत 89-92) : फ़र्माते हैं कि मेरी अ़दावत (दुश्मनी)और बुग़्ज़ में आकर तुम अपने कुफ़्र पर और अपनी गुनहगारियों पर जम न जाओ वरना तुम्हें वह अ़ज़ाब पहुँचेगा जो तुमसे पहले ऐसे कामों के करने वालों को पहुँचा है। ख़ुसूसन क़ौमे लूत़ जो तुमसे क़रीब ज़माने में ही गुज़री है और क़रीब जगह में है। तुम अपने गुज़िश्ता गुनाहों की माफ़ी मांगो। आगे के लिए गुनाहों से तौबा कर लो। ऐसा करने वालों पर मेरा रब बहुत ही मेहरबान हो जाता है। और उनको अपना प्यारा बना लेता है। अबू लैला कुंदी (रह़.) कहते हैं कि मैं अपने मालिक का जानवर थामे खड़ा था लोग ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के घर को घेरे हुए थे। आपने ऊपर से सर बुलंद किया और यही आयत तिलावत की और फ़र्माया कि मेरी क़ौम के लोगों ! मुझे क़त्ल न करो, तुम इस त़रह़ थे फिर आपने अपने दोनों हाथों की उँगलियाँ एक दूसरी में डालकर दिखाईं।

शुऐ़ब (عليه السلام) की क़ौम की हठधर्मी : क़ौमे मदयन ने कहा कि ऐ शुऐ़ब (عليه السلام)! आपकी अक्सर बातें हमारी समझ में तो आती नहीं। और ख़ुद आप भी हममें बेइंतिहा कमज़ोर हैं। सईद (रह़.) वग़ैरह का क़ौल है

कि आपकी निगाह कम थी, थे आप बहुत ही साफ़। यहाँ तक कि आपको ख़तीबुल अम्बिया का लक़ब हासिल था। (तब्री : 15/458) सुद्दी (रह.) कहते हैं इस वजह से कमज़ोर कहा गया है कि आप अकेले ही थे। मुराद इससे आपकी हक़ारत थी। इसलिए कि आपके कुंबे वाले भी आपके दीन पर न थे, कहते हैं कि अगर तेरी बिरादरी का लिहाज़ न होता तो हम तो पत्थर मार मारकर तेरा क़िस्सा ही ख़त्म कर देते या यह कि तुझे दिल खोलकर बुरा कहते। हममें तेरी कोई क़द्रो मंज़िलत रिफ़अत और इज़्ज़त नहीं। यह सुनकर आपने फ़र्माया, भाईयों! तुम मुझे मेरी क़राबतदारी की वजह से छोड़ते हो, अल्लाह की वजह से नहीं छोड़ते तो गोया तुम्हारे नज़दीक क़बीले वाले अल्लाह से भी बढ़कर हैं। अल्लाह के नबी (ﷺ) को बुराई पहुँचाते हुए अल्लाह का डर नहीं करते? अफ़सोस! तुमने किताबुल्लाह पीठ पीछे डाल दी उसकी कोई अज़्मत व इताअत तुममें न रही। ख़ैर अल्लाह तआला तुम्हारे हाल अहवाल जानता है वह तुम्हें पूरा बदला देगा।

***

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ
وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْۤا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا
وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ
دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۴﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۶﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ
وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ
الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَاُتْبِعُوْا فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾

तर्जुमा : ''ऐ क़ौमी भाईयों! अब तुम अपनी जगह अमल किए जाओ मैं भी अमल कर रहा हूँ तुम्हें अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि किसके पास वह अज़ाब आता है जो उसे रुस्वा करे और कौन है जो झूठा है तुम इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूँ। (93) जब हमारा अज़ाब आ पहुँचा तो हमने शुऐब (ﷺ) को और उनके साथ तमाम मुसलमानों को अपनी ख़ास रहमत से नजात बख़्शी और ज़ालिमों को आवाज़े सख़्त के अज़ाब ने धर दबोचा जिससे वह अपने घरों में ही औंधे

पड़े हुए मुर्दे हो गए। (94) गोया कि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, आगाह रहो मदयन के लिए भी वैसी ही दूरी हो जैसे दूरी समूद को हुई। (95) और यक़ीनन हमने ही मूसा (ﷺ) को अपने निशानियों और रोशन दलीलों के साथ भेजा था। (96) फ़िरऔन और उसकी जमाअत की तरफ़ फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के अहकाम की पैरवी की और फ़िरऔन का कोई हुक्म ठीक और दुरुस्त था ही नहीं।(97) वह तो क़यामत के दिन अपनी क़ौम का पेशरू होकर उन सबको दोज़ख़ में जा खड़ा करेगा, वह बहुत ही बुरा घाट है जिस पर ला खड़े किए गए। (98) उन पर तो इस दुनिया में भी लानत चिपका दी गयी और क़यामत के दिन भी बुरा इन्आम है जो दिया गया। (99)

(आयत 93-99) : जब अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) अपनी क़ौम के ईमान लाने से मायूस हो गये तो थककर फ़र्माया कि अच्छा! तुम अपने तरीक़े पर चले जाओ, मैं अपने तरीक़े पर क़ायम हूँ। तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि रुस्वा करने वाले अज़ाब किन पर नाज़िल होते हैं? और अल्लाह के नज़दीक झूठा कौन है? तुम इंतिज़ार करो, मैं भी इंतिज़ार करता हूँ, आख़िरकार उन पर भी अज़ाबे इलाही उतरे। उस वक़्त अल्लाह के नबी और मोमिन बचा लिए गए और उन पर अल्लाह की रहमत हुई और ज़ालिमों को तहस-नहस कर दिया गया। वह जल बुझे बेहिस व हरकत रह गए। ऐसे कि गोया कभी अपने घरों में आबाद ही न थे और जैसे कि उनसे पहले के क़ौमे समूद अल्लाह की लानत के महल बने थे वैसे ही यह भी हो गए। समूदी उनके पड़ौसी थे और कुफ़्र में और बदअम्नी में उन ही जैसे थे। और थीं भी यह दोनों क़ौमें अरब की।

मूसा (ﷺ) और फ़िरऔन का क़िस्सा : फ़िरऔन सरदारे क़ौमे क़िब्त और उसकी जमाअत की तरफ़ अल्लाह तआला ने अपने रसूल हज़रत मूसा (ﷺ) को अपनी आयतों और खुली दलीलों के साथ भेजा लेकिन उन्होंने फ़िरऔन की इताअत न छोड़ी, उसी की गुमराह रविश पर उसके पीछे लगे रहे। जिस तरह यहाँ उन्होंने उसकी फ़र्मांबरदारी तर्क न की और उसे अपना सरदार मानते रहे उसी तरह क़यामत के दिन उसी के पीछे यह होंगे और वह अपनी पेशवाई (लीडरशिप) में उन्हें सब को अपने साथ ही जहन्नम में ले जाएगा और ख़ुद दुगुना अज़ाब बर्दाश्त करेगा। यही हाल बुरों की ताबेदारी करने वालों का होता है। वह कहेंगे भी कि ऐ अल्लाह! इन ही लोगो ने हमें बहकाया तो उन्हें दुगुना अज़ाब कर...। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''क़यामत के दिन जाहिलियत के शायरों का झण्डा इम्रउल क़ैस के हाथ में होगा और वह उन्हें लेकर जहन्नम की तरफ़ जाएगा।'' (अहमद : 2/228; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मुस्नद बज़्ज़ार : 2091) इस अज़ाबे आग पर यह और ज़्यादती है कि यहाँ और वहाँ दोनों जगह यह लोग हमेशगी की लानत में पड़े। क़यामत के दिन की लानत मिलकर उन पर दो लानतें पड़ गईं, यह और लोगों को जहन्नम की दावत देने वाले इमाम थे इसलिए इन पर दोहरी लानत पड़ी।

***

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا
جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى
وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ
ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ
﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾

तर्जुमा : ''बस्तियों की यह कुछ ख़बरें जिन्हें हम तेरे सामने बयान कर रहे हैं उनमें से कुछ तो मौजूद हैं और कुछ बिलकुल नाबूद हो गईं। (100) हमने उन पर कोई ज़ुल्म न किया बल्कि ख़्वाह उन्होंने ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया, उन्हें उनके मअ़बूदों ने कोई फ़ायदा न पहुँचाया जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे, जबकि तेरे परवरदिगार का हुक्म आ पहुँचा बल्कि और उनका नुक़्सान ही उन्होंने बढ़ा दिया। (101) तेरे परवरदिगार की पकड़ का यही तरीक़ा है जबकि वह बस्तियों के रहने वाले ज़ालिमों को पकड़ता है बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली और निहायत सख़्त है। (102) यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशाने इब्रत है जो क़यामत के अ़ज़ाब से डरते हैं वह दिन जिसमें सब लोग जमा किए जाएँगे और वह दिन है जिसमें सब हाज़िर किए जाएँगे। (103) उसे हम जो देर करते हैं वह सिर्फ़ एक मुअ़य्यन मुद्दत तक है। (104) जिस दिन वह आ जाएगा मजाल न होगी कि अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बग़ैर कोई बात भी कर ले, तो उनमें कोई तो बदबख़्त होगा और कोई नेकबख़्त।'' (105)

(आयत 100-105) : नबियों और उनकी उम्मतों के वाक़ियात बयान करके इर्शादे बारी तआ़ला होता है कि यह उन बस्तियों वालों के वाक़ियात हैं जिन्हें हम तेरे सामने बयान कर रहे हैं। उनमें की कुछ बस्तियाँ तो अब तक आबाद हैं और कुछ मिट चुकी हैं। हमने उन्हें ज़ुल्म से हलाक नहीं किया, बल्कि ख़ुद उन्होंने ही अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब की वजह से अपने ऊपर अपने हाथों हलाकत ले ली और जिन मअ़बूदाने बातिल के सहारे की उम्मीद कर रहे थे वह बरवक़्त उन्हें कुछ काम न आ सके। बल्कि उनकी पूजा-पाठ ने उन्हें ग़ारत कर दिया। दोनों जहान का वबाल उन पर आ पड़ा।

जिस तरह उन ज़ालिमों की हलाकत हुई उन जैसा जो भी होगा उसी नतीजे को वह भी देखेगा।

अल्लाह तआ़ला की पकड़ अलमनाक और बहुत सख़्त होती है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि "अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को ढील देकर फिर पकड़ने के वक़्त नागहाँ (अचानक) दबा लेता है फिर मोहलत नहीं मिलती फिर आपने इस आयत की तिलावत की।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतु हूद बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़्ज़ रब्बुका इज़ा अख़ज़ल क़ुरा वहिया ज़ालिमतुन) : 4686; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2583; तिर्मिज़ी : 3109; इब्ने माजा : 4018; इब्ने ह़िब्बान : 5175; बैहक़ी : 6/94)

काफ़िर की इन हलाकतों और मोमिनों की इन नजातों में स़ाफ़ दलील है हमारे उन वादों की सच्चाई पर जो हमने क़यामत के बारे में किए हैं जिस दिन तमाम पहले और आख़िर के लोग जमा किए जाएँगे। एक भी बाक़ी न छूटेगा। (18/कहफ़ : 47) वह बड़ा भारी दिन है तमाम फ़रिश्ते तमाम रसूल तमाम मख़्लूक़ ह़ाज़िर होगी, ह़ाकिमे ह़क़ीक़ी आदिल काफ़ी इंस़ाफ़ करेगा। क़यामत के क़ायम होने की देर की वजह यह है कि रब यह बात पहले ही मुक़र्रर कर चुका है कि इतनी मुद्दत तक दुनिया बनी आदम से आबाद रहेगी, इतनी मुद्दत ख़ामोशी पर गुज़रेगी फिर फ़लाँ वक़्त क़यामत क़ायम होगी जिस दिन क़यामत आ जाएगी कोई न होगा जो बग़ैर इजाज़ते इलाही लब भी खोल सके मगर रह़मान जिसे इजाज़त दे और वह बात भी ठीक बोले। (79/नबा : 38) तमाम आवाज़ें अल्लाह रह़मान के सामने पस्त होंगी, बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे सिफ़ारिश में है "उस दिन सिर्फ़ रसूल (ﷺ) ही बोलेंगे, और उनका कलाम भी सिर्फ़ यही होगा कि ऐ अल्लाह! सलामत रख। (20/त़ाहा : 108) ऐ अल्लाह! सलामती दे। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब फ़ज़्लुस्सुजूद : 806; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 182; इब्ने माजा : 4312; अह़मद : 3/116) मज्मअ़े मह़शर में बहुत से तो बुरे होंगे और बहुत से नेक। इस आयत के उतरने पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) पूछते हैं कि फिर या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे आ़माल इस बिना पर हैं जिससे पहले ही फ़राग़त कर ली गई है या किसी नई बिना पर? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! बल्कि इस ह़िसाब पर जो पहले से ख़त्म हो चुका है जो क़लम चल चुका है। लेकिन हर एक के लिए वही आसान होगा जिसके लिए उसकी पैदाइश की गई है।" (मुस्नद अबी यअ़ला) (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति हूद : 3111; वहुव ह़सन)

***

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾

तर्जुमा : "लेकिन जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में होंगे, वहाँ उनकी बारीक और मोटी गधे जैसी आवाज़ होगी। (106) वह वहीं हमेशा रहने वाले हैं बक़द्रे मुद्दत बक़ाये आसमान व ज़मीन के सिवाए उस वक़्त के जो अल्लाह का चाहा हुआ है। यक़ीनन तेरा रब कर गुज़रता है जो कुछ चाहे।" (107)

(आयत 106, 107) : गधे के चीख़ने में जैसे उतार-चढ़ाव होता है ऐसी ही उनकी चीख़ें होंगी। यह याद रहे कि अ़रब के मुहावरों के मुताबिक़ कुरआने करीम नाज़िल हुआ है वह हमेशगी के मुहावरे को इसी तरह बोला करते हैं कि यह हमेशगी वाला है जब तक आसमान व ज़मीन को क़याम है यह भी उनके मुहावरे में है कि यह बाक़ी रहेगा जब तक दिन रात का चक्कर बँधा हुआ है। पस इन अलफ़ाज़ से हमेशगी मुराद है न कि क़ैद। इसके अ़लावा यह भी हो सकता है कि इस ज़मीन व आसमान के बाद दारे आख़िरत में इनके सिवा और आसमान व ज़मीन होंगे पस यहाँ मुराद जिंस है। चुनाँचे इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) से मरवी है कि हर जन्नत का आसमान ज़मीन है। उसके बाद अल्लाह की मर्ज़ी का ज़िक्र है। जैसे आयत (النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ) (6/अन्आम : 128) (6/अन्आम : 128) में है इस इस्तिस्ना के बारे में बहुत से क़ौल हैं जिन्हें ज़ादुल मसीर में नक़्ल किया है। इब्ने जरीर (रह.) ने ख़ालिद बिन मअ़दान, ज़ह्हाक, क़तादा और इब्ने सिनान के इस क़ौल को पसंद किया है कि इस्तिस्ना अ़ाइद (लौट रही है) मुवह्हिद गुनहगारों की तरफ़। कुछ सल्फ़ कहते हैं इसकी तफ़्सीर में बड़े ही ग़रीब क़ौल वारिद हुए हैं। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, अल्लाह ही को इसका पूरा इल्म है।

***

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا
شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا
كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا
مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ
شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾

तर्जुमा : "लेकिन जो नेकबख़्त किए गए वह जन्नत में होंगे, जहाँ वह हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन बाक़ी रहे मगर जो चाहे तेरा परवरदिगार बख़्शिश वाला है बेइन्तिहा। (108) तो तू इन चीज़ों से शक शुब्हा में न रह जिन्हें यह लोग पूज रहे हैं, उनकी पूजा तो इसी तरह है जिस तरह इनके बाप दादों की इससे पहले थी, हम इन सबको इनका पूरा-पूरा हिस्सा बग़ैर कमी के देने वाले ही हैं। (109) यक़ीनन हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी फिर उसमें इख़्तिलाफ़ डाल दिया गया अगर पहले ही तेरे रब की बात सादिर न हो गई होती तो यक़ीनन इनमें फ़ैसला कर दिया जाता, इन्हें तो इसमें शुब्हा सा ही है यह तो क़लक़ में हैं। (110) यक़ीनन इनमें से हर एक जब उसके रूबरू जाएगा तेरा रब उसे उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला देगा जो जो वह कर रहे हैं उसे सब ख़बर है।" (111)

(आयत 108-111) : रसूलों के ताबेदार जन्नतों में रहेंगे जहाँ से कभी निकलना न होगा। ज़मीनो आसमान की बक़ा तक उनकी भी जन्नत में बक़ा रहेगी मगर जो अल्लाह चाहे यानी यह बात बिज़ातिही वाजिब नहीं बल्कि अल्लाह की मशिय्यत और उसके इरादे पर है। बक़ौले ज़ह्हाक (रह.) व हसन (रह.) यह भी मुवह्हिद गुनहगारों के हक़ में है वह कुछ मुद्दत जहन्नम में गुज़ारकर उसके बाद वहाँ से निकाले जाएँगे। यह है अ़तिया रब्बानी जो ख़त्म न होगा न घटेगा। यह इसलिए फ़र्माया कि कहीं ज़िक्रे मशिय्यत से यह खटका न गुज़रे कि हमेशगी नहीं जैसे कि दोज़ख़ियों के दवाम के बाद भी अपनी मशिय्यत और इरादे की तरफ़ रुजूअ किया। सब उसकी हिक्मत व अ़दल है ''मौत को चितकबरे भेड़ की सूरत में लाया जाएगा और उसे ज़िब्ह कर दिया जाएगा। फ़र्मा दिया जाएगा कि जन्नतियों! हमेशगी है और मौत नहीं! और ऐ जहन्नमियों! हमेशगी है, मौत नहीं! (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह काफ़ हा या ऐन स़ाद बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला अ़ज़्ज़ व जल्ल (व उंज़ुरहुम यौमल ह़सरति) : 4730; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2849; तिर्मिज़ी : 3156)

मअ़बूदाने बातिल (झूठे) की ह़क़ीक़त : मुश्रिकों के शिर्क के झूठे होने में हर्गिज़ शक नहीं करना, इनके पास सिवाए बाप-दादों की अँधी तक़्लीद के और दलील ही क्या है? इनकी नेकियाँ इन्हें दुनिया ही में मिल जाएँगी, आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब होंगे जो ख़ैरो शर के वादे हैं सब पूरे होने वाले हैं। इनका अ़ज़ाब का मुक़र्ररा ह़िस्सा इन्हें ज़रूर पहुँचेगा। मूसा (عليه السلام) को हमने किताब दी लेकिन फिर लोगों ने फूट डाली किसी ने इक़रार किया तो किसी ने इंकार किया। पस इन ही नबियों जैसा हाल आपका भी है कोई मानेगा कोई टालेगा। चूँकि हम वक़्त मुक़र्रर कर चुके हैं और चूँकि हम बग़ैर हुज्जत पूरी किए अ़ज़ाब नहीं किया करते इसलिए यह देरी है वरना अभी ही इन्हें इनके गुनाहों का मज़ा याद आ जाता। काफ़िरों को अल्लाह की उसके रसूल की बातें ग़लत ही मालूम होती हैं उनका शक शुब्हा ज़ाइल नहीं होता। सबको अल्लाह जमा करेगा और उनके किए हुए आ़माल का बदला देगा। इस आयत की कई क़िरअत हैं। इन क़िरअत का भी मअ़नी इसी हमारे ज़िक्रकर्दा मअ़नी की तरफ़ ही लौटता है।

***

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١١٢ وَلَا
تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ ثُمَّ لَا
تُنْصَرُوْنَ ۝١١٣ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ
السَّـيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝١١٤ۚ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١٥

तर्जुमा : "पस तू जमा रह जैसा कि तुझे हुक्म दिया गया है और वह लोग भी जो तेरे साथ तौबा कर चुके हैं ख़बरदार! तुम हद से न बढ़ना, अल्लाह तुम्हारे तमाम आमाल का देखने वाला है। (112) देखो ज़ालिमों की तरफ़ हर्गिज़ न झुकना वरना तुम्हें भी आग का लूका लग जाएगा और अल्लाह के सिवा और तुम्हारा कोई मददगार न खड़ा हो सकेगा और न तुम मदद दिए जाओगे। (113) दिन के दोनों सिरों में नमाज़ पढ़ा करो और रात के कई साअतों में भी यक़ीनन नेकियाँ बुराईयों को दूर कर दिया करती हैं यह है नसीहत नसीहत पकड़ने वालों के लिए। (114) तू सब्र करता रह यक़ीनन अल्लाह तआला नेकी करने वालों का अज्र बर्बाद नहीं करता।" (115)

(आयत 112-115) : इस्तिक़ामत और सीधी राह पर दवाम हमेशगी और साबित क़दमी की हिदायत अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) और तमाम मुसलमानों को कर रहा है। यही सबसे बड़ी चीज़ है। साथ ही सरकशी से रोकता है क्योंकि यही तबाह करने वाली चीज़ है भले किसी मुश्रिक ही पर की गयी हो। परवरदिगार बन्दों के अमल से आगाह है। मुदाहिनत और दीन के कामों में सुस्ती न करो। शिर्क की तरफ़ न झुको, मुश्रिकीन के आमाल पर रज़ामंदी का इज़्हार न करो। ज़ालिमों की तरफ़ न झुको, वरना आग तुम्हें छू लेगी।

ज़ालिमों की तरफ़दारी उनके ज़ुल्म पर मदद है यह हर्गिज़ न करो। अगर ऐसा किया तो कौन है जो तुमसे अल्लाह का अज़ाब हटाए और कौन है जो उससे तुम्हें बचाए।

नमाज़ क़ायम करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है : इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह कहते हैं दिन के दोनों सिरे से मुराद सुबह की और मग़रिब की नमाज़ है। (तब्री : 15/503) क़तादा, ज़हहाक (रहि.) वग़ैरह का क़ौल है कि पहले सिरे से मुराद सुबह की नमाज़ और दूसरे सिरे से मुराद ज़ुहर व अस्र की नमाज़। रात की घड़ियों से मुराद इशा की नमाज़ और बक़ौले मुजाहिद (रह.) वग़ैरह मग़रिब और इशा की नेकियों का करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। सुनन में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जिस मुसलमान से कोई गुनाह हो जाए फिर वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ कर देता है।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल इस्तिग़फ़ार : 1521; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 406; इब्ने माजा : 1395) एक मर्तबा हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने वुज़ू किया फिर फ़र्माया इसी तरह मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को वुज़ू करते हुए देखा है और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ अदा करे, जिसमें अपने दिल से बातें न करे तो उसके तमाम अगले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, सलासा : 159; सहीह मुस्लिम : 226; अबूदाऊद : 106; इब्ने माजा : 285; दारे क़ुत्नी : 1/83) मुस्नद में है कि आप (रज़ि.) ने पानी मंगवाया वुज़ू किया फिर फ़र्माया मेरे इसी वुज़ू की तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) वुज़ू किया करते थे, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो मेरे इस वुज़ू जैसा वुज़ू करे और खड़ा होकर ज़ुहर की नमाज़ अदा करे उसके सुबह से लेकर अब तक के गुनाह माफ़ हो जाते हैं, फिर अस्र की नमाज़ पढ़े तो ज़ुहर से अस्र तक के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं फिर मग़रिब की नमाज़ अदा करे तो अस्र से लेकर मग़रिब तक के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। फिर इशा की नमाज़ से मग़रिब से इशा तक के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (अहमद : 1/71; व सनदुहू

हसन; मुस्नद बज़्ज़ार : 405; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/297) फिर यह सोता है लोट-पोट होता है फिर सुबह उठकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ लेने से इशा से लेकर सुबह की नमाज़ तक के सब गुनाह बख़्श दिए जाते हैं। यही हैं वह भलाईयाँ जो बुराईयों को दूर कर देती हैं।'' सहीह हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बतलाओ तो अगर तुममें से किसी के मकान के दरवाज़े पर ही नहर जारी हो और वह उसमें हर दिन पाँच बार ग़ुस्ल करता हो तो क्या उसके जिस्म पर ज़रा सा भी मेल बाक़ी रहेगा?'' लोगों ने कहा, हर्गिज़ नहीं! आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''बस यही मिसाल है पाँच नमाज़ों की कि उनकी वजह से अल्लाह तआला ख़ताएँ और गुनाह माफ़ कर देता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलावातिल ख़म्स कफ़्फ़ारतुन : 528; सहीह मुस्लिम : 667; तिर्मिज़ी : 2868; दारमी : 1/668; अहमद : 2/379; अबू अवाना : 2/20; इब्ने हिब्बान : 1726) सही मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''पाँचों नमाज़ें और जुम्आ और रमज़ान-रमज़ान तक का कफ़्फ़ारा है जब तक कि कबीरा गुनाहों से परहेज़ किया जाए।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तहारत, बाब सलवातुल ख़म्स वल जुम्अतु इलल जुम्अति....: 233; तिर्मिज़ी : 214; इब्ने माजा : 1086; अहमद : 2/229; मुस्नद अबी अवाना : 2/20; मुस्नद तयालिसी : 2470; इब्ने हिब्बान : 1733) मुस्नद अहमद में है कि ''हर नमाज़ अपने से पहले की ख़ताओं को मिटा देती है।'' (अहमद : 5/413; अल्मुअजमुल कबीर : 3879; मुस्नद शामिय्यीन : 1638; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/298; व सनदुहू हसन)

बुख़ारी में है कि किसी शख़्स ने एक औरत का बोसा ले लिया, फिर हुज़ूर (ﷺ) से अपने इस गुनाह की नदामत (शर्मिन्दगी) ज़ाहिर की, इस पर यह आयत उतरी। उसने कहा कि क्या मेरे लिए ही यह मख़्सूस है? आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि ''नहीं! बल्कि मेरी सारी उम्मत के लिए यही हुक्म है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस् सलात, बाब अस्सल्वातुल ख़म्स कफ़्फ़ारा : 526; सहीह मुस्लिम : 2763; तिर्मिज़ी : 3114; इब्ने माजा : 4254) एक और रिवायत में है कि ''उसने कहा मैंने बाग़ में उस औरत से सब कुछ किया, हाँ! जिमाअ नहीं किया, अब मैं हाज़िर हूँ जो सज़ा मेरे लिए आप तज्वीज़ करें मैं बर्दाश्त कर लूँगा। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे कोई जवाब न दिया वह चला गया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने उसकी पर्दापोशी की थी अगर यह भी अपने नफ़्स की पर्दापोशी करता।'' हुज़ूर (ﷺ) बराबर उसी शख़्स की तरफ़ देखते रहे, फिर फ़र्माया, ''उसे वापिस बुला लाओ।'' जब वह आ गया तो आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की, उस पर हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने पूछा कि क्या यह इसी के लिए है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''नहीं! बल्कि सब लोगों के लिए है।''(सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, बाब क़ौलुहू तआला (इन्नल हसनाति युज़्हिब्नस् सय्यिआत) : 2763; अबूदाऊद : 4468; तिर्मिज़ी : 3112; मुस्नद तयालिसी : 285; इब्ने हिब्बान : 1728) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''अल्लाह तआला ने जिस तरह तुममें रोज़ियाँ बांटी हैं, अख़्लाक़ भी बांट दिए हैं, अल्लाह तआला दुनिया तो उसे भी देता है जिससे ख़ुश हो और उसे भी जिससे ग़ुस्सा हो लेकिन दीन सिर्फ़ उन ही को देता है जिनसे उसे मुहब्बत हो, पस जिसे दीन मिल जाए, यक़ीनन अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखता है उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, बन्दा मुसलमान नहीं होता जब तक कि उसका दिल और उसकी ज़ुबान मुसलमान न हो जाए। और बंदा ईमान वाला

नहीं होता जब तक कि उसके पड़ौसी उसकी ईज़ाओं (तक्लीफ़ों) से बेफ़िक्र न हो जाएँ।'' लोगों ने पूछा, ईज़ाएँ क्या-क्या हैं? फ़र्माया, ''धोखा और ज़ुल्म। सुनो! जो शख़्स हराम माल कमाये फिर उसमें से ख़र्च करे अल्लाह उसे बरकत से महरूम रखता है। अगर वह उसमें से सदक़ा करे तो क़बूल नहीं होता और जितना कुछ अपने बाद बाक़ी छोड़ मरे वह सब उसके लिए जहन्नम की आग का सामान बनता है। याद रखो कि अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता बल्कि बुराई को भलाई से मिटाता है।'' (अहमद : 1/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/53; इसकी सनद में सिबाह बिन मुहम्मद बजली ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/306; रक़म : 3848)

मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास आया और कहा कि एक औरत सौदा लेने के लिए आई थी, अफ़सोस कि मैं उसे कोठरी में ले जाकर उससे सिवाए जिमाअ के और हर तरह लुत्फ़ अंदोज़ हुआ। अब जो अल्लाह का हुक्म हो वह मुझ पर जारी किया जाए। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, शायद इसका शौहर ग़ैर हाज़िर होगा? उसने कहा, जी हाँ! यही बात थी। आपने फ़र्माया, तुम जाओ (हज़रत) अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से यह मसला पूछो। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने भी यही सवाल किया। पस आपने भी हज़रत उमर (रज़ि.) की तरह फ़र्माया, फिर वह हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी हालत बयान की। आपने फ़र्माया ''शायद इसका शौहर अल्लाह की राह में गया हुआ होगा?'' पस क़ुरआने करीम की यह आयत उतरी तो वह कहने लगा कि क्या यह ख़ास मेरे लिए ही है? तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसके सीने पर हाथ रखकर फ़र्माया, नहीं! इस तरह सिर्फ़ तेरी ही आँखें ठण्डी नहीं हो सकतीं बल्कि यह सब लोगों के लिए आम है। यह सुनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उमर (रज़ि.) सच्चे हैं।'' (अहमद : 1/245; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; तबरानी : 2931; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/41; इसकी सनद में अली बिन ज़ैद सीउल हिफ़्ज़ रावी है (अल्मीज़ान : 3/127; रक़म : 5844) इब्ने जरीर में है कि वह औरत मुझसे एक दिरहम की खजूरें ख़रीदने आई थी तो मैंने उसे कहा कि अंदर कोठरी में उससे बहुत अच्छी खजूरें हैं, वह अंदर गयी, मैंने भी अंदर जाकर उसे चूम लिया। फिर वह हज़रत उमर (रज़ि.) के पास गया तो आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला से डर और अपने नफ़्स पर पर्दा डाले रह। फिर मैं हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आया, उन्होंने भी ऐसा ही कहा, लेकिन अबुल यसीर (रज़ि.) कहते हैं मुझसे सब्र न हो सका। मैंने जाकर हुज़ूर (ﷺ) से वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अफ़सोस! तूने एक ग़ाज़ी मर्द की उसकी ग़ैर हाज़िरी में ऐसी ख़यानत की।'' मैंने तो यह सुनकर ख़ुद को जहन्नमी समझ लिया और मेरे दिल में ख़्याल आने लगा कि काश! मेरा इस्लाम उसके बाद का होता? हुज़ूर (ﷺ) ने ज़रा सी देर अपनी गर्दन झुका ली, उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) यह आयत लेकर उतरे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति हूद : 3115 वहुव हसन; नसाई : 268)

इब्ने जरीर में है कि एक शख़्स ने आकर हुज़ूर (ﷺ) से दरख़्वास्त की कि अल्लाह की मुक़र्ररकर्दा हद मुझ पर जारी कीजिए। एक दो बार उसने यह कहा, लेकिन आप (ﷺ) ने उसकी तरफ़ से चेहरा फेर लिया। जब नमाज़ खड़ी हुई और आप (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो पूछा कि ''वह शख़्स कहाँ है?'' उसने कहा,

हुज़ूर (ﷺ)! मैं हाज़िर हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तूने अच्छी तरह वुज़ू किया और हमारे साथ नमाज़ पढ़ी?'' उसने कहा, जी हाँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''बस तो तू ऐसा ही है जैसे अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ था। ख़बरदार! अब कोई ऐसी हरकत न करना।'' और अल्लाह ने यह आयत उतारी। (व सनदुहू हसन) हज़रत अबू उस्मान नहदी (रह.) का बयान है कि मैं हज़रत सलमान (रज़ि.) के साथ था। उन्होंने एक दरख़्त की सूखी टहनी पकड़कर उसे झिंझोड़ा तो तमाम सूखे पत्ते झड़ गए। फिर फ़र्माया, अबू उस्मान! तुम पूछते नहीं हो कि मैंने ऐसा क्यूँ किया? मैंने कहा, हाँ जनाब इर्शाद हो, फ़र्माया इसी तरह मेरे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया, फिर फ़र्माया ''जब बन्दा मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करके पाँचों नमाज़ें अदा करता है तो उसके गुनाह ऐसे ही झड़ जाते हैं जैसे इस सूखी टहनी के पत्ते झड़ गए'' फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। (अहमद : 5/437) मुस्नद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बुराई अगर कोई हो जाए तो उसके पीछे ही नेकी कर लो कि उसे मिटा दे। और लोगों से ख़ुश अख़्लाक़ी से मिला करो।'' (अहमद : 5/228; तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़ी मुआशरतिन्नास : 1987; वहुव हसन) और हदीस में है ''जब तुझसे कोई गुनाह हो जाए तो उसके पीछे ही नेकी कर लिया कर कि उसे मिटा दे'' मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना भी नेकी है। आपने फ़र्माया ''वह तो बेहतरीन और अफ़ज़ल नेकी है।'' (अहमद : 5/169; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अबू यअला में है ''दिन रात के जिस वक़्त में कोई ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़े उसके नामा-ए-आमाल में से बुराईयाँ मिट जाती हैं यहाँ तक कि उनकी जगह वैसी ही नेकियाँ हो जाती हैं।'' (अबूयअला : 3611; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में उस्मान बिन अब्दुर्रहमान सख़्त ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 3/43; रक़म :5531) जैसाकि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया है और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को मौज़ूअ क़रार दिया है। देखिए (ज़ईफ़ अत्तर्ग़ीब : 927) इसके रावी अबू उस्मान में ज़ुअफ़ है, बज़्ज़ार में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि हुज़ूर (ﷺ)! मैंने कोई ख़्वाहिश ऐसी नहीं छोड़ी जो पूरी न की हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्या तू अल्लाह के एक होने की और मेरी रिसालत की गवाही देता है?'' उसने कहा, हाँ! तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''बस यह उन सब पर ग़ालिब रहेगी।'' (मुस्नद बज़्ज़ार : 3067; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/83)

***

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا
قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا
كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

तर्जुमा : "पस क्यूँ न हुए तुमसे अगले ज़माने के लोगों में से ऐसे असर रखने वाले लोग जो ज़मीन में फ़साद फैलाने से रोकते, सिवाए उन चंद के जिन्हें हमने उनमें नजात दी थी, ज़ालिम लोग तो उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसमें उन्हें आसूदगी दी गई थी वह थे ही गुनहगार। (116) तेरा रब ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को ज़ुल्म से हलाक करे और हों वहाँ के लोग नेकोकार।" (117)

(आयत 116, 117) : यानी सिवाए चंद के हम गुज़िश्ता ज़माने के लोगों में से ऐसे क्यूँ नहीं पाते जो शरीरों और मुंकिरों को बुराइयों से रोकते रहें, यही वह हैं जिन्हें हम अपने अ़ज़ाबों से बचा लिया करते हैं। इसीलिए अल्लाह तबारक व तआला ने इस उम्मत में ऐसी जमाअ़त की मौजूदगी का क़तई और फ़र्ज़ हुक्म दिया, फ़र्माया (وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ) (3/आले इमरान : 104) भलाई और नेकी की दावत देने वाली एक जमाअ़त तुममें हर वक़्त मौजूद रहनी चाहिए, ज़ालिमों का शेवा यही है कि वह अपनी बुरी आदतों से बाज़ नहीं आते वह नेक उ़लमा के फ़र्मान की तरफ़ ध्यान नहीं देते। यहाँ तक कि अल्लाह का अ़ज़ाब उनकी बेख़बरी में उन पर आ पड़ते हैं भली बस्तियों पर अल्लाह की तरफ़ से अज़्राहे ज़ुल्म अ़ज़ाब कभी आते ही नहीं। हम ज़ुल्म से पाक हैं। लेकिन ख़ुद ही वह अपनी जानों पर मज़ालिम करने लगते हैं।

***

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

तर्जुमा : "अगर तेरा रब चाहता तो सब लोगों को एक ही राह पर एक गिरोह कर देता, वह तो बराबर इख़्तिलाफ़ करने वाले ही रहेंगे। (118) सिवाए उनके जिन पर तेरा रब रहम करे, उन्हें तो इसीलिए पैदा किया है, तेरे रब की यह बात पूरी है कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूँगा।" (119)

क़ामयाब और नाकाम होने वाले लोग (आयत 118, 119) : अल्लाह की क़ुदरत किसी काम से आजिज़ नहीं। वह चाहे तो सबको ही इस्लाम या कुफ़्र पर जमा कर दे, लेकिन उसकी ह़िक्मत है जो इंसानी राय उनके दीन व मज़ाहिब जुदागाना बराबर जारी व सारी हैं। तरीक़े मुख़्तलिफ़, माली ह़ालात जुदागाना, एक-एक के मातह़त। यहाँ मुराद दीन व मज़हब का इख़्तिलाफ़ है। हाँ! जिन पर अल्लाह का रहम हो जाए वह रसूलों की ताबेदारी, अल्लाह तआला की हुक्मबरदारी में बराबर लगे रहते हैं। अब वह नबी आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) के मुत़ीअ़ हैं और यही नजात पाने वाले हैं। चुनाँचे मुस्नद व सुनन में ह़दीस है जिसकी हर सनद दूसरी सनद को तक़्वियत पहुँचा रही है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "यहूदियों के इकहत्तर गिरोह हुए, नसारा बहत्तर फ़िर्क़ों में बंट गए, इस उम्मत के तेहत्तर फ़िर्क़े हो जाएँगे, सब जहन्नमी हैं सिवाए एक जमाअ़त के।" सह़ाबा (रज़ि.)

ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह कौन लोग हैं? आप (ﷺ) ने जवाब दिया "जो उस पर हो जिस पर मैं और मेरे अस्हाब (रज़ि.)।" (अहमद : 2/332; तिर्मिज़ी, किताबुल इल्म,बाब मा जाअ फ़ी इफ़्तिराक़ि हाज़िहिल उम्मति : 2641; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अन्अम अफ़्रीक़ी रावी ज़ईफ़ है। अबूदाऊद : 4596; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 3991; बि मआनिही व सनदिही हसन; मुस्नद अबी यअला : 5910; इब्ने हिब्बान : 6247; हाकिम : 1/128) (मुस्तदरक हाकिम) बक़ौल अता (मुख़्तलिफ़ीन) से मुराद यहूदी, नसरानी, मजूसी हैं और अल्लाह के रहम वाली जमाअत से मुराद एक तरफ़ा दीने इस्लाम के मुतीअ लोग हैं। क़तादा (रह.) कहते हैं कि यही जमाअत है भले इनके वतन और बदन जुदा हों। और अहले मअसियत फ़ुरक़त व इख़्तिलाफ़ वाले हैं भले इनके वतन और बदन एक ही जगह जमा हों। क़ुदरती तौर पर इनकी पैदाइश ही इसीलिए है। शक़ी (बदबख़्त) व सईद की अज़ली तक़्सीम है। (11/हूद : 105) यह भी मतलब है कि रहमत हासिल करने वाली यह जमाअत है ही इसीलिए। हज़रत ताउस (रह.) के पास दो शख़्स अपना झगड़ा लेकर आए और आपस के इख़्तिलाफ़ में बहुत बढ़ गए तो आपने फ़र्माया कि तुम झगड़े और ख़ूब ही इख़्तिलाफ़ किया। इस पर एक ने कहा, इसी के लिए हम पैदा किए गए हैं, आपने फ़र्माया, ग़लत है उसने अपने सबूत में इसी आयत की तिलावत की तो आपने फ़र्माया इसलिए नहीं पैदा किया कि आपस में इख़्तिलाफ़ करें बल्कि पैदाइश तो जमा के लिए और रहमत हासिल करने के लिए होती है। जैसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि रहमत के लिए पैदा किया है, न कि अज़ाब के लिए और आयत में है (وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ) (51/ज़ारियात : 56) मैंने जिन्नों और इंसानों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। तीसरा क़ौल यह भी है कि रहमत और इख़्तिलाफ़ के लिए पैदा किया है। चुनाँचे मालिक (रह.) इसकी तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि एक फ़िर्क़ा जन्नती और एक जहन्नमी। इन्हें रहमत हासिल करने और उन्हें इख़्तिलाफ़ में लगे रहने के लिए पैदा किया है। तेरे रब का यह फ़ैसला नातिक़ (बता रहा) है कि उसकी मख़्लूक़ में इन दोनों क़िस्मों के लोग होंगे और इन दोनों से जन्नत व दोज़ख़ भर दी जाएगी, उसकी कामिल हिक्मतों को वही जानता है। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जन्नत और जहन्नम में बातचीत हुई। जन्नत ने कहा, मुझमें तो सिर्फ़ कमज़ोर और ज़ईफ़ लोग ही दाख़िल होते हैं। और जहन्नम ने कहा, मैं तकब्बुर और तजब्बुर करने वालों के साथ मख़्सूस की गयी हूँ। इस पर अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल ने जन्नत से फ़र्माया, तू मेरी रहमत है जिसे मैं चाहूँ तुझसे नवाज़ दूँगा और जहन्नम से फ़र्माया तू मेरा अज़ाब है जिससे मैं चाहूँ तेरे अज़ाबों से इंतिक़ाम लूँगा। तुम दोनों पुर हो जाओगी, जन्नत में तो बराबर ज़्यादती रहेगी यहाँ तक कि उसके लिए अल्लाह तआला एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा और उसे उसमें बसायेगा और जहन्नम भी बराबर ज़्यादती तलब करती रहेगी यहाँ तक कि उस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना क़दम रख देगा तब वह कहने लगेगी, तेरी इज़्ज़त की क़सम! अब बस है बस है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह क़ाफ़ बाब क़ौलुहू (व तक़ूलु हल मिम मज़ीद) : 4850; सहीह मुस्लिम : 2846; तिर्मिज़ी : 2561; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 20893; अहमद : 2/314)

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ
وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۖ إِنَّا
عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ
الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

तर्जुमा : ''रसूलों के सब अह्वाल हम तेरे सामने तेरे दिल की तस्कीन के लिए बयान कर रहे हैं, तेरे पास इस सूरत में भी हक़ पहुँच चुका है जो नसीहत व वअ़ज़ है मोमिनों के लिए। (120) ईमान न लाने वालों से कह दे कि तुम अपने तौर पर अ़मल किए जाओ हम भी अ़मल में मशग़ूल हैं।(121) और तुम भी इंतिज़ार करो, हम भी मुंतज़िर हैं।(122) ज़मीनों और आसमानों का इल्मे ग़ैब अल्लाह तआ़ला ही को है, तमाम कामों का रुजूअ़ भी उसी की जानिब है पस तुझे उसी की इबादत करनी चाहिए और उस पर भरोसा रखना चाहिए, तुम जो कुछ करते हो उससे अल्लाह तआ़ला ग़ाफ़िल (बेख़बर) नहीं।'' (123)

(आयत 120-123) : अगली उम्मतों का अपने नबियों को झुठलाना, नबियों का उनकी ईज़ाओं (तक्लीफ़ों) पर सब्र करना, आख़िर अल्लाह के अ़ज़ाबों का आना काफ़िरों का बर्बाद होना, नबियों और रसूलों और मोमिनों का नजात पाना, यह सब वाक़ियात हम तुझे सुना रहे हैं, ताकि तेरे दिल को हम और मज़बूत कर दें और तुझे कामिल सुकून हासिल हो जाए। इस सूरत में भी हक़ तुझ पर वाज़ेह हो चुका या यह कि इस दुनिया में भी तेरे सामने सच्चे वाक़ियात बयान हो चुके, यह इब्रत है कुफ़्फ़ार के लिए और नसीहत है मोमिनों के लिए कि वह इससे नफ़ा हासिल कर लें।

बतौर धमकाने डराने और होशियार करने के इन काफ़िरों से कह दो कि अच्छा! तुम अपने तरीक़े से नहीं हटते तो न हटो, हम भी अपने तरीक़े पर आ़मिल हैं, तुम मुंतज़िर रहो कि आख़िर अंजाम क्या होता है हम भी उसी अंजाम की राह देखते हैं। फ़ल्हम्दु लिल्लाह! दुनिया ने उन काफ़िरों का अंजाम देख लिया और मुसलमानों का भी जो अल्लाह के फ़ज़्लो करम से दुनिया पर छा गये, मुख़ालिफ़ीन पर कामयाबी के साथ ग़ल्बा हासिल कर लिया, दुनिया को मुट्ठी में ले लिया, फ़लिल्लाहिल हम्द!

आसमान व ज़मीन के सब ग़ैब पर ख़बर रखने वाला अल्लाह तआ़ला अ़ज़्ज़ व जल्ला ही है, उसी की सबको इबादत करनी चाहिए और उसी पर भरोसा करना चाहिए जो भी उस पर भरोसा रखे, वह उसके लिए काफ़ी है। हज़रत कअ़ब (रह.) फ़र्माते हैं कि तौरात का ख़ात्मा भी इन्हीं आयतों पर है। अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ में से किसी के किसी अ़मल से बेख़बर नहीं।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह हूद की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह यूसुफ़

سوره یوسف

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह यूसुफ - 12

आयातः 111 , मक्की पैराग्राफ : 3

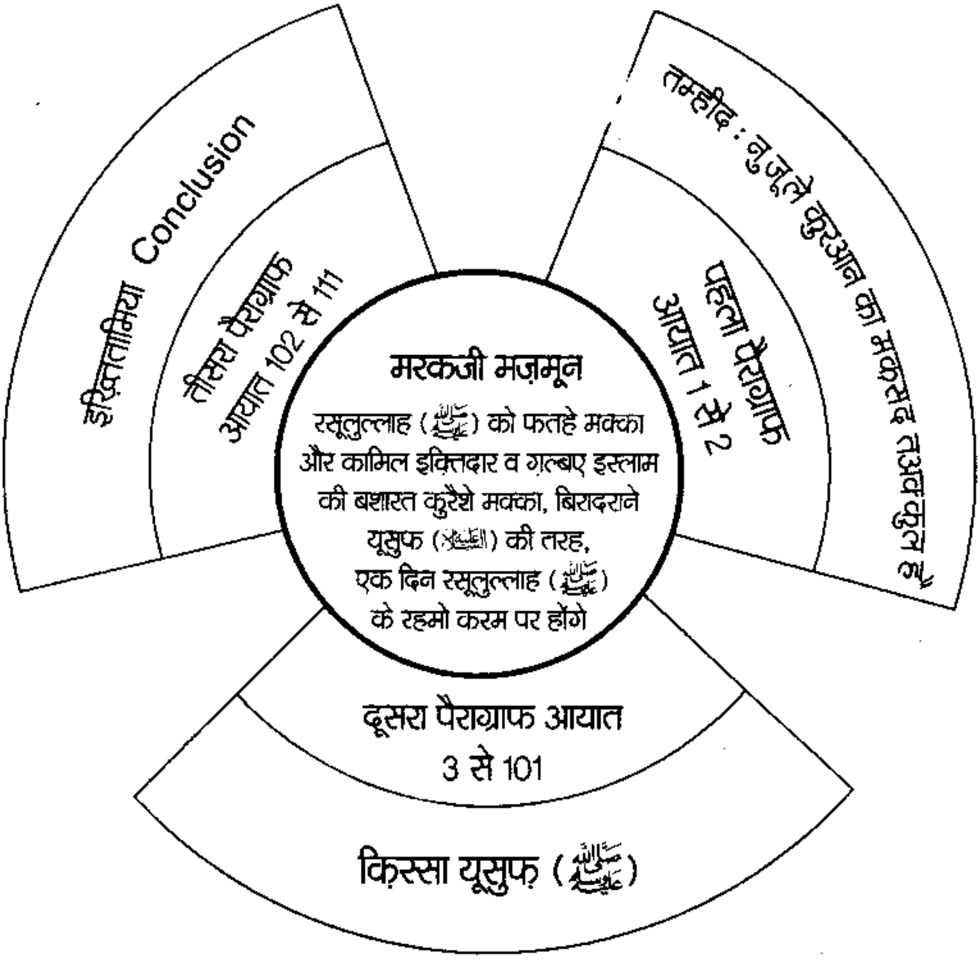

जमान-ए-नुजूल और पसे मन्जर

सूरह (यूसुफ) गालिबन 12 नबवी में हिजरत से पहले और सूरह हूद के बाद नाज़िल हुई, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ मक्के से इख़्राज या मक्के में क़त्ल के मन्सूबे बनाए जा रहे थे और कुरैशी क़यादत बिरादराने यूसुफ की तरह, अपने ही भाईयों पर जुल्म व सितम ढा रही थी, जिन का जुर्म महज बुतपरस्ती का इन्कार और तौहीद का इकरार था।

सूरह यूसुफ़

ये सूरत मक्की है और रसूलुल्लाह (ﷺ) की मक्की ज़िन्दगी के आख़िरी दो सालों में सूरह हूद के बाद नाज़िल हुई। इसकी 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं। इस सूरत की तमाम आयतों में हज़रत यूसुफ़ (अलै.) की ख़ूबसूरत और सबक़ आमूज़ दास्तान बयान की गई है। हज़रत यूसुफ़ (अलै.) की दास्तान ज़िन्दगी को एक मरबूत, मुअस्सिर और दिलनशीन अन्दाज़ में एक ही जगह जरूरी तफ़्सील के साथ पेश कर दिया गया है। सूरत हज़रत यूसुफ़ (अलै.) के ख़्वाब से शुरू होती है और मुख़्तलिफ़ मराहिल तय करके उस ख़्वाब की ताबीर पर ख़त्म होती है।

शाने नुज़ूल : कुछ मुफ़स्सिरीन की राय है यसरिब के यहूदियों के कहने पर मुश्रिकीने मक्का ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया था कि बनी इस्राईल मिस्र कैसे पहुँचे जबकि उनके बाप-दादा तो किन्आन में रहते थे। यहूदियों का ख़्याल था कि क्योंकि अरब इस क़िस्से से वाक़िफ़ियत नहीं रखते इसलिये मुहम्मद (ﷺ) इस सवाल का जवाब न दे पायेंगे लेकिन उनकी हेरानी की कोई इन्तिहा नहीं रही जब अल्लाह तआला ने एक पूरी सूरत में तफ़्सील के साथ हज़रत याक़ूब और उनके बेटों की मिस्र में आमद का वाक़िया बता दिया। यहूदियों और मुश्रिकों के लिये नबी (ﷺ) की नुबूवत हक़ मानने की एक बड़ी निशानी थी मगर अफ़सोस ये फिर भी ईमान न लाये।

क़ुरैशे मक्का को इस क़िस्से से ये पैग़ाम दिया गया कि आज तुम अपने भाई मुहम्मद (ﷺ) से वही सुलूक कर रहे हो जो यूसुफ़ (अलै.) के भाइयों ने उनके साथ किया था। मगर जिस तरह वो नाकाम हुए उसी तरह तुम भी नाकाम रहोगे और अपने किये पर नादिम होगे।

इस दास्तान को नाज़िल करके रसूलुल्लाह (ﷺ) की दिलजूई की गई और उन्हें क़ुरैश के मज़ालिम पर सब्र करने और हक़ पर साबित क़दम रहने की ताकीद की गई और आपको ये भी बता दिया गया कि जिस तरह बिरादराने यूसुफ़ ने हज़रत यूसुफ़ (अलै.) को घर से निकाला था उसी तरह आपके भाईबन्द क़ुरैश भी आपको वतन छोड़ने पर मजबूर कर देंगे। लेकिन जिस तरह हज़रत यूसुफ़ (अलै.) को इस तरह तरीक़े इक़्तिदार हासिल हुआ था अल्लाह तआला उसी तरह आपको भी इक़्तिदार बख़्शेगा और बिरादराने यूसुफ़ की तरह एक दिन क़ुरैशी भी आपके रहम व करम पर होंगे। ये पेशीनगोई सूरह यूसुफ़ के नुज़ूल के बाद दस साल के अंदर पूरी हुई।

तफ़्सीर सूरह यूसुफ़

इस सूरत की फ़ज़ीलत में एक ह़दीस वारिद हुई है कि "अपने मातह़तों को सूरह यूसुफ़ सिखाओ, जो मुसलमान इसे पढ़े या इसे अपने घरवालों को सिखाए या अपने मातह़त (अं[illegible]) लोगों को सिखाए, उस पर अल्लाह तआ़ला सकराते मौत (मौत के मुश्किलात को) आसान करता है और उसे इतनी क़ुव्वत बख़्शता है कि वह किसी मुसलमान से ह़सद न करे।" (सअ़ल्बी फ़ी सियरिही व सनदिही मुन्कर मर्दूद इसकी सनद में सलाम बिन सुलैम मतरूक (अल्मीज़ान : 2/175; रक़म : 3343) और हारून बिन कसीर मज्हूल रावी है (अल्मीज़ान : 4/286; रक़म : 9169) लेकिन इसकी सनद बहुत ही कमज़ोर है। इसका एक मुताबेअ़ इब्ने अ़साकिर में है लेकिन उसकी भी तमाम सनदें मुंकर हैं। इमाम बैहक़ी (रह़.) की किताब दलाइलुन्नबुव्वा में है कि "जब यहूद के एक गिरोह ने यह सूरत सुनी तो वह मुसलमान हो गये, क्योंकि उनके यहाँ भी यह वाक़िया इसी त़रह़ बयान था।" (दलालुन्नबुव्वा : 6/276; इसकी सनद में मुह़म्मद बिन मरवान (अल्मीज़ान : 4/32; रक़म : 8154; मुत्तहम बिल किज़्ब) और मुह़म्मद बिन साइब कलबी मतरूक रावी है। (अत्तक़रीब : 2/163; रक़म : 24) फ़िस्सनदि मौज़ूअ़) यह रिवायत कल्बी की अबू स़ालेह़ से और उनकी ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।"

الٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰیٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ﴿۱﴾ اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۲﴾ نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَیۡكَ اَحۡسَنَ الۡقَصَصِ بِمَاۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡكَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ ۖ وَ اِنۡ كُنۡتَ مِنۡ قَبۡلِهٖ لَمِنَ الۡغٰفِلِیۡنَ ﴿۳﴾

तर्जुमा : "अलिफ़ लाम रा, यह हैं रोशन किताब की आयतें (1) यक़ीनन हम ने ख़ुद इस अ़रबी क़ुरआन को नाज़िल फ़र्माया है कि तुम समझ सको (2) हम ख़ुद तेरे सामने बेहतरीन बयान पेश करते हैं, तेरी त़रफ़ इस क़ुरआन को अपनी वह़ी के साथ नाज़िल करने से, यक़ीनन तू इससे पहले बेख़बरों में से था।" (3)

क़ुरआन मजीद का सबसे प्यारा क़िस्सा (आयत 1-3) : सूरह बक़रह की तफ़्सीर में ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़त की बह़स गुज़र चुकी है। इस किताब यानी क़ुरआन शरीफ़ की यह आयतें बहुत वाज़ेह़ खुली हुई और ख़ूब स़ाफ़ हैं, पेचीदा चीज़ों की ह़क़ाक़त खोल देती हैं। यहाँ पर (तिल्क) मअ़नी में है (हाज़िही) के। चूँकि अ़रबी ज़ुबान

निहायत कामिल और मक़्सद को पूरी तरह वाज़ेह कर देने वाली और वुस्अत व कसरत वाली है इसलिए यह पाकीज़ा किताब इस बेहतरीन ज़ुबान में अफ़ज़ल रसूल पर फ़रिश्तों के सरदार फ़रिश्ते की सिफ़ारत में तमाम रूए ज़मीन के बेहतर मक़ाम में वक़्तों में बेहतरीन वक़्त में नाज़िल हो कर हर-हर तरह कमाल को पहुँची ताकि तुम हर तरह सोच समझ सको और इसे जान लो, हम बेहतरीन क़िस्सा बयान करते हैं। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ)! अगर कोई वाक़िया बयान करते। इस पर यह आयत उतरी। (तब्री : 15/552) और रिवायत में है कि एक ज़माने तक क़ुरआने करीम नाज़िल होता गया और आप (ﷺ) सहाबा (रज़ि.) के सामने तिलावत करते रहे, फिर उन्होंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! अगर कोई वाक़िया भी बयान हो जाता तो उस पर यह आयतें उतरीं। फिर कुछ वक़्त के बाद कहा, काश कि आप कोई बात बयान करते, इस पर आयत (اَللّٰهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيْثِ) (39/ज़ुमर : 23) उतरी और बात बयान हुई। (हाकिम :2/345; व सनदुहू हसन) रविशे कलाम की एक ही तरीक़ा देख कर सहाबा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! बात से ऊपर की और क़ुरआन से नीचे की कोई चीज़ होती यानी वाक़िया। इस पर यह आयात उतरीं। फिर उन्होंने हदीस की ख़्वाहिश की, इस पर आयत (अल्लाहु नज़्ज़ल) उतरी। पस क़िस्से के इरादे पर बेहतरीन क़िस्सा और बात के इरादे पर बेहतरीन बात नाज़िल हुई। इस जगह जहाँ कि क़ुरआन करीम की तारीफ़ हो रही है और यह बयान है कि यह क़ुरआन और सब किताबों से बेनियाज़ कर देने वाला है, मुनासिब है कि हम मुस्नद अहमद की इस हदीस को भी बयान कर दें जिसमें है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को किसी अहले किताब से एक किताब हाथ लग गई थी उसे लेकर आप हाज़िरे ख़िदमत हुए और आपके सामने उसे सुनाने लगे। आप (ﷺ) सख़्त ग़ुस्सा हो गए और फ़र्माने लगे, "ऐ ख़त्ताब के बेटे! क्या तुम इसमें मशग़ूल हो कर बहक जाना चाहते हो? उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं इसको निहायत रोशन चमकीली लेकर आया हूँ, तुम उन अहले किताब से कोई बात न पूछो, मुम्किन है कि वह सही जवाब दें और तुम उसे झुठला दो और हो सकता है कि वह ग़लत जवाब दें और तुम उसे सच्चा समझ लो, सुनो! उस अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर आज ख़ुद हज़रत मूसा (عليه السلام) भी ज़िन्दा होते तो उन्हें भी सिवाए मेरी ताबेदारी के कोई चारा न था।" (अहमद : 3/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और रिवायत में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आप (ﷺ) से कहा कि बनू क़ुरैज़ा क़बीला के मेरे एक दोस्त ने तौरात में से चंद जामेअ बातें मुझे लिख दी हैं तो क्या मैं उन्हें आप (ﷺ) को सुनाऊँ? आप (ﷺ) का चेहरा मुतग़य्यर (चेंज) हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन साबित (रज़ि.) ने कहा कि ऐ उमर (रज़ि.)! क्या तुम हुज़ूर के चेहरे को नहीं देख रहे अब हज़रत उमर (रज़ि.) की नज़र पड़ी तो आप कहने लगे, हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद (ﷺ) के रसूल होने पर दिल से रज़ामंद हैं। तब आप (ﷺ) के चेहरे से ग़ुस्सा दूर हुआ और फ़र्माया, "उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है कि अगर तुम में ख़ुद (हज़रत) मूसा (عليه السلام) होते फिर तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तिबाअ में लग जाते तो तुम सब गुमराह हो जाते। उम्मतों में से मेरा हिस्सा तुम हो और नबियों में से तुम्हारा हिस्सा मैं हूँ।" (अहमद : 4/265, 266; इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद जअफ़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/123) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) अबू यअला में है कि सूस का रहने वाला क़बीला अब्दुल क़ैस का एक शख़्स जनाब फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) के पास आया। आपने उससे

पूछा कि तेरा नाम फ़लाँ-फ़लाँ है? उसने कहा, हाँ! पूछा तू सूस में मुक़ीम है? उसने कहा, हाँ! फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इसी सूरत की आयतें (ल मिनल ग़ाफ़िलीन) तक पढ़ीं। तीन मर्तबा इन आयतों की तिलावत की और तीन मर्तबा उसे मारा। उसने पूछा कि अमीरुल मोमिनीन! मेरा क्या क़ुसूर है? आपने फ़र्माया तूने दानियाल की किताब लिखी है। उसने कहा फिर जो आप फ़र्माएँ मैं करने को तैयार हूँ। आपने फ़र्माया जा! और गर्म पानी और सफ़ेद रूई से उसे बिलकुल मिटा दे, ख़बरदार! आज के बाद से न उसे ख़ुद पढ़ना, न किसी और को पढ़ाना, अब अगर मैंने इसके ख़िलाफ़ सुना कि तूने ख़ुद उसे पढ़ा या किसी को पढ़ाया तो ऐसी सख़्त सज़ा दूँगा कि इब्रत बने।

फिर फ़र्माया कि बैठ जा! एक बात सुनता जा, मैंने जाकर अहले-किताब की एक किताब लिखी फिर उसे चमड़ा में लिए हुए हुज़ूर (ﷺ) के पास आया। आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा, ''तेरे हाथ में क्या है?'' मैंने कहा, एक किताब है कि हम इल्म में बढ़ जाएँ। उस पर आप इस क़द्र नाराज़ हुए कि ग़ुस्से की वजह से आपके रुख़सार पर सुर्ख़ी नमूदार हो गई। फिर मुनादी की गई कि नमाज़ जमा करने वाली है। उसी वक़्त अंसार ने हथियार संभाल लिए कि किसी ने हुज़ूर (ﷺ) को नाराज़ कर दिया है और मिम्बरे नबवी के चारों तरफ़ वह लोग हथियारबंद बैठ गये। अब आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''लोगों! मैं जामेअ कलिमात दिया गया हूँ और कलिमात के ख़ातिम दिया गया हूँ और फिर मेरे लिए बहुत ही इख़्तिसार किया गया है। मैं दीने अल्लाह की बातें बहुत सफ़ेद चमकीली लाया हूँ, ख़बरदार! तुम बहक न जाना, गहरे उतरने वाले कहीं तुम्हें बहका न दें।'' यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि.) खड़े हो गए और कहने लगे, अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर, आप (ﷺ) के रसूल होने पर मैं तो या रसूलल्लाह (ﷺ)! दिल से राज़ी हूँ। अब हुज़ूर (ﷺ) मिम्बर से उतरे। (मज्मउज़्ज़वाइद : 1/173; अल्अहादीसुल मुख़्तारा : 1/24; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ सख़्त ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/548; रक़म : 4812) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने भी इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। देखिए (अल्इरवाउ तहत, रक़म : 1589) इसके एक रावी अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ को मुहद्दिसीन ज़ईफ़ कहते हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) इनकी हदीस को सही नहीं लिखते। मैं कहता हूँ कि इसका एक गवाह और सनद से हाफ़िज़ अबूबक्र अहमद बिन इब्राहीम इस्माईली लाए हैं कि ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के ज़माने में आपने हिम्स के चंद आदमी बुलाए उनमें दो शख़्स वह थे जिन्होंने यहूदियों से चंद बातें मुंतख़ब करके लिख लीं थीं वह उस मज्मूए को भी अपने साथ लाए कि हज़रत उमर (रज़ि.) से पूछ लेंगे अगर आपने इजाज़त दी तो हम उसमें उसी जैसी और बातें भी बढ़ा लेंगे वरना उसे भी फेंक देंगे। यहाँ आकर उन्होंने कहा कि अमीरुल मोमिनीन! यहूदियों से हम कुछ ऐसी बातें सुनते हैं कि जिनसे हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं तो क्या वह बातें उनसे ले लें या बिलकुल ही न लें? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, शायद तुमने उनकी कुछ बातें लिख रखी हैं? सुनो! मैं इसमें फ़ैसलाकुन वाक़िया सुनाऊँ, मैं हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में ख़ैबर गया, वहाँ के एक यहूदी की बातें मुझे बहुत पसंद आईं। मैंने उससे दरख़्वास्त की और उसने वह बातें मुझे लिख दीं। मैंने वापिस आकर हुज़ूर (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जाओ वह लेकर आओ।'' मैं ख़ुशी-ख़ुशी चला कि शायद हुज़ूर (ﷺ) को मेरा यह काम पसंद आ गया। लाकर मैंने उसका पढ़ना शुरु किया अब ज़रासी देर के बाद मैंने नज़र उठायी तो देखा कि हुज़ूर (ﷺ) तो सख़्त नाराज़ हैं। मेरी

ज़ुबान से एक हर्फ़ भी न निकला और मारे डर के मेरे रोंगटे खड़े हो गए, मेरी यह हालत देखकर अब आप (ﷺ) ने उन तहरीरों को उठा लिया और उनका एक-एक हर्फ़ मिटाना शुरु किया और ज़ुबाने मुबारक से इर्शाद फ़र्माते जाते थे कि "देखो! ख़बरदार इनकी न मानना, यह तो गुमराही के गढ़े में जा पड़े हैं, और यह तो दूसरों को भी बहका रहे हैं।" चुनाँचे आप (ﷺ) ने उस सारी तहरीर का एक हर्फ़ भी बाक़ी न रखा, यह सुनाकर हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अगर तुम ने भी उनकी बातें लिखी होतीं तो मैं तुम्हें ऐसी सज़ा देता कि औरों के लिए सबक़ हो जाए। उन्होंने कहा, वल्लाह! हम हर्गिज़ एक हर्फ़ भी न लिखेंगे। बाहर आते ही जंगल में जाकर उन्होंने अपनी वह तख़्तियाँ गढा खोदकर दफ़न कर दीं। (इसकी सनद ग़रीब है।) मरासीले अबी दाऊद में भी हज़रत उमर (रज़ि.) से ऐसी ही रिवायत है, वल्लाहु आलम!

***

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَٰٓأَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَٰجِدِينَ ۝٤

तर्जुमा : "जबकि यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने वालिद मुहतरम से ज़िक्र किया कि अब्बाजान! मैंने ग्यारह सितारों को और सूरज चाँद को देखा और देखा कि वह सब मुझे सज्दा कर रहे हैं।" (4)

हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का ख़्वाब (आयत 4) : हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के वालिद हज़रत याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) हैं। चुनाँचे हदीस में है कि "करीम बिन करीम बिन करीम। यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) हैं।"(सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (व युतिम्मु निअमतहू अलैका व अला आले याक़ूब) : 4688; अहमद : 2/96; शरहुस्सुन्नाः 3547) हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ कि सब लोगों से ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जिसके दिल में अल्लाह का डर सबसे ज़्यादा हो।"उन्होंने कहा, हमारा मक़्सद ऐसा आम जवाब नहीं है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "फिर सब लोगों में ज़्यादा बुज़ुर्ग हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) हैं जो ख़ुद नबी थे जिनके वालिद नबी थे जिनके दादा नबी थे, जिनके परदादा नबियुल्लाह और ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) थे।" उन्होंने कहा, हम यह भी नहीं पूछते। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "फिर क्या तुम अरब के क़बीलों की निस्बत यह सवाल करते हो?" उन्होंने कहा, जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "सुनो! जाहिलियत के ज़माने में जो मुम्ताज़ और शरीफ़ थे वह इस्लाम लाने के बाद भी वैसे ही शरीफ़ हैं जबकि उन्होंने दीनी समझ हासिल कर ली हो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (लक़द काना फ़ी यूसुफ़ व इख़्वतहू आयातिल लिस्साइलीन) : 4689; सहीह मुस्लिम : 2378; अहमद : 2/257; मुस्नद तयालिसी : 71; मुस्नद हुमैदी : 1045; इब्ने हिब्बान : 636) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, नबियों के ख़्वाब अल्लाह की वही होते हैं। (तबरी : 15/554) मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि यहाँ ग्यारह सितारों से मुराद हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के ग्यारह भाई हैं और सूरज चाँद से मुराद आपके वालिद और वालिदा हैं। उस ख़्वाब की ताबीर ख़्वाब देखने के चालीस साल बाद ज़ाहिर हुई। कुछ

कहते हैं कि अस्सी (80) साल के बाद ज़ाहिर हुई। जबकि आपने अपने माँ बाप को तख़्त शाही पर बिठाया और ग्यारह भाई आपके सामने सज्दे में गिर पड़े। उस वक़्त आपने फ़र्माया कि मेरे मेहरबान वालिद! यह देखिए आज अल्लाह तआला ने मेरे ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया। (तब्री : 15/557) (12/यूसुफ़ : 100) एक रिवायत में है कि बस्ताना नामी शख़्स यहूदियों का एक ज़बरदस्त आलिम था। उसने हुज़ूर (ﷺ) से उन ग्यारह सितारों के नाम पूछे। आप (ﷺ) ख़ामोश रहे, हज़रत जिब्राईल (علیہ السلام) ने आसमान से नाज़िल हो कर आप (ﷺ) को नाम बतलाए। आप (ﷺ) ने उसे बुलवाया और फ़र्माया, अगर मैं तुझे उनके नाम बतला दूँ तो तू मुसलमान हो जाएगा?'' उसने इक़रार कर लिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुनो! उनके नाम यह हैं, जिर्यान, तारिक़, ज़ियाल, जुल किन्फ़ात, क़ाबिस, वसाब, अमूदान, फ़लक़, मिस्बह़, जुरूह़, जुल फ़ज़्अ।'' यहूदी ने कहा, हाँ! हाँ! हाँ! अल्लाह की क़सम! उन सितारों के यही नाम हैं। (मुस्नद बज़्ज़ार : 2220; दलाइलुन्नबुव्वा : 6/277; इसकी सनद में ह़कम बिन ज़ुहैर है जिसे बुख़ारी ने मुंकरुल ह़दीस कहा है। देखिए (अल्मीज़ान : 1/571; रक़म : 2178) लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।) (इब्ने जरीर) यह रिवायत दलाइले बैहक़ी में और अबू यअला में और बज़्ज़ार में और इब्ने अबी ह़ातिम में भी है। अबू यअला में यह भी है कि हज़रत यूसुफ़ (علیہ السلام) ने जब यह ख़्वाब अपने वालिद मुह़तरम से बयान किया तो आप (علیہ السلام) ने फ़र्माया, यह सच्चा ख़्वाब है यह पूरा हो कर रहेगा। आप फ़र्माते हैं, सूरज से मुराद वालिद हैं और चाँद से मुराद माँ हैं। लेकिन इस रिवायत की सनद में ह़कम बिन ज़ुहैर फ़ुज़ारी मुंफ़रिद हैं। जिन्हें कुछ इमामों ने ज़ईफ़ कहा है और अक्सर ने उन्हें मतरूक कर रखा है यही ह़सन यूसुफ़ की रिवायत के रावी हैं, उन्हें चारों ही ज़ईफ़ कहते हैं।

***

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ⑤ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑥

तर्जुमा : ''याक़ूब (علیہ السلام) ने कहा, प्यारे बेटे! अपने इस ख़्वाब का ज़िक्र अपने भाईयों से न करना, ऐसा न हो कि वह तेरे साथ कोई फ़रेबकारी करें, शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है। (5) और इसी तरह बरगुज़ीदा करेगा तुझे तेरा परवरदिगार और तुझे बातों की कुल बिठानी (ताबीर) भी सिखाएगा और अपनी नेअ़मत तुझे भरपूर अ़ता करेगा और याक़ूब (علیہ السلام) के घरवालों को भी जैसे कि उसने इससे पहले तेरे दो दादों यानी इब्राहीम और इस्हाक़ को भी भरपूर अपनी नेअ़मत दी, यक़ीनन तेरा रब बहुत बड़े इल्म वाला और ज़बरदस्त ह़िक्मतों वाला है।''(6)

याक़ूब (ﷺ) की यूसुफ़ (ﷺ) को अपना ख़्वाब न बयान करने की हिदायत (आयत 5, 6) : हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का यह ख़्वाब सुनकर उसकी ताबीर को सामने रखकर हज़रत याक़ूब (ﷺ) ने ताकीद कर दी कि इसे भाईयों के सामने न दोहराना क्यों कि इस ख़्वाब की ताबीर यह है कि और भाई आपके सामने पस्त होंगे, यहाँ तक कि वह आपकी इज़्ज़त व ताज़ीम के लिए आपके सामने अपनी बहुत ही लाचारी और आजिज़ी ज़ाहिर करें तो बहुत मुम्किन है कि इस ख़्वाब को सुनकर इसकी ताबीर को सामने रखकर शैतान के बहकावे में आकर अभी से तुम्हारी दुश्मनी में लग जाएँ और हसद की वजह से कोई नामाक़ूल फ़रेबकारी करने लगें और किसी हीले से तुझे पस्त करने की फ़िक्र में लग जाएँ चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तालीम भी यही है। फ़र्माते हैं ''तुम लोग कोई अच्छा ख़्वाब देखो तो ख़ैर उसे बयान कर दो और जो शख़्स कोई ऐसा बुरा ख़्वाब देखे तो जिस करवट पर हो वह करवट बदल दे और बाईं तरफ़ तीन मर्तबा थुत्कार दे और उसकी बुराई से अल्लाह की पनाह मांगे और किसी से उसका ज़िक्र न करे तो वह ख़्वाब उसे कोई नुक़्सान न पहुँचाएगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्ताबीर, बाब इज़ा राआ मा यक्रहू फ़ला युख़्बिरु बिहा वला यज़्कुरुहा : 7044; सहीह मुस्लिम : 2261) मुस्नद अहमद वग़ैरह की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''ख़्वाब की ताबीर जब तक न ली जाए वह गोया परिन्द के पैर पर है, हाँ! जब उसकी ताबीर बयान हो गई फिर वह हो जाता है।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब बाब फ़िर्रुअया : 5020; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2279; इब्ने माजा : 3914; अहमद : 4/10; मुस्नद तयालिसी : 1088; हाकिम : 4/390; मुश्किलुल आसार : 1/295)

फ़ायदा : इसी से यह हुक्म भी लिया जा सकता है कि नेअ़मत को छुपाना चाहिए जब तक कि वह अज़्ख़ुद (खुद से)अच्छी तरह हासिल न हो जाए और ज़ाहिर न हो जाए जैसे कि एक हदीस में है ''ज़रूरतों के पूरा करने पर उनके छुपाने से भी मदद लिया करो क्योंकि हर वह शख़्स जिसे कोई नेअ़मत मिले लोग उसके हसद के दर पे हो जाते हैं।'' (तब्रानी : 16609; मुस्नद शामिय्यीन : 408; शुअबुल ईमान : 6379; मुस्नद रुअयानी : 1438; मुस्नदे शिहाब : 660; इसकी सनद में सईद बिन सलाम है जिस पर हदीसें गढ़ने का इल्ज़ाम है। (अज़्ज़ुअफ़ा वल मतरूकीन लि इब्निल जौज़ी : 1399) लिहाज़ा यह रिवायत मौज़ूअ है।)

हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की फ़ज़ीलत : हज़रत याक़ूब (ﷺ) अपने लख़्ते जिगर हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को उन्हें मिलने वाले मर्तबों की ख़बर देते हैं कि जिस तरह ख़्वाब में उसने तुम्हें यह फ़ज़ीलत दिखाई है इसी तरह वह तुम्हें बुलंद मर्तबा नबुव्वत का भी अता करेगा और तुम्हें ख़्वाब की ताबीर सिखा देगा और तुम्हें अपनी भरपूर नेअ़मत देगा यानी नबुव्वत जैसे कि इससे पहले वह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (ﷺ) को और हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) को भी अता कर चुका है जो तुम्हारे दादा और परदादा थे। अल्लाह तआला उससे ख़ूब वाक़िफ़ है कि नबुव्वत के लायक़ कौन है।

***

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۚۖ ۝ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝

तर्जुमा : "यक़ीनन यूसुफ़ (ﷺ) और उसके भाईयों में पूछने वालों के लिए बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं। (7) जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई बनिस्बत हमारे बाप को बहुत ज़्यादा प्यारा है हालाँकि हम ताक़तवर जमाअत हैं, कोई शक नहीं कि हमारा अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8) यूसुफ़ को तो मार ही डालो या उसे किसी नामालूम जगह पहुँचा दो कि तुम्हारे वालिद का रुख़ सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ ही हो जाए, उसके बाद तुम सलाहियत वाले हो जाना। (9) उनमें से एक ने कहा, यूसुफ़ को क़त्ल तो न करो बल्कि उसे गुमनाम कूएँ की तह में डाल आओ कि उसे कोई राह चलने वाला क़ाफ़िला उठा ले जाए अगर तुम्हें करना ही है तो यूँ करो।" (10)

हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) से भाईयों की हसद (आयत 7-10) : फ़िल वाक़ेअ हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) और उनके भाईयों के वाक़ियात इस क़ाबिल हैं कि उनका पूछने वाला उनसे बहुत सी इब्रतें हासिल कर सके और नसीहतें ले सके। हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के एक ही माँ से दूसरे भाई बिनयामीन थे और यह सब भाई दूसरी माँ से थे। यह सब आपस में कहते हैं अल्लाह की क़सम अब्बाजान! हमसे ज़्यादा इन दोनों को चाहते हैं ताज्जुब है कि हम पर जो जमाअत हैं उनको तर्जीह देते हैं जो सिर्फ़ दो हैं यक़ीनन यह तो वालिद साहब की सरीह ग़लती है कुछ लोगों का बयान है कि इस वाक़िया के बाद उन्हें नबुव्वत मिली लेकिन यह चीज़ भी मोहताजे दलील है और दलील में आयते क़ुरआनी (قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا) (2/बक़रह : 136) में लफ़्ज़े अस्बात पेश करना भी एहतिमाल से ज़्यादा वक़्अत नहीं रखता इसलिए कि बुतूने बनी इस्राईल को अस्बात कहा जाता है जैसे कि अरब को क़बाइल कहा जाता है और अजम को शुऊब कहा जाता है पस आयत में सिर्फ़ इतना ही है कि बनी इस्राईल के अस्बात पर वह्यी इलाही नाज़िल हुई, उन्हें इसलिए इज्मालन ज़िक्र किया गया कि यह बहुत थे लेकिन हर सब्त बिरादराने यूसुफ़ में से एक की नस्ल थी पस उसकी कोई दलील नहीं कि ख़ास इन भाईयों को अल्लाह ने ख़ल्अते नबुव्वत से नवाज़ा था, वल्लाहु आलम!

फिर आपस में कहते हैं कि एक काम करो न बांस हो न बाँसुरी बाजे, यूसुफ़ का पाप ही काटो, न यह हो न हमारी राह का कांटा बने, हम ही हम नज़र आएँ और अब्बा की मुहब्बत सिर्फ़ हमारे ही साथ रहे। अब

उसे बाप से हटाने की दो सूरतें हैं, या तो उसे मार ही डालो या कहीं ऐसे दूरदराज़ जगह फेंक आओ कि एक की दूसरे को ख़बर ही न हो और उसे करके फिर नेक बन जाना तौबा कर लेना, अल्लाह माफ़ करने वाला है। यह सुनकर एक ने मश्वरा दिया यही सबसे बड़ा था और इसका नाम रूबेल था। (तब्री : 15/564) कोई कहता है यहूदा था, कोई कहता शमऊन था, उसने कहा, भई! यह तो नाइंसाफ़ी है बिलावजह बिला क़सूर सिर्फ़ दुश्मनी में आकर ख़ूने नाह़क़ गर्दन पर लेना तो ठीक नहीं। यह भी कुछ ह़िक्मत थी, रब को मंज़ूर ही न था उनमें क़त्ले यूसुफ़ की कुव्वत ही न थी, अल्लाह को मंज़ूर तो यह था कि यूसुफ़ को नबी बनाए, बादशाह बनाए और उन्हें आजिज़ी के साथ उसके सामने खड़ा करे पस उनके दिल रूबेल के राय से नर्मा गए और तै हुआ कि उसे किसी ग़ैरआबाद कूएँ की तह में फेंक दें। क़तादा (रह़.) कहते हैं यह बैतुल मक़्दिस का कुआँ था उन्हें यह ख़्याल हुआ कि मुम्किन है मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रें और वह उसे अपने क़ाफ़िले में ले जाएँ फिर कहाँ यह और कहाँ हम? जब गुड़ दिए काम निकलता हो तो ज़हर क्यूँ दो, बग़ैर क़त्ल किए मक़्सद ह़ासिल होता है तो क्यूँ ख़ून आलूद हाथ करो। उनके गुनाह का तसव्वुर तो करो यह रिश्तेदारी के तोड़ने, बाप की नाफ़र्मानी करने, छोटे पर ज़ुल्म करने, बेगुनाह को नुक़्सान पहुँचाने बड़े-बूढ़े को सताने और ह़क़दार का ह़क़ छीनने, हुर्मत व फ़ज़ीलत का ख़िलाफ़ करने, बुज़ुर्गी को टालने और अपने बाप को दुख पहुँचाने और उसे उसके कलेजे की ठण्डक और आँखों के सुख से हमेशा के लिए दूर करने और बूढ़े बाप अल्लाह के लाडले पैग़म्बर (ﷺ) को उस बुढ़ापे में नाक़ाबिले बर्दाश्त सदमा पहुँचाने और उस बेसमझ बच्चे को अपने मेहरबान बाप की प्यार भरी निगाहों से हमेशा ओझल करने के दर पे हैं। अल्लाह के दो नबियों को दुख देना चाहते हैं, मह़बूब व मुह़िब्ब में तफ़र्क़ा डालना चाहते हैं सुख की जानों को दुख में डालना चाहते हैं, फूल से नाज़ुक बेज़ुबान बच्चे को उसके मुश्फ़िक़ मेहरबान बूढ़े बाप की नर्म व गर्म गोदी से अलग करते हैं। अल्लाह उन्हें बख़्शे, आह! शैतान ने कैसी उल्टी पढ़ाई है और उन्होंने भी कैसी बदी पर कमर बाँधी है।

***

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَالَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ⑪ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ
وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ⑫ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ
الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ⑬ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ⑭

तर्जुमा : ''कहने लगे, अब्बा! आख़िर आप यूसुफ़ के बारे में हम पर भरोसा क्यूँ नहीं करते, हम तो इसके ख़ैरख़्वाह हैं। (11) कल आप इसे ज़रूर हमारे साथ भेज दीजिए कि ख़ूब खाये पीए और खेले कूदे, इसकी ह़िफ़ाज़त के हम ज़िम्मेदार हैं। (12) कहा, इसे तुम्हारा ले जाना मुझे तो सख़्त सदमा देगा और मुझे यह भी खटका रहेगा कि तुम्हारी ग़फ़्लत में इसे भेड़िया खा जाए

(13) उन्होंने जवाब दिया कि हम जैसी ज़ोरावर जमाअत की मौजूदगी में भी अगर इसे भेड़िया खा जाए तो हम बिलकुल आजिज़ ही हुए''(14)

यूसुफ (ﷺ) को साथ ले जाने के लिए भाईयों का वालिद से इसरार (ज़िद)(आयत 11-14) : बड़े भाई रूबेल के समझाने पर सब भाईयों ने इस राय पर इत्तिफ़ाक़ किया कि यूसुफ़ को ले जाएँ और किसी ग़ैर आबाद कूएँ में डाल आएँ। उसके तै करने के बाद वालिद को धोखा देने और भाई को फुसलाकर ले जाने और उस पर आफ़त ढाने के लिए सब मिलकर वालिद के पास आए बावजूद यह कि थे बुरे अंदेश, बुरे ख़्वाह, बुरा चाहने वाले लेकिन बाप को अपनी बातों में फंसाने के लिए और अपने गहरे मकर में उन्हें उल्झाने के लिए पहले ही जाल बिछाते हैं कि अब्बाजान! आख़िर क्या बात है जो आप हमें यूसुफ़ के बारे में अमीन नहीं जानते? हम तो इसके भाई हैं, इसकी ख़ैरख़्वाही हम से ज़्यादा कौन कर सकता है? (यरतअ व यल्अब) की दूसरी क़िरअत (नरतअ व नल्अब) भी है, बाप से कहते हैं कि भाई यूसुफ़ को कल हमारे साथ सैर के लिए भेजिए, इनका जी ख़ुश होगा, दो घड़ी खेल कूद लेंगे, हंस बोल लेंगे, आज़ादी से चल फिर लेंगे, आप बेफ़िक्र रहिए हम इसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे, हर वक़्त देखभाल करेंगे, आप हम पर भरोसा कीजिए, हम इसके निगहबान हैं।

याक़ूब (ﷺ) का यूसुफ़ (ﷺ) के बारे में डर : अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब (ﷺ) अपने बेटों की इस तलब का कि भाई यूसुफ़ (ﷺ) को हमारे साथ सैर के लिए भेजिए जवाब देते हैं कि तुम्हें मालूम है मुझे इससे बहुत मुहब्बत है तुम इसे ले जाओगे मुझ पर इसकी इतनी देर की जुदाई भी शाक़ (भारी) गुज़रेगी। हज़रत याक़ूब (ﷺ) की इस बढ़ी हुई मुहब्बत की वजह यह थी कि आप हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के चेहरे पर ख़ैर के निशान देख रहे थे, नबुव्वत का नूर पेशानी से ज़ाहिर था, अख़्लाक़ की पाकीज़गी एक-एक बात से अयाँ थी, सूरत की ख़ूबी सीरत की अच्छाई बयान कर रही थी। अल्लाह तआला की तरफ़ से दोनों बाप बेटों पर सलात व सलाम हो। दूसरी वजह यह भी है कि मुम्किन है कि तुम अपनी बकरियों के चराने-चुगाने और दूसरे कामों में मशग़ूल रहो और अल्लाह न करे कोई भेड़िया आकर इसका काम तमाम कर जाए और तुम्हें पता भी न चले। आह! हज़रत याक़ूब (ﷺ) की इसी बात को उन्होंने ले लिया और दिमाग़ में बिठा लिया कि यही ठीक उ़ज़्र है, यूसुफ़ (ﷺ) को अलग करके अब्बा के सामने यही घड़ंत घड़ लेंगे, उसी वक़्त बात बनाई और जवाब दिया कि अब्बा! आपने भला फ़िक्र किया, हमारी हिमायत की जमाअत क़वी और ताक़तवर मौजूद और हमारे भाई को भेड़िया खा जाए? बिलकुल नामुम्किन। अगर ऐसा हो जाए तो फिर तो गोया हम सब बेकार निकम्मे आजिज़ और नुक़्सान वाले ही हुए।

***

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

तर्जुमा :"फिर जब उसे ले चले और सबने मिलकर ठान लिया कि इसे ग़ैर आबाद कूएँ की तह में फेंक दें, हमने यूसुफ़ (عليه السلام) की तरफ़ वही की कि यक़ीनन वक़्त आ रहा है तू इन्हें इस माजरा की ख़बर उस हाल में दे कि वह जानते ही न हों।"(15)

यूसुफ़ (عليه السلام) का कूएँ में डाला जाना (आयत 15) : समझा-बुझाकर भाईयों ने बाप को राज़ी कर ही लिया। और हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को लेकर चले। जंगल में जाकर सबने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि यूसुफ़ (عليه السلام) को किसी ग़ैर आबाद कूएँ की तह में डाल दिया जाए, हालाँकि बाप से यह कहकर ले गए थे कि इसका जी बहलेगा, हम इसे इज़्ज़त के साथ ले जाएँगे। हर तरह से ख़ुश रखेंगे, इसका जी बहल जाएगा और यह राज़ी ख़ुशी रहेगा। यहाँ आते ही ग़द्दारी शुरू कर दी, और लुत्फ़ यह है कि सबने एक साथ दिल सख़्त कर लिया। इनकी बातों में आकर अपने लख़्ते जिगर को उनके सुपुर्द कर दिया, जाते हुए सीने से लगाकर चुमकारा पुचकार कर दुआएँ देकर रुख़सत किया। बाप की आँखों से हटते ही उन सबने भाई को ईज़ाएँ देनी शुरू कर दीं, बुरा भला कहने लगे और चाँटा चटोल से भी बाज़ न रहे, मारते-पीटते बुरा भला कहते उस कुएँ के पास पहुँचे और हाथ पैर रस्सी से जकड़कर कूएँ में गिराना चाहा। आप एक-एक के दामन से चिमटते हैं और एक-एक से रहम की दरख़्वास्त करते हैं, लेकिन हर एक झिड़क देता है और धक्का देकर मार पीटकर हटा देता है। मायूस हो गए। सबने मिलकर मज़बूत बाँधा और कूएँ में लटका दिया, आपने कूएँ का किनारा हाथ से थाम लिया। लेकिन भाईयों ने उँगलियों पर मार-मार कर उसे भी हाथ से छुड़ा लिया। आधी दूर आप (عليه السلام) पहुँचे होंगे कि उन्होंने रस्सी काट दी आप तह में जा गिरे कुएँ के बीच में एक पत्थर था जिस पर खड़े हो गए। (तबरी : 15/574) ऐन इस मुसीबत के वक़्त ऐन उस सख़्ती और तंगी के वक़्त अल्लाह तआला ने आप (عليه السلام) की जानिब वही की कि आपका दिल मुत्मइन हो जाए, आप सब्रो सिहार से काम लें और अंजाम का आपको इल्म हो जाए। वही में फ़र्माया गया कि ग़मगीन न हो, यह न समझ कि यह मुसीबत दूर न होगी, सुन अल्लाह तआला तुझे इस सख़्ती के बाद आसानी देगा, इस तक्लीफ़ के बाद राहत मिलेगी, इन भाईयों पर अल्लाह तुझे ग़ल्बा देगा, यह भले तुझे पस्त करना चाहते हैं लेकिन अल्लाह की चाहत है कि वह तुझे बुलंद करे, यह जो कुछ आज तेरे साथ कर रहे हैं, वक़्त आएगा कि तू इन्हें इनके उस करतूत को याद दिलाएगा और यह नदामत से सर झुकाए हुए होंगे, अपना क़ुसूर सुन रहे होंगे और उन्हें यह भी न मालूम होगा कि तू तू है।

चुनाँचे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब यूसुफ़ (عليه السلام) के भाई हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के पास पहुँचे तो आप (عليه السلام) ने तो उन्हें पहचान लिया लेकिन यह न पहचान सके। उस वक़्त आप (عليه السلام) ने एक प्याला मंगवाया, अपने हाथ पर रखकर उसे उँगली से ठोंका, आवाज़ निकली ही न थी, उसी वक़्त आप

(ﷺ) ने फ़र्माया, लो! यह जाम तो कुछ कह रहा है और तुम्हारे बारे में ही कुछ ख़बर दे रहा है, यह कह रहा है कि तुम्हारा एक सौतेला भाई था, यूसुफ़ नामी, तुम उसे बाप के पास से ले गए और उसे कुएँ में फेंक दिया। फिर उसे उँगली मारी और ज़रासी देर कान लगाकर फ़र्माया, लो यह कह रहा है कि फिर तुम उसके कुर्ते पर झूठा ख़ून लगा कर बाप के पास गए और वहाँ जाकर उनसे कह दिया कि तेरे लड़के को भेड़िए ने खा लिया। अब तो यह हैरान हो गए और आपस में कहने लगे, हाय! बुरा हुआ, भांडा फूट गया, उस जाम ने तो तमाम सच्ची सच्ची बातें बादशाह से कह दीं बस यही है जो आपको कूएँ में वही हुई कि उनके इस करतूत को तू इन्हें बेशऊरी में जताएगा।

***

وَجَآءُوْٓا اَبَاهُمْ عِشَآءً یَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا یٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا یُوْسُفَ عِنْدَ

مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِیْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰی

قَمِیْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِیْلٌ ؕ وَاللّٰهُ

الْمُسْتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : ''रात के अंधेरे में अपने बाप के पास रोते हुए पहुँचे।(16) और कहने लगे कि अब्बाजान! हम तो आपस में शर्तिया दौड़ में लग गए। यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ा था जो उसे भेड़िया खा गया, आप तो हमारी बात पर भरोसा करने के नहीं, भले हम बिलकुल सच्चे ही हों।(17) यूसुफ़ के कुर्ते को झूठ-मूट के ख़ून से ख़ून आलूद भी कर लाए थे, बाप ने कहा, यूँ नहीं बल्कि तुमने अपने दिल ही से एक बात बना ली है, पस सब्र ही बेहतर है, तुम्हारी बनाई हुई बातों पर अल्लाह ही से मदद की तलब है।'' (18)

भाईयों का बाप के सामने मकर व फ़रेब (आयत 16-18) : चुपचाप नन्हे भय्या पर अल्लाह के मासूम नबी पर बाप की आँख के तारे पर जुल्मो सितम के पहाड़ तोड़कर रात हुए बाप के पास सुर्ख़रू बनने और अपनी हमदर्दी ज़ाहिर करने के लिए ग़मज़दा होकर रोते हुए पहुँचे, और अपने मलाल का यूसुफ़ (ﷺ) के न होने का सबब यह बयान किया कि हमने तीरअंदाज़ी और दौड़ शुरु की, छोटे भाई को सामान के पास छोड़ा, इत्तिफ़ाक़ की बात है उसी वक़्त भेड़िया आ गया और भाई को लुक़्मा बना लिया, चीर फाड़कर खा गया। फिर बाप को अपनी बात सही तौर पर जचाने और ठीक साबित कराने के लिए पानी से पहले बाड़ बाँधते हैं कि हम अगर आपके नज़दीक सच्चे ही होते तब भी यह वाक़िया ऐसा है कि आप हमें सच्चा मानने में ताम्मुल (शक)

करते, फिर जबकि पहले ही से आपने अपना एक खटका ज़ाहिर किया हो और ख़िलाफ़े ज़ाहिर वाक़िया में इत्तिफ़ाक़न ऐसा ही हो भी जाए तो ज़ाहिर है कि आप उस वक़्त तो हमें सच्चा मान ही नहीं सकते, हैं तो हम सच्चे ही। लेकिन आप भी हम पर भरोसा न करने में एक हद तक हक़ पर हैं, क्योंकि यह वाक़िया ही ऐसा अनोखा है, हम ख़ुद हैरान हैं कि यह हो क्या गया? यह तो था ज़ुबानी खेल, एक काम भी उसी के साथ कर लाए थे, यानी बकरी के एक बच्चे को ज़िब्ह करके उसके ख़ून से हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का पैरहन दाग़ दार कर दिया कि बतौर गवाही के अब्बा के सामने पेश करेंगे कि यह देखो! यह हैं यूसुफ़ भाई के ख़ून के धब्बे उनके कुर्ते पर, लेकिन अल्लाह की शान चोरों के पैर कहाँ? सब कुछ तो किया लेकिन कुर्ता फाड़ना भूल गए, इसलिए बाप पर सब मकर खुल गया, लेकिन अल्लाह के नबी (ﷺ) ने ज़ब्त किया और साफ़ लफ़्ज़ों में भले न कहा, लेकिन बेटों को भी पता चल गया कि अब्बाजान को हमारी बात जची नहीं। फ़र्माया कि तुम्हारे दिल ने तो एक बात बता दी है, ख़ैर मैं तो तुम्हारी इस मज़्बूही हरकत पर सब्र ही करूँगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपने महर व करम से इस दुख को टाल दे तुम जो एक झूठी बात मुझसे बयान कर रहे हो और एक महाल (असंभव) चीज़ पर मुझे यक़ीन दिला रहे हो, इस पर मैं अल्लाह से मदद तलब करता हूँ, उसकी मदद शामिले हाल रही तो दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाएगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि कुर्ता देखकर आप (ﷺ) ने यह भी फ़र्माया था कि ताज्जुब है भेड़िया यूसुफ़ को खा गया, उसका पैराहन ख़ून आलूद हुआ मगर कहीं से ज़रा भी न फटा। ख़ैर मैं सब्र करूँगा जिसमें कोई शिकायत न हो, न कोई घबराहट हो। कहते हैं कि तीन चीज़ों का नाम सब्र है, अपनी मुसीबत किसी से ज़िक्र न करना, अपने दिल का दुखड़ा किसी के सामने न रोना, और साथ ही अपने नफ़्स को पाक न समझना। इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस मौक़े पर हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) के उस वाक़िया की पूरी हदीस को बयान किया है, जिसमें आप (रज़ि.) पर तोहमत लगाए जाने का ज़िक्र है। उसमें आपने फ़र्माया है वल्लाह! मेरी और तुम्हारी मिसाल हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के बाप की सी है कि उन्होंने फ़र्माया था अब सब्र ही बेहतर है और तुम्हारी इन बातों पर अल्लाह ही से मदद चाही गयी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (क़ाल बल सव्वलत लकुम अन्फ़ुसुकुम अम्रन. फ़सब्रुन जमील) : 4690)

***

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَٰبُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَٰمٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَٰعَةً ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَٰهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ ٱلزَّٰهِدِينَ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "एक क़ाफ़िला आया, उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा उसने अपना डोल लटका दिया। कहने लगा, वाह! ख़ुशी की बात है यह तो नौजवान बच्चा है, उन्होंने उसे माले तिजारत क़रार देकर छुपा दिया, अल्लाह तआला बाख़बर था, उससे जो वह कर रहे थे। (19) उन्होंने उसे बहुत ही हल्की क़ीमत पर गिनती के चंद दिरहमों पर ही बेच डाला, वह तो यूसुफ़ (عليه السلام) के बारे में बहुत ही बेरग़बत थे।" (20)

कूएँ से निकलकर बाज़ारे मिस्र की तरफ़ (आयत 19,20): भाई तो हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को कूएँ में डालकर चल दिए, यहाँ तीन दिन आप (عليه السلام) को उसी अंधेरे कूएँ में अकेले गुज़र गए। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) का बयान है कि उस कूएँ में गिराकर भाई तमाशा देखने के लिए उसके आसपास ही दिन भर फिरते रहे कि देखें कि वह क्या करता है और उसके साथ क्या किया जाता है। अल्लाह की कुदरत से एक क़ाफ़िला वहीं से गुज़रा, उन्होंने अपने सुक़ी (पानी पिलानो वाले) को पानी के लिए भेजा, उसने उसी कूएँ में डोल डाला, हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने उसकी रस्सी को मज़बूती से पकड़ लिया और बजाए पानी के आप (عليه السلام) बाहर निकले, वह आप (عليه السلام) को देखकर बाग़ बाग़ हो गया, रह न सका बाआवाज़े बुलंद कह उठा कि लो सुब्हानल्लाह! यह तो नौजवान बच्चा आ गया। दूसरी क़िरात उसकी (या बुशराया) भी है। सुद्दी (रह.) कहते हैं बुशरा सुक़ी (पानी पिलाने वाले) के भेजने वाले का नाम भी था उसने उसका नाम लेकर पुकारा, कि मेरे डोल में तो एक बच्चा आया है। लेकिन सुद्दी (रह.) का यह क़ौल ग़रीब है। इस तरह की क़िरात पर भी वही मअनी हो सकते हैं, इसकी इज़ाफ़त अपने नफ़्स की तरफ़ है और याए इज़ाफ़त साक़ित है उसी की ताईद क़िरात (या बुशरा) से होती है जैसे अरब कहते हैं (या नफ़्सु इस्बिरी और या गुलामु अक़्बिल) इज़ाफ़त के हर्फ़ को साक़ित करके उस वक़्त कसरा देना भी जाइज़ है और रफ़अ देना भी, पस यह इसी क़बील से है और दूसरी क़िरात इसकी तफ़्सीर है, वल्लाहु आलम! उन लोगों ने आप (عليه السلام) को बहैसियत पूँजी के छुपा लिया, क़ाफ़िले के और लोगों पर इस राज़ को ज़ाहिर न किया बल्कि कह दिया कि हमने कूएँ के पास के लोगों से इसे ख़रीद लिया है, उन्होंने हमें इसे दे दिया है ताकि वह भी साझा न मिलाएँ।

एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद यह है कि यूसुफ़ के भाईयों ने शाने यूसुफ़ छुपाई, और हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने भी अपने आपको ज़ाहिर न किया, ऐसा न हो यह लोग कहीं क़त्ल ही कर दें, इसलिए चुपचाप भाईयों के हाथों आप (عليه السلام) बिक गए। सुक़्क़े से उन्होंने कहा, उसने आवाज़ देकर बुला लिया उन्होंने ओने पोने यूसुफ़ (عليه السلام) को उनके हाथों बेच दिया। (तब्री : 16/6) अल्लाह कुछ उनकी इस हरकत से बेख़बर न था, वह ख़ूब देखभाल रहा था, भले वो क़ादिर था कि उसी वक़्त उस भेद को ज़ाहिर कर दे लेकिन उसकी हिक्मतें उसी के साथ हैं, उसकी तक़्दीर यूँ ही जारी हुई थी, ख़ल्क़ और अम्र उसी का है, वह रब्बुल आलमीन बरकतों वाला है, उसमें हुज़ूर (ﷺ) को भी एक तरह से तस्कीन दी गई है कि मैं देख रहा हूँ कि क़ौम आपको दुख दे रही है, मैं क़ादिर हूँ कि आपको इनसे छुड़ा दूँ, इन्हें ग़ारत कर दूँ, लेकिन मेरे काम हिक्मत के साथ हैं, देर है अंधेर नहीं, बेफ़िक्र रहो, अन्क़रीब ग़ालिब कर दूँगा और धीरे-धीरे इनका चूरा कर दूँगा, जैसे कि यूसुफ़ (عليه السلام) और उनके भाईयों के बीच मेरी हिक्मत का हाथ काम करता रहा यहाँ तक कि आख़िर अंजाम हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के सामने उन्हें झुकना पड़ा और उनके मर्तबे का इक़रार करना पड़ा। बहुत थोड़े

मोल पर भाईयों ने उन्हें बेच दिया, नाक़िस चीज़ के बदले भाई जैसी दौलत दे दी, और उसकी भी उन्हें कोई परवाह न थी बल्कि अगर उनसे बिलकुल बग़ैर क़ीमत मांगा जाता तो भी दे देते। यह भी कहा गया है कि मतलब यह है कि क़ाफ़िले वालों ने उसे बहुत कम क़ीमत पर ख़रीदा लेकिन यह कुछ ज़्यादा दुरुस्त नहीं, इसलिए कि उन्होंने तो उसे देखकर ख़ुशियाँ मनाई थीं और बतौरे पूँजी उसे छुपा दिया था, पस अगर उन्हें उसकी बेरग़बती होती तो वह ऐसा क्यूँ करते। पस तर्जीह इसी बात को है कि यहाँ मुराद भाईयों का हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को गिरे हुए नर्ख़ पर बेच डालना है (बख़्सिन) से मुराद हराम और ज़ुल्म भी है, लेकिन यहाँ वह मुराद नहीं ली गई, क्योंकि इस क़ीमत की हुर्मत का इल्म तो हर एक को है। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) नबी बिन नबी बिन नबी बिन ख़लीलुर्रहमान (عليه السلام) थे पस आप तो करीम बिन करीम बिन करीम थे पस यहाँ मुराद नाक़िस कम थोड़ी और खोटी बल्कि बराए नाम क़ीमत पर बेच डालना है, बावजूद इसके वह ज़ुल्म व हराम भी था, भाई को बेच रहे हैं और वह भी कोड़ियों के मोल, चंद दिरहमों के बदले बीस या बाईस या चालीस दिरहम के बदले यह दाम लेकर आपस में बांट लिए। (तब्री : 16/4) और उसकी उन्हें कोई परवाह न थी। उन्हें नहीं मालूम था कि अल्लाह के यहाँ उनकी क्या क़द्र है, वह क्या जानते थे कि यह अल्लाह के नबी बनने वाले हैं। हज़रत मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि इतना सब कुछ करने पर भी सब्र न हुआ, क़ाफ़िले के पीछे हो लिए और उनसे कहने लगे कि देखो! इस ग़ुलाम में भाग जाने की आदत है, इसे मज़बूत बाँध दो, कहीं तुम्हारे हाथों से भी भाग न जाए। इसी तरह बाँधे-बाँधे मिस्र तक पहुँचे और वहाँ आप (عليه السلام) को बाज़ार में ले जाकर बेचने लगे। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने फ़र्माया, मुझे जो लेगा वह ख़ुश हो जाएगा। पस अज़ीज़े मिस्र ने आपको ख़रीद लिया वह था भी मुसलमान।

***

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۭ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۭ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "मिस्र वालों में से जिसने उसे ख़रीदा था उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे बहुत इज़्ज़त व एहतिराम के साथ रखो, बहुत मुम्किन है कि यह हमें फ़ायदा पहुँचाए या इसे हम अपना बेटा ही बना लें, यूँ हमने मिस्र की सरज़मीन में यूसुफ़ (عليه السلام) का क़दम जमा दिया कि हम उसे ख़्वाब की ताबीर का कुछ इल्म सिखा दें, अल्लाह अपने इरादे पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर

लोग इल्म नहीं रखते हैं। (21) और जब (यूसुफ़) पूरी ताक़त की उम्र को पहुँच गये, हमने उसे दानाई और इल्म दिया, हम नेककारों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।"(22)

यूसुफ़ (ﷺ) की मिस्र के बाज़ार में नीलामी (आयत 21, 22) : अल्लाह का करम बयान हो रहा है कि जिसने आप (ﷺ) को मिस्र में ख़रीदा अल्लाह ने उसके दिल में आप (ﷺ) की इज़्ज़त व वक़्अत डाल दी, उसने आप (ﷺ) के नूरानी चेहरे को देखते ही समझ लिया कि इसमें ख़ैर व सलाह है। यह मिस्र का वज़ीर था उसका नाम क़ित्फ़ीर था, कोई कहता है इत्फ़ीर था। उसके बाप का नाम रूहैब था, यह मिस्र के ख़ज़ानों का दारोग़ा था। मिस्र की सल्तनत उस वक़्त रय्यान बिन वलीद के हाथ में थी, यह अमालीक़ में से एक शख़्स था। अज़ीज़े मिस्र की बीवी साहिबा का नाम राईल था, कोई कहता है ज़ुलेख़ा था। यह रआबील की बेटी थीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि मिस्र में जिसने आपको ख़रीदा उसका नाम मालिक बिन ज़ुअर बिन क़रीब बिन अनक़ बिन मुदियान बिन इब्राहीम था, वल्लाहु आलम! हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं सबसे ज़्यादा दूरबीन दूरअंदेश और अंजाम पर नज़रें रखने वाले और अक़्लमंदी से ताड़ने वाले तीन शख़्स गुज़रे हैं, एक तो यही अज़ीज़े मिस्र कि एक नज़र में हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को ताड़ गया और जाते ही बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह आराम से रखो, दूसरे वह बच्ची जिसने हज़रत मूसा (ﷺ) को एक नज़र में जान लिया और जाकर बाप से कहा कि अगर आपको आदमी की ज़रूरत है तो इनसे मामला कर लीजिए, यह क़वी और बाअमानत शख़्स है, तीसरे हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) कि आपने दुनिया से रुख़्सत होते हुए ख़िलाफ़त हज़रत उमर (रज़ि.) जैसे शख़्स को सौंपी। (हाकिम : 2/345, 346; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यहाँ अल्लाह तआला अपना एक और एहसान बयान कर रहा है कि भाईयों के फंदे से हमने छुड़ा लिया, फिर हमने मिस्र में लाकर यहाँ की सरज़मीन पर उनका क़दम जमा दिया,क्योंकि अब हमारा यह इरादा पूरा होना था कि हम इसे ताबीरे ख़्वाब का कुछ इल्म अता करें, अल्लाह के इरादे को कौन टाल सकता है? कौन रोक सकता है? कौन ख़िलाफ़ कर सकता है? वह सब पर ग़ालिब है, सब उसके सामने आजिज़ (बेबस) हैं, जो वह चाहता है वह होकर ही रहता है, जो इरादा करता है कर चुकता है लेकिन अक्सर लोग इल्म से ख़ाली होते हैं, न उसकी हिक्मत को मानते हैं, न उसकी बारीकियों पर उनकी निगाह होती है, न वह उसकी हिक्मतों को समझ सकते हैं। जब आपकी अक़्ल कामिल हुई, जब जिस्म अपनी नशोनुमा तमाम कर चुका तो अल्लाह तआला ने आपको नबुव्वत अता की और उससे आपको मख़्सूस किया। यह कोई नई बात नहीं हम नेककारों को इसी तरह बदला देते हैं। कहते हैं इससे मुराद तैंतीस बरस की उम्र है या तीस से कुछ ऊपर की या बीस की या चालीस की या पच्चीस की या बाईस की या अठारह की या मुराद जवानी को पहुँचना है, और उसके सिवा और बहुत से क़ौल भी हैं, वल्लाहु आलम!

***

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۲۴﴾

तर्जुमा : ''उस औरत ने जिसके घर में यूसुफ़ (عليه السلام) थे, यूसुफ़ (عليه السلام) को बहलाना फुसलाना शुरू किया कि वह अपने नफ़्स की निगरानी छोड़ दे, दरवाज़े बंद करके कहने लगी लो! आ जाओ, यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा, अल्लाह की पनाह! अज़ीज़े मिस्र मेरा सरदार है मुझे उसने बहुत ही अच्छी तरह रखा है, बेइंसाफ़ी करने वालों का भला नहीं होता। (23) उस औरत ने यूसुफ़ (عليه السلام) की तरफ़ का क़स्द किया और यूसुफ़ (عليه السلام) ने उसका, अगर न होती यह बात कि देख ले वह अपने परवरदिगार की दलील, यूँ ही हुआ इस वास्ते कि हम उससे बुराई और बेहयाई दूर कर दें, बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था।'' (24)

अज़ीज़े मिस्र की बीवी का किरदार (आयत 23, 24) : अज़ीज़े मिस्र जिसने आपको ख़रीदा था और बहुत अच्छी तरह मिस्ल औलाद के रखा था अपनी घर वाली से भी ताकीदन कह दिया था कि इन्हें किसी तरह की तक्लीफ़ न हो, इज़्ज़त व इकराम से इन्हें रखो। उस औरत की निय्यत में खोट आ जाती है। जमाले यूसुफ़ पर फ़रेफ़्ता हो जाती है, दरवाज़े बंद करके बन सँवरकर बुरे काम की तरफ़ यूसुफ़ (عليه السلام) को बुलाती है लेकिन हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) बड़ी सख़्ती से इंकार करके उसे मायूस कर देते हैं आप (عليه السلام) फ़र्माते हैं कि तेरे शौहर की मुझ पर मेहरबानी है, वह मेरे साथ सुलूक और एहसान से पेश आते हैं, फिर कैसे मुम्किन है कि मैं उनकी ख़यानत करूँ, याद रखो चीज़ को ग़ैर जगह रखने वाले भलाई से महरूम हो जाते हैं। (हयता लका) को कुछ लोग सुरियानी ज़ुबान का लफ़्ज़ कहते हैं, कुछ क़िब्ती ज़ुबान का कुछ इसे ग़रीब लफ़्ज़ बतलाते हैं, कुछ हूरानिया का लुग़त बतलाते हैं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (वरा वदत्हुल्लती हुवा फ़ी बैतिहा अन् नफ़्सिही...) : क़ब्ल ह़दीस : 4692) कुसाई इसी क़िरात को पसंद करते थे और कहते थे अहले हूरान का यह लुग़त है, हिजाज़ में आ गया है अहले हूरान के एक आलिम ने कहा है कि यह हमारा लुग़त है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) ने इसकी गवाही में शेअर में पेश किया है। इसकी दूसरी क़िरात (हैत) भी है। पहली क़िरात के मअने तो आओ के थे, इसके मअनी हैं मैं तेरे लिए तैयार हूँ। कुछ लोग इस क़िरात का इंकार ही करते हैं एक क़िरअत (हईत) भी है यह क़िरअत ग़रीब है एक क़िरअत हैत भी है। आम मदनी लोगों की यही क़िरअत है। इस पर भी शहादत में शेअर पेश किया जाता है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं, क़ारियों की

क़िराअतें क़रीब-क़रीब हैं पस जिस तरह तुम सिखाए गए हो, पढ़ते रहो, गहराई से और इख़्तिलाफ़ से और लअन तअन से बचो। इस लफ़्ज़ के यही मअनी हैं कि आ और सामने हो वग़ैरह, फिर आपने इस लफ़्ज़ को पढ़ा, किसी ने कहा इसे दूसरी तरह भी पढ़ते हैं। आपने फ़र्माया, दुरुस्त है मगर मैंने तो जिस तरह सीखा है उसी तरह पढ़ूँगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (वरा वदत्हुल्लती हुवा फ़ी बैतिहा अन् नफ़्सिही..) : क़ब्ल हदीस : 4692; हाकिम : 2/346) यानी हियत न कि (हैत) यह लफ़्ज़ तज़्कीर तानीस वाहिद तस्निया जमा सबके लिए यक्साँ होता है (हैता लका, हैता लकुम, हैता लकुमा, हैता लकुन्ना, हैता लहुन्ना)

यूसुफ़ (ﷺ) का बुराई से इंकार करना : सलफ़ की एक जमाअत से तो इस आयत के बारे में वह मरवी है जो इब्ने जरीर वग़ैरह लाए हैं। और कहा गया है कि यूसुफ़ (ﷺ) का क़सद उस औरत के साथ सिर्फ़ नफ़्स का खटका था। बग़वी की हदीस में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''अल्लाह तआला फ़रिश्तों को फ़र्माता है कि जब मेरा कोई बन्दा नेकी का इरादा करे तो तुम उसकी नेकी लिख लो और जब उस नेकी को कर गुज़रे तो उस जैसी दस नेकी लिख लो, और अगर किसी बुराई का इरादा करे और फिर उसे न करे तो उसके लिए नेकी लिख लो, क्योंकि उसने मेरी वजह से उस बुराई को छोड़ दिया है, और अगर उस बुराई को कर ही गुज़रे तो उसके बराबर उसे लिख लो।'' इस हदीस के अल्फ़ाज़ और भी कई एक हैं, असल बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (यूरीदूना अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि) : 7501; सहीह मुस्लिम : 128, 129; अल्ईमान लि इब्ने मन्दा : 376; इब्ने हिब्बान : 379; अहमद : 2/315) एक क़ौल है कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने उसे मारने का क़स्द किया था। एक क़ौल है कि उसे बीवी बनाने की तमन्ना की थी। एक क़ौल है कि आप क़स्द करते अगर दलील न देखते, लेकिन चूँकि दलील देख ली क़सद नहीं किया। लेकिन इस क़ौल में अरबी ज़ुबान की हैसियत से कलाम है जैसे इमाम इब्ने जरीर (रह.) वग़ैरह ने बयान कर दिया है। यह तो थे अक़्ल वाले क़सद यूसुफ़ (ﷺ) के बारे में। वह दलील जो आपने देखी उसके बारे में भी क़ौल मुलाहिज़ा कर लीजिए। कहते हैं अपने वालिद हज़रत याक़ूब (ﷺ) को देखा कि गोया वह अपनी उँगली मुँह में डाले खड़े हैं और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के सीने पर आपने हाथ मारा, कहते हैं अपने सरदार की ख़्याली तस्वीर सामने आ गई। कहते हैं आप (ﷺ) की नज़र छत की तरफ़ उठ गयी, देखते हैं कि उस पर यह आयत लिखी हुई है (وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا) (17/इस्रा : 32) ख़बरदार! ज़िना के क़रीब भी न फटकना वह बड़े बेहयाई का और अल्लाह के ग़ज़ब का काम है, और वह बड़ा ही बुरा रास्ता है। कहते हैं तीन आयतें लिखी हुई थीं, एक तो (إِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ) (82/इंफ़ितार : 10) तुम पर निगहबान मुक़र्रर हैं, दूसरी (وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ) (10/यूनुस : 61) तुम जिस हाल में हो अल्लाह तुम्हारे साथ है, तीसरी यह आयत (أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ) (13/रअद : 33) अल्लाह हर शख़्स के हर अमल पर हाज़िर-नाज़िर है। कहते हैं कि चार आयतें लिखी पाईं, तीन वही जो ऊपर हैं और हुर्मते ज़िना की जो इससे पहले है कहते हैं कि कोई आयत दीवार पर मुमानिअते ज़िना के बारे में लिखी हुई पाई, कहते हैं कि एक निशान था जो आपके इरादे से आपको रोक रहा था। मुम्किन है कि वह सूरते याक़ूब (ﷺ) हो और मुम्किन है कि अपने ख़रीदने वाले की सूरत हो, और मुम्किन है कि आयते तम्बीह हो। कोई ऐसी साफ़ दलील नहीं कि किसी ख़ास एक चीज़ के

फ़ैसले पर हम पहुँच सकें। पस बहुत ठीक राह हमारे लिए यही है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाए जैसे फ़र्माने इलाही में भी इत्लाक़ है। (इसी तरह क़सद को भी)।

फिर फ़र्माता है कि हमने जिस तरह उस वक़्त उसे एक दलील दिखाकर बुराई से बचा लिया उसी तरह उसके और कामों में भी हम उसकी मदद करते रहे, और उसे बुराईयों और बेहयाईयों से महफ़ूज़ रखते रहे। वह था भी हमारा बरगुज़ीदा पसंदीदा बेहतरीन और मुख़्लिस बन्दा। अल्लाह की तरफ़ से आप (عليه السلام) पर दुरूदो सलाम नाज़िल हो।

***

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَّأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا
جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ
نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَا
قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۚ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ
عَنْ هٰذَا ۜ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और उस औरत ने यूसुफ़ (عليه السلام) का कुर्ता पीछे की तरफ़ से खींचकर फाड़ डाला, दरवाज़े के पास ही औरत का शौहर दोनों को मिल गया, तो कहने लगी, जो शख़्स तेरी बीवी के साथ बुरा इरादा करे बस उसकी सज़ा यही है कि उसे क़ैद कर दिया जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा दी जाए। (25) यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा, यह औरत ही मुझे बहला फुसलाकर मेरे नफ़्स की हिफ़ाज़त से मुझे ग़ाफ़िल कराना चाहती थी औरत के क़बीले ही के एक शख़्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठ बोलने वालों में है। (26) और अगर उसका कुर्ता पीछे की तरफ़ से फाड़ा गया है तो औरत झूठी और यूसुफ़ (عليه السلام) सच्चों में से है। (27) शौहर ने जो देखा कि यूसुफ़ (عليه السلام) का कुर्ता पीठ की तरफ़ से चाक किया गया है तो साफ़ कह दिया कि यह तो तुम औरतों के छंद हैं, बेशक तुम्हारे हथकण्डे भारी हैं। (28) यूसुफ़ (عليه السلام) अब इस बात को आती-जाती करो, और औरत! तू अपने गुनाह से तौबा कर, बेशक तू गुनहगारों में है।'' (29)

यूसुफ़ (ﷺ) की पाकदामनी की गवाही (आयत 25-29) : अपने तईं बचाने के लिए वहाँ से दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और यह औरत आप (ﷺ) को पकड़ने के इरादे से आपके पीछे भागी, पीछे से कुर्ता उसके हाथ में आ गया, ज़ोर से अपनी तरफ़ घसीटा, जिससे हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) पीछे की तरफ़ गिर जाने के क़रीब हो गए लेकिन आप (ﷺ) ने भी आगे को ज़ोर लगाकर दौड़ जारी रखी, उसमें कुर्ता पीछे से बिलकुल बेतरह फट गया और दोनों दरवाज़े पर पहुँच गए, देखते हैं कि औरत का शौहर मौजूद है। उसे देखते ही उसने चाल चली और फ़ौरन ही सारा इल्ज़ाम हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के सर चिपका दिया और आप अपनी पाकदामनी बल्कि अस्मत और मज़्लूमियत जताने लगी। सूखा सा मुँह बनाकर अपने शौहर से अपनी बपता और फिर पाकीज़गी बयान करते हुए कहती है, फ़र्माईए हुज़ूर (ﷺ)! आपकी बीवी से जो बदकारी का इरादा रखे उसकी क्या सज़ा होनी चाहिए? क़ैदे सख़्त या बुरी मार से कम तो हर्गिज़ कोई सज़ा इस जुर्म की नहीं हो सकती। अब जबकि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने अपनी आबरू को ख़तरे में देखा और ख़यानत की बदतरीन तोहमत चढ़ती हुई देखी तो अपने ऊपर से इल्ज़ाम हटाने और साफ़ और सच्ची हक़ीक़त के ज़ाहिर कर देने के लिए फ़र्माया कि हक़ीक़त यह है कि यही मेरे पीछे पड़ी थीं, मेरे भागने पर मुझे पकड़ रही थीं यहाँ तक कि मेरा कुर्ता भी फाड़ दिया। उसी औरत के क़बीले से एक गवाह ने गवाही दी और मअ सबूत व दलील उनसे कहा कि फटे हुए कुर्ते को देख लो अगर वह सामने के रुख़ से फटा हुआ है तो ज़ाहिर है कि औरत सच्ची है और यह झूठा है, उसने उसे अपनी तरफ़ लाना चाहा, उसने उसे धक्के दिए , रोका मना किया हटाया उसमें सामने से कुर्ता फट गया तो वाक़ेई क़ुसूरवार मर्द है, औरत जो अपनी बेगुनाही बयान करती है वह सच्ची है, फ़िल वाक़ेअ उस सूरत में वह सच्ची है, और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ पाओ तो औरत के झूठ और मर्द के सच होने में कलाम नहीं। ज़ाहिर है कि औरत उस पर माइल थी, यह उससे भागा वह दौड़ी पकड़ा कुर्ता हाथ में आ गया, उसने अपनी तरफ़ घसीटा, उसने अपनी जानिब खींचा वह पीछे की तरफ़ से फट गया। कहते हैं, यह गवाह बड़ा आदमी था जिसके मुँह पर दाढ़ी थी यह अज़ीज़े मिस्र का ख़ास आदमी था और पूरी उम्र का मर्द था। और जुलेख़ा के चचा का लड़का था, जुलेख़ा बादशाहे वक़्त रय्यान बिन वलीद की भांजी थी, पस एक क़ौल तो उस गवाह के बारे में यह है, दूसरा क़ौल यह है कि एक छोटा सा दूध पीता बच्चा गहवारे में झूलता बच्चा था। (तब्री : 16/56)

इब्ने जरीर में है कि चार छोटे बच्चों ने बचपन ही में कलाम किया है। इस पूरी हदीस में उस बच्चे का भी ज़िक्र है जिसने यूसुफ़ सिद्दीक़ (ﷺ) की पाकदामनी की गवाही दी थी। (तब्री : 16/56; व सनदुहू हसन) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं चार बच्चों ने कलाम (बातचीत) किया है, फ़िरऔन की लड़की मशाता के लड़के ने, हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के गवाह ने, जुरैज के साहब ने और हज़रत ईसा बिन मरियम (ﷺ) ने। मुजाहिद (रह.) ने तो एक बिलकुल ही ग़रीब बात कही, वह कहते हैं वह सिर्फ़ अल्लाह तआला का हुक्म था, कोई इंसान था ही नहीं। इसी तज्वीज़ के मुताबिक़ जुलेख़ा के शौहर ने देखा तो हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के पैराहन की जानिब से फटा हुआ देखा। उसके नज़दीक साबित हो गया कि यूसुफ़ (ﷺ) सच्चा है और उसकी बीवी झूठी है, वह यूसुफ़ (ﷺ) पर तोहमत लगा रही है तो बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल गया कि यह तो तुम औरतों का फ़रेब है, इस

नौजवान पर तुम तोहमत लगा रही हो और झूठा इल्ज़ाम रख रही हो, तुम्हारे बुरे अख़्लाक़ तो हैं ही चक्कर में डाल देने वाले। फिर हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से कहते हैं कि आप इस वाक़िया को भूल जाइए, जाने दीजिए इस नामुराद वाक़िया का फिर से ज़िकर ही न कीजिए। फिर अपनी बीवी से कहते हैं कि तुम अपने गुनाह से तौबा करो। नर्म आदमी था, नर्म अख़्लाक़ थे, या यूँ समझो कि वह जान रहा था कि औरत माज़ूर समझे जाने के लायक़ है, उसने वह देखा है जिस पर सब्र करना बहुत मुश्किल है इसलिए उसे हिदायत कर दी कि अपने बुरे इरादे से तौबा कर, सरासर तू ही ख़ताकार है, क्या ख़ुद का इल्ज़ाम दूसरों के सर रखा।

***

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَن نَّفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا
لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً
وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ
وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ
فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ
مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا
يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾
فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

तर्जुमा : "शहर की औरतों में चर्चा होने लगा कि अजीज़ की बीवी अपने जवान ग़ुलाम को अपना मतलब निकालने के लिए बहलाने फुसलाने में लगी रहती है उसके तो दिल में यूसुफ़ (عليه السلام) की मुहब्बत बैठ गयी है, हमारे ख़याल में तो वह सरीह ग़लती पर है। (30) उसने जब उनकी उस पुरफ़रेब ग़ीबत का हाल सुना तो उन्हें बुलावा भेजा और उनके लिए एक मज्लिस मुरत्तब की और उनमें से हर एक को छुरी दी और कहा, ऐ यूसुफ़ (عليه السلام)! इनके सामने चले आओ, उन औरतों ने जब उन्हें देखा तो बहुत बड़ा जाना और अपने हाथ काट लिए, और ज़ुबान

से निकल गया कि (हाशालिल्लाह) यह इंसान तो हर्गिज़ नहीं, यह तो यक़ीनन कोई बहुत ही बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (31) उस वक़्त अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने कहा, यही हैं जिनके बारे में तुम मुझे तअने दे रही थीं, मैंने हर चंद इससे अपना मतलब हासिल करना चाहा लेकिन यह बाल-बाल बचा रहा, अल्लाह की क़सम! जो कुछ मैं इससे कह रही हूँ अगर यह न करेगा तो यक़ीनन यह क़ैद कर दिया जाएगा और बेशक यह बहुत ही बेइज़्ज़त होगा। (32) यूसुफ़ (عليه السلام) ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! जिस बात की तरफ़ यह औरतें मुझे बुला रही हैं इससे तो मुझे जेलख़ाना बहुत पसंद है,अगर तूने इनका फ़न फ़रेब मुझसे दूर न किया तो मैं तो इनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा। और बिलकुल नादानों में जा मिलूँगा। (33) उसके रब ने उसकी दुआ क़बूल कर ली और उन औरतों के दाव पेच उससे फेर दिए, यक़ीनन वह सुनने वाला जानने वाला है।''(34)

यूसुफ़ (عليه السلام) और शहर की औरतों का मकर व फ़रेब (आयत 30-34) : इस दास्ताने मुहब्बत की ख़बर शहर में हो गई, चर्चे होने लगे। चंद शरीफ़ज़ादियों ने निहायत ताज्जुब व हिक़ारत से इस क़िस्से को दोहराया कि देखो! वज़ीर की बीवी है और एक गुलाम पर जान दे रही है उसकी मुहब्बत को अपने दिल में जमाए हुए है। शग़फ़ कहते हैं हद से गुज़री हुई क़ातिलाना मुहब्बत को और शग़फ़ उससे कम दर्जे की होती है। शिग़ाफ़ कहते हैं दिल के पर्दों को। कहती हैं कि अज़ीज़ की बीवी सरीह ग़लती में पड़ी हुई है। किसी तरह इन ग़ीबतों का पता अज़ीज़ की बीवी को चल गया। यहाँ लफ़्ज़ मकर इसलिए बोला गया है कि बक़ौल कुछ ख़ुद उन औरतों का यह फ़िल वाक़ेअ एक खुला मकर था, उन्हें तो दरअसल हुस्ने यूसुफ़ (عليه السلام) के दीदार की तमन्ना थी, यह तो सिर्फ़ एक बहाना बनाया था। अज़ीज़ की बीवी भी उनकी चाल समझ गई और फिर उसमें उसने अपनी माज़ूरी की मस्लिहत भी देखी तो उनके पास उसी वक़्त बुलावा भेजा कि फ़लाँ वक़्त आपकी मेरे यहाँ दावत है, और एक मज्लिस और महफ़िल और बैठक दुरुस्त कर ली जहाँ फल और मेवे बहुत थे, उसने तराश तराशकर छील-छील कर खाने के लिए एक-एक तेज़ चाकू सबके हाथ में दे दिया। यह था उन औरतों के धोखे का जवाब उन्होंने एतिराज़ जड़कर जमाले यूसुफ़ (عليه السلام) देखना चाहा। उसने अपने आपको मुअज़्ज़ज़ ज़ाहिर करने और उनके मकर को ताहिर (पाक) करने के लिए उन्हें ख़ुद ज़ख़्मी कर दिया। और ख़ुद उन ही के हाथ से। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से कहा कि आप आइए। उन्हें अपनी मालिका का हुक्म मानने से कैसे इंकार हो सकता था? उसी वक़्त जिस कमरे में थे, वहाँ से आ गए, औरतों की निगाह जो आप (عليه السلام) के चेहरे पर पड़ी तो सबकी सब दहशत में आ गईं, हैबत व जलाल और रौबे हुस्न से बेख़ुद हो गईं, और बजाए उसके कि उन तेज़ चलने वाली चाकूओं से फल कटते उनके हाथ और उँगलियाँ कटने लगीं। हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह.) कहते हैं कि ज़ियाफ़त बाक़ायदा पहले हो चुकी थी अब तो सिर्फ़ मेवे से तवाज़ोअ हो रही थी, मीठे फल हाथों में थे चाकू चल रहे थे जो उसने कहा, यूसुफ़ (عليه السلام) को देखना चाहती हो? सब एक ज़ुबाँ होकर बोल उठीं, हाँ! हाँ! ज़रूर। उसी वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से कहलवा भेजा कि तशरीफ़ ले आईए, आप (عليه السلام) आए, फिर उसने कहा, जाईए, आप चले गए, आते-जाते सामने से पीछे से उन सब औरतों ने पूरी तरह आप (عليه السلام)

को देख लिया, देखते ही सब सकते में आ गईं, होशो हवास जाते रहे, बजाए फल काटने के अपने हाथ काट लिए और कोई एहसास तक न हुआ। हाँ! जब हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) चले गए, तब होश आया और तक्लीफ़ महसूस हुई, तब पता चला कि बजाये फल के हाथ काट लिए हैं। इस पर अज़ीज़ की बीवी ने कहा, देखा! एक ही मर्तबा का जमाल ने तुम्हें ऐसा अज़्ख़ुद रफ़्ता कर दिया फिर बतलाओ मेरा क्या हाल होगा? औरतों ने कहा, वल्लाह! यह इंसान नहीं, यह तो फ़रिश्ता है, और फ़रिश्ता बड़े मर्तबे वाला। आज के बाद हम कभी तुम्हें मलामत न करेंगी। उन औरतों ने हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) जैसा तो कहाँ उनके क़रीब उनके मुशाबा भी कोई शख़्स नहीं देखा था।

आप (عليه السلام) को आधा हुस्न कुदरत ने अता कर रखा था। चुनाँचे मेअराज की हदीस में है कि तीसरे आसमान में रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुलाक़ात हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से हुई, जिन्हें आधा हुस्न दिया गया था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अल्इस्रा बिरसूलिल्लाहि (ﷺ) इलस्समावाति व फ़र्ज़िस्सलवात : 162) और रिवायत में है कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) और आपकी वालिदा साहिबा को आधा हुस्न कुदरत की फ़य्याज़ियों ने इनायत किया था। और रिवायत में है तिहाई हुस्न हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को और आपकी वालिदा को दिया गया था। आप (عليه السلام) का चेहरा बिजली की तरह रोशन था। जब कभी कोई औरत आप (عليه السلام) के पास किसी काम के लिए आती तो आप अपना चेहरा ढककर उससे बात करते कि कहीं वह फ़ित्ना में न पड़ जाए। और रिवायत में है कि हुस्न के तीन हिस्से किये गए, तमाम लोगों में दो हिस्से बांट दिए गए और एक हिस्सा सिर्फ़ आप (عليه السلام) को और आपकी माँ को दिया गया, दो तिहाइयाँ हुस्न की उन माँ बेटे को मिलीं और एक तिहाई में दुनिया के तमाम लोग। और रिवायत में है कि हुस्न के दो हिस्से किये गए, एक हिस्से में हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) और आपकी वालिदा हज़रत सारा और एक हिस्से में दुनिया के और सब लोग। (हाकिम : 2/571; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा बातिल) सुहैली में है कि आपको हज़रत आदम (عليه السلام) का आधा हुस्न दिया गया। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (عليه السلام) को अपने हाथ से कमाले सूरत का नमूना बनाया था और बहुत ही हसीन पैदा किया था। आपकी औलाद में आप (عليه السلام) का हम वज़न कोई न था और हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को उनका आधा हुस्न दिया गया था। पस उन औरतों ने आप (عليه السلام) को देखकर ही कहा कि मआज़ल्लाह! यह इंसान नहीं। बशरन की दूसरी क़िरअत (बशरिय्यिन) है यानी यह तो ख़रीदा हुआ हो ही नहीं सकता, यह तो कोई ज़ी इज़्ज़त फ़रिश्ता है। अब अज़ीज़ की बीवी ने कहा, बतलाओ अब तो तुम मुझे उज़्रवाली समझोगी? उसका जमाल व कमाल क्या ऐसा नहीं कि सब्रो सिहार छीन ले। मैंने इसे हर चंद अपनी तरफ़ माइल करना चाहा लेकिन यह मेरे क़ब्ज़े में नहीं आया, अब समझ लो कि जहाँ उसमें यह बेहतरीन ज़ाहिरी ख़ूबी है वहाँ इस्मत व इफ़्फ़त की बातिनी ख़ूबी भी बेनज़ीर है, फिर धमकाने लगी कि अगर मेरी बात यह न मानेगा तो इसे क़ैदख़ाना भुगतना पड़ेगा और मैं इसकी बड़ी ज़िल्लत करूँगी। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने उनके इस ढोंग से अल्लह की पनाह तलब की और दुआ की कि या अल्लाह! मुझे जेलख़ाने जाना पसंद है मगर तू मुझे इनके बुरे इरादों से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रख, ऐसा न हो कि मैं किसी बुराई में फंस जाऊँ, या अल्लाह! तू अगर मुझे बचा ले तो मैं बच सकता हूँ वरना मुझमें इतनी कुव्वत नहीं, मुझे अपने किसी नफ़ा

नुक़्सान का कोई इख़्तियार नहीं, तेरी मदद और तेरे रह्‌मो करम के बग़ैर न मैं किसी गुनाह से रुक सकूँ, न किसी नेकी को कर सकूँ, मैं ऐ बारी तआला! तुझसे मदद तलब करता हूं तुझी पर भरोसा रखता हूँ तू मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर दे कि मैं इन औरतों की तरफ़ झुक जाऊँ और जाहिलों में से हो जाऊँ, बस अल्लाह तआला करीम व क़ादिर ने आप (عليه السلام) की दुआ क़बूल कर ली और आप (عليه السلام) को बाल-बाल बचा लिया। इस्मत व इफ़्फ़त अता फ़र्मायी, अपनी हिफ़ाज़त में रखा और बुराई से आप (عليه السلام) बचे ही रहे, भरपूर जवानी के बावजूद बेअंदाज़ हुस्न व ख़ूबी के बावजूद हर तरह के कमाल के जो आप (عليه السلام) में था, आप (عليه السلام) अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की बेजा तक्मील से रुकते रहे, और उस औरत की तरफ़ रुख़ भी न किया, जो रईसज़ादी है, यह रईस की बीवी है, उनकी मालिका है, फिर बहुत ही ख़ूबसूरत है, जमाल के साथ ही माल भी है, रियासत भी है, वह अपनी बात के मानने पर इन्आम व इकराम का और न मानने पर जेल का और सख़्त सज़ा का हुक्म दे रही है लेकिन आप (عليه السلام) के दिल में अल्लाह के ख़ौफ़ का समुन्द्र मौजज़न है। आप (عليه السلام) अपने दुनियावी आराम और ऐशो लज़्ज़त को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान करते हैं और क़ैदोबन्द को उस पर तर्जीह देते हैं कि अल्लाह के अज़ाबों से बच जाए और आख़िरत में सवाब के मुस्तहिक़ बन जाए।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, सात क़िस्म के लोग हैं, जिन्हें अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने साये तले साया देगा जिस दिन कोई साया सिवा उस साये के न होगा। मुसलमान आदिल बादशाह, वो जवान मर्द व औरत जिसने अपनी जवानी अल्लाह की इबादत में गुज़ारी, वो शख़्स जिसका दिल मस्जिद में लटका हुआ हो, जब मस्जिद से निकला, मस्जिद की धुन में रहे, यहाँ तक कि फिर वहाँ जाए, वो दो शख़्स जो आपस में सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत रखते हैं, उसी पर जमा होते हैं और उसी पर जुदा होते हैं, वो शख़्स जो सदक़ा देता है लेकिन इस पोशीदगी से कि दायें हाथ के ख़र्च की ख़बर बायें हाथ को नहीं होती, वो शख़्स जिसे कोई जवाँ मंसब वाली जमाल व सूरत वाली औरत अपनी तरफ़ बुलाये और वह कह दे कि मैं अल्लाह तआला से डरता हूँ, वो शख़्स जिसने तंहाई में अल्लाह तआला को याद किया फिर उसकी दोनों आँखें बह निकले।।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब वमन जलस फ़िल मस्जिदि यंतज़िरुस्सलात व फ़ज़्लुल मस्जिद : 660; सहीह मुस्लिम : 1031; अहमद : 2/439; इब्ने ख़ुज़ैमा : 358; इब्ने हिब्बान : 4486)

***

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ

فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ

خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''इन तमाम निशानियों के देख लेने के बाद भी उन्हें यही मस्लिहत मालूम हुई कि यूसुफ़ (ﷺ) को कुछ मुद्दत के लिए क़ैदख़ाना में रखें। (35) उसके साथ ही दो और जवान भी जेलख़ाना में दाख़िल हुए, उनमें से एक ने तो कहा कि मैंने ख़्वाब में अपने आपको शराब निचोड़ते देखा है, और दूसरे ने कहा, मैंने अपने आपको देखा है कि मैं अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ जिसे परिन्दे खा रहे हैं, हमें आप ख़्वाब और इसकी ताबीर बताइए, हमें तो आप ख़ूबियों वाले शख़्स दिखाई देते हैं।''(36)

यूसुफ़ (ﷺ) और क़ैदख़ाना (आयत 35, 36) : हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की पाकदामनी का राज़ सब पर खुल गया, लेकिन ताहम उन लोगों ने मस्लिहत उसी में देखी कि कुछ मुद्दत तक हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को जेलख़ाने में ही रखें, बहुत मुम्किन है कि उसमें उन सबने यह मस्लिहत सोची हो कि लोगों में बात फैल गई है कि अज़ीज़ की बीवी उसकी चाहत में मुब्तला है, जब हम यूसुफ़ (ﷺ) को क़ैद कर देंगे तो लोग समझ लेंगे कि क़सूर उसी का था, उसने कोई ऐसी निगाह की होगी। यही वजह थी कि जब शाहे मिस्र ने आप (ﷺ) को क़ैदख़ाने से आज़ाद करने के लिए अपने पास बुलवाया तो आप (ﷺ) ने वहीं से फ़र्माया कि मैं न निकलूँगा जब तक मेरी बरात और मेरी पाकदामनी साफ़ तौर पर ज़ाहिर न हो जाए और आप हज़रात इसकी पूरी तहक़ीक़ न कर लें। जब तक बादशाह ने हर तरह गवाह शाहिदों से बल्कि ख़ुद अज़ीज़ की बीवी से पूरी तहक़ीक़ न कर ली और आप (ﷺ) का बेक़सूर होना सारी दुनिया पर न खुल गया आप (ﷺ) जेलख़ाने से बाहर न निकले। फिर आप (ﷺ) को क़ैद करने की बड़ी वजह यह थी कि अज़ीज़ की बीवी की रुस्वाई न हो।

दो क़ैदियों के ख़्वाब : इत्तिफ़ाक़ से जिस दिन हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को जेलख़ाने जाना पड़ा, उसी दिन बादशाह का साक़ी (पानी पिलाने वाला) और नानबाई (रोटी बनाने वाला) भी किसी जुर्म में जेलख़ाने भेजा गया। साक़ी का नाम बिन्दार था और बावर्ची का नाम मुज्लिस था, उन पर इल्ज़ाम यह था कि उन्होंने खाने-पीने में बादशाह को ज़हर देने की साज़िश की थी, क़ैदख़ाने में भी नबियुल्लाह हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की नेकियों की काफ़ी शोहरत थी, सच्चाई अमानतदारी, सख़ावत ख़ुशख़ल्क़ी, क़सरते इबादत अल्लाह तर्सी इल्म व अमल ताबीरे ख़्वाब, एहसान व सुलूक वग़ैरह में आप (ﷺ) मशहूर हो गए थे। जेलख़ाने के क़ैदियों की भलाई उनकी ख़ैरख़्वाही उनसे मुरव्वत व सुलूक उनके साथ भलाई और एहसान उनकी दिलजोई और दिलदारी, उनके बीमारों की तीमारदारी, ख़िदमत और दवा दारू भी आप (ﷺ) का काम था। यह दोनों शाही मुलाज़िम हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) से बहुत ही मुहब्बत करने लगे। एक दिन कहने लगे कि हज़रत! हमें आपसे बहुत ही मुहब्बत हो गयी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तुम्हें बरकत दे, बात यह है कि मुझे तो जिसने चाहा कोई न कोई आफ़त ही मुझ पर लाया, फूफी की मुहब्बत, बाप का प्यार, अज़ीज़ की बीवी की चाहत सब मुझे याद है और इसका नतीजा मेरी ही नहीं बल्कि तुम्हारी भी आँखों के सामने है। अब दोनों ने एक मर्तबा ख़्वाब देखा। साक़ी ने देखा कि वह अंगूर का शीरा निचोड़ रहा है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरात में ख़म्रन के बदले लफ़्ज़ इनबन है। अहले ओमान अंगूर को ख़म्र कहते ही हैं। उसने देखा था कि गोया उसने अंगूर की बेल बोई है उसमें ख़ोशे लगे हैं, उसने तोड़े हैं फिर उनका शीरा निचोड़ रहा है कि बादशाह को पिलाए। यह

ख़्वाब बयान करके आरज़ू की कि आप हमें इसकी ताबीर बतलाइए, अल्लाह के पैग़म्बर (عليه السلام) ने फ़र्माया, इसकी ताबीर यह है कि तुम्हें तीन दिन के बाद जेलख़ाने से आज़ाद कर दिया जाएगा और तुम अपने काम पर यानी बादशाह की साक़ीगिरी पर लग जाओगे। दूसरे ने कहा, जनाब मैंने एक ख़्वाब में देखा कि अपने सर पर मैं रोटी उठाए हुए हूँ और परिन्दे आकर उसमें से खा रहे हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक मशहूर बात तो यही है कि वाक़ेई उन दोनों ने यही ख़्वाब देखे थे और उनकी सही ताबीर हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से पूछी थी लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि दरहक़ीक़त उन्होंने कोई ख़्वाब नहीं देखा था लेकिन हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की आज़माइश के लिए झूठे ख़्वाब बयान करके ताबीर तलब की थी। (हाकिम : 2/346; व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

***

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَٰنِهِۦٓ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِۦ قَبْلَ أَن يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا
عَلَّمَنِى رَبِّىٓ ۚ إِنِّى تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ هُمْ كَٰفِرُونَ ۝٣٧
وَٱتَّبَعْتُ مِلَّةَ ءَابَآءِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَآ أَن نُّشْرِكَ بِٱللَّهِ مِن شَىْءٍ ۚ
ذَٰلِكَ مِن فَضْلِ ٱللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝٣٨

तर्जुमा : ''यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा, तुम्हें जो खाना दिया जाता है उसके तुम्हारे पास पहुँचने से पहले ही मैं तुम्हें इसकी ताबीर बतला दूँगा, यह सब उस इल्म की बदौलत है जो मेरे रब ने सिखाया है मैंने उन लोगों का मज़हब छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत के भी इंकारी हैं। (37) मैं अपने बाप दादों के दीन का पाबंद हूँ, यानी इब्राहीम, व इस्हाक़ और याक़ूब (عليه السلام) के दीन का, हमें हर्गिज़ यह सज़ावार नहीं कि हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी शरीक करें, हम पर और तमाम और लोगों पर अल्लाह तआला का यह ख़ास़ फ़ज़्ल है लेकिन अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं।'' (38)

क़ैदख़ाने में यूसुफ़ (عليه السلام) की तौहीद की दावत (आयत 37, 38) : हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) अपने दोनों क़ैदी साथियों को तस्कीन देते हैं कि मैं तुम्हारे ख़्वाब की सही ताबीर जानता हूँ और उसके बतलाने में मुझे कोई कंजूसी नहीं, उसकी ताबीर के वाक़ेअ होने से पहले ही मैं तुम्हें वह बतला दूँगा। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के इस फ़र्मान और इस वादे से तो बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) तंहाई की क़ैद में थे, खाने के वक़्त खोल दिया जाता था और एक दूसरे से मिल सकते थे, इसलिए आप (عليه السلام) ने उनसे यह वादा

किया। और बहुत ग़रीब क़ौल है कि अल्लाह तआला से थोड़ी-थोड़ी करके दोनों ख़्वाब की पूरी ताबीर बतलाई गई हो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह असर मरवी है, भले बहुत ग़रीब है फिर फ़र्माते हैं मुझे यह इल्म अल्लाह तआला की तरफ़ से अता किया गया है। वजह यह है कि मैंने उन काफ़िरों का मज़हब छोड़ रखा है जो न अल्लाह को मानें, न आख़िरत को बरहक़ जानें, मैंने अल्लाह के पैग़म्बरों के सच्चे दीन को मान रखा है और उसी की ताबेदारी करता हूँ, ख़ुद मेरे बाप दादा अल्लाह के रसूल थे। इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब (عليه السلام)। फ़िल वाक़ेअ जो भी राहे रास्त पर इस्तिक़ामत से चले हिदायत का पेरूकार है, अल्लाह के रसूल की इत्तिबाअ को लाज़िम पकड़ ले गुमराहों की राह से मुँह फेर ले, अल्लाह तबारक व तआला उसके दिल को पुरनूर और उसके सीने को मामूर (रोशन) कर देता है, उसे इल्म व इरफ़ान की दौलत से मालामाल कर देता है, उसे भलाई में लोगों का पेशवा कर देता है, और दुनिया को वह नेकी की तरफ़ बुलाता रहता है हम जबकि राहे रास्त दिखा दिए गए तौहीद की समझ दे दिए गए शिर्क की बुराई बता दिए गए, फिर हमें कैसे यह बात ज़ेब देती है कि हम अल्लाह के साथ और किसी को भी शरीक कर लें, यह तौहीद और सच्चा दीन और यह अल्लाह की वहदानियत की गवाही यह ख़ास अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसमें हम तंहा नहीं बल्कि अल्लाह की और मख़्लूक़ भी शामिल है, हाँ! हमें यह बरतरी है कि हमारी जानिब बराहे-रास्त अल्लाह की वह्नी आई और लोगों को हमने यह वह्नी पहुँचाई, लेकिन अक्सर लोग नाशुक्री करते हैं, अल्लाह की इस ज़बरदस्त नेअमत की जो अल्लाह ने उन पर रसूल भेजकर इन्आम की है, नाक़द्री करते हैं और मानकर नहीं देते बल्कि रब की नेअमत के बदले कुफ़्र करते हैं, और ख़ुद अपने साथियों के साथ हलाकत के घर में अपनी जगह बना लेते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) दादा को भी बाप के हुक्म में रखते हैं और फ़र्माते जो चाहे मैं हतीम में उससे मुबाहिला करने को तैयार हूँ, अल्लाह ने दादा का ज़िक्र नहीं किया, देखो! हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के बारे में फ़र्माया मैंने अपने बाप इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब (عليه السلام) के दीन की पैरवी की।

***

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियों! क्या मुतफ़र्रिक़ (अलग-अलग) कई एक परवरदिगार बेहतर हैं? या एक अल्लाह ज़बरदस्त ताक़तवर। (39) उसके सिवा तुम जिनकी पूजा कर रहे हो वह सब नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने ख़ुद ही गढ़ लिए हैं अल्लाह तआला ने उनकी कोई दलील नाज़िल नहीं की, फ़र्मांरवाई सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की है, उसका फ़र्मान है कि तुम सब सिवाए उसके किसी और की इबादत न करो, यही दीन दुरुस्त है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।" (40)

हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) और दावते तौहीद (आयत 39, 40) : यूसुफ़ (عليه السلام) से वह अपने ख़्वाब की ताबीर पूछने आए हैं, आप (عليه السلام) ने उन्हें ताबीरे ख़्वाब बता देने का इक़रार कर लिया, लेकिन उससे पहले उन्हें तौहीद का वअ़ज़ सुना रहे हैं और शिर्क से और मख़्लूक़ परस्ती से नफ़रत दिला रहे हैं। फ़र्मा रहे हैं कि वह अल्लाह वाहिद जिसने हर चीज़ पर क़ब्ज़ा कर रखा है जिसके सामने तमाम मख़्लूक़ पस्त व आजिज़, लाचार व बेबस है, जिसका सानी शरीक और साझी कोई नहीं, जिसकी अ़ज़्मत व सल्तनत चप्पे-चप्पे और ज़र्रे-ज़र्रे पर है, वही एक बेहतर या तुम्हारे यह ख़्याली कमज़ोर और नाकारे बहुत से मअ़बूद बेहतर? फिर फ़र्माया कि तुम जिन जिनकी पूजा-पाठ कर रहे हो, बेकार हैं यह नाम और इनके लिए इबादत यह तुम्हारी अपनी इख़्तिराअ़ है। ज़्यादा से ज़्यादा तुम यह कह सकते हो कि तुम्हारे बाप दादा भी इस मर्ज़ के मरीज़ थे, लेकिन कोई दलील इसकी तुम ला नहीं सकते, इसकी कोई दलील अ़क़्ली नक़्ली दुनिया में अल्लाह ने बनाई ही नहीं। हुक्म तसर्रुफ़ क़ब्ज़ा कुदरत कुल की कुल अल्लाह तआला ही की है, उसने अपने बन्दों को अपनी इबादत का और अपने सिवा किसी और की इबादत करने से रुक जाने का क़तई और हतमी हुक्म दे रखा है, दीने मुस्तक़ीम यही है कि अल्लाह की तौहीद हो उसके लिए ही अमल व इबादत हो उसी अल्लाह का हुक्म। उस पर बेशुमार दलीलें मौजूद, लेकिन अक्सर लोग इन बातों से जाहिल हैं, नादान हैं, तौहीद व शिर्क का फ़र्क़ नहीं जानते इसीलिए अक्सर शिर्क की दलदल में धंसे रहते हैं। बावजूद नबियों की चाहत के उन्हें ईमान नसीब नहीं होता।

ख़्वाब की ताबीर से पहले इस बहस के छेड़ने की एक ख़ास मस्लिहत यह भी थी कि उनमें से एक के लिए ताबीर निहायत बुरी थी। तो आप (عليه السلام) ने चाहा कि यह उसे न पूछें तो बेहतर है। लेकिन इस तकल्लुफ़ की क्या ज़रूरत है, ख़ुसूसन ऐसे मौक़े पर जबकि अल्लाह तआला के पैग़म्बर (عليه السلام) उनसे ताबीर देने का वादा कर चुके हैं। यहाँ तो सिर्फ़ यह बात है कि उन्होंने आप (عليه السلام) की बुज़ुर्गी और इज़्ज़त देखकर आपसे एक बात पूछी, आप (عليه السلام) ने उसके जवाब से पहले उन्हें उससे ज़्यादा बेहतर की तरफ़ तवज्जा दिलाई, और दीने इस्लाम उनके सामने दलाइल के साथ पेश किया, क्यों कि आप (عليه السلام) ने देखा था कि उनमें भलाई के क़बूल करने का माद्दा है, बात को सोचेंगे, दलील पर ग़ौर करेंगे, हक़ को क़बूलियत के कानों से सुनेंगे। जब आप (عليه السلام) अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके, अल्लाह के अहकाम की तब्लीग़ कर चुके तो अब बग़ैर उसके कि वह दोबारा पूछें आप (अ.) ने उनका जवाब शुरू किया।

✲✲✲

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : ''ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोस्तों! तुम दोनों में से एक तो अपने बादशाह को शराब पिलाने पर मुक़र्रर हो जाएगा लेकिन दूसरा सूली चढ़ा दिया जाएगा और परिन्दे उसका सर नोच-नोच कर खाएँगे, तुम दोनों जिसके बारे में तहक़ीक़ कर रहे थे वह काम फ़ैसला कर दिया गया। (41) जिसकी निस्बत यूसुफ़ (عليه السلام) का गुमान था कि उन दोनों में से यह छूट जाएगा, उसे कहा कि अपने बादशाह से मेरा ज़िक्र भी कर देना फिर उसे शैतान ने अपने बादशाह से ज़िक्र करना भुला दिया और यूसुफ़ (عليه السلام) ने कई साल क़ैदख़ाने में काटे।'' (42)

क़ैदियों के ख़्वाब की ताबीर (आयत 41, 42) : अब अल्लाह के बरगुज़ीदा यूसुफ़ (عليه السلام) उनके ख़्वाब की ताबीर बतला रहे हैं, लेकिन यह नहीं फ़र्माते कि तेरे ख़्वाब की ताबीर यह है ओर तेरे ख़्वाब की ताबीर यह है ताकि एक रंजीदा न हो जाए और मौत से पहले उस पर मौत का बोझ न पड़ जाए, बल्कि मुब्हम करके फ़र्माते हैं तुम दो में से एक अपने बादशाह का साक़ी बन जाएगा। दरअसल यह उसके ख़्वाब के ताबीर है जिसने शीरा अंगूर तैयार करते अपने आपको देखा था। और दूसरा जिसने अपने सर पर रोटियाँ देखी थीं उसके ख़्वाब की ताबीर यह दी कि उसे सूली दी जाएगी और परिन्दे उसका भेजा खाएँगे फिर साथ ही फ़र्माया कि यह अब होकर ही रहेगा। इसलिए कि जब तक ख़्वाब की ताबीर बयान न की जाए वह मुअ़ल्लक़ रहता है और जब ताबीर हो चुकी वह ज़ाहिर हो जाता है। कहते हैं कि ताबीर सुनने के बाद उन दोनों ने कहा कि हमने तो दरअसल कोई ख़्वाब देखा ही नहीं, आपने फ़र्माया अब तो तुम्हारे सवाल के मुताबिक़ ज़ाहिर हो कर ही रहेगा। (तब्री : 16/108) उससे ज़ाहिर यह है कि जो शख़्स ख़्वाह मख़्वाह का ख़्वाब गढ़ ले और फिर उसकी ताबीर भी दे दी जाए तो वह लाज़िम हो जाती है, वल्लाहु आलम! मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ख़्वाब गोया परिन्दे के पैर पर है जब तक उसकी ताबीर न दे दी जाए जब ताबीर दे दी गई फिर वह वाक़ेअ हो जाता है।'' (इसकी तख़रीज सूरह यूसुफ़ आयत 5 के तहत गुज़र चुकी है।) मुस्नद अबी यअ़ला में मरफ़ूअन मरवी है कि ''ख़्वाब की ताबीर सबसे पहले जिसने दी उसी के लिए है।''

क़ैद की मुद्दत? जिसे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने उसके ख़्वाब की ताबीर के मुताबिक़ अपने ख़्याल में जेलख़ाने से आज़ाद होने वाला समझा था। उससे पोशीदगी में कि दूसरा यानी बावर्ची न सुने, फ़र्माया कि बादशाह के सामने ज़रा मेरा ज़िक्र भी कर देना लेकिन यह इस बात को बिलकुल ही भूल गया। यह भी एक शैतानी चाल थी कि जिससे नबियुल्लाह (عليه السلام) कई साल तक क़ैदख़ाने में ही रहे। पस ठीक क़ौल यही है कि (फ़अन्साहु)

में हू की ज़मीर का मरज़अ नजात पाने वाला शख़्स ही है। (तब्री : 16/115) यह भी कहा गया है कि यह ज़मीर हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की तरफ़ फिरती है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरफ़ूअन मरवी है कि अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अगर यूसुफ़ (عليه السلام) यह कलिमा न कहते तो जेलख़ाने में इतनी लम्बी मुद्दत न गुज़ारते। उन्होंने अल्लाह तआला के सिवा और से कुशादगी चाही।'' (तब्रानी : 11640; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा मर्दूद हैसमी (रह.) कहते हैं कि इसकी सनद में इब्राहीम बिन यज़ीद मतरूक रावी है (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/40) यह रिवायत बहुत ही ज़ईफ़ है इसलिए कि सुफ़ियान बिन वकीअ और इब्राहीम बिन यज़ीद दोनों रावी ज़ईफ़ हैं। हसन और क़तादा (रह.) से मुर्सलन मरवी है। गो मुर्सल हदीसें किसी मौक़े पर क़ाबिले क़बूल भी हों लेकिन ऐसे अहम मक़ामात पर ऐसी मुर्सल रिवायतें हर्गिज़ एहतिजाज के क़ाबिल नहीं हो सकतीं, वल्लाहु आलम! (बज़्अ़ुन) का लफ़्ज़ तीन से नौ तक के लिए आता है। हज़रत वहब बिन मुनब्बा (रह.) का बयान है कि हज़रत अय्यूब (عليه السلام) बीमारी में सात साल तक मुब्तला रहे और हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) क़ैदख़ाने में सात साल तक रहे और बुख़्ते नस्सर का अ़ज़ाब भी सात साल तक रहा। (तब्री : 16/114) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं, मुद्दते क़ैद बारह साल थी, ज़ह्हाक (रह.) कहते हैं चोदह बरस आप (عليه السلام) ने क़ैदख़ाने में गुज़ारे।

***

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝٤٣ قَالُوْٓا
اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝٤٤ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا
وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝٤٥ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٤٦ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ
فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝٤٧ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ
مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝٤٨ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ
النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝٤٩

तर्जुमा : "बादशाह ने कहा मैंने ख़्वाब में देखा है कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली पतली गाएँ खा रही हैं और सात बालियाँ हैं हरी-हरी और सात और हैं बिलकुल सूखी, ऐ दरबारियों! मेरे इस ख़्वाब की ताबीर बतलाओ अगर तुम ख़्वाब की ताबीर दे सकते हो।(43) उन्होंने जवाब दिया कि यह तो उड़ते-उड़ाते परेशान ख़्वाब हैं, और ऐसे (बेमतलब) ख़्वाबों की ताबीर जानने वाले हम नहीं। (44) उन दो क़ैदियों में से जो छूटा था, उसे मुद्दत के बाद याद आ गया और कहने लगा, मैं तुम्हें इसकी ताबीर बतला दूँगा मुझे जाने की इजाज़त दीजिए।(45) ऐ यूसुफ़ (عليه السلام)! ऐ बहुत बड़े सच्चे यूसुफ़ (عليه السلام)! आप हमें इस ख़्वाब की ताबीर बतलाईए कि सात मोटी ताज़ी गायें हैं जिन्हें सात दुबली पतली गायें खा रही हैं और सात बिलकुल सब्ज़ ख़ोशे हैं और सात ही और भी हैं बिलकुल ख़ुश्क, ताकि मैं वापिस जाकर उन लोगों से कहूँ ताकि वह सब जान लें। (46) यूसुफ़ (عليه السلام) ने जवाब दिया कि तुम सात साल तक लगातार हस्बे आदत बराबर ग़ल्ला बोया करना, और फ़सल काटकर उसे बालियों समेत ही रहने देना सिवाए अपने खाने के थोड़ी सी मिक़्दार के। (47) उसके बाद सात साल निहायत ही सख़्त क़हत (सूखा) के आएँगे, वह उस ग़ल्ले को खा जाएँगे, जो तुमने उनके लिए ज़ख़ीरा रख छोड़ा था, सिवाए उस थोड़े से के जो तुम रोक रखो। (48) उसके बाद जो साल आएगा उसमें लोगों पर ख़ूब बारिश बरसाई जाएगी, और उसमें शीरा अंगूर भी ख़ूब निचोड़ेंगे।" (49)

बादशाह के ख़्वाब की ताबीर (आयत 43-49) : क़ुदरते इलाही ने यह मुक़र्रर कर रखा था कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) क़ैदख़ाने से बाइज़्ज़त व इकराम पाकीज़गी बराअत और इस्मत के साथ निकलें। उसके लिए क़ुदरत ने यह सबब बनाया कि शाहे मिस्र ने एक ख़्वाब देखा जिससे वह चौंक गया, दरबार मुनअक़िद किया और तमाम उमरा, रईसों, काहिन, मुन्जिम उलमा और ख़्वाब की ताबीर बयान करने वालों को जमा किया, और अपना ख़्वाब बयान करके उन सबसे ताबीर पूछी, लेकिन किसी की समझ में कुछ न आया और सबने लाचार हो कर यह कहकर टाल दिया कि यह कोई बाक़ायदा लायक़े ताबीर सच्चा ख़्वाब नहीं जिसकी ताबीर हो सके, यह तो यूँ ही परेशान ख़्वाब मख़्लूत ख़्यालात और फ़िज़ूल तवह्हुमात का ख़ाका है इसकी ताबीर हम नहीं जानते, उस वक़्त शाही साक़ी को हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) याद आ गए कि वह ताबीरे ख़्वाब के पूरे माहिर हैं, इस इल्म में उनको काफ़ी महारत थी, यह वही शख़्स है जो हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के साथ जेलख़ाना भुगत रहा था, यह भी और उसका एक और साथी भी, उसी से हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा था कि बादशाह के पास मेरा ज़िक्र भी करना लेकिन उसे शैतान ने भुला दिया था। आज मुद्दतों बाद याद आ गया और उसने सबके सामने कहा कि अगर आपको इसकी ताबीर सुनने का शोक़ है और वह भी सही ताबीर तो मुझे इजाज़त दीजिए यूसुफ़ (عليه السلام) जो क़ैदख़ाने में हैं उनके पास जाऊँ और उनसे पूछकर आऊँ। सबने उसे मंज़ूर कर लिया और उसे अल्लाह के मुहतरम नबी यूसुफ़ (عليه السلام) के पास भेजा। (उम्मतिन) की दूसरी क़िराअत उमतिन भी है इसके मअ़ना भूल के हैं , यानी भूल जाने के बाद उसे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का फ़र्मान याद आया। दरबार से इजाज़त लेकर यह चला, क़ैदख़ाने में पहुँचकर अल्लाह के नबी बिन नबी बिन नबी बिन नबी (عليه السلام) से कहा कि ऐ निरे

सच्चे यूसुफ़ (عليه السلام)! आप (عليه السلام) मुझे ताबीर बतला दें तो मैं जाकर उन्हें सुना दूँ और सब मालूम कर लें, आप (عليه السلام) ने न तो उसे कोई मलामत की कि तू अब तक मुझे भूल रहा, बावजूद मेरे कहने के तूने आज तक बादशाह से मेरा ज़िक्र भी न किया, न उस अम्र की दरख़्वास्त की कि मुझे जेलख़ाने से आज़ाद किया जाए, बल्कि बग़ैर किसी तमन्ना के इज़्हार के बग़ैर किसी इल्ज़ाम के देने के, ख़्वाब की पूरी ताबीर सुना दी और साथ ही तदबीर भी बता दी। फ़र्माया कि सात फ़र्बा गायों से मुराद यह है कि सात साल तक बराबर हाजत के मुताबिक़ बारिश बरसती रहेगी, ख़ूब तरसाली होगी, ग़ल्ले, खेत, बाग़ात ख़ूब फलेंगे, यही मुराद सात हरी बालियों से है। गायें बैल ही हलों में जुतते हैं। उनसे ज़मीन पर खेती की जाती है। अब तर्कीब भी बता दी कि उन सात बरसों में जो अनाज ग़ल्ला निकले उसे बतौर ज़ख़ीरा के जमा कर लेना, और रखना भी बालों और ख़ोशों समेत ताकि सड़े गले नहीं, ख़राब न हो, हाँ! अपनी खाने की ज़रूरत के मुताबिक़ उसमें से ले लेना, लेकिन ख़्याल रहे कि ज़रा सा भी ज़्यादा न लिया जाए सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ ही निकाला जाए, उन सात बरसों के गुज़रते ही अब जो क़हतसालियाँ शुरू होंगी वह बराबर सात साल तक लगातार रहेंगी, न बारिश बरसेगी न पैदावार होगी। यही मुराद है सात दुबली गायों से और सात ख़ुश्क ख़ोशों से कि उन सात बरसों में वह जमाशुदा ज़ख़ीरा तुम खाते पीते रहोगे। याद रखना कि उनमें कोई ग़ल्ला खेती न होगी, वह जमाकर्दा ज़ख़ीरा ही काम आएगा। तुम दाने बोओगे लेकिन पैदावार कुछ भी न होगी। आप (عليه السلام) ने ख़्वाब की पूरी ताबीर देकर साथ ही यह ख़ुशख़बरी दी कि उन सात ख़ुश्क सालियों के बाद जो साल आएगा वह बड़ी बरकतों वाला साल होगा, ख़ूब बारिशें बरसेंगी ख़ूब ग़ल्ले और खेतियाँ होंगी, रेल पेल हो जाएगी और तंगी दूर हो जाएगी और लोग हस्बे आदत ज़ेतून वग़ैरह का तेल निकालेंगे और हस्बे आदत अंगूर शीरा निचोड़ेंगे, जानवरों के थन दूध से भर जाएँगे कि ख़ूब दूध निकालेंगे और पियेंगे।

***

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝۵۰ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ
رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۵۱ ذٰلِكَ
لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝۵۲

तर्जुमा : "बादशाह कहने लगा, यूसुफ़ (ﷺ) को मेरे पास लाओ जब क़ासिद यूसुफ़ (ﷺ) के पास पहुँचा तो उसने कहा, अपने बादशाह के पास वापिस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का हक़ीक़ी वाक़िया क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, उनके हीले को सही तौर पर जानने वाला मेरा परवरगिदार ही है। (50) बादशाह ने पूछा, ऐ औरतों! उस वक़्त का सही वाक़िया क्या है? जब तुम दाव घात करके यूसुफ़ (ﷺ) को उसकी दिली मंशा से बहकाना चाहती थीं, उन्होंने साफ़ कह दिया कि मआज़ल्लाह! हमने तो यूसुफ़ (ﷺ) में कोई बुराई नहीं पायी, फिर तो अज़ीज़ की बीवी भी बोली कि अब तो सच्ची बात खुलकर आई, फ़िल वाक़ेअ में आप ही उसे उसके नफ़्स की हिफ़ाज़त की जानिब से वरग़ला रही थी और कोई शक नहीं वाक़ेई यूसुफ़ (ﷺ) सच्चे लोगों में है। (51) इन तमाम बातों से ग़र्ज़ यह थी कि अज़ीज़ को मालूम हो जाए कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी कोई ख़यानत नहीं की थी, और यह भी कि अल्लाह तआला दग़ाबाज़ों के हथकण्डे चलने नहीं देता।" (52)

यूसुफ़ (ﷺ) की पाकदामनी की तस्दीक़ (आयत 50-52) : ख़्वाब की ताबीर मालूम करके जब क़ासिद पलटा और उसने बादशाह को तमाम हक़ीक़त से ख़बरदार किया तो बादशाह को अपने ख़्वाब की ताबीर पर यक़ीन आ गया साथ ही उसे यह भी मालूम हो गया कि यूसुफ़ (ﷺ) बड़े ही आलिम फ़ाज़िल शख़्स हैं, ख़्वाब की ताबीर में तो आप (ﷺ) को कमाल हासिल है, साथ ही उसके अख़्लाक़ वाले हुस्ने तदबीर वाले और ख़ल्क़ुल्लाह का नफ़ा चाहने वाले और महज़ मुख़्लिस शख़्स हैं। अब शौक़ हुआ कि ख़ुद आप (ﷺ) से मुलाक़ात करे। उसी वक़्त हुक्म दिया कि जाओ हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को जेलख़ाने से आज़ाद करके मेरे पास ले आओ। दरबारी क़ासिद आप (ﷺ) के पास आया और बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं यहाँ से न निकलूँगा जब तक कि शाहे मिस्र और उसके दरबारी और अहले मिस्र यह न मालूम कर लें कि मेरा क़सूर क्या था? अज़ीज़ की बीवी की निस्बत जो बात मेरी तरफ़ लगायी गई है उसमें सच कहाँ तक है? अब तक मेरा क़ैदख़ाना भुगतना वाक़ेई किसी हक़ीक़त की बिना पर था या सिर्फ़ ज़ुल्मो ज़्यादती की बिना पर? तुम अपने बादशाह के पास वापिस जाकर मेरा यह पैग़ाम पहुँचाओ कि वह इस वाक़िया की पूरी जाँच करें। हदीस शरीफ़ में भी हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के इस सब्र की और आप (ﷺ) की इस शराफ़त व फ़ज़ीलत की तारीफ़ आई है। बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "शक के हक़दार हम बनिस्बत हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के बहुत ज़्यादा हैं जबकि उन्होंने फ़र्माया था मेरे रब! मुझे अपना मुर्दों का ज़िन्दा करना केफ़ियत के साथ दिखला (यानी जब हम अल्लाह की इस क़ुदरत में शक नहीं करते तो हज़रत इब्राहीम ﷺ जैसे जलीलुल क़द्र पैग़म्बर कैसे शक कर सकते थे? पस आप (ﷺ) की यह तलब कामिल इत्मिनान के थी, न कि शक के तौर पर। चुनाँचे ख़ुद क़ुरआन में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह मेरे इत्मिनाने दिल के लिए है) अल्लाह हज़रत लूत (ﷺ) पर रहम करे वह किसी ज़ोरावर जमाअत या मज़बूत क़िला की पनाह में आना चाहने लगे, और सुनो! अगर मैं यूसुफ़ (ﷺ) के बराबर जेलख़ाना भुगते हुए होता और फिर क़ासिद मेरी आज़ादी का पैग़ाम लाता तो मैं उसी वक़्त जेलख़ाने से

आज़ादी मंज़ूर कर लेता।'' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुहू (व नब्बिअहुम अन ज़ैफ़ि इब्राहीम) : 3372; सहीह मुस्लिम : 151; इब्ने माजा : 4026; इब्ने हिब्बान : 2608; मुश्किलुल आसार : 326; अहमद : 2/326) मुस्नद अहमद में इसी आयत (फ़स्अल्हू) की तफ़्सीर में मंक़ूल है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ''अगर मैं होता तो उसी वक़्त क़ासिद की बात मान लेता और कोई उज़्र तलाश न करता।'' (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/40; अहमद : 2/346; व सनदुहू हसन) मुस्नद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है आप फ़र्माते हैं, ''वल्लाहा! मुझे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के सब्रो करम पर रह-रहकर ताज्जुब आता है, अल्लाह उसे बख़्शे, देखो तो सही बादशाह ने ख़्वाब देखा है वह ताबीर के लिए मुज़्तरिब है क़ासिद आकर आप (عليه السلام) से ताबीर पूछता है आप (عليه السلام) फ़ौरन बग़ैर किसी शर्त के बता देते हैं, अगर मैं होता तो जब तक जेलख़ाने से अपनी आज़ादी न कर लेता हर्गिज़ न बतलाता। मुझे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के सब्रो करम पर ताज्जुब होता है, अल्लाह उन्हें बख़्शे कि जब उनके पास क़ासिद उनकी रिहाई का पैग़ाम लेकर पहुँचता है तो आप (عليه السلام) फ़र्माते हैं अभी नहीं जब तक कि मेरी पाकीज़गी, पाकदामनी और बेक़सूरी सब पर जाँच से खुल न जाए। अगर मैं उनकी जगह होता तो दौड़कर दरवाज़े पर पहुँचता।'' (तफ़्सीरे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (1/281, 282) व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुर्सल) यह रिवायत मुर्सल है। अब बादशाह ने तहक़ीक़ करनी शुरु की, उन औरतों को जिन्हें अज़ीज़ की बीवी ने अपने यहाँ दावत पर जमा किया था और ख़ुद उसे भी दरबार में बुलवाया। फिर उन तमाम औरतों से पूछा कि ज़ियाफ़त वाले दिन क्या हुआ था, सब बयान करो। उन्होंने जवाब दिया कि हाशालिल्लाह! यूसुफ़ (عليه السلام) पर कोई इल्ज़ाम नहीं, उस पर झूठी तोहमत लगायी गई, वल्लाह! हम ख़ूब जानती हैं कि यूसुफ़ (عليه السلام) में कोई बुराइ नहीं। उस वक़्त अज़ीज़ की बीवी ख़ुद भी बोल उठी कि अब हक़ सामने आ गया, वाक़िया खुल गया, हक़ीक़त निथर आई, मुझे ख़ुद इस अम्र का इक़रार है कि वाक़ेई मैंने ही उसे फंसाना चाहा था, उसने जो हमेशा कहा था कि यह औरत मुझे फुसला रही थी उसमें वह बिलकुल सच्चा है, मैं इसका इक़रार करती हूँ और अपना क़सूर आप बयान करती हूँ ताकि मेरे शौहर यह बात भी जान लें कि मैंने उसकी कोई ख़यानत दरअसल नहीं की। यूसुफ़ (عليه السلام) की पाकदामनी की वजह से कोई शर व बुराई मुझसे ज़ुहूर में नहीं आई, बदकारी से अल्लाह तआला ने मुझे बचाए रखा है। मेरे इस इक़रार से और वाक़िया के खुल जाने से साफ़ ज़ाहिर है और मेरे शौहर जान सकते हैं कि मैं बुराई में मुब्तला नहीं हुई, यह बिलकुल सच है कि ख़यानत करने वालों की मक्कारियों को अल्लाह तआला फ़रोग़ नहीं देता उनकी दग़ाबाज़ी कोई फल नहीं लाती।

अल्हम्दु लिल्लाह! बारहवाँ पारा मुकम्मल हुआ।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِیْ بِهٖۤ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِیْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْیَوْمَ لَدَیْنَا مَكِیْنٌ اَمِیْنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾

तर्जुमा :"मैं अपने नफ़्स की पाकीज़गी बयान नहीं करती बेशक नफ़्स तो बुराई पर उभारने वाला ही है मगर यह कि मेरा परवरदिगार ही अपना रह्म करे यक़ीनन पालने वाला बड़ी बख़्शिश करने वाला और बहुत मेहरबानी वाला है। (53) बादशाह ने कहा, उसे मेरे पास लाओ कि मैं उसे अपने ख़ास कामों के लिए मुक़र्रर कर लूँ फिर जब उससे बातचीत की तो कहने लगे, कि तू तो हमारे यहाँ आज से इज़्ज़तदार और अमानतदार है। (54) यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा आप मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दें, मैं हिफ़ाज़त करने वाला और बाख़बर हूँ।" (55)

नफ़्स की शरारतों से वही बचता है जिस पर अल्लाह का रह्म हो (आयत 53-55) : फिर ज़ुलेख़ा (अज़ीज़े मिस्र की बीवी) ने कहा कि मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहती और न ही इसे हर क़िस्म के जुर्म से बरी करती हूँ नफ़्स में तो तरह़ तरह़ के ख़्यालाते बद और नाजाइज़ तमन्नाएँ आती ही हैं और वह बुराई करने पर उक्साता ही रहता है लिहाज़ा नफ़्स के धोखे और फुसलाए में आकर मैंने यूसुफ़ (عليه السلام) को अपने फंदे में लाना चाहा (मगर वह न आए) क्योंकि नफ़्स बुराई पर उभारता तो है मगर जिसको अल्लाह रह्म करके बचा ले (उसको नहीं उभारता) बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है। यह क़ौल अज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलेख़ा का ही है यही बात ज़्यादा मशहूर और क़ाबिले क़ुबूल है और वाक़िया के स्याक़ व सबाक़ से भी यही बात ज़्यादा मुनासिबत रखती है और मअनवी लिह़ाज़ से भी यही ज़्यादा मुताबिक़ मालूम होती है और इसी को इमाम मावर्दी (रह़.) ने अपनी तफ़्सीर में बयान किया है और इमाम इब्ने तेमिया (रह़.) ने तो इसके बारे में एक मुस्तक़िल किताब लिखी है और उसमें इस क़ौल की पूरी ह़िमायत व ताईद की है लेकिन कुछ लोग यह भी कहते हैं कि यह क़ौल ह़ज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का है यानी (ज़ालिका लि यअलम) से लेकर (ग़फ़ूरुर् रह़ीम) तक जिसका मत़लब यह हुआ कि यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा कि ताकि अज़ीज़े मिस्र जान ले कि उसकी पीठ पीछे उसकी बीवी के बारे में मैंने उसकी कोई ख़यानत नहीं की। इब्ने जरीर और इब्ने अबी ह़ातिम ने तो सिवाए इस क़ौल के और कोई क़ौल नक़्ल नहीं किया। चुनाँचे तफ़्सीर इब्ने जरीर में है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि जब यूसुफ़ (عليه السلام) के कहने पर बादशाह ने शहर की औरतों से उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि हमने ता उनमें कोई बुराई नहीं देखी और ज़ुलेख़ा ने भी इक़रार किया कि ह़क़ बात यही है मैंने ही उनको फुस्लाने की कोशिश की थी, तो ह़ज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा कि मैंने यह सब कुछ सिर्फ़ इसलिए कराया ताकि अज़ीज़े मिस्र को मालूम हो जाए कि मैंने उसके पीछे उसकी कोई ख़यानत नहीं की तो ह़ज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने आपसे फ़र्माया कि क्या उस दिन भी नहीं की जब उस औरत ने आपका इरादा किया और आपने उस औरत का

(वाज़ेह रहे कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने उसका इरादा नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला यह फ़र्माता है कि अगर इनको अल्लाह तआला की निशानी (दलील) न दिखाई देती तो उस वक़्त ज़रूर आप इसका इरादा कर लेते।'' मगर उन निशानियों को देखकर आप तक़्वे पर क़ायम रहे।) तब आपने फ़र्माया कि ''मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं कहता। नफ़्स तो बुराई की तर्ग़ीब देता ही है।'' मुजाहिद, सईद बिन जुबेर, इक्रिमा, इब्ने अबी हुज़ैल, ज़हहाक, हसन, क़तादा और सुद्दी (रह़ि.) सब इसी के क़ाइल हैं लेकिन पहला क़ौल (यानी ज़ुलेख़ा का कलाम होना) ही ज़्यादा क़वी और ज़ाहिर है। क्योंकि पिछले कलाम का आख़िरी हिस्सा अज़ीज़ की बीवी ज़ुलेख़ा ही का है जो वह सबके सामने बादशाह से बयान कर रही थी और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) उस जगह मौजूद न थे (बल्कि जेलख़ाने में थे) इन तमाम बातचीत के बाद बादशाह ने उनको बुलवाया था।

बवक़्ते ज़रूरत अपनी क़ाबिलियत को बयान करना : जब बादशाह के सामने यूसुफ़ (ﷺ) की बेगुनाही खुल गई तो ख़ुश हो कर कहा कि उन्हें मेरे पास बुला लाओ कि मैं उन्हें अपने ख़ास मुशीरों में कर लूँ। चुनाँचे तशरीफ़ लाए जब वह आपसे मिला आपकी सूरत देखी आपकी बातें सुनीं आपके अख़्लाक़ देखे तो दिल से गरवीदा हो गया और बेसाख़्ता उसकी ज़ुबान से निकल गया कि आज से आप हमारे यहाँ मुअज़्ज़ज़ और मुअतबर हैं उस पर आपने एक ख़िदमत अपने लिए पसंद की और उसकी अहलियत ज़ाहिर की। इंसान को यह जाइज़ भी है कि जब वह अनजान लोगों में हो तो अपनी क़ाबिलियत बवक़्ते ज़रूरत बयान कर दे उस ख़्वाब की बिना पर जिनकी ताबीर आपने दी थी आपने यही आरज़ू की कि ज़मीन की पैदावार ग़ल्ला वग़ैरह जमा किया जाता है उस पर मुझे मुक़र्रर किया जाए ताकि मैं मुहाफ़िज़त करूँ नीज़ अपने इल्म के मुताबिक़ अमल कर सकूँ ताकि रिआया को क़हतसाली की मुसीबत के वक़्त क़द्रे आफ़ियत मिल सके। बादशाह के दिल पर तो आपकी अमानतदारी का सच्चाई का सलीक़ामंदी का और कामिल इल्म का सिक्का बैठ चुका था। उसी वक़्त उसने इस दरख़्वास्त को मंज़ूर कर लिया।

***

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ
نَشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : ''इसी तरह हमने यूसुफ़ (ﷺ) को मुल्क का क़ब्ज़ा दे दिया। कि वह जहाँ कहीं चाहे रहे सहे। हम जिसे चाहें अपनी रहमत पहुँचा देते हैं हम नेककारों का सवाब ज़ाया नहीं करते। (56) यक़ीनन ईमानवालों और परहेज़गारों का आख़िरत का अज्र बहुत ही बेहतर है।'' (57)

हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) मिस्र के हाकिम बन गए (आयत 56, 57) : ज़मीने मिस्र में यूँ हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की तरक़्क़ी हुई अब उनके इख़्तियार में था कि जिस तरह चाहें तसर्रुफ़ करें जहाँ चाहें मकानात तामीर करें। या इस क़ैद और तंहाई को देखिए या अब इस इख़्तियार और आज़ादी को देखिए। सच है रब जिसे चाहे

अपनी रहमत का जितना हिस्सा चाहे दे, साबिरों का सब्र फल लाकर ही रहता है। भाईयों का दुख सहा, अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी से बचने के लिए अज़ीज़े मिस्र की औरत से बिगाड़ ली और क़ैदख़ाने की मुसीबतें बर्दाश्त कीं। पस रहमते इलाही का हाथ बढ़ा और सब्र का अज्र मिला। नेककारों की नेकियाँ कभी ज़ाया नहीं जातीं। फिर ऐसे बा ईमान तक़्वे वाले आख़िरत में बड़े दर्जे और आला सवाब पाते हैं। यहाँ यह मिला वहाँ के मिलने की तो कुछ न पूछिए, हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के बारे में भी क़ुरआन में आया है कि यह दुनिया की दौलत व सल्तनत हमने तुझे अपने एहसान से दी है और क़यामत के दिन भी तेरे लिए हमारे यहाँ अच्छी मेहमानी है। (38/साद : 39, 40) अल्ग़र्ज़ शाहे मिस्र रय्यान बिन वलीद ने सल्तनते मिस्र की वज़ारत आपको दी। पहले इस ओहदे पर उस औरत का शौहर था जिसने आपको अपनी तरफ़ माइल करना चाहा था, उसी ने आपको ख़रीदा था। आख़िर शाहे मिस्र आपके हाथ पर ईमान लाया। इब्ने इस्हाक़ (रज़ि.) कहते हैं कि आपके ख़रीदने वाले का नाम इत्फ़ीर था। यह उन ही दिनों में इंतिक़ाल कर गया। उसके बाद बादशाह ने उसकी ज़ोजा राईल से हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का निकाह कर दिया। जब आप उनसे मिले तो फ़र्माया, कहो क्या यह उस तुम्हारे इरादे से बेहतर नहीं? उन्होंने जवाब दिया कि ऐ सिद्दीक़ (عليه السلام)! मुझे मलामत न कीजिए आपको मालूम है कि मैं हुस्न व ख़ूबसूरती वाली धन दौलत वाली औरत थी, मेरे शौहर मर्दुमी से महरूम थे, वह मुझसे मिल ही नहीं सकते थे। इधर आपको क़ुदरत ने जिस फ़य्याज़ी से दौलते हुस्न के साथ मालामाल किया है वह भी ज़ाहिर है पस मुझे अब मलामत न कीजिए। कहते हैं कि वाक़ेई हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने उन्हें कुँवारी पाया फिर उनके बत्न से आपके दो लड़के हुए, इफ़रासीम और मैशा। इफ़रासीम के यहाँ नून पैदा हुए जो हज़रत यूशअ (عليه السلام) के वालिद हैं और रहमत नामी साहबज़ादी हुईं जो हज़रत अय्यूब (عليه السلام) की बीवी हैं। हज़रत फ़ुज़ेल बिन अयाज़ (रह.) फ़र्माते हैं कि अज़ीज़ की बीवी रास्ते में खड़ी थीं जो हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की सवारी निकली तो बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि अल्हम्दु लिल्लाह! शाने बारी तआला के क़ुर्बान जिसने अपनी फ़र्मांबरदारी की वजह से गुलामों को बादशाही पर पहुँचाया और अपनी नाफ़र्मानी की वजह से बादशाहों को गुलामी पर ला उतारा।

***

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ
بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ
الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ
عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "यूसुफ़ (ﷺ) के भाई आए और यूसुफ़ (ﷺ) के पास गए तो उसने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने (भाईयों ने) उसे न पहचाना। (58) जब उन्हें उनका अस्बाब मुहय्या कर दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को भी लाना जो तुम्हारे वालिद से है क्या तुमने नहीं देखा कि मैंने नाप भी पूरा दिया और मैं हूँ भी बेहतरीन मेज़बानी करने वालों में। (59) पस अगर तुम उसे लेकर मेरे पास न आए तो मेरी तरफ़ से तुम्हें कोई नाप न मिलेगा बल्कि तुम मेरे क़रीब भी न फटकना। (60) उन्होंने कहा, अच्छा! हम उसके वालिद से उसकी बाबत बात-चीत करके पूरी कोशिश करेंगे। (61) अपने ख़िदमतगारों से कहा कि उनकी पूँजियाँ उन ही की बोरियों में रख दो कि जब लौटकर अपने अहलो अयाल में जाएँ और पूँजियों को पहचान लें तो बहुत मुम्किन है कि यह फिर लौटकर आएँ।" (62)

यूसुफ़ (ﷺ) के भाईयों की आमद (आयत 58-62) : कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने वज़ीरे मिस्र बनकर सात साल तक ग़ल्ला और अनाज को बेहतरीन तौर पर जमा किया। उसके बाद जब आम क़हतसाली शुरु हुई और लोग एक-एक दाने को तरसने लगे तो आपने मोहताजों को देना शुरू किया। यह क़हत इलाक़ए मिस्र से निकलकर किन्आन वग़ैरह शहरों को भी शामिल था। आप हर बेरूनी शख़्स को ऊँट भरकर ग़ल्ला अता फ़र्माया करते थे और ख़ुद आपका लश्कर बल्कि ख़ुद बादशाह भी दिन भर में सिर्फ़ एक ही मर्तबा दोपहर के वक़्त एक आध निवाला खा लेते थे और अहले मिस्र को पेट भरकर खिलाते थे। पस उस ज़माने में यह बात एक रहमते इलाही थी। यह भी मरवी है कि आपने पहले साल माल के बदले ग़ल्ला बेचा। दूसरे साल सामान अस्बाब के बदला, तीसरे साल भी और चोथे साल भी फिर ख़ुद लोगों की जान और उनकी औलाद के बदले पस ख़ुद लोग उनकी औलादें और उनकी कुल मिल्कियत और माल के आप मालिक बन गए लेकिन उसके बाद आपने सबको आज़ाद कर दिया और उनके माल भी उनके हवाले कर दिए। यह रिवायत बनी इस्राईल की है जिसे हम सच झूठ नहीं कह सकते। यहाँ यह बयान हो रहा है कि उन आने वालों में यूसुफ़ (ﷺ) के भाई भी थे जो वालिद के हुक्म से आए थे उन्हें मालूम हुआ था कि अज़ीज़े मिस्र माल के बदले ग़ल्ला देते हैं तो आपने अपने दस बेटों को यहाँ भेजा और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के सगे भाई बिनयामीन को जो आपके बाद हज़रत याक़ूब (ﷺ) के नज़दीक बहुत ही प्यारे थे अपने पास रोक लिया। जब यह क़ाफ़िला अल्लाह के नबी (ﷺ) के पास पहुँचा तो आपने तो एक नज़र में सबको पहचान लिया लेकिन उनमें से एक भी आपको न पहचान सका। इसलिए कि आप उनसे बचपन में ही जुदा हो गए थे। भाईयों ने आपको सौदागरों के हाथ बेच डाला था। उन्हें क्या ख़बर थी कि फिर क्या हुआ और यह तो ज़हन में भी न आ सकता था कि वह बच्चा जिसे बहैसियत ग़ुलाम बेचा था आज वही अज़ीज़े मिस्र बन बैठा है और इधर हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने तर्ज़े बातचीत भी ऐसा इख़्तियार किया कि उन्हें वहम भी न हो सके। उनसे पूछा कि तुम लोग मेरे मुल्क में कैसे आ गए? उन्होंने कहा, यह सुनकर कि ग़ल्ला अता करते हैं। आपने फ़र्माया, मुझे तो शक होता है कहीं तुम जासूस न हो? उन्होंने कहा, मआज़ल्लाह! हम जासूस नहीं, फ़र्माया तुम रहने वाले कहाँ के हो? कहा किन्आन के और हमारे वालिद साहब का नाम याक़ूब (ﷺ) नबियुल्लाह है। आपने पूछा, तुम्हारे सिवा उनके और लड़के भी हैं? तो उन्होंने कहा, हाँ! हम बारह भाई थे हम में जो सबसे छोटा था और हमारे वालिद की आँखों

का तारा था वह तो हलाक हो गया, उसी का भाई और है उसे वालिद ने हमारे साथ नहीं भेजा बल्कि अपने पास ही रोक लिया है कि उससे ज़रा आपको इत्मिनान और तसल्ली है। इन बातों के बाद आपने हुक्म दिया कि उन्हें सरकारी मेहमान समझा जाए और हर तरह ख़ातिर मदारात की जाए और अच्छी जगह ठहराया जाए। अब जब उन्हें ग़ल्ला दिया जाने लगा और उनके थेले भर दिए गए और जितने जानवर उनके साथ थे वह जितना ग़ल्ला उठा सकते थे भर दिया तो फ़र्माया, देखो! अपनी सदाक़त के इज़्हार के लिए अपने उस भाई को जिसे तुम इस बार अपने साथ नहीं लाए अबकी बार आओ साथ लेते आना। देखो मैंने तुमसे ख़ुश सुलूकी की है और तुम्हारी बड़ी ख़ातिरदारी की है इस तरह रग़बत दिलाकर फिर धमका भी दिया कि अगर दोबारा के आने में उसे साथ न लाए तो मैं तुम्हें एक अनाज का दाना न दूँगा बल्कि तुम्हें अपने नज़दीक भी न आने दूँगा। उन्होंने वादे किए कि हम उन्हें कह सुनकर लालच दिखाकर हर तरह पूरी कोशिश करेंगे कि अपने उस भाई को भी लाएँ ताकि बादशाह के सामने हम झूठे न पड़ें। सुद्दी (रह.) तो कहते हैं कि आपने उनसे रहन रख लिया कि जब उसे लाओगे तो यह पाओगे लेकिन यह बात कुछ जी को लगती नहीं इसलिए कि आपने तो उन्हें वापसी की बड़ी रग़बत दिलाई और बहुत कुछ तमन्ना ज़ाहिर की। जब भाई कूच की तैयारियाँ करने लगे तो हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने चालाक नौकरों से इशारा किया कि जो सामान यह लाए थे और जिसके बदल उन्होंने हमसे ग़ल्ला लिया है वह भी इन्हें वापिस कर दो लेकिन इस ख़ूबसूरती से कि इन्हें मालूम तक न हो। उनके कजावों और बोरों में उनकी तमाम चीज़ें रख दो मुम्किन है कि इसकी वजह यह हो कि आपको ख़्याल हुआ हो कि अब घर में क्या होगा जिसे लेकर यह ग़ल्ला लेने के लिए आएँ और यह भी हो सकता है कि आपने अपने बाप और भाई से अनाज का कुछ बदला लेना मुनासिब न समझा हो और यह भी क़रीने क़यास है कि आपने यह ख़्याल फ़र्माया हो कि जब यह अपना अस्बाब खोलेंगे और यह चीज़ें उसमें पाएँगे तो ज़रूरी है कि हमारी चीज़ें हमें वापिस देने को आएँगे तो उस बहाने ही भाई से मुलाक़ात हो जाएगी।

***

فَلَمَّا رَجَعُوٓا اِلٰٓى اَبِيۡهِمۡ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الۡكَيۡلُ فَاَرۡسِلۡ مَعَنَاۤ اَخَانَا نَكۡتَلۡ وَاِنَّا لَهٗ
لَحٰفِظُوۡنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلۡ اٰمَنُكُمۡ عَلَيۡهِ اِلَّا كَمَاۤ اَمِنۡتُكُمۡ عَلٰۤى اَخِيۡهِ مِنۡ قَبۡلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيۡرٌ
حٰفِظًا ۖ وَّهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوۡا مَتَاعَهُمۡ وَجَدُوۡا بِضَاعَتَهُمۡ رُدَّتۡ اِلَيۡهِمۡ ؕ
قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا مَا نَبۡغِىۡ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتۡ اِلَيۡنَا ۚ وَنَمِيۡرُ اَهۡلَنَا وَنَحۡفَظُ اَخَانَا وَنَزۡدَادُ
كَيۡلَ بَعِيۡرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيۡلٌ يَّسِيۡرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَكُمۡ حَتّٰى تُؤۡتُوۡنِ مَوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ
لَتَاۡتُنَّنِىۡ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يُّحَاطَ بِكُمۡ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوۡهُ مَوۡثِقَهُمۡ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : "जब यह लोग लौटकर अपने वालिद के पास गए तो कहने लगे कि हमसे तो ग़ल्ला का पैमाना रोक लिया गया। अब आप हमारे साथ हमारे भाई को भेजिए कि हम पैमाना भरकर लाएँ हम उसकी निगहबानी के ज़िम्मेदार हैं। (63) कहा कि मुझे तो इसकी बाबत तुम्हारा बस वैसा ही भरोसा है जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में था। पस अल्लाह ही बेहतरीन मुहाफ़िज़ है और है भी वह सब मेहरबानों से बड़ा मेहरबान। (64) जब उन्होंने अपने सामान खोला तो उन्होंने अपना सरमाया मौजूद पाया जो उनकी जानिब लौटा दिया गया था। कहने लगे, ऐ हमारे वालिद! हमें और क्या चाहिए। देखिए तो यह हमारा सरमाया भी हमें वापिस लौटा दिया गया है। हम अपने ख़ानदान को रसद ला देंगे और अपने भाई की निगरानी रखेंगे और एक ऊँट का पैमाना ज़्यादा लाएँगे। यह नाप तो बहुत आसान है। (65) याक़ूब (عليه السلام) ने कहा, मैं तो इसे हर्गिज़ हर्गिज़ साथ न भेजूँगा जब तक कि तुम अल्लाह तआला को बीच में रखकर मुझे क़ौल व क़रार न दो कि तुम इसे मेरे पास वापिस पहुँचा दोगे सिवाए इस एक सूरत के कि तुम सब गिरफ़्तार कर लिए जाओ। जब उन्होंने पक्का क़ौल व क़रार कर लिया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं, अल्लाह उस पर निगहबान है।" (66)

यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों की वापसी (आयत 63-66) : बयान हो रहा है कि वालिद के पास पहुँचकर उन्होंने कहा कि अब हमें तो ग़ल्ला नहीं मिलेगा यहाँ तक कि आप हमारे साथ हमारे भाई को न भेजें अगर उन्हें साथ कर दें तो मिल सकता है। आप बेफ़िक्र रहें हम ख़ुद इसकी निगहबानी करेंगे। (नक्तल) की दूसरी क़िराअत (युक्तलु) भी है। हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने फ़र्माया कि बस वही तुम इसके साथ करोगे जो इससे पहले इसके भाई हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के साथ कर चुके हो कि यहाँ से ले गए और पहुँचकर कोई बात बना दी (हाफ़िज़न) की दूसरी क़िराअत (हिफ़्ज़न) भी है। आप फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला ही बेहतरीन हाफ़िज़ और निगहबान है और है भी वह (अरहमुर्राहिमीन) मेरे बुढ़ापे पर मेरी कमज़ोरी पर वह रहम करेगा और जो ग़ज़ व रंज मुझे अपने बच्चे का है वह दूर कर देगा मुझे उसकी पाक ज़ात से उम्मीद है कि वह मेरे यूसुफ़ (عليه السلام) को मुझसे फिर मिला देगा और मेरी परागंदगी को दूर कर देगा, उस पर कोई काम मुश्किल नहीं, न वह अपने बन्दों से अपने रहमो करम को रोकता है।

यूसुफ़ (عليه السلام) का बर्ताव : यह पहले बयान हो चुका है कि भाईयों की वापसी के वक़्त अल्लाह तआला के नबी ने उनका मालो-मताअ उनके सामान के साथ पोशीदा तौर पर वापिस कर दिया था। यहाँ घर पहुँचकर जब उन्होंने कजावे खोले और सामान को अलग अलग किया तो अपनी सब चीज़ों को ज्यों का त्यों वापिस मौजूद पाया। तो अपने वालिद से कहने लगे, लीजिए अब आपको और क्या चाहिए। अस़ल तक तो अज़ीज़े मिस्र ने हमें वापिस कर दिया है और बदले का ग़ल्ला पूरा पूरा दे दिया है। अब तो आप भाई स़ाहब को ज़रूर हमारे साथ कर दीजिए तो हम अपने ख़ानदान के लिए ग़ल्ला भी लाएँगे और भाई की वजह से एक ऊँट का बोझ और भी मिल जाएगा क्यों कि अज़ीज़े मिस्र हर शख़्स को एक ऊँट का बोझ ही देते हैं। और आपको उन्हें हमारे साथ करने में ताम्मुल क्यूँ है? हम उसकी देखभाल और निगहदाश्त पूरी तरह करेंगे। यह नाप बहुत ही आसान है। यह

था कलाम का ततिम्मा और कलाम को अच्छा करना। हज़रत याक़ूब (عليه السلام) उन तमाम बातों के जवाब में फ़र्माते हैं कि जब तक तुम हल्फ़ियाँ इक़रार न करो कि अपने इस भाई को अपने साथ मुझ तक वापिस पहुँचा दोगे, मैं इसे तुम्हारे साथ हर्गिज़ नहीं भेजूँगा। हाँ! यह और बात है कि अल्लाह न करे तुम सब ही घिर जाओ और छूट न सको। चुनाँचे बेटों ने अल्लाह तआला को बीच में रखकर मज़बूत अहदो पैमान (वादा) किया। अब हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने यह फ़र्माकर कि हमारी इस बातचीत का अल्लाह तआला वकील है अपने प्यारे बच्चे को उनके साथ कर दिया। इसलिए कि क़हत़ के मारे ग़ल्ले की ज़रूरत थी और बग़ैर भेजे चारा न था।

***

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ
عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۸﴾

तर्जुमा : "और कहने लगे, ऐ मेरे बच्चों! तुम सब एक दरवाज़े से न जाना बल्कि कई एक दरवाज़ों में अलग अलग त़ौर पर दाख़िल होना। मैं अल्लाह तआला की त़रफ़ से आने वाली किसी चीज़ को तुमसे टाल नहीं सकता। हुक्म सिर्फ़ उसी का चलता है। मेरा पूरा भरोसा उसी पर है और हर एक भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिए। (67) जब वह उन ही रास्तों से जिनका हुक्म उनके वालिद ने उन्हें दिया था। कुछ न था कि अल्लाह तआला ने जो बात मुक़र्रर कर दी है वह उससे उन्हें ज़रा भी बचा ले। हाँ! याक़ूब (عليه السلام) ने अपने ज़मीर के एक ख़त़रे को सरअंजाम दे लिया और हमारे सिखलाए हुए इल्म का आलिम था, अक्सर लोग नहीं जानते।" (68)

हज़रत याक़ूब (عليه السلام) की बेटों को वसिय्यत (आयत 67, 68) : चूँकि अल्लाह तआला के नबी हज़रत याक़ूब (عليه السلام) को अपने बच्चों पर नज़र लग जाने का खटका था। क्योंकि वह सब अच्छे ख़ूबसूरत, तनोमंद, त़ाक़तवर दीदार व नौजवान थे। इसलिए बवक़्ते रुख़सत उनसे फ़र्माते हैं कि प्यारे बच्चों! तुम सब शहर के एक ही दरवाज़े से शहर में दाख़िल न होना बल्कि अलग अलग दरवाज़ों से एक एक दो दो होकर जाना।

नज़र का लग जाना हक़ है, घोड़े सवार को यह नज़र गिरा देती है फिर साथ ही फ़र्माते हैं कि यह मैं जानता हूँ और मेरा ईमान है कि यह तदबीर तक़्दीर में हेर-फेर नहीं कर सकती। अल्लाह तआला की क़ज़ा को कोई शख़्स किसी तदबीर से बदल नहीं सकता, अल्लाह तआला का चाहा पूरा होकर ही रहता है। हुक्म उसी का चलता है। कौन है जो उसके इरादे को बदल सके? उसके फ़र्मान को टाल सके? उसकी क़ज़ा को लौटा सके? मेरा भरोसा उसी पर है और मुझ पर ही क्या मौक़ूफ़ है हर एक भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिए चुनाँचे बेटों ने वालिद के हुक्म के मुताबिक़ अमल किया और उसी तरह कई एक दरवाज़ों में बट गए और शहर में पहुँचे। इस तरह वह अल्लाह की क़ज़ा को लौटा नहीं सकते थे हाँ! हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने एक ज़ाहिरी तदबीर पूरी की कि उससे वह बुरी नज़र से बच जाएँ। वह इल्म वाले थे अल्लाह का दिया हुआ इल्म उनके पास था। हाँ! अक्सर लोग इन बातों को नहीं जानते।

***

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ
صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا
جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾
قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ
بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ
مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ
وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾

तर्जुमा : "यह सब जब यूसुफ़ (عليه السلام) के पास पहुँच गए तो उसने अपने भाई को अपने पास बिठा लिया और कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़ (عليه السلام)) हूँ पस यह जो कुछ करते रहे उसका कुछ रंज न कर। (69) फिर जब उन्हें उनका सामान अस्बाब ठीकठाक करके दिया तो अपने भाई के सामान में पानी का प्याला रख दिया। फिर एक आवाज़ देने वाले ने पुकारकर कहा कि ऐ क़ाफ़िले वालों! तुम लोग तो चोर हो। (70) उन्होंने उनकी तरफ़ चेहरा करके कहा कि तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है। (71) जवाब दिया कि शाही जाम गुम है जो उसे ले आए उसे एक ऊँट के बोझ का ग़ल्ला मिलेगा। इस वादे का मैं ज़ामिन हूँ। (72) उन्होंने कहा, अल्लाह तआला की क़सम! तुमको ख़ूब इल्म है कि हम मुल्क में फ़साद फैलाने के लिए नहीं आए और न हम चोर हैं। (73) उन्होंने कहा, अच्छा चोर की क्या सज़ा है अगर झूठे हो। (74) जवाब दिया कि उसकी सज़ा यही है कि जिसके सामान में से पाया जाए वही उसका बदला है। हम तो ऐसे ज़ालिमों को यही सज़ा दिया करते हैं। (75) पस यूसुफ़ (عليه السلام) ने उनके थेलों की तलाश शुरु की, अपने भाई के थेले की तलाश से पहले फिर उस जाम को अपने भाई के थेले से निकाला। हमने यूसुफ़ (عليه السلام) के लिए इसी तरह यह तदबीर की। उस बादशाह के इंसाफ़ की रू से यह अपने भाई को न ले सकते थे मगर यह कि मंज़ूरे इलाही हो। हम जिसके चाहें दर्जे बुलंद कर दें हर इल्म वाले से फ़ोक़ियत रखने वाला दूसरा ज़ी इल्म मौजूद है।" (76)

हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने अपने भाई को पहचान लिया (आयत 69-76) : बिनयामीन जो हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के सगे भाई थे उन्हें लेकर आपके और भाई जब मिस्र पहुँचे, आपने अपने सरकारी मेहमानख़ाने में ठहराया। बड़ी इज़्ज़त तक्रीम की और सिला और इन्आम व इकराम दिया। अपने भाई से तंहाई में फ़र्माया कि मैं तेरा भाई यूसुफ़ (عليه السلام) हूँ। अल्लाह तआला ने मुझ पर यह इन्आम व इकराम किया है। अब तुम्हें चाहिए कि भाईयों ने जो सुलूक मेरे साथ किया है उसका रंज न करो और इस हक़ीक़त को भी उन पर न खोलो। मैं कोशिश करके किसी न किसी तरह तुम्हें अपने पास रोक लूँगा।

भाई को रोकने की हिक्मते अमली : जब आप अपने भाईयों को हस्बे आदत एक एक ऊँट ग़ल्ले का देने लगे और उनका सामान लदने लगा तो अपने चालाक मुलाज़िमों से चुपके से इशारा कर दिया कि चाँदी का शाही कटोरा बिनयामीन के सामान में चुपके से डाल दें। कुछ ने कहा है कि यह कटोरा सोने का था। उसमें पानी पिया जाता था और उसी से ग़ल्ला भर के दिया जाता था बल्कि वैसा ही प्याला हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास भी था। पस आपके मुलाज़िमीन ने होशियारी से वह प्याला आपके भाई हज़रत बिनयामीन के थेले में रख दिया। जब यह चलने लगे तो सुना कि पीछे से मुनादी निदा करता आ रहा है कि ऐ क़ाफ़िला वालों! तुम चोर हो। उनके कान खड़े हो गए। उधर मुतवज्जा हुए और पूछा कि आपकी क्या चीज़ गुम हुई है। जवाब मिला कि शाही पैमाना जिससे अनाज नापा जाता था। सुनो! शाही ऐलान है कि उसके ढूँढने वाले को एक बोझ ग़ल्ला मिलेगा और मैं ख़ुद इसकी ज़मानत देता हूँ।

यूसुफ़ (ﷺ) के भाईयों के मज़हब में चोर की सज़ा : अपने ऊपर चोरी की तोहमत सुनकर यूसुफ़ (ﷺ) के भाईयों के कान खड़े हो गए और कहने लगे तुम हमें जान चुके हो, हमारे आदात व ख़साइल से वाक़िफ़ हो चुके हो, हम ऐसे नहीं कि कोई फ़साद फैलायें, न ऐसे हैं कि चोरियाँ करते फिरें। शाही ़ ़ाज़िमों ने कहा, अच्छा! अगर जाम व पैमाने का चोर तुममें से ही कोई हो और तुम झूठे पड़ो तो उसकी सज़ा क्या होनी चाहिए। जवाब दिया कि दीने इब्राहीमी के मुताबिक़ उसकी सज़ा यह है कि वह उस शख़्स के सुपुर्द कर दिया जाए जिसका माल उसने चुराया है। हमारी शरीअत का यही फ़ैसला है। अब हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) का मतलब पूरा हो गया। आपने हुक्म दिया कि इनकी तलाशी ली जाए। चुनाँचे पहले भाईयों के सामान की तलाशी ली। हालाँकि मालूम था कि उनके थेले में वह पैमाना नहीं है लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि उन्हें और दूसरों को कोई शक व शुब्हा न हो जाए, आपने यह काम किया और जब भाई की तलाशी पूरी हो चुकी और जाम न मिला तो अब बिनयामीन के सामान की तलाशी ली गयी चूँकि उनके सामान में रखवाया था इसलिए उसमें से निकलना ही था। निकलते ही हुक्म दिया कि इन्हें रोक लिया जाए, यह थी वह तर्कीब जो जनाब बारी ने अपनी हिक्मत से और हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की और बिनयामीन वग़ैरह की मस्लिहत के लिए हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को सिखाई थी क्योंकि शाहे मिस्र के क़ानून के मुताबिक़ तो बावजूद चोर होने के बिनयामिन को हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) अपने पास नहीं रख सकते थे लेकिन चूँकि भाई ख़ुद यही फ़ैसला कर चुके थे इसलिए यही फ़ैसला हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने जारी कर दिया। आपको मालूम था कि शरअ़े इब्राहीमी का फ़ैसला चोर की बाबत क्या है इसलिए भाईयों से पहले ही कहलवा लिया था। जिसके दर्जे अल्लाह तआला बढ़ाना चाहे बढ़ा देता है जैसे फ़र्मान है ''तुममें से ईमान वालों के दर्जे हम बुलंद करेंगे। हर आलिम से बढ़कर कोई और आलिम भी है यहाँ तक कि अल्लाह तआला सबसे बड़ा आलिम है।'' (58/मुजादिला : 11) उसी से इल्म की शुरुआत है और उसी की तरफ़ इल्म की इंतिहा है। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िराअत में (फ़ौक़ा कुल्लि आलिमिन अलीम) है।

***

قَالُوٓا اِنۡ يَّسۡرِقۡ فَقَدۡ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوۡسُفُ فِىۡ نَفۡسِهٖ وَلَمۡ يُبۡدِهَا

لَهُمۡ ۚ قَالَ اَنۡتُمۡ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا تَصِفُوۡنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الۡعَزِيۡزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا

شَيۡخًا كَبِيۡرًا فَخُذۡ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰٮكَ مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۷۸﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنۡ نَّاۡخُذَ

اِلَّا مَنۡ وَّجَدۡنَا مَتَاعَنَا عِنۡدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوۡنَ ﴿۷۹﴾

तर्जुमा : ''कहने लगे कि, अगर इसने चोरी की तो इसका भाई भी पहले चोरी कर चुका है, यूसुफ़ (ﷺ) ने इस बात को अपने दिल में रख लिया और उनके सामने बिलकुल ज़ाहिर न

किया। कहा कि तुम घटिया दर्जे के हो और जो तुम बयान करते हो उसे अल्लाह ही ख़ूब जानता है। (77) कहने लगे कि, ऐ अज़ीज़े मिस्र! इसके वालिद बहुत बड़े उम्र के बिलकुल बूढ़े शख़्स हैं। आप इसके बदले में से किसी को ले लीजिए। हम देखते हैं कि आप बड़े मुहसिन शख़्स हैं। (78) यूसुफ़ (عليه السلام) ने कहा, हमने जिसके पास अपनी चीज़ पाई है उसके सिवा दूसरे की गिरफ़्तारी करने से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं। ऐसा करने से तो हम यक़ीनन नाइंसाफ़ हो जाएँ।" (79)

यूसुफ़ (عليه السلام) की तरफ़ चोरी की निस्बत (आयत 77) : भाई के थेले में से जाम निकलता देखकर बात बना दी कि देखो! इसने चोरी की थी और यही किया इसके भाई यूसुफ़ ने भी, एक मर्तबा इससे पहले चोरी कर ली थी। वाक़िया यह था कि अपने नाना का बुत चुपके से उठा लाए थे और उसे तोड़ दिया था। यह भी मरवी है कि हज़रत याक़ूब (عليه السلام) की एक बड़ी बहन थीं जिनके पास अपने वालिद हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) का एक कमर पट्टा था जो ख़ानदान के बड़े आदमी के पास रहा करता था। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) पैदा होते ही अपनी उन फूफी (बुआ) की परवरिश में थे। उन्हें हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से बड़ा लगाव था, जब आप कुछ बड़े हो गए तो हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने आपको ले जाना चाहा, बहन से दरख़्वास्त की लेकिन बहन ने जुदाई को नाक़ाबिले बर्दाश्त बयान करके इंकार कर दिया। इधर आपके वालिद साहब हज़रत याक़ूब (عليه السلام) के शौक़ की भी इंतिहा न थी, सर हो गए। आख़िर बहन ने फ़र्माया, अच्छा! कुछ दिनों रहने दीजिए फिर ले जाना, उसी समय मे एक दिन उन्होंने वही कमरपट्टा हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के कपड़ों के नीचे छुपा दिया फिर तलाश शुरु की। सारे घर में छान लिया , न मिला। शोर हुआ आख़िर यह ठहरी कि घर में जो हैं उनकी तलाशियाँ ली जाएँ, ली गईं किसी के पास हो तो निकले आख़िर हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की तलाशी ली गई। उनके पास से बरामद हुआ। हज़रत याक़ूब (عليه السلام) को ख़बर दी गई और मिल्लते इब्राहीमी के क़ानून के मुताबिक़ आप अपनी फूफी की तहवील में कर दिए गए और फूफी ने इस तरह अपने शौक़ को पूरा किया। इंतिक़ाल के वक़्त तक हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को न छोड़ा। उसी बात का तअ़ना आज भाई दे रहे हैं जिसके जवाब में हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने चुपके से अपने दिल में कहा कि तुम बड़े ख़ाना ख़राब लोग हो। उसके भाई की चोरी का हाल अल्लाह तआला ख़ूब जानता है।

बिनयामीन की क़ैद और भाईयों का मिन्नत समाजत करना (आयत 78, 79) : जब बिनयामीन के पास से शाही माल बरामद हुआ और उनके अपने इक़रार के मुताबिक़ वह शाही क़ैदी ठहर चुके तो अब उन्हें रंज होने लगा। अज़ीज़े मिस्र से मिन्नत समाजत करने को पुरचाने लगे और उसे रहम दिलाने के लिए कहा कि उनके वालिद उनके बड़े ही दिलदादा हैं, ज़ईफ़ और बूढ़े शख़्स हैं उनका एक सगा भाई पहले ही गुम हो चुका है जिसके सदमें में वह पहले ही से चूर हैं। अब जो यह सुनेंगे तो डर है कि ज़िन्दा न बच सकें। आप हममें से किसी को उनकी जगह अपने पास रख लें और उसे छोड़ दें, आप बड़े मुहसिन हैं इतनी अर्ज़ हमारी क़बूल कर लें। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने जवाब दिया कि भला यह संगदिली और ज़ुल्म कैसे हो सकता है कि करे कोई, भरे कोई। चोर को रोका जाएगा न कि शाह को। नाकर्दा गुनाह को सज़ा देना और गुनहगार को छोड़ देना यह तो सरीह नाइंसाफ़ी और बदसुलूकी है।

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۭ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ
عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى
يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ
اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝٨١ وَسْـَٔلِ
الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٨٢

तर्जुमा : ''जब यह उससे मायूस हो गए तो तंहाई में बैठकर मश्वरा करने लगे। उनमें जो सबसे बड़ा था उसने कहा तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे वालिद ने तुमसे अल्लाह तआला को बीच में रखकर पुख़्ता (ठोस) क़ौल व क़रार लिया है और इससे पहले यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के बारे में तुम ज़बरदस्त क़सूर कर चुके हो। पस मैं तो इस सरज़मीन से न टलूँगा जब तक कि वालिद साहब ख़ुद मुझे इजाज़त न दें। या अल्लाह तआला! मेरा इस मामले का फ़ैसला कर दे वही बेहतरीन हाकिम है। (80) तुम सब वालिद साहब की ख़िदमत में वापिस जाओ और कहो कि अब्बाजान! आपके साहबज़ादे ने चोरी की और हमने वही गवाही दी थी जो हम आप जानते थे हम कुछ ग़ैब की हिफ़ाज़त करने वाले तो न थे। (81) आप उस शहर के लोगों से पूछ लें जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िला से भी पूछ लें जिसके साथ हम आए हैं। वल्लाह! हम बिलकुल सच्चे हैं।'' (82)

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाईयों का मायूसी के बाद मश्वरा (आयत 80-82) : जब यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई अपने भाई के छुटकारे से मायूस हो गए उन्हें इस बात ने हैरत में डाल दिया कि हम वालिद से सख़्त अहदो-पैमान करके आए हैं कि बिनयामीन को आपके हुज़ूर में पहुँचा देंगे, अब यहाँ से यह किसी तरह छूट नहीं सकते, इल्ज़ाम साबित हो चुका। हमारी अपनी क़रारदाद के मुताबिक़ वह शाही क़ैदी ठहर चुके। अब बताओ क्या किया जाए। इस आपस के मश्वरे में बड़े भाई ने अपना ख़्याल इन लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया कि तुम्हें मालूम है कि इस ज़बरदस्त ठोस वादे के बाद जो हम अब्बाजान से करके आए हैं अब उन्हें मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहे, न यह हमारे बस की बात है कि किसी तरह बिनयामीन को शाही क़ैद से आज़ाद कर लें। फिर इस वक़्त हमें अपना पहला क़सूर और नादिम कर रहा है जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के बारे में हमसे इससे पहले सरज़द हो चुका है। पस अब मैं तो यहीं रुक जाता हूँ यहाँ तक कि या तो वालिद साहब मेरा क़सूर माफ़ करके मुझे अपने पास हाज़िर होने की इजाज़त दें या अल्लाह तआला मुझे कोई फ़ैसला सुझा दे कि मैं या तो लड़-भिड़कर अपने भाई

को लेकर जाऊँ या अल्लाह तआला कोई और सूरत बना दे। कहा गया है कि उनका नाम रूबेल था या यहूदा था। यही थे कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को जब और भाईयों ने क़त्ल करना चाहा था उन्होंने रोका था। अब यह अपने और भाईयों को मश्वरा देते हैं कि तुम अब्बाजान के पास जाओ, उन्हें हक़ीक़ते हाल से ख़बरदार करो। उनसे कहो कि हमें क्या ख़बर थी कि यह चोरी कर लेंगे चोरी का माल इनके पास मौजूद है। हमसे तो मसले की सूरत पूछी गई हमने बयान कर दी। आपको हमारी बात का यक़ीन नहीं हो तो अहले मिस्र से पूछ लीजिए या जिस क़ाफ़िले के साथ हम आए हैं उससे पूछ लीजिए कि हमने सदाक़त अमानत, हिफ़ाज़त में कोई कसर नहीं उठा रखी और हम जो कुछ अर्ज़ कर रहे हैं वह बिलकुल सच है।

***

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ
اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰي يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ
الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ
الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

तर्जुमा : "कहा यह तो नहीं बल्कि तुमने अपनी तरफ़ से बात बना ली, पस अब सब्र ही बेहतर है। क्या अजब कि अल्लाह तआला उन सबको मेरे पास ही पहुँचा दे, वही इल्म व हिक्मत वाला है। (83) फिर उनसे चेहरा फेर लिया और कहने लगे, आह! यूसुफ़ (ﷺ)! उनकी आँखें बवजह रंजो-ग़म के सफ़ेद हो चुकी थीं और वह ग़म के मारे घुटे जा रहे थे। (84) बेटों ने कहा, वल्लाह! आप हमेशा यूसुफ़ (ﷺ) की याद ही में लगे रहोगे यहाँ तक कि घुल जाओ या ख़त्म ही हो जाओ। (85) उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी परेशानियों और रंज की फ़रियाद अल्लाह ही से कर रहा हूँ, मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से वह बातें मालूम हैं जिनसे तुम सरासर बेख़बर हो।" (86)

याक़ूब (ﷺ) की उदासी (आयत 83-86) : भाईयों की जुबानी यह ख़बर सुनकर हज़रत याक़ूब (ﷺ) ने वही फ़र्माया जो इससे पहले उस वक़्त फ़र्माया था जब उन्होंने पैराहने यूसुफ़ (यूसुफ़ का कुर्ता) (ﷺ) ख़ून आलूद पेश करके अपनी गढ़ी हुई कहानी सुनाई थी कि सब्र ही बेहतर है, आप समझे कि उसी की तरह यह बात भी उनकी अपनी बनाई हुई है। बेटों से यह फ़र्माकर अब अपनी उम्मीद ज़ाहिर की जो अल्लाह तआला से थी कि बहुत मुम्किन है कि बहुत जल्द अल्लाह तआला मेरे तीनों बच्चों को मुझसे मिला दे यानी

हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को, बिनयामीन को और आपके बड़े साहबज़ादे रूबेल को जो मिस्र ही में ठहर गये थे, इस उम्मीद पर कि अगर मौक़ा लग जाए तो बिनयामीन को ख़ुफ़िया तौर पर निकाल ले जाएँ या मुम्किन है कि अल्लाह तआला ख़ुद हुक्म दे और यह उसकी रज़ामंदी के साथ वापिस लौटें। फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला अलीम है। मेरी हालत को ख़ूब जान रहा है। हकीम है उसकी क़ज़ा व क़द्र और उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। अब आपके इस नए रंज ने पुराना रंज भी ताज़ा कर दिया और हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की याद दिल में चुटकियाँ लेने लगी। हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं (इन्ना लिल्लाहि) पढ़ने की हिदायत सिर्फ़ इसी उम्मत को की गई है इस नेअमत से अगली उम्मतें मअ अपने नबियों के महरूम थीं। देखिए हज़रत याक़ूब (عليه السلام) भी ऐसे मौक़े पर (या अस्फ़ा अला यूसुफ़) कहते हैं। आपकी आँखें जाती रही थीं। ग़म ने आपको नाबीना कर दिया था और ज़ुबान ख़ामोश थी। मख़्लूक़ में से किसी से शिकायत व शिकवा नहीं करते थे। ग़मगीन और अंदोह गीं रहा करते थे। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत दाऊद (عليه السلام) ने जनाब बारी में अर्ज़ किया कि लोग तुझसे यह कहकर दुआ मांगते हैं कि ऐ इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के रब! तू ऐसा कर कि इन तीनों नामों में चौथा नाम मेरा भी शामिल हो जाए, जवाब मिला कि ऐ दाऊद (عليه السلام)! (हज़रत) इब्राहीम (عليه السلام) आग में डाले गए और सब्र किया, तेरी आज़माइश अभी ऐसी नहीं हुई। इस्हाक़ (عليه السلام) ने ख़ुद अपनी क़ुर्बानी मंज़ूर कर ली और अपना गला कटवाने बैठ गए। तुझ पर यह बात भी नहीं आई। याक़ूब (عليه السلام) से मैंने उनके लख़्ते जिगर को अलग कर दिया, उसने भी सब्र किया। तेरे साथ यह वाक़िया भी नहीं हुआ। (इसमें अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/37; रक़म : 342) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) यह रिवायत मुर्सल है और इसमें नकारत भी है इसमें बयान हुआ है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) थे लेकिन सही बात यह है कि हज़रत इस्माईल (عليه السلام) थे। इस रिवायत के रावी अली बिन ज़ेद बिन जिदआन अक्सर मुन्कर और ग़रीब रिवायतें बयान कर दिया करते हैं, वल्लाहु आलम! बहुत मुम्किन है कि अहनफ़ बिन क़ेस (रहि.) ने यह रिवायत बनी इस्राईल से ली हो, जैसे कअब वहब वग़ैरह से, वल्लाहु आलम!

बनी इस्राईल की रिवायतों में यह भी है कि हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने हज़रत यूसुफ़ (अ) को उस मौक़े पर जबकि बिनयामीन क़ैद में थे, एक ख़त लिखा था जिसमें उन्हें रहम दिलाने के लिए लिखा था कि हम मुसीबतज़दा लोग हैं, मेरे दादा हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) आग में डाले गए, मेरे वालिद हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) ज़िब्ह के साथ आज़माये गए, मैं ख़ुद यूसुफ़ (عليه السلام) की जुदाई में मुब्तला हूँ। लेकिन यह रिवायत भी सनदन साबित नहीं। बच्चों ने बाप का यह हाल देखकर उन्हें समझाना शुरु किया कि अब्बाजान! आप तो उसी की याद में अपने आपको घुला देंगे बल्कि हमें तो डर है कि अगर आपका यही हाल कुछ दिनों और रहा तो कहीं ज़िन्दगी से हाथ न धो बैठें। हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने उन्हें जवाब दिया कि मैं तुमसे तो कुछ नहीं कह रहा मैं तो अपने रब के पास अपना दुख रो रहा हूँ और उसकी ज़ात से बहुत कुछ उम्मीदवार हूँ वह भलाइयों वाला है मुझे यूसुफ़ का ख़्वाब याद है जिसकी ताबीर ज़ाहिर होकर रहेगी। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत याक़ूब (عليه السلام) के एक मुख़्लिस दोस्त ने एक बार आपसे पूछा कि आपकी बीनाई कैसे जाती रही और आपकी कमर कैसे झुक गई। आपने फ़र्माया कि यूसुफ़ (عليه السلام) की याद में रो-रोकर आँखें खो दीं और बिनयामीन के सदमे ने कमर

तोड़ दी। उसी वक़्त जिब्राईल (ﷺ) आए और फ़र्माया, अल्लाह तआला आपको सलाम के बाद कहता है कि मेरी शिकायतें दूसरों के सामने करने से शर्माते नहीं? हज़रत याक़ूब (ﷺ) ने उसी वक़्त फ़र्माया कि मेरी परेशानी और ग़म की शिकायत अल्लाह ही के सामने है। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने फ़र्माया, आपकी शिकायत का अल्लाह तआला को ख़ूब इल्म है। (हाकिम : 2/348; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें हफ़्स बिन अम्र बिन ज़ुबेर मज्हूल है, मैंने किसी इमाम को नहीं पाया जिसने इसकी तौसीफ़ की हो) यह हदीस भी ग़रीब है और इसमें भी नकारत है।

***

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْئَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "मेरे प्यारे बेटों! तुम जाओ और यूसुफ़ (ﷺ) की और उसके भाई की पूरी तरह तलाश करो। और अल्लाह तआला की रहमत से नाउम्मीद न हो। यक़ीनन रहमते इलाही से नाउम्मीद वही होते हैं जो काफ़िर होते हैं। (87) फिर जब यह लोग यूसुफ़ (ﷺ) के पास पहुँचे तो कहने लगे, ऐ अज़ीज़! हम और हमारा ख़ानदान बड़ी तक्लीफ़ में हैं। हम हक़ीर पूँजी लेकर आए हैं पस आप हमें पूरा नापना दीजिए और हम पर ख़ैरात कीजिए अल्लाह तआला ख़ैरात करने वालों को बदला देता है।" (88)

हुक्मे याक़ूब (ﷺ) कि दोनों भाईयों को तलाश करो (आयत 87, 88) : हज़रत याक़ूब (ﷺ) अपने बेटों को हुक्म कर रहे हैं कि तुम इधर उधर जाओ और (हज़रत) यूसुफ़ (ﷺ) और बिनयामीन की तलाश करो। अरबी में (तहस्सुस) का लफ़्ज़ भलाई की जुस्तजू के लिए बोला जाता है। और बुराई की टटोल के लिए (तजस्सुस) का लफ़्ज़ बोला जाता है। साथ में फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला की ज़ात से मायूस न होना चाहिए। उसकी रहमत से मायूस वही होते हैं जिनके दिलों में कुफ़्र होता है तुम तलाश बंद मत करो, अल्लाह तआला से नेक उम्मीद रखो और अपनी कोशिश जारी रखो। चुनाँचे यह लोग चले फिर मिस्र पहुँचे। हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के दरबार में हाज़िर हुए वहाँ अपनी बुरी हालत ज़ाहिर की कि क़हतसाली ने हमारे ख़ानदान को सता रखा है। हमारे पास कुछ नहीं रहा जिससे ग़ल्ला ख़रीदते, अब रद्दी वाही नाक़िस बेकार खोटी और क़ीमत न बनने वाली कुछ यूँ ही सी रखी रखाई चीज़ें लेकर आपके पास आए हैं भले यह बदला

नहीं कहा जा सकता न क़ीमत बनती है लेकिन ताहम हमारी ख़्वाहिश है कि आप हमें वही दीजिए जो सच्ची सही और पूरी क़ीमत पर दिया करते हैं। हमारे बोझ भर दीजिए। हमारी ख़ोरजियाँ पुर कर दीजिए। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िराअत में (फ़औफ़ि लनल कैल) के बदले (फ़ औक़िर रिकाबना) है यानी हमारे ऊँट गल्ले से लाद दीजिए और हम पर सदक़ा कीजिए। हमारे भाई को रिहाई दीजिए। या यह मतलब है कि यह ग़ल्ला हमें हमारे इस माल के बदले नहीं बल्कि बतौरे ख़ेरात दीजिए। हज़रत सुफ़ियान बिन उयेयना (रह.) से सवाल होता है कि हमारे नबी (ﷺ) से पहले भी किसी नबी पर सदक़ा हराम हुआ है? तो आपने यही आयत पढ़कर इस्तिदलाल किया कि नहीं हुआ, हज़रत मुजाहिद (रह.) से सवाल हुआ कि क्या किसी शख़्स का अपनी दुआ में यह कहना मकरूह है कि या अल्लाह! मुझ पर सदक़ा कर। फ़र्माया, हाँ! इसलिए कि सदक़ा वह करता है जो तालिबे सवाब हो।

***

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ
يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ
﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

तर्जुमा : ''यूसुफ़ (अलैहि.) ने कहा, जानते भी हो कि तुमने यूसुफ़ (अलैहि.) और उसके भाई के साथ अपनी जिहालत में क्या क्या किया? (89) उन्होंने कहा, शायद तू ही यूसुफ़ (अलैहि.) है। जवाब दिया कि हाँ! मैं यूसुफ़ (अलैहि.) हूँ और यह मेरा भाई है अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़्लो करम किया। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी और सब्र करे तो अल्लाह तआला किसी नेकोकार का अज्र ज़ाया नहीं करता। (90) उन्होंने कहा, अल्लाह तआला की क़सम! अल्लाह तआला ने तुझे हम पर बरतरी दी है। और यह भी बिलकुल सच है कि हम ख़ताकार थे। (91) जवाब दिया आज तुम पर कोई नाराज़गी भरा इल्ज़ाम नहीं है। अल्लाह तुम्हें बख़्शे वह सब मेहरबानों से बड़ा मेहरबान है।'' (92)

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) से तीसरी मुलाक़ात (आयत 89-92) : जब भाई हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) के पास इस आजिज़ी और बेबसी की हालत में पहुँचे। अपने तमाम दुख रोने लगे। अपने वालिद की और अपने घरवालों की मुसीबतें बयान कीं तो हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) का दिल भर आया, न रहा गया अपने सर से ताज उतार दिया और भाईयों से कहा, कुछ अपने करतूत भी तो याद करलो कि तुमने यूसुफ़ (अलैहि.) के साथ क्या

किया? ओर उसके भाई के साथ क्या किया? वह निरी जिहालत का करिश्मा था। इसीलिए कुछ सलफ़ फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला का हर गुनहगार जाहिल है। कुरआन कहता है (ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ) (16/नह्ल : 119) बज़ाहिर यह मालूम होता है कि पहली दो दफ़ा की मुलाक़ात में हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को अपने आप ज़ाहिर करने का हुक्मे इलाही न था, अब की मर्तबा हुक्म हो गया। आपने मामला साफ़ कर दिया। जब तक्लीफ़ बढ़ गई सख़्ती ज़्यादा हो गई तो अल्लाह तआला ने राहत दे दी और कुशादगी अता फ़र्माई। जैसे इर्शाद है कि सख़्ती के साथ आसानी है यक़ीनन सख़्ती के साथ आसानी है। (94/इंशिराह : 5, 6) अब भाई चौंक पड़े। कुछ इस वजह से कि ताज उतारने के बाद पेशानी की निशानी देख ली। कुछ इस क़िस्म के सवालात कुछ हालात कुछ अगले वाक़ियात सब सामने आ गए। ताहम अपना शक दूर करने के लिए पूछा कि क्या तुम यूसुफ़ (عليه السلام) ही हो? आपने इस सवाल के जवाब में साफ़ कह दिया कि हाँ! मैं ख़ुद यूसुफ़ (عليه السلام) हूँ और यह मेरा सगा भाई है। अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़्लो-करम किया। बिछड़ने के बाद मिला दिया। जुदाई के बाद इकट्ठा कर दिया। तक़्वा और सब्र बेकार नहीं जाते। नेककारी बेफल लाए नहीं रहती। अब तो भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी का इक़रार कर लिया कि वाक़ेई सूरत सीरत दोनों एतिबार से आप हम पर फ़ोक़ियत रखते हैं मुल्को माल के एतिबार से भी अल्लाह ने आपको हम पर फ़ज़ीलत दी है। इसी तरह कुछ के नज़दीक नबुव्वत के एतिबार से भी क्योंकि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) नबी थे और यह भाई नबी न थे। इस इक़रार के बाद अपनी ख़ताकारी का भी इक़रार किया। उसी वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) ने फ़र्माया, मैं आज के दिन के बाद तुम्हें यह ख़ता याद भी न दिलाऊँगा। मैं तुम्हें कोई डांट डपट करना नहीं चाहता, न तुम पर कोई इल्ज़ाम रखता हूँ न तुमसे नाराज़ हूँ बल्कि मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला भी तुम्हें माफ़ कर दे और वह अरहमुर् -राहिमीन है। भाईयों ने उज़्र पेश किया। आपने क़बूल कर लिया। अल्लाह तआला तुम्हारी पर्दापोशी करे और तुमने जो किया है उसे बख़्श दे।

***

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾
وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا
تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

तर्जुमा : "मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ और उसे मेरे वालिद के चेहरे पर डाल दो कि वह देखने लगें और आ जाएँ। और अपने तमाम ख़ानदान को मेरे पास ले आओ। (93) जब यह क़ाफ़िला जुदा हुआ तो उनके वालिद ने कहा कि मुझे तो यूसुफ़ (عليه السلام) की ख़ुश्बू आ रही है अगर तुम मुझे कमअक़्ल न बनाओ। (94) वह कहने लगे कि बख़ुदा आप तो अपनी उसी पुरानी ग़लती पर क़ायम हैं।" (95)

हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की क़मीस और मोजिज़ा (आयत 93-95) : चूँकि अल्लाह तआला के रसूल हज़रत याकूब (عليه السلام) अपने रंजो ग़म में रोते रोते नाबीना हो गए थे इसलिए हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) अपने भाईयों से कहते हैं कि मेरा यह कुर्ता लेकर तुम अब्बाजान के पास जाओ। इसे उनके चेहरे पर डालते ही इंशाअल्लाह! उनकी नज़रें रोशन हो जाएगी फिर उन्हें और अपने घराने के तमाम और लोगों को यहीं मेरे पास ले आओ। इधर यह क़ाफ़िला मिस्र से निकला, उधर अल्लाह तआला ने हज़रत याकूब (عليه السلام) को हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की ख़ुश्बू पहुँचा दी तो आपने अपने उन बच्चों से जो आपके पास थे फ़र्माया कि मुझे तो मेरे प्यारे फ़रज़न्द यूसुफ़ (عليه السلام) की ख़ुश्बू आ रही है लेकिन तुम तो मुझे कम अक़्ल बूढ़ा कहकर मेरी इस बात पर भरोसा नहीं करने के। अभी क़ाफ़िला किन्आन से आठ दिन की दूरी पर था जो बहुक्मे इलाही हवा ने हज़रत याकूब (عليه السلام) को हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के कुर्ते की ख़ुश्बू पहुँचा दी। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की गुमशुगदी की मुद्दत अस्सी (80) साल की गुज़र चुकी थी और क़ाफ़िला अस्सी फ़र्सख़ आपसे दूर था। लेकिन भाईयों ने कहा, आप तो यूसुफ़ (عليه السلام) की मुहब्बत में ग़लती में पड़े हुए हैं, न वह आपके दिल से दूर हो न आपको तसल्ली हो। उनका यह कलिमा बड़ा सख़्त था। किसी लायक़ औलाद को लायक़ नहीं कि अपने बाप से यह कहे, न किसी उम्मती को लायक़ है कि अपने नबी से यह कहे।

***

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ
مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٩٦ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ۝٩٧ قَالَ
سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٩٨ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى
اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝٩٩ۭ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ
وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۡ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۭ
وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاۗءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ
الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝١٠٠

तर्जुमा : ''जब ख़ुशख़बरी देने वाले ने पहुँचकर उसके चेहरे पर वह कुर्ता डाला तो उसी वक़्त वह फिर से बीना (देखने वाला) हो गए। कहने लगे, क्या मैं तुमसे न कहा करता था कि मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96) वह कहने लगे, अब्बाजान! आप हमारे लिए गुनाहों की बख़्शिश तलब कीजिए बेशक हम क़ुसूरवार हैं। (97) कहा अच्छा! मैं तुम्हारे लिए अपने परवरदिगार से बख़्शिश माँगूँगा। वह बहुत बड़ा बख़्शने वाला और निहायत ही मेहरबानी करने वाला है। (98) जब यह सारा घराना यूसुफ़ (अलैहि.) के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ (अलैहि.) ने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और कहा कि अल्लाह को मंज़ूर है तो आप सब अम्नो अमान के साथ मिस्र में आओ। (99) अपने तख़्त पर अपने माँ बाप को ऊँचा बिठाया और सब उसके सामने सज्दे में गिर गए तब कहा कि अब्बाजान! यह है मेरे पहले के ख़्वाब की ताबीर मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिखाया। उसने मेरे साथ बड़ा एहसान किया जबकि मुझे जेलख़ाने से निकाला और तुम्हें रेगिस्तान से ले आया, उस इख़्तिलाफ़ के बाद जो शैतान ने मुझमें और मेरे भाईयों में डाल दिया था। मेरे रब जो चाहे उसके लिए बेहतरीन तदबीर करने वाला है और है भी वह बहुत इल्मो हिक्मत वाला।'' (100)

याक़ूब (अलैहि.) की बीनाई (नज़रें) लौट आयी (आयत 96-100) : कहते हैं कि यूसुफ़ (अलैहि.) के कुर्ते को हज़रत याक़ूब (अलैहि.) के बड़े साहबज़ादे यहूदा लाए थे, इसलिए कि उन्होंने ही पहले झूठ मूट वह कुर्ता पेश किया था जिसे ख़ून से भरकर लाए थे और बाप को यह समझाया था कि यह यूसुफ़ (अलैहि.) का ख़ून है। अब बदले के लिए यह कुर्ता भी यही लाए कि बुराई के बदले भलाई हो जाए बुरी ख़बर के बदले ख़ुशख़बरी हो जाए। आते ही बाप के चेहरे पर डाला। उसी वक़्त हज़रत याक़ूब (अलैहि.) की आँखें खुल गईं और बच्चों से कहने लगे, देखो! मैं तो हमेशा तुमसे कहा करता था कि अल्लाह तआला की कुछ वह बातें मैं जानता हूँ जिनसे तुम महज़ बेख़बर हो। मैं तुमसे कहा करता था कि अल्लाह तआला मेरे यूसुफ़ (अलैहि.) को ज़रूर मुझसे मिलाएगा। अभी थोड़े दिनों का ज़िक्र है कि मैंने तुमसे कहा था कि मुझे आज मेरे यूसुफ़ की ख़ुश्बू आ रही है। अब बेटे नादिम (शर्मिन्दा) होकर अपनी ख़ता का इक़रार करके वालिद से इस्तिग़फ़ार तलब करते हैं, वालिद जवाब में फ़र्माते हैं कि मुझे इससे इंकार नहीं और मुझे अपने रब से यह भी उम्मीद है कि वह तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देगा। इसलिए कि वह बख़्शिशों और मेहरबानियों वाला है, तौबा करने वालों की तौबा क़बूल कर लिया करता है। मैं सुबह सेहरी के वक़्त तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा। इब्ने जरीर में है कि हज़रत उमर (रज़ि.) मस्जिद में आते तो सुनते कि कोई कह रहा है कि ऐ अल्लाह! तूने पुकारा, मैंने मान लिया, तूने हुक्म दिया, मैं बजा लाया, यह सेहरी का वक़्त है पस तू मुझे बख़्श दे। आपने कान लगाकर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि) के घर से यह आवाज़ आ रही है। आपने उनसे पूछा, उन्होंने कहा यही वह वक़्त है जिसके लिए हज़रत याक़ूब (अलैहि.) ने अपने बेटों से कहा था कि मैं तुम्हारे लिए थोड़ी देर बाद इस्तिग़फ़ार करूँगा। हदीस में है कि ''यह रात जुम्अे की रात थी।'' इब्ने जरीर में है कि हुज़ूरे अकरम (सल्ल.) फ़र्माते हैं कि ''मुराद इससे यह है कि जब जुम्आ की रात आ जाए'' लेकिन यह हदीस ग़रीब है बल्कि इसके मरफ़ूअ होने में भी कलाम है, वल्लाहु आलम!

क़ाफ़िल-ए-याक़ूब मिस्र में : भाईयों पर हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने अपने आपको ज़ाहिर करके फ़र्माया था कि अब्बाजान को और घर के सब लोगों को यहीं ले आओ, भाईयों ने यही किया। उन बुज़ुर्ग क़ाफ़िले ने किन्आन से कूच किया। जब मिस्र के क़रीब पहुँचे तो अल्लाह के नबी (ﷺ) हज़रत यूसुफ़ अपने वालिद अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब (ﷺ) के इस्तिक़्बाल के लिए चले और हुक्मे शाही से शहर के तमाम अमीर उमरा और अरकाने हुकूमत भी आपके साथ थे, यह भी मरवी है कि ख़ुद शाहे मिस्र भी इस्तिक़्बाल के लिए शहर से बाहर आये थे, उसके जो जगह देने वग़ैरह का ज़िक्र है उसकी बाबत कुछ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस इबारत में तक़्दीम व ताख़ीर है। यानी आपने उनसे फ़र्माया तुम मिस्र में चलो इंशाअल्लाह! पुरअम्न और बेख़तर रहोगे। अब शहर में दाख़िले के बाद आपने अपने वालदेन को अपने पास जगह दी और उन्हें ऊँचे तख़्त पर बिठाया। लेकिन इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसकी तर्दीद की है और फ़र्माया है कि इसमें सुद्दी (रह.) का क़ौल बिलकुल ठीक है कि जब पहले ही मुलाक़ात हुई तो आपने उन्हें अपने पास कर लिया। और जब शहर का दरवाज़ा आया तो फ़र्माया अब इत्मिनान के साथ चलिए लेकिन उसमें भी एक बात रह गई है (ईवा) असल में मंज़िल में जगह देने को कहते हैं जैसे (آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ) (12/यूसुफ़ : 69) में है और हदीस में भी है (मन आवा मुहदिसन) (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल मदीना, बाब हरमल मदीनति, रक़म : 1870; सहीह मुस्लिम : 1370; तिर्मिज़ी : 2127; अबूदाऊद : 2034) नसाई : 4422; इब्ने हिब्बान : 9/32; मुस्नद अबी अवाना : 5/76; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/307; बैहक़ी : 6/99; सुननुल कुब्रा : 4/217; मुस्नद अहमद : 1/152; मुस्नद अबी यअला : 1/450; शुअबुल ईमान : 1/189; मुअजमुल कबीर : 1/273) पस कोई वजह नहीं कि हम इसका मतलब यह बयान न करें कि उनके आ जाने के बाद उन्हें जगह देने के बाद उनसे फ़र्माया कि तुम अम्न के साथ मिस्र में दाख़िल हो यानी यहाँ क़हत वग़ैरह की मुसीबतों से महफ़ूज़ होकर बाआराम रहो सहो। मशहूर है कि और जो क़हतसाली के साल बाक़ी थे वह हज़रत याक़ूब (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी की वजह से अल्लाह तआला ने दूर कर दिए जैसे कि अहले मक्का की क़हतसाली के बाक़ी साल हुज़ूर (ﷺ) की दुआ की वजह से हट गए, जब आप (ﷺ) ने अहले मक्का पर बद् दुआ की (اللهم أعني عليهم بسبع كسبع يوسف) (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिस्क़ाअ, बाब दुआउन्नबी (ﷺ) (इज्अल सिनीना कसिनी यूसुफ़) रक़म : 1007; सहीह मुस्लिम : 2798; तिर्मिज़ी : 3254; मुस्नद अहमद : 1/431; बैहक़ी : 3/352; इब्ने हिब्बान : 11/80; मुस्नद हुमैदी : 1/63; मुस्नद अबी यअला : 9/63; मुअजमुल कबीर : 9/214) जबकि क़हतसाली से तंग आकर अबू सुफ़ियान ने आपसे शिकायत की और बहुत रोए पीटे और सिफ़ारिश चाही। अब्दुर्रहमान कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की वालिदा का तो पहले ही इंतिक़ाल हो चुका था उस वक़्त आपके वालिद साहब के साथ आपकी ख़ाला साहिबा आई थीं। लेकिन इमाम इब्ने जरीर और इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) का क़ौल है कि आपकी वालिदा ख़ुद ही ज़िन्दा मौजूद थीं उनकी मौत पर कोई सही दलील नहीं और क़ुरआन करीम के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ इस बात को चाहते हैं कि आपकी वालिदा माजिदा ज़िन्दा मौजूद थीं। यही बात ठीक भी है।

आपने अपने वालिदेन को अपने साथ तख़्त शाही पर बिठा लिया, उस वक़्त माँ बाप भी और ग्यारह

भाई कुल के कुल आपके सामने सज्दे में गिर पड़े। आपने फ़र्माया, अब्बाजान! लीजिए मेरे ख़्वाब की ताबीर ज़ाहिर हो गई। यह हैं ग्यारह सितारे और यह हैं सूरज चाँद जो मेरे सामने सज्दे में हैं। उनकी शरअ में यह चीज़ जाइज़ थी कि बड़ों को सलाम के साथ सज्दा करते थे बल्कि हज़रत आदम (عليه السلام) से हज़रत ईसा (عليه السلام) तक यह बात जाइज़ रही लेकिन इस मिल्लते मुहम्मदिया में अल्लाह तबारक व तआला ने किसी और के लिए सिवाए अपनी ज़ात पाक के सज्दे को मुत्लक़न हराम कर दिया और अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने उसे अपने लिए ही ख़ास कर लिया। हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह के क़ौल का माहसल यही मज़्मून है। हदीस में है कि हज़रत मुआज़ (रज़ि.) मुल्के शाम गए वहाँ उन्होंने देखा कि शामा लोग अपने बड़ों को सज्दा करते हैं। यह जब लौटे तो उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) को सज्दा किया। आपने पूछा, मुआज़, यह क्या बात है।'' आपने जवाब दिया कि मैंने अहले शाम को देखा कि वह अपने बड़ों और बुज़ुर्गों को सज्दा करते हैं तो आप तो उसके सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। आपने फ़र्माया, ''अगर मैं किसी को किसी के लिए सज्दे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे यह सबब उसके बहुत बड़े हक़ के जो उस पर है।'' (सुनन इब्ने माजा, किताबुन्निकाह, बाब हक़्क़ुज़्ज़वाज अलल मरअति (हदीस : 1853) व सनदुहू हसन) और हदीस में है कि हज़रत सलमान (रज़ि.) ने अपने इस्लाम के शुरु ज़माने में रास्ते में हुज़ूर (ﷺ) को देखकर आपके सामने सज्दा किया तो आपने फ़र्माया, ''सलमान! मुझे सज्दा न कर। सज्दा उस रब को करो जो हमेशा की ज़िन्दगी वाला है जो कभी न मरेगा। (हमें यह रिवायत नहीं मिली) अल्ग़र्ज़ चूँकि उस शरीअत में जाइज़ था इसलिए उन्होंने सज्दा किया। तो आपने फ़र्माया, लीजिए अब्बाजान! मेरे ख़्वाब का ज़हूर हो गया। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिखाया, उसका अंजाम ज़ाहिर हो गया। चुनाँचे और आयत में क़यामत के दिन के लिए भी यही लफ़्ज़ बोला गया है। (يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ) (7/अ'राफ़ : 53) पस यह भी अल्लाह तआला का मुझ पर एक एहसाने अज़ीम है। कि यह उसने मेरे ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया और जो मैंने सोते सोते देखा था, अल्हम्दु लिल्लाह! मुझे जागते में भी उसने दिखा दिया और एहसान उसका यह भी है कि उसने मुझे क़ैदख़ाने से नजात दी और तुम सबको सहरा से यहाँ लाकर मुझसे मिला दिया। आप चूँकि जानवरों के पालने वाले थे इसलिए उमूमन बादिया में ही क़याम रहता था। फ़िलिस्तीन भी सीरीया के जंगलों में है अक्सर औक़ात पड़ाव रहा करता था। कहते हैं कि यह औलाज में हस्मी के नीचे रहा करते थे और मवेशी पालते थे ऊँट बकरियाँ वग़ैरह साथ रहती थीं।

फिर फ़र्माते हैं उसके बाद कि शैतान ने हममें फूट डलवा दी थी अल्लाह तआला जिस काम का इरादा करता है उसके वैसे ही सामान मुहय्या कर देता है और उसे आसान कर देता है। वह अपने बन्दों की मस्लिहतों को ख़ूब जानता है। अपने अफ़आल और अक़्वाल और क़ज़ा व क़द्र मुख़्तार व मुराद में वह बाहिक्मत है। सुलेमान (रह.) का क़ौल है कि ख़्वाब के देखने और उसकी तावील के ज़ाहिर होने में चालीस साल का वक़्फ़ा था। अब्दुल्लाह बिन शद्दाद (रह.) फ़र्माते हैं ख़्वाब की ताबीर के वाक़ेअ होने में इससे ज़्यादा ज़माना लगता भी नहीं, यह आख़िरी मुद्दत है। हज़रत हसन (रह.) से रिवायत है कि बाप बेटे अस्सी (80) बरस के बाद मिले। तुम ख़्याल तो करो कि ज़मीन पर हज़रत याक़ूब (عليه السلام) से ज़्यादा रब का कोई महबूब बन्दा न था। फिर

भी इतनी मुद्दत उन्हें यूसुफ़ (ﷺ) की जुदाई में गुज़री। हर वक़्त आँखों से आँसू जारी रहते और दिल में ग़म की मौजें उठतीं। और रिवायत में है कि यह मुद्दत तेरासी (83) साल की थी। फ़रमाते हैं जब हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) कूएँ में डाले गए उस वक़्त आपकी उम्र सतरह (17) साल की थी। अस्सी (80) बरस तक आप बाप की नज़रों से ओझल रहे। फिर मुलाक़ात के बाद तेईस बरस ज़िन्दा रहे और एक सौ बीस बरस की उम्र में इंतिक़ाल कर गए। बक़ौले क़तादा (रह.) तरेपन (53) बरस के बाद बाप बेटे मिले। एक क़ौल है कि अठारह (18) साल एक दूसरे से दूर रहे और एक क़ौल है कि चालीस (40) साल की जुदाई रही और फिर मिस्र में बाप से मिलने के बाद सतरह (17) साल ज़िन्दा रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल जब मिस्र पहुँचे हैं उनकी तादाद सिर्फ़ तिरेसठ (63) की थी और जब यहाँ से निकले हैं उस वक़्त उनकी तादाद एक लाख सत्तर हज़ार (170000) की थी। मसरूक़ कहते हैं आने के वक़्त यह मर्द औरत के साथ तीन सौ नव्वे (390) थे। अब्दुल्लाह बिन शद्दाद (रह.) का क़ौल है कि जब यह लोग आए कुल छियासी (86) थे यानी मर्द औरत बूढ़े बच्चे सब मिलाकर और जब निकले हैं उस वक़्त इनकी गिनती छः लाख (600000) से ऊपर ऊपर थी।

***

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰۱﴾

तर्जुमा : "ऐ मेरे परवरदिगार! तूने मुझे मुल्क अता फ़रमाया और तूने मुझे ख़्वाब की ताबीर सिखाई। ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा वाली और कारसाज़ है, तू मुझे मुसलमान की मौत दे और नेकों में मिला दे।" (101)

दुआए यूसुफ़ (ﷺ) और मौत की दुआ करने की हक़ीक़त (आयत 101) : नबुव्वत मिल चुकी बादशाहत अता हो गयी, दुख दूर हो गये, माँ बाप और भाई सबसे मुलाक़ात हो गई तो अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि जैसे दुनियावी नेअमतें तूने मुझ पर पूरी की हैं, उन नेअमतों को आख़िरत में पूरी फ़रमा। जब भी मौत आए तो इस्लाम पर और तेरी फ़रमाँबरदारी पर आए और मैं नेक लोगों में मिला दिया जाऊँ और नबियों और रसूलों में (सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम अज्मईन)। बहुत मुम्किन है कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की यह दुआ बवक़्ते वफ़ात हो। जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से साबित है कि इंतिक़ाल के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी उँगली उठाई और यह दुआ की कि "ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आला में मिला दे" तीन मर्तबा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी (ﷺ) व वफ़ातिही, सहीह मुस्लिम : 2444, 7116; हाकिम : 4/8; मौता : 1/239; अल्मुअजमुल औसत : 4/71; अहमद

: 6/89; मुस्नद अबी यअ़ला : 7/436; अल्मुअ़जमुल कबीर : 23/33) आपने यही दुआ की हाँ! यह भी हो सकता है कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की इस दुआ का मक़्सूद यह हो कि जब भी वफ़ात आए, इस्लाम पर आए और नेकों में मिल जाऊँ यह नहीं कि उसी वक़्त आपने यह दुआ अपनी मौत के लिए की हो। इसकी बिलकुल वही मिसाल है जो कोई किसी को दुआ देते हुए कहता है कि अल्लाह तुझे इस्लाम पर मौत दे। इससे यह मुराद नहीं होती कि अभी ही तुझे मौत आ जाए या जैसे हम माँगते हैं कि ऐ अल्लाह! हमें तेरे दीन पर ही मौत आए। या हमारी यही दुआ कि अल्लाह मुझे इस्लाम पर मार और नेक लोगों में मिला और अगर यही मुराद हो कि वाक़ेई आपने उसी वक़्त मौत मांगी तो मुम्किन है कि यह बात उस शरीअ़त में जाइज़ हो, चुनाँचे क़तादा (रह.) का क़ौल है कि जब आपके तमाम काम बन गए आँखें ठण्डी हो गईं मुल्क माल इज़्ज़त आबरू, ख़ानदान बिरादरी की बादशाहत सब मिल गए तो आपको सालेहीन की जमाअ़त में पहुँचने का इश्तियाक़ पैदा हुआ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं किसी नबी ने सिवाए हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के आपसे पहले मौत तलब नहीं की। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यही सबसे पहले इस दुआ के मांगने वाले हैं मुम्किन है कि इससे मुराद इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की यह हो कि इस दुआ को सबसे पहले करने वाले यानी इस्लाम पर ख़ात्मा होने की दुआ के सबसे पहले माँगने वाले आप ही थे। जैसे कि यह दुआ (رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ) (71/नूह़ : 28) सबसे पहले हज़रत नूह़ (ﷺ) ने माँगी थी। बावजूद इसके भी अगर यही कहा जाए कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने मौत की ही दुआ की थी तो हम कहते हैं हो सकता है कि उनके दीन में जाइज़ हो, हमारे यहाँ तो सख़्त मम्नूअ़ है। मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''तुममें कोई सख़्ती और ज़रर से घबराकर मौत की आरज़ू न करे और अगर उसे ऐसी ही तमन्ना करनी ज़रूरी है तो यूँ कहे कि ऐ अल्लाह! जब तक मेरी ज़िन्दगी तेरे इल्म में मेरे लिए बेहतर है मुझे ज़िन्दा रख और जब तेरे इल्म में मेरी मौत मेरे लिए बेहतर हो मुझे मौत दे दे।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुद् दुआइ बिल मौति वल ह़याति : 6351; सह़ीह़ मुस्लिम : 268; अह़मद : 3/101; अबूदाऊद : 3109; इब्ने माजा : 4265; तिर्मिज़ी : 971; नसाई : 1820) (सह़ीह़ बुख़ारी किताबुल मर्ज़ा, बाब तमन्नल मरीज़ु अल मौत रक़म : 5671; सह़ीह़ मुस्लिम : 2682; मअ़नन; और इसके अ़लावा ला यतमन्नीना अह़दकुमुल मौत लि ज़ुर्रिन नज़ल बिही फ़इन काना ला बुद्दा मुतमन्निल मौत के अल्फ़ाज़ के साथ मुंदर्जा ज़ेल कुतुब में रिवायात मौजूद हैं। नसाई : 1818; इब्ने ह़िब्बान : 7/267; दारमी : 2758; सुननुल कुब्रा : 1/599; अह़मद : 2/263) इसी ह़दीस में है कि ''तुममें से कोई किसी सख़्ती के नाज़िल होने की वजह से मौत की तमन्ना हर्गिज़ न करे। अगर वह नेक है तो बहुत मुम्किन है कि उसकी ज़िन्दगी उसकी नेकियाँ बढ़ाए और अगर वह बुरा है तो बहुत मुम्किन है कि ज़िन्दगी में किसी वक़्त तौबा की तौफ़ीक़ हो जाए बल्कि यूँ कहे, ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिए ज़िन्दगी बेहतर है तो मुझे ज़िन्दा रख।'' मुस्नद अह़मद में है कि हम एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) की मज्लिस में बैठे हुए थे। आपने हमें वअ़ज़ व नसीह़त की औ हमारे दिल गर्मा गए। उस वक़्त हममें सबसे ज़्यादा रोने वाले (हज़रत) सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) थे। रोते-रोते उनकी ज़ुबान से निकल गया कि काश! मैं मर जाता। आपने फ़र्माया, ''सअ़द! मेरे सामने मौत की तमन्ना करते हो?'' (अह़मद : 5/267; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा अ़ली बिन यज़ीद ज़ईफ़ुन जिद्दन व मुआज़

बिन रफ़ाआ ज़ईफ़; वल मुअजमुल कबीर : 8/217; ह : 7870; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/203) तीन मर्तबा यही अल्फ़ाज़ दोहराए, फिर फ़र्माया, "ऐ सअद! अगर तू जन्नत के लिए पैदा किया गया है तो जिस क़द्र उम्र बढ़ेगी और नेकियाँ ज़्यादा होंगी तेरे हक़ में बेहतर है।" मुस्नद में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "तुममें से कोई हर्गिज़ हर्गिज़ मौत की तमन्ना न करे, न उसकी दुआ करे इससे पहले कि वह आए हाँ! अगर कोई ऐसा हो कि उसे अपने आमाल का वसूक़ और उन पर यक़ीन हो। सुनो! तुममें से जो मरता है उसके आमाल मुंक़तअ हो जाते हैं। मोमिन के आमाल उसकी नेकियाँ ही बढ़ाते हैं।" (मुस्नद अहमद : 2/350; व सनदुहू ज़ईफ़; इसमें इब्ने लहीआ मुख़्तलत रावी है। (अत्तक़रीब : 1/44; रक़म : 754) जबकि कुछ मफ़्हूम की रिवायत दूसरी सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से सही मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद् दुआ, बाब अल्अज़्मु बिदुआइ वला यकुल इन शिअत : 2682 में मौजूद है। मज़ीद देखिए इब्ने हिब्बान : 7/285; बैहक़ी : 3/377) यह याद रहे कि यह हुक्म उस मुसीबत में है जो दुनियावी हो और उसी की ज़ात के बारे में हो। लेकिन अगर फ़ित्ना मज़हबी हो मुसीबत दीनी हो तो मौत का सवाल जाइज़ है। जैसे कि फ़िरऔन के जादूगरों ने उस वक़्त दुआ की थी जबकि फ़िरऔन उन्हें क़त्ल करने की धमकियाँ दे रहा था, कहा ऐ अल्लाह! हम पर सब्र बहा दे और हमें इस्लाम की हालत में मौत दे। इसी तरह हज़रत मरियम (عليها السلام) जब दर्दज़ा (प्रेगनेंट) से घबराकर खजूरों के तने तले गईं तो बेसाख़्ता मुँह से निकल गया कि काश! मैं इससे पहले ही मर गई होती और आज तो लोगों की ज़ुबान व दिल से भुला दी गई होती। यह आपने उस वक़्त फ़र्माया जब मालूम हुआ कि लोग उन्हें ज़िना की तोहमत लगा रहे हैं। इसलिए कि आप शौहर वाली न थीं और हमल ठहर गया था। फिर बच्चा हुआ था और दुनिया ने शोर मचाया था कि मरियम बड़ी बुरी औरत है, न माँ बुरी न बाप बदकार। पस अल्लाह तआला ने आपकी ख़ुलासी (पाकदामनी का सर्टिफ़िकेट) कर दी और अपने बन्दे हज़रत ईसा (عليه السلام) को गहवारे में ज़ुबान दी और मख़्लूक़ को ज़बरदस्त मोजिज़ा और ज़ाहिर निशानी दिखा दी।

एक हदीस में एक लम्बी दुआ का ज़िक्र है जिसमें यह जुम्ला भी है कि "ऐ अल्लाह! जब तू किसी क़ौम के साथ फ़ित्ने का इरादा करे तो मुझे उस फ़ित्ने में मुब्तला करने से पहले ही दुनिया से उठा ले।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति साद : 3233; वहुव हसन; अहमद : 4/66; हाकिम : 1/702; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/177; मुअजमुल कबीर : 8/290) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "दो चीज़ों को इंसान अपने हक़ में बुरी जानता है। मौत को बुरी जानता है और मौत मोमिन के लिए फ़ित्ने से बेहतर है। माल की कमी को इंसान अपने लिए बुराई ख़्याल करता है हालाँकि माल की कमी हिसाब की कमी है।" (अहमद : 5/427; व सनदुहू सहीहुन;मज्मउज़्ज़वाइद : 10/257) अल्ग़र्ज़ दीनी फ़ित्नों के वक़्त तलबे मौत जाइज़ है। चुनाँचे हज़रत अली (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी ज़माने में जब देखा कि लोगों की शरारतें किसी तरह ख़त्म नहीं होतीं और किसी तरह इत्तिफ़ाक़ नसीब नहीं होता तो दुआ की कि इलाहल आलमीन! मुझे तू अपनी तरफ़ क़ब्ज़ कर ले, यह लोग मुझसे और मैं इनसे तंग आ चुका हूँ। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) पर भी जब फ़ित्नों की ज़्यादती हुई और दीन का संभालना मुश्किल हो गया और अमीरे ख़ुरासान के साथ बड़े बड़े मअरके पेश आए तो आपने जनाब बारी से दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब मुझे

अपने पास बुला ले। एक हदीस में है कि "फ़ित्नों के ज़मानों में इंसान क़ब्र को देखकर कहेगा, काश कि मैं इसकी जगह होता। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन, बाब ला तक़ूमुस्साअतु हत्ता यग्बिता अहलुल क़ुबूर, रक़म : 7115; सहीह मुस्लिम : 157) क्योंकि फ़ित्नों बलाओं ज़लज़लों और सख़्तियों ने हर एक मफ़्तून को फ़ित्नों में डाल रखा होगा।"

इब्ने जरीर में है कि जब हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने अपने बेटों के लिए जिनसे बहुत क़सूर सरज़द हो चुके थे, इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह ने उनका इस्तिग़फ़ार क़बूल किया और उन्हें बख़्श दिया। हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब सारा ख़ानदान मिस्र में जमा हो गया तो यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों ने एक दिन आपस में कहा कि हमने अब्बाजान को जितना सताया है ज़ाहिर है कि हमने भाई यूसुफ़ (عليه السلام) पर जो ज़ुल्म तोड़े हैं, ज़ाहिर हैं। अब भले यह दोनों बुज़ुर्ग हमें कुछ न कहें और हमारी ख़ता से दरगुज़र कर जाएँ लेकिन कुछ ख़्याल भी है कि अल्लाह तआला के यहाँ हमारी कैसी दुर्गत होगी? आख़िर यह ठहरी कि आओ! अब्बाजान के पास चलें और उनसे इल्तिजा करें। चुनाँचे सब मिलकर आपके पास आए। उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) भी बाप के पास बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने एक ज़ुबान होकर कहा कि हुज़ूर! हम आपके पास एक ऐसे अहम अम्र (मुआमाला) के लिए आज आए हैं कि इससे पहले कभी ऐसे अहम काम के लिए आपके पास नहीं आए थे। अब्बाजान और ऐ भाई साहब! हम इस वक़्त ऐसी मुसीबत में मुब्तला हैं और हमारे दिल इस क़द्र कपकपा रहे हैं कि आज से पहले हमारी ऐसी हालत कभी नहीं हुई। अलग़र्ज़ कुछ इस तरह नर्मी और लजाजत की कि दोनों बुज़ुर्गों का दिल भर आया। ज़ाहिर है कि अम्बिया के दिलों में तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा रहम और नर्मी होती है। पूछा कि आख़िर तुम क्या कहते हो और ऐसे डर क्यूँ रहे हो? सबने कहा, आपको ख़ूब मालूम है कि हमने आपको किस क़द्र सताया, हमने भाई पर कैसे ज़ुल्मो सितम ढाये? दोनों ने कहा, हाँ! मालूम है फिर कहा, क्या यह सही है कि आप दोनों ने हमारी तक़्सीर (ग़लती) माफ़ कर दी? कहा, हाँ! बिलकुल सही है, हम दिल से माफ़ कर चुके हैं, तब भाईयों ने कहा, आपका माफ़ कर देना भी बेकार है जब तक कि अल्लाह तआला हमें माफ़ न कर दे। पूछा, अच्छा! फिर मुझसे क्या चाहते हो। जवाब दिया यही कि आप हमारे लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश माँगें, यहाँ तक कि बज़रिये वह्नी आपको मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला ने हमें बख़्श दिया तो अल्बत्ता हमारी आँखों में नूर और दिल में सुरूर आ सकता है वरना हम तो दोनों जहान से गए गुज़रे हुए। उसी वक़्त आप खड़े हो गए, क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जा हुए। हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) आपके पीछे खड़े हुए, बड़े ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से जनाब बारी में गिड़गिड़ाकर दुआएँ शुरु कीं। हज़रत याक़ूब (عليه السلام) दुआ करते थे हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) आमीन कहते थे। कहते हैं कि बीस साल तक दुआ मक़्बूल न हुई। आख़िर बीस साल तक जबकि भाईयों का ख़ून ख़ौफ़े इलाही से सूखने लगा, जब वह्नी आई और क़बूलियते दुआ और बख़्शिशे फ़र्ज़न्दाँ की बशारत सुनायी गई। बल्कि यह भी फ़र्माया कि कि अल्लाह का वादा है कि तेरे बाद नबुव्वत भी इन्हें मिलेगी। यह क़ौल हज़रत अनस (रज़ि.) का है और इसमें दो रावी ज़ईफ़ हैं, यज़ीद रक़्क़ाशी, सालेह मुर्री। सुद्दी (रह.) कहते हैं, हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने अपनी मौत के वक़्त हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) को वसिय्यत की कि मुझे इब्राहीम, इस्हाक़ की जगह में दफ़न करना, चुनाँचे इंतिक़ाल के बाद आपने यह वसिय्यत पूरी की और मुल्के शाम (सीरीया) की ज़मीन में आपको आपके बाप दादा के पास दफ़न किया। (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम)

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

तर्जुमा : "यह ग़ैब की ख़बरों में से है जिसकी हम तेरी तरफ़ वही कर रहे हैं तू तो उनके पास न था, जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वह फ़रेब करने लगे थे। (102) भले तू लाख चाहे लेकिन अक्सर लोग ईमान न लाएँगे। (103) तू इनसे इस पर कोई उज्रत नहीं लेता। यह तो तमाम दुनिया के लिए निरी नसीहत ही नसीहत है।" (104)

अम्बिया (عليهم السلام) को वही के ज़रिये वाक़ियात की ख़बर दी जाती है (आयत 102-104) : हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) का तमाम व कमाल का क़िस्सा बयान करके कि किस तरह भाईयों ने उनके साथ बुराई की और किस तरह उनकी जान तल्फ़े (बर्बाद) करनी चाही, अल्लाह तआला ने उन्हें किस तरह बचाया और किस तरह उरूज व तरक़्क़ी पर पहुँचाया। अब अपने नबी से फ़र्माता है कि यह और इस जैसी और चीज़ें सब हमारी तरफ़ से तुम्हें दी जाती हैं ताकि लोग उनसे नसीहत हासिल करें। और आपके मुख़ालिफ़ीन की भी आँखें खुल जाएँ। और उन पर हमारी हुज्जत क़ायम हो जाए। तुम उस वक़्त कुछ उनके पास थोड़े ही थे, जब वह हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के साथ खुला दाव फ़रेब कर रहे थे। कूएँ में डालने के लिए सब तयार हो गए। सिर्फ़ हमारे बतलाने सिखाने से तुझे यह वाक़ियात मालूम हुए। जैसे हज़रत मरियम (عليها السلام) के क़िस्से को बयान करते हुए इर्शाद हुआ है कि जब वह क़लमें डाल रहे थे कि मरियम को कौन पाले, तू उस वक़्त उनके पास न था। (3/आले इमरान : 44) हज़रत मूसा (عليه السلام) के क़िस्से में भी इस क़िस्म का इर्शाद फ़र्माया कि बजानिब मग़रिबी जब हम हज़रत मूसा (عليه السلام) को अपनी बातें समझा रहे थे तो तू वहाँ न था। (28/क़सस : 44) इसी तरह अहले मदयन का मामला भी तुझसे पोशीदा ही था। मल-ए-आला की आपस की बातचीत में तू मौजूद न था। यह सब हमारी तरफ़ वही के ज़रिये तुझे बतलाया गया है। यह खुली दलील है तेरी रिसालत व नबुव्वत की कि गुज़िश्ता वाक़ियात तू इस तरह लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है कि गोया तूने ख़ुद अपनी आँखों से देखे हैं और तेरे ही सामने गुज़रे हैं। फिर यह वाक़ियात नसीहत व इब्रत हिक्मत व मोइज़त से पुर हैं जिनसे इंसानों की दीनो दुनिया सँवर सकती है। बावजूद इसके भी अक्सर लोग ईमान से कोरे रह जाते हैं भले तू लाख चाहे कि यह मोमिन बन जाएँ। और आयत में है (وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ) (6/अन्आम : 116) अगर तू इंसानों की अक्सरियत की इताअत करेगा तो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देंगे। बहुत से वाक़ियात के बयान के बाद हर एक वाक़िया के साथ क़ुरआन ने फ़र्माया है कि भले इसमें बड़ा ज़बरदस्त निशान है लेकिन फिर भी अक्सर लोग मानने वाले नहीं। आप जो कुछ भी जफ़ाकशी (तकलीफ़ें) कर रहे हैं और मख़्लूक़े इलाही को अल्लाह तआला की राह दिखा रहे हैं उसमें आपका अपना

दुनियावी नफ़ा हर्गिज़ मक़्सूद नहीं आप इनसे कोई उज्रत और कोई बदला नहीं चाहते बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ाजूई के लिए मख़्लूक़ के नफ़ा के लिए है। यह तो तमाम जहाँ के लिए सरासर ज़िक्र है कि वह राहे रास्त पर आ जाए। नसीहत हासिल करें , इब्रत पकड़ें, हिदायत व नजात पा जाएँ।

***

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝١٠٥ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝١٠٦ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٠٧

तर्जुमा:''आसमानों और ज़मीन में बहुत सी निशानियाँ हैं जिनसे ये चेहरा मोड़े गुज़र जाते हैं। (105) उनमें अक्सर लोग बावजूद अल्लाह तआला पर ईमान रखने के भी मुश्रिक ही हैं। (106) क्या वह इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि उनके पास अल्लाह तआला के अज़ाबों में से कोई आम अज़ाब आ जाए या उन पर अचानक क़यामत टूट पड़े और वह महज़ बेख़बर ही हों।'' (107)

शिर्के ख़फ़ी की हक़ीक़त (आयत 105-107) : बयान हो रहा है कि कुदरत की बहुत सी निशानियाँ वहदानियत की बहुत सी गवाहियाँ दिन रात उनके सामने हैं। फिर भी अक्सर लोग निहायत बेपरवाही और सुबुकसिरी से उनमें कभी ग़ोरोफ़िक्र नहीं करते। क्या यह इतना वसीअ आसमान क्या यह इस क़द्र फैली हुई ज़मीन क्या यह रोशन सितारे यह गर्दिश वाला सूरज चाँद यह दरख़्त और यह पहाड़ यह खेतियाँ और सब्ज़ियाँ यह तलातुम बरपा करने वाले समुन्द्र और यह ज़ोर से चलने वाली हवाएँ यह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंगारंग मेवे यह अलग अलग ग़ल्ले और कुदरत की बेशुमार निशानियाँ एक अक़्लमंद को इस क़द्र भी काम नहीं आ सकतीं कि वह उनसे अपने रब की जो अहद है जो समद है जो फ़र्द है जो वाहिद है जो ला शरीक है जो क़ादिर व क़य्यूम है जो बाक़ी और काफ़ी है, ज़ात को पहचान लें और उसके नामों और सिफ़तों के क़ाइल हो जाएँ? बल्कि उनमें अक्सरियत की ज़हनियत तो यहाँ तक बिगड़ चुकी है कि अल्लाह तआला पर ईमान है फिर शिर्क से दस्तबरदारी नहीं , आसमान व ज़मीन पहाड़ और दरख़्त का इंसान और जिन्न का ख़ालिक़ अल्लाह को मानते हैं लेकिन फिर भी उसके सिवा दूसरों को उसके साथ उसका शरीक ठहराते हैं। यह मुश्रिकीन हज्ज को आते हैं, एहराम बाँधकर लब्बैक पुकारते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरा कोई शरीक नहीं जो भी शरीक हैं उनका ख़ुद मालिक भी तू है और उनकी मिल्कियत का मालिक भी तू ही है। सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब वह इतना कहते कि हम हाज़िर हैं ऐ अल्लाह! तेरा कोई शरीक नहीं। तो हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बस! बस! यानी अब आगे कुछ न कहो।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब तल्बिया व सिफ़तुहा व

वक़्तुहा रक़म : 1185; बैहक़ी : 5/45; मुअजमुल कबीर : 12/198) फ़िल वाक़ेअ शिर्क ज़ुल्मे अज़ीम है कि अल्लाह तआला के साथ दूसरों की भी इबादत की जाए। बुख़ारी व मुस्लिम में है इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आपने जवाब दिया कि "तेरा रब के साथ शिर्क करना हालाँकि उसी अकेले ने तुझे पैदा किया है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (वल्लज़ीना ला यदऊना मअल्लाहि इलाहन आख़र...) : 7461; सहीह मुस्लिम : 86; अबूदाऊद : 2310; तिर्मिज़ी : 3182; इब्ने हिब्बान : 10/261; मुस्नद अबी अवाना : 1/59; बैहक़ी : 8/15; सुननुल कुब्रा : 2/290) इसी तरह इस आयत के तहत में मुनाफ़िक़ीन भी दाख़िल हैं। उनके अमल भी इख़्लास वाले नहीं होते बल्कि वह रियाकार होते हैं और रियाकारी भी शिर्क है। क़ुरआन का फ़र्मान है (إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ) (4/निसाअ : 142) मुनाफ़िक़ अल्लाह तआला को धोखा देना चाहता है हालाँकि अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुद धोखे में हैं। यह नमाज़ को बड़े ही सुस्त होकर खड़े होते हैं। सिर्फ़ लोगों को दिखाना मक़्सूद होता है। ज़िक्रुल्लाह तो बराए नाम होता है।

यह भी याद रहे कि कुछ शिर्क बहुत हल्का और पोशीदा होता है। ख़ुद करने वाले को भी पता नहीं चलता चुनाँचे हज़रत हुज़ेफ़ा (रज़ि.) एक बीमार के पास गए, उसके बाज़ू पर एक धागा बँधा हुआ देखकर आपने उसे तोड़ दिया और यही आय ढ़ी कि ईमान वाले होते हुए भी मुश्रिक हुए जाते हो? हदीस शरीफ़ में है "अल्लाह तआला के सिवा दूसरे नाम की जिसने क़सम खाई वह मुश्रिक हो गया।" (तिर्मिज़ी, किताबुन्नुज़ूर वल ऐमान, बाब मा जाअ फ़ी अन्ना मन हलफ़ बिग़ैरिल्लाहि फ़क़द अश्रक रक़म : 1535; वहुव सहीहुन मज़ीद देखिए अबूदाऊद : 3251; इब्ने हिब्बान : 10/200; हाकिम : 1/65; मुस्नद अबी अवाना : 4/44; मुस्नद तयालिसी : 1896; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 15926; अहमद : 2/34) हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "झाड़ फूँक डोरे धागे और झूठे तावीज़ शिर्क हैं। (अबूदाऊद, किताबुत्तिब्ब बाब फ़ी तअलीक़ुत्तमाइम : 3883; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुलेमान अअमश रावी मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं; इब्ने माजा : 3530; अहमद : 1/381; इब्ने हिब्बान : 6090; बैहक़ी : 9/350) अल्लाह तआला अपने बन्दों को भरोसा करने की वजह से सब सख़्तियों से दूर कर देता है।" (तिर्मिज़ी, किताबुस्सियर बाब मा जाअ फ़ित्तैरति : 1614; व सनदुहू सहीहुन; अबूदाऊद : 3910; इब्ने माजा : 3538) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की बीवी साहिबा फ़र्माती हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की आदत थी जब कभी बाहर से आते ज़ोर से खंखारते, थूकते कि घर वाले समझ जाएँ और आप उन्हें किसी ऐसी हालत में न देख पाएँ कि बुरा लगे। एक दिन इसी तरह आप आए उस वक़्त मेरे पास एक बुढ़िया थी जो बवजह बीमारी के मुझ पर दम करने को आयी थीं। मैंने आपकी खंखार की आवाज़ सुनते ही उसे चारपायी के नीचे छुपा दिया। आप आए मेरे पास मेरी चारपायी पर बैठ गए और मेरे गले में धागा देखकर पूछा कि यह क्या है? मैंने कहा, इसमें दम कराकर मैंने बाँध लिया है। आपने उसे पकड़कर तोड़ दिया और फ़र्माया, अब्दुल्लाह का घर शिर्क से बेनियाज़ है ख़ुद मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि "झाड़ फूँक तावीज़ात और डोरे धागे शिर्क हैं।" मैंने कहा, यह आप कैसे कह सकते हैं मेरी आँख दुख रही थी मैं फ़लाँ यहूदी के पास जाया करती थी वह दम झाड़ करा देता

था तो सुकून हो जाता था। आपने फ़र्माया तेरी आँख में शैतान चूका मारा करता था और उसकी फूँक से वह रुक जाता था तुझे यह काफ़ी था कि वह कहती जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिखाया है (अज़्हिबिल बअस रब्बन्नासि इश्फ़ि व अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउका शिफ़ाअल् ला युग़ादिरु सक़मा) (मुस्नद अहमद : 1/381; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबूदाऊद, किताबुत्तिब्ब, बाब फ़ी तअलीकुत्तमाइम : 3883; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अअ़मश मुदल्लस के सिमाअ की सराहत नहीं है। मुस्नद अबी यअ़ला : 5208; अल्बग़वी : 3240; इब्ने माजा : 3530) मुस्नद अहमद की और हदीस में ईसा बिन अब्दुर्रहमान (रह) से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन हकीम बीमार पड़े। हम उनकी एयादत के लिए गए। उनसे कहा गया कि आप कोई डोरा धागा लटकाली लें तो अच्छा हो। आपने फ़र्माया मैं डोरा धागा लटकाऊँ? हालाँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है "जो शख़्स जो चीज़ लटकाए वह उसी के हवाले कर दिया जाता है।" (अहमद : 4/310; व सनदुहू ज़ईफ़; तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब, बाब मा जाअ फ़ी कराहियतित्तअ़लीक़ : 2072; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रावी ज़ईफ़ है। हाकिम : 4/216; इब्ने हिब्बान : 7503; मुअजमुल कबीर : 9603) आप (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने तमीमा लटकाया उसने शिर्क किया। (अहमद : 4/156; व सनदुहू सहीहुन) मुस्नद में है "जो शख़्स ऐसी कोई चीज़ लटकाए अल्लाह उसका काम पूरा न करे और जो शख़्स उसे लटकाये अल्लाह उसे लटकाया हुआ ही रखे।" (अहमद : 4/154; व सनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 6086; हाकिम : 4/417; मुस्नद अबी यअ़ला : 1759; तहावी : 4/325; मज्मउ ज़वाइद : 5/103; बैहक़ी : 9/350; मुस्नद शामिय्यीन : 1/146) एक हदीसे क़ुदसी में है "अल्लाह तआला फ़र्माता है, मैं तमाम शरीकों से बेनियाज़ व बेपरवाह हूँ जो शख़्स अपने किसी काम में मेरा कोई शरीक ठहराए मैं उसे और उसके शिर्क को छोड़ देता हूँ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब तहरीमुर्रिबा : 2985; इब्ने माजा : 4202) मुस्नद में है "क़यामत के दिन जबकि पहले आख़िर सब जमा होंगे अल्लाह तआला की तरफ़ से मुनादी निदा (आवाज़)करेगा कि जिसने अपने अमल में शिर्क किया है वह उसका सवाब अपने शरीक से मांग ले अल्लाह तआला तमाम शरीकों से बढ़कर शिर्क से बेनियाज़ है।" (अहमद : 3/466; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब तफ़्सीर सूरतुल कहफ़ : 3154; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 4203; इब्ने हिब्बान : 2/131; मुअजमुल कबीर : 778) मुस्नद में है आप फ़र्माते हैं "मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा डर छोटे शिर्क का है।" लोगों ने पूछा, वह क्या है? फ़र्माया, "रियाकारी क़यामत के दिन लोगों को जज़ा-ए-आमाल दी जाएगी उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माएगा कि ऐ रियाकारो! तुम जाओ और जिनके दिखाने सुनाने के लिए तुमने अमल किए थे उन ही से अपना अज्र मांग लो और देखो कि वह देते हैं या नहीं?" (अहमद : 5/428; व शरहुस्सुन्ना लिल बग़वी : 4135; व सनदुहू हसन) मुस्नद में है आप फ़र्माते हैं "जो शख़्स कोई बदशगूनी लेकर अपने काम से लौट जाए वह मुश्रिक हो गया।" सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! फिर उसका कफ़्फ़ारा क्या है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह कहना (अल्लाहुम्मा ला ख़ैर इल्ला ख़ैरका वला तैरा इल्ला तैरका वला इलाहा ग़ैरुका) (अहमद : 2/220; वहुव हदीसुन हसन; अब्दुल्लाह बिन वहब फ़िल जामेअ : 1/110) यानी ऐ अल्लाह! सब भलाईयाँ सब नेक शगून तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवा कोई भलाईयों और नेक शगूनियों वाला नहीं! मुस्नद अहमद में है कि अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने अपने एक

ख़ुत्बे में फ़र्माया कि लोगों! शिर्क से बचो वह तो चींटी की चाल से पोशीदा चीज़ है। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हर्ब और हज़रत क़ैस बिन मुज़ारिब (रज़ि.) खड़े हो गए और कहा, या तो आप इसकी दलील पेश कीजिए या हम जाएँ और हज़रत उमर (रज़ि.) से आपकी शिकायत करें। आपने फ़र्माया, लो! दलील लो हमें हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने एक दिन ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया, "लोगों! शिर्क से बचो वह चींटी की चाल से भी ज़्यादा पोशीदा है।" पस किसी ने आपसे पूछा कि फिर उससे बचाव कैसे हो सकता है। फ़र्माया "यह दुआ पढ़ा करो (अल्लाहुम्मा इन्ना नऊज़ुबिका अन् नुश्रिका बिका शैअन नअलमुहू व नस्तग़्फ़िरुका मिम्मा ला नअलमु) (अहमद : 4/403; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू अली रजुलुन मिन बनी काहिल मज्हूलुल हाल रावी है। मज्मउज़्ज़वाइद : 10/223) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया (अश्शिर्कु अख़्फ़ा फ़ीकुम मिन दैबि...) (अबू यअला : 58, 61; व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

एक रिवायत में है कि यह सवाल करने वाले हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रजि.) थे। आपने पूछा था कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! शिर्क तो यही है कि अल्लाह तआला के साथ दूसरे को पुकारा जाए। इस हदीस में दुआ के अल्फ़ाज़ यह हैं। (अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका अन उश्रिका बिका व अना अअलमु व अस्तग़्फ़िरुका मिम्मा ला अअलमु) (इस रिवायत में यह्या बिन कसीर मतरूकुल हदीस है। (अल्जरहु वत्तअदील : 9/759) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) (मुस्नद अबी यअला) अबूदाऊद वग़ैरह में है कि हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी दुआ सिखाइए जिसे मैं सुबह शाम और सोते वक़्त पढ़ा करूँ तो आपने फ़र्माया यह दुआ पढ़ लिया करो (अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आलिमल ग़ैबि वश्शहादति रब्बा कुल्लि शैइंव्वमलीकहू अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता अऊज़ुबिका मिन शर्रि नफ़्सी वमिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किही) (अहमद : 1/9; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूल इज़ा अस्बह : 5067; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3392; हाकिम : 1/513; मुस्नद तयालिसी : 2581) और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे यह दुआ पढ़नी सिखाई। इसके आख़िर में यह अल्फ़ाज़ (व अन अक़्तरिफ़ अला नफ़्सी सूअन औ अजुर्रहू इला मुस्लिम) (अहमद : 1/14; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) फ़र्मान है कि क्या इन मुश्रिकों को इस बात का डर नहीं रहा कि अगर मंज़ूरे इलाही हो तो चारों तरफ़ से अज़ाबे इलाही इन्हें इस तरह घेर ले कि इन्हें पता भी न चले। जैसे इर्शाद है कि (اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ) (16/नहल : 45) यानी मक्कारियाँ और बुराइयाँ करने वाले क्या इस बात से निडर हो गए हैं कि अल्लाह तआला उन्हें ज़मीन में धंसा दे या ऐसी जगह से अज़ाब लाए कि उन्हें शऊर भी न हो या उन्हें लेटते बैठते ही पकड़ ले, या होशियार करके थाम ले। अल्लाह तआला किसी बात में आजिज़ नहीं यह तो सिर्फ़ उसकी रहमत व राफ़्त है कि गुनाह करें और पनपें। और फ़र्माने इलाही है कि बस्तियों के गुनहगार इस बात से बेखटके हो गए हैं कि उनके पास रातों को उनके सोते हुए ही अज़ाब आ जाएँ या दिन दहाड़े बल्कि हँसते खेलते हुए अज़ाब आ धमके। अल्लाह के मकर से बेख़ौफ़ न होना चाहिए। ऐसे लोग सख़्त नुक़्सान उठाते हैं। (7/आराफ़ : 97-99)

***

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣعَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٠٨

तर्जुमा : ''तू कह दे! मेरी राह यही है अल्लाह की तरफ़ मैं और मेरे फ़र्मांबरदार बुला रहे हैं पूरे यक़ीन और एतिमाद के बाद। अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।'' (108)

अल्लाह तआला की वहदानियत (एक होने की) की दावत (आयत 108) : अल्लाह तआला अपने रसूल को जिन्हें तमाम जिन्न व इंसानों की तरफ़ भेजा है, हुक्म देता है कि लोगों को ख़बर कर दो कि मेरा मस्लक, मेरा तरीक़, मेरी सुन्नत यह है कि अल्लाह तआला की वहदानियत की दावत आम कर दूँ, पूरे यक़ीन दलील और बसीरत के साथ मैं इस तरफ़ सबको बुला रहा हूँ। मेरे जितने पैरूकार हैं वो भी इसी तरफ़ सबको बुला रहे हैं। शरई नक़्ली और अक़्ली दलीलों के साथ इस तरफ़ सबको दावत देते हैं। हम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करते हैं। उसकी ताज़ीम, तक़्दीस, तस्बीह , तहलील बयान करते हैं। उसे शरीक से, नज़ीर से, अदील से, वज़ीर से, मुशीर से और हर तरह की कमज़ोरी और कमी से पाक मानते हैं, न उसकी औलाद मानें। न बीवी न साथी, न हमजिंस, वह इन तमाम बुरी बातों से पाक व बुलंद व बाला है। आसमान और ज़मीन और इनकी सारी मख़्लूक़ उसकी हम्दो तस्बीह कर रही है। लेकिन लोग उनकी तस्बीह समझते नहीं, अल्लाह बड़ा ही हलीम और ग़फ़ूर है।

***

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠٩

तर्जुमा : ''तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे हैं सब शहरी मर्द थे। जिनकी तरफ़ हम वही नाज़िल करते गए क्या ज़मीन में चल-फिरकर उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले के लोगों का कैसा कुछ अंजाम हुआ? यक़ीनन आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बहुत ही बेहतर है। क्या फिर भी तुम नहीं समझते।''(109)

नबुव्वत व रिसालत मर्दों में ही रही (आयत 109) : बयान होता है कि रसूल और नबी मर्द ही बनते हैं न कि औरतें। जुम्हूर अहले इस्लाम का यह क़ौल है कि नबुव्वत औरतों को कभी नहीं हुई। इस आयते करीमा का स्याक़ भी इसी पर दलालत करता है लेकिन कुछ का क़ौल है कि ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) की बीवी हज़रत सारा,

मूसा (ﷺ) की वालिदा और ईसा (ﷺ) की वालिदा मरियम भी नबिय्या थीं। मलाइका (फ़रिश्तों) ने हज़रत सारा (ﷺ) को उनके लड़के इस्हाक़ और पोते याक़ूब (ﷺ) की बशारत दी। मूसा (ﷺ) की माँ की तरफ़ उन्हें दूध पिलाने की वही हुई। मरियम (ﷺ) को हज़रत ईसा (ﷺ) की बशारत फ़रिश्ते ने दी। फ़रिश्तों ने मरियम (ﷺ) से कहा कि अल्लाह ने तुझे पसंदीदा पाक और बरगुज़ीदा कर लिया है, तमाम जहान की औरतों पर, ऐ मरियम (ﷺ)! अपने रब की फ़र्माँबरदारी करती रह उसके लिए सज्दा कर और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ कर। (3/आले इमरान : 42, 43) इसका जवाब यह है कि इतना तो हम मानते हैं जितना कुरआन ने बयान किया। लेकिन इससे उनकी नबुव्वत साबित नहीं होती। सिर्फ़ इतना फ़र्मान या इतनी बशारत या इतना हुक्म किसी की नबुव्वत की दलील नहीं हो सकती। अहले सुन्नत वल जमाअत का सबका मज़हब यह है कि औरतों में से कोई नबुव्वत वाली नहीं। हाँ! उनमें सिद्दीक़ात हैं जैसे कि सबसे अशरफ़ व अफ़ज़ल औरत हज़रत मरियम (ﷺ) की निस्बत कुरआन में फ़र्माया है (وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ) (5/माइदा : 75) पस अगर वह नबिय्या होतीं तो इस जगह में वही मर्तबा बयान किया जाता। आयत का मतलब यह है ज़मीन के रहने वाले इंसान ही नबी होते रहे न कि आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरता हो, चुनाँचे और आयत में है (وَمَا اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ) (25/फ़ुरक़ान : 20) यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे वह सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में आना जाना भी करते थे वह ऐसे जुस्से (लोग) न थे कि खाना खाने से पाक हों, न ऐसे थे कि कभी मरने वाले ही न हों। हमने उनसे अपने वादे पूरे किए। उन्हें और उनके साथ जिन्हें हमने चाहा, नजात दी और मुस्रिफ़ लोगों को हलाक कर दिया। (21/अम्बिया : 8, 9) इसी तरह और आयत में है (قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ) (46/अहक़ाफ़ : 9) यानी मैं कोई पहला रसूल तो नहीं? याद रहे कि अहले कुरा से मुराद अहले शहर हैं न कि बादिया नशीन वह तो बड़े कज तबअ (सख़्त तबीअत के) और बदअख़्लाक़ होते हैं। मशहूर व मारूफ़ है कि शहरी नर्म तबीअत और ख़ुशख़ल्क़ होते हैं। इसी तरह बस्तियों के दूर वाले परे किनारे के रहने वाले भी उमूमन ऐसे ही टेढ़े तिरछे होते हैं। कुरआन फ़र्माता है (اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا) (9/तौबा : 97) जंगलों में रहने वाले बद व कुफ़्र व निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं। क़तादा (रह.) भी यही मतलब बयान करते हैं क्योंकि शहरियों में इल्म व हिल्म ज़्यादा होता है।

एक हदीस में है कि बादिया नशीन आराब में से किसी ने हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हदिया पेश किया। आपने उसे बदला दिया लेकिन उसने उसे बहुत कम समझा। आपने और दिया और दिया यहाँ तक कि उसे ख़ुश कर दिया फिर फ़र्माया, "मेरा तो जी चाहता है कि सिवाए कुरैश और अंसार और सक़फ़ी और दौसी लोगों के औरों के तोहफ़े क़बूल ही न करूँ।" (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी सक़ीफ़ व बनी हनीफ़ा : 3945; व सनदुहू हसन; अबूदाऊद : 3537; नसाई : 2790; मुख़्तसरन) एक हदीस में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "वह मोमिन जो लोगों से मिले-जुले और उनकी ईज़ाओं (तक्लीफ़ों) पर सब्र करे वह उससे बेहतर है जो न उनसे मिले जुले, न उनकी ईज़ाओं पर सब्र करे।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़यामा, बाब फ़ी फ़ज़्लिल मुख़ालततति मअस्सब्रि अला अन्नास : 2507; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 4032; बैहक़ी : 10/89; इब्ने अबी शेबा : 5/293; अहमद : 2/43; शुअबुल ईमान : 7/127; अल्अदबुल मुफ़रद : 388) यह झुठलाने वाले क्या मुल्क में चलते फिरते नहीं कि अपने से पहले के झुठलाने वालों की हालतों को

देखें और उनके अंजाम पर ग़ोर करें जैसे फ़र्मान है (اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا) (22/हज्ज : 46) यानी क्या इन्होंने ज़मीन की सैर नहीं की कि इनके दिल समझदार होते। इनके कान सुन लेते , इनकी आँखें देख लेतीं कि इन जैसे गुनहगारों का क्या हश्र होता रहा है? वह नजात से महरूम रहते हैं। एताबे इलाही उन्हें ग़ारत कर देता है। आलमे आख़िरत उनके लिए बहुत ही बेहतर है जो एहतियात से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। यहाँ भी नजात पाते हैं और वहाँ भी। और वहाँ की नजात यहाँ की नजात से बहुत बेहतर है। अल्लाह का वादा है (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا) (40/ग़ाफ़िर : 51) हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की इस दुनिया में भी मदद करते हैं और क़यामत के दिन भी उनकी इम्दाद करेंगे। उस दिन गवाह खड़े होंगे। ज़ालिमों के उज़्र बेकार रहेंगे। उन पर लानत बरसेगी और उनके लिए बुरा घर होगा। घर की इज़ाफ़त आख़िरत की तरफ़ की जैसे सलाते ऊला और मस्जिदे जामेअ और आम अव्वल और बारिहतुल ऊला और यौमुल ख़मीस में ऐसी ही इज़ाफ़त है। अरबी शेअरों में भी यह इज़ाफ़त बकसरत आई है।

***

حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۱۱۰

तर्जुमा : "यहाँ तक कि जब रसूल नाउम्मीद होने लगे और यह ख़्याल करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया। फ़ौरन ही हमारी मदद उनके पास आ पहुँची जिसे हमने चाहा उसे नजात दी गई। बात यह है कि हमारा अज़ाब गुनहगारों से वापिस नहीं किया जाता।"(110)

अम्बिया (عليهم السلام) की मुख़ालिफ़त का अंजाम (आयत 110) : अल्लाह तआला का इर्शाद है कि उसकी मदद उसके रसूलों पर पूरे मौक़े पर उतरती है। दुनिया के झटके जब ज़ोरों पर होते हैं मुख़ालिफ़त जब तन जाती है इख़्तिलाफ़ जब बढ़ जाता है दुश्मनी जब पूरी हो जाती है, अल्लाह के नबियों को जब चारों तरफ़ से घेर लिया जाता है, फ़ौरन अल्लाह तआला की मदद आ पहुँचती है। (कुज़िबू) और कुज़िबू दोनों क़िराअतें हैं हज़रत आइशा (रज़ि.) की क़िराअत ज़ाल की तशदीद से है। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत उर्वा बिन जुबेर (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि यह लफ़्ज़ कुज़िबू है या (कुज़िबू) है? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कुज़िबू है। उन्होंने कहा, फिर तो यह मअनी हुए कि रसूलों ने गुमान किया कि वह झुठलाए गए तो यह गुमान की कौनसी बात थी। यह तो यक़ीनी बात थी कि वह झुठलाए जाते थे। आपने फ़र्माया, बेशक यह यक़ीनी बात थी कि वह कुफ़्फ़ार की तरफ़ से झुठलाए जाते थे लेकिन वह वक़्त भी आए कि ईमान वाले उम्मती भी ऐसे ज़लज़ले में डाले गए और इस तरह उनकी मदद में ताख़ीर हुई कि रसूलों के दिल में आई कि ग़ालिबन अब तो हमारी जमाअत भी हमें झुठलाने लगी होगी। अब मददे इलाही आई और उन्हें ग़ल्बा हुआ। तुम इतना तो ख़्याल करो कि (कुज़िबू) कैसे ठीक हो सकता है। मआज़ल्लाह! क्या अल्लाह के नबियों की निस्बत यह बदगुमानी कर सकते हैं कि उन्हें रब की तरफ़ से झूठ कहा गया? (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर,

बाब क़ौलुहू (हत्ता इज़स्तैअसर्रुसुल) : 4695, 4696) इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िराअत में (कुज़िबू) है। आप इसकी दलील में आयत (حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ) (2/बक़रह : 214) पढ़ देते थे। यहाँ तक कि अम्बिया और ईमान वाले कहने लगे कि अल्लाह तआला की मदद कहाँ है। याद रखो कि मददे इलाही बिलकुल क़रीब है। हज़रत आइशा (रज़ि.) इसका सख़्ती से इंकार करती थीं और फ़र्माया करती थीं कि जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) से अल्लह तआला ने जितने वादे किए आपको यक़ीने कामिल था कि वह सब यक़ीनी और हत्मी हैं और सब पूरे होकर ही रहेंगे। आख़िरी दम तक कभी अल्लाह न करे आपके दिल में यह वहम ही पैदा नहीं हुआ कि कोई वाद-ए-इलाही ग़लत साबित होगा या मुम्किन है कि ग़लत हो जाए या पूरा न हो। हाँ! अम्बिया (अ) पर बराबर बलाएँ और आज़माइशें आती रहीं यहाँ तक कि उनके दिल में यह ख़तरा पैदा होने लगा कि कहीं मेरे मानने वाले भी मुझसे बदगुमान होकर मुझे झुठला न रहे हों। एक शख़्स क़ासिम बिन मुहम्मद के पास आकर कहता है कि मुहम्मद बिन कअब कुर्ज़ी (कुज़्ज़िबू) पढ़ते हैं तो आपने फ़र्माया कि उनसे कह दो मैंने रसूलुल्लाह की ज़ोजा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से सुना है कि वह (कुज़्ज़िबू) पढ़ती थीं। यानी उनके मानने वालों ने उन्हें झुठलाया। पस एक क़िराअत तो तश्दीद के साथ है दूसरी तख़्फ़ीफ़ के साथ है। फिर इसकी तफ़्सीर में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से तो वह मरवी है जो ऊपर गुज़र चुका है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि आपने यह आयत इसी तरह पढ़कर फ़र्माया कि यही वह है जो तू बुरा जानता है, यह रिवायत इस रिवायत के ख़िलाफ़ है जिसे इन दोनों बुज़ुर्गों से औरों ने रिवायत की है। इसमें है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, जब रसूल नाउम्मीद हो गए कि उनकी क़ौम उनकी न मानेगी और क़ौम ने यह समझ लिया कि नबियों ने उनसे झूठ कहा, उसी वक़्त अल्लाह की मदद आ पहुँची और जिसे अल्लाह तआला ने चाहा नजात बख़्शी। इसी तरह की तफ़्सीर औरों से भी मरवी है। एक क़ुरैशी नौजवान ने हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) से कहा कि हज़रत हमें बतलाइए इस लफ़्ज़ को क्या पढ़ें। मुझसे तो इस लफ़्ज़ की वजह से मुम्किन है कि इस सूरत का पढ़ना ही छूट जाए। आपने फ़र्माया कि सुनो! इसका मतलब यह है कि अम्बिया (अ) उससे मायूस हो गए कि उनकी क़ौम उनकी बात न मानेगी और क़ौम वाले समझ बैठे कि नबियों ने ग़लत कहा है। यह सुनकर हज़रत ज़ह्हाक बिन मज़ाहिम बहुत ही ख़ुश हुए और फ़र्माया कि आज जैसा जवाब किसी ज़ी इल्म का मैंने नहीं सुना। अगर मैं यहाँ से यमन पहुँचकर भी ऐसे जवाब को सुनता तो मैं उसे भी बहुत आसान जानता। मुस्लिम बिन यसार (रह.) ने भी आपका यह जवाब सुनकर उठकर आपसे मुआनक़ा किया और कहा, अल्लाह तआला आपकी परेशानियों को भी उसी तरह दूर कर दे जिस तरह आपने हमारी परेशानी दूर की। बहुत से और मुफ़स्सिरीन ने भी यही मतलब बयान किया है। बल्कि मुजाहिद (रह.) की तो क़िराअत ज़ाल के ज़बर से है यानी कज़्ज़बू हाँ! कुछ मुफ़स्सिरीन फ़ाइल (वज़न्नू) का फ़ाइल मोमिनों को बतलाते हैं और कुछ काफ़िरों को यानी काफ़िरों ने या यह कि कुछ मोमिनों ने यह गुमान किया कि रसूलों से जो वादा मदद का था उसमें वह झूठे साबित हुए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं, रसूल नाउम्मीद हो गए यानी अपनी क़ौम के ईमान से और अल्लाह की मदद में देरी देखकर उनकी क़ौम गुमान करने लगी कि उनको झूठे वादे दिए गए थे। पस यह दोनों रिवायतें तो उन दोनों बुज़ुर्ग सहाबियों से मरवी हैं और हज़रत आइशा (रज़ि.) इसका साफ़ इंकार करती हैं। इब्ने जरीर (रह.) भी क़ौले सिद्दीक़ा (रज़ि.) की तरफ़दारी करते हैं और दूसरे क़ौल की तर्दीद करते हैं और उसे नापसंद करके रद्द कर देते हैं, वल्लाहु आलम!

لَقَدۡ كَانَ فِيۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِي الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰكِنۡ
تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

तर्जुमा : ''इनके क़िस्सों में अक़्ल वालों के लिए यक़ीनन नसीहत और इब्रत है। यह क़ुरआन झूठ बनाई हुई बात नहीं बल्कि यह तस्दीक़ है उन किताबों की जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी है और खोल खोलकर बयान करने वाली है हर चीज़ की और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए'' (111)

माज़ी (भूतकाल) के वाक़ियात बाइसे इब्रत व नसीहत हैं (आयत 111) : नबियों के वाक़ियात मुसलमानों की नजात काफ़िरों की हलाकत के क़िस्से अक़्लमंदों के लिए बड़ी इब्रत व नसीहत वाले हैं। यह क़ुरआन बनावटी नहीं बल्कि अगली आसमानी किताबों की सच्चाई की दलील है। उनमें जो हक़ीक़ी बातें अल्लाह तआला की हैं उन्हें सच्चा बताता है और जो तहरीफ़ व तब्दीली हुई है उसे छांट देता है। जो बातें उनकी बाक़ी रखने की थीं उन्हें और जो अहकाम मंसूख़ हो गए उन्हें बयान करता है। हर एक हलाल व हराम महबूब व मकरूह को खोल-खोलकर बयान करता है। ताआत वाजिबात मुस्तहब्बात मुहर्रमात मकरूहात वग़ैरह को बयान करता है। इज्माली और तफ़्सीली ख़बरें देता है अल्लाह तआला जल्ल व अला के सिफ़ात बयान करता है और बन्दों ने जो ग़ल्तियाँ अपने ख़ालिक़ के बारे में की हैं उनकी इस्लाह करता है, मख़्लूक़ को उससे रोकता है कि वह अल्लाह तआला की कोई सिफ़त उसकी मख़्लूक़ में साबित करें। पस यह क़ुरआन मोमिनों के लिए हिदायत व रहमत है। उनके दिल ज़लालत (गुमराही) से हिदायत और झूठ से सच और बुराई से भलाई की राह पाते हैं। और रब्बुल इबाद से दुनिया और आख़िरत की भलाई हासिल कर लेते हैं। हमारी भी दुआ है कि अल्लाह तआला हमें भी दुनिया और आख़िरत में ऐसे ही मोमिनों का साथ दे और क़यामत के दिन जबकि बहुत से चेहरे सफ़ेद होंगे और बहुत से मुँह काले हो जाएँगे हमें मोमिनों के साथ नूरानी चेहरे वालों में शामिल रखे, आमीन तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह यूसुफ़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई। अल्लाह का शुक्र है वही तारीफ़ों के लायक़ है और बेशक हम उसी से मदद चाहते हैं।

✻✻✻

सूरह रअ़द

سوره الرعد

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह अर् रअ़्द - 13

आयात: 43, मक्की पैराग्राफ : 3

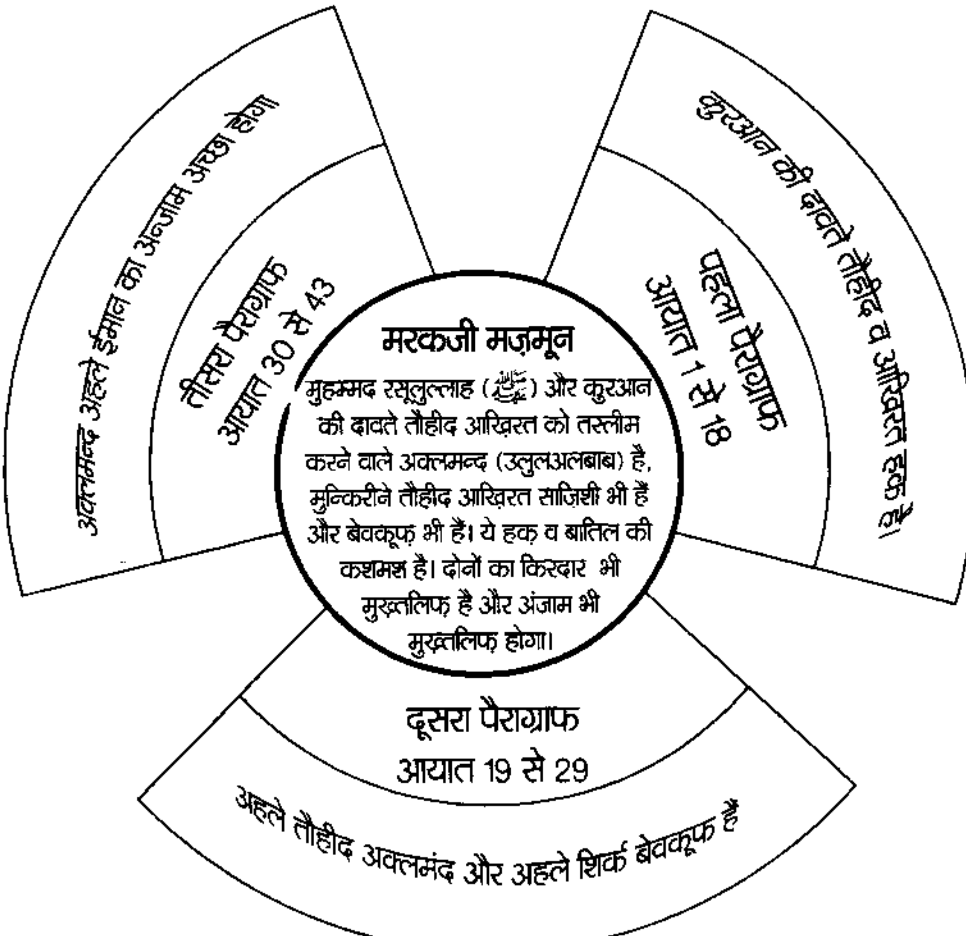

जमान-ए-नुज़ूल और पसे मन्ज़र

सूरह (अररअ़द) रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़यामे मक्का के आख़री दौर में, ग़ालिबन सूरह (यूसुफ) के बाद 12 नबवी में नाज़िल हुई, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ बड़ी सख़्त चालें चली जा रही थी। (मकर) से काम लिया जा रहा था (आयात 33,42) और मुश्रिकिने मक्का अपने शिर्क (आयात:33), इन्कारे रिसालत (आयात:43) और इन्कारे आख़िरत (आयात 2,5) के अक़ीदे पर सख़्ती से आमिल थे। हक़ व बातिल की कशमश उरूज पर थी। कुछ उलमा ने इसे मदनी सूरह क़रार दिया है, लेकिन ऐसा नही। है ये ख़ालिसन एक मक्की सूरह है।

सूरह रअद

ये सूरत मक्की सूरत है। इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ है। मक्की दौर की दूसरी सूरतों की तरह इस सूरत का मर्कज़ी मज़मून भी तौहीद, ज़िन्दगी के बाद मौत, रिसालत, क़यामत वग़ैरह है। इस सूरत की बुनियादी तालीमात को मुख़्तसर तौर पर यूँ बयान किया जा सकता है :

❊ कुरआन जो मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल किया गया है एक सच्ची किताब है। जो जमीन व आसमान और हर चीज़ के ख़ालिक व मालिक की तरफ़ से नाज़िल की गई है।

❊ मुश्रिकीने मक्का व कुफ़्फ़ारे कुरैश को इस बात पर बड़ा ताज्जुब था कि जब वो गल-सड़कर मिट्टी हो जायेंगे तो फिर किस तरह दोबारा पैदा कर दिये जायेंगे। उनको बताया गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और हर चीज़ का इल्म रखता है उसके लिये कोई मुश्किल नहीं कि उन्हें मौत के बाद ज़िन्दा खड़ा कर दे।

❊ अल्लाह तआला की तमाम मख़्लूक़ रअद और फ़रिश्ते भी अल्लाह तआला की हम्द व तस्बीह बयान करते हैं। ज़मीन व आसमान की हर चीज़ अल्लाह को सज्दा करती है।

❊ अल्लाह उन लोगों की हालत नहीं बदलता जो ख़ुद अपने आपको नहीं बदलते। जो लोग ईमान नहीं लायेंगे वो अपने किये की सज़ पायेंगे और जहन्नम की आग से बच न सकेंगे।

तफ़्सीर सूरह रअ़द

سورة الرعد

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

''शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

الٓـمّٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤۡمِنُوۡنَ ① اَللّٰهُ الَّذِىۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ
الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ
رَبِّكُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ②

तर्जुमा : ''अलिफ़ लाम मीम रा, यह हैं क़ुरआन की आयतें और जो कुछ तेरी त़रफ़ तेरे रब की जानिब से उतारा जाता है सब ह़क़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बग़ैर सतूनों (ख़म्बों) के बुलंद कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो फिर वह अ़र्श पर क़रार पकड़े हुए है, उसी ने सूरज चाँद को मातहती में लगा रखा है हर एक तयशुदा वक़्त पर गश्त कर रहा है। वही काम की तदबीर करता है वह अपने निशानात खोल खोलकर बयान कर रहा है। तुम अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन करो।'' (2)

अल्लाह तआ़ला की नाज़िलकर्दा तमाम बातें ह़क़ हैं (आयत 1, 2) : सूरतों के शुरू में जो हुरूफ़े मुक़त्तआ़त आते हैं उनकी पूरी तशरीह़ सूरह बक़रह के शुरू में लिखी जा चुकी है और यह भी हम कह आए हैं कि जिस सूरत के पहले में यह हुरूफ़ आएँ, वहाँ उ़मूमन यही बयान होता है कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं चुनाँचे यहाँ भी इन हुरूफ़ के बाद फ़र्माया, यह किताब की यानी क़ुरआन की आयतें हैं। कुछ ने कहा कि मुराद किताब से तौरात व इंजील है लेकिन यह ठीक नहीं। फिर उसी पर अ़त्फ़ डालकर और सिफ़तें इस पाक किताब की बयान कीं कि यह सरासर ह़क़ है और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से तुझ पर उतारा गया है। (अल्ह़क़्क़ु) ख़बर है इसका मुब्तदा पहले बयान हुआ है। यानी (अल्लज़ी उंज़िला

इलैका) लेकिन इब्ने जरीर का पसंदीदा क़ौल यह है कि वाव ज़ाइद है या आतिफ़ा है और सिफ़त का सिफ़त पर अत्फ़ है जैसे हमने पहले कहा है फिर इसकी शहादत में शायर का क़ौल लाए हैं। फिर फ़र्माया कि बावजूद हक़ होने के फिर भी अक्सर लोग ईमान क़बूल करने वाले नहीं। यानी उसकी हक़्क़ानियत वाज़ेह है लेकिन इनकी ज़िद हठधर्मी और सरकशी इन्हें ईमान की तरफ़ मुतवज्जा होने न देगी।

आसमान और अ़र्श की तख़्लीक़ : कमाले क़ुदरत और अज़्मत सल्तनते रब्बानी देखो कि बग़ैर सतूनों के आसमान को उसने बुलंद व बाला और क़ायम कर रखा है। ज़मीन से आसमान को अल्लाह तआला ने कैसा ऊँचा किया और सिर्फ़ अपने हुक्म से उसे ठहराया जिसकी इंतिहा कोई नहीं पाता। आसमाने दुनिया सारी ज़मीन को और जो उसके आसपास है पानी हवा वग़ैरह सबको एहाता किए हुए है और हर तरफ़ से बराबर ऊँचा है। ज़मीन से पाँच सौ (500) साल की राह पर है। हर जगह से इतना ही ऊँचा है। फिर इसकी अपनी मोटाई और दल भी पाँच सौ (500) साल के फ़ासले का है। फिर दूसरा आसमान उस आसमान को भी घेरे हुए है और पहले से दूसरे तक का फ़ासला वही पाँच सौल साल का है। इसी तरह तीसरा फिर चौथा फिर पाँचवाँ फिर छठा, फिर सातवाँ, जैसे फ़र्माने इलाही है (اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ) (65/तलाक़ : 12) यानी अल्लाह तआला ने सात आसमान पैदा किए हैं और उसी के मिस्ल ज़मीन। हदीस शरीफ़ में है ''सातों आसमान और उनमें और उनके दरम्यान में जो कुछ है वह कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे कि चटयल मैदान में कोई हल्क़ा हो। (तब्री : 5/399; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद अदवी रावी है उसको अली बिन मदीनी, अबूदाऊद, और नसाई ने ज़ईफ़ कहा है। (तहज़ीबुल कमाल : 4/404; रक़म : 3808) और कुर्सी अ़र्श के मुक़ाबले पर भी ऐसी ही है। अ़र्श की क़द्र अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के सिवा किसी को मालूम नहीं।'' (इब्ने जरीर व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा)

कुछ सलफ़ का बयान है कि अ़र्श से ज़मीन तक की दूरी 50 हजार साल की है। अ़र्श सुर्ख़ याक़ूत का है। कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं आसमान के सतून तो हैं लेकिन देखे नहीं जाते लेकिन अयास बिन मुआविया फ़र्माते हैं आसमान ज़मीन पर मिस्ल क़ुब्बे के है यानी बग़ैर सतून के है। क़ुरआन के तर्ज़े इबारत के लायक़ भी यही बात है और आयत (وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَن تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ) (22/हज्ज : 65) से भी यही ज़ाहिर है पस (तरौनहा) इस नफ़ी की ताकीद होगी। यानी आसमान बिला सतून इस क़द्र बुलंद है और तुम आप देख रहे हो यह है कमाले क़ुदरत उमय्या बिन अबू सुल्त के अश्आर में है जिसके अश्आर की बाबत हदीस में है कि इसके अश्आर ईमान लाए हैं और इसका दिल कुफ़्र करता है। (ज़ई...न जिद्दा देखिए (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ा : 1546) और यह भी रिवायत है कि यह अश्आर हज़रत ज़ेद बिन अम्र बिन नुफ़ेल (रज़ि.) के हैं जिनमें है,

व अन्तल्लज़ी मिन फ़ज़्लि मन्निंव् व रहमा बअस्ता इला मूसा रसूलम्मुनादिया
फ़क़ुल्ता लहू फ़ज़्हब व हारूना फ़दउवा इलल्लाहि फ़िरऔनल्लज़ी काना ताग़िया
व क़ूला लहू : हल अन्ता सव्वय्ता हाज़िही बिलावतदिन हत्तस्तक़ल्लत कमाहिया?
वक़ूला लहू : अ अन्ता रफ़अ़ता हाज़िहि बिला अमदिन अव फ़ौक़ा ज़ालिका बानिया?

वक़ूला लहू : हल अन्ता सव्वैता वस्तहा — मुनीरन इज़ा मा जन्नकल्लैलु हादिया?

वक़ूला लहू : मंय्युर्सिलुश्शम्स गु दवा — फ़यस्बहु मा मस्सत मिनल अर्ज़ि ज़ाहिया?

वक़ूला लहू : मन अम्बतल हब्ब फ़िस्सरा — फ़यस्बहु मिन्हुल अश्बु यहतज़्ज़ु राबिया

वयख़रुजु मिन्हू हब्बुहू फ़ी रौसिही — फ़फ़ी ज़ाका आयातुल् लिमन काना वाइया

यानी तू वो अल्लाह तआला है जिसने अपने फ़ज़्लो करम से अपने नबी मूसा (عليه السلام) को हारून (عليه السلام) के साथ फ़िरऔन की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा और उनसे फ़र्मा दिया कि उस सरकश को क़ाइल करने के लिए उससे कहें कि इस बुलंद व बाला बेसतून आसमान को क्या तूने बनाया है? और उसमें सूरज चाँद सितारे तूने पैदा किए हैं? और मिट्टी से दानों को उगाने वाला फिर इन दरख़्तों में बालियाँ पैदा करके उनमें दाने पकाने वाला क्या तू है? क्या क़ुदरत की यह ज़बरदस्त निशानियाँ एक गहरे इंसान के लिए अल्लाह तआला की हस्ती की दलील नहीं हैं।

फिर अल्लाह तआला अर्श पर मुस्तवी हुआ। इसकी तफ़सीर सूरह आराफ़ में गुज़र चुकी है और यह भी बयान कर दिया गया है कि जिस तरह है उसी तरह छोड़ दी जाए। केफ़ियत, तश्बीह, तातील, तम्सील से अल्लाह की ज़ात पाक है और बरतर और बुलंद व बाला है। सूरज चाँद उसके हुक्म के मुताबिक़ गर्दिश में हैं और वक़्ते मुक़र्ररा यानी क़यामत तक बराबर इसी तरह लगे रहेंगे। जैसे फ़र्मान है कि सूरज बराबर अपनी जगह चल रहा है। (36/यासीन : 38) इसकी वजह से मुराद अर्श के नीचे है जो ज़मीन के तले से दूसरी तरफ़ से मुल्हक़ (मिला हुआ) है। यह और तमाम सितारे यहाँ तक पहुँचकर अर्श से और दूर हो जाते हैं क्योंकि सही बात जिस पर बहुत सी दलीलें हैं यही है कि वह क़ुबा है मुत्तसिले आलम बाक़ी आसमानों की तरह वह मुहीत नहीं। इसलिए कि उसके पाये हैं और उसके उठाने वाले हैं और यह बात आसमान मुस्तदीर घूमे हुए आसमान में तसव्वुर में नहीं आ सकती। जो भी ग़ौर करेगा उसे सच मानेगा। आयात व अहादीस का जाँचने वाला उसी नतीजे पर पहुँचेगा। (वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नतु)। सिर्फ़ सूरज चाँद का ही ज़िक्र यहाँ इसलिए है कि सातों सितारों में बड़े और रोशन यही दो हैं। पस जबकि यह दोनों मुसख़्ख़र हैं तो और तो बतौर औला मुसख़्ख़र हुए जैसे कि सूरज चाँद को सज्दा न करो से मुराद और सितारों को भी सज्दा न करना है। फिर और आयत में तसरीह भी मौजूद है। फ़र्मान है (وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ) (7/आराफ़ : 54) यानी सूरज चाँद और सितारे उसके हुक्म से मुसख़्ख़र हैं वही ख़ल्क़ और अम्र वाला है, वही बरकतों वाला है। वही रब्बुल आलमीन है। वह आयतों को, अपनी वहदानियत की दलीलों को तफ़सील के साथ बयान कर रहा है कि तुम उसकी तौहीद के क़ाइल हो जाओ और उसे मान लो कि वह तुम्हें फ़ना करके फिर ज़िन्दा करेगा।

***

وَهُوَ الَّذِىْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِىَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ③ وَفِي
الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ
يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ④

तर्जुमा : ''उसी ने ज़मीन को फैलाकर बिछा दिया है और उसमें पहाड़ और नहरें पैदा कर दी हैं। और उसमें हर क़िस्म के फलों के जोड़े दोहरे दोहरे पैदा कर दिए हैं, रात को दिन से छुपा देता है। यक़ीनन ग़ौरो-फ़िक्र करने वालों के लिए इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं। (3) और ज़मीन में मुख़्तलिफ़ टुकड़े एक दूसरे से लगते लगाते हैं और बाग़ात हैं अंगूरों के और खेत हैं और खजूरों के दरख़्त हैं शाख़दार और कुछ ऐसे हैं जो दो शाख़ें नहीं। सब एक ही पानी पिलाए जाते हैं फिर भी हम एक को एक पर फलों में बरतरी देते हैं, इसमें अ़क़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।'' (4)

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला का बयान (आयत 3, 4) : ऊपर की आयत में आ़लमे अ़ल्वा का बयान था। यहाँ आ़लमे सुफ़्ला का ज़िक्र हो रहा है। ज़मीन को लम्बाई-चौड़ाई में फैला कर अल्लाह तआ़ला ही ने बिछाया है। इसमें मज़बूत पहाड़ भी उसी के गाड़े हुए हैं। इसमें दरियाओं और चश्मों को भी उसी ने जारी किया है ताकि मुख़्तलिफ़ शक्लो सूरत, मुख़्तलिफ़ रंग, मुख़्तलिफ़ ज़ायक़ों के फल फूल दरख़्त उससे सैराब हों। जोड़-जोड़ मेवे उसने पैदा किए, खट्टे मीठे वग़ैरह रात दिन बराबर एक दूसरे के पे दर पे बराबर आते जाते रहते हैं। एक का आना दूसरे का जाना है। पस मकान सकान और ज़मान सबमें तसर्रुफ़ उसी क़ादिरे मुत्लक़ का है। अल्लाह तआ़ला की इन निशानियों को इन हिक्मतों को और इन दलाइल को जो ग़ोर से देखे वह हिदायत पा सकता है। ज़मीन के टुकड़े मिले जुले हुए हैं फिर क़ुदरत को देखे कि एक टुकड़े से तो पैदावार हो और दूसरे से कुछ न हो। एक की मिट्टी लाल, दूसरे की सफ़ेद ये पीली ये काली ये पथरीली ये नर्म, ये मीठी ये शोर एक रेतीली, एक साफ़ ग़र्ज़ यह भी ख़ालिक़ की क़ुदरत की निशानी है और बतलाती है कि फ़ाइल ख़ुद मुख़्तार मालिकुल मुल्क ला शरीका लहू एक वही अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़े कुल है। न उसके सिवा कोई मअ़बूद है, न पालने वाला (ज़रउंव्वनख़ीलुन) को अगर (जन्नातुन) पर अ़त्फ़ डालें तो पेश से मरफ़ूअ़ पढ़ना चाहिए और (अअ़नाबिन) पर अ़त्फ़ डालें तो ज़ेर से मुज़ाफ़ इलैहि मानकर मजरूर पढ़ना चाहिए। अइम्मा की जमाअ़त की दोनों क़िराअतें हैं। (सिन्वानुन) कहते हैं एक दरख़्त जो कई तनों और शाख़ों वाला हो, जैसे अनार और अंजीर और कुछ खजूरें। (ग़ैरु सिन्वानिन) जो इस तरह न हो एक ही तना हो जैसे और दरख़्त होते हैं। इसी से इंसान के च चा को (सिन्वुल अब) कहते हैं। हदीस में भी यह आया है कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से फ़र्माया, ''क्या तुम्हें मालूम है कि इंसान का चचा मिस्ल बाप होता है।'' (सहीह मुस्लिम,

किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी तक़्दीमिज़्ज़काति व मन्इहा : 983; अबूदाऊद : 1663; बैहक़ी : 6/163; दारे कुत्नी : 2/123) बराअ (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि एक जड़ यानी एक तने में कई एक शाख़दार दरख़्त खजूर के होते हैं और एक तने पर एक ही होता है। यही (सिन्वानुन) और (ग़ैर सिन्वानिन) है। यही क़ौल और बुज़ुर्गों का भी है। सबके लिए पानी एक ही है यानी बारिश का लेकिन हर मज़े और फल में कमी बेशी में बेइंतिहा फ़र्क़ है कोई मीठा है कोई खट्टा है। हदीस में भी यह तफ़्सीर है मुलाहिज़ा हो। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति रअद : 3118; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; आमश मुदल्लस के सिमाअ की सराहत नहीं है।) अल्ग़र्ज़ क़िस्मों और जिंसों का इख़्तिलाफ़ रंग का इख़्तिलाफ़ बू का इख़्तिलाफ़, मज़े का इख़्तिलाफ़, पत्तों का, तरोताज़गी का, एक बहुत बड़ा मीठा एक सख़्त कड़वा एक निहायत ख़ुश्बू ज़ायक़ा एक बेहद बद मज़ा। रंग किसी का पीला, किसी का लाल, किसी का सफ़ेद, किसी का काला। इसी तरह ताज़गी और फल में भी इख़्तिलाफ़। हालाँकि ग़िज़ा के एतिबार से सब एक जैसे हैं। यह क़ुदरत की निरंगियाँ एक होशियार शख़्स के लिए इब्रतें हैं। और फ़ाइल मुख़्तार अल्लाह तआला की क़ुदरत का बड़ा ज़बरदस्त पता देती हैं कि वह जो चाहता है होता है, अक़्लमंदों के लिए यह आयतें और यह निशानियाँ काफ़ी हैं।

***

وَاِنۡ تَعۡجَبۡ فَعَجَبٌ قَوۡلُهُمۡ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىۡ خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ؕ اُولٰٓٮِٕكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ ۚ وَاُولٰٓٮِٕكَ الۡاَغۡلٰلُ فِىۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ ۚ وَاُولٰٓٮِٕكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝۵

तर्जुमा :"अगर तुझे ताज्जुब हो तो वाक़ेई इनका यह कहना भी अजीब है कि जब हम मिट्टी हो जाएँगे क्या हम नई पैदाइश में होंगे। यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया। यही हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे। और यही हैं जो जहन्नम के रहने वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे।" (5)

इंकारे क़यामत का बयान (आयत 5) : अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि आप इनके झुठलाने का कोई ताज्जुब न करें। यह हैं ही ऐसे इतनी इतनी निशानियाँ देखते हुए अल्लाह तआला की क़ुदरत का हमेशा मुतालआ करते हुए उसे मानते हुए कि सबका ख़ालिक़ अल्लाह ही है। फिर क़यामत के मुंकिर होते हैं। हालाँकि उससे बढ़कर रोज़मर्रा मुशाहिदा करते रहते हैं कि कुछ नहीं होता और अल्लाह तआला सबकुछ कर देता है। हर आक़िल जान सकता है कि ज़मीनो आसमान की पैदाइश इंसान की पैदाइश से बहुत बड़ी है और दोबारा पैदा करना बनिस्बत पहली बार के पैदा करने के बहुत आसान है। जैसे फ़र्माने इलाही है (أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ) (46/अहक़ाफ़ : 33) यानी जिसने आसमान और ज़मीन बग़ैर थके पैदा कर दिये क्या वह मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक है बल्कि हर चीज़ उसकी क़ुदरत में है। पस यहाँ

फ़र्माता है कि दरअसल यह कुफ़्फ़ार हैं। इनकी गर्दनों में क़यामत के दिन तौक़ होंगे और यह जहन्नमी हैं जो हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

***

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٦

तर्जुमा : ''जो तुझसे सज़ा की तलबी में जल्दी कर रहे हैं राहत से पहले ही यक़ीनन उनसे पहले सजाएँ बतौर मिसाल गुज़र चुकी हैं। बेशक तेरा रब बख़्शिश वाला है, लोगों की बेजा हरकतों पर भी। और यह भी यक़ीनी बात है कि तेरा रब बड़ी सख़्त सज़ा देने वाला भी है।'' (6)

अज़ाब का वक़्त मुक़र्रर है (आयत 6) : यह मुंकिरीने क़यामत कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो हम पर अज़ाबे इलाही जल्द ही क्यूँ नहीं लाते? कहते थे कि ऐ वह शख़्स जो दावा करता है तुझ पर ज़िक्रे इलाही उतरता है हमारे नज़दीक तो तू पागल है। अगर बिल फ़र्ज़ सच्चा है तो अज़ाब के फ़रिश्तों को क्यूँ नहीं लाता उसके जवाब में इनसे कहा गया कि फ़रिश्ते हक़ के और फ़ैसले के साथ ही आया करते हैं। जब वह वक़्त आएगा उस वक़्त ईमान लाने या तौबा करने या नेक अमल करने की फ़ुर्सत न मिलेगी। इसी तरह और आयत में है (وَيَسْتَعْجِلُونَكَ) (29/अन्कबूत : 53-55) दो आयतों तक और एक जगह है (سَأَلَ سَائِلٌ) (70/मआरिज : 1) और आयत में है कि बेईमान उसकी जल्दी मचा रहे हैं और ईमान वाले उससे ख़ौफ़ खा रहे हैं और उसे बरहक़ जान रहे हैं।'' (42/शूरा : 18) इसी तरह और आयत में फ़र्मान है कि वह कहते थे कि ऐ अल्लाह! क़यामत से पहले ही हमारा मामला निपटा दे। (38/साद : 16) और आयत में है कि कहते थे कि ऐ अल्लाह! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई अलमनाक अज़ाब नाज़िल फ़र्मा। (8/अन्फ़ाल : 32) मतलब यह है कि बवजह अपने कुफ़्र व इंकार के अज़ाबे इलाही का आना महाल समझकर इस क़द्र निडर और बेख़ौफ़ हो गए थे कि अज़ाबों के उतरने की आरज़ू और तलब किया करते थे। यहाँ फ़र्माया कि इनसे पहले के ऐसे लोगो की मिसालें उनके सामने हैं कि किस तरह वह अज़ाबे इलाही में पकड़ लिए गए। आप कह दें कि अल्लाह तआला का हुक्मो करम है कि गुनाह देखता है और फ़ौरन नहीं पकड़ता वरना रूए ज़मीन पर किसी को चलता फिरता न छोड़ता। दिन रात ख़ताएँ देखता है और दरगुज़र फ़र्माता है। लेकिन उसे यह न समझ लिया जाए कि वह अज़ाब पर क़ुदरत नहीं रखता। उसके अज़ाब भी बड़े ख़तरनाक निहायत सख़्त और बहुत दुख दर्द देने वाले हैं। चुनाँचे फ़र्मान है (كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ) (6/अन्आम : 147) अगर यह तुझे झुठलाएँ तो तू कह दे कि तुम्हारा रब वसीअ रहमतों वाला है लेकिन उसके आये हुए अज़ाब गुनहगारों पर से नहीं हटाए जा सकते। और फ़र्मान है कि तेरा परवरदिगार जल्द अज़ाब करने वाला और बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। (7/आराफ़ : 167) और आयत में है

(نَبِّئْ عِبَادِي) (16/हिज्र : 49) मेरे बन्दों को ख़बर दे कि मैं ग़फ़ूरुर्रहीम हूँ और मेरे अज़ाब भी बड़े सख़्त हैं। इस क़िस्म की और भी बहुत सी आयतें हैं जिनमें उम्मीद व डर ख़ौफ़ व लालच का एक साथ बयान हुआ है। इब्ने अबी ह़ातिम में है इस आयत के उतरने पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगर अल्लाह तआ़ला का माफ़ करना और दरगुज़र करना न होता तो किसी की ज़िन्दगी का लुत्फ़ बाक़ी न रहता और अगर उसका धमकाना डराना और सज़ा करना न होता तो हर शख़्स बेपरवाही से ज़ुल्मो ज़्यादती में मशग़ूल हो जाता।" (इब्ने अबी ह़ातिम, व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इब्ने अ़साकिर में है कि ह़सन बिन उ़स्मान अबू ह़स्सान रुमावी (रह़.) ने ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला का दीदार किया। देखा कि हुज़ूर (ﷺ) अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े अपने एक उम्मती की सिफ़ारिश कर रहे हैं जिस पर फ़र्माने बारी सरज़द हुआ कि क्या तुझे इतना काफ़ी नहीं था कि मैंने सूरह रअ़द में तुझ पर आयत (व इन्ना रब्बका लज़ू मग़्फ़िरतिल् लिन्नासि अ़ला ज़ुल्मिहिम) नाज़िल फ़र्माई है। अबू ह़स्सान फ़र्माते हैं कि उसके बाद मेरी आँखें खुल गई।

***

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩

तर्जुमा : "और काफ़िर कहते हैं कि इस पर इसके रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूँ नहीं उतारी गई। बात यह है कि तू तो सिर्फ़ आगाह करने वाला है। और हर क़ौम के लिए हादी है। (7) मादा अपने शिकम (पेट) में जो कुछ रखती है उसे अल्लाह तआ़ला बख़ूबी जानता है और पेट का घटना बढ़ना भी। हर चीज़ उसके पास अंदाज़ से है। छुपे खुले का वह आ़लिम है। (8) सबसे बड़ा और सबसे बुलंद व बाला।" (9)

हिदायत अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है (आयत 7-9) : काफ़िर लोग अज़रूए ऐतिराज़ के त़ौर पर कहा करते थे कि जिस त़रह़ अगले पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए यह पैग़म्बर क्यूँ नहीं लाए मस्लन स़फ़ा पहाड़ सोने का बना देते या मस्लन अ़रब के पहाड़ यहाँ से हट जाते और यहाँ सब्ज़ा और नहरें हो जातीं। पस इनके जवाब में और जगह है कि हम यह मोजिज़े भी दिखा देते मगर अगलों की त़रह़ इनके झुठलाने पर फिर अगलों की त़रह़ ही अ़ज़ाब इन पर आ जाते। तू इनकी बातों पर ग़म और फ़िकर मत कर, तेरे ज़िम्मे तो सिर्फ़ तब्लीग़ ही है तू हादी नहीं। इनके न मानने से तेरी पकड़ न होगी। हिदायत अल्लाह तआ़ला के हाथ है, यह तेरे बस की बात नहीं हर क़ौम के लिए रहबर और दाई है। या यह मत़लब कि हादी मैं हूँ तू डराने वाला है। और आयत में है (وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ) (35/फ़ातिर : 24) हर उम्मत में डराने वाला गुज़रा है और मुराद यहाँ हादी

से पैग़म्बर है। पस पेशवा रहबर हर गिरोह में होता है जिसके इल्मो अमल से दूसरे राह पा सकें। इस उम्मत के पेशवा हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। एक निहायत ही मुंकर वाही रिवायत में है कि इस आयत के उतरने के वक़्त आपने अपने सीने पर हाथ रखकर फ़र्माया, "मुंज़िर तो मैं हूँ।" और हज़रत अली (रज़ि.) के कँधे की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, "तू ऐ अली! हादी है मेरे बाद हिदायत पाने वाले तुझसे हिदायत पाएँगे।" (तब्री : 13/108; हाकिम : 3/130; ह : 4646; व सनदुहू मौज़ूअ; इमाम ज़हबी (रह.) ने इसे झूठ क़रार दिया है।) हज़रत अली (रज़ि.) से मंक़ूल है कि इस जगह हादी से मुराद क़ुरैश का एक शख़्स है। (अल्मुअजमुल औसत : 1383; अल्मुअजमुस्सग़ीर : 2/38; व अब्दुल्लाह बिन अहमद फ़ी ज़वाइदिल मुस्नद : 1/126; व सनदुहू हसनुन व रजुल मिन बनी हाशिम हुवर्रसूल (ﷺ)) जुनेद कहते हैं वह हज़रत अली (रज़ि.) ख़ुद हैं। इब्ने जरीर (रह.) ने हज़रत अली (रज़ि.) के हादी होने की रिवायत की है लेकिन इसमें सख़्त नकारत है।

माँ के पेट में परवरिश पाने वाले बच्चे की हक़ीक़त से सिर्फ़ अल्लाह आगाह है : अल्लाह के इल्म से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं। तमाम जानदार मादाएँ हैवान हों या इंसान, उनके पेट के बच्चों का उनके हमल का अल्लाह तआला को इल्म है। पेट में क्या है? उसे अल्लाह तआला बख़ूबी जानता है। यानी मर्द है या औरत? अच्छा है या बुरा? नेक है या बद? उम्र वाला है या बेउम्र का? चुनाँचे इर्शाद है (هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ) (53/नज्म : 32) वह बख़ूबी जानता है जबकि तुम्हें ज़मीन से पैदा करता है और जबकि तुम माँ के पेट में छुपे हुए होते हो, आख़िर तक और फ़र्मान है (يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ) (39/ज़ुमर : 6) वह तुम्हें तुम्हारी माँ के पेट में पैदा करता है एक के बाद दूसरी पैदाइश में तीन तीन अंधेरों में। इर्शाद है (وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ) (23/मूमिनून : 12) हमने इंसान को मिट्टी से पैदा किया। फिर नुत्फ़े से नुत्फ़े को ख़ून बस्ता किया। ख़ून बस्ता को लोथड़ा गोश्त का किया। लोथड़े को हड्डी की शक्ल में कर दिया। फिर हड्डी पर गोश्त चढ़ाया, फिर आख़िरी और पैदाइश मेंपैदा किया। पस बेहतरीन ख़ालिक़ बाबरकत है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है कि "तुममें से हर एक की पैदाइश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती रहती है। फिर इतने ही दिनों तक वह बसूरत ख़ून बस्ता रहता है। फिर इतने ही दिनों तक वह गोश्त का लोथड़ा रहता है। फिर अल्लाह तबारक व तआला ख़ालिक़े कुल एक फ़रिश्ते को भेजता है जिसे चार बातों के लिख लेने का हुक्म होता है। उसका रिज़्क़, उम्र, और नेक और बद होना लिख लेता है।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइका सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3208, 3332; सहीह मुस्लिम : 2643; अबूदाऊद : 4708; तिर्मिज़ी : 2137; इब्ने माजा : 76; अहमद : 1/382; मुस्नद हुमैदी : 126) और हदीस में है वह पूछता है कि "ऐ अल्लाह! मर्द होगा या औरत? बुरा होगा या नेक? रोज़ी क्या है? उम्र कितनी है? अल्लाह तआला बतलाता है और वह लिख देता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल हैज़, बाब मुख़ल्लक़तुन व ग़ैरि मुख़ल्लक़ा : 318; सहीह मुस्लिम : 2646) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं जिन्हें सिवाए अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर के सिवा और कोई नहीं जानता। कल की बात अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। पेट कितना बढ़ते हैं और कितना घटते हैं कोई नहीं जानता। बारिश कब बरसेगी उसका इल्म भी किसी को नहीं। कौन शख़्स कहाँ मरेगा उसे भी उसके सिवा कोई न हीं जानता, क़यामत कब क़ायम होगी, इसका इल्म भी अल्लाह ही को है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (अल्लाहु यअलमु मा

तह्मिल कुल्लु उन्सा वमा तग़ीज़ुल अरहाम) : 4697; इब्ने हिब्बान : 1/272; सुननुल कुब्रा : 6/370; मुअजमुल औसत : 2/258; अह्मद : 2/52; तब्री : 21/28)

पेट क्या घटाते हैं इससे मुराद ह्मल का गिर जाना है और रह्म में क्या बढ़ रहा है? कैसे पूरा हो रहा है? यह भी अल्लाह को बख़ूबी मालूम रहता है। देख लो कोई औरत दस महीना लेती है, कोई नौ किसी का ह्मल घटता है किसी का बढ़ता है। नो माह से घटना नो माह से बढ़ जाना अल्लाह के इल्म में है। ह्ज़रत ज़ह्हाक (रह.) का बयान है कि मैं दो साल माँ के पेट में रहा। जब पैदा हुआ तो मेरे अगले दो दाँत निकल आए थे। ह्ज़रत आइशा (रज़ि.) का फ़र्मान है कि ह्मल की इंतिहाई मुद्दत दो साल होती है। कमी से मुराद कुछ के नज़दीक अय्यामे ह्मल में ख़ून आना और ज़्यादती से मुराद नौ माह से ज़्यादा ह्मल का ठहरा रहना है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं नौ से पहले जब औरत ख़ून को देखे नौ से ज़्यादा हो जाते हैं मिस्ल अय्यामे हैज़ के। ख़ून के गिरने से बच्चा अच्छा हो जाता है और न गिरे तो बच्चा पूरा पाठा और बड़ा होता है। ह्ज़रत मक्हूल (रह.) फ़र्माते हैं बच्चा अपनी माँ के पेट में बिलकुल बेग़म बेख़टके और बाआराम होता है। उसकी माँ के हेज़ का ख़ून उसकी ग़िज़ा होती है जो बेतलब बाआराम पहुँचता रहता है। यही वजह है कि माँ को उन दिनों हेज़ नहीं आता। फिर जब बच्चा पैदा होता है तो ज़मीन पर टिकते ही चिल्लाता है। उस अंजान जगह से उसे वह्शत होती है जब उसकी नाल कट जाती है तो अल्लाह तआला उसकी रोज़ी माँ के सीने में पहुँचा देता है और अब भी बेतलब व बेजुस्तजू, बेरंजो ग़म, बेफ़िक्री के साथ उसे रोज़ी मिलती रहती है। फिर ज़रा बड़ा होता है। अपने हाथों खाने पीने लगता है लेकिन बालिग़ होते ही रोज़ी के लिए हाय हाय करने लगता है। मौत और क़त्ल तक से रोज़ी ह्रासिल होने का इम्कान हो तो पसापेश नहीं करता। अफ़सोस! ऐ इब्ने आदम! तुझ पर हैरत है जिसने तुझे तेरी माँ के पेट में रोज़ी दी जिसने तुझे तेरी माँ की गोद में रोज़ी दी जिसने तुझे बच्चे से बालिग़ बनाने तक रोज़ी दी। अब तू बालिग़ और अक़्लमंद होकर यह कहने लगा कि हाय! कहाँ से खाऊँगा? मौत हो या क़त्ल हो? फिर आपने यही आयत पढ़ी। हर चीज़ उसके पास बअंदाज़ा है रिज़्क़ अजल (मौत) सब मुक़र्ररशुदा है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की एक साह्बज़ादी साहिबा ने आपके पास आदमी भेजा कि मेरा बच्चा आख़िरी ह्रालत में है। आपका तशरीफ़ लाना मेरे लिए ख़ुशी की वजह होगी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "जाओ उनसे कह दो कि जो अल्लाह ले ले वह उसी का है जो दे रखे वह भी उसी का है हर चीज़ का सही अंदाज़ा उसके पास है उनसे कह दो कि सब्र करें। और अल्लाह तआला से सवाब की उम्मीद रखें....।" (सह्रीह्र बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब क़ौलिन्नबी (ﷺ) (युअज़्ज़बुल मय्यित बिबअज़ि बुकाइ अहलिही अलैहि इज़ा कानन्नौहु मिन सुन्नतिही) : 1284; सह्रीह्र मुस्लिम : 923; नसाई : 1868; बैहक़ी : 1/612; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 3/552; अह्मद : 5/204; इब्ने हिब्बान : 461; इब्ने अबी शैबा : 3/392; मुस्नद तयालिसी : 636) अल्लाह तआला हर उस चीज़ को भी जानता है जो बन्दों से छुपी है और उसे भी जो बन्दों पर ज़ाहिर है। उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं। वह सबसे बड़ा वह हर एक से बुलंद है। हर चीज़ उसके इल्म में है। सारी मख़्लूक़ उसके सामने आजिज़ लाचार है। तमाम सर उसके आगे झुके हुए हैं। तमाम बंदे उसके सामने आजिज़ लाचार और महज़ बेबस हैं।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ

بِالنَّهَارِ ⑩ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوۡمٍ سُوۡٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ
وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّالٍ ⑪

तर्जुमा : "तुममें से किसी का अपनी बात को छुपाकर कहना और बाआवाज़े बुलंद कहना और जो रात को छुपा हुआ हो और जो दिन में चल रहा हो सब अल्लाह पर बराबर व यक्साँ हैं। (10) उसके पहरेदार इंसान के आगे पीछे मुक़र्रर हैं जो बहुक्मे इलाही उसकी निगहबानी करते रहते हैं। किसी क़ौम की हालत अल्लाह तआ़ला नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद उसे न बदलें जो उनके दिलों में है। अल्लाह तआ़ला जब किसी क़ौम की सज़ा का इरादा कर लेता है तो वह बदला नहीं करता। और सिवाए उसके कोई भी उनका कारसाज़ नहीं होता।" (11)

अल्लाह का इल्म तमाम मख़्लूक़ को मुहीत (घेरे हुए) है (आयत 10, 11) : अल्लाह का इल्म तमाम मख़्लूक़ को घेरे हुए है। कोई चीज़ उसके इल्म से बाहर नहीं। पस्त और बुलंद हर आवाज़ वह सुनता है। छुपा खुला सब जानता है। तुम छुपाओ या खोलो उससे मख़्फ़ी नहीं। हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं वह अल्लाह पाक है जिसके सुनने ने तमाम आवाज़ों को घेरा हुआ है। क़सम अल्लाह तआ़ला की! अपने शौहर की शिकायत लेकर आने वाली औरत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस तरह कानाफूसी की कि मैं पास ही घर में बैठी हुई थी लेकिन मैं भी पूरी तरह न सुन सकी लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आयतें (قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ) (58/मुजादिला : 1) उतारीं। (नसाई, किताबुत्तलाक़, बाबुज़्ज़िहार : 349; इब्ने माजा : 2063; वहुव सहीहुन; सहीह बुख़ारी तअ़लीक़न व मुख़्तसरन क़ब्ल हदीस : 7386; हाकिम : 2/481) यानी उस औरत की यह तमाम सरगोशी अल्लाह तआ़ला सुन रहा था। वह समीअ़ और बसीर है जो अपने घर के तहख़ाने में रातों के अंधेरे में छुपा हुआ हो और जो दिन के वक़्त खुल्लम खुल्ला आबाद रास्तों में चला जा रहा हो वह इल्मे इलाही में बराबर हैं जैसे आयत (اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ) (11/हूद : 5) में फ़र्माया है और आयत (مَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ) (10/यूनुस : 61) में इर्शाद हुआ है कि तुम्हारे किसी काम के वक़्त हम इधर उधर नहीं होते। कोई ज़र्रा हमारी मालूमात से ख़ारिज नहीं। अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते बतौर निगहबान के बन्दों के आसपास मुक़र्रर हैं जो उन्हें आफ़तों से और तक्लीफ़ों से बचाते रहते हैं जैसे कि आमाल पर निगहबान फ़रिश्तों की और जमाअ़त है जो बारी बारी पे दर पे आते जाते रहते हैं। रात के अलग दिन के अलग और जैसे कि दो फ़रिश्ते इंसान के दाएँ बाएँ आमाल लिखने पर मुक़र्रर हैं दाहिने हाथ वाला नेकियाँ लिखता है और बाएँ हाथ वाला बदियाँ लिखता है इसी तरह दो फ़रिश्ते उसके आगे पीछे हैं जो उसकी हिफ़ाज़त व हिरासत करते रहते हैं। पस हर इंसान हर वक़्त चार फ़रिश्तों में रहता है दो कातिबे आमाल दाएँ बाएँ, दो निगहबानी करने वाले आगे पीछे। फिर रात के अलग दिन के अलग। चुनाँचे हदीस में है "तुममें फ़रिश्ते पे दर पे आते जाते रहते हैं रात के

और दिन के उनका मेल सुबह और असर की नमाज़ में होता है। रात गुज़ारने वाले आसमान पर चढ़ जाते हैं। बावजूद इल्म के अल्लाह तबारक व तआला उनसे पूछता है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हालत में छोड़ा? वह जवाब देते हैं कि हम गए तो उन्हें नमाज़ में पाया और आए तो नमाज़ में छोड़ आए।'' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3223; सहीह मुस्लिम : 632; नसाई : 485; इब्ने हिब्बान : 1736; मुस्नद अबी अवाना : 1/315; सुननुल कुब्रा : 1/175; मौता इमाम मालिक : 411; अहमद : 2/486; मुस्नद अबी यअला : 11/215; शुअबुल ईमान : 3/50; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 1/165) और हदीस में है कि ''तुम्हारे साथ वह हैं जो सिवाए पाख़ाने और जिमाअ के वक़्त तुमसे अलग नहीं होते। पस तुम्हें उनका लिहाज़ और उनकी शर्म और उनका इकराम और उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए। (तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़िल अस्तार इन्दल जिमाअ : 2800; बि इख़्तिलाफ़े अल्फ़ाज़; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; लेस बिन अबी सुलैम रावी ज़ईफ़ मुदल्लस है।)

पस जब अल्लाह तआला को कोई नुक़्सान बन्दे को पहुँचाना मंज़ूर होता है। बक़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उस काम को हो जाने देते हैं। मुजाहिद (रह.) कहते हैं हर बन्दे के साथ अल्लाह तआला की तरफ़ से मुवक्किल है जो उसे सोते जागते जिन्नात से इंसान से ज़हरीले जानवरों और तमाम आफ़तों से बचाता रहता है। हर चीज़ को रोक देता है मगर वह जिसे अल्लाह तआला पहुँचाना चाहे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह दुनिया के बादशाहों अमीरों वग़ैरह का ज़िक्र है जो पहरे चोकी में रहते हैं। ज़हहाक (रह.) फ़र्माते हैं कि सुल्तान अल्लाह की निगहबानी में होता है। (अम्रिल्लाहि) से यानी मुश्रिकीन और ज़ाहिरीन से, वल्लाहु आलम! मुम्किन है ग़र्ज़ इस क़ौल से यह हो कि जैसे बादशाहों अमीरों की चोकीदारी सिपाही करते हैं उसी तरह बन्दे के चोकीदार अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्ररशुदा होते हैं। एक ग़रीब रिवायत में तफ़्सीर इब्ने जरीर में वारिद हुआ है कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के पास आए और आपसे पूछा कि फ़र्माइए कि बन्दे के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''एक तो दाएँ जानिब नेकियों का लिखने वाला जो बाएँ जानिब वाले पर अमीर है। जब तू कोई नेकी करता है, वह एक के बजाए दस लिख ली जाती है। जब तू कोई बुराई करे तो बाएँ वाला दाएँ वाले से उसके लिखने की इजाज़त मांगता है, वह कहता है कि ज़रा ठहर जा, शायद तौबा कर ले। तीन बार वह इजाज़त माँगता है। तब तक भी अगर उसने तौबा न की तो यह नेकी का फ़रिश्ता उससे कहता है अब लिख ले। अल्लाह हमें उससे छुड़ाए यह तो बड़ा बुरा साथी है उसे अल्लाह तआला का लिहाज़ नहीं। यह उससे नहीं शर्माता। अल्लाह का फ़र्मान है कि इंसान जो बात ज़ुबान पर लाता है उस पर निगहबान मुतअय्यन और मुहय्या हैं और दो फ़रिश्ते तेरे आगे पीछे हैं। फ़र्माने इलाही है (लहू मुअक़्क़िबातुन...)। और एक फ़रिश्ता तेरे माथे के बाल थामे हुए है। (50/क़ाफ़ : 18) जब तू अल्लाह तआला के लिए तवाज़ोअ और फ़रोतनी करता है वह तुझे बुलंद दर्जा कर देता है और जब तू अल्लाह के सामने सरकशी और तकब्बुर करता है वह तुझे पस्त और आजिज़ कर देता है और दो फ़रिश्ते तेरे होंठों पर हैं। जो दुरूद तू मुझ पर पढ़ता है उसकी वह हिफ़ाज़त करते हैं। एक फ़रिश्ता तेरे चेहरे पर खड़ा है कि कोई साँप वग़ैरह जैसी चीज़ तेरे हलक़ में न चली जाए और दो फ़रिश्ते तेरी आँखों पर हैं। पस यह

दस फ़रिश्ते हर बनी आदम के साथ हैं। फिर दिन के अलग हैं और रात के अ लग हैं। यूँ हर शख़्स के साथ बीस फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से मुवक्किल हैं। इधर बहकाने के लिए दिन भर तो इब्लीस की ड्यूटी रहती है और हर रात को उसकी औलाद की।'' (तब्री : 9/294; यह रिवायत मुन्क़तअ होने की वजह से ज़ईफ़ है क्यों कि किनाना ने उस्मान (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया।) मुस्नद अहमद में है ''तुममें से हर एक के साथ जिन्न साथी है और फ़रिश्ता साथी है।'' लोगों ने कहा, आपके साथ भी? फ़र्माया, ''हाँ! लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद की है वह मुझे भलाई के सिवा कुछ नहीं कहता।''(अहमद : 1/401, 385; सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब मअ कुल्लि इंसानिन क़रीनुन : 2814; दारमी : 2734; मुश्किलुल आसार : 109; मुअजमुल औसत : 3/93; बिदूनि ज़िक्रुल मलाइकति, इब्ने हिब्बान : 6417 मुख़्तसरन) ''यह फ़रिश्ते बहुक्मे इलाही उसकी निगहबानी रखते हैं।'' कुछ क़िरातों में (मिन अम्रिल्लाहि) के बदले (बिअम्रिल्लाहि) है। कअब (रह.) कहते हैं अगर इब्ने आदम के लिए हर नर्म व सख़्त खुल जाए तो अल्बत्ता हर चीज़ उसे ख़ुद नज़र आने लगे और अगर अल्लाह की तरफ़ से यह मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर न हों जो खाने पीने और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं तो वल्लाह! तुम तो उचक लिए जाओ। अबू उमामा (रह.) फ़र्माते हैं हर आदमी के साथ मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता है जो तक़्दीरी उमूर के सिवा की और तमाम बलाओं को उससे दूर करता रहता है। एक शख़्स क़बीला मराद का हज़रत अली (रज़ि.) के पास आया। उन्हें नमाज़ में मशग़ूल देखा तो कहा कि क़बीला मराद के आदमी आपके क़त्ल का इरादा कर चुके हैं आप पहरा चोकी मुक़र्रर कर लीजिए। आपने फ़र्माया, हर शख़्स के साथ दो फ़रिश्ते उसके मुहाफ़िज़ मुक़र्रर हैं बग़ैर तक़्दीर के लिखे किसी बुराई को इंसान तक पहुँचने नहीं देते। सुनो अजल एक मज़बूत क़िला है और उम्दा ढाल है और कहा गया है कि बहुक्मे इलाही अम्रे इलाही से उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं जैसे हदीस शरीफ़ में है लोगों ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि यह झाड़ फूँक जो हम करते हैं क्या उससे अल्लाह तआला की मुक़र्रर की हुई तक़्दीर टल जाती है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''वह ख़ुद अल्लाह की मुक़र्ररकर्दा है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ फ़िरुक़िया वल अदविया : 2065; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अबी ख़ुज़ामा रावी मज्हूलुल हाल है। इब्ने माजा : 3437; हाकिम : 4/402; मुअजमुल कबीर : 3090; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/85) इब्ने अबी हातिम में है कि बनी इस्राईल के नबियों में से एक की तरफ़ वही इलाही हुई कि अपनी क़ौम से कह दो कि जिस बस्ती वाले और जिस घर वाले अल्लाह तआला की इताअत गुज़ारी करते करते अल्लाह तआला की मअसियत करने लगते हैं अल्लाह तआला उनकी राहत की चीज़ों को उनसे दूर करके उन्हें वह चीज़ पहुँचाता है जो उन्हें तक्लीफ़ देने वाली हों। इसकी तस्दीक़ क़ुरआन की आयत (इन्नल्लाह ला युग़य्यिरु) से भी होती है। इमाम अबी शैबा की किताब सिफ़तुल अर्श में यह रिवायत मरफ़ूअन भी आई है। उमैर बिन अब्दुल मलिक कहते हैं कि कूफ़े के मिम्बर पर हज़रत अली (रज़ि.) ने हमें ख़ुत्बा दिया। जिसमें फ़र्माया कि अगर मैं चुप रहता तो हुज़ूर (ﷺ) बात शुरू करते और जब मैं पूछता तो आप (ﷺ) मुझे जवाब देते। एक दिन आप (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, ''अल्लाह तआला फ़र्माता है मुझे क़सम है अपनी इज़्ज़त व जलाल की अपनी बुलंदी की जो अर्श पर है कि जिस बस्ती के जिस घर के लोग मेरी नाफ़र्मानियों में मुब्तला हों फिर उन्हें छोड़कर मेरी फ़र्मांबरदारी में लग जाएँ तो मैं भी अपने अज़ाब और दुख उनसे हटाकर अपनी रहमत और सुख उन्हें अता कर

देता हूँ।'' (इसकी सनद में उमेर बिन अब्दुल्लाह और हशीम बिन अश्अस वग़ैरह मज्हूल रावी हैं।) यह हदीस ग़रीब है और इसकी सनद में एक रावी ग़ैर मारूफ़ है।

***

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : ''वही अल्लाह तआला है जो तुम्हें बिजली की चमक डराने और उम्मीद दिलाने के लिए दिखाता है। और बोझल बादलों को पैदा करता है।(12) गरज (कड़क) उसकी तस्बीह व तारीफ़ करती है और फ़रिश्ते भी उसके डर से। वही आसमान से बिजलियाँ गिराता है और जिस पर चाहता है उस पर डालता है कुफ़्फ़ार अल्लाह की बाबत लड़ झगड़ रहे हैं। अल्लाह सख़्त कुव्वत वाला है।'' (13)

आसमानी बिजली की गरज चमक (आयत 12, 13) : बिजली भी उसके हुक्म में है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने एक सवाल के जवाब में कहा था कि बर्क़ पानी है। मुसाफ़िर उसे देखकर अपनी ईज़ा और मुशक़्क़त के डर से घबराता है और मुक़ीम बरकत व नफ़ा की उम्मीद पर रिज़्क़ की ज़्यादती का लालच करता है। वही बोझल बादलों को पैदा करता है जो बवजह पानी के बोझ के ज़मीन से क़रीब आ जाते हैं। पस उनमें बोझ पानी का होता है। फिर फ़र्माया कि कड़क भी उसकी तस्बीह व हम्द करती है। और जगह है कि हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह व हम्द करती है। (17/इस्रा : 44) एक हदीस में है कि ''अल्लाह तआला बादल पैदा करता है जो अच्छी तरह बोलते हैं और हँसते हैं।'' (अहमद : 5/435; व सनदुहू सहीहुन, अल्अस्माउ वस्सिफ़ातु लिल बैहक़ी : 988; अल्अम्सालु लिर्रामा हुर्मुज़ी.... : 125) मुम्किन है बोलने से मुराद गरजना और हँसने से मुराद बिजली का ज़ाहिर होना हो। सअद बिन इब्राहीम कहते हैं अल्लाह तआला बारिश भेजता है। और उससे अच्छी बोली और उससे अच्छी हंसी वाला कोई और नहीं। उसकी हँसी बिजली है और उसकी बातचीत गरज है। मुहम्मद बिन मुस्लिम कहते हैं कि हमें यह बात पहुँची है कि बर्क़ एक फ़रिश्ता है जिसके चार मुँह हैं, एक इंसान जैसा, एक बैल जैसा, एक गधे जैसा, एक शेर जैसा। वह जब दुम हिलाते हैं तो बिजली ज़ाहिर होती है। हुज़ूर (ﷺ) गरज कड़क सुनकर यह दुआ पढ़ते (अल्लाहुम्मा ला तक़्तुल्ना बिग़ज़बिका वला तुहलिक्ना बिअज़ाबिका व आफ़िना क़ब्ला ज़ालिक) (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा यक़ूलु इज़ा समिअर्रअद : 3450; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हज्जाज बिन इरतात ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है। अल्अदबुल मुफ़रद : 271; सुननुल कुब्रा : 10764; इब्ने अबी शैबा : 7/31; अमलुल यौमि वल्लैलति लिन्नसाई : 927;

बैहक़ी : 3/362; अहमद : 2/100; हाकिम : 4/286) और रिवायत में यह दुआ है (सुब्हान मंय्युसब्बिहुर् रअ़दु बि हम्दिही) (तब्री : 9/298 यह रिवायत रजुल मज्हूल रावी की वजह से ज़ईफ़ है।) हज़रत अली (रज़ि.) गरज सुनकर पढ़ते (सुब्हाना मन सब्बहत लहू) (सहीह अल्अदबुल मुफ़रद : 722; अन इब्ने अब्बास अन क़ौलिही व सनदुहू हसन) इब्ने अबी ज़करिया फ़र्माते हैं जो शख़्स गरज कड़क सुनकर कहे (सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही) उस पर बिजली नहीं गिरेगी। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर (रज़ि.) गरज कड़क की आवाज़ सुनकर बातें छोड़ देते और फ़र्माते (सुब्हानल्लज़ी युसब्बिहुर्रअ़दु बिहम्दिही वल मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिन) (मौता इमाम मालिक रिवायतु अबी मुस्अब : 2/171; ह : 2094 और उसकी सनद सही है।) और फ़र्माते हैं कि इस आयत में और इस आवाज़ में ज़मीन वालों के लिए बड़ी डरावे की चीज़ है। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "तुम्हारा रब अ़ज़्ज़ व जल्ला फ़र्माता है अगर मेरे बन्दे मेरी पूरी इताअ़त करते तो मैं रातों को बारिशें बरसाता और दिन को सूरज चढ़ाता और उन्हें गरज की आवाज़ तक न सुनाता।" (अहमद : 2/359; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 2/349; मुस्नद तयालिसी : 2586; इसकी सनद में सदक़ा बिन मूसा ज़ईफ़ रावी है।) तब्रानी में है आप फ़र्माते हैं, गरज सुनकर अल्लाह का ज़िक्र करो क्योंकि ज़िक्र करने वालों पर कड़ाका नहीं गिरता। (तब्रानी : 11371; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/136; इस रिवायत में यहया बिन कसीर अबू नज़र ज़ईफ़ रावी है। (अल जरह वत्तादील : 9/759) वह कड़ाका भेजता है जिसे चाहे उस पर अ़ज़ाब करता है। इसलिए आख़िर ज़माना में बकस्रत बिजलियाँ गिरेंगी।" मुस्नद अहमद में है कि "क़यामत के क़रीब बिजली कसरत से गिरेगी। यहाँ तक कि एक शख़्स अपनी क़ौम से आकर पूछेगा कि सुबह किस पर बिजली गिरी? वह कहेंगे कि फ़लाँ पर फ़लाँ पर।" (मुस्नद अहमद : 3/64, 65; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/9; हाकिम : 4/444; इस रिवायत की सनद में मुहम्मद बिन मुस्अब ज़ईफ़ रावी है।) अबू यअ़ला रावी हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने एक शख़्स को एक मग़रूर सरदार के बुलाने को भेजा। उसने कहा कौन रसूलुल्लाह (ﷺ) और कौन अल्लाह? अल्लाह सोने का है या चाँदी का या पीतल का? क़ासिद वापिस आया और हुज़ूर (ﷺ) को सब कुछ बयान किया कि देखिए मैं ने तो आपसे पहले ही कहा था कि वह मुतकब्बिर मग़रूर शख़्स है आप उसे न बुलवाएँ आपने फ़र्माया, "दोबारा जाओ उससे यही कहो।" उसने जाकर फिर बुलाया। लेकिन उस फ़िरऔन ने यही जवाब इस मर्तबा भी दिया। क़ासिद ने वापिस आकर फिर हुज़ूर (ﷺ) से अ़र्ज़ किया। आपने तीसरी मर्तबा भेजा। अब की तीसरी मर्तबा भी उसने पैग़ाम सुनकर वही जवाब देना शुरु किया कि एक बादल उसके सर पर आ गया, कड़का और उसमेंसे बिजली गिरी और उसके सर से खोपड़ी उड़ा कर ले गयी। उसके बाद यह आयत उतरी। (मुस्नद अबी यअ़ला : 3468; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़ली बिन अबी सारा ज़ईफ़ कमा फ़ित्तक़रीब वग़ैरुहू अत्तबरी : 13/125) अनस (रज़ि.) से इस मअ़नी की रिवायत भी मज़्कूर है। (मुस्नद अबी यअ़ला : 3341; अल्बज़्ज़ार : 2221) एक रिवायत में है कि एक यहूदी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आया और कहने लगा कि अल्लाह तआ़ला तांबे का है या मोती का या याक़ूत का। अभी उसका सवाल पूरा न हुआ था कि बिजली गिरी और वह तबाह हो गया और यह आयत उतरी। (तब्री : 13/125; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) क़तादा (रह.) कहते हैं मज़्कूर है कि एक शख़्स ने क़ुरआन को झुठलाया और हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत से इंकार किया। उसी वक़्त आसमान से बिजली गिरी और वह हलाक

हो गया और यह आयत उतरी। (तब्री : 13/126; व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुर्सलन; लेकिन इसकी गवाही हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत गुज़र चुकी है।)

इस आयत के शाने नुज़ूल में आ़मिर बिन तुफ़ेल और अरबद बिन रबीआ़ का क़िस्सा भी बयान होता है। यह दोनों सरदाराने अ़रब मदीने में हुज़ूर (ﷺ) के पास आए और कहा कि हम आपको मान लेंगे लेकिन इस शर्त पर कि आप हमें आधों आध का शरीक कर लें। आपने उन्हें उससे मायूस कर दिया तो आ़मिर मलऊ़न ने कहा, वल्लाह! मैं सारे अ़रब के मैदान को लश्कर से भर दूँगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, झूठा है अल्लाह तआ़ला तुझे यह वक़्त ही नहीं देगा। फिर यह दोनों मदीने में ठहरे रहे कि मौक़ा पाकर हुज़ूर (ﷺ) को ग़फ़्लत में क़त्ल कर दें। चुनाँचे एक दिन उन्हें मौक़ा मिल गया। एक ने तो आपको सामने से बातों में लगा लिया, दूसरा तलवार खींचे पीछे से आ गया। लेकिन उस मुहाफ़िज़े हक़ीक़ी ने आपको उनकी शरारत से बचा लिया। अब यहाँ से नामुराद होकर चले और अपने जलेदिल के फफोले फोड़ने के लिए अ़रब को आपके ख़िलाफ़ उभारने लगे। उसी हाल में अरबद पर आसमान से बिजली गिरी और उसका काम तो तमाम हो गया। आ़मिर ताऊ़न की गिल्टी से पकड़ा गया और उसी में बिलक बिलककर जान दी और उसी जैसों के बारे में यह आयत उतरी कि अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहे बिजली गिराता है। अरबद के भाई लबीद ने अपने भाई के इस वाक़िया को अश्आ़र में ख़ूब बयान किया है और रिवायत में है कि आ़मिर ने कहा कि अगर मैं मुसलमान हो जाऊँ तो मुझे क्या मिलेगा। आपने फ़र्माया, "जो सब मुसलमानों का हाल वही तेरा हाल।" उसने कहा, फिर तो मैं मुसलमान नहीं होता। अगर आपके बाद इस अम्र का वाली मैं बनूँ तो मैं दीन क़बूल करता हूँ। आपने फ़र्माया, "यह अम्रे ख़िलाफ़त न तेरे लिए है, न तेरी क़ौम के लिए, हाँ! हमारा लश्कर तेरी मदद पर होगा।" उसने कहा, उसकी मुझे ज़रूरत नहीं। अब भी नजदी लश्कर मेरी पुश्तपनाही पर है। मुझे तो कच्चे पक्के का मालिक कर दें तो मैं दीने इस्लाम क़बूल कर लूँगा, आपने फ़र्माया, "नहीं!" यह दोनों आपके पास से चले गए। आ़मिर कहने लगा कि वल्लाह! मैं मदीने को चारों तरफ़ से लश्करों से घेर लूँगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तेरा यह इरादा पूरा नहीं होने देगा।" अब दोनों ने आपस में मश्वरा किया कि एक तो हज़रत को बातों में लगाए, दूसरा तलवार से आपका काम तमाम कर दे। फिर उनमें से लड़ेगा कौन? ज़्यादा से ज़्यादा दियत देकर पीछे छूट जाएगा। अब यह दोनों फिर आपके पास आए। आ़मिर ने कहा, ज़रा आप उठकर यहाँ आइए, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। आप उठे, उसके साथ चले, एक दीवार तले वह बातें करने लगा। हुज़ूर (ﷺ) भी खड़े हुए सुन रहे थे। अरबद ने मौक़ा पाकर तलवार पर हाथ रखा, उसे म्यान से बाहर निकालना चाहा लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसका हाथ शल कर दिया। उससे तलवार निकली ही नहीं। जब काफ़ी देर लग गयी और अचानक हुज़ूर (ﷺ) की नज़र पुश्त की जानिब पड़ी तो आप (ﷺ) ने यह हालत देखी और वहाँ से लौटकर चले आए। अब यह दोनों मदीना से चले। हर्रा राक़िम में आकर ठहरे। लेकिन सअ़द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ेर (रज़ि.) वहाँ पहुँचे और उन्हें वहाँ से निकाला। राक़िम में ही थे जो अरबद पर बिजली गिरी उसका तो वहीं ढेर हो गया। आ़मिर यहाँ से भाग गया लेकिन ख़ुरैम में पहुँचा था जो उसे ताऊ़न की गिल्टी निकली। बनू सुलूल क़बीले की एक औ़रत के यहाँ यह ठहरा। वह कभी कभी अपनी गर्दन की गिल्टी को दबाता और

ताज्जुब से कहता यह तो ऐसी है जैसे ऊँट को होती है। अफ़सोस! मैं सुलूलिया औरत के घर पर मरूँगा। क्या अच्छा होता कि मैं अपने घर होता। आख़िर उससे न रहा गया। घोड़ा मंगवाया, सवार हुआ और चल दिया लेकिन रास्ते ही में हलाक हो गया। पस उनके बारे में यह आयतें (अल्लाहु यअलम) से (मिंव्वाल) तक नाज़िल हुईं। उनमें हुज़ूर (ﷺ) की हिफ़ाज़त का ज़िक्र भी है। (तब्रानी : 10760; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/42 इसमें अब्दुल अज़ीज़ बिन इमरान ज़ईफ़ रावी है। अत्तक़्रीब : 1/511; रक़म : 1242) फिर अरबद पर बिजली गिरने का ज़िक्र है और फ़र्माया कि यह अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं। उसकी अज़्मत व तौहीद को नहीं मानते। हालाँकि अल्लाह तआला अपने मुख़ालिफ़ों और मुंकिरों को सख़्त सज़ा और नाक़ाबिले बर्दाश्त अज़ाब करने वाला है। पस यह आयत मिस्ल आयत (وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ) (27/नम्ल : 50) के है। यानी उन्होंने मकर किया और हमने भी इस तरह कि उन्हें मालूम न हो सका। अब तू ख़ुद देख ले कि उनके मकर का अंजाम क्या हुआ। हमने उन्हें और उनकी क़ौम को ग़ारत कर दिया। अल्लाह सख़्त पकड़ करने वाला है। बहुत क़वी (मजबूत) है। पूरी कुव्वत व ताक़त वाला है।

***

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ
كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ
يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾
السجدة قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ
لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ
تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾

तर्जुमा : ''उसी को पुकारना हक़ है। जो लोग उसके सिवा औरों को पुकारते हैं वह उनके किसी काम पर नहीं पहुँचते मगर जैसे कि कोई शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाये हुए हो

कि उसके मुँह में पड़ जाए तो वह पानी उसके मुँह में पहुँचने वाला नहीं। इन मुंकिरों की जितनी पुकार है सब गुमराही में है। (14) अल्लाह ही के लिए ज़मीनो आसमान की सब मख़्लूक़ ख़ुशी और नाख़ुशी से सज्दा करती रहती है और उनके साये भी सुबह व शाम। (15) पूछ कि आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है? कह दे अल्लाह! कह दे क्या तुम फिर भी उसके सिवा दूसरों को हिमायती बना रहे हो? जो अपनी जान के भी भले बुरे का इख़्तियार नहीं रखते कह दे क्या अँधा और देखता बराबर हो सकता है? या क्या अंधेरियाँ और रोशनी बराबर हो सकती है क्या जिन्हें यह शरीके इलाही ठहरा रहे हैं उन्होंने भी रब की तरह मख़्लूक़ पैदा की है कि उनकी नज़र में मख़्लूक़ मुश्तबा हो गई हो कह दे कि सिर्फ़ अल्लाह ही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है वह अकेला है और ज़बरदस्त ग़ालिब है।" (16)

मुश्रिकीन को समझाने के लिए एक मिसाल (आयत 14-16) : हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला के लिए दावते हक़ है। इससे मुराद तौहीद है। मुहम्मद बिन मुंकदिर कहते हैं मुराद (ला इलाहा इल्लल्लाहु) है। फिर मुश्रिकों, काफ़िरों की मिसाल बयान हुई कि जैसे कोई शख़्स पानी की तरफ़ हाथ फैलाये हुए हो कि उसके मुँह में ख़ुद ब ख़ुद पानी पहुँच जाए तो ऐसा नहीं हो सकता। इसी तरह यह कुफ़्फ़ार जिन्हें पुकारते हैं और जिनसे उम्मीद रखते हैं वह उनकी उम्मीदें पूरी नहीं कर सकते और यह मतलब भी है कि जैसे कोई अपनी मुट्ठियों में पानी बंद कर ले वह रह नहीं सकता। पस बासित बमअनी (क़ाबिज़) है। अरबी शेअरों में भी (क़ाबिज़ुन माअ) आया है। पस जैसे पानी मुट्ठी में रोकने वाला और जैसे पानी की तरफ़ हाथ फैलाने वाला पानी से महरूम है ऐसे ही यह मुश्रिक अल्लाह तआला के सिवा दूसरों को भले पुकारे। लेकिन रहेंगे महरूम ही। दीन दुनिया का कोई फ़ायदा इन्हें न पहुँचेगा, इनकी पुकार बेकार है।

हर चीज़ अल्लाह तआला को सज्दा करती है : अल्लाह तआला अपनी अज़्मत व सल्तनत को बयान कर रहा है कि हर चीज़ उसके सामने पस्त है और हर एक उसकी सरकार में अपनी आजिज़ी का इज़्हार करती है। मोमिन ख़ुशी से और काफ़िर बज़ोर उसके समाने सज्दा में है। उनकी परछाईं सुबह व शाम उसके सामने झुकती रहती है। आसाल जमा है असील की और आयत में भी इसका बयान हुआ है। फ़र्मान है (أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ) (16/नहल : 48) यानी क्या इन्होंने नहीं देखा कि तमाम मख़्लूक़ इलाही के साये दाएँ बाएँ झुककर अल्लाह को सज्दा करते हैं। और अपनी आजिज़ी का इज़्हार करते हैं।

हक़ और बातिल की मिसाल : अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूदे बरहक़ नहीं यह मुश्रिकीन भी उसी के क़ाइल हैं कि ज़मीनो-आसमान का रब और मुदब्बिर भी अल्लाह ही है, बावजूद उसके दूसरे ओलिया की इबादत करते हैं। हालाँकि वह सब आजिज़ बन्दे हैं उनके तो क्या ख़ुद अपने भी नफ़ा व नुक़्सान का उन्हें कोई इख़्तियार नहीं। पस यह और अल्लाह तआला के आबिद एक जैसे नहीं हो सकते, यह तो अंधेरों में हैं और अल्लाह तआला के बन्दे नूर में हैं। जितना फ़र्क़ अंधे में और देखते में जितना फ़र्क़ अंधेरों और रोशनी में है उतना ही फ़र्क इन दोनों में है फिर फ़र्माता है कि क्या इनका मुश्रिकीन के मुक़र्ररकर्दा शरीके इलाही इनके

नज़दीक किसी चीज़ के ख़ालिक़ हैं कि इन पर तमीज़ मुश्किल हो गई कि किस चीज़ का ख़ालिक़ अल्लाह है और किस चीज़ के ख़ालिक़ उनके मअ़बूद हैं? हालाँकि ऐसा नहीं! अल्लाह तआ़ला के मुशाबेह उस जैसा उसके बराबर का और उसके मिस्ल का कोई नहीं वह वज़ीर से शरीक से औलाद से बीवी से पाक है और उन सबसे उसकी ज़ात बुलंद व बाला है। यह तो मुश्रिकीन की पूरी बेवक़ूफ़ी है कि अपने झूठे मअ़बूदों को अल्लाह तआ़ला का पैदा किया हुआ उसकी मम्लूक समझते हुए फिर भी उनकी पूजा पाठ में लगे हुए हैं। लब्बैक पुकारते हुए कहते हैं कि ऐ अल्लाह! हम हाज़िर हुए तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह शरीक कि वह ख़ुद तेरी मिल्कियत में है और जिस चीज़ का वह मालिक है वह भी दरअस़ल तेरी ही मिल्कियत है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाबत तल्बिया व सिफ़तिहा व वक़्तिहा : 1185; मुअजमुल कबीर : 12883) क़ुरआन ने और जगह इनका मक़ूला बयान किया है कि (مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ) (39/ज़ुमर : 3) यानी हम तो इनकी इबादत सिर्फ़ इस लालच में करते हैं कि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर दें उनके इस एतिक़ाद की रगे गर्दन तोड़ते हुए इर्शादे रब्बानी हुआ कि उसके पास कोई भी उसकी इजाज़त के बग़ैर लब नहीं हिला सकता। (34/सबा : 23) यहाँ तक कि आसमानों के फ़रिश्ते भी सिफ़ारिश उसकी इजाज़त के बग़ैर कर ही नहीं सकते, सूरह मरयम में फ़र्माया, ज़मीन और आसमान की तमाम मख़्लूक़ अल्लाह तआ़ला के सामने गुलाम बनकर आने वाली है सब अल्लाह तआ़ला की नज़र में और उसकी गिनती में हैं। और हर एक तंहा तंहा उसके सामने क़यामत के दिन हाज़िरी देने वाला है। (19/मरयम : 93-95) पस जबकि सबके सब बन्दे और गुलाम होने की हैसियत में यक्साँ हैं। फिर एक का दूसरे की इबादत करना बड़ी हिमाक़त और खुली बेइंसाफ़ी नहीं तो और क्या है? फिर उसने रसूलों का सिलसिला दुनिया के शुरुआत से जारी रखा। हर एक ने लोगों को पहला सबक़ यह दिया कि अल्लाह एक है। वही इबादतों के लायक़ है उसके सिवा कोई और इबादतों के लायक़ नहीं। लेकिन उन्होंने न अपने इक़रार का पास किया, न रसूलों की मुत्तफ़िक़ा तालीम का लिहाज़ किया बल्कि मुख़ालिफ़त की रसूलों को झुठलाया तो रब का अ़ज़ाब उन पर आ गया, यह रब का ज़ुल्म नहीं।

***

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

तर्जुमा : "उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर अपनी अपनी समाई के मुताबिक़ नाले बह

निकले फिर पानी के रेले ऊपर चढ़े, झाग को उठा लिया और उस चीज़ में भी जिसको आग में डालकर तपाते हैं। ज़ेवर या साज़ो सामान के लिए उसी तरह के झाग में इसी तरह अल्लाह तआला हक़ व बातिल की मिसाल बयान करता है। अब झाग तो नाकारा होकर चला जाता है लेकिन जो लोगों को नफ़ा देने वाली चीज़ है वह ज़मीन में ठहरी रहती है अल्लाह तआला इसी तरह मिसालें बयान करता है।" (17)

हक़ की पायेदारी बातिल के बेसबाती (आयत 17) : हक़ व बातिल के फ़र्क़ हक़ की पायदारी और बातिल के बेसबाती की यह दो मिसालें बयान फ़र्माईं इर्शाद हुआ कि अल्लाह तआला बादलों से बारिश बरसाता है चश्मों दरियाओं नालों वग़ैरह के ज़रिये बरसात का पानी बहने लगता है। किसी में कम किसी में ज़्यादा कोई छोटी कोई बड़ी। यह मिसाल है दिलों की और उनके तफ़ावुत (फ़र्क़) की कोई आसमानी इल्म बहुत ज़्यादा लेता है कोई कम फिर पानी की उस रौ (बहाव) पर झाग तैरने लगते हैं एक मिसाल तो यह हुई दूसरी मिसाल सोने चाँदी लोहे तांबे की है कि उसे आग में तपाया जाता है सोने चाँदी ज़ेवर के लिए लोहा तांबा बर्तन भाँडे वग़ैरह के लिए उनमें भी झाग होते हैं। तो जैसे इन दोनों चीज़ों के झाग मिट जाते हैं उसी तरह बातिल जो कभी हक़ पर छा जाता है आख़िर छट जाता है और हक़ निथर आता है जैसे पानी निथर कर साफ़ होकर रह जाता है और जैसे चाँदी सोना वग़ैरह तपाकर खोट से अलग कर लिए जाते हैं। अब सोने चाँदी पानी वग़ैरह से तो दुनिया नफ़ा उठाती रहती है और उस पर जो खोट और झाग आ गया था उसका नामो निशान भी नहीं रहता, अल्लाह तआला लोगों को समझाने के लिए कितनी साफ़ साफ़ मिसालें बयान कर रहा है कि यह सोचें समझें, जैसे फ़र्माया है कि हम यह मिसालें लोगों के सामने बयान करते हैं लेकिन उसे उलमा ख़ूब समझते हैं। (29/अन्कबूत : 43) कुछ सलफ़ की समझ में जब कोई मिसाल नहीं आती थी तो वह रोने लगते थे क्योंकि न समझना इल्म से ख़ाली लोगों का वस्फ़ है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं पहली मिसाल में बयान है उन लोगों का जिनके दिल यक़ीन के साथ इल्म अल्लाह तआला के हामिल होते हैं और कुछ दिल वह भी हैं जिनमें शक बाक़ी रह जाता है पस शक के साथ का अमल बेसूद होता है यक़ीन पूरा फ़ायदा देता है (ज़बदुन) से मुराद शक है जो निकम्मी चीज़ है यक़ीन कारआमद चीज़ है जो बाक़ी रहने वाली है जैसे जेवर जो आग में तपाया जाता है तो खोट जल जाती है और खरी चीज़ रह जाती है उसी तरह अल्लाह के यहाँ यक़ीन मक़्बूल है शक मर्दूद है पस जिस तरह पानी रह गया और पीने वग़ैरह के काम आया और जिस तरह सोना चाँदी असली रह गया और ज़ेवर वग़ैरह के काम आया और जिस तरह तांबा लोहा वग़ैरह रह गया और उसके साज़ो सामान बने इसी तरह नेक और ख़ालिस आमाल आमिल को नफ़ा देते हैं और बाक़ी रहते हैं हिदायत व हक़ पर जो आमिल रहे वह नफ़ा पाता है जैसे लोहे की छुरी तलवार बग़ैर तपाए बन नहीं सकती उसी तरह बातिल और शक और रियाकारी वाले आमाल अल्लाह के यहाँ कारआमद नहीं हो सकते, क़यामत के दिन बातिल ज़ाया हो जाएगा और अहले हक़ को हक़ नफ़ा देगा सूरह बक़रह के शुरू में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बयान फ़र्माईं, एक पानी की, एक आग की।

सूरह नूर में काफ़िरों की दो मिसालें बयान कीं एक (सराबुन) यानी रेते की दूसरी समुन्द्र की तह के

अंधेरों की रेता मौसमे गर्मा में दूर से बिलकुल लहरें लेता हुआ दरिया का पानी मालूम होता है चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि ''क़यामत के दिन यहूदियों से पूछा जाएगा कि तुम क्या माँगते हो? वह कहेंगे प्यासे हो रहे हैं पानी चाहिए तो उनसे कहा जाएगा कि फिर जाते क्यूँ नहीं हो? चुनाँचे जहन्नम ऐसी नज़र आएगी जैसे दुनिया में रेतीले मैदान।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (इन्नल्लाह ला यज़्लिमु मिस्क़ाल ज़र्रतिन) : 4581; सहीह मुस्लिम : 183; अल्ईमान लि इब्ने मंदा : 2/803) दूसरी आयत में फ़र्माया (أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ) (24/नूर : 40) बुख़ारी व मुस्लिम में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि ''जिस हिदायत व इल्म के साथ अल्लाह तआला ने मुझे मब्ऊस किया है उसकी मिसाल उस बारिश की तरह है जो ज़मीन पर बरसी। ज़मीन के एक हिस्से ने तो पानी को क़बूल किया, घास चारा बहुत ज़्यादा उगाया कुछ ज़मीन जाज़ि र थी उसने पानी को रोक लिया पस अल्लाह ने उससे भी लोगों को नफ़ा पहुँचाया पानी उनके पीने के पिलाने के खेत के काम आया और ज़मीन का टुकड़ा संगलाख़ और सख़्त था। न उसमें पानी ठहरा न वहाँ कुछ पैदावार हुई पस यह मिसाल है उसकी जिसने दीन में समझ हासिल की और मेरी बिअसत से अल्लाह ने उसे फ़ायदा पहुँचाया उसने ख़ुद इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया और मिसाल है उसकी जिसने उसके लिए सर भी न उठाया और न अल्लाह की वह हिदायत क़बूल की जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ पस वह मिस्ल संगलाख़ सख़्त ज़मीन के है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब फ़ज़्लुम मन अलिमा व अल्लम : 79; सहीह मुस्लिम : 2282; अहमद : 4/99; इब्ने हिब्बान : 4; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3169; सुननुल कुब्रा : 42713; मुस्नद अबी यअला : 7311) और हदीस में है ''मेरी और तुम्हारी मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसने आग जलाई जब आग ने अपने आसपास की चीज़ें रोशन कर दीं तो पतिंगें और परवाने वग़ैरह कीड़े उसमें गिरकर जान देने लगे वह उन्हें हर सम्भव रोकता है लेकिन उस प॰ भी वह बराबर गिर रहे हैं बिलकुल यही मिसाल मेरी और तुम्हारी है कि मैं तुम्हारी कमर पकड़-पकड़कर रोकता हूँ और कह रहा हूँ कि आग से दूर हटो लेकिन तुम मेरी नहीं सुनते, नहीं मानते मुझसे छूट छूटकर आग में गिरे चले जाते हो।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब शफ़्क़तहू (ﷺ) अला उम्मतिही व मुबालिग़तिही फ़ी तहज़ीरिहिम मिम्मा यजुर्रुहुम : 2284; सहीह बुख़ारी : 6483; तिर्मिज़ी : 2874; इब्ने हिब्बान : 6408; अहमद : 2/312; मुस्नदे शिहाब : 1132) पस हदीस में भी पानी की और आग की दोनों मिसालें आ चुकी हैं।

***

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَمَأْوَاهُمْ
جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : "जिन लोगों ने अपने रब के हुक्म की बजाआवरी की उनके लिए भलाई है। और जिन लोगों ने उसकी हुक्मबरदारी न की अगर उनके लिए ज़मीन में जो कुछ है सब कुछ हो और उसी के साथ वैसा ही और भी हो जब भी वह सबकुछ अपने बदले में दे दें यही हैं जिनके लिए हिसाब की सख़्ती है और जिनका ठिकाना जहन्नम है जो बहुत बुरी जगह है।" (18)

नेक काम का अच्छा जबकि बुरे काम का बुरा बदला (आयत 18) : नेकों बुरों का अंजाम बयान हो रहा है अल्लाह रसूल को मानने वाले अह़काम के पाबन्द ख़बरों पर यक़ीन रखने वाले तो नेक बदले पायेंगे ज़ुल क़रनैन ने फ़र्माया था कि ज़ुल्म करने वाले को हम भी सज़ा देंगे और अल्लाह तआला के यहाँ भी सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा और ईमान वाले और नेक आमाल करने वाले लोग बेहतरीन बदला पाएँगे और हम उनसे नर्मी की बातें करेंगे और आयत में फ़र्माने इलाही है। नेकों के लिए नेक बदला है और ज़्यादती भी। (10/यूनुस : 26) फिर फ़र्माता है जो लोग अल्लाह की बातें नहीं मानते यह क़यामत के दिन ऐसे अ़ज़ाबों को देखेंगे कि अगर उनके पास सारी ज़मीन भरकर सोना हो तो वह अपने फ़िदये में देने के लिए तैयार हो जाएँ बल्कि उस जितना और भी। मगर बरोज़े क़यामत न फ़िदया होगा न बदला न एवज़ न मुआवज़ा उनसे सख़्त पूछताछ होगी एक छिल्के और एक एक दाने का ह़िसाब लिया जाएगा। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (फ़सौफ़ा युह़ासबु ह़िसाबंय्यसीरा) : 4939; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2876; इब्ने ह़िब्बान : 7370; अह़मद : 6/127) ह़िसाब में पूरे न उतरेंगे अ़ज़ाब होगा, जहन्नम उनका ठिकाना होगा जो बदतरीन जगह होगी।

***

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰىؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ
اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِؕ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا
ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ
اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِؕ ﴿۲۴﴾

तर्जुमा : ''क्या वह एक शख़्स जो यह इल्म रखता हो कि तेरी तरफ़ तेरे रब की जानिब से जो उतारा गया है हक़ है उस शख़्स जैसा हो सकता है जो अंधा हो। नसीहत तो वही क़बूल करते हैं जो अक़्लमंद हों। (19) जो अल्लाह के अहदो पैमान को पूरा करते हैं और क़ौलो क़रार को तोड़ते नहीं। (20) अल्लाह ने जिन चीज़ों के जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं अपने परवरदिगार से डरते हैं और हिसाब की सख़्ती का खटका रखते हैं। (21) अपने रब की रज़ामंदी की तलब की वजह से सब्र करते रहते हैं और नमाज़ों को बराबर क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसे छुपे खुले ख़र्च करते रहते हैं। और बुराई को भी भलाई से टालते रहते हैं। उन ही के लिए आक़िबत का घर है। (22) हमेशा रहने के लिए बाग़ात जहाँ यह ख़ुद जाएँगे और उनके बाप दादाओं और बीवियों और औलादों में से भी जो नेक लोग होंगे उनके पास फ़रिश्ते हर हर दरवाज़े से आएँगे। (23) कहेंगे कि तुम पर सलामती होती रहे सब्र के बदले, क्या ही अच्छा बदला है उस घर का।'' (24)

(आयत 19-24) : इर्शाद होता है कि एक वह शख़्स जो अल्लाह तआला के कलाम को जो आपकी जानिब उतरा सरासर हक़ मानता हो, सब पर ईमान रखता हो, एक को दूसरे की तस्दीक़ करने वाला और मुवाफ़िक़त करने वाला जानता हो। सब ख़बरों को सच जानता हो। सब हुक्मों को मानता हो, सब बुराइयों को बुरा जानता हो, आपकी सच्चाई का क़ाइल हो और दूसरा वह शख़्स जो अँधा हो, भलाई को समझता ही नहीं और अगर समझ भी ले तो मानता न हो, न सच्चा जानता हो, यह दोनों बराबर नहीं हो सकते, जैसे फ़र्मान है कि दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं, जन्नती कामयाब हैं। (59/हश्र : 20) यही फ़र्मान यहाँ है कि यह दोनों बराबर नहीं। बात यह है कि भली समझ समझदारों की ही होती है।

मोमिन बन्दों की नेक सिफ़ात : उन बुज़ुर्गों की नेक सिफ़तें बयान हो रही हैं और उनके भले अंजाम की ख़बर दी जा रही है जो आख़िरत में जन्नत के मालिक बनेंगे और यहाँ भी जो नेक अंजाम हैं। वह मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं होते कि वादाख़िलाफ़ी और ग़द्दारी और बेवफ़ाई करें। यह मुनाफ़िक़ की ख़स्लत है कि वादा करके तोड़ दें। झगड़ों में गालिया बकें, बातों में झूठ बोलें, अमानत में ख़यानत करें, (मोमिन बन्दे) सिलारहमी का, रिश्तेदारों से सुलूक करने का, फ़क़ीर-मोहताज को देने का, भली बातों के निबाहने का जो हुक्म इलाही है यह उसके आमिल हैं रब का ख़ौफ़ दिल में रचा हुआ है। नेकियाँ करते हैं फ़र्माने इलाही समझकर। बदियाँ छोड़ते हैं अल्लाह की नाफ़र्मानी। आख़िरत के हिसाब का खटका रखते हैं इसीलिए बुराइयों से बचते हैं। नेकियों की रग़बत करते हैं। एतिदाल के रास्ते नहीं छोड़ते, हर हाल में फ़र्माने इलाही का लिहाज़ रखते हैं हराम कामों और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियां की तरफ़ भले नफ़्स घसीटे लेकिन यह उसे रोक लेते हैं। और सवाबे आख़िरत याद दिलाकर मर्ज़ी मौला, रज़ा-ए-रब के तालिब होकर नाफ़र्मानियों से बाज़ रहते हैं। नमाज़ की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं। रुकूअ सज्दा के वक़्त ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ शरई तौर पर बजा लाते हैं जिन्हें देना अल्लाह ने फ़र्माया है उन्हें अल्लाह की दी हुई चीज़ें देते रहते हैं। फ़ुक़रा, मोहताज, मसाकीन अपने हों या ग़ैर हों उनकी बरकतों से महरूम नहीं रहते। छुपे खुले दिन रात वक़्त बेवक़्त बराबर अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते हैं।

क़बाहत को एहसान से, बुराई को भलाई से, दुश्मनी को दोस्ती से टाल देते हैं। दूसरा सरकशी करे, यह नर्मी करते हैं। दूसरा सर चढ़े यह सर झुका देते हैं। दूसरों के ज़ुल्म सह लेते हैं और ख़ुद सुलूक करते हैं तालीमे कुरआन है (اِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ) (41/फ़ुस्सिलत : 34) बहुत अच्छे तरीक़े से टाल दो तो दुश्मन भी गाढ़ा दोस्त बन जाएगा, सब्र करने वाले साहिबे नसीब ही इस मर्तबा को पाते हैं ऐसे लोगों के लिए अच्छा अंजाम है। वह अच्छा अंजाम और बेहतरीन घर जन्नत है जो हमेशगी वाली और पायदार है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जन्नत के एक महल का नाम अदन है जिसमें बुरूज और बालाख़ाने हैं जिसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े पर पाँच हज़ार फ़रिश्ते हैं। वह महल मख़्सूस है नबियों और सिद्दीक़ों और शहीदों के लिए। ज़ह्हाक (रह.) कहते हैं यह जन्नत का शहर है। जिसमें अम्बिया होंगे, शुहदा होंगे और हिदायत के अइम्मा होंगे और उनके आसपास और लोग होंगे और उनके आसपास और। वहाँ यह अपने और चहितों को भी अपने साथ देखेंगे। उनके बड़े बाप दादा उनके छोटे बेटे पोते उनके जोड़े भी जो ईमानदार और नेककार थे। उनके पास होंगे और राहतों में मसरूर होंगे जिससे उनकी आखें ठण्डी रहेंगी। यहाँ तक कि अगर किसी के आमाल इस दर्जा बुलंदी तक पहुँचने के क़ाबिल न भी होंगे तो अल्लाह तआला उनके दर्जे बढ़ा देगा और आला मंज़िल तक पहुँचा देगा। जैसे (وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ) (52/तूर : 21) जिन ईमान वालों की औलाद उनकी पैरवी ईमान में करती है हम उन्हें भी उनके साथ मिला देते हैं....। उनके पास मुबारकबाद और सलाम के लिए हर हर दरवाज़े से हर हर वक़्त फ़रिश्ते आते रहते हैं। यह भी अल्लाह तआला का इन्आम है ताकि हर वक़्त ख़ुश रहें और बशारतें सुनते रहें। नबियों सिद्दीक़ों शहीदों का पड़ोस फ़रिश्तों का सलाम और जन्नतुल फ़िरदोस मक़ाम।

मुस्नद की हदीस में है ''जानते भी हो कि सबसे पहले जन्नत में कौन जाएँगे?'' लोगों ने कहा, अल्लाह तआला को इल्म है और उसके रसूल (ﷺ) को। फ़र्माया, ''सबसे पहले जन्नती मसाकीन मुहाजिरीन हैं जो दुनिया की लज़्ज़तों से दूर थे जो तक्लीफ़ों में मुब्तला थे। जिनकी उमंगे दिलों में ही रह गईं और क़ज़ा आ गई। रहमत के फ़रिश्तों को हुक्मे इलाही होगा कि जाओ उन्हें मुबारकबाद दो। फ़रिश्ते कहेंगे ऐ अल्लाह! हम तेरे आसमानों के रहने वाले तेरी बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। क्या तू हमें हुक्म देता है कि हम जाकर उन्हें सलाम करें और उन्हें मुबारकबाद पेश करें। जनाब बारी तआला जवाब देगा यह मेरे वह बन्दे हैं जिन्होंने सिर्फ़ मेरी इबादत की थी। मेरे साथ किसी को शरीक न किया। दुनियावी राहतों से महरूम रहे। मुसीबतों में मुब्तला रहे। कोई मुराद पूरी न होने पायी और यह साबिर व शाकिर रहे। अब तो फ़रिश्ते जल्दी जल्दी बशौक़ उनकी तरफ़ दौड़ेंगे। इधर उधर के हर दरवाज़े से घुसेंगे और सलाम करके मुबारकबाद पेश करेंगे।'' (अहमद : 2/168; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/259) तबरानी में है कि ''सबसे पहले जन्नत में जाने वाले तीन क़िस्म के लोग हैं। फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन जो मुसीबतों में मुब्तला रहे। जब उन्हें जो हुक्म मिला बजा लाते रहे। उन्हें ज़रूरतें बादशाहों से होती थी लेकिन मरते दम तक पूरी न हुईं। जन्नत को बरोज़े क़यामत अल्लाह तआला अपने सामने बुलाएगा। वह बनी सँवरी अपनी तमाम नेअमतों और ताज़गियों के साथ हाज़िर होगी। उस वक़्त निदा होगी कि मेरे वह बन्दे जो मेरी राह में जिहाद करते थे। मेरी राह में सताए जाते थे मेरी राह में

लड़ते भिड़ते थे वह कहाँ हैं। आओ बग़ैर हिसाब व अ़ज़ाब के जन्नत में चले जाओ उस वक़्त फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे। और अ़र्ज़ करेंगे कि परवरदिगार! हम तो सुबह व शाम तेरी तस्बीह व तक़्दीस में लगे रहे। यह कौन हैं जिन्हें हम पर भी तूने फ़ज़ीलत अ़ता की। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़र्माएगा यह मेरे वह बन्दे हैं जिन्होंने मेरी राह में जिहाद किया। मेरी राह में तक्लीफ़ें बर्दाश्त कीं। अब तो फ़रिश्ते जल्दी करके उनके पास हर हर दरवाज़े से जा पहुँचेंगे। सलाम करेंगे और मुबारकबाद पेश करेंगे कि तुम्हें तुम्हारे सब्र का बदला कितना अच्छा मिला।'' (अह़मद : 2/168; व सनदुहू ह़सन; इब्ने ह़िब्बान : 7421; मज्मउ़ ज़वाइद : 10/259; ह़ाकिम : 2/71) ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मोमिन जन्नत में अपने तख़्त पर आराम के साथ निहायत शान से तकिया लगाए बैठा हुआ होगा। ख़ादिमों की क़तारें इधर उधर खड़ी होंगी जो दरवाज़े वाले ख़ादिम से फ़रिश्ता इजाज़त माँगेगा वह दूसरे ख़ादिम से कहेगा वह और से वह और से यहाँ तक कि मोमिन से पूछा जाएगा। मोमिन इजाज़त देगा कि उसे आने दो। यूँ ही एक दूसरे को पैग़ाम पहुँचाएगा और आख़िरी ख़ादिम फ़रिश्ते को इजाज़त देगा और दरवाज़ा खोल देगा और आएगा और सलाम करेगा और चला जाएगा। एक रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) हर साल के सिरे पर शोहदा की क़ब्रों पर आते और कहते (سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ) (त़ब्री : 20344; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और इसी त़रह़ अबूबक्र, उ़मर, उ़स्मान (रज़ि.) भी (इसकी सनद ठीक नहीं।)

***

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٢٥

तर्जुमा : ''जो लोग अल्लाह के वादे को उसकी मज़बूती के बाद तोड़ देते हैं और जिन चीज़ों के जोड़ने का हुक्मे रब्बानी है उन्हें तोड़ते रहते हैं और मुल्क में फ़साद फैलाते रहते हैं उन पर लानतें हैं और उनके लिए बुरा घर है।'' (25)

नाफ़र्मान बन्दों की अ़लामात (पहचान) (आयत 25) : मोमिनों की सिफ़तें ऊपर बयान हुईं कि वह वादे के पूरे, रिश्तों नातों के मिलाने वाले होते हैं। फिर उनका अज्र बयान हुआ कि वह जन्नतों के मालिक बनेंगे। अब यहाँ उन बदनसीबों का ज़िक्र हो रहा है जो उनके ख़िलाफ़ ख़साइल रखते थे। न अल्लाह तआ़ला के वादों का लिहाज़ करते थे न सिलह रह़मी और न अह़कामे रब्बानी की पाबंदी का ख़्याल रखते थे। यह लअ़नती गिरोह है और बुरे अंजाम वाला है। ह़दीस में है ''मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं, बातों में झूठ बोलना, वादों के ख़िलाफ़ करना, अमानत में ख़यानत करना।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाबो अ़लामातिल मुनाफ़िक़ : 23; सह़ीह़ मुस्लिम : 59)

एक ह़दीस में है ''झगड़ों में गालियाँ बकना।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाबो अ़लामातिल

मुनाफ़िक़ : 34; सहीह मुस्लिम : 58) इस ख़स्लत के लोग रहमते इलाही से दूर हैं, उनका अंजाम बुरा है, यह जहन्नमी गिरोह है। यह छः ख़स्लतें हुईं जो मुनाफ़िक़ीन से अपने ग़ल्बा के वक़्त ज़ाहिर होती हैं। बातों में झूठ, वादाख़िलाफ़ी, अमानत में ख़यानत, अल्लाह के अ़हद को तोड़ देना, अल्लाह तआ़ला के मिलाने के हुक्म की चीज़ों को न मिलाना, मुल्क में फ़साद फैलाना और यह जब दबे हुए होते हैं तब भी झूठ, वादाख़िलाफ़ी और ख़यानत करते हैं।

***

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह तआ़ला जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ाता है और घटाता है यह तो दुनिया की ज़िन्दगी में मस्त हो गए। हालँकि दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में निहायत हक़ीर पूँजी है। (26) काफ़िर कहते हैं कि इस पर कोई निशानी क्यूँ नाज़िल नहीं की गई? तू जवाब दे कि जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे कर देता है और जो उसकी तरफ़ झुके उसे रास्ता दिखा देता है।(27) जो लोग ईमान लाए उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से इत्मिनान हासिल करते हैं। याद रखो अल्लाह के ज़िक्र से ही दिलों को तसल्ली हासिल होती है। (28) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए उनके लिए ख़ुशहाली है और बेहतरीन ठिकाना है।'' (29)

दुनिया की हक़ीक़त (आयत 26-29) : अल्लाह तआ़ला जिसकी रोज़ी को बढ़ाना चाहे क़ादिर है जिसे तंग रोज़ी देना चाहे क़ादिर है। यह सबकुछ हिक्मत व अ़दल से हो रहा है। काफ़िरों को दुनिया पर सहारा हो गया। यह आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गए। समझने लगे कि यहाँ की कुशादगी कोई हक़ीक़ी और भली चीज़ है। हालाँकि दरअसल यह मोहलत है और शुरू है आहिस्ता पकड़ होगी। लेकिन इन्हें कोई तमीज़ नहीं। मोमिनों को जो आख़िरत मिलने वाली है उसके मुक़ाबिल तो यह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ नहीं । यह निहायत नापायदार और हक़ीर चीज़। आख़िरत बहुत बड़ी और बेहतर चीज़। लेकिन उ़मूमन लोग दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देते हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने अपने कलिमा की उँगली से इशारा करके फ़र्माया कि ''इसे कोई समुन्द्र में डुबो दे और

देखे कि इसमें कितना पानी आता है? जितना यह पानी समुन्द्र के मुक़ाबले पर है उतनी ही दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में है।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़नाउद्दुनिया व बयानुल ह़श्रि यौमल क़ियामति : 2858) एक छोटे छोटे कानों वाले बकरी के मरे हुए बच्चे को रास्ते में पड़ा हुआ देखकर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जैसा यह उन लोगों के नज़दीक है जिनका यह था उससे भी ज़्यादा बेकार और नाचीज़ अल्लाह तआ़ला के सामने सारी दुनिया है।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुल मोमिन व जन्नतुल काफ़िर : 2957; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2593; अह़मद : 1/329)

जन्नतियों पर अल्लाह तआ़ला के इन्आमात (आयत 27-29) : मुश्रिकीन का एक एतिराज़ बयान हो रहा है कि अगले नबियों की तरह़ यह हमारा कहा हुआ कोई मोजिज़ा क्यूँ नहीं दिखाता? इसकी पूरी बह़स कई बार गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआ़ला की कुदरत तो है लेकिन अगर फिर भी यह टस से मस न हुए तो तहस नहस करके उड़ा दिया जाएगा। ह़दीस में है कि ''अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नबी (ﷺ) पर वह़ी आई कि इनकी चाहत के मुताबिक़ मैं सफ़ा पहाड़ को सोने का कर देता हूँ। ज़मीने अरब में मीठे दरियाओं की रेल पेल कर देता हूँ, पहाड़ी ज़मीन को ज़राअती ज़मीन से बदल देता हूँ। लेकिन फिर भी अगर यह ईमान न लाए तो इन्हें वह सज़ा करूँगा जो किसी को न हुई हो। अगर चाहो तो यह कर दूँ और अगर चाहो तो इनके लिए तौबा और रह़मत का दरवाज़ा खुला रहने दूँ। तो आपने दूसरी सूरत पसंद की।'' (अह़मद : 1/242; वहुव ह़सन) सच है हिदायत ज़लालत अल्लाह तआ़ला के हाथ है वह किसी मोजिज़े के देखने पर मोक़ूफ़ नहीं। बेईमानों के लिए निशानात और डरावे सब बेकार हैं। जिन पर कलिम-ए-अ़ज़ाब सादिक़ आ चुका है वह तमामतर निशानात देखकर भी नहीं मानेंगे। हाँ! अ़ज़ाबों को देखकर तो पूरे ईमान वाले बन जाएँगे लेकिन वह महज़ बेकार चीज़ है फ़र्माता है (وَلَوْ أَنَّنَا) (6/अन्आम : 111) यानी अगर हम इन पर फ़रिश्ते उतारते और इनसे मुर्दे बातें करते और हर छुपी चीज़ इन के सामने ज़ाहिर कर देते जब भी इन्हें ईमान नसीब न होता। हाँ! अगर अल्लाह तआ़ला चाहे तो और बात है लेकिन इनमें अक्सर जाहिल हैं। जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ झुके, उससे मदद चाहे उसकी तरफ़ आजिज़ी करे वह राह पा जाता है जिनके दिलों में ईमान जम गया है जिनके दिल अल्लाह की तरफ़ झुकते हैं उसके ज़िक्र से इत्मिनान ह़ासिल करते हैं। राज़ी ख़ुशी हो जाते हैं और फ़िल वाक़ेअ ज़िक्रे इलाही इत्मिनाने दिल की चीज़ भी है। ईमान वालों और नेककारों के लिए ख़ुशी और नेक फ़ाली और आँखों की ठण्डक है। उनका अंजाम अच्छा है, यह मुस्तह़िक़े मुबारकबाद हैं। यह भलाई के समेटने वाले हैं। इनका लौटना बेहतर है। इनका अ़मल नेक है। मरवी है कि तूबा से मुराद मुल्के ह़ब्श है और नाम है जन्नत का और मुराद इससे जन्नत है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं जन्नत की जब पैदाइश हो चुकी उस वक़्त जनाब बारी तआ़ला ने यही फ़र्माया था। कहते हैं कि जन्नत में एक दरख़्त का नाम भी तूबा है कि सारी जन्नत में उसकी शाख़ें फैली हुई हैं। हर घर में उसकी शाख़ मौजूद है। अल्लाह तआ़ला ने उसे अपने हाथ से बोया है। लूअ लूअ के दाने से पैदा किया है और बहुक्मे इलाही यह बढ़ा और फैला है। उसी की जड़ों से जन्नती शहद और शराब और पानी और दूध की नहरें जारी होती हैं। एक मरफ़ूअ ह़दीस में है ''तूबा नामी जन्नत का एक दरख़्त है सौ साल के रास्ते का। उसी के ख़ोशों से जन्नतियों के लिबास निकलते हैं।'' (अह़मद : 3/71; व सनदुहू

ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1373; इब्ने हि़ब्बान : 7413; त़ब्री : 13/149) मुस्नद अह़मद में है कि एक शख़्स ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! जिसने आपको देख लिया और आप पर ईमान लाया उसे मुबारक हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! उसे भी मुबारक हो और उसे दुगुनी मुबारक हो जिसने मुझे न देखा और मुझ पर ईमान लाया।'' एक शख़्स ने पूछा, तूबा क्या है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जन्नती दरख़्त है जो सौ साल की राह तक फैला हुआ है। जन्नतियों के लिबास उसकी शाख़ों से निकलते हैं।'' (इस रिवायत का हुक्म भी साबिक़ा रिवायत का है। लेकिन इसमें (तूबा लिमन रआनी व आमना बी सुम्मा तूबा लिमन आमना बी वलम यरानी) के अल्फ़ाज़ सही सनद से साबित हैं।) बुख़ारी व मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''जन्नत में एक दरख़्त है कि सवार एक सौ साल तक उसके साये में चलता रहेगा लेकिन वह ख़त्म न होगा।'' और रिवायत में है कि ''चाल भी तेज़ और सवारी भी तेज़ चलने वाली।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर् रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6552, 6553; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2827, 2828) स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में आयत (وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ) (56/वाक़िया : 30) की तफ़्सीर में भी यही है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअफ़ी सिफ़तिल जन्नति व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3252; तिर्मिज़ी : 3293) और ह़दीस में है ''सत्तर साल या सौ साल उसका नाम शज्रतुल ख़ुल्द है।'' (अह़मद : 2/455; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज़ीद तख़्रीज के लिए देखिए मुस्नद त़यालिसी : 2547; दारमी : 2839) सिदरतुल मुंतहा के ज़िक्र में आप (ﷺ) ने फ़र्माया है ''उसकी एक शाख़ के साये तले एक सौ साल तक सवार चलता रहेगा और सौ सौ सवार उसकी एक शाख़ तले ठहर सकते हैं उसमें सोने की टिड्डियाँ हैं, उसके फल बड़े-बड़े मटकों के बराबर हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति सिमारे अहलिल जन्ना : 2541 वहुव ह़सन) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''हर जन्नती को तूबा के पास ले जाएँगे और उसे इख़्तियार दिया जाएगा कि जिस शाख़ को चाहे पसंद कर ले। सफ़ेद, सुर्ख़, ज़र्द, स्याह जो निहायत ख़ूबसूरत नर्म और अच्छी होंगी।'' (इस्माईल बिन अ़याश व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 4/294) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं तूबा को हुक्म होगा कि मेरे बन्दों के लिए बेहतरीन चीज़ें टपका। तो उसमें से घोड़े और ऊँट बरसने लगेंगे, सजे सजाए और ज़ीन लगाम वग़ैरह कसे कसाए और उ़म्दा बेहतरीन लिबास वग़ैरह। इब्ने जरीर (रह़.) ने इस जगह एक अ़जीबो ग़रीब असर लाया गया है। वहब (रह़.) कहते हैं कि जन्नत में एक दरख़्त है जिसका नाम तूबा है जिसके साये तले सवार सौ साल तक चलता रहेगा लेकिन ख़त्म न होगा। उसकी तरोताज़गी खुले हुए चमन की त़रह़ है। उसके पत्ते बेहतरीन और उ़म्दा हैं। उसके ख़ोशे अ़ंबरीन हैं उसके कंकर याक़ूत हैं। उसकी मिट्टी काफ़ूर है। उसका गारा मुश्क है। उसकी जड़ से शराब की, दूध की और शहद की नहरें बहती हैं। उसके नीचे जन्नतियों की मज्लिसें होंगी। यह बैठे हुए होंगे, जो उनके पास फ़रिश्ते ऊँटनियाँ लेकर आएँगे जिनकी ज़ंजीरें सोने की होंगी। जिनके चेहरे चराग़ जैसे चमकते होंगे। बाल रेशम जैसे नर्म होंगे जिन पर याक़ूत जैसे पालान होंगे। जिन पर सोना जड़ा हुआ होगा। जिन पर रेशमी झूलें होंगी। वह ऊँटनियाँ उनके सामने पेश करेंगे और कहेंगे कि यह सवारियाँ तुम्हें भिजवाई गई हैं और दरबारे इलाही में तुम्हारा बुलावा है। यह उन पर सवार होंगे। वह परिन्दों की रफ़्तार से भी तेज़ रफ़्तार होंगी। जन्नती एक दूसरे से मिलकर चलेंगे। ऊँटनियों के कान से कान भी न मिलेंगे। पूरी फ़र्मांबरदारी के साथ चलेंगी। रास्ते में जो दरख़्त आएँगे वह ख़ुद-ब-ख़ुद हट जाएँगे कि किसी को अपने साथी से अलग न होना

पड़े। यूँ ही रहमानो रहीम अल्लाह तआला के पास पहुँचेंगे। अल्लाह तआला अपने चेहरे से पर्दे हटा देगा। यह अपने रब के चेहरे को देखेंगे और कहेंगे (अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामु व इलैकस्सलामु व हक़्क़ुल्लकल जलालु वल इकराम) उनके जवाब में अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त कहेगा (अनस्सलामु व मिन्निस्सलामु) तुम पर मेरी रहमत साबित हो चुकी और मुहब्बत भी मरे उन बन्दों को मरहबा हो जो बग़ैर देखे मुझसे डरते रहे। मेरी फ़र्मांबरदारी करते रहे। जन्नती कहेंगे बारी तआला! न तो हमसे तेरी इबादत का हक़ अदा हुआ न तेरी पूरी क़द्र हुई। हमें इजाज़त दे कि तेरे सामने सज्दा करें। अल्लाह कहेगा यह मेहनत की जगह नहीं, न इबादत की यह तो नेअमतों राहतों और मालामाल होने की जगह है। इबादतों की तक्लीफ़ जाती रही ज़े लूटने के दिन आ गए। जो चाहो माँगो, पाओगे। तुममें से जो शख़्स जो माँगे उसे दूँगा पस यह माँगेंगे। कम से कम सवाल वाला कहेगा कि ऐ परवरदिगार! तूने दुनिया में जो पैदा किया था जिसमें तेरे बन्दे हाय वाय कर रहे थे। मैं चाहता हूँ कि शुरू दुनिया से आख़िर दुनिया तक जितना कुछ था मुझे अता फ़र्मा। अल्लाह तआला फ़र्माएगा तूने कुछ न माँगा। अपने मर्तबे से बहुत कम चीज़ माँगी। अच्छा हमने दी। मेरी बख़्शिश और देने में क्या कमी है? फिर फ़र्माएगा जिन चीज़ों तक मेरे इन बन्दों के ख़्यालात की रसाई भी नहीं वह इन्हें दो। चुनाँचे दी जाएँगी यहाँ तक कि उनकी ख़्वाहिशें पूरी हो जाएँगी।

उन चीज़ों में जो उन्हें यहाँ मिलेंगी तेज़ घोड़े होंगे हर मस्नद पर याक़ूती तख़्त होगा, हर तख़्त पर सोने का एक डेरा होगा हर डेरे में जन्नती फ़र्श होगा जिन पर बड़ी बड़ी आँखों वाली दो दो हूरें होंगी जो दो दो हुल्ले (जोड़े) पहने हुए होंगी जिनमें जन्नत के तमाम रंग होंगे और तमाम ख़ुश्बूएँ उन ख़ेमों के बाहर से उनके चेहरे ऐसे चमकते होंगे गोया वह बाहर बैठी हों। उनकी पिण्डली के अंदर का गूदा बाहर से नज़र आ रहा होगा, जैसे लाल याक़ूत में डोरा पिरोया हुआ हो, वह ऊपर से नज़र आ रहा हो। हर एक दूसरे पर अपनी फ़ज़ीलत ऐसी जानती होगी जैसी फ़ज़ीलत सूरज की पत्थर पर। इस तरह जन्नती की निगाह में भी दोनों ऐसी ही होंगी। यह उनके पास जाएगा और उनसे बोस व किनार में मशग़ूल हो जाएगा। वह दोनों उसे देखकर कहेंगी, वल्लाह! हमारे तो ख़्याल में भी न था कि अल्लाह तआला हमें तुम्हारे जैसा शौहर अता करेगा। अब बहुक्मे इलाही उसी तरह सफ़बंदी के साथ सवारियों पर यह वापिस होंगे और अपनी मंज़िलों में पहुँचेंगे। देखो तो सही अल्लाह तआला वह्हाब ने उन्हें क्या-क्या नेअमतें अता की हैं? वहाँ बुलंद दर्जा लोगों में ऊँचे ऊँचे बालाख़ानों में जो सिर्फ़ मोती के बने हुए होंगे। जिनके दरवाज़े सोने के होंगे। जिनके तख़्त याक़ूत के होंगे, जिनके फ़र्श नर्म और मोटे रेशम के होंगे जिनके मिम्बर नूर के होंगे जिनकी चमक सूरज की चमक से बालातर होगी। आला इल्लिय्यीन में उनके महल होंगे। याक़ूत के बने हुए नूरानी जिनके नूर से आँखों की रोशनी जाती रहे। लेकिन अल्लाह तआला उनकी आँखें ऐसी न करेगा। जो महल्लात लाल याक़ूत के होंगे उनमें सब्ज़ रेशमी फ़र्श होंगे और जो ज़र्द याक़ूत के होंगे उनके फ़र्श लाल मख़्मल के होंगे जो ज़मर्रुद और सोने के जड़ाव के होंगे उन तख़्तों के पाये जवाहिर के होंगे। उन पर छतें लूअ लूअ की होंगी। उनके बुर्ज मरजान के होंगे। उनके पहुँचने से पहले ही अल्लाह तआला के तोहफ़े वहाँ पहुँच चुके होंगे। सफ़ेद याक़ूती घोड़े ग़िल्मान लिए खड़े होंगे जिनका सामान चाँदी का जड़ाव का होगा। उनके तख़्त पर आला रेशमी नर्म दबीज़ फ़र्श बिछे होंगे। यह उन सवारियों

पर सवार होकर बतकल्लुफ़ जन्नत में जाएँगे। देखेंगे कि उनके घरों के पास नूरानी मिम्बरों पर फ़रिश्ते उनके इस्तिक़्बाल के लिए बैठे हुए हैं। वह उनका शानदार इस्तिक़्बाल करेंगे मुबारकबाद देंगे, मुसाफ़ा करेंगे। फिर यह अपने घरों में दाख़िल होंगे, इन्आमाते रब्बानी वहाँ मौजूद पाएँगे। अपने महल्लात के पास दो जन्नतें हरी भरी पाएँगे और दो फली फूली जिनमें दो चश्मे पूरी रवानी से जारी होंगे और हर क़िस्म के जोड़ेदार मेवे होंगे और ख़ेमों में पाकदामन भोली भाली पर्दानशीन हूरें होंगी। जब यह यहाँ पहुँचकर राहत व आराम में होंगे उस वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़र्माएगा मेरे प्यारे बन्दो! तुमने मेरे वादे सच्चे पाए? क्या तुम मेरे सवाबों से ख़ुश हो गए? वह कहेंगे, कि ऐ परवरदिगार! हम ख़ूब ख़ुश हो गए बहुत ही रज़ामंद हैं, दिल से राज़ी हैं कली कली खिली हुई है। तू भी हमसे ख़ुश रह, अल्लाह तआला कहेगा अगर मेरी रज़ामंदी न होती तो मैं अपने इस मेहमानख़ाने में तुम्हें कैसे दाख़िल होने देता? अपना दीदार कैसे कराता? मेरे फ़रिश्ते तुमसे मुसाफ़ा क्यूँ करते? तुम ख़ुश रहो, आराम के साथ रहो, तुम्हें मुबारक हो, तुम फलो फूलो और सुख चेन से रहो, मेरे यह इन्आमात घटने और ख़त्म होने वाले नहीं, उस वक़्त वह कहेंगे अल्लाह तआला ही की ज़ात तमाम तारीफ़ के लिए सज़ावार है जिसने हमसे ग़म व रंज को दूर कर दिया और ऐसे मक़ाम पर पहुँचा दिया कि जहाँ हमें कोई तक्लीफ़, कोई मशक़्क़त नहीं, यह उसी का फ़ज़्ल है, वह बड़ा ही बख़्शने वाला और क़द्रदान है, यह स्याक़ ग़रीब है और यह असर अजीब है, हाँ! इसके कुछ शवाहिद भी मौजूद हैं। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''अल्लाह तआला उस बन्दे से जो सबसे अख़ीर में जन्नत में जाएगा, फ़र्माएगा कि माँग, वह माँगता जाएगा और करीम देता जाएगा, यहाँ तक कि उसका सवाल पूरा हो जाएगा, अब उसके सामने कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहेगी, तो अब अल्लाह तआला ख़ुद उसे याद दिलाएगा कि यह माँग यह माँग यह माँगेगा और पाएगा फिर अल्लाह तआला फ़र्माएगा यह सब मैंने तुझे दे दिया और इतना ही और भी दस मर्तबा अता करेगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब फ़ज़्लस्सुजूद : 806; सहीह मुस्लिम : 182; इब्ने हिब्बान : 7429; अहमद : 2/257) सहीह मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे क़ुदसी में है कि ''ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे अगले पिछले इंसान जिन्नात सब एक मैदान में खड़े हो जाएँ और मुझसे दुआएँ करें और माँगें, मैं हर एक के तमाम सवालात पूरे करूँ लेकिन मेरे मिल्क में इतनी भी कमी न आएगी जितनी कमी सूई को समुन्द्र में डुबोने से समुन्द्र के पानी में आए...''। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577; इब्ने हिब्बान : 619; अहमद : 5/160; अल्अदबुल मुफ़रद : 490) ख़ालिद बिन मअदान (रह.) कहते हैं जन्नत के एक दरख़्त का नाम तूबा है उसमें थन हैं जिनसे जन्नतियों के बच्चे दूध पीते हैं कच्चे गिरे हुए बच्चे जन्नत की नहरों में हैं, क़यामत के क़ायम होने तक फिर चालीस साल के बनकर अपने माँ बाप के साथ जन्नत में रहेंगे।

***

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝

तर्जुमा :"इसी तरह हमने तुझे इस उम्मत में भेजा जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं कि तू उन्हें हमारी तरफ़ से जो वही तुझ पर उतरे पढ़कर सुनाए, यह अल्लाह रहमान के मुंकिर हैं तू कह दे कि मेरा पालने वाला तो वही है उसके सिवा दरहक़ीक़त कोई भी लायक़े इबादत नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की जानिब मेरा रुजूअ (पलटना) है।" (30)

मुहम्मद (ﷺ) की हौसला अफ़्ज़ाई (आयत 30) : इर्शाद होता है कि जैसे इस उम्मत की तरफ़ हमने तुझे भेजा कि तू इन्हें कलामे इलाही पढ़कर सुनाए उसी तरह तुझसे पहले और रसूलों को उन अगली उम्मतों की तरफ़ भेजा था, उन्होंने भी पैग़ामे इलाही अपनी अपनी उम्मतों को पहुँचाया मगर उन्होंने झुठलाया इसी तरह तू भी झुठलाया गया तो तुझे तंगदिल न होना चाहिए हाँ! इन झूठलाने वालों को उनका अंजाम देखना चाहिए जो इनसे पहले थे कि अज़ाबे इलाही ने उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया पस तेरी तक्ज़ीब तो उनकी तक्ज़ीब से भी हमारे नज़दीक ज़्यादा नापसंद है अब यह देख लें कि इन पर कैसे अज़ाब बरसते हैं। यही फ़र्मान आयत (تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا) (16/नहल : 63) में और आयत (وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ) (6/अन्आम : 34) में है कि देख ले हमने अपने मानने वालों की किस तरह मदद की? और उन्हें कैसे ग़ालिब किया? तेरी क़ौम को देख कि रहमान से कुफ़्र करती है वह अल्लाह तआला के इस वस्फ़ और नाम को मानती ही नहीं, हुदेबिया की सुलह के लिखने के वक़्त उस पर अड़ गए कि हम (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) लिखने नहीं देंगे, हम नहीं जानते कि रहमान और रहीम क्या है, पूरी हदीस बुख़ारी (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूत फ़िल जिहादि वल मुसालिहति मअ़ अहलिल हर्ब व किताबतिश्शुरूत : 2731) में मौजूद है। कुरआन में है (قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ) (17/बनी इस्राईल : 110) अल्लाह कहकर उसे पुकारो, रहमान कहकर उसे पुकारो, वह तमाम बेहतरीन नामों वाला है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, "अल्लाह तआला के नज़दीक अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रहमान निहायत प्यारे नाम हैं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब अन्नही अनित्तुकन्नि बि अबिल क़ासिम : 2132; अबूदाऊद : 4949; तिर्मिज़ी : 2834; इब्ने माजा : 3728) जिससे तुम कुफ़्र कर रहे हो, मैं तो उसे मानता हूँ वही मेरा परवरदिगार है, मेरे भरोसे उसी के साथ हैं उसी की जानिब मेरी तमाम तवज्जो और रुजूअ और दिल का मेल है उसके सिवा कोई इन बातों का मुस्तहिक़ नहीं।

***

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ
الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا
يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ
وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۳۱﴾

तर्जुमा : "अगर बिलफ़र्ज़ कुरआन के साथ पहाड़ चला दिए जाते या ज़मीन टुकड़े टुकड़े करदी जाती या मुर्दों से बातें करा दी जातीं फिर भी इन्हें ईमान हासिल न होता। बात यह है कि सब काम अल्लाह तआला के हाथ में है तो क्या ईमान वालों को इस बात पर दिल जमई नहीं कि अगर अल्लाह चाहे तो तमाम लोगों को हिदायत कर दे, कुफ़्फ़ार को तो उनके कुफ़्र के बदले हमेशा ही कोई न कोई सख़्त सज़ा पहुँचती रहेगी या उनके मकानों के इर्द-गिर्द घूमती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे, अल्लाह तआला वादाख़िलाफ़ी नहीं करता।" (31)

कुरआने करीम की तारीफ़ (आयत 31) : अल्लाह तआला इस पाक किताब कुरआन करीम की तारीफ़ें बयान कर रहा है कि अगर अगली किताबों में से किसी किताब के साथ पहाड़ अपनी जगह से टल जाने वाले और ज़मीन फट जाने वाली और मुर्दे जी उठने वाले होते तो यह कुरआन जो तमाम अगली किताबों से बढ़ चढ़कर है उन सबसे ज़्यादा इस बात का अहल था इसमें तो वह मोजिज़ा बयानी है कि सारे जिन्नात और इंसान मिलकर भी इस जैसी एक सूरत न बना सके, यह मुश्रिकीन इसके भी मुंकिर हैं। तो मामला अल्लाह तआला की सुपुर्दकर्दा मालिके कुल है तमाम कामों का मरजअ वही है वह जो चाहता है हो जाता है, जो नहीं चाहता हर्गिज़ नहीं होता, उसके भटकाए हुए की रहबरी और उसके राह दिखाए हुई की गुमराही किसी के क़ब्ज़े में नहीं, यह याद रहे कि कुरआन का इत्लाक़ अगली आसमानी किताबों पर भी होता है इसलिए कि वह सबसे मुश्तक़ है, मुस्नद में है हज़रत दाऊद (عليه السلام) पर कुरआन इस क़द्र आसान कर दिया गया था कि उनके हुक्म से सवारी कसी जाती, उसके तैयार होने से पहले ही वह कुरआन को मुकम्मल कर लेते। सिवा अपने हाथ की कमाई के वह और कुछ न खाते थे। (अहमद : 2/314; सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व आतैना दाऊदा ज़बूरा) : 3417; इब्ने हिब्बान : 6225) पस मुराद यहाँ कुरआन से ज़बूर है। क्या ईमान वाले अब तक इससे मायूस नहीं हुए कि तमाम मख़्लूक ईमान नहीं लाने की। क्या वह अल्लाह तआला की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ कर सकते हैं। रब की यह मंशा ही नहीं अगर होती तो रूए ज़मीन के तमाम लोग मुसलमान हो जाते। भला इस कुरआन के बाद किस मोजिज़े की ज़रूरत दुनिया को रह गइ? इससे बेहतर, इससे वाज़ेह, इससे साफ़, इससे ज़्यादा दिलों में घर करने वाला और कौनसा कलाम होगा? इसे तो अगर बड़े बड़े पहाड़ पर उतारा जाता तो वह भी ख़शिय्यते इलाही से चकना चूर हो जाता। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर नबी को ऐसी चीज़ मिली कि लोग उस पर ईमान लाएँ, मेरी ऐसी चीज़ अल्लाह तआला की यह वही (कलामे इलाही) है। पस मुझे उम्मीद है कि सब नबियों से ज़्यादा ताबेदारों वाला मैं हो जाऊँगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, बाब कैफ़ नुज़ुलुल वही व अव्वलु मा नुज़िला : 4981; सहीह मुस्लिम : 152) मतलब यह है कि अम्बिया (عليهم السلام) के मोजिज़े उनके साथ ही चले गये और मेरा यह मोजिज़ा जीता जागता रहती दुनिया तक रहेगा, न इसके अजायबात ख़त्म हों न यह कसरते तिलावत से पुराना हो, न इससे उलमा का पेट भरे। यह फ़ज़्ल है दिल्लगी नहीं। जो सरकश इसे छोड़ देगा, अल्लाह उसे तोड़ देगा। जो इसके सिवा किसी और में हिदायत तलाश करेगा उसे अल्लाह तआला गुमराह कर देगा। अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि काफ़िरों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा अगर आप यहाँ के पहाड़ यहाँ से हटवा दें और यहाँ की ज़मीन खेती के

क़ाबिल हो जाए और जिस त़रह़ सुलेमान (عليه السلام) ज़मीन की खुदाई हवा से कराते थे आप भी करा दीजिए या जिस त़रह़ (ह़ज़रत ईसा عليه السلام) मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे आप भी कर दीजिए। इस पर यह आयत उतरी। (इसकी सनद में अ़तिया बिन सअ़द औफ़ी ज़ईफ़ रावी है। अबू ह़ातिम और नसाई ने इसे ज़ईफ़ कहा है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब : 7/255) क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं मतलब यह है कि अगर किसी कुरआन केसाथ यह उमूर ज़ाहिर होते तो तुम्हारे इस कुरआन के साथ भी होते। सब कुछ अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है लेकिन वह ऐसा नहीं करता ताकि तुम सबको आज़मा ले अपने इख़्तियार से ईमान लाओ या न लाओ। क्या ईमान वाले नहीं जानते (ययअस) के बदले दूसरी जगह (यतबय्यन) भी है। ईमान वाले इनकी हिदायत से मायूस हो चुके थे। हाँ! अल्लाह तआ़ला के इख़्तियारात में किसी का बस नहीं वह अगर चाहे तमाम मख़्लूक़ को हिदायत पर खड़ा कर दे। यह कुफ़्फ़ार बराबर देख रहे हैं कि इनके झुठलाने की वजह से अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब बराबर इन पर बरसते रहते हैं या इनके आस पास आ जाते हैं। फिर भी यह नसीह़त ह़ासिल नहीं करते? जैसे फ़र्मान है (وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ) (46/अह़क़ाफ़ : 27) यानी हमने तुम्हारे आसपास की बहुत सी बस्तियों को उनके बुरे कामों की वजह से ग़ारत व बर्बाद कर दिया और त़रह़-त़रह़ से अपनी निशानियाँ ज़ाहिर कीं कि लोग बुराइयों से दूर रहें और आयत में है (أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا) (13/रअ़द : 41) क्या वह नहीं देख रहे कि हम ज़मीन को घटाते चले आ रहे हैं। क्या अब भी अपना ही ग़ल्बा मानते चले जाएँगे। (तहुल्लु) का फ़ाइल (क़ारिअ़ा) है। यही ज़ाहिर और मुताबिक़े रवानी इबारत है। लेकिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि क़ारिअ़ा पहुँचे यानी छोटा सा लश्करे इस्लामी या तो ख़ुद उनके शहर के क़रीब उतर पड़े यानी मुह़म्मद (ﷺ) यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे। इससे मुराद फ़तहे मक्का है। आपसे ही मरवी है कि क़ारिअ़ा से मुराद आसमानी अ़ज़ाब है और आसपास उतरने से मुराद हुज़ूर (ﷺ) का अपने लश्करों समेत उनकी ह़ुदूद में पहुँच जाना है और उनसे जिहाद करना है। मुजाहिद, क़तादा, इक्रिमा, इन सबका क़ौल है कि यहाँ रब के वादे से मुराद फ़तहे मक्का है। लेकिन ह़सन बसरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद क़यामत का दिन है। अल्लाह का वादा अपने रसूलों की नुसरत व इम्दाद करना है। वह कभी टलने वाला नहीं। उन्हें और उनके ताबेदारों को ज़रूर बुलंदी नसीब होगी। जैसे फ़र्मान है (فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ) (14/इब्राहीम : 47) यह ग़लत़ गुमान हर्गिज़ न करो कि अल्लाह अपने रसूलों से वादाख़िलाफ़ी करे। अल्लाह ग़ालिब है और बदला लेने वाला भी।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन तुझसे पहले के पैग़म्बरों के साथ मस्ख़रापन किया गया था और मैंने भी काफ़िरों को ढील दी थी फिर उन्हें पकड़ लिया था पस मेरे अ़ज़ाब की कैसी कुछ तक्लीफ़ हुई?" (32)

अम्बिया (عليهم السلام) के साथ मज़ाक़ करने वालों को भी मोहलत मिली (आयत 32) : अल्लाह तआला अपने रसूल (ﷺ) को तसल्ली देता है कि आप अपनी क़ौम के ग़लत रवैया से रंजो फ़िक्र न करें आपसे पहले के पैग़म्बरों का भी यूँ ही मज़ाक़ उड़ाया गया था। मैंने उन काफ़िरों को भी कुछ देर तो ढील दी थी। आख़िरकार बुरी तरह पकड़ लिया था और खोजड़ा खोद दिया था। तुझे मालूम है कि किस कैफ़ियत से मेरे अज़ाब उन पर आए? और उनका अंजाम कैसा कुछ हुआ? जैसे फ़र्मान है बहुत सी बस्तियाँ हैं जो बावजूद ज़ुल्म के बहुत दिनों दुनिया में मोहलत लिए रहीं। (22/हज्ज : 48) लेकिन आख़िरकार अपनी बदआमालियों की वजह से अज़ाबों का शिकार हुईं। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ज़ुल्म को ढील देता है फिर जब पकड़ता है तो ज़ुल्म हैरान रह जाता है।'' फिर आपने आयत (وَكَذٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ) (11/हूद : 102) की तिलावत की। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़ज़ रब्बुक...) : 4686; सहीह मुस्लिम : 2583)

***

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

तर्जुमा : ''क्या वो अल्लाह जो कि ख़बर लेने वाला है हर शख़्स की उसके किये हुए आमाल पर उन लोगों ने अल्लाह के शरीक ठहराए हैं कि ज़रा उनके नाम तो लो क्या अल्लाह को वह बातें बताते हो जो वह ज़मीन में जानता ही नहीं या सिर्फ़ ऊपरी ऊपरी बातें बना रहे हो, बात अस़ल में यह है कि कुफ़्र करने वालों को उनके मकर भले समझाए गए हैं और वह सही राह से रोक दिए गए हैं। जिसको अल्लाह गुमराह कर दे उसको राह दिखाने वाला कोई नहीं।'' (33)

अल्लाह तआला ही हक़ीक़ी मुहाफ़िज़ है (आयत 33) : अल्लाह तआला हर इंसान के आमाल का मुहाफ़िज़ है। हर एक के आमाल को जानता है। हर नफ़्स पर निगहबान है। हर आमिल के ख़ैर व शर्र के अमल से बाख़बर है। कोई चीज़ उससे छुपी हुई नहीं। कोई काम उसकी बेख़बरी में नहीं होता। हर हालत का उसे इल्म है, हर अमल पर वह मौजूद है। हर पत्ते के झड़ने का उसे इल्म है। हर जानदार की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। हर एक के ठिकाने का उसे इल्म है। हर बात उसकी किताब में लिखी हुई है, खुली छुपी हर बात को वह जानता है तुम जहाँ हो वहाँ अल्लाह की कुदरत तुम्हारे साथ है। तुम्हारे आमाल देख रहा है। इन सिफ़तों वाला रब क्या तुम्हारे इन झूठे मअबूदों जैसा है? जो न सुनें, न देखें, न अपने लिए किसी चीज़ के मालिक, न किसी और के नफ़ा नुक़सान का उन्हें इख़्तियार। इस जवाब को हज़फ़ कर दिया। क्योंकि दलालते कलाम मौजूद है और वह

फ़र्माने इलाही (व जअलू लिल्लाहि शुरकाअ) है। इन्होंने अल्लाह तआला के साथ औरों को शरीक ठहराया और उनकी इबादत करने लगे। तुम ज़रा उनके नाम तो बताओ उनके हालात तो बयान करो ताकि दुनिया जान ले कि सिर्फ़ बेहक़ीक़त हैं, क्या तुम ज़मीन की उन चीज़ों की ख़बर अल्लाह तआला को दे रहे हो जिन्हें वह नहीं जानता यानी जिनका वजूद ही नहीं। इसलिए कि अगर वजूद होता तो अल्लाह तआला के इल्म से बाहर न होता। क्योंकि उस पर कोई मख़्फ़ी से मख़्फ़ी चीज़ भी हक़ीक़तन मख़्फ़ी नहीं। या सिर्फ़ अटकल पच्चू बातें बना रहे हो? फ़िज़ूल गप मार रहे हैं तुमने ही आप उनके नाम गढ़ लिए तुमने ही उन्हें नफ़ा नुक़्सान का मालिक क़रार दिया और तुमने ही उनकी पूजा पाठ शुरू कर दी। यही तुम्हारे बड़े करते रहे। न तो तुम्हारे हाथ में कोई रब्बानी दलील है न और कोई दलील है। यह तो सिर्फ़ वहम परस्ती और ख़्वाहिश परवरी है। हिदायत अल्लह तआला की तरफ़ से नाज़िल हो चुकी है। कुफ़्फ़ार का मकर उन्हें भले रंग में दिखाई दे रहा है वह अपने कुफ़्र पर और अपने शिर्क पर ही नाज़ कर रहे हैं। दिन रात उसी में मशग़ूल रहते हैं और उसी की तरफ़ औरों को बुला रहे हैं। जैसे फ़र्मान है (وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ) (41/हामीम सज्दा : 25) इनके शैतानों ने इनकी बेढंगियाँ इनके सामने ज़ीनतदार कर दी हैं। यह अल्लाह तआला की राह से अपने बुरे आमाल की वजह से रोक दिए गए हैं। एक क़िरात इसकी (सद्दू) भी है यानी इन्होंने इसे अच्छा जानकर फिर औरों को इसमें फांसना शुरू कर दिया और राहे रसूल (ﷺ) से लोगों को रोकने लगे। रब के गुमराह किए हुए लोगों को कौन राह दिखा सके? जैसे फ़र्माया (وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا) (5/माइदा : 41) जिसे अल्लाह तआला फ़ित्ने में डालना चाहे तो उसके अल्लाह तआला के यहाँ तू कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता और आयत में है कि तू इनकी हिदायत का लालची हो लेकिन अल्लाह इन गुमराहों को राह दिखाना नहीं चाहता। फिर कौन है जो इनकी मदद करे? (16/नह्ल : 37)

***

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ
عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : "इनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही ज़्यादा सख़्त है। उन्हें ग़ज़बे इलाही से बचाने वाला कोई भी नहीं। (34) उस जन्नत की सिफ़त जिसका वादा परहेज़गारों को दिया गया है। यह है कि उसके नीचे से नहरें लहरें ले रही हैं उसके मेवे हमेशगी वाले हैं और उसके साये भी। यह है अंजामकार परहेज़गारों का। और काफ़िरों का अंजामकार दोज़ख़ है।" (35)

जहन्नम के अ़ज़ाब और जन्नत के नज़ारे (आयत 34, 35) : कुफ़्फ़ार की सज़ा और नेक्कार की जज़ा का ज़िक्र हो रहा है। काफ़िरों का कुफ़्र व शिर्क बयान करके उनकी सज़ा बयान की कि वह मोमिनों के हाथों क़त्लो ग़ारत होंगे। उसके साथ ही आख़िरत के सख़्ततर अ़ज़ाबों में गिरफ़्तार होंगे, जो इस दुनिया की सज़ा से कई गुना बदतर हैं। मुलाइना करने वाले मियाँ-बीवी से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि दुनिया का अ़ज़ाब आख़िरत के अ़ज़ाब से बहुत ही हल्का है। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल लिआ़न : 1493) यहाँ के अ़ज़ाब फ़ानी हैं वहाँ का बाक़ी और उस आग का अ़ज़ाब जो यहाँ की आग से सत्तर ह़िस्से ज़्यादा तेज़ है फिर क़ैद वह जो तस़व्वुर में भी न आ सके। जैसे फ़र्मान है (فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ) (89/फ़ज्र : 25) आज इस जैसे न अ़ज़ाब किसी के न इस जैसी क़ैदो बन्द किसी की। फ़र्मान है (وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا) (25/फ़ुरक़ान : 11) क़यामत के मुंकिरों के लिए हमने आग का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। दूर से ही उन्हें देखते ही शोरो ग़ुल शुरू कर देगी। वहाँ के तंग व तारीक मकानात में जब यह जकड़े हुए डाले जाएँगे तो हाय हाय करते हुए मौत माँगने लगेंगे एक ही मौत क्या माँगते हो। बहुत सी मौतें माँगो। अब बतलाओ कि यह ठीक है या जन्नते ख़ुल्द ठीक है जिसका वादा परहेज़गारों से है कि वह उनका बदला है। और उनका हमेशगी का ठिकाना। फिर नेकों का अंजाम बयान करता है कि उनसे जिन जन्नतों का वादा है उसकी एक सिफ़त तो यह है कि उसके चारों त़रफ़ नहरें जारी हैं। जहाँ चाहें पानी ले जाएँ। पानी भी न बिगड़ने वाला, फिर दूध की नहरें हैं और दूध भी ऐसा जिसका मज़ा कभी न बिगड़े और शराब की नहरें हैं, जिसमें सिर्फ़ लज़्ज़त ही लज़्ज़त है। न बदमज़ा न बेहूदा नशा और साफ़ शहद की नहरें हैं और हर क़िस्म के फल हैं और साथ ही रब की रह़मत मालिक की मग़्फ़िरत। उसके फल हमेशगी वाले हैं उसके खाने पीने की चीज़ें कभी फ़ना होने वाली नहीं। जब हुज़ूर (ﷺ) ने कुसूफ़ की नमाज़ पढ़ी थी तो स़ह़ाबा (रज़ि.) ने पूछा कि हुज़ूर (ﷺ)! हमने आपको देखा कि आप (ﷺ) ने किसी चीज़ को गोया लेने का इरादा किया था। फिर हमने देखा कि आप पिछले पैर पीछे को हटने लगे। आपने फ़र्माया, "हाँ! मैंने जन्नत को देखा था और चाहा था कि एक ख़ोशा तोड़ लूँ अगर लेता तो रहती दुनिया तक वह रहता और तुम खाते रहते।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल कुसूफ़, बाब स़लातुल कुसूफ़ जमाअ़त : 1052; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 907; इब्ने ह़िब्बान : 2832; अह़मद : 1/298) अबू यअ़ला में है कि एक दिन ज़ुहर की नमाज़ में हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे कि आप नागहाँ आगे बढ़े और हम भी बढ़े फिर हमने देखा कि आपने गोया कोई चीज़ लेने का इरादा किया फिर आप पीछे हट आए। नमाज़ के ख़ात्मा के बाद ह़ज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आज तो हमने आपको ऐसा काम करते हुए देखा कि आज से पहले कभी न देखा था आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! मेरे सामने जन्नत पेश की गई जो तरोताज़गी से महक रही थी। मैंने चाहा कि उसमें से एक ख़ोशा अंगूर का तोड़ लाऊँ लेकिन मेरे और उसके बीच आड़ कर दी गई। अगर मैं उसे तोड़ लाता तो तमाम दुनिया उसे खाती और फिर भी ज़रा सा भी कम न होता।" (अह़मद : 3/352; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़ब्दुल्लाह बिन अ़क़ील ज़ईफ़ रावी है। 3/274) इस मअ़नी की रिवायत मुस्लिम में भी है। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताब स़लातुल कुसूफ़, बाब मा उ़रिज़ा अ़लन्नबी (ﷺ) फ़ी स़लातिल कुसूफ़ मिन अम्रिल जन्नत वन्नार : 904) एक देहाती ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि जन्नत में अंगूर होंगे? आपने फ़र्माया, "हाँ!" उसने कहा, कितने बड़े ख़ोशे होंगे? फ़र्माया, "इतने बड़े कि अगर कोई काला कौआ महीना भर उड़ता रहे तो भी उस ख़ोशे से आगे न निकल सके।" (अह़मद : 4/184; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; त़बरानी : 8208; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/431; मज़ीद तख़रीज के लिए देखिए इब्ने ह़िब्बान : 7416; मवारिदुज़्ज़मआन : 2627; मुअ़जमुल औसत़ : 1/127; त़बरानी : 312) और

हदीस में है कि "जन्नती जब कोई फल तोड़ेंगे उसी वक़्त उसकी जगह दूसरा लग जाएगा।" (तब्रानी : 1449; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इबाद बिन मंसूर ज़ईफ़ मुदल्लस; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/414) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जन्नती ख़ूब खाएँगे पियेंगे लेकिन न थूक आएगी न नाक आएगी, न पेशाब न पाख़ाना, मुश्क जैसी ख़ुश्बू वाला पसीना आएगा और उसी से खाना हज़्म हो जाएगा जैसे सांस बेतकल्लुफ़ चलता है इस तरह तस्बीह व तक़्दीस इल्हाम की जाएगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नति व अहलिहा व तस्बीहिहिम फ़ीहा बुक्रतंव्वअशिय्या : 2835; इब्ने हिब्बान : 7435; दारमी : 2827; अहमद : 3/349; मुस्नदे शामिय्यीन : 3/114; मुस्नदे अबी यअला : 3/418) एक अहले किताब ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा कि आप फ़र्माते हैं जन्नती खाएँगे पियेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! हाँ! उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है कि हर शख़्स को खाने पीने और जिमाअ और शहवत की इतनी कुव्वत दी जाएगी जितनी यहाँ सौ आदमियों को मिलाकर हो।" उसने कहा, अच्छा! तो जो खाएगा पियेगा उसे पेशाब पाख़ाना की भी हाजत होगी फिर जन्नत में गंदगी कैसी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नहीं! बल्कि पसीने के रास्ते से सब हज़्म हो जाएगा और वह पसीना मुश्क बू होगा।" (अहमद : 4/367; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्अअमश मुदल्लस व अन्अन; सुननुल कुब्रा : 11478; दारमी : 2825; इब्ने हिब्बान : 7424; मवारिदुज़्ज़मआन : 2637; मुअजमुल औसत : 2/202; तब्रानी : 5/178; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/416; बिदूनि (लयुअता कुव्वता मिआ) फ़र्माते हैं कि "जिस परिन्दे की तरफ़ खाने के इरादे से जन्नती नज़र डालेगा वह उसी वक़्त भुना भुनाया उसके सामने गिर पड़ेगा।" (बज़्ज़ार : 3532; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हमीदुल अअरज ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/414; सुनन सईद बिन मंसूर : 1171) कुछ रिवायतों में है कि "फिर वह उसी तरह बहुक्मे रब्बानी ज़िन्दा होकर उड़ जाएगा।" (इब्ने अबिदुनिया, व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5509; देखिए (ज़ईफ़ुत्तर्ग़ीब : 2208) कुरआन में है वहाँ बकसरत मेवे होंगे कि न कटें न टूटें। (56/वाक़िया : 32, 33) न ख़त्म हों न घटें, साये झुके हुए शाख़ें नीची साये भी हमेशगी वाले होंगे, जैसे फ़र्मान है ईमान वाले नेक किरदार बहती नहरों वाली जन्नतों में जाएँगे वहाँ उनके लिए पाक बीवियाँ होंगी और बेहतरीन लम्बे चौड़े साये। (4/निसाअ : 20) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जन्नत के एक दरख़्त के साये तले तेज़ सवारी वाला सवार सौ साल तक तेज़ दौड़ता हुआ जाए लेकिन फिर भी उसका साया ख़त्म न होगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6553; सहीह मुस्लिम : 2828) कुरआन में है साये हैं फैले और बढ़े हुए। (56/वाक़िया : 30) उमूमन कुरआन करीम में जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र एक साथ आता है ताकि लोगों को जन्नत का शौक़ हो और दोज़ख़ से डर लगे। यहाँ भी जन्नत का और वहाँ की चंद नेअमतों का ज़िक्र करके फ़र्माया कि यह है अंजाम परहेज़गार और तक़्वा शआर लोगों का और काफ़िरों का अंजाम जहन्नम है। जैसे फ़र्मान है कि जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती मुराद पाने वाले हैं। (59/हश्र : 20) ख़तीबे दमिश्क़ हज़रत बिलाल बिन सअद (रह.) फ़र्माते हैं कि ऐ अल्लाह के बन्दो! क्या तुम्हारे किसी अमल की क़बूलियत का या किसी गुनाह की माफ़ी का कोई परवाना तुममें से किसी को मिला? क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि तुम बेकार पैदा किये गए हो और तुम अल्लाह तआला के बस में आने वाले नहीं हो। वल्लाह! अगर इताअते इलाही का बदला दुनिया में ही मिलता तो तमाम नेकियों पर जम जाते, क्या तुम दुनिया पर ही फ़रेफ़्ता हो गए हो? क्या इसी के पीछे मर मिटोगे? क्या तुम्हें जन्नत की रग़बत नहीं? जिसके फल और जिसके साये हमेशगी वाले हैं।

***

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ
قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝٣٦ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَمَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ
اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝٣٧

तर्जुमा : ''जिन्हें हमने किताब दी है वह तो जो कुछ तुझ पर उतारा जाता है उससे ख़ुश होते हैं और दूसरे फ़िर्क़े उसकी कुछ बातों के मुंकिर हैं, तू ऐलान कर दे कि मुझे तो सिर्फ़ यही हुक्म मिला है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और उसके साथ किसी को शरीक न करूँ, मैं उसकी तरफ़ बुला रहा हूँ और उसी की जानिब रुजूअ करता हूँ। (36) इसी तरह हमने इस क़ुरआन को अ़रबी ज़बान में उतारा है। अगर तूने इनकी ख़्वाहिशों की पैरवी कर ली, इसके बाद के तेरे पास इल्म आ चुका है तो न अल्लाह के अ़ज़ाबों से तुझे कोई हिमायती मिलेगा और न बचाने वाला।'' (37)

क़ुरआन के नाज़िल होने से ईमान वालों को ख़ुशी मिलती है (आयत 36, 37) : जो लोग इससे पहले किताब दिए गए हैं और वह उसके आ़मिल हैं, वह तो क़ुरआन के तुझ पर उतरने से शादाँ व फ़रहाँ (ख़ुश) हो रहे हैं क्योंकि ख़ुद उनकी किताबों में उसकी बशारत और उसकी सदाक़त मौजूद है। जैसे आयत (اَلَّذِيْنَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ) में है कि अगली किताबों को अच्छे तौर से पढ़ने वाले इस आख़िरी किताब पर भी ईमान लाते हैं और आयत में है कि तुम मानो या न मानो अगली किताबों वाले तो इसके सच्चे ताबेदार बन जाते हैं क्योंकि उनकी किताबों में हुज़ूर (ﷺ) की रिसालत की ख़बर है और वह इस वादे को पूरा देखकर ख़ुशी से मान लेते हैं अल्लाह तआ़ला इससे पाक है कि उसके वादे ग़लत निकलें उसके फ़र्मान सही साबित न हों पस वह शादमाँ होते हुए अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दे में गिर पड़ते हैं। हाँ! उन जमाअ़तों में ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों को नहीं मानते, ग़र्ज़ कुछ अहले किताब मुसलमान हैं कुछ नहीं तो ऐ नबी (ﷺ)! ऐलान कर दीजिए कि मुझे सिर्फ़ वाहिद रब का हुक्म मिला हुआ है कि दूसरे की शिर्कत के बग़ैर सिर्फ़ उसी की इबादत उसकी तौहीद के साथ करूँ, यही हुक्म मुझसे पहले के तमाम नबियों और रसूलों को मिला था उसी राह की तरफ़ उसी रब की इबादत की तरफ़ मैं तमाम दुनिया को दावत देता हूँ, उसी अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मेरा लौटना है जिस तरह हमने तुमसे पहले नबी भेजे उन पर अपनी किताबें नाज़िल कीं उसी तरह यह क़ुरआन जो मुहकम और मज़बूत है। अ़रबी ज़बान में जो तेरी और तेरी क़ौम की ज़ुबान है, इस क़ुरआन को हमने तुझ पर नाज़िल किया, यह भी तुझ पर ख़ास

एहसान है कि इस वाज़ेह खुली मुफ़स्सल (तफ़्सील से) और मुहकम किताब के साथ तुझे हमने नवाज़ा। न इसके आगे से बातिल, न इसके पीछे से आकर इसमें मिल सके। यह हकीम व हमीद अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी है ऐ नबी (ﷺ)! तेरे पास इल्मे रब्बानी आसमानी वही आ चुकी है अब भी अगर तूने इनकी ख़्वाहिश की मातहती की तो याद रख कि अल्लाह तआला के अज़ाबों से तुझे कोई भी न बचा सकेगा। न कोई तेरी हिमायत पर खड़ा होगा, सुन्नते नब्विया और तरीक़-ए-मुहम्मद (ﷺ) के इल्म के बाद जो गुमराही वाले रास्तों को इख़्तियार करें उन उलमा के लिए इस आयत में ज़बरदस्त वईद है।

***

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝٣٨ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝٣٩

तर्जुमा : "हम तुझसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं और हमने उन सबको बीवी बच्चों वाला बनाया था किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बग़ैर अल्लाह की इजाज़त के ले आए, हर मुक़र्ररा वादे की एक लिखत है। (38) अल्लाह जो चाहे नाबूद कर दे और जो चाहे साबित रखे लोहे महफ़ूज़ उसी के पास है।" (39)

मोजिज़ात का सुदूर (लाना) रसूलों के इख़्तियार में नहीं (आयत 38, 39) : इर्शाद है कि जैसे आप बावजूद इंसान होने के रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं, ऐसे ही आपसे पहले के तमाम रसूल भी इंसान ही थे, खाना खाते थे, बाज़ारों में चलते फिरते थे। बीवी बच्चों वाले थे और आयत में है कि ऐ अशरफ़ुर्रुसुल आप लोगों से कह दीजिए कि (اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰى اِلَيَّ) (18/कहफ़ : 110) मैं भी तुम जैसा एक इंसान हूँ मेरी तरफ़ अल्लाह की वही आती है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मैं नफ़्ली रोज़े रखता भी हूँ और नहीं भी रखता। रातों को तहज्जुद भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, गोश्त भी खाता हूँ और बीवियों से मुलाक़ात भी करता हूँ जो शख़्स मेरे तरीक़े से मुँह मोड़े वह मुझसे नहीं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब अत्तर्ग़ीब फ़िन्निकाह : 5063; सहीह मुस्लिम : 1401) मुस्नद अहमद में आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि "चार चीज़ें तमाम अम्बिया का तरीक़ा हैं ख़ुश्बू लगाना, निकाह करना, मिस्वाक करना और मेहन्दी।" (अहमद : 5/421; तिर्मिज़ी, किताबुन्निकाह, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लित्तज़्वीज वल हस्स अलैहि : 1080; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हिजाज बिन इरतात ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है नीज़ अबुश्शिमाल रावी मज्हूल है।) फिर फ़र्माता है कि मोजिज़े ज़ाहिर करना किसी नबी के बस की बात नहीं, यह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के क़ब्ज़े की चीज़ है वह जो चाहता है करता है हुक्म देता है हर एक का मुक़र्ररा वक़्त और मालूम मुद्दत किताब में लिखी हुई है, हर चीज़ का एक तयशुदा वक़्त मुक़र्रर किया, तुम्हें मालूम नहीं कि आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ों का अल्लाह को इल्म है, सब कुछ किताब में लिखा मौजूद है यह तो अल्लाह पर बहुत ही

आसान है हर किताब की जो आसमान से उतरी है एक अजल है और एक मुद्दत मुक़र्रर है, उनमें से जिसे चाहता है मंसूख़ कर देता है जिसे चाहता है बाक़ी रखता है पस इस कुरआन से जो उसने अपने रसूल (ﷺ) पर नाज़िल किया है तमाम अगली किताबें मंसूख़ हो गईं, अल्लाह तआ़ला जो चाहे मिटाये जो चाहे बाक़ी रखे, साल भर के उमूर मुक़र्रर कर दिये लेकिन इख़्तियार से बाहर नहीं जो चाहा बाक़ी रखा जो चाहा बदल दिया सिवाए शक़ावत सआ़दत हयात ममात के कि इनसे फ़राग़त हासिल कर ली गई है। (तब्री : 16/480; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) उनमें तग़य्युर नहीं होता। (तब्री, व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मंसूर (रह.) कहते हैं कि मैंने हज़रत मुजाहिद (रह.) से पूछा कि हममें से किसी का यह दुआ़ करना कैसा है कि इलाही अगर मेरा नाम नेकों में है तो बाक़ी रख और अगर बुरों में है तो उसे मिटा दे और नेकों में कर दे, आपने फ़र्माया, यह तो अच्छी दुआ़ है साल भर के बाद फिर मुलाक़ात हुई या कुछ ज़्यादा वक़्त गुज़र गया था तो मैंने उनसे फिर यही बात पूछी कि आपने (إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ) (44/दुख़ान : 3, 4) से दो आयतों की तिलावत की और फ़र्माया, लैलतुल क़द्र में साल भर की रोज़ियाँ तक्लीफ़ें मुक़र्रर हो जाती हैं फिर जो अल्लाह तआ़ला चाहे पहले या बाद में कर देता है, हाँ! सआ़दत शक़ावत की किताब नहीं बदलती। हज़रत शक़ीक़ बिन सलमा (रह.) अक्सर यह दुआ़ किया करते थे, ऐ परवरदिगार! अगर तूने हमें बदबख़्तों में लिखा है तो उसे मिटा दे और हमारी गिनती नेकों में लिख ले और अगर तूने हमें नेक लोगों में लिखा है तो उसे बाक़ी रख, तू जो चाहे मिटा दे और जो चाहे बाक़ी रखे, असल किताब तेरे ही पास है। (तब्री : 16/481; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए रोते रोते यह दुआ़ पढ़ा करते थे, ऐ मालिक! अगर तूने मुझ पर बुराई और गुनाह लिख रखे हैं तो उन्हें मिटा दे, तू जो चाहे मिटाता है और बाक़ी रखता है, उम्मुल किताब तेरे पास ही है तू उसे सआ़दत और रहमत कर दे। (तब्री : 16/481; व सनदुहू हसन) हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) भी यही दुआ़ किया करते थे। कअ़ब (रह.) ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा कि अगर एक आयत किताबुल्लाह में न होती तो मैं क़यामत तक जो उमूर होने वाले हैं सब आपको बता देता पूछा कि वह कौनसी आयत है आपने इसी आयत की तिलावत फ़र्माई। इसमें अबू हम्ज़ा मतरूकुल हदीस है (मीज़ानुल ऐतिदाल : 4/234; रक़्म : 896०)

इन तमाम क़ौलों का मतलब यह है कि तक़्दीर की उलट पलट अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार की चीज़ है, चुनाँचे मुस्नद अहमद की एक हदीस में है कि "कुछ गुनाहों की वजह से इंसान अपनी रोज़ी से महरूम कर दिया जाता है और तक़्दीर को दुआ़ के सिवा कोई चीज़ बदल नहीं सकती और उम्र की ज़्यादती करने वाली सिवाए नेकी के कोई चीज़ नहीं।" (अहमद : 5/222; इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाबुल उक़ूबात : 4022; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़ियान सौरी मुदल्लस है और सिमाअ़ की सराहत नहीं है। इब्ने अबी शैबा : 10/441; तबरानी : 1442; हाकिम : 1/493) नसाई और इब्ने माजा में भी यह हदीस है और सही हदीस में है कि "सिलारहमी उम्र बढ़ाती है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ़, बाब मन अहब्बल बसत फ़िर्रिज़्क़ : 2067; सहीह मुस्लिम : 2557; मअ़नन) और हदीस में है कि "दुआ़ और क़ज़ा दोनों की मुठभेड़ आसमान व ज़मीन के बीच होती है।" (इस हदीस के बारे में मुझे नहीं मिला) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआ़ला के पास लोहे महफ़ूज़ है जो पाँच सौ साल के रास्ते की चीज़ है, सफ़ेद मोती की है, याक़ूत के दो पुट्ठोंके बीच तिरेसठ बार

अल्लाह तआ़ला उस पर तवज्जा फ़र्माता है जो चाहता है मिटाता है जो चाहता है बरक़रार रखता है उम्मुल किताब उसी के पास है हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि "रात की तीन साअ़तें बाक़ी रहने पर ज़िक्र खोला जाता है पहली साअ़त में उस ज़िक्र पर नज़र डाली जाती है जिसे उसके सिवा कोई और नहीं देखता पस जो चाहता है मिटाता है जो चाहता है बरक़रार रखता है।" (तब्री : 20502; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/415; इसकी सनद में ज़ियाद बिन मुहम्मद मुंकरुल हदीस है। (अत्तक़रीब : 1/271)) कल्बी (रह़.) फ़र्माते हैं, इससे मुराद रोज़ी को बढ़ाना घटाना, उम्र को घटाना बढ़ाना है, उनसे पूछा गया कि आपसे यह बात किसने बयान की? फ़र्माया अबू सालेह़ (रह़.) ने उनसे ह़ज़रत ज़ाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन रुबाब (रज़ि.) ने उनसे नबी (ﷺ) ने (इसकी सनद में कल्बी मुहम्मद बिन साइब मतरूक रावी है (अत्तक़रीब : 2/163) फिर उनसे इस आयत के बारे में सवाल हुआ तो जवाब दिया कि सब बातें लिखी जाती हैं, जुमेरात के दिन उनमें से जो बातें जज़ा सज़ा से ख़ाली हो निकाल दी जाती हैं। जैसे तेरा यह क़ौल कि मैंने खाया, मैंने पिया, मैं आया, मैं गया वग़ैरह जो सच्ची बातें हैं और सवाब अ़ज़ाब की चीज़ें नहीं और बाक़ी जो सवाब अ़ज़ाब की चीज़ें हैं वह रख ली जाती हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि दो किताबें हैं एक में कमी ज़्यादती होती है और अल्लाह के पास है, असल किताब वही है फ़र्माते हैं मुराद इससे वह शख़्स है जो एक ज़माने तक तो अल्लाह की इताअ़त में लगा रहता है फिर मअ़सियत में लग जाता है और उसी पर मरता है। (तब्री : 20482; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) पस उसकी नेकियाँ ख़त्म हो जाती है और जिसके लिए साबित रहती है यह वह है जो उस वक़्त तो नाफ़र्मानियों में मशग़ूल है लेकिन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके लिए फ़र्मांबरदारी पहले से मुक़र्रर हो चुकी है पस आख़िरी वक़्त वह ख़ैर पर लग जाता है और इताअ़ते इलाही पर मरता है। यह है जिसके लिए साबित रहती है। सईद बिन जुबेर (रह़.) फ़र्माते हैं, मतलब यह है कि जिसे चाहे बख़्शे जिसे चाहे न बख़्शे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है जो चाहता है मंसूख़ करता है जो चाहता चेंज करता, नासिख़ उसी के पास है और अदल बदल भी। (सनदुहू ज़ईफ़ुन) बक़ौले क़तादा (रह़.) यह आयत मिस्ल आयत (मा नन्सख़) के है यानी जो चाहे मिटा दे जो चाहे बाक़ी और जारी रखे। मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं जब इससे पहले की आयत उतरी कि कोई रसूल बग़ैर अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान के कोई मोजिज़ा नहीं दिखा सकता तो क़ुरैश के काफ़िरों ने कहा, फिर तो मुहम्मद (ﷺ) बिलकुल बेबस हैं, काम से फ़राग़त ह़ासिल हो चुकी है पस इन्हें डराने के लिए यह आयत उतरी कि हम जो चाहें नौपैद कर दें हर रमज़ान में नौपैद होती है फिर अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है जो चाहता है साबित रखता है रोज़ी भी तक्लीफ़ भी देता है और तक़्सीम भी। ह़सन बसरी (रह़.) फ़र्माते हैं जिसकी अजल आ जाए चल बसता है, न आई हो रह जाता है यहाँ तक कि अपने दिन पूरे कर ले। इब्ने जरीर (रह़.) भी इस क़ौल को पसंद करते हैं, ह़लाल ह़राम उसके पास हैं किताब का ख़ुलासा और जड़ उसी के हाथ में है। किताब ख़ुद रब्बुल आ़लमीन के पास ही है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कअ़ब (रह.) से उम्मुल किताब की बाबत पूछा तो आपने जवाब दिया कि अल्लाह ने मख़्लूक़ को और मख़्लूक़ के आ़माल को जान लिया फिर कहा कि किताब की सूरत में हो जाए, जो वह हो गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं उम्मुल किताब से मुराद ज़िक्र है।

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ
لِحُكْمِهٖ ۗ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۗ يَعْلَمُ
مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : "इनसे किए हुए वादों में से कोई अगर हम तुझे दिखा दें या तुझे हम फ़ौत कर लें तो तुझ पर सिर्फ़ पहुँचा देना ही है हिसाब तो हमारे ज़िम्मे ही है। (40) क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं, अल्लाह हुक्म करता है कोई उसके अहकाम पीछे डालने वाला नहीं, वह जल्द हिसाब लेने वाला है। (41) उनसे पहले लोगों ने भी मक्कारी में कमी न की थी लेकिन तमाम तदबीरें अल्लाह ही की हैं जो शख़्स जो कुछ कर रहा है अल्लाह तआला के इल्म में है काफ़िरों को अभी मालूम हो जाएगा कि उस जहान की जज़ा किसके लिए है।"(42)

नबी (ﷺ) के ज़िम्मे तब्लीग़ (आयत 40-42) : तेरे दुश्मनों पर जो हमारे अज़ाब आने वाले हैं वह हम तेरी ज़िन्दगी में लाएँ या तेरे इंतिक़ाल के बाद लाएँ तो तुझे क्या? तेरा काम तो सिर्फ़ हमारा पैग़ाम पहुँचा देना है वह तू कर चुका, इनका हिसाब इनका बदला हमारे हाथ है तू सिर्फ़ इन्हें नसीहत कर दे, तू इन पर दारोग़ा और निगहबान नहीं, जो मुँह फेरेगा और कुफ़्र करेगा उसे अल्लाह आप बड़ी सज़ाओं में दाख़िल कर देगा, उनका लौटना तो हमारी ही तरफ़ है और इनका हिसाब भी हमारे ज़िम्मे है, क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को तेरे क़ब्ज़े में देते आ रहे हैं? क्या वह नहीं देखते कि आबाद और आलीशान महल खण्डर और वीरान बनते जा रहे हैं, क्या वह नहीं देखते कि मुसलमान काफ़िरों को दबाते चले आ रहे हैं? क्या वह नहीं देखते कि बरकतें उठती जा रही हैं, ख़राबियाँ आती जा रही हैं, लोग मरते जा रहे हैं, ज़मीन उजड़ती जा रही है ख़ुद ज़मीन ही अगर तंग होती जाती तो इंसान को छप्पर डालना भी मुहाल हो पड़ता। मक़्सद इंसानों का और दरख़्तों का कम होते रहना है मुराद इससे ज़मीन की तंगी नहीं बल्कि लोगों की मौत है, उलमा फ़ुक़्हा और भले लोगों की मौत भी ज़मीन की बर्बादी है। (हाकिम : 2/350; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इमाम ज़हबी (रह.) ने अहमद के हवाले से इसकी सनद में तलहा बिन अम्र को मतरूक लिखा है।) अरब शायर कहता है,

अल्अर्ज़ु तह़्या इज़ा मा आशा आलिमुहा — मता यमुतु आलिमुम्मिन्हा यमुत तर्फ़ुन
कल्अर्ज़ि तह़्या इज़ा मल ग़ैसु हल्ला बिहा — व इन अबा आदा फ़ी अक्नाफ़िहत्तलफ़ू

यानी जहाँ कहीं जो आलिमे दीन है वहाँ की ज़मीन की ज़िन्दगी उसी से है उसकी मौत उस ज़मीन की वीरानी और ख़राबी है। जैसे कि बारिश जिस ज़मीन पर बरसे लहलहाने लगती है और अगर न बरसे तो सूखने और बंजर होने लगती है, पस आयत में मुराद इस्लाम का शिर्क पर ग़ालिब आना है। एक के बाद एक बस्ती को ताबेअ करना है। जैसे फ़र्माया (وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ) (46/अह़क़ाफ़ : 27) यही क़ौल इब्ने जरीर (रह़.) का पसंदीदा है।

काफ़िरों की तदबीरें नाकाम, अल्लाह का इरादा कामयाब : अगले काफ़िरों ने भी अपने नबियों के साथ फ़रेबकारी किया, उन्हें निकालना चाहा, अल्लाह तआला ने उनके मकर का बदला लिया, अंजाकार परहेज़गारों का ही भला हुआ। उससे पहले आपके ज़माने के काफ़िरों की कारिस्तानी बयान हो चुकी है कि वह आपको क़ैद करने या क़त्ल करने या देश निकाला देने का मश्वरा कर रहे थे वह मकर में थे और अल्लाह उनकी घात में था, भला अल्लाह से ज़्यादा अच्छी पोशीदा तदबीर किसकी हो सकती है, उनके मकर पर हमने भी यही किया और यह बेख़बर रहे देख ले कि इनके मकर का अंजाम क्या हुआ? यही कि हमने उन्हें ग़ारत कर दिया और उनकी सारी क़ौम को बर्बाद कर दिया, उनके ज़ुल्म की शहादत देने वाले उनकी ग़ैरआबाद बस्तियों के खण्डरात अभी मौजूद हैं, हर एक के हर एक अमल से अल्लाह तआला बाख़बर है , पोशीदा अमल दिल के खटके उस पर ज़ाहिर हैं , हर आमिल को उसके आमाल का बदला देगा, (अल्कुफ़्फ़ारु) की क़िरअत (अल्काफ़िरु) भी है। इन काफ़िरों को अभी मालूम हो जाएगा कि अंजामकार किसका अच्छा रहता है, इन का या मुसलमानों का? (अल्ह़म्दु लिल्लाह) अल्लाह तआला ने हमेशा ह़क़ वालों को ही ग़ालिब रखा है, अंजाम के ऐतिबार से यही अच्छे रहते हैं दुनिया व आख़िरत ईमान वालों ही की संवरती है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ﴿٤٣﴾

तर्जुमा : "यह काफ़िर कहते हैं कि तू अल्लाह तआला का रसूल नहीं तू जवाब दे कि मुझ और तुममें अल्लाह गवाही देने वाला काफ़ी है और वह जिसके पास किताब का इल्म है।" (43)

रिसालत व नबुव्वत के मुंकिर (इंकार करने वाला) (आयत 43) : काफ़िर तुझे झुठला रहे हैं रिसालत के मुंकिर हैं, तू ग़म न कर। कह दिया कर कि अल्लाह तआला की शहादत काफ़ी है मेरी नबुव्वत का वह ख़ुद गवाह है मेरी तबलीग़ पर तुम्हारी तक्ज़ीब.को वह शाहिद है, मेरी सच्चाई और तुम्हारी तोहमत पर वह देख रहा है, इल्मे किताब जिसके पास है उससे मुराद अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) हैं। यह क़ौल मुजाहिद (रह़.) वग़ैरह का है लेकिन बहुत ग़रीब क़ौल है इसलिए कि यह आयत मक्का में उतरी है और ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) तो हिज्रत के बाद मदीना में मुसलमान हुए हैं, इससे ज़्यादा ज़ाहिर इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि यहूदो नसारा के ह़क़ परस्त आलिम हैं, हाँ! उनमें ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) भी हैं और ह़ज़रत सलमान और तमीमदारी (रज़ि.) वग़ैरह। मुजाहिद (रह़.) से एक रिवायत में मरवी है कि इससे

मुराद भी ख़ुद अल्लाह तआला है। हज़रत सईद (रह.) इससे इंकारी थे कि इससे मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) लिए जाएँ क्योंकि यह आयत मक्की है और आयत को (मिन इन्दिही) पढ़ते थे। सहीह क़िरअत मुजाहिद और हसन बसरी (रहि.) से भी मरवी है एक मरफ़ूअ हदीस में भी यही क़िरअत है। (तब्री : 13/176; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद अबी यअला : 5574; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/155; सुनन सईद बिन मंसूर : 1177) लेकिन वह हदीस साबित नहीं। सही बात यही है कि यह इस्मे जिंस है हर वह आलिम जो अगली किताब का आलिम है। इसमें दाख़िल है उनकी किताबों में हुज़ूर (ﷺ) की सिफ़त और आपकी बशारत मौजूद थी, उनके नबियों ने आपकी बाबत पेशीनगोई कर दी थी। जैसे फ़र्माने रब ज़ीशान है (وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ) (7/आराफ़ : 156) यानी मेरी रहमत ने तमाम चीज़ों को घेर रखा है, मैं इसे उन लोगों के नाम लिख दूँगा जो मुत्तक़ी हैं, ज़कात के अदा करने वाले हैं, हमारी आयतों पर ईमान रखने वाले हैं। रसूल नबी उम्मी (ﷺ) की इताअत करने वाले हैं जिसका ज़िक्र अपनी किताब तौरात, इंजील में मौजूद पाते हैं और आयत में है कि क्या यह बात भी इनके लिए काफ़ी नहीं कि इसके हक़ होने का इल्म उलमा-ए-बनी इस्राईल को भी है। (26/शुअरा : 197) एक बहुत ही ग़रीब हदीस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने उलमा-ए-यहूद से कहा कि मेरा इरादा है कि अपने बाप इब्राहीम व इस्माईल (عليه السلام) की मस्जिद में जाकर ईद मनाएँ, मक्का पहुँचे, हुज़ूर (ﷺ) यहीं थे यह लोग जब हज्ज से लोटे तो आपसे मुलाक़ात हुई उस वक़्त आप एक मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा थे और लोग भी आपके पास थे, यह भी अपने साथियों के साथ खड़े हो गए, आप (ﷺ) ने उनकी तरफ़ देखकर पूछा कि आप ही अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) हैं? कहा हाँ! फ़र्माया क़रीब आओ, जब क़रीब आ गए तो आपने फ़र्माया, क्या तुम मेरा ज़िक्र तौरात में नहीं पाते? उन्होंने फ़र्माया, आप अल्लाह तआला के औसाफ़ मेरे सामने बयान कीजिए, उस वक़्त हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) आए आपके सामने खड़े हो गए और हुक्म दिया कि कहो (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ) (112/इख़्लास : 1) आप (ﷺ) ने पूरी सूरत पढ़ सुनाई, इब्ने सलाम (रज़ि.) ने उसी वक़्त कलिमा पढ़ लिया, मुसलमान हो गए, मदीना वापिस चले आए लेकिन अपने इस्लाम को छुपाए रखा, जब हुज़ूर (ﷺ) हिज्रत करके मदीना पहुँचे, उस वक़्त आप खजूर के एक दरख़्त पर चढ़े हुए खजूरें उतार रहे थे जो आपको ख़बर पहुँची उसी वक़्त दरख़्त से कूद पड़े, माँ कहने लगीं कि अगर हज़रत मूसा (عليه السلام) भी आ जाते तो तुम दरख़्त से न कूदते , क्या बात है? जवाब दिया कि अम्माजान! हज़रत मूसा (عليه السلام) की नबुव्वत से भी ज़्यादा ख़ुशी मुझे ख़त्मुल मुर्सलीन की यहाँ तशरीफ़ लाने से हुई है। यह सनद सख़्त नकारत वाली है। (तब्रानी व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद ज़ईफ़ और मतन बातिल है जैसाकि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया है यह रिवायत मज्मउज़्ज़वाइद : 7/149, 150 में भी है, इसमें हम्ज़ा ने अपने दादा अब्दुल्लाह बिन सलाम को नहीं पाया। वलीद बिन मुस्लिम मुदल्लस है और रिवायत मअन्अन है।)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह रअद की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

****

सूरह इब्राहीम

سورہ ابراہیم

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह इब्राहीम - 14

आयातः 52, मक्की पैराग्राफ : 8

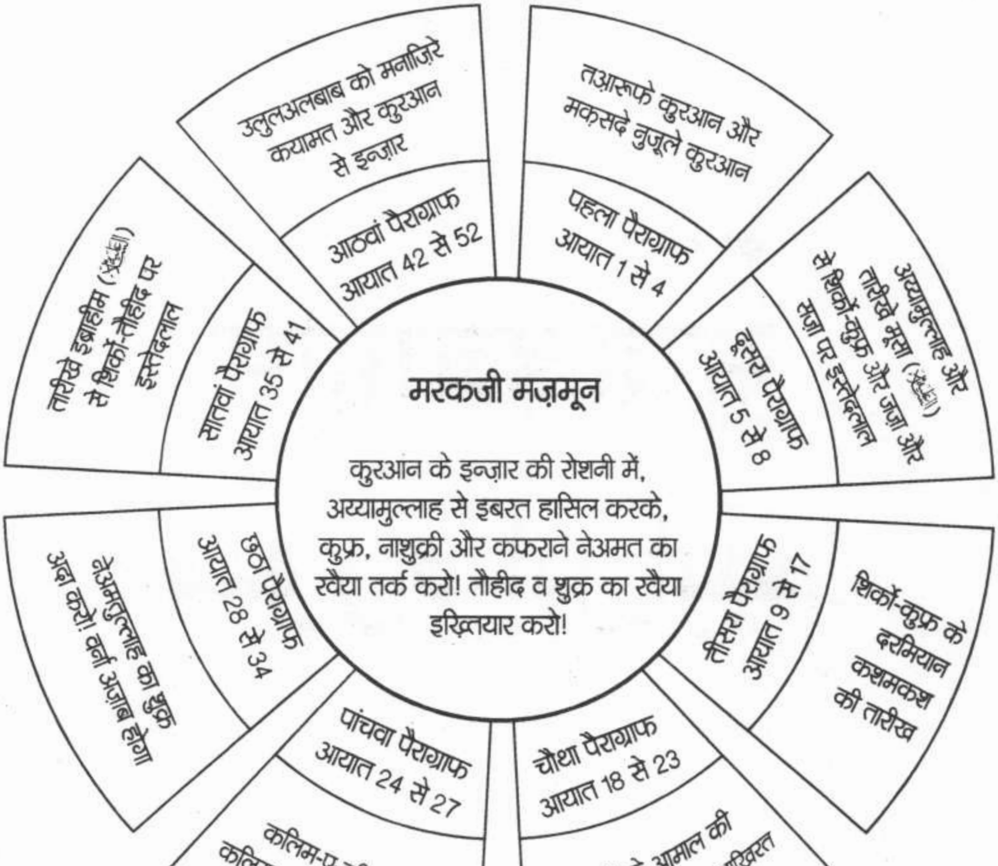

जमान-ए-नुजूल और पसे मन्जर

सूरह (इब्राहीम) सूरह राद के बाद, रसूलुल्लाह (ﷺ) के कयामे मक्का के चौथे और आख़री दौर (11 से 13) के वस्त में नाज़िल हुई, ये वो (मकर) यानी साज़िशों का ज़माना था (आयात:46), जब शहरे मक्का से इख़्राजे रसूल (ﷺ) के मन्सूबे बनाए जा रहे थे

( )

सूरह इब्राहीम

ये सूरत मक्की है इसमें 52 आयतें हैं और 7 रुकूअ हैं। ये हिजरत से पहले सूरह रअ़ के क़रीब के ज़माने में नाज़िल हुई। सूरह इब्राहीम में नबियों और रसूलों का तज़्किरा कछ मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में आया है। शुरू में हज़रत मूसा (अलै.) का ज़िक्र कुछ आयतों में करने के बाद पहले के सब अम्बिया (अलै.) और रसूलों का ज़िक्र जमा के सेग़े में एक साथ किया गया है। आख़िर में इख़्तिसार के साथ हज़रत इब्राहीम का ज़िक्र है। सूरत की पहली आयत में कुरआन नाज़िल किये जाने का मक़सद बयान किया गया है कि आप नबी (ﷺ) इंसानों को अल्लाह के हुक्म से तारीकी से निकालकर रोशनी में लायें और अल्लाह तआ़ला का सीधा रास्ता दिखायें। सूरत की आख़िरी आयत इस बात के ऐलान पर ख़त्म होती है कि कुरआन तमाम इंसानों की तरफ़ अल्लाह का पैग़ाम है जो कायनात का वाहिद इलाह है। सूरत की 35 से 41 नम्बर की आयतों में हज़रत इब्राहीम की दुआ का ज़िक्र है। जो आपने अल्लाह से उस वक़्त की थी जब अपने बेटे हज़रत इस्माईल (अलै.) और बीवी हाजरा को अ़रब की वीरान और ख़ुश्क वादी में अल्लाह के हुक्म से छोड़ आयें।

तफ़्सीर सूरह इब्राहीम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

''शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

الٓرٰ ۟ کِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰہُ اِلَیۡکَ لِتُخۡرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوۡرِ ۬ۙ بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ اِلٰی صِرَاطِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَمِیۡدِ ① اللّٰہِ الَّذِیۡ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ وَوَیۡلٌ لِّلۡکٰفِرِیۡنَ مِنۡ عَذَابٍ شَدِیۡدِ ② الَّذِیۡنَ یَسۡتَحِبُّوۡنَ الۡحَیٰوۃَ الدُّنۡیَا عَلَی الۡاٰخِرَۃِ وَیَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَیَبۡغُوۡنَہَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِکَ فِیۡ ضَلٰلٍۭ بَعِیۡدٍ ③

तर्जुमा : ''अलिफ़ लाम रा. यह आलीशान किताब हमने तेरी त़रफ़ उतारी है कि तू लोगों को अंधेरों से उजाले की त़रफ़ लाए, उनके परवरदिगार के हुक्म से ज़बरदस्त और तारीफ़ों वाले अल्लाह की राह की त़रफ़। (1) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है, मुंकिरों के लिए तो सख़्त अ़ज़ाब की ख़राबी है। (2) जो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियावी ज़िन्दगी को पसंद रखते हैं और अल्लाह की राह से लोगों को रोकते रहते हैं और उसमें टेढ़पन पैदा करना चाहते हैं। यही लोग परले दर्जे की गुमराही में हैं।'' (3)

मोमिन रोशनी और काफ़िर अंधेरे में (आयत 1-3) : हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में आते हैं उनका बयान पहले गुज़र चुका है। ऐ नबी (ﷺ)! यह अ़ज़ीमुश्शान किताब हमने तेरी त़रफ़ उतारी है। किताब तमाम किताबों से आ़ला, रसूल तमाम रसूलों से अफ़ज़ल व बाला है। जहाँ उतरी वह जगह दुनिया की तमाम जगहों से बेहतरीन और उ़म्दा, इसका पहला वस्फ़ यह है कि इसके ज़रियें से तू लोगों को अंधेरों से उजाले में ला सकता है। तेरा पहला काम यह कि गुमराहियों को हिदायत से, बुराइयों को भलाईयों से बदल दे। ईमान वालों का ह़िमायती ख़ुद अल्लाह तआ़ला है। वह उन्हें अंधरों से उजाले में लाता है और काफ़िरों के साथ अल्लाह के सिवा और हैं जो उन्हें नूर से हटाकर अंधेरों में फांस देते हैं। अल्लाह तआ़ला अपने गुलाम पर अपनी रोशन और वाज़ेह़ निशानियाँ उतारता है कि वह तुम्हें तारीकियों से हटाकर नूर की त़रफ़ पहुँचा दे। अस़ल

हादी अल्लाह ही है। रसूलों के हाथों जिसकी हिदायत उसे मंज़ूर होती है वह राह पा जाते हैं और ग़ैर मग़्लूब पूरे ग़ालिब ज़बरदस्त और हर चीज़ पर बादशाह बन जाते हैं। और हर हाल में तारीफ़ों वाले अल्लाह की राह की तरफ़ उनकी रहबरी हो जाती है। अल्लाह की दूसरी क़िरअत अल्लाह भी है। पहली क़िरअत बतौरे सिफ़त के है और दूसरी बतौरे नए जुम्ले के जैसे आयत (قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ) (7/आराफ़ : 158) में जो काफ़िर तेरे मुख़ालिफ़ हैं तुझे नहीं मानते उन्हें क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब होंगे। यह लोग दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देते हैं, दुनिया के लिए पूरी कोशिश करते हैं और आख़िरत को भूले बैठे हैं। रसूलों की ताबेदारी से दूसरों को भी रोकते हैं। अल्लाह की राह जो सीधी और साफ़ है उसे टेढ़ी तिरछी करना चाहते हैं। यह इसी जिहालत व ज़लालत में रहेंगे लेकिन राहे इलाही न टेढ़ी हुई, न होगी फिर ऐसी हालत में इनकी सलाहियत की क्या उम्मीद।

***

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

तर्जुमा : ''हमने हर हर नबी को उसकी क़ौमी ज़ुबान में ही भेजा है। ताकि उनके सामने वज़ाहत से बयान कर दे। अब अल्लाह जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे राह दिखा दे। वह ग़ल्बा वाला और हिक्मत वाला है। (4) याद कर जब हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपनी क़ौम को अंधेरों से रोशनी में निकाल और उन्हें अल्लाह के एहसानात याद दिला। इसमें निशानियाँ हैं हर एक सब्र शुक्र करने वाले के लिए'' (5)

हर नबी उसी क़ौम से होता है (आयत 4, 5) : यह अल्लाह तआला जल्ल शानुहू की ग़ायत दर्जा की मेहरबानी है कि हर नबी को उसकी क़ौमी ज़ुबान में ही भेजा ताकि समझने समझाने में आसानी रहे। मुस्नद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''हर नबी, रसूल को अल्लाह तआला ने उसकी उम्मत की ज़ुबान ही में भेजा है। (अहमद : 5/158; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/43 रिवायत मुंक़तअ होने की वजह से ज़ईफ़ है लेकिन मज़्कूरा आयत से यही मतलब मुराद है।) हक़ उन पर खुल तो जाता ही है फिर हिदायत ज़लालत अल्लाह की तरफ़ से है, उसके चाहने के बग़ैर कोई काम नहीं होता। वह ग़ालिब है उसका हर काम हिक्मत से भरा है गुमराह वही होते हैं जो उसी के मुस्तहिक़ हों और हिदायत पर वही आते हैं जो उसके मुस्तहिक़ हों''

चूँकि हर नबी सिर्फ़ अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता रहा इसलिए उसे उस क़ौम की ज़ुबान में ही अल्लाह की किताब मिलती थी। और उसकी अपनी ज़ुबान भी वही होती थी। हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की रिसालत आम थी। सारी दुनिया की सब क़ौमों की तरफ़ आप रसूलुल्लाह थे। जैसे ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "मुझे पाँच चीज़ें ख़ुसूसियत से दी गई हैं जो किसी नबी को अता नहीं हुईं। महीने भर की राह से सिर्फ़ रुअब के साथ मेरी मदद की गई है, मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और पाकीज़गी क़रार दी गई है, मुझ पर माले ग़नीमत हलाल किए गए हैं जो मुझसे पहले किसी पर हलाल नहीं थे। मुझे सिफ़ारिश सौंपी गई है हर नबी सिर्फ़ अपनी क़ौम ही की तरफ़ आता था और मैं तमाम लोगों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तयम्मुम, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (फ़लम तजिदू माअन फ़तयम्ममू सईदन तय्यिबन...) : 335; सहीह मुस्लिम : 521) क़ुरआन यही फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! ऐलान कर दो कि मैं तुम सबकी जानिब अल्लाह का रसूल हूँ।" (7/आराफ़ : 158)

बनी इस्राईल की तरफ़ मूसा (عليه السلام) की बिअसत : ऐ नबी (ﷺ)! हमने तुझे अपना रसूल बनाकर भेजा है और तुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़र्माई है कि तू लोगों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ ले आए, इसी तरह हमने हज़रत मूसा (عليه السلام) को बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा था। बहुत सी निशानियाँ भी दी थीं जिनका बयान आयत (وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ) (17/बनी इस्राईल : 101) में है उन्हें भी यही हुक्म था कि लोगों को नेकियों की दावत दे। उन्हें अंधेरों से निकालकर रोशनी में और जिहालत व ज़लालत से हटाकर इल्म व हिदायत की तरफ़ ले आए। उन्हें अल्लाह के एहसानात याद दिलाए कि अल्लाह तआला ने उन्हें फ़िरऔन जैसे ज़ालिम जाबिर की गुलामी से आज़ाद किया। उनके लिए दरिया को खड़ा कर दिया, उन पर बादल का साया कर दिया, उन पर आसमान से खाना उतारा और भी बहुत सी नेअमतें अता कीं। मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ हदीस में (अय्या-मिल्लाहि) की तफ़्सीर अल्लाह की नेअमतों से मरवी है। (अहमद : 5/122; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; तब्री : 13/184; सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मिन फ़ज़ाइलिल ख़िज़्र (عليه السلام) : 2380; में क़िस्सा ख़िज़्र व मूसा (عليه السلام) में "अय्यामिल्लाहि निअमाउहू" के अल्फ़ाज़ इस मतन से बेनियाज़ करते हैं।) लेकिन इब्ने जरीर में यह रिवायत उबय बिन कअब (रज़ि) से मरफ़ूअन भी आई है और यही ज़्यादा ठीक है। हमने अपने बन्दों बनी इस्राईल के साथ जो एहसान किए फ़िरऔन से नजात दिलवाना, उसके ज़लील अज़ाबों से छुड़ाना, इसमें हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले के लिए इब्रत है जो मुसीबत में सब्र के और राहत में शुक्र के ख़ूगर हैं। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, अच्छा बन्दा वह है जो सख़्ती के वक़्त सब्र करे और नर्मी के वक़्त शुक्र करे। सहीह हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "मोमिन का तमाम काम अजीब है उसे मुसीबत पहुँचे तो सब्र करता है वही उसके हक़ में बेहतर होता है और अगर उसे राहत व आराम मिले तो शुक्र करता है उसका अंजाम भी उसके लिए बेहतर होता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मोमिनु अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999; इब्ने हिब्बान : 2896; अहमद : 4/332; मुअजमुल कबीर : 7316; शुअबुल ईमान : 4487)

***

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ
بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ
عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿۷﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۸﴾

तर्जुमा : ''जिस वक़्त मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह के वह एहसानात याद करो जो उसने तुम पर किए हैं जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔनियों से नजात दी जो तुम्हें बड़े दुख पहुँचाते थे, तुम्हारे लड़कों को क़त्ल करते थे और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर बहुत बड़ा एहसान था। (6) जब तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्रगुज़ारी करोगे तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो यक़ीनन मेरा अज़ाब सख़्त है। (7) मूसा (عليه السلام) ने कहा अगर तुम सब और रूए ज़मीन के तमाम इंसान अल्लाह की नाशुक्री करें तो भी अल्लाह बेनियाज़ और तारीफ़ों वाला है।'' (8)

बनी इस्राईल पर अल्लाह के एहसानात (आयत 6-8) : फ़र्माने इलाही के मुताबिक़ हज़रत मूसा (عليه السلام) अपनी क़ौम को अल्लाह तआला की नेअमतें याद दिला रहे हैं। मस्लन फ़िरऔनियों से उन्हें नजात दिलवाना जो उन्हें बेवक़अत करके उन पर तरह तरह के ज़ुल्मो-सितम ढा रहे थे। यहाँ तक कि तमाम लड़कों को क़त्ल कर डालते थे, सिर्फ़ लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे। यह नेअमत इतनी बड़ी है कि तुम उसकी शुक्रगुज़ारी की ताक़त नहीं रखते। इस जुम्ला का यह मतलब भी हो सकता है कि फ़िरऔनी ईज़ा दरअसल तुम्हारी एक बहुत बड़ी आज़माइश थी और यह भी एहतिमाल है कि दोनों मअनी मुराद हैं, वल्लाहु आलम! जैसे फ़र्मान है (وَبَلَوْنَاهُم بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ) (7/आराफ़ : 168) यानी हमने उन्हें भलाई बुराई से आज़मा लिया कि वह लौट आएँ। जब अल्लाह तआला ने तुम्हें आगाह कर दिया और यह मअनी भी मुम्किन हैं कि जब अल्लाह तआला ने क़सम खाई कि अपनी इज़्ज़त जलालत और किब्रियाई की। जैसे आयत (وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ)(7/आराफ़ : 167) में पस अल्लाह का हत्मी वादा हुआ और उसका ऐलान भी कि शुक्रगुज़ारों की नेअमतें और बढ़ जाएँगी और नाशुक्रों की नेअमतों के मुंकिरों और उनके छुपाने वालों की नेअमतें और छिन जाएगी और उन्हें सख़्त सज़ाएँ होंगी। हदीस में है ''बन्दा गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला की रोज़ी से महरूम हो जाता है।'' (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब अल्उक़ूबात : 4022; व

सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी मुदल्लस रावी के सिमाअ की तस्रीह नहीं है।) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से एक साइल गुज़रा। आपने उसे एक खजूर दी वह बिगड़ा और खजूर न ली। फिर दूसरा साइल गुज़रा, आपने उसे भी वही खजूर दी। उसने उसे ख़ुशी से ले लिया और कहने लगा कि, "अल्लाह के रसूल का अ़तिया है" आपने उसे बीस दिरहम देने का हुक्म दिया और रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने लौण्डी से फ़र्माया कि इसे ले जाओ और उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास चालीस दिरहम हैं वह इसे दिलवा दो।" (अहमद : 3/155; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़म्मारा बिन ज़ाज़ान की साबित से रिवायत मुंकर होती है। इसके अ़लावा यह रिवायत बज़्ज़ार 939 शुअ़बुल ईमान में मुख़्तसरन मौजूद है। जिसमें सालेह बिन बशीर मुर्री ज़ईफ़ रावी है। तक़रीब 1/358) हज़रत मूसा (ﷺ) ने बनी इस्राईल से फ़र्माया तुम सब और रूए ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात भी नाशुक्री करने लगे तो अल्लाह का क्या बिगाड़ेगी? वह बन्दों से और उनकी शुक्रगुज़ारी से बेनियाज़ और बेपरवाह है। तारीफ़ों का मालिक और क़ाबिल वही है। चुनाँचे फ़र्मान है (إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ) (39/ज़ुमर : 7) तुम अगर कुफ़्र करो तो अल्लाह तुमसे ग़नी है और आयत में है (فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوا وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ) (64/तग़ाबुन : 6) इन्होंने कुफ़्र किया मुँह फेर लिया तो अल्लाह ने इनसे मुत्लक़न बेनियाज़ी बरती। सहीह मुस्लिम में हदीसे क़ुदसी है कि "अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारे अव्वल आख़िर इंसान सब मिलकर बेहतरीन तक़्वा वाले दिल शख़्स के जैसे बन जाए तो उससे मेरा मुल्क ज़रा सा भी बढ़ न जाएगा। और अगर तुम्हारे सब अगले पिछले इंसान जिन्नात बदतरीन दिल के बन जाएँ तो इस वजह से मेरे मुल्क में से ज़रा भी न घटेगा। ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारे अगले पिछले इंसान जिन्न सब एक मैदान में खड़े हो जाएँ और मुझसे माँगें और मैं हर एक का सवाल पूरा कर दूँ तो भी मेरे पास के ख़ज़ानों में इतनी ही कमी आएगी जितनी कमी समुन्द्र में सूई डालने से हो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 2/412) पस हमारा रब पाक है बुलंद है ग़नी है और हमीद है।

***

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٩﴾

तर्जुमा : "क्या तुम्हारे पास तुमसे पहले के लोगों की ख़बरें नहीं आईं? यानी क़ौमे नूह की और आ़द समूद की और उनके बाद वालों की? जिन्हें सिवाए अल्लाह तआ़ला के और कोई नहीं जानता, उनके पास उनके रसूल मोजिज़े लेकर आए। लेकिन वह अपने हाथ अपने मुँह में फेर लिए गए और साफ़ कह दिया जो कुछ तुम्हें देकर भेजा है हम उसका इंकार करते हैं। और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो तो उसमें बड़ा भारी शुब्हा है हम उससे ख़ातिर जमा नहीं।" (9)

बनी इस्राईल को मूसा (عليه السلام) का वअ़ज़ (आयत 9) : हज़रत मूसा (عليه السلام) का बाक़ी वअ़ज़ बयान हो रहा है कि आपने अपनी क़ौम को अल्लाह की नेअ़मतें याद दिलाते हुए फ़र्माया कि देखो तुमसे पहले के लोगों पर रसूलों के झुठलाने की वजह से कैसे सख़्त अ़ज़ाब आए और किस तरह वह ग़ारत किए गए। इब्ने जरीर (रह.) का यह क़ौल ज़रा ताम्मुल तलब है बज़ाहिर तो ऐसा मालूम होता है कि वह वअ़ज़ तो ख़त्म हो चुका है अब यह नया बयान कुरआन है। कहा गया है कि आ़दियों और समूदियों के वाक़ियात तौरात में थे ही नहीं। तो अगर यह बात भी हज़रत मूसा (عليه السلام) की ही मानी जाए तो ज़ाहिर है कि उनके क़िस्से यहूदियों के सामने बयान हो चुके थे। और यह दोनों वाक़ियात भी तौरात में थे, वल्लाहु आ़लम! मिन जुम्ला उन लोगों के और उन जैसे और भी बहुत से लोगों के वाक़ियात कुरआने करीम में हमारे सामने बयान हो चुके हैं कि उनके पास अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर अल्लाह की आयात और अल्लाह तआ़ला के दिए हुए मोजिज़े लेकर पहुँचे। इनकी गिनती का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं नसब के बयान करने वाले ग़लत भले हैं। (तब्री : 13/187; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) बहुत सी उम्मतें ऐसी भी गुज़री हैं जिनका इल्म अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को नहीं। उ़र्वा बिन ज़ुबेर (रह.) का बयान है कि मअ़द बिन अ़दनान के बाद का नसबनामा सहीह तौर पर कोई नहीं जानता। वह अपने हाथ उनके चेहरे तक लौटा ले गए के एक मअ़नी तो यह हैं कि रसूलों के मुँह बंद करने लगे। एक मअ़नी यह भी हैं कि वह अपने हाथ अपने मुँह पर रखने लगे कि सिर्फ़ झूठ है जो रसूल कहते हैं। एक मअ़नी यह हैं जवाब से लाचार होकर उँगलियाँ मुँह पर रख लीं। एक मअ़नी यह भी है कि अपने मुँह से उन्हें झुठलाने लगे। और यह भी हो सकता है कि यहाँ पर (फ़ी) मअ़नी में ब के हो। जैसे कुछ अ़रब कहते हैं (अदख़लकल्लाहु बिल जन्नति यअ़नी फ़िल जन्नति) शेअ़र में भी यह मुहावरा मुस्तअ़मिल है और बक़ौले मुजाहिद (रह.) इसके बाद का जुम्ला इसकी तफ़्सीर है। यह भी कहा गया है कि उन्होंने मारे गुस्से के अपनी उँगलियाँ अपने मुँह में डाल लीं। (हाकिम : 2/350, 352; ह : 3336; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) चुनाँचे और आयत में मुनाफ़िक़ीन के बारे में है (وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ) (3/आले इमरान : 119) यह लोग ख़ल्वत में तुम्हारी जलन से अपनी उँगलियाँ चबाते रहते हैं। यह भी है कि कलामुल्लाह सुनकर ताज्जुब से अपने हाथ अपने मुँह पर रख देते हैं और कह गुज़रते हैं कि हम तो तुम्हारी रिसालत के मुंकिर हैं। हम तुम्हें सच्चा नहीं जानते बल्कि सख़्त शुब्हा में हैं।

***

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ

إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم
بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾

तर्जुमा : ''उनके रसूलों ने उन्हें कहा कि क्या हक़ तआला के बारे में तुम्हें शक है जो आसमानों व ज़मीन का बनाने वाला है। वह तो तुम्हें इसलिए बुला रहा है कि तुम्हारे तमाम गुनाह माफ़ कर दे और एक मुक़र्ररा वक़्त तक तुम्हें मोहलत दे दे, वह कहने लगे कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, तुम चाहते हो कि हमें उन ख़ुदाओं की इबादत से रोक दो। जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते रहे, अच्छा तो हमारे सामने कोई खुली सनद पेश करो। (10) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि यह तो सच है कि हम तुम जैसे ही इंसान हैं लेकिन रब तआला अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपना फ़ज़्ल करता है। बग़ैर अल्लाह के हुक्म के हमारी मजाल नहीं कि हम कोई मोजिज़ा तुम्हें ला दिखाएँ। ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह तआला ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11) आख़िर क्या वजह है कि हम अल्लाह तआला पर भरोसा न रखें। उसी ने हमें हमारी राहें सुझाई हैं। अल्लाह की क़सम! जो ईज़ाएँ तुम हमें दोगे हम उन पर सब्र ही करेंगे, तवक्कल करने वाले को यही लायक़ है कि अल्लाह तआला ही पर भरोसा करें।'' (12)

क़ौम की ईज़ा रसाइयों पर अम्बिया (عليهم السلام) का अल्लाह पर तवक्कल (आयत 10-12) : रसूलों की और उनकी क़ौम के काफ़िरों की बातचीत बयान हो रही है, क़ौम ने अल्लाह की इबादत में शक व शुब्हा का इज़्हार किया। इस पर रसूलों ने कहा कि अल्लाह तआला के बारे में शक? यानी उसके वजूद में शक कैसा? फ़ित्रत उसकी शाहिद आदिल है। इंसान की बुनियाद में उसका इक़रार मौजूद है। अक़्ले सलीम उसके मानने पर मजबूर है। अच्छा अगर दलील बग़ैर इत्मिनान नहीं तो देख लो कि यह आसमान व ज़मीन कैसे पैदा हो गए। मौजूद के लिए मूजिद का होना ज़रूरी है। उन्हें बग़ैर नमूना पैदा करने वाला वही वह्दहू ला शरीका लहू है। इस आलम का नौपैद मुत्तीअ व मख़्लूक़ होना बिलकुल ज़ाहिर है। इससे क्या इतनी मोटी बात भी समझ में नहीं आती कि इसका सानेअ (बनाने वाला) इसका ख़ालिक़ है और वही अल्लाह तआला है जो हर चीज़ का ख़ालिक़ मालिक और मअबूदे बरहक़ है। या क्या तुम्हें उसकी उलूहियत और उसकी वह्दानियत में शक है? जब तमाम मौजूदात का ख़ालिक़ और मूजिद वही है तो फिर इबादत में तंहा वही क्यूँ न हो? चूँकि अक्सर उम्मतें ख़ालिक़ के वजूद की क़ाइल थीं फिर औरों की इबादत उन्हें वास्ता और वसीला जानकर अल्लाह से नज़दीक करने वाले और नफ़ा देने वाले समझकर करती थीं। इसलिए पैग़म्बरे इलाही इन्हें उनकी इबादतों से यह

समझाकर रोकते हैं। अल्लाह तआला तुम्हें अपनी तरफ़ बुला रहा है कि आख़िरत में तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे और जो मुक़द्दर वक़्त है उस तक तुम्हें अच्छाई से पहुँचा दे। हर एक फ़ज़ीलत वाले को वह उसकी फ़ज़ीलत इनायत करेगा। अब उम्मतों ने पहले मक़ाम की तस्लीम के बाद जवाब दिया कि तुम्हारी रिसालत हम कैसे मान लें ? तुममें इंसानियत तो हम जैसी ही है अच्छा अगर सच्चे हो तो ज़बरदस्त मोजिज़ा पेश करो जो इंसानी ताक़त से बाहर हो। उसके जवाब में पैग़म्बराने इलाही ने फ़र्माया कि यह तो बिलकुल मुसल्लम है कि हम तुम जैसे ही इंसान हैं लेकिन रिसालत व नबुव्वत अल्लाह का अतिया है। वह जिसे चाहे दे, इंसानियत रिसालत के मनाफ़ी नहीं और जो चीज़ तुम हमारे हाथों में देखना चाहते हो, उसकी निस्बत भी सुन लो कि वह हमारे बस की बात नहीं, हाँ! हम अल्लाह तआला से तलब करेंगे। अगर हमारी दुआ मक़्बूल हुई तो बेशक हम दिखा देंगे। मोमिनों को तो हर काम में अल्लाह तआला ही पर भरोसा है और ख़ुसूसियत के साथ हमें उस पर ज़्यादा भरोसा और तवक्कल है इसलिए भी कि उसने तमाम राहों में से बेहतरीन राह दिखाई। तुम जितना चाहो दुख दो लेकिन इंशाअल्लाह तआला! दामने तवक्कल तो हमारे हाथ से छूटने का नहीं। मुतवक्किलीन के गिरोह के लिए अल्लाह तआला काफ़ी वाफ़ी है।

***

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَاَوْحٰٓى
اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ⑬ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ
خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ⑭ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ⑮ مِّنْ وَّرَاۗىِٕهٖ
جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّاۗءٍ صَدِيْدٍ ⑯ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰

तर्जुमा : 'काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश निकाला दे देंगे। या तुम फिर से हमारे मज़हब में लौट आओ। तो उनके परवरदिगार ने उनकी तरफ़ वही भेजी कि हम इन ज़ालिमों को ही ग़ारत कर देंगे। (13) और इनके बाद हम ख़ुद तुम्हें इस ज़मीन में बसा देंगे, यह है उनके लिए जो मेरे सामने खड़े होने का डर रखें और मेरे वादे से ख़ौफ़ज़दा रहें। (14) आख़िर फ़ैसले को तलब करने लगे तो सरकश ज़िद्दी लोग नामुराद हो गए। (15) उसके सामने दोज़ख़ है जहाँ वह पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16) जिसे बमुश्किल घूँट घूँट उँडेलेगा। फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा। हर जगह से मौत आती दिखाई देगी लेकिन वह मरने वाला नहीं। फिर उसके पीछे भी सख़्त अज़ाब है।'' (17)

अहले जहन्नम की ख़ुराक (आयत 13-17) : काफ़िर जब तंग हुए कोई हुज्जत बाक़ी न रही तो नबियों को धमकाने लगे और देश निकाले से डराने लगे। क़ौमे शुऐब ने भी अपने नबी और मोमिनों से यही कहा था कि तुम्हें अपनी बस्ती से निकाल देंगे। लूतियों ने भी यही कहा था कि आले लूत को अपने शहर से निकाल दो। मुश्रिकीने क़ुरैश ने भी यही मंसूबा बाँधा था और यह भी कहा था कि क़ैद कर लो, क़त्ल कर दो या मुल्क से बाहर निकाल दो। वह भले चाल चल रहे थे लेकिन अल्लाह तआला भी उनके दाव में था, अपने नबी को सलामती के साथ मक्का से ले गया। मदीने वालों को आपका अंसार व मददगार बना दिया। वह आपके लश्कर में शामिल होकर आपके झण्डे तले काफ़िरों से लड़े और बतदरीज अल्लाह तआला ने आपको तरक़्क़ियाँ दीं। यहाँ तक कि बिल आख़िर आपने मक्का भी फ़तह कर लिया। अब तो दुश्मनाने दीन के मंसूबे ख़ाक में मिल गए। उनकी उम्मीदों पर ओस पड़ गई, उनकी आरज़ूएँ पामाल हो गईं। दीने इलाही लोगों के दिलों में मज़बूत हो गया. जमाअतों की जमाअतें दीन में दाख़िल होने लगीं। तमाम रूए ज़मीन के दीनों पर दीने इस्लाम छा गया। कलिम-ए-रब बुलंद व बाला हो गया और थोड़े से ज़माने में मश्रिक़ से मग़्रिब तक इशाअते इस्लाम हो गई, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! यहाँ फ़र्मान है कि इधर कुफ़्फ़ार ने नबियों को धमकाया उधर अल्लाह तआला ने उनसे सच्चा वादा लिया कि यही हलाक होंगे और ज़मीन के मालिक तुम बनोगे। जैसे फ़र्मान है कि हमारा कलिमा हमारे रसूलों के बारे में सब्क़त कर चुका है कि वही कामयाब होंगे और हमारे लश्कर ही ग़ालिब रहेंगे। (37/साफ़्फ़ात : 171-173) और आयत में है (كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي) (58/मुजादिला : 21) अल्लाह लिख चुका है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ही ग़ालिब आएँगे, अल्लाह कुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है। और आयत में इर्शाद है कि ज़िक्र के बाद ज़बूर में भी यही तहरीर है। (21/अम्बिया : 105) हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी अपनी क़ौम से यही फ़र्माया था कि तुम अल्लाह तआला से मदद तलब करो, सब्रो सिहार करो। ज़मीन अल्लाह ही की है। अपने बन्दों में से जिसे चाहे वारिस बनाए। अंजामकार परहेज़गारों का ही है। और जगह इर्शाद है (وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ) (7/आराफ़ : 137) ज़ईफ़ और कमज़ोर लोगों को हमने ज़मीन की मश्रिक़ और मग़्रिब का वारिस बना दिया जहाँ हमारी बरकतें थीं। बनी इस्राईल के सब्र की वजह से हमारा उनसे जो बेहतरीन वादा था वह पूरा हो गया। उनके दुश्मन फ़िरऔन और फ़िरऔनी और उनकी की करायी तैयारियाँ सब यक्मुश्त ख़ाक में मिल गईं। नबियों से फ़र्मा दिया गया कि ज़मीन तुम्हारे क़ब्ज़े में आएगी। यह वादे उनके लिए हैं जो क़यामत के दिन के मेरे सामने खड़े होने से डरते रहेंऔर मेरे डरावे और अज़ाब से ख़ौफ़ खाते रहें। जैसे फ़र्माने बारी तआला है (فَأَمَّا مَن طَغَىٰ) (79/नाज़िआत : 37) यानी जिसने सरकशी की और दुनियावी ज़िन्दगी को तर्जीह दी। उसका ठिकाना जहन्नम है। और आयत में है अपने रब के सामने खड़े होने का डर जिसने किया उसे दोहरी जन्नतें हैं। (55/रहमान : 46)

रसूलों ने अपने रब से मदद व फ़तह तलब किया या यह कि उनकी क़ौम ने उसे तलब किया, जैसे क़ुरैशे मक्का ने कहा था कि इलाही! अगर यह हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या और कोई दर्दनाक अज़ाब हमें कर और यह भी हो सकता है कि इधर से कुफ़्फ़ार का मुतालबा हो उधर से रसूलों ने भी अल्लाह से दुआ की जैसे बद्र वाले दिन हुआ था कि एक तरफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआ माँग रहे थे दूसरी तरफ़ सरदाराने

कुफ़्र भी कह रहे थे कि इलाही! आज सच्चे को ग़ालिब कर। यही हुआ भी। मुश्रिकीन से कलामुल्लाह में और जगह फ़र्माया गया है कि तुम फ़तह़ तलब किया करते थे। लो अब वह आ गई अब भी अगर बाज़ आ जाओ तो तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है, ...। (8/अन्फ़ाल : 19) नुक़्सान उठाने वाले वह हैं जो घमण्डी हों। अपने आप कुछ गिनते हों, ह़क़ से इनाद (दुश्मनी) रखते हों, क़यामत के दिन फ़र्मान होगा कि हर एक काफ़िर सरकश भलाई से रोकने वाले को जहन्नम में दाख़िल करो। जो अल्लाह तआला के साथ दूसरों को पूजा करता था उसे सख़्त अ़ज़ाब में ले जाओ। ह़दीस में है कि ''क़यामत के दिन जहन्नम को लाया जाएगा वह तमाम मख़्लूक़ को निदा करके कहेगी कि मैं हर एक सरकश ज़िद्दी के लिए मुक़र्रर की गई हूँ।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़ति जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिन्नारि : 2574; मअनन वहुव ह़सन; इसके अलावा अह़मद : 3/40; मुस्नद अबी यअला : 1138 में भी मौजूद है।) उस वक़्त उन बुरे लोगों को क्या ही बुरा ह़ाल होगा जबकि अम्बिया (अ.) तक अल्लाह तआला के सामने गिड़गिड़ा रहे होंगे। वराआ (पीछे) यहाँ पर मअनी में (अमामा) (सामने) के है जैसे आयत (وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ) (18/कहफ़ : 79) में है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की क़िरअत ही (वकाना अमामहुम मलिकुन) है। ग़र्ज़ सामने से जहन्नम उसकी ताक में होगी जिसमें जाकर फिर निकलना न होगा। क़यामत के दिन तक तो सुबह़ व शाम वह पेश होती रही, अब वही ठिकाना बन गई। फिर वहाँ उसके लिए पानी के बदले आग जैसी पीप है और ह़द से ज़्यादा ठण्डी और बदबूदार वह पानी है जो जहन्नमियों के ज़ख़्मों से रीझा है। जैसे फ़र्माया (هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ) (38/स़ाद : 57) पस एक गर्मी में ह़द से ज़्यादा गुज़रा हुआ। स़दीद कहते हैं (अह़मद : 6/460; व सनदुहू ह़सन ग़रीब, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/69) पीप और ख़ून को जो जहन्नमियों के गोश्त से और उनकी खालों से बहा हुआ होगा। (अह़मद : 2/178; व सनदुहू ह़सन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/69; सुननुल कुब्रा : 5218; इब्ने अबी शैबा : 26584) उसी को (त़ीनतुल ख़बाल) भी कहा जाता है। मुस्नद अह़मद में है कि ''जब उसके पास लाया जाएगा तो उसे सख़्त तक्लीफ़ होगी। मुँह के पास पहुँचते ही सारे चेहरे की खाल झुलसकर उसमें गिर पड़ेगी एक घूँट लेते ही पेट की आँतें पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकल पड़ेंगी।'' अल्लाह का फ़र्मान है कि वह खौलता हुआ गर्म पानी पिलाये जाएँगे जो उनकी आँतें काट देगा। (47/मुह़म्मद : 15) और फ़र्मान है फ़रियाद करने पर उनकी फ़रियादरसी पिघले हुए ताँबे जैसे गर्म पानी से की जाएगी जो चेहरा झुलसा देगा। (अह़मद : 5/265; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति तुराबिन अहलिन्नार : 2583; व सनदुहू ह़सन; सुननुल कुब्रा : 11263; ह़ाकिम : 2/351; लेकिन सूरह कहफ़ में आयत 29 के मुताबिक़ इसका मअनी ठीक है।) (18/कहफ़ : 29) जबरन घूँट घूँट करके उतारेगा, फ़रिश्ते लोहे के हथोड़े मार मारकर पिलाएँगे, बदमज़गी बुराई बदबू ह़रारत गर्मी की तेज़ी या सर्दी की तेज़ी की वजह से गले से उतरना मह़ाल होगा। बदन में, अअ़ज़ा में, जोड़ जोड़ में वह दर्द और तक्लीफ़ होगी कि मौत का मज़ा आए। लेकिन मौत न आएगी। रग रग पर अ़ज़ाब लेकिन जान नहीं निकलती। एक एक रोंगटे नाक़ाबिले बर्दाश्त मुसीबत में जकड़ा हुआ है लेकिन रूह़ बदन से जुदा नहीं हो सकती। आगे पीछे दाएँ बाएँ से मौत आ रही है लेकिन आ नहीं पाती। त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब में दोज़ख़ की आग घेरे हुए है मगर मौत बुलाए से भी नहीं आती। न मौत आए, न अ़ज़ाब जाए। हर सज़ा ऐसी है कि मौत के लिए काफ़ी से ज़्यादा लेकिन वहाँ तो मौत को मौत आ गई है ताकि सज़ा ए दवाम होती रहे। इन तमाम बातों के साथ फिर सख़्त

मुसीबतनाक अलम अफ़ज़ा अज़ाब और हैं जैसे ज़क्कूम के दरख़्त के बारे में फ़र्माया कि वह जहन्नम की जड़ से निकलता है जिसके शगूफ़े शैतानों के सरों जैसे हैं वह उसे खाएँगे और पेट भर खायेंगे फिर खोलता हुआ तेज़ गर्म पानी पेट में जाकर उससे मिलेगा फिर उनका लोटना जहन्नम की जानिब है। अल्ग़र्ज़ कभी ज़क्कूम खाने का कभी हमीम पीने का कभी आग में जलने का कभी सदीद पीने का अज़ाब उन्हें होता रहेगा। अल्लाह की पनाह। फ़र्माने इलाही है (هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ) (55/रहमान : 43) यही वह जहन्नम है जिसे काफ़िर झुठलाते रहे। आज जहन्नम के और उबलते हुए तेज़ गर्म पानी के बीच वह चक्कर लगाते फिरेंगे। और आयत में है कि ज़क्कूम का दरख़्त गुनहगारों की ग़िज़ा है जो पिघले हुए तांबे जैसा होगा। पेट में जाकर उबलेगा और ऐसे जोश मारेगा जैसे गर्म पानी खुदबुदिया ले रहा हो। उसे पकड़ो और उसे बीच जहन्नम में डाल दो। फिर उसके सर पर गर्म पानी के तरेड़े का अज़ाब बहाओ, मज़ा चख। तू तो अपने ख़्याल में बड़ा अज़ीज़ था और करम वाला था। यही है वह जिससे तुम हमेशा शक व शुब्हा करते रहे। (44/दुख़ान : 43-50) सूरह वाक़िया में फ़र्माया कि वह लोग जिनके बायें हाथ में नामा-ए-आमाल दिए जाएँगे कैसे बुरे लोग हैं गर्म हवा और गर्म पानी में पड़े हुए होंगे और धूएँ के साये में जो न ठण्डा न बाइज़्ज़त। (56/वाक़िया 41-44) दूसरी आयत में है सरकशों के लिए जहन्नम का बुरा ठिकाना है जिसमें वह दाख़िल होंगे और वह रिहाइश की बदतरीन जगह है। इस मुसीबत के साथ तेज़ गर्म पानी और पीप और लहू और उसी के हमशक्ल और भी तरह तरह के अज़ाब होंगे। (38/साद : 55-58) जो दोज़खियों को भुगतने पड़ेंगे। जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। यह उनके आमाल का बदला होगा न कि अल्लाह तआला का ज़ुल्म।

***

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾

तर्जुमा : "उन लोगों की मिसाल जिन्होंने अपने पालने वाले से कुफ़्र किया उनके आमाल मिस्ल उस राख के हैं जिस पर तेज़ हवा आँधी वाले दिन चले। जो अभी उन्होंने किया उसमें से किसी चीज़ पर क़ादिर न होंगे यही दूर की गुमराही है।" (18)

बेकार बेसूद अमलों की मिसाल (आयत 18) : काफ़िर जो अल्लाह तआला के साथ दूसरों की इबादतों के ख़ोगर थे, पैग़म्बरों की नहीं मानते थे, जिनके आमाल ऐसे थे जैसे बग़ैर पाये की इमारत हो जिनका नतीजा यह हुआ कि सख़्त ज़रूरत के वक़्त ख़ाली हाथ खड़े रह गए। पस फ़र्मान है कि उन काफ़िरों की यानी उनके आमाल की मिसाल क़यामत के दिन जबकि यह पूरे मोहताज होंगे समझ रहे होंगे कि अब भी हमारी भलाइयों का बदला हमें मिला। लेकिन कुछ न पाएँगे, मायूस रहेंगे। हसरत से मुँह तकने लगेंगे। जैसे तेज़ आँधी वाले दिन हवा राख को उड़ाकर ज़र्रा इधर उधर कर दे। इसी तरह उनके आमाल सिर्फ़ इकारत हो गए। जैसे उस बिखरी और अड़ी हुई राख

का जमा करना महाल ऐसे ही उनके बेसूद आमाल का बदला महाल वह तो वहाँ होंगे ही नहीं। उनके आने से पहले ही (هَبَاءً مَّنْثُورًا) (25/फ़ुरक़ान : 23) हो गए। फ़र्माने इलाही है (مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ) (3/आले इमरान : 117) यह कुफ़्फ़ार जो कुछ इस दुनियावी ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस आग बगूले जैसी है जो ज़ालिमों की खेती झुलसा दे। अल्लाह तआला ज़ालिम नहीं। लेकिन वह अपने ऊपर ख़ुद ज़ुल्म करते रहते हैं। और आयत में है कि ईमान वालों! अपने सदक़े ख़ैरात एहसान रखकर और ईज़ा देकर बर्बाद न करो। जैसे वह जो रियाकारी के लिए ख़र्च करता हो और अल्लाह तआला पर और क़यामत पर ईमान न रखता हो। उसकी मिसाल उस चट्टान की तरह है जिस पर मिट्टी थी लेकिन बारिश के पानी ने उसे धो दिया। अब वह बिलकुल साफ़ हो गई। यह लोग अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं। अल्लाह तआला काफ़िरों की रहबरी नहीं करता। इस आयत में इर्शाद हुआ कि यह दूर की गुमराही है। इनकी कोशिश इनके काम बेपाया और बे सबात हैं। सख़्त हाजतमंदी के वक़्त सवाब कम पाएँगे यही दूर की बदनसीबी है।

***

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٩﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन को बेहतरीन तदबीर के साथ पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे और नई मख़लूक़ लाए। (19) अल्लाह पर यह काम कुछ भी मुश्किल नहीं।" (20)

कायनाते रंग व बू का ख़ालिक़ (आयत 19, 20) : अल्लाह तआला बयान फ़र्माता है कि क़यामत के दिन की दोबारा पैदाइश पर मैं क़ादिर हूँ। जब मैंने आसमान व ज़मीन की पैदाइश कर दी तो इंसान की पैदाइश मुझ पर क्या मुश्किल है। आसमान की ऊँचाई कुशादगी बड़ाई फिर इसमें ठहरे हुए और चलते फिरते सितारे और यह ज़मीन पहाड़ों और जंगलों दरख़्तों और हैवानों वाली सब अल्लाह ही की बनाई हुई है। जो उनकी पैदाइश से आजिज़ न आया, वह क्या मुर्दों के दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं, बेशक क़ादिर है। सूरह यासीन में फ़र्माया कि क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे नुत्फ़े से पैदा किया। फिर वह झगड़ालू बन बैठा। हमारे सामने मिसालें बयान करने लगा, अपनी पैदाइश भूल गया और कहने लगा इन बोसीदा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? कह दे कि वही अल्लाह तआला जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया वह हर चीज़ की पैदाइश को बख़ूबी जानता है। उसी ने सब्ज़ दरख़्त से तुम्हारे लिए आग बनाई है कि तुम उसे जलाते हो। क्या आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ इन जैसों की पैदाइश पर क़ादिर नहीं? बेशक है। वही बड़ा ख़ालिक़ और बहुत बड़ा आलिम है उसके इरादे के बाद उसका सिर्फ़ इतना हुक्म बस है कि हो। उसी वक़्त वह हो जाता है। वह अल्लाह तआला पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और जिसकी तरफ़ सबका लौटना है। (36/यासीन :

77-83) उसके क़ब्ज़े में है कि अगर चाहे तो तुम सबको फ़ना करदे और नई मख़्लूक़ तुम्हारी जगह यहाँ आबाद कर दे। उस पर यह काम भी भारी नहीं। तुम इस हुक्म के ख़िलाफ़ करोगे तो यही होगा। जैसे फ़र्माया अगर तुम मुँह मोड़ लोगे तो वह तुम्हारे बदल और क़ौम लाएगा जो तुम्हारी तरह की न होगी। (47/मुहम्मद : 38) और आयत में है ऐ ईमान वालों! तुममें से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह तआला एक ऐसी क़ौम को लाएगा जो उसकी पसंदीदा होगी और उससे मुहब्बत रखने वाली होगी। (5/माइदा : 54) और जगह है कि अगर वह चाहे तुम्हें बर्बाद कर दे और दूसरी लाए। अल्लाह इस पर क़ादिर है। (4/निसाअ : 133)

***

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ㉑

तर्जुमा : ''सबके सब अल्लाह के सामने रूबरू खड़े होंगे। उस वक़्त कमज़ोर लोग बड़ाई वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेदार थे। तो क्या तुम अल्लाह तआला के अज़ाबों में से कुछ अज़ाब हमसे दूर कर सकने वाले हो? वह जवाब देंगे कि अगर अल्लाह हमें हिदायत देता तो हम भी ज़रूर तुम्हारी रहनुमाइ करते। अब तो हम पर बेक़रारी करना और सब्र करना दोनों ही बराबर है हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं।'' (21)

मैदाने महशर में तमाम मख़्लूक़ात जमा होंगी (आयत 21) : साफ़ चटयल मैदान में अल्लाह तआला की तमाम मख़्लूक़ नेक व बद अल्लाह तआला के सामने मौजूद होगी। उस वक़्त जो लोग मातहत थे उनसे कहेंगे जो सरदार और बड़े थे और जो उन्हें अल्लाह की इबादत और रसूल की इताअत से रोकते थे कि हम तो तुम्हारे ताबेअ फ़र्मान थे जो हुक्म तुम देते थे हम बजा लाते थे जो तुम फ़र्माते थे हम मानते थे। पस जैसे कि तुम हमसे वादे करते थे और हमें तमन्नाएँ दिलाते थे क्या आज अल्लाह तआला के अज़ाबों को हमसे हटाओगे? उस वक़्त यह पेशवा और सरदार कहेंगे कि हम तो ख़ुद राहे रास्त पर न थे, तुम्हारी रहबरी कैसे करते? हम पर अल्लाह तआला का कलिमा सब्क़त कर गया। अज़ाब के मुस्तहिक़ हम सब हो गए, अब न हाय वाय और बेक़रारी नफ़ा दे और न सब्रो सिहार। अज़ाब के बचाव की तमाम सूरतें नापैद (ख़त्म) हैं। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं कि दोज़ख़ी लोग कहेंगे कि देखो! यह मुसलमान अल्लाह तआला के सामने रोते धोते थे इस वजह से वह जन्नत में पहुँचे। आओ हम भी अल्लाह के सामने रोएँ गिड़गिड़ाएँ। ख़ूब रोएँगे पिटेंगे, चीख़ेंगे चिल्लाएँगे लेकिन बेसूद रहेगा। तो कहेंगे जन्नतियों के जन्नत में जाने की एक वजह सब्र करना थी, आओ हम भी ख़ामोशी और सब्र इख़्तियार करें। अब ऐसा सब्र करेंगे कि ऐसा सब्र कभी नहीं देखा गया लेकिन

यह भी ला हासिल रहेगा। उस वक़्त कहेंगे, हाय! सब्र भी बेसूद और बेक़रारी भी बेनफ़ा। ज़ाहिर तो यह है कि पेशवाओं और ताबेदारों की यह बातचीत जहन्नम में जाने के बाद होगी। जैसे आयत (وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ) (40/मोमिन : 47) जबकि वह जहन्नम में झगड़ेंगे उस वक़्त ज़ईफ़ लोग तकब्बुर (घमंड करने) वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे मातहत थे तो क्या आग के किसी हिस्से से तुम हमें नजात दिला सकोगे? वह मुतकब्बिर कहेंगे हम तो सब जहन्नम में मौजूद हैं। अल्लाह के फ़ैसले बन्दों में हो चुके हैं और आयत में है (قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ) (7/आराफ़ : 38) फ़र्माएगा कि जाओ उन लोगों में शामिल हो जाओ जो इंसान जिन्नात तुमसे पहले जहन्नम में जा पहुँचे हैं। जो गिरोह जाएगा वह दूसरे को लानत करता जाएगा। जब सबके सब जमा हो जाएँगे तो पिछले पहलों की निस्बत जनाबे बारी में अर्ज़ करेंगे कि परवरदिगार! इन लोगों ने हमें तो बहका दिया, इन्हें दोहरा अज़ाब कर। जवाब मिलेगा, हर एक को दोहरा है लेकिन तुम नहीं जानते। और अगले पिछलों से कहेंगे कि तुम्हें हम पर कोई फ़ज़ीलत नहीं थी। अपने किए हुए कामों का अज़ाब चखो और आयत में है कि वह कहेंगे (رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا) (33/अहज़ाब : 67) ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने पेशवाओं और बड़ों की इताअत की जिन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे पालनहार! तू इन्हें दोहरा अज़ाब कर और बड़ी लानत कर। यह लोग महशर में भी झगड़ेंगे। फ़र्मान है (إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ) (34/सबा : 31) काश कि तू देखता जबकि ज़ालिम लोग अल्लाह तआला के सामने खड़े हुए एक दूसरे से लड़ झगड़ रहे होंगे। ताबेदार लोग अपने बड़ों से कहते होंगे कि अगर तुम न होते तो हम तो ईमान वाले बन जाते। यह बड़े छोटों से कहते होंगे कि क्या हिदायत आ जाने के बाद हमने तुम्हें उससे रोक दिया? नहीं! बल्मि तुम तो आप गुनहगार बदकार थे। यह कमज़ोर लोग फिर उन ज़ोरावरों से कहेंगे कि तुम्हारे रात दिन के दाव घात और हमें यह हुक्म देना कि हम अल्लाह से कुफ़्र करें उसके शरीक ठहराएँ। अब सब लोग पोशीदा तौर पर अपनी अपनी जगह नादिम हो जाएँगे जबकि अज़ाबों को सामने देख लेंगे। हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे। उन्हें उनके आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा।

***

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ
وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ
وَلُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ
قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾

तर्जुमा : ''जबकि काम का फ़ैसला कर दिया जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुम्हें सच्चा वादा दिया था और मैंने तुमसे जो वादे किये थे उनका ख़िलाफ़ किया मेरा तुम पर कोई दबाव तो था ही नहीं, हाँ! मैंने तुम्हें पुकारा और तुमने मेरी मान ली। पस तुम मुझे इल्ज़ाम न लगाओ बल्कि ख़ुद अपने आपको मलामत करो। न मैं तुम्हारा फ़रियादरस और न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँचने वाले। मैं तो सिरे से मानता ही नहीं कि तुम मुझे इससे पहले शरीके रब्बानी मानते रहे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (22) जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए वह उन जन्नतों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे चश्मे जारी हैं जहाँ उन्हें हमेशगी होगी अपने रब के हु क्म से। जहाँ उनका तोहफ़ा सलाम ही सलाम होगा।'' (23)

क़यामत के दिन शैतान का ऐतिराफ़े जुर्म और अपने मुत्तबेईन से इज़्हारे ला ताल्लुक़ी (आयत 22, 23) : अल्लाह तआ़ला जब बन्दों की क़ज़ा से फ़ारिग़ होगा। मोमिन जन्नत में और काफ़िर दोज़ख़ में पहुँच जाएँगे उस वक़्त इब्लीस मल्ऊन जहन्नम में खड़ा होकर उनसे कहेगा कि अल्लाह तआ़ला के वादे सच्चे और बरहक़ थे। रसूलों की ताबेदारी में ही नजात और सलामती थी। मेरे वादे तो धोखे थे। मैं तो तुम्हें ग़लत राह पर डालने के लिए सब्ज़ बाग़ दिखाया करता था। मेरी बातें बेदलील थीं मेरा कलाम बेहुज्जत था। मेरा कोई ज़ोर और ग़ल्बा तुम पर न था। तुम ख़्वाह मख़्वाह मेरी एक आवाज़ पर दौड़ पड़े। मैंने कहा तुमने मान लिया। रसूलों के सच्चे वादे उनकी बा दलील आवाज़, उनकी कामिल हुज्जत वाली दलीलें तुमने तर्क कर दीं। उनका ख़िलाफ़ और मेरी मुवाफ़िक़त की जिसका नतीजा आज अपनी आँखों से तुमने देख लिया। यह तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है। मुझे मलामत न करना, बल्कि अपने नफ़्स को ही इल्ज़ाम देना। गुनाह तुम्हारा अपना है तुमने दलीलें छोड़ीं तुमने मेरी बात मानी आज मैं तुम्हें कुछ काम न आऊँगा। न तुम्हें बचा सकूँ न नफ़ा पहुँचा सकूँ। मैं तो तुम्हारे शिर्क के बाइस तुम्हारा मुंकिर हूँ। मैं साफ़ कहता हूँ कि मैं शरीके इलाही नहीं जैसे फ़र्माने इलाही है (وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ) (46/अह्क़ाफ़ : 5) उससे बढ़कर गुमराह कौन है? जो अल्लाह तआ़ला के सिवा औरों को पुकारे जो क़यामत तक उसकी पुकार को सुन न सकें। बल्कि उसके पुकारने से महज़ ग़ाफ़िल हों और महशर के दिन उनके दुश्मन और उनकी इबादत के मुंकिर बन जाएँ। और आयत में है (كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ) (19/मरयम : 82) यक़ीनन वह लोग इनकी इबादतों से मुंकिर हो जाएँगे और इनके दुश्मन बन जाएँगे, यह ज़ालिम लोग हैं इसलिए कि हक़ से मुँह फेर लिया बातिल के पैरूकार बन गए, ऐसे ज़ालिमों के लिए अलमनाक (दुख देने वाला) अ़ज़ाब हैं। पस ज़ाहिर है कि इब्लीस का यह कलाम दोज़ख़ियों से दोज़ख़ में दाख़िल होने के बाद होगा ताकि वह हसरत व अफ़सोस में और बढ़ जाए। लेकिन इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब अगलों पिछलों को अल्लाह तआ़ला जमा करेगा और उनमें फ़ैसला करेगा फ़ैसलों के वक़्त आम घबराहट होगी। मोमिन कहेंगे हममें फ़ैसले हो रहे हैं। अब हमारी सिफ़ारिश के लिए कौन खड़ा होगा? हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा (عليه السلام) के पास जाएँगे। हज़रत ईसा (عليه السلام) फ़र्माएँगे, नबी उम्मी (ﷺ) के पास जाओ। चुनाँचे वह मेरे पास आएँगे। मुझे खड़ा होने की अल्लाह तबारक व तआ़ला इजाज़त देगा। उसी वक़्त

मेरी मज्लिस से पाकीज़ा और उम्दा ख़ुश्बू फैलेगी कि उससे बेहतर और उम्दा ख़ुश्बू कभी किसी ने न सूँघी होगी। मैं चलकर रब्बुल आलमीन के पास आऊँगा। मेरे सर के बालों से लेकर मेरे पैर के अंगूठें तक जिस्म नूरानी हो जाएगा। अब मैं सिफ़ारिश करूँगा और जनाब हक़ तबारक व तआला क़बूल करेगा। यह देखकर काफ़िर लोग कहेंगे कि चलो भई! हम भी किसी को सिफ़ारिशी बनाकर ले चलें। और उसके लिए हमारे पास सिवाए इब्लीस के और कौन है? उसने हमको बहकाया था। चलो उसी से अर्ज़ मअरूज़ करें। आएँगे इब्लीस से कहेंगे, कि मोमिनों ने तो सिफ़ारिशी पा लिया, अब तू हमारी तरफ़ सिफ़ारिशी बन जा, इसलिए कि हमें गुमराह भी तूने ही किया है। यह सुनकर यह मल्ऊन खड़ा होगा। उसकी मज्लिस से ऐसी गंदगी फैलेगी कि उससे पहले किसी नाक में ऐसी बदबू न पहुँची हो फिर वह कहेगा। (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/379; सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अन्अम ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/480) जिसका बयान इस आयत में है। मुहम्मद बिन कअब क़ुरज़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि जब जहन्नमी अपना सब्र और बेसब्री यक्साँ बतलाएँगे उस वक़्त इब्लीस उनसे यह कहेगा। उस वक़्त वह अपनी जानों से भी बेज़ार हो जाएँगे। निदा आएगी कि तुम्हारी इस वक़्त की इस बेज़ारी से भी ज़्यादा बेज़ारी अल्लाह तआला की तुमसे उस वक़्त थी जबकि तुम्हें ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था और तुम कुफ़्र करते थे। आमिर शअबी फ़र्माते हैं तमाम लोगों के सामने उस दिन दो शख़्स ख़ुत्बा देने के लिए खड़े होंगे। हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) से अल्लाह तआला कहेगा कि क्या तूने लोगों से कहा था कि तुम अल्लाह तआला के सिवा मुझे और मेरी माँ को मअबूद बना लेना। यह आयतें (هٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصّٰدِقِينَ) (5/माइदा : 119) तक इसी बयान में हैं। और इब्लीस खड़ा होकर कहेगा (मा काना लिया अलैकुम मिन सुल्तानिन) बुरे लोगों के अंजाम का और उनके दर्द व ग़म और इब्लीस के जवाब का ज़िक्र करके अब नेक लोगों का अंजाम बयान हो रहा है कि ईमान वाले नेक आमाल लोग जन्नतों में जाएँगे। जहाँ चाहें जाएँ आएँ चलें फिरें खाएँ पियें। हमेशा हमेश के लिए वहीं रहें सहें, न आज़र्दा हों न दिल भरे न तबीयत भरे न मारे जाएँ न निकाले जाएँ न नेअमतें कम हों। वहाँ उनका तोहफ़ा सलाम ही सलाम होगा। जैसे फ़र्मान है (حَتّٰى إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا) (39/ज़ुमर : 71) यानी जब जन्नती जन्नत में जाएँगे और उसके दरवाज़े उनके लिए खोले जाएँगे और वहाँ के दारोग़ा उन्हें सलाम अलैक कहेंगे....। और आयत में है हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते आएँगे और सलामुन अलैकुम कहेंगे। (13/रअद : 23, 24) और आयत में है वहाँ तहिय्यतहू और सलामुन ही सुनाए जाएँगे। और आयत में है (دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ) (10/यूनुस : 10) उनकी पुकार वहाँ अल्लाह तआला की पाकीज़गी का बयान होगा और उनका तोहफ़ा वहाँ सलाम होगा और उनकी आवाज़ अल्लाह रब्बुल आलमीन की हम्द होगी।

***

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصۡلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرۡعُهَا فِى
السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾ تُؤۡتِىۡۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيۡنٍۢ بِاِذۡنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ
يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيۡثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيۡثَةِ ۨاجۡتُثَّتۡ مِنۡ فَوۡقِ الۡاَرۡضِ مَا
لَهَا مِنۡ قَرَارٍ ﴿۲۶﴾

तर्जुमा : "क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह तआला ने पाकीज़ा बात की मिसाल किस तरह बयान की मिस्ल एक पाकीज़ा दरख़्त के जिसकी जड़ मज़बूत है और जिसकी टहनियाँ आसमान में हैं। (24) जो अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त अपने फल लाता रहता है। अल्लाह तआला लोगों के सामने मिसालें बयान कर रहा है ताकि वह नसीहत हासिल करें। (25) और नापाक बात की मिसाल गंदे दरख़्त जैसी है जो ज़मीन के कुछ ही ऊपर से उखाड़ लिया गया। उसे कुछ मज़बूती तो है ही नहीं।" (26)

कलिम-ए-तय्यिबा और शजर-ए-तय्यिबा की मिसाल (आयत 24-26) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कलिमा तय्यिबा से मुराद (ला इलाहा इल्लल्लाहु) की शहादत है। पाकीज़ा दरख़्त की तरह का मोमिन है उसकी जड़ मज़बूत है। यानी मोमिन के दिल में (ला इलाहा इल्लल्लाह) जमा हुआ है। उसकी शाख़ आसमान में है। यानी इस तौहीद के कलिमे की वजह से उसके आमाल आसमान की तरफ़ उठाए जाते हैं। और भी बहुत से मुफ़स्सिरीन से यही मरवी है कि मुराद इससे मोमिन के आमाल हैं और उसके पाक अक़्वाल और नेक काम। मोमिन मिस्ल खजूर के दरख़्त के है हर वक़्त हर सुबह व शाम उसके आमाल आसमान पर चढ़ते रहते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास खजूर का एक ख़ोशा लाया गया तो आपने इसी आयत का पहला हिस्सा तिलावत फ़र्माया और फ़र्माया कि, "पाक दरख़्त से मुराद खजूर का दरख़्त है।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति इब्राहीम : 3119 व सनदुहू सहीहुन) सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मंक़ूल है कि हम हुज़ूर (ﷺ) के पास बैठे हुए थे, जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "मुझे बतलाओ वह कौनसा दरख़्त है जो मुसलमान के मुशाबेह है जिसके पत्ते झड़ते नहीं न जाड़ों में न गर्मियों में जो अपना फल हर मौसम में लाता रहता है।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मेरे दिल में आया कि कह दूँ कि वह दरख़्त खजूर का है लेकिन मैंने देखा कि मज्लिस में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हैं, हज़रत उमर (रज़ि.) हैं और वह ख़ामोश हैं तो मैं भी चुप ही रहा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "वह दरख़्त खजूर का है।" जब यहाँ से उठकर चले तो मैंने अपने वालिद हज़रत उमर (रज़ि.) से यह ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया, प्यारे बेटे! अगर तुम यह जवाब दे देते तो मुझे तो तमाम चीज़ों के मिल जाने से भी ज़्यादा महबूब था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (कशजरतित्तय्यिबति अस्लुहा साबित) : 4698; सहीह मुस्लिम : 2811)

हज़रत मुजाहिद (रह.) का क़ौल है कि मैं मदीना तक हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के साथ रहा लेकिन सिवाए एक हदीस के और कोई रिवायत उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) से करते हुए नहीं सुना। उसमें है कि यह सवाल आपने उस वक़्त किया था जबकि आपके सामने खजूर के दरख़्त के बीच का गूदा लाया गया था। मैं यूँ चिपका रहा कि मैं उस मज्लिस में सबसे कम उम्र था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अमल, बाब अल्फ़हमु फ़िल इल्म : 72; सहीह मुस्लिम : 2811; इब्ने हिब्बान : 244; अहमद : 2/12) और रिवायत में है कि जवाब देने वालों का ख़्याल उस वक़्त जंगली दरख़्तों की तरफ़ चला गया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब अल्हयाउ फ़िल इल्म : 131; सहीह मुस्लिम : 2811; इब्ने हिब्बान : 243; अहमद : 2/61)

इब्ने अबी हातिम में है कि किसी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ)! मालदार लोग दरजात में बहुत बढ़ गए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "याद रखो! अगर तमाम दुनिया की चीज़ें लेकर ढेर लगा दो तो भी वह आसमान तक नहीं पहुँचने की हैं। तुझे ऐसा अमल बतलाऊँ जिसकी जड़ मज़बूत और जिसकी शाख़ेंआसमान में हैं।" उसने पूछा वह क्या? फ़र्माया (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाह) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस बार कह लिया करो जिसकी असल मज़बूत और जिसकी फ़रअ आसमान में है। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं वह पाकीज़ा दरख़्त जन्नत में है हर वक़्त अपना फल लाए। यानी सुबह शाम हर माह में या हर दो माह बाद में या हर छः माह में या हर सातवें महीने या हर साल। लेकिन अल्फ़ाज़ का ज़ाहिरी मतलब तो यह है कि मोमिन की मिसाल उस दरख़्त जैसी है जिसके फल हर वक़्त जाड़े गर्मी में दिन रात में उतरते रहते हैं उसी तरह मोमिन के नेक आमाल दिन रात के हर वक़्त चढ़ते रहते हैं। उसके रब के हुक्म से यानी कामिल अच्छे बहुत और उम्दा। अल्लाह तआला लोगों की इब्रत उनकी सोच समझ और उनकी नसीहत के लिए मिसालें वाज़ेह फ़र्माता है। फिर बुरे कलिमे की यानी काफ़िर की मिसाल बयान की जिसकी कोई असल नहीं जो मज़बूत नहीं। उसकी मिसाल उन्दराइन के दरख़्त से दी जिसे हंज़ल और शुरियान कहते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति इब्राहीम : 3119; व सनदुहू सहीहुन) एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत अनस (रज़ि.) से भी आया है और यही रिवायत मरफ़ूअन भी आई है। उस दरख़्त की जड़ ज़मीन की तह में नहीं होती। झटका मारा और उखड़ गया। इसी तरह कुफ़्र बेजड़ और बेशाख़ है। काफ़िर का न कोई नेक अमल चढ़े, न मक़्बूल हो।

***

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : "ईमानवालों को अल्लाह तआला पक्की बात के साथ मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी। हाँ! नाइंसाफ़ लोगों को रब बहका देता है। अल्लाह जो चाहे कर गुज़रे।" (27)

क़ब्र का इम्तिहान और जज़ा व सज़ा (आयत 27) : सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''मुसलमान से जब उसकी क़ब्र में सवाल होना है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं।'' यही मुराद इस आयत की है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब (युसब्बितुल्लाहुल्लज़ीना आमनू बिल क़ौलिस्साबित : 4699; सहीह मुस्लिम : 2871; अबूदाऊद : 4750; तिर्मिज़ी : 3120 मअनन; अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 2737) मुस्नद में है कि एक अंसारी के जनाज़े में हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे। क़ब्रिस्तान पहुँचे, अभी तक क़ब्र नैयार न थी। आप (ﷺ) बैठ गए और हम भी आप (ﷺ) के आस पास ऐसे बैठ गए गोया हमारे सरों पर परिन्द हैं। आपके हाथ में जो तिनका था उससे आप ज़मीन पर लकीरें निकाल रहे थे जो सर उठाकर दो तीन मर्तबा फ़र्माया कि ''अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगो। मोमिन बन्दा जब दुनिया की आख़िरी और आख़िरत की पहली घड़ी में होता है तो उसके पास आसमान से नूरानी चेहरे वाले फ़रिश्ते आते हैं गोया कि उनके चेहरे सूरज जैसे हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुश्बू होती है। उसके आसपास जहाँ तक उसकी निगाह काम करे वहाँ तक बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत आकर उसके सिराहने बैठ जाते हैं और फ़र्माते हैं ऐ पाक रूह! अल्लाह तआला की मग़्फ़िरत उसकी रज़ामंदी की तरफ़ चल। वह उस आसानी से निकल आती है जैसे किसी मश्क से पानी का क़तरा टपक आया हो। एक आँख झपकने के बराबर की देर भी वह फ़रिश्ते उसे उनके हाथ में नहीं रहने देते, फ़ौरन ले लेते हैं और जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुश्बू में रख लेते हैं। ख़ुद उस रूह में से भी मुश्क से भी उम्दा ख़ुश्बू निकलती है कि रूए ज़मीन पर ऐसी उम्दा ख़ुश्बू न सूँघी गई हो। वह उसे लेकर आसमानों की तरफ़ चढ़ते हैं। फ़रिश्तों की जिस जमाअत के पास से गुज़रते हैं वह पूछते हैं कि यह पाक रूह किसकी है। यह उसका जो बेहतरीन नाम दुनिया में मशहूर था, वो बतलाते हैं और उसके बाप का नाम भी। आसमाने दुनिया तक पहुँचकर दरवाज़े खुलवाते हैं। आसमान का दरवाज़ा खुल जाता है और वहाँ के फ़रिश्ते उसे दूसरे आसमान तक और दूसरे आसमान के तीसरे आसमान तक। इस तरह सातवें आसमान पर वह पहुँचता है।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है मेरे बन्दे की किताब इल्लिय्यीन में लिख लो और इसे ज़मीन की तरफ़ लौटा दो। मैंने उसी से पैदा किया है और उसी से दोबारा निकालूँगा। पस उसकी रूह उसी के जिस्म में लौटा दी जाती है। उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं। उसे उठाकर बिठाते हैं और सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है कि अल्लाह तआला, वह फिर पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है वह जवाब देता है कि इस्लाम। फिर सवाल होता है कि वह शख़्स कौन है जो तुममें भेजे गए थे? वह कहता है वह रसूलुल्लाह (ﷺ) थे। फ़रिश्ते पूछते हैं तुझे कैसे मालूम हुआ? वह कहता है मैंने किताबुल्लाह पढ़ी उस पर ईमान लाया उसे सच्चा माना। उसी वक़्त आसमान से एक मुनादी निदा करता है कि मेरा बन्दा सच्चा है इसके लिए जन्नती फ़र्श बिछा दो और जन्नती लिबास पहना दो और जन्नत की तरफ़ का दरवाज़ा खोल दो। पस जन्नत की रूह परवर ख़ुश्बूदार हवाओं की लपटें उसे आने लगती हैं। उसकी क़ब्र उसकी नज़र के पहुँचने तक फैला दी जाती है। उसके पास एक शख़्स ख़ूबसूरत नूरानी चेहरे वाला उम्दा कपड़ों वाला अच्छी ख़ुश्बू वाला आता है और उससे कहता है आप ख़ुश हो जाइए। इसी दिन का वादा आपसे किया गया था। यह उससे पूछता है कि आप कौन हैं? आपके चेहरे से भलाई ही भलाई नज़र आती है। वह जवाब देता है कि मैं तेरा नेक अमल हूँ। उस वक़्त मुसलमान आरज़ू करता है कि ऐ परवरदिगार! क़यामत जल्द क़ायम हो जाए तो मैं अपने अहलो अयाल और

मुल्क व माल की तरफ़ लौट जाऊँ और काफ़िर बन्दा जब दुनिया की आख़िरी साअत (घड़ी) और आख़िरत की पहली साअत (घड़ी) में होता है उसके पास स्याह चेहरे के आसमानी फ़रिश्ते आते हैं और उनके साथ जहन्नमी टाट होता है। जहाँ तक निगाह पहुँचे वहाँ तक वह बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत आकर उसके सिराहने बैठकर फ़र्माते हैं, ऐ ख़बीस रूह! अल्लाह तआला के ग़ज़ब व ग़ुस्से की तरफ़ चल। उसकी रूह जिस्म में छिपती फिरती है जिसे बहुत सख़्ती के साथ निकाला जाता है उसी वक़्त एक आँख झपकने जितनी देर में उसे फ़रिश्ते उनके हाथों से ले लेते हैं और उसे जहन्नमी बोरे में लपेट लेते हैं. उसमें ऐसी बदबू निकलती है कि रूए ज़मीन पर उससे ज़्यादा बदबू नहीं पायी गई' अब यह उसे लेकर ऊपर को चढ़ते हैं, फ़रिश्तों की जिस जमाअत के पास से गुज़रते हैं वह पूछते हैं यह ख़बीस रूह किसकी है। वह उसका बदतरीन नाम जो दुनिया में था, बतलाते हैं और उसके बाप का नाम भी। आसमाने दुनिया तक पहुँचकर दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं लेकिन खोला नहीं जाता। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आयत (لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ) (7/आराफ़ : 40) की तिलावत की कि न उनके लिए आसमान के दरवाज़े खुलें, न वह जन्नत में जा सकें। यहाँ तक कि सूई के नाके में से ऊँट गुज़र जाए। अल्लाह तआला हुक्म फ़र्माता है कि उसकी किताब सिज्जीन में लिख लो जो सबसे नीचे की ज़मीन में है पस उसकी रूह वहीं से फेंक दी जाती है। फिर आपने आयत (وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ) (22/हज्ज : 31) की तिलावत की। यानी अल्लाह तआला के साथ जो शिर्क करे गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा। या तो उसे परिन्दा उचक ले जाएँगे या आँधी किसी दूर के गढ़े में फेंक मारेगी। फिर उसकी रूह उसके जिस्म में लौटाई जाती है। उसके पास दो फ़रिश्ते पहुँचते हैं जो उसे उठाते बिठाते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है कि हाय हाय मुझे मालूम नहीं। फिर पूछते हैं, तेरा दीन क्या है? वह कहता हाय हाय मुझे इसका भी इल्म नहीं। फिर पूछते हैं कि वह कौन शख़्स थे जो तुममें भेजे गए थे? वह कहता है हाय हाय मुझे मालूम नहीं। उसी वक़्त आसमान से एक मुनादी की निदा आती है कि मेरा बन्दा झूठा है, इसके लिए जहन्नम की आग का फ़र्श कर दो और दोज़ख़ की जानिब का दरवाज़ा खोल दो। वहाँ से उसे दोज़ख़ी हवा और दोज़ख़ का भाप पहुँचती रहती है और उसकी क़ब्र उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पस्लियाँ एक दूसरे में घुस जाता हैं। बड़ी बड़ी और डरावनी सूरत वाला बुरे मेले कुचेले ख़राब कपड़ों वाला बड़ी बदबू वाला एक शख़्स उसके पास आता है और कहता है अब ग़मनाक हो जाओ। इसी दिन का तुझसे वादा किया जाता था। यह पूछता है तू कौन है? तेरे चेहरे से बुराई बरसती है। वह कहता है मैं तेरे आमाले बद का मुजस्समा हूँ। तो यह दुआ करता है कि ऐ अल्लाह! क़यामत क़ायम न हो।'' (अहमद : 4/287; अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब अल्मस्अलतु फ़िल क़ब्रि व अज़ाबिल क़ब्रि : 4753; वहुव हसन; नसाई : 2003; मुख़्तसरन इब्ने माजा : 1548; हाकिम : 1/37)

मुस्नद में है कि ''नेक बन्दे की रूह निकलने के वक़्त आसमान व ज़मीन के बीच के फ़रिश्ते और आसमानों के फ़रिश्ते सब उस पर रहमत भेजते हैं और आसमानों के दरवाज़े उसके लिए खुल जाते हैं। हर दरवाज़े के फ़रिश्तों की दुआ होती है कि उसकी पाक और नेक रूह उनके दरवाज़े से चढ़ाई जाए (आख़िर तक) और बुरे शख़्स के बारे में है कि उसकी क़ब्र में एक अंधा गूँगा फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है जिसके हाथ में हथौड़ा होता है कि अगर वह किसी बड़े पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह मिट्टी बन जाए। उससे वह उसे मारता है यह मिट्टी हो जाता है उसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फिर पहले जैसा कर देता है। जैसे पहले था वैसा ही हो जाता है।

वह उसे फिर वह हथोड़ा मारता है। यह ऐसा चीख़ता है कि उसकी चीख़ को सिवाए इंसानों और जिन्नों के तमाम मख़्लूक़ सुनती है।" (अहमद : 4/295; वहुव हसन बिश्शवाहिद) हज़रत बरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं इसी आयत से अज़ाबे क़ब्र का सबूत मिलता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अर्जु मक़अदिल मय्यित मिनल जन्नति वन्नारि अलैहि व इस्बातु अज़ाबिल क़ब्रि वत्तअव्वुजु मिन्हू : 2871 मरफ़ूअन) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) इसी आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं मुराद इससे क़ब्र के सवाल के जवाब में मोमिन को इस्तिक़ामत का मिलना है। मुस्नद अब्द बिन हुमैद में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जब बन्दा क़ब्र में रखा जाता है लोग चेहरा फेरते हैं अभी उनकी वापसी की चाल की जूतियों की आहट उसके कानों ही में है जो दो फ़रिश्ते उसके पास पहुँचकर उसे बिठाकर पूछते हैं कि उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है? मोमिन जवाब देता है कि मेरी गवाही है कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं, तो उसे कहा जाता है कि देख जहन्नम में यह तेरा ठिकाना था लेकिन अब उसे बदलकर अल्लाह ने जन्नत की यह जगह तुझे इनायत फ़र्माई है। फ़र्माते हैं कि उसे दोनों नज़र आती हैं।" हज़रत क़तादा (रह.) का फ़र्मान है कि उसकी क़ब्र सत्तर गज़ चौड़ी कर दी जाती है और क़यामत तक सरसब्ज़ी से भरी रहती है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा जाअ फ़ी अज़ाबिल क़ब्र : 1374; सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अर्जु मक़अदिल मय्यित मिनल जन्नति वन्नारि अलैहि व इस्बातु अज़ाबिल क़ब्र : 2870; इब्ने हिब्बान : 3120; सुननुल कुब्रा : 2176; अहमद : 3/126, 233; अल्ईमानु लि इब्ने मंदा : 1066) मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "इस उम्मत की आज़माइश उनकी क़ब्रों में होती है। इसमें यह भी है कि मोमिन उस वक़्त आरज़ू करता है कि मुझे छोड़ दो मैं अपने लोगों को यह ख़ुशी पहुँचा दूँ। वह कहते हैं ठहर जाओ। इसमें यह भी है कि मुनाफ़िक़ को भी उसकी दोनों जगहें दिखा दी जाती हैं। फ़र्माते हैं कि हर शख़्स जिस पर मरा है उसी पर उठाया जाता है। मोमिन अपने ईमान पर और मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ पर। (अहमद : 3/346; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/48; इसमें इब्ने लहीआ मुख़्तलत रावी है।) मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि "फ़रिश्ता जो आता है उसके हाथ में लोहे का हथोड़ा होता है। मोमिन अल्लाह तआला की मअबूदियत और तौहीद की और मुहम्मद (ﷺ) की अब्दियत और रिसालत की गवाही देता है। इसमें यह भी है कि अपना जन्नत का मकान देखकर उसमें जाना चाहता है लेकिन उसे कहा जाता है कि अभी यहीं आराम करो।" उसके आख़िर में है कि सहाबा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जब एक फ़रिश्ते को हाथ में गुर्ज़ लिए देखेंगे तो हवास क़ायम रहेंगे तो आपने यही आयत पढ़ी यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से उन्हें साबित क़दमी मिलती है। (अहमद : 3/3, 4; व सनदुहू हसन; बज़्ज़ार : 872; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/48047 और हदीस में है कि "रूह निकलने के वक़्त मोमिन से कहा जाता है कि ऐ इत्मिनान वाली रूह! जो पाक जिस्म में थी निकल तारीफ़ों वाली होकर और ख़ुश हो जा। या राहत व आराम और फल फूल रहीमो करीम अल्लाह तआला की रहमत के साथ। इसमें है कि आसमान के फ़रिश्ते उस रूह को मरहबा कहते हैं और यही ख़ुशख़बरी सुनाते हैं। उसमें है कि बुरे इंसान की रूह को कहा जाता है कि ऐ ख़बीस रूह! जो ख़बीस जिस्म में थी निकल बुरी बनकर और तैयार हो जा आग जैसा पानी पीने के लिए और लहू पीप खाने के लिए और इसी जैसे और बेशुमार अज़ाबों के लिए इसमें है कि आसमान के फ़रिश्ते उसके लिए दरवाज़े नहीं खोलते और कहते हैं बुरी होकर मज़म्मत के साथ लौट जा, तेरे लिए दरवाज़ा नहीं खोलेंगे।" (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुल मौति वल इस्तिअदाद लहू : 4262,

4268; व सनदुहू हसन; अहमद : 2/140; सुननुल कुब्रा : 1442) और रिवायत में है कि "आसमानी फ़रिश्ते नेक रूह के लिए कहते हैं अल्लाह तुझ पर रहमत करे और उस जिस्म पर भी जिसमें तू थी। यहाँ तक उसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के पास पहुँचाते हैं। वहाँ से इर्शाद होता है कि इसे आख़िरी मुद्दत तक के लिए ले जाओ। इसमें है कि काफ़िर की रूह की बदबू बयान करते हुए रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी चादर मुबारक अपनी नाक पर रख ली।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अर्ज़ु मक़अदिल मय्यित मिनल जन्नति वन्नारि : 2872) और रिवायत में है कि "रहमत के फ़रिश्ते मोमिन की रूह के लिए जन्नती सफ़ेद रेशम लेकर उतरते हैं एक एक के हाथ से उस रूह को लेना चाहते हैं। जब यह पहले के मोमिनों की अरवाह से मिलती है तो जैसे कोई नया आदमी सफ़र से आए और उसके घर वाले ख़ुश होते हैं उससे भी ज़्यादा यह रूहें उस रूह से मिलकर राज़ी होती हैं फिर पूछती है कि फ़लाँ का क्या हाल है। लेकिन उनमें से कुछ कहते हैं कि अभी सवाल जवाब न करो। ज़रा आराम तो कर लेने दो। यह तो ग़म से अभी ही छूटी है। लेकिन वह जवाब देती है कि वह तो मर गया क्या तुम्हारे पास नहीं पहुँचा। वह कहते हैं कि छोड़ो उसके ज़िक्र को वह अपनी माँ हाविया में गया।" काफ़िर की रूह को जब ज़मीन के दरवाज़े के पास लाते हैं तो वहाँ के दारोग़ा फ़रिश्ते उसकी बदबू से घबराते हैं। (नसाई, किताबुल जनाइज़, बाब मा यल्क़ा बिहिल मोमिन मिनल करामति इन्द ख़ुरूजे नफ़्सेही : 1834; वहुव सहीहुन; हाकिम : 1/353; इब्ने हिब्बान : 3014) आख़िर उसे सबसे नीचे की ज़मीन में पहुँचाते हैं।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मोमिनों की रूहें जाबीन में और काफ़िरों की रूहें बरहूत नामी हज़र मौत के क़ैदख़ाने में जमा रहती हैं। उसकी क़ब्र बहुत तंग हो जाती है। तिर्मिज़ी में है कि "मय्यित के क़ब्र में रखे जाने के बाद उसके पास दो काले कलूटे कायरी आँखों वाले फ़रिश्ते आते हैं एक मुंकर दूसरा नकीर। उसके जवाब को सुनकर वह कहते हैं कि हमें इल्म था कि तुम ऐसे ही जवाब दोगे। फिर उसकी क़ब्र कुशादा कर दी जाती है और नूरानी बना दी जाती है और कहा जाता है सो जा। यह कहता है कि मैं तो अपने घरवालों से कहूँगा लेकिन वह दोनों कहते हैं कि दुल्हन की सी बेफ़िक्री की नींद सो जा। जिसे उसके अहल में से वही जगाता है जो उसे सबसे ज़्यादा प्यारा हो यहाँ तक कि अल्लाह तआला आप उसे उस ख़्वाबगाह से जगाए। मुनाफ़िक़ जवाब में कहता है कि लोग जो कुछ कहते थे मैं भी कहता रहा लेकिन जानता नहीं। वह कहते हैं कि हम तो जानते ही थे कि तेरा यह जवाब होगा। उसी वक़्त ज़मीन को हुक्म दिया जाएगा कि सिमट जा। वह सिमटती है यहाँ तक कि उसकी पस्लियाँ इधर उधर घुस जाती हैं। फिर उसे अज़ाब होता रहता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला क़यामत क़ायम करे और उसे उसकी क़ब्र से उठाए।" (तिर्मिज़ी, किताबुल जनाइज़, बाब मा जाअ फ़ी अज़ाबिल क़ब्र : 1071; व सनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 3117)

और हदीस में है कि "मोमिन के जवाब पर कहा जाता है कि इसी पर तू जिया और इसी पर तेरी मौत है और इसी पर तू उठाया जाएगा।" इब्ने जरीर में फ़र्माने रसूले करीम (ﷺ) है "उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि मय्यित तुम्हारी जूतियों की आहट सुनती है जबकि तुम उसे दफ़ना कर वापिस लौटते हो। अगर वह ईमान पर मरा है तो नमाज़ उसके सिरहाने होती है ज़कात दाएँ जानिब होती है, रोज़ा बाईं तरफ़ होता है नेकियाँ मस्लन सदक़ा ख़ैरात, सिलारहमी, भलाई, लोगों से एहसान वग़ैरह उसके पैरों की तरफ़ होता है जब उसके सर की तरफ़ से कोई आता तो नमाज़ कहती है यहाँ से जाने की जगह नहीं। दायें जानिब से ज़कात रोकती है बायें जानिब से रोज़ा, पैरों की जानिब से नेकियाँ। पस उससे कहा जाता है बैठ जाओ वह बैठ जाता है और

उसे ऐसा मालूम होता है कि गोया सूरज डूबने के क़रीब है। वह कहते हैं कि देखो जो हम पूछें उसका जवाब दो। वह कहता है तुम छोड़ो पहले मैं नमाज़ अदा कर लूँ। वह कहते हैं वह तो तू करेगा ही अभी हमें हमारे सवालों का जवाब दे। वह कहता है अच्छा! तुम क्या पूछते हो? वह कहते हैं उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है और क्या गवाही देता है। वह पूछता है कि क्या हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के बारे में? जवाब मिलता है कि हाँ! आप (ﷺ) ही के बारे में। यह कहता है कि मेरी गवाही है कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं आप अल्लाह तआला के पास से हमारे पास दलीलें लेकर आए। हमने आपको सच्चा माना। फिर उसे कहा जाता है कि तू इसी पर ज़िन्दा रखा गया और इसी पर मरा और इसी पर इंशाअल्लाह! दोबारा उठाया जाएगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ फैला दी जाती है और नूरानी कर दी जाती है और जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और कहा जाता है देख यह है तेरा असली ठिकाना। अब तो इसे ख़ुशी और राहत ही राहत होती है। फिर उसकी रूह पाक रूहों में सब्ज़ परिन्दों के दिलों में जन्नती दरख़्तों में रहती है और उसका जिस्म जिससे उसकी शुरुआत की गई थी उसी की तरफ़ लौटा दिया जाता है यानी मिट्टी की तरफ़।'' (हाकिम : 1/379, 380; व सनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 3113; अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 6703) यही इस आयत का मतलब है।

और रिवायत में है कि ''मौत के वक़्त की राहत व नूर को देखकर मोमिन अपने रूह के निकल जाने की तमन्ना करता है और अल्लाह तआला को भी उसकी मुलाक़ात महबूब होती है। जब उसकी रूह आसमान पर चढ़ जाती है तो उसके पास मोमिनों की और रूहें आती हैं और अपनी जान पहचान के लोगों की बाबत उससे सवालात करते हैं। अगर यह कहता है कि फ़लाँ तो ज़िन्दा है तो ख़ैर और अगर यह कहता है कि फ़लाँ तो मर चुका है तो यह नाराज़ होकर कहते हैं यहाँ नहीं लाया गया। मोमिन को उसकी क़ब्र में बिठा दिया जाता है फिर उससे पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। पूछा जाता है तेरा नबी कौन है? यह कहता है मेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) हैं। फ़रिश्ता कहता है कि तेरा दीन क्या है? यह जवाब देता है मेरा दीन इस्लाम है। उसी में है कि अल्लाह तआला के दुश्मन को जब मौत आने लगती है और अल्लाह तआला की नाराज़गी के अस्बाब देख लेता है तो नहीं चाहता कि उसकी रूह निकले। अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात से नाख़ुश होता है। उसमें है कि उससे सवाल व जवाब और मारपीट के बाद कहा जाता है ऐसा सो जैसे साँप कटा हुआ।'' (बज़्ज़ार : 874; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/53052) और रिवायत में है कि ''जब यह हुज़ूर (ﷺ) की रिसालत की गवाही देता है तो फ़रिश्ता कहता है कि तुझे कैसे मालूम हो गया। क्या तूने आपके ज़माने को पाया है? उसमें है कि काफ़िर की क़ब्र में ऐसा बहरा जानवर अज़ाब करने वाला होता है जो न कभी सुने न रहम करे।'' (अहमद : 6/352, 353; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; लि इंक़िताइन मज्मउज़्ज़वाइद : 3/51) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिश्ते आकर सलाम करते हैं। जन्नत की बशारत देते हैं। उसके जनाज़े के साथ चलते हैं। लोगों के साथ उसके जनाज़े की नमाज़ में शिर्कत करते हैं। उसमें है कि काफ़िरों के पास फ़रिश्ते आते हैं। उनके चेहरों पर उनकी कमर पर मार मारते हैं। उसे उसकी क़ब्र में जवाब भुला दिया जाता है। इसी तरह ज़ालिमों को अल्लाह तआला गुमराह कर देता है। हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से भी ऐसा ही क़ौल मरवी है। उसमें है कि मोमिन कहता है कि मेरे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। कई बार उससे सवाल करते हैं और यह यही जवाब देता है। उसे जहन्नम का ठिकाना दिखाकर कहा जाता है

अगर टेढ़ा चलता तो तेरी यह जगह थी और जन्नत का ठिकाना दिखाकर कहा जाता है कि तौबा की वजह से यह ठिकाना है। हज़रत ताउस (रह.) फ़र्माते हैं दुनिया में साबितक़दमी कलिमा तौहीद पर इस्तिक़ामत है और आख़िरत में साबित क़दमी मुंकर नकीर के जवाब की है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं ख़ैर और अमले सालेह के साथ दुनिया में रखे जाते हैं और क़ब्र में भी। अबू अब्दुल्लाह हकीम तिर्मिज़ी (रह.) अपनी किताब नवादिरुल उसूल में लाए हैं कि सहाबा (रज़ि.) की जमाअत के पास आकर हुज़ूर (ﷺ) ने मदीना की मस्जिद में फ़र्माया कि 'गुज़िश्ता रात मैंने अजीब बातें देखीं देखा कि मेरे एक उम्मती को अज़ाबे क़ब्र ने घेर लिया है। आख़िर उसके वुज़ू ने आकर उसे छुड़ा लिया। मेरे एक उम्मती को देखा कि शैतान उसे वहशी बनाए हुए हैं लेकिन ज़िक्रुल्लाह ने आकर उसे ख़ुलासी दिलवाई। एक उम्मती को देखा कि अज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे घेर रखा है, उसकी नमाज़ ने आकर उसे बचा लिया। एक उम्मती को देखा कि प्यास के मारे हलाक हो रहा है जब हौज़ पर जाता है धक्के लगते हैं। उसका रोज़ा आया और उसने उसे पानी पिला दिया और आसूदा कर दिया। आपने एक और उम्मती को देखा कि अम्बिया (अ.) हल्क़े बाँध बाँधकर बैठे हैं। यह जिस हल्क़े में बैठना चाहता है, वहाँ वाले उसे उठा देते हैं। उसी वक़्त उसकी जनाबत का ग़ुस्ल आया और उसका हाथ पकड़कर मेरे पास बिठाया। एक उम्मती को देखा कि चारों तरफ़ से उसे अंधेरे आ घेरे हुए है और ऊपर नीचे से भी वह उसी में घिरा हुआ है कि उसका हज्ज और उमरा आया और उसे उस अंधेरे में से निकालकर नूर में पहुँचा दिया। एक उम्मती को देखा कि वह मोमिनों से कलाम करना चाहता है लेकिन वह उससे बोलते नहीं। उसी वक़्त सिलारहमी आई और ऐलान किया कि इससे बातचीत करो। चुनाँचे वह बोलने चालने लगते हैं। एक उम्मती को देखा कि वह अपने मुँह पर से आग के शोले हटाने को हाथ बढ़ा रहा है इतने में उसकी ख़ैरात आई और उसके मुँह पर पर्दा और ओट हो गई और उसके सर पर साया बन गई। अपने एक उम्मती को देखा कि अज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे हर तरफ़ से क़ैद कर लिया है लेकिन उसका नेकी का हुक्म और बुराई से मना करना आया और उनके हाथों से छुड़ाकर रहमत के फ़रिश्तों से मिला दिया। अपने एक उम्मती को देखा कि घुटनों के बल गिरा हुआ है और अल्लाह तआला में और उसमें हिजाब है। उसके अच्छे अख़लाक़ आए और उसका हाथ पकड़कर अल्लाह के पास पहुँचा आए। अपने एक उम्मती को देखा कि उसका नामा-ए-आमाल उसके बाएँ तरफ़ से आ रहा है लेकिन उसके ख़ौफ़े इलाही ने आकर उसे उसके सामने कर दिया। अपने एक उम्मती को मैंने जहन्नम के किनारे खड़ा देख उसी वक़्त उसका अल्लाह तआला से कपकपाना आया और उसे जहन्नम से बचा ले गया। मैंने अपने एक उम्मती को देखा कि उसे औंधा कर दिया गया है कि जहन्नम में डाल दें लेकिन उसी वक़्त ख़ौफ़े इलाही से उसका रोना आया और उन आँसूओं ने उसे बचा लिया। मैंने एक उम्मती को देखा कि पुल सिरात पर लुढ़कनियाँ खा रहा है कि उसका मुझ पर दुरूद पढ़ना आया और हाथ थामकर सीधा कर दिया और वह पार उतर गया। एक को देखा कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचा लेकिन दरवाज़ा बंद हो गया। उसी वक़्त ला इलाहा इल्लल्लाह की शहादत पहुँची, दरवाज़े खुलवा दिए और उसे जन्नत में पहुँचा दिया।'' (अल्हकीम तिर्मिज़ी व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसमें अब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ को इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुंकरुल हदीस (अत्तारीख़ुल कबीर : 5/214) और नसाई ने मतरूक कहा है। (अल्मीज़ान : 2/513; रक़म : 4646) क़ुर्तुबी (रह.) इस हदीस को वारिद करके फ़र्माते हैं यह हदीस बहुत बड़ी है उसमें इन मख़सूस आमाल का ज़िक्र है जो मख़सूस

मुसीबतों से नजात दिलवाने वाले हैं (तज़्किरा) इस बारे में हाफ़िज़ अबू यअ़ला मूसली (रह.) ने भी एक ग़रीब मुतव्वल (विस्तारपूर्वक) ह़दीस रिवायत की है जिसमें है "अल्लाह तबारक व तआ़ला मलकुल मौत से फ़र्माता है तू मेरे दोस्त के पास जा, मैंने आसमानी सख़्ती से हर तरह आज़मा लिया है हर एक हालत में उसे अपनी ख़ुशी में ख़ुश पाया। तू जा और उसे मेरे पास ले आ कि मैं उसे हर तरह का आराम व ऐश दूँ। मलकुल मौत (عليه السلام) अपने साथ पाँच सौ फ़रिश्तों को लेकर चलते हैं। उनके पास जन्नती कफ़न वहाँ की ख़ुश्बू और रेहान के ख़ोशे होते हैं जिसके सिरे पर बीस रंग होते हैं हर रंग की ख़ुश्बू अलग अलग होती है। सफ़ेद रेशमी कपड़े में आला मुश्क बतकल्लुफ़ लिपटी हुई होती है। यह सब आते हैं मलकुल मौत (عليه السلام) तो उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ बैठ जाते हैं। हर एक के साथ जो कुछ जन्नती तोह़फ़ा है वह उसके अअ़ज़ा पर रख दिया जाता है और सफ़ेद रेशम और मुश्क अज़्ख़र उसकी ठोडी तले रख दिया जाता है। उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उसकी रूह़ कभी जन्नती फूलों से कभी जन्नती लिबासों से कभी जन्नती फलों से इस तरह़ बहलाई जाती है जैसे रोते हुए बच्चे को लोग बहलाते हैं उस वक़्त उसकी हूरें हम्स हम्स कर उसकी चाहत करती हैं। रूह़ उन मनाज़िर को देखकर बहुत जल्द जिस्मानी क़ैद से निकल जाने का क़सद करती है मलकुल मौत फ़र्माते हैं, हाँ! ऐ पाक रूह़ बग़ैर काँटे की बेरियों की तरफ़ और लदे हुए फलों की तरफ़ और लम्बी लम्बी छाँव की तरफ़ और पानी के झरनों की तरफ़ चल। वल्लाह! माँ जिस क़द्र बच्चे पर मेहरबान होती है उससे भी ज़्यादा मलकुल मौत उस पर शफ़क़त व रह़मत करता है इसलिए कि उसे इल्म है कि यह अल्लाह तआ़ला का मह़बूब है। अगर उसे ज़रा सी भी तक्लीफ़ पहुँची तो मेरे रब की नाराज़ी मुझ पर होगी बस इस तरह़ उस रूह़ को उस जिस्म से अलग कर लेता है जैसे गुँधे हुए आटे में से बाल। उन्हीं के बारे में फ़र्माने इलाही है कि उनकी रूह़ को तय्यिब फ़रिश्ते फ़ौत करते हैं। और जगह फ़र्मान है कि अगर वह मुक़र्रिबीन में से है तो उसके लिए आराम व आसाइश है। यानी मौत आराम की और आसाइश की मिलने वाली और दुनिया के बदले की जन्नत। मलकुल मौत के रूह़ को क़ब्ज़ करते ही रूह़ जिस्म से कहती है कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ला तुझे जज़ाए ख़ैर दे तू अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त की तरफ़ जल्दी करने वाला और अल्लाह तआ़ला की मअ़सियत से देर करने वाला था। तूने आप भी नजात पाई और मुझे भी नजात दिलवाई। जिस्म भी रूह़ को ऐसा ही जवाब देता है। ज़मीन के वह तमाम ह़िस्से जिन पर यह इबादतें इलाही करता था उसके मरने से चालीस दिन तक रोते हैं। इसी तरह़ आसमान के वह कुल दरवाज़े जिनसे उसके नेक आमाल चढ़ते थे और जिनसे उसकी रोज़ियाँ उतरती थीं उस पर रोते हैं। उसी वक़्त वह पाँच सौ फ़रिश्ते उस जिस्म के इर्द गिर्द खड़े हो जाते हैं और उसके नहलाने में शामिल रहते हैं। इंसान उसकी करवट बदले उससे पहले ख़ुद फ़रिश्ते बदल देते हैं और उसे नहलाकर इंसानी कफ़न से पहले अपना साथ लाया हुआ कफ़न पहना देते हैं। उनकी ख़ुश्बू से पहले अपनी ख़ुश्बू लगा देते हैं और उसके घर के दरवाज़े से लेकर उसकी क़ब्र तक दो रुख़ सफ़ें बाँधकर खड़े हो जाते हैं और उसके लिए इस्तिग़फ़ार करने लगते हैं। उस वक़्त शैतान उस ज़ोर से रंज के साथ चीख़ता है कि इसके जिस्म की हड्डियाँ टूट जाएँ और कहता है मेरे लश्करियों! तुम बर्बाद हो जाओ। हाय यह तुम्हारे हाथों से कैसे बच गया? वह जवाब देते हैं कि यह तो मासूम था। जब इसकी रूह़ को लेकर मलकुल मौत चढ़ते हैं तो ह़ज़रत जिब्रील (عليه السلام) सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को लेकर उसका इस्तिक़्बाल करते हैं हर एक उसे जुदागाना बशारते

रब्बानी सुनाता है। यहाँ तक कि उसकी रूह अर्शे इलाही के पास पहुँचती है। वहाँ जाते ही सज्दे में गिर पड़ती है। उस वक़्त जनाबे बारी का इर्शाद होता है कि मेरे बन्दे की रूह को बग़ैर काँटों की बेरियों में और तह ब तह केलों के दरख़्तों में और लम्बे सायों में और बहते पानियों में जगह दो। फिर जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो दायें तरफ़ नमाज़ खड़ी हो जाती है बाएँ जानिब रोज़ा खड़ा हो जाता है, सर की तरफ़ क़ुरआन आ जाता है, नमाज़ों को चलकर जाना पैरों की तरफ़ होता है। एक किनारे सब्र खड़ा हो जाता है। अज़ाब की एक गर्दन लपकती आती है लेकिन दाएँ जानिब से नमाज़ उसे रोक देती है कि यह हमेशा चौकन्ना रहा अब इस क़ब्र में आकर ज़रा राहत पाई। वह बाएँ तरफ़ से आती है। यहाँ से रोज़ा यही कहकर उसे आने नहीं देता। सिरहाने से आती है यहाँ से क़ुरआन और ज़िक्र यही कहकर आड़े आते हैं। वह पाइंतियों से आती है यहाँ से उसका नमाज़ों के लिए चलकर जाना उसे रोक देता है ग़र्ज़ चारों तरफ़ से अल्लाह तआला के महबूब के लिए रोक हो जाती है और अज़ाब को कहीं से राह नहीं मिलती। वह वापिस चला जाता है उस वक़्त सब्र कहता है कि मैं देख रहा था कि अगर तुमसे ही यह अज़ाब दूर हो जाए तो मुझे बोलने की क्या ज़रूरत? वरना मैं भी इसकी हिमायत करता। अब मैं पुलसिरात पर और मीज़ान के वक़्त उसके काम आऊँगा। अब दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं। एक को नकीर कहा जाता है दूसरे को मुंकर। यह उचक ले जाने वाली बिजली जैसे होते हैं। उनके दाँत सिया जैसे होते हैं। उनके साँस से शोले निकलते हैं उनके बाल पैरों तले लटकते होते हैं उनके दोनों कँधों के दरम्यान इतनी इतनी मुसाफ़त होती है। उनके दिल नर्मी और रहमत से बिलकुल ख़ाली होते हैं। उनमें से हर एक के हाथ में हथोड़े होते हैं कि अगर क़बीला रबीआ और क़बीला मुज़र जमा होकर उसे उठाना चाहें तो नामुम्किन। वह आते ही उसे कहते हैं उठ बैठ यह उठकर सीधी तरह बैठ जाता है। उसका कफ़न उसके पहलू पर आ जाता है। वह उससे पूछते हैं। तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरे नबी कौन हैं? सहाबा (रज़ि.) से न रहा गया। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसे डरावने फ़रिश्तों को कौन जवाब देगा? आपने इसी आयत (युसब्बितुल्लाह) की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया, "वह बेझिझक जवाब देता है कि मेरा रब अल्लाह वह्दहू ला शरीका लहू है और मेरा दीन इस्लाम है जो फ़रिश्तों का भी दीन है और मेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) हैं जो ख़ातिमुन्नबिय्यीन थे। वह कहते हैं आपने सहीह जवाब दिया अब तो वह उसके लिए उसकी क़ब्र को उसके दाएँ से, उसके बाएँ से, उसके आगे से, उसके पीछे से, उसके सर की तरफ़ से, उसके पैर की तरफ़ से चालीस चालीस हाथ कुशादा कर देते हैं। वह दो सौ हाथ की वुस्अत कर देते हैं और चालीस हाथ का एहाता कर देते हैं और उससे फ़र्माते हैं अपने ऊपर नज़रें उठा। यह देखता है कि जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ है। वह कहते हैं ऐ अल्लाह तआला के दोस्त! चूँकि तूने अल्लाह तआला की बात मान ली है तेरी मंज़िल यह है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं उस परवरदिगार की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है उस वक़्त जो सुरूर राहत उसके दिल को होती है वह कभी न ख़त्म होने वाली होती है। फिर उससे कहा जाता है अब अपने नीचे की तरफ़ देख। यह देखता है कि जहन्नम का दरवाज़ा खुला है। फ़रिश्ते कहते हैं देख उससे अल्लाह तआला ने तुझे हमेशा के लिए नजात बख़्शी। फिर तो उसका दिल इतना ख़ुश होता है कि यह ख़ुशी अब्दल आबाद तक हटती नहीं। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि उसके लिए सतत्तर (77) दरवाज़े जन्नत के खुल जाते हैं। जहाँ से बादे सबा की लपटें ख़ुश्बू और ठण्डक के साथ आती रहती हैं। यहाँ तक कि उसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला उसकी उस

ख़्वाबगाह से क़यामत के क़ायम हो जाने पर उठाए।'' (इस रिवायत में यज़ीद बिन रक़्क़ाशी (अनक़रीब : 219) ज़रार बिन अम्र मुल्ती (अल्मीज़ान : 2/328) और बक्र बिन ख़ुनैस (अल्मीज़ान : 1/344) ज़ईफ़ रावी हैं जिसकी वजह से यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।) इसी इस्नाद से मरवी है कि ''अल्लाह तआला बुरे बन्दे के लिए मलकुल मौत से फ़र्माता है जा और मेरे उस दुश्मन को ले आ ताकि उससे इंतिक़ाम लूँ। और उस वक़्त हज़रत मलकुल मौत (अ.) उसके सामने निहायत बद और डरावनी सूरत में आते हैं ऐसी कि किसी ने इतनी भयानक और घिनौनी सूरत न देखी हो। बारह आँखें होती हैं, जहन्नम का ख़ारदार लिबास साथ होता है। पाँच सौ फ़रिश्ते जो जहन्नमी आग के अंगारे और आग के कोड़े अपने साथ लिए होते हैं उनके साथ होते हैं। मलकुल मौत वह ख़ारदार खाल जो जहन्नम की आग की है उसके जिस्म पर मारते हैं, रोयें रोयें में आग के काँटे घुस जाते हैं। फिर इस तरह घुमाते हैं कि उसका जोड़ जोड़ ढीला पड़ जाता है। फिर उसकी रूह उसके पैर के अंगूठे से खींचते हैं और उसके घुटनों पर डाल देते हैं। उस वक़्त अल्लाह तआला का दुश्मन बेहोश हो जाता है। पस मलकुल मौत उसे उठा लेते हैं। फ़रिश्ते अपने जहन्नमी कोड़े उसके चेहरे पर और पीठ पर मारते हैं। फिर मलकुल मौत उसे दबोचते हैं और उसकी रूह उसकी ऐड़ियों की तरफ़ से खींचते हैं और उसके घुटनों पर डाल देते हैं फिर उसके तहबंद बाँधने की जगह पर डाल देते हैं। यह दुश्मने इलाही उस वक़्त फिर बेताब हो जाता है। मौत के फ़रिश्ते फिर उस बेहोशी को उठा लेता है और फ़रिश्ते फिर उसके चेहरे और कमर पर कोड़े बरसाने लगते हैं। आख़िर यहाँ तक कि रूह सीने पर चढ़ आती है फिर हलक़ पर पहुँचती है फिर फ़रिश्ते उस जहन्नमी तांबे और दोज़ख़ी अंगारों को उसकी ठोडी के नीचे रख देते हैं और मलकुल मौत (अ.) फ़र्माते हैं ऐ लईन व मल्ऊन रूह! चल सेंक में और भुलसते पानी में और काले स्याह धुएँ के गुबार में, जिसमें न तो ख़नकी है न अच्छी जगह। जब यह रूह क़ब्ज़ हो जाती है तो अपने जिस्म से कहती है अल्लाह तुझसे समझे, तू मुझे अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों की तरफ़ भगाये लिए जा रहा था ख़ुद भी हलाक हुआ और मुझे भी बर्बाद किया। जिस्म भी रूह से यही कहता है ज़मीन के वह तमाम हिस्से जहाँ यह अल्लाह तआला की मअ़सियत करता था उस पर लानत करने लगते हैं। शैतानी लश्कर दौड़ता है, शैतान के पास पहुँचता है और कहता है कि हमने आज एक को जहन्नम में पहुँचा दिया। उसकी क़ब्र इस क़द्र तंग हो जाती है कि उसकी दाईं पसलियाँ बाईं में और बाईं दाईं में घुस जाती है। काले नाग बुख़्ती ऊँटों के बराबर उसकी क़ब्र में भेजे जाते हैं जो उसके कानों और उसके पैर के अंगूठे से उसे डसना शुरू करते हैं। और ऊपर चढ़ते आते हैं, यहाँ तक कि वसते जिस्म में मिल जाते हैं। दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं जिनकी आँखें तेज बिजली जैसी जिनकी आवाज़ गरज जैसी जिनके दाँत दरिन्दे जैसे जिनके साँस आग के शोले जैसे जिनके बाल पैरों के नीचे तक जिनके दो मूँढों के बीच इतनी इतनी मसाफ़त है। जिनके दिल में रहमत व रहम का नामो-निशान भी नहीं जिनका नाम ही मुंकर नकीर है। जिनके हाथ में लोहे के इतने बड़े हथोड़े हैं जिन्हें रबीआ और मुज़र मिलकर भी नहीं उठा सकते। वह उसे कहते हैं उठ बैठ यह सीधा बैठ जाता है और तहमद बाँधने की जगह उसका कफ़न आ पड़ता है। वह उससे पूछते हैं तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? तेरे नबी कौन है? यह कहता है मुझे तो कुछ ख़बर नहीं। वह कहते हैं हाँ! न तूने मालूम किया, न तूने पढ़ा। फिर उस ज़ोर से हथोड़ा उसे मारते हैं कि उसके शरारे उसकी क़ब्र को पुर कर देते हैं। फिर लौटकर उससे कहते हैं अपने ऊपर को देख। यह एक खुला हुआ दरवाज़ा देखता है' वह कहते हैं वल्लाह!

अगर तू अल्लाह तआला का फ़र्मांबरदार रहता तो तेरी यह जगह थी। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि अब तो उसे वह हसरत होती है जो कभी उसके दिल से जुदा नहीं होगी। फिर वह कहते हैं अब अपने नीचे देख वह देखता है कि एक दरवाज़ा जहन्नम का खुला हुआ है। फ़रिश्ते कहते हैं, ऐ दुश्मने इलाही! चूँकि तूने अल्लाह की नाफ़र्मानी के काम किए हैं अब तेरी यह जगह है। वल्लाह! उस वक़्त उसका दिल रंजो गम से बैठ जाता है। जो सदमा उसे कभी भूलने का नहीं, उसके लिए सत्तर दरवाज़े जहन्नम के खुल जाते हैं जहाँ से गर्म हवा और भाप उसे हमेशा ही आया करती है। यहाँ तक कि उसे अल्लाह तआला उठा बिठाए।'' यह हदीस बहुत ग़रीब है और यह स्याक़ भी बहुत अजीब है और इसका रावी यज़ीद रक़्क़ाशी जो हज़रत अनस (रज़ि.) के नीचे का रावी है उसकी ग़राइब व मुंकरात बहुत हैं और अइम्मा के नज़दीक वह ज़ईफ़ुर्रिवायत है। (यह रिवायत भी रक़्क़ाशी की वजह से सख़्त ज़ईफ़ है।) वल्लाहु आलम! अबूदाऊद में है हज़रत उस्मान (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी शख़्स को दफ़न से फ़ारिग़ होते तो वहाँ ठहर जाते और फ़र्माते, ''अपने भाई के लिए इस्तिग़फ़ार करो और इसके लिए साबित क़दमी तलब करो, इस वक़्त इससे सवाल हो रहा है।'' (अबूदाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब अल्इस्तिग़फ़ारु इन्दल क़ब्रि लिल मय्यिति फ़ी वक़्तिल इंसिराफ़ : 3221; व सनदुहू हसन) हाफ़िज़ इब्ने मर्दवे ने फ़र्माने बारी (وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ) (6/अन्आम : 93) की तफ़्सीर में एक बहुत लम्बी हदीस वारिद की है। वह भी ग़राइब से पुर है।

***

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا عَن سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : ''क्या तूने उनकी तरफ़ नज़र नहीं डाली जिन्होंने अल्लाह की नेअमत के बदले नाशुक्री की और अपनी क़ौम को हलाकत के घर में ला उतारा। (28) यानी दोज़ख़ है जिसमें यह सब जाएँगे जो बदतरीन ठिकाना है। (29) इन्होंने अल्लाह के हमसर बना लिए कि लोगों को अल्लाह की राह से बहकाएँ। तू कह दे कि ख़ैर मज़े कर लो। तुम्हारा जाना तो आख़िर जहन्नम ही में है।'' (30)

नेअमत की नाक़द्री की सज़ा (आयत 28-30) : सहीह बुख़ारी में है (अलम् तरा) मअनी में अलम तअलम के है यानी क्या तू नहीं जानता (आख़िर तक) (बवार) के मअनी हलाकत के हैं। बार यबूरु बौरन से बौरन के मअनी हालिकीन के हैं। मुराद इन लोगों से बक़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) कुफ़्फ़ारे मक्का हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (अलम तरा इलल्लज़ीना बद्दलू नेअमतल्लाहि) : 4700) और क़ौल है कि

मुराद इससे जबला बिन ऐहम और उसकी इताअत करने वाले वह अरब हैं जो रूमियों से मिल गए थे। लेकिन मशहूर और सहीह क़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) का अव्वल ही है भले अल्फ़ाज़ अपने उमूम के ऐतिबार से तमाम कुफ़्फ़ार को शामिल हों। अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को तमाम आलम के लिए रहमत बनाकर और कुल लोगों के लिए नेअमत बनाकर भेजा है। जिसने उस रहमत व नेअमत की क़द्रदानी की वह जन्नती है और जिसने नाक़द्री की वह जहन्नमी है। हज़रत अली (रज़ि.) से भी एक क़ौल हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पहले क़ौल की मुवाफ़िक़त में मरवी है। इब्नुल कव्वा के जवाब में आपने यही फ़र्माया था कि यह बद्र के दिन के कुफ़्फ़ारे कुरैश हैं। और रिवायत में है कि एक शख़्स के सवाल पर आपने फ़र्माया, मुराद इससे मुनाफ़िक़ीने कुरैश हैं। और रिवायत में है कि हज़रत अली (रज़ि.) ने एक मर्तबा फ़र्माया कि क्या मुझसे कुरआन की बाबत कोई कुछ बात पूछा नहीं करता? वल्लाहु आलम! मेरे इल्म में अगर कोई आज मुझसे ज़्यादा कुरआन का आलिम होता तो भले समुन्द्रों पार हो लेकिन मैं ज़रूर उसके पास पहुँचता। यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन अल्कव्वा खड़ा हो गया और कहा कि यह कौन लोग हैं जिनके बारे में फ़र्माने इलाही है कि उन्होंने अल्लाह तआला की नेअमत को कुफ़्र से बदला और अपनी क़ौम को हलाकत के गढ़े में डाल दिया। आपने फ़र्माया, यह मुश्रिकीने कुरैश हैं। (हाकिम : 2/352; व सनदुहू हसन; इमाम ज़हबी (रह.) ने इसे सहीह कहा है।) उनके पास अल्लाह की नेअमत ईमान पहुँची लेकिन इस नेअमत को उन्होंने कुफ़्र से बदल दिया और रिवायत में आपसे मरवी है कि उससे मुराद कुरैश के दो फ़ाजिर हैं बनू उमय्या और बनू मुग़ीरा, बनू मुग़ीरा ने अपनी क़ौम को बद्र में ला खड़ा किया और उन्हें हलाकत में डाला और बनू उमय्या ने उहुद वाले दिन अपने वालों को ग़ारत किया। बद्र में अबू जहल था और उहुद में अबू सुफ़्यान। और हलाकत के घर से मुराद जहन्नम है। और रिवायत में है कि बनू मुग़ीरा तो बद्र में हलाक हुए और बनू उमय्या को कुछ दिनों का फ़ायदा मिल गया। (हाकिम : 2/352; व सह्हहहुज़्ज़हबी व सनदुहू ज़ईफ़ुन) हज़रत उमर (रज़ि.) से भी इस आयत की तफ़्सीर में यही मरवी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जब आपसे सवाल किया तो आपने फ़र्माया, यह दोनों कुरैश के बदकार हैं। मेरे मामू और तेरे चचा मेरी ममियाल वाले तो बद्र के दिन नापैद हो गए और तेरे चचा वालों को अल्लाह तआला ने मोहलत दे रखी है। यह जहन्नम में जाएँगे जो बुरी जगह है। उन्होंने ख़ुद शिर्क किया दूसरों को शिर्क की तरफ़ बुलाया। ऐ नबी! तुम उनसे कह दो कि दुनिया में कुछ खा पी लो पहन ओढ़ लो। आख़िरी ठिकाना तो तुम्हारा जहन्नम है। जैसे फ़र्मान है हम इन्हें यूँ ही सा आराम दे देंगे फिर सख़्त अज़ाब की तरफ़ बेबस कर देंगे। (31/लुक़्मान : 24) दुनियावी नफ़ा भले हो लोटेंगे तो हमारी ही तरफ़। उस वक़्त हम इन्हें इनके कुफ़्र की वजह से सख़्त अज़ाब करेंगे। (10/यूनुस : 70)

***

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝٣١

तर्जुमा : "मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दे कि नमाज़ों को क़ायम रखें और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से कुछ न कुछ पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च भी करते रहें इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न ख़रीदो फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और मुहब्बत।" (31)

अल्लाह तआला नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और सदक़ा करने का हुक्म दे रहा है (आयत 31) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को अपनी इताअत का और अपना हक़ मानने का और मख़्लूके ख़ुदा से एहसान व सुलूक करने का हुक्म दे रहा है। फ़र्माता है कि नमाज़ बराबर पढ़ते रहें जो अल्लाह वहदहू ला शरीका लहू की इबादत है और ज़कात ज़रूर देते रहें क़राबतदार को भी और अंजान लोगों को भी। इक़ामत से मुराद वक़्त की हुदूद की रुकूअ की ख़ुशूअ की सज्दे की हिफ़ाज़त करना है। अल्लाह की दी हुई रोज़ी को उसकी राह में पोशीदगी से और खुले तौर पर उसकी ख़ुशनुदी के लिए औरों को भी देनी चाहिए ताकि उस दिन छुटकारा मिले जिस दिन कोई ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी, न कोई दोस्ती आशनाई होगी। कोई अपने आपको बतौर फ़िदये के बेचना भी चाहे तो भी नामुम्किन है। जैसा फ़र्मान है (فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا) (57/हदीद : 15) यानी आज तुमसे और काफ़िरों से कोई फ़िदया और बदला न लिया जाएगा। वहाँ किसी की दोस्ती की वजह से कोई छूटेगा नहीं, बल्कि वहाँ अदलो इंसाफ़ ही होगा। (ख़िलाल) मस्दर है। इम्रुल क़ैस के शेअर में भी यह लफ़्ज़ है। दुनिया में लेन देन मुहब्बत दोस्ती काम आ जाती है। लेकिन वहाँ यह चीज़ अगर अल्लाह के लिए न हो महज़ बेकार रहेगी। कोई सौदागरी कोई मेल वहाँ काम न आएगा। ज़मीन भरकर सोना फ़िदये में देना चाहे लेकिन रद्द है। किसी की दोस्ती किसी की सिफ़ारिश काफ़िर को काम न देगी। फ़र्माने इलाही है (وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا) (2/बक़रह : 48) उस दिन के अज़ाबों से बचने की कोशिश करो जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आएगा। न किसी से फ़िदया क़बूल किया जाएगा, न किसी को किसी की सिफ़ारिश नफ़ा देगी न कोई किसी की मदद कर सकेगा। फ़र्मान है (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ) (2/बक़रह : 254) ईमान वालों ! जो हमने तुम्हें दे रखा है तुम उसमें से हमारी राह में ख़र्च करो इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न व्यापार है न दोस्ती न सिफ़ारिश। काफ़िर ही दरअसल ज़ालिम हैं।

***

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ
رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِیَ فِی الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۲﴾ وَسَخَّرَ
لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَیْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ ﴿۳۳﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا
سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ

तर्जुमा :"अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और आसमानों से बारिश बरसाकर उसके ज़रिये से तुम्हारी रोज़ी के लिए फल निकाले हैं। और कश्तियों को तुम्हारे बस में कर दिया है कि दरियाओं में उसके हुक्म से चलें फिरें। उसी ने नदियाँ और नहरें तुम्हारे इख़्तियार में कर दी हैं।(32) उसी ने तुम्हारे लिए सूरज चाँद को मुसख़्ख़र कर दिया है कि बराबर ही चल रहे हैं और रात दिन को भी तुम्हारे काम में लगा रखा है। (33) उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी कुल चीज़ों में से ही दे रखा है। अगर तुम अल्लाह के एहसान गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते। यक़ीनन इंसान बड़ा ही बेइंसाफ़ और नाशुक्रा है।" (34)

अल्लाह की नेअमतें और उसकी शुक्रगुज़ारी (आयत 32-34) : अल्लाह की तरह तरह की बेशुमार नेअमतों को देखो, आसमान को उसने एक महफ़ूज़ छत बनाकर रखा है। ज़मीन को बेहतरीन फ़र्श बना रखा है। आसमान से बारिश बरसाकर ज़मीन से मज़े मज़े के फल खेतियाँ बाग़ात तैयार कर देता है। उसी के हुक्म से कश्तियाँ पानी के ऊपर तैरती फिरती हैं कि तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे और एक देश से दूसरे देश पहुँचाएँ। तुम वहाँ का माल यहाँ और यहाँ का माल वहाँ ले जाओ, ले आओ, नफ़ा हासिल करो तजुर्बा बढ़ाओ। नहरें भी उसी ने तुम्हारे काम में लगा रखी हैं। तुम उनका पानी पियो पिलाओ उससे खेतियाँ करो। नहाओ धोओ और तरह तरह के फ़ायदे हासिल करो। दाइमन (हमेशा) चलते फिरते और कभी न थकते सूरज चाँद भी तुम्हारे फ़ायदे के कामों में मशग़ूल हैं। मुक़र्ररा चाल पर मुक़र्ररा जगह पर गर्दिश में लगे हुए हैं। न उनमें टक्कर हो, न आगा पीछा हो। दिन रात उन्हीं के आने जाने से पे दर पे आते जाते रहते हैं। सितारे उसी के हुक्म के मातहत हैं। वह रब्बुल आलमीन बाबरकत है। कभी दिनों को बड़े कर देता है कभी रातों को बढ़ा देता है। हर चीज़ अपने काम में सर झुकाए मशग़ूल है। वह अल्लाह अज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार है। तुम्हारी ज़रूरत की तमाम चीजें उसने तुम्हारे लिए मुहय्या कर दी हैं। तुम अपने हाल व क़ाल से जिन जिन चीज़ों के मोहताज थे उसने सब कुछ तुम्हें दे दी हैं। माँगने पर भी वह देता है और बेमाँगे भी। उसका हाथ नहीं रुकता। तुम भला रब की तमाम नेअमतों का शुक्रिया तो क्या अदा करोगे। तुमसे तो उनकी पूरी गिनती करना भी मुश्किल है। तलाक़ बिन हबीब (रह.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह का हक़ उससे बहुत भारी है कि बन्दे उसे अदा कर सकें और अल्लाह की नेअमतें उससे बहुत ज़्यादा हैं कि बन्दे उनकी गिनती कर सकें। लोगों! सुबह शाम तौबा इस्तिग़फ़ार करते रहो। सहीह बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि "ऐ परवरदिगार! तेरे ही लिए सब हम्दो सना सज़ावार है। हमारी सनाएँ नाकाफ़ी हैं। पूरी और बेपरवाह करने वाली नहीं। या अल्लाह! तू माफ़ कर दे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा बाब मा यक़ूलु इज़ा फ़रग़ मिन तआमिही : 5458) बज़्ज़ार में आप (ﷺ) का फ़र्मान है "कयामत के दिन इंसान के तीन दीवान निकलेंगे। एक में नेकियाँ लिखी हुई होंगी। दूसरे में गुनाह होंगे, तीसरे में अल्लाह की नेअमतें होंगी। अल्लाह तआला अपनी नेअमतों में से सबसे छोटी नेअमत से कहेगा, उठ और अपना बदला इसके नेक आमाल से ले ले। उससे उसके सारे ही अमल ख़त्म हो जाएँगे। फिर भी वह यक्सू होकर कहेगी कि बारी तआला! मेरी पूरी क़ीमत वसूल नहीं हुई। ख़्याल कीजिए अभी गुनाहों का दीवान यूँ ही अलग थलग रखा हुआ है और तमाम नेअमतों का दीवान भी यूँ ही रखा हुआ है। अगर बन्दे पर अल्लाह का इरादा रहमो करम का हुआ तो अब वह उसकी नेकियाँ बढ़ा देगा। और उसके गुनाहों से तजावुज़ कर जाएगा और उससे फ़र्मा

देगा कि मैंने अपनी नेअ़मतें तुझे बग़ैर बदले के बख़्श दीं।'' (बज़्ज़ार : 3444; व सनदुहू मौज़ूउन; दाऊद बिन मिहबर कज़्ज़ाब व बाक़ियुस्सनद ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/357) इसकी सनद ज़ईफ़ है। मरवी है कि हज़रत दाऊद (ﷺ) ने अल्लाह तआ़ला जल्ल व अ़ला से पूछा कि मैं तेरा शुक्र कैसे अदा करूँ? शुक्र करना ख़ुद भी तो तेरी एक नेअ़मत है। जवाब मिला कि दाऊद! अब तू शुक्र अदा कर चुका जबकि तूने यह जान लिया और इसका इक़रार कर लिया कि तू मेरी नेअ़मतों के शुक्र की अदायगी से क़ासिर है। हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह ही के लिए तो हम्द है जिसकी बेशुमार नेअ़मतों में से एक नेअ़मत का शुक्र भी बग़ैर एक नई नेअ़मत के हम अदा नहीं कर सकते कि इस नई नेअ़मत पर फिर एक शुक्र वाजिब हो जाता है फिर उस नेअ़मत की शुक्रगुज़ारी की अदायगी की तौफ़ीक़ पर फिर नेअ़मत मिली जिसका शुक्रिया वाजिब हुआ। एक शायर ने यही मज़्मून अपने शेअ़रों में बाँधा है कि रोंगटे रोंगटे पर ज़ुबान हो तो भी तेरी एक नेअ़मत का शुक्र भी पूरा अदा नहीं हो सकता। तेरे एहसानात और इन्आ़मात बेशुमार हैं।

***

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَٰذَا ٱلْبَلَدَ ءَامِنًا وَٱجْنُبْنِى وَبَنِىَّ أَن نَّعْبُدَ ٱلْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ ٱلنَّاسِ ۖ فَمَن تَبِعَنِى فَإِنَّهُۥ مِنِّى ۖ وَمَنْ عَصَانِى فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾ رَّبَّنَآ إِنِّىٓ أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِى بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ ٱلْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ فَٱجْعَلْ أَفْـِٔدَةً مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهْوِىٓ إِلَيْهِمْ وَٱرْزُقْهُم مِّنَ ٱلثَّمَرَٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : ''इब्राहीम (ﷺ) की यह दुआ भी याद है कि ऐ मेरे परवरदिगार! इस शहर को अमन वाला बना दे और मुझे और मेरी औलाद को बुतपरस्ती से पनाह दे। (35) मेरे पालने वाले रब! इन्होंने बहुत से लोगों को राह से भटका रखा है। मेरी ताबेदारी करने वाला मेरा है। और जो मेरी नाफ़र्मानी करे तो तू बहुत ही माफ़ और करम करने वाला है। (36) ऐ हमारे परवरदिगार! मैंने अपनी कुछ औलाद इस बेखेती के जंगल में तेरे हुर्मत वाले घर के पास बसाई है। ऐ हमारे परवरदिगार! यह इसलिए कि वह नमाज़ क़ायम रखें पस तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दे। और उन्हें फलों की रोज़ियाँ इनायत फ़र्मा ताकि यह शुक्रगुज़ारी करें।'' (37)

मक्का के लिए अमन की दुआ (आयत 35-37) : अल्लाह तआ़ला बयान करता है कि हुर्मत वाला शहर मक्का शुरुआती दौर में अल्लाह की तौहीद पर ही बनाया गया था। उसके अव्वल बानी ख़लीलुल्लाह

(अलैहि.) अल्लाह के सिवा औरों की इबादत करने वालों से बरी थे। उन्होंने ही इस शहर के बाअम्न होने की दुआ की थी जो अल्लाह तआला ने क़बूल की। सबसे पहला बाबरकत और बाहिदायत अल्लाह का घर मक्का मुकर्रमा अल्लाह का ही है जिसमें और बहुत सी वाज़ेह निशानियों के अलावा मक़ामे इब्राहीम भी है। उस शहर में जो पहुँच गया वह अम्नो-अमान में आ गया। उस शहर को बनाने के बाद ख़लीलुल्लाह (अलैहि.) ने दुआ की कि या अल्लाह! इस शहर को पुरअम्न बना। इसीलिए फ़र्माया कि अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ (अलैहि.) जैसे बच्चे अता किए। (14/इब्राहीम : 39) हज़रत इस्माईल (अलैहि.) हज़रत इस्हाक़ (अलैहि.) से तेरह साल बड़े थे। उससे पहले जबकि आप हज़रत इस्माईल (अलैहि.) को दूध पीता उनकी वालिदा के साथ लेकर यहाँ आए थे तब भी आपने उस शहर के बाअम्न होने की दुआ की थी लेकिन उस वक़्त के अल्फ़ाज़ यह थे (رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا) (2/बक़रह : 126) पस इस दुआ में बलद पर लाम नहीं है इसलिए कि यह दुआ शहर की आबादी से पहले की है और अब चूँकि शहर बस गया था बलद को मअरिफ़ा बा लाम लाए। सूरह बक़रह में हम इन चीज़ों को वज़ाहत व तफ़सील के साथ ज़िक्र कर चुके हैं। फिर दूसरी दुआ में अपनी औलाद को भी शरीक कर लिया। इंसान को लाज़िम है कि अपनी दुआ में अपनी औलाद को भी और अपने माँ बाप को भी शामिल रखे। फिर आपने बुतों की गुमराही, उनका फ़ित्ना, अक्सर लोगों का बहकाया जाना बयान करके उनसे अपनी बेज़ारी का इज़्हार किया और उन्हें अल्लाह के हवाले किया कि वह चाहे बख़्शे चाहे सज़ा दे। जैसे रूहुल्लाह (अलैहि.) बरोज़े क़यामत कहेंगे कि अगर तू इन्हें अज़ाब करे तो यह तेरे बन्दे हैं और अगर बख़्श दे तो तू अज़ीज़ हकीम है। यह याद रहे कि इसमें सिर्फ़ अल्लाह की मशिय्यत और उसके इरादे की तरफ़ लौटना है न कि उसके वाक़ेअ होने को जाइज़ समझना है। हुज़ूर (सल्ल.) ने ख़लीलुल्लाह (अ.) का यह क़ौल और हज़रत ईसा (अलैहि.) का यह क़ौल (इन तुअज़्ज़िबुहुम) आख़िर तक तिलावत करके रो रोकर अपनी उम्मत को याद किया तो अल्लाह तआला ने जिब्राईल (अलैहि.) को हुक्म किया कि जाकर पूछो कि क्यूँ रो रहे हो? आपने सबब बयान किया, हुक्म हुआ कि जाओ और कह दो कि आपको हम आपकी उम्मत के बारे में ख़ुश कर देंगे, नाराज़ न करेंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब दुआइन्नबी (सल्ल.) लि उम्मतिही व बुकाइही शफ़्क़तन अलैहिम : 202; इब्ने हिब्बान : 7234; सुननुल कुब्रा : 11269)

फलों की फ़रावानी के लिए दुआए इब्राहीम (अलैहि.) : यह दूसरी दुआ है। पहली दुआ इस शहर को आबाद होने से पहले जब आप हज़रत इस्माईल (अलैहि.) को उनकी वालिदा साहिबा के साथ यहाँ छोड़ गए थे तब की थी और यह दुआ इस शहर के आबाद हो जाने के बाद की। इसीलिए यहाँ (बैतिकल मुहर्रम) का लफ़्ज़ लाए और नमाज़ के क़ायम करने का भी ज़िक्र किया। इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं यह मुतअल्लिक़ है लफ़्ज़ (अल्मुहर्रम) के साथ यानी इसे बाहुर्मत इसलिए बनाया है कि यहाँ वाले इत्मिनान के साथ यहाँ नमाज़ें अदा कर सकें। यह बात भी याद रखने के क़ाबिल है कि आपने फ़र्माया, कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ झुकाने की दुआ होती तो फ़ारस व रूम, यहूदो नसारा, ग़र्ज़ तमाम दुनिया के लोग यहाँ उलट पड़ते। आपने सिर्फ़ मुसलमानों के लिए यह दुआ की। और दुआ करते हैं कि उन्हें फल भी इनायत कर। यह ज़मीन खेती के क़ाबिल भी नहीं और दुआ हो रही है फलों की रोज़ी की। अल्लाह तआला ने यह दुआ भी क़बूल फ़र्माई। जैसे इर्शाद है (أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا) (28/क़सस :

57) यानी क्या हमने इन्हें हुर्मत व अमन वाली ऐसी जगह इनायत नहीं की जहाँ हर चीज़ के फल उनकी तरफ़ खिंचे चले आते हैं जो ख़ास हमारे पास की रोज़ी है। पस यह अल्लाह तआला का ख़ास लुत्फ़ो करम इनायत व रहम है कि शहर की पैदावार कुछ भी नहीं और फल हर तरह के वहाँ मौजूद, चारों तरफ़ से वहाँ चले आएँ। यह है हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की दुआ की क़बूलियत।

***

رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى ٱللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي ٱلْأَرْضِ وَلَا فِي ٱلسَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى ٱلْكِبَرِ إِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ ٱجْعَلْنِي مُقِيمَ ٱلصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا ٱغْفِرْ لِي وَلِوَٰلِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ ٱلْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ ٱللَّهَ غَٰفِلًا عَمَّا يَعْمَلُ ٱلظَّٰلِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ ٱلْأَبْصَٰرُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۖ وَأَفْـِٔدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

तर्जुमा : "ऐ हमारे परवरदिगार! तू ख़ूब जानता है जो हम छुपाएँ और जो हम ज़ाहिर करें। ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह पर पोशीदा नहीं। (38) अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे इस बुढ़ापे में इस्माईल व इस्हाक़ अता किए। कुछ शक नहीं कि मेरा पालने वाला अल्लाह दुआओं का सुनने वाला है।(39) ऐ मेरे पालने वाले! मुझे नमाज़ का पाबंद रख और मेरी औलाद से भी। ऐ हमारे रब मेरी दुआ क़बूल फ़र्मा। ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को भी बख़्श और दीगर मोमिनों को भी बख़्श दे जिस दिन हिसाब होने लगे। (41) नाइंसाफ़ों के आमाल से अल्लाह को ग़ाफ़िल न समझ वह तो उन्हें उस दिन तक मोहलत दिए हुए है जिस दिन आँखें फटी की फटी रह जाएँगी। (42) अपने सर ऊपर उठाए दौड़ भाग कर रहे होंगे ख़ुद अपनी तरफ़ भी उनकी निगाहें न लौटेंगी। और उनके दिल अड़े और गिरे हुए ख़ाली होंगे।" (43)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की एक और दुआ (आयत 38-43) : ख़लीलुल्लाह (ﷺ) अपनी मुनाजात में फ़र्माते हैं कि अल्लाह! तू मेरे इरादे और मेरे मक़्सूद को मुझसे ज़्यादा जानता है। मेरी चाहत है कि यहाँ रहने वाले तेरी रज़ा के तालिब और फ़क़त तेरी तरफ़ राग़िब रहें। ज़ाहिर व बातिन तुझ पर रोशन है। ज़मीन व

आसमान की हर चीज़ का हाल तुझ पर खुला है। तेरा एहसान है कि इस पूरे बुढ़ापे में तूने मुझे औलाद अ़ता फ़र्माई और एक पर एक बच्चा दिया। इस्माईल भी और इस्हाक़ भी। तू दुआओं का सुनने वाला और क़बूल करने वाला है, मैंने माँगा, तूने दिया। पस तेरा शुक्र है या अल्लाह! तू मुझे नमाज़ों का पाबन्द बना और मेरी औलाद में भी यह सिलसिला क़ायम रख। मेरी तमाम दुआएँ क़बूल फ़र्मा (वलि वालिदय्या) की क़िरअत कुछ ने (वलि वालिदी) भी की है। यह भी याद रहे है कि यह दुआ उससे पहले की है कि आपको अल्लाह की तरफ़ से मालूम हो जाए कि आपका वालिद अल्लाह की दुश्मनी पर ही मरा है जब यह ज़ाहिर हो गया तो आप अपने वालिद से बेज़ार हो गए। पस यहाँ आप अपने माँ बाप की और तमाम मोमिनों की ख़ताओं की माफ़ी अल्लाह तआला से चाहते हैं कि आमाल के हिसाब और बदले के दिन क़सूर माफ़ हों।

अल्लाह की अ़ताकर्दा मोहलत से नाजाइज़ फ़ायदा न उठाओ : कोई यह न समझे कि बुराई करने वालों की बुराई का अल्लाह को इल्म ही नहीं, इसीलिए यह दुनिया में फल फूल रहे हैं। नहीं तो अल्लाह एक एक घड़ी के बुरे भले आमाल से बख़ूबी वाक़िफ़ है। यह ढील ख़ुद उसकी दी हुई है कि या तो उसमें वापिस हो जाए या फिर गुनाहों में बढ़ जाए यहाँ तक कि क़यामत का दिन आ जाए जिस दिन होलनाकियाँ आँखें पथरा देंगी, दीदे चढ़ा देंगी। सर उठाए पुकारने वाले की आवाज़ की तरफ़ दौड़े चले जाएँगे। कहीं इधर उधर न होंगे। सबके सब पूरे इताअ़त गुज़ार बन जाएँगे। दौड़े भागे हुज़ूर (ﷺ) की हाज़िरी के लिए बेताबा न आएँगे। आँखें नीचे को न झुकेंगी, घबराहट और फ़िक्र के मारे पलक से पलक न झपकेगी। दिलों का यह हाल होगा कि गोया अड़े जाते हैं ख़ाली पड़े हैं ख़ौफ़ के सिवा कोई चीज़ नहीं वह हल्क़ूम तक पहुँचे हुए हैं अपनी जगह से हटे हुए हैं, दहशत से ख़राब हो रहे हैं।

***

وَاَنۡذِرِ النَّاسَ يَوۡمَ يَاۡتِيۡهِمُ الۡعَذَابُ فَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا رَبَّنَاۤ اَخِّرۡنَاۤ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيۡبٍ ۙ نُّجِبۡ دَعۡوَتَكَ وَنَـتَّبِعِ الرُّسُلَ‌ ؕ اَوَلَمۡ تَكُوۡنُوۡۤا اَقۡسَمۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ مَا لَـكُمۡ مِّنۡ
زَوَالٍ ۝٤٤ وَّسَكَنۡتُمۡ فِىۡ مَسٰكِنِ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ وَتَبَيَّنَ لَـكُمۡ كَيۡفَ فَعَلۡنَا بِهِمۡ
وَضَرَبۡنَا لَـكُمُ الۡاَمۡثَالَ ۝٤٥ وَقَدۡ مَكَرُوۡا مَكۡرَهُمۡ وَعِنۡدَ اللّٰهِ مَكۡرُهُمۡ ؕ وَاِنۡ كَانَ
مَكۡرُهُمۡ لِتَزُوۡلَ مِنۡهُ الۡجِبَالُ ۝٤٦

तर्जुमा : "लोगों को उस दिन से होशियार कर दे जबकि उनके पास अ़ज़ाब आ जाएगा और ज़ालिम कहने लगेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें बहुत थोड़े क़रीब के वक़्त तक की ही मोहलत दे, हम तेरी तब्लीग़ मान लें और तेरे पैग़म्बरों की ताबेदारी में लग जाएँ। क्या तुम इससे पहले भी क़समें नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिए ज़वाल ही नहीं। (44) और क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते सहते न थे जो अपनी जानों पर ही ज़ुल्म करते थे और क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हमने उनके साथ कैसा कुछ किया। हमने तो तुम्हें समझाने के लिए बहुत सी मिसालें बयान कर दी थीं।(45) यह अपनी चालें चल ही रहे हैं। और अल्लाह को इनकी तमाम चालों का इल्म है। यह तो नामुम्किन है कि इनकी चालें ऐसी हों कि उनसे पहाड़ अपनी जगह से टल जाएँ।" (46)

क़यामत के दिन दुनिया में लौटाए जाने की आरज़ू नामंज़ूर (आयत 44-46) : ज़ालिम और नाइंसाफ़ लोग अल्लाह का अ़ज़ाब देखकर तमन्नाएँ करते हैं और दुआ माँगते हैं कि हमें ज़रा सी मोहलत मिल जाए कि हम हुक्मबरदारी कर लें और पैग़म्बरों की इताअ़त भी कर लें। और आयत में है मौत को देखकर कहते हैं (رَبِّ ارْجِعُونِ) (23/मोमिनून : 99) या अल्लाह! अब वापिस लौटा दे, आख़िर तक। यही मज़्मून आयत (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ) (63/मुनाफ़िक़ून : 9) में है यानी ऐ मुसलमानों! तुम्हें तुम्हारे माल औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें। ऐसा करने वाले लोग ज़ाहिर ख़सारे में हैं। हमारा दिया हुआ हमारी राह में देते रहो। ऐसा न हो कि मौत के वक़्त आरज़ू करने लगो कि मुझे ज़रा सी देर की मोहलत मिल जाए तो मैं ख़ैरात ही कर लूँ और नेक लोगों में शामिल हो जाऊँ। याद रखो अजल (फ़िक्स टाईम) आने के बाद किसी को मोहलत नहीं मिलती। और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। महशर में भी उनका यही हाल होगा। चुनाँचे सूरह सज्दा की आयत (وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ) (32/सज्दा : 12) में है कि काश! तुम गुनहगारों को देखते कि वह अपने परवरदिगार के रूबरू सर झुकाए हुए कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तू हमें दुनिया में एक बार भेज दे कि हम यक़ीन वाले होकर नेक आमाल कर लें। यही बयान आयत (وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ) (6/अन्आम : 27) और आयत (وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا) (35/फ़ातिर : 37) वग़ैरह में भी है। यहाँ इन्हें जवाब मिलता है कि तुम तो उससे पहले क़समें खा खाकर कहते थे कि तुम्हारी नेअ़मतों को ज़वाल ही नहीं। क़यामत कोई चीज़ ही नहीं। मरकर उठना ही नहीं अब इसका मज़ा चखो। यह कहा करते थे और ख़ूब मज़बूत क़समें खा खाकर दूसरों को भी यक़ीन दिलाते थे कि मुर्दों को अल्लाह दोबारा ज़िन्दा न करेगा।

फिर फ़र्माता है कि तुम आप देख चुके सुन चुके कि तुमसे पहले कि तुम जैसों के साथ हमने क्या किया। उनकी मिसालें हम तुमसे भी बयान कर चुके कि हमारे अ़ज़ाबों ने उन्हें कैसे ग़ारत कर दिया। बावजूद इसके तुम उनसे इब्रत हासिल नहीं करते और चौकन्ना नहीं होते यह भले कितने ही चालाक हों लेकिन ज़ाहिर है कि अल्लाह के सामने किसी की चालाकी नहीं चलती। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) से जिसने झगड़ा किया था उसने दो बच्चे गिद्ध के लेकर पाले। जब वह बड़े हो गए जवानी को पहुँचे ताक़त व कुव्वत वाले हो गए तो एक छोटी सी चौकी के एक पाये से एक को बाँध दिया। दूसरे से दूसरे को बाँध दिया। उन्हें खाने को कुछ न दिया।

ख़ुद अपने एक साथी समेत उस चौकी पर बैठ गया और एक लकड़ी के सिरे पर गोश्त बाँधकर उसे ऊपर को उठाया। भूखे गिद्ध वह खाने के लिए ऊपर को उड़े और अपने ज़ोर से चौकी को भी ले उड़े। अब जबकि यह इतनी बुलंदी पर पहुँच गए कि हर चीज़ उन्हें मक्खी की तरह की नज़र आने लगी तो उसने लकड़ी झुका दी। अब गोश्त नीचे दिखाई देने लगा, इसलिए जानवरों ने पर समेटकर गोश्त लेने के लिए नीचे उतरना शुरु कर दिया और तख़्त भी नीचा होने लगा। यहाँ तक कि ज़मीन तक पहुँच गया पस यह हैं वह मक्कारियाँ जिनसे पहाड़ों का ज़वाल भी मुम्किन सा हो जाए। अब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरअत में (कादा मक्रुहुम) है। हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत उबय बिन कअब और हज़रत उमर (रज़ि.) की क़िरअत भी यही है। यह क़िस्सा नमरूद का है जो किन्आन का बादशाह था। उसने इस हीले से आसमान का क़ब्ज़ा चाहा था। उसके बाद क़िब्तियों के बादशाह फ़िरओन को भी यही ख़ब्त समाया था। बड़ा बुलंद मिनारा तामीर कराया था लेकिन दोनों की नातवानी ज़ईफ़ी और आजिज़ी ज़ाहिर हो गई और ज़िल्लत व ख़्वारी पस्ती व तनज़्ज़ुल के साथ हक़ीर व ज़लील हुए। कहते हैं कि जब बुख़्ते नस्सर इस हीला से अपने तख़्त को बहुत ऊँचा ले गया। यहाँ तक कि ज़मीन और ज़मीन वाले उसकी नज़रों से ओझल हो गए तो उसे एक कुदरती आवाज़ आई कि ऐ सरकश ताग़ी! क्या इरादा है? यह डर गया ज़रा सी देर बाद भर यही ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी अब तो इसका पत्ता पानी हो गया और जल्दी से नेज़ा झुकाकर उतरना शुरु कर दिया। हज़रत मुजाहिद (रह़.) की क़िरअत में (ल तज़ूलु) है बदले में (लि तज़ूला) के। इब्ने अब्बास (रज़ि.) इनको नाफ़िया मानते हैं यानी इनके मकर पहाड़ों को ज़ाइल नहीं कर सकते। हसन बसरी (रह़.) भी यही कहते हैं। इब्ने जरीर (रह़.) इसकी तौजीह यह बयान करते हैं कि इनका शिर्क व कुफ़्र पहाड़ों वग़ैरह को नहीं हटा सकता कोई ज़रर दे नहीं सकता। सिर्फ़ इसका वबाल इन्हीं की जानों पर है। मैं कहता हूँ इसी के मुशाबेह यह फ़र्माने बारी भी है (وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا) (17/बनी इस्राईल : 37) ज़मीन पर अकड़कर न चल, न तो तू ज़मीन को चीर सकता है न पहाड़ों की बुलंदी को पहुँच सकता है। दूसरा क़ौल इब्ने अब्बास (रज़ि.) का यह है कि इनका शिर्क पहाड़ों को ज़ाइल कर देने वाला है जैसे इर्शादे बारी तआला है (تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ) (19/मरयम : 90) इससे तो आसमानों का फट जाना मुम्किन है। ज़ह्हाक (रह़.) व क़तादा (रह़.) का भी यही क़ौल है।

***

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

तर्जुमा : "तू हर्गिज़ यह ख़्याल भी न करना कि अल्लाह अपने नबियों से वादाख़िलाफ़ी करे। अल्लाह बड़ा ही ग़ालिब और बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और ही बदल दी जाएगी और आसमान भी और सबके सब अल्लाह वाहिद ग़ल्बे वाले के रूबरू होंगे।" (48)

क़यामत के दिन ज़मीन व आसमान बदल दिए जाएँगे (आयत 47, 48) : अल्लाह तआला अपने वादे को मुक़र्रर और ताकीद कर रहा है कि दुनिया व आख़िरत में जो उसने अपने रसूलों की मदद का वादा किया है वह कभी उसका ख़िलाफ करने वाला नहीं। उस पर कोई और ग़ालिब नहीं, वह सब पर ग़ालिब है। उसके इरादे से मुराद जुदा नहीं उसका चाहा होकर ही रहता है। वह काफ़िरों से उनके कुफ्र का बदला ज़रूर लेगा। क़यामत के दिन उन पर हसरत व मायूसी तारी होगी। उस दिन ज़मीन होगी लेकिन उसके सिवा और होगी। इसी तरह आसमान भी बदल दिए जाएँगे। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "ऐसी सफ़ेद साफ़ ज़मीन पर हश्र किए जाएँगे जैसे मेदे की सफ़ेद टिकिया हो जिस पर कोई निशान और ऊँच न होगी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब यक़्बिज़ुल्लाहुल अर्ज़ यौमल क़ियामति : 6521; सहीह मुस्लिम : 2790; इब्ने हिब्बान : 7320) मुस्नद अहमद में है हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं सबसे पहले मैंने ही इस आयत के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया था कि उस वक़्त लोग कहाँ होंगे? आपने फ़र्माया, "पुल सिरात पर।" (अहमद : 6/35; सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब फ़िल बअस वन्नुशूर : 2791; तिर्मिज़ी : 3121; इब्ने माजा : 4279; इब्ने हिब्बान : 7380) और रिवायत में है कि आपने यह भी फ़र्माया कि "तुमने वह बात पूछी कि मेरी उम्मत में से किसी और ने यह बात मुझसे नहीं पूछी।" (अहमद : 6/101; इसकी सनद मुंक़तअ यानी ज़ईफ़ है। लेकिन सहीह मुस्लिम (2791) की हदीस इससे बेनियाज़ कर देती है।) और रिवायत में है कि यही सवाल माई साहिबा (रज़ि.) का आयत (وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ) (39/ज़ुमर : 67) के बारे में था। और आप (ﷺ) ने यही जवाब दिया था। (अहमद : 6/117; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिज़्ज़ुमर : 3241; व सनदुहू सहीहुन; लेकिन इसमें (अला मतनि जहन्नम) के अल्फ़ाज़ नहीं।) हज़रत सौबान (रज़ि.) कहते हैं मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास था एक यहूदी आलिम आया और उसने आपका नाम लेकर सलामुन अलैक कहा। मैंने उसे ऐसे ज़ोर से धक्का दिया कि क़रीब था कि गिर पड़े। उसने मुझसे कहा कि तूने मुझे क्यूँ धक्का दिया। मैंने कहा, बेअदब! या रसूलल्लाह (ﷺ) नहीं कहता और आपका नाम लेता है। उसने कहा, हम तो जो नाम इनका इनके घराने के लोगों ने रखा है उसी नाम से पुकारेंगे। आपने फ़र्माया, "मेरे ख़ानदान ने मेरा नाम मुहम्मद ही रखा है।" यहूदी ने कहा, सुनिए मैं आपसे एक बात पूछने आया हूँ। आपने फ़र्माया, "फिर मेरा जवाब तुझे कोई नफ़ा भी देगा?" उसने कहा, सुन तो लूँगा, आपके हाथ में जो तिनका था उसे आपने ज़मीन पर फिराते हुए फ़र्माया कि "अच्छा पूछ लो।" उसने कहा, जब ज़मीन व आसमान बदले जाएँगे उस वक़्त लोग कहाँ होंगे? फ़र्माया, "पुल सिरात के पास अंधेरों में।" उसने कहा, सबसे पहले पुलसिरात से कौन लोग गुज़रेंगे? फ़र्माया, "मुहाजिरीन फ़ुक़रा" उसने पूछा, उन्हें सबसे पहले तोहफ़ा क्या मिलेगा? आपने फ़र्माया, "मछली की कलेजी की ज़्यादती" उसने पूछा, उसके बाद उन्हें क्या ग़िज़ा मिलेगी? फ़र्माया, "जन्नती बैल ज़िब्ह किया जाएगा जो जन्नत के अतराफ़ में चरता चुगता रहा था" उसने फिर पूछा, फिर पीने को क्या मिलेगा? आपने फ़र्माया, "जन्नती नहर सल्सबील का पानी।" यहूदी ने कहा आपके सब जवाब बरहक़ हैं। अच्छा! अब मैं एक और बात पूछता हूँ जिसे या तो नबी जानता है या दुनिया के और दो एक आदमी। आपने फ़र्माया, "क्या मेरा जवाब तुझे कुछ फ़ायदा देगा?" उसने कहा, सुन तो लूँगा। बच्चे के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं? आपने फ़र्माया, "मर्द का ख़ास पानी सफ़ेद रंग का होता है और औरत का ख़ास पानी ज़र्द (पीला) रंग का। जब यह दोनों जमा होते हैं तो अगर मर्द का पानी ग़ालिब आ जाए तो अल्लाह

के हुक्म से लड़का पैदा होता है और जब औरत का पानी मर्द के पानी पर ग़ालिब आ जाए तो अल्लाह के हुक्म से लड़की होती है'' यहूदी ने कहा, बेशक आप सच्चे हैं और यक़ीनन आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं। फिर वह वापिस चला गया। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उसने जब मुझसे सवाल किया मुझे कोई जवाब मालूम न था लेकिन उस वक़्त अल्लाह तआला ने मुझे जवाब सिखलाया।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल हैज़, बाब बयानु सिफ़ति मनिय्यिर्रजुलि वल मर्अति : 315; इब्ने हिब्बान : 7422) इब्ने जरीर तबरी में है कि यहूदी आलिम के पहले सवाल के जवाब में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उस वक़्त मख़्लूक़ अल्लाह की मेहमानी में होगी। पस उसके पास की चीज़ उनसे आजिज़ न होगी।'' (इसकी सनद में अबूबक्र बिन अब्दुल्लाह बिन अबी मरयम ज़ईफ़ जबकि सईद बिन सौबान मज्हूल है जिसकी वजह से यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।) अम्र बिन मैमून (रज़ि.) कहते हैं इस ज़मीन को बदल दिया जाएगा और ज़मीन सफ़ेद मेदे की टिकिया जैसी होगी जिसमें न कोई ख़ून बहा होगा और न कोई ख़ता होगी, आँखें तेज़ होंगी, दाई की आवाज़ कानों में होगी, सब नंगे पैर, नंगे बदन खड़े होंगे यहाँ तक कि पसीना मिस्ल लगाम के हो जाएगा। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से भी इसी तरह मरवी है। (हाकिम : 4/570; ज़हबी ने इसे बुख़ारी व मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है। तफ़्सीर इब्ने कसीर 13/16 व सनदुहू सहीहुन) एक मरफ़ूअ रिवायत में है कि ''सफ़ेद रंग की वह ज़मीन होगी जिस पर न ख़ून का क़तरा गिरा होगा, न उस पर किसी गुनाह का काम हुआ होगा।'' (बज़्ज़ार : 3431 वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; तबरानी : 10333; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/45; हैसमी (रह.) कहते हैं इस रिवायत में जरीर बिन अय्यूब मतरूक रावी है। जबकि तबरानी ने इसे 9001 में इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मौक़ूफ़न बयान किया है जिसकी सनद सहीह है।) इसे मरफ़ूअ करने वाला एक ही रावी है यानी जरीर बिन अय्यूब और वह क़वी नहीं। इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यहूदियों के पास अपना आदमी भेजा, फिर सहाबा (रज़ि.) से पूछा, ''जानते हो मैंने इनके पास आदमी क्यूँ भेजा है।'' उन्होंने कहा, अल्लाह ही को इल्म है और उसके रसूल को। आपने फ़र्माया ''आयत (यौमा तुबद्दलुल अर्ज़...) के बारे में याद रखो वह उस दिन चाँदी की तरह सफ़ेद होगी।'' (तबरी : 13/250; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इस रिवायत में जाबिर बिन यज़ीद जोअफ़ी है और जुम्हूर के मुताबिक़ यह ज़ईफ़ है। (तहज़ीबुल कमाल : रक़्म 863) जब वह लोग आए आपने उनसे पूछा, उन्होंने कहा कि सफ़ेद होगी, जैसे मैदा। और भी सलफ़ से मरवी है कि चाँदी की ज़मीन होगी। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि आसमान सोने का होगा। उबय (रज़ि.) फ़र्माते हैं वह बाग़ात बना हुआ होगा। मुहम्मद बिन क़ैस (रह.) कहते हैं रोटी बन जाएगी कि मोमिन अपने कदमों तले से ही खा लें। सईद बिन जुबेर (रह.) यही फ़र्माते हैं कि ज़मीन बदलकर रोटी बन जाएगी। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं क़यामत के दिन सारी ज़मीन आग बन जाएगी। उसके पीछे जन्नत होगी जिसकी नेअमतें बाहर से ही नज़र आ रही होंगी लोग अपने पसीनों में डूबे हुए होंगे। अभी हिसाब किताब शुरू न हुआ होगा। इंसान का पसीना पहले तो क़दमों में ही होगा फिर बढ़कर नाक तक पहुँच जाएगा बवजह उस सख़्ती और घबराहट और ख़ौफ़नाक मंज़र के जो उसकी निगाहों के सामने है। कअब (रह.) कहते हैं आसमान बाग़ात बन जाएँगे। समुन्द्र आग हो जाएँगे। ज़मीन बदल दी जाएगी। अबू दाऊद की हदीस में है ''समुन्द्र का सफ़र सिर्फ़ ग़ाज़ी या हाजी या उमरा करने वाले ही करेंगे क्योंकि समुन्द्र के नीचे आग है या आग के नीचे समुन्द्र है।'' (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी रुकूबिल बह्‌र फ़िल ग़ज़्व : 2489; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; बैहक़ी : 4/334; (अत्तारीख़ुल कबीर, रक़्म : 1846) इस रिवायत में बिश्र अबू अब्दुल्लाह

और बशीर बिन मुस्लिम दोनों मज्हूल हैं (अत्तक़रीब : 1/102, 103) सूर की मशहूर हदीस में है कि आपने फ़र्माया कि ''अल्लाह तआला ज़मीन को बसीत़ करके अक़ाज़ा चमड़े की तरह खींचेगा। उसमें कोई ऊँच नीच नज़र न आएगी। फिर एक ही आवाज़ के साथ तमाम मख़्लूक़ात उस नई ज़मीन पर फैल जाएगी।'' (तब्री : 13/252; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) फिर इर्शाद है कि तमाम मख़्लूक़ अपनी क़ब्रों से निकलकर अल्लाह वाहिद व क़ह्हार के सामने रूबरू हो जाएगी। वह अल्लाह जो अकेला है और जो हर चीज़ पर ग़ालिब है। सबकी गर्दनें उसके सामने ख़म हैं और सब उसके ताबेअ़े फ़र्मान हैं।

***

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

तर्जुमा : ''तू उस दिन गुनहगारों को देखेगा कि ज़ंजीरो में मिले जुले एक जगह जकड़े हुए होंगे। (49) उनके लिबास गंधक के होंगे और आग उनके चेहरों पर भी चढ़ी हुई होगी। (50) यह इसलिए कि अल्लाह तआला हर शख़्स को उसके किये हुए आमाल का बदला दे। बेशक अल्लाह तआला को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगेगी।'' (51)

जहन्नम में जाने वाले गंधक के लिबास में क़ैद (आयत 49-51) : ज़मीन व आसमान बदले हुए हैं, मख़्लूक़ अल्लाह के सामने खड़ी है उस दिन ऐ नबी (ﷺ)! तुम देखोगे कि कुफ़्र व फ़साद करने वाले गुनहगार आपस में जकड़े बंधे हुए होंगे, हर-हर क़िस्म के गुनहगार दूसरों से मिले जुले हुए होंगे। जैसे फ़र्मान है (اُحْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ) (37/साफ़्फ़ात : 22) ज़ालिमों को और उनके जोड़ के लोगों को इकट्ठा कर दो। और आयत में है (وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ) (81/तक्वीर : 7) जबकि नफ़्स के जोड़े मिला दिये जाएँगे। और जगह इर्शाद है (وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا) (25/फ़ुरक़ान : 13) यानी जबकि जहन्नम के तंग मकान में वह मिलाये जुलाए डाले जाएँगे तो वहाँ मौत मौत पुकारेंगे। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के जिन्नात की बाबत भी (मुक़र्रनीना फ़िल अस्फ़ाद) का लफ़्ज़ है। अस्फ़ाद कहते हैं क़ैद की ज़ंजीरों को। अम्र बिन कुल्सुम के शेअ़र में मुस्फ़द बमअ़नी ज़ंजीरों में जकड़े हुए क़ैदी के आया है जो कपड़े उन्हें पहनाये जाएँगे वह गंधक के होंगे, जो ऊँटों को लगाया जाता है उसे आग तेज़ी और सुरअ़त से पकड़ती है। यह लफ़्ज़ (क़ितिरान) भी है (क़त्रान) भी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं पिघले हुए तांबे को क़त्रान कहते हैं उस सख़्त गर्म आग जैसे तांबे के उन जहन्नमियों के लिबास होंगे उनके मुँह भी आग में ढके हुए होंगे। चेहरों तक आग चढ़ी हुई होगी। सर से शोले बुलंद हो रहे होंगे। मुँह बिगड़ गए होंगे। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेरी उम्मत में चार काम जाहिलियत के हैं जो उनसे न छूटेंगे, हसब पर फ़ख़्र, नसब में ताना़ज़नी, सितारों से बारिश की तलबी, मय्यित पर नोहा सुनो नोहा करने वाली ने अगर अपनी मौत से पहले तौबा न कर ली तो उसे क़यामत के दिन गंधक का कुर्ता और खुजली का दुपट्टा पहनाया जाएगा।'' (मुस्नद

अह़मद : 5/342, 343; वहुव ह़दीसुन स़ह़ीहुन; इब्ने ह़िब्बान : 3143; बैहक़ी : 4/63) (स़ह़ीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, बाब तशदीदु फ़िन्नह़ाया : 934) और रिवायत में है कि "वह जन्नत व दोज़ख़ के बीच खड़ी की जाएगी। गंधक का कुर्ता होगा और मुँह पर आग खेल रही होगी।" (त़ब्रानी : 6/238; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/14) क़यामत के दिन अल्लाह तआला हर एक को उसके कामों का बदला देगा, बुरों की बुराइयाँ सामने आ जाएँगी। अल्लाह तआला बहुत जल्द सारी मख़्लूक़ के ह़िसाब से फ़ारिग़ हो जाएगा। मुम्किन है कि यह आयत भी मिस्ल आयत (اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُعْرِضُونَ) (21/अम्बिया : 1) के हो यानी लोगों के ह़िसाब का वक़्त क़रीब आ गया लेकिन फिर भी वह ग़फ़्लत के साथ मुँह फेरे हुए ही हैं और मुम्किन है कि यह बन्दे के ह़िसाब के वक़्त का बयान हो यानी बहुत जल्द ह़िसाब हो जाएगा। क्यों कि वह तमाम बातों का जानने वाला है। उस पर एक बात भी छुपी हुई नहीं। जैसे एक वैसी सारी मख़्लूक़ जैसे फ़र्मान है (مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ) (31/लुक़्मान : 28) तुम सबकी पैदाइश और मरने के बाद का ज़िन्दा कर देना मुझ पर ऐसा ही है जैसे एक को मारना और ज़िन्दा करना। यही मअ़नी मुजाहिद (रह़.) के क़ौल के हैं कि ह़िसाब के एह़ात़ा में अल्लाह तआला बहुत जल्दी करने वाला है। हाँ! यह भी हो सकता है कि दोनों मअ़नी मुराद हों यानी वक़्ते ह़िसाब भी क़रीब और अल्लाह को ह़िसाब लेने में देर भी नहीं, इधर शुरू हुआ उधर ख़त्म हुआ, वल्लाहु आलम!

***

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : "यह क़ुरआन तमाम लोगों के लिए ख़बरनामा है कि इसके ज़रिये से वह होशियार कर दिये जाएँ और बख़ूबी मालूम कर लें कि अल्लाह ही अकेला मअ़बूद है और ताकि अ़क़्लमंद सोच (समझ) लें।" (52)

क़ुरआन का लोगों के नाम खुला पैग़ाम (आयत 52) : इर्शाद है कि यह क़ुरआन दुनिया की त़रफ़ अल्लाह का खुला पैग़ाम है। जैसे और आयत में नबी (ﷺ) की ज़ुबानी कहलवाया गया है कि (لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ) (6/अन्आम : 19) यानी ताकि मैं इस क़ुरआन से तुम्हें भी होशियार कर दूँ और जिसे यह पहुँचे यानी कुल इंसान और तमाम जिन्नात। जैसे इस सूरत के शुरू में फ़र्माया है कि इस किताब को हमने ही तेरी त़रफ़ नाज़िल किया है कि तू लोगों को अंधेरों से निकालकर नूर (उजाले) की त़रफ़ लाए, आख़िर तक। इस क़ुरआने करीम की ग़र्ज़ यह है कि लोग होशियार कर दिये जाएँ, डरा दिये जाएँ और इसकी दलीलें ह़ुज्जतें देखकर पढ़ पढ़ाकर तह़क़ीक़ से मालूम कर लें कि अल्लाह तआला अकेला ही है, उसका कोई शरीक नहीं। और अ़क़्लमंद लोग नसीह़त और इ़ब्रत व वअ़ज़ व पंद ह़ासिल कर लें, सोच समझ लें।

अल्ह़म्दु लिल्लाह! सूरह इब्राहीम की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह हिज्र

سوره الحجر

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह हिज्र - 15

आयात: 99, मक्की पैराग्राफ : 5

सूरह हिज्र

ये सूरत मक्की सूरत है। इसमें 99 आयतें और 6 रुकूअ हैं। सूरत का नाम इसकी आयत नम्बर 80 से लिया गया है। जिसमें अहले हिज्र का ज़िक्र है। क़दीम ज़माने में अल्हिज्र के नाम से एक बस्ती वादीए क़ुरा में मदीना से शाम जाने वाली सड़क पर आबाद थी। उस बस्ती में क़ौमे समूद आबाद थी। जिसकी तरफ़ हज़रत सालेह (अलै.) को भेजा गया। ये ज़माना ईसा (अलै.) से 2200 साल पहले का है। समूद लोग पत्थरों को तराश कर घर बनाया करते थे इसलिये क़ुरआन ने उन्हें अस्हाबुल हिज्र कहा है। ये लोग तवील क़ामत, ताक़तवर, जाबिर, ज़ालिम और मुश्रिक थे। अल्लाह तआला ने इस क़ौम की इस्लाह व हिदायत के लिये हज़रत सालेह (अलै.) को भेजा। मगर उन लोगों ने नबी (अलै.) की दावत को रद्द कर दिया। उनका मज़ाक़ उड़ाया और आपसे मोजिज़े का मुतालबा करने लगे। हज़रत सालेह (अलै.) ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह तआला ने एक ऊँटनी की शक्ल में एक मोज़िज़ा बरपा कर दिया। जो पहाड़ के शक़ होने पर उसके अंदर से नमूदार हुई। हज़रत सालेह (अलै.) ने अल्लाह के हुक्म पर एक दिन उस ऊँटनी के पानी पीने की बारी मुक़र्रर की और एक दिन पूरी क़ौम के मवेशियों के लिये पानी पीने की बारी मुक़र्रर की और हज़रत सालेह (अलै.) ने क़ौम को ये भी बता दिया कि अल्लाह की ऊँटनी को किसी क़िस्म का नुक़सान न पहुँचाया जाये वरना अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हो जायेगा। ये बदबख़्त क़ौम मोजिज़ा देखने के बावजूद ईमान न लाई और बहुत जल्द ऊँटनी के पानी पीने की बारी और हर जगह चरने की आज़ादी से बेज़ार हो गई तो उस क़ौम के नौ (9) सरदारों ने फ़ैसला किया कि ऊँटनी का काम तमाम कर दिया जाये। पस एक दिन एक बदबख़्त ने उस ऊँटनी पर हमला कर दिया और उसकी कूचें काट कर उसे हलाक कर दिया। अल्लाह की हुज्जत पूरी हो चुकी थी लिहाज़ा उसे 3 दिन का मौक़ा दिया गया ताकि वो तौबा करके ईमान ले आयें। लेकिन सरकश क़ौम ने तौबा व इस्तिग़फ़ार के बजाय हज़रत सालेह को क़त्ल करने का प्लान बनाया। मगर अल्लाह ने अपने रसूल और उसके मानने वालों को बचा लिया और नाफ़रमान क़ौम पर ज़लज़ले और हौलनाक चीख़ की शक्ल में अज़ाब नाज़िल कर दिया। जिससे ये क़ौम तबाह व बर्बाद हो गई। हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ज़माने तक उस क़ौम के निशानात मौजूद थे। तबूक के मक़ाम पर जाते वक़्त हुज़ूर ने सहाबा किराम को क़ौमे समूद के मक़ाम की निशानीदेही की थी। और वहाँ का पानी इस्तेमाल न करने की हिदायत की और वहाँ से जल्द गुज़रने का हुक्म दिया था।

तफ़्सीर सूरह हिज्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

''शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

الٓرٰ ۟ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ وَقُرۡاٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۝١

तर्जुमा: ''अलिफ़ लाम रा. यह हैं किताबे इलाही की आयतें और खुला और रोशन क़ुरआन।'' (1)

(आयत 1) : सूरतों के अव्वल में जो हुरूफ़े मुक़त्तआत आए हैं उनका बयान गुज़र चुका है। आयत में क़ुरआन की आयतों के वाज़ेह़ और हर शख़्स की समझ में आने के क़ाबिल होने का बयान फ़र्माया है।'

अल्ह़म्दु लिल्लाह! तेरहवाँ पारे की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ۝٢ ذَرۡهُمۡ يَاۡكُلُوۡا وَيَتَمَتَّعُوۡا وَيُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ
فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣ وَمَاۤ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعۡلُوۡمٌ ۝٤ مَا تَسۡبِقُ مِنۡ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ ۝٥

तर्जुमा : ''वह भी वक़्त होगा कि काफ़िर अपने मुसलमान होने की आरज़ू करेंगे। (2) तू इन्हें खाता नफ़ा उठाता और उम्मीदों में मशग़ूल होता छोड़ दे, यह ख़ुद भी जान लेंगे। (3) किसी बस्ती को हमने हलाक नहीं किया मगर कि उसके लिए मुक़र्ररा नविश्ता था। (4) कोई गिरोह अपनी मौत से न आगे बढ़ता है, न पीछे हटता है।'' (5)

क़यामत के दिन काफ़िर मुसलमान होने की आरज़ू करेंगे (आयत 2-5) : काफ़िर अपने कुफ़्र पर अन्क़रीब नादिम व पशेमान होंगे और मुसलमान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने की तमन्ना करेंगे। यह भी मरवी है कि कुफ़्फ़ारे बद्र जब जहन्नम के सामने पेश किये जायेंगे, आरज़ू करेंगे कि काश! कि वह भी दुनिया में मोमिन होते, यह भी है कि हर काफ़िर अपनी मौत को देखकर अपने मुसलमान होने की तमन्ना करता है, इसी त़रह़ क़यामत के दिन भी हर काफ़िर की यही तमन्ना होगी जहन्नम के पास खड़े होकर कहेंगे कि, काश! कि अब

हम वापिस दुनिया में भेज दिए जाएँ तो न तो अल्लाह की आयात को झुठलाएँगे न तर्के ईमान करें जहन्नमी लोग औरों को जहन्नम से निकलते देखकर भी अपने मुसलमान होने की तमन्ना करेंगे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि गुनहगार मुसलमानों को जहन्नम में मुश्रिकों के साथ अल्लाह तआ़ला रोक लेगा तो मुश्रिक उन मुसलमानों से कहेंगे कि जिस अल्लाह की तुम दुनिया में इबादत करते रहे, उसने तुम्हें आज क्या फ़ायदा दिया? इस पर अल्लाह तआ़ला की रह़मत को जोश आएगा और उन मुसलमानों को जहन्नम से निकाल लेगा उस वक़्त काफ़िर तमन्ना करेंगे कि काश! कि वह दुनिया में मुसलमान होते। (त़ब्री : 14/3) एक रिवायत में है कि मुश्रिकों के इस त़अ़ने पर अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा कि जिसके दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी ईमान हो उसे जहन्नम से आज़ाद कर दो, आख़िर तक। त़बरानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "ला इलाहा इल्लल्लाहु" के कहने वालों में से कुछ लोग बसबब अपने गुनाहों के जहन्नम में जाएँगे पस लात व ड़ज़्ज़ा के पुजारी उनसे कहेंगे कि तुम्हारे ला इलाहा इल्लल्लाहु कहने ने तुम्हें क्या फ़ायदा दिया? तुम तो हमारे साथ ही जहन्नम में जल रहे हो, इस पर अल्लाह तआ़ला की रह़मत को जोश आएगा, अल्लाह तआ़ला उन सबको वहाँ से निकाल लेगा और नहरे ह़यात में ग़ोता देकर उन्हें ऐसा कर देगा जैसे चाँद ग्रहण से निकला हो। फिर यह सब जन्नत में जाएँगे वहाँ इन्हें जहन्नमी कहा जाएगा।" ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से यह ह़दीस सुनकर किसी ने कहा, क्या आपने इसे रसूल (ﷺ) की ज़ुबानी सुना है? आपने फ़र्माया, सुनो! मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना है कि "मुझ पर क़सदन झूठ बोलने वाला अपनी जगह जहन्नम में बना ले" बावजूद इसके मैं कहता हूँ कि मैंने यह ह़दीस ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) की ज़ुबानी सुनी है। (मुअ़जमुलऔसत़ : 7289; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मड़ज़्ज़वाइद : 10/382, 383; हैसमी (रह़.) कहते हैं कि इस रिवायत में मज्हूल रावी हैं।) और रिवायत में है कि "मुश्रिक लोग अहले क़िब्ला से कहेंगे कि तुम तो मुसलमान थे फिर तुम्हें इस्लाम ने क्या नफ़ा दिया? तुम तो हमारे साथ जहन्नम में जल रहे हो। वह जवाब देंगे कि हाँ! हमारे गुनाह थे जिनकी वजह से हम पकड़े गए, आख़िर तक। इसमें यह भी है कि उनके छुटकारे के वक़्त कुफ़्फ़ार कहेंगे कि काश! हम मुसलमान होते और इनकी त़रह़ जहन्नम से छुटकारा पाते।" (मज्मड़ज़्ज़वाइद : 7/45; ह़ाकिम : 2/242; इमाम ह़ाकिम (रह़.) ने इसे स़ह़ीह़ कहा है और इमाम ज़हबी (रह़.) ने इसकी मुवाफ़िक़त की है, यह रिवायत अपने शवाहिद के साथ ह़सन है।) फिर ह़ुज़ूर (ﷺ) ने अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम पढ़कर शुरु सूरह से (मुस्लिमीन) तक तिलावत फ़र्माई। यह रिवायत और सनद से है इसमें बिस्मिल्ला-हिर्रह़्मा-निर्रह़ीम का पढ़ना है एवज़ (अऊ़ज़ु) के। और रिवायत में है कि "उन मुसलमान गुनहगारों से मुश्रिकीन कहेंगे कि तुम तो दुनिया में यह ख़्याल करते थे कि तुम ओलिया अल्लाह हो, फिर हमारे साथ यहाँ कैसे? यह सुनकर अल्लाह उनकी सिफ़ारिश की इजाज़त देगा पस फ़रिश्ते और नबी और मोमिन सिफ़ारिश करेंगे और अल्लाह तआ़ला उन्हें जहन्नम से निकालता जाएगा उस वक़्त मुश्रिक लोग कहेंगे, काश! कि वह भी मुसलमान होते तो सिफ़ारिश से मह़रूम न रहते और उनके साथ जहन्नम से छूट जाते।" यही मअ़नी इस आयत के हैं यह लोग जब जन्नत में जाएँगे तो उनके चेहरों पर क़द्रे स्याही होगी इस वजह से उन्हें जहन्नमी कहा जाता होगा फिर यह दुआ करेंगे कि ऐ अल्लाह! यह लक़ब भी हमसे हटा दे पस उन्हें जन्नत की एक नहर में गुस्ल करने का हुक्म होगा और वह नाम भी उनसे दूर कर दिया जाएगा।

(मुअजमुल औसत़ : 8106; वहुव ह़दीसुन ह़सन) इब्ने अबी ह़ातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "कुछ लोगों को आग उनके घुटनों तक पकड़ लेगी और कुछ को ज़ानू तक और कुछ को गर्दन तक जैसे जिनके गुनाह और जैसे जिनके आमाल, कुछ एक महीने की सज़ा भुगतकर निकल आएँगे सबसे लम्बी सज़ा वाला वह होगा जो जहन्नम में इतनी मुद्दत रहेगा जितनी मुद्दत दुनिया की है यानी दुनिया के पहले दिन से दुनिया के आख़िरी दिन तक जब उनके निकालने का इरादा अल्लाह करेगा उस वक़्त यहूदो नस़ारा और दूसरे दीन (धर्म) वाले जहन्नमी उन तौह़ीद वालों से कहेंगे कि तुम अल्लाह पर उसकी किताबों पर उसके रसूलों पर ईमान लाए थे फिर भी आज हम और तुम जहन्नम में यक्साँ हैं पस अल्लाह तआला को सख़्त गुस्सा आएगा कि किसी और बात पर इतना गुस्सा न आया था फिर उन मुवह्ह़िदों (तौह़ीद परस्तों) को जहन्नम से निकालकर जन्नत की नहर के पास लाया जाएगा।" (इब्ने अबी ह़ातिम, व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यह है फ़र्मान (रुबमा यवद्दु) में फिर बत़ौर डाँट के फ़र्माता है कि उन्हें खाते पीते और मज़े करते छोड़ दे, आख़िर तो इनका ठिकाना जहन्नम ही है तुम खा पी लो तुम्हारे मुज्रिम होना साबित हो चुका है इन्हें इनकी दूर दराज़ की ख़्वाहिशें तौबा करने से अल्लाह की त़रफ़ झुकने से ग़ाफ़िल रखेंगी, बहुत जल्द ह़क़ीक़त खुल जाएगी।

हम किसी बस्ती को दलीलें पहुँचाने और उनका मुक़र्ररा वक़्त ख़त्म होने से पहले हलाक नहीं करते, हाँ! जब वक़्ते मुक़र्ररा आ जाता है फिर जल्दी या देरी नामुम्किन है। इसमें अहले मक्का की तम्बीह है कि वह शिर्क से इल्ह़ाद से पैग़म्बर (ﷺ) की मुख़ालिफ़त से बाज़ आ जाएँ वरना मुस्तह़िक़े हलाकत हो जाएँगे और अपने वक़्त पर तबाह हो जाएँगे।

***

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝٦ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۝٨ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝٩

तर्जुमा : "कहने लगे कि ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन नाज़िल किया गया है यक़ीनन तू तो कोई दीवाना है। (6) अगर तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यूँ नहीं लाता? (7) हम फ़रिश्तों को ह़क़ के साथ ही उतारते हैं और उस वक़्त वह मोहलत दिए गए नहीं हो सकते। (8) हमने ही इस क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इसके मुह़ाफ़िज़ हैं।" (9)

काफ़िरों की सरकशी ज़िद्द और तकब्बुर (आयत 6-9) : काफ़िरों का कुफ़्र उनकी सरकशी तकब्बुर और ज़िद्द का बयान हो रहा है कि वह बत़ौरे मज़ाक़ और हंसी के रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहते हैं कि ऐ वह शख़्स! जो इस बात का दावा करता है कि तुझ पर क़ुरआन अल्लाह का कलाम उतर रहा है, हम तो देखते हैं

कि तू सरासर पागल है कि अपनी ताबेदारी की तरफ़ हमें बुला रहा है और हमसे कह रहा है कि हम अपने बाप दादों के दीन को छोड़ दें। अगर सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यूँ नहीं लाता? जो तेरी सच्चाई हमसे बयान करें। फ़िरऔन ने भी यही कहा था (فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 53) इस पर सोने के कंगन क्यूँ नहीं डाले गए? इसके साथ मिलकर फ़रिश्ते क्यूँ नहीं आए? रब की मुलाक़ात के मुंकिरों ने आवाज़ उठाई कि हम पर फ़रिश्ते को देख लेने का जब दिन आ जाएगा उस दिन इन गुनहगारों को कोई ख़ुशी न होगी, यहाँ भी फ़र्मान है कि हम फ़रिश्तों को हक़ के साथ ही उतारते हैं यानी रिसालत या अ़ज़ाब के साथ उस वक़्त फिर काफ़िरों को मोहलत नहीं मिलेगी। इस ज़िक्र यानी क़ुरआन को हमने ही उतारा है और इसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार भी हम ही हैं हमेशा तग़य्युर व तबद्दुल से बचा रहेगा। कुछ कहते हैं कि लहू की ज़मीर का मरजअ नबी (ﷺ) हैं यानी क़ुरआन अल्लाह ही का नाज़िल किया हुआ है और नबी (ﷺ) का हाफ़िज़ वही है। जैसे फ़र्मान है (وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ) (5/माइदा : 67) तुझे लोगों की ईज़ारसानी से अल्लाह महफ़ूज़ रखेगा लेकिन पहला मअ़नी बेहतर है और इबारत की ज़ाहिर रवानी भी इसी को तर्जीह देती है।

***

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ
سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤ لَقَالُوْٓا
اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥

तर्जुमा : "हमने अगली उम्मतों में भी अपने रसूल बराबर भेजे। (10) लेकिन जो रसूल आया उसी का उन्होंने मज़ाक़ बनाया। (11) गुनहगारों के दिलों में हम इसी तरह यही रचा दिया करते हैं। (12) वह उस पर ईमान नहीं लाते और यक़ीनन अगलों का तरीक़ा गुज़रा हुआ है। (13) अगर हम इन पर आसमान का दरवाज़ा खोल भी दें और यह वहाँ चढ़ने भी लग जाएँ। (14) जब भी यही कहेंगे कि हमारी नज़रबंदी कर दी गई है बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया है।"(15)

अम्बिया (عليهم السلام) का मज़ाक़ उड़ाने का नतीजा (आयत 10-15) : अल्लाह तआ़ला अपने नबी को तस्कीन देता है कि जिस तरह लोग आप (ﷺ) को झुठला रहे हैं, उसी तरह आप (ﷺ) से पहले नबियों को भी वह झुठला चुके हैं। हर उम्मत का रसूल झुठलाया गया है और उसका मज़ाक़ बनाया गया है, ज़िद्दी और मुतकब्बिर गिरोह के दिलों में बसबब उनके हद से बढ़े हुए गुनाहों के तक्ज़ीबे रसूल रचा दी जाती है यहाँ मुज्रिमों से मुराद मुश्रिकीन हैं वह हक़ को क़बूल करते ही नहीं, न करें अगलों की आदत उनके सामने है जिस

तरह वह हलाके और बर्बाद हुए और उनके अम्बिया नजात पा गए और ईमान वाले आफ़ियत हासिल कर गए, वही नतीजा यह भी याद रखें दुनिया आख़िरत की भलाई नबी (ﷺ) की मुताबिअत में और दोनों जहाँ की रुस्वाई नबी (ﷺ) की मुख़ालिफ़त में है।

बातिलपरस्ती कुफ़्फ़ार की हद? इनकी सरकशी ज़िद हट ख़ुदबीनी और बातिल परस्ती की तो यह कैफ़ियत है कि बिलफ़र्ज़ अगर उनके लिए आसमान का दरवाज़ा खोल दिया जाए और उन्हें वहाँ चढ़ा दिया जाए तो भी यह हक़ को हक़ कह न देंगे बल्कि उस वक़्त भी हाँक लगाएँगे कि हमारी नज़रबंदी कर दी गई है आँखें बहका दी गई हैं जादू कर दिया गया है निगाह छीन ली गयी है धोखा हो रहा है, बेवक़ूफ़ बनाया जा रहा है।

***

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ
۝١٧ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨ وَالْأَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝١٩ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ
لَّسْتُمْ لَهُ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢٠

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने आसमान में बुर्ज बनाए हैं और देखने वालों के लिए उसे ज़ीनत वाला किया है। (16) और उसे हर मर्दूद शैतान से महफ़ूज़ कर रखा है। (17) हाँ! जो सुनने को चुराना चाहे उसके पीछे खुला शोला लगता है। (18) और ज़मीन को हमने फैला दिया है और उस पर पहाड़ ला रखे हैं और उसमें हमने हर चीज़ बाअंदाज़ा उगा दी है। (19) और उसी में हमने तुम्हारी रोज़ियाँ बना दी हैं और जिन्हें तुम रोज़ी देने वाले नहीं हो।'' (20)

आसमानी बुर्जों से क्या मुराद है? (आयत 16-20) : इस बुलंद आसमान का जो ठहरे रहने वाले और चलने फिरने वाले सितारों से ज़ीनतदार है पैदा करने वाला अल्लाह ही है। जो भी उसे ग़ौरो फ़िक्र से देखे वह अजायबाते क़ुदरत और निशानाते इब्रत अपने लिए बहुत पा सकता है। बुरूज से मुराद यहाँ पर सितारे हैं। जैसे और आयत में है (تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا) (25/फ़ुरक़ान : 61) कुछ का क़ौल है कि मुराद सूरज चाँद की मंज़िलें हैं, अतिया (रह.) कहते हैं वह जगहें जहाँ चोकी पहरे हैं और जहाँ से सरकश शैतानों पर मार पड़ती है कि वह बुलंद व बाला फ़रिश्तों की बातचीत न सुन सकें जो आगे बढ़ता है, शोला उसके जलाने को लपकता है। कभी तो यह नीचे वाले के कान में डाल दे उससे पहले ही उसका काम ख़त्म हो जाता है कभी इसके बरख़िलाफ़ भी होता है। जैसे कि सहीह बुख़ारी की हदीस में सराहतन मरवी है कि ''जब अल्लाह तआला आसमान में किसी

अम्र की बाबत फ़ैसला करता है तो फ़रिश्ते आजिज़ी के साथ अपने पर झुका लेते हैं, जैसे ज़ंजीर पत्थर पर फिर जब उनके दिल मुत्मइन हो जाते हैं तो पूछते हैं कि तुम्हारे रब का क्या इर्शाद हुआ? वह कहते हैं जो भी फ़र्माया, हक़ है और वही बुलंद व बाला और बहुत बड़ा है।'' फ़रिश्तों की बातों को चोरी चोरी सुनने के लिए जिन्नात ऊपर को चढ़ते हैं और इसी तरह एक पर एक होता है। रावियै हदीस हज़रत सफ़्वान (रज़ि.) ने अपने हाथ के इशारे से इस तरह बतलाया कि दाहिने हाथ की उँगलियाँ कुशादा करके एक को एक पर रख लिया, उस सुनने वाले का काम शोला कभी तो उससे पहले ही ख़त्म कर देता है कि वह अपने साथी के कान में कह दे उसी वक़्त जल जाता है और कभी ऐसा भी होता है कि यह उसे और वह अपने से नीचे वाले को और इसी तरह मुसलसल पहुँचा दे और वह बात ज़मीन तक आ जाए और जादूगर या काहिन के कान उसे सुन लें फिर तो वह उसके साथ सौ झूठ मिलाकर लोगों में दोनकी लेता है जब उसकी वह एक बात जो आसमान की बात उसे इत्तिफ़ाक़न पहुँच गई थी, सही निकलती है तो लोगों में उसकी दानिशमंदी के चर्चे होने लगते हैं कि देखो! फ़लाँ ने फ़लाँ दिन यह कहा था बिलकुल सच निकला। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हिज्र, बाब (इल्ला मनिस्तरक़स्सम्आ फ़अत्बअहू शिहबुम्मुबीन) : 4701; तिर्मिज़ी : 3223; इब्ने माजा : 194; इब्ने हिब्बान : 36; मुस्नदे हुमैदी : 1151; अल्ईमान लि इब्ने मंदा : 700) फिर अल्लाह तआला ज़मीन का ज़िक्र फ़र्माता है कि उसी ने इसे पैदा किया फैलाया, इसमें पहाड़ बनाए, जंगल और मैदान क़ायम किये, खेत और बाग़ात उगाये, और तमाम चीज़ें बाअंदाज़ा और बमुनासिबत और बमौज़ूनियत हर हर ज़मीन के हर हर मौसम के हर हर मुल्क के लिहाज़ से बिलकुल ठीक पैदा कीं जो बाज़ार की ज़ीनत और लोगों की ख़ुशगवारी की हैं। ज़मीन में क़िस्म क़िस्म की मईशत (खाने पीने की चीज़ें) उसने पैदा कर दी और उन्हें भी बना दिए जिनके रोज़ी रसाँ तुम नहीं हो यानी चौपाये और जानवर, लौण्डी और ग़ुलाम वग़ैरह। पस क़िस्म क़िस्म की चीज़ें, क़िस्म क़िस्म के अस्बाब, क़िस्म क़िस्म की राहत हर तरह के आराम उसने तुम्हारे लिए मुहय्या कर दिए, कमाई के तरीक़े तुम्हें सिखाए, जानवरों को तुम्हारी मातहत कर दिया कि खाओ भी, सवारियाँ भी करो, लौण्डी ग़ुलाम दिए कि राहत व आराम हासिल करो उनकी रोज़ियाँ भी कुछ तुम्हारे ज़िम्मे नहीं बल्कि उनका राज़िक़ भी अल्लाह तआला आलमे परवरदिगार है। नफ़ा तुम उठाओ रोज़ी वो पहुँचाए, फ़सुब्हानहू मा आज़म शानुहू।

***

وَاِنۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآٮِٕنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۲۱﴾ وَاَرۡسَلۡنَا الرِّيٰحَ
لَوَاقِحَ فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَيۡنٰكُمُوۡهُ‌ۚ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ لَهٗ بِخٰزِنِيۡنَ ﴿۲۲﴾ وَاِنَّا لَـنَحۡنُ نُحۡىٖ
وَنُمِيۡتُ وَنَحۡنُ الۡوٰرِثُوۡنَ ﴿۲۳﴾ وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِيۡنَ مِنۡكُمۡ وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا
الۡمُسۡتَاۡخِرِيۡنَ ﴿۲۴﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحۡشُرُهُمۡ‌ؕ اِنَّهٗ حَكِيۡمٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۵﴾

तर्जुमा : ''जितनी भी चीज़ें हैं सबके ख़ज़ाने हमारे पास हैं हम हर चीज़ को उसके मुक़र्ररा अंदाज़ से उतारते हैं। (21) हम बोझल करने वाली हवाएँ चलाकर फिर आसमान से पानी बरसाकर तुम्हें वह पिलाते हैं तुम कुछ उसके ज़ख़ीरा करने वाले नहीं हो। (22) हम ही ज़िन्दा करते और मारते हैं और हम ही बिल आख़िर वारिस हैं। (23) हममें से आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले भी हमारे इल्म में हैं। (24) तेरा रब सब लोगों को जमा करेगा यक़ीनन वह बड़ी हिक्मतों वाला बड़े इल्म वाला है।'' (25)

हर क़िस्म के ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास हैं (आयत 21-25) : तमाम चीज़ों का तंहा मालिक अल्लाह तआला ही है। हर काम उस पर आसान है, हर क़िस्म की चीज़ों के ख़ज़ाने उसके पास मौजूद हैं, जितना, जब और जहाँ चाहता है, नाज़िल करता है अपनी हिक्मतों का आलिम वही है, बन्दों की मस्लिहतों से भी वाक़िफ़ वही है यह सिर्फ़ उसकी मेहरबानी है वरना कौन है? जो उस पर जबर कर सके। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं हर साल बारिश बराबर ही बरसती है हाँ! तक़सीम अल्लाह के हाथ में है फिर आपने यही आयत तिलावत की। हकम बिन उयेयना से भी यही क़ौल मरवी है कहते हैं कि बारिश के साथ इस क़द्र फ़रिश्ते उतरते हैं जिनकी गिनती कुल इंसानों और जिन्नात से ज़्यादा होती है, एक एक क़तरा का ख़याल रखते हैं कि वह कहाँ बरसा और उससे क्या उगा। बज़्ज़ार में है कि अल्लाह तआला के पास ख़ज़ाने क्या हैं? सिर्फ़ कलाम है जब कहा हो जा हो गया। (इस रिवायत में अग़लब बिन तमीम रावी ज़ईफ़ है। इमाम बुख़ारी (रह.) कहते हैं यह मुंकरुल हदीस है। (अत्तारीख़ुल कबीर : 2/70) लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।) इसका एक रावी क़वी नहीं। हवा चलाकर हम बादलों को पानी से बोझल कर देते हैं, उसमें से पानी बरसने लगता है, यही हवाएँ चलकर दरख़्तों को बारदार कर देती हैं कि पत्ते और कोचलें फूटने लगती हैं, इस वस्फ़ को भी ख़्याल में रखिए कि यहाँ जमा का सेग़ा लाए हैं और रीहे अक़ीमा में वस्फ़ व हदस के साथ किया है ताकि कसरत से नतीजा बरआमद हो, बारआवरी कम अज़्कम दो चीज़ों के बग़ैर नामुम्किन है, हवा चलती है वह आसमान से पानी उठाती है और बादलों को भर देती है एक हवा होती है जो ज़मीन में पैदावार की कुव्वत पैदा करती है एक हवा होती है जो बादलों को इधर उधर से उठाती है एक हवा होती है जो उन्हें जमा करके तह ब तह कर देती है, एक हवा होती है जो उन्हें पानी से बोझल कर देती है एक हवा होती है जो दरख़्तों को फलदार होने के क़ाबिल कर देती है। इब्ने जरीर में बसनदे ज़ईफ़ एक हदीस मरवी है कि ''जुनूबी हवा जन्नती है उसमें लोगों के मुनाफ़े हैं और इसी का ज़िक्र किताबुल्लाह में है।'' (तब्री : 17/88; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन, अल्अज़्मतु : 8014; इसकी सनद में ऐशी बिन मैमून (अल् जरह वत्तअदील : 7/34; अत्तारीखुल कबीर : 7/79) और अबुल मिहज़म (अत्तारीख़ुल कबीर : 8/339) मतरूक रावी हैं।) मुस्नद हुमैदी की हदीस में है कि ''हवाओं के सात साल बाद अल्लाह तआला ने जन्नत में एक हवा पैदा की है जो एक दरवाज़े से रुकी हुई है उसी बंद दरवाज़े से तुम्हें हवा पहुँचती रहती है अगर वह खुल जाए तो ज़मीनो आसमान की तमाम चीज़ें हवा से उलट पलट हो जाएँ अल्लाह तआला के यहाँ उसका नाम उज़ैब है, तुम उसे जुनूबी हवा कहते हो।'' (मुस्नद हुमैदी : 129;

व सनदुहू ज़ईफ़न जिद्दन; मुस्नद बज़्ज़ार : 9/452; इस सनद में यज़ीद बिन अयाज़ बिन जअ़द बिहिल लैसी कज़्ज़ाब रावी है।) फिर फ़र्माता है कि इसके बाद हम तुम पर मीठा पानी बरसाते हैं कि तुम पियो और काम में लो, अगर हम चाहें तो उसे खारा और कड़वा कर दें। जैसे सूरह वाक़िया में बयान फ़र्माया कि जिस मीठे पानी को तुम पिया करते हो उसे बादल से बरसाने वाले भी क्या तुम ही हो? या हम हैं? अगर हम चाहें तो उसे कड़वा कर दें ताज्जुब है कि तुम हमारी शुक्रगुज़ारी नहीं करते। (56/वाक़िया : 68-70) तुम उसके ख़ाज़िन यानी मानेअ़ और हाफ़िज़ नहीं हो हम ही बरसाते हैं हम जहाँ चाहते हैं, पहुँचाते हैं जहाँ चाहते हैं महफ़ूज़ कर देते हैं अगर हम चाहें ज़मीन में धंसा दें यह सिर्फ़ हमारी रहमत है कि उसे बरसाया बचाया मीठा किया सुथरा किया कि तुम पियो अपने जानवरों को पिलाओ, अपनी खेतियाँ और बाग़ात बसाओ, अपनी ज़रूरतें पूरी करो, हम मख़्लूक़ की इब्तिदा (शुरुआत) फिर उसके एआदा (लौटाने) पर क़ादिर हैं, सबको अ़दम से वजूद में लाए सबको फिर मअ़दूम हम करेंगे, फिर क़यामत के दिन सबको उठाएँगे, ज़मीन के और ज़मीन वालों के वारिस हम ही हैं सबके सब हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएँगे, हमारे इल्म की कोई इंतिहा नहीं, अव्वल आख़िर सब हमारे इल्म में है पस आगे वालों से मुराद तो इस ज़माना से पहले के लोग हैं, हज़रत आदम (ﷺ) तक के और पिछलों से मुराद इस ज़माने के और आइन्दा ज़माना के लोग हैं। मरवान बिन हकम से मरवी है कि कुछ लोग बवजह औरतों के पिछली सफ़ों में रहा करते थे पस यह आयत उतरी। (तब्री : 14/26; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इस बारे मे एक ग़रीब हदीस भी वारिद है, इब्ने जरीर में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि एक बहुत ही ख़ुश शक्ल औरत नमाज़ में आया करती थी तो कुछ मुसलमान इस ख़्याल से कि वह निगाह न चढ़े आगे बढ़ जाते थे और कुछ उनके ख़िलाफ़ और पीछे हट आते थे और सज्दे की हालत में अपने हाथों तले से देखते थे पस यह आयत उतरी। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल हिज्र : 3122; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़म्र बिन मालिक नकरी ज़ईफ़ रावी है। नसाई : 871; इब्ने माजा : 1046; मुस्नद तयालिसी : 1212; बैहक़ी : 3/98; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1696; हाकिम : 2/353) लेकिन इस रिवायत में सख़्त नकारत है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में अबुल जौज़ा का क़ौल इस आयत के बारे में मरवी है कि नमाज़ की सफ़ों में आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले यह सिर्फ़ इनका क़ौल है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का इसमें ज़िक्र नहीं, इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं, यही ज़्यादा मुशाबेह है, वल्लाहु आलम!

मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) के सामने औन बिन अ़ब्दुल्लाह जब यह कहते हैं तो आप फ़र्माते हैं, यह मतलब नहीं बल्कि अगलों से मुराद वह हैं जो मर चुके और पिछलों से मुराद अब पैदा होने वाले हैं, तेरा रब सबको जमा करेगा, वह हिक्मत व इल्म वाला है, यह सुनकर हज़रत औन (रह.) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला आपको तौफ़ीक़ और जज़ाए ख़ैर दे।

***

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۲۶﴾ وَالۡجَآنَّ خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ مِنۡ نَّارِ السَّمُوۡمِ ﴿۲۷﴾ وَاِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۲۸﴾ فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿۲۹﴾ فَسَجَدَ الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿۳۰﴾ اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ لَمۡ اَكُنۡ لِّاَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۳۳﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने इंसान को ख़ुश्क (सूखी) मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की थी, पैदा फ़र्माया है। (26) और इससे पहले जिन्नात को हमने लौ वाली आग से पैदा किया। (27) जबकि तेरे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कह दिया कि मैं एक इंसान को ख़मीर की हुई खनखनाती हुई मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ। (28) तो जबकि मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम सब उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। (29) चुनाँचे तमाम फ़रिश्तों ने सबके सब ने सज्दा कर लिया। (30) मगर इब्लीस कि उसने सज्दा करने वालों में शामिल होने से साफ़ इंकार कर दिया। (31) फ़र्माया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। (32) वह बोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस इंसान को सज्दा करूँ जिसे तूने काली और सड़ी हुई खनखनाती हुई मिट्टी से पैदा किया है।'' (33)

इंसान की पैदाइश (आयत 26-33) : (सल्सालिन) से मुराद ख़ुश्क मिट्टी है उसी जैसी आयत (خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ مِن صَلۡصَالٍ كَالۡفَخَّارِ وَخَلَقَ الۡجَآنَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ) (55/रहमान : 14, 15) है यह भी मरवी है कि बू दार मिट्टी को हमा कहते हैं। मस्नून कहते हैं चिकनी को। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं तर मिट्टी। औरों से मरवी है बू दार मिट्टी और गुंधी हुई मिट्टी। इंसान से पहले हमने जिन्नात को जला देने वाली आग से पैदा किया है। सुमूम कहते हें आग की गर्मी को और हरूर कहते हैं दिन की गर्मी को। यह भी कहा गया है कि उस गर्मी की लपटें, उस गर्मी का सत्तरवाँ हिस्सा हैं जिससे जिन पैदा किये गए हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि जिन आग के शोलों से बनाए गए हैं यानी बहुत बेहतर आग से। अम्र बिन दीनार कहते हैं कि सूरज की आग से। सहीह में वारिद है कि फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गए और जिन शोले वाली आग से और आदम उससे जो तुम्हारे सामने बयान कर दिया गया है। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़ुहद, बाब फ़ी अहादीसे मुतफ़र्रिक़ा : 2996; बैहक़ी : 3/9; मुस्नद अहमद : 6/153; मुस्नद इस्हाक़ बिन राहवे : 786; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 1479; शुअबुल ईमान

: 143) इस आयत से मुराद हज़रत आदम (عليه السلام) की फ़ज़ीलत व शराफ़त और उनके उंसुर की पाकीज़गी और तहारत का बयान है।

फ़रिश्तों का आदम (عليه السلام) को सज्दा और इब्लीस का इंकार : अल्लाह तआला बयान फ़र्मा रहा है कि हज़रत आदम (عليه السلام) की पैदाइश से पहले उनकी पैदाइश का ज़िक्र फ़रिश्तों में उसने किया और बाद पैदाइश के उनकी बुज़ुर्गी ज़ाहिर करने के लिए उनके सामने फ़रिश्तों से सज्दा कराया। इस हुक्म को सबने तो मान लिया लेकिन इब्लीस लईन ने इंकार कर दिया और कुफ़्रो हसद इंकार व तकब्बुर फ़ख़्रो गुरूर किया। साफ़ कहा कि मैं आग का बनाया हुआ यह ख़ाक का बनाया हुआ। मैं जो इससे बेहतर हूँ। उसके सामने क्यूँ झुकूँ? भले तूने उसे मुझ पर बुज़ुर्गी दी लेकिन मैं उन्हें गुमराह करके छोड़ूँगा। इब्ने जरीर (रह.) ने यहाँ एक अजीबो ग़रीब असर वारिद किया है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब अल्लाह ने फ़रिश्तों को पैदा किया उनसे फ़र्माया कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हूँ तुम उसे सज्दा करना उन्होंने कहा, हम ऐसा न करेंगे। चुनाँचे उसी वक़्त उनको आग ने जला दिया फिर अपने इंकार पर जमा रहा लेकिन इसका सबूत इनसे नहीं। बज़ाहिर मालूम होता है कि यह इस्राईली रिवायत है, वल्लाहु आलम!

***

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ
فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ
﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا
عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ
لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''फ़र्माया अब तू बहिश्त (जन्नत) से निकल जा क्योंकि तू राँदा दरगाह है। (34) तुझ पर मेरी फटकार है क़यामत के दिन तक। (35) कहने लगा कि ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक की ढील दे कि लोग दोबारा उठाकर खड़े किए जाएँ। (36) फ़र्माया कि अच्छा तू उनमें है जिन्हें मोहलत मिली है। (37) रोज़े मुक़र्रर के वक़्त तक की। (38) कहने लगा कि ऐ मेरे रब! चूँकि तूने मुझे गुमराह किया है मुझे भी क़सम है कि मैं भी ज़मीन में उनके लिए मुज़य्यन करूँगा और

उन सबको भी बहकाऊँगा। (39) सिवाए तेरे उन बन्दों के जो मुंतख़ब कर लिए गए हैं।(40) इर्शाद हुआ कि हाँ! यही मुझ तक पहुँचने की सीधी राह है। (41) मेरे बन्दों पर तुझे कोई ग़ल्बा नहीं लेकिन हाँ जो गुमराह लोग तेरी पैरवी करें। (42) यक़ीनन उन सबके वादे की जगह जहन्नम है। (43) जिसके सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े के लिए उनका एक हिस्सा बटा हुआ है।'' (44)

इब्लीस राँदा दरगाह है (आयत 34-44) : फिर अल्लाह तआला ने अपनी हुकूमत का अम्र किया जो न टले न टाला जा सके कि तू इस बेहतरीन और आला जमाअत से दूर हो जा, तू फटकारा हुआ है क़यामत तक तुझ पर अब्दी और दवामी लानत बरसा करेगी। कहते हैं कि उसी वक़्त उसकी सूरत बदल गई और उसने नोहा ख़्वानी शुरू की। दुनिया में तमाम नोहे उसी इब्तिदा से हैं मर्दूद मतरूद होकर फिर हसद की आग में जलता हुआ आरज़ू करता है कि क़यामत तक की उसे ढील दी जाए। उसी को यौमुल बअ़स कहा गया है पस उसकी यह दरख़्वास्त मंज़ूर की गई और मोहलत मिल गई।

इब्लीस का नापाक अहद : इब्लीस की सरकशी बयान हो रही है कि उसने अल्लाह तआला के गुमराह करने की क़सम खाकर कहा। यह भी हो सकता है कि उसने कहा कि चूँकि तूने मुझे गुमराह किया मैं भी औलादे आदम के लिए ज़मीन में तेरी नाफ़र्मानियों को ख़ूब ज़ीनतदार करके दिखाऊँगा और उन्हें रग़्बत दिला दिलाकर नाफ़र्मानियों में मुब्तला करूँगा जहाँ तक हो सकेगा कोशिश करूँगा कि सबको ही बहका दूँ लेकिन हाँ! तेरे मुख़्लिस बन्दे मेरे हाथ नहीं आ सकते और आयत में भी है कि भले तूने उसे मुझ पर बरतरी दी है लेकिन अब मैं भी उसकी औलाद के पीछे पड़ जाऊँगा। चाहे कुछ थोड़े से छूट जाएँ बाक़ी सबको ही ले डूबूँगा। (17/इस्रा : 62) इस पर जवाब मिला कि तुम सबका लौटना तो मेरी ही तरफ़ है आमाल का बदला मैं ज़रूर दूँगा। नेक को नेक बद को बद। जैसे फ़र्मान है कि तेरा रब ताक में है। (89/फ़ज्र : 14) ग़र्ज़ लौटना और लौटने का रास्ता अल्लाह ही की तरफ़ है (अलय्य) की एक क़िरअत (अलिय्युन) भी है जैसे आयत (وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 4) में है यानी बुलंद लेकिन पहली क़िरअत मशहूर है। जिन बन्दों को मैंने हिदायत पर लगा दिया है उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, हाँ! तेरा ज़ोर तेरे ताबेदारों पर है यह इस्तिस्ना मुंक़तअ है। इब्ने जरीर में है कि बस्तियों से बाहर नबियों की मस्जिदें होती थीं जब वह अपने रब से कोई ख़ास बात मालूम करना चाहते तो वहाँ जाकर जो नमाज़ मुक़द्दर में होती अदा करके सवाल करते एक दिन एक नबी के और उसके क़िब्ले के बीच शैतान बैठा उस नबी ने तीन बार कहा (अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम) शैतान ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! आख़िर आप मेरे दावों से कैसे बच जाते हैं? नबी ने कहा कि तू बता कि तू बनी आदम पर किस दाव से ग़ालिब आ जाता है? आख़िर मुआहिदा हुआ कि हर एक सहीह चीज़ दूसरे को बता दे तो अल्लाह के नबी! कहा सुन अल्लाह का फ़र्मान है कि मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा कोई असर नहीं, सिर्फ़ उन पर है जो ख़ुद गुमराह हो और तेरी मातहती करें। उस अल्लाह के दुश्मन ने कहा, यह आपने क्या फ़र्माया, उसे तो मैं आपकी पैदाइश से भी पहले जानता हूँ, नबी ने कहा और सुन! अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि जब शैतानी हरकत हो तो अल्लाह से पनाह तलब कर, वह सुनने वाला जानने वाला है। (7/आराफ़ : 200) वल्लाह! तेरी आहट पाते ही मैं अल्लाह से पनाह चाहने लगता हूँ उसने कहा, सच है उसी से आप मेरे फंदे में नहीं फंसते। अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, अब तू बता कि इब्ने आदम पर कैसे ग़ालिब आ जाता है उसने कहा कि मैं उसे गुस्से

और ख़्वाहिश के वक़्त दबोच लेता हूँ फिर फ़र्माता है कि जो कोई भी इब्लीस की पैरवी करे वह जहन्नमी है यही फ़र्मान क़ुरआन से कुफ़्र करने वालों की निस्बत है। फिर इर्शाद हुआ कि जहन्नम के कई एक दरवाज़े हैं हर दरवाज़े से जाने वाला इब्लीसी गिरोह मुक़र्रर है अपने अपने आमाल के मुताबिक़ उनके लिए दरवाज़े बँटे हुए हैं, हज़रत अली (रज़ि.) ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़र्माया, जहन्नम के दरवाज़े इस तरह हैं यानी एक पर एक और वह सात हैं एक के बाद एक करके सातों दरवाज़े पुर हो जाएँगे। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं सात तब्क़े हैं। इब्ने जरीर सात दरवाज़ों के नाम यह बतलाते हैं, जहन्नम, लज़्ज़ा, हुतमा, सईर, सक़र, जहीम, हाविया।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी इसी तरह मरवी है क़तादा कहते हैं यह बाऐतिबार आमाल उनकी मंज़िलें हैं। ज़हहाक (रह.) कहते हैं मस्लन एक दरवाज़ा यहूद का, एक नसारा का, एक साबियों का, एक मजूसियों का, एक मुश्रिकों काफ़िरों का, एक मुनाफ़िक़ों का, एक अहले तौहीद का लेकिन तौहीद वालों को नजात की उम्मीद है, बाक़ी सब नाउम्मीद हो गए हैं। तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जहन्नम के सात दरवाज़े हैं जिनमें से एक उनके लिए है जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाए।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हिज्र : 3123; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; जुनैद की इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत मुर्सल है कमा क़ाल अबू हातिम तहज़ीबुल कमाल : 5/155) इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि ''कुछ दोज़ख़ियों के टख़्नों तक आग होगी कुछ की कमर तक कुछ की गर्दनों तक, ग़र्ज़ गुनाहों की मिक़्दार पर।'' (यह रिवायत शैबान अन क़तादा के तरीक़ से बिदूनि आयत सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब जहन्नमु अआज़नल्लाहु मिन्हा : 2845; में मौजूद है। इब्ने अबी शैबा : 34179; मुस्नद अहमद : 5/10; मुअजमुल कबीर : 6969; शुअबुल ईमान : 317; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5609)

***

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَٰمٍ ءَامِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَٰنًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : ''परहेज़गार लोग जन्नती बाग़ों और चश्मों में होंगे। (45) सलामती और अमन के साथ यहाँ आ जाओ। (46) उनके दिलों में जो कुछ रंजिश व कीना था हम सबकुछ निकाल देंगे, भाई भाई बने हुए एक दूसरे के आमने सामने शाही तख़्तों पर बैठे होंगे। (47) न तो वहाँ उन्हें कोई तक्लीफ़ छू सकती है और न वह वहाँ से कभी निकाल दिए जाएँ। (48) मेरे बन्दों को ख़बर दे कि मैं बहुत ही बख़्शने वाला और बड़ा ही मेहरबान हूँ। (49) और साथ ही मेरे अज़ाब भी निहायत दर्द दुख वाले हैं।'' (50)

जन्नत में उख़ुव्वते इस्लामी (इस्लामी भाईचारगी) का एक मंज़र (आयत 45-50) : जहन्नम वालों का ज़िक्र करके अब जन्नतियों का ज़िक्र हो रहा है कि वह बाग़ात और नहरों और चश्मों में होंगे। उनको बशारत सुनाई जाएगी कि अब तुम हर आफ़त से बच गए हर डर ख़ौफ़ और घबराहट से मुत्मइन हो गए, न नेअमतों के ज़वाल का डर न यहाँ से निकाले जाने का ख़तरा न फ़ना न कमी। अहले जन्नत के दिलों में भले दुनियावी रंजिशें बाक़ी रह गई हों मगर जन्नत में जाते ही एक दूसरे से मिलकर तमाम कीने कपट काविशें धुल जाएँगी। अबू उमामा बाहिली (रज़ि.) फ़र्माते हैं जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही सीने बे कीना हो जाएँगे। चुनाँचे मरफ़ूअ हदीस में भी है कि रसूल (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मोमिन जहन्नम से नजात पाकर जन्नत दोज़ख़ के दरम्यान के पुल पर रोक लिए जाएंगे जो नाचाक़ियाँ और ज़ुल्म आपस में थे उनका अदला बदला हो जाएगा और पाक दिल साफ़ सीना होकर जन्नत में जाएँगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्क़िसासु यौमल क़ियामा : 6535, 2440; तअलीक़न; मुस्नद अहमद : 3/13; हाकिम : 2/354; मुस्नद अबी यअला : 1186; तब्री : 14/37; अल्अदबुल मुफ़रद : 486; अल्ईमानु लि इब्ने मंदा : 838; अस्सुन्नत लि इब्ने अबी आसिम : 857) अश्तर ने हज़रत अली (रज़ि.) के पास जाने की इजाज़त मांगी उस वक़्त आपके पास हज़रत तलहा (रज़ि.) के साहबज़ादे बैठे थे, तो आपने कुछ देर के बाद उसे अंदर बुलाया उसने कहा कि शायद उनकी वजह से मुझे आपने देर में इजाज़त दी? आपने फ़र्माया, सच है। कहा फिर तो अगर आपके पास हज़रत उस्मान (रज़ि.) के साहबज़ादे हों तो भी आप मुझे इसी तरह रोक दें? आपने फ़र्माया, बेशक मुझे तो अल्लाह तआला से उम्मीद है कि मैं और उस्मान उन लोगों में से होंगे जिनकी शान में यह है कि उनके दिलों में जो कुछ ख़फ़गी थी हमने दूर कर दी भाई-भाई होकर आमने सामने तख़्त शाही पर जलवा फ़र्मा हैं। एक और रिवायत में है कि इमरान बिन तलहा हज़रत अली (रज़ि.) के अस्हाबे जमल से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत अली (रज़ि.) के पास आए, आपने उन्हें मरहबा कहा और फ़र्माया कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि मैं और तुम्हारे वालिद उनमें से हैं जिनके दिलों के गुस्से अल्लाह तआला दूर करके भाई भाई बनाकर जन्नत के तख़्तों पर आमने सामने बिठाएगा एक और रिवायत में है कि यह सुनकर फ़र्श के कोने पर बैठे हुए दो शख़्सों ने कहा कि अल्लाह का अदल उससे बढ़ा हुआ है कि जिन्हें आप कल क़त्ल करें उनके भाई बन जाएँ? आपने गुस्से से फ़र्माया, अगर इस आयत से मुराद मेरे और तलहा (रज़ि.) जैसे लोग नहीं तो और कौन होंगे। और रिवायत में है कि क़बीला हम्दान के एक शख़्स ने यह कहा था और हज़रत अली (रज़ि.) ने इस धमकी और बुलंद आवाज़ से यह जवाब दिया था कि महल हिल गया। (हाकिम : 2/353, 354; इसे सही कहा है और इमाम ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है व सनदुहू हसन) और रिवायत में है कि कहने वाले का नाम हारिस अअवर था और उसकी इस बात पर आपने गुस्सा होकर जो चीज़ आपके हाथ में थी वह उसके सर पर मारकर फ़र्माया था। इब्ने जुर्मूज़ जो हज़रत ज़ुबेर (रज़ि.) का क़ातिल था जब दरबारे अली में आया तो आपने बड़ी देर बाद उसे दाख़िले की इजाज़त दी। उसने आकर हज़रत ज़ुबेर (रज़ि.) और उनके साथियों को बलवाई कहकर बुराई से याद किया तो आपने फ़र्माया, तेरे मुँह में मिट्टी। मैं और तलहा और ज़ुबेर (रज़ि.) तो इंशाअल्लाह! उन लोगों में से हैं जिनकी बाबत अल्लाह का यह फ़र्मान है। हज़रत अली (रज़ि.) क़सम खाकर फ़र्माते हैं कि हम बद्रियों की बाबत यह आयत नाज़िल हुई है कसीरुन्नवा कहते हैं मैं अबू जाफ़र बिन अली के पास गया और कहा कि मेरे दोस्त

आपके दोस्त हैं और मुझसे मुसालिहत रखने वाले आपसे मुसालिहत रखने वाले हैं मेरे दुश्मन आपके दुश्मन हैं और मुझसे लड़ाई रखने वाले आपसे लड़ाई रखने वाले हैं। वल्लाह! मैं अबूबक्र और उमर (रज़ि.) से बरी हूँ, उस वक़्त हज़रत जाफ़र (रह.) ने फ़र्माया, अगर मैं ऐसा करूँ तो यक़ीनन मुझसे बढ़कर गुमराह कोई नहीं, नामुम्किन कि मैं उस वक़्त हिदायत पर क़ायम रह सकूँ, उन दोनों बुज़ुर्गों (यानी अबूबक्र और उमर रज़ि.) से तो ऐ कसीर! मुहब्बत रख अगर इसमें तुझे गुनाह हो तो मेरी गर्दन पर फिर आपने इसी आयत के आख़िरी हिस्से की तिलावत की और फ़र्माया कि यह उन दस शख़्सों के बारे में है अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली, तलहा, ज़ुबेर, अब्दुर्रहमान बिन ओफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ेद, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हुम)। यह आमने सामने होंगे ताकि किसी की तरफ़ किसी की पीठ न रहे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) के एक मज्मओ में आकर इसे तिलावत करके फ़र्माया कि "यह एक दूसरे को देख रहे होंगे। (इस रिवायत की सनद में सईद बिन शुरहबील और इब्राहीम क़ुरशी मज्हूल रावी हैं। (अल्जरह वत्तअदील : 2/150) वहाँ उन्हें कोई मशक़्क़त तक्लीफ़ और ईज़ा न होगी।" बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुझे अल्लाह का हुक्म हुआ है कि मैं हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को जन्नत के सोने के महल की ख़ुशख़बरी सुना दूँ जिसमें न शोर गुल है न तक्लीफ़ व मुसीबत। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब तज़्वीजुन्नबी (ﷺ) व फ़ज़्लुहा : 3816, 3820; सहीह मुस्लिम : 2432, 2435; बैहक़ी : 7/307; तिर्मिज़ी : 3876; हाकिम : 3/203; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/223; सुननुल कु[illegible] लिन्नसाई : 8385; इब्ने अबी शैबा : 32287; मुअजमुल औसत : 2221; मुअजमुस्सग़ीर : 19; मुस्नद अबी यअला : 6797) यह जन्नती जन्नत से कभी निकाले न जाएँगे।" हदीस में है उनसे फ़र्माया जाएगा कि "ऐ जन्नतियों! तुम हमेशा तंदुरुस्त रहोगे कभी बीमार न पड़ोगे और हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी न मरोगे, और हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होओगे और हमेशा यहीं रहोगे, कभी निकाले न जाओगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी दवामि नईमे अहलिल जन्ना : 2837; तिर्मिज़ी : 3246; मुस्नद अहमद : 3/38; मुअजमुस्सग़ीर : 212; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5761; लेकिन बुख़ारी और तिर्मिज़ी में व इन्ना लकुम तुक़ीमू फ़ला तत‌अनौ अब्दन के अल्फ़ाज़ नहीं हैं।) और आयत में है कि वह तब्दीली मकान की ख़्वाहिश ही न करेंगे, न उनकी जगह उनसे छीनेगी। ऐ नबी (ﷺ)! आप मेरे बन्दों से कह दीजिए कि मैं अरहमुर्राहिमीन हूँ और मेरे अज़ाब भी निहायत सख़्त हैं। इसी जैसी आयत और भी गुज़र चुकी है। इससे मुराद यह है कि मोमिन को उम्मीद के साथ डर भी रखना चाहिए। हुज़ूर (ﷺ) अपने सहाबा (रज़ि.) के पास आते हैं और उन्हें हँसता हुआ देखकर फ़र्माते हैं, "जन्नत दोज़ख़ की याद करो।" उस वक़्त यह आयतें उतरीं। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है जबकि हैसमी ने मज्मउज़्ज़वाइद : 7/46; में मोसूलन ज़िक्र करके कहा है कि इसकी सनद में मूसा बिन उबेदा ज़ईफ़ रावी है। और इसके अलावा मुस्अब बिन साबित भी मजरूह रावी है। (अल्जरह वत्तअदील : 8/304) यह मुर्सल हदीस इब्ने अबी हातिम में है। आप (ﷺ) बनू शैबा के दरवाज़े से सहाबा (रज़ि.) के पास आकर कहते हैं "मैं तो तुम्हें हँसते हुए देख रहाँ हूँ।" यह कहकर वापिस मुड़ गए और हतीम के पास से ही उल्टे पैर फिर हमारे पास आये और फ़र्माया कि "अभी मैं जा ही रहा था जो हज़रत जिब्रील (عليه السلام) आए और फ़र्माया कि जनाब बारी तआला इर्शाद फ़र्माता है कि तू मेरे बन्दों को नाउम्मीद कर रहा है? उन्हें मेरे ग़फ़ूरुर्रहीम

होने की और मेरे अज़ाबों के अलमनाक होने की ख़बर दे।'' (तब्री : 14/39; इसकी सनद में मुस्अब बिन साबित जो इब्ने मुईन, अहमद और अबू ज़रआ के नज़दीक ज़ईफ़ है। (अल्जरह वत्तअदील : 8/304) और हदीस में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अगर बन्दे अल्लाह तआला की माफ़ी को मालूम कर लें तो हराम से बचना छोड़ दें और अगर अल्लाह तआला के अज़ाबों को मालूम कर लें तो अपने आपको हलाक कर डालें।'' (तब्री : 14/39; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

***

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۗ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ
﴿٥٢﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰى أَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ
فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ
مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ إِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : ''इन्हें इब्राहीम (عليه السلام) के मेहमानों का भी हाल सुना दे। (51) कि जब उन्होंने उसके पास आकर सलाम कहा, तो उसने कहा कि हमको तो तुमसे डर लगता है। (52) उन्होंने कहा, डर नहीं! हम तुझे एक होशियार दाना फ़रज़न्द की बशारत देते हैं। (53) कहा, क्या इस बुढ़ापे के दबोच लेने के बाद तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो? यह ख़ुशख़बरी तुम कैसे दे रहे हो। (54) उन्होंने कहा, बिलकुल सच्ची, तुझे लायक़ नहीं कि नाउम्मीद लोगों में शामिल हो जाए। (55) कहा, अपने रब की रहमत से नाउम्मीद तो सिर्फ़ गुमराह और बहके हुए लोग ही होते हैं।'' (56)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को इस्हाक़ (عليه السلام) की बशारत (आयत 51-56) : लफ़्ज़ (ज़ैफ़) वाहिद (एकवचन) और जमा (बहुवचन) दोनों पर बोला जाता है जैसे ज़ूर और सफ़र यह फ़रिश्ते थे जो बसूरते इंसान सलाम करके हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) के पास आए थे। आपने बछड़ा काटकर उसका गोश्त भुनकर उन मेहमानों के सामने ला रखा जब देखा कि वह हाथ नहीं डालते, तो डर गए और कहा कि हमें तो आपसे डर लगता है। फ़रिश्तों ने इत्मिनान दिलाया कि डरो नहीं, फिर हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के पैदा होने की ख़ुशख़बरी सुनाई जैसे कि सूरह हूद में है तो आपने अपने और अपनी बीवी साहिबा के बुढ़ापे को सामने रखकर अपना ताज्जुब दूर करने और वादे को साबित करने के लिए पूछा कि क्या इस हालत में हमारे यहाँ बच्चा होगा? फ़रिश्तों ने दोबारा ज़ोरदार अल्फ़ाज़ में वादे को दोहराया और नाउम्मीदी से दूर रहने की तालीम की तो आपने अपने अक़ीदे का इज़्हार कर दिया कि मैं मायूस नहीं हूँ, ईमान रखता हूँ कि मेरा रब इससे भी बड़ी बातों पर क़ुदरते कामिला रखता है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ اٰلَ
لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاۗءَ اٰلَ
لُوْطِ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ
اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ
الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَاۗءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : ''पूछा कि ऐ अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्तों ! तुम्हारा ऐसा क्या अहम काम है? (57) उन्होंने जवाब दिया कि हम गुनहगार लोगों की तरफ़ भेजे गए हैं। (58) मगर ख़ानदाने लूत (عليه السلام) कि हम उन सबको तो ज़रूर बचा लेंगे। (59) सिवाए लूत (عليه السلام) की बीवी के कि हमने उसे रुकने और बाक़ी रह जाने वालों में मुक़र्रर कर दिया है। (60) जब भेजे हुए फ़रिश्ते आले लूत के पास पहुँचे। (61) तो लूत (عليه السلام) ने कहा कि तुम लोग तो कुछ अजनबी से मालूम हो रहे हो। (62) उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि हम तेरे पास वह चीज़ लाए हैं जिसमें यह लोग शक व शुब्हा कर रहे थे। (63) हम तो तेरे पास स़रीह हक़ लाए हैं और हैं भी बिलकुल सच्चे। (64) अब तू अपने ख़ानदान समेत इस रात के किसी हिस्से में चल दे तो आप उनके पीछे रहना और ख़बरदार! तुममें से कोई मुड़कर भी न देखे और जहाँ का तुम्हें हुक्म किया जा रहा है वहाँ चले जाओ। (65) और हमने उसकी तरफ़ इस बात का फ़ैसला कर दिया कि सुबह होते होते उन लोगों की जड़ें काट दी जाएँगी।'' (66)

क़ौमे लूत (عليه السلام) पर अज़ाबे इलाही का नुज़ूल (आयत 57-66) : हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का जब डर ख़ौफ़ जाता रहा बल्कि बशारत भी दी गई तो अब फ़रिश्तों से उनके आने की वजह पूछी, उन्होंने बतलाया कि लूतियों की बस्तियाँ उलटने के लिए हम आए हैं मगर हज़रत लूत (عليه السلام) की अहलो अयाल नजात पा लेगी। हाँ! उस आल में उनकी बीवी बच नहीं सकती वह क़ौम के साथ रह जाएगी और हलाकत में उनके साथ ही हलाक होगी।

यह फ़रिश्ते नौजवान हसीन लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत (عليه السلام) के पास गए तो हज़रत लूत

(ﷺ) ने कहा, तुम बिलकुल नाशनास (अजनबी) और अंजान लोग हो। तो फ़रिश्तों ने राज़ खोल दिया कि हम अल्लाह का अ़ज़ाब लेकर आए हैं। जिसे आपकी क़ौम नहीं मानती थी और जिसके आने में शक व शुब्हा कर रही थी। हम हक़ बात और क़तई हुक्म लेकर आए हैं और फ़रिश्ते हक़्क़ानियत के साथ ही नाज़िल हुआ करते हैं। और हम हैं भी सच्चे जो ख़बर आपको दे रहे हैं वह पूरी होकर रहेगी कि आप नजात पाएँ और आपकी यह काफ़िर क़ौम हलाक हो।

हज़रत लूत (ﷺ) से फ़रिश्ते कह रहे हैं कि रात का कुछ हिस्सा गुज़रते ही आप अपने वालों को लेकर यहाँ से चले जाएँ ख़ुद आप उन सबके पीछे रहें ताकि उनकी अच्छी तरह निगहबानी कर सकें, यह सुन्नत रसूलुल्लाह (ﷺ) की थी कि आप लश्कर के आख़िर में चला करते थे ताकि कमज़ोर और गिरे पड़े लोगों का ख़याल रख सकें फिर फ़र्मा दिया कि जब क़ौम पर अ़ज़ाब आए और उनका शोरगुल सुनाई दे तो हर्गिज़ उनकी तरफ़ नज़र न उठाना, उन्हें उसी अ़ज़ाब व सज़ा में छोड़कर तुम्हें जाने का हुक्म है। चले जाओ गोया उनके साथ कोई था जो उन्हें रास्ता दिखाता जाए हमने पहले ही से (हज़रत) लूत (ﷺ) से फ़र्मा दिया था कि सुबह के वक़्त ये लोग मिटा दिये जाएँगे जैसे दूसरी आयत में है कि उनके अ़ज़ाब का वक़्त सुबह है जो बहुत ही क़रीब है। (11/हूद : 81)

***

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِىْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىْٓ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِىْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾
فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : "शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आए। (67) (लूत ﷺ ने) कहा यह लोग मेरे मेहमान हैं तुम मुझे रुस्वा न करो। (68) अल्लाह से डरो और मेरी आबरूरेज़ी न करो। (69) वह बोले, क्या हमने तुझे दुनिया के अजनबी लोगों की हिमायत से मना नहीं कर रखा है? (70) (लूत ﷺ ने) कहा, अगर तुम्हें करना ही है तो यह मेरी बच्चियाँ मौजूद हैं। (71) तेरी उम्र की क़सम! वह तो अपनी बदमस्ती में सरगर्दां थे। (72) पस सूरज निकलते निकलते उन्हें एक बड़े ज़ोर की आवाज़ ने पकड़ लिया। (73) आख़िरकार हमने उस शहर को ऊपर तले कर दिया और उन

लोगों पर कंकर वाले पत्थर बरसाये। (74) हर एक इब्रत हासिल करने वाले के लिए तो इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं। (75) यह बस्ती ऐसी राह पर है जो बराबर चलती रहती है। (76) और इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है।" (77)

क़ौमे लूत की ग़ैरअख़्लाक़ी और ग़ैर फ़ित्री हालत (आयत 67-77) : क़ौमे लूत (عليه السلام) को जब मालूम हुआ कि हज़रत लूत (عليه السلام) के घर नौजवान ख़ूबसूरत मेहमान आए हैं तो वह अपने बुरे इरादे से ख़ुशियाँ मनाते हुए चढ़ दौड़े। पैग़म्बरे इलाही ने उन्हें समझाना शुरू किया कि अल्लाह से डरो, मेहमानों में मुझे रुस्वा न करो, उस वक़्त ख़ुद हज़रत लूत (عليه السلام) को यह मालूम न था कि यह फ़रिश्ते हैं। जैसे कि सूरह हूद में है यहाँ भले इसका ज़िक्र बाद में है और फ़रिश्तों का ज़ाहिर हो जाना पहले ज़िक्र हुआ है लेकिन इससे तर्तीब मक़्सूद नहीं। वाव तर्तीब के लिए होता भी नहीं और ख़ुसूसन ऐसी जगह जहाँ उसके ख़िलाफ़ दलील मौजूद हो। आप उनसे कहते हैं कि मेरी आबरूरेज़ी के दर पे न हो जाओ लेकिन वह जवाब देते हैं कि जब आपको यह ख़्याल था तो इन्हें आपने अपना मेहमान क्यूँ बनाया? हम तो आपको इससे मना कर चुके हैं तब आपने उन्हें और ज़्यादा समझाते हुए फ़र्माया कि तुम्हारी औरतें जो मेरी लड़कियाँ हैं वह ख़्वाहिश पूरी करने की चीज़ें हैं न कि यह। इसका पूरा बयान निहायत वज़ाहत के साथ हम पहले कर चुके हैं इसलिए दोहराने की कोई ज़रूरत नहीं, चूँकि यह बुरे लोग अपनी ख़र्मस्ती में थे और जो क़ज़ा और अज़ाबे इलाही इनके सरों पर झूम रहा था, उससे ग़ाफ़िल थे इसलिए अल्लाह तआला अपने नबी (عليه السلام) की उम्र की क़सम खाकर उनकी यह हालत बयान कर रहा है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला ने अपनी जितनी मख़्लूक़ पैदा की है उनमें हुज़ूर (ﷺ) से ज़्यादा बुज़ुर्ग कोई नहीं, अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) की हयात के सिवा किसी की हयात की क़सम नहीं खाई। (सक्रत) से मुराद ज़लालत व गुमराही है, उसी में वह खेल रहे थे और तरद्दुद में थे।

क़ौमे लूत (عليه السلام) की तबाही का ज़िक्र : सूरज निकलने के वक़्त आसमान से एक दिल दहलाने वाली और जिगर पाश पाश कर देने वाली चिंघाड़ की आवाज़ आई और साथ ही उनकी बस्तियाँ ऊपर को उठीं, आसमान के क़रीब पहुँच गईं और वहाँ से उलट दी गईं, ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का ऊपर हो गया, साथ ही उन पर आसमान से पत्थर बरसे ऐसे जैसे पकी मिट्टी के कंकर आलूद पत्थर हों। सूरह हूद में इसका मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) बयान गुज़र चुका है जो भी बसीरत व बसारत से काम ले देखे सुने सोचे समझे उसके लिए तो इन बस्तियों की बर्बादी में बड़ी बड़ी निशानियाँ मौजूद हैं ऐसे पाकबाज़ लोग ज़रा ज़रा सी चीज़ों से इब्रत व नसीहत हासिल करते हैं पंद पकड़ते हैं और ग़ौर से इन वाक़ियात को देखते हैं और आलमे हक़ीक़त तक पहुँच जाते हैं ताम्मुल और ग़ौरो ख़ोज़ करके अपनी हालत सँवार लेते हैं। तिर्मिज़ी वग़ैरह में हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मोमिन की अक़्लमंदी और दूरबीनी का लिहाज़ रखो। वह अल्लाह के नूर के साथ देखता है।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हिज्र : 3127; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह रिवायत अतिया बिन सईद औफ़ी के ज़ुअफ़ व तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।) फिर आपने यही आयत तिलावत की और हदीस में है कि "वह अल्लाह के नूर और अल्लाह की तौफ़ीक़ से देखता है।" (तब्री : 17/122; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; अल्अम्साल : 128; हिल्यतुल औलिया : 6/118; अल्मौज़ूआत : 3/143; इस रिवायत में

सुलेमान बिन सलमा है इब्ने जुनेद ने मतरूक और इब्ने अदी ने इसकी ख़बर को मुंकर कहा है। (अल्मीज़ान : 3/297) और ह़दीस में है कि "अल्लाह के बन्दे लोगों को उनके निशानात से पहचान लेते हैं।" (त़ब्री : 17/121; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/268; मुअ़जमुल औसत़ : 2956; मुस्नदे शिहाब : 1005) यह बस्ती शारेअ़ आ़म पर मौजूद है जिस पर ज़ाहिरी और बात़िनी अ़ज़ाब आया उलट गयी। पत्थर खाए अ़ज़ाब का निशाना बनी अब एक गंदी और बदमज़ा खाई की झील सी बनी हुई है तुम रात दिन वहाँ से आते जाते हो, ताज्जुब है कि फिर भी अ़क्लमंदी से काम नहीं लेते। ग़र्ज़ साफ़ वाज़ेह़ और आमद व रफ़्त के रास्ते पर यह उल्टी हुई बस्ती मौजूद है। यह भी मअ़नी किये हैं कि वह किताबे मुबीन में है लेकिन यह मअ़नी कुछ ज़्यादा बंद नहीं बैठते, वल्लाहु आ़लम! अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने वालों के लिए यह एक खुली दलील और जारी निशानी है कि किस तरह़ अल्लाह अपने मानने वालों को नजात देता है और अपने दुश्मनों को ग़ारत करता है।

***

وَإِنْ كَانَ أَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

तर्जुमा : "ऐका बस्ती के रहने वाले भी बड़े ज़ालिम थे। (78) जिनसे आख़िर हमने इंतिक़ाम ले ही लिया, यह दोनों शहर खुले आ़म रास्ते पर हैं। (79) हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। (80) जिन्हें हमने अपनी निशानियाँ भी अ़ता फ़र्माई थीं लेकिन ताहम वह उनसे गर्दन मोड़ने वाले ही रहे। (81) यह लोग अपने मकान पहाड़ों में ख़ातिर जम्ई से तराश लिया करते थे। (82) आख़िर उन्हें भी सुबह़ होते होते होलनाक आवाज़ ने आ दबोचा। (83) पस किसी तदबीर व कसब ने उन्हें कोई फ़ायदा न दिया।" (84)

क़ौमे शुऐ़ब का अंजाम (आयत 78-84) : ऐका वालों से मुराद क़ौमे शुऐ़ब है। ऐका कहते हैं दरख़्तों के झुण्ड को। उनका ज़ुल्म शिर्क और कुफ़्र के अ़लावा ग़ारतगिरी और नाप तौल की कमी भी थी, उनकी बस्ती लूत़ियों के क़रीब थी और उनका ज़माना भी उनसे बहुत क़रीब था उन पर भी उनकी पैहम (लगातार) शरारतों की वजह से अ़ज़ाबे इलाही आया यह दोनों बस्तियाँ बरसरे शारेअ़ आ़म (हाई-वे पर) थीं। ह़ज़रत शुऐ़ब (عليه السلام) ने अपनी क़ौम को डराते हुए फ़र्माया था कि लूत़ (عليه السلام) की क़ौम तुमसे कुछ दूर नहीं। (11/हूद : 89)

समूदियों का अलमनाक अज़ाब : हिज्र वालों से मुराद समूदी हैं जिन्होंने अपने नबी हज़रत सालेह (عليه السلام) को झुठलाया था और यह ज़ाहिर है कि एक नबी का झुठलाने वाला गोया सब नबियों का इंकार करने वाला है इसीलिए कहा गया कि उन्होंने नबियों को झुठलाया उनके पास ऐसे मोजिज़े पहुँचे जिनसे हज़रत सालेह (عليه السلام) की सच्चाई उन पर खुल गइ। जैसे कि एक सख़्त पत्थर की चट्टान से ऊँटनी का निकलना जो उनके शहरों में चरती चुगती थी और एक दिन वह पानी पीती थी एक दिन शहरियों के जानवर। मगर फिर भी यह लोग गर्दनकश ही रहे बल्कि उस ऊँटनी को मार डाला। उस वक़्त हज़रत सालेह (عليه السلام) ने फ़र्माया, बस अब तीन दिन के अंदर अंदर तुम पर क़हरे इलाही नाज़िल होगा यह बिलकुल सच्चा वादा है और अटल अज़ाब है। उन लोगों ने अल्लाह की बतलाई हुई राह पर भी अपने अंधेपन को तर्जीह दी। यह लोग सिर्फ़ अपनी कुव्वत जताने और रियाकारी ज़ाहिर करने के वास्ते तकब्बुर और तजब्बुर के तौर पर पहाड़ों में मकान तराशते थे किसी ख़ौफ के बाइस या ज़रूरतन यह चीज़ न थी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तबूक जाते हुए इनके मकानों से गुज़रे तो आपने सर पर कपड़ा डाल लिया और सवारी को तेज़ चलाया और अपने साथियों से फ़र्माया कि "जिन पर अज़ाबे इलाही उतरा है उनकी बस्तियों से रोते हुए गुज़रो, अगर रोना न आये तो रोनी सूरत बनाकर चलो कि ऐसा न हो कि उन्हीं अज़ाबों का शिकार तुम भी बन जाओ।" (इस रिवायत की असल इन किताबों में मौजूद है। सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब नुज़ूलन्नबी (ﷺ) अल्हिज्र : 4419; सहीह मुस्लिम : 2980; मुस्नदे हुमैदी : 653; बैहक़ी : 2/451; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11274; इब्ने हिब्बान : 6200; मुअजमुल कबीर : 1354; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 1625; अहमद : 2/58; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 798; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5382) आख़िर उन पर ठीक चौथे दिन की सुबह अज़ाबे इलाही बसूरते चिंघाड़ आया उस वक़्त उनकी कमाइयाँ कुछ काम न आईं जिन खेतों और फलों की हिफ़ाज़त के लिए और उन्हें बढ़ाने के लिए उन लोगों ने ऊँटनी का पानी पीना नापसंद करके उसे क़त्ल कर दिया था वह आज बेसूद साबित हुए और अम्रे रब अपना काम कर गया।

***

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ

الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

तर्जुमा : "हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की सब चीज़ों को हक़ के साथ ही पैदा किया और क़यामत ज़रूर ज़रूर आने वाली है पस तू वज़अदारी और अच्छाई से दरगुज़र करले। (85) यक़ीनन तेरा परवरदिगार ही पैदा करने वाला और जानने वाला है।" (86)

मुश्रिकीन से चश्मपोशी का हुक्म (आयत 85, 86) : अल्लाह ने तमाम मख़्लूक़ अदल के साथ बनाई है, क़यामत आने वाली है, बुरों को बुरे बदले नेकों को नेक बदले मिलने वाले हैं, मख़्लूक़ बातिल से पैदा नहीं

की गई, ऐसा गुमान काफ़िरों का होता है और काफ़िरों के लिए दोज़ख़ की बर्बादी है और आयत में है क्या तुम समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटकर नहीं आओगे। बुलंदी वाला है अल्लाह मालिके हक़ जिसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं, अर्शे करीम का मालिक वही है। (23/मोमिनून : 115, 116) फिर अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि मुश्रिकों से चश्मपोशी कीजिए उनकी ईज़ा (तक्लीफ़ देना) और झुठलाना और बुरा कहना सह लीजिए। जैसे और आयत में है उनसे चश्मपोशी कीजिए और सलाम कह दीजिए, इन्हें अभी मालूम हो जाएगा। (43/ज़ुख़रुफ़ : 89) यह हुक्म जिहाद के हुक्म से पहले था, यह आयत मक्की है और जिहाद हिज्रत के बाद मुक़र्रर और शुरू हुआ है, तेरा रब ख़ालिक़ है और ख़ालिक़ मार डालने के बाद भी पैदाइश पर क़ादिर है, उसे किसी चीज़ की बार बार की पैदाइश आजिज़ नहीं कर सकती, रेज़ों को जो बिखर जाएँ वह जमा करके जान डाल सकता है। जैसे फ़र्मान है (أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ) (36/यासीन : 81) आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ क्या उन जैसों की पैदाइश की क़ुदरत नहीं रखता? बेशक वह पैदा करने वाला इल्म वाला है वह जब किसी बात का इरादा करता है तो उसे हो जाने को फ़र्मा देता है बस वह हो जाता है पाक ज़ात है उस अल्लाह की जिसके हाथ में हर चीज़ की मिल्कियत है और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे।

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا

بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन हमने तुझे सात आयतें दे रखी हैं कि दोहराई जाती हैं और तुझे बुज़ुर्ग क़ुरआन भी दे रखा है। (87) तू हर्गिज़ अपनी नज़रें उस चीज़ की तरफ़ न दौड़ा जिससे हमसे कई क़िस्म के लोगों को बहरामंद कर रखा है। न तू उन पर अफ़सोस कर और मोमिनों के लिए अपना बाज़ू झुकाए रह।" (88)

सब्ओ मसानी से क्या मुराद है? (आयत 87, 88) : ऐ नबी (ﷺ)! हमने जब क़ुरआने अज़ीम जैसी ला ज़वाल दौलत तुझे इनायत कर रखी है तो तुझे न चाहिए कि काफ़िरों के दुनियावी माल व मताअ और ठाठ बाठ को ललचाई हुई नज़रों से देखे। यह तो सब फ़ानी है और सिर्फ़ उनकी आज़माइश के लिए चंद रोज़ा उन्हें अता हुआ है, साथ ही तुझे उनके ईमान न लाने पर सदमे और अफ़सोस की भी चंदाँ ज़रूरत नहीं। हाँ! तुझे चाहिए कि नर्मी ख़ुशख़ल्क़ी तवाज़ोअ और मिलनसारी के साथ मोमिनों से पेश आता रहे। जैसे इर्शाद है (لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ) (9/तौबा : 128) लोगों! तुम्हारे पास तुममें से ही एक रसूल आ गए हैं जिन पर तुम्हारी तक्लीफ़ शाक़ गुज़रती है जो तुम्हारी बहबूदी का दिल से ख़्वाहाँ है जो मुसलमानों पर परले दर्जे का शफ़ीक़ और मेहरबान है, सब्ओ मसानी की निस्बत एक क़ौल तो यह है कि इससे मुराद क़ुरआने करीम की इब्तिदा की

सात लम्बी सूरतें हैं, बक़रह, आले इमरान, निसाअ, माइदा, अन्आम, आराफ़, और यूनुस। (हाकिम : 2/355; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ अन्अन इसमें सूरह यूनुस की जगह सूरह कहफ़ मज़्कूर है।) इसलिए कि इन सूरतों में फ़राइज़ का, हुदूद का, क़िस्सों का और अहकाम का ख़ास तरीक़ पर बयान है इसी तरह मिसालें, ख़बरें और इब्रतें भी ज़्यादा हैं। कुछ ने सूरह आराफ़ तक की छः सूरतें गिनवाकर सातवीं सूरत अन्फ़ाल और बरा'त को बतलाया है, उनके नज़दीक यह दोनों सूरतें मिलकर एक ही सूरत हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि सिर्फ़ हज़रत मूसा (عليه السلام) को उनमें से दो सूरतें मिली थीं बाक़ी किसी नबी को सिवाए हमारे नबी के यह सूरतें नहीं मिलीं। एक क़ौल है कि अव्वलन हज़रत मूसा (عليه السلام) को छः मिली थीं। (हाकिम : 2/354, 355; व सनदुहू ज़ईफ़ुल आमश अन्अन) लेकिन जब आप ने तख़्तियाँ गिरा दीं तो दो उठ गईं और चार रह गईं। एक क़ौल है कुरआने अज़ीम से मुराद भी यही हैं। ज़ियाद (रह.) कहते हैं मैंने तुझे सात जुज़ दिए हैं। हुक्म, मनअ, बशारत, डर और मिसालें। नेअमतों का शुमार और कुरआनी ख़बरें। दूसरा क़ौल यह है कि मुराद सब्अे मसानी से सूरह फ़ातिहा है जिसकी सात आयतें हैं, यह सात आयतें (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) समेत हैं उनके साथ अल्लाह तआला ने तुम्हें मख़सूस किया है, यह किताब का शुरू हैं और हर रकअत में दोहराई जाती हैं ख़्वाह फ़र्ज़ नमाज़ हो ख़्वाह नफ़्ल नमाज़ हो। इब्ने जरीर (रह.) इसी क़ौल को पसंद करते हैं और इस बारे में जो हदीसें मरवी हैं उनसे इस पर इस्तिदलाल करते हैं हमने वह तामम अहादीस फ़ज़ाइल सूरह फ़ातिहा के बयान में अपनी इस तफ़्सीर के अव्वल में लिख दी हैं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस जगह दो हदीसें वारिद की हैं, एक में हज़रत अबू सईद बिन मुअल्ला (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं नमाज़ पढ़ रहा था जो हुज़ूर (ﷺ) आए, मुझे बुलाया लेकिन मैं आपके पास न आया, नमाज़ ख़त्म करके पहुँचा तो आपने पूछा कि "उसी वक़्त क्यूँ न आये?" मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नमाज़ में था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया "क्या अल्लाह तआला का यह फ़र्मान नहीं" (يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسْتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ) (8/अन्फ़ाल : 24) यानी ईमानवालो! अल्लाह और उसके रसूल की बात मान लो जब भी वह तुम्हें पुकारें। सुन अब मैं तुझे मस्जिद में से निकलने से पहले ही पहले कुरआने करीम की बहुत बड़ी सूरत बतला दूँगा।" थोड़ी देर में जब हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैंने आपका वादा याद दिलाया, आपने फ़र्माया, "वह सूरत (अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन) फ़ातिहा की है यही सब्अे मसानी और यही बड़ा कुरआन है जो मैं दिया गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब मा जाअ फ़ी फ़ातिहतिल किताब : 4474) दूसरी हदीस में आपका फ़र्मान है कि "उम्मुल कुरआन यानी सूरह फ़ातिहा ही सब्अे मसानी है और कुरआने अज़ीम है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (व लक़द आतैनाका सब्अम् मिनल मसानी वल कुरआनिल अज़ीम) : 4704; शुअबुल ईमान : 2352) पस साफ़ साबित है कि सब्अे मसानी है और कुरआने अज़ीम से मुराद सूरह फ़ातिहा है लेकिन यह भी ख़्याल रहे कि इसके सिवा और भी यही है उसके ख़िलाफ़ यह हदीसें नहीं जबकि उनमें भी यह हक़ीक़त पायी जाए जैसे कि पूरे कुरआने करीम का वस्फ़ भी इसके मुख़ालिफ़ नहीं , जैसे फ़र्माने रब्बानी है (ٱللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ ٱلْحَدِيثِ كِتَٰبًا مُّتَشَٰبِهًا مَّثَانِىَ) (39/ज़ुमर : 23) पस इस आयत में सारे कुरआन को मसानी कहा गया है और मुतशाबेह भी पस वह एक तरह से मसानी है और दूसरी वजह से मुतशाबेह। और कुरआने अज़ीम भी यही है जैसे कि इस रिवायत से साबित है कि हुज़ूर

(ﷺ) से सवाल हुआ कि तक़्वा पर जिस मस्जिद की बिना है वह कौन है? तो आप (ﷺ) ने अपनी मस्जिद की तरफ़ इशारा किया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब बयानुल मस्जिदल्लज़ी उस्सिसा अलत्तक़्वा हुवा मस्जिदुन्नबी (ﷺ) बिल मदीनति : 1398) हालाँकि यह भी साबित है कि आयत मस्जिदे क़ुबा के बारे में उतरी है पस क़ायदा यही है कि किसी चीज़ का ज़िक्र दूसरी चीज़ से इंकार नहीं होता जबकि वह भी वही सिफ़त रखती हो, वल्लाहु आलम! पस तुझे इनके ज़ाहिरी टीप टाप से बेनियाज़ रहना चाहिए, इसी फ़र्मान की बिना पर इमाम इब्ने उयेयना (रह.) ने एक सही हदीस जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "हममें से वह नहीं जो कुरआन के साथ तुग़न्ना न करे।" (सहीह बुखारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुहू तआला (व असिर्रु क़ौलकुम अविज्हरू बिही.....) : 7527; अबूदाऊद : 1469; इब्ने हिब्बान : 120; हाकिम : 1/569; अहमद : 1/175; मुस्नदे शिहाब : 1192) की तफ़्सीर यह लिखी है कि कुरआन को लेकर उसके मासिवा से जो दस्तबरदार और बेपरवाह न हो जाए वह मुसलमान नहीं। भले यह तफ़्सीर बिलकुल सही है लेकिन इस हदीस से यह मक़्सूद नहीं। हदीस का सही मक़्सद इस हमारी तफ़्सीर के शुरू में हमने बयान कर दिया है। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) के यहाँ एक मर्तबा मेहमान आए, आप (ﷺ) के घर में कुछ न था, आप (ﷺ) ने एक यहूदी से रजब के वादे पर आटा उधार मंगवाया लेकिन उसने कहा, बग़ैर किसी चीज़ को गिरवी रखे मैं नहीं दूँगा। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "वल्लाह! मैं आसमान वालों में अमीन हूँ और ज़मीन वालों में भी, अगर यह मुझे उधार देता या मेरे हाथ फ़रोख़्त कर देता तो मैं इसे ज़रूर अदा करता।" पस आयत (ला तमुद्दन्ना) नाज़िल हुई। (मुअजमुल कबीर : 989; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3863; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/126; इसकी सनद में मूसा बिन उबेदा रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है जिस पर मुहद्दिसीन ने जरह की है। (अल्मीज़ान : 6/551) और गोया आप (ﷺ) की दिलजोई की गई। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, इंसान को मम्नूअ है कि किसी के माल व मताअ को ललचाई हुई निगाहों से ताके। यह जो फ़र्मा कि उनकी जमाअतों को जो फ़ायदा हमने दे रखा है उससे मुराद कुफ़्फ़ार के मालदार लोग हैं।

***

وَقُلْ إِنِّيٓ أَنَا ٱلنَّذِيرُ ٱلْمُبِينُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى ٱلْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾ ٱلَّذِينَ جَعَلُوا۟ ٱلْقُرْءَانَ

عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

तर्जुमा : "कह दे कि मैं तो खुले तौर पर डराने वाला हूँ। (89) जैसे कि हमने उन क़समें खाने वालों पर उतारा। (90) जिन्होंने इस किताबे इलाही के टुकड़े टुकड़े कर दिए। (91) क़सम है तेरे पालने वाले की हम इन सबसे ज़रूर पूछताछ करेंगे। (92) हर उस चीज़ की जो वह करते थे।" (93)

क़यामत के दिन इंकार करने वालों से सवाल होगा (आयत 89-93) : हुक्म होता है कि ऐ पैग़म्बर

(ﷺ)! आप (ﷺ) ऐलान कर दीजिए कि मैं तमाम लोगों को अज़ाबे इलाही से साफ़ डरा देने वाला हूँ। याद रखो मेरे झुठलाने वाले भी अगले नबियों के झुठलाने वालों की तरह अज़ाबे इलाही के शिकार होंगे। (मुक़्तसिमीन) से मुराद क़समें खाने वाले हैं जो अम्बिया (अ.) की तक्ज़ीब और उनकी मुख़ालिफ़त और ईज़ादेही पर आपस में क़समा क़समी कर लेते थे जैसे कि क़ौमे सालेह का बयान कुरआने हकीम में है कि उन लोगों ने अल्लाह तआला की क़समें खाकर अहद किया कि रातों रात सालेह और उनके घराने को हम मौत के घाट उतार देंगे। इसी तरह कुरआन में है कि वह क़समें खा खाकर कहते थे कि मुर्दे फिर जियेंगे नहीं। (16/नह्ल : 38) और जगह उनका इस बात पर क़समें खाने का ज़िक्र है कि मुसलमानों को कभी कोई रहमत नहीं मिल सकती। (7/आराफ़ : 49) अल्ग़र्ज़ जिस चीज़ को न मानते उस पर क़समें खाने की उन्हें आदत थी इसलिए उन्हें (मुक़्तसिमीन) कहा गया। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूल (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मेरी और इस हिदायत की मिसाल जिसे देकर अल्लाह ने मुझे भेजा है उस शख़्स की सी है जो अपनी क़ौम के पास आकर कहे कि लोगों! मैंने दुश्मन का लश्कर अपनी आँखों से देखा है देखो! होशियार हो जाओ, बचने और हलाक न होने के सामान कर लो अब कुछ लोग उसकी बात मान लेते हैं और उसी मोहलत मे चल पड़ते हैं और दुश्मन के पंजे से बच जाते हैं लेकिन कुछ लोग इसे झूठा समझते हैं और वहीं बेफ़िक्री से पड़े रहते हैं कि अचानक दुश्मन का लश्कर आ पहुँचता है और घेर घारकर उन्हें क़त्ल कर देता है पस यह है मिसाल मेरे मानने वालों की और न मानने वालों की।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) बुइस्तु बि जवामेइल कलिम : 7282, 6482; सहीह मुस्लिम : 2283; मुस्नदे अबी यअला : 7310) इन लोगों ने उन अल्लाह की किताबों को जो इन पर उतरी थीं पारा पारा कर दिया जिस मसले को जी चाहा माना जिससे दिल घबराया छोड़ दिया। सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि इससे मुराद अहले किताब हैं कि किताब के कुछ हिस्से को मानते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हिज्र, बाब क़ौलुहू अज़्ज़ व जल्ल (अल्लज़ीना जअलुल कुरआन इज़ीन) : 4705) और फ़र्माया कि इससे मुराद यहूदो नसारा हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हिज्र, बाब क़ौलुहू अज़्ज़ व जल्ल (अल्लज़ीना जअलुल कुरआन इज़ीन) : 4706) और कुछ को नहीं मानते थे और यह भी मरवी है कि मुराद इससे कुफ़्फ़ार का किताबुल्लाह की निस्बत यह कहना है कि यह जादू है यह कहानत है यह अगलों की कहानी है उसका कहने वाला जादूगर है मज्नू है काहिन है वग़ैरह। सीरते इब्ने इस्हाक़ में है कि वलीद बिन मुग़ीरह के पास सरदाराने कुरैश जमा हुए, हज्ज का मौसम क़रीब था और यह शख़्स उनमें बड़ा शरीफ़ और ज़ी राय (अच्छी राय देने वाला) समझा जाता था, उसने उन सबसे कहा कि देखो! हज्ज के मौक़े पर दूरदराज़ से तमाम अरब यहाँ जमा होंगे, तुम देख रहे हो कि तुम्हारे इस साथी ने उधम मचा रखा है पस इसकी निस्बत इन बैरूनी लोगों से क्या कहा जाए, यह बताओ और किसी एक बात पर इज्माअ कर लो कि सब वही कहें ऐसा न हो कोई कुछ कहे, कोई कुछ कहे, इससे तो तुम्हारा ऐतिबार उठ जाएगा और वह परदेसी तुम्हें झूठा ख़याल करेंगे, उन्होंने कहा, ऐ अबू अब्दे शम्स! आप ही कोई ऐसी बात तज्वीज़ कर दीजिए। उसने कहा, पहले तुम अपनी तो कहो ताकि मुझे भी ग़ौरो ख़ौज़ का मौक़ा मिले, उन्होंने कहा, फिर हमारी राय में तो हर शख़्स उसे काहिन बतलाए, उसने कहा, यह तो वाक़िया के ख़िलाफ़ है, लोगों ने कहा, फिर मज्नूँ कहना बिलकुल दुरुस्त है, उसने कहा यह भी ग़लत है। कहा, अच्छा तो

शायर कहें, उसने जवाब दिया कि वह शेअ़र जानता ही नहीं, कहा, अच्छा! फिर जादूगर कहें? कहा, उसे जादू से मस भी नहीं। उसने कहा, सुनो! वल्लाह! उसके क़ौल में अजब मीठास है, इन बातों में से तुम जो कहोगे, दुनिया समझ लेगी कि महज़ ग़लत और सफ़ेद झूठ है भले कोई बात नहीं बनती लेकिन कुछ कहना ज़रूर है, अच्छा भई! सब उसे जादूगर बतलाएँ। इस अम्र पर यह मज्मअ़ बरख़्वास्त हुआ और इसी का ज़िक्र इन आयतों में है। उनके आमाल का सवाल उनसे उनका रब ज़रूर करेगा यानी कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाहु से। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हिज्र : 3126; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 4058) इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं, उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं कि तुममें से हर हर शख़्स क़यामत के दिन तंहा तंहा अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होगा। जैसे हर हर शख़्स चौदहवीं रात के चाँद को अकेला अकेला देखता है, अल्लाह कहेगा, ऐ इंसान! तू मुझसे मग़रूर क्यूँ हो गया तूने अपने इल्म पर कहाँ तक अमल किया तूने मेरे रसूलों को क्या जवाब दिया? अबुल आ़लिया (रह.) फ़र्माते हैं दो चीज़ों का सवाल हर एक से होगा, मअ़बूद किसे बना रखा था और रसूल (ﷺ) की मानी या नहीं? इब्ने उ़येयना (रह.) फ़र्माते हैं अमल और माल का सवाल होगा। हज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) से हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ऐ मुआ़ज़ (रज़ि.)! इंसान से क़यामत के दिन हर हर अमल का सवाल होगा यहाँ तक कि उसके आँख के सुर्मे और उसके हाथ की गुंधी हुई मिट्टी के बारे में भी उससे सवाल होगा देख मुआ़ज़ (रज़ि.)! ऐसा न हो कि क़यामत के दिन अल्लाह की नेअ़मतों के बारे में तू कमी वाला रह जाए।'' (इब्ने अबी हातिम : 9/73; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इस आयत में तो है कि हर एक से उसके अमल के बारे में सवाल होगा और सूरह रह़मान की आयत में है कि (فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَن ذَنۢبِهِۦٓ إِنسٌ وَلَا جَآنٌّ) (55/रह़मान : 39) कि उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसके गुनाहों का सवाल न होगा। इन दोनों आयतों में बक़ौले हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तत्बीक़ यह है कि यह सवाल न होगा कि तूने यह अमल किया? बल्कि यह सवाल होगा कि क्यूँ किया?

***

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

तर्जुमा : "पस तू इस हुक्म को जो तुझे किया जा रहा है खोलकर सुना दे और मुश्रिकों से मुँह फेर ले। (94) तुझसे जो लोग मस्ख़रापन करते हैं उनकी सज़ा के लिए हम काफ़ी हैं। (95) जो कि अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद मुक़र्रर करते हैं उन्हें अन्क़रीब मालूम हो जाएगा। (96) हमें ख़ूब इल्म है कि उनकी बातों से तू तंगदिल होता है। (97) तू अपने परवरदिगार की तस्बीह और हम्द बयान करता रह, और सज्दे करने वालों में रह। (98) और अपने रब की इबादत करता रह, यहाँ तक कि तुझे यक़ीन आ जाए।" (99)

रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन का इब्रतनाक अंजाम (आयत 94-99) : हुक्म हो रहा है कि ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! आप अल्लाह की बातें लोगों को साफ़ साफ़ बेझिझक पहुँचा दें न किसी की रू रिआयत कीजिए, न किसी का डर ख़ौफ़ कीजिए, मुश्रिकों के सामने तौहीद खुल्लम खुल्ला बयान कर दीजिए। ख़ुद अमल करके दूसरों तक भी पहुँचाइए, नमाज़ में क़ुरआन बाआवाज़े बुलंद तिलावत कीजिए, इस आयत के उतरने से पहले तक हुज़ूर (ﷺ) छुपकर तब्लीग़ करते थे लेकिन इसके बाद आप (ﷺ) और आपके अस्हाब (रज़ि.) ने खुले तौर पर इशाअते दीन शुरू कर दी। इन मज़ाक़ उड़ाने वालों को हम पर छोड़ दे, हम आप इनसे निपट लेंगे, तू अपनी तब्लीग़ के फ़रीज़े में कोताही न कर, यह तो चाहते हैं कि ज़रा सी सुस्ती आप (ﷺ) की तरफ़ से देखे तो ख़ुद भी दस्तबरदार हो जाएँ। तू इनसे मुत्लक़न ख़ौफ़ न कर। अल्लाह तआला तेरा हाफ़िज़ व नासिर है, वह तुझे इनके शर्र से बचा लेगा जैसे और आयत में है कि ऐ रसूल (ﷺ)! जो कुछ तेरी जानिब उतारा गया है तू उसे पहुँचा दे अगर तूने ऐसा न किया तो तूने अपने रब की रिसालत नहीं पहुँचाई।

अल्लाह तआला ख़ुद ही लोगों की बुराई से तुझे महफ़ूज़ रख लेगा। (5/माइदा : 67) चुनाँचे एक दिन हुज़ूर (ﷺ) रास्ते से जा रहे थे तो कुछ मुश्रिकों ने आप (ﷺ) को छेड़ा, उसी वक़्त जिब्राईल (عليه السلام) आए और उन्हें चूका मारा, जिससे उनके जिस्मों में ऐसा घाव हो गया जैसे नेज़े के ज़ख़्म हों उसी में वह मर गए। (इसकी सनद में यज़ीद बिन दिरहम है जिसके बारे में अल्लामा हैसमी (रह.) कहते हैं कि इब्ने मुईन ने इसको ज़ईफ़ कहा है। (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/46) और इसके अलावा औन बिन खम्स मज्हूल रावी है। लिहाज़ा यह सनद मर्दूद है।) और यह लोग मुश्रिकीन के बड़े बड़े रईस थे बड़ी उम्र के थे और निहायत शरीफ़ गिने जाते थे। बनू असद के क़बीले में से तो अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब अबू ज़म्आ यह हुज़ूर (ﷺ) का बड़ा ही दुश्मन था, ईज़ाएँ दिया करता था और मज़ाक़ उड़ाया करता था, आप (ﷺ) ने तंग आकर उसके लिए बद् दुआ भी की थी कि ऐ अल्लाह! इसे अंधा कर दे, बेऔलाद कर दे, बनी ज़ोहरा में से अस्वद था और बनी मख़्ज़ूम में से वलीद था और बनी सहम में आस़ बिन वाइल था और बनी ख़ुज़ाआ में से हारिस था। यह लोग बराबर हुज़ूर (ﷺ) की ईज़ारसानी के दर पे लगे रहते थे और लोगों को आप (ﷺ) के ख़िलाफ़ उभारा करते थे और जो तक्लीफ़ उनके बस में होती आप (ﷺ) को पहुँचाया करते। जब यह अपने मज़ालिम में हद से गुज़र गए और बात बात में हुज़ूर (ﷺ) का मज़ाक़ उड़ाने लगे तो अल्लाह तआला ने (फ़स्दअ) से (यअलमून) तक की आयतें नाज़िल फ़र्माईं। कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) तवाफ़ कर रहे थे जो हज़रत जिब्राईल

(عليه السلام) आए, बैतुल्लाह में आप (ﷺ) के पास खड़े हो गए, इतने में अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस आप (ﷺ) के पास से गुज़रा तो ह़ज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने उसके पेट की त़रफ़ इशारा किया। उसे पेट की बीमारी हो गई और उसी में वह मरा। इतने में वलीद बिन मुग़ीरा गुज़रा, उसकी ऐड़ी एक ख़ुज़ाई शख़्स के तीर के फल से कुछ यूँ ही सी छिल गयी थी और उसे भी दो साल गुज़र चुके थे, ह़ज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने उसी की त़रफ़ इशारा किया वह फूल गयी पकी और उसी में वह मरा, फिर आ़स़ बिन वाइल गुज़रा, उसके तल्वे की त़रफ़ इशारा किया, कुछ दिनों बाद यह ताइफ़ जाने के लिए अपने गधे पर सवार चला, रास्ते में गिर पड़ा और तल्वे में कील घुस गयी, जिसने उसकी जान ले ली। ह़ारिस के सर की त़रफ़ इशारा किया उसे ख़ून आने लगा और उसी में मरा। इन सब मूज़ियों का सरदार वलीद बिन मुग़ीरा था, उसी ने इन्हें जमा किया था पस यह पाँच या सात शख़्स थे जो मुँड थे और उनके इशारों से और ज़लील लोग भी कमीनापन की ह़रकतें करते रहते थे। यह लोग इस लग्व ह़रकत के साथ ही यह भी करते थे कि अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करते थे उन्हें अपने करतूत का मज़ा भी अभी आ जाएगा और भी जो रसूल (ﷺ) का मुख़ालिफ़ हो, अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करे उसका यही ह़ाल है। हमें ख़ूब मालूम है कि इनकी बकवास से ऐ नबी (ﷺ)! तुम्हें तक्लीफ़ होती है, दिल तंग होता है लेकिन तुम इनका ख़्याल भी न करो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारा मददगार है तुम अपने रब के ज़िक्र और तस्बीह़ और ह़म्द में लगे रहो, उसकी इ़बादत जी भरकर करो। नमाज़ का ख़्याल रखो। सज्दा करने वालों का साथ दो। मुस्नदे अह़मद में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि ऐ इब्ने आदम! शुरू दिन की चार रकअ़त से आ़जिज़ न हो।'' मैं तुझे आख़िर दिन तक किफ़ायत करूँगा। (मुस्नदे अह़मद : 5/286; अबूदाऊद, किताबुत्तत़व्वुआ़ बाब स़लातुज़्ज़ुह़ा : 1289; वहुव स़ह़ीह़ुन) हुज़ूर (ﷺ) की आ़दते मुबारक थी कि जब कोई घबराहट का मामला आ पड़ता तो आप नमाज़ शुरू कर देते। (अबूदाऊद, किताबुत्तत़व्वुआ़ बाब वक़्ते क़यामिन्नबी (ﷺ) : 1319; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह दौली रावी मज्हूलुल ह़ाल है।) यक़ीन से मुराद इस आख़िरी आयत में मौत है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हिज्र, बाब क़ौलुहू (वअ़बुद रब्बका ह़त्ता यअतियकल यक़ीन) तालीक़न तह़त रक़म : 4706) इसकी दलील सूरह मुद्दस्सिर की वह आयतें हैं जिनमें बयान है कि जहन्नमी अपनी बुराइयाँ बयान करते हुए कहेंगे कि हम नमाज़ी न थे, मिस्कीनों को खिलाते न थे, बातें बनाया करते थे, और क़यामत को झुठलाते थे, यहाँ तक कि मौत आ गई। (74/मुद्दस्सिर : 43-47) यहाँ भी मौत की जगह लफ़्ज़ यक़ीन है। एक स़ह़ीह़ ह़दीस में भी है कि ह़ज़रत उ़स्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर (ﷺ) उनके पास गए तो अंस़ार की एक औरत उम्मुल अ़ला (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अबू साइब! अल्लाह तआ़ला की तुझ पर रह़मतें हों, बेशक अल्लाह तआ़ला ने तेरी तक्रीम व इ़ज़्ज़त की। हुज़ूर (ﷺ) ने यह सुनकर फ़र्माया, ''तुझे कैसे यक़ीन हो गया कि अल्लाह ने इसका इकराम किया।'' उन्होंने जवाब दिया कि आप (ﷺ) पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों, फिर कौन होगा जिसका इकराम हो? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! इसे मौत आ चुकी और मुझे इसके लिए भलाई की उम्मीद है।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब दुख़ूलु अ़लल मय्यिति बअ़दल मौत इज़ा अदरजा फ़ी अक्फ़ानिही : 1243; ह़ाकिम : 1/534; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7634; अह़मद : 6/436;

मुअजमुल कबीर : 336) इस हदीस में भी मौत की जगह यक़ीन का लफ़्ज़ है। इस आयत से इस्तिदलाल किया गया है कि नमाज़ वग़ैरह इबादत इंसान पर फ़र्ज़ है जब तक कि उसकी अक़्ल बाक़ी रहे और होश व हवास साबित हों। जैसी उसकी हालत हो उसी के मुताबिक़ नमाज़ अदा करे। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "खड़े होकर नमाज़ अदा कर, न हो सके तो बैठकर, न हो सके तो करवट पर लेटकर।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब इज़ा लम युतिक़ क़ाइदन सल्ला अला जंबिही : 1117; तिर्मिज़ी : 372; अबूदाऊद : 952; इब्ने माजा : 1223; मुस्नदे रूयानी : 145; इब्ने ख़ुज़ेमा : 979; हाकिम : 1/460; बैहक़ी : 3/155; दारे क़ुत्नी : 1/380; अहमद : 4/426) बद मज़हबों ने इससे अपने मतलब की एक बात गढ़ ली कि जब तक इंसान दर्जा कमाल तक न पहुँचे उस पर इबादत फ़र्ज़ रहती हैं लेकिन जब मअरिफ़त की मंज़िलें तै कर चुका तो इबादत की तक्लीफ़ साक़ित हो जाती है यह सरासर कुफ़्र ज़लालत और जिहालत है। यह लोग इतना नहीं समझते कि अम्बिया (ﷺ) और ख़ुसूसन हज़रत मुहम्मद (ﷺ) और आपके अस्हाब (रज़ि.) मअरिफ़त के तमाम दर्जे तै कर चुके थे और रब्बानी इल्म व इरफ़ान में सब दुनिया से कामिल थे, रब की सिफ़ात और ज़ात का सबसे ज़्यादा इल्म रखते थे बावजूद उसके सबसे ज़्यादा अल्लाह की इबादत करते थे और रब की इताअत में तमाम दुनिया से ज़्यादा मशग़ूल थे और दुनिया के आख़िरी दम तक उसी में लगे रहे पस साबित है कि यहाँ मुराद यक़ीन से मौत है। तमाम मुफ़स्सिरीन सहाबा (रज़ि.) वग़ैरह का यही मज़हब है, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला का शुक्रो एहसान है कि उसने जो हमें हिदायत अता की है उस पर हम उसकी तारीफ़ें करते हैं उसी से नेक कामों में मदद चाहते हैं। उसी की पाक ज़ात पर हमारा भरोसा है, हम उस मालिक हाकिम से दुआ करते हैं कि वह बेहतरीन और कामिल इस्लाम ईमान और नेकी पर मौत दे वह जव्वाद है और करीम है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह हिज्र की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह नह्ल

سوره النحل

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह नहल - 16

आयातः 128, मक्की पैराग्राफ : 6

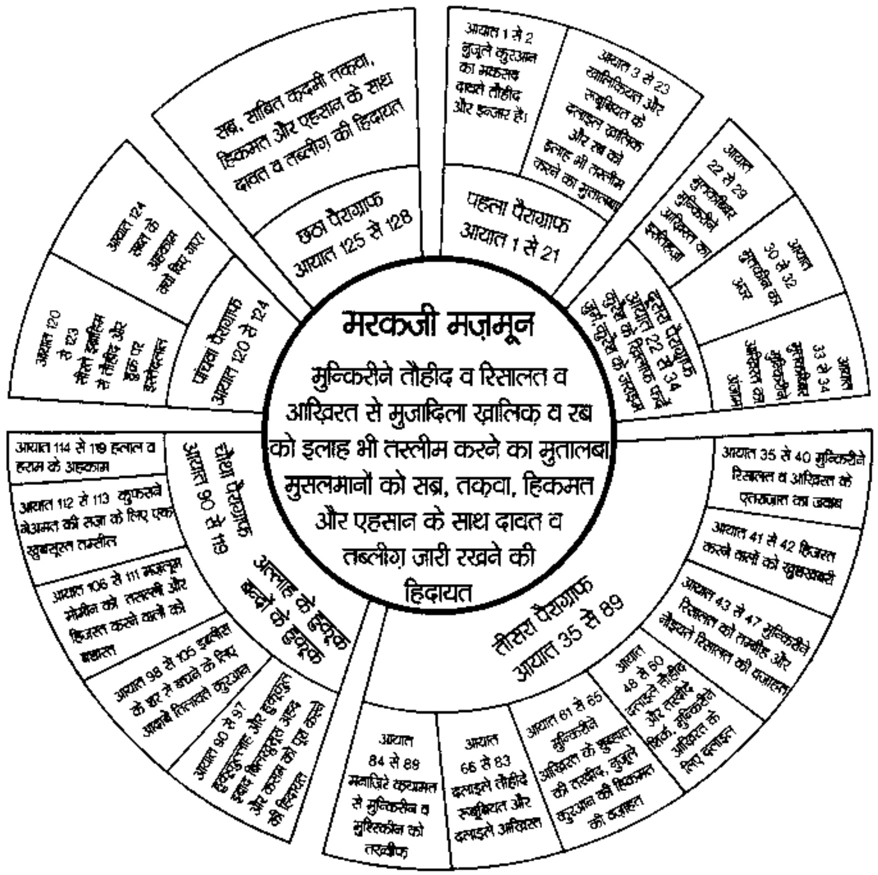

जमानए नुज़ूलः

सूरह (नहल) रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़यामे मक्का के आख़री दौर (ग़ालिबन 12 नबवी) में, क़हत के इख़्तिताम पर हिजरते मदीना से पहले नाज़िल हुई, चुनांचे इस सूरह में, मज़लूम साबिर मुतवक्किल मुसलमानों के लिए हिजरत की तरग़ीब है। कुछ आयात दौरे कहत यानी सात नबवी में नाज़िल हुई हैं। कुछ आयात दौरे तशद्दुद में नाज़िल हुई, जैसे आयात नम्बर 106 के बारे में कहा जाता है कि ये हिज़रते अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी (इब्ने हिशाम), जिसमें मुसलमानों को रूख़सत दी गई कि वो ईमान पर क़ल्बी साबित क़दमी के साथ, जान बचाने के लिए ज़बान से कलिम-ए-कुफ़्र कभी अदा कर सकते हैं।

सूरह नहल

ये सूरत रसूलुल्लाह (ﷺ) की मक्की ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में नाज़िल हुई। इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ हैं। नहल के मानी शहद की मक्खी के हैं। इस सूरत का नाम इसकी आयत नम्बर 68 से लिया गया है। शहद की मक्खी को एक मुफ़ीद जानदार बताया गया। इसे अल्लाह वह्य करते हैं और ये अल्लाह के हुक्म से पहाड़ों, दरख़्तों और बेलों में अपने छत्ते लगाती है फलों और फूलों से रस निचोड़कर शहद तैयार करती है। जिसके मुख़्तलिफ़ रंग होते हैं। जो बहुत लज़ीज़ होने के साथ इंसानों के लिये शिफ़ा भी है। इस सूरत का मर्कज़ी मज़मून भी तौहीद की तब्लीग़, जज़ा व सज़ा, रोज़े कयामत और आख़िरत की ज़िन्दगी में कामयाबी और नाकामी है। इस सूरत की आयत नम्बर 51 में ज़रतश्ती मज़हब के दो ख़ुदाओं के अक़ीदे को बातिल क़रार दिया गया है।

इस सूरत की ख़ास अहमियत ये है कि इसमें अल्लाह की नेमतों का ज़िक्र बहुत जामियत व तफ़्सील से किया गया है। मवेशी, भेड़, बकरी, गाय और ऊँट, घोड़े, गधे, खच्चर वग़ैरह इंसान के लिये निहायत मुफ़ीद जानवर है। मवेशी का दूध और गोश्त इंसानों के लिये ख़ुराक है उनके बाल ऊन और रेशम इंसान के लिये गर्म लिबास है और दूसरे जानवर सवारी और बार बरदारी के काम आते हैं और इंसान के लिये हुस्नो-जमाल है। बारिश भी अल्लाह की एक बड़ी नेमत है जिससे इंसानों को उसके जानवरों को उसके बाग़ात और खेतों को पानी मिलता है। इससे चारा उगता है, अनाज उगता है। खाने के लिये उम्दा फल, ज़ैतून, खजूर, अंगूर वग़ैरह के पौधे सैराब होते हैं। अल्लाह ने दिन-रात, सूरज-चाँद को इंसान की ख़िदमत के लिये लगाया है। दरियाओं और समुन्द्रों से खाने के लिये मछली का गोश्त, पहनने के लिये ज़ेवरात की चीज़ें, और बार बरदारी के लिये कश्तियाँ और जहाज़ ये सब अल्लाह की नेमतें हैं। इसलिये उसी को इलाह मानो उसकी इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ।

इस सूरत में नेक और बद लोगों की मौत और आख़िरत में उनके अन्जाम का ज़िक्र तफ़्सील के साथ मौजूद है। हलाल व हराम के क़ानूनों का ज़िक्र भी है और मुसलमानों के लिये हिदायात भी और इस बात की वज़ाहत भी कर दी गई है कि कुरआन अल्लाह की किताब है मुहम्मद (ﷺ) ख़ुद कुरआन के लिखने वाले नहीं है।

तफ़्सीर सूरह नहल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

''शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ①

तर्जुमा : ''अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, अब उसकी जल्दी न मचाओ तमाम पाकी उसके लिए है वह बरतर है उन सबसे ज़िन्हें यह अल्लाह का शरीक बतलाते हैं।'' (1)

क़यामत आने की जल्दी न मचाओ (आयत 1) : अल्लाह तआला क़यामत की नज़दीकी की ख़बर दे रहा है और गोया कि वह क़ायम हो चुकी। इसलिए माज़ी के लफ़्ज़ से बयान फ़र्माता है जैसे फ़र्मान है लोगों का हिसाब क़रीब आ लगा फिर भी वह ग़फ़्लत के साथ मुँह मोड़े हुए हैं। (21/अम्बिया : 1) और आयत में है, क़यामत क़रीब आ लगी चाँद फट गया। (54/क़मर : 1) फिर फ़र्माया इस क़रीब वाली चीज़ के और क़रीब होने की तमन्नाएँ न करो। हू की ज़मीर का मरजअ या तो लफ़्ज़े अल्लाह है यानी अल्लाह से जल्दी न चाहो या अज़ाब हैं यानी अज़ाबों की जल्दी न मचाओ। दोनों मअ़नी एक दूसरे के लाज़िम व मल्ज़ूम हैं। जैसे और आयत में है यह लोग अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं अगर हमारी तरफ़ से उसका वक़्त मुक़र्रर न होता तो बेशक इन पर अ़ज़ाब आ पड़ते लेकिन अ़ज़ाब इन पर आएगा ज़रूर और वह भी नागहाँ इनकी ग़फ़्लत में यह अ़ज़ाबों की जल्दी करते हैं और जहन्नम इन सब काफ़िरों को घेरे हुए है। ज़ह्हाक (रह.) ने इस आयत का एक अजीब मतलब बयान किया है यानी वह कहते हैं कि मुराद यह है कि अल्लाह के फ़राइज़ और हुदूद नाज़िल हो चुके। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसे ख़ूब रद्द किया है और फ़र्माया है एक भी तो हमारे इल्म में ऐसा नहीं जिसने शरीअ़त के वजूद से पहले उसके माँगने में उसकी उज्लत की हो। मुराद इससे अ़ज़ाबों की जल्दी है जो काफ़िरों की आदत थी क्योंकि वह उन्हें नहीं मानते थे जैसे कुरआन पाक ने फ़र्माया है (يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا) (42/शूरा : 18) बेईमान तो उसकी जल्दी मचा रहे हैं और ईमान वाले उनसे लरज़ा व तरसाँ हैं क्योंकि वह उन्हें बरहक़ जानते हैं, बात यह है कि अ़ज़ाबे इलाही में शक करने वाले दूर की गुमराही में जा पड़ते हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''क़यामत के क़रीब मग़रिब की जानिब से ढाल की तरह का स्याह बादल नमूदार होगा और वह बहुत जल्द आसमान पर चढ़ेगा फिर उसमें से एक मुनादी निदा करेगा लोग ताज्जुब से एक दूसरे से कहेंगे, मियाँ कुछ सुना भी? कुछ हाँ कहेंगे, और कुछ बात को उड़ा देंगे वह फिर दोबारा आवाज़ देगा और कहेगा कि ऐ लोगों! तो सब कहेंगे कि हाँ साहब! आवाज़ तो आई, फिर तीसरी बार मुनादी करेगा और कहेगा, ऐ लोगों! अम्रे इलाही आ पहुँचा अब जल्दी न करो, अल्लाह की क़सम! दो शख़्स जो किसी कपड़े को फैलाये हुए होंगे, समेटने भी न पाएँगे जो क़यामत क़ायम हो जाएगी कोई अपने होज़ को ठीक कर रहा होगा अभी पानी भी पिलाने नहीं पाया होगा जो क़यामत आएगी। दूध दुहने वाले पी भी न सकेंगे कि

क़यामत आ जाएगी हर एक आपा धापी में लग जाएँगे।'' (हाकिम : 4/539; इमाम हाकिम (रह़.) ने इस रिवायत को मुस्लिम की शर्त पर सही कहा है और इमाम ज़हबी (रह़.) ने इसकी मुवाफ़िक़त की है। वहुव हदीसुन हसन) फिर अल्लाह तआला अपने नफ़्से करीम की शिर्क और इबादते ग़ैर से पाकीज़गी बयान करता है। फ़िल वाक़ेअ वह उन तमाम बातों से पाक बहुत दूर और बहुत बुलंद है यही मुश्रिक हैं। जो मुंकिरे क़यामत भी हैं, अल्लाह सुब्हानहू व तआला इनके शिर्क से पाक है।

***

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝٤

तर्जुमा : ''वही फ़रिश्तों को अपनी वही (मैसेज) देकर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है कि तुम लोगों को आगाह कर दो कि मेरे सिवा और कोई मअ़बूद नहीं तो तुम मुझसे डरते रहा करो। (2) उसी ने आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया वह उससे बरी है जो मुश्रिक करते हैं। (3) उसने इंसान को नुत्फ़े से पैदा किया कि वह स़रीह़ झगड़ालू बन बैठा।'' (4)

अल्लाह की वही अम्बिया (عليهم السلام) पर हुई है (आयत 2-4) : रूह़ से मुराद यहाँ वह़ी है जैसे आयत (وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا) (42/शूरा : 52) हमने इसी तरह तेरी तरफ़ अपने हुक्म से वह़ी नाज़िल की हालाँकि तुझे तो यह भी पता न था कि किताब क्या होती है और ईमान की माहियत क्या है? हाँ! हमने इसे नूर बनाकर जिसे चाहा अपने बन्दों में से रास्ता दिखा दिया यहाँ फ़र्मान है कि हम अपने जिन बन्दों को चाहें पैग़म्बरी अ़ता फ़र्माते हैं, हमें ही इसका पूरा इल्म है कि उसके लायक़ कौन है? हम ही फ़रिश्तों में से भी इस आला मंसब के फ़रिश्ते छांट लेते हैं और इंसानों में से भी अल्लाह अपनी वह़ी अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है ताकि वह मुलाक़ात के दिन से होशियार कर दें जिस दिन सबके सब अल्लाह के सामने होंगे, कोई चीज़ उससे मख़्फ़ी (छुपी) न होगी उस दिन मुल्क किसका होगा स़िर्फ़ अल्लाह वाह़िद व क़ह्हार का होगा। यह इसलिए कि वह लोगों में वह़दानियते इलाही का ऐलान कर दें और पारसाई से दूर मुश्रिकों को डरा दें और लोगों को समझा दें कि वह मुझसे डरते रहा करें।

इंसान की अपनी पैदाइश को भूलना और बातें बनाना : आलमे अ़ल्वा और सुफ़्ला का ख़ालिक़ अल्लाह करीम ही है, बुलंद आसमान और फैली हुई ज़मीन के साथ तमाम मख़्लूक़ उसी की पैदा की हुई है और यह सब बत़ौरे ह़क़ है न कि बत़ौरे अ़बस। नेकों को जज़ा और बदों को सज़ा होगी वह तमाम और

मअबूदों और मुश्रिकों से बरी और बेज़ार है वाहिद ला शरीक है अकेला ही ख़ालिक़ है इसीलिए अकेला ही सज़ावारे इबादत है। उसने इंसान का सिलसिला नुत्फ़े (बूँद) से जारी कर रखा है जो एक पानी है हक़ीर व ज़लील यह जब ठीक ठाक बना दिया जाता है तो अकड़फ़ू में आ जाता है रब से झगड़े करता है रसूलों की मुख़ालिफ़त पर तुल जाता है बन्दा था चाहिए कि बंदगी में लगा रहता लेकिन यह तो दरिन्दगी करने लगा और आयत में है कि अल्लाह तआला ने इंसान को पानी से बनाया,उसका नसब और ससुराल क़ायम किया। अल्लाह क़ादिर है रब के सिवा यह उनकी पूजा करने लगे हैं, जो बेनफ़ा और बेज़रर हैं, काफिर कुछ अल्लाह से पोशीदा नहीं। (25/फुरक़ान : 54, 55) सूरह यासीन में फ़र्माया, क्या इंसान नहीं देखता कि हमने उसे नुत्फ़े से पैदा किया फिर वह तो बड़ी ही झगड़ालू निकला हम पर भी बातें बनाने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया। कहने लगा कि इन सड़ी गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ नबी (ﷺ)! तुम इनसे कह दो कि इन्हें वह ख़ालिक़े अकबर पैदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया वह तो हर तरह की मख़्लूक़ की हर तरह की पैदाइश का पूरा आलिम है। (36/यासीन : 77-79) मुस्नद अहमद और इब्ने माजा में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी हथेली पर थूककर फ़र्माया कि ''जनाब बारी तआला फ़र्माता है कि ऐ इंसान! क्या तू मुझे आजिज़ कर सकता है हालाँकि मैंने तो तुझे उस जैसी चीज़ से पैदा किया है जब तू पूरा हो गया ठीक ठाक हो गया लिबास मकान मिल गया तो तू लगा समेटने और मेरी राह से रोकने? और जब दम गले में अटका तो तू कहने लगा कि अब मैं सदक़ा करता हूँ अल्लाह की राह में देता हूँ बस अब सदक़े ख़ैरात का वक़्त निकल गया।'' (अहमद : 4/210; इब्ने माजा, किताबुल वसाया, बाब अन्नही अनिल इम्साक फ़िल हयाति वत्तब्ज़ीर इन्दल मौत : 2707; व सनदुहू सहीहुन; हाकिम : 2/545; मुअजमुल कबीर : 1193; शुअबुल ईमान : 3473)

***

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٥ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ
حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا
بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۭ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧

तर्जुमा : ''उसी ने चौपाये पैदा किए जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी के लिबास हैं और भी बहुत से नफ़ा हैं और कुछ तुम्हारे खाने के काम आते हैं। (5) और उनमें तुम्हारी रौनक़ भी है जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी। (6) और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक उठा ले जाते हैं जहाँ तुम बग़ैर आधी जान के पहुँच ही नहीं सकते थे यक़ीनन तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़ और निहायत मेहरबान है।'' (7)

चौपाये इंसान के फ़ायदे के लिए (आयत 5-7) : जो चौपाये जानवर अल्लाह तआला ने पैदा किए हैं

और इंसान उनसे मुख़्तलिफ़ फ़ायदे उठा रहा है उस नेअ़मत को रब्बुल आलमीन बयान कर रहा है जैसे ऊँट, गाय, बकरी। जिसका मुफ़स्सल (सविस्तार) बयान सूरह अन्आम की आयत में आठ क़िस्मों से किया है। उनके बाल, ऊन, सूफ़ वग़ैरह का गर्म लिबास और जड़ावल बनती है दूध पीते हैं गोश्त खाते हैं शाम को जब वह चर चुगकर वापिस आते हैं भरी हुई कोखों वाले भरे हुए थनों वाले ऊँची कोहानों वाले कितने भले मालूम होते हैं? और जब चरागाह की तरफ़ जाते हैं कैसे प्यारे मालूम होते हैं? फिर तुम्हारे भारी भारी बोझ एक शहर से दूसरे शहर तक अपनी कमर पर लादकर ले जाते हैं कि तुम्हारा वहाँ पहुँचना बग़ैर आधी जान के मुश्किल था हज्ज के उमरे के जिहाद के तिजारत के और ऐसे ही और सफ़र पर होते हैं तुम्हें ले जाते हैं तुम्हारे बोझ ढोते हैं जैसे आयत (وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً) (23/मोमिनून : 21) में है कि यह चौपाये जानवर भी तुम्हारी इब्रत का बाइस हैं इनके पेट से हम तुम्हें दूध पिलाते हैं और इनसे बहुत से फ़ायदे पहुँचाते हैं इनका गोश्त भी तुम खाते हो इन पर सवारियाँ भी करते हो। समुन्द्र की सवारी के लिए कश्तियाँ हमने बना दी हैं और आयत में है (اللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ) (40/ग़ाफ़िर : 79) अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किए हैं कि तुम उन पर सवारी करो उन्हें खाओ नफ़ा उठाओ दिली हाजतें पूरी करो और तुम्हें कश्तियों पर भी सवार कराया और बहुत सी निशानियाँ दिखाईं पस तुम किस किस निशानी का इंकार करोगे। यहाँ भी अपनी यह नेअ़मतें जताकर फ़र्माया कि तुम्हारा रब जिसने इन जानवरों को तुम्हारा मुतीअ़ बना दिया है वह तुम पर बहुत ही शफ़क़त व रहमत वाला है जैसे सूरह यासीन में फ़र्माया कि क्या वह नहीं देखते कि हमने उनके लिए अपने हाथों से चौपाये बनाये और इन्हें उनका मालिक बना दिया और उन्हें इनका मुतीअ़ (फ़र्मांबरदार) बना दिया कि कुछ को खायें कुछ पर सवार हों। (36/यासीन : 71, 72) और आयत में है (وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ) (सूरह ज़ुख़रूफ़ 43/12) उस अल्लाह ने तुम्हारे लिए कश्तियां बना दी और चौपाये पैदा कर दिए कि तुम उन पर सवार होकर अपने रब का फ़ज़्ल व शुक्र करो और कहो वह पाक है जिसने इन्हें हमारा मातहत किया, हालाँकि हममें यह ताक़त न थी, हम मानते हैं कि हम उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगे। (दिफ़) के मअ़नी कपड़े और मुनाफ़ा से मुराद खाना पीना, नस्ल हासिल करना, सवारी करना, गोश्त खाना, दूध पीना।

***

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

तर्जुमा : ''घोड़ों को, ख़च्चरों को, गधो को उसने पैदा किया कि तुम उनकी सवारी करो और वह बाइसे ज़ीनत भी हैं और भी वह ऐसी बहुत चीज़ें पैदा करता है जिनका तुम्हें इल्म भी नहीं।'' (8)

मसला घोड़े की हिल्लत व हुर्मत (आयत 8) : अपनी एक और नेअ़मत का बयान कर रहा है कि ज़ीनत के लिए और सवारी के लिए उसने घोड़े, ख़च्चर और गधों को पैदा किए हैं बड़ा मक़्सद इन जानवरों की पैदाइश से इंसान का ही फ़ायदा है चूँकि उन्हें और चौपायों पर फ़ज़ीलत दी और अलग ज़िक्र किया इस वजह से कुछ उलमा ने घोड़े के गोश्त की हुर्मत की दलील इस आयत से ली है। जैसे इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और उनकी मुवाफ़िक़त करने वाले फ़ुक़्हा कहते हैं कि ख़च्चर और गधे के साथ घोड़े का ज़िक्र है और पहले के

दोनों जानवर हराम हैं इसलिए यह भी हराम हुआ, चुनाँचे ख़च्चर और गधे की हुर्मत अहादीस में आई है और अक्सर उलमा का मज़हब यही है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इन तीनों की हुर्मत आई है वह फ़र्माते हैं कि इस आयत से पहले की आयत में चौपायों का ज़िक्र करके अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि इन्हें तुम खाते हो पस यह तो हुए खाने के जानवर और इन तीनों का बयान करके फ़र्माया है कि इन पर सवारी करते हो पस यह हुए सवारी के जानवर। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने घोड़ों के ख़च्चरों के, और गधों के गोश्त को खाने से मना फ़र्माया है। (अहमद : 4/89; अबूदाऊद, किताबुल अत्इमा, बाब फ़ी उकुलि लुहूमिल ख़ैल : 3790; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह्या बिन मिक़्दाम मस्तूर और सालेह बिन यह्या ज़ईफ़ (लीन) रावी है। नसाई : 4337; दारे कुत्नी : 4/287; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6640; इब्ने माजा : 3198) लेकिन इसके रावियों में एक रावी सालेह बिन यह्या बिन मिक़्दाम हैं जिनमें कलाम है। मुस्नद की और हदीस में मिक़्दाम बिन मअद यक्रिब (रज़ि.) से मंक़ूल है कि हम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के साथ साइफ़ा की जंग में थे, मेरे पास मेरे साथी गोश्त लाए मुझसे एक पत्थर मांगा मैंने दिया, उन्होंने उसमें उसे बाँधा मैंने कहा, ठहरो! मैं ख़ालिद (रज़ि.) से पूछकर आता हूँ। उन्होंने फ़र्माया, हम रसूल (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में थे लोगों ने यहूदियों के खेतों पर जल्दी शुरू कर दी। हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया कि लोगों में आवाज़ लगा दो कि नमाज़ के लिए आ जाएँ और मुसलमानों के सिवा कोई न आए। फिर फ़र्माया कि ऐ लोगों! तुमने यहूदियों के बाग़ात में घुसने में जल्दी मचा दी। सुनो मुआहिद का माल बग़ैर हक़ के हलाल नहीं और पालतू गधों के घोड़ों के और ख़च्चरों के गोश्त और हर एक कच्लियों वाला दरिन्दा और हर एक पंजे से शिकार खेलने वाला परिन्दा हराम है। (अहमद : 4/89; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सालेह बिन यह्या बिन मिक़्दाम ज़ईफ़ रावी है।) हुज़ूर (ﷺ) की मुमानिअत यहूद के बाग़ात से शायद उस वक़्त थी जब उनसे मुआहिदा हो गया। पस अगर यह हदीस सही होती तो बेशक घोड़े की हुर्मत के बारे में नस थी लेकिन इसमें बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस के मुक़ाबले में कुव्वत नहीं जिसमें हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मंक़ूल है कि रसूले अकरम (ﷺ) ने पालतू गधों के गोश्त को मना कर दिया और घोड़ों के गोश्त की इजाज़त दी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्व-ए-ख़ैबर : 4219; सहीह मुस्लिम : 1941; अबूदाऊद : 3788; अहमद : 3/361; इब्ने हिब्बान : 5273) और हदीस में है कि हमने ख़ैबर वाले दिन घोड़े और ख़च्चर और गधे ज़िब्ह किये तो हमें हुज़ूर (ﷺ) ने ख़च्चर और गधे के गोश्त से मना कर दिया लेकिन घोड़े के गोश्त से नहीं रोका। (अबूदाऊद, किताबुल अत्इमा, बाब फ़ी उकुलि लुहूमिल ख़ैल : 3789; वहुव सहीहुन; अहमद : 9/356; बैहक़ी : 9/327; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6641; इब्ने हिब्बान : 5272; हाकिम : 4/235) सहीह मुस्लिम में हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) से मरवी है कि हमने मदीना में हुज़ूर (ﷺ) की मौजूदगी में घोड़ा ज़िब्ह किया और उसका गोश्त खाया। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़बाइह वस्सैद, बाब अन्नहर वज़्ज़बाइह : 5511; सहीह मुस्लिम : 1942; इब्ने माजा : 3190; अहमद : 6/345; इब्ने हिब्बान : 5271) पस यह सबसे बड़ी और सबसे क़वी और सबसे ज़्यादा सबूत वाली हदीस है और यही मज़हब जुम्हूर उलमा का है, मालिक, शाफ़ेई, अहमद (रह.) और इनके सब साथी और अक्सर सलफ़ और ख़ल्फ़ यही कहते हैं, वल्लाहु आलम! इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि पहले घोड़ों में वहशियत और जंगलियत थी अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल (عليه السلام) के

लिए इसे मुतीअ कर दिया। वहब ने इस्राईली रिवायतों में बयान किया है कि जुनूबी हवा से घोड़े पैदा होते हैं, वल्लाहु आलम! इन तीनों जानवरों पर सवारी करने का जवाज़ तो क़ुरआन के लफ़्ज़ों से साबित है। हुज़ूर (ﷺ) को एक ख़च्चर हदिये में दिया गया था जिस पर आप सवारी करते थे, हाँ! यह आप (ﷺ) ने मना कर दिया है कि "घोड़ों को गधियों से मिलाया जाए।" यह मुमानिअत इसलिए है कि नस्ल मुन्क़तअ न हो जाए। हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि अगर आप इजाज़त दें तो हम घोड़े और गधी के मिलाप से ख़च्चर लें और आप (ﷺ) उस पर सवार हों, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "यह काम वह करते हैं जो इल्म से कोरे हैं।" (अहमद : 4/311; यह रिवायत मुन्क़तअ है जबकि हज़रत अली (रज़ि.) से मुत्तसिल सनद से अहमद :1/100 पर मौजूद है इसके अलावा यह रिवायत इन कुतुब में भी मौजूद है, अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी कराहियतिल हिम्रुन तंज़ी अलल ख़ैलि : 2565 ; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 889; तहावी : 3/271; इब्ने हिब्बान : 4682; बैहक़ी : 10/22)

***

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۹

तर्जुमा : "दरम्यानी राह अल्लाह की तरफ़ पहुँचने वाली है और टेढ़ी राहें हैं और अगर वह चाहता तो सबको राह पर लगा देता।" (9)

दीनो दुनिया की मिसालें (आयत 9) : दुनियावी राहें तै करने के अस्बाब बयान फ़र्माकर अब दीनी राह चलने के अस्बाब बयान फ़र्माता है, महसूसात से मअनवियात की तरफ़ रुजूअ करता है, क़ुरआन में अक्सर बयानात इस क़िस्म के मौजूद हैं, सफ़रे हज्ज के तौशा का ज़िक्र करके तक़्वा के तौशे का जो आख़िरत में काम दे बयान हुआ है ज़ाहिरी लिबास का ज़िक्र फ़र्माकर लिबासे तक़्वा की अच्छाई बयान की है इसी तरह यहाँ हैवानात से दुनिया के कठिन रास्ते और दूर दराज़ सफ़र तै होने का बयान फ़र्माकर आख़िरत के रास्ते दीनी राहें बयान फ़र्माई कि हक़ रास्ता अल्लाह तआला से मिलाने वाला है रब की सीधी राह वही है उसी पर चलो और रास्तों पर न लगो वरना बहक जाओगे। और सीधी राह से अलग हो जाओगे फ़र्माया मेरी तरफ़ पहुँचने की सीधी राह यही है जो मैंने बतलाई है तरीक़े हक़ जो अल्लाह से वासिल करने वाला है अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया है और वह दीने इस्लाम है जिसे अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया है और साथ ही और रास्तों की गुमराही भी बयान कर दी है। पस सच्चा रास्ता एक ही है जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) से साबित है बाक़ी और राहें ग़लत राहें हैं, हक़ से यक्सू हैं, लोगों की अपनी ईजाद हैं। जैसे यहूदियत, नसरानियत, मजूसियत वग़ैरह फिर फ़र्माता है कि हिदायत रब के क़ब्ज़े की चीज़ है अगर चाहे तो रूए ज़मीन के लोगों को नेक राह पर लगा दे ज़मीन के तमाम बाशिन्दे मोमिन बन जाएँ सब लोग एक ही दीन के आमिल हो जाएँ लेकिन यह इख़्तिलाफ़ बाक़ी ही रहेगा मगर जिस पर अल्लाह तआला रहम करे। उसी के लिए उन्हें पैदा किया है। तेरे रब की बात पूरी होकर ही रहेगी। कि जहन्नम व जन्नत इंसान व जिन्नात से भर जाए।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ⑩ يُنْۢبِتُ
لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ⑪

तर्जुमा : ''वही तुम्हारे फ़ायदे के लिए आसमान से पानी बरसाता है जिसे तुम पीते भी हो और उसी से उगे हुए दरख़्तों को तुम अपने जानवरों को चराते हो। (10) इसी से वह तुम्हारे लिए खेती और ज़ेतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, ध्यान धरने वाले लोगों के लिए तो उसमें बड़ा ही निशान है।'' (11)

पानी और फल अल्लाह की नेअ़मतें (आयत 10,11) : चौपाये और दूसरे जानवरों की पैदाइश का एह़सान बयान करके और एह़सान बयान फ़र्माता है कि ऊपर से पानी वही बरसाता है जिससे तुम आप फ़ायदा उठाते हो और तुम्हारे फ़ायदे के जानवर भी उससे फ़ायदा उठाते हैं मीठा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ ख़ुशगवार अच्छे ज़ायक़े का पानी तुम्हारे पीने के काम आता है उसका एह़सान न हो तो वह खारी और कड़वा बना दे उसी आबे बाराँ से दरख़्त उगते हैं और वह दरख़्त तुम्हारे जानवरों का चारा बनते हैं। सूम के मअ़नी चरने के हैं इसी वजह से इबिल साइमा चरने वाले ऊँटों को कहते हैं इब्ने माजा की ह़दीस में है कि हु़ज़ूर (ﷺ) ने सूरज निकलने से पहले चराने को मना फ़र्माया। (इब्ने माजा, किताबुत्तिजारत, बाबुस्सूम : 2206; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; नौफ़िल बिन अ़ब्दुल मलिक रावी मस्तूर है। मुस्नद अबी यअ़ला : 541, 541) फिर उसकी क़ुदरत देखो कि एक ही पानी से मुख़्तलिफ़ मज़े के, मुख़्तलिफ़ शक्लो सूरत के, मुख़्तलिफ़ ख़ुश्बू के त़रह़ त़रह़ के फल फूल वह तुम्हारे लिए पैदा करता है पस यह सब निशानियाँ किसी भी शख़्स को अल्लाह तआ़ला की वह़्दानियत जानने के लिए काफ़ी हैं। उसी का बयान और आयतों में इस त़रह़ हुआ है कि आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ बादलों से पानी बरसाने वाला उनसे हरे भरे बाग़ात पैदा करने वाला जिनके पैदा करने से तुम आ़जिज़ थे, अल्लाह ही है उसके साथ और कोई मअ़बूद नहीं फिर भी लोग ह़क़ से इधर उधर हो रहे हैं। (27/नम्ल : 60)

***

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
﴿۱۴﴾ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵﴾
وَعَلٰمٰتٍ ۗ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸﴾

तर्जुमा : "उसी ने रात दिन और सूरज चाँद को तुम्हारे काम में लगा रखा है और सितारे भी उसी के हुक्म के मातहत हैं यक़ीनन इसमें अक़्लमंद लोगों के लिए कई एक निशानियाँ मौजूद हैं। (12) और भी बहुत सी चीज़ें तरह तरह के रंग रूप की उसने तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कर रखी हैं, नसीहत क़बूल करने वालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी है। (13) दरिया भी उसी ने तुम्हारे बस में कर दिए हैं कि तुम उसमें से निकला हुआ ताज़ा गोश्त खाओ। और उसमें से अपने पहनने के ज़ेवरात निकाल सको तो तू देखेगा कि कश्तियाँ उसमें पानी चीरती हुई हैं और इसलिए भी कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और हो सकता है कि तुम शुक्रगुज़ारी भी करो। (14) उसी ने ज़मीन में पहाड़ गाड़ दिए हैं ताकि तुम्हें हिला न दे और नहरें और राहें बना दीं ताकि तुम मंज़िले मक़्सूद को पहुँचो। (15) और भी बहुत सी निशानियाँ मुक़र्रर फ़र्माईं सितारों से भी लोग राह हासिल करते हैं। (16) तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम बिलकुल नहीं सोचते। (17) अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों की गिनती करना चाहो तो तुम उसे भी पूरा नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।" (18)

चाँद, सूरज और सितारे अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियाँ हैं (आयत 12-18) : अल्लाह तआला अपनी और नेअ़मतें याद दिलाता है कि दिन रात बराबर तुम्हारे फ़ायदे के लिए आते जाते हैं सूरज चाँद गर्दिश में हैं सितारे चमक-चमककर तुम्हें रोशनी पहुँचा रहे हैं हर एक का एक ऐसा सहीह अंदाज़ा अल्लाह

तआला ने मुक़र्रर कर रखा है जिससे वह न इधर उधर हों, न तुम्हें कोई नुक़्सान हो हर एक रब की क़ुदरत में और इसके ग़ल्बे तले है। उसने छः दिन में आसमान ज़मीन पैदा किए फिर अर्श पर मुस्तवी हुआ। दिन रात बराबर पे दर पे आते रहते हैं। सूरज चाँद सितारे उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं। ख़ल्क़ व अम्र का मालिक वही है। वह रब्बुल आलमीन बड़ी बरकतों वाला है जो सोच समझ रखता हो उसके लिए तो इसमें अल्लाह तआला की क़ुदरत व सल्तनत की बड़ी निशानियाँ हैं। उन आसमानी चीज़ों के बाद अब तुम ज़मीनी चीज़ें देखो कि हैवान, कान, नबातात, जमादात, वग़ैरह मुख़्तलिफ़ रंग रूप की चीज़ें बेशुमार फ़वाइद की चीज़ें उसी ने तुम्हारे लिए ज़मीन पर पैदा कर रखी हैं जो लोग अल्लाह की नेअमतों पर ग़ौर करें और क़द्र करें उनके लिए तो यह ज़बरदस्त निशानी है।

समुन्द्र से लोगों के लिए फ़वाइद : अल्लाह तआला अपनी और मेहरबानी जताता है कि समुन्द्र पर दरिया पर उसने तुम्हें क़ाबिज़ कर दिया बावजूद अपनी गहराई के और अपनी मौजों के वह तुम्हारे ताबेअ है तुम्हारी कश्तियाँ उसमें चलती हैं उसी तरह उसमें से मछलियाँ निकालकर उनके तरोताज़ा गोश्त तुम खाते हो, मछली हिल्लत की हालत में एहराम की हालत में, ज़िन्दा हो या मुर्दा हो, अल्लाह की तरफ़ से हलाल है लूअ लूअ और जवाहिर उसने तुम्हारे लिए उसमें पैदा किए हैं। जिन्हें तुम सहूलियत से निकाल लेते हो और बतौर ज़ेवर के अपने काम में लाते हो फिर उसमें कश्तियाँ हवाओं को हटाती पानी को चीरती अपने सीनों के बल पर तैरती चली जाती हैं। सबसे पहले हज़रत नूह (عليه السلام) कश्ती में सवार हुए उनको कश्ती बनाना परवरदिगारे आलम ने सिखाया। फिर लोग बराबर बनाते चले आए और उन पर तरी के लम्बे लम्बे सफ़र तै होने लगे उस पार की चीज़ें इस पार और इस पार की चीज़ें उस पार जाने लगीं। इसी का बयान इसमें है कि तुम अल्लाह का फ़ज़्ल यानी अपनी रोज़ी तिजारत के ज़रिये ढूँढ़ो और उसकी नेअमत व एहसान का शुक्र मानो और क़द्रदानी करो। मुस्नदे बज़्ज़ार में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि अल्लाह तआला ने मग़रिबी दरिया से कहा कि मैं अपने बन्दों को तुझमें सवार करने वाला हूँ तू उनके साथ क्या करेगा? उसने कहा डुबा दूँगा। फ़र्माया तेरी तेज़ी तेरे किनारों पर है और उन्हें मैं अपने हाथ में ले चलूँगा तुझे मैंने ज़ेवर और शिकार से महरूम किया। फिर मश्रिक़ी समुन्द्र से यही बात कही। उसने कहा, मैं अपने हाथों पर उन्हें उठाऊँगा और जिस तरह माँ अपने बच्चे की ख़बरगिरी करती है मैं उनकी करता रहूँगा पस उसे अल्लाह तआला ने ज़ेवर भी दिए और शिकार भी। (हैसमी मज्मउज़्ज़वाइद : 5/282 में कहते हैं कि इसमें अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन उमर उमरी मतरूक रावी है। इसके अलावा यह रिवायत अलइललुल उल मुत्नाहिया : 1/49; मीज़ानुल एअतिदाल : 4/295; तारीख़े बग़दाद : 10/233 में ज़िक्र हुई है।) इस हदीस का रावी सिर्फ़ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह है और वह मुंकरुल हदीस है अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से भी यह रिवायत मरफ़ूअन मरवी है।

इसके बाद ज़मीन का ज़िक्र हो रहा है कि उसके ठहराने और हिलने डुलने से बचाने के लिए इस पर मज़बूत और वज़नी पहाड़ जमा दिए कि इसके हिलने की वजह से इस पर रहने वालों की ज़िन्दगी दुश्वार न हो

जाए। जैसे फ़र्मान है (وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا) (79/नाज़िआत : 32) हज़रत हसन (रह़.) का क़ौल है कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन बनाई तो वह हिल रही थी यहाँ तक कि फ़रिश्तों ने कहा, इस पर तो कोई ठहर ही नहीं सकता, सुबह देखते हैं कि पहाड़ उस पर गाड़ दिए गए हैं और उसका हिलना रुक गया है पस फ़रिश्तों को यह भी मालूम न हो सका कि पहाड़ किस चीज़ से पैदा किए गए हैं। क़ैस बिन उ़बादा (रह़.) से भी यही मरवी है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ज़मीन ने कहा कि तुम मुझ पर बनी आदम को बसाता है जो मेरी पीठ पर गुनाह करेंगे और ख़बासत फैलाएँगे वह काँपने लगी पस अल्लाह तआला ने पहाड़ों को उस पर जमा दिया जिन्हें तुम देख रहे हो और कुछ को देखते ही नहीं हो यह भी उसका करम है कि उसने नहरें चश्मे और दरिया चारों तरफ़ बहा दिए कोई तेज़ है कोई मंद कोई लम्बा है कोई मुख़्तसर। कभी कम पानी है कभी ज़्यादा कभी बिलकुल सूखा पड़ा है पहाड़ों पर जंगलों में रेते में, पत्थरों में बराबर यह चश्मे बहते रहते हैं और रेल पेल कर देते हैं यह सब उसका फ़ज़्लो करम लुत्फ़ो रह़म है, न उसके सिवा कोई परवरदिगार न उसके सिवा कोई लायक़े इबादत वही रब है वही मअ़बूद है उसी ने रास्ते बना दिए हैं ख़ुश्की में तरी में पहाड़ में, जंगल में, बस्ती में उजाड़ में हर जगह उसके फ़ज़्लो करम से रास्ते मौजूद हैं कि इधर से उधर लोग आ जा सकें कोई तंग रास्ता है, कोई वसीअ़, कोई आसान, कोई सख़्त और भी अ़लामतें उसने मुक़र्रर कर दीं जैसे पहाड़ हैं, टीले हैं वग़ैरह जिनसे तरी ख़ुश्की के राहगीर व मुसाफ़िर राह मालूम कर लेते हैं और भटके हुए सीधे रास्ते लग जाते हैं सितारे भी रहनुमाई के लिए हैं, रात के अंधेरे में उन ही से रास्ता और दिशाएँ मालूम होती है। इमाम मालिक (रह़.) से मरवी है कि नुजूम से मुराद पहाड़ हैं।

फिर अपनी अ़ज़्मत व किब्रियाई जताता है और फ़र्माता है कि लायक़े इबादत उसके सिवा और कोई नहीं। अल्लाह के सिवा जिन जिनकी लोग इबादत करते हैं वह सिर्फ़ बेबस हैं किसी चीज़ के पैदा करने की उन्हें ताक़त नहीं और अल्लाह तआला सबका ख़ालिक़ है ज़ाहिर है कि ख़ालिक़ और ग़ैर ख़ालिक़ यक्साँ नहीं फिर दोनों की इबादत करना किस क़द्र सितम है? इतना भी बेहोश हो जाना शायाने इंसानियत नहीं फिर अपनी नेअ़मतों की फ़रावानी और कसरत बयान फ़र्माता है कि तुम्हारी गिनती में भी तो नहीं आ सकतीं इतनी नेअ़मतें मैंने तुम्हें दे रखी हैं यह भी तुम्हारी ताक़त से बाहर है कि मेरी नेअ़मतों की गिनती कर सको, अल्लाह तआला तुम्हारी ख़ताओं से दरगुज़र करता रहता है अगर अपनी तमामतर नेअ़मतों का शुक्र भी तुमसे तलब करे तो तुम्हारे बस का नहीं अगर उन नेअ़मतों के बदले तुमसे चाहे तो तुम्हारी ताक़त से बाहर है सुनो! अगर वह तुम सबको अ़ज़ाब करे तो भी वह ज़ालिम नहीं होने का लेकिन वह ग़फ़ूर्रुर्रह़ीम अल्लाह तआला तुम्हारी बुराइयों को माफ़ कर देता है तुम्हारी गलतियों से तजावुज़ कर लेता है तौबा रुजूअ़ इताअ़त और तलबे रज़ामंदी के साथ जो गुनाह हो जाएँ उनसे चश्मपोशी कर लेता है, बड़ा ही रह़ीम है तौबा के बाद अ़ज़ाब नहीं करता।

***

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ⑲ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ
شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ⑳ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ㉑ اِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ㉒
لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ㉓

तर्जुमा : ''जो कुछ तुम छुपाओ और ज़ाहिर करो अल्लाह सबकुछ जानता है। (19) जिन जिनको यह लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह ख़ुद पैदा किए गए हैं। (20) मुर्दे हैं ज़िन्दा नहीं, इन्हें तो यह भी शऊर नहीं कि कब उठाए जाएँगे। (21) तुम सबका मअबूद अल्लाह तआला अकेला है आख़िरत पर ईमान न रखने वालों के दिल मुंकिर हैं और वह ख़ुद घमण्ड से भरे हुए हैं। (22) बेशक व शुब्हा अल्लाह तआला हर उस चीज़ को जिसे छुपाएँ और जिसे ज़ाहिर करें बख़ूबी जानता है वह गुरूर करने वालों को पसंद नहीं फ़र्माता।'' (23)

हर चीज़ का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है (आयत 19-23) : छुपा खुला सब कुछ अल्लाह जानता है दोनों उस पर यक्साँ हर आमिल को उसके अमल का बदला क़यामत के दिन देगा, नेकों को जज़ा बुरों को सज़ा। जिन मअबूदाने बातिल से लोग अपनी हाजतें तलब करते हैं वह किसी चीज़ के ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) नहीं बल्कि वह ख़ुद मख़्लूक़ (पैदा किये गए) हैं जैसे कि ख़लीलुर्रहमान हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था कि (أَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ)(وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ) (37/साफ़्फ़ात : 95, 96) तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें ख़ुद बनाते हो, दरहक़ीक़त तुम्हारा और तुम्हारे कामों का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह सुब्हानहू व तआला है। बल्कि तुम्हारे मअबूद जो अल्लाह के सिवा हैं जमादात हैं, बेरूह चीज़ें हैं, सुनते देखते और शऊर रखते नहीं उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि क़यामत कब होगी? तो इनसे नफ़ा की उम्मीद और सवाब की तवक़्क़ा कैसे रखते हैं? यह तो बस अल्लाह से होनी चाहिए जो हर चीज़ का आलिम और तमाम कायनात का ख़ालिक़ है।

फ़क़त अल्लाह तआला ही इबादत के लायक़ है : अल्लाह तआला ही मअबूदे बरहक़ है उसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं। वाहिद है, अहद है, फ़र्द है, समद है काफ़िरों के दिल भली बात से इंकारी हैं वह इस हक़ कलिमे को सुनकर सख़्त हैरतज़दा हो जाते हैं वाहिद का ज़िक्र सुनकर उनके दिल मुरझा जाते हैं, हाँ! औरों का ज़िक्र हो तो खुल जाते हैं यह अल्लाह तआला की इबादत से मग़रूर हैं न उनके दिल में ईमान न इबादत के आदी। ऐसे लोग ज़िल्लत के साथ जहन्नम में दाख़िल होंगे यक़ीनन अल्लाह तआला हर छुपे खुले का आलिम है हर अमल पर जज़ा और सज़ा देगा वह मग़रूर लोगों से बेज़ार है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوٓا۟ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ
كَامِلَةً يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ ٱلَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''इनसे जब पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है तो जवाब देते हैं कि अगलों की कहानियाँ हैं। (24) इसी का नतीजा होगा कि क़यामत के दिन यह लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी हिस्सेदार होंगे जिन्हें बेइल्मी से गुमराह करते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।'' (25)

मुंकिरीने क़यामत का तज़्किरा (आयत 24, 25) : इन क़यामत के इंकार करने वालों से जब सवाल किया जाए कि अल्लाह तआला ने अपने कलाम में क्या नाज़िल किया? तो असल जवाब से हटकर बक देते हैं कि सिवाए गुज़रे हुए अफ़सानों के क्या रखा है? वही लिख लिए हैं और सुबह शाम दोहरा रहे हैं पस रसूल (ﷺ) पर इफ़्तिरा बाँधते हैं कभी कुछ कहते हैं कभी उसके ख़िलाफ़ और कुछ कहने लगते हैं दरअसल किसी बात पर जम ही नहीं सकते और यह बहुत बड़ी दलील है उनके तमाम क़ौलों के झूठे होने की। हर एक जो हक़ से हट जाए वह यूँ ही मारा मारा बहका बहका फिरता है। कभी हुज़ूर (ﷺ) को जादूगर कहते हैं, कभी शायर, कभी काहिन, कभी मज्नून। फिर इनके बूढ़े गुरू वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी ने इन्हें बड़े ग़ौरो ख़ौज़ के बाद कहा कि सब मिलकर इस कलाम को मुअस्सर जादू कहा करो। इनके इस क़ौल का नतीजा बुरा होगा और हमने इन्हें इस राह पर इसलिए लगा दिया है कि यह अपने पूरे गुनाहों के साथ इनके भी कुछ गुनाह अपने ऊपर लादें जो इनके मुक़ल्लिदीन हैं और इनके पीछे पीछे चल रहे हैं। हदीस शरीफ़ में है कि ''हिदायत की दावत देने वाले को अपने अज्र के साथ अपने मुत्तबेअ लोगों का अज्र भी मिलता है लेकिन उनके अज्र कम नहीं होते और बुराई की तरफ़ बुलाने वालों को उनके मानने वालों के गुनाह भी मिलते हैं लेकिन मानने वालों के गुनाह कम होकर नहीं।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब मन सन्ना हसनतन औ सय्यिअतन वमन दआ इला हुदन औ ज़लालह् : 2674; अबूदाऊद : 4609; तिर्मिज़ी : 2674; इब्ने माजा : 206; इब्ने हिब्बान : 112; दारमी : 1/141; अहमद : 2/397; मुस्नदे अबी यअला : 6489; मुस्नदे अबी अवाना : 5823) क़ुरआने करीम की और आयत में है (وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ) (29/अन्कबूत : 13) यह अपने गुनाहों के बोझ के साथ ही साथ और बोझ भी उठाएँगे और इनके इफ़्तिरा का सवाल इनसे क़यामत के दिन ज़रूर होना है पस मानने वालों के बोझ भले इनकी गर्दनों पर हैं लेकिन वह भी हल्के नहीं होंगे।

***

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ
فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ
اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ
الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : "इनसे पहले के लोगों ने भी मकर किया था आख़िरकार हुक्मे इलाही उनकी इमारतों की जड़ों से पहुँचा और उनके सरों पर उनकी छतें ऊपर से गिर पड़ीं और उनके पास अज़ाब वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ख़्वाबो ख़्याल भी न था। (26) फिर क़यामत वाले दिन भी अल्लाह तआला इन्हें रुस्वा करेगा और कहेगा कि मेरे वह शरीक कहाँ हैं जिनके बारे में तुम लड़ते झगड़ते रहते थे जिन्हें इल्म दिया गया था वह जवाब देंगे कि आज तो काफ़िरों को रुस्वाई और बुराई चिमट गई।" (27)

नमरूद वग़ैरह का अंजाम (आयत 26, 27) : कुछ तो कहते हैं कि इस मक्कार से मुराद नमरूद है जिसने बालाख़ाना तैयार किया था सबसे पहले सबसे बड़ी सरकशी उसी ने ज़मीन में की। अल्लाह तआला ने उसे हलाक करने को मच्छर भेजा जो उसके नथुने में घुस गया और चार सौ साल तक उसका भेजा चाटता रहा। उस मुद्दत में उसे उस वक़्त क़द्रे सकून मालूम होता था जब उसके सर पर हथोड़े मारे जाएँ। ख़ूब दोनों हाथों के ज़ोर से उसके सर पर हथोड़े पड़ते रहते थे उसने चार सौ साल तक सल्तनत भी की थी और ख़ूब फ़साद फैलाया था। कुछ कहते हैं कि इससे मुराद बुख़्ते नस्सर है यह भी बड़ा मक्कार था लेकिन अल्लाह का कोई नुक़सान पहुँचा सकता है भले उसका मकर पहाड़ों को भी अपनी जगह से हिला देने वाला हो। कुछ कहते हैं यह तो काफ़िरों और मुश्रिकों ने अल्लाह के साथ जो ग़ैरों की इबादत की उनके अमल की बर्बादी की मिसाल है। जैसे हज़रत नूह (عليه السلام) ने फ़र्माया था (وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا) (71/नूह : 22) इन काफ़िरों ने बड़ा ही मकर किया हर हीले से लोगों को गुमराह किया हर वसीले से उन्हें शिर्क पर आमादा किया चुनाँचे इनके चेले क़यामत के दिन इनसे कहेंगे कि तुम्हारा रात दिन का मकर कि हमसे कुफ़्रो शिर्क करने को कहना.. आख़िर तक। (34/सबा : 33) इनकी इमारत की जड़ और बुनियाद से अज़ाबे इलाही आया यानी बिलकुल ही खोद दिया असल से काट दिया। जैसे फ़र्मान है जब लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं तो अल्लाह तआला उसे बुझा देता है। (5/माइदा : 64) और फ़र्मान है इनके पास अल्लाह ऐसी जगह से आया जहाँ का इन्हें ख़्याल भी न था। इनके दिलों में ऐसा डर डाल दिया कि यह अपने हाथों अपने मकानात तबाह करने लगे और दूसरी जानिब से मोमिनों के हाथों मिटे। अक़्लमंदो! इब्रत हासिल करो। (59/हश्र : 2) यहाँ फ़र्माया कि अल्लाह इनकी इमारत की बुनियाद से

आ गया और इन पर ऊपर से छत आ पड़ी और नादानिस्ता जगह से इन पर अ़ज़ाब उतर आया। क़यामत के दिन की रुस्वाई और फ़ज़ीहत अभी बाक़ी है उस वक़्त छुपा हुआ सब खुल जाएगा अंदर का सब बाहर आ जाएगा सारा मामला तश्त अज़्बाम हो जाएगा। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर ग़द्दार के लिए उसके पास ही झण्डा गाड़ दिया जाएगा जो उसके ग़दर के मुताबिक़ होगा और मशहूर कर दिया जाएगा कि फ़लाँ का यह ग़दर है जो फ़लाँ का लड़का था।" (सहीह बुख़ारी, बाब मा युदअन्नासा बि आब.इहिम : 6177; सहीह मुस्लिम : 1735; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5342) इसी तरह उन लोगों को भी मैदाने महशर में सबके सामने रुस्वा किया जाएगा। उनसे उनका परवरदिगार डाँट डपट करके पूछेगा कि जिनकी हिमायत में तुम मेरे बन्दों से उलझते रहते थे वह आज कहाँ हैं? तुम्हारी मदद क्यूँ नहीं करते? आज बेयारो मददगार क्यूँ हो? यह चुप हो जाएँगे, क्या जवाब दें, लाचार हो जाएँगे, कौनसी झूठी दलील पेश करें? उस वक़्त उलमा-ए-किराम जो दुनिया और आख़िरत में अल्लाह के और मख़्लूक़ के पास इज़्ज़त रखते हैं, जवाब देंगे कि रुस्वाई और अ़ज़ाब आज काफ़िरों को घेरे हुए हैं और इनके झूठे मअ़बूदान इनसे चेहरा फेरे हुए हैं।

***

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ
بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ جَنّٰتُ
عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "यह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे, फ़रिश्ते जब इनकी जान क़ब्ज़ करने लगे उस वक़्त इन्होंने सुलह की बात डाली कि हम बुराई नहीं करते थे क्यूँ नहीं? अल्लाह ख़ूब जानने वाला है जो कुछ तुम करते थे। (28) पस अब तो हमेशगी के तौर पर तुम जहन्नम के दरवाज़ों से जहन्नम में जाओ। तो क्या ही बुरा ठिकाना है गुरूर करने वालों का। (29) परहेज़गारों से पूछा

जाए कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है तो वह जवाब देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भलाई है और यक़ीनन आख़िरत का घर तो बहुत ही बेहतर है क्या ही ख़ूब परहेज़गारों का घर है। (30) हमेशगी वाले बाग़ात जहाँ वह जाएँगे जिनके नीचे नहरें लहरें ले रही हैं जो कुछ यह तलब करें वहाँ उनके लिए मौजूद है परहेज़गारों को अल्लाह तआला इसी तरह बदले अता फ़र्माता है। (31) इनकी जानें फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वह पाक साफ़ हों। कहते हैं कि तुम्हारे लिए सलामती ही सलामती है जाओ! जन्नत में अपने इन आमाल के बदले जो तुम करते थे।"(32)

मौत के वक़्त ज़ालिमों की कैफ़ियत (आयत 28-32) : मुश्रिकीन की जान निकलने के वक़्त का हाल बयान हो रहा है कि जब फ़रिश्ते उनकी जान लेने के लिए आते हैं तो यह उस वक़्त सुनने अमल करने और मान लेने का इक़रार करते हैं, साथ ही अपने करतूत छुपाते हुए अपनी बेगुनाही बयान करते हैं क़यामत के दिन अल्लाह के सामने भी क़समें खाकर अपना मुश्रिक न होना बयान करेंगे, जिस तरह दुनिया में अपनी बेगुनाही पर लोगों के सामने झूठी क़समें खाते थे उन्हें जवाब मिलेगा कि झूठे हो बदआमालियाँ जी खोलकर कर चुके हो, अल्लाह ग़ाफ़िल नहीं जो बातों में आ जाए हर एक अमल उस पर रोशन है अब अपने करतूतों का ख़मियाज़ा भुगतो और जहन्नम के दरवाज़ों से जाकर हमेशा उसी बुरी जगह में पड़े रहो। मक़ाम बुरा, ज़िल्लत व रुस्वाई वाला यह है बदला अल्लाह की आयतों से तकब्बुर करने का और उसके रसूलों की इत्तिबाअ से जी चुराने का। मरते ही उन की रूहें जहन्नम रसीद हुई और जिस्मों पर क़ब्रों में जहन्नम की गर्मी और उसकी लपक आने लगी, क़यामत के दिन रूहें जिस्मों से मिलकर नारे जहन्नम में गई अब न मौत न तख़्फ़ीफ़। जैसे फ़र्माने बारी तआला है (اَلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا) (40/मोमिन : 46) यह दोज़ख़ की आग के सामने हर सुबह शाम लाए जाते हैं क़यामत के क़ायम होते ही ऐ आले फ़िरऔन! तुम सख़्त अज़ाब में चले जाओ।

नेक लोगों का बेहतरीन अंजाम : बुरों के हालात बयान करके नेकों के हालात जो उनके बिलकुल बरअक्स हैं बयान फ़र्मा रहा है बुरे लोगों का जवाब तो यह था कि अल्लाह की उतारी हुई किताब सिर्फ़ अगलों के फ़साने की नक़्ल है लेकिन यह नेक लोग जवाब देते हैं कि वह सरासर बरकत व रहमत है जो भी उसे माने और उस पर अमल करे वह बरकत व रहमत से मालामाल हो जाए। फिर ख़बर देता है कि मैं अपने रसूलों से वादा कर चुका हूँ कि नेकों को दोनों जहान की ख़ुशी हासिल होगी जैसे फ़र्मान है कि जो शख़्स नेक अमल करे ख़्वाह मर्द हो ख़्वाह औरत, हाँ! यह ज़रूरी है कि हो मोमिन तो हम उसे बड़ी पाक ज़िन्दगी अता फ़र्माएँगे और उसके बेहतरीन अमल का बदला भी ज़रूर देंगे। (16/नहल : 97) दोनों जहाँ में वह जज़ा पाएगा याद रहे कि दारे आख़िरत दारे दुनिया से बहुत ही अफ़ज़ल व अहसन है वहाँ की जज़ा निहायत आला और दाइमी है जैसे क़ारून के माल की तमन्ना करने वालों से उलमा-ए-किराम ने फ़र्माया था कि अल्लाह का सवाब बेहतर है.. आख़िर तक। कुरआन फ़र्माता है (وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ) (3/आले इमरान : 198) अल्लाह के पास की चीज़ें नेककारों के लिए बहुत आला हैं और जगह है आख़िरत ख़ैर और बाक़ी है। अपने नबी (ﷺ) से ख़िताब करके फ़र्माया, तेरे लिए आख़िरत दुनिया से आला है फिर फ़र्माता है दारे आख़िरत मुत्तक़ियों के लिए बहुत ही

अच्छा है जन्नाते अ़द्न बदल है (दारुल मुत्तक़ीन) का यानी उनके लिए आख़िरत में जन्नते अ़द्न है जहाँ वह रहेंगे जिसके दरख़्तों और महलों के नीचे से बराबर चश्मे हर वक़्त जारी हैं जो चाहेंगे पाएँगे आँखों की हर ठण्डक मौजूद होगी और वह भी हमेशगी वाली। ह़दीस में है "अहले जन्नत बैठे होंगे सर पर बादल उठेगा और जो ख़्वाहिश यह करेंगे वह उन पर बरसाएगा यहाँ तक कि कोई कहेगा उससे हमउम्र कुँवारियाँ बरसें तो यह भी होगा।" परहेज़गार तक़्वा शेआ़र लोगों के बदले अल्लाह ऐसे ही देता है जो ईमान वाले हों, डरने वाले हों और नेक अ़मल हों उनके इंतिक़ाल के वक़्त यह शिर्क की गंदगी से पाक होते हैं फ़रिश्ते आते हैं सलाम करते हैं जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं। जैसे फ़र्माने आ़लीशान है (إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ) (ह़ामीम सज्दा : 30) जिन लोगों ने अल्लाह को रब माना फिर उस पर जमे रहे, उनके पास फ़रिश्ते आते हैं और कहते हैं तुम डर ग़म न रखो, जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनो जिसका तुमसे वादा था हम दुनिया आख़िरत में तुम्हारे वाली हैं जो तुम चाहोगे पाओगे जो मांगोगे मिलेगा तुम तो अल्लाह ग़फ़ूरुर रह़ीम के मेहमान हो। इस मज़्मून की ह़दीसें हम आयत (يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ) (14/इब्राहीम : 27) की तफ़्सीर में बयान कर चुके हैं।

***

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

तर्जुमा : "क्या यह इसी बात का इंतिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या तेरे रब का हुक्म आ जाए? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया था जो इनसे पहले थे उन पर अल्लाह तआ़ला ने कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे। (33) पस उनके बुरे आ़माल के नतीजे उन्हें मिल गए और जिसकी हँसी उड़ाते थे वह उन पर उलट पड़ा।" (34)

मुश्रिकीन किस चीज़ का इंतिज़ार कर रहे हैं (आयत 33, 34) : अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों को डाँटते हुए फ़र्माता है कि इन्हें तो उन फ़रिश्तों का इंतिज़ार है जो इनकी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिए आएँगे या क़यामत का इंतिज़ार है और उसके होलनाकियों व अह़वाल का। इन जैसे इनसे पहले के मुश्रिकीन का भी यही वतीरा (आ़दत) रही यहाँ तक कि उन पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ पड़े, अल्लाह तआ़ला ने अपनी हुज्जत पूरी करके, उनके उ़ज़्र ख़त्म करके, किताबें उतारकर, रसूल भेजकर, फिर भी इनके इंकार के इसरार पर इन पर अ़ज़ाब उतारे। अल्लाह के रसूलों की धमकियों को मज़ाक़ में उड़ाने के वबाल में घिर गए, अल्लाह ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि ख़ुद इन्होंने अपना बिगाड़ किया, इसीलिए इनसे क़यामत के दिन कहा जाएगा कि यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते रहे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا
حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا
الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي
الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "मुश्रिक लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बाप दादे उसके सिवा किसी और की इबादत ही न करते, न उसके फ़र्मान के बग़ैर किसी चीज़ को हराम करते। यही फ़ेअल इनसे पहले के लोगों का रहा। तो रसूलों पर तो सिर्फ़ खुल्लम खुल्ला पैग़ाम का पहुँचा देना है। (35) हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि लोगों सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करते रहो और उसके सिवा तमाम मअबूदों से बचो पस कुछ लोगों को तो अल्लाह तआला ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही साबित हो चुकी तुम आप ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा कुछ हुआ? (36) भले तू इनकी हिदायत का लालची रहे लेकिन अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह कर दे और न उनका कोई मददगार होता है।" (37)

मुश्रिकीन का मशिय्यते इलाही से ग़लत इस्तिदलाल (आयत 35, 37) : मुश्रिकों की उल्टी खोपड़ी देखिए गुनाह करें। शिर्क पर अड़ें। हलाल को हराम करें। जैसे जानवरों को अपने मअबूदों के नाम का करना और तक़्दीर को हुज्जत बनाएँ और कहें कि अगर अल्लाह को हमारे और हमारे बड़ों के यह काम बुरे लगते तो हमें उसी वक़्त सज़ा मिलती। उन्हें जवाब दिया जाता है कि यह हमारा दस्तूर नहीं, हमें तुम्हारे यह काम सख़्त नापसंद हैं और इनकी नापसंदीदगी का इज़्हार हम अपने सच्चे पैग़म्बरों की जुबानी कर चुके, सख़्त ताकीदी तौर पर तुम्हें इनसे रोक चुके, हर बस्ती में हर जमाअत, हर शहर में अपने पैग़म्बर भेजे, सबने अपना फ़र्ज़ अदा किया, बंदगाने इलाही में अल्लाह के अहकाम की तब्लीग़ साफ़-साफ़ कर दी, सबसे कह दिया कि एक अल्लाह तआला की इबादत करो उसके सिवा दूसरों को न पूजो। सबसे पहले जब शिर्क का ज़हूर ज़मीन पर हुआ तो अल्लाह तआला ने हज़रत नूह (عليه السلام) को ख़लअते नबुव्वत देकर भेजा और सबसे आख़िर में

ख़त्मुल मुर्सलीन का लक़ब देकर रहमतुल लिल आलमीन को अपना नबी बनाया जिनकी दावत तमाम जिन्न व इंस के लिए ज़मीन के इस कोने से उस कोने तक थी। जैसे फ़र्मान है (وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ) (21/अम्बिया : 25) यानी तुझसे पहले जितने रसूल भेजे सबकी तरफ़ वही नाज़िल फ़र्माई कि मेरे सिवा कोई और मअ़बूद नहीं पस तुम सिर्फ़ मेरी ही इबादत करो। और आयत में है कि तुझसे पहले के रसूलों से पूछ ले कि क्या हमने इनके लिए सिवाए अपने और मअ़बूद मुक़र्रर किए थे जिनकी वह इबादत करते हों? (43/ज़ुख़रुफ़ : 45) यहाँ भी फ़र्माया कि हर उम्मत के रसूलों की दावते तौहीद की तालीम और शिर्क से बेज़ारी ही रही। प ा मुश्रिकीन को अपने शिर्क पर अल्लाह की चाहत पर दलील लाना कैसे मुनासिब मालूम होता है? अल्लाह तआ़ला की चाहत उसकी शरीअ़त से मालूम होती है और वह शुरुआते शिर्क की बेख़कनी और तौहीद की मज़बूती की है तमाम रसूलों की ज़ुबानी उसने यही पैग़ाम भेजा हाँ उन्हें शिर्क करते हुए छोड़ देना यह और बात है जो क़ाबिले हुज्जत नहीं। अल्लाह ने जहन्नम और जहन्नमी भी तो बनाए हैं, शैतान, काफ़िर सब उसी के पैदा किए हुए हैं, वह अपने बन्दों से उनके कुफ़्र पर राज़ी नहीं इसमें भी उसकी हिक्मते ताम्मा और हुज्जते बालिग़ा है, फिर फ़र्माता है कि रसूलों के आगाह कर देने के बाद दुनियावी सज़ाएँ भी काफ़िरों और मुश्रिकों पर आईं, कुछ को हिदायत भी हुई, कुछ अपनी गुमराही में ही बहकते रहे। तुम रसूलों के मुख़ालिफ़ीन का अल्लाह के साथ शिर्क करने वालों का अंजाम ज़मीन में चल फिरकर आप देख लो। गुज़िश्ता वाक़ियात का जिन्हें इल्म है उनसे पूछो कि किस तरह अ़ज़ाबे इलाही ने मुश्रिकों को ग़ारत किया, उस वक़्त के काफ़िरों के लिए उन काफ़िरों में मिसालें और इब्रतें मौजूद हैं देख लो अल्लाह के इंकार का नतीजा कितना मुहलिक हुआ? फिर अपने रसूल (ﷺ) से फ़र्माता है कि आप इनकी हिदायत के कैसे ही हरीस हों लेकिन बेफ़ायदा है रब इनकी गुमराहियों की वजह से इन्हें रहमत की दर से दूर डाल चुका है। जैसे फ़र्मान है (وَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ فِتْنَتَهُۥ فَلَن تَمْلِكَ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا) (5/माइदा : 41) जिसे अल्लाह ही फ़ित्ना में डालना चाहे तो उसे तू कुछ भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकता। हज़रत नूह (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था अगर अल्लाह का इरादा तुम्हें बहकाने का है तो मेरी नसीहत और ख़ैरख़्वाही तुम्हारे लिए महज़ बेसूद है। इस आयत में भी फ़र्माता है कि अल्लाह के गुमराह किए हुए को राहे रास्त पर कोई नहीं ला सकता। जैसे और आयत में है कि जिसे अल्लाह तआ़ला बहका दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। वह तो दिन ब दिन अपनी सरकशी और बहकावे में बढ़ते रहते हैं। (7/आराफ़ : 186) फ़र्मान है (إِنَّ ٱلَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ) (10/यूनुस : 96) जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है उन्हें ईमान नसीब नहीं होने का, भले तमाम निशानियाँ उनके पास आ जाएँ यहाँ तक कि अ़ज़ाबे अलीम का मुँह देख लें पस अल्लाह यानी उसकी शान उसका अम्र। इसलिए कि जो वह चाहता है होता है जो नहीं चाहता नहीं होता। पस फ़र्माता है कि वह अपने गुमराह किए हुए को राह नहीं दिखाता, न कोई और उसकी रहबरी कर सकता है, न कोई उसकी मदद के लिए उठ सकता है कि अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके, ख़ल्क़ व अम्र अल्लाह तआ़ला ही का है वह रब्बुल आलमीन है उसकी ज़ात बाबरकत है, वही सच्चा मअ़बूद है।

***

وَاَقۡسَمُوۡا بِاللّٰهِ جَهۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ‌ۙ لَا يَبۡعَثُ اللّٰهُ مَنۡ يَّمُوۡتُ‌ؕ بَلٰى وَعۡدًا عَلَيۡهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣٨ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىۡ يَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ وَلِيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰذِبِيۡنَ‏ ۝٣٩ اِنَّمَا قَوۡلُنَا لِشَىۡءٍ اِذَاۤ اَرَدۡنٰهُ اَنۡ نَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ۝٤٠

तर्जुमा : ''बड़ी सख़्त सख़्त क़समें खा खाकर कहते हैं कि मुर्दों को अल्लाह ज़िन्दा नहीं करेगा। हाँ! ज़रूर ज़िन्दा करेगा यह तो उसका बरहक़ लाज़मी वादा है लेकिन अक्सर लोग बेइल्मी कर रहे हैं। (38) इसलिए भी कि यह लोग जिस चीज़ में इख़्तिलाफ़ करते थे उसे अल्लाह तआला साफ़ कर दे और इसलिए भी कि ख़ुद काफ़िर अपना झूठा होना जान लें। (39) हम जब किसी चीज़ का इरादा करें तो सिर्फ़ हमारा यह कह देना होता है कि हो जा, पस वह हो जाती है।'' (40)

क़यामत क़ायम करना अल्लाह तआला के लिए इंतिहाई आसान है (आयत 38-40) : चूँकि काफ़िर क़यामत के क़ाइल नहीं इसलिए दूसरों को भी इस अक़ीदे से हटाने के लिए वह पूरी कोशिश करते हैं ईमान फ़रोशी करके अल्लाह की ताकीदी क़समें खाकर कहते हैं कि अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा न करेगा, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि क़यामत ज़रूर आएगी, अल्लाह का यह वादा बरहक़ है लेकिन अक्सर लोग बवजह अपनी जिहालत और इल्म न रखने की वजह से रसूलों की मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की बातों को नहीं मानते और कुफ़्र के गढ़े में गिरते हैं फिर क़यामत के आने और जिस्मों के दोबारा ज़िन्दा हो जाने की कुछ हिक्मतें ज़ाहिर करता है जिनमें से एक यह है कि दुनियावी इख़्तिलाफ़ात में हक़ क्या था वह ज़ाहिर हो जाए, बुरों को सज़ा और नेकों को जज़ा मिले काफ़िरों का अपने अक़ीदे में अपने क़ौल में अपनी क़सम में झूठा होना खुल जाए। उस वक़्त सब देख लेंगे कि उन्हें धक्के दे कर जहन्नम मे झोंका जाएगा और कहा जाएगा कि यही है वह जहन्नम जिसका तुम इंकार करते रहे अब बतलाओ यह जादू है या तुम अंधे हो? इसमें अब पड़े रहो या हाय वाय करो सब बराबर है। आमाल का बदला भुगतना ज़रूरी है। फिर अपनी बेअंदाज़ा क़ुदरत का बयान फ़र्माता है कि जो वह चाहे उस पर क़ादिर है कोई बात उसे आजिज़ नहीं कर सकती कोई चीज़ उसके इख़्तियार से ख़ारिज नहीं वह जो करना चाहे फ़र्मा देता है कि हो जा उसी वक़्त वह काम हो जाता है क़यामत भी उसके फ़र्मान का अमल है जैसे फ़र्माया, एक आँख झपकने में उसका कहा हो जाएगा तुम सबका पैदा करना और मरने के बाद ज़िन्दा कर देना उस पर ऐसा ही है जैसे एक का। इधर कहा हो जा उधर हो गया, उसे तो दोबारा कहने और ताकीद करने की भी ज़रूरत नहीं उसके इरादा से मुराद जुदा नहीं। कोई नहीं जो उसके ख़िलाफ़ कर सके। जो उसके हुक्म के ख़िलाफ़ ज़ुबान हिला सके वह वाहिद व क़हहार है वह अज़्मतों और इज़्ज़तों वाला है, सल्तनत और जबरूत वाला है उसके सिवा न कोई मअबूद न हाकिम न रब न क़ादिर। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला का इर्शाद है कि इब्ने आदम मुझे गालियाँ देता है उसे ऐसा नहीं चाहिए था

वह मुझे झुठला रहा है हालाँकि यह भी उसे लायक़ न था, उसका झुठलाना तो यह है कि ताकीदी क़समें खा खा कर कहता है कि अल्लाह मुर्दों को फिर ज़िन्दा न करेगा मैं कहता हूँ यक़ीनन ज़िन्दा होंगे, यह बरहक़ वादा है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं और इसका मुझे गालियाँ देना यह है कि कहता है कि अल्लाह तीन में से तीसरा है। हालाँकि मैं अहद हूँ, मैं अल्लाह हूँ, मैं समद हूँ जिसका हम जिंस कोई और नहीं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, सूरत (कुल हुवल्लाहु अहद) : 4974) इब्ने अबी हातिम में तो यह हदीस मौक़ूफ़न मरवी है बुख़ारी व मुस्लिम में दूसरे लफ़्ज़ों के साथ मरफ़ूअन रिवायत भी आई है।

***

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَاَجْرُ
الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْــَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''जिन लोगों ने ज़ुल्म बर्दाश्त करने के बाद राहे इलाही में अपना देश छोड़ दिया है हम उन्हें बेहतर से बेहतर ठिकाना दुनिया में अता करेंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत ही बड़ा है काश कि लोग उससे वाक़िफ़ होते। (41) जिन्होंने दामने सब्र न छोड़ा और अपने पालने वाले ही पर भरोसा करते रहे। (42) तुझसे पहले भी हम इंसानों को ही भेजते रहे जिनकी जानिब वही उतारा करते थे पस तुम अगर नहीं जानते तो याद वालों से पूछ लो। (43) दलीलों और किताबों के साथ यह याद और किताब हमने तेरी तरफ़ उतारी है कि लोगों की जानिब फ़र्माया गया है तू इसे खोल खोलकर बयान कर दे शायद कि वह ध्यान धरें।'' (44)

अल्लाह तआला के रास्ते में हिज्रत करने की फ़ज़ीलत (आयत 41-44) : जो लोग राहे इलाही में अपना वतन छोड़ करके, दोस्त अहबाब रिश्ते कुंबे व्यापार तिजारत को अल्लाह के नाम पर छोड़ करके दीने अल्लाह की पासबानी में हिज्रत कर जाते हैं उनके अज्र बयान हो रहे हैं कि दोनों जहान में यह अल्लाह के यहाँ मुअज़्ज़ मुहतरम हैं बहुत मुम्किन है कि सबबे नुज़ूल इसका मुहाजिरीने हब्शा हों, जो मक्का में मुश्रिकीन की सख़्त ईज़ाएँ सहने के बाद हिज्रत करके हब्शा चले गए कि आज़ादी से दीने इलाही पर आमिल रहें। इनके बेहतरीन लोग यह थे, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) आपके साथ आपकी बीवी साहिबा हज़रत रुक़य्या

(रज़ि.) भी थीं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी थीं और हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचाज़ाद भाई थे और हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद (रज़ि.) वग़ैरह क़रीब क़रीब अस्सी (80) आदमी थे, मर्द भी औरतें भी जो सब सिद्दीक़ और सिद्दीक़ा थे, अल्लाह उन सबसे ख़ुश हो और उन्हें भी ख़ुश रखे। पस अल्लाह तआला ऐसे सच्चों से वादा फ़र्माता है कि इन्हें अच्छी जगह वह इनायत करेगा जैसे मदीना और पाक रोज़ी। माल का भी बदला मिला और वतन का भी। हक़ीक़त यह है कि जो शख़्स ख़ौफ़े इलाही से जैसी चीज़ को छोड़े अल्लाह तआला उसी जैसी उससे कहीं बेहतर, पाक और हलाल चीज़ उसे अता करता है, उन ग़रीबुल वतन मुहाजिरीन को देखिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें हाकिम व बादशाह कर दिया और दुनिया पर उनका राज पाट कर दिया। अभी आख़िरत का अज्रो सवाब बाक़ी है। पस हिज्रत से जान चुराने वाले मुहाजिरीन के सवाब से वाक़िफ़ होते तो हिज्रत में सब्क़त करते, अल्लाह तआला हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) से ख़ुश हो कि आप जब कभी किसी मुहाजिर को उसका हिस्सा ग़नीमत वग़ैरह देते तो फ़र्माते, लो अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दे यह तो दुनिया का अल्लाह तआला का वादा है और अभी आख़िरत जो बहुत अज़ीमुश्शान है बाक़ी है। फिर इसी आयते मुबारका की तिलावत करते। उन पाकबाज़ लोगों का और वस्फ़ बयान फ़र्माता है कि जो तक्लीफ़ें अल्लाह की राह में उन्हें पहुँचती हैं यह उन्हें झेल लेते हैं और अल्लाह तआला पर जो उन्हें तवक्कल है उसमें कभी फ़र्क़ नहीं आता इसीलिए दोनों जहान की भलाईयाँ यह लोग अपने दोनों हाथों से समेट लेते हैं।

मंसबे रिसालत का हक़दार इंसान : हज़रत अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को रसूल बनाकर भेजा तो अरब ने साफ़ इंकार कर दिया और कहा कि अल्लाह की शान उससे बहुत आला और बाला है कि वह किसी इंसान को अपना रसूल बनाए जिसका ज़िक्र क़ुरआन में भी है फ़र्माता है (أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا) (10/यूनुस : 2) क्या लोगों को इस बात पर ताज्जुब मालूम हुआ है कि हमने किसी इंसान की तरफ़ अपनी वह्यी नाज़िल फ़र्माई कि वह लोगों को आगाह कर दे और फ़र्माया, हमने तुझसे पहले जितने रसूल भेजे सब ही इंसान थे जिन पर हमारी वह्यी आती थी। तुम पहली आसमानी किताब वालों से पूछ लो कि वह इंसान थे या फ़रिश्ते। अगर वह भी इंसान हों तो फिर अपने इस क़ौल से बाज़ आओ। हाँ! अगर साबित हो कि सिलसिल-ए-नबुव्वत फ़रिश्तों में ही रहा तो बेशक उस नबी का इंकार करते हुए तुम अच्छे लगोगे और आयत में है (مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ) (12/यूसुफ़ : 109) का लफ़्ज़ भी फ़र्माया यानी वह रसूल भी ज़मीन के बाशिन्दे थे आसमान मकान न थे, इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुराद अहले ज़िक्र से अहले किताब हैं। मुजाहिद (रह.) का क़ौल भी यही है अब्दुर्रहमान (रह.) फ़र्माते हैं ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है जैसे (إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ) (15/हिज्र : 9) में है यह क़ौल बजाए ख़ुद ठीक है लेकिन इस आयत में ज़िक्र से मुराद क़ुरआन लेना दुरुस्त नहीं क्योंकि क़ुरआन के तो वह लोग मुंकिर थे फिर क़ुरआन वालों से पूछकर उनकी तशफ़्फ़ी कैसे हो सकती थी? इसी तरह इमाम अबू जाफ़र बाक़िर (रह.) से मरवी है कि हम अहले ज़िक्र हैं यानी यह उम्मत यह क़ौल भी अपनी जगह है दुरुस्त। फ़िल वाक़ेअ यह उम्मत तमाम अगली उम्मतों से ज़्यादा इल्म वाली है और अहले बैत के उलमा और उलमा से कई दर्जे बढ़कर हैं जबकि वह सुन्नते मुस्तक़ीमा

पर साबित क़दम हों जैसे अली इब्ने अब्बास, हसन हुसैन, मुहम्मद बिन हनीफ़ा, अली बिन हुसेन ज़ेनुल आबेदीन, अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अबू जाफ़र बाक़िर (रह.)। यानी मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन और उनके साहबज़ादे जाफ़र (रह.) और उन जैसे और बुज़ुर्ग हज़रात अल्लाह तआला की रहमत और रज़ा उन्हें हासिल हो जो कि अल्लाह की रस्सी को मज़बूत थामे हुए और सिराते मुस्तक़ीम पर क़दम जमाए हुए और हर हक़दार के हक़ बजा लाने वाले। और हर एक को उसकी सच्ची जगह उतारने वाले हर एक की क़द्रो इज़्ज़त करने वाले थे और ख़ुद वह अल्लाह के तमाम नेक बन्दों के दिलों में अपनी मक़्बूलियत रखते हैं यह बेशक सहीह लेकिन इस आयत में यह मुराद नहीं। यहाँ बयान हो रहा है कि आप (ﷺ) भी इंसान थे और आपसे पहले भी अम्बिया (عليهم السلام) बनी आदम में से ही होते रहे। जैसे फ़र्माने कुरआन है (قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا) (17/बनी इस्राईल : 93) कह दे कि मेरा रब पाक है मैं सिर्फ़ एक इंसान हूँ जो अल्लाह का रसूल हूँ लोग सिर्फ़ यह बहाना करके रसूलों का इंकार कर बैठे कि कैसे मुम्किन है कि अल्लाह तआला किसी इंसान को अपनी रिसालत दे और आयत में है तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे सभी खाने पीने और बाज़ारों में चलने फिरने वाले थे। (25/फ़ुरक़ान : 20) और आयत में है हमने उन्हें कुछ ऐसे जस्से नहीं बनाए थे कि वह खाने पीने से बेनियाज़ हों या यह कि मरने वाले ही न हों। (21/अम्बिया : 8) और जगह इर्शाद है (قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ) (46/अहक़ाफ़ : 9) में कोई शुरू का और पहला और नया रसूल तो नहीं।

और आयत में है मैं तुम जैसा इंसान हूँ मेरी जानिब वही उतारी जाती है....। (18/कहफ़ : 110) पस यहाँ भी इर्शाद हुआ कि पहले की किताबों वालों से पूछ लो कि नबी इंसान होते थे या ग़ैर इंसान? फिर यहाँ फ़र्माता है कि रसूलों को वह दलीलें देकर हुज्जतें अता करके भेजता है। किताबें उन पर नाज़िल करता है। सहीफ़े उन्हें अता फ़र्माता है। ज़ुबुर से मुराद किताबें हैं। जैसे कुरआन में और जगह है (وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ) (54/क़मर : 52) जो कुछ इन्होंने किया किताबों में है और आयत में है (وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ) (21/अम्बिया : 105) हमने ज़बूर में लिख दिया है। फिर फ़र्माता है कि हमने तेरी तरफ़ ज़िक्र नाज़िल किया यानी कुरआन इसलिए कि चूँकि तू इसके मअनी मतलब से अच्छी तरह वाक़िफ़ है इसे लोगों को समझा बुझा दे हक़ीक़तन ऐ नबी (ﷺ)! आप ही इस पर सबसे ज़्यादा हरीस हैं और आप ही इसके सबसे बड़े आलिम हैं और आप ही इसके सबसे ज़्यादा आमिल हैं इसलिए कि आप (ﷺ) अफ़ज़लुल ख़लाइक़ हैं, औलादे आदम के सरदार हैं जो इज्माल इस किताब में है उसकी तफ़्सील आपके ज़िम्मे है लोगों पर जो मुश्किल हो आप (ﷺ) उसे समझा दें ताकि वह सोचें समझें राह पाएँ और फिर नजात और दोनों जहान की भलाई हासिल करें।

***

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ
عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "बदतरीन दांवपेच करने वाले क्या इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह तआला उन्हें ज़मीन में धंसा देगा या उनके पास ऐसी जगह का अज़ाब आ जाए जहाँ का उन्हें वहम गुमान भी न हो। (45) या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले यह किसी सूरत में अल्लाह को आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकते। (46) या इन्हें डरा धमकाकर पकड़ ले पस यक़ीनन तुम्हारा परवरदिगार आला शफ़क़त और इंतिहाई रहम करने वाला है।" (47)

अल्लाह तआला के गुस्से ग़ज़ब का बयान (आयत 45-47) : अल्लाह तआला ख़ालिक़े कायनात और मालिक अर्ज़ो समावात अपने हिल्म (दानिशमंदी) का बावजूद इल्म के और अपनी मेहरबानी का बावजूद गुस्से के बयान फ़र्माता है कि वह अगर चाहे अपने गुनहगार बदकिरदार बन्दों को ज़मीन में धंसा सकता है बेख़बरी में उन पर अज़ाब ला सकता है लेकिन अपनी ग़ायत मेहरबानी से दरगुज़र किये हुए है जैसे सूरह मुल्क में फ़र्माया, अल्लाह जो आसमान में है क्या तुम उसके ग़ज़ब से नहीं डरते कि कहीं ज़मीन को दलदल बनाकर तुम्हें उसमें धंसा न दे कि वह तुम्हें हिचकोले ही लगाती रहा करे, क्या तुम्हें आसमानों वाले अल्लाह से डर नहीं लगता कि कहीं वह तुम पर आसमान से पत्थर न बरसा दे, उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जाए कि मेरा डराना कैसा था? (67/मुल्क : 16, 17) और यह भी हो सकता है कि अल्लाह तआला ऐसे मक्कार बदकिरदार लोगों को उनके चलते फिरते, आते जाते, कमाते ही पकड़ ले, सफ़र हज़र में रात में जिस वक़्त चाहे पकड़ ले। जैसे फ़र्मान है (اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى) (7/आराफ़ : 97) क्या बस्ती वाले इससे निडर हो गए हैं कि उनके पास हमारा अज़ाब रात ही रात में उनके सोते सुलाते ही आ जाए या दिन चढ़े उनके खेलकूद के वक़्त ही आ जाए, अल्लाह को कोई शख़्स और कोई काम आजिज़ नहीं कर सकता, वह हारने वाला और थकने वाला और नाकाम होने वाला नहीं। और यह भी मुम्किन है कि बावजूद डर ख़ौफ़ के उन्हें पकड़ ले तो दोनों अज़ाब एक साथ हो जाएँ, डर और फिर पकड़। एक मरे दूसरा डरे फिर मरे। लेकिन रब्बुल अला रब्बे कायनात बड़ा ही रउफ़ुर रहीम है, इसलिए जल्दी नहीं पकड़ता। बुख़ारी व मुस्लिम में है "ख़िलाफ़े तबअ (नकारा) बातें सुनकर सब्र करने में अल्लाह से बढ़कर कोई नहीं। लोग उसकी औलाद ठहराएँ और वह उन्हें रिज़्क़ व आफ़ियत इनायत करे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाक़ु...) : 7378) बुख़ारी व मुस्लिम में है "अल्लाह तआला ज़ालिम को मोहलत देता है लेकिन जब पकड़ नाज़िल करता है फिर अचानक तबाह हो जाता है।" फिर हुज़ूर (ﷺ) ने आयत (وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ) (11/हूद : 102) पढ़ी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़ज़ रब्बुक...) : 4686; सहीह

मुस्लिम : 2583; मुस्नदे अबी यअ़ला : 7322; इसके अलावा यह रिवायत सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7708; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3006; अहमद : 4/405 में मुख़्तसरन मौजूद है।) और आयत में है (وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ) (22/हज्ज : 48) बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें मैंने कुछ मोहलत दी लेकिन आख़िरकार उनके ज़ुल्म की बिना पर उन्हें गिरफ़्तार कर लिया, लौटना तो मेरी ही जानिब है।

***

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ
وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ
وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾ (السجدة) يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ
﴿٥٠﴾ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾ وَلَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ
فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ
مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

तर्जुमा : ''क्या इन्होंने मख़्लूके इलाही में से किसी को भी नहीं देखा? कि उसके साये दाएँ बाएँ झुक झुककर अल्लाह के सामने सर ब सुजूद हैं। और आजिज़ी का इज़्हार करते हैं। (48) यक़ीनन आसमान व ज़मीन के कुल जानदार और तमाम फ़रिश्ते अल्लाह तआला के सामने सज्दे करते हैं और ज़रा भी तो तकब्बुर नहीं करते। (49) और अपने रब से जो उनके ऊपर है कपकपाते रहते हैं और जो हुक्म मिल जाए उसकी तामील में लगे रहते हैं। (50) अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्मा चुका है कि दो दो मअ़बूद न बनाओ, मअ़बूद तो सिर्फ़ वही अकेला ही है पस तुम सब सिर्फ़ मेरा ही डर ख़ौफ़ रखो। (51) आसमानों में और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है और उसी की इबादत लाज़िम है क्या फिर भी तुम उसके सिवा औरों से डरते रहते हो। (52) तुम्हारे पास जितनी भी नेअ़मतें हैं सब उसी की दी हुई हैं। अब भी जब तुम्हें कोई मुसीबत पेश आ जाए तो उसी की तरफ़ नाला व फ़रियाद करते हो। (53) और जहाँ उसने वह मुसीबत तुमसे दूर कर दी कि तुममें से कुछ लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लग जाते हैं। (54) कि हमारी दी हुई नेअ़मतों की नाशुक्री करें अच्छा कुछ फ़ायदा उठा लो। आख़िरकार तो तुम्हें मालूम हो ही जाएगा।'' (55)

अर्श से फ़र्श तक हर चीज़ अल्लाह तआला को सज्दा करती है (आयत 48-55) : अल्लाह तआला ज़ुल जलाले वल इकराम की अज़्मत व जलालत किब्रियाई और बेपनाह ताक़त का ख़्याल कीजिए कि सारी मख़्लूक़ अर्श से फ़र्श तक उसके सामने मुतीअ और ग़ुलाम, जमादात व हैवानात, इंसान और जिन्नात, फ़रिश्ते और कुल कायनात उसकी फ़र्मांबरदार हर चीज़ सुबह व शाम उसके सामने हर क़िस्म से अपनी आजिज़ी और बेकसी का सबूत पेश करने वाली झुक झुककर उसके सामने सज्दे करने वाली। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं सूरज ढलते ही तमाम चीज़ें अल्लाह के सामने सज्दे में गिर पड़ती हैं। हर एक रब्बुल आलमीन के सामने ज़लील व पस्त है, आजिज़ व बेबस है पहाड़ वग़ैरह का सज्दा उनका साया है, समुन्द्र की मौजें उसकी नमाज़ है, उन्हें गोया ज़विल उक़ूल समझकर सज्दे की निस्बत उनकी तरफ़ की और फ़र्माया कि ज़मीनो आसमान के कुल जानदार उसके सामने सज्दे में हैं। जैसे फ़र्मान है (وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَن فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا) (13/रअद : 15) ख़ुशी नाख़ुशी हर चीज़ रब्बुल आलमीन के सामने सर ब सुजूद है, उनके साये सुबह व शाम सज्दा करते हैं, फ़रिश्ते भी बावजूद अपनी क़द्रो मंज़िलत के अल्लाह के सामने पस्त हैं, उसकी इबादत से मुँह फुला नहीं सकते, अल्लाह तआला जल्ल व अला से काँपते और लरज़ते रहते हैं और जो हुक्म है उसकी बजाआवरी में मशग़ूल रहते हैं न नाफ़र्मानी करें, न सुस्ती करें।

सब कुछ अल्लाह तआला ने दिया है : अल्लाह वाहिद के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं वह ला शरीक लहू है वह हर चीज़ का ख़ालिक़ है पालनहार है। उसकी इबादत ख़ालिस दाइमी और वाजिब है उसके सिवा दूसरों की इबादत के तरीक़े न इख़्तियार करने चाहिएँ, आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ ख़ुशी ना ख़ुशी उसकी मातहत है सबका लौटाया जाना उसी की तरफ़ है, ख़ुलूस के साथ उसी की इबादत करो उसके साथ दूसरों को शरीक करने से बचो। दीने ख़ालिस सिर्फ़ अल्लाह ही का है, आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का मालिक तंहा वही है नफ़ा नुक़सान उसी के इख़्तियार में है जो कुछ नेअमतें बन्दों के हाथ में हैं सब उसी की तरफ़ से हैं, रिज़्क़ नेअमत आफ़ियत नुसरत उसी की तरफ़ से है उसी के फ़ज़्लो एहसान बन्दों पर हैं और अब भी उन नेअमतों के पा लेने के बाद भी तुम उसके वैसे ही मोहताज हो। मुसीबतें अब भी सर पर मंडरा रही हैं, सख़्ती के वक़्त वही याद आता है और गिड़गिड़ाकर पूरी आजिज़ी के साथ कठिन वक़्त में उसी की तरफ़ झुकते हो। ख़ुद मुश्रिकीने मक्का का भी यही हाल था कि जब समुन्द्र में घिर जाते मुख़ालिफ़ हवा के झोंके कश्ती को पत्ते की तरह हिचकोले देने लगती तो अपने ठाकुरों, देवताओं, बुतों, पीरों, फ़क़ीरों, वलियों, नबियों सबको भूल जाते और ख़ालिस अल्लाह से लौ लगाकर ख़ुलूस दिल से उससे बचाव और नजात तलब करते। लेकिन किनारे पर कश्ती के पार लगते ही अपने पुराने ख़ुदा सब याद आ जाते और मअबूदे हक़ीक़ी के साथ फिर इनकी पूजापाठ होने लगती। इससे बढ़कर भी नाशुक्री कुफ़्र और नेअमतों की फ़रामोशी और क्या हो सकती है? यहाँ भी फ़र्माया कि मतलब निकल जाते ही बहुत से लोग आँखें फेर लेते हैं। (लि यक्फ़ुरू) का लाम लामे आक़िबत है और लामे तअलील भी कहा गया है। यानी हमने यह ख़स्लत इनकी इसलिए कर दी है कि वह अल्लाह की नेअमत पर पर्दे डालें और उसका इंकार करें हालाँकि दरअसल नेअमतों का देने वाला मुसीबतों का दूर करने वाला उसके सिवा कोई नहीं, फिर उन्हें धमकाता है कि अच्छा दुनिया में तो अपना काम चला लो यूँ ही सा फ़ायदा यहाँ उठा लो लेकिन इसका अंजाम अभी अभी मालूम हो जाएगा।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۗ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ

وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۗ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى

هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ۗ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ

السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''जिसे जानते बूझते भी नहीं उसका हिस्सा हमारी दी हुई चीज़ में मुक़र्रर करते हैं। वल्लाह! उनके इस बोहतान का सवाल इनसे ज़रूर ही किया जाएगा। (56) अल्लाह सुब्हानहू व तआला के लिए लड़कियाँ मुक़र्रर करते हैं और अपने लिए वह जो अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो। (57) इनमें से किसी को जब लड़की होने की ख़बर दी जाए तो उसका चेहरा स्याह हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है। (58) इस बुरी ख़बर की वजह से लोगों से छुपा छुपा फिरता है, सोचता है कि क्या इस ज़िल्लत को लिए हुए ही रहे या उसे मिट्टी में दफ़न कर दे। आह! क्या ही बुरे फ़ैसले करते हैं? (59) आख़िरत पर ईमान न रखने वालों की ही बुरी मिसाल है, अल्लाह के लिए तो निहायत ही बुलंद सिफ़त है वह बड़ा ही ग़ालिब और बाहिक्मत है।'' (60)

मुश्रिकीन का अजीब दावा और क़ाबिले अफ़सोस रवैया (आयत 56-60) : मुश्रिकों की बेअक़्ली और बेढंगी बयान हो रही है कि देने वाला अल्लाह, सब कुछ उसी का दिया हुआ और यह उसमें से अपने झूठे मअबूदों के नाम करें जिनका सही इल्म भी इन्हें नहीं। फिर उसमें सख़्ती ऐसी करें कि अल्लाह के नाम का तो चाहे उनके मअबूदों के नाम हो जाए लेकिन उनके मअबूदों के नाम का अल्लाह के नाम न हो सके, ऐसे लोगों से ज़रूर बाज़पुर्स होगी और इस इफ़्तिरा का बदला इन्हें पूरा पूरा मिलेगा जहन्नम की आग होगी और यह होंगे। फिर इनकी दूसरी बेइंसाफ़ी और हिमाक़त बयान हो रही है कि अल्लाह के क़रीबी गुलाम फ़रिश्ते इनके नज़दीक अल्लाह की बेटियाँ हैं, यह ख़ता करके फिर इनकी इबादत करते हैं जो ख़ता पर ख़ता है यहाँ तीन जुर्म इनसे सरज़द हुए, पहला तो अल्लाह के लिए औलाद ठहराना जो उससे यक्सर पाक है फिर औलाद में से भी वह क़िस्म उसे देना जिसे ख़ुद अपने लिए भी पसंद नहीं करते यानी लड़कियाँ। क्या ही उल्टी बात है कि अपने लिए तो लड़के और अल्लाह के लिए लड़कियाँ। फिर उनकी इबादत करना यह इनका सरासर बोहतान है सिर्फ़ झूठ है कैसे मुम्किन है कि अल्लाह की औलाद हो? फिर औलाद भी वह जो इनके नज़दीक निहायत रद्दी और ज़लील चीज़ है क्या हिमाक़त है कि इन्हें तो अल्लाह लड़के दे और अपने लिए लड़कियाँ रखे? अल्लाह इससे बल्कि

औलाद से पाक है इन्हें जब ख़बर मिले कि इनके यहाँ लड़की हुई तो मारे नदामत और शर्म के चेहरा काला पड़ जाए, जुबान बंद हो जाए, ग़म से कमर झुक जाए, ज़हर के घूँट पीकर ख़ामोश हो जाए, लोगों से चेहरा छुपाता फिरे, इसी सोच में रहे कि अब क्या करूँ, अगर लड़की को ज़िन्दा छोड़ता हूँ तो बड़ी रुस्वाई है, न वारिस बने, न कोई चीज़ समझी जाए, लड़के इस पर तर्जीह दिए जाएँ, ग़र्ज़ ज़िन्दा रखे तो निहायत ज़िल्लत से वरना साफ़ बात है कि जीते जी गड्ढा खोदकर ज़िन्दा दफ़न कर दे। यह हालत तो अपनी है फिर अल्लाह के लिए यही चीज़ साबित करते हैं। कैसे बुरे फ़ैसले करते हैं? कितनी बेहयाई की तक़्सीम करते हैं अल्लाह के लिए जो साबित करने बैठें उसे अपने लिए सख़्त बाइसे तौहीन व तज़्लील समझें, असल यह है कि बुरी मिसाल और नुक़्सान इन ही काफ़िरों के लिए है अल्लाह के लिए कमाल है वह अज़ीज़ो हकीम है और जुल जलाल वल इकराम है।

***

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا
يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۗ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ
مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "अगर लोगों के गुनाह पर अल्लाह तआला उनकी गिरफ़्त करता रहता तो रूए ज़मीन पर एक भी जानदार बाक़ी न रहता, वह तो इन्हें एक वक़्ते मुक़र्ररा तक ढील दिये हुए है जब इनका वह वक़्त आ जाएगा फिर न तो एक साअत (घड़ी) की देर लगे, न जल्दी हो। (61) अपने लिए जो मकर वह रखते हैं अल्लाह के लिए साबित करते हैं इनकी ज़ुबानें झूठी बातें बयान करती हैं कि इनके लिए ख़ूबी है। नहीं! नहीं! दरअसल इनके लिए आग है यह दोज़ख़ियों के पेश रू हैं।" (62)

अल्लाह तआला का करम कि गुनाह पर फ़ौरन पकड़ नहीं करता (आयत 61, 62) : अल्लाह तआला के हिल्म व करम लुत्फ़ो रहम का बयान हो रहा है कि बन्दों के गुनाह देखता है और फिर भी उन्हें मोहलत देता है अगर फ़ौरन ही पकड़े तो आज ज़मीन पर कोई चलता फिरता नज़र न आए। इंसानों की ख़ताओं में जानवर भी हलाक हो जाएँ, गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाए। बुरों के साथ भले भी पकड़ में आ जाएँ लेकिन अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपने हिल्म व करम लुत्फ़ो रहम से पर्दापोशी कर रहा है दरगुज़र फ़र्मा रहा है माफ़ी दे रहा है एक ख़ास वक़्त तक की मोहलत दिए हुए है वरना कीड़े और भुंगे भी न बचते। बनी आदम के गुनाहों की कसरत की वजह से अज़ाबे इलाही ऐसे आते कि सबको ग़ारत कर जाते। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने सुना कि कोई साहब फ़र्मा रहे हैं ज़ालिम अपना ही नुक़्सान करता है तो आपने फ़र्माया, नहीं! नहीं! बल्कि

परिन्द अपने घौंसलों में बवजह उसके ज़ुल्म के हलाक हो जाते हैं। हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हम एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) के सामने कुछ ज़िक्र कर रहे थे जो आपने फ़र्माया "अल्लाह किसी नफ़्स को ढील नहीं देता, उम्र की ज़्यादती नेक औलाद से होती है जो अल्लाह तआला अपने बन्दों को इनायत करता है फिर उन बच्चों की दुआएँ उनकी क़ब्र में उन्हें पहुँचती रहती हैं यही उनकी उम्र की ज़्यादती है।" (किताबुल मज्रूहीन, लि इब्ने हिब्बान, व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; सुलेमान बिन अता सख़्त मजरूह रावी है। 1/331) अपने लिए ज़ालिम लड़कियाँ नापसंद करें, शिर्कत न चाहें और अल्लाह के लिए यह सब रवा रखें, फिर यह ख़्याल करें यह दुनिया में भी अच्छाइयाँ समेटने वाले हैं और अगर क़यामत क़ायम हुई तो वहाँ भी भलाई उनके लिए है यह कहा करते थे कि नफ़ा के मुस्तहिक़ इस दुनिया में तो हम हैं ही और सही बात तो यह है कि क़यामत तो आनी नहीं बिलफ़र्ज़ आई भी तो वहाँ की बेहतरी भी हमारे लिए ही है इन कुफ़्फ़ार को अन्क़रीब सख़्त अज़ाब चखने पड़ेंगे, हमारी आयतों से कुफ्र फिर आरज़ू यह कि माल व औलाद हमें वहाँ भी मिलेगा। सूरह कहफ़ में दो साथियों का ज़िक्र करते हुए क़ुरआन ने फ़र्माया है कि वह ज़ालिम अपने बाग़ में जाते हुए अपने नेक साथी से कहता है कि मैं तो इसे हलाक होने वाला नहीं जानता, न क़यामत का क़ाइल हूँ और अगर बिल फ़र्ज़ मैं दोबारा ज़िन्दा किया गया तो वहाँ इससे भी बेहतर चीज़ दिया जाऊँगा। (41/फ़ुस्सिलत : 50) काम बुरे करें आरज़ू नेकी की रखें, काँटे बोयें और फल चाहें। कहते हैं कि कअबतुल्लाह की इमारत को नये सिरे से बनाने के लिए ढाया गया तो बुनियाद में से एक पत्थर निकला जिस पर एक कत्बा लिखा हुआ था जिसमें यह भी लिखा था कि तुम बुराइयाँ करते हो और नेकियों की उम्मीद रखते हो यह तो ऐसा ही है जैसे काँटे बोकर अंगूर की उम्मीद रखना पस इनकी उम्मीदें थीं कि दुनिया में भी इन्हें जाह व हशमत और लौण्डी व ग़ुलाम मिलेंगे और आख़िरत में भी। अल्लाह तआला फ़र्माता है दरअसल इनके लिए आतिशे जहन्नम तैयार है वहाँ यह रहमते रब से भुला दिये जाएँगे और ज़ाया व बर्बाद हो जाएँगे। आज यह हमारे अहकाम भुलाये बैठे हैं कल इन्हें हम अपनी नेअमतों से भुला देंगे, यह जल्दी ही जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं।

***

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ
الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ
لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

तर्जुमा : "वल्लाह! (अल्लाह की कसम) हमने तुझसे पहले की उम्मतों की तरफ़ अपने रसूल भेजे लेकिन शैतान ने उनके बुरे अमलों को उनकी नज़रों में अच्छा कर दिया वह शैतान आज भी उनका रफ़ीक़ बना हुआ है उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (63) इस किताब को हमने तुझ पर इसीलिए उतारा है कि तू हर उस चीज़ को खोल दे जिसमें वह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं और यह रहनुमाई और ईमानदारों के लिए रहमत है। (64) और अल्लाह आसमान से पानी बरसाकर उससे ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए अल्बत्ता निशानी है जो सुनें। (65) तुम्हारे लिए चोपायों में भी बड़ी इब्रत है कि हम तुम्हें उसके पेट में जो कुछ है उसी में से गोबर और लहू (ख़ून) के बीच से ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए सहता पचता है। (66) और खजूर और अंगूर के दरख़्तों के फलों से तुम शराब बना लेते हो और हलाल और उम्दा रोज़ी भी। जो लोग अक़्ल रखते हैं उनके लिए तो इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है।" (67)

हर नबी को ही झुठलाया गया है (आयत 63-67) : ऐ नबी (ﷺ)! आप तसल्ली रखें आपको आप (ﷺ) की क़ौम का झुठलाना कोई अनोखी बात नहीं कौनसा नबी आया जो झुठलाया न गया हो? बाक़ी रहे झुठलाने वाले वह शैतान के मुरीद हैं, बुराइयाँ उन्हें शैतानी वस्वसों से भलाइयाँ दिखाई देती हैं इनका वली शैतान है वह इन्हें कोई नफ़ा पहुँचाने का नहीं, हमेशा के लिए मुसीबत देने वाले अज़ाबों में छोड़कर इनसे अलग हो जाएगा। क़ुरआन हक़ और बातिल में सच झूठ में तमीज़ करने वाली किताब है हर झगड़े और हर इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला इसमें मौजूद है। यह दिलों के लिए हिदायत है और ईमान वालों के लिए जो इस पर अमल करते हैं, उनके लिए रहमत है। इस क़ुरआन से किस तरह मुर्दा दिल जी उठते हैं इसकी मिसाल मुर्दा ज़मीन और बारिश की है जो लोग बात को सुनें समझें वह तो इससे बहुत कुछ इब्रत हासिल कर सकते हैं।

ख़ून और गोबर (लीद) की गंदगी से पाक दूध अल्लाह तआला की क़ुदरत की निशानी है : ऊँट गाय बकरियाँ वग़ैरह भी अपने ख़ालिक़ की क़ुदरत व हिक्मत की निशानियाँ हैं (बुतूनिही) में ज़मीर को या तो नेअमत के मअनी पर लौटाया है या हैवान पर। चौपाये भी हैवान ही हैं उन हैवानों के पेट में जो अला बला भरी हुई होती है उसी में से परवरदिगारे आलम तुम्हें निहायत ख़ुश ज़ायक़ा लतीफ़ और ख़ुशगवार दूध पिलाता है। दूसरी आयत में (بُطُوْنِهَا) (23/मोमिनून : 21) है। दोनों बातें जाइज़ हैं। जैसे आयत (كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ), (فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ) (74/मुद्दस्सिर : 54, 55) में है और जैसे आयत (وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ)(فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ) (27/नम्ल : 35,36) में है पस जाअ में मुज़क्कर लाए। मुराद इससे माल है जानवर के बातिन में जो गोबर ख़ून वग़ैरह है उनसे बचाकर दूध तुम्हारे लिए निकालता है न उसकी सफ़ेदी में फ़र्क़ आए, न हलावत में, न मज़े में। मअदे में ग़िज़ा पहुँची वहाँ से ख़ून रगों की तरफ़ दौड़ गया, दूध थन की

तरफ़ पहुँचा, पेशाब ने मसाना का रास्ता पकड़ा गोबर अपने निकलने की जगह की तरफ़ जमा हुआ, न एक दूसरे से मिले, न एक दूसरे को बदले। ख़ालिस दूध जो पीने वाले के हलक़ में बाआराम उतर जाए उसकी ख़ास नेअ़मत है उस नेअ़मत के बयान के साथ ही दूसरी नेअ़मत बयान की कि खजूर और अंगूर के शीरे से तुम शराब बना लेते हो। यह शराब की हुर्मत से पहले है और इससे मालूम होता है कि इन दोनों चीज़ों की शराब एक ही हुक्म में है जैसे मालिक, शाफ़ेई, अहमद (रह.) और जुम्हूर उलमा का मज़हब है और यही हुक्म है और शराबों का जो गेहूँ, जो, जवार, और शहद से बनाई जाएँ जैसे कि अहादीस में मुफ़स्सल आ चुका है यह जगह उसके बस्त (विस्तार) की नहीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं शराब बनाते हो जो हराम है और तरह खाते पीते हो जो हलाल है। (हाकिम : 2/355; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मस्लन ख़ुश्क खजूरें किशमिश वग़ैरह और नबीज़ शरबत बनाकर सिरका बनाकर और तरह। पस जिन लोगों को अ़क़्ल का हिस्सा दिया गया है वह अल्लाह की कुदरत व अ़ज़्मत को इन चीज़ों और इन नेअ़मतों से भी पहचान सकते हैं। दरअसल जौहरे इंसानियत अ़क़्ल ही है उसी की निगहबानी के लिए शरीअ़ते मुतह्हरा ने नशे वाली शराबें इस उम्मत पर हराम कर दीं, इसी नेअ़मत को बयान सूरह यासीन की आयत (وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنّٰتٍ مِّن نَّخِيلٍ) (36/यासीन : 34) में है यानी ज़मीन में हमने खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगा दिए और उनमें पानी के चश्मे बहा दिए ताकि लोग उसका फल खाएँ, यह उनके अपने बनाये हुए नहीं क्या फिर भी यह शुक्रगुज़ारी नहीं करेंगे? पाक ज़ात है वह जिसने ज़मीन की पैदावार में और ख़ुद इंसानों में और उस मख़्लूक़ में जिसे यह जानते ही नहीं, हर तरह की जोड़ जोड़ चीज़ें पैदा कर दी हैं।

***

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾
ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ
مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : "तेरे रब ने शहद की मक्खी को हुक्म दिया कि पहाड़ों में दरख़्तों में और लोगों की बनाई हुई बुलंद इमारतों में अपने छत्ते (घर) बना। (68) और हर तरह के मेवे खा और अपने रब तआ़ला की आसान राहों में चलती फिरती रह। उनके पेट से पीने का शहद निकलता है जिसके रंग मुख़्तलिफ़ होते हैं और जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। ग़ौरो-फ़िक्र करने वालों के लिए इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है।" (69)

शहद की मक्खी क़ुदरत का नमूना नीज़ शहद क़ाबिले शिफ़ा है (आयत 68, 69) : वही से मुराद यहाँ पर इल्हामे हिदायत और रास्ता बताना है। शहद की मक्खियों को अल्लाह तआ़ला की जानिब से यह बात

समझाई गई कि वह पहाड़ों में दरख़्तों में और बड़ी इमारतों में शहद के छत्ते बनाए। इस कमज़ोर मख़्लूक़ के उस घर को देखिए कितना मज़बूत, कैसा ख़ूबसूरत और कैसी कुछ कारीगरी का होता है। फिर उसे हिदायत की और उसके लिए मुक़द्दर कर दिया कि यह फलों के, फूलों के और घास पात के रस चूसती फिरे और जहाँ चाहे जाएआए लेकिन वापिस लौटते वक़्त सीधी अपने छत्ते को पहुँच जाए। चाहे बुलंद पहाड़ की चोटी हो, चाहे बयाबान के दरख़्त हों, चाहे आबादी के बुलंद मकानात और वीराने के सुनसान खण्डर हों , यह न रास्ते भुले न भटकती फिरे ख़्वाह कितनी ही दूर निकल जाए, लौटकर अपने छत्ते में अपने बच्चों, अण्डों और शहद में पहुँच जाए। अपने परों से मोम बनाए अपने मुँह से शहद जमा करे और दूसरी जगह से बचे। (ज़ुलुलन) की तफ़्सीर इताअ़त गुज़ार और मुसख़्ख़र से भी की गई है। पस यह ह़ाल होगा (सालिकतन) का। जैसे क़ुरआन में (وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ) (36/यासीन : 72) में भी यही मअ़नी मुराद हैं। इसकी एक दलील यह भी है कि लोग शहद के छत्ते को एक शहर से दूसरे शहर तक ले जाते हैं लेकिन पहला क़ौल बहुत ज़्यादा ज़ाहिर है यानी यह ह़ाल है त़रीक़ का। इब्ने जरीर (रह़.) यह दोनों क़ौल को सही बतलाते हैं। अबू यअ़ला मूसली में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मक्खी की उ़म्र चालीस दिन की होती है। सिवाए शहद की मक्खी के और मक्खियाँ आग में हैं।'' (अबू यअ़ला : 4231; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन क़ैस मज्हूलुल ह़ाल, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/136; मुस्नदुल फ़िरदौस : 4152; मौज़ूआत : 3/266) शहद के रंग मुख़्तलिफ़ होते हैं , सफ़ेद, लाल, पीला वग़ैरह। जैसे फल फूल और जैसी ज़मीन। इस ज़ाहिरी ख़ूबी और रंग की चमक के साथ इसमें शिफ़ा भी है। बहुत सी बीमारियों को अल्लाह तआ़ला इससे दूर कर देता है। यहाँ (फ़ीहिश्शिफ़ाउ लिन्नासि) नहीं फ़र्माया वरना हर बीमारी की दवा यही ठहरती। बल्कि फ़र्माया, इसमें शिफ़ा है लोगों के लिए, पस यह सर्द बीमारियों की दवा है। इ़लाज हमेशा बीमारियों के ख़िलाफ़ होता है, पस शहद गर्म है, सर्दी की बीमारी में फ़ायदेमंद है। मुजाहिद और इब्ने जरीर (रह़.) से मंक़ूल है कि इससे मुराद क़ुरआन है यानी क़ुरआन में शिफ़ा है। यह क़ौल भले अपने तौर पर सही है और वाक़ेई क़ुरआन शिफ़ा है लेकिन इस आयत में यह मुराद लेना सियाक़ के मुत़ाबिक़ नहीं , इसमें तो शहद का ज़िक्र है। इसीलिए मुजाहिद (रह़.) के इस क़ौल की इक़्तिदा नहीं की गई। हाँ! क़ुरआन के शिफ़ा होने का ज़िक्र आयत (وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَاءٌ) (17/बनी इस्राईल : 82) में है और आयत (شِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ) (10/यूनुस : 57) में है। इस आयत में तो मुराद शहद है। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि किसी ने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मेरे भाई का पेट छूट गया है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उसे शहद पिलाओ।'' वह गया शहद दिया, फिर आया और कहा ह़ुज़ूर (ﷺ)! इसे तो बीमारी और बढ़ गई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जा और शहद पिला।'' उसने जाकर फिर पिलाया, फिर ह़ाज़िर होकर यही अ़र्ज़ किया कि दस्त और बढ़ गये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह तआ़ला सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है, जा फिर शहद दे।'' तीसरी मर्तबा शहद से बफ़ज़्ले अल्लाह तआ़ला शिफ़ा ह़ासिल हो गई। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब अद्दवाउ बिल अ़सलि व क़ौलुल्लाहि तआ़ला (फ़ीहि शिफ़ाउल लिन्नास) : 5683; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2217; तिर्मिज़ी : 2082; अह़मद : 3/19; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1261; इब्ने अबी शैबा : 2369; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6705; मुस्नदे अ़ब्द बिन हु़मैद : 938) कुछ त़बीबों (डॉक्टरों) ने कहा है मुम्किन है कि इसके पेट में फ़ोज़्ले की ज़्यादती हो शहद ने

अपनी गर्मी की वजह से उसकी तहलील कर दी फ़ुज़्ला ख़ारिज होना शुरू हुआ दस्त बढ़ गए। आराबी ने इसे मर्ज़ का बढ़ जाना समझा, हुज़ूर (ﷺ) से शिकायत की। आप (ﷺ) ने और शहद देने को फ़र्माया, उससे और ज़ोर से फ़ुज़्ला ख़ारिज होना शुरू हुआ फिर शहद दिया, पेट साफ़ हो गया, बला निकल गई और कामिल शिफ़ा बफ़ज़्ले इलाही हासिल हो गयी और हुज़ूर (ﷺ) की बात जो बइशारतन अल्लाह तआला थी पूरी हो गई। बुख़ारी व मुस्लिम की और हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) को मिठास और शहद से बहुत उल्फ़त थी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा, बाब अल्हल्वा वल असल : 5431; सहीह मुस्लिम : 1474; अबूदाऊद : 3715; तिर्मिज़ी : 1831; इब्ने माजा : 3323; अहमद : 6/59; मुस्नदे अबी यअला : 4892; इब्ने हिब्बान : 5254; मुस्नदे अबी अवाना : 4555; दारमी : 2/146; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6706; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 1489; शुअबुल ईमान : 5929) आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि "तीन चीज़ों में शिफ़ा है पछने लगाने में, शहद के पीने में और दाग़ लगवाने में, लेकिन मैं अपनी उम्मत को दाग़ लगवाने से रोकता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब अश्शिफ़ाउ फ़ी सलासिन : 5680, 5681; बैहक़ी : 9/341) बुख़ारी की हदीस में है कि "तुम्हारी दवाओं में से किसी में अगर शिफ़ा है तो पछने लगाने में शहद के पीने में और आग से दग़वाने में जो बीमारी के मुनासिब हो लेकिन मैं इसे पसंद नहीं करता।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब अद् दवाउ बिल असल व क़ौलुहू तआला : फ़ीहि शिफ़ाउल लिन्नास) : 5683; सहीह मुस्लिम : 2205; इब्ने अबी शैबा : 5/59; शरह मआनियल आसार : 4/320; अल्मुअजमुल औसत : 9337; अहमद : 3/343; मुस्नदे अबी यअला : 2100) मुस्नद अहमद की हदीस में है "मैं इसे पसंद नहीं करता बल्कि नापसंद रखता हूँ।" (अहमद : 4/146; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नद अबी यअला : 1765; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/90) इब्ने माजा में है कि "तुम इन दोनों शिफ़ाओं की क़द्र करते रहो, शहद और क़ुरआन।" (इब्ने माजा, किताबुत्तिब्ब, बाब अल्असल : 3452; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और सिमाअ की सराहत नहीं। हाकिम : 4/200; बैहक़ी : 9/344) इब्ने जरीर में हज़रत अली (रज़ि.) का फ़र्मान है कि जब तुममें से कोई शिफ़ा चाहे तो क़ुरआने करीम की किसी आयत को किसी सहीफ़े पर लिख ले और उसे बारिश के पानी से धो ले और अपनी बीवी के माल से उसकी अपनी रज़ामंदी से पैसे लेकर शहद खरीद ले और उसे पी ले पस उसमें कई वजह से शिफ़ा आ जाएगी। अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ला का फ़र्मान है (وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ) (17/बनी इस्राईल : 82) यानी हमने क़ुरआन में वह नाज़िल फ़र्माया है जो शिफ़ा है और रहमत है मोमिनीन के लिए। और आयत में है (وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبَٰرَكًا) (50/क़ाफ़ : 9) हम आसमान से बाबरकत पानी बरसाते हैं। और फ़र्मान है (فَإِن طِبْنَ لَكُمْ عَن شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيٓـًٔا مَّرِيٓـًٔا) (4/निसाअ : 4) यानी अगर औरतें अपने माले महर में से अपनी ख़ुशी से तुम्हें दे दें तो बेशक तुम उसे खाओ पियो सहता पचता। शहद के बारे में अल्लाह का फ़र्मान है (फ़ीहि शिफ़ाउल् लिन्नासि) शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है। इब्ने माजा में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुबह को शहद चाट ले उसे कोई बड़ी बला नहीं पहुँचेगी।" (इब्ने माजा, किताबुत्तिब्ब, बाबुल असल : 3450; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ुबेर बिन सईद ज़ईफ़ और अब्दुल हमीद मज्हूल रावी है। मुस्नदे अबी यअला : 6415; अत्तारीख़ुल कबीर : 6/54; तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ : 3/987; अल्मौज़ूआत : 3/215) सुनूत के मआनी शुबुत के हैं और लोगों ने

कहा सुनूत शहद है जो घी की मश्क में रखा हुआ हो। शायर के शेअर में भी यह लफ़्ज़ इस मअनी में आया है। फिर फ़र्माता है मक्खी जैसी बेताक़त चीज़ का तुम्हारे लिए शहद और मोम बनाना उसका इस तरह आज़ादी से फिरना अपने घर को न भूलना वग़ैरह। यह सब चीज़ें ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिए मेरी अज़्मत ख़ालिक़ियत मालिकियत की बड़ी निशानियाँ हैं इसी से लोग अपने अल्लाह तआला के क़ादिर हकीम अलीम करीम रहीम होने पर दलील हासिल कर सकते हैं।

***

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला ने ही तुम सबको पैदा किया है वही फिर तुम्हें फ़ौत करेगा तुममें ऐसे भी हैं जो बदतरीन उम्र की तरफ़ लौटाए जाते हैं कि बहुत कुछ जानने बूझने के बाद भी न जानें। बेशक अल्लाह तआला दाना और तवाना है। (70) अल्लाह तआला ही ने तुममें से एक को दूसरे पर रोज़ी में ज़्यादती दे रखी है, पस जिन्हें ज़्यादती दी गई है वह अपनी रोज़ी अपनी मातहती के गुलामों को नहीं दिया करते कि वह और यह उसमें बराबर हो जाएँ। तो क्या यह लोग अल्लाह तआला की नेअमतों के मुंकिर हो रहे हैं।'' (71)

बख़ीली और शदीद बुढ़ापे से पनाह माँगने का हुक्म (आयत 70, 71) : तमाम बन्दों पर क़ब्ज़ा अल्लाह तआला का है वही उन्हें अदम से वजूद में लाया है वही उन्हें फिर फ़ौत करेगा। कुछ लोगों को बहुत बड़ी उम्र तक पहुँचाता है कि वह फिर से बच्चों जैसे नातवाँ बन जाते हैं। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं पचहत्तर (75) साल की उम्र में उमूमन इंसान ऐसा ही हो जाता है, ताक़त खत्म हो जाती है, हाफ़्ज़ा जाता रहता है, इल्म की कमी हो जाती है, आलिम होने के बाद बेइल्म हो जाता है। सहीह बुख़ारी में है कि हुज़ूर (ﷺ) अपनी दुआ में फ़र्माते थे (अऊज़ुबिका मिनल बुख़्लि वल कसलि वल हरमि व अरज़लिल उमुरि व अज़ाबिल क़ब्रि व फ़ित्नतिद् दज्जालि व फ़ित्नतिल महया वल ममाति) यानी ऐ अल्लाह! मैं बख़ीली से, आजिज़ी से, बुढ़ापे से, ज़लील उम्र से, क़ब्र के अज़ाब से, दज्जाल के फ़ित्ने से, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह तलब करता हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नहल; बाब क़ौलुहू तआला (व मिन्कुम मंय्युरिद इला अरज़लिल उमुर) : 4707; सहीह मुस्लिम : 2706; बिदूनि (वल हरमि, व फ़ित्नतिद् दज्जालि) ज़ुहैर बिन

अबू सलमा ने भी अपने मशहूर मुअ़ल्लक़ा में इस उम्र को रंज व ग़म का मख़्ज़न व मंबअ़ बताया है।

तुम अपने हक़ में शरीक बर्दाश्त नहीं करते अल्लाह क्यूँ कर करे : मुश्रिकीन की जिहालत और उनके कुफ़्र का बयान हो रहा है कि बावजूद अपने मअ़बूदों को अल्लाह तआ़ला के ग़ुलाम जानने के उनकी इबादत में लगे हुए हैं। चुनाँचे हज्ज के मौक़े पर वह कहा करते थे (लब्बैक ला शरीका लका इल्ला शरीकन हुव लका तम्लिकुहू वमा मलक) यानी ऐ अल्लाह! मैं तेरे पास हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह जो ख़ुद तेरे ग़ुलाम हैं उनका और उनकी मातहत चीज़ों का असली मालिक तू ही है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब अत्तल्बिया व सिफ़तुहा व वक़्तुहा : 1185) पस अल्लाह तआ़ला इन्हें इल्ज़ाम देता है कि जब तुम अपने ग़ुलामों की अपनी बराबरी और अपने माल में शिर्कत पसंद नहीं करते तो फिर मेरे ग़ुलामों को मेरे तसर्रुफ़ में कैसे शरीक ठहरा रहे हो? यही मज़्मून आयत (ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ) (30/रूम : 28) में बयान हुआ है कि जब तुम अपने ग़ुलामों को अपने माल में अपनी बीवियों में अपना शरीक बनाने में नफ़रत करते हो तो फिर मेरे ग़ुलामों को मेरे तसर्रुफ़ में कैसे शरीक समझ रहे हो? यही अल्लाह की नेअ़मतों से इंकार है कि अल्लाह तआ़ला के लिए वह पसंद करना जो अपने लिए भी पसंद न हो। यह है मिसाल मअ़बूदाने बातिल की। जब तुम आप इससे अलग हो, फिर अल्लाह तआ़ला तो इससे बहुत ज़्यादा बेज़ार है रब की नेअ़मतों का कुफ़्र और क्या होगा, कि खेतियाँ और चौपाये अल्लाह तआ़ला एक के पैदा किये हुए और तुम उन्हें उसके सिवा औरों के नाम का कर दो। हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) को एक ख़त लिखा कि अपनी रोज़ी पर क़नाअ़त इख़्तियार करो, अल्लाह तआ़ला ने एक को एक से ज़्यादा अमीर कर रखा है यह भी उसकी तरफ़ से एक आज़माइश है कि वह देखे कि अमीर उमरा किस तरह अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं और जो हुक़ूक़ दूसरों के उन पर जनाब बारी तआ़ला ने मुक़र्रर किए हैं कहाँ तक उन्हें अदा करते हैं।

***

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً

وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۲﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए तुममें से ही तुम्हारी बीवियाँ पैदा कीं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दीं, क्या फिर भी लोग बातिल पर ईमान लाएँगे? और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की नाशुक्री करेंगे?" (72)

अल्लाह तआ़ला का एक और एह़सान (आयत 72) : अपने बन्दों पर अपना एक और एहसान जताता है कि उन ही की जिंस से उन ही की हमशक्ल, हम वज़अ़ औरतें हमने उनके लिए पैदा कीं, अगर जिंस और

होती तो दिली मेलजोल मुहब्बत व मवद्दत क़ायम न रहती। लेकिन अपनी रहमत से उसने मर्द औरत हमजिंस बनाए फिर उस जोड़े से नस्ल बढ़ाई, औलाद फैलाई, लड़के हुए, लड़कों के लड़के हुए। (हफ़्दतन) के एक मअ़नी तो यही पोतों के हैं, दूसरे मअ़नी ख़ादिम और मददगार के हैं। पस लड़के और पोते भी एक तरह के ख़िदमतगुज़ार होते हैं और अरब में यही दस्तूर भी था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि इंसान की बीवी की अगले घर की औलाद उसकी नहीं होती। (हफ़दतन) उस शख़्स को भी कहते हैं जो किसी के सामने उसके लिए काम काज करे। यह मअ़नी भी किये गए हैं कि इससे मुराद दामादी रिश्ता है। मअ़नी के तहत में यह सब दाख़िल हैं। चुनाँचे क़ुनूत में जुम्ला आता है (व इलैका नस्आ व नह़्फ़िदु) हमारी सई कोशिश और ख़िदमत तेरे लिए ही है। और यह ज़ाहिर है कि औलाद से गुलाम से, ससुराल वालों से ख़िदमत हासिल होती है पस इन सब से अल्लाह की नेअ़मत हमें मिलती है हाँ! जिनके नज़दीक (हफ़दतन) का ताल्लुक़ (अज़्वाजन) से है उनके नज़दीक तो मुराद औलाद और औलादों की औलाद और दामाद और बीवी की औलाद हैं। पस यह सब बसा औक़ात उसी शख़्स की हिफ़ाज़त में, उसकी गोद में और उसकी ख़िदमत में होते हैं और मुम्किन है कि यही मतलब सामने रखकर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हो कि "औलाद तेरी गुलाम है।" जैसे कि अबूदाऊद में है। (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह, बाब अर्रजुल यतज़व्वजुल मरअत फ़यजिदुहा हुबला : 2131; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने जुरैज मुदल्लस रावी है और सिमाअ़ की तसरीह नहीं है। बैहक़ी : 7/157) और जिन्होंने (हफ़दतन) से मुराद ख़ादिम ली है उनके नज़दीक यह मअ़तूफ़ है। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है (वल्लाहु जअ़ल लकुम मिन अन्फ़ुसिकुम अज़्वाजन) पर यानी अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी बीवियों और औलाद को ख़ादिम बना दिया है और तुम्हें खाने पीने की बेहतरीन मज़ेदार चीज़ें इनायत फ़र्माई हैं। पस बातिल पर यक़ीन रखकर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की नाशुक्री न करनी चाहिए कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर पर्दा डाल दिया और उन्हें दूसरों की तरफ़ निस्बत कर दीं। सहीह हदीस में है कि "क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों को अपने एहसान जताते हुए फ़र्माएगा कि क्या मैंने तुझे बीवी नहीं दी थी? मैंने तुझे ज़ी इज़्ज़त नहीं बनाया था? मैंने तेरे ताबेअ़ घोड़ों और ऊँटों को नहीं किया था? और मैंने तुझे सरदारी में और आराम में नहीं छोड़ा था?" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुल मोमिन व जन्नतुल काफ़िर : 2968; इब्ने हिब्बान : 7367; बइख़्तिलाफ़िल अल्फ़ाज़)

***

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٧٣ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧٤ ضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ

مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۭ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝75 وَضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰي شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰي مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ
لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝76

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला के सिवा उनकी इबादत करते हैं जो आसमानों और ज़मीन से इन्हें कुछ भी तो रोज़ी नहीं दे सकते और न कुछ मक़्दूर (ताक़त) रखते हैं। (73) लोगों! अल्लाह तआला पर मिसालें मत बनाओ। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है और तुम कुछ नहीं जानते। (74) अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फ़र्माता है कि एक ग़ुलाम है, दूसरे की मिल्क का जो किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता और एक और शख़्स है जिसे हमने अपने पास से मअक़ूल रोज़ी दे रखी है जिसमें से वह छुपे खुले ख़र्च करता रहता है। क्या यह सब बराबर हो सकते हैं? अल्लाह तआला ही के लिए सब तारीफ़ है। बल्कि इनमें अक्सर जानते नहीं हैं। (75) अल्लाह तआला एक मिसाल बयान करता है दो शख़्सों की जिनमें से एक तो गूँगा है और किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता बल्कि वह अपने मालिक पर बोझ है कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता। क्या यह और वह जो अदल का हुक्म देता है और है भी सीधी राह पर, बराबर हो सकते हैं।'' (76)

(आयत 73-76) : राज़िक़ सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है नेअमतें देने वाला, पैदा करने वाला, रोज़ी पहुँचाने वाला, सिर्फ़ अल्लाह तआला अकेला वह्दहू ला शरीक लहू है, और यह मुश्रिकीन उसके साथ औरों को पूजते हैं, जो न आसमान से बारिश बरसा सकें न ज़मीन से खेत और दरख़्त उगा सकें। वह अगर सब मिलकर भी चाहें तो भी न एक बूँद बारिश पर क़ादिर, न एक पत्ते के पैदा करने की उनमें ताक़त। पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो, उसके शरीक व सहीम और उस जैसे दूसरों को न समझो। अल्लाह तआला आलिम है और वह अपने इल्म की बिना पर अपनी तौहीद पर गवाही देता है, तुम जाहिल हो अपनी जिहालत से अल्लाह तआला के शरीक दूसरों को ठहरा रहे हो।

काफ़िर और मोमिन की मिसाल : इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं यह काफ़िर और मोमिन की मिसाल है। पस मिल्कियत के ग़ुलाम से मुराद काफ़िर और अच्छी रोज़ी वाले और ख़र्च करने वाले से मुराद मोमिन है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं इस मिसाल से बुत की और अल्लाह तआला की तह्क़ीक़ समझानी मक़्सूद है कि यह और वह बराबर नहीं इस मिसाल का फ़र्क़ इस क़द्र वाज़ेह है जिसके बतलाने की ज़रूरत नहीं। इसीलिए फ़र्माया कि तारीफ़ों के लायक़ अल्लाह तआला ही है। अक्सर मुश्रिक बेइल्मी पर तुले हुए हैं।

बुतों के बारे में एक मिसाल का ज़िक्र : हो सकता है कि यह मिसाल भी इस फ़र्क़ के दिखाने की हो जो अल्लाह तआला में और मुश्रिकीन के बुतों में है। यह बुत गूँगे हैं, न कलाम कर सकें, न कोई भली बात कह

सकें, न किसी चीज़ पर क़ुदरत रखें। कौल व फ़ेअ़ल दोनों से ख़ाली फिर सिर्फ़ बोझ और अपने मालिक पर बार, कहीं भी जाए कोई भलाई न लाए। पस एक तो यह और एक वह जो अ़दल का हुक्म करता रहे और ख़ुद भी सिराते मुस्तक़ीम पर हो यानी क़ौल व फ़ेअ़ल दोनों के एतिबार से बेहतर, यह दोनों कैसे बराबर हो जाएँगे' एक क़ौल है कि गूँगा हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) का ग़ुलाम था। और हो सकता है कि यह मिसाल भी काफ़िर व मोमिन की हो। जैसे इससे पहले की आयत में थी। कहते हैं कि क़ुरैश के एक शख़्स के ग़ुलाम का ज़िक्र पहले है और दूसरे शख़्स से मुराद हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) हैं। और ग़ुलाम गूँगे से मुराद हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) का वह ग़ुलाम है जिस पर आप ख़र्च करते थे जो आपको तक्लीफ़ पहुँचाता रहता था और आपने उसे काम काज से आज़ाद कर रखा था लेकिन फिर यह इस्लाम से चिढ़ता था मुंकिर था और आपको सदक़ा करने और नेकियाँ करने से रोकता था, उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई है।

***

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۷۷﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَیْـًٔا ۙ
وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ
مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

तर्जुमा : ''आसमान व ज़मीन का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को मालूम है क़यामत का अम्र तो ऐसा ही है जैसे आँख का झपकना बल्कि उससे भी ज़्यादा क़रीब। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (77) अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे उसी ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाए कि तुम शुक्रगुज़ारी करो। (78) क्या इन लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा जो हुक्म के बंधे हवाए आसमान में जिन्हें सिवाय अल्लाह तआला के कोई और थामे हुए नहीं, बेशक इसमें तो ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।'' (79)

अल्लाह का कमाले इल्म और कमाले क़ुदरत (आयत 77-79) : अल्लाह तआ़ला अपने कमाले इल्म और कमाले क़ुदरत को बयान फ़र्मा रहा है कि ज़मीन आसमान का ग़ैब वही जानता है कोई नहीं जो ग़ैब का जानने वाला हो, अल्लाह जिसे जिस चीज़ पर चाहे ख़बर दे दे हर चीज़ उसकी क़ुदरत में है, न कोई उसका ख़िलाफ़ कर सके, न कोई उसे रोक सके जिस काम का जब इरादा करे क़ादिर है पूरा होकर ही रहता है आँख बंद करके खोलने में तो तुम्हें कुछ देर लगती होगी लेकिन हुक्मे इलाही के पूरे होने में इतनी भी देर नहीं लगती। क़यामत का आना भी उस पर ऐसा ही आसान है वह हुक्म होते ही आ जाएगी। एक का पैदा करना और सबका

पैदा करना उस पर एक जैसा है, अल्लाह तआला का एहसान देखो कि उसने लोगों को माओं के पेटों से निकाला, यह सिर्फ़ नादान थे, फिर उन्हें कान दिए, जिससे सुनें, आँखें दीं जिनसे देखें, दिल दिये जिससे सोचें, समझें, अक़्ल की जगह दिल है और दिमाग़ भी कहा गया है। अक़्ल से ही नफ़ा व नुक़्सान मालूम होता है यह क़ौवा (ताक़त) व हवास इंसान को बतदरीज थोड़े थोड़े होकर मिलते हैं उम्र के साथ ही साथ उसकी बढ़ोतरी भी होती रहती है यहाँ तक कि कमाल को पहुँच जाएँ। यह सब इसलिए है कि इंसान अपनी इन ताक़तों को अल्लाह की मारिफ़त में लगाए रहे। सहीह बुख़ारी में हदीसे क़ुदसी है कि ''जो मेरे दोस्तों से दुश्मनी करता है वह मुझे लड़ाई का ऐलान देता है मेरे फ़रीज़े की बजाआवरी से जिस क़द्र बंदा मेरी नज़दीकी हासिल कर सकता है इतनी किसी और चीज़ से नहीं कर सकता। नवाफ़िल बकसरत पढ़ते पढ़ते बन्दा मेरे नज़दीक और मेरा महबूब हो जाता है। जब मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं ही उसके कान बन जाता हूँ जिनसे वह सुनता है और उसकी निगाह बन जाता हूँ जिससे वह देखता है और उसके हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह थामता है और उसके पैर बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है वह अगर मुझसे माँगे मैं देता हूँ अगर दुआ करे, मैं क़बूल करता हूँ, अगर पनाह चाहे मैं पनाह देता हूँ और मुझे किसी करने के काम में इतना तरद्दुद नहीं होता जितना मोमिन की रूह के क़ब्ज़ करने में वह मौत को नापसंद करता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अत्तवाज़ोउ : 6502; बैहक़ी : 3/346; किताबुज़्ज़ुहद : 2/269) मैं उसे नाराज़ करना नहीं चाहता और मौत ऐसी चीज़ ही नहीं जिससे किसी ज़ी रूह को नजात मिल सके।'' इस हदीस का मतलब यह है कि जब मोमिन इख़्लास और इताअत में कामिल हो जाता है तो उसके तमाम अफ़आल (काम) सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो जाते हैं, वह सुनता है अल्लाह के लिए, देखता है अल्लाह के लिए, यानी शरीअत की बातें सुनता है, शरअ ने जिन चीज़ों का देखना जाइज़ किया है, उन ही को देखता है इसी तरह उसका हाथ बढ़ाना, पैर चलाना भी अल्लाह की रज़ामंदी के कामों के लिए ही होता है अल्लाह पर उसका भरोसा होता है उसी से मदद चाहता है तमाम काम उसके अल्लाह की रज़ाजूई के लिए होते हैं इसलिए कुछ ग़ैर सही अहादीस में इसके बाद यह भी आया है कि फिर वह मेरे लिए ही सुनता है और मेरे लिए ही देखता है और मेरे लिए पकड़ता है और मेरे लिए ही चलता फिरता है। आयत में बयान है कि माँ के पेट से निकालता है कान आँख दिलो दिमाग़ वह देता है ताकि तुम शुक्र अदा करो और आयत में फ़र्मान है (قُلْ هُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ) (67/मुल्क : 23) यानी अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया है और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए हैं लेकिन तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो, उसी ने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया है और उसी की तरफ़ तुम्हारा हश्र किया जाने वाला है फिर अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़र्माता है कि इन परिन्दों की तरफ़ देखो जो आसमान व ज़मीन के बीच फ़िज़ा में परवाज़ करते फिरते हैं उन्हें परवरदिगार ही अपनी क़ुदरते कामिला से थामे हुए है, यह कुव्वते परवाज़ (उड़ने की ताक़त) उसी ने उन्हें दे रखी है और हवाओं को उनका मुतीअ (ताबेदार) बना रखा है। सूरह मुल्क में भी यही फ़र्मान है कि क्या वह अपने सरों पर उड़ते हुए परिन्दों को नहीं देखते जो पर खोले हुए हैं और पर समेटे हुए भी हैं, उन्हें सिवाए अल्लाह रहमानो रहीम के कौन थामता है? वह अल्लाह तमाम मख़्लूक़ को बख़ूबी देख रहा है। (67/मुल्क: 19) यहाँ भी ख़ात्मे पर फ़र्माया कि उसमें ईमान वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا
تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ
اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ
اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ
نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में सुकूनत की जगह बना दी है और उसी ने तुम्हारे लिए चौपायों की खालों के घर बना दिए हैं जिन्हें तुम हल्का फुल्का पाते हो अपने कूच के दिन और अपने ठहराने के दिन भी और उनकी ऊन और रूओं और बालों से भी उसने बहुत से सामान और एक वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए फ़ायदे की चीज़ बना दीं। (80) अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों में साये बनाये हैं और उसी ने तुम्हारे लिए पहाड़ों में ग़ार बनाए हें और उसी ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए हैं जो तुम्हें गर्मी से बचाएँ और ऐसे कुर्ते भी जो तुम्हें लड़ाई के वक़्त काम आएँ वह इसी तरह अपनी पूरी पूरी नेअमतें दे रहा है कि तुम हुक्म मानने वाले बन जाओ। (81) फिर भी अगर यह मुँह मोड़े रहें तो तुझ पर तो सिर्फ़ ज़ाहिरी तब्लीग़ कर देना ही है। (82) यह अल्लाह की नेअमतें जानते पहचानते हुए भी उनके मुंकिर हो रहे हैं बल्कि इनमें के अक्सर नाशुक्रे हैं।" (83)

राहत व आराम वाली नेअमतें (आयत 80-83) : क़दीम और बहुत बड़े अनगिनत एहसानात व इन्आमात वाला इलाह अपनी और नेअमतें इज़्हार फ़र्मा रहा है उसी ने बनी आदम के रहने सहने आराम और राहत हासिल करने के लिए इन्हें मकानात दे रखे हैं इसी तरह चौपाये जानवरों की खालों के ख़ेमे डेरे, तंबू उसने अता कर रखे हैं कि सफ़र में काम आएँ, न ले जाना दुभर, न लगाना मुश्किल, न उखेड़ने में कोई तक्लीफ़, फिर बकरियों के बाल, ऊँटों के बाल, भेड़ों और दुंबों की ऊन व्यापार तिजारत के लिए माल की शक्ल में उसने बना दी है, वह घर के बरतने की चीज़ भी है, उससे कपड़े भी बनते हैं, फ़र्श भी तैयार होते हैं, तिजारत के तौर पर माले तिजारत है, फ़ायदे की चीज़ है जिससे लोग मुक़र्ररा वक़्त तक सूदमंद होते हैं। दरख़्तों के साये उसने तुम्हारे फ़ायदे और राहत के लिए बनाए हैं पहाड़ों पर ग़ार क़िले वग़ैरह उसने तुम्हें दे रखे हैं कि उनमें पनाह हासिल करो छुपने और रहने सहने की जगह बना लो सूती ऊनी और बालों के कपड़े उसने तुम्हें दे रखे हैं कि पहनकर सर्दी गर्मी के बचाव के साथ ही अपना सतर छुपाओ और ज़ेबो ज़ीनत हासिल करो और उसने तुम्हें ज़िरहें ख़ूद बक्तर अता किए हैं जो

दुश्मनों के हमले और लड़ाई के वक़्त तुम्हें काम दें, इसी तरह वह तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत की पूरी पूरी नेअमतें दिए चला जाता है कि तुम राहत व आराम पाओ और इत्मिनान से अपने मुन्इमे हक़ीक़ी की इबादत में लगे रहो। (तुस्लिमून) की दूसरी क़िरअत (तस्लमून) भी है यानी तुम सलामत रहो और पहली क़िरअत के मअनी ताकि तुम फ़र्मांबरदार बन जाओ, इस सूरत का नाम सूरह नअम भी है लाम की ज़बर वाली क़िरअत से यह भी मुराद है कि तुमको उसने लड़ाई में काम आने वाली चीज़ें दें कि तुम सलामत रहो, दुश्मन के वार से बचो। बेशक जंगल में बयाबान भी अल्लाह की बड़ी नेअमत है लेकिन यहाँ पहाड़ों की नेअमत इसलिए बयान की कि जिनसे कलाम है वह पहाड़ों के रहने वाले थे तो उनकी मालूमात के मुताबिक़ उनसे कलाम हो रहा है इसी तरह चूँकि वह भेड़ बकरियों और ऊँटों वाले थे, उन्हें यही नेअमतें याद दिलाई हालाँकि उनसे बढ़कर अल्लाह की नेअमतें मख़्लूक़ के हाथों में और भी बेशुमार हैं और यही वजह है कि सर्दी के उतारने के एहसान को बयान फ़र्माया हालाँकि इससे और एहसान बड़े मौजूद हैं लेकिन यह उनके सामने की और उनकी मालूमात की चीज़ थी इसी तरह चूँकि यह लड़ने भिड़ने वाले जंगजू लोग थे लड़ाई के बचाव की चीज़ बतौरे नेअमत के इनके सामने रखी हालाँकि इससे सदहा दर्जे बड़ी और नेअमतें भी मख़्लूक़ के हाथ में मौजूद हैं इसी तरह चूँकि इनका मुल्क गर्म था, फ़र्माया कि लिबास से तुम गर्मी की तक्लीफ़ दूर करते रहो, वरना क्या इससे बेहतर उस मुन्इमे हक़ीक़ी की और नेअमतें बन्दों के पास नहीं? इसीलिए इन नेअमतों और रहमतों के इज़्हार के बाद फ़र्माता है कि अगर अब भी यह लोग मेरी इबादत और तौहीद के और मेरे बेपायाँ एहसानो-करम के क़ाइल न हों तो तुझे इनकी ऐसी क्या पड़ी है? छोड़ दे अपने काम में लग जा, तुझ पर तो सिर्फ़ तब्लीग़ ही है, वह किए जा, यह ख़ुद जानते हैं कि अल्लाह तआला ही नेअमतों का देने वाला है और उसकी बेशुमार नेअमतें इनके हाथों में हैं लेकिन बावजूद इल्म के मुंकिर हो रहे हैं और इसके साथ दूसरों की इबादत करते हैं बल्कि उसकी नेअमतों को दूसरों की तरफ़ मंसूब करते हैं, समझते हैं कि मददगार फ़लाँ है, रिज़्क़ देने वाला फ़लाँ है, यह अक्सर लोग काफ़िर हैं, अल्लाह के नाशुक्रे हैं। इब्ने अबी हातिम में है कि एक आराबी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया, आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत उसके सामने की कि अल्लाह तआला ने तुम्हें रहने सहने की जगह के लिए घर और मकानात दिए उसने कहा, सच है। फिर आप (ﷺ) ने पढ़ा कि उसने तुम्हें चौपायों की खालों के ख़ेमे दिये, उसने कहा, यह भी सच है, इसी तरह आप (ﷺ) इन आयतों को पढ़ते गए और वह हर हर नेअमत का इक़रार करता रहा आख़िर में आप (ﷺ) ने पढ़ा, इसलिए कि तुम मुसलमान और मुतीअ हो जाओ, उस वक़्त वह पीठ फेरकर चल दिया तो अल्लाह तआला ने आख़िरी आयत उतारी कि इक़रार के बाद इंकार करके काफ़िर हो जाते हैं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا

إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا

كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न इजाज़त दी जाएगी और न वह उ़ज़्रे रुजूअ त़लब किए जाएँगे। (84) जब यह ज़ालिम अ़ज़ाब देख लेंगे फिर न तो वह हल्का किया जाएगा और न वह ढील दिए जाएँगे। (85) जब मुश्रिकीन अपने शरीकों को देख लेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! यही हमारे वह शरीक हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे पस वह उन्हें जवाब देंगे कि तुम बिलकुल ही झूठे हो। (86) उस दिन वह सब आ़जिज़ होकर अल्लाह तआ़ला के सामने इत़ाअ़त का इक़रार पेश करेंगे और जो बोहतानबाज़ दग़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो जाएगा। (87) जिन्होंने कुफ्र किया और अल्लाह की राह से रोका, हम उन्हें अ़ज़ाबों पर अ़ज़ाब बढ़ाते जाएँगे, यह बदला होगा उनकी फ़ित्नापरदाज़ियों का।" (88)

मुश्रिक सबसे बड़ा गुमराह है (आयत 84-88) : क़यामत के दिन मुश्रिकों की जो दुर्गत बनेगी उसका ज़िक्र हो रहा है कि उस दिन हर उम्मत पर उसका नबी गवाही देगा कि उसने कलामे इलाही उन्हें पहुँचा दिया था फिर काफ़िरों को उ़ज़्र मअ़ज़िरत की भी इजाज़त न मिलेगी क्योंकि उनका बुत़्लान और झूठ बिलकुल ज़ाहिर है। सूरह मुर्सलात में भी यही फ़र्मान है कि उस दिन न वह बोलेंगे न उन्हें उ़ज़्र मअ़ज़िरत की इजाज़त मिलेगी। (77/मुर्सलात : 35, 36) मुश्रिकीन अ़ज़ाबों को देखेंगे लेकिन फिर कोई कमी न होगी। एक साअ़त भी अ़ज़ाब हल्का न होगा, न उन्हें कोई मोहलत मिलेगी अचानक पकड़ लिए जाएँगे जहन्नम आन मौजूद होगी। जो 70 हजार लगामों वाली होगी जिसकी एक लगाम पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब जहन्नम अआ़ज़नल्लाहु मिन्हा : 2842; ह़ाकिम : 4/637; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/388; इब्ने अबी शैबा : 7/48; मुस्नदे बज़्ज़ार : 1754; मुअ़जमुल कबीर : 10428) इसमें से एक गर्दन निकलेगी जो इस त़रह़ फन फनाएगी कि तमाम अहले मह़्शर ख़ौफ़ज़दा होकर घुटनों के बल गिर पड़ेंगे, उस वक़्त जहन्नम अपनी ज़ुबान से बाआवाज़े बुलंद ऐलान करेगी कि मैं हर एक उस सरकश ज़िद्दी के लिए मुक़र्रर की गई हूँ, जिसने अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और को शरीक किया हो और ऐसे ऐसे काम किए हों। चुनाँचे वह कई क़िस्म के गुनहगारों का ज़िक्र करेगी। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिन्नार : 2574; बि इख़्तिलाफ़ि युसीर वहुव ह़सन; अह़मद : 2/336; शुअ़बुल ईमान : 6317) जैसे कि ह़दीस में है फिर वह उन तमाम लोगों को लिपट जाएगी और मैदाने मह़्शर में से उन्हें लपक लेगी। जैसे कि परिन्द दाना चुगता है जैसे कि फ़र्माने बारी है (إِذَا رَأَتْهُم) (25/फ़ुरक़ान : 12) जबकि वह दूर से दिखाई देगी तो उसका शोरो गुल कड़कना भड़कना यह सुनने लगेंगे और जब उसके तारीक व तंग मकान में झोंक दिये जाएँगे तो मौत

को पुकारेंगे, आज एक छोड़ कई मौतों को भी पुकारें तो क्या हो सकता है? और आयत में है (وَرَءَا ٱلْمُجْرِمُونَ ٱلنَّارَ) (18/कहफ़ : 53) गुनहगार जहन्नम को देखकर समझ लेंगे कि वह उसमें झोंक दिए जाएँगे लेकिन कोई बचाव न देखेंगे और आयत में है (لَوْ يَعْلَمُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا) (21/अम्बिया : 39) काश! काफ़िर उस वक़्त को जान लेते जबकि वह अपने चेहरों पर से और अपनी कमरों पर से जहन्नम की आग को दूर न कर सकेंगे, न किसी को मददगार पाएँगे अचानक अ़ज़ाबे इलाही उन्हें हक्का बक्का कर देगा न उन्हें उनके दूर करने की त़ाक़त होगी, न एक मिनट की मोहलत मिलेगी उस वक़्त उनके मअ़बूदाने बात़िल जिनकी उ़म्र भर इबादतें और नज़्रें नियाज़ें करते रहे उनसे बिलकुल बेज़ार हो जाएँगे और उनकी एह़तियाज के वक़्त उन्हें मुत़्लक़न (कुछ भी) काम न आएँगे, उन्हें देखकर यह कहेंगे कि ऐ अल्लाह! यह हैं जिन्हें हम दुनिया में पूजते रहे तो वह कहेंगे, झूठे हो हमने कब तुमसे कहा था कि अल्लाह को छोड़कर हमारी पूजा करो, इसी को जनाब बारी तआ़ला ने फ़र्माया (وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِن دُونِ ٱللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُۥٓ) (46/अह़क़ाफ़ : 5) यानी उससे ज़्यादा कोई गुमराह नहीं जो अल्लाह तआ़ला के सिवा उन्हें पुकारता है जो उसे क़यामत तक जवाब न दे बल्कि वह उनके पुकारने से भी बेख़बर हों और ह़श्र के दिन उनके दुश्मन हो जाने वाले हों और उनकी इबादत का इंकार कर जाने वाले हों और आयतों में है कि अपना ह़िमायती और बाइसे इज़्ज़त जानकर जिन्हें यह पुकारते रहे वह तो उनकी इबादतों के मुंकिर हो जाएँगे और उनके मुख़ालिफ़ बन जाएँगे। (19/मरयम : 81, 82) ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने भी यही फ़र्माया (ثُمَّ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا) (29/अन्कबूत : 25) यानी क़यामत के दिन एक दूसरे के मुंकिर हो जाएँगे और आयत में है कि उन्हें क़यामत के दिन हुक्म होगा कि अपने शरीकों को पुकारो, आख़िर तक। (18/कहफ़ : 52) और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें कलामुल्लाह में मौजूद हैं उस दिन सबके सब मुसलमान ताबेअ़ फ़र्मान हो जाएँगे। जैसे फ़र्मान है (أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا) (19/मरयम : 38) यानी जिस दिन यह हमारे पास आएँगे उस दिन ख़ूब ही सुनते देखते बन जाएंगे और आयत में है (وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ) (32/सज्दा : 12) तू देखेगा कि उस दिन गुनहगार लोग अपने सर झुकाये कह रहे होंगे कि ऐ अल्लाह! हमने देख सुन लिया...। और आयत में है कि सब चेहरे उस दिन अल्लाह ह़य्युन व क़य्यूम के सामने झुके हुए होंगे। (20/त़ाहा : 111) ताबेअ़ और मुत़ीअ़ होंगे ज़ेरे फ़र्मान होंगे उनके सारे बोहतान इफ़्तिरा (मनगढ़त बातें) जाते रहेंगे सारी चालाकियाँ ख़त्म हो जाएँगी कोई नासिर व मददगार न होगा। जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें उनके कुफ़्र की सज़ा होगी और अपने कुफ़्र में औरों को घसीटने की और दुगुनी सज़ा होगी। यह वह हैं जो ख़ुद भी दूर भागते थे और दूसरों को भी ह़क़ से दूर भगाते रहते थे, दरअसल वह आप ही हलाकत की दलदल में फंस रहे थे लेकिन थे बेवक़ूफ़। इससे मालूम होता है कि काफ़िरों के अ़ज़ाब के भी दर्जे होंगे जिस त़रह़ मोमिनों के जज़ा के दर्जे होंगे। जैसे फ़र्माने इलाही है (لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ) (7/आराफ़ : 38) हर एक के लिए दोहरा है लेकिन तुम्हें इल्म नहीं। अबू यअ़ला में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है कि अ़ज़ाबे जहन्नम के साथ ही ज़हरीले साँपों को डसना बढ़ जाएगा जो इतने बड़े बड़े होंगे जितने बड़े खजूर के दरख़्त होते हैं। (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/48; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2659; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5581; ह़ाकिम : 2/355, 356; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इमाम ह़ाकिम (रह़.) ने इसे सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़हबी (रह़.) ने इसकी मुवाफ़िक़त की है लेकिन सनद ज़ईफ़ है। इसमें

आमश मुदल्लस रावी है।) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अर्श तले से पाँच नहरें आती हैं जिनसे दोज़ख़ियों को अज़ाब होगा रात को भी और दिन को भी।

***

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

तर्जुमा : ''जिस दिन हम हर उम्मत में उन ही में से उनके मुक़ाबले पर गवाह खड़ा करेंगे और तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लाएँगे और हमने तुझ पर यह किताब नाज़िल की है जो हर चीज़ का शाफ़ी बयान है और हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी है मुसलमानों के लिए।'' (89)

क़ुरआन मजीद में हर चीज़ का बयान (आयत 89) : अल्लाह तआला अपने मुहतरम रसूल (ﷺ) से ख़िताब करके फ़र्मा रहा है कि उस दिन को याद करो, और उस दिन जो तेरी शराफ़त व करामत होने वाली है उसका भी ज़िक्र कर। यह आयत भी वैसी ही है जैसी सूरह निसाअ के शुरू की आयत (فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا) (4/निसाअ : 41) यानी क्यूँकर गुज़रेगी जबकि हम हर उम्मत में से गवाह लाएँगे और तुझे उन सब पर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। हुज़ूर (ﷺ) ने एक बार हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सूरह निसाअ पढ़वाई जब वह इस आयत तक पहुँचे तो आपने फ़र्माया, ''बस कर काफ़ी है।'' इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने देखा कि उस वक़्त आप (ﷺ) की आँखों से आँसू जारी थे। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब क़ौलुल मुक़रा लिल क़ारिइ ह़स्बुक : 5050; सहीह मुस्लिम : 800; बैहक़ी : 10/231; मुअजमुल कबीर : 8460; शुअबुल ईमान : 1/481) फिर फ़र्माता है इस हमारी उतारी हुई किताब में हमने तेरे सामने सब कुछ बयान कर दिया है हर इल्म और हर चीज़ इस क़ुरआन में है। (तबरी : 17/269) हर हलाल व हराम, हर एक नाफ़ेअ इल्म, हर भलाई, गुज़िश्ता की ख़बरें, आइन्दा के वाक़ियात, दीनो दुनिया मआश व मआद सबके ज़रूरी अहकाम व अहवाल इसमें मौजूद हैं। यह दिलों के लिए हिदायत है, यह रहमत है, यह बशारत है। इमाम ओज़ाई (रह.) फ़र्माते हैं कि यह किताब सुन्नते रसूल (ﷺ) को मिलाकर हर चीज़ का बयान है इस आयत को ऊपर वाली आयत से ताल्लुक़ ग़ालिबन यह है कि जिसने तुझ पर इस किताब की तब्लीग़ फ़र्ज़ की है और उसे नाज़िल की है वह क़यामत के दिन तुझसे इसकी बाबत सवाल करने वाला है जैसे फ़र्मान है कि उम्मतों और रसूलों से सबसे सवाल होगा। वल्लाह! हम सबसे उनके आमाल की पूछताछ करेंगे रसूलों को जमा करके उनसे सवाल होगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला? वह कहेंगे कि हमें कोई इल्म नहीं तू अल्लामुल ग़ुयूब है और आयत में है (إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ) (28/क़सस :

85) यानी जिसने तुझ पर तब्लीग़े क़ुरआन फ़र्ज़ की है वह तुझे क़यामत के दिन अपने पास लौटाकर अपने सौंपे हुए फ़रीज़े की बाबत तुझसे पूछताछ करने वाला है। यह एक क़ौल भी इस आयत की तफ़सीर में है और है भी मअ़क़ूल और उ़म्दा।

***

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآئِ ذِى الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआ़ला अ़द्ल का भलाई का और क़राबतदारों के साथ सुलूक करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों का नाशाइस्ता हरकतों और ज़ुल्मो-ज़्यादती से रोकता है वह आप तुम्हें नसीहतें कर रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो।" (90)

अ़दल, एहसान, सिलारहमी और फ़हशा व मुंकर का मतलब (आयत 90) : अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला अपने बन्दों को अ़दलो इंसाफ़ का हुक्म देता है और सुलूक व एहसान की रहनुमाई करता है भले बदला लेना भी जाइज़ है। जैसे आयत (وَإِنْ عَاقَبْتُمْ) (16/नहल : 126) में फ़र्माया कि अगर बदला लो तो बराबर बराबर का बदला ले सकते हो लेकिन अगर सब्रो सिहार कर लो तो क्या ही कहना है, यह बड़ी मर्दानगी की बात है और आयत में फ़र्माया, इसका अज्र अल्लाह के यहाँ मिलेगा और आयत में है ज़ख़्मों का क़िसास है लेकिन जो दरगुज़र कर जाए उसके गुनाहों की माफ़ी है। (5/माइदा : 45) पस अ़दल तो फ़र्ज़ और एहसान नफ़्ल। कलिम-ए-तौहीद की शहादत भी अ़दल है ज़ाहिर बातिन की यक रंगी भी अ़दल है और एहसान यह है कि बातिन की सफ़ाई ज़ाहिर से भी ज़्यादा हो और फ़हशाइ और मुंकर यह है कि बातिन में खोट हो और ज़ाहिर में बनावट हो। वह सिलारहमी का भी हुक्म देता है।

जैसे साफ़ लफ़्ज़ों में इर्शाद है (وَءَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ) (17/बनी इस्राईल : 26) रिश्तेदारों को मिस्कीनों को, मुसाफ़िरों को, उनका हक़ दो और इस्राफ़ व बेजा न उड़ाओ मुहर्रमात से वह तुम्हें रोकता है, बुराइयों से वह मना करता है, ज़ाहिरी व बातिनी तमाम बुराइयाँ हराम हैं, लोगों पर ज़ुल्मों ज़्यादती हराम है। हदीस में है कि कोई गुनाह ज़ुल्मों ज़्यादती व क़तअ़ रहमी से बढ़कर ऐसा नहीं कि दुनिया में भी जल्दी ही उसका बदला मिले और आख़िरत में सख़्त पकड़ हो। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िन्नही अ़निल बग़्य : 4902; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2511; इब्ने माजा : 4211; हाकिम : 2/356; इब्ने हिब्बान : 2039; अहमद : 5/36) अल्लाह के यह अहकाम और यह रोकें तुम्हारी नसीहत के लिए हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं जामेअ़ आयत सारे क़ुरआन की सूरह नहल में यह आयत है। (हाकिम : 2/356; व सनदुहू सहीहुन; इमाम हाकिम (रह.) ने इसे सहीह क़रार दिया है) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं जो अच्छी आ़दतें हैं उनका हुक्म क़ुरआन ने दिया है और जो बुरी ख़स्लतें लोगों में हैं उनसे अल्लाह तआ़ला ने रोक दिया है बदख़ुल्क़ी और बुराई से उसे

मुमानिअत कर दी है। हदीस में है "बेहतरीन अख़लाक़ अल्लाह को पसंद हैं और बदख़ुल्क़ी को वह मकरूह रखता है।" (हाकिम : 1/48; तबरानी : 5928; वसनदुहू हसन; हिल्यतुल औलिया : 3/255) अक्सम बिन सैफ़ी को जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की बाबत ख़बर मिली तो उसने ख़िदमते नबी (ﷺ) में हाज़िर होने की ठान ली लेकिन उसकी क़ौम उसके सर हो गई और उसे रोक लिया उसने कहा, अच्छा! मुझे नहीं जाने देते तो क़ासिद लाओ जिन्हें मैं वहाँ भेजूँ। दो शख़्स उस ख़िदमत की अंजामदेही के लिए तैयार हुए, यहाँ आकर उन्होंने कहा कि हम अक्सम बिन सैफ़ी के क़ासिद हैं वह आपसे पूछता है कि आप कौन हैं और क्या हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "पहले सवाल का जवाब तो यह है कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ और दूसरे सवाल का जवाब यह है कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उसका रसूल।" फिर आप (ﷺ) ने यही आयत उन्हें पढ़कर सुनाई। उन्होंने कहा, दोबारा पढ़िए। आप (ﷺ) ने फिर पढ़ी यहाँ तक कि उन्होंने याद कर ली फिर वापिस जाकर अक्सम को सब ख़बर कर दी और कहा, अपने नसब पर उसने कोई फ़ख़्र नहीं किया, सिर्फ़ अपना और अपने वालिद का नाम बता दिया लेकिन हैं वह बड़े नसब वाले, मुज़र में आला ख़ानदान के हैं और कहा फिर यह कलिमात हमें तालीम फ़र्माए जो आप (ﷺ) की जुबानी हमने सुने। यह सुनकर अक्सम ने कहा कि वह तो बड़ी अच्छी और आला बातें सिखाते हैं और बुरी और सुफ़्ला (घटिया) बातों से रोकते हैं। मेरे क़बीले के लोगों! तुम इस्लाम की तरफ़ सब्क़त करो ताकि तुम दूसरों पर सरदारी करो और दूसरों के हाथों में दुमें बनकर न रह जाओ। (इसकी सनद में अब्दुल मलिक बिन उमेर ताबेई हैं जो इर्साल करते हैं। लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) इस आयत के शाने नुज़ूल में एक हसन हदीस मुस्नद इमाम अहमद में वारिद हुई है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) अपनी अंगनाई में बैठे हुए थे कि उस्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) आप (ﷺ) के पास से गुज़रे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "बैठते नहीं हो?" वह बैठ गए, आप (ﷺ) उसकी तरफ़ मुतवज्जा होकर बातें कर रहे थे कि हुज़ूर (ﷺ) ने दफ़अतन अपनी नज़रें आसमान की जानिब उठाईं कुछ देर ऊपर ही को देखते रहे फिर नज़रें आहिस्ता आहिस्ता नीची कीं और अपनी दायें जानिब ज़मीन की तरफ़ देखने लगे और उसी तरफ़ आप (ﷺ) ने रुख़ भी कर लिया और इस तरह सिर हिलाने लगे गोया किसी शख़्स से कुछ समझ रहे हों और कोई आपसे कुछ कह रहा है थोड़ी देर तक यही हालत तारी रही फिर आप (ﷺ) ने निगाहें ऊँची करनी शुरु कीं। यहाँ तक कि आसमान तक आप (ﷺ) की नज़रें पहुँचीं फिर आप (ﷺ) ठीक ठाक हो गए और उसी पहली बैठक पर उस्मान की तरफ़ मुतवज्जा होकर बैठ गए, वह यह सब देख रहा था उससे सब्र न हो सका, पूछा कि हज़रत! आपके पास कई बार बैठने का इत्तिफ़ाक़ हुआ लेकिन आज जैसा मंज़र तो कभी नहीं देखा। आप (ﷺ) ने पूछा, "तुमने क्या देखा?" कहा यह कि आप (ﷺ) ने अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई फिर नीची कर ली और अपने दाएँ तरफ़ देखने लगे और उसी तरफ़ घूमकर बैठ गये मुझे छोड़ दिया फिर इस तरह सिर हिलाने लगे जैसे कोई आप (ﷺ) से कुछ कह रहा हो और आप अच्छी तरह उसे सुन समझ रहे हों। आप (ﷺ) ने फ़र्माया , "अच्छा! तुमने यह सब कुछ देखा?" उसने कहा, बराबर देखता ही रहा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरे पास अल्लाह का भेजा हुआ फ़रिश्ता वही लेकर आया था।" उसने कहा अल्लाह का भेजा हुआ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! हाँ! अल्लाह का भेजा हुआ।" पूछा फिर उसने आपसे क्या कहा? आप (ﷺ) ने यही आयत पढ़कर सुनाई। हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) फ़र्माते हैं उसी वक़्त मेरे दिल में

ईमान बैठ गया और हुज़ूर (ﷺ) की मुहब्बत ने मेरे दिल में घर कर लिया। (अहमद : 1/318; व सनदुहू हसन; तब्रानी : 8322; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/48) और रिवायत में हज़रत उस्मान बिन अबिल आस (रज़ि.) से मरवी है कि मैं हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में बैठा हुआ था जो आप (ﷺ) ने अपनी निगाहें ऊपर को उठाई और फ़र्माया, ''जिब्राईल (عليه السلام) मेरे पास आए और मुझे हुक्म दिया कि मैं इस आयत को इस सूरत की इस जगह रखूँ।'' (अहमद : 4/218; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है। मज्मउज़्ज़वाइद : 7/48, 49) यह रिवायत भी सहीह है, वल्लाहु आलम!

***

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ

عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ

بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ

اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

तर्जुमा : ''और पूरा करो अल्लाह के वादे को जबकि तुम आपस में क़ौलो क़रार करो और क़समों को उनकी पुख़्तगी के बाद तोड़ा न करो बावजूद यह कि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहरा चुके हो, तुम जो कुछ करते हो अल्लाह तआला उसको बख़ूबी जान रहा है। (91) और उस औरत की तरह न हो जाओ जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के बाद टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाला कि ठहराओ तुम अपनी क़समों को आपस में मकर का बाइस इसलिए कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ा चढ़ा हो जाए। बात सिर्फ़ यही है कि इस ज़्यादती से अल्लाह तआला तुम्हें आज़मा रहा है यक़ीनन अल्लाह तआला तुम्हारे लिए क़यामत के दिन हर उस चीज़ को खोलकर बयान कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे थे।'' (92)

क़समों और अहदो पैमान की हिफ़ाज़त का हुक्म (आयत 91, 92) : अल्लाह तआला मुसलमानों को हुक्म देता है कि वह अहदो पैमान की हिफ़ाज़त करें क़समों को निभाएँ तोड़ें नहीं। यहाँ क़समों को न तोड़ने की ताकीद की। और आयत में फ़र्माया कि अपनी क़समों का निशाना अल्लाह को न बनाओ, उससे भी क़समों की हिफ़ाज़त करनी मक़सूद है और आयत में है कि क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा है क़समों की पूरी हिफ़ाज़त करो। पस आयतों में यह हुक्म है और बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''वल्लाह! मैं जिस चीज़ पर क़सम खा लूँ और फिर उसके ख़िलाफ़ में बेहतरी देखूँ तो इंशाअल्लाह तआला! ज़रूर उस नेक काम को करूँगा और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब

क़ौलुल्लाहि तआला (ला युआख़िज़ुकुमल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी अयमानिकुम) : 6623; सहीह मुस्लिम : 1649; अह्मद : 4/401; मुस्नदे अबी अवाना : 4/33; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3038) तो मुंदर्जा बाला आयतों और अहादीस में कुछ फ़र्क़ न समझा जाए। वह क़समें और अहदो पैमान जो आपस के मुआहिदे और वादे के तौर पर हों उनका पूरा करना तो बेशक बेहद ज़रूरी है और जो क़समें रग़बत दिलाने रोकने के लिए ज़ुबान से निकल जाएँ वह बेशक कफ़्फ़ारा देकर टूट सकती हैं। पस इस आयत में मुराद जाहिलियत के ज़माने जैसी क़समें हैं। (तब्री : 17/282) चुनाँचे मुस्नद अह्मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "इस्लाम में दो जमाअतों की आपस में एक रहने की क़सम कोई चीज़ नहीं। हाँ! जाहिलियत में ऐसी इम्दाद व एआनत की जो क़समें आपस में हो चुकी हैं, इस्लाम उनको और मज़बूत करता है।" (अह्मद : 4/83; सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा बाब मुआख़अतुन् नबिय्यि (ﷺ) बैना अस्हाबिही : 2530; मवारिदुज़्ज़मआन : 2061; दारमी : 2/318; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 19200) इस हदीस के पहले जुम्ले के यह मअ़नी हैं कि इस्लाम क़बूल करने के बाद अब इसकी ज़रूरत नहीं कि एक बिरादरी वाले दूसरी बिरादरी वालों से अहदो पैमान करें कि हम तुम एक हैं, राहत व रंज में शरीक हैं वग़ैरह, क्योंकि इस्लाम का रिश्ता तमाम मुसलमानों को एक बिरादरी कर देता है, मश्रिक़ मग़्रिब के मुसलमान एक दूसरे के हमदर्द व ग़मख़्वार हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि हज़रत अनस (रज़ि.) के घर में रसूले करीम (ﷺ) ने अंसार व मुहाजिरीन में क़समा क़समी कराई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल किफ़ालत, बाब क़ौलुल्लाहि अज़्ज़ व जल्ला (वल्लज़ीना आक़त्ता अयमानकुम फ़अतूहुम नसीबुहुम) : 2294; सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब मुआख़ातुन् नबिय्यि (ﷺ) बैना अस्हाबिही : 2529; अबूदाऊद : 2966; अह्मद : 3/111; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4023; बैहक़ी : 6/262; अल्अदबुल मुफ़्रद : 569) इससे यह मम्नूअ भाईबंदी मुराद नहीं यह तो भाईचारा था जिसकी बिना पर आपस में एक दूसरे के वारिस होते थे आख़िर में यह हुक्म मंसूख़ हो गया और वरसा क़रीबी रिश्तेदारों से मख़्सूस हो गया। कहते हैं इस फ़र्माने इलाही से मतलब उन मुसलमानों को इस्लाम पर जमे रहने का हुक्म देना है जो हुज़ूर (ﷺ) के हाथ पर बेअ़त करके इस्लाम के अह्काम की पाबंदी का इक़रार करते थे तो उन्हें फ़र्माता है कि ऐसी ताकीदी क़सम और पूरे अहद के बाद कहीं ऐसा न हो कि मुहम्मदियों की जमाअत की कमी और मुश्रिकीन की जमाअत की ज़्यादती देखकर तुम उसे तोड़ दो। (तब्री : 17/281; इसकी सनद में अबू लैला नामालूम रावी है और इसका अबू हुरैरा (रज़ि.) से लिक़ाअ (मुलाक़ात) साबित नहीं हो सकता है, यह इब्ने अबी लैला ज़ईफ़ रावी है, वल्लाहु आलम!) मुस्नद अह्मद में है कि जब यज़ीद बिन मुआविया की बेअ़त लोग तोड़ने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने तमाम घराने के लोगों को जमा किया और अल्लाह की तारीफ़ करके अम्माबअ़द कहकर फ़र्माया कि हमने यज़ीद की बेअ़त अल्लाह व रसूल की बेअ़त पर की है और मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि हर ग़द्दार के लिए क़यामत के दिन एक झण्डा गाड़ा जाएगा और एलान किया जाएगा यह ग़द्दार है फ़लाँ बिन फ़लाँ का। अल्लाह के साथ शरीक करने के बाद सबसे बड़ा और सबसे बुरा ग़द्दार यह है कि अल्लाह और रसूल (ﷺ) की बेअ़त किसी के हाथ पर करके फिर तोड़ देना। याद रखो तुममें से कोई यह बुरा काम न करे और इस बारे में हद से न बढ़े वरना मुझमें और उसमें जुदाई है। (अह्मद : 2/48; सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन, बाब इज़ा क़ाला इन्द क़ौमिन शैअन सुम्मा

ख़रज फ़क़ाला बि ख़िलाफ़िही : 7111, 3188; सहीह मुस्लिम : 1735) मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो शख़्स किसी मुसलमान भाई से कोई शर्त करे और उसे पूरा करने का इरादा न रखता हो तो वह मिस्ल उस शख़्स के है जो अपने पड़ौसी को अमन देने के बाद बेपनाह छोड़ दे।" (अहमद : 5/404; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/167; इसकी सनद में हज्जाज बिन इरतात कसीरुल ख़ता और मुदल्लस रावी है। (अत्तक़रीब : 1/152) जिसकी वजह से यह रिवायत ज़ईफ़ है।) फिर उन्हें धमकाता है जो अहदो पैमान की हिफ़ाज़त न करें कि उनके इस काम से अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर है। मक्का में एक औरत थी जिसकी अक़्ल में फ़ितूर था सूत कातने के बाद ठीक ठाक और मज़बूत हो जाने के बाद बेवजह तोड़ ताड़कर फिर टुकड़े टुकड़े कर देती। (तब्री : 17/285) तो यह मिसाल है उसकी जो अहद को मज़बूत करके फिर तोड़ दे। (तब्री : 17/285) यही बात ठीक है अब इसे जाने दीजिए कि वाक़िया में कोई ऐसी औरत थी भी या नहीं जो यह करती हो यहाँ तो सिर्फ़ मिसाल मक़सूद है (अन्कासन) के मअनी टुकड़े टुकड़े। मुम्किन है कि यह (नक़ज़त ग़ज़्लहा) का इस्म मस्दर हो और यह भी हो सकता है कि बदल हो काना की ख़बर का यानी अन्कासा न बनो जमा नकस की नाकिस से फिर फ़र्माता है कि क़समों को मकर व फ़रेब का ज़रिया न बनाओ कि अपने से बड़ों को अपनी क़समों से इत्मिनान दिलाओ और अपनी ईमानदारी और नेक निय्यती का सिक्का बिठाकर फिर ग़द्दारी और बेईमानी कर जाओ, उनकी ज़्यादती देखकर झूठे वादे करके सुलह कर लो। और फिर मौक़ा पाकर लड़ाई शुरू कर दो, ऐसा न करो। पस जबकि इस हालत मेंभी अहद तोड़ना हराम कर दिया तो अपने ग़ल्बे और अपनी ज़्यादती के वक़्त तो बतौरे औला हराम हुई। बि-हम्दिल्लाह! हम सूरह अन्फ़ाल में हज़रत मुआविया (रज़ि.) का क़िस्सा लिख आए हैं कि उनमें और शाहे रूम में एक मुद्दत तक के लिए सुलहनामा हो गया था उस मुद्दत के ख़ात्मे के क़रीब आपने मुजाहिदीन सरहद्दे रूम की तरफ़ रवाना किये कि वह सरहद्द पर पड़ाव डालें और मुद्दत के ख़त्म होते ही धावा कर दें ताकि रूमियों को तैयारी का मौक़ा न मिले। जब हज़रत अम्र बिन अब्सा (रज़ि.) को यह ख़बर हुई तो आप अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया (रज़ि .) के पास आये और कहने लगे, अल्लाहु अकबर! ऐ मुआविया (रज़ि.)! अहद पूरा करो ग़दर और बद अहदी से बचो। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि जिस क़ौम से अहद मुआहिदा हो जाए तो जब तक कि मुद्दते सुलह ख़त्म न हो जाए कोई गिरह खोलने की भी इजाज़त नहीं। यह सुनते ही हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने अपने लश्करों को वापिस बुलवा लिया। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल इमामि यकूनु बैनहू व बैनल अदुव्वि अहद फ़युसीरु नहवा : 2759; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1580; शुअबुल ईमान : 4359) (अरबा) से मुराद अक्सर है। इस जुम्ले का यह भी मतलब है कि देखा कि दुश्मन क़वी और ज़्यादा है, सुलह कर ली और उस सुलह को फ़रेब का ज़रिया बनाकर उन्हें ग़ाफ़िल करके चढ़ दौड़े। और यह भी मतलब है कि एक क़ौम से मुआहिदा कर लिया फिर देखा कि दूसरी क़ौम उनसे ज़्यादा क़वी है उससे मामला कर लिया और अगले मुआहिदे को तोड़ दिया। यह सब मना है। इस कसरत से अल्लाह तुम्हें आज़माता है या यह कि अपने इस हुक्म से यानी पाबंदी वादा के हुक्म से अल्लाह तआला तुम्हारी आज़माइश करता है और तुममें सुलह फ़ैसले क़यामत के दिन वह आप कर देगा। हर एक को उसके आमाल का बदला देगा नेकों को नेक और बुरों को बुरा। (तब्री : 17/287)

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ
بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۹۴﴾
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾
مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾

तर्जुमा : "अगर अल्लाह तआला चाहता तो तुम सबको एक ही गिरोह बना देता लेकिन वह जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे हिदायत देता है यक़ीनन तुम जो कुछ कर रहे हो उससे बाज़पुर्स (पूछताछ) की जाने वाली है। (93) तुम अपनी क़समों को आपस में दग़ाबाज़ी का बहाना न बनाओ फिर तो तुम्हारे क़दम अपनी मज़बूती के बाद डगमगा जाएँगे और तुम्हें सख़्त सज़ा बर्दाश्त करनी पड़ेगी क्योंकि तुमने अल्लाह की राह से रोक दिया, और तुम्हें बड़ा सख़्त अ़ज़ाब होगा। (94) तुम अल्लाह के अ़हद को थोड़ी क़ीमत के बदले न बेच दिया करो, याद रखो कि अल्लाह के पास की चीज़ ही तुम्हारे लिए बेहतर है बशर्ते कि तुममें इल्म हो। (95) तुम्हारे पास जो कुछ है सब फ़ानी है और अल्लाह तआला के पास जो कुछ है बाक़ी है स़ब्र करने वालों को हम उनके भले आ़माल का बेहतरीन बदला ज़रूर अ़ता करेंगे।" (96)

हिदायत और गुमराही अल्लाह तआला के इख़्तियार में है (आयत 93-96) : अगर अल्लाह चाहता तो दुनिया भर का एक ही मज़हब व मस्लक कर देता जैसे फ़र्माया (وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً) (5/माइदा : 48) यानी अल्लाह तआला की चाहत होती तो ऐ लोगों! तुम सबको वह एक ही गिरोह कर देता। और आयत में है कि अगर तेरा रब चाहता तो रूए ज़मीन के सब लोग ईमान वाले ही होते। यानी उनमें मुवाफ़िक़त यगानिगत होती इख़्तिलाफ़ बुग़्ज़ बिलकुल न होता। तेरा रब क़ादिर है कि अगर चाहे सब लोगों को एक ही उम्मत कर दे, लेकिन यह तो मुख़्तलिफ़ ही रहेंगे मगर जिन पर तेरे रब का रहम हो, उसने उन्हें पैदा किया है, हिदायत ज़लालत उसी के हाथ में है, क़यामत के दिन वह हिसाब लेगा पूछगछ करेगा और छोटे बड़े नेक बद कुल आ़माल का बेहतरीन बदला देगा। फिर मुसलमानों को हिदायत करता है कि क़समों को अ़हदो पैमान को मक्कारी का ज़रिया न बनाओ, वरना साबित क़दमी के बाद फिसल जाओगे। जैसे कोई सीधी राह से भटक

जाए और तुम्हारा यह काम औरों के राहे इलाही से रुकने की वजह बन जाएगा, जिसका बदतरीन वबाल तुम पर पड़ेगा। क्योंकि कुफ्फ़ार जब देखेंगे कि मुसलमानों ने अ़हद करके तोड़ दिया, वादे का ख़िलाफ़ किया तो उन्हें दीन के साथ वुसूक़ और ऐतिमाद न रहेगा पस वह इस्लाम क़बूल करने से रुक जाएँगे और उनके इस रुकने की वजह चूँकि तुम बनोगे इसलिए तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब होगा और सख़्त सज़ा दी जाएगी। अल्लाह तआ़ला को बीच में रखकर जो वादे करो उसकी क़समें खाकर जो अ़हदो पैमान हों उन्हें दुनियावी लालच से तोड़ देना बदल देना तुम पर ह़राम है। भले सारी दुनिया ह़ासिल हो जाए तब भी इस हुर्मत के मुर्तकिब न बनो, क्योंकि दुनिया हैच है। अल्लाह तआ़ला के पास जो है वही बेहतर है, उस जज़ा और उस सवाब की उम्मीद रखो। जो अल्लाह तआ़ला की इस बात पर यक़ीन रखे, उसी का ताालिब रहे और हुक्मे इलाही की पाबंदी के मातह़त अपने वादों की निगहबानी करे उसके लिए जो अज्रो-सवाब अल्लाह के पास है वह सारी दुनिया से बहुत ज़्यादा और बहुत बेहतर है, उसे अच्छी त़रह जान लो। नादानी से ऐसा न करो कि सवाबे आख़िरत ज़ाया हो जाए बल्कि लेने के देने पड़ जाएँ। सुनो! दुनिया की नेअ़मतें ख़त्म होने वाली हैं और आख़िरत की नेअ़मतें ला ज़वाल और अबदी हैं। मुझे क़सम है जिन लोगों ने दुनिया में स़ब्र किया मैं उन्हें क़यामत के दिन उनके बेहतरीन आ़माल का निहायत आ़ला सिला अ़ता फ़र्माऊँगा और उन्हें बख़्श दूँगा।

***

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩٧

तर्जुमा : "जो शख़्स नेक अ़मल कर ले मर्द हो या औरत हो लेकिन हो ईमान वाला तो हम उसे यक़ीनन निहायत बेहतर ज़िन्दगी अ़ता करेंगे और उनके नेक आ़माल का बेहतर बदला भी उन्हें ज़रूर ज़रूर देंगे।" (97)

नेक आ़माल का बेहतर बदला ज़रूर मिलेगा (आयत 97) : अल्लाह तबारक व तआ़ला जल्ला शानुहू अपने उन बन्दों से जो अपने दिल में अल्लाह तआ़ला पर उसके रसूल पर पूरा ईमान रखें और किताबो सुन्नत की ताबेदारी के मातह़त नेक आ़माल करें वादा करता है कि वह उन्हें दुनिया में भी बेहतरीन और पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़ता करेगा, उ़म्दगी से उनकी उ़म्र बसर होगी, ख़्वाह वह मर्द हो या औरतें हों, साथ ही उन्हें अपने पास दारे आख़िरत में भी उनकी नेक आ़मालियों का बेहतरीन बदला अ़ता करेगा। दुनिया में पाक और ह़लाल रोज़ी, क़नाअ़त, ख़ुशनफ़्सी, सआ़दत, पाकीज़गी, इ़बादत का लुत्फ़, इत़ाअ़त का मज़ा, दिल की ठण्डक, सीने की कुशादगी सब ही कुछ अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ईमान वाले नेक आ़माल करने वाले को अ़ता होती है। चुनाँचे मुस्नद अह़मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "उसने फ़लाह़ ह़ासिल कर ली जो मुसलमान हो गया और बराबर रोज़ी दिया गया और जो मिला उस पर क़नाअ़त नसीब हुई।" (अह़मद : 2/168; सह़ीह़ मुस्लिम,

किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िल किफ़ाफ़ि वल क़नाअत : 1053; तिर्मिज़ी : 2348; इब्ने माजा : 4138; इब्ने हिब्बान : 270; हाकिम : 4/137; बैहक़ी : 4/196; मुअजमुल औसत : 4670; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 341; शुअबुल ईमान : 7/291) और हदीस में है "जिसे इस्लाम की राह दिखा दी गई और जिसे पेट पालने का टुकड़ा मयस्सर हो गया और अल्लाह तआला ने उसके दिल को क़नाअत से भर दिया, उसने नजात पा ली।" (हाकिम : 4/122; तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िल किफ़ाफ़ि वस्सब्रि अलैहि : 2349; व सनदुहू हसन; इसमें (नजात पा ली) की जगह (ख़ुशख़बरी है) के अल्फ़ाज़ हैं मज़ीद देखिए अहमद : 6/19; इब्ने हिब्बान : 705; हाकिम : 1/90; मवारिदुज़्ज़मआन : 2541; मुअजमुल कबीर : 786) सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तबारक व तआला अपने मोमिन बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता बल्कि उसकी नेकी का बदला दुनिया में अता करता है और आख़िरत की नेकियाँ भी उसे देता है हाँ! काफ़िर अपनी नेकियाँ दुनिया में ही खा लेता है। आख़िरत के लिए उसके हाथ में कोई नेकी बाक़ी नहीं रहती।" (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब जज़ाउल मोमिन बि हसनातिही फ़िद् दुनिया वल आख़िरति व तअजीले हस्नातिल काफ़िर फ़िद् दुनिया : 2808; अहमद : 3/123; इब्ने हिब्बान : 377 मुस्नद तयालिसी : 2013; मुस्नद अबी यअला : 2844)

***

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ إِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾

तर्जुमा : "क़ुरआन पढ़ने के वक़्त राँदे (धुत्कारे) हुए शैतान से अल्लाह तआला की पनाह तलब कर लिया करो। (98) ईमान वालों और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखने वालों पर उसका ज़ोर मुत्लक़न नहीं चलता। (99) हाँ! उसका ग़ल्बा उन पर तो यक़ीनन है जो उसी से रफ़ाक़त (दोस्ती) करें, और उसे अल्लाह तआला का शरीक ठहराएँ।" (100)

तिलावते क़ुरआन के आग़ाज़ में शैतान के शर से अल्लाह की पनाह माँगना (आयत 98-100) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) की ज़ुबानी अपने मोमिन बन्दों को हुक्म फ़र्माता है कि क़ुरआने करीम की तिलावत से पहले वह (अऊज़ु) पढ़ लिया करें। यह हुक्म फ़र्ज़ियत के तौर पर नहीं है। इब्ने जरीर (रह.) वग़ैरह ने इस पर इज्माअ नक़्ल किया है। अऊज़ की पूरी बहस मअ मअनी वग़ैरह के हम अपनी इस तफ़्सीर के शुरू में लिख आए हैं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! इस हुक्म की मस्लिहत यह है कि क़ारी क़ुरआन (क़ुरआन का पढ़ने वाला) ख़लत मलत हो जाने ग़ौरोफ़िक्र से रुक जाने और शैतानी वस्वसों के आने से बच जाए। इसीलिए जुम्हूर कहते हैं कि क़िरअत शुरू करने से पहले अऊज़ पढ़ लिया करे। किसी का क़ौल यह भी है कि ख़त्मे क़िरअत के बाद पढ़े। उनकी दलील यही आयत है लेकिन सहीह क़ौल पहला ही है और अहादीस की दलालत

भी इसी पर है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है कि ईमान वाले मुतवक्किलीन को वह ऐसे गुनाहों में फांस नहीं सकता जिनसे वह तौबा ही न करें। (तब्री : 17/294) उसकी कोई हुज्जत इनके सामने चल नहीं सकती। यह मुख़्लिस बन्दे उसके गहरे मकर से महफ़ूज़ रहते हैं हाँ! जो उसकी इताअत करें। (तब्री : 17/294) उसके कहे में आ जाएँ उसे अपना दोस्त और हिमायती ठहरा लें, उसे अल्लाह तआला की इबादतों में शरीक करने लगें, उन पर तो यह छा जाता है। यह मतलब भी हो सकता है कि ''ब'' को सबबिया बतलाएँ यानी वह उसकी फ़र्मांबरदारी के बाइस अल्लाह तआला के साथ शिर्कत करने लग जाए, यह मआनी भी हैं कि वह उसे अपने माल में अपनी औलाद में शरीके इलाही ठहरा लें।

***

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾

तर्जुमा : ''जब हम किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल देते हैं और जो कुछ अल्लाह तआला नाज़िल फ़र्माता है उसे वह ख़ूब जानता है तो यह कहते हैं कि तू तो बोहतान बाज़ है बात यह है कि उनमें अक्सर जानते ही नहीं। (101) कह दे कि उसे तेरे रब तआला की तरफ़ से जिब्राईल (عليه السلام) हक़ के साथ लेकर आए हैं ताकि ईमान वालों को अल्लाह तआला इस्तिक़ामत और हिदायत अता करे और मुसलमानों की रहनुमाई और बशारत के लिए। (102) हमें बख़ूबी इल्म है कि यह काफ़िर कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। इसकी ज़ुबान जिसकी तरफ़ यह निस्बत कर रहे हैं अज्मी है और यह कुरआन तो साफ़ अरबी ज़ुबान में है।'' (103)

नस्ख़ की हिक्मत मुश्रिक नहीं जानते (आयत 101-103) : मुश्रिकों की कमअक़्ली बेसबाती और बेयक़ीनी का बयान हो रहा है कि उन्हें ईमान कैसे नसीब हो? यह तो अज़्ली बदनसीब हैं नासिख़ मंसूख़ से अहकाम की तब्दीली देखकर बकने लगते हैं कि लो! साहब उनका बोहतान खुल गया। इतना नहीं जानते कि क़ादिरे मुत्लक़ अल्लाह तआला जो चाहे करे जो इरादा करे हुक्म दे एक हुक्म को उठा दे दूसरे को उसकी जगह रख दे। (तब्री : 17/297) जैसे आयत (مَا نَنْسَخْ) (2/बक़रह : 106) में फ़र्माया है पाक रूह यानी हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से हक़्क़ानियत व सदाक़त के अद्लो इंसाफ़ के साथ लेकर तेरी जानिब आते हैं ताकि ईमान वाले साबित क़दम हो जाएँ। अब उतरा, माना, फिर उतरा, फिर माना, उनके दिल रब की तरफ़ झुकते रहें ताज़ा ताज़ा कलामुल्लाह सुनते रहें, मुसलमानों के लिए हिदायत व बशारत हो

जाए, अल्लाह और रसूलुल्लाह के मानने वाले राहयाफ़्ता होकर ख़ुश हो जाएँ।

काफ़िरों का एक बोहतान और उसका रद्द : काफ़िरों की एक बोहतानबाज़ी बयान हो रही है कि वह कहते हैं कि उसे यह क़ुरआन एक इंसान सिखाता है। क़ुरैश के किसी क़बीले का एक अ़ज्मी गुलाम था सफ़ा पहाड़ी के पास ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता था। हुज़ूर (ﷺ) कभी कभी उसके पास बैठ जाया करते थे और कुछ बातें कर लिया करते थे। यह शख़्स सहीह अ़रबी ज़ुबान बोलने पर क़ादिर भी न था। टूटी फूटी ज़ुबान में बमुश्किल अपना मतलब अदा कर लिया करता था। उस इफ़्तिरा का जवाब जनाब बारी तआ़ला देता है कि वह क्या सिखाएगा जो ख़ुद बोलना नहीं जानता अ़ज्मी ज़ुबान का आदमी है और यह क़ुरआन तो अ़रबी ज़ुबान में है फिर फ़साहत व बलाग़त वाला, कमाल सलासत वाला, उ़म्दा और आ़ला पाकीज़ा और बाला, मअ़नी मतलब अल्फ़ाज़ वाक़ियात में सबसे निराला। बनी इस्राईली आसमानी किताबों से भी मंज़िलत और रिफ़अ़त वाला, वक़अ़त और इ़ज़्ज़त वाला। तुममें अगर ज़रा सी अ़क़्ल होती तो यूँ हथेली पर चराग़ रखकर चोरी करने को न निकलते ऐसा झूठ न बकते जो बेवक़ूफ़ों के यहाँ भी न चल सके। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि एक नसरानी गुलाम जिसे जबर कहा जाता था, जो हज़्रमी क़बीले के किसी शख़्स का गुलाम था उसके पास रसूलुल्लाह (ﷺ) मरवा के पास बैठ जाया करते थे उस पर मुश्रिकीन ने ख़बर उड़ाई कि यह क़ुरआन उसी का सिखाया हुआ है। उसके जवाब में यह आयत उतरी। (यह मोअ़ज़ल यानी ज़ईफ़ है।) कहते हैं कि उसका नाम यईश था। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि मक्का में एक लौहार था जिसका नाम बल्आम था यह अ़ज्मी शख़्स था उसे हुज़ूर (ﷺ) तालीम देते थे तो आपका उसके पास आना जाना देखकर क़ुरैश मशहूर करने लगे कि यही शख़्स आपको कुछ सिखाता है और आप (ﷺ) उसे कलामुल्लाह के नाम से अपने हल्क़े में सिखाते हैं। (तब्री : 17/298; इसकी सनद में मुस्लिम बिन कैसान ज़ईफ़ रावी है। (अल्जरह वत्तअ़दील : 8/192) किसी ने कहा है मुराद इससे सलमान फ़ारसी (रज़ि.) हैं। लेकिन यह क़ौल तो निहायत बूदा है क्योंकि हज़रत सलमान (रज़ि.) तो मदीने में आपसे मिले और यह आयत मक्का में उतरी है। उ़बैदुल्लाह बिन मुस्लिम कहते हैं हमारे दो कामी आदमी रूम के रहने वाले थे जो अपनी ज़ुबान में अपनी किताब पढ़ते थे। हुज़ूर (ﷺ) भी जाते आते कभी उनके पास खड़े होकर सुन लिया करते उस पर मुश्रिकीन ने उड़ाया कि उन ही से आप क़ुरआन सीखते हैं। इस पर यह आयत उतरी। (यह मोअ़ज़ल रिवायत है।) सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं मुश्रिकीन में से एक शख़्स था जो वही लिखा करता था उसके बाद वह इस्लाम से मुर्तद हो गया और यह बात गढ़ ली, उस पर अल्लाह की लानत हो।

***

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ إِنَّمَا يَفْتَرِي
الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ
بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا

فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

तर्जुमा :''जो लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों पर ईमान नहीं रखते उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से भी रहनुमाई नहीं होती। और उनके लिए अलमनाक अ़ज़ाब है। (104) झूठ इफ़्तिरा तो वही बाँधते हैं जिन्हें अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं होता यही लोग झूठे हैं। (105) जो शख़्स अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ़्र करे सिवाए उसके जिस पर जबर किया जाए और उसका दिल ईमान पर बरक़रार हो मगर जो कोई खुले दिल से कुफ़्र करे तो उन पर ग़ज़बे इलाही है और उन ही के लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है। (106) यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत से ज़्यादा महबूब रखा यक़ीनन अल्लाह तआ़ला काफ़िर लोगों को राहे रास्त नहीं दिखाता। (107) यह वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आँखों पर अल्लाह तआ़ला ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (108) कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में सख़्त नुक़्सान उठाने वाले हैं।''(109)

मुहम्मद (ﷺ) की सदाक़त का बयान (आयत 104-109) : जो अल्लाह के ज़िक्र से मुँह मोड़े अल्लाह की किताब से ग़फ़्लत करे अल्लाह की बातों पर ईमान लाने का क़स्द ही न रखे, ऐसे लोगों को अल्लाह भी दूर डाल देता है, उन्हें दीने ह़क़ की तौफ़ीक़ ही नहीं होती। आख़िरत में सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाबों में फंसते हैं। फिर फ़र्माया कि यह रसूल (ﷺ) पर झूठ इफ़्तिरा बाँधने वाले नहीं यह काम तो बदतरीन मख़्लूक़ का है जो मुल्हिद व काफ़िर हों उनका झूठ लोगों में मशहूर होता है। और ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) तो तमाम मख़्लूक़ से बेहतर व अफ़ज़ल दीनदार अल्लाह वाले सच्चों के सच्चे हैं, सबसे ज़्यादा कमाले इल्म व ईमान व अ़मल व नेकी में आप (ﷺ) को ह़ासिल है। सच्चाई में, भलाई में, यक़ीन में, मारिफ़त में आप (ﷺ) जैसा कोई नहीं। इन काफ़िरों से ही पूछ लो यह भी आपकी सदाक़त के क़ाइल हैं, आपकी अमानत के मद्दाह़ (त़ारीफ़ करने वाले) हैं। आप इनमें मुह़म्मद (ﷺ) अमीन के मुम्ताज़ लक़ब से मशहूर व मअ़रूफ़ हैं। शाहे रूम हिरक़्ल ने जब अबू सुफ़्यान से हुज़ूर (ﷺ) की निस्बत बहुत से सवालात किए, उनमें एक यह भी था कि दावा-ए-नबुव्वत से पहले तुमने उसे कभी झूठ की त़रफ़ निस्बत की है? अबू सुफ़्यान ने जवाब दिया कभी नहीं। इस पर शाह ने कहा, कैसे हो सकता है कि एक वह शख़्स जिसने दुनियावी मामलात में लोगों के बारे में कभी झूठ की गंदगी से अपनी ज़ुबान ख़राब न की हो वह अल्लाह पर झूठ बाँधने लगे। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल वह़ी, बाब कैफ़ा काना बदउल वह़ी इला

रसूलिल्लाहि (ﷺ): 7; सहीह मुस्लिमः 1773; इब्ने हिब्बानः 6554; मुस्नदे अबी अवानाः 6726; बैहक़ीः 9/178; सुननुल कुब्रा लिन्नसाईः 6/330; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ः 9724; अहमदः 1/262; मुस्नदे अबी यअलाः 2617)

मजबूरन कुफ़्र का इर्तिकाब नाक़िसे ईमान नहीं : अल्लाह सुब्हानहू व तआला बयान करता है कि जो लोग ईमान के बाद कुफ़्र करें देखकर अंधे हो जाएँ फिर कुफ़्र पर उनका सीना खुल जाए, उस पर इत्मिनान कर लें, यह अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होते हैं कि ईमान का इल्म हासिल करके फिर उससे फिर गए और उन्हें आख़िरत में बड़ी भारी अज़ाब होंगे। क्योंकि उन्होंने आख़िरत बिगाड़कर दुनिया की मुहब्बत की और इस्लाम पर मुर्तद होने को तर्जीह दी, सिर्फ़ दुनिया तलबी की वजह से। चूँकि उनके दिल हिदायते हक़ से ख़ाली थे अल्लाह की तरफ़ से साबितक़दमी उन्हें न मिली, दिलों पर मुहरें लग गईं, नफ़ा की कोई बात समझ में नहीं आती। कान और आँखें भी बेकार हो गईं, न हक़ सुन सकें न देख सकें। पस किसी चीज़ ने उन्हें कोई फ़ायदा न पहुँचाया और अपने अंजाम से ग़ाफ़िल हो गए। यक़ीनन ऐसे लोग क़यामत के दिन अपना और अपने वालों का नुक़सान करने वाले हैं। पहली आयत के बीच जिन लोगों का इस्तिस्ना किया है यानी वह जिन पर जबर किया जाए और उनके दिल ईमान पर जमे हुए हैं, इससे मुराद वह लोग हैं जो बसबब मारपीट और ईज़ाओं के मजबूर होकर ज़ुबान से मुश्रिकों की मुवाफ़िक़त करें। लेकिन उनका दिल वह न कहता हो बल्कि दिल में अल्लाह तआला पर उसके रसूल (ﷺ) पर कामिल इत्मिनान के साथ पूरा ईमान हो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, यह आयत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) के बारे में उतरी है जबकि आपको मुश्रिकीन ने अज़ाब करना शुरू किया जब कि आप हुज़ूर (ﷺ) के पास आकर उज़्र बयान करने लगे पस अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (तब्री : 17/304) शअबी, क़तादा और अबू मालिक (रह.) भी यही कहते हैं। (तब्री : 17/304) इब्ने जरीर में है कि मुश्रिकों ने आपको पकड़ा और अज़ाब देने शुरू कर दिए यहाँ तक कि आप उनके इरादों के क़रीब हो गए, फिर हुज़ूर (ﷺ) के पास आकर उसकी शिकायत करने लगे तो आपने पूछा तुम अपने दिल का हाल कैसा पाते हो? जवाब दिया कि वह तो ईमान पर मुत्मइन है जमा हुआ है आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगर वह फिर लौटें तो तुम भी लौटना।" (तब्री : 17/304; हाकिम : 2/357; व सनदुहू हसन; इमाम हाकिम (रह.) और ज़हबी (रह.) ने इस रिवायत को सहीह कहा है।) बैहक़ी में इससे भी ज़्यादा तफ़्सील से है। इसमें है कि आपने हुज़ूर (ﷺ) को बुरा भला कहा और उनके मअबूदों का ज़िक्र ख़ैर से किया। फिर आप (ﷺ) के पास आकर अपना यह दुख बयान किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं सज़ाओं से न छोड़ा गया जब तक कि मैंने आपको बुरा भला न कह लिया और उनके मअबूदों का ज़िक्र ख़ैर से न किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम अपना दिल कैसा पाते हो?" जवाब दिया कि ईमान पर मुत्मइन। फ़र्माया, "अगर वह फिर करें तो तुम भी फिर कर लेना।" (बैहक़ी : 8/208, 209 व सनदुहू हसन) इसी पर यह आयत उतरी। पस उलमा-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है कि जिस पर जबर व इकराह किया जाए उसे जाइज़ है कि अपनी जान बचाने के लिए उनकी मुवाफ़िक़त करे और यह भी जाइज़ है कि ऐसे मौक़े पर भी उनकी न माने जैसे कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने करके दिखाया कि मुश्रिकों की एक न मानी हालाँकि वह उन्हें बदतरीन तक्लीफ़ें देते थे यहाँ तक कि सख़्त गर्मियों में पूरी तेज़ धूप में आपको लिटाकर आपके सीने पर भारी वज़नी पत्थर रख दिया कि अब भी शिर्क करो तो नजात पाओ। लेकिन आप (रज़ि.) ने

फिर भी उनकी न मानी, साफ़ इंकार कर दिया और अल्लाह तआला की तौहीद अहद अहद के लफ़्ज़ से बयान करते रहे, बल्कि फ़र्माया करते थे कि वल्लाह! अगर इससे भी ज़्यादा तुम्हें चुभने वाला कोई लफ़्ज़ मेरे इल्म में होते तो मैं वही कहता, अल्लाह तआला उनसे राज़ी रहे और उन्हें भी हमेशा राज़ी रखे। इसी तरह हज़रत हबीब बिन ज़ेद अंसारी (रज़ि.) का वाक़िया है कि जब उनसे मुसेलमा कज़्ज़ाब ने कहा, क्या तू हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की रिसालत की गवाही देता है? तो आपने फ़र्माया, हाँ! फिर उसने आपसे पूछा कि क्या मेरे रसूलुल्लाह होने की गवाही भी देता है? तो आपने फ़र्माया, मैं नहीं सुनता। इस पर उस झूठे मुद्दई नबुव्वत ने उनके जिसम के एक हिस्से को काट डालने का हुक्म दिया। फिर यही सवाल व जवाब हुआ, दूसरा हिस्सा कट गया। यूँ ही होता रहा लेकिन आप आख़िरी दम तक उसी पर क़ायम रहे, अल्लाह तआला आपसे ख़ुश हो और आपको भी ख़ुश रखे। मुस्नद अहमद में है कि जो चंद लोग मुर्तद हो गए थे उन्हें हज़रत अली (रज़ि.) ने आग में जलवा दिया। जब हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) को यह वाक़िया मालूम हुआ तो आपने फ़र्माया कि मैं तो उन्हें आग में न जलाता, इसलिए कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "अल्लाह तआला के अज़ाब से तुम अज़ाब न करो, हाँ! बेशक मैं उन्हें क़त्ल करा देता" इसलिए कि फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि "जो अपने दीन को बदल दे उसे क़त्ल कर दो।" जब यह ख़बर हज़रत अली (रज़ि.) को हुई तो आपने फ़र्माया, इब्ने अब्बास (रज़ि.) की माँ पर अफ़सोस। (अहमद : 1/217; सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब ला युअज़्ज़बु बिअज़ाबिल्लाह : 3017, 6922; अबूदाऊद : 4251; तिर्मिज़ी : 1458; इब्ने माजा : 2535; मुख़्तसरन, दारे क़ुत्नी : 3/108) इसे इमाम बुख़ारी (रह.) ने भी वारिद किया है। मुस्नद में है कि हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) के पास यमन में मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) तशरीफ़ ले गए, देखा कि एक शख़्स उनके पास है। पूछा यह क्या? जवाब मिला कि यह एक यहूदी था फिर मुसलमान हो गया अब फिर यहूदी हो गया है, हम तक़रीबन दो माह से इसे इस्लाम पर लाने की कोशिश में हैं तो आपने फ़र्माया, वल्लाह! मैं बैठूँगा भी नहींजब तक कि तुम इसकी गर्दन न उड़ा दो यही फ़ैसला अल्लाह तआला और उसके रसूल का कि जो अपने दीन से लौट जाए उसे क़त्ल कर दिया जाए या फ़र्माया जो अपने दीन को बदल दे। (अहमद : 5/231; सहीह बुख़ारी, किताब इस्तिताबतुल मुर्तद्दीन वल मुआनेदीन व क़ितालुहुम : 6923; सहीह मुस्लिम : 1733) यह वाक़िया बुख़ारी व मुस्लिम में भी है लेकिन अल्फ़ाज़ और हैं पस अफ़ज़ल व औला यह है कि मुसलमान अपने दीन पर क़ायम और साबित क़दम रहे भले उसे क़त्ल भी कर दिया जाए। चुनाँचे हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी सहाबी (रज़ि.) के तर्जुमा में लाए हैं कि आपको रूमी कुफ़्फ़ार ने क़ैद कर लिया और अपने बादशाह के पास पहुँचा दिया उसने आपसे कहा कि तुम ईसाई बन जाओ, मैं तुम्हें अपने राज पाट में शरीक कर लेता हूँ और अपनी शहज़ादी तुम्हारे निकाह में दे देता हूँ, सहाबी (रज़ि.) ने जवाब दिया कि यह तो क्या? अगर तू अपनी तमाम बादशाहत मुझे दे दे और तमाम अरब का राज भी मुझे सौंप दे और यह चाहे कि मैं एक आँख झपकने के बराबर भी दीने मुहम्मदी (ﷺ) से फिर जाऊँ तो यह भी नामुम्किन है, बादशाह ने कहा, फिर मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा, हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हाँ! यह तुझे इख़्तियार है, चुनाँचे उसी वक़्त बादशाह ने हुक्म दिया और उन्हें सलीब पर चढ़ा दिया गया और तीरअंदाज़ों ने क़रीब से बहुक्मे बादशाह उनके हाथ पैर और जिस्म छेदना शुरु किया, बार बार कहा जाता था कि अब भी ईसाइयत क़बूल कर लो और आप पूरे इस्तिक़्लाल और सब्र से फ़र्माते जाते थे कि हर्गिज़ नहीं! आख़िर

बादशाह ने कहा, इसे सूली से उतार लो फिर हुक्म दिया कि पीतल की देग या पीतल की बनी हुई बड़ी सी कढ़ाई ख़ूब तपाकर आग बनाकर लाई जाए। चुनाँचे वह पेश हुई, बादशाह ने एक और मुसलमान क़ैदी की बाबत हुक्म दिया कि इसे उसमें डाल दो, उसी वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की मौजूदगी में आपके देखते हुए उस मुसलमान क़ैदी को उसमें डाल दिया गया वह मिस्कीन उसी वक़्त चुरमुरा होकर रह गया, गोश्त पोस्त जल गया, हड्डियाँ चमकने लगीं। फिर बादशाह ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से कहा कि देखो! अब भी हमारी मान लो और हमारा मज़हब क़बूल कर लो वरना इसी आग की देग में इसी तरह तुम्हें भी डालकर जला दिया जाएगा। आपने फिर भी अपने ईमानी जोश से काम लेकर फ़र्माया कि नामुम्किन! कि मैं अल्लाह तआ़ला के दीन को छोड़ दूँ उसी वक़्त बादशाह ने हुक्म दिया कि उन्हें चर्ख़ी पर चढ़ाकर उसमें डाल दो जब यह उस आग की देग में डाले जाने के लिए चर्ख़ी पर उठाये गए तो बादशाह ने देखा कि उनकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं, उसी वक़्त उसने हुक्म दिया कि रुक जाए, उन्हें अपने पास बुला लिया, इसलिए कि उसे उम्मीद बंध गई थी कि शायद इस सज़ा को देखकर अब इनके ख़्यालात बदल गए हैं, मेरी मान लेगा और मेरा मज़हब क़बूल करके मेरी दामादी में आकर मेरी सल्तनत का साझी बन जाएगा लेकिन बादशाह की यह तमन्ना और यह ख़्याल सिर्फ़ बेसूद निकला। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं सिर्फ़ इस वजह से रोया था कि आह! आज एक ही जान है जिसे अल्लाह तआ़ला की राह में इस सज़ा के साथ मैं कुर्बान कर रहा हूँ, काश! कि मेरे बदन के रोम रोम में एक एक जान होती कि आज मैं सब जानें अल्लाह की राह में इसी तरह एक एक करके फ़िदा करता। कुछ रिवायतों में है कि आपको क़ैदख़ाना में रखा, खाना पीना बंद कर दिया, कई दिन के बाद शराब और ख़िंज़ीर का गोश्त भेजा लेकिन आपने उस भूख पर भी उसकी तरफ़ तवज्जह तक न की, बादशाह ने बुलवा भेजा और उसे न खाने की वजह पूछी तो आपने जवाब दिया कि इस हालत में यह मेरे लिए हलाल तो हो गया है लेकिन मैं तुझ जैसे दुश्मन को अपने बारे में ख़ुश होने का मौक़ा देना ही नहीं चाहता हूँ। अब बादशाह ने कहा, अच्छा तो मेरे सर का बोसा ले तो मैं तुझे और तेरे साथ के और तमाम मुसलमान क़ैदियों को रिहा कर देता हूँ। आपने उसे क़बूल कर लिया, उसके सर का बोसा ले लिया और बादशाह ने भी अपना वादा पूरा किया और आपको और आपके तमाम साथियों को छोड़ दिया। जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा (रज़ि.) यहाँ से आज़ाद होकर हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) के पास पहुँचे तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, हर मुसलमान पर हक़ है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा (रज़ि.) का माथा चूमे और मैं शुरुआत करता हूँ, यह फ़र्माकर पहले आप (रज़ि.) ने उनके सर पर बोसा दिया। (इब्ने असाकिर : 29/244, 245; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन)

***

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ
بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا
عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

तर्जुमा : ''जिन लोगों ने फ़ित्नों में डाले जाने के बाद हिज्रत की फिर जिहाद किया और स़ब्र का सबूत दिया बेशक तेरा परवरदिगार उन बातों के बाद उन्हें बख़्शने वाला और मेहरबानियाँ करने वाला है। (110) जिस दिन हर शख़्स अपनी ज़ात के लिए लड़ता झगड़ता आएगा और हर शख़्स को उसके किये हुए आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा और लोगों पर मुत्लक़न (कुछ भी) ज़ुल्म न किया जाएगा।'' (111)

हिज्रत और जिहाद का बदला बख़्शिश है (आयत 110, 111) : यह दूसरी क़िस्म के लोग हैं जो बवजह अपनी कमज़ोरी और मिस्कीनी के मुश्रिकीन के ज़ुल्म के शिकार थे और हर वक़्त सताये जाते थे आख़िर उन्होंने हिज्रत की माल, औलाद, मुल्क, वतन को छोड़कर अल्लाह तआला की राह में चल खड़े हुए और मुसलमानों की जमाअत में मिलकर फिर जिहाद के लिए निकल पड़े और स़ब्रो सिहार से अल्लाह के कलिमे की बुलंदी में मशग़ूल हो गए। उन्हें अल्लाह तआला उन कामों यानी क़ुबूलियते फ़ित्ना के बाद भी बख़्शने वाला और उन पर मेहरबानियाँ करने वाला है। बरोज़े क़यामत हर शख़्स अपने छुटकारे के फ़िक्र में लगा होगा कोई न होगा जो अपनी माँ बाप या भाई या बीवी की तरफ़ से कुछ परवाह करे। उस दिन हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला मिलेगा किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा, न सवाब घटे, न गुनाह बढ़े, अल्लाह ज़ुल्म से पाक है।

***

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىِٕنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ
فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ
جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला उस बस्ती की मिसाल बयान करता है जो पूरे अम्न और इत्मिनान से थी उसकी रोज़ी उसके पास बाफ़राग़त (खूब-खूब)हर जगह से चली आ रही थी फिर उसने अल्लाह तआला की नेअमतों का कुफ्र किया तो अल्लाह तआला ने उसे भूख और डर का जामा पहनाया जो बदला था उनके करतूत का। (112) उनके पास उन ही में से रसूल पहुँचा फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया आख़िरकार उन्हें अज़ाब ने आ दबोचा वह थे ही गुनहगार।" (113)

नेअमतों की नाशुक्री का नतीजा (आयत 112, 113) : इससे मुराद अहले मक्का हैं यह अम्न व इत्मिनान में थे आस पास लड़ाईयाँ होतीं यहाँ कोई आँख भरकर भी न देखता जो यहाँ आ जाए, अम्न में समझा जाता। जैसे क़ुरआन ने फ़र्माया है कि यह लोग कहते हैं अगर हम हिदायत की पैरवी करें तो अपनी ज़मीन से उचक लिए जाएँ क्या हमने इन्हें अम्नो-अमान का हरम नहीं दे रखा? जहाँ हमारी रोज़ियाँ क़िस्म क़िस्म के फलों की शक्ल में इनके पास चारों तरफ़ से खिची चली आती हैं। यहाँ भी इर्शाद होता है कि उम्दा सहती पचती रोज़ी इस शहर के लोगों के पास हर तरफ़ से आ रही थी लेकिन फिर भी यह अल्लाह तआला की नेअमतों के मुंकिर रहे जिनमें सबसे आला नेअमत हुज़ूर (ﷺ) की बिअसत थी, जैसे इर्शादे बारी तआला है (أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا) (14/इब्राहीम : 28) क्या तूने उन्हें देखा? जिन्होंने अल्लाह तआला की नेअमते कुफ्र से बदल दी और अपनी क़ौम को हलाकत के घर पहुँचा दिया जो जहन्नम है जहाँ यह दाख़िल होंगे और जो बुरी क़रारगाह है। उनकी इस सरकशी की सज़ा में दोनों नेअमतें दो ज़हमतों से बदल दी गईं, अम्न ख़ौफ़ से, इत्मिनान भूख और घबराहट से, उन्होंने अल्लाह तआला के रसूल की न मानी। आपकी मुख़ालिफ़त पर कमर कस ली तो आप (ﷺ) ने उनके लिए सात क़हतसालियों की बद् दुआ की। जैसे यूसुफ़ (عليه السلام) के ज़माने में थीं। उस क़हतसाली (अकाल/सूखा) में उन्होंने ऊँट के ख़ून में लोथड़े हुए बाल तक खाये। अम्न के बाद ख़ौफ़ आया हर वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके लश्कर से ख़ौफ़ज़दा रहने लगे, आपकी दिन दूनी तरक़्क़ी और आपके लश्करों की बढ़ोतरी को सुनते और सहमे जाते थे यहाँ तक बिलआख़िर अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) ने उनके शहर मक्का पर चढ़ाई की और फ़तह करके वहाँ क़ब्ज़ा कर लिया। यह था उनके बुरे अमलों का नतीजा कि यह ज़ुल्म व ज़्यादती पर अड़े हुए थे और अल्लाह के रसूल (ﷺ) की तक्ज़ीब करते रहे थे। जिसे अल्लाह तआला ने उनमें ख़ुद उनमें से ही भेजा था। जिस एहसान का बयान आयत (لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ) (3/आले इमरान : 164) में फ़र्माया है और उसी का बयान आयत (فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ) (5/माइदा : 100) में है और इसी मअनी की आयत (كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ) (2/बक़रह : 151) में है (تَكْفُرُونِ) (2/बक़रह : 152) तक। इस लतीफ़े को भी न भूलिए कि जैसे कुफ्र की वजह से अम्न के बाद ख़ौफ़ आया और फ़राख़ी के बाद भूख आई ईमान की वजह से ख़ौफ़ के बाद अम्न मिला और भूख के बाद हुकूमत, सरदारी, इमारत और इमामत मिली। फ़सुब्हानहू मा आज़म शानुहू। सुलैम बिन नुमैर कहते हैं हम उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के साथ हज्ज से लौट रहे थे उस वक़्त मदीना मुनव्वरा में ख़लीफ़तुल मोमिनीन हज़रत उस्मान (रज़ि.) घिरे हुए थे। माई साहिबा (रज़ि.) अक्सर रह चलतों से उनकी बाबत पूछती थीं दो सवारों को जाते हुए देखकर आदमी भेजा कि उनसे ख़लीफ़तुर्रसूल का हाल पूछो उन्होंने ख़बर दी कि अफ़सोस! आप शहीद कर

दिये गए उसी वक़्त आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! यह मदीना ही है जिसकी बाबत अल्लाह तआला ने फ़र्माया है (व ज़बरल्लाहु..) उबेदुल्लाह बिन मुग़ीरा के शैख़ का भी यही क़ौल है।

***

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ
غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ
هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

तर्जुमा : ''जो कुछ हलाल और पाकीज़ा रोज़ी अल्लाह ने तुम्हें दे रखी है खाओ और अल्लाह की नेअमत का शुक्र करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो।(114) तुम पर सिर्फ़ मुरदार और ख़ून और सूअर का गोश्त और जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम पुकारा जाए हराम हैं फिर भी अगर कोई शख़्स बेबस कर दिया जाए न वह ज़ालिम हो न हद से गुज़रने वाला हो तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (115) किसी चीज को अपनी ज़ुबान से झूठ मूट न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँध लो। समझ लो कि अल्लाह पर बोहतानबाज़ी करने वाले कामयाबी से महरूम ही रहते हैं। (116) इन्हें बहुत थोड़ा बरतना मिलता है और इनके लिए ही दर्दनाक अज़ाब हैं।'' (117)

कुछ हरामकर्दा चीज़ों का तज़्किरा (आयत 114-117) : अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को अपनी दी हुई पाक रोज़ी हलाल करता है और शुक्र करने की हिदायत करता है इसलिए कि नेअमतों का देने वाला वही है इसीलिए इबादत के लायक़ भी सिर्फ़ वही अकेला है उसका कोई शरीक और साझी नहीं, फिर उन चीज़ों का बयान फ़र्मा रहा है जो उसने मुसलमानों पर हराम कर दी हैं जिसमें उनके दीन का नुक़्सान भी है और उनके लिए दुनिया का नुक़्सान भी है। जैसे अज़्ख़ुद मरा हुआ जानवर और बवक़्ते ज़िब्ह बहा हुआ ख़ून और सूअर का गोश्त और जो जानवर अल्लाह तआला के सिवा दूसरे के नाम पर ज़िब्ह किया जाए। लेकिन जो शख़्स उनके खाने की तरफ़ बेबस, लाचार, आजिज़, मोहताज, बेक़रार हो जाए और उन्हें खा ले तो अल्लाह बख़्शिश व रहमत से काम लेने वाला है। सूरह बक़रह में इसी जैसी आयत गुज़र चुकी है और वहीं उसकी कामिल तफ़्सीर भी बयान कर दी है अब दोबारा दोहराने की हाजत नहीं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! फिर काफ़िरों के

रवैया से मुसलमानों को रोक रहा है कि जिस तरह उन्होंने ख़ुद से अपनी समझ से हिल्लत हुर्मत क़ायम कर ली है तुम यह न करो, आपस में तै कर लिया कि फ़लाँ के नाम का जानवर हुर्मत व इज़्ज़त वाला बहीरा, साइबा, वसीला, हाम वग़ैरह। फ़र्मान है कि अपनी ज़ुबानों से झूठ मूट अल्लाह तआला के ज़िम्मे इल्ज़ाम रखकर आप हलाल हराम न ठहरा लो। इसमें यह भी दाख़िल है कि कोई अपनी तरफ़ से किसी बिदअत को निकाले जिसकी कोई शरई दलील न हो या अल्लाह तआला के हराम को हलाल करे या मुबाह को हराम क़रार दे और अपनी राय और तश्बीह से अहकाम ईजाद करे। (लिमा तसिफ़ु) में मा मसदरिया है यानी तुम झूठ वस्फ़ अपनी ज़ुबान से हलाल हराम का न गढ़ लो। ऐसे लोग दुनिया की फ़लाह से, आख़िरत की नजात से महरूम हो जाते हैं, दुनिया में भले कुछ यूँ ही सा फ़ायदा उठा लें लेकिन मरते ही अलमनाक अज़ाबों का लुक़्मा बनेंगे। यहाँ कुछ चखा-चखी कर लें वहाँ सख़्त अज़ाब बेबसी के साथ बर्दाश्त करने पड़ेंगे। जैसे फ़र्माने इलाही है अल्लाह पर झूठ इफ़्तिरा करने वाले नजात से महरूम हैं, दुनिया में कुछ यूँ ही पूँजी ले लें फिर तो हम इनके कुफ़्र की वजह से सख़्त अज़ाब चखायेंगे। (10/यूनुस : 69, 70)

***

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

तर्जुमा :''यहूदियों पर जो कुछ हमने हराम किया था उसे हम पहले ही से तुझे सुना चुके हैं हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे। (118) जो कोई जिहालत से बुरे अमल करे फिर तौबा कर ले और इस्लाह भी कर ले तो फिर भी तेरा रब बिला शक व शुब्हा बड़ी बख़्शिश करने वाला और निहायत ही मेहरबान है।''(119)

यहूदियों पर कुछ हराम की गयी चीज़ों का ज़िक्र (आयत 118, 119) : ऊपर बयान गुज़रा कि इस उम्मत पर मुरदार, ख़ून, लहमे ख़िंज़ीर (सूअर का गोश्त) और अल्लाह तआला के सिवा दूसरों के नाम की चीज़ें हराम हैं। फिर जो रुख़्सत इस बारे में थी उसे ज़ाहिर करके जो आसानी इस उम्मत पर की गई है उसे बयान फ़र्माया। यहूदियों पर उनकी शरीअत में जो हराम था और जो तंगी और हर्ज उनपर था उसे बयान फ़र्मा रहा है कि हमने उनकी हुर्मत की चीज़ें पहले ही से तुझे बतला दी हैं। सूरह अन्आम की आयत (وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ) (6/अन्आम : 146) में इन हराम चीज़ों का ज़िक्र हो चुका है यानी यहूदियों पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवरों को हराम कर दिया था और गाय और बकरियों की चर्बी को सिवाए उस चर्बी के जो उनकी पीठ पर लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डियों से मिली हुई हो, यह बदला था उनकी सरकशी का हम

अपने फ़र्मान में बिलकुल सच्चे हैं। हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था वह ख़ुद नाइंसाफ़ थे उनके ज़ुल्म की वजह से हमने वह पाकीज़ा चीज़ें जो उन पर हलाल थीं हराम कर दीं। दूसरी वजह उनका राहे इलाही से औरों को रोकना भी था। फिर अल्लाह तआला अपने उस रहमो करम की ख़बर देता है जो वह गुनहगार मोमिनों के साथ करता है कि इधर उसने तौबा की उधर रहमत भरी गोद उसके लिए फैल गई। कुछ सलफ़ का क़ौल है कि अल्लाह की नाफ़र्मानी जो करता है वह जाहिल ही होता है। तौबा कहते हैं गुनाह से हट जाने को और इस्लाह कहते हैं इताअत पर कमर कस लेने को। पस जो ऐसा करे उसके गुनाह और उसकी लग़्ज़िश के बाद भी उसे अल्लाह बख़्श देता है और उस पर रहम करता है।

***

إِنَّ إِبْرٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ
اجْتَبٰهُ وَهَدٰهُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي
الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

तर्जुमा : "बेशक इब्राहीम (عليه السلام) पेशवा और अल्लाह के फ़र्मां बरदार और एक तरफ़ा मुख़्लिस थे वह मुश्रिकों में से न थे। (120) अल्लाह तआला की नेअमतों के शुक्रगुज़ार थे। अल्लाह तआला ने उन्हें अपना बरगुज़ीदा कर लिया था और उन्हें राहे रास्त समझा दी थी। (121) हमने उसे दुनिया में भी हर तरह की बेहतरी दी थी और बेशक वह आख़िरत में भी अल्बत्ता नेककारों में है। (122) फिर हमने तेरी जानिब वही भेजी कि तू इब्राहीम हनीफ़ (عليه السلام) की पैरवी करता रह जो मुश्रिकों में से न थे।"(123)

इब्राहीम (عليه السلام) रुश्दो हिदायत के इमाम थे (आयत 120-123) : इमामे हुनफ़ा, वालिदे अम्बिया, ख़लीलुल्लाह, रसूले जल्ल व अला हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की तारीफ़ बयान हो रही है और मुश्रिकों, यहूदियों, और ईसाइयों से उन्हें अलग किया जा रहा है। (उम्मतन) के मअनी इमाम के हैं जिनकी इक़्तिदा की जाए। क़ानित कहते हैं इताअत गुज़ार फ़र्मांबरदार को। हनीफ़ के मअनी हैं शिर्क से हटकर तौहीद की तरफ़ आ जाने वाला। इसीलिए फ़र्माया कि वह मुश्रिकों से बेज़ार थे। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से जब उम्मतन क़ानितन के मअनी पूछे गए तो फ़र्माया लोगों को भलाई सिखाने वाला और अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह की मातहती करने वाला। इब्ने उमर फ़र्माते हैं कि उम्मत के मअनी हैं लोगों के दीन का मुअल्लिम। एक मर्तबा हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हज़रत मुआज़ (रज़ि.) उम्मतन क़ानितन और हनीफ़ थे उस पर

किसी ने अपने दिल में सोचा कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ग़लती कर गए ऐसे तो बा शहादते कुरआन हज़रत ख़लीलुर्रहमान थे। फिर ज़ुबानी कहा कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को उम्मत फ़र्माया है तो आपने फ़र्माया, जानते भी हो उम्मत के क्या मअनी हैं? और क़ानित के क्या मअनी? उम्मत कहते हैं उसे जो लोगों को भलाई सिखाए और क़ानित कहते हैं उसे जो अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की इताअत में लगा रहे। (हाकिम : 2/358; व सनदुहू ज़ईफुन) बेशक (हज़रत) मुआज़ (रज़ि.) ऐसे ही थे। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं वह तंहा उम्मत थे और ताबेअ फ़र्मान थे। वह अपने ज़माने में तंहा मुवहि्हद मोमिन थे बाक़ी तमाम लोग उस वक़्त काफ़िर थे। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं वह हिदायत के इमाम थे और अल्लाह के ग़ुलाम थे, अल्लाह की नेअमतों के क़द्रदान और शुक्रगुज़ार थे और रब के तमाम अहकाम के आमिल थे। जैसे ख़ुद अल्लाह तआला ने फ़र्माया (وَإِبْرَٰهِيمَ ٱلَّذِى وَفَّىٰٓ) (53/नज्म : 37) वह इब्राहीम (عليه السلام) जिसने पूरा किया यानी अल्लाह के तमाम अहकाम माने और बजा लाया। उसे अल्लाह ने मुख़्तार और मुस्तफ़ा बना लिया। जैसे फ़र्मान है (وَلَقَدْ ءَاتَيْنَآ إِبْرَٰهِيمَ رُشْدَهُۥ) (21/अम्बिया : 51) हमने पहले ही से इब्राहीम (عليه السلام) को रुश्दो हिदायत दे रखी थी और हम उसे ख़ूब जानते थे। उसे हमने राहे मुस्तक़ीम की रहबरी की थी सिर्फ़ एक अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की वह इबादत व इताअत करते थे और अल्लाह की पसंदीदा शरीअत पर क़ायम थे। हमने उन्हें दीनो दुनिया की ख़ैर का जामेअ बनाया था अपनी पाकीज़ा ज़िन्दगी के तमाम ज़रूरी औसाफ़े हमीदा उनमें थे। साथ ही आख़िरत में भी नेकियों के साथ और सलाहियत वाले थे उनका पाक ज़िक्र दुनिया में भी बाक़ी रहा और आख़िरत में बड़े अज़ीमुश्शान दर्जे मिले। उनके कमाल उनकी अज़्मत उनकी मुहब्बत तौहीद और उनके पाक तरीक़ पर इससे भी रोशनी पड़ती है कि ऐ ख़त्मुर्रुसुल! ऐ सय्यदुल अम्बिया! तुझे भी हमारा हुक्म हो रहा है कि मिल्लते इब्राहीम (عليه السلام) हनीफ़ की पैरवी कर जो मुश्रिकों में से न थे। सूरह अन्आम में इर्शाद है (قُلْ إِنَّنِى هَدَىٰنِى رَبِّىٓ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ) (6/अन्आम : 161) कह दे कि मुझे मेरे रब ने सिराते मुस्तक़ीम की रहबरी की है, मज़बूत और क़ायम दीने इब्राहीम हनीफ़ की जो मुश्रिकों में न थे फिर यहूदियों पर इंकार हो रहा है और फ़र्माया जा रहा है।

***

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

तर्जुमा : "हफ़्ते के दिन की अज़्मत तो सिर्फ़ उन लोगों के ज़िम्मे ही ज़रूरी की गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ किया था बात यह है कि तेरा परवरदिगार आप ही उनमें उनके इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़यामत के दिन करेगा।"(124)

हर उम्मत के लिए हफ़्ते के कुछ दिनों की हुर्मत का बयान (आयत 124) : हर उम्मत के लिए हफ़्ते में एक दिन अल्लाह तआ़ला ने ऐसा मुक़र्रर किया है जिसमें वह जमा होकर अल्लाह की इबादत की ख़ुशी मनाएँ। इस उम्मत के लिए वह दिन जुम्अ़े का दिन है इसलिए वह छटा दिन है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ का कमाल किया और सारी मख़्लूक़ पैदा हो चुकी और अपने बन्दों को उनकी ज़रूरत की अपनी पूरी नेअ़मत अ़ता फ़र्मा दी। मरवी है कि हज़रत मूसा (عليه السلام) की ज़ुबानी यही दिन बनी इस्राईल के लिए मुक़र्रर फ़र्माया गया था लेकिन वह उससे हटकर हफ़्ते के दिन को ले बैठे यह समझकर कि जुम्अ़े को मख़्लूक़ पूरी हो गई, हफ़्ते के दिन अल्लाह ने कोई चीज़ पैदा नहीं की। पस तौरात जब उतरी उन पर वही हफ़्ते का दिन मुक़र्रर हुआ और उन्हें हुक्म मिला कि इसे मज़बूती से थामे रहें, हाँ! यह ज़रूर फ़र्मा दिया गया था कि (हज़रत) मुहम्मद (ﷺ) जब भी आएँ तो वह सबके सब छोड़कर सिर्फ़ आप ही की इत्तिबाअ़ करें। इस बात पर उनसे वादा भी ले लिया था। पस हफ़्ते का दिन उन्होंने ख़ुद ही अपने लिए छांटा था और आप ही जुम्अ़ा को छोड़ा था। (तब्री : 17/320)

हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) के ज़माने तक यह उसी पर रहे। कहा जाता है कि फिर आपने उन्हें इतवार के दिन की तरफ़ दावत दी। एक क़ौल है कि आपने तौरात की शरीअ़त छोड़ी न थी सिवाए कुछ मंसूख़ अहकाम के और हफ़्ते के दिन की मुहाफ़िज़त आपने भी बराबर जारी रखी। जब आप ऊपर चढ़ा लिए गए तो आपके बाद क़ुस्तुन्तीन बादशाह के ज़माने में सिर्फ़ यहूदियों की ज़िद में आकर सख़रा से मश्रिक़ जानिब को अपना क़िब्ला उन्होंने मुक़र्रर कर लिया और हफ़्ते के बजाए इतवार का दिन मुक़र्रर कर लिया। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हम सबसे आख़िर वाले हैं और क़यामत के दिन सबसे आगे वाले हैं, हाँ! उन्हें किताबुल्लाह हमसे पहले दी गई यह दिन भी अल्लाह ने उन पर फ़र्ज़ किया लेकिन उनके इख़्तिलाफ़ ने उन्हें खो दिया और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें उसकी हिदायत दी पस यह सब लोग हमारे पीछे ही पीछे हैं यहूद एक दिन पीछे नसारा दो दिन पीछे।" (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल जुम्अ़ा, बाब फ़र्ज़ुल जुम्अ़ा : 876; सहीह़ मुस्लिम : 855) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं "हमसे पहले की उम्मतों को अल्लाह तआ़ला ने इस दिन से महरूम कर दिया, यहूद ने हफ़्ते का दिन रखा, ईसाइयों ने इतवार का और जुम्अ़ा हमारा हुआ पस जिस तरह दिनों के इस ऐतिबार से वह हमारे पीछे हैं उसी तरह क़यामत के दिन भी हमारे पीछे ही रहेंगे, हम दुनिया के एतिबार से पीछे हैं और क़यामत के ऐतिबार से पहले हैं यानी तमाम मख़्लूक़ में सबसे पहले फ़ैसले हमारे होंगे।" (सहीह़ मुस्लिम, किताबुल जुम्अ़ा, बाब हिदायतु हाज़िहिल उम्मत लियौमिल जुम्अ़ति : 856)

***

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا
بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ
هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

तर्जुमा : "अपने रब की राह की तरफ़ लोगों को अल्लाह की वही और बेहतरीन नसीहत के साथ बुलाता रह और उनसे बेहतरीन तरीक़े से बातचीत किया कर, यक़ीनन तेरा रब अपनी राह से बहकने वालों को भी बख़ूबी जानता है और वह राह याफ़्ता लोगों से भी पूरा वाक़िफ़ है। (125) और अगर बदला लो भी तो बिलकुल उतना ही जितना सदमा तुम्हें पहुँचाया गया हो, और अगर सब्र करो तो बेशक साबिरों के लिए यही बेहतर से बेहतर है। (126) तू सब्र कर। बग़ैर अल्लाह की तौफ़ीक़ के तू सब्र कर ही नहीं सकता, तू इनके हाल पर रंजीदा न हो। और जो मकर व फ़रेब यह करते रहते हैं उनसे तंगदिल न हो। (127) यक़ीन मान कि अल्लाह तआला परहेज़गारों और नेककारों के साथ है।"(128)

नसीहत और हिक्मत से मुराद (आयत 125-128) : अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को हुक्म फ़र्माता है कि आप मख़्लूक़े इलाही को अल्लाह तआला की राह की तरफ़ बुलाए हिक्मत से मुराद बक़ौले इमाम इब्ने जरीर (रह़.) कलामुल्लाह और हदीसे रसूलुल्लाह (ﷺ) है और अच्छे वअ़ज़ से मुराद जिसमें डर और धमकी भी हो कि लोग उससे नसीहत हासिल करें और अल्लाह के अज़ाबों से बचाव तलब करें। (तब्री : 17/321) हाँ! यह भी ख़्याल रहे कि अगर किसी से मुनाज़रे की ज़रूरत पड़ जाए तो वह नर्मी और ख़ुशलफ़्ज़ी से हो। जैसे फ़र्मान है (وَلَا تُجَادِلُوٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ) (29/अन्कबूत : 46) अहले किताब से मुनाज़िरे मुजादिले का बेहतरीन तरीक़ा ही बरता करो। इसी तरह हज़रत मूसा (عليه السلام) को भी नर्मी का हुक्म हुआ था। दोनों भाईयों को यह कहकर फ़िरऔन के पास भेजा गया था कि उसे नर्म बात कहना ताकि इब्रत हासिल करे और होशियार हो जाए। राह भटके और राह लगे सब

अल्लाह के इल्म में हैं। शक़ी व सईद सब उस पर वाज़ेह हैं, वहाँ लिखे जा चुके हैं और तमाम कामों के अंजाम से फ़राग़त हो चुकी है। आप तो अल्लाह की राह की दावत देते रहें लेकिन न मानने वालों के पीछे अपनी जान हलाकत में न डालिए। आप हिदायत के ज़िम्मेदार नहीं। आप सिर्फ़ आगाह करने वाले हैं आप पर पैग़ाम का पहुँचा देना है। हिसाब हम ख़ुद लेंगे। हिदायत आपके बस की चीज़ नहीं कि जिसे महबूब समझें, हिदायत पर ला खड़ा कर दें। लोगों की हिदायत के ज़िम्मेदार आप नहीं, यह अल्लाह के क़ब्ज़े की और उसके हाथ की चीज़ है।

हुसूले क़िसास और सब्र का बयान : क़िसास में और हक़ के हासिल करने में बराबरी और इंसाफ़ का हुक्म हो रहा है। इमाम इब्ने सीरीन (रह़.) वग़ैरह फ़र्माते हैं अगर कोई तुमसे कोई चीज़ ले ले तो तुम भी उससे उसी जैसी ले लो। (तब्री : 14/197) इब्ने ज़ेद (रह़.) फ़र्माते हैं कि पहले तो मुश्रिकों से दरगुज़र करने का हुक्म था। जब ज़रा हेसियतदार लोग मुसलमान हुए तो उन्होंने कहा कि अगर अल्लाह की तरफ़ से बदले की रुख़्सत हो जाए तो हम भी इन कुत्तों से निबट लिया करें। इस पर यह आयत उतरी। आख़िर यह भी हुक्म से मंसूख़ हो गई। (तब्री : 17/324) हज़रत अता बिन यसार (रह़.) फ़र्माते हैं सूरह नहल पूरी मक्का मुकर्रमा में उतरी है मगर इसकी यह तीन आख़िरी आयतें मदीना मुनव्वरा में उतरी हैं जबकि जंगे उहुद में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) शहीद कर दिए गए और आपके बदन के हिस्से भी शहदत के बाद काट लिए गए जिस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबान से बेसाख़्ता निकल गया कि "अब जब मुझे अल्लाह तआला इन मुश्रिकों पर ग़ल्बा देगा तो मैं इनमें से तीस शख़्सों के हाथ पैर उसी तरह काटूँगा।" मुसलमानों के कान में जब अपने मुहतरम नबी (ﷺ) के यह अल्फ़ाज़ पड़े तो उनके जोश बहुत बढ़ गए। और कहने लगे कि वल्लाह! हम इन पर ग़ालिब आकर इनकी लाशों के वह टुकड़े टुकड़े करेंगे कि अरबों ने कभी ऐसा देखा ही न हो। इस पर यह आयतें उतरीं। (यह रिवायत मुर्सल है।) (सीरते इब्ने इस्हाक़) लेकिन यह रिवायत मुर्सल है और इसमें एक रावी ऐसा है जिनका नाम ही नहीं लिया गया। मुब्हम छोड़ा गया है। हाँ! दूसरी सनद से यह मुत्तसिल भी मरवी है। बज़्ज़ार में है कि जब हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) बिन अब्दुल मुत्तलिब शहीद कर दिये गए, आप उनके पास आकर खड़े होकर देखने लगे। आह! इससे ज़्यादा दिल दुखाने वाला मंज़र और क्या होगा कि मुहतरम चचा की लाश के टुकड़े टुकड़े आँखों के सामने बिखरे पड़े हैं। आपकी ज़ुबाने मुबारक से निकला कि, "आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो जहाँ तक मेरा इल्म है मैं जानता हूँ कि आप रिश्ते नाते के जोड़ने वाले, नेकियों को लपककर करने वाले थे। वल्लाह! दूसरे लोगों के दर्द ग़म का ख़्याल न होता तो मैं तो आपके इस जिस्म को यूँ ही छोड़ देता यहाँ तक कि आपको अल्लाह तआला दरिन्दों के पेटों में से निकालता" या और कोई ऐसा ही कलिमा फ़र्माया। जब उन मुश्रिकों ने यह हरकत की है तो वल्लाह! मैं भी उनमें के सत्तर शख़्सों की यही दुर्गत बनाऊँगा। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) वही लेकर आए और यह आयतें उतरीं तो आप (ﷺ) अपनी क़सम के पूरा करने से रुक गए और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 1759; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 3/197; मज्मउज़्ज़ वाइद : 6/119) लेकिन सनद इसकी भी कमज़ोर है इसके रावी सालेह बिन बशीर मुर्री हैं जो

अइम्मा अहले ह्दीस के नज़दीक ज़ईफ़ हैं। बल्कि इमाम बुख़ारी (रह़.) तो इन्हें मुंकरुल ह्दीस कहते हैं। शअ़बी और इब्ने जुरैज (रह़.) कहते हैं कि मुसलमानों की ज़ुबान से निकला था कि इन लोगों ने जो हमारे शहीदों की बेहुर्मती की है और इनके बदन के हिस्सों को काट दिया है, वल्लाह! हम भी इनसे इसका बदला लेकर ही छोड़ेंगे। पस अल्लाह तआ़ला ने इनके बारे में आयतें उतारीं। मुस्नद अह्मद में है कि जंगे उहुद में साठ अंसारी (रज़ि.) शहीद हुए और छः मुहाजिरीन (रज़ि.)। अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबान से निकल गया कि जब हम इन मुश्रिकों पर ग़ल्बा पायेंगे तो हम भी इनके टुकड़े किए बग़ैर न रहेंगे। चुनाँचे फ़तह़े मक्का के दिन एक शख़्स ने कहा कि आज के दिन के बाद क़ुरैश पहचाने भी न जाएँगे। उसी वक़्त आवाज़ आई, अल्लाह के रसूल (ﷺ) तमाम लोगों को पनाह देते हैं सिवाय फ़लाँ फ़लाँ के जिनके नाम बताए गए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयतें नाज़िल फ़र्माईं। नबी (ﷺ) ने उसी वक़्त फ़र्माया कि हम स़ब्र करते हैं और बदला नहीं लेते। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नह़ल : 3129; बइख़्तिलाफ़ युसीर व सनदुहू ह़सन; अह्मद : 5/135; ज़वाइद अ़ब्दुल्लाह बिन अह्मद बिन ह़ंबल; इब्ने ह़िब्बान : 487; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/289) इस आयते करीमा की मिसालें क़ुरआने करीम में और भी बहुत सी हैं। इसमें अ़दल की मशरूइयत बयान हुई है और अफ़ज़ल त़रीक़े की तरफ़ इशारा किया गया है जैसे आयत (وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا) (42/शूरा : 40) में कि बुराई का बदला लेने की रुख़्सत अ़ता करके फिर फ़र्माया है कि जो दरगुज़र कर ले और इस्लाह़ कर ले उसका अज्र अल्लाह के पास है। इसी आयत (وَٱلْجُرُوحَ قِصَاصٌ) (5/माइदा : 45) में भी ज़ख़्मों का बदला लेने की इजाज़त देकर फ़र्माया है कि जो बतौरे स़दक़ा माफ़ कर दे यह माफ़ी उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगी। इसी त़रह़ इस आयत में भी बराबर बराबर बदला लेने के जवाज़ का ज़िक्र करके फिर इर्शाद होता है कि अगर स़ब्र कर लो तो यह बहुत ही बेहतर है। फिर स़ब्र की मज़ीद ताकीद की और इर्शाद फ़र्माया कि यह हर एक के बस का काम नहीं, उनसे ही हो सकता है जिनकी मदद पर अल्लाह हो, और जिन्हें उसकी जानिब से तौफ़ीक़ नसीब हुई हो।

फिर इर्शाद होता है कि अपने मुख़ालिफ़ीन का ग़म न खा, उनकी क़िस्मत में ही मुख़ालिफ़त लिख दी गई है न उनके फ़न फ़रेब से आज़र्दा ख़ातिर हो अल्लाह तुझे काफ़ी है वही तेरा मददगार है वही तुझे इन सब पर ग़ालिब करने वाला और इनकी मक्कारियों और चालाकियों से बचाने वाला है। इनकी दुश्मनी और इनके बुरे इरादे तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह तआ़ला की मदद और उसकी ताईद हिदायत और उसकी तौफ़ीक़ उनके साथ है जिनके दिल अल्लाह के डर से और जिनके आ़माल एह्सान के जोहर से मालामाल हों। चुनाँचे जिहाद के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों की त़रफ़ वह़ी उतारी थी कि (أَنِّى مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا۟ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟) (8/अन्फ़ाल : 12) मैं तुम्हारे साथ हूँ पस तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो। इसी त़रह़ ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) और ह़ज़रत हारून (عليه السلام) से फ़र्माया था (لَا تَخَافَآ ۖ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ) (20/त़ाहा : 46) तुम डर न रखो मैं तुम्हारे साथ हूँ, देखता सुनता हूँ। ग़ार में रसूले करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से फ़र्माया था (لَا تَحْزَنْ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَا)(9/तौबा : 40) ग़म न कर अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब

फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी (ﷺ) : बाब मनाक़िबुल मुहाजिरीन वल अंसार : 3652; सहीह मुस्लिम : 2009) पस यह साथ तो ख़ास था, और मुराद इससे ताईद व नुसरते (मददे) इलाही का साथ होना है। और आम साथ का बयान आयत (وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ) (57/हदीद : 4) और आयत (مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ) (58/मुजादिला : 7) और आयत (وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ) (10/यूनुस : 61) में है यानी अल्लाह तआला तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो और वह तुम्हारे आमाल देखने वाला है और जो तीन शख़्स कोई बातचीत करने लगें, उनमें चौथा अल्लाह होता है और पाँच में छठा वह होता है और उससे कमो बेश में भी जहाँ वह हों अल्लाह उनके साथ होता है। और तू किसी हाल में हो या तिलावते क़ुरआन में हो या तुम और कोई काम में लगे हुए हो हम तुम पर शाहिद होते हैं। पस इन आयतों में साथ से मुराद सुनने देखने का साथ है। तक़्वा के मअनी हैं हराम कामों और गुनाह के कामों को अल्लाह के फ़र्मान पर छोड़ देने के और एहसान के मअनी हैं परवरदिगार की इताअत व इबादत को बजा लाना। जिन लोगों में यह दोनों सिफ़तें हों, वह अल्लाह तआला की हिफ़्ज़ो अमान में रहते हैं। जनाब बारी तआला उनकी ताईद और मदद फ़र्माता रहता है, उनके मुख़ालिफ़ीन और दुश्मन उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते बल्कि अल्लाह तआला उन्हें सब पर कामयाबी अता फ़र्माता है। इब्ने अबी हातिम में हज़रत मुहम्मद बिन हातिब (रह.) से मरवी है कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) उन लोगों में से थे जो बाईमान परहेज़गार और नेकोकार हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह नह्ल मुकम्मल हुई और इसके साथ ही चौदहवाँ पारा भी मुकम्मल हुआ।

***